हिंदी पारिभाषिक लघु कोश

सत्यमेव जयते

केंद्रीय हिंदी निदेशालय

उच्चतर शिक्षा विभाग

मानव संसाधन विकास मंत्रालय

भारत सरकार

हिंदी पारिभाषिक लघु कोश

HINDI PARIBHASHIK LAGHU KOSH

प्रथम संस्करण : 2015

प्रकाशक : केंद्रीय हिंदी निदेशालय
उच्चतर शिक्षा विभाग
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
(भारत सरकार)
पश्चिमी खंड-VII
रामकृष्णपुरम्
नई दिल्ली-110066

मुद्रक :

विषय-सूची

प्राक्कथन

विश्व की भाषाओं और साहित्य की विरासत को अक्षुण रखने में कोशों की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। इन कोशों का निर्माण वस्तुत: एक ऐसी स्वतंत्र विधा के रूप में विकसित हुआ है जिस की परिधि ज्ञान की सभी सरणियों का स्पर्श करती है। यह तो सर्वमान्य तथ्य है कि हमारी शिक्षा के पहले सोपान से लेकर गंभीर शोधकार्यों तक कोश हमारे साथ किसी-न-किसी रूप में उपस्थित रहे हैं, लेकिन इस वैश्विक सभ्यता के युग में जब वैचारिक, सांस्कृतिक, आर्थिक आदान-प्रदान के कारण भाषाएँ निरंतर अपना रूप बदल रही हैं और उनकी शब्दावली तीव्रता से प्रसारित हो रही है, कोश हमारे लिए अपरिहार्य बन गए हैं। कहना अनुचित न होगा कि कोशों की आवश्यकता के बदलते आयाम कोश-निर्माण के कार्य को और अधिक चुनौतीपूर्ण बना रहे हैं। आधुनिक कोशों से बढ़ती अपेक्षाओं में अब लिखित/प्रकाशित साहित्य की सामग्री ही नहीं बल्कि विज्ञान की अधुनातन शब्दावली, संचार-साधनों की शब्दावली से लेकर पत्रकारिता, खेल, शेयर बाजार का पूरा का पूरा शब्द भंडार शामिल हो गया है। अत: कोशों की सार्थकता इन अपेक्षाओं पर खरा उतरने में है।

कोश-निर्माण की लंबी परंपरा में, विशेषकर भारतीय संदर्भ में यह देखा जा सकता है कि विषयों को आधार बनाते हुए (यथा-मुहावरा कोश, लोकोक्ति कोश) तथा पाठकवर्ग को ध्यान में रखकर विविध प्रकार के कोश बनाए गए हैं। आवश्यकतानुसार इन कोशों का कलेवर छोटा या बड़ा रहा है। केंद्रीय हिंदी निदेशालय ने अपनी विस्तृत कोश परियोजना में भी एक ऐसे कोश को स्थान देने की दिशा में 'हिंदी पारिभाषिक लघु कोश' के निर्माण पर कार्य प्रारंभ किया। इस कोश का कलेवर और स्वरूप पूर्व माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को केंद्र में रखकर निर्धारित किया गया है। इस कोश में प्रविष्टियों की अवधारणामूलक व्याख्या प्रस्तुत करते हुए उसे लक्ष्य पाठकवर्ग/प्रयोक्ताओं के लिए अधिकाधिक उपयोगी बनाने का प्रयत्न किया गया है। प्रविष्टियों का चयन करते हुए पूर्व माध्यमिक स्तर के पाठ्यक्रम के विविध विषयों, यथा-हिंदी साहित्य, विज्ञान, इतिहास, समाज अध्ययन आदि से महत्वपूर्ण शब्दों को लिया गया है और उन्हें अनुकूलतया परिभाषित किया गया है। इस कोश में प्रविष्टियों की संख्या 10800 है। प्रविष्टियों की व्याकरणिक कोटियों और उसकी विविध अर्थच्छायाओं को उनकी आधुनिकतम संकल्पनाओं के साथ प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। इस कोश के निर्माण में देश के ख्यातिलब्ध कोशकारों ने कार्य किया है। साथ ही, तकनीकी परिभाषाएँ निर्धारित करने के लिए संबंधित क्षेत्र के विशेषज्ञों की सहायता ली गई है। इस पूरी निर्माण-प्रक्रिया का यह पुस्तकाकार रूप वस्तुत: निदेशालय के कोश (हिंदी-हिंदी) एकक के अनथक श्रम का प्रतिफल है। ये सभी धन्यवाद के पात्र हैं। आशा है, यह कोश विद्यार्थियों, साहित्यसेवियों, भाषा अनुसंधित्सुओं के बीच अपना स्थान बना पाएगा।

(प्रो. केशरी लाल वर्मा)

निदेशक

हिंदी पारिभाषिक लघु कोश

प्रधान संपादक

प्रो. केशरी लाल वर्मा
निदेशक

संपादक

1. **श्री राधेश्याम मीना**
   उपनिदेशक (भाषा)

2. **डॉ वेद प्रकाश**
   सहायक निदेशक

3. **डॉ राकेश कुमार**
   सहायक निदेशक

सह-संपादक

1. **डॉ. जगदीप यादव**
   सहायक अनुसंधान अधिकारी

2. **श्री रत्नेश कुमार मिश्र**
   सहायक अनुसंधान अधिकारी

मुद्रण एवं प्रकाशन

श्री हुकमचंद मीना, सहायक निदेशक

हिंदी पारिभाषिक लघुकोश के संकलन एव समन्वय से संबद्ध विशेषज्ञ :-

1. डॉ. नरेंद्र व्यास पूर्व प्रधान संपादक, केंद्रीय हिंदी निदेशालय, नई दिल्ली
2. डॉ. पूरन चंद टंडन, एसोसिएट प्रोफेसर, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
3. डॉ. भास्करानंद पांडेय पूर्व प्रधानाचार्य, दिल्ली सरकार, दिल्ली
4. श्री आनंद अनंतराम वेताल, पूर्व प्रधानाचार्य, दिल्ली
5. डॉ. जयंती प्रसाद मिश्र, पूर्व प्रधानाचार्य, दिल्ली सरकार, दिल्ली
6. डॉ. हरीश कुमार सेठी, एसोसिएट प्रोफेसर, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, दिल्ली
7. डॉ. अनिरुद्ध राय, पूर्व प्रोफ़ेसर, एन.सी.ई.आर.टी, दिल्ली
8. डॉ. रामकरण डबास, पूर्व एसोशिएट प्रोफ़ेसर, एस.सी.ई.आर.टी. दिल्ली
9. डॉ. सुरेश पंत, प्रवक्ता हिंदी, शिक्षा विभाग, दिल्ली सरकार
10. डॉ. विद्या गुप्ता, एसोसिएट प्रोफेसर, हरियाणा सरकार, गुड़गाँव
11. डॉ. बी.के. सिन्हा, पूर्व वैज्ञानिक अधिकारी, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, दिल्ली
12. डॉ. दिनेश चंद्र दीक्षित, पूर्व उपनिदेशक (भाषा), केंद्रीय हिंदी निदेशालय, नई दिल्ली
13. डॉ. विनीता कुमारी, एसोसिएट प्रोफेसर, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
14. डॉ. नीलांबर पांडेय, पूर्व निदेशक, (राजभाषा), रक्षा मंत्रालय, दिल्ली
15. डॉ. नोदनाथ मिश्र, पूर्व प्राचार्य, केंद्रीय विद्यालय संगठन, दिल्ली
16. डॉ. ममता सिंगला, एसोसिएट प्रोफेसर, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
17. डॉ. छवि कृष्ण आर्य, पूर्व प्राचार्य, केंद्रीय विद्यालय संगठन
18. डॉ. राजरानी शर्मा, एसोसिएट प्रोफेसर, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
19. डॉ. जगदेव कुमार शर्मा, असिस्टेंट प्रोफेसर, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली
20. डॉ. प्रदीप कुमार, असिस्टेंट प्रोफेसर, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
21. डॉ. कुलभूषण शर्मा, असिस्टेंट प्रोफेसर, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
22. डॉ. आलोक रंजन पांडेय, असिस्टेंट प्राफेसर, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

संक्षिप्तियाँ

1.	अं.	अंग्रेजी
2.	अ.क्रि.	अकर्मक क्रिया
3.	अनु.	अनुरणन
4.	अर.	अरबी
5.	अप.	अपभ्रंश
6.	अप.वि.	अपराध विज्ञान
7.	अभि.	अभिव्यक्ति
8.	अर्थ.	अर्थशास्त्र
9.	अर्ध.मा.	अर्ध मागधी
10.	अव.	अवहट्ठ
11.	अ.	अव्यय
12.	अस.	असमिया
13.	आधु. अर्थ	आधुनिक अर्थ
14.	आनु.	आनुवंशिकी
15.	आयु.	आयुर्विज्ञान
16.	इंजी.	इंजीनियरी
17.	इति.	इतिहास
18.	उदा.	उदाहरण
19.	ओडि.	ओडिया
20.	कंप्यू.	कंप्यूटर
21.	कन्न.	कन्नड़
22.	कश्मी.	कश्मीरी
23.	क्रि.	क्रिया
24.	कुमा.	कुमाउनी
25.	कृदं.	कृदंत
26.	कृषि.	कृषिविज्ञान
27.	कोंक.	कोंकणी
28.	कोशिका.	कोशिका विज्ञान
29.	खगो.	खगोलिकी
30.	ख. बो.	खड़ी बोली
31.	खेल.	खेलकूद
32.	गणि.	गणित
33.	गुज.	गुजराती
34.	गृह.	गृहविज्ञान
35.	छत्ती. बो.	छत्तीसगढ़ी बोली
36.	जंतु.	जंतुविज्ञान
37.	जर्म.	जर्मन
38.	जीव.	जीवविज्ञान
39.	ज्यो.	ज्योतिष
40.	टि.	टिप्पणी
41.	ढोला.	ढोला मारु रा दूहा
42.	तक. अर्थ	तकनीकी अर्थ
43.	तमि.	तमिल
44.	तर्क.	तर्कशास्त्र
45.	तुर्की.	तुर्की भाषा
46.	तु.	तुलना
47.	तेलु.	तेलुगु
48.	दूर.संचा.	दूरसंचार
49.	दे.	देखिए
50.	देश.	देशज
51.	धर्म.	धर्मशास्त्र
52.	धा.	धातु

53.	ना.धा.	नाम धातु	81.	बहु.	बहुवचन
54.	नृ.वि.	नृविज्ञान	82.	बल्गा.	बल्गारियाई
55.	नेपा.	नेपाली	83.	बंग.	बंगला
56.	पंजा.	पंजाबी	84.	बाग.	बागवानी
57.	प.हि.	पश्चिमी हिंदी	85.	बुंदे.	बुंदेलखंडी
58.	पत्र.	पत्रकारिता	86.	बो.	बोली
59.	परि.	परिवहन	87.	ब्रज.	ब्रजभाषा
60.	पर्या.	पर्याय	88.	भाषा.	भाषाविज्ञान
61.	पश्तो.	पश्तो भाषा	89.	भू.	भूगोल
62.	पा.	पालि	90.	भू.वि.	भूविज्ञान
63.	पारि.	पारिस्थितिकी	91.	भोज.	भोजपुरी
64.	पुं.	पुल्लिंग	92.	मनो.	मनोविज्ञान
65.	पुरा.	पुरातत्व	93.	मरा.	मराठी
66.	पुर्त.	पुर्तगाली	94.	मग.	मगही
67.	पुस्त.	पुस्तकालय विज्ञान	95.	मल.	मलयालम
68.	पू.हि.	पूर्वी हिंदी	96.	मार.	मारवाड़ी
69.	पृ.	पृष्ठ	97.	मुद्र.	मुद्रण
70.	प्रच.अर्थ	प्रचलित अर्थ	98.	मू.अर्थ	मूल अर्थ
71.	प्रत्य.	प्रत्यय	99.	यां.इंजी.	यांत्रिक इंजीनियरी
72.	प्रबं.	प्रबंधन	100.	यूना.	यूनानी
73.	प्रयो.	प्रयोग	101.	योग.	योग
74.	प्रशा.	प्रशासन	102.	राज.	राजस्थानी
75.	प्रा.	प्राकृत	103.	राजनी.	राजनीति
76.	प्राणि.	प्राणि विज्ञान	104.	ल.क.	ललित कला
77.	फा.	फारसी	105.	ला.अर्थ.	लाक्षणिक अर्थ
78.	फिल्म.	फिल्मांकन	106.	लैटि.	लैटिन
79.	फोटो.	फोटोग्राफी	107.	लो. प्रशा.	लोक प्रशासन
80.	फ्रें.	फ्रेंच	108.	वन.	वनस्पति विज्ञान

109.	वस्त्रइंजी.	वस्त्र इंजीनियरी	128.	संगी.	संगीत
110.	वाणि.	वाणिज्य	129.	संयो.	संयोजक
111.	वानि.	वानिकी	130.	स.क्रि.	सकर्मक क्रिया
112.	वास्तु.	वास्तुशास्त्र	131.	समा.	समाज विज्ञान
113.	वि. इंजी.	विद्युत इंजीनियरी	132.	सर्व.	सर्वनाम
114.	वि.	विशेष	133.	सा.अर्थ	सामान्य अर्थ
115.	विक. अर्थ	विकसित अर्थ	134.	साहि.	साहित्य
116.	विलो.	विलोम	135.	सिंधी.	सिंधी
117.	विशे.	विशेषण	136.	सिंह.	सिंहली
118.	विभ.	विभक्ति	137.	सू.कृ.	सूत्रकृमि. विज्ञान
119.	विस्म.	विस्मयादिबोधक	138.	सै.वि.	सैन्य विज्ञान
120.	वैदि.	वैदिक	139.	स्त्री.	स्त्रीलिंग
121.	व्या.	व्याकरण	140.	स्था.	स्थापत्य
122.	व्यु.अर्थ	व्युत्पत्तिपरक अर्थ	141.	स्था.प्रयो.	स्थानिक प्रयोग
123.	शा.अर्थ	शाब्दिक अर्थ	142.	स्पे.	स्पेनी
124.	शिक्षा.	शिक्षाशास्त्र	143.	ह.कला	हस्त कला
125.	शौर.	शौरसेनी	144.	हरि.	हरियाणवी बोली
126.	सं.	संस्कृत	145.	हिं.	हिंदी
127.	संक.	संकर	146.	क्षे.	क्षेत्रीय

अ

अ1. देवनागरी वर्णमाला के पहले स्वर स्वनिम (वर्ण) का लिखित/मुद्रित स्वरूप। 2. 'नहीं' का अर्थसूचक उपसर्ग; **जैसे:** असहमत (अ+सहमत) अर्थात् सहमत न होना। **टि.** 1. वर्णमाला के 'क', 'ख', 'ग' आदि सभी व्यंजनों में 'अ' अंतर्निहित स्वर होता है। **जैसे**: क्+अ='क', ठ्+अ='ठ', भ्+अ='भ' आदि 2. अन्य स्वरों की तुलना में 'अ' स्वर का अलग से कोई मात्रा चिह्न नहीं होता।

अंक *पुं. (तत्.)* 1. **गोद** (साहित्यिक प्रयोग) **जैसे**: माता ने अपने शिशु को अंक में ले लिया। 2. **संख्या** number; figure **जैसे:** एक हजार को अंकों में लिखें (शब्दों की तुलना में) 3. **गणि.** संख्यांकन पद्धति में स्थानीय मान सूचक आँकड़ा (इकाई दहाई के रूप में 1, 2, 3,...0 के संकेत digit 4. **शिक्षा** बहु. परीक्षा में प्राप्त अंक marks । **दे.** प्राप्तांक, पूर्णांक। 5. पत्र. मास, वर्ष आदि में प्रकाशन की क्रमिक संख्या, जैसे : इस पत्रिका के प्रति मास दो अंक प्रकाशित होते हैं, **तु.** संस्करण 6. **साहि.** नाटक का हिस्सा, जैसे : एकाकी (एक अंक वाला नाटक); चंद्रगुप्त नाटक का दूसरा अंक। 7. **खेल**-प्रतियोगिता में सम्मिलित खिलाड़ी या दल को प्रतिपक्षी की तुलना में प्राप्त अंक। points, score appraisal

अंकगणित *[अंक+गणित] पुं. (तत्.)* अंकों का गणित, अंकों की गणना (जोड़ना, घटाना, गुणा, भाग, वर्ग, वर्गमूल, घन, घनमूल ये आठ संक्रियाएँ) **पर्या.** हिसाब, पाटीगणित **तु.** बीजगणित, रेखागणित, ग्रहगणित arithmetic

अंकतालिका *स्त्री. (तत्.)* अंकों की तालिका **दे.** अंकसूची

अंकन *पुं. (तत्.)* 1. चिह्नित करना, अंकों से चिह्नित करना marking 2. रेखा से चिह्नित करना, रेखांकन 3. आँकना, निर्धारण करना, मूल्य, शुल्क आदि के निर्धारण का अनुमान 4. वर्ग के अनुसार क्रम निर्धारण वर्गांकन। notation

अंक प्रविष्टि *स्त्री. (तत्.)* रजिस्टर आदि में प्राप्त अंकों को चढ़ाने की क्रिया।

अंक सूची *स्त्री. (तत्.)* परीक्षा में प्राप्त अंकों की (विषयवार सूची या तालिका) अंक तालिका। marks sheet

अंकित [अंक+इत] *(वि.) (तत्.)* चिह्नित किया हुआ, जिस पर निशान लगा हो। **उदा.** वाक्यों में रेखांकित शब्दों के अर्थ बताइए। रेखांकित *(रेखा+से* अंकित) जिसके नीचे रेखा पड़ी/खींची गई हो। **दे.** अंकित

अंकित मूल्य *(तत्.) पुं.* **वाणि**. किसी वस्तु के आवरण पर अथवा शेयर आदि के दस्तावेज़ पर ग्राहक की जानकारी के लिए छपा/उस पर दर्ज दाम अथवा कीमत। face value, nominal value

अंकीय *[अंक+ईय प्रत्यय) (वि.) (तत्.]* 1. अंक/आँकड़ा/संख्या संबंधी। **जैसे**: अंकीय पद्धति 2. **जीव.** पृष्ठभाग/पीठ के विपरीत अर्थात् सामने वाले भाग-गोद (अंक) की ओर या वहाँ स्थित; जंतुओं के उदर की ओर तथा पादपों में अक्ष की ओर के भाग से संबंधित, पत्तियों की ऊपरी सतह ventral

अंकुर *पुं. (तत्.)* बीज बोने के बाद उससे फूटकर निकला हुआ पहला कोमल भाग, अँखुवा, कब्जा। ला.अर्थ प्रारंभिक लक्षण। **उदा.** शहीद भगत सिंह में राष्ट्रभक्ति के अंकुर उनके बचपन में ही दिखाई पड़ने लगे थे।

अंकुरण *पुं. (तत्.)* अनुकूल परिस्थितियों में बीज की वृद्धि का आरंभ जिसमें सबसे पहले एक अंकुआ (अंकुर) निकलता है।

अंकुरित *[अंकुर+इत] (तत्.)* वि. अंकुर के रूप में निकला या फूटा हुआ। **दे.** अंकुर

अंकुश *पुं. (तत्.)* 1. हाथी को हाँकने या वश में करने के लिए प्रयुक्त एक नुकीला हथियार। 2. नियंत्रण, रोक।

अंकुश कृमि *पुं. (तत्.)* **जीव.** अंकुश जैसे आकार वाला (यानी मुड़ा हुआ) कीट जो प्राय: बच्चों के आमाशय में पैदा होकर गुदा द्वार तक पहुँचता है और बच्चों के पेट में दर्द का एक कारण बनता है। hook warm **दे.** कृमि।

अंकेक्षण *[अंक+ईक्षण] पुं. (तत्.) व्यापारिक* या राजकीय लेन-देन से संबंधित लेखा कार्य का

अधिकारी व्यक्ति द्वारा परीक्षण किया जाना। audit

अंग *पुं. (तत्.)* 1. शरीर, बदन, देह, body 2. शरीर का कोई भी भाग **जैसे:** आँख, हाथ, पैर आदि। 3. **सैन्य.** भाग या हिस्सा जैसे : सेना के तीन अंग-थल सेना, नौ सेना और वायु सेना। 4. **जीव.** का बहुकोशीय अवयव जो संरचनात्मक और कार्यात्मक इकाई के रूप में कार्य करता है। 5. **संगी.** कर्णाटक संगीत में तीनों के विभाग, **जैसे:** अणु-द्रुत, द्रुत, लघु, गुरु, प्लुत और काकपद।

अंगक *[अंग+क] पुं. (तत्.)* **जीव** कोशिका का सुस्पष्ट अवयव। **जैसे:** केंद्रक, लवक आदि। Organelle

अंगघात *पुं. (तत्.)* व्यु अर्थ. किसी अंग विशेष पर रोग के प्रभाववश आई ऐसी चोट जिसके फलस्वरूप वह अंग मृतवत यानी निश्चेष्ट हो जाता है।

अंगज *[अंग+ज] वि/पुं. (तत्.)* देह से उत्पन्न, संतान (बेटा)।

अंगजा *[अंग+ज्+आ] वि./स्त्री. (तत्.)* देह से उत्पन् संतान (बेटी)। **तु. (विलो.)** अंगज।

अंगद *पुं. (तत्.)* 1. बाजू (बाँह) पर बाँधने का एक आभूषण **पर्या.** बाजूबंद 2. रामायण कथा के अंतर्गत वानरराज बालि के पुत्र एवं राम के सेनापतियों में प्रमुख।

अंगदान *पुं. (तत्.)* किसी व्यक्ति के द्वारा अपनी जीवितावस्था में ही शरीर के किसी अंग विशेष **जैसे**: आँखें, गुर्दा आदि का मृत्यु के पश्चात् दान करने की घोषणा जो किसी जरूरतमंद व्यक्ति के शरीर में प्रत्यारोपित की जा सके।

अंगद्वार *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ अंग (शरीर) का/के द्वार। **जीव.** शरीर के छिद्र जो नौ माने जाते हैं- दो कान, दो आँखें, नाक के दो छिद्र, मुख, गुदा और लिंग।

अंग प्रत्यंग [अंग+प्रति+अंग] (तत्.) *पुं.* शरीर का प्रत्येक अंग; पूरा शरीर ही।

अंगभंग *[अंग+अंग] पु. (तत्.)* शा.अर्थ शरीर के किसी अंग पर चोट; दुर्घटनावश किसी अंग विशेष का टूट जाना।

अंगरक्षक *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ अंग की रक्षा करने वाला/वाले (व्यक्ति); किसी गणमान्य व्यक्ति की सुरक्षा के लिए नियुक्त सशस्त्र कर्मचारी।

अंगरखा *पुं. [तद्.>अंगरक्षक (वस्त्र)]* एक लंबा मर्दाना पहनावा।

अंगराग *पुं. (तत्.)* शरीर पर मलने योग्य/लगाने सुगन्धित लेप, सौंदर्य प्रसाधन, उबटन।

अंगवस्त्र *पुं. (तत्.)* पंडितों के एक कंधे पर डाला जाने वाला आगे-पीछे लटकता और दो परतों में लिपटा बिना सिला वस्त्र। **तु.** दुपट्टा।

अंगार *पुं. (तत्.)* दहकता हुआ कोयला, अंगारा। (क्रोध में अंगारे की तरह) लाल।

अंगी *वि. (तत्.)* अंगवाला, प्रधान, मुख्य *पुं.* प्रधान पात्र, नायक।

अंगीकार करना *क्रि.(तद्.)* अपने अंग की तरह मान लेना; स्वीकार करना, अपना लेना, ग्रहण करना।

अंगीकृत *वि. (तत्.)* स्वीकृत, गृहीत, मान्य अंगीकार किया हुआ।

अंगुल *पुं. (तत्.)* 1. दे. उँगली 2 अंगुली की चौड़ाई के बराबर नाप (सामान्यत: 3/4 इंच के बराबर) **उदा.** दो अंगुल चौड़ी पट्टी।

अंगुलि/अंगुली *स्त्री. (तत्.)* **दे.** उंगली।

अंगुष्ठ *पुं. (तत्.)* हथेली की छोटी पर अपेक्षाकृत मोटे आकार वाली पहली अँगुली जो शेष चार अंगुलियों से हटकर कुछ निचले भाग पर होती है। **दे.** (अँगूठा)

अंगूर *पुं. (फ़ा.)* लता के गुच्छे के रूप में लगने वाला बड़े मोती से दानों जैसा हरे या गहरे जामुनी रंग का खाने योग्य वह रसयुक्त फल जो पकने पर मीठा होता है। **पर्या.** द्राक्षा, दाख।

अंगूर शर्करा *स्त्री (तत्.)* **दे.** ग्लूकोस। glucose

अंचल *पुं. (तत्.)* 1. आँचल, साड़ी या ओढ़नी का वह छोर जो सीधे पल्ले की साड़ी पहनने वाली महिलाओं के सीने और पेट पर तथा उल्टे पल्ले वाली साड़ी पहनने वालियों की पीठ पर लटका रहता है। **पर्या.** आँचल। 2. किसी भौगोलिक क्षेत्र का भाग-विशेष। **जैसे**: पूर्वांचल, उत्तरांचल, वनांचल।

अंजन *पुं. (तत्.)* आँखों में लगाने का काला औषधि द्रव्य **पर्या.** काजल, कज्जल, सुरमा।

अंजलि *स्त्री. (तत्.)* दोनों हथेलियों को मिलाने से बना हुआ किश्तीनुमा गड्डा जिसमें भर कर कुछ देय तत्व (जलदान, अन्नदान, पुष्पार्पण आदि) दिया जाता है।

अंजलिबद् ध *वि. (तत्.)* अंजलि बाँध ली है जिसने, ऐसी (स्थिति) जिसमें अंजलि बँधी हो, दोनों हाथ जोड़े हुए।

अंजाम *पुं. (फ़ा.)* परिभाषा, फल, नतीजा, अंत, समाप्ति। **उदा.** बुरे काम का अंजाम बुरा ही होता है।

अंट-शंट/संट *वि.* **दे.** अंड-बंड।

अंटार्कटिक प्रदेश *पुं.* दक्षिण ध्रुव के आस-पास का विशाल बर्फीला महाद्वीप जैसा स्थल क्षेत्र जहाँ पैंगुइन जैसा पक्षी बहुतायत में पाया जाता है।

अंड *पुं. (तत्.)* सा.अर्थ गोलाकार आकृति, अंडा। **जैसे**: ब्रह्मांडजीव। मादा जनन कोशिका जिसमें अगणित संख्या में गुण सूत्र होते हैं तथा पीतक झिल्ली से घिरा कम-ज्यादा मात्रा में पीतक ovum होता है।

अंडज/अंडप्रजक *वि./पुं. (तत्.)* अंडे से उत्पन्न होने वाले **जैसे**: पक्षी, सरीसृप (सर्प, छिपकली), मछली, मगरमच्छ आदि। oviparous **तु.** उद्‌भिज, जरायुज (पिंडज), स्वेदज।

अंडजोत्पत्ति *[अंडज+उत्पत्ति] स्त्री. (तत्.)* शा. अर्थ अंडे से उत्पन्न होना, अंडज प्राणी का जन्म लेना, प्रकट होना। **जीव.** बाह्य निषेचन वाले जंतुओं में (जैसे मेंढक) अंडावरण में भ्रूण का विकास पूर्ण होने पर बाहर निकलना (**जैसे:** टेडपोल का)

अंडप्रजक (= अंडज) *वि./पुं. (तत्.)* शा.अर्थ 1. अंडा जनने वाला, अंडा देने वाला 2. अंडे से उत्पन्न उन प्राणियों के लिए प्रयुक्त जो बच्चे न देकर अंडे देते हैं। **टि.** स्तनधारी प्राणियों mammals को छोड़कर लगभग सभी प्राणी इसी श्रेणी में आते है। **तु.** जरायुज।

अंड-बंड *वि. (तत्<अंड+अनु.बंड)* बेसिर-पैर का; भद्दा और अनुचित; ऊटपटांग; श्रृंखलाहीन।

अंडवाहिनी *स्त्री. (तत्.)* **जीव**. मानव में मादा जननांग (अंडाशय) से विकसित अंडाणु को गर्भाशय तक ले जाने वाला अंग; डिंबवाहिनी।

अंडा *पुं. (तद्.<अंड)* वह गोलाकार या लंब-गोलाकार कवच जिसमें पक्षी, सरीसृप, कीट, मछली आदि प्राणियों के भ्रूण विकसित होते हैं तथा परिपक्व होने के बाद कवच टूटने पर बाहर निकलते हैं। **टि.** इसीलिए ऐसे प्राणियों को द्विज अर्थात् 'दो बार जन्म लेने वाला' कहा जाता है।

अंडाकार *[अंड+आकार] वि. (तत्.)* अंडे जैसे आकार वाला। **पुं.** अंडे के समान बना आकार।

अंडाणु (डिंब) *[अंड+अणु] पुं. (तत्.)* मादा प्राणियों में अंडाशय द्वारा उत्पन्न परिपक्व जनन कोशिका।

अंडाशय *[अंड+आशय] पुं. (तत्.)* शा. अर्थ अंड के रहने की जगह; अंड का विश्राम स्थल, प्राणि. प्राणियों में प्रमुख मादा जनन-अंग जिससे अंडाणु उत्पन्न होता है। **टि.** कशेरूकी प्राणियों में इससे मादा लैंगिक हार्मोन भी निकलता है। **वन.** जायांग का निचला स्थूल अंश जिसमें बीजांड स्थित होता है।

अंडोत्सर्ग *[अं+उत्सर्ग] पुं. (तत्.)* **जीव**. स्त्री जननांग अंडाशय से विकसित अंडाणु (डिंब) का निर्मोचन।

अंत:करण *[अंतर/अंत:+करण] पुं. (तत्.)* शा.अर्थ आंतरिक कार्य करने का साधन। **मनो.** 1. मनुष्य की संकल्प-विकल्पात्मक और विवेकसम्मत भेद करने वाली चित्तवृत्ति। 2. *पुं.* सामान्य प्रयोग मन, हृदय, बुद्धि आदि।

अंत:कोण *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ भीतरी कोना **गणि.** त्रिभुज या बहुभुज के अंदर का कोण।

अंत:पाशन *[अंतर+पाशन]* शा.अर्थ भीतरी जोड़ या बाँधने की क्रिया। *पुं.* **इंजी.** परस्पर संपर्क में आने वाले दो पुर्जों, दोलित्रों के बीच की अनियमिताएँ जो एक-दूसरे में धँस जाती हैं, जिनसे घर्षण बढ़ जाता है। इसे स्नेहक grease से कम किया जा सकता है। (पर्या. अंतर्बंधन) interlinking

अंत:पुर *पुं. (तत्.)* भीतरी निवास; राजमहल का भीतरी भाग जहाँ रानियों और उनकी परिचारिकाओं के निवास की व्यवस्था रहती थी; जनानखाना।

अंत:प्रेरणा *स्त्री. (तत्.)* किसी कार्य को करने के लिए मन के भीतर से उठने वाला सहज विचार; सहज बुद्धि।

अंत:श्वसन *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ साँस अंदर लेना या खींचना। **जीव.** श्वसन क्रिया में वायुमंडल की ऑक्सीजन के शरीर के अंदर फेफड़ों तक पहुँचने/पहुँचाए जाने की क्रिया। inspiration **विलो.** बहिर्श्वसन, **दे.** श्वसन।

अंत:संबंध *पुं. (तत्.)* दो या दो से अधिक वस्तुओं के बीच पाया जाने वाला परस्पर संबंध।

अंत:स्थ *[अंतर्+स्थ] वि. (तत्.)* 1. भीतर या बीच का 2. अंत में स्थित **भाषा** पुं. संस्कृत व्याकरण परंपरा में य र ल व ये चार वर्ण (जिनका स्थान स्वरों और व्यंजनों के बीच माना जाता है।)

अंत:स्रवण *अ.क्रि.(तत्.)* शा.अर्थ भीतर की ओर बहना; अंदर ही अंदर (बाहर नहीं) बहना। *पुं.* **आयु.** पीयूष आदि अंत:स्रावी ग्रंथियों द्वारा हार्मोनों का प्रवाह जो सीधे रुधिर प्रवाह में मिल जाता है।

अंत:स्राव विज्ञान *पुं. (तत्.)* जीव विज्ञान की वह शाखा जिसमें हार्मोनों के स्रवण, प्रकृति, प्रभाव आदि का अध्ययन किया जाता है। endocrinology

अंत:स्रावी ग्रंथि *स्त्री. (तत्.)* **प्राणि.** मनुष्य एवं जंतुओं की जैव (शारीरिक) क्रियाओं के नियमन के लिए रुधिर प्रवाह में हार्मोनों का स्रवण करने वाली ग्रंथि। **उदा.** अग्न्याशय में लैंगर हैन्स द्वीप नामक ग्रंथि जो इन्सुलिन का स्राव करती है। endocrine gland

अंत:स्रावी *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ अंदर की ओर अर्थात्, भीतर बहने वाली **प्राणि.** (ग्रंथि के संबंध में) सीधे रुधिर प्रवाह में स्रवण करने वाली।

अंत1 *अव्य. (तत्.)* अंदर की ओर का, मध्य भाग में **टि.** हिंदी में सामान्यतया उपसर्ग के रूप में प्रयोग होता है। **जैसे:** अंत:करण, अंतर्मन, अंत:पुर, अंतस्तल।

अंत2 *पुं. (तत्.)* 1. वह स्थान जहाँ कोई वस्तु समाप्त होती है। **पर्या.** छोर, सिरा, सीमा 2. समाप्त होने का भाव **पर्या.** समाप्ति 3. नष्ट होने का भाव **पर्या.** नाश, मृत्यु end 4. फल, परिणाम result

अंतत: *(अंत+त:) (तस्) क्रि.वि. (तत्.)* 1. अंत में 2. सारे उपाय कर चुकने पर 3. आखिर में। **पर्या.** अंततोगत्वा।

अंततोगत्वा *[अंतत:+गत्वा] (तत्.)* **अव्य.** शा.अर्थ अंत में जाकर; आखिरकार, अंतत:।

अंतरंग *[अंतर्+अंग]* **अव्य.** *(तत्.)* शा.अर्थ भीतर के अंग (यानी हृदय) जैसा। *वि.* 1. निकट का, घनिष्ठ, आत्मीय। **जैसे**: अंतरंग मित्र। 2. भीतरी। **जैसे:** अंतरंग विभाग।

अंतर *पुं. (तत्.)* 1. दो या दो से अधिक वस्तुओं, व्यक्तियों, विचारों, स्थानों आदि के बीच का अंतर। difference **जैसे**: तुम्हारे और मेरे/हमारे विचारों में भारी अंतर है। 2. परिवर्तन change **जैसे:** ज्यों-ज्यों उसके विचार परिपक्व होते गए, त्यों-त्यों उसके व्यवहार में अंतर आता गया। **3. उपसर्ग-**दो या दो से अधिक के बीच। **जैसे**: अंतरराष्ट्रीय संबंध (कई राष्ट्रों के बीच स्थापित संबंध, अंतरविश्वविद्यालयी प्रतियोगिता (कई विश्वविद्यालयों के बीच हुई प्रतियोगिता)।

अंतरण *[अंतर्+न] पुं. (तत्.)* बदलना, बदलाव, एक स्थिति से दूसरी स्थिति में परिवर्तन का भाव, एक हाथ से दूसरे हाथ में जाना या एक स्थान से दूसरे स्थान में हुआ परिवर्तन। **जैसे**: (पुस्तक का) हस्तांतरण, (अधिकारी का) स्थानांतरण आदि।

अंतरतम *[अंतर+तम] वि. (तत्.)* अत्यंत निकट का; आत्मीय, अत्यंत विश्वस्त, जिस पर पूरा भरोसा किया जा सके। **उदा.** मनोहर मेरा अंतरतम मित्र है।

अंतरा अव्य. *(तत्.)* निकट; मध्य। *पुं.* (संगीत) किसी गीत के स्थायी (टेक) को छोडक़र शेष चरण जिन्हें स्थायी की अपेक्षा ऊँचे/तीव्र स्वर में गाया जाता है।

अंतरात्मा *[अंतर्+आत्मा] स्त्री. (तत्.)* पंच भौतिक शरीर के अंदर स्थित आत्मा या जीवात्मा। चेतनशक्ति। **पर्या.** 1. आत्मा, 2. अंत:करण, 3. जीवात्मा।

अंतराल *पुं. (तत्.)* समय के स्तर पर दो बिंदुओं के बीच की दूरी। **उदा.** लंबे अंतराल के बाद हम लोगों की भेंट हुई (समय का अंतराल)। **तु.** दूरी (स्थान का अंतराल)

अंतरिक्ष *पुं. (तत्.)* **भू.** पृथ्वी के वायुमंडल के बाहर का निर्वात स्थान। space

अंतरिक्ष यान *पुं. (तत्.)* अंतरिक्ष में यात्रा के लिए प्रयुक्त वाहन। space ship/craft

अंतरित *वि. (तत्.) [अंतर+इत]* एक स्थिति से दूसरी में परिवर्तित, बदला हुआ। **जैसे:** स्थानांतरित, हस्तांतरित।

अंतरिम [अनुकूलित शब्द interim से] *वि.* दो कालखंडों के बीच का, मध्यवर्ती, अस्थायी/अनंतिम (व्यवस्था)। **उदा.** 1. पत्र का अंतरिम उत्तर भेजा जा चुका है। 2. आम चुनाव से पहले सरकार अपना अंतरिम बजट लोकसभा में प्रस्तुत करेगी।

अंतरीप *पुं. (तत्.)* **भू.** समुद्र के भीतर घुसा मुख्य भूमि का सँकरा भूभाग, **जैसे:** कुमारी अंतरीपा cape

अंतर् उप. *(तत्.)* 'अंदर का' या 'भीतरी' भाव का वाचक (उपसर्ग) **जैसे:** अंतर्दशा, अंतर्देशीय, अंत:वस्त्र, अंतविश्वविद्यालयी प्रतियोगिता (एक ही विश्वविद्यालय के भीतर (आंतरिक विभागों के बीच) हुई प्रतियोगिता।

अंतर्कथा *(अंतर्/अंत:+कथा) स्त्री. (तत्.)* किसी मुख्य प्रसंग में संकेतित उसके भीतर की दूसरी कथा या घटना। **उदा.** महाभारत में कई अंतर्कथाएँ समाहित हैं।

अंतर्गत *[अंत:+गत] वि. (तत्.)* 1. किसी के अंदर भीतर गया हुआ, छिपा हुआ या समाया हुआ। 2. किसी का अंग बनकर उसमें स्थित।

अंतर्गामी *[अंत:+गामी] वि. (तत्.)* भीतर की ओर जाने वाला।

अंतर्ग्रहण *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ भीतर की ओर प्राप्त करना। **आयु.** मुख मार्ग से शरीर के अंदर भोजन ले जाने की क्रिया।

अंतर्जनन *[अंतर्+जनन] पुं.(तत्.)* मादा शरीर के अंदर होने वाला भ्रूणीय परिवर्धन। एंडोटोकी **विलो.** बहिर्जनन। endotoky

अंतर्दृष्टि *[अंतर्/अंत:+दृष्टि] (तत्.) स्त्री.* शा. अर्थ भीतरी दृष्टि, ज्ञान चक्षु। वह मानसिक शांति जिसके बल पर दूसरे व्यक्ति के मन की बात या भविष्य को जाना जा सके।

अंतर्द्वंद्व *पुं. (तत्.)* मन के अंदर चलने वाले दो परस्पर विराधी विचारों का संघर्ष। **पर्या.** तर्क-वितर्क, ऊहापोह।

अंतर्धान *(तत्.) पुं. [अंत:+धान]* अदृश्य या लुप्त हो जाने की स्थिति दिखाई पड़ना। अंतर्धान होना (दिखाई न पड़ना); आँखों के सामने से ओझल होना। **टि. 'अंतर्धान'** को 'अंतर्ध्यान' लिखना या बोलना अशुद्ध है। **पर्या.** गायब, लुप्त।

अंतर्धारा *स्त्री. (तत्.)* 1. नदी, समुद्र आदि में गहराई में बहने वाला प्रवाह जो ऊपर से नहीं दिखाई देता। 2. किसी समाज, वर्ग इत्यादि में अंदर-अंदर चलने वाले विचारों का प्रवाह जो धारणा या पूर्वाग्रह के रूप में कभी-कभी प्रकट हो जाते हैं। under current

अंतर्निहित *[अंत:/अंतर+निहित] वि. (तत्.)* किसी के अंदर स्थायी रूप से अथवा उसकी विशेषता के रूप में स्थित। **जैसे:** हिंदी वर्णमाला के प्रत्येक व्यंजन में 'अ' स्वर अंतर्निहित रहता है। inherent

अंतर्मुखी *[अंतर्+मुख+ई] वि.(तत्.)* शा.अर्थ जिसका मुख अपने अंदर की ओर ही खुले। *पुं.* (ऐसा व्यक्ति) जो मुख्य रूप से अपने ही विचारों और भावनाओं में खोया रहे। **वि.** बहिर्मुखी। introvert

अंतर्यामी *[अंतर्+यामी] वि.(तत्.)* शा.अर्थ जिसने अपने और (अन्य सभी के भी) मन पर नियंत्रण कर रखा हो। अर्थात् सभी के मन की बात जानने वाला। पुं. ईश्वर।

अंतर्वस्तु *[अंतर्+वस्तु] स्त्री. (तत्.)* शा.अर्थ भीतर रखी/स्थित वस्तु। किसी पुस्तक में वर्णित मुख्य विषय। **पर्या.** विषय-वस्तु।

अंतर्वस्त्र *[अंतर्+वस्त्र] पु. (तत्.)* भीतर पहनने का कपड़ा/कपड़े under garments

अंतर्विरोध *[अंतर्+विरोध] पुं. (तत्.)* शा.अर्थ भीतरी विरोध। विक.अर्थ दो कथनों के बीच परस्पर विचारात्मक विरोध।

अंतर्विवाह *[अंतर्+विवाह] पुं. (तत्.)* **समा.** अपने गोत्र को छोड़कर। एक ही वर्ग, समाज या जाति में पूर्व निर्धारित तत्कालीन स्थानीय नियमों के अनुसार किया गया विवाह। **तु.** बहिर्विवाह।

अंतर्विष्ट *[अंतर्+विष्ट] वि. (तत्.)* एक के दूसरे में सम्मिलित होने या किए जाने की स्थिति; मिलाया हुआ, समाया हुआ। **उदा.** आपने अब जो कहा, वह तो आपकी पहले वाली बात में अंतर्विष्ट है ही।

अंतर्वृत्त *पुं. (तत्.)* वह वृत्त जो त्रिभुज की तीनों भुजाओं को स्पर्श करता है और पूर्ण रूप से त्रिभुज के अंदर होता है। 2. वृत्त के अंदर बना दूसरा वृत्त। incircle

अंतर्वेद *पुं. (तत्.)* वह क्षेत्र जो दो नदियों के बीच स्थित है। दोआबा। **जैसे:** उत्तर प्रदेश का फतेहपुर जिला अंतर्वेद में है, क्योंकि यह गंगा और यमुना नदियों के बीच में है।

अंतर्वेदना *[अंतर्+वेदना] स्त्री. (तत्.)* अंत:करण/मन में महसूस किया जा रहा कष्ट, मन की व्यथा।

अंतर्व्यथा *[अन्तर्+व्यथा] स्त्री. (तत्.)* मन में अनुभव की जाने वाली कोई पीड़ा या हृदय की पीड़ा जिसे व्यक्त करना कठिन हो। **पर्या.** अंतर्वेदना **उदा:** तुम किस अंतर्व्यथा का ताप झेलते निसदिन।

अंत-र्व्यापी *[अंतर्+व्यापी] वि. (तत्.)* सभी में व्याप्त, सभी में समाया हुआ।

अंतर्संबंध *[अंतर्+संबंध] पुं. (तत्.)* दो या दो से अधिक इकाइयों के बीच विकसित परस्पर संबंध।

अंतस्तल *[अंतर्+तल] पुं. (तत्.)* हृदय या मन की गहराई।

अंतस्थ *वि.* **दे.** अंत:स्थ

अंतहीन *[अंत+हीन] वि. (तत्.)* अंत से रहित, जिसका अंत न हो, असीम।

अंतिम *[अंत+इम] वि. (तत्.)* क्रमानुसार सबसे पीछे या बाद का **पर्या.** आखिरी।

अंतिम क्रिया *स्त्री. (तत्.)* शरीर छूटने के बाद की संस्कार विधि।

अंतेवासी [*अंत:>अंते+वासिन्*] *पुं.* (*तत्.*) (गुरुकुल परंपरा में) गुरु के पास रहकर शिक्षा प्राप्त करने वाला, शिष्य inmate 2. किसी के साथ रहकर काम सीखने वाला, प्रशिक्षु। apprenticen

अंत्यज *[अंत्य+ज] वि./पुं. (तत्.)* (वर्णव्यवस्था के सोपान क्रम के) अंतिम स्तर में जन्मा (व्यक्ति)। जाति प्रथा के अंतर्गत 'शूद्र' कहा जाने वाला चौथा वर्ण, अछूत; (आधुनिक शब्दावली में) दलित (वर्ग)।

अंत्याक्षरी *[अंत्य+अक्षर+ई] वि. (तत्.)* अंतिम अक्षर *स्त्री.* अंतिम अक्षर से शुरू होने वाली मनोरंजक बौद्धिक प्रतियोगिता जिसमें एक दल द्वारा सुनाए गए पद्य के अंतिम अक्षर को आधार बनाकर दूसरा दल नवीन पद्य सुनाता है और पुनरुक्ति रहित। यही क्रम तब तक चलता रहता है जब तक कोई दल असफल न हो जाए।

अंत्येष्टि *[अंत्य+अंतिम+इष्टि=कर्म/क्रिया] स्त्री. (तत्.)* व्यक्ति की मृत्यु के पश्चात् किए जाने वाले धार्मिक कर्मकांड, **पर्या.** अंतिम संस्कार, अंत्यकर्म।

अंदर *अव्य. (फ़ा.)* भीतर, में *पुं. (फ़ा.)* भीतरी भाग **उदा.** संदूक के अंदर से कपड़े निकाले।

अंदरूनी *वि. (फा.)* भीतर का, अंदर का, भीतरी।

अंदाज़ *पुं. (फा.)* 1. अनुमान, अटकल, 2. ढंग, तरीका 3. हाव-भाव, 4. कूत या नाप-जोख। **उदा.** 1. .....'गालिब का है अंदाजे बयाँ और' 2. शर्माजी के बोलने का अंदाज़ सबसे निराला है।

अंदाज़न *क्रि.वि. (फ़ा.)* अंदाज से, अनुमान से, अनुमानत:। **उदा.** उसने दाल में अंदाज़ से नमक डाल दिया।

अंदाज़ा *पुं. (देश.)* अंदाज़ **उदा.** चुनाव के परिणाम के बारे में उसका अंदाज़ा सही निकला।

अंदेशा *पुं. (फ़ा.)* संभावित दुष्परिणाम का भय, आशंका, संशय, भय, शुबहा, चिंता। **उदा.** काजी जी दुबले क्यों? - शहर के अंदेशे से।

अंध बिंदु *पुं. (तत्.)* **प्राणि**. कशेरू की प्राणियों की आँख में प्रकाश के प्रति असंवेदी भाग जहाँ पर दृक् तंत्रिका दृष्टि का पटल (रेटिना) प्रवेश करती है। blind spot

अंध *वि.* अंधकार/अँधेरे से संबंधित; अंधों (नेत्रहीनों) का **जैसे:** अंध-विद्यालय ला.अर्थ अज्ञानी, मूर्ख, बिना सोचे-समझे किसी के कथनानुसार किया जाने वाला **जैसे:** अंधानुकरण, अंधविश्वास, अंधश्रद्धा।

अंध विश्वास *[अंध-विश्वास] पुं. (तत्.)* शा.अर्थ अंधों की तरह विश्वास रखना। सा.अर्थ तर्क की दृष्टि से आधारहीन बातों को मानते रहना। **जैसे:** 'उसने छींक दिया है। थोड़ी देर रुक जाओ।' यह अंध-विश्वास नहीं तो क्या है? **तु.** अंध श्रद्धा

अंधकार *[अंध+कार] पु.(तत्.)* देखने में असमर्थ कर देने वाला। शा.अर्थ अंधा कर देने जैसा, अँधेरा, प्रकाश का न होना। ला.अर्थ ज्ञान (रूपी प्रकाश) का अभाव, अज्ञान।

अंधड़ *पुं.* धूल भरी आँधी (जिसमें कुछ भी साफ़-साफ़ न दिखाई दे)। शा.अर्थ अंधा कर देने जैसा (वातावरण)।

अंधमहासागर *पुं. (तत्.)* अटलांटिक ओशन (अतलांत महासागर) के लिए प्रयुक्त एक पर्याय जो मोटे तौर पर यूरोप और अफ्रीका के पश्चिमी तट से लेकर उत्तरी अमेरिका के पूर्वी तट तक फैला है। **पर्या.** अतलांत महासागर atlantic ocean

अंधश्रद्धा *[अंध+श्रद्धा] स्त्री.(तत्.)* शा.अर्थ अंधों की तरह श्रद्धा रखना। सा.अर्थ स्वविवेक रहित यानी बिना सोच-विचार किए अपने इष्ट के प्रति पूज्य भाव रखते हुए उसका पूर्ण विश्वास करना।

अंधा *वि. (तत्.)* देखने की शक्ति से रहित, देखने में असमर्थ, दृष्टिहीन, नेत्रहीन।

अंधा-धुंध *वि./क्रि.वि.* शा.अर्थ धुंध में अंधों की तरह बिना कुछ भी सोचे-समझे हुए, बहुत तेज़ी से, विवेकहीन रीति से।

अंधानुकरण *[अंध+अनुकरण] पुं. (तत्.)* बिना सोचे-समझे किसी की नकल मात्र करना या उसके कहे अनुसार आचरण करना, भेड़चाल।

अंधेर *पुं. (तद्. <अंधकार)* 1. शासन/प्रशासन की वह स्थिति जहां सोच-विचार या न्याय-अन्याय को स्थान न हो। 2. बहुत अधिक अव्यवस्था या कुप्रबंधन।

अंबर *पुं. (तत्.)* 1. आकाश, असमान।2. वस्त्र, परिधान, पहनने का कपड़ा।

अंबा *स्त्री. (तत्.)* 1. माँ, माता। 2. गौरी, पार्वती।

अंबार *पु. (फा.)* ढेर, समूह, राशि। **जैसे:** फलों या वस्त्रों का अंबार।

अंबु *पुं. (तत्.)* जल, पानी वारि, नीर।

अंबुज *[अंबु+=पानी ज] पुं. (तत्.)* मूल अर्थ जल में जन्म लेने वाला सा.अर्थ कमल दे.

अंबुधि *[अंबु+धि] पुं. (तत्.)* शा.अर्थ जल का भंडार या आगार, जल को धारण करने वाला। **पर्या.** सागर, समुद्र।

अंत्य *वि. (तत्.)* सा.अर्थ किसी भी वस्तु, वर्ण आदि के उसकी सीमा में होने की स्थिति। **जैसे:** 'स्वागत' शब्द में अंत्य अक्षर 'त' है।

अंश *पुं. (तत्.)* सा.अर्थ भाग, हिस्सा। 1. **गणि.** भिन्न संख्या में पंक्ति के ऊपर का अंक, भाज्य संख्या, वह संख्या जिसका भाग करना है। 2. लेख का उद्‌भूत किया जाने वाला अंश passage 3. **वाणि.** कंपनी की संपूर्ण पूँजी का व्यक्तिश: भाग share 4. भू. वृत्त की परिधि का 360 वाँ भाग degree 5. **खगो.** चंद्रमा की एक कला, सोलहवाँ भाग 6 **आयु.** कंधा।

अंशकालिक *[अंश+काल+इक] वि. (तत्.)* थोड़े समय के लिए होने वाला, कुछ काम के लिए किया जाने वाला part time **जैसे**: अंशकालिक कर्मचारी **विलो.** पूर्णकालिक

अंशु *स्त्री. (तत्.)* सूर्य की किरणें।

अंशुमाली *[अंशु+माली] पुं. (तत्.)* शा.अर्थ किरणों की माला तैयार करने वाला, किरणों का संग्रह। **पर्या.** सूर्य।

अँखिया *स्त्री. बहु. [<आँख < तद्. सं. अक्षि]* आँखे **बहु.** वह इंद्रिय जिससे प्राणियों को रूप, रंग तथा आकार का ज्ञान होता है। **पर्या.** नेत्र, नयन, दृष्टि। **उदा.** अँखिया हरिदरसन को प्यासी (मीरा)। **दे.** आँख।

अँखुआ *पुं. (तद्.<अंकुर)* बीज के अंकुरित होने की प्रक्रिया में प्राथमिक लक्षण।

अँगड़ाई *स्त्री. [तद्.>अंगगेटिका]* शरीर की स्वाभाविक संरचना में कृत्रिम रूप से माँसपेशियों में खिंचाव पैदा करने की क्षणिक क्रिया जो कदाचित् आलस्य अथवा थकान से शरीर को चैतन्यावस्था में लाने हेतु बाँहों और/या टाँगों को फैलाकर प्रकट होती है।

अँगिया *स्त्री. (तद्.>अंगिका)* शरीर के कटि भाग से ऊपरी हिस्से में पहना जाने वाला महिलाओं का एक परिधान; चोली, कंचुकी।

अँगीठी *[तद्.>अग्निष्ठिका] स्त्री.* (मुख्यत: खाना पकाने और गौणत: शीत ऋतु में शरीर को गर्मी पहुँचाने के लिए) आग जलाने का मिट्‌टी या लोहे से बना पात्र।

अँगूठा छाप *वि. (तद्.)* (व्यक्ति) जो हस्ताक्षर के स्थान पर अँगूठे की छाप लगाता हो, अनपढ़।

अँगूठा *पुं. (तद्.>अंगुष्ठ)* मनुष्य के हाथ और पैर की उँगलियों में से के किनारे वाला वह

अपेक्षाकृत कम लंबा पर अधिक मोटा अंग जो शेष चारों अंगुलियों की तुलना में अधिक सक्रिय रहता है। **पर्या.** अंगुष्ठ **तु.** अंगुलि, उँगली **मुहा.** अँगूठा चूसना - अबोध शिशु जैसी (बचकानी) हरकतें करना **उदा.** बेटे! अब तुम बड़े हो गए हो। अपनी अँगूठा चूसने वाली हरकतें छोड़ो।

अँगूठी *स्त्री. (तद्.)* अंगुली में पहना जाने वाला गोलाकार आभूषण, मुंदरी।

अँगोछा *[अंग+अच्छक=स्वच्छकारी] पुं. (तद्.)* पानी से गीले या पसीने से तर शरीर को पोंछने के काम आने वाला वस्त्र; गमछा, तौलिया।

अँटना (देश.) 1. समाना **उदा.** इस बरतन में कितना पानी अँट सकता है? कितना पानी समा सकता है? भरा जा सकता है? 2. सन जाना, भर जाना **उदा.** सारा जंगल धूल से अँट गया।

अँतड़ी *[आँत+ड़ी] (तद्.<आंत्र) स्त्री.* आँत, प्राणियों के आमाशय के निचले भाग से जुड़ा लंबा नलिका-तंत्र जिसमें पाचन और अवशोषण क्रिया के बाद मलावशेष गुदा द्वार से होकर बाहर निकल जाता है। **टि.** आँत में जुड़ा-ड़ी प्रत्यय अवमाननासूचक और क्षुद्रताबोधक अर्थ का वाचक है।

अँधेरा/अँधियारा *(तद्.) (< अंधकार) पुं.* अंधकार, प्रकाश का सर्वथा अभाव **विलो.** प्रकाश रोशनी।

अकड़ *स्त्री. (देश.)* 1. ऐंठने की क्रिया अथवा भाव, ऐंठ, तनाव, हेकड़ी 2. घमंड, अभिमान, शेखी के प्रदर्शन का भाव।

अकथ वि. दे. अकथनीय।

अकथनीय [*अ+कथन+ईय*] *वि. (तत्.)* 1. जिसका कथन न किया जा सके, जिसका वर्णन करना कठिन हो। 2. जो कहने के योग्य न हो। **विलो.** कथनीय।

अकथ्य [*अ+कथ्य*] **वि.** कहने के योग्य न होना। **विलो.** कथ्य।

अक बक वव [*अक+बक<बकना*] *पुं. (देश.)* 1. आवेशवश या स्वभावश की जाने वाली संबद्ध बातें। निरर्थक बात। 2. अनर्गल प्रलाप। **जैसे**: बहुत हो गया अब अक-बक बंद करो। *वि.* चकित, भौंचक्का **जैसे:** वह सहसा तुम्हें देखकर अक-बक रह गया।

अकबकाना- *[अकबक-देश.]* (अ.क्रि.) 1. आश्चर्यचकित होना, भौंचक्का रह जाना। 2. निरर्थक बातें करना। 3. घबराना। **उदा.** 1. वह तुम्हारा वैभव/उन्नति देखकर अकबका गया। 2. वह मार्ग में सहसा तीव्र गति से आते वाहन को देखकर अकबका गया। 3. अधिक अकबकाना ठीक नहीं।

अकर्मक *वि.(तत्.)* व्याकरण (क्रिया का वह प्रकार) जिसमें कर्म नहीं होता। **जैसे:** सोना, जागना, हँसना इत्यादि) intransitive

अकर्मण्य [*अ+कर्मण्य*] *वि. (तत्.)* कार्य के योग्य, कर्मठ। (व्यक्ति) जो स्वभाव से ही काम में रूचि न लेता हो। **जैसे:** अकर्मण्य व्यक्ति। **पर्या.** निकम्मा, आलसी। जो काम न करता हो। **पर्या.** निठल्ला।

अकसर/अक्सर *क्रि.वि. (अर.)* प्राय:, बहुधा, अधिकतर। अमूमन (उमूमन) **उदा.** मैं उन्हें अच्छी तरह से जानता हूँ क्योंकि वे अक्सर हमारे घर आते रहते हैं।

अकस्मात् [*अ+कस्मात्*] *क्रि.वि. (तत्.)* 1. यकायक, एकाएक, आकस्मिक रूप में, एकदम से, अचानक, सहसा। 2. बिना किसी कारण के, अकारण, संयोगवश ही। **उदा.** उसके अकस्मात् घर आ जाने पर मैं भौचक्का रह गया।

अकाट्य *[***अ+काट्य***] वि. (दे. काटना)* 1. जिसका काट या खंडन न किया जा सके। **जैसे:** अकाट्य तर्क। **टि.** हिंदी की 'काट' धातु से संस्कृत पद्धति पर बना। 'काट्य' यानी 'जिसे काटा जा सके' और फिर उसमें नकारात्मक 'अ' उपसर्ग जोडक़र बना शब्द।

अकादमिक *वि. (अं.)* 1. अकादमी (संस्था) से संबंधित 2. उच्चतर शिक्षा में साहित्य, विज्ञान, गणित, भाषा आदि विषयों के ज्ञान से संबंधित।

अकादमी/अकादेम *स्त्री. (अं.)* ऐकडमी का अनूकूलित रूप संस्था जिसका उद्देश्य साहित्य, विज्ञान, कला आदि का प्रचार-प्रसार और विकास

करना हो। **जैसे:** साहित्य अकादमी, संगीत नाटक अकादमी।

अकाम [*अ+काम]* *वि.* जिसके लिए कोई लालसा या इच्छा नही हो; कामनारहित, इच्छारहित उदासीन, निष्काम। *क्रि.वि.* बिना काम के, निष्प्रयोजन, व्यर्थ, योंही।

अकारण *[अ+कारण]* अव्य. *(तत्.)* बिना किसी कारण के; व्यर्थ, यों ही; संयोगवश बिना किसी मतलब के; बेमतलब। **उदा.** अकारण ही मेरे पीछे पड़ा हुआ है। *वि. हेतु* या कारणरहित, आपसे आप होने वाला। निराधार। **जैसे**: अकारण हड़ताल।

अकारांत- *वि.* 1. जिसका अंतिम वर्ण 'अ' हो। 2. जिसके अंतिम वर्ण में 'अ' स्वर उच्चरित हो, यथा-'राम', 'कमल', 'बालक' आदि। **टि.** उपर्युक्त शब्दों के संस्कृत लेखन और उच्चरण में-अर्थात दोनों ही रूपों में 'अ' है; जबकि हिंदी में ये शब्द केवल लेखन के स्तर पर ही अकारांत (स्वरांत) हैं। उच्चारण के स्तर पर ये सभी व्यंजनांत् ही हैं।

अकारादि क्रम *पु.* शा.अर्थ **'अकार'** जिसके आदि में हो वह क्रम अर्थात देवनागरी वर्णमाला के अनुसार 'अ' से प्रारंभ होकर 'ह' तक के वर्णों का क्रम, शब्द-क्रम। यही क्रम। शब्दकोशों में मिलता है। alphabetical order

अकार्बनिक [अ+कार्बन+इक] (अंग्रेजी+हिंदी/संस्कृत का संकर शब्द) *वि.-कार्बन* के जटिल यौगिकों को छोडक़र अन्य सभी तत्त्वों के यौगिकों से संबंधित, कार्बनिक से भिन्न, **जैसे**: अकार्बनिक रसायन।

अकाल [अ+काल] *पुं. (तत्.)* 1. ऐसा समय जो सामान्य समय जैसा न हो; वह वर्ष या समय जब अन्न न मिलता या पैदा न हुआ हो। दुर्भिक्ष- **जैसे:** आजकल अकाल की स्थिति है। 2. कालातीत, काल के परे, जो कभी मिटता या नष्ट न होता हो। जैसे-अकाल पुरुष। 3. असामयिक, **जैसे:** अकाल मृत्यु।

अकाल मृत्यु *स्त्री. (तत्.)* नियत समय से पहले या कम आयु में मृत्यु। **पर्या.** असामयिक मृत्यु। **तु.** आकस्मिक मृत्यु।

अकालवृष्टि *स्त्री. (तत्.)* यथासमय से पहले या बाद में होने वाली वर्षा, जो हानिकारक होती है, या जिसका कोई लाभ नहीं होता है।

अकिंचन *वि. (तत्.)* शा.अर्थ जिसे जीवन निर्वाह के लिए अनिवार्य आवश्यकताएँ (**जैसे:** रोटी, कपड़ा, मकान) भी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध न हो। पास कुछ भी न हो अर्थात बहुत ही गरीब, अत्यंत दीन; निर्धन, दरिद्र, बहुत ही मामूली या बहुत साधारण।

अकुलाना अ.क्रि. *[तद्<आकुलन]* किसी अभाव की पूर्ति न हो पाने के कारण मन मे होने वाली बेचैनी।

अकुलाहट *[तद्+आहट हि. प्रत्यय]* स्त्री. पर्या. आकुलता, व्याकुलता, बेचैनी। **दे.** अकुलाना।

अकुलीन [*अ+कुलीन*] *वि. (तत्.)* जो किसी कुलीन अर्थात उच्च कुल या वंश में पैदा न हुआ हो; नीच कुल में उत्पन्न।

अकुशल [अ+कुशल] *वि.(तत्.)* 1. जो कुशल न हो, जो सौंपे गए कार्य को अपेक्षित दक्षता से न करे। 2. जिसे अपने व्यवसाय का तकनीक प्रशिक्षण न मिला हो। **जैसे**: यह संस्था अकुशल व्यक्तियों को नहीं रखती है। **पर्या.** अनाड़ी **जैसे:** अकुशल कारीगर या मज़दूर।

अकुशलता *स्त्री. (तत्.)* कुशल या दक्ष न होने का भाव; अनाड़ीपन। **दे.** अकुशल।

अकृत्रिम [*अ+कृत्रिम*] *वि.(तत्.)* जो बनावटी न हो; असली, स्वाभाविक। **जैसे**: कृत्रिम जीवन-यापन।

अकेला [<सं.एकल] *वि.(तद्.)* 1. जो बिना किसी संगी-साथी के हो जिसके साथ कोई न हो, एकाकी। 2. जो अपनी तरह का एक ही हो, जिसके जैसा कोई और न हो, बेजोड़, अद्‌वितीय। अद्‌वितीय, बेजोड़।

अकेले-क्रि.वि. *(तद्.<एकल)* बिना किसी का साथ लिए। **टि.** अधिक बल देने के लिए 'अकेले-अकेले' प्रयोग किया जाता है।

अकेले-दुकेले *क्रि.वि.* (**दे.** अकेले) अकेले या किसी अन्य को साथ लेकर।

अक्खड़ *वि. (हि.)* (तद्.-आस्कंदक) 1. जो दूसरे की बात न मानते हुए अपनी ही बात पर अड़ा रहे। 2. बिना धीरज रखे लड़ पड़ने वाला उजड्ड,

उद्धृत, झगड़ालू। 3. मूर्ख, जड़, बिना विचारे दो टूक कह देने वाला। अशिष्ट, उग्र, निडर आदि।

अक्खड़पन *पु. (तद्.)* स्वभाव से अक्खड़ होने का भाव। **दे.** अक्खड़।

अक्लमंद *वि.* (अ.+फा.) चतुर, होशियार, बुद्धिमान, समझदार।

अक्ल *स्त्री. (अर.)* बुद्धि, समझ, सूझ-बूझ **मुहा. अक्ल का अंधा**-सामान्य ज्ञान या समझदारी से रहित (व्यक्ति), मूर्ख। **अक्ल का दुश्मन**-बहुत बड़ा मूर्ख, बेवकूफ। **अक्ल का मारा**-जिसमें समझदारी का पूरी तरह से अभाव हो। **अक्ल के पीछे लट्ठ लिए फिरना** हर समय बेवकूफी का काम करना। **अक्ल का घास चरने जाना**-समझदारी की बहुत अधिक कमी। **अक्ल पर पत्थर/परदा पड़ना**-सामान्य समझदारी होने पर भी आवश्यकता पड़ने पर उसका उपयोग न करना। **अक्ल के घोड़े दौड़ाना**-अनेक प्रकार की बौद्धिक कल्पनाएँ करते रहना। **अक्ल ठिकाने लगा देना** होश में ला देना (मारपीट या अन्य तरीके से) **अक्ल दौड़ना'/भिड़ना/लड़ाना**-सोच-विचार करना, गौर करना। **अक्ल पर पर्दा पड़ना-** कुछ भी समझ न पाना, अक्ल मारी जाना। **अक्ल चकराना**-हैरान अथवा चकित होना। **अक्ल गुम होना**-कुछ समझ में न आना। **अक्ल लड़ाना**-कुछ उपाय सोचना। **अक्ल के तोते उड़ जाना**-होश ठिकाने न रहना। **अक्ल से बाहर होना** दूर होना-कुछ समझ न सकना।

अक्लांत *[अ+क्लांत] वि.(तत्.)* जो थका न हो, जो परेशानी/थकावट/क्लांति महसूस न करे, क्लांति-रहित।

अक्ष *पुं. (तत्.)* 1. जुआ चौसर आदि खेलने का पासा। 2. **इंजी.** पहिये का धुरा (लौहदंड) जिसके सहारे पहिया घूमता है exil 3. **भूगो.** वे कल्पित रेखाएँ जो भूगोलक पर भूमध्य रेखा से समान अंतर पर पड़ी हुई दिखाई जाती है और स्थानगत दूरी मापने के लिए उपयोग में आता है। globe

अक्षत *[अ+क्षत] वि. (तत्)* शा.अर्थ जो क्षत या क्षतिग्रस्त न हुआ हो; जिसके टुकड़े न हुए हों, जिसे खोट न लगी हो; समूचा पूर्ण, अखंडित, जिसे चोट न लगी हो; जो घायल न हुआ हो।। *पुं.* बिना टूटा या कुटा हुआ चावल, जौ, धान्य। विलो.-क्षत।

अक्षम [*अ+क्षम*] *वि. (तत्.)* 1. कार्य करने की क्षमता न रखने वाला। 2. जो सौंपा गया कार्य करने के योग्य न माना जाए। जिसमें क्षमता अर्थात शक्ति की कमी हो, शक्तिहीन, क्षमताहीन, असमर्थ, अयोग्य। विलो. क्षम (सक्षम नहीं) disabled, iucompetent

अक्षमता *स्त्री.(तत्.)* अक्षम होने की अवस्था, असमर्थता। **दे.** अक्षम।

अक्षम्य [अ+क्षम्य**]** *वि. (तत्.)* जिसे क्षमा न किया जा सके। **जैसे**: अक्षम्य अपराध। **विलो.** क्षम्य। **क्षम्य-वि.** *(तत्)* जिसे क्षमा किया जा सके। जैसे-तुम्हारे अब तक के अपराध क्षमा है।

अक्षम्य *वि. (तत्.)* क्षमा न करने योग्य, जिसे क्षमा न किया जा सके। **जैसे:** अक्षम्य अपराध।

अक्षय [*अ+क्षय*] *वि. (तत्.)* शा.अर्थ जिसका क्षय न हुआ हो; सदा एक समान बना रहने वाला; अविनाशी।

अक्षय पात्र *पुं.(तत्)* ऐसा पात्र जिसमें पकाई गई भोजन सामग्री कभी समाप्त नहीं होती। **टि.** वनवास के समय द्रौपदी को सूर्यदेव से अक्षयपात्र मिला था। जब तक द्रौपदी भोजन नहीं कर लेती थीं, तब तक उसमें से भोजन समाप्त नहीं होता था।

अक्षर [अ+क्षर**]** *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ जिसका क्षरण यानी नाश न हो। **भाषा.** 1. वह ध्वनि या ध्वनि समूह जिसका उच्चारण एक साँस में होता है, अक्षरी **जैसे:** मैं, हाँ, आप। 2. वर्णमाला का कोई स्वर या व्यंजन वर्ण letter, phabet 3. अविनाशी परमात्मा, आत्मा, ब्रह्म, नित्य, स्थिर।

अक्षर क्रम *पुं. (तत्.)* वर्णमालाओं के अक्षरों (वर्णों) का परंपरागत पूर्व-निर्धारित क्रम। **जैसे:** देवनागरी वर्णमाला में अ से ह तक। रोमन में a से z तक। अरबी में अलिफ से हे तक। aliphabatical order शब्दकोश को देखने के लिए अक्षर-क्रम जानना जरूरी है।

अक्षरमाला *स्त्री. (तत्.)* अक्षरों की माला; सभी वर्णों की क्रमबद्ध सूची। वर्णमाला

अक्षरशः [अक्षर+शः] *क्रि.वि. (तत्.)* शस् (वीप्सा वाले अर्थ में) एक-एक अक्षर करके; ज्यों का

त्यों, पूर्णतः। **उदा.** आपका कथन अक्षरशः सत्य है।

अक्षरारंभ [अक्षर+आरंभ] *पुं. (तत्.)* विद्यारंभ की वह पहली अवस्था जब शिशु का हाथ पकडकर उसे पट्टी पर अक्षरज्ञान कराया जाता है। (पढ़ाना शुरू करना)

अक्षरी *स्त्री. (तत्.)* वर्तनी, अक्षरों का क्रमबद्ध रूप में उच्चारण करना या लिखना। **उदा.** बच्चों को अक्षरी ज्ञान देना जरूरी है।

अक्षरेखा *स्त्री. (तत्.)* वह सीधी रेखा जो किसी गोल पदार्थ के केंद्र से दोनों पृष्ठों पर सीधी गिरती है, धुरी की रेखा।

अक्षांश [अक्ष+अंश] *(तत्) पुं.* भू. भूमंडल (ग्लोब) के मानचित्र (नक्शे) पर भूमध्य रेखा (विषुवत् वृत्त) को 0^0 का अंश मानते हुए, उसके उत्तर और दक्षिण में समान कोणीय दूरी पर खिंची हुई दीखने वाली (पर वस्तुतः काल्पनिक) रेखाएँ। latitutes

अक्षुण्ण [*अ+क्षुण्ण***]** *वि. (तत्),* =पिसा/ कुचला/कुटा हुआ न हो, जो कूटा-पीटा न गया हो, न टूटा हुआ, अखंड, पूरा समूचा। **जैसे**: अक्षुण्ण कीर्ति महापुरुष।

अक्षौहिणी *स्त्री. (तत्.)* प्राचीन भारतीय सैन्यविज्ञान के अनुसार वह चतुरंगिणी सेना जिसमें हाथी, घोड़े, रथ और पैदल सैनिक होते थे। **टि.** 1. महाभारत के अनुसार ऐसी सेना जिसमें 109350 पैदल, 65610 घोड़े, 21870 रथ और 21870 हाथी होते थे। 2. पांडवों के पक्ष में सात और कौरवों के पक्ष में 11 अक्षौहिणी सेना थी।

अक्सर दे. अकसर

अखंड [*अ+खंड***]** *वि.(तत्.)* 1. जिसके खंड या टुकड़े न हुए हों, अटूट, पूरा। unbroken-undevided **जैसे**: अखंड धारा, अखंड भारत। **जैसे:** आशीर्वाद- 'अखंड सौभाग्यवती भव'। 2. जिसके (पाठ के) बीच में विश्राम न लिया जाए। जैसे अखंड पाठ non stop।

अखंडता *स्त्री. (तत्.)* अखंड होने की स्थिति, स्वरूप अवस्था या भाव, संपूर्णता। **उदा.** देश की अखंडता के लिए गांधीजी निरंतर प्रयत्नशील रहे।

अखंडनीय [अ+खंड+नीय] *वि. (तत्.)* 1. (वस्तु) जिसके एकाधिक खंड न किए जा सकें, अविभाज्य। unbreakable 2. (बात या तर्क) जिसका खंडन न किया जा सके, जिसकी काट न हो। irrefutable **जैसे**: अखंडनीय तर्क।

अखंडित [अ+खंड+इत] *वि. (तत्.)* 1. जो खंडित या टूटा-फूटा न हो। unbreakalee 2. जिसका विभाजन न हुआ हो। unidervided

अख़बार *पुं. [अर.*<अख़्बार] 'ख़बर' का बहुवचन। आमतौर पर दैनिक (और साप्ताहिक भी) प्रकाशन जिसमें स्थानीय और सार्वदेशिक समाचार हों, समाचार पत्र। news paper

अखबारनवीस *पुं. [अर.+फा.]* समाचार-पत्र में संपादन कार्य से संबंधित कोई भी विशेषज्ञ। **पर्या.** पत्रकार। journalist

अखबारनवीसी *स्त्री. [अर.+फा.]* पत्र-पत्रिका का संपादन कार्य। **पर्या.** पत्रकारिता। journalism

अखरना *अ.क्रि.* [तद् आ+स्खल] अन्य व्यक्ति के प्रतिकूल आचरण का मन को बुरा लगना/अच्छा न लगना। **उदा.** हड़ताल की वजह से घर तक पैदल चलना मुझे अखर गया।

अखरोट *पुं. (तद्.*<अक्षोट) एक फलदार ऊँचा पेड़ और उसका फल जो कठोर झुर्रीदार छिलके वाला होता है तथा जिसकी गिरी तेलीय और कोमल होती है और खाई जाती है। **टि.** सूखे मेवा dryfruit के रूप में इसकी गिनती होती है। walnut

अखरौटी *स्त्री. [तद्.*<अक्षर] 1. वर्णमाला, 2. लिखावट अथवा लिखने का तरीका, 3. वर्णमाला के अक्षरों के क्रम से प्रयुक्त वर्णों से प्रारंभ होने वाले पदों की कविता।

अखाड़ा *पुं. [तद्<अक्षवाट]* 1. कुश्ती लड़ने की जगह। 2. कसरत या व्यायाम करने का स्थान। 3. संन्यासियों, साधुओं की जमात, मंडली; उनके रहने का स्थान। नृत्यशाला, रंगशाला।

अखाड़िया [*हि.-अखाड़ा+इया***] वि. दे.** अखाड़ेबाज़

अखाड़ेबाज *वि. (तद्.+फा.)* 1. कुश्ती लड़ने का शौकीन। master wrestler 2. ला.अर्थ (i) अपने-अपने गुट की संघर्षशील गुटबाजी के माहिर, शातिर; (ii) किसी भी प्रकार के दाँव-पेचों का व्यावहारिक ज्ञान रखने वाला।

अखाद्य [अ+खाद्य] **वि.** *(तत्.)* जो खाने लायक न हो; जिसे खाना उचित न हो। **उदा.** शाकाहारियों के लिए माँस अखाद्य भोजन है।

अख्तियार *पुं.* [अ.<इख़्तियार] 1. अपने पद, मर्यादा अथवा योग्यता आदि के कारण प्राप्त शक्ति। Authority 2. **उदा.** लंबी छुट्टी मंजूर करना मेरे अख़्तियार से बाहर है। हक, प्रभुत्व, 3. अधिकार, मालिकीयत, 4. कर्म विशेष की पात्रता।

अगड़ा वर्ग [अग्रवर्ती+तत] *पुं.* **समा.** सामाजिक सतर पर (न कि आर्थिक स्तर पर) विभाजित (हिंदू) जातियों का वह वर्ग जो शताब्दियों से ऊँचे पायदान पर आसीन रहा था। **पर्या.** अगड़ी जातियाँ farward classes/castes **टि.** 'पिछड़ा वर्ग' की अनुकृति पर निर्मित नवीन पदबंध। **विलो.** पिछड़ा वर्ग।

अगणनीय [अ+गणनीय] *वि. (तत्.)* जिसे गिना न जा सके। **पर्या.** असंख्य। uncountable **उदा.** 'रेत' शब्द अगणनीय संज्ञा का उदाहरण है।

अगणित [*अ+गणित*] *वि. (तत्.)* जिसकी गिनती न हुई हो अनगिनत, बहुत अधिक। countless **उदा.** पुस्तक मेले में रविवार को अगणित संख्या में दर्शक आए।

अगण्य [अ+गण्य] *वि. (तत्.)* 1. जिसकी गिनती करना संभव न हो। **पर्या.** अगणित, असंख्य। 2. जो किसी गिनती में न हो। **पर्या.** तुच्छ।

अगबग होना-दे. अकबकाना।

अगम [अ+गम <गम्य] *वि. (तत्.)* 1. जो गमन न करे अथवा जो चलने वाला न हो। 2. जहाँ तक पहुँचा न जा सके। 3. जो बुद्धि की पहुँच के बाहर हो, जो समझ के परे हो। 4. जिसकी थाह न लग सके, अथाह। 5. कठिन, 6. विकट।

अगम्य [अ+गम्य] *वि. (तत्)* 1. जिसके पास पहुँचा न जा सके, दुर्गम। 2. जहाँ तक पहुँचना या जाना बहुत कठिन हो। 3. जिसे प्राप्त न किया जा सके, अप्राप्य।

अगर-अव्य. *(फा.)* यदि, जो।

अगरबत्ती-*स्त्री.* (तद्<अगरुवर्त्तिका) सुगंधित द्रव्य पदार्थ से सनी और प्राय: पूजा के लिए जलाने की बत्ती।

अगर-मगर *स्त्री. (फा.)* 1. आनाकानी, टालमटोल 2. तर्क-वितर्क 3. दुविधा, असमंजस। **उदा.** उस ऊधमी बालक के विद्यालय में प्रवेश के संबंध में वहाँ के प्राचार्य अभी तो अगर-मगर कर रहे थे।

अगल-बगल *क्रि.वि.* (बगल-फा.,अगल-अनुरणन) आसपास, इधर-उधर, दाएँ-बाएँ। **टि.** इस शब्द का सामान्यत: संज्ञा की तरह प्रयोग होता है-अगल-बगल से, अगल-बगल में इत्यादि। यहाँ 'अगल-बगल' को स्थानवाचक मान लिया गया है।

अगला-वि. *(तद्.*<अग्र) 1. आगे का/सामने का, जैसे-गाड़ी का अगला हिस्सा (फ्रंट) 2. बाद या पीछे का, परवर्ती, दूसरा। **जैसे**: अगले साल next year **विलो.** पिछला।

अगवा-वि. *[अर.*< इग़वा] (गैर-कानूनी तरीके से, धन उगाहने की नीयत से कोई व्यक्ति) जो बहला-फुसलाकर या उठाकर ले जाया गया हो। **पर्या.** अपहृत।

अगवानी *स्त्री. [तद्.*<अग्रवर्णिका] आगे बढ़कर किसी का (**जैसे**-अतिथि का, बरात का आदि) स्वागत-सत्कार करना।

अगस्वे-अव्य. *(फा.)* यद्यपि, यदि ऐसा है (तो)......

अगहन *पुं. [तद्*<अग्रहायण] देसी महीनों में कार्तिक के बाद और पूस (पौष) के पहले का महीना। **पर्या.** मगसिर (मार्गशीर्ष)।

अगाड़ी- *क्रि.वि. (देश.)* 1. आने वाले समय में 2. आगे 3. पहले। *स्त्री. (देशज)* किसी वस्तु का आगे का भाग।

अगाड़ी-पिछाड़ी *स्त्री. (देश.)* किसी वस्तु का आगे और पीछे का भाग **पर्या.** आगा-पीछा। **मुहा. अगाड़ी-पिछाड़ी न सोचना**-भूत-भविष्य की चिंता न करना।

अगाध [अ+गाध=उथला, छिछला] *वि. (तत्.)* शा.अर्थ जो उथला या छिछला नहीं है, अर्थात जिसकी गहराई का पता अथवा थाह न मिले; अत्यधिक गहरा। **पर्या.** अथाह। **जैसे:** अगाध सागर; अगाध पांडित्य।

अगाह *वि. (तद्* <अगाध) **दे.** अगाध

अगियारी *स्त्री. (देश.)* 1. अग्नि में घृत-गुड़ आदि हव्य सामग्री डालने की विधि। 2. गोबर का कंडा जिस पर हवन से संबंधित सुगंधित सामग्री डाली जाती है। 3. वह पात्र जिसमें अगुरू, लोबान आदि (हवन सामग्री) सुगंधित द्रव्यों को डालकर

जलाया जाता है। **उदा.** पूर्वी उत्तर प्रदेश में महिलाएँ अपने किसी भी व्रत या पूजा में धूप-अगियारी करती हैं।

अगुआ/अगुवा *पु. [तद्.*<अग्रग] 1. वह व्यक्ति जो आगे चले (और अन्य लोग उसके पीछे चलें) अग्रणी पथप्रदर्शक, प्रधान। **पर्या.** नेता, नायक। 2. किसी समुदाय का मुखिया। पथ-प्रदर्शक, मार्गदर्शक। **पर्या.** प्रधान, मुखिया। **टि.** 'अगुवा' और 'अगवा' में अंतर होता है। (दे; अगवा)

अगुणित [*अ+गुणित***]** *वि. (तत्.)* 1. जो गुणित न हो, यानी जिसमें एकाधिक संख्याएँ न हों। 2. **जीव.** जिसमें गुणसूत्रों की संख्या कायिक कोशिकाओं somatic cells के गुणसूत्रों की संख्या आधी हो। **जैसे:** जनन कोशिकाएँ haptoid

अगुवाई *स्त्री. (तद्.)* आगे होने या चलने की क्रिया या भाव। **पर्या.** नेतृत्व (आगे बढक़र मार्ग दिखाने का भाव) **दे.** अगुवा।

अगोचर [अ+गोचर] *वि. (तत्.)* जिसका ज्ञान इंद्रियों से न हो; जो देखा या जाना न जा सके। **पर्या.** इंद्रियातीत। **जैसे**: आत्मा, ईश्वर। **विलो.** गोचर। आँखों से ओझल, अप्रकट।

अग्नि *स्त्री. (तत्.)* 1. आग; जला देने अथवा भस्म कर देने वाला तेज तत्व। जलती हुई लकड़ी, कोयला, उपला आदि। **पर्या.** अनल, पावक, अग्नि। **प्रयो.** 1. 'दावाग्नि'-काठ आदि में मौजूद या उनसे उत्पन्न होने वाला तत्व। 2. जठराग्नि, भोजन पचाने वाली पेट की शक्ति। 3. बड़वाग्नि-जल में व्याप्त ताप। (दिव्याग्नि), बिजली, उल्का आदि 4. पूर्व और दक्षिण का कोना, **जैसे:** अग्निकोण/आग्नेय कोण।

अग्निकांड [अग्नि+कांड] *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ आग लगाने की घटना, आगजनी। सा.अर्थ वह आग जिसमें धन-जन की बहुत अधिक हानि हो। **पर्या.** आगजनी। **जैसे:** अग्निकांड में मेरा सब-कुछ स्वाहा हो गया (जल गया)।

अग्निकुंड [*अग्नि+कुंड***]** अग्नि (आग) का कुंड (गहराई वाला स्थान) 1. हवन के काम आने वाला धातु का बना पात्र। **पर्या.** हवनकुंड 2. वह गहराई युक्त क्षेत्र जहाँ भयंकर आग जलाकर पद्मिनी और अन्य क्षत्राणियों ने जौहर किया था।

अग्निकोण [अग्नि+कोण] *पुं. (तत्.)* दस दिशाओं में से एक पूर्व और दक्षिण के बीच का दिशासूचक कोना।

अग्निदाह [*अग्नि+दाह*] *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ आग में जलाना। सा.अर्थ मृतदेह (शव) को अग्नि-समर्पित करना। **पर्या.** शवदाह, अग्निसंस्कार। cremation

अग्निपरीक्षा [अग्नि+परीक्षा**]** *स्त्री. (तत्.)* 1. प्राचीनकाल की एक परीक्षा पद्धति जिसमें आग में बैठकर व्यक्ति (विशेषकर स्त्री) अपनी निर्दोषिता सिद्ध करता था (करती थी) **उदा.** सीता की अग्निपरीक्षा। 2. ला.अर्थ बहुत कठिन परीक्षा।

अग्निबाण *पुं. (तत्.)* प्राचीनकाल में प्रयुक्त एक बाण जिसके चलाने पर आग बरसती मानी जाती थी। आधुनिक युग के अग्न्यास्त्र missile का लगभग समानधर्मी (अस्त्र)।

अग्निशमन [अग्नि=आग**+**शमन=बुझाना**]** *पुं. (तत्.)* **उदा.** अग्निशमन सेवा। fire brigade शा.अर्थ आग बुझाना। सा.अर्थ अचानक लगी आग को दमकल केंद्र के प्रशिक्षित कर्मचारियों द्वारा बुझाने की विशेष तकनीक।

अग्निशामक *वि./पुं. (तत्.)* शा.अर्थ आग बुझाने वाला उपकरण वह उपकरण जिससे गैस, पाउडर, जल या फोम (फेन/झाग) निकलता है और जिनसे आग को बुझाने में सहायता मिलती है। fire extinguisher

अग्निशामक दल *पुं. (तत्.)* अचानक लगी आग को बुझाने के कार्य में नियोजित प्रशिक्षित कर्मियों का समूह। fire brigade

अग्निशाला [अग्नि+शाला**]** *स्त्री. (तत्.)* वह स्थान जहाँ यज्ञ के लिए आग रखी जाए।

अग्निसह [अग्नि+सह=(को**]** सहन करने योग्य) **वि.** *(तत्.)* जो आग से प्रभावित न हो, यानी जिस पर आग का असर न होता हो; जो आग का ताप और उसकी दाहकशक्ति सहकर बर्दाश्त करके भी ज्यों-का-त्यों रहे। fireproof

अग्न्याशय [अग्नि+आशय] *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ (पाचक) अग्नि को धारण करने वाला स्थल। **प्राणि**. ग्रंथि जो पाचन में सहायक एन्जाइमों का स्रवण करती है तथा इसकी बीटा कोशिकाओं से स्रवित इंसुलिन नामक हार्मोन शर्करा के

चयापचय में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। pancreas

अग्न्यास्त्र **[**अग्नि+अस्त्र**]** *पुं. (तत्.)* मिसाइल का पर्यायवाची।

अग्र वि. *(तत्.)* अगला, प्रथम, प्रमुख। *क्रि.वि.* आगे, सामने। *पु.* आगे का भाग, नोक।

अग्रगण्य **[**अग्र=आगे+गण्य=गिना जाने वाला**]** *वि. (तत्.)* गणना करते समय पहले गिना जाने वाला। सा.अर्थ सबसे श्रेष्ठ, सबसे उत्तम।

अग्रगामी **[**अग्र+गामी**]** *पुं.(तत्.)* (स्त्री. अग्रगामिनी) आगे गमन करने वाला/चलने वाला; जो सबके आगे रहता हो। **पर्या.** अगुआ, नेता pionear

अग्रचर्वणक **[**दंत**]** **वि.**/*पुं. (तत्.)* शा.अर्थ चबाने वाले अगले (दाँत)। **प्राणि.** स्तनधारी प्राणियों (मैमल्स) के जबड़ों में पीसने वाले दाँत जो रदनक (कैनाइन) और चर्वणक नामक दांतों के बीच में होते हैं। **टि.** मानव के प्रत्येक जबड़े में दोनों ओर दो-दो अग्रचर्वणक दाँत होते है। premolar **दे.** दंतसूत्र dental Formula

अग्रज **[**अग्र=पहले+ज=पैदा हुआ**]** (स्त्री. अग्रजा) *वि. (तत्.)* शा.अर्थ पहले जन्मा हुआ अथवा पहले पैदा हुआ। *पुं.* बड़ा भाई। **तुल.** अनुज।

अग्रजा (अग्र=पहले+जा=पैदा हुई) *वि.(तत्.)* शा.अर्थ पहले जन्मी हुई या पैदा हुई। *स्त्री.* बड़ी बहिन/बहन।

अग्रता *स्त्री. (तत्.)* 1. अन्य कार्यों से पहले किए जाने की स्थिति precedance 2. किसी विचाराधीन मुद्दे को सबसे पहले निपटाने का विचार या निर्णय। prionity

अग्रदूत **[**अग्र+दूत**]** *पुं. (तत्.)* 1. वह व्यक्ति जो किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति के पहुँचने से पहले ही उपस्थित होकर उसके आने की सूचना दे। 2. वह व्यक्ति जो किसी महत्वपूर्ण घटना अथवा क्रांतिकारी समय का प्रेरणा-स्रोत बने। **उदा.** राजा राममोहन राय आधुनिक भारत के अग्रदूत माने जाते हैं। 3. नई परंपरा या आंदोलन का आरंभकर्ता। herald

अग्रलेख **[**अग्र+लेख़**]** *पुं.(तत्.)* समाचार-पत्र का मुख्य लेख; संपादकीय।

अग्राह्य **[**अ+ग्राह्य**]** *वि. (तत्.)* जो ग्रहण-योग्य न हो; ग्रहण के अयोग्य।

अग्रिम [*अग्र.+इम]* *वि. (तत्.)* 1. **प्रशा.** देय होने से पूर्व दी गई राशि जिसका देय होने पर समायोजन कर लिया जाता है। **पर्या.** पेशगी advance 2. **परि.** नियत समय से पूर्व किया गया। **उदा.** अग्रिम आरक्षण 3. **सैन्य.** मुख्य स्थल से आगे का/की **उदा.** अग्रिम चौकी।

अघ *वि. (तत्.)* पाप, बुरा काम, दुष्कर्म, अशौच।

अघट[1] *वि. [तद्.>अघटन]* 1. जो न घटित हुआ हो और न होने वाला हो। 2. जो घटित न हो सके, असंभव। **जैसे:** खरगोश का सींग एक अघट घटना है। 3. अनुचित, बेमेल

अघट[2] *(वि.) तद्.* [तद्>अघृष्टन] 1. न घटने वाला, कम न होने वाला। 2. सदा एक जैसा रहने वाला। स्थिर। **जैसे:** उनका अन्न भंडार अघट है।

अघटित वि. *(तत्.)* जैसा पहले कभी घटित न हुआ हो। **पर्या.** अभूतपूर्व, विचित्र, अनहोनी।

अघाना *[तद्*.<आघ्राण] भरपेट खाना कि उससे ही संतुष्टि हो जाए और अधिक खाने की इच्छा न रहे। **पर्या.** तृप्त होना।

अघुलनशील *वि. (तत्.)* जिसकी प्रकृति द्रव में घुलने की न हो। **जैसे**: रेत। **विलो.** घुलनशील।

अचंभा पुं. *[तद्* < असंभवम्] किसी असामान्य या अप्रत्याशित घटना या परिस्थिति को देख-सुनकर श्रोता के मन में अचानक उठने वाला संवेग। **पर्या**. आश्चर्य, विस्मय, ताज्जुब, अचरज।

अचकचाना अ.क्रि. (देश.) भौंचक्का होना, घबरा जाना, चौंक उठना।

अचकचाहट *स्त्री. (देश.)* घबराहट, भौंचक्कापन।

अचकन *स्त्री. (तद्.)* (कंचुक प्रा. अंचुक) अंगरखे की तरह का एक लंबा पहनावा, शेरवानी। प्राचीन अर्थ लंबा कालीदार अंगरखा।

अचरज *पुं. [तद्*.<आश्चर्य] **दे.** आश्चर्य।

अचर्क *पुं. (तत्.)* व्यक्ति जो अर्चना या पूजा करता हो। **पर्या.** पूजक, पुजारी।

अचल [अ+चल] *वि. तत्* 1. जो चल न सकता हो, गतिहीन। 2. जो अपने स्थान पर टिका रहे, जो अपने स्थान से हटे नहीं, अटल, दृढ़। *पुं.*-पर्वत, **जैसे:** विंध्याचल (विंध्य+अचल)-विंध्यनामक पर्वत श्रृंखला।

अचल-परिसंपत्ति *स्त्री. (तत्)* लंबे समय तक या स्थायी रूप में उत्पादन प्रक्रिया में काम आने वाली पूँजी। **जैसे:** इमारतें, मशीनरी, फर्नीचर, परिवहन व्यवस्था आदि। **पर्या.** स्थायी परिसंपत्ति। fixed assets, fixed capital

अचल-संपत्ति *स्त्री. (तत्.)* अपने स्थान से हटाई न जा सकने वाली संपत्ति, **जैसे:** घर, भवन, खेत आदि। पर्या. स्थायी संपत्ति immovable property **तु.** चल-संपत्ति

अचानक *क्रि.वि. (देश.)* बिना किसी प्रकार की पूर्व सूचना के, सहसा, यकायक। **उदा.** वह मेरे यहाँ अचानक आ धमका।

अचार *पुं. (फा.)* वह गौण खाद्य-सामग्री मसाले के साथ मिलाकर फल या सब्जी, जो कुछ दिन तक तेल या सिरके में रखा जाता है। **गृह.** तेल या सिरके के माध्यम से एक निश्चित अवधि तक संरक्षित मसालेदार फल और सब्जी के टुकड़े जो भोजन में सहायक खाद्य-सामग्री की तरह उपयोग में आते हैं। pickles **जैसे:** आम का अचार, करौंदे का अचार आदि। **मुहा. अचार डालना- ला.** प्रयोग उपयोगी वस्तु को आवश्यक होने पर भी लंबे समय तक काम में न लेना। **उदा.** तुम कपड़े धोने की मशीन तो ले आए पर उसका उपयोग नहीं कर रहे हो, क्या उसका अचार डाल रखा है?

अचिंतनीय **[अ+चिंतन+ईय]** *वि. (तत्.)* 1. जिसका चिंतन या कल्पना न की जा सके। 2. जो बुद्धि या विचार की सीमा से परे हो।

अचिंत्य [अ+चिंत्य] *वि. (तत्)* **दे.** अचिंतनीय

अचिर वि. *(तत्.)* 1. जो पुराना न हो। ताजा, नया 2. जिसे लंबे समय तक बचाए रखा जा सके, नश्वर, नाशवाना **जैसे.** अचिर शरीर।

अचूक वि. *[तद्.*<अच्युत] शा.अर्थ न चूकने वाला। **जैसे:** अचूक निशाना।

अचेत **[**अ+चेत**]** *वि. (तद्.)* 1. (व्यक्ति) जिसमें चेतना न हो, बेसुध। 2. जड़ (पदार्थ)।

अचेतन **[**अ+चेतन <चेतना**]** *वि. (तद्.)* 1. जिसमें चेतना शक्ति का अभाव हो। 2. जड़ (पदार्थ), निर्जीव।

अचेतन [अ+चेतन] *वि. (तत्.)* जिसमें चेतना न हो, चेतनारहित, निर्जीव, जीवन या प्राण रहित। **पर्या.** जड़ **जैसे**: अचेतन पदार्थ (मेज़, कुर्सी, कमरा आदि।

अचेष्ट वि. *(तत्.)* जिसमें कोई चेष्टा अर्थात गति या प्रयत्न न हो, गतिहीन:, बेहोश।

अच्छाई [अच्छा+ई**]** *स्त्री. (तद्* < अच्छ) स्वभाव, रूप, गुण आदि में अच्छा होने का भाव। **उदा.** उसकी अच्छाई यह है कि वह हमेशा समय पर स्कूल पहुँचता है। **पर्या.** अच्छापन। **विलो.** बुराई, दोष।

अच्छा वि. *(तद्* <अच्छ) 1. तुलना में दूसरे से बढक़र और प्रशंसा योग्य। **जैसे**: अच्छे दिन। 2. दोषरहित, शुभ। **जैसे:** मुहूर्त। 3. स्वस्थ, नीरोग। जैसे-कैसे हो? अच्छा हूँ। 4. लाभदायक। **जैसे:** धंधा कैसा चल रहा है? अच्छा चल रहा है। *क्रि.वि.* भारत इस बात अच्छा खेला। **विस्म.** अच्छा! ऐसा कैसे हुआ? **विलो.** बुरा। **मुहा.** अच्छा कर देना-ठीक, स्वस्थ कर देना। अच्छा खासा-बहुत अधिक। **जैसे**: अच्छा-खास, लाभ।

अच्युत [अ+च्युत**]** *वि. (तत्.)* जिसका क्षरण या पतन न हो; अविनाशी, अनश्वर, सनातन, नित्य। (ईश्वर का विशेषण)

अछूत [अ+छूत**]** *वि. (तत्.+हि.)* (सामाजिक व्यवस्था के अनुसार) जिसे अपवित्र मानकर न छुआ जाए। **पर्या.** अस्पृश्य। **तु.** अछूत। **जैसे**: गांधीजी ने अछूतोद्धार के लिए काफी काम किया।

अछूता [अ=नहीं+छूता=छुआ हुआ] *वि. (तद्.)* 1. जिसे अब तक न छुआ गया हो। जैसे अछूता खाना। 2. जिसे अब तक काम में न लाया गया हो; नया; कोरा। **जैसे:** अछूता कपड़ा। 3. जिस पर अब तक विचार न किया गया हो। जैसे-अछूता विषय। **तु.**अछूत।

अछूतोद्‌धार [अछूत+उद्धार] *पुं. (तद्.)*शा.अर्थ अछूतों का उद्‌धार, अस्पृश्य जातियों का उद्‌धार। **टि.** भारत के संदर्भ में स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान मध्यकाल में संतों, महापुरुषों और महात्मा गांधी द्वारा चलाया गया वह आंदोलन जिसमें छूआछूत की प्रथा का अंत और दलित वर्ग की सामाजिक-आर्थिक उन्नति को लक्ष्य बनाया गया था।

अजगर *पुं. (तत्.)* 1. बहुत बड़ा और मोटा साँप जो बकरी और हिरन को भी निगल जाता है और

अपने शिकार को दाँतों से चबाकर नहीं अपितु आँत में पीसकर पचाता है। pithon 2. अजदहा।

अजनबी अर.वि. *पुं. [अ.<अजनबी]* 1. (व्यक्ति) जो किसी परिवेश या संगी-साथियों के बीच पहले से जाना-पहचाना न हो। **पर्या.** अपरिचित। 2. व्यक्ति जो किसी परिवेश विशेष या स्थान विशेष के लोगों को पहले से न जानता हो। **पर्या.** अनजान। **विलो.** जाना-पहचाना, सुपरिचित।

अजनबीपन *पु. (फा.)* अजनबी होने का भाव या स्थिति। **दे.** अजनबी।

अजब *वि. (अर.)* **दे.** अजीब

अज़मत/अज़्मत *(स्त्री.) (अर.)* 1. प्रतिष्ठा, सम्मान, इज्ज़त **उदा.** मेरे दादाजी की समाज में बड़ी अज़मत है। 2. बुजुर्गी, **उदा.** जरा उनकी अज़मत का ख्याल करो। 3. अहमियत, महत्व, बड़ाई।

अजस्र *वि. (तत्.)* निरंतर/लगातार/अनवरत रहने वाला; जिसका क्रम खंडित न हो। **जैसे:** अजस्र प्रवाह।

अजात *वि. (तत्.)* जिसका (अभी) जन्म न हुआ हो। **जैसे**: अजात शिशु (यानी वह शिशु जो अभी माँ के गर्भ में ही हो)।

अजातशत्रु *वि. (तत्.)* 1. जिसका कोई शत्रु पैदा न हुआ हो।

अजायबघर (अर. अजायब+तद्. घर) *पुं.* वह भवन जिसमें ऐतिहासिक महत्व की प्राचीन एवं दुर्लभ वस्तुओं का संग्रह हो एवं सार्वजनिक प्रदर्शन के लिए खुला रहे। **पर्या.** कौतुकालय, संग्रहालय museum

अजित *वि. (तत्.)* जिसे जीता न जा सका हो। **पर्या.**-अपराजित, अपराजेय, अजेय। **विलो.** विजित, पराजित।

अजीब *वि. (अर.)* सामान्य स्वरूप ओर व्यवहार से भिन्न; विचित्र, विलक्षण, अनोखा। **उदा.** अजीब आदमी है। किसी की बात मानता ही नहीं।

अजीबो-ग़रीब [अजीब-ओ-ग़रीब] *वि. (अर.)* शा.अर्थ अजीब और गरीब *(द्विरुक्ति)* सा.अर्थ जिसमें बहुत सी विचित्रताएँ हों; परम विलक्षण, अति अद्भुत। **पर्या.** अतिविचित्र।

अजीर्ण [अ+जीर्ण] 1. पचा हुआ, 2. घिसा हुआ, पुराना *पुं. (तत्.)* अपच, बदहज़मी (रोग विशेष) *वि.* 1. जो पचा न हो। 2. जो घिसा या पुराना न हुआ हो।

अजीर्ण [अ+जीर्ण] *पुं. (तत्.)* 1. जो जीर्ण न हुआ हो, पुराना न हुआ हो; नया। **जैसे**: अजीर्ण वस्त्र। 2. जो पचा न हो (भोजन)। *पुं.* वह रोग जिसमें भोजन ठीक से नहीं पचता। अपच, बदहजमी।

अजूबा *पुं. (अर.*<अजूब:) कोई आश्चर्यजनक बात या घटना।

अजेय *वि. (तत्.)* जिसे कोई जीत न सके; जिसे कोई पराजित न कर सके; अपराजेय। **पर्या**. अपराजेय।

अजैव वि. *(तत्.)* 1. जो जीव या जीवन से संबंधित न हो। अजैव संसाधन। **जैसे:** मृदा, चट्टानें और खनिज आदि।

अजैविक रसा. वि. *(तत्.)* जो जीवों से पैदा न हुआ हो। **जैसे:** यूरिया, खाद। **तुल.** जैविक।

अज्ञ [अ+ज्ञ] *वि. (तत्.)* 1. जिसे ज्ञान न हो, न जानने वाला। **पर्या**. मूर्ख, नासमझ। 2. किसी वशिष्ट विषय को पूरी तरह से न जाननेवाला।

अज्ञात [अ+ज्ञात] *वि. (तत्.)* न जाना हुआ, बिना जाना हुआ; छिपा हुआ, गुप्त। **जैसे:** पांडवों का अज्ञातवास, अज्ञात बातें।

अज्ञातवास *[अ+ज्ञात+वास] पु. (तत्.)* ऐसे स्थान पर रहना जिसे जाना न जा सके। **टि.** महाभारत कथा में पांडवों को एक वर्ष तक अज्ञातवास करना पड़ा था।

अज्ञान [अ+ज्ञान] *पुं. (तत्.)* ज्ञान का अभाव, मूर्खता। ignorance

अज्ञानता *स्त्री.(तत्.)* ज्ञान न होने की अवस्था; अज्ञानपन; मूर्खता, नादानी।

अज्ञानी *वि.(तत्.)* जिसे ज्ञान न हो। **पर्या.** मूर्ख, नासमझ। **विलो.** ज्ञानी।

अज्ञानी *वि./पुं. (तत्)* (व्यक्ति) जिसे ज्ञान न हो; मूर्ख।

अज्ञेय *वि.(तत्)* जिसे/जिसके बारे में जानकारी प्राप्त करना संभव न हो, जिसे न जाना जा सके। **विलो.** ज्ञेय।

अटकना *अ.क्रि. (देश.)* किसी बाधा के कारण गति में रुकावट पैदा होना। पढ़ते समय बीच-बीच में रूकना। गले से नीचे न उतरना। **उदा.** 1. पतंग पेड़ की डाल में अटक गई। 2. अटक-अटक कर पढ़ना।

अटकल *स्त्री. (तद्<अट्टन+कलन)* अनुमान, अंदाजा। **मुहा.** अटकल भिड़ाना/लगाना-अनुमान लगाना। **भाव.** अटकलबाज़ी।

अटकाना *स.क्रि. (देश.)* गति में बाधा या रुकावट डालना, जिससे उस क्रिया के संपन्न होने में अनावश्यक विलंब हो जाता है। **उदा.** उसने मुझे अपनी बातों में अटका लिया, इसलिए पुस्तकालय पहुँचने में देर हो गई।

अटकाव पु. *(देश.)* अटकने/अटकाने का भाव; बाधा; रुकावट। **दे.** अटकाना।

अटना अ.क्रि. *(देश.)* 1. पूरा पड़ना, काफी होना। 2. आड़ करना, ओट करना। 3. अटन, भ्रमण करना, घूमना-फिरना।

अटपटा वि. *(देश.)* 1. जो सामान्य न हो या न सामान्य दिखे। ऊटपटांग, विचित्र, टेढ़ा-मेढ़ा सा। 2. जिसमें अर्थसंगति का अभाव हो। जैसे-शिशु की अटपटी भाषा/बातें आदि।

अटल वि. *(देश.)* 1. जो अपने स्थान से टले नहीं। **पर्या.** अडिग, स्थिर। 2. दृढ़, पक्का। **उदा.** मेरा अटल विश्वास है कि..... 3. अवश्य होने वाला, जो टाला न जा सके। पर्या. अवश्यंभावी। **उदा.** जो जन्मा है उसकी मृत्यु अटल है।

अटारी *स्त्री. (तद्.<अट्टालिका)* मकान की छत पर बना कमरा या खुला भाग, कोठा।

अटूट [अ+टूट] *वि. (देश)* 1. न टूटने योग्य। पर्या. दृढ़, मज़बूत 2. बहुत अधिक। **उदा.** सेठजी के पास अटूट धन-संपत्ति है।

अट्ठाईसवँ *(वि.) (तद्.)* गिनती करते समय जिसकी क्रम संख्या 28वें स्थान पर हो।

अट्टालिका *स्त्री.* (*तत्.)* 1. बड़ा और ऊँचा भव्य मकान। 2. भवन का ऊपरी भाग। **पर्या.** अटारी, कोठा, कोठी।

अट्टहास *पुं.(तत्.)* जोर की हँसी, ठहाका।

अट्ठाईस वि. (तद्<अष्टाविंशति) (गिनती में) बीस और आठ *पु.* 28 की संख्या।

अट्ठानवाँ/ अठानवाँ (वि.) *(तद्.)* गिनती करते समय जिसकी क्रमसूचक संख्या 58वें स्थान पर हो।

अट्ठानवे/ अठानवे वि. (तद्.**>**अष्टानवति) गिनती में नब्बे और आठ *पु.* 98 की संख्या।

अट्ठावन/ अठावन वि. (तद्.अष्टपंचाशत्) गिनती में पचास और आठ पुं.-58 की संख्या।

अट्ठासिवाँ (वि.) *(तद्.)* गिनती करते समय जिसका 28 वें स्थान पर हो।

अट्ठासी/अठासी वि. (तद्.<अष्टाशिति) (अष्ट + अशीति) गिनती में अस्सी और आठ *पु.* 88 की संख्या।

अठखेली *स्त्री.* (तद्<अष्टकेलि) बहुवचन में ही प्रयोग-अठखेलियाँ), किसी के साथ किया जाने वाला मनोविनोद या हंसी-मजाक। विनोद।

अठत्तर/अठहत्तर गिनती में सत्तर और आठ **वि.** (तद्.<अष्टसप्तति:) *पु.*-78 की संख्या।

अठन्नी *स्त्री.* (तद्. आठ+आना) तद्.<अष्टाणकी) आठ आने का पुराना सिक्का, पचास पैसे का सिक्का।

अठहत्तरवाँ (वि.) *(तद्.)* गिनती करते समय जिसकी क्रमसंख्या 78वें स्थान पर हो।

अठारह वि. (तद्.<अष्टादश) गिनती में दस और आठ *पु.* 18 की संख्या।

अड़ंगा पुं. [देश.-अड़ाना/अड़ना] मूल अर्थ चलते व्यक्ति की टांग में अपनी टांग अड़ाकर उसे रोकने/गिराने के लिए की गई कोशिश। सा.अर्थ (ला.प्रयोग) बाधा, रुकावट।

अड़चन *स्त्री.* [हि.-अड़ना-चलना] *तद्.<अड्डित-चणिका)* शा.अर्थ जिसने गति रोक दी हो। बाधा, रुकावट inderance **पर्या.** अंड़गा **उदा.** उसने मेरे काम में अड़चन/अडंगा डालने की कोशिश की, किंतु वह सफल नहीं हुआ।

अड़तालीस *वि. [तद्<अष्टचत्वारिंशत्]* गिनती में चालीस और आठ *पुं.*-48 की संख्या।

अड़तालीसवाँ *वि. (तद्.)* गिनती करते समय जिसकी संख्या 48वें स्थान पर हो।

अड़तीस *वि. (तद्.<* त्रिशत्+अष्ट+त्रिशंत) गिनती में तीस और आठ *पुं.* 38 की संख्या।

अड़तीसवाँ (वि.) गिनती करते समय जिसकी संख्या 38वें स्थान पर हो।

अड़ना *अ. क्रि. (देश.<अड़)* 1. चलते-चलते बीच में रुक जाना, रुकना, अटकना। 2. दूसरे को अपनी बात मनवाने के लिए हठ करना या अड़े रहना। **उदा.** जब वह अपनी बात पर अड़ा रहा तो हमें उसकी बात माननी ही पड़ी।

अड़सठ वि. [षष्टि+अष्ट] *वि. (तद्.)* गिनती में साठ और आठ *पुं.* 68 की संख्या।

अड़सठवाँ (वि.) *(तद्.)* गिनती करते समय जिसकी संख्या 68 वें स्थान पर हो।

अड़ाना *स.क्रि.* (तद्.<आटयति) 1. गतिशील वस्तु में कोई बाधक चीज़ फँसा देना ताकि वह रुक जाए। बाधा या विघ्न उपस्थित करना। 2. किसी के गिर पड़ने की संभावना वाली वस्तु में टेक लगा देना ताकि वह न गिरे।

अडिग *वि.(देश.)* जो डिगे नहीं। **दे.** अटल।

अड़ियल *वि.(देश)* अड़ना 1. अड़ जाना जिसके स्वभाव में हो। **पर्या.** हठी, जिद्दी 2. आगे बढ़ते समय अकारण रूक-रूक कर चलने वाला। जैसे-अड़ियल टट्टू।

अड़ोस-पड़ोस *पुं.* (अनुकरणात्मक प्रथम पद वाली द्विरूक्ति) आस-पास के घर, मकान।

अड़ोसी-पड़ोसी *पुं.* बहु. आस-पास के घरों में (पड़ोस में) रहने वाले लोग-बाग।

अड्डा पुं. *तद्* [सं. अट्टा-ऊँची जगह] (अल्पकाल के लिए) रुकने, ठहरने, मिलने का नियत स्थान। 1. चोरों, जुआरियों आदि के मिलने का स्थान। 2. कारीगरों के बैठकर काम करने की जगह। **जैसे:** बस अड्डा, चोरों या जुआरियों का अड्डा आदि। **मुहा.** अड्डा जमाना-समान कार्य करने वाले लोगों द्वारा किसी स्थान विशेष को अपनी (प्राय: अनुचित) गतिविधियों का केंद्र बना लेना।

अढ़ाई *वि. (तद्.)* [द्वयर्ध+आई] गिनती में दो और आधा। **पर्या.** ढाई। स्त्री. $2\frac{1}{2}$ की संख्या **लोकोक्ति** 1. अढ़ाई/ढाई चावल की खिचड़ी अलग पकाना-किसी से मेल खाती बात न कहना, सबसे अलग विचार प्रकट करना। 2. नौ दिन चले अढ़ाई कोस मंद गति होना।

अणु जीव *पुं. (तत्.)* जीव जगत् (प्राणि जगत और वनस्पति जगत) का वह अतिसूक्ष्म जीव, जिसे नंगी आँखों से तो देखा नहीं जा सकता, पर जो सूक्ष्मदर्शी यंत्र के माध्यम से अवश्य दिखाई पड़ता है। microorganism

अणु *पु. (तत्.)* सा.अर्थ 1. पदार्थ का बहुत ही छोटा हिस्सा। 2. रजकण। विशेष अर्थ: **भौ.**, **रसा.** रासायनिक आबंधन से जुड़े एकाधिक (दो या हजारों) परमाणुओं से बनी इकाई। मोलेक्यूल **टि.** एक यौगिक के सभी अणु एक समान होते हैं। जैसे, जल के सभी अणुओं में ऑक्सीजन का एक परमाणु होता है, जो दो हाइड्रोजन परमाणुओं से रासायनिक तौर पर आबंधित रहता है। **तु.** परमाणु atom

अणु बम *पुं. (तत्.)* 1. 'परमाणु बम' के लिए प्रयुक्त आम बोलचाल का शब्द। **दे.** परमाणु बम। 2. आतिशबाजी में छोड़ा जाने वाला एक सिगारनुमा पटाखा जो कानफोड़ू आवाज़ करता है।

अणुजीव विज्ञान/अणु जैविकी *पु. (तत्.)* जीव विज्ञान की वह शाखा जिसमें जीव की आण्विक प्रकृति तथा उसकी जैव रासायनिक अभिक्रियाओं का अध्ययन किया जाता है। molecular biology

अणुवीक्षण *पुं. (तत्.)* 1. सूक्ष्मदर्शी यंत्र (खुर्दबीन) द्वारा अत्यंत सूक्ष्म कणों को देखने की प्रक्रिया 2. किसी भी विवेच्य विषय का बहुत बारीकी से सांगोपांग विवेचन-विश्लेषण करना।

अत-अव्य. *(तत्.)* इस कारण (से), इसलिए।

अतएव-अव्य. *(तत्.)* इसी से, इस कारण से ही, इसलिए, इसीलिए।

अतर *पुं. (देश.) (<इत्र)* इत्र, पुष्पसार।

अतरदान *पुं.* **(देश+फा.)** तरह-तरह के इत्र रखने का पात्र।

अतल *[अ+तल] वि. तत्.* 1. जिसका तल न हो, तलहीन, बेपैंदा। 2. जिसके तल का पता न चले।

पर्या. अथाव। *पु.* पृथ्वी के नीचे माने हुए सात लोकों में से पहला।

अतलांत महासागर *पुं.(तत्.)* अटलांटिक ओशन (अंध महासागर) के लिए प्रयुक्त एक पर्याय **दे.** अंधमहासागर। atlantie oecan

अता-पता *पुं. (देश.)* ऐसा कोई लक्षण या चिह्न जिससे कोई बात जानी जा सके अथवा किसी तक पहुँचा जा सके। **जैसे:** कई दिनों से उसका अता-पता नहीं है। whereabouts

अति *वि.(तत्.)* बहुत ज्यादा, अधिक, चरम सीमा तक पहुँचा हुआ। **विशेष:** उपसर्ग के रूप में प्रयुक्त होकर अनेक अर्थ देता है - (क) नियम, सीमा आदि से आगे बढ़ा हुआ, **जैसे:** अतिक्रमण। (ख) मात्रा, मान आदि के विचार से बहुत अधिक **जैसे**: अति सूक्ष्म। (ग) सामान्य रूप से अधिक बढ़कर, **जैसे**: अतिकाय।

अतिकाय *वि. (तत्.)* लंबे-चौड़े शरीर वाला। **पर्या.** विशालकाय।

अतिक्रमण पुं. *(तत्.)* अपने अधिकार क्षेत्र को पारकर दूसरे के अधिकार क्षेत्र में अवैध प्रवेश। मर्यादा के विरुद्ध। देश की सीमा का दूसरे देश द्वारा उल्लंघन। incroachment **जैसे**: सन् 1962 में चीन ने हमारी सीमा का अतिक्रमण किया था।

अतिक्रमी *वि./पुं. (तत्.)* किसी दूसरे की सीमा का अवैध रूप से उल्लंघन करने वाला (व्यक्ति)। किसी दूसरे के अधिकारों में हस्तक्षेप करने वाला (व्यक्ति)।

अतिक्रांत *वि. (तत्.)* 1. सीमा से परे गया हुआ। 2. बीता हुआ। 3. क्रम-भंग का दोषी।

अतिचार *पुं.* 1. अन्य की संपत्ति को अवैध रूप से हानि पहुँचाने का कृत्य। 2. विधि का उल्लंघन trespass *तु.* अतिक्रमण

अतिचारी *वि./पु.* (i) अतिचार का अपराधी; (ii) व्यक्ति जो अन्य की भूमि में अनधिकार प्रवेश करे। trespasser

अतिथि *पुं. (तत्.)* 1. (रक्त संबंधियों को छोडक़र) अन्य परिवार या संस्था आदि का वह व्यक्ति जो पूर्वनिर्धारित या अनिर्धारित कुछ दिनों के लिए किसी व्यक्ति या संस्था के आवास में आकर ठहरता है और जिसकी समुचित आवभगत की जाती है। **पर्या.** मेहमान, पाहुना। 2. किसी कार्य-संपादन के लिए आमंत्रित बाह्य व्यक्ति। **जैसे**: अतिथि वक्ता, अतिथि कलाकार, अतिथि संपादक आदि। guest **टि.** इस तत्सम शब्द का मूल व्युत्पत्तिपरक अर्थ ग्रहण न कर कुछ शब्द-विश्लेषक इस शब्द के केवल दृश्यमान अ+तिथि रूप को देखकर ही इसे "ऐसा व्यक्ति जो बिना तिथि बताए किसी के यहाँ आ जाए" अर्थ देते भी देखे गए हैं।

अतिथि गृह पुं. *(तत्.)* अतिथियों (मेहमानों) के ठहरने के लिए बना भवन। guest-house **पर्या**: अतिथि भवन, मेहमानखाना, अभ्यागत निवास।

अतिथिशाला *स्त्री.(तत्.)* वह भवन या स्थान जो केवल अतिथियों के ठहरने के लिए बनाया गया हो। **पर्या.** अतिथि गृह। guest house

अतिथि सत्कार पुं. *(तत्.)* अतिथि का सत्कार यानी घर आए मेहमान की आवभगत।

अतिमानव *वि. पुं. (तत्.)* मानव की स्वाभाविक शक्ति के बाहर का व्यक्ति। अलौकिक मानव। super human

अतिरंजन *[अति+रंजन] पुं. (तत्.)* शा.अर्थ आवश्यकता से अधिक रंग चढ़ाना/रंगना। ला.अर्थ किसी बात को बढ़ा-चढ़ा कर कहना।

अतिरंजना *स्त्री. (तत्.)* किसी घटना या तथ्य को बहुत अधिक बढ़ा-चढ़ा कर कहना। exaggeration

अतिरंजित वि.(तत्.) किसी घटना या तथ्य को उसके वास्तविक महत्व से अधिक बढ़ा-चढ़ा कर कहा गया रूप। exaggeration

अतिरिक्त (अतिरेक+कत) *वि.(तत्.)* 1. नियत से अधिक। **उदा.** उसकी अतिरिक्त आमदनी की हमें जानकारी नहीं है। extra 2. बचा हुआ, शेष, **उदा.** अतिरिक्त दूध हो तो मुझे दे दो। 3. (से) अलग/भिन्न। **उदा.** इसके अतिरिक्त उसके पास कोई चारा नहीं था। residual additional, spare

अतिरेक *पुं. (तत्.)* आवश्यकता से अधिक का सूचक भाव, बहुतायत, अधिकता।

अतिवाद *पुं. (तत्.)* राजनीतिक अथवा धार्मिक मामलों में (अथवा किसी भी बारे में) चरम सीमा पार करने वाला विचार। extremism

अतिवादी *वि./पु. (तत्.)* राजनीतिक अथवा धार्मिक मामलों में मर्यादा से परे अर्थात चरम सीमा पार करने वाले विचार/मत रखने वाला। extremist

अतिवृष्टि *स्त्री. (तत्.)* 1. इतनी अधिक वर्षा होना जिससे खेती की सारी फसलें नष्ट हो जाने से मनुष्यों और पशुओं के लिए अकाल की स्थिति आ जाए। 2. बहुत अधिक वर्षा/बारिश। **विलो.** अनावृष्टि (बिल्कुल वर्षा न होना अर्थात सूखा पड़ना)।

अतिशय *वि. (तत्.)* बहुत, अधिक, ज्यादा, अत्यधिक।

अतिशयोक्ति *[अतिशय+उक्ति] स्त्री. (तत्.)* 1. बहुत बढ़ा-चढ़ाकर कही या वर्णित की हुई बात। 2. एक अलंकार जिसके अनुसार बहुत बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन किया जाता है। **उदा.** हनुमान की पूंछ में लगन न पाई आगि, लंका सारी जरि गई, गए निशाचर भागि।। **तु.** अत्युक्ति।

अतिसार [अति+सार<सरण=बहना] *पुं. (तत्.)* रोग विशेष जिसमें अधपचा खाना मरोड़ के साथ पतले दस्तों के रूप में बाहर निकलता है। diarrhoea, dysentary

अतींद्रिय [अति+इंद्रिय] *वि. (तत्.)* जो इंद्रियों की पहुँच से परे हो।

अतीत *वि. (तत्.)* जो व्यतीत हो चुका है, बीता हुआ। *पुं.* पुरातन, प्राचीन समय, पुराकाल, इतिहास। **उदा.** यह अतीत की बात है। *क्रि.वि.* दूर, परे।

अतीव वि. *(तत्.)* बहुत अधिक, अत्यंत। **उदा.** उनकी असामयिक मृत्यु की खबर सुनकर पड़ोसियों को अतीव दु:ख हुआ।

अतुकांत *(अ+तुक+अंत)* **वि.** शा.अर्थ अंत में तुक मिलने की स्थिति से रहित। ऐसी कविता जिसके अंतिम चरण में तुक न मिलती हो। **जैसे**: महाप्राण निराला की कृति 'जूही की कली' अतुकांत कविता का उदाहरण है।

अतुल/अतुलनीय वि. *(तत्.)* जिसकी माप या तौल न हो सके; बहुत अधिक, असीम। **उदा.** वे अतुल संपत्ति के मालिक हैं।

अतुलनीय *(अतुल+अनीय)* **वि. (तत्.)** जिसकी तुलना न की जा सके। **पर्या**. अतुल्य, अतुल, बेजोड़।

अतुलित *वि. (तत्),* **दे.** अतुल, अतुल्य।

अतृप्त *वि. (तत्.)* जो तृप्त न हुआ हो, जिसकी भूख या इच्छा अभी तक शांत न हुई हो, असंतुष्ट।

अतृप्ति *स्त्री. (तत्.)* संतुष्ट न हो पाने की स्थिति, भाव या अवस्था; संतोष में कमी।

अत्यंत वि. और *क्रि.वि. (तत्.)* व्यु.अर्थ जिसने सीमा का अतिक्रमण कर लिया हो। सा.अर्थ बहुत अधिक, हद से ज्यादा।

अत्यधिक *(अति+अधिक) वि. (तत्.)* बहुत अधिक, बहुत ज्यादा। **पर्या.** अतिशय **टि**. 'अत्याधिक' प्रयोग अव्याकरणिक है।

अत्यल्प *[अति+अल्प] वि. (तत्.)* जो बहुत कम हो, बहुत थोड़ा, तनिक, बहुत कम।

अत्याचार *[अति+आचार] पुं. (तत्.)* शा.अर्थ लोकमान्य प्रथा या लोक-व्यवहार के विरूद्धकार्य। सा.अर्थ शारीरिक और मानसिक पीड़ा पहुँचाने वाला व्यवहार, अनुचित व्यवहार। **उदा.** स्वतंत्रता संग्राम के दौरान अंग्रेज़ शासकों ने क्रांतिकारियों पर भीषण अत्याचार किए थे।

अत्याचारी *[अति+आचार+ई] वि.(तत्.)* 1. अत्याचार करने वाला। 2. अपनी शक्ति का दुरूपयोग कर दूसरों को कष्ट देने वाला। 3. जालिम। **दे.** अत्याचार।

अत्याधुनिक *[अति+आधुनिक] वि. (तत्.)* 1. अधुनातन तकनीक का उपयोग करते हुए विकसित। 2. बिल्कुल नए रूप में। **जैसे**: अत्याधुनिक कंप्यूटर।

अत्यावश्यक *[अति+आवश्यक] वि.(तत्.)* 1. जरूरी 2. जिसके बिना किसी कार्य की पूर्णता न हो। जिसे करना बहुत ही जरूरी हो।

अत्युक्ति *[अति+उक्ति] स्त्री. (तत्.)* 1. बहुत बढ़ा-चढ़ाकर कही गई बात (उक्ति) 2.एक अर्थालंकार जिसमें किसी के गुणों का मिथ्या और चमत्कारपूर्ण वर्णन किया गया हो। **तु.** अतिशयोक्ति।

अत्युत्तम *[अति+उत्तम] वि.(तत्.)* बहुत उत्तम, श्रेष्ठ(तम) **टि.** 'उत्तम' शब्द व्युत्पत्ति की दृष्टि

से अतिशय कोटि superlative degree का सूचक होने पर भी प्राय: इसी अर्थ में 'अत्युत्तम' शब्द भी उसी तरह प्रचलित है जैसे 'सर्वश्रेष्ठ'। इस दृष्टि से 'उत्तम' और 'श्रेष्ठ' शब्द अर्थोपकर्ष के उदाहरण माने जा सकते हैं।

अथ-अव्य. *(तत्.)* आरंभ करने के लिए प्रयुक्त (मांगलिक) शब्द। पु. प्रारंभ आदि। **वाणि.** अथशेष (लेखे की आरंभिक प्रविष्टि जो प्राय: पिछले पृष्ठ की अंतिम जोड़/बाकी वाली संख्या होती है।) **विलो.** इति

अथक *[अ+थक<थकना] वि. (तद्.)* न थकने वाला; बिना थके (लगातार किया जाने वाला) **उदा.** अथक परिश्रम के फलस्वरूप उसने परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

अथर्ववेद *पुं. (तत्.)* चार वैदिक संहिताओं में से अंतिम संहिता। चार वेद हैं-ॠग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद।

अथवा *अव्य. (तत्.)* एक योजक शब्द जो दो या दो से अधिक कथनों (शब्दों, उपवाक्यों, वाक्यों) में पार्थक्य सूचित करता है। **जैसे:** कोई कविता अथवा गीत सुनाओ। **पर्या.** या

अथाह *[अ+थाह] वि.(तत्.)* जिसकी थाह न ली जा सके यानी गहराई न नापी जा सके, बहुत अधिक गहरा। **जैसे:** अथाह सागर, अथाह ज्ञान।

अदद-पु. *(अर.)* अंक, संख्या, गिनती, तादाद, मात्रा। **जैसे:** एक अदद = गिनती में एक।

अदना *वि.(अर.)* बहुत ही साधारण, तुच्छ। **उदा.** आपके सामने मेरी क्या औकात? मैं तो अदना-सा आदमी हूँ। **विलो.** आला।

अदब *पुं. (अर.)* 1. शिष्ट या सभ्य होने का भाव। **पर्या.** शिष्टता, सभ्यता, तमीज़ 2. बड़ों के प्रति आदर का भाव **पर्या.** आदर, सम्मान। **तु.** आदाब- व्यु. बहुत सम्मान, सा.अर्थ सादर नमस्ते।

अदमनीय *[अ+दमन+ईय]* **दे.** अदम्य

अदम्य *[अ+दम्य]* जिसका दमन न किया जा सके। *वि. (तत्.)* जिसको दबाया न जा सके, जिसे वश में न किया जा सके। **पर्या.** प्रबल, अदमनीय।

अदरक/अदरख *पु. (तद्.)* आर्द्रक एक पौधा जिसकी जड़ का रस तीखे और चरपरे स्वाद वाला होता है, तथा जिसका उपयोग दवा के रूप में भी होता है। इस जड़ का प्रसंस्कृत शुष्क रूप सौंठ कहलाता है। ginger

अदरदूर्शिता *स्त्री. (तत्.),* दूर की न सोच सकने का सूचक भाव, नासमझी।

अदल-बदल *[अदलना+अनु.बदलना] पुं. (देश.) पूर्वपद अनु.* एक के स्थान पर दूसरा रखना, परस्पर परिवर्तन।

अदला-बदली *स्त्री.* **(देश.)** एक-दूसरे के साथ वस्तुओं का बदला जाना।

अदहन *पुं. (तद्.<आदहन)* वह पानी जो चावल, दाल आदि को पकाने के लिए पहले गरम किया जाता है।

अदा करना *स.क्रि.* **(अर.)** 1. चुकता करना, भुगतान करना, कर्ज की अदायगी (चुकाना); 2. कर्त्तव्य निभाना, पूरा करना। **जैसे**: फर्ज़ अदा करना; नमाज़ अदा करना।

अदा *स्त्री. (अर.)* हावभाव, (स्त्रियों के) नखरे, भावभंगिमा।

अदाइगी *स्त्री.* **दे.** अदायगी

अदाकार *वि.पुं.* (फा.) (कलाकारी) प्रस्तुत करने वाला, अभिनेता actor

अदाकारी (फ़ा.) *स्त्री.*-मंच पर या फिल्मों में किसी पात्र विशेष के चरित्र को निभाने की कला, अभिनय acting अदा (प्रस्तुत) करने की कला।

अदायगी *स्त्री. (अर.),* चुकाने/भुगतान करने का सूचक भाव। **जैसे:** तुम अपने कर्ज़/फर्ज़ की अदायगी कब कर रहे हो?

अदालत *स्त्री. (अर.)* कानूनी मामलों की सुनवाई करने वाले व्यक्ति और उनके बैठने का स्थान। **पर्या.** न्यायालय**,** कचहरी court

अदावत *स्त्री. (अर.),* दुश्मनी, शत्रुता, वैर।

अदीन *वि./पु. (अर.)* साहित्यकार, कलाकार।

अदूरदर्शितापूर्ण-वि.(तत्) (ऐसा कार्य या व्यवहार) जिसमें दूरदर्शिता का उपयोग न किया गया हो; नासमझी भरा।

अदूरदर्शी *[अ+दूरदर्शी] वि.(तत्.)* व्यक्ति जो दूर की बात न सोच सके, भावी परिणाम के बारे में समय पर विवेकपूर्ण दृष्टि न रखने वाला, नासमझ। **विलो.** दूरदर्शी।

अदृश्य *[अ+दृश्य]* वि.(तत्.) 1. जो दिखाई न पड़े। 2. जो गायब हो गया हो, लुप्त।

अदृश्यता-स्त्री. *(तत्.)* दिखाई न देने/पड़ने का सूचक भाव।

अदृष्ट *[अ+दृष्ट] वि.(तत्.)* जिसे देखा न हो अथवा जिसे देखा न जा सके, दृष्टि से परे। पुं.-भाग्य, प्रारब्ध, पूर्व जन्मों के संचित पाप-पुण्य जिनसे व्यक्ति वर्तमान जीवन में दु:ख-सुख भोगता है। destiny, fate, henck

अदेखा *(वि.) [तद्<अदृष्ट]* 1. जिसे अभी तक देखा न गया हो। **जैसे:** वह व्यक्ति तो मुझे अदेखा सा लगा। 2. गुप्त, अप्रत्यक्ष, न देखे जाने योग्य। 3. जिसने देखा न हो या जो अन्यमनस्कता के कारण देखकर भी न देखने जैसा व्यवहार करता हो। **जैसे:** वे सब तो मुझे देखकर भी अदेखे बने रहे।

अद्धा *वि. (तद्.)* अद्र्ध किसी चीज़ का आधा भाग। *पु.* (लोकप्रचलन में) आधे लिटर वाली शराब की बोतल, **तु.** पव्वा।

अद्भुत *वि.(तत्.)* ऐसी बात जिसे देखकर या सुनकर मन में आश्चर्य हो जाए कि यह क्या है या कैसे है। **पर्या.** आश्चर्यजनक, विलक्षण, अनोखा, विचित्र। *पुं.*-नवरसों में से एक रस जो आश्चर्य का भाव व्यंजित करता है।

अद्य *पुं.(तत्.)* 1. पाप, बुरा काम, दुष्कर्म, अशौच। 2. कंस का एक सेनापति।

अद्यतन *[अद्य=आज+तन]* वि. 1. आज तक की। 2. नवीनतम धारणाओं व विचारों के अनुरूप। **पर्या.** अधुनातन, अद्यावधिक **विलो.** पुरातन uptodate **तु.** नवीनतम latest **उदा.** आपके काम की अद्यतन स्थिति बताइए। 2. आप अपने विचारों को अद्यतन कर लें तो अच्छा होगा।

अद्रि *पुं.(तत्)* पर्वत, पहाड़।

अद्वितीय *[अ+द्वितीय] वि. (तत्.)* जिसके बराबर का कोई दूसरा न हो, बेजोड़।

अद्वै पुं. जीव-ब्रह्म या जड़-चेतन की एकता का भाव। **दर्श.** वि.-द्वितीय-रहित, एकाकी।

अद्वैतवाद पुं.(तत्.) शा.अर्थ द्वैत रहित। दर्श जीव और ब्रह्म में अभेद बताने वाला आद्य शंकराचार्य द्वारा प्रतिपादित दर्शन। (मॉनिज़्म)

अद्वैतवादी वि/.पु., (तत्.) अद्वैतवाद के सिद्धांतों में आस्था रखने वाला; अद्वैतवाद का अनुयायी।

अधकचरा वि.(तद्<अर्ध+कच्चर) शा.अर्थ आधा कच्चा-आधा पका, अधूरा। सा.अर्थ योग्यता आदि में अपूर्ण, अधूरी जानकारी रखने वाला। **जैसे**: अधकचरा ज्ञान।

अधखिला वि./तद् *(अर्ध+खिला <खिलना)* जो आधा खिला हुआ हो, यानी जो पूरा न खिला हो, जो पूरी तरह से विकसित न हुआ हो। **जैसे:** अधखिला फूल।

अधगला *वि. (देश)* आधा गला हुआ यानी कम पका हुआ; आधा पका हुआ; जो न तो पूरी तरह कच्चा हो और न ही पूरी तरह पका। **जैसे:** बिटिया के द्वारा पकाया गया साग तो अधगला ही रह गया है 2; आधा सड़ा हुआ **जैसे:** यह साग तो अधगला है, खाने योग्य नहीं है।

अधनंगा *[अध<आधा+नंगा] वि.(तद्.(अर्धनग्न)* शा.अर्थ आधा नंगा यानी (व्यक्ति) जिसने शरीर पर बहुत ही कम यानी नग्नता छिपाने भर के लिए कपड़े पहन रखे हों। 2. ऐसा शरीर जो कम कपड़ों में ढका हो।

अधन्ना *[अध्< आध< अर्ध + आना] (पु.) (तद्. अधा)* आधे आने का सिक्का। **टि.** पहले एक रूपए में सोलह आने होते थे और एक आने में चार पैसे। इसलिए 'अधन्ना का मतलब पुराने दो पैसे होता है।

अधन्नी *[अध<आधा<अर्ध+अन्नी] (स्त्री.) (तद्)* आधे आने का पुराना सिक्का। **दे.** अधन्न।

अध:पतना *[अध:+पतन] पु.* 1. नीचे की ओर गिरना, या पतित होना। 2. स्त्री. दुर्दशा, दुर्गति। 3. अवनति।

अधम वि.*(तत्.)* 1. नीच, पापी, हीन या दुष्ट 2. निम्नकोटि का।

अधमरा *वि.(तद् <अर्धमृत)* **टि.** संस्कृत में यह शब्द प्रयुक्त नहीं है। 1. आधा मरा हुआ, यानी मरे हुए जैसा, मृतप्राय; जिसे देखकर मरे हुए होने का भ्रम हो। 2. इतना निर्जीव-सा कि लगभग मरा हुआ लगे। **जैसे:** चोर को पीट-पीट कर लोगों ने 'अधमरा' कर दिया था।

अधयक्षता *स्त्री.(तत्.)* 1. किसी सभा, सदन और कार्यालय आदि के कार्य-संचालन और नियमन का कर्त्तव्य-निर्वाह। 2. अध्यक्ष का पद।

अधर *पुं.(तत्.)* 1. निचला होंठ (अधरोष्ठ) 2. नधरा=अधरा (जो धरा=पृथ्वी नहीं है यानी पृथ्वी और स्वर्ग के बीच का रिक्त स्थान, आकाश, आसमान) **मुहा.** अधर में झूलना-अनिश्चय की दशा में रहना।

अधर्म *पु. (तत्.)* धर्म और शास्त्र-विरोधी कार्य या आचरण। दुष्कर्म, अन्याय, दुराचार, बुरा काम।

अधातु-वि. *(तत्.)* **रसा (तत्व)** जो धातुओं के गुणधर्म प्रदर्शित नहीं करता। **उदा.** ऑक्सीजन, नाइट्रोजन, कार्बन, गंधक, फास्फोरस आदि। non-metal **तु.** धातु।

अधात्विक *वि.(तत्)* **दे.** अधातु।

अधार्मिक *[अ+धार्मिक] वि.(तत्.)* जो धार्मिक न हो, धर्म के बंधन को न मानने वाला; अधर्मी; पापी।

अधिक *वि.(तत्.)* 1. ज़्यादा, **उदा.** वहाँ सौ से अधिक लोग इकट्ठे थे। **विलो.** कम। 2.अतिरिक्त, बढ़ा हुआ। **जैसे**: अधिक आयु, अधिक कोण।

अधिकतम [अधिक+तम] वि. *(तत्.)* नियत संख्या में तुलना में सबसे ज्यादा; अधिक से अधिक। (-तम-अतिशय कोटि)

अधिकतर *[अधिक+तर] वि.(तत्.) नियत* संख्या की तुलना में कुछ ज्यादा; अपेक्षा से अधिक। (तर तुलनकोटि) **जैसे**: यहाँ अधिकतर लोग पैसे वाले हैं। **टि**. तुलना के लिए 'अधिकांश' शब्द देखें। (अधिक+तम)

अधिकता *स्त्री.* नियत संख्या से कुछ या बहुत ज्यादा होने की स्थिति। बहुतायत। **पर्या.** आधिक्य।

अधिकरण कारक *पुं.(तत्.)* **व्या.** मैं क्रिया के आधार का बोधक संज्ञा रूप। **जैसे**: लडक़ा घर में है, किताब मेज़ पर है, क्रमशः घर, मेज़। हिंदी में 'में' 'पर' 'को' अधिकरण कारक के चिह्न है।

अधिकरण *पु.तत्* 1. आधार, आश्रय, सहारा। **विधि-**सामान्य न्यायालयों से भिन्न अर्धन्यायिक कार्यालय जो किसी विषय के पक्ष-विपक्ष पर न्यायिक रीति से विचार कर अपने निर्णय को सिफारिश के रूप में सूचित करे। tribunal

अधिकांश (अधिक+अंश) वि./पुं. *(तत्.)* नियत मात्रा का एक बड़ा हिस्सा या भाग। **टि.** 'अधिकांश' शब्द मात्रात्मक कोटि होने पर भी अगणनीय संख्यावाचक हैं; जबकि 'अधिकतर' गणनीय कोटि के संज्ञा शब्दों के लिए प्रयुक्त होता है।

अधिकार *पुं.(तत्.)* 1. विधि के अधीन नागरिक को प्राप्त हक, शक्ति आदि जिसकी रक्षा के लिए न्यायपालिका की व्यवस्था होती है right **जैसे**: मानवाधिकार। वैधानिक तरीके से प्राप्त शक्ति, प्रभुत्व। **टि.** इसके लिए तकनीकी शब्द 'प्राधिकार' प्रयुक्त होता है। authority 2. किसी वस्तु पर प्रकट स्वामित्व। **जैसे**: कश्मीर का एक बड़ा भाग पाकिस्तान के अधिकार में है। possession 3.ऐसा ज्ञान जिसको प्रामाणिक माना जाता हो, विषम का संपूर्ण ज्ञान। **जैसे:** भाषा पर अधिकार, वे गणित के अधिकारी व्यक्ति हैं। command

अधिकारिता *स्त्री. (तत्.)* किसी विचारणीय विषय, भू-क्षेत्र अथवा कार्यक्षेत्र पर आधिकारिक निर्णय कर सकने हेतु प्राप्त शक्ति। juridiction

अधिकारी *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ प्राप्त व्यक्ति।, हकदार (स्त्री.-अधिकारिणी) 2. स्वामी, मासिक, 3. वह कर्मचारी जो किसी पद के दायित्वों का निर्वाह करता हो, अफ़सर officer वि.-अधिकार रखने वाला, अधिकार प्राप्त।

अधिकृत *वि. (तत्.)* 1. जो किसी काम को करने के लिए अधिकार प्राप्त हो। 2. जिस पर अधिकार कर लिया गया हो।

अधिकेंद्र *पुं. (तत्.)* भूतल का वह (केंद्रीय) स्थान जहाँ भूकंप का प्रभाव सबसे अधिक महसूस किया जाता है। और फिर तरंगों के रूप में चारों ओर फैलता चला जाता है epicentrum

अधिक्रम *[अधि+क्रम] पुं.(तत्.)* किसी ज्ञात क्रम में तत्संबंधी घटकों का पूर्व-निर्धारित सुनिश्चित क्रम।

अधिक्रमण *पुं.(तत्.)* 1. पूर्व निर्धारित क्रम में उल्लंघन। supersession 2. किसी वस्तु या स्थान पर अनधिकृत या अवैध रूप से कब्जा करना/अधिकार जमाना।

अधिगत *वि.(तत्.)* 1. प्राप्त, 2. ज्ञात।

अधिगम *पुं.(तत्.)* **शिक्षा** अनुभवजन्य और अभ्यास। साध्य ज्ञान प्राप्त करने या कौशल अर्जित करने की प्रक्रिया जिसके आधार पर व्यक्ति/विद्यार्थी के व्यवहार में सापेक्षिक रूप से

स्थायी परिवर्तन या सुधार आता है। **पर्या.** सीखना learning

अधिग्रहण *[अधि+ग्रहण] पुं. (तत्.)* सत्ता द्वारा सार्वजनिक हित में किसी भी संपत्ति को नियत अवधि के लिए कब्ज़े में लेना। requisition **तु.** अर्जन।

अधित्यका *स्त्री. (तत्.)* पहाड़ के ऊपर की समतल भूमि, गिरिप्रस्थ, ऊँचा पहाड़ी मैदान। **पर्या.** पठार। **तु.** उपत्यका।

अधिदेश *पु.(तत्.)* किसी उच्च अधिकारी या न्यायाधीश द्वारा अपने अधीनस्थ अधिकारी या कर्मचारी को कार्य करने के ढंग या किसी व्यवस्था के सबंध में दिया गया आदेश। mandate

अधिनायक *पु.(तत्)* जनतांत्रिक पद्धति से प्राप्त सत्ता की तुलना में सैन्य शक्ति के बल पर बन बैठा किसी देश का संपूर्ण प्रभुता संपन्न शासक। dictatorship

अधिनायकता/अधिनायकत्व *स्त्री.(तत्.)* अधिनायक का शासन। dictatorship **दे.** अधिनायक

अधिनायकवाद *पुं.(तत्.)* **राज.** अधिनायक की सत्ता का समर्थक राजनीतिक सिद्धांत। dictatorship, dictatorism

अधिनियम *पुं.(तत्.)* नियम संसद अथवा विधानमंडल द्वारा पारित वह विधि (कानून) जिसके अनुसार नियम बनाना कार्यपालिका का, जिसका पालन करना नागरिकों का कर्त्तव्य है और जिसका पालन सुनिश्चित करवाना न्यायालय का अधिकार और कर्त्तव्य है। act **तु.** नियम rule

अधिपति *पुं.* **(***तत्.)* 1. स्वामी, मालिक 2. शासक; राजा, नरेश। **तु.** अधिनायक।

अधिभार *पु. (तत्)* 1.**प्रशा.** किसी विशेष कार्य के लिए लगाया गया अतिरिक्त शुल्क। surcharge 2. **भौ.** यंत्र या उपकरण के अनुमत निर्गम भार से अधिक भार। overload **उदा**. लिफ्ट में अधिभार हो तो उसका चालन प्रभावित हो जाता है।

अधिभाष *[अधि+भाषा] स्त्री. (तत्.)* 1. वह भाषा जिसके माध्यम से अन्य भाषाओं के प्रतीकों के गुणधर्मों का वर्णन किया जाता है। 2. तकनीकी शब्दों से युक्त वह भाषा जिसका प्रयोग किसी भाषा के विवेचन एवं विश्लेषण के उद्देश्य से किया जाता है। (**जैसे:** व्याकरण की भाषा) matalanguage

अधिमास, *पुं.(तत्.)* शा.अर्थ अधिक महीना, चांद्रमास की गणना वाले पंचांग में जोड़ा गया अधिक महीना। मलमास-लौंद का महीना। **टि.** जिस चांद्रमास में सूर्य संक्रांति नहीं होती, वह मास अधिक मास के रूप में माना जाता है। इस प्रकार उस एक वर्ष में तेरह चांद्रमास हो जाते हैं। **तु.** क्षयमास।

अधिमुद्रण *पुं.(तत्.)* किसी पुस्तक या पत्र-पत्रिका का नियत संख्या से अधिक संख्या में छापा जाना।

अधिया *पुं. (तद्.<आधा)* आधा भाग। खेती का एक तरीका, जिसमें खेती की उपज का आधा भाग खेत के मालिक को और आधा भाग खेतिहर मजदूर को मिलता है। **उदा.** उसने अपना खेत अधिये/अधिए पर दे रखा है।

अधिवकत्ता *पुं.(तत्.)* उच्च और उच्चतर न्यायालय में वादी या प्रतिवादी का पक्ष प्रस्तुत करने वाला कानूनविद्/वकील। advocate

अधिवर्ष *पुं. (तत्)* वह वर्ष जिसमें फरवरी का महीना 28 के स्थान पर 29 दिनों का होता है leapyear

अधिवृक्क *(ग्रंथि) स्त्री. (तत्.)* वृक्क (गुर्दा) से लगी हुई अंत:स्रावी ग्रंथि जिससे एड्रिनैलिन नामक महत्वपूर्ण हार्मोन स्रवित होता है। adrenal gland

अधिवेशन *पुं.(तत्.)* किसी संस्था या संगठन के अधिकतम सदस्यों का नियतकालिक समारोह। जलसा, सभा, सम्मेलन। session

अधिशासी अभियंता *पु.(तत्.)* वह अभियंता/ इंजीनियर जिसकी देख-रेख में अनेक निर्माण-कार्य होते हैं। executive engineer

अधिशासी *पुं.(तत्.)* प्रधान कार्यकारी अधिकारी। जैसे-अधिशासी अभियंता।

अधिष्ठाता *पु.(तत्.) (<अधिष्ठात्), (स्त्री.-अधिष्ठात्री)* 1. व्यक्ति जिसके हाथ में अधिकार अथवा कार्य का भार हो, प्रमुख नियामक,

अध्यक्ष 2. आधुनिक प्रयोग डीन 3. प्रधान, मुखिया। 4. ईश्वर, परमात्मा।

अधिष्ठान *पुं. (तत्.)* 1. रहने या ठहरने का स्थान। 2. वासस्थान, 3. पड़ाव 4. संस्थान या संस्था। 5. अधिकार, सत्ता।

अधिसूचना [अधि+सूचना] स्त्री. *(तत्.)* विशेषत: राजपथ में प्रकाशित होने वाली अधिकारिक सूचना। notification

अधिसूचित *(अधि+सूचना+इत)-वि.* जो आधिकारिक रूप से जारी या प्रकाशित की गई हो। notified **दे.** अधिसूचना।

अधीक्षक *पुं.(तत्.)* किसी कार्यालय के लिपिकवर्गीय कर्मचारियों अथवा कनिष्ठ तकनीकी कार्यकर्ताओं के काम पर निगरानी रखने वाले अधिकारी का पदनाम। superintendent

अधीन *वि.(तत्)* (व्यक्ति या संस्था) जो किसी अन्य के नियंत्रण में हो। **पर्या.** अधीनस्थ।

अधीनता *[अधीन+ता] स्त्री.(तत्.)* किसी के अधीन या नियंत्रण में होने की स्थिति का सूचक भाव। परतंत्रता, परवशता।

अधीनस्थ *[अधीन+स्थ] वि.(तत्.)* किसी शक्ति प्राप्त व्यक्ति या कार्यालय के नीचे कार्य करने वाला। **जैसे:** अधीनस्थ अधिकारी, अधीनस्थ कार्यालय, अधीनस्थ न्यायालय। subordinate

अधीर *वि.(तत्.)* 1. जिसमें धैर्य रखने की क्षमता न हो, धैर्यरहित, घबराया हुआ, व्याकुल, बैचेन, उतावला। (भाव.) अधीरता

अधुना क्रि.वि. *(तत्.)* 1. वर्तमान में, 2. आजकल, 3. इन दिनों, 4. संप्रति

अधूरा [तद्.<अर्धपूर (अर्धपूर्ण] वि. जो पूरा न हो, अपूर्ण, अधकचरा। जैसे-अधूरा ज्ञान। **स्त्री.** अधूरी! **भाव.** अधूरापन।

अधेड़ *[तद्*<अर्धवयस्/अर्धवृद्‌ध] *वि.पुं.* जवानी और बुढ़ापे के बीच की उम्र वाला (व्यक्ति), ढलती उम्र का यानी पचास वर्ष से ऊपर की उम्र का (व्यक्ति)।

अधेला *[तद् <अर्धपण] पुं.* पुराने जमाने का आधा पैसा।

अधेली *स्त्री.* एक रुपए के आधे मूल्य का सिक्का, अठन्नी।

अधोगति *[अध:+गति] स्त्री.(तत्.)* शा.अर्थ नीचे की ओर जाना। सा.अर्थ 1. पतन, गिरावट, 2. दुर्दशा।

अधोमुख *[अध:+मुख] वि.(तत्.)* 1. नीचे की ओर मुँह किए हुए। 2. मुँह के बल।

अधोरेखा *स्त्री.(तत्.)* शब्द, वाक्य आदि के नीचे खींची गई रेखा जो उस शब्द या वाक्य को अन्य शब्दों या वाक्यों की तुलना में प्रमुखता प्रदान करती है। underline

अधोलोक *[अध:+लोक] पु.(तत्.)* शा.अर्थ नीचे का लोक सा.अर्थ पाताल (लोक)।

अधोवस्त्र *[अध:+वस्त्र] पुं. (तत्.)* 1. कमर के नीचे पहने जाने वाले वस्त्र। **जैसे:** धोती, लुंगी, जाँघिया। 2. ऊपर पहने जाने वाले वस्त्र के नीचे पहने जाने वाला वस्त्र, **जैसे:** बनियाइन। undergarments

अधोवायु *(अध:+वायु) स्त्री.(तत्.)* गुदा से निकलने वाली वायु, अपानवायु (पाद)।

अधोहस्ताक्षरी *(तत्.) वि./पुं. (तत्.)* किसी सरकारी पत्र के नीचे हस्ताक्षर करने वाला (अधिकारी) undersigned

अध्यक्ष *पु.(तत्.)* किसी सभा, सदन और आयोग के कार्यालय के कार्य-संचालन और नियमन के कर्त्तव्य का निर्वाह करने वाला व्यक्ति या अधिकारी। Chairperson, Speaker (लोकसभा)

अध्यक्षता *स्त्री.(तत्.)* 1. किसी सभा, सदन और कार्यालय आदि के कार्य-संचालन और नियमन का कर्तव्य-निर्वाह 2. अध्यक्ष का पद।

अध्ययन *पु.* **(तत्.)** ज्ञान प्राप्ति के लिए किसी विषय को अच्छी तरह से पढ़ना और समझने का प्रयत्न करना। **पर्या.** पढ़ाई, पठन-पाठन study

अध्ययनशील *वि.* पढ़ने में अपेक्षित रुचि रखनेवाला।

अध्ययनावकाश *[अध्ययन+अवकाश] पुं.(तत्.)* किसी कर्मचारी/अधिकारी को विशेष अधययन या पढ़ाई के लिए मिलने वाला अवकाश या छुट्टी। study leave

अध्यवयाय *पुं. (तत्.)* लगनपूर्वक काम में लगे रहना; निरंतर परिश्रम करते रहना।

अध्यवसायी *वि. (तत्.)* अध्यवसाय करने वाला, लगातार परिश्रम या उद्योग करने वाला। diligent

अध्यात्म *पु. (तत्.)* मनुष्य के शरीर में स्थित आत्मा एवं ब्रह्म की सत्ता से संबंधित चिंतन।

अध्यादेश *पुं. (तत्.)* (संसद अथवा विधानमंडल के विश्रांतिकाल में) कार्यपालिका द्वारा राष्ट्रपति/राज्यपाल के नाम पर प्रख्यापित आदेश। (जो अंतरिम व्यवस्था के रूप में पारित विधि के समान माना जाता है) ordinance

अध्यापक *पुं. (तत्.) (स्त्री.-अध्यापिका)* वह जो दूसरों को, विशेषत: विद्यार्थियों को पढ़ाता हो। शिक्षण कार्य करने वाला। **पर्या.** शिक्षक, उस्ताद।

अध्यापकी *[अध्यापक+ई] स्त्री.(तत्.)* पढ़ाने का व्यवसाय, शिक्षण-कार्य। tearchership

अध्यापन *पुं. (तत्.)* 1. मुख्यत: विद्यार्थियों को पढ़ाने का कार्य। 2. अध्यापक का व्यवसाय (पेशा) teaching

अध्यापिका *स्त्री. (तत्.)* वह महिला जो पढ़ाने का कार्य करती है। **पर्या.** शिक्षिका lady teacher, female teacher

अध्याय *पुं. (तत्.)* किसी पुस्तक या ग्रंथ का वह संख्याकिंत भाग जिसमें किसी विषय विशेष का सम्यक् विवेचन होता है।

अध्येता *पुं.* **(तत्)** अध्ययन करने वाला; पढ़ने वाला। learner

अनंत [अन्+अंत] *वि. (तत्.)* 1. जिसका अंत न हो, अंतहीन, शाश्वत। **जैसे**: अनंत आकाश infinite **गणि.** एक अपरिमित राशि। इसे शून्य (00) चिह्न से व्यक्त किया जाता है।

अनंतर [अन्+अंतर] *वि. (तत्.)* 1. बिना अंतर के, अंतररहित, लगातार, निरंतर। 2. समीप वाला। **अव्य.** 1. तुरंत बाद में, 2. पीछे, पश्चात्।

अनंतिम [अन्+अंतिम] *वि.(तत्.)* जो फिसलन अंतिम रूप में गृहीत न हो, यानी भविष्य में (आगे चलकर) जिसमें परिवर्तन किया जाना संभव हो। **तु.** अंतिम। provisional

अन *क्रि. वि. (तत्)* हिंदी उपसर्ग-तद्भव शब्दों के पहले लगकर अर्थ परिवर्तित कर देता है। **जैसे**: अनपढ़, अनकहा, अनजान। (**तु.** अ/अन्)

अनकहा *स्त्री. वि. (देश.)* (अनकही) बिना कहा हुआ, अकथित।

अनगढ़ (अन+गढ़=गढ़ा हुआ) *वि. (देश.)* बिना गढ़ा हुआ, जो अपने प्रकृत या मूल रूप में हो, बैडोल।

अनगिनत *वि. (देश.)* जिसे गिना न जा सके, अगणित, बहुत ज़्यादा।

अनचाहा [अन+चाहा=चाहना] *वि. (देश.)* जिसे चाहा न गया हो, जिसकी इच्छा न की गई हो। **पर्या.** अनिच्छित।

अनजान/अनजाना *वि. (देश.)* जिसे कोई जानता या पहचानता न हो। **पर्या.** अनजान **उदा.** कल मेरे घर में एक अनजाना व्यक्ति घुस आया।

अनजाने *क्रि.वि.* (अनजान) बिना जाने, अनजान में। **उदा.**-अनजाने में मुझसे यह गलती हो गई। इसके लिए माफी माँगता हूँ। (**टि.** यह 'अनजाने' का प्रयोग संज्ञावत् हुआ है।)

अनत (बोली रूप) *वि. तद्.* **दे.** अन्यत्र

अनतिक्रमणीय [अन्+अति+क्रमण+ईय] *वि. (तत्.)* जिसका अतिक्रमण अर्थात उल्लंघन न किया जा सके।

अनथक [अन+थक < थकना**]** *अव्य. (देश.)* बिना थके हुए।

अनदेखा *वि. (देश.) (स्त्री.*अनदेखी) बिना देखा हुआ, न देखा हुआ; अपरिचित। **जैसे**: अनदेखे चेहरे। **तु.** अनसुना। *स.क्रि.* अनदेखा करना = ध्यान न देना, अवहेलना करना। **उदा.** तुमने मेरी बात को देखा-अनदेखा कर दिया, यह ठीक नहीं है।

अनधिकार *वि. (तत्.)* बिना अधिकार/प्राधिकार के। **जैसे**: अनधिकार चेष्टा। अनधिकार प्रवेश। *पु.* प्राधिकार का अभाव।

अनधिकारिक *वि. (तत्.)* गैर सरकारी। **जैसे:** अनधिकारिक टेस्ट शृंखला।

अनधिकृत बस्ती *स्त्री. (तत्+तद्)* नगर-योजन town planning के मान्य नियमों का अनुपालन न करते हुए यानी अवैध तरीके से बसा दिए गए आवासीय समूह।

अनधिकृत *वि. (तत्)* आधिकारिक अनुमति या अनुमोदन प्राप्त किए बिना। **जैसे:** अनधिकृत कालोनी। **विलो.** अनुमोदित।

अनन्नास *पुं. (पुर्त.* अनानास) 'अनानास कोमोसुस' नामक उष्णकटिबंधीय पादप (वृक्ष) पर लगने वाला मोटी गाँठ जैसा, सरस फल जिसका कठोर छिलका मोटी आँखों जैसी रचना वाला होता है तथा बीजयुक्त गूदा पीले रंग का होता है और पकने पर उसे काटकर खाया जाता है। pineapple

अनन्य [अन्+अन्य] *वि. (तत्.)* 1. जिसका संबंध किसी अन्य से (दूसरे से) न हो, अद्‌वितीय। **जैसे**: अनन्य शक्ति(याँ) 2. गहरा संबंध रखने वाला, एकनिष्ठ, अभिन्न, एक में ही लीन। **जैसे**: अनन्य मित्र, अनन्य भक्ति।

अनपचा [अन्+पचा < पचना] *वि. (देश.)* (भोज्य पदार्थ) जो पूरी तरह से न पचा हो।

अनपढ़ [अन+पढ़ < पढ़ना] *वि. (देश.)* जो पढ़ना (लिखना भी) न जानता हो, जो पढ़ा-लिखा न हो। illiterate **पर्या.** निरक्षर, अपढ़। **तु.** अशिक्षित।

अनबन [अन+बन < बनना] *स्त्री. (देश.)* (संबंधों में) बिगाड़, विरोध; खटपट। **उदा.**-कौरवों और पांडवों के बीच की अनबन ने अंत में युद्‌ध का रूप ग्रहण कर लिया।

अनबूझ [अनबूझा+बूझना=समझना] *वि. (देश.)* जिसे बूझना यानी समझना असंभव भले ही न हो, पर कठिन अवश्य हो। जो समझदार न हो **जैसे**: अनबूझ पहेली। **पर्या.** नासमझ,नादान।

अनबोला/अबोला [अ. हि., अन+बोलना] *पुं.* परस्पर बातचीत न होने की स्थिति।

अनब्याहा [अन्+ब्याहा < ब्याहना=विवाह होना] *वि. (देश.)* जिसका विवाह न हुआ हो, विवाह के बिना। अविवाहित **उदा.** कई व्यक्ति अनब्याहे ही अपना जीवन बिता लेते हैं।

अनभिज्ञ [अन्+अभि+ज्ञ] *वि. (तत्.)* 1. जिसे (विषय का) ज्ञान न हो, अनजान। 2. अपरिचित, नावाकिफ़। **टि.** कुछ लोग 'अन' को नकारात्मक उपसर्ग (**जैसे:** अनजान में) मानते हुए इस शब्द का विलोम 'भिज्ञ' बताते देखे गए हैं, पर वस्तुत: यहाँ 'अन्' उपसर्ग है जो, सकारात्मक 'अभिज्ञ' में जुड़ा है। इस बारे में उपयुक्त व्युत्पत्तिपरक सावधानी अपेक्षित है।

अनभिज्ञता (अन्+अभिज्ञता) *स्त्री. (तत्.)* जानकारी या परिचय का अभाव। कानून की अनभिज्ञता (जानकारी न होना) उससे बचने का रास्ता नहीं है।

अनमना [अन=बिना+मना=मनवाला] *वि. (तद्.) (स्त्री.अनमनी)* जिसका मन ठीक तरह से किसी काम में न लग रहा हो। **तु.** अन्यमनस्क। अन्यमनस्क, जिसका मन या ध्यान किसी और तरफ़ हो।

अनमना *वि. (तद्.*<अन्यमनस्क) जिसका मन कहीं न लग रहा हो या उस कार्य में न लगे जो वह कर रहा है। *तु.*-अन्यमनस्क।

अनमेल/अमेल [अन+मेल] *वि. (तद्.)* जिसका मेल न बैठता हो, बेमेल। **जैसे:** अनमेल विवाह (बूढ़े पुरूष और कम उम्र की कन्या का विवाह, पढ़े-लिखे से अनपढ़ का विवाह आदि)

अनमोल [अन+मोल] *वि. (तद्.)* (वह वस्तु) जिसका मूल्य इतना अधिक हो कि सर्वसाधारण उसके खरीद की कल्पना से परे हो; बहुमूल्य। यानी जिसका मूल्य आँका न जा सके।

अनर्गल [अन्+अर्गल] *वि. (तत्.)* मूल अर्थ बिना अर्गला (रुकावट) के, निर्बाध, अबाध। विकसित अर्थ (अनादरसूचक) बिना रोक-टोक के, अनियंत्रित, विचारहीन **जैसे**: अनर्गल प्रलाप।

अनर्त *पुं. (तत्.)* **दे.** आनर्त।

अनर्थ [अन्+अर्थ] *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ उल्टा अर्थ। सा.अर्थ अनुचित अथवा बहुत बुरी घटना। **उदा.** इस परिवार में एक ही कमाने वाला था जिसकी मृत्यु हो गई। इससे बड़ा अनर्थ और क्या हो सकता है।

अनर्थकारी *वि.(तत्.)* अनर्थ करने वाला/वाली, बहुत अधिक हानि पहुँचाने वाला/वाली। **जैसे**: अनर्थकारी बाढ़।

अनल *पुं. (तत्.)* अग्नि, आग।

अनवरत [अन्+अव+रत] *क्रि.वि. (तत्.)* लगातार होने वाला। **जैसे:** अनवरत प्रयत्न, अनवरत अध्ययन। लगातार, सतत्, निरंतर। **उदा.** वह अनवरत पढ़ता रहा इसलिए सफल हो गया; वह अनवरत चलता रहा इसलिए समय पर पहुँच गया।

अनवलंबित [अन्+अवलंबित] *वि. (तत्)* जिसे सहारे की आवश्यकता न हो, जिसे किसी का सहारा सुलभ न हो, बेसहारा, निराधार, अनाश्रित।

जैसे: पैतृक संपत्ति से युक्त वह पूरी तरह अनवलंबित है। 2. आश्रयहीन, निराश्रित। **जैसे**: वह अनवलंबित होते हुए ही अपना विकास कर रहा है।

अनशन [अन्+अशन=भोजन] *पुं. (तत्.)* किसी विशेष उद्देश्य से (प्राय: विरोध प्रदर्शन के लिए) बिना खाए रहना; भोजन का त्याग करना, निराहार रहना, अन्नग्रहण न करना।

अनसुना [अन+सुना] *वि. (देश.*<अश्रुत) बिना सुना हुआ, जिसे पहले सुना न गया हो। **उदा.** यह गीत अनसुना है। **मुहा.** सुना-अनसुना कर देना= किसी की कही बात को सुनने के बाद भी इसी तरह व्यवहार करना जैसे उसने वह बात सुनी ही न हो। उपेक्षा करना, ध्यान न देना। *(स्त्री.* अनसुनी)

अनहोनी [अन+होनी] *स्त्री. (देश.)* ऐसी बात या घटना जो सामान्यत: नहीं होती; प्राकृतिक नियमों के विपरीत बात। **विलो.** होनी।

अनागत [अन्+आगत] *वि. (तत्)* 1. जो न आया हो, न आया हुआ, अनुपस्थित। **जैसे**: अनागत छात्र। 2. भावी। **उदा.** अनागत भविष्य को कौन जान सकता है?

अनाज [प्रा.<अण्णज्ज अन्नाद्य] *पुं. (तद्.)* अन्न, गेहूँ, चावल, दाल, चना आदि के दाने, गल्ला। **जैसे:** हमारे देश में अनाज की कमी नहीं है, बस कमी है तो उसके रख-रखाव की। **मुहा.** अनाज का दुश्मन = बहुत अधिक खाने वाला, भुक्खड़।

अनाड़ी *वि. /पुं. (तद्* < अनार्य) (वह व्यक्ति) जो सामान्य व्यवहार में नासमझ या किसी विषय में बिलकुल ज्ञान न रखता हो। **पर्या.** अज्ञानी, नासमझ; भोंदू।

अनाथालय [अनाथ+आलय] *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ अनाथों का/के लिए आश्रय-स्थल (घर)। अनाथ लोगों की देखभाल और पालन-पोषण इत्यादि के लिए स्थापित सार्वजनिक आवास-गृह।

अनादर [अन्+आदर] *पुं. (तत्.)* पात्रता के अनुसार आदर में कमी। **पर्या.** अपमान, बेइज्जती, अप्रतिष्ठा। **उदा.** आप भले ही अपने बड़े भाई का आदर न करें, पर आपसे इतनी तो अपेक्षा है ही कि कम-से-कम उनका अनादर तो न करें। **तु.** निरादर।

अनादि [अन्+आदि] *वि. (तत्.)* जिसका आदि न हो, जिसका प्रारंभ किसी को पता न हो; जो सदा से चला आ रहा हो। (परमात्मा का एक विशेषण)। **जैसे**: अनादि ब्रह्म।

अनाप-शनाप *वि. [तद्.* < अनाप्त-अनु.] अनाप **:** 1. अन्+आप्त = अविश्वस्त या अप्रामाणिक व्यक्ति जैसा 2. अ+नाप = नापतौल के बिना। **शनाप** 1. अनाप की अनुकरणमूलक द्विरूक्ति 2. स+नाप = नापतौल सहित ('स' का 'श' में परिवर्तन) सा.अर्थ **1.** अविश्वस्त या अप्रामाणिक व्यक्ति की तरह यानी बेमतलब, बेतुका, बेसिरपैर का। 2. कुछ नापतौलकर तो अधिकतर नापतौल के बिना, यानी बेमतलब, बेतुका, बेसिरपैर का। **उदा.** वह शराब के नशे में अनाप-शनाप बकता रहा।

अनामिका *स्त्री.(तत्.)* शा.अर्थ बिना नाम वाली; जिसका कोई नाम न रखा गया हो। **आयु**. सबसे छोटी (कनिष्ठिका) और सबसे लंबी (मध्यमा) उंगली के बीच वाली उंगली जिसमें अंगूठी पहनी जाती है। ringfinger **टि.** अंगूठे (अंगुष्ठ) की ओर से क्रमश: चारों उंगलियों के नाम हैं-तर्जनी, मध्यमा, अनामिका और कनिष्ठा या कनिष्ठिका।

अनायास [अन्+आयास] *क्रि.वि. (तत्.)* 1. बिना प्रयास या प्रयत्न करे; आसानी से। **उदा.** मेरी पुस्तक खो गई थी, पर ढूँढने पर वह अनायास ही मिल गई। **विलो.** सायास। 2. अकस्मात्, अचानक। **उदा.** अनायास वर्षा से रास्ते में मैं तरबरत हो गया।

अनार *पुं. (फा.)* 1. उष्ण कटिबंधीय पादप और उसका फल जो गोलाकार जैसा होता है और जिसके कठोर रक्तिम गुलाबी छिलके के भीतर दंतपंक्ति जैसे बीज सहित दाने होते हैं। (दाड़िम) 2. मिट्टी के छोटे गोल कुल्हड़नुमा आवरण में दबे बारूद वाली एक आतिशबाजी जिसमें माचिस की जली हुई तीली लगाने पर फव्वारे की तरह शोर वाली ज्वाला निकलती है।

अनारदाना *पु. (फा.)* अनार के सुखाए दाने, जो खट्टे-मीठे होते हैं और दवाई एवं चटनी के काम में आते हैं।

अनार्य *वि. (तत्)* जो आर्य न हो; आर्येतर।

अनावरण [अन्+आवरण] *पुं. (तत्.)* पर्दा (आवरण) हटाना।

अनावरण समारोह *पुं.(तत्).* समारोह जिसमें किसी महापुरुष की नवस्थापित मूर्ति/चित्र अथवा पुस्तक, भवन आदि ढके पर्दे या फीते को हटाकर/खोलकर/काटकर उसे लोकार्पित किया जाता है। **वि.** अनावृत = खुला; नंगा आदि। **जैसे:** अनावृत शरीर।

अनावश्यक [अन्+आवश्यक] *वि.(तत्.)* जो आवश्यक न हो, गैर-जरूरी, अनुपयोगी, व्यर्थ। **जैसे-**अनावश्यक खर्च।

अनावृष्टि [अन्=नहीं+आ=पर्याप्त+वृष्टि=वर्षा] *स्त्री. (तत्.)* पर्याप्त वर्षा का अभाव अर्थात बिलकुल वर्षा न होना। **पर्या.** सूखा। drought

अनावेशित (अनाविष्ट) [अन्+आवेशित] *वि.(तत्.)* battery जिसे चार्ज न किया गया हो। **विलो.** आवेशित (आविष्ट)। uncharged

अनिच्छा [अन्+इच्छा] *स्त्री. (तत्.)* इच्छा का अभाव, इच्छा न होने का भाव; जी न करना। **उदा.** उसने अनिच्छा से ही सही, तुम्हारा काम तो कर दिया।

अनित्य *वि.(तत्.)* जो सदा न रहे; मिटने वाला, नश्वर। **उदा.** मानव शरीर अनित्य है। **विलो.** नित्य।

अनियंत्रित *वि. (तत्.)* (अ+नियंत्रित+नियंत्र+इत) (तत्.) 1. जिस पर किसी प्रकार का नियंत्रण न हो; 2. नियंत्रण/प्रतिबंध रहित; स्वच्छंद; निरंकुश; मनमाना; बेकाबू। **उदा.** मेले में लोगों की भीड़ अनियंत्रित हो गई। **विलो.** नियंत्रित।

अनियमित [अ+नियम+इत] *वि. (तत्.)* 1. जो नियमित न हो; जो नियत समयानुसार घटित न हो। **पर्या.** नियमरहित, बेकायदा। **उदा.** उसका सोना-जागना सदा अनियमित रहा। 2. जिसमें नियमों का उल्लंघन किया जा रहा हो। **पर्या-** अवैधा। **उदा.** अनियमित निर्माण। 3. रुक-रुक कर होने वाला। उदा.-अनियमित वर्षा। (ईरेगुलर)

अनियमितता (अनियमित+ता) *स्त्री. (तत्.)* नियमित न होने का भाव। **दे.** अनियमित।

अनिल दे. वायु।

अनिल *पुं. (तत्.)* हवा, वायु, पवन।

अनिवार्य (अ+निवार्य) *वि. (तत्.)* 1. जिससे निवारण न हो सके, जिससे बचा न जा सके। essential 2. जिसे निवारित न किया जा सके, जिसे छोड़ा न जा सके। inavitable 3. जिसे करना या मानना आवश्यक हो। comulsory। **तु.** आवश्यक।

अनिवार्यता (अनिवार्य+ता) *स्त्री. (तत्.)* अनिवार्य होने का भाव, **दे.** अनिवार्य (कंपल्शन, नेसिसिरी)

अनिश्चय (अ+निश्चय) *पुं. (तत्)* निश्चय का अभाव; संदेह। **जैसे:** अनिश्चय की स्थिति।

अनिषेकजनन *पुं. (तत्.)* लैंगिक/अलैंगिक से भिन्न जनन का वह प्रकार जिसमें निषेचन fertilization की क्रिया के बिना ही केवल मादा युग्मक से नए जीव उत्पन्न होते हैं। **जैसे:** मधुमक्षिका, बर्र, रोटीफर, एफिड आदि कुछ प्राणियों में नर सैक्स का बनना। **दे.** जनन। parthenogenesis

अनिष्ट [अन्+इष्ट] *वि./पुं. (तत्.)* शा.अर्थ नुकसान**,** विपत्ति। *पुं.* न चाहा गया परिणाम। **जैसे:** जापान में भूकंप आया और अनिष्ट हो गया।

अनीति [अ+नीत] *स्त्री. (तत्.)* जिसमें न्याय एवं औचित्य आदि का अभाव हो। **पर्या.** अन्याय।

अनु *उप. (तत्.)* एक उपसर्ग जो शब्द के पहले लगकर अर्थ परिवर्तित कर देता है। **जैसे**: (क) पीछे; बाद में। **जैसे:** अनुचर; अनुवाद। (ख) समान-अनुरूप। **जैसे**: अनुपान। (ग) बारंबार-अनुशीलन, (घ) नियमित। **जैसे:** अनुक्रम।

अनुकंपा *स्त्री. (तत्.)* सा.अर्थ दया, कृपा, अनुग्रह। तकनीकी अर्थ दूसरों के कष्ट को देखकर पिघलने (द्रवित होने) का भाव। compassion **उदा.** उसे अनुकंपा के आधार पर नौकरी मिली है। **तु.** अनुग्रह।

अनुकरण [अनु+करण] *पुं. (तत्.)* 1. किसी क्रिया को देखकर उसी की नकल करना। imitation, copying 2. किसी आदर्श व्यक्ति के गुणों, कार्यों को अपने जीवन में उतारने का प्रयत्न करना; उसके पद चिह्नों पर चलना। following

अनुकरणीय [अनुकरण+ईय] *वि.(तत्.)* अनुकरण के योग्य। **उदा.** गांधीजी का जीवन अनुकरणीय है। **दे.** अनुकरण।

अनुकर्ता *पुं. (तत्.)* व्यक्ति जो किसी का अनुकरण करे।

अनुकूल *वि.(तत्.)* 1. किसी वस्तु, कार्य, प्रकृति आदि के उपयुक्त, मुआफिक। fawourable **विलो**. प्रतिकूल। **जैसे:** अनुकूल परिस्थितियाँ। 2. किसी के विचारों के अनुसार कार्य करने वाला। agreeable

अनुकूलता *स्त्री. (तत्.)* अनुकूल होने का भाव। **दे.** अनुकूल।

अनुकूलन *पुं. (तत्.)* 1. परिवेश के अनुसार ढल जाने का सूचक भाव। **जैसे:** दक्षिण अफ्रीका पहुँचकर टैस्ट मैच शुरू होने से पहले हमारी क्रिकेट टीम ने एक सप्ताह तक जमकर वहाँ अनुकूलन अभ्यास किया। 2. किसी साहित्यिक कृति की नाटक, फिल्म आदि की आवश्यकताओं के अनुरूप पटकथा के रूप में प्रस्तुति। adaptation

अनुकृति *स्त्री. (तत्.)* **दे.** अनुकरण। amitation

अनुक्रम [अनु+क्रम] *पुं.* लगातार, एक के बाद एक का क्रम, सिलसिला। sequence

अनुक्रमण [अनु+क्रम+न] *पुं. (तत्.)* एक ही क्रम में यानी पंक्तिबद्ध होकर एक-के-पीछे-एक का आगे बढ़ना; एक-दूसरे का अनुगमन करना।

अनुक्रमणिका *स्त्री. (तत्.)* **पुस्त.** पुस्तक के अंत में दी गई शब्दों, नामों आदि की वर्णक्रमानुसार सप्रसंग पृष्ठ संख्या सहित सूची। **उदा.** पुस्तक की अनुक्रमणिका। index

अनुखन *पुं. (तत्)* किसी ध्वनि या आवाज़ के आधार पर शब्द बनने/बनाने, चीज का बोलना या बजना, ध्वनियों की प्रक्रिया। **जैसे:** 'खटखट', 'टपटप', पत्ता ('पत्' ध्वनि पर आधारित)।

अनुगमन *पुं. (तत्)* शा.अर्थ 1. पीछे चलना। सा.अर्थ 1. किसी के बताए मार्ग पर चलना। **विलो.** प्रतिगमन।

अनुगामी *वि. (तत्.) (स्त्री.-अनुगामिनी)* किसी के पीछे-पीछे चलने वाला; आज्ञाकारी।

अनुगृहीत [अनुग्रह+इत] *वि.(तत्.)* 1. जिस व्यक्ति पर अनुग्रह हुआ हो, कृतज्ञ, एहसानमंद, कृपा-प्राप्त, आभारी, उपकृत। 2. उपकार मानने वाला। **उदा.** मेरा दो दिन का आकस्मिक अवकाश स्वीकृत/स्वीकार करें। मैं आपका अनुगृहीत रहूँगा।

अनुग्रह *पुं. (तत्.)* सा.अर्थ दया, कृपा, अनुकंपा। तकनीकी अर्थ किसी के अनुकूल काम जो प्राय: उसे लाभ पहुँचाने के उद्देश्य से किया जाता है। favour **जैसे:** अनुग्रह, अनुदान।

अनुग्रह-अनुदान *पुं. (तत्.)* हकदारी न होने पर भी, असाधारण परिस्थितियों में, विपत्तिग्रस्त लोगों को दी जाने वाली आर्थिक सहायता। ex-gratia grant

अनुचर *पुं. (तत्.) (स्त्री.* अनुचरी) शा.अर्थ पीछे चलने वाला। सामान्य अर्थ नौकर, सेवक, दास।

अनुचित [अन्+उचित] *वि. (तत्.)* शा.अर्थ जो उचित न हो। 1. जो अवसर, कर्त्तव्य, सभ्यता, संस्कृति, न्याय आदि के अनुरूप न हो। improper 2. जो तर्कसंगत न हो। unreasonable 3. जो सही या उचित मार्ग से च्युत हो। peraverse

अनुच्छेद *पुं. (तत्.)* 1. लिखित सामग्री, लेख या पाठ का वह भाग जिसमें किसी एक विषय या उसके अंश का विवेचन होता हो। **उदा.** विद्यार्थियों को 'हमारा विद्यालय' विषय पर एक अनुच्छेद लिखने को कहा गया। 2. किसी विधिक कृति (**जैसे:** संविधान, संधिपत्र, संविदापत्र आदि) के वे खंड जो संख्यांकित होते हैं और स्वत:पूर्ण विवरण प्रस्तुत करते हैं। **जैसे:** संविधान के अनुच्छेद 343 से 351 तक राजभाषा खंड के अंग हैं। article

अनुज [अनु+ज=जन्म लेना] *वि.(तत्.)* जिसने बाद में जन्म लिया हो। *पुं. (तत्)* छोटा भाई। **विलो.** अग्रज (स्त्री. अनुजा=छोटी बहिन)

अनुत्तर [अन्+उत्तर] *वि. (तत्.)* बिना उत्तर का, निरूत्तर।

अनुत्तरित *वि. (तत्)* जिसका उत्तर न दिया गया हो या प्राप्त न हुआ हो। **उदा.** मेरा पत्र आपकी ओर से अनुत्तरित ही रह गया।

अनुत्तीर्ण [अन्+उत्तीर्ण] *वि. (तत्.)* जो उत्तीर्ण न हो सका/हुआ हो, नापास। failed

अनुदान *पुं. (तत्.)* 1. शासन द्वारा किसी संस्था को सहायता के रूप में दी जाने वाली धनराशि। 2. किसी संस्था को सरकार द्वारा सहायता के रूप में मिलने वाली धनराशि। **जैसे:** हमारे विद्यालय को दिल्ली सरकार से अनुदान मिलता है। grant

अनुनय *पुं. (तत्.)* 1. विनय, प्रार्थना, विनती। 2. रूठे हुए व्यक्ति को मनाना। **जैसे**: अनुनय-विनय करना।

अनुनासिक *पुं. (तत्)* (वह स्वर) जिसके उच्चारण में हवा मुखविवर के साथ-साथ नासा-विवर से भी निकलती है। देवनागरी में इसे चंद्रबिंदु से अंकित किया जाता है। **जैसे**: आँ (आँख), ऊँ (ऊँट) आदि। **तु.** निरनुनासिक स्वर, अनुस्वार।

अनुपचारित [अन्+उपचारित] *वि. (तत्.)* जिसे उपचारित न किया गया हो अर्थात प्राकृतिक स्थिति या अवस्था में ही, प्रकृत रूप में। **जैसे**: अचार डालने से पहले कच्चा आम। 2. विधान करने से पूर्व की स्थिति में। **विलो.** उपचारित।

अनुपम [अन्+उपमा] *वि. (तत्.)* जिसकी उपमा न दी जा सके, जिसकी बराबरी का और कोई न हो। बेजोड़, सर्वोत्तम, अद्वितीय।

अनुपयुक्त [अन्+उपयुक्त] *वि. (तत्)* 1. जो उपयोगी न हो। **पर्या**. अनुपयोगी, बेकार। 2. जो उचित न हो। **पर्या.** अनुचित।, 3. जिसका उपयोग न हुआ हो। **पर्या**. कोरा, नया।

अनुपयोग (अन्+उपयोग) *पुं. (तत्.)* उपयोग का अभाव। वस्तु के अनुपयोग से उसके जल्दी खराब होने की संभावना है।

अनुपयोगी (अन्+उपयोगी) *वि. (तत्.)* जिसका उपयोग अब लाभकारी न हो; जो अब किसी काम का न हो। **पर्या.** बेकार, व्यर्थ।

अनुपलब्ध (अन्+उपलब्ध) *वि. (तत्.)* जो उपलब्ध/प्राप्त न हो, अप्राप्त। **विलो.** उपलब्ध।

अनुपस्थित (अन्+उपस्थित) *वि. (तत्)* जो उपस्थित न हो यानी सामने या पास में न हो, गैरहाजिर।

अनुपस्थिति (अन्+उपस्थिति) *स्त्री. (तत्.)* उपस्थित या मौजूद न होने का भाव; सामने न होना; गैरमौजूदगी। **दे.** अनुपस्थित।

अनुपात *पुं. (तत्.)* **गणि.** (i) दो राशियों या संख्याओं का आपेक्षिक भागफल या संबंध (ii) दो राशियों या संख्याओं का आपेक्षिक मान। अर्थात तुलनात्मक स्थिति ratio

अनुपान *पुं. (तत्.)* **आयु.** वह तरल पदार्थ/पेय जिसे औषधि के साथ या बाद में लेना अनूकूल प्रभाव के लिए अनिवार्य बताया गया हो।

अनुपालन *पुं. (तत्.)* किसी आदेश, आज्ञा, नियम, व्यवस्था आदि का यथावत् पालन करने की स्थिति। compliance

अनुप्रास *पुं. (तत्.)* एक शब्दालंकार, जिसमें किसी कविता में एक ही वर्ण बार-बार (कई बार) आता है। **उदा.** चारू चंद्र की चंचल किरणें, खेल रही थी जल-थल में।

अनुभव *पुं. (तत्.)* देख-सुनकर या प्रयोग-परीक्षा द्वारा प्राप्त ज्ञान। experience **तु.** अनुभूति।

अनुभवहीन *वि. (तत्.)* (i) जिसे पर्याप्त अनुभव न मिला हो; (ii) जिसे किसी काम विशेष का अनुभव बिल्कुल न हो।

अनुभवातीत *वि. (तत्.)* [अनुभव+अतीत] 1. जो हमारी इंद्रियों (पंच ज्ञानेंद्रियों) व बुद्धि के अनुभव से परे हैं। 2. जिसका अनुभव न किया जा सके। **जैसे**: ब्रह्म या मृत्यु का अनुभव अनुभवातीत ही है।

अनुभवी *वि. (तत्.)* देख-सुनकर या प्रयोग-परीक्षा द्वारा ज्ञान प्राप्त करने वाला।

अनुभूति *स्त्री. (तत्.)* किसी कार्य या ज्ञान के होने के बाद मन में उपजने वाला वह भाव जो प्राय: बाहर से तो नहीं देखा जा सकता पर जिसका अनुभव अवश्य होता है। सुख, दु:ख आदि भावों का अनुभव। feeling, emotional experience **टि.**

अनुभव का संबंध ज्ञान से है, जबकि अनुभूति का संबंध चित्त-वृत्तियों से है।

अनुमति *स्त्री. (तत्.)* स्वीकृति, किसी कार्य को करने से पहले उसके बारे में अधिकृत व्यक्ति से ली जाने वाली इजाजत या उसकी रजामंदी।

अनुमान *पुं. (तत्.)* 1. परिस्थितियों, तथ्यों, कथनों आदि के संबंध में तर्कसम्मत अंदाजा। **पर्या.**- अटकल, अंदाजा। inference 2. भावी आय-व्यय का तथ्याधारित अंदाजा। **पर्या.** प्राकल्लन estimate

अनुमानित *वि. (तत्.)* अनुमान से सोचा-समझा। **guessed**

अनुमोदन *पुं. (तत्.)* किसी प्रस्ताव, आवेदन, मसौदे (प्रारूप) आदि पर सक्षम व्यक्ति/अधिकारी द्वारा की जाने वाली 'हाँ', यानी उसकी सहमति। approval

अनुमोदित *वि. (तत्.)* किसी प्रस्ताव, आवेदन, मसौदे (प्रारूप) आदि पर सक्षम व्यक्ति/अधिकार द्वारा प्रकट की गई 'हाँ' यानी उसकी सहमित।

अनुयायी *वि. (तत्.) (स्त्री.* अनुयायिनी) 1. किसी के पीछे चलने वाला, 2. किसी मत या संप्रदाय का अनुसरण करने वाला। follower

अनुरणन *पुं. (तत्.)* किसी ध्वनि या आवाज़ के आधार पर शब्द बनने/बनाने की प्रक्रिया। जैसे- 'खटपट', 'टपटप', पत्ता 'पत्' ध्वनि पर आधारित।

अनुराग [अनु+राग=लगाव] *पुं. (तत्.)* किसी के रूप, कार्यों या गुणों के कारण उसके प्रति होने वाला लगाव या प्रेम, स्नेह इत्यादि भाव। **पर्या.** प्रेम, प्रीति, स्नेह। affection

अनुरूप *वि. (तत्.)* आकृति, स्वरूप, स्वभाव, परिस्थिति, व्यवस्था आदि से मेल खाने वाला।

अनुरोध *पुं. (तत्.)* विनम्र तापूर्वक किया गया आग्रह। **उदा.** आपने मेरा अनुरोध स्वीकार कर मेरे साथ भोजन किया यह आपकी बड़ी कृपा है।

अनुवाद [अनु+वाद=कथन] *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ (किसी पूर्व कथित बात के) बाद में कही हुई बात या कथन। **तक.अर्थ** एक भाषा में कही या लिखी हुई बात का किसी अन्य भाषा में रूपांतरण। **पर्या.** भाषांतर, तरजुमा। translation

अनुवादक *पुं. (तत्.)* अनुवाद करने वाला विशेषज्ञ व्यक्ति; अनुवादकर्ता। translator

अनुशंसा *पुं. (तत्.)* किसी व्यक्ति के पक्ष में उसका हित चाहने वाले व्यक्ति द्वारा मौखिक या लिखित रूप में ऐसा कथन जिसका परिणाम व्यक्ति के अनुरोध के अनुकूल संभावित हो। **पर्या.** सिफारिश, संस्तुति। recommedation

अनुशासन *पुं. (तत्.)* 1. आत्म नियंत्रण करने की व्यवस्था में बने रहने की प्रवृत्ति। 2. ज्ञान-विज्ञान की कोई शाखा, विद्याशाखा। 3. **प्रशा.** अपने विभाग की आचरण संहिता या नियम कायमदों के अनुसार कर्मचारी का आचरण। discipline

अनुशासन-प्रिय *वि.(त्त्.)* नियमप्रिय; नियमों के अनुसार कार्य करने वाला।

अनुशासनबद्धता *स्त्री. (तत्.)* अनुशासन में बंधे रहने की स्थिति। **दे.** अनुशासन।

अनुशासनहीन *वि. (तत.)* अनअनुशसित, स्वेच्छाचारी; जो नियम-व्यवस्था के विरुद्ध हो।

अनुशासनहीनता *स्त्री. (तत.)* कुप्रबंध, नियम-कायदों की अनदेखी।

अनुशीलन *पुं. (तत्.)* 1. अध्ययन, मनन, चिंतन। 2. बार-बार अध्ययन करके आत्मसात् करने की क्रिया। **उदा.** 1. हमें अपने प्राचीन साहित्य का अनुशीलन करना चाहिए। 2. शास्त्रों के अनुशीलन से व्यावहारिक ज्ञान में वृद्धि होती है।

अनुश्रुति *स्त्री. (तत्.)* श्रुति-परंपरा से/एक-दूसरे से सुनते-सुनते चलती आई हुई कोई कथा, कहावत इत्यादि। legend

अनुष्ठान *पु. (तत्.)* 1. समयबद्ध धार्मिक संस्कार या कृत्य। 2. नियमपूर्वक कोई कार्य आगे बढ़ाना।

अनुसंधान [अनु+संधान] *पुं. (तत्.)* किसी विषय से संबंधित सभी पक्षों की गहराई से खोज और जांच करना। research **पर्या.** शोध।

अनुसंधानकर्ता *पुं. (तत्.)* किसी विषय के सभी पक्षों की गहराई से शोध और जांच करने वाला। **पर्या.** शोधकर्ता। **researcher**

अनुसंधित्सु *पुं. (तत्.)* अनुसंधान करने वाला।

अनुसरण *पुं. (तत्.)* 1. किसी के पीछे चलना, 2. किसी के आदेश, आज्ञा आदि के अनुसार कार्य करना।

अनुसार (के अनुसार) *क्रि.वि. (तत्.)* जो किसी के (i) कथन, आचरण या व्यवहार के समान हो; (ii) के अनुसरण में किया जाए। **उदा.** हमें अपना जीवन नियमानुसार (नियमों के अनुसार) जीना चाहिए।

अनुसूचित जनजाति(याँ) *स्त्री. (तत्.)* भारत के संविधान के अनुच्छेद 342 के अधीन लोक अधिसूचना द्वारा विनिर्दिष्ट (सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से पिछड़ी) जनजातियों का समूह या उनमें से कोई एक जनजाति। **दे.** जनजाति। scheduled tribe/tribes

अनुसूचित जाति(याँ) *स्त्री. (तत्.)* भारत के संविधान के अनुच्छेद 341 के अधीन लोक अधिसूचना द्वारा विनिर्दिष्ट (सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से पिछड़ी) जातियों का समूह या उनमें से कोई एक जनजाति। scheduled castes

अनुसूची *स्त्री. (तत्.)* शा.अर्थ बाद वाली सूची; परिशिष्ट के रूप में जोड़ी गई सूची। **प्रशा.** किसी लेख की व्याख्या के रूप में अथवा परिशिष्ट के रूप में जोड़ा गया अंश जो वर्गीकृत होता है। **विधि.** विधानमंडल द्वारा पारित किसी अधिनियम का वह परिशिष्ट जिसमें उस अधिनियम संबंधी विस्तृत ब्यौरा दिया गया हो या फिर संगत मामलों की विस्तृत सूची बनाई गई हो। schedule

अनुस्वार *पुं. (तत्.)* व्यु.अर्थ **वि.** स्वर के बाद आने वाला; स्वर के बाद उच्चरित होने वाला (व्यंजन)। सा.अर्थ व्याकरण-1. अयोगवाह वर्णों में से एक (ं) (अन्य वर्ण है-विसर्ग और नासिक्य (चंद्रबिंदु) 2. वर्गों के पंचमवर्णों के स्थान पर पूर्ववर्ण के ऊपर लगाया जाने वाला वैकल्पिक शिरोबिंदु। **उदा.** कंगन, डंडा, दंत, संबंध। 3. अंतःस्थ और ऊष्म वर्णों के पूर्व 'म्' की ध्वनि के स्थान पर पूर्ववर्ण के ऊपर लगा बिंदु। **उदा.** संहार।

अनूठा *वि. (तद्* < अनुत्थ) 1. जो विलक्षण या आश्चर्यजनक हो, अनोखा। जैसे: उसका काव्य अनूठा है। 2. उत्तम **जैसे**: अनूठा उत्सव। 3. असाधारण **जैसे**: वीरता का अनूठा उदाहरण। (स्त्री.) अनूठी

अनूदित *वि. (तत्.)* अनुवाद किया हुआ, भाषांतरित; एक भाषा में उपलब्ध सामग्री का अन्य भाषा में किया गया रूपांतरण।

अनूदित *वि. (तत्.)* अनुवाद किया हुआ, भाषांतरित, एक भाषा में उपलब्ध सामग्री का अन्य भाषा में किया गया रूपातंरण।

अनेक [अन+एक] *वि. (तत्.)* जो एक या अकेला नहीं हो यानी एक से अधिक, कई, बहुत, अनेक लोग। **जैसे**: आप को पहले अनेक बार समझाया गया है।

अनैतिक [अ+नैतिक=नीति+इक] *वि. (तत्.)* जो नीति सम्मत न हो। जो नीति (लोक-व्यवहार या लोकाचार) के अनुसार न हो, नीति के विरूद्ध, नीति के विपरीत आचरण। **जैसे.** अनैतिक, अनैतिक जीवन।

अनोखा *वि. (देश.)* जो सामान्य स्थिति से अलग तरह का अथवा हटकर हो। **पर्या.** अनूठा, विचित्र, निराला।

अनोखापन *पुं. (तत्.)* अनोखा होने का भाव या स्थिति। **पर्या.** अनूठापन, विचित्रता, निरालापन। **दे.** अनोखा

अन्तर्देशीय *(सं.) (अंतः+देशीय) वि.(तत्.)* जिसका संबंध या प्रचलन अपने देश में ही हो। **जैसे:** अंतर्देशीय पत्र। तु. अंतरदेशीय।

अन्न *पुं. (तत्.)* 1. पकी फसल से प्राप्त वे दाने जो भोज्य पदार्थ तैयार करने के काम आते हैं। **जैसे**: गेहूँ, चावल, जौ, बाजरा आदि। 2. इन दानों से तैयार या पकाया गया भोजन। **उदा.** उसने दो दिन से अन्न-जल ग्रहण नहीं किया है। **पर्या.** भोजन, खाद्य पदार्थ। food

अन्न-जल *पुं. (तत्)* अन्न और जल यानी भोजन और पानी जो जीवित रहने के लिए अनिवार्य साधन हैं; खाने-पीने का सामान, दाना-पानी। **मुहा.** (i) 1. अन्न-जल उठना-जीविकोपार्जन के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना, स्थान परिवर्तन। (ii) जीवन की समाप्ति 2. अन्न-जल

त्यागना/छोड़ना, अनशन करना, भूखहड़ताल करना।

अन्नदाता [अन्न+दाता] *वि./पु. (तत्.)* अन्न (भोजन) देने वाला यानी जिसकी कृपा से भोजन मिलता हो। **पर्या.** स्वामी, मालिक, प्रतिपालक।

अन्य *(तत्.) वि.* 1. कोई दूसरा, भिन्न, अलग। **जैसे**: वह भारतीय नहीं, किसी अन्य देश का व्यक्ति लगता है या अन्य पुरूष third person 2. बाहरी या भिन्न व्यक्ति। **उदा.** केवल सैनिकों के लिए, अन्य का प्रवेश निषिद्ध है।

अन्यतम [अन्य+तम=अतिशयवाची प्रत्यय] *वि. (तत्.)* बहुतों में से एक; सबसे बढक़र, सर्वोत्तम। **उदा.** रवींद्रनाथ अन्यतम साहित्यकार थे इसलिए उन्हें 'नोबेल पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।

अन्यतर [अन्य+तर=तुलनावाची प्रत्यय] *वि. (तत्.)* दो में से कोई एक; अलग तरह का।

अन्यत्र *अव्य.(तत्.)* किसी दूसरे स्थान पर। **टि.** संस्कृत का 'त्र' पद स्थानवाचक है। **जैसे**: एकत्र=एक स्थान पर। सर्वत्र=सभी स्थानों पर। इत्यादि।

अन्यथा *क्रि.वि. (तत्.)* 1. भिन्न अर्थ में, और तरह से। **उदा.** मेरी बात को अन्यथा न लें। 2. नहीं तो, वरना। सावधानी से चला करो अन्यथा ठोकर लग जाएगी। otherwise

अन्यमनस्क [अन्य=दूसरे में+मनस्क=मनवाला] *वि. (तत्.)* जिसका मन (या ध्यान) किसी और में लगा हो, जिसका मन (या ध्यान) किसी और तरफ हो। **तु.** अनमना।

अन्याय [अ+न्याय] *पुं.(तत्.)* 1. ऐसा कार्य जो न्याय सम्मत न हो यानी न्याय के विरूद्ध हो। 2. किसी के भी साथ किया जाने वाला अनुचित व्यवहार। **विलो.** न्याय।

अन्यायी *वि. (तत्.)* 1. जो अन्याय करता हो 2. अन्यायपूर्ण। **दे.** अन्याय।

अन्योन्याक्रिया [अन्य+अन्य+क्रिया] *पुं. (तत्.)* एक दूसरे के साथ यानी परस्पर संपन्न व्यवहार। interaction

अन्वय *पुं. (तत्.)* 1. कार्य-कारण के बीच तार्किक संबंध। 2. भाषा-वाक्य रचना में शब्दों की पारस्परिक व्याकरणिक समरूपता। **जैसे**: कर्ता और क्रिया के बीच लिंग और वचन का अन्वय। हिंदी में-लडक़ा पढ़ता है; लडक़ी पढ़ती है। लडक़ा पढ़ता है : लडक़े पढ़ते हैं।

अन्वेषक *वि./पु. (तत्.)* 1. अन्वेषण का कार्य करने वाला (व्यक्ति) 2. वास्तविकता का पता लगाने वाला (व्यक्ति) 3. अनुसंधानकर्ता। **दे.** अन्वेषण।

अन्वेषण *पुं. (तत्.)* 1. जिसका अस्तित्व हो पर जिसकी जानकारी अब तक उपलब्ध न हो उसका पता लगाकर समाज के सामने रखना। **पर्या.** खोज। discovery 2. वास्तविकता का पता लगाने के लिए किया गया खोजपूर्ण कार्य। investigation 3. 'अनुसंधान' कार्य का एक वैकल्पिक पर्याय। research

अपंग *वि.(तत्.)* स्थायी प्रकृति की किसी शारीरिक (और मानसिक भी) असमर्थता से ग्रस्त (व्यक्ति)। **पर्या.** विकलांग।

अपंगता *स्त्री. (तत्)* स्थायी प्रकृति की कोई शारीरिक (और मानसिक भी) असमर्थता जिसकी वजह से व्यक्ति अपनी पूरी क्षमता से काम न कर सकता हो। disability

अपकार [अप=बुरा+कार=कार्य] *पुं. (तत्.)* नुकसान, हानि, अहित, अनुचित कार्य। (उपकार का उल्टा)। **विलो.** उपकार।

अपक्षय (ण) [अप=बुरा/बिगड़ा हुआ+क्षय=ह्रास/कमी] *पुं. (तत्.)* सा.अर्थ खुली पड़ी वस्तुओं का मौसमी प्रभाववश बिड़गना/नष्ट होना। 1. **रसा.** जैव पदार्थ के क्रमिक रासायनिक विघटन का प्रक्रम। **पर्या.** सड़ना decay 2. **भूवि.** वायुमंडलीय कारकों द्‌वारा। भूपृष्ठ या शैलों में हुए भौतिक विघटन का प्रक्रम। weathering **उदा.** चट्‌टानों में और भूपृष्ठ पर पाए जाने वाले खनिजों और जैव पदार्थों के निरंतर अपक्षय से मृदा का निर्माण होता है।

अपघटक *वि./पुं. (तत्.)* अपघटन के प्रक्रम का कारक। **दे.** अपघटन।

अपघटन *पुं.(तत्.)* सा.अर्थ बुरे रूप में हो जाने यानी सड़ जाने या नष्ट हो जाने का भाव। **रसा.** ऐसा रासायनिक परिवर्तन जिसमें कोई अणु ऐसे दो या अधिक अणुओं में परिणत हो जाएँ, जिनके संघटन से वह बना है। decomposition

अपघात *पुं. (तत्.)* कोई भी ऐसी दुर्घटना जिसमें किसी के प्राणों पर संकट हो। 1. हत्या, हिंसा 2; अनुचित आघात 3. धोखा 4. विश्वास घात।

अपच [अ+पच < पचना] *पुं. (तत्.)* 1. भोजन के पूरी तरह न पचने की क्रिया की स्थिति। 2. भोजन न पचने का रोग। **पर्या.** अजीर्ण। indigestion

अपठित *वि. (तत्.)* 1. न पढ़ा हुआ। 2. वह (गद्यांश या पद्यांश) जो पाठ्यपुस्तक में न हो, उससे बाहर का हो 3. जो अभी पढ़ा न गया हो।

अपतृण *पुं. (तत्.)* फसल के लिए हानिकारक अनचाहे और अनावश्यक रूप से उगने वाला पौधा। **पर्या.** खरपतवार।

अपतृणनाशी [अप+तृण+नाशी] *वि.(तत्.)* **वन.** कृषि फसल के लिए हानिकारक, अनचाहे और अनावश्यक रूप से उगने वाले पौधों को नष्ट करने वाला। Weedicide

अपन *सर्व. (देश.) (तद् <आत्म)* 1. हम, **जैसे:** अपन तो चलते हैं। 2. अपना (देशी बोलियों में प्रयुक्त)

अपना *सार्वनामिक वि.(तद्. [प्रा. अप्पण <* आत्मन:] 1. स्वयं का, प्रत्येक की दृष्टि से उसका व्यक्तिगत, निज का। **जैसे**: मैंने अपना काम कर लिया। तुमने अपना काम कर लिया। उसने अपना काम कर लिया। सबने अपना-अपना काम कर लिया। **पुं.** आत्मीय व्यक्ति। किसी को पराया मत समझो यहाँ सभी अपने हैं। (पुं. बहुवचन)

अपनाना [अपना+ना] *स.क्रि.* नामधातु (देश.) 1. अपना बनाना, स्वीकार करना। 2. अपने अधिकार में लेना। 3. अपने संरक्षण में लेना।

अपनापन *पुं. (तद्.)* 'अपना' होने का प्रदर्शित भाव या स्थिति, आत्मीयता।

अपने आप *अव्य.(देश.)* स्वत:, स्वयं। automatically **उदा.** गाड़ी अपने आप चल पड़ी।

अपमान (अप+मान) *पुं. (तत्.)* बेइज्जती, अनादर। किसी व्यक्ति के साथ किया गया ऐसा व्यवहार या उसके बारे में कही गई ऐसी बात जिससे उसकी प्रतिष्ठा को आँच आए। insult **विलो.** मान।

अपमानित *वि. (तत्.)* (व्यक्ति) जिसका अपमान हुआ हो। निरादृत, तिरस्कृत

अपमार्जक *वि./पुं. (तत्.)* शा.अर्थ गदंगी को हटाने वाला (पदार्थ)। **रसा.** पाउडर या द्रव रूप में उपलब्ध संश्लिष्ट पदार्थ जो वस्त्र या बरतन धोने के काम आता है। detergent

अपमिश्रण *पुं. (तत्.)* अनुचित लाभ कमाने के उद्देश्य से किसी घटिया वस्तु की अच्छी वस्तु में मिलावट। **जैसे:** देशी घी में वनस्पति तेल की मिलावट। adultration

अपमृत्यु *स्त्री. (तत्.)1.* ऐसी मृत्यु जो स्वाभाविक न हो। **जैसे**: दुर्घटना, बीमारी या मार-पीट आदि के कारण होने वाली मृत्यु। 2. कम आयु में होने वाली मृत्यु।

अपयश *पुं. (तत्.)* अपकीर्ति, बदनामी। **विलो.** यश।

अपरदन *पुं.(तत्.)* प्रवाही जल, लहर, गतिमान बर्फ अथवा वायु द्वारा भूपृष्ठ के क्षरण का प्रक्रम जिससे अपरदित पदार्थ दूर ले जाया जाकर एक स्थान पर निक्षिप्त (निपेक्षित) हो जाता है। erosion

अपराजित [अ+पराजय+इत] *वि. (तत्.)* 1. जो जीता न गया हो, जिस पर विजय प्राप्त न की जा सकी हो। **तु.** अपराजेय।

अपराजेय *वि. (तत्.)* 1. जो पराजित न किया जा सके। *तु.* अपराजित।

अपराध *पुं. (तत्.)* 1. ऐसा काम जो किसी देश के कानून के अनुसार मना हो, और जिसे करने वाले को कानून के अनुसार दंडित किया जाए। crime offence 2. नैतिक दृष्टि से ऐसा अनुचित कार्य जिससे किसी को हानि पहुँचती हो। guilt

अपराधी *वि.(तत्.)* अपराध करने वाला। **पर्या.** मुलजिम। **दे.** अपराध

अपराह्न/अपराह् न [अपर = बाद का+अह् न=दिन] *पुं. (तत्.)* 1. दिन का तीसरा पहर। 2. मध्याह्न और संध्याकाल के बीच का समय। after noon **तु.** पूर्वाहृन/ पूर्वाह्न

अपरिचित [अ+परिचित] *वि. (तत्.)* जो परिचित यानी जाना-पहचाना न हो। **पर्या.** अनजाना। **विलो.** परिचित।

अपरिमेय संख्या *स्त्री. (तत्.)* **गणि.** वह वास्तविक संख्या जो परिमेय न हो, यानी जिसे

किसी पूर्णांक या पूर्णांकों के भागफल के रूप में व्यक्त न किया जा सके। **जैसे**: $\sqrt{3}$ international number **तु.** परिमेय संख्या।

अपलक [अ+पलक] *वि. (तत्.)* बिना पलक झपकाए। **उदा.** वह अपलक दृष्टि से प्राकृतिक सौंदर्य को निहारता रहा। *क्रि.वि.* एक टक, निर्निमेष।

अपवर्तक *वि.(तत्.)* **गणि.** जिन संख्याओं से कोई संख्या विभाज्य हो (कट जाए) वे संख्याएँ उस संख्या की अपवर्तक संख्याएँ कहलाती हैं। **उदा.** 12 की अपवर्तक संख्याएँ हैं-1, 2, 3, 4, और 6। factor **तु.** अपवर्त्य।

अपवर्त्य *वि.(तत्.)* **गणि.** में जो संख्या अन्य संख्याओं से विभाज्य होती है (कट जाती है) वह संख्या उन संख्याओं का अपवर्त्य कहलाती है। **जैसे**: 12 की संख्या 2, 3, 4, और 6 का अपवर्त्य है। multiple **तु.** अपवर्तक।

अपवाद *पुं. (तत्.)* ऐसी बात या उदाहरण आदि जिस पर संबंधित सामान्य नियम लागू न हो। exception

अपवाह क्षेत्र *पुं. (तत्.)* वह क्षेत्र विशेष जहाँ से वर्षा का जल बहकर किसी नदी, तालाब आदि में जा मिलता है। catchment area

अपवाह *पुं. (तत्.)* 1. नीचे की ओर बहना या बहाकर ले जाना।, 2. जल का निकास। drainage

अपवित्र [अ+पवित्र] *वि. (तत्.)* जो पवित्र अर्थात शुद्ध न हो। **पर्या.** गंदा, मलिन। **विलो.** पवित्र।

अपवित्रता [अपवित्र+ता] *स्त्री. (तत्)* अपवित्र होने का भाव। **दे.** अपवित्र।

अपव्यय [अप+व्यय] *पुं. (तत्.)* व्यर्थ और अधिक खर्च। **पर्या**-फिजूलखर्ची।

अपव्ययी [अपव्यय+ई] *वि. (तत्.)* अपव्यय करने वाला। **पर्या.** फिजूलखर्च।

अपशकुन *पुं. (तत्.)* सा.अर्थ ऐसा कोई प्रतीकात्मक लक्षण या व्यवहार जिसे शुभ न माना जाता हो। शा.अर्थ बुरा शकुन। **विलो.** शुभ शकुन।

अपशब्द [अप+शब्द] *पुं. (तत्.)* बुरा शब्द। **पर्या.** गाली। **उदा**. बातचीत में अपशब्दों का प्रयोग अनुचित माना जाता है।

अपशिष्ट *वि./पुं. (तत्.)* निरर्थक बचा हुआ। **जैसे**: जैविक अपशिष्ट (मृत पौधे, जंतुओं के अवशेष), गोबर, फलों के छिलके आदि।

अपहरण *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ उठाकर या भगाकर दूर ले जाना। किसी व्यक्ति को गैरकानूनी तरीके से बलपूर्वक उठा/भगा कर ले जाने का कार्य। kidnapping, abduction

अपहर्ता *पुं. (तत्.)* किसी व्यक्ति को गैरकानूनी तरीके से बलपूर्व उठा/भगा कर ले जाने वाला व्यक्ति। kidnapper, abductor

अपार *वि. (तत्.)* 1. जिसका पार न हो; जिसकी सीमा न दिखाई पड़े, असीम, असंख्य, अनंत। **उदा.** वह अपार धन संपत्ति का मालिक है। 2. जिसे पार करना कठिन हो। **पर्या.** दुस्तर।

अपारदर्शिता *स्त्री. (तत्)* सा.अर्थ आर-पार न देने जा सकने की स्थिति। **भौ.** पदार्थ का गुणधर्म जो प्रकाश के पारागमन में अवरोध उत्पन्न करता है। **दे.** अपारदर्शी। **विलो.** पारदर्शिता।

अपारदर्शी [अ+पार+दर्शी] *वि. (तत्.)* शा.अर्थ जो पारदर्शी न हो, यानी जिसके दूसरी ओर की वस्तु दिखाई न पड़े। **भौ.** (वस्तु) जिससे होकर प्रकाश गुजर नहीं सकता। **जैसे**: दीवार, हड्डी आदि। opaque **विलो.**-पारदर्शी।

अपाहज/अपाहिज *वि. (देश.)* 1. जिसका कोई अंग न हो या वह विकृत हो। **जैसे**: खंज, लंगड़ा, लूला इत्यादि। **पर्या.** विकलांग। 2. जो काम करने के योग्य न हो। **पर्या.** असमर्थ। 3. जो किसी कारणवश कार्य न कर सके। **पर्या.** असहाय। **उदा.** मेरी साइकिल टूट गई है, उसके बिना में अपाहज हो गया हूँ। handicapped

अपितु *अव्य. (तत्.)* 1. बल्कि, 2. तो भी, तथापि, 3. परंतु, लेकिन। **उदा.** वह बुद्धिमान ही नहीं अपितु नीतिज्ञ भी है।

अपील *स्त्री. (अं.)* सा.अर्थ निवेदन, प्रार्थना। **विधि.** अधीनस्थ न्यायालय के निर्णय से असंतुष्ट पक्ष द्वारा उच्चतर न्यायालय से उस पर पुर्नविचार करने का आवेदन। appeal

अपूर्ण [अ+पूर्ण] *वि.(तत्.)* 1. जो पूरा न हो। **जैसे:** अपूर्ण वाक्य। 2. जो आधा भरा हआ हो, या आधा खाली हो। **जैसे:** अपूर्ण घड़ा। 3. जो काम

कुछ किया हुआ हो और कुछ शेष हो। **पर्या.** अधूरा, असमाप्त। **जैसे**: अपूर्णकार्य। **विलो.** पूर्ण।

अपूर्व [अ+पूर्व] *वि.(तत्.)* 1. जो पहले न हुआ हो; जिस पर पहली बार काम हो रहा हो, नवीन। **उदा.** उसने पुस्तक लिखने के लिए अपूर्व विषय चुना। 2. विचित्र, अद्भूत, अनोखा, विलक्षण। **उदा.** प्रकृति में भी कैसी-कैसी अपूर्व घटनाएँ घटित होती हैं। 3. अत्यंत सुंदर, रमणीय। **जैसे:** अपूर्व सुंदरी, उत्तम कोटि का। **जैसे**: अपूर्व ज्ञान।

अपेक्षा *स्त्री. (तत्.)* 1. किसी व्यक्ति द्वारा अन्य व्यक्ति या वस्तु से चाहा गया मनोनुकूल परिणाम। expectation, requirement 2. की अपेक्षा=की तुलना में। **उदा.** हवाई यात्रा की अपेक्षा रेलयात्रा कम खर्च वाली होती है।

अपेक्षाकृत *क्रि.वि. (तत्.)* तुलना में, मुकाबले में। comparatively

अपेक्षित *वि. (तत्.)* चाहा गया, चाह/इच्छा के अनुसार, इच्छित। **जैसे:** अपेक्षित जानकारी। expected required

अप्रकाशित [अ+प्रकाशित] *वि. (तत्.)* शा.अर्थ जो प्रकाश में न आया/आई हो। विक.अर्थ जो सामग्री अब तक छपी न हो या छपकर न आई हो। **उदा.** प्रेमचंद की कई कहानियाँ अब तक अप्रकाशित ही हैं।

अप्रचलन *पुं. (तत्.)* प्रचलित न होने की स्थिति या भाव; चलन में न होना; प्रयोग की कमी। **दे.** अप्रचलित।

अप्रचलित [अ+प्रचलित] *वि.(तत्.)* जो प्रचलित न हो, जिसका प्रचलन अब न हो रहा हो, जो व्यवहार में न हो, जिसका चलन न हो। **उदा.** अब चवन्नी का सिक्का अप्रचलित घोषित कर दिया गया है।

अप्रतिम [अ+प्रतिम] *वि.(तत्.)* जिसकी तुलना न हो सके, अद्वीतीय, अनुपम, बेजोड़। **जैसे**: अप्रतिम सौंदर्य।

अप्रत्यक्ष [अ+प्रत्यक्ष] *वि.(तत्.)* 1. जो दिखाई न दे, जो सामने न हो। **पर्या.** परोक्ष। 2. जो सीधे तरीके को न अपनाए। **जैसे**: अप्रत्यक्षकर, अप्रत्यक्ष निर्वाचन।

अप्रत्याशित *वि.(तत्.)* जिसकी प्रत्याशा (आशा) न रही हो यानी अकस्मात् घटित होने वाला। **पर्या.** अचानक। **जैसे**: अप्रत्याशित घटना। **उदा.** वह मेरे यहाँ अप्रत्याशित रूप से आ धमका। **विलो.** प्रत्याशित।

अप्रमाणिक [अ+प्रमाणिक] *वि.(तत्.)* प्रमाणरहित, जो मानने लायक न हो, अविश्वसनीय। **विलो.** प्रमाणिक। भाव-अप्रामाणिकता।

अप्रवासी *वि.(तत्.)* जो अब निवासी नहीं है; जो अब अपने पहले वाले स्थान पर नहीं रहता। non resident **उदा.** अप्रवासी भारतीय।

अप्रसन्न [अ+प्रसन्न] *वि.(तत्.)* जो प्रसन्न न हो, जो नाराज हो, नाखुश, नाराज़। **विलो.** प्रसन्न।

अप्रसन्नता *स्त्री. (तत्.)* प्रसन्नता या खुशी के अभाव की स्थिति। नाखुशी, नाराज़गी।

अप्राप्त [अ+प्राप्त] *वि.(तत्.)* जो प्राप्त न हुआ/हुई हो, दुर्लभ। **विलो.** प्राप्त।

अप्रामाणिक [अ+प्रामाणिक] *वि.(तत्.)* प्रमाण-रहित, जो मानने लायक न हो, अविश्वसनीय। **विलो.** प्रामाणिक **भाव.** अप्रामाणिकता।

अप्रासंगिक [अ+प्रासंगिक] *वि. (तत्.)* प्रसंग के विरूद्ध या बाहर का, जिसका प्रस्तुत विषय या कार्य से कोई सीधा संबंध न हो। **जैसे**: प्रासंगिक चर्चा। irrelevant **विलो.** प्रासंगिक।

अप्रिय (अ+प्रिय) *वि. (तत्.)* जो प्रिय न हो, अरूचिकर, नापसंद। **विलो.** प्रिय भाव. अप्रियता

अप्रिय [अ+प्रिय] *वि. (तत्.)* जो प्रिय न हो, अरूचिकर, नापसंद। **विलो.** प्रिय भाव-अप्रियता।

अप्सरा *स्त्री. (तत्.)* व्यु.अर्थ पानी से निकलने वाली स्त्रियाँ।, स्वर्गलोक की नर्तकी एवं गायिका।

अफरना *अक्रि. [तद्.<स्फार]* अधिक खा लेने के बाद पेट का फूल जाना।

अफरा *पुं. [तद् > स्फार]* 1. अधिक भोजन कर लेने पर वात(गैस) से पेट फूल जाने की स्थिति। 2. अजीर्ण हो जाने का भाव।

अफ़रा-तफ़री *स्त्री. (फा.)* किसी काम को करने में आवश्यकता से अधिक उतावली या बेचैनी। **पर्या.** बदहवासी।

अफ़वाह *स्त्री. (फा.)* लोगों में फैली ऐसी बात जिसका कोई पुष्ट प्रमाण उपलब्ध न हो। **पर्या.** जनश्रुति। rumour

अफ़सर *पुं. (अंग्रे.)* सेना और सामान्य प्रशासन में वह पदाधिकारी जिसे निश्चित दायित्व सौंपा गया

हो और जिसके पूरा न होने की स्थिति में उसे जवाबदेह ठहराया जाए। officer

अफ़सोस *पुं. (फ़ा.)* किसी कार्य के संपन्न हो जाने पर उसके प्रति खेद व्यक्त करने की भावना। **पर्या.** रंज शोक, पछतावा, खेद।

अफ़ीम *(स्त्री.) (अर.)* पोस्त के डोडे का चिपचिपा गुलाबी सा स्राव जो संग्रह करने के बाद सूख जाने पर कड़वा, मादक और विषाक्त हो जाता है।

अब *क्रि.वि. (देश.)* 1. इस समय, इस क्षण। **उदा.** अब घंटी बजी है। 2. इसके बाद। **उदा.** अब क्या करना है? 3. भविष्य में। **उदा.** तुम्हें अब पता चलेगा।

अबढर/औढर *(सं. <अब+हिं. ढरना) वि.* 1. किसी पर अकारण प्रसन्न होने वाला 2. अत्यंत उदार 3. थोड़ी ही साधना या स्तुति से अतिकृपा करने वाला। **जैसे**: अबढरदानी शिव।

अबला *वि.स्त्री. (तत्.)* व्यु.अर्थ जिसमें बल न हो ऐसी। सा.अर्थ-स्त्री**,** औरत।

अबाध *वि. (तत्.)* बाधा रहित, जिसमें कोई बाधा न हो। **पर्या.** निर्विघ्न। **उदा.** अबाध गति।

अबाधित [अ+बाधित] *वि.(तत्.)* जिसके करने में कोई बाधा खड़ी न हुई हो, **विलो.** बाधित।

अबीर *पुं. (अर.)* 1. अबरक मिला हुआ रंगीन चूर्ण। (अधिकतर गुलाबी या लाल) जिसका होली पर उपयोग किया जाता है। 2. धार्मिक अवसरों पर सिर पर तिलक लगाने के लिए प्रयुक्त चूर्ण या पाउडर। **पर्या.** गुलाल।

अबूझ/अनबूझ *वि. (देश.)* 1. जिसे बूझा अर्थात् समझा न जा सके। **जैसे:** अबूझ/अनबूझ पहेली।

अबे*(अव्य. विस्मयबोधक) [तद्.*<अयि] तिरस्कारपूर्ण संबोधन। **पर्या.** अरे, हे। (बहुत छोटे या हीन व्यक्ति के लिए संबोधन)।

अबोध *वि.(तत्.)* जिसे बोध यानी जानकारी अथवा ज्ञान न हो। **पर्या.** अनजान, नादान, मूर्ख।

अब्द *पुं.(तत्.)* 1. वर्ष, साल। **उदा.** शताब्दी, दशाब्दी। 2. बादल, मेघ (अप्+द=जल देने वाला) 3. आकाश, नभ।

अब्धि [अप्+धि] *पुं. (तत्.)* व्यु.अर्थ अप् (जल) का समूह। सा.अर्थ 1. समुद्र, सागर, जलाशय। 2. सात की संख्या।

अब्बा *पुं. (अर.)* पिता के लिए प्रयुक्त संबोधनसूचक शब्द।

अभद्र *वि.(तत्.)* जो भद्र (शालीन) व्यक्तियों के व्यवहार से बाहर हो, शालीनता रहित। **जैसे**: अभद्र भाषा का प्रयोग, अभद्र व्यवहार आदि।

अभय *पुं. (तत्.)* भय का अभाव; निर्भयता का भाव। *वि.(तत्.)* जिसे भय न हो। **पर्या.** निडर, निर्भय।

अभयदान *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ भयरहित होने का वचन देना, सुरक्षा का आश्वासन देना। **पर्या.** सर्वक्षमा। amnesty

अभयारण्य (अभय+अरण्य) *पुं. (तत्.)* प्राकृतिक वातावरण वाला वह आरक्षित वनक्षेत्र जहाँ जंगली पशु-पक्षी आदि निर्भय होकर विचरण करते हैं। इस क्षेत्र में शिकार खेलने की मनाही रहती है तथा आरक्षण का मुख्य उद्देश्य संरक्षित पशु-पक्षियों के अस्तित्व को समाप्त होने से बचाना होता है।

अभागा *(वि.) [तद्.< अभाग्य]* 1. जिसका भाग्य अच्छा न हो, भाग्यहीन। **पर्या.** दुर्भाग्यशाली**,** बदकिस्मत। **जैसे**: उस जैसा अभागा तो मैंने देखा ही नहीं। 2. *पुं.* वह व्यक्ति जो दुर्भाग्य से बहुत मुसीबत में पड़ा हुआ हो। **विलो.** भाग्यशाली, भाग्यवान।

अभाव [अ+भाव] *पुं. (तत्.)* अस्तित्व में न होने अवस्था, 1. विद्यमान न होना। **उदा.** प्रकाश का अभाव ही अंधकार है। 2. कमी । **उदा.** रेगिस्तान में पानी के अभाव के कारण वहाँ का जीवन अत्यंत कष्टप्रद होता है।

अभावग्रस्त [अभाव+ग्रस्त] *वि. (तत्.)* 1. अभाव से ग्रस्त, अभाववाला, गरीब (व्यक्ति) 2. जहाँ सामान्य जीवन-यापन के उपयुक्त साधनों का अभाव हो। **जैसे**: अभावग्रस्त परिवार। 3. जहाँ उचित संसाधनों के अभाव में विकास संभव न हुआ हो या न हो पा रहा हो। **जैसे:** अभावग्रस्त क्षेत्र।

अभिकथन [अभि+कथन] *वि. (तत्.)* 1. किसी व्यक्ति के द्वारा किसी बात को बिना किसी प्रमाण के निश्चय व दृढ़तापूर्वक कहा जाना। 2. दावा; आरोप। allegation

अभिकरण *पुं. (तत्.)* 1. (अर्थ) संविदा कानून के अनुसार बनाया गया एक विशिष्ट संबंध, जिसमें एक पक्ष किसी के साथ व्यापार करने के लिए किसी दूसरे पक्ष को प्राधिकृत कर देता है। दूसरा पक्ष पहले का प्रतिनिधि कहा जाता है। 2. किसी व्यापारिक प्रतिष्ठान और उसके उत्पादों के खरीदने वालों के बीच में कमीशन के आधार पर संबंध जोड़ने वाला व्यक्ति या संस्था। 3. वह स्थान या कार्यालय जहां इस प्रकार का कार्य होता है। agency

अभिकर्ता *पुं. (तत्.)* किसी व्यक्ति या संस्था की ओर से प्रतिनिधि के रूप में तत्संबंधी विशेष कार्य करने के लिए नियुक्त व्यक्ति। agent

अभिकर्षण (धक्का) अभिप्रेत वस्तु को बाह्य बल का उपयोगकर अपनी ओर खींचने की क्रिया। Pull, pulling

अभिकलन [अभि+कलन] *पुं. (तत्.)* 1. किसी तथ्य या संभाव्य घटना के संबंध में की जाने वाली गणितीय सं.क्रिया, सुनिश्चित गणना। 2. गणितीय संक्रियाओं या विशिष्ट अध्ययन के आधार पर होने वाली घटना का पूर्वानुमान। **जैसे:** भूकंपों या तूफानों का अभिकलन। computation

अभिकलित्र [अभि-कलित्र] *वि. (तत्.)* एक स्वचालित इलेक्ट्रॉनिक मशीन जो अभिकलन में सहायक होती है उसे संकलित करती है तथा आवश्यकतानुसार स्मृति से उसे पुन: प्रस्तुत कर सकती है। अं. computer

अभिक्रिया *स्त्री. (तत्.)* **रसा.** दो या दो से अधिक तत्वों के परस्पर संपर्क के फलस्वरूप उनमें घटित रासायनिक परिवर्तन। **जैसे**: पोटैशियम नाइट्रेट और गंधक अम्ल के मिलने पर नाइट्रेट अम्ल का बनना। reaction

अभिक्रियाशील *वि. (तत्.)* **रसा.** अभिक्रिया के घटित होने की योग्यता रखने वाला (कोई भी तत्त्व) reactive

अभिजात *वि.(तत्.)* 1. उच्च कुल में उत्पन्न। **पर्या.**-कुलीन। 2.मान्य, सभ्य, 4. आचरणशील, व्यवहारकुशल। aristocrat

अभिज्ञान-पत्र *पुं. (तत्.)* **दे.** पहचान-पत्र।

अभिनंदन-पत्र *पुं. (तत्.)* किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति को सम्मानित करने के लिए उसके उल्लेखनीय व्यक्तित्व और कृतित्व पर लिखा गया सम्मान-पत्र जो समारोहपूर्वक सुनाकर उसे आदर-सहित भेंट किया जाता है। **उदा.** प्रधानाचार्य के सेवानिवृत्त होने के अवसर पर छात्रों ने उन्हें अभिनंदन-पत्र भेंट किया।

अभिनय 1. नाटक, फिल्म आदि के मंच पर किसी काल्पनिक या वास्तविक व्यक्ति विशेष के चरित्र को जीना यानी सजीव रूप में प्रस्तुत करना। 2. किसी व्यक्ति के हावभावों की नकल करना। acting

अभिनव *वि. (तत्.)* (औरों की तुलना में) नया; ताज़ा।

अभिनेता *पुं. (तत्.)* अभिनय करने वाला पुरूष कलाकार। **दे.** अभिनय।

अभिनेत्री *स्त्री. (तत्.)* अभिनय करने वाली स्त्री कलाकार। **दे.** अभिनय।

अभिन्न [अ=नहीं+भिन्न=अलग] 1. जो अलग नहीं है। 2. जिसे अलग नहीं किया जा सकता। **उदा.** कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है।

अभिन्नता [अ+भिन्न+ता] *स्त्री. (तत्.)* 1. भिन्नता का न होना, 2. दो होते हुए भी एक रहने या दिखाई पड़ने की स्थिति। **दे.** अभिन्न'। *तु.* अभेद।

अभिप्राय *पुं. (तत्.)* 1. किसी काम को शुरू करने/पूरा करने का विचार या उद्देश्य। **पर्या.** purpose 2. जो बात कही गई है उसे अधिक स्पष्ट करने के लिए साररूप में बताया गया उसका मतलब। **पर्या.** आशय।

अभिप्रेत *वि. (तत्.)* 1. संदर्भानुकूल (अर्थ)। **उदा.** जैसे कनकपादप में कनक का अर्थ धतूरा ही अभिप्रेत है, सोना नहीं। 2. इष्ट, इच्छित, अभिलषित। **जैसे**: अभिप्रेत भोजन। 3. अभीष्ट, आशा के अनुरूप। **जैसे**: अभिप्रेत मित्र।

अभिभावक *पुं. (तत्.)* 1. किसी व्यक्ति (विशेष रूप से अवयस्क, असमर्थ) का विधिमान्य संरक्षक। 2. माता-पिता की अनुपस्थिति में बालक की देखरेख करने वाला अधिकृत या पूर्वसूचित व्यक्ति। 3. सामान्य स्थिति में माता-पिता। quardian

अभिभाषण *पुं. (तत्.)* किसी सभा, अधिवेशन आदि में पढ़ा जाने वाला अतिविशिष्ट व्यक्ति का औपचारिक भाषण। address

अभिभूत *वि. (तत्.)* भावना की अतिशयता के प्रभाव में overwhelmed

अभिमत [अभि+मत] *वि. (तत्.)* 1. मनोवांछित, मनचाहा। **जैसे:** तुम्हें अपना अभिमत प्राप्त हो गया न? 2. किसी विषय पर विचारपूर्वक निश्चित किया हुआ मत, राय। **जैसे:** 'चुनावप्रक्रिया' पर अपना अभिमत स्पष्ट कीजिए।

अभिमान *पुं. (तत्.)* किसी की (चाहे अपनी या दूसरे की) योग्यता और सामर्थ्य के बारे में मन में उपजा आदर या घमंड का भाव। **टि.** समाज के बीच (i) आदर का भाव और (ii) घमंड का भाव अवगुण का सूचक माना जाता है। **पर्या.** (i) गर्व; (ii) घमंड, अहंकार। (स्त्री. अभिमानी)

अभिमानी *वि. (तत्.)* अपने को बहुत बड़ा समझने वाला; घमंड करने वाला। **पर्या.** घमंडी।

अभियंता *पुं. (तत्.)* अभियांत्रिकी (इंजीनियरिंग) में निष्णात व्यक्ति। engineer **दे.** अभियांत्रिकी।

अभियांत्रिकी *स्त्री. (तत्.)* वह विद्याशाखा जिसमें विज्ञान के मूलभूत सिद्धांतों का अनुप्रयोग भवन और सडक़ निर्माण **जैसे:** सिविल कार्यों; मशीनों के उपयोग और निर्माण तथा वैद्युत एवं इलैक्ट्रोनिक कार्यों के लिए सिखाया जाता है। **पर्या.** इंजीनियरी। enginerring

अभियुक्त *पुं (तत्.)* वह व्यक्ति जिस पर कोई अभियोग लगाया गया हो। **पर्या.** मुलजिम। accused

अभियोग *पुं. (तत्.)* किसी व्यक्ति के विरूद्ध लगाया गया वह आरोप कि उसने अमुक अपराध किया है। (और दोनों पक्षों को सुनने के बाद जिस पर न्यायालय अपना निर्णय सुनाता है।) accusation

अभियोजक *पुं. (तत्.)* व्यक्ति जो दंड न्यायालय में अभियुक्त के विरूद्ध सरकारी पक्ष प्रस्तुत करे। prosecutor

अभियोजन *पुं. (तत्.)* **विधि**. किसी व्यक्ति के विरूद् उसके अपराधी होने के विषय में न्यायालय में की गई वह सारी कार्यवाही जो उसे अपराधी सिद्ध करने की दृष्टि से आवश्यक हो। prosecution

अभिराम *वि. (तत्.)* जिसमें मन रमता हो, जो अच्छा लगता हो। **पर्या.** सुंदर, सुखकारी, मनमोहक।

अभिरूचि *स्त्री. (तत्.)* किसी व्यक्ति या वस्तु के प्रति लगाव बढ़ाने वाली भावना। विशेष रूचि, शौक, चाह, पसंद। interest

अभिलक्षण *पुं. (तत्.)* किसी वस्तु की पहचान कराने वाले वे विशेष लक्षण जो दूसरी वस्तु से उसके भेदक स्वरूप को स्पष्ट करते हों। features

अभिलाषा *स्त्री. (तत्.)* किसी वस्तु को प्राप्त करने या प्रयोग करने की इच्छा। **पर्या.** आकांक्षा, कामना, चाह।

अभिलाषी *वि.(तत्.)* अभिलाषा करने वाला, इच्छुक। **दे.** अभिलाषा।

अभिलिखित *वि.(तत्.)* अभिलेख के रूप में लाया गया। **दे.** अभिलेखन'।

अभिलेख *पुं. (तत्.)* 1. भविष्य में जानकारी प्राप्त करने के लिए उपयोगी मानकर सुरक्षित रखी गई कोई भी लिखित सामग्री। 2. प्राचीन ऐतिहासिक दस्तावेज। (जिनमें कागज़-पत्र, शिलालेख, ताम्रपत्र, मोहरें आदि सभी सम्मिलित हैं।) record

अभिलेखन *पुं. (तत्.)* ध्वनि, लिपि आदि किसी भी रूप में सूचना का संग्रहण। **उदा.** ग्रामोफ़ोन, टेप आदि में संगीत का अभिलेखन करना। recording

अभिलेखागार [अभिलेख+आगार] *पुं. (तत्.)* अभिलेखों का घर या संग्रहालय। ऐतिहासिक महत्व के दस्तावेजों आदि का सुरक्षित रखने का आधिकारिक स्थान। archives

अभिवादन *पुं. (तत्.)* किसी आदरणीय व्यक्ति के प्रति प्रकट किया जाने वाला शारीरिक या शाब्दिक आदर का भाव। **पर्या.** प्रणाम, वंदना, स्तुति।

अभिवृद्धि [अभि+वृद्धि] *स्त्री.* बहुत अधिक वृद्धि या बढ़ोतरी; चारों ओर हुई वृद्धि।

अभिव्यक्ति *स्त्री. (तत्.)* भाषा की वे उक्तियाँ जिनमें वक्ता का कोई निश्चित भाव प्रकट होता है। प्रकटीकरण, कथन।

अभिशाप *पुं. (तत्.)* 1. शाप, 2. मिथ्या दोषारोपण, 3. किसी बुरे कार्य का प्राकृतिक रूप से प्राप्त प्रतिफल। **उदा.** गरीबी अभिशाप है।

अभिषिक्त *वि. (तत्.)* 1. जिसका अभिषेक हुआ हो, 2. जो राजगद्दी पर पहली बार बैठा हो। **दे.** 'अभिषेक'।

अभिषेक *पुं. (तत्.)* 1. ऊपर से जल डालकर देवमूर्ति को कराया गया स्नान। 2. राज्यारोहण के अवसर पर बाधा-शांति या भावी मंगलमय जीवन के निमित्त मंत्रोच्चारण सहित राजा पर जल छिड़कने की क्रिया। राज्याभिषेक

अभिषेकजनन *पुं. (तत्.)* लैंगिक/अलैंगिक से भिन्न जनन का वह प्रकार जिसमें निषेचन fertilisation की क्रिया के बिना ही केवल मादा युग्मक से नए जीव उत्पन्न होते हैं। **जैसे**: मधुमक्षिका, बर्र, रोटीफर, एफिड आदि कुछ प्राणियों में नर सेक्स का बनना। parthenogenesis **दे.** जनन।

अभिसार *पुं. (तत्.)* नायक-नायिका या प्रेमी-प्रेमिका का मिलने के लिए संकेतित या पूर्वनिश्चित स्थान पर जाने की क्रिया।

अभिसारिका [अभिसारक+आ] *स्त्री.(तत्.)* शा.अर्थ अभिसरण करने वाली (स्त्री.)। सा.अर्थ 1. प्रिय से एकांत में मिलने के लिए जानेवाली स्त्री। 2. काव्यशास्त्र में नायिका का एक भेद जो अभिसार के लिए नायक को संकेत स्थल पर बुलाने का संकेत करती है।

अभी [अब+ही] *क्रि.वि. (देश.)* 1 इसी क्षण, इसी समय। 2. अब तक। **उदा.** अभी गाड़ी नहीं आई है।

अभी-अभी *क्रि.वि. (देश.)* थोड़े ही समय पहले, हाल ही में।

अभीष्ट [अभि+इष्ट] *वि.(तत्.)* विशेष रूप से चाहा गया।

अभूतपूर्व [अ+भूतपूर्व] *वि. (तत्.)* 1. जो या जिसके समान इसके पूर्वकाल में कभी न हुआ हो। 2. अद्वितीय, बेजोड़, अनुपम। 3. अद्भुत, आश्चर्यजनक। **जैसे**: अभूतपूर्व घटना। अभूतपूर्व सूर्यग्रहण।

अभेद [अ+भेद] *पुं. (तत्.)* भेद का न बने रहना; द्वैत भाव की सर्वथा समाप्ति। **तु.** अभिन्नता।

अभेद्य *वि.(तत्.)* जिसका भेदन न किया जा सके; जिसमें घुसना संभव न हो या घुसना बहुत कठिन हो। **जैसे**: अभेद्य दुर्ग।

अभ्यर्थी [अभि+अर्थी] *पुं. (तत्.)* किसी पद को पाने का उम्मीदवार। **पर्या.** प्रार्थी, प्रत्याशी। candidate

अभ्यस्त *वि.(तत्)* 1. जिसने पर्याप्त अभ्यास किया हो। **पर्या.** कुशल, प्रवीण, निपुण। 2. जिसे किसी काम को बार-बार करने के कारण आदत पड़ गई हो।

अभ्यागत [अभि+आगत] *वि./पुं. (तत्.)* व्यु.अर्थ सामने आया हुआ। सा.अर्थ 1. अतिथि, मेहमान। 2. साधु, सन्यासी।

अभ्यारण्य [अभय+अरण्य] *पुं. (तत्.)* प्राकृतिक वातावरण वाला वह आरक्षित वनक्षेत्र जहाँ जंगली पशु-पक्षी आदि निर्भर होकर विचरण करते हैं। इस क्षेत्र में शिकार खेलने की मनाही रहती है तथा आरक्षण का मुख्य उद्देश्य संरक्षित पशु-पक्षियों के अस्तित्व को समाप्त होने से बचाना होता है।

अभ्यास *पुं. (तत्.)* दक्षता प्राप्त करने के लिए एक ही काम को बार-बार करना। **जैसे**: अभ्यासपुस्तिका; सैन्य अभ्यास; योगाभ्यास आदि।

अभ्युदय [अभि+उदय] *पुं. (तत्.)* 1. उत्पत्ति या उदय होने का भाव।, 2. उन्नति, वृद्धि।

अमंगल *वि. (तत्.)* शा.अर्थ मंगलरहित। सा.अर्थ अशुभ या बुरा। **उदा.** हनुमानजी की कृपा से तुम्हारा अमंगल दूर हो जाएगा।

अमचूर *(तद्.< आम्र+चूर्ण) पुं.* सुखाए हुए कच्चे आम का चूर्ण, जो स्वाद में खट्टा होता है।

अमन *पुं. (अर.) दे.* शांति।

अमनचैन *(अर.+हिं.) पुं.* एकार्थी शब्द द्विरूक्ति, शांति और सुख।

अमर [अ+मर] *वि. (तत्.)* शा.अर्थ जो मरा न हो; जो मरे नहीं; सदा जीवित रहने वाला। **पर्या.** चिरजीवी। 2. जिसका कभी अंत न हो।

अमरत्व [अमर+त्व] *पुं. (तत्.)* अमर होने का भाव। **दे.** अमर।

अमराई *(तद्. <* आम्ररानि) *स्त्री.* ऐसा बगीचा जहाँ अधिकतर आम के वृक्ष हों, आम का बाग/बगिया।

अमरूद *पुं. (देश.)* उष्णकटिबंधीय वृक्ष पर लगने वाला खाद्य फल जो कठोर बीजों वाला तथा अपक्व अवस्था में हरे रंग का और पकने पर हल्के पीले रंग का और पीले या गुलाबी रंगवाला गूदेदार हो जाता है।

अमल [अ+मल] *वि. (तत्.) (स्त्री.-अमला)* मलरहित, निर्मल; स्वच्छ। *स्त्री.* 'अफीम' का बोलीगत पर्याय।, 3. *पुं.* (अर.) व्यवहार, आचरण। **उदा.** जिस बात का उपेदश दें, पहले खुद उस पर अमल करें।

अमानत *स्त्री. (अर.)* 1. कोई वस्तु जो कुछ समय के लिए किसी दूसरे के पास सुरक्षा के लिए रख दी गई हो। **पर्या.** धरोहर, थाती। 2. उक्त प्रक्रिया।

अमानवीय [अ+मानव+ईय] *वि. (तत्.)* शा.अर्थ-जो मानवोचित न हो, इंसानियत से रहित। सा.अर्थ ऐसा व्यवहार, आचरण या काम जो मानव के सामान्य गुणों से मेल न खाता हो। **पर्या.** पाश्विक, पशुवत्।)

अमान्य *वि. (तत्.)* जो मानने या स्वीकार करने योग्य न हो। **विलो.** मान्य।

अमावस *स्त्री. (तद्.)* **दे.** अमावस्या'।

अमावस्या *स्त्री.(तत्.)* भारतीय पंचागानुसार प्रत्येक मास की कृष्ण पक्ष की अंतिम तिथि (जिसमें रात को चंद्रमा बिल्कुल दिखाई नहीं देता) **पर्या.** अमावस ।

अमिट [अ+मिट] *वि. (देश.)* 1. जो मिट न सके।, 2. जिसे मिटाया या नष्ट न किया जा सके। 3. जिसका होना निश्चित हो।

अमित *वि. (तत्.)* 1. जिसे नापा या मापा न जा सके। **पर्या.** अपरिमित। 2. बहुत अधिक, बेहद।

अमिया *(तद्.<आम्र) स्त्री.* अपक्वावस्था वाला छोटा आकार का आम्रफल। **पर्या.** केरी।

अमीबा *पुं. (अं.)* जीव-जल या मृदा में पाया जाने वाला केवल एक कोशिकीय जीवित प्राणी।

अमीर *वि./पुं. (अं.)* जिसके पास धन और अधिकार हों। **पर्या.** धनी, सरदार, नेता, शासक आदि। **तु.** उपराव।

अमीरी भाव. *स्त्री.* संपन्नता, दौलतमंदी।

अमुक *वि. (तत्.)* अज्ञात या कल्पित। **टि.** सामान्यत: किसी अज्ञात, कल्पित या जिसका नाम न लेना हो उसके लिए इस शब्द का प्रयोग होता है। **उदा.** अमुक व्यक्ति, अमुक स्थान, अमुक वस्तु, इत्यादि। **पर्या.** फलाँ।

अमूमन *(अव्य.) (अ.<उमूमन) क्रि.वि.* 1. साधारणत:, आमतौर पर, अक्सर, प्राय:, बहुधा।

अमूर्त *वि. (तत्.)* शा.अर्थ मूर्तिरहित। सा.अर्थ जिसे प्रत्यक्षत: देखा न जा सके। abestract

अमूल्य *वि.(तत्.)* 1. जिसका मूल्य न लगाया जा सके। **पर्या.**-अनमोल। 2. बहुमूल्य।

अमृत *पुं. (तत्.)* वह कथित पेय जिसके बारे में कहा जाता है कि उसे पीने के बाद आदमी मरता नहीं, अमर हो जाता है। **पर्या.** सुधा, पीयूष। **ला.** कोई अत्यंत स्वादिष्ट या आनंददायक पेय या खाद्य पदार्थ।

अमोघ [अ+मोघ=व्यर्थ] *वि.(तत्.)* जो निष्फल न हो, जो व्यर्थ न जाए। **पर्या.** सफल, अचूक। **उदा.** अमोघ वरदान (सफल)। अमोघ अस्त्र (अचूक)। अमोघ प्रयत्न (अव्यर्थ)।

अम्पायर *पुं. (अं.)* 1. वह अधिकारी जो कुछ विशेष खेल प्रतियोगिताओं में यह सुनिश्चित करता है कि निष्पक्षता बनी रहे तथा कोई खिलाड़ी खेल संबंधी नियम को न तोड़े। 2. किसी क्रिकेट मैच का निर्णायक, मध्यस्थ। umpire

अम्मा/अम्माँ *स्त्री. तद्<अम्बा* माता, माँ, जननी। (सामान्यतया संबोधन में प्रयुक्त)

अम्ल *पुं. (तत्.)* **रसा.** वे यौगिक जिसमें हाइड्रोजन हो और जो जल में घुलकर हाइड्रोजन आयरन का मोचन करते हैं तथा सामान्यत: खट्टा एवं संक्षारक corrosive होते हैं। ये लिटमस को लाल करते हैं तथा इनका pH मान 7 से कम होता है। acid

अम्लता *स्त्री. (तत्.)* अम्लयुक्त (खट्टे) होने का भाव।

अम्लता *स्त्री.(तत्.)* शा.अर्थ खट्टापन। आयु. अम्ल पित्त की मात्रा बढ़ जाने से उत्पन्न पेट का रोग जिसमें खट्टी डकारें आना और पेट में जलन होना। acidity

अम्लवर्षा *स्त्री. (तत्.)* अम्ल सहित वर्षा। अम्लवर्षा का मुख्य कारण वायुमंडल में सल्फर डाइऑक्साइड और नाइट्रोजन के ऑक्साइडों का मुक्त होना है। अम्ल वर्षा उद्योगों से उत्पन्न अपशिष्ट गैसों के रूप में होती है।

अम्लीय *पुं. (तत्.)* अम्ल से संबंधित। **दे.** अम्ल। *वि. (तत्.)* अम्ल (खटा) गुणों से युक्त।

अयन *पुं. (तत्.)* सा.अर्थ जाना, गति, चाल। **भू.** 1. सूर्यकिरणों के पृथ्वी पर आने से बनने वाले प्रभाव में होने वाला परिवर्तन या गति। **उत्तरायण-**दिसंबर से जून तक सूर्य की किरणें क्रमश: उत्तर की ओर जाती हुई दिखती हैं अत: इसे उत्तरायण कहते हैं। दक्षिणायन-इसके विपरीत जून से दिसंबर के काल को दक्षिणायन कहते हैं। 2. पृथ्वी का लंबगोलाकार मार्ग भी क्रमश: पश्चिम की ओर घूमता है। लगभग 72 वर्ष में एक अंश घूमता है। इसी कारण सबसे बड़ा/छोटा दिन एक-एक दिन पीछे खिसक जाता है। इस आधार पर अयनांश की गणना होती है। **उदा.** आजकल सबसे बड़ा दिन 21 जून माना जाता है। कुछ वर्षों पूर्व यह 22 जून होता था।

अयनांत [अयन+अंत] *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ (सूर्य के) अयन अर्थात जाने का अंत यानी अंतिम छोर। **भू.** वह समय जब सूर्य की वार्षिक गति की दिशा उलटती हुई प्रतीत होती है। **टि.** (i) समय वर्ष में दो बार आता है। (ii) दो छोर हैं- कर्क रेखा (उत्तरी 23½^{0}) और मकर रेखा (दक्षिणी 23½^{0})

अयस्क *पुं. (तत्.)* वह खनिज पदार्थ जिसमें धातु के कण पाए जाते हों। भिन्न-भिन्न धातुओं के कण भिन्न-भिन्न अयस्कों से प्राप्त होते हैं। शोधन के पश्चात् यह धातु प्रयोग में आती है। **जैसे**: एल्यूमीनियम का अयस्क बॉक्साइट। ore

अयाल *पुं. (फ़ा.)* घोड़े या सिंह की गरदन पर स्थित बालों का समूह। **पर्या.** केसर। **टि**. इसी कारण सिंह को 'केसरी' कहा जाता है।

अयोग्य [अ+योग्य] *वि.(तत्.)* 1. जो उपयुक्त या उचित न हो। **पर्या**. अनुचित। 2. जिसमें योग्यता न हो। **पर्या.** नालायक, नाकाबिल।

अयोग्यता *स्त्री. (तत्.)* अयोग्य होने का भाव। **दे.** अयोग्य।

अरण्य *पुं.(तत्.)* जंगल, वन।

अरण्यरोदन *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ जंगल में रोना। ऐसी पुकार जिसे कोई सुनने वाला न हो; ऐसी बात जिस पर कोई ध्यान न दे। व्यर्थ का प्रलाप।

अरदास *स्त्री. [अर्ज़-अर.+दाश्त-फ़ा.]* 1. प्रार्थना, निवेदन। 2. किसी देवता के नाम पर दिया जाने वाला धन।

अरब *(तद् < अर्बुद)* *वि.* 1.सौ करोड़ की संख्या वाला, सौ करोड़ (1,00,00,00,000) *पुं. (अर.)* 1. पश्चिमी एशिया का रेगिस्तानी प्रदेश जिसके अंतर्गत मिस्त्र, ईराक आदि कई देश हैं। 2. अरब देश का निवासी। *बहु.व.* अरबों= कई अरब, बहुत बड़ी संख्या वाले।

अरब सागर *पुं.* अरेबियन सी के लिए प्रयुक्त हिंदी पर्याय जो अरब प्रायद्वीय से लेकर भारत के दक्षिणी तट तक फैला हुआ है। arabian sea

अरमान *पुं. (फ़ा.)* मन में दबी हुई चाह या लालसा।

अरसा *पुं. (अर.)* लंबी अवधि, लंबा समय। **उदा.** आपसे मिले तो अरसा हो गया।

अरि *पुं. (तत्.)* शत्रु, वैरी।

अरुचि *स्त्री. (तत्.)* शा.अर्थ किसी कार्य, वस्तु आदि को करने या पाने में पसंद न आने की स्थिति।, रुचि का अभाव। **पर्या.** नफरत, घृणा। विलो.-रूचि।

अरुचिकर *वि. (तत्.)1.* पसंद न आने वाला। 2. जो मन के अनुकूल न हो। **दे.** अरुचि।

अरुण *वि. (तत्.)* लाल (रंग) *पुं. (तत्.)* सूर्य के सारथी का नाम। **टि.** सूर्योदय के पूर्व आकाश का लाल रंग का हो जाना ही प्रतीक रूप में सूर्य का सारथी होना है।

अरुणोदय [अरुण+उदय] *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ 1. सूर्य का उदय, 2. सूर्य के प्रकाश की ललाई का उदय। सा.अर्थ सूर्योदय से पूर्व का काल, उषाकाल। **पर्या.** तडक़ा, भोर, ब्रह्म-मुहूर्त।

अरू *अव्य. (देश.)* बोलीगत प्रयोग-और।

अरे *अव्य. (तत्.)* 1. संबोधन सूचक शब्द। **उदा.** अरे बालक। इधर आ। *स्त्री.* अरी। 2. आश्चर्यसूचक शब्द। **उदा.** अरे! यह क्या है?

अर्क *पुं. (तत्.)* 1. किसी औषधि द्रव्य का निचोड़। essance 2. सूर्य का एक पर्याय। 3. आक या मदार का पौधा।

अर्चन *पुं. (तत्.)* पूजा, पूजन।

अर्चना/अर्चा *स्त्री. (तत्.)* **दे.** अर्चन।

अर्ज़ *स्त्री. (अर.)* 1. प्रार्थना, निवेदन, विनती। **उदा.**-आप से अर्ज है कि मेरा यह काम कर दें। 2. *पुं.* (लंबाई की तुलना में) चौड़ाई। जैसे-इस कपड़े का अर्ज कितना है? (केवल कपड़े की चौड़ाई।) 3. *पुं. (अर.)* कपड़े की बाने वाली (ताने वाला लंबाई की तुलना में) चौड़ाई। 4. *पुं. (फ़ा)* लिखित और मौखिक प्रार्थना, निवेदन।

अर्जन *पुं. (तत्.)* सा.अर्थ कमाना, प्राप्त करना। earning 1. **विधि.** संपत्ति आदि को प्राप्त करके अपना बना लेना। 2. भाषा को स्वाभाविक परिस्थितियों में बाल्यकाल से ही (सहज रूप में) ग्रहण करते जाना। acquisition *तु.* सीखना। learning

अर्जित *वि. (तत्.)* अर्जित किया हुआ, कमाया हुआ। **दे.** अर्जन। acqruired

अर्जी/अरज *(अर. <अर्ज़) स्त्री.* प्रार्थना-पत्र, लिखित निवेदन, याचिका।

अतींद्रिय *[अति+इंद्रिय] वि.* जो इन्द्रियों की पहुँच से परे हो।

अर्थ *पुं. (तत्.)* 1. शब्द का अभिप्राय, आशय, मतलब। **जैसे:** 'वात्सल्य' शब्द का अर्थ बताएं। 2. धन, दौलत, संपत्ति। **जैसे**: अर्थशास्त्र economics 2. निमित्त, हेतु, उद्देश्य। **जैसे**: उसने सारा जीवन निरर्थक ही बिता दिया।

अर्थ *वि.(तत्.)* 1. किसी वस्तु के दो बराबर भागों में से एक। **पर्या.** आधा half semi 2. जिस कार्य में दो इकाईयों का समान (या आंशिक) भाग हो। **उदा.** अर्धसरकारी संस्था।, 3. जिसमें कमी हो, जो पूरा न हो। **उदा.** अर्धशिक्षित, अर्धपशु। **पर्या.** अधूरा।

अर्थच्छटा स्त्री. (तत्.) अर्थ से प्रकट होने वाला भाव।

अर्थपिशाच *पुं. (तत्.)* 1. उचित-अनुचित का विचार किये बिना जिस किसी भी तरीके से धन प्राप्ति के लिए तत्पर रहने वाला व्यक्ति। 2. वह अत्यंत लोभी व्यक्ति जो धन प्राप्त करने के लिए पिशाचों के समान क्रूर व अमानवीय कार्य करता हो। **जैसे**: आजकल घर में, बाजार में, वाहन में (यात्रा करते हुए) सभी जगह अर्थपिशाचों का आतंक है।

अर्थव्यवस्था [अर्थ+व्यवस्था] *स्त्री. (तत्.)* आय-व्यय, उत्पादन-वितरण आदि के लिए अपनाई हुई व्यवस्था। किसी भी समुदाय अथवा देश आदि के आर्थिक संसाधनों के नियंत्रण और प्रबंधन की वास्तविक स्थिति। economy

अर्थशास्त्र *पुं. (तत्.)* वह शास्त्र या विद्या जिसमें अर्थ या धन-संपत्ति के उत्पादन, साधन, उपयोग, विनिमय और वितरण आदि के सैद्धांतिक और व्यावहारिक पक्षों का विवेचन होता है। economics

अर्थशास्त्री *पुं. (तत्.)* अर्थशास्त्र का विद्वान या ज्ञाता। **दे.** अर्थशास्त्र।

अर्थशास्त्रीय [अर्थशास्त्र+ईय] *वि. (तत्.)* अर्थशास्त्र से संबंधित, अर्थशास्त्र का।

अर्थहीन (अर्थ+हीन) *वि.(तत्.)* 1. जिसका कोई अर्थ न हो। **पर्या.** निरर्थक, व्यर्थ। 2. जिसमें से सार भी न निकले। **पर्या.**निस्सार।

अर्थालंकार [अर्थ+अलंकार] *पुं. (तत्.)* काव्यशास्त्र में अलंकार का वह भेद जो (शब्द के रूप में नहीं किंतु) अर्थ पर आश्रित हो। **जैसे**: उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा आदि कई भेद। **तु.** शब्दालंकार।

अर्ध *वि. (तत्.)* 1. किसी वस्तु के दो बराबर भागों में से एक। **पर्या.** आधा 2. जिस कार्य में दो इकाइयोंका समान (या आंशिक) half, semi **उदा.** अर्ध सरकारी संस्था 3. जिसमे कमी हो, जो पूरा न हो। **उदा.** अर्ध शिक्षित, अर्धपशु। **पर्या.** अधूरा।

अर्धवृत्त *पुं. (तत्.)* आधा गोला (वृत्त) वृत्त की परिधि का आधा भाग अर्थात व्यास द्वारा काटे गए वृत्त के दो भागों में कोई एक भाग। semicircle

अर्पण *पुं. (तत्.)* 1. श्रद्धासहित देने की क्रिया। **पर्या.** समर्पण। 2. इस प्रकार दी जाने वाली वस्तु।

अर्बुद *वि. (तत्.)* प्राची. **अर्थ.** दस करोड़। सा.अर्थ सौ करोड़ की संख्या, एक अरब। सा.अर्थ बहुत बड़ी संख्या।

अर्वाचीन *वि.(तत्.)* 1. आज के काल का अर्थात जो पुराना न हो 2. जिसमें नवीन विचारों का समावेश हो। **पर्या.** आधुनिक। **विलो.** प्राचीन। 2. नया, नवीन। modern

अर्हता *स्त्री. (तत्.)* किसी कार्य को करने अथवा पद को धारण करने की उचित पात्रता अर्थात् शैक्षिक योग्यता एवं अनुभव आदि का पूरा विवरण। qualification

अलंकरण *पुं. (तत्.)* अपने-अपने क्षेत्र में विशिष्ट सेवाकार्य के लिए प्रदर्शित वह सम्मान जिसमें सम्मानित व्यक्ति को कोई तमगा लगाया जाता है या धनराशि अर्पित की जाती है और प्रशस्ति पढ़ी जाती है।

अलंकार *पुं. (तत्.)* 1. शरीर को सजाने और उसकी सुंदरता बढ़ाने के लिए पहनी गई मूल्यवान वस्तुएँ आदि। **पर्या.** गहना, आभूषण। 2. साहित्यिक चमत्कार उत्पन्न करने के लिए (कथन या वर्णन की रीति)। अलंकार 'उपमा', 'रूपक', 'अनुप्रास', 'यमक', 'श्लेष' आदि।

अलंकृत *वि.* अलंकार युक्त, सजा हुआ, विभूषित **उदा.** सारा मंडप तरह-तरह की रोशनियों से अलंकृत था।

अलग *वि. (देश.)* जो सबसे पृथक हो, जो किसी के साथ लगा या जुड़ा न हो।

अलग-थलग *(द्‌वितीय पद, अनु.) वि. [तद् < अलग्न]* जो सबसे अलग या अकेला पड़ गया हो।

अलगाव *पुं. (देश. < अलग, तद्.< अलग्न)* अलग होने का भाव; दूरी। **पर्या.** पार्थक्य, पृथक्करण।

अलबत्ता *अव्य.(अर.)* 1. निस्संदेह, बेशक। 2. लेकिन, परंतु।

अलबेला *वि. [तद् < अलभ्य]* 1. जो दिखने में अलग और नया हो। **पर्या.** अनोखा, अनूठा। 2. सुंदर, बना-ठना।

अलबेलापन *पुं.* अलबेला होने का भाव। **दे.** अलबेला।

अलमस्त *वि. (फ़ा.)* 1. जो नशे में पूरी तरह धुत्त हो। 2. लापरवाह, 3. मनमौजी, अपनी ही धुन में रहने वाला।

अलमस्ती *स्त्री. (फा.)* 1. किसी नशीले पदार्थ के सेवन से मस्त होने का भाव या स्थिति। मदमत्तता, नशे की मस्ती। **जैसे:** समारोह में उसकी अलमस्ती तो देखते ही बनती थी। 2. लापरवाही, बेफिक्री, निश्चिंतता। 3. मन की मौज।

अलमारी *स्त्री. (पुर्त.)* कपड़े, पुस्तकें या अन्य सामग्री के भंडारण के लिए दैनिक उपयोग में आने वाली खाने-बनी और कपाटयुक्त लकड़ी या लोहे की खड़े आकारवाली निधानी। almirah

अलल्ले-तलल्ले *[अर.+अनु.] वि.* (ऐसा खर्च) जिसका कोई हिसाब ही न हो, बेहिसाब। **जैसे**: वह मौजमस्ती में अलल्ले-तलल्ले पैसे उड़ा रहा है।

अलविदा *(अर.*) निश्चायक उपपद 'अल+विदा = विदाई) *पुं. (अर.)* विदा होते समय औपचारिक निर्वाह के लिए प्रयुक्त शब्द जिसका भाव है- "अच्छा, अब चलते हैं।"

अलसाई *स्त्री. वि.* आलस्ययुक्त (स्त्री.) *वि.* 'अलसाया'-आलस से शिथिलता अनुभव करता हुआ।

अलसाना *[तद्. < अलसन] अ.क्रि.* शरीर का शिथिल होना, आलस्य करना।

अलसाया *[तद् < अलसित] पुं. वि.* आलस्य युक्त (पुरूष) **पर्या.** अलसित।

अलसुबह *स्त्री. (अर.)* प्रात:काल, सवेरा। **टि.** 'अल' अरबी का निश्चयवाचक उपपद है, जो अंग्रेजी के the के समकक्ष है।

अलहदा *वि. (अर.)* **दे.** अलग।

अलापना *[तद् < आलापन] (अ.क्रि.)* सा.अर्थ 1. गाने से पहले तान मिलाना (शास्त्रीय संगीत में)। **दे.** आलाप।, 2. गाना गाना। 3. बोलना, बात करना। **मुहा.** राग अलापना (ला.अर्थ) अपने ही स्वार्थ या हित की बात पर लगातार ज़ोर देते रहना; अन्यों से भिन्न अपना मत व्यक्त करना।

अलाव *(तद् < अलात) पुं.* तापने के लिए या जंगली पशुओं को दूर रखने के लिए जलाई गई आग।

अलावा *[अर.< इलावा] अव्य.* (के) अतिरिक्त, (को) छोडकर (के) सिवा, सिवाय।

अलिंगी/अलैंगिक जनन *पुं. (तत्.)* जीव-जनन का एक प्रकार जिसमें सेक्स कोशिकाओं या युग्मकों का संलयन नहीं होता है। asexual इस प्रकार के

जनन को अलिंगी जनन भी कहा जाता है। *तु.* लैंगिक जनन।

अलिंद *पुं. (तत्.)* 1. जीव-हृदय का वह कक्ष जिसमें रुधिर शरीर के भिन्न-भिन्न अंगों से लौटकर आता है और वहाँ से फिर निलय वेंट्रिकल में चला जाता है। auricle **तु.** निलय। 2. कान-जैसी उभरी हुई संरचना।

अलि *पुं. (तत्.)* काले रंग का उड़ने वाला एक कीट जो फूलों से रस ग्रहण कर छत्ते में इकट्ठा करता है और कालांतर में शहद का रूप धारण कर लेता है। **पर्या.** भ्रमर, भौंरा।

अलैंगिकजनन *पुं. (तत्.)* जनन का वह प्रकार जिसमें जनन-कोशिकाएँ (युग्मक) न बनकर जनन क्रिया प्राणी की कायिक कोशिकाओं से होती है। **जैसे:** अमीबा में द्वि., स्पंज में जेम्यूल द्वारा जनन और हाइड्रा में मुकुलन। a sexual reproduction **दे.** जनन; **तु.** लैंगिक जनन।

अलौकिक *वि.(तत्.)* सा.अर्थ अद्भुत, विचित्र। व्यु.अर्थ जो इस लोक (समाज) से संबंधित न हो। **पर्या.** दिव्य, लोकोत्तर।

अल्प *वि. (तत्.)* थोड़ा, कम।

अल्पकालिक *वि.(तत्.)* 1. थोड़े समय के लिए (अधिक समय के लिए नहीं)। **उदा.** कीट-पंतगों का जीवन अल्पकालिक होता है। **जैसे**: 2. जो थोड़े दिनों के लिए ही हो। अल्पकालिक अवकाश।

अल्पजीवी *वि. (तत्.)* 1. थोड़े समय तक जीने वाला। 2. जिसकी आयु कम हो। **पर्या.** अल्पायु। **उदा.** कीट-पतंग अल्पजीवी होते हैं। **विलो.** दीर्घजीवी।

अल्पज्ञ *वि.(तत्.)* 1. जो कम जानकारी रखता हो। 2. नासमझ, नादान।

अल्पप्राण *वि. (तत्.)* शा.अर्थ जिसमें प्राण की मात्रा कम हो। *व्या.पु. बह.* बाह्य प्रयत्न के आधार पर व्यंजनों के वर्गीकरण के प्रसंग में वे स्पर्श व्यंजन जिनके उच्चारण में 'प्राण' (अर्थात) प्रश्वास तुलनात्मक दृष्टि से अल्पमात्रा युक्त होता है। **जैसे**: देवनागरी वर्णमाला में पाँचों वर्गों के पहले, तीसरे और पाँचवें (वर्ण) जैसे-क, ग, ड., च, ज इत्यादि।

अल्पबुद्धि *वि. (तत्.)* कम बुद्धि रखने वाला। **पर्या.** अल्पमति, मंदमति। **विलो.** तीक्ष्णबुद्धि, तीव्रबुद्धि

अल्पमत *पुं. (तत्.)* 1. थोड़े लोगों का मत या राय। 2. समान मत रखने वालों का छोटा समूह। **पर्या.** अल्पसंख्यक। (वि./पुं.) minority **विलो.** बहुमत।

अल्पवयस्क *वि. (तत्.)* कम आयु वाला (पुरूष, स्त्री या कोई भी अन्य प्राणी) **विधि.** जो कानून की दृष्टि में वयस्क न माना जाए। minor **पर्या.** नाबालिग। **दे.** वयस्क।

अल्पविराम *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ बहुत थोड़े समय के लिए रुकना। **व्या.** एक लेखन में अंकित विराम-चिह्न जिसके अनुसार वाचन करते समय बहुत थोड़े समय के लिए रुकने का संकेत होता है। इसका चिह्न (,) है। coma *तु.* अर्धविराम, पूर्ण विराम।

अल्पसंख्यक *वि. पुं. (तत्.)* शा.अर्थ कम संख्या वाला। (वह वर्ग) जिसके सदस्यों की संख्या तुलनात्मक दृष्टि से उसी क्षेत्र के अन्य समाज समाजों में कम हो। minority **विलो.** बहुसंख्यक।

अल्पायु [अल्प+आयु] *वि.(तत्.)* कम आयु वाला, कम उम्र पाप्त (व्यक्ति) यानी जो अभी घरबार, व्यापार-धंधा आदि का काम संभालने के लायक न हुआ माना गया हो। **पर्या.** अल्पवय (व्यक्ति) minor; young **तु.** वयस्क।

अल्पाहार [अल्प+आहार] *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ कम मात्रा में किया गया भोजन। **पर्या.** मितहार। सा.अर्थ दोपहर या सांध्य भोजन (मुख्य भोजन) को छोडक़र प्रात:काल या अपराह्न में ली गई खाद्य सामग्री। **पर्या.** नाश्ता, जलपान, कलेवा।

अल्पाहारी [अल्प+आहारी] *वि. (तत्.)* 1. अल्प या थोड़ा भोजन करने वाला। 2. जलपान/नाश्ता/कलेवा (अल्पाहार) करने वाला।

अल्पाहारी *वि.(तत्.)* अल्पाहारिन। जिसका आहार कम मात्रा में यानी बहुत ही नियंत्रित हो। **पर्या.** मिताहारी।

अल्लाह/अल्ला [मुस्लिम उपासना- पद्धति के अनुसार] *पुं. (अर.)* सर्वशक्तिमान परमात्मा, ईश्वर। **पर्या.** खुदा।

अल्हड़ *वि. (तद् अप.* < अल्लड़ < प्रा. अल्ल < तत् आर्द्र) व्यु.अर्थ सुकुमार, अप्रौढ़। सा.अर्थ 1. बालोचित सरलता के साथ मस्त और लापरवाह। 2. जो व्यावहारिक बुद्धि के उपयोग में दक्ष न हो। प्राणि.अ.।

अल्हड़पन *(भाव.) पुं.* अल्हड़ स्वभाव, भोलापन और लापरवाही। **दे.** अल्हड़।

अवकाश *पु. (तत्.)* 1. खाली स्थान **जैसे**: आकाश, अंतरिक्ष। 2. खाली समय, जिस समय में काम न हो। 3. सेवा-कार्य से निवृत्त। **उदा.** मैं आज अवकाश पर हूँ। **पर्या.** छुट्टी। **उदा.** मेरे पिताजी तीस वर्ष के सरकारी सेवा-कार्य के बाद आज अवकाश प्राप्त कर रहे हैं।

अवकाशग्रहण *पुं. (तत्.)* किसी कार्य या पद से अलग हो जाना, सेवामुक्त हो जाना। retirement

अवकाशप्राप्त *वि.(तत्.)* **प्रशा.** जिसने अवकाश प्राप्त कर लिया हो; जो अपने सेवाकार्य से निवृत्त हो चुका हो। retired

अवगत *वि.(तत्.)* ज्ञात, जाना हुआ, मालूम। **उदा.** आप इस बात से अवगत है कि.....।

अवगुण [अव=बुरा+गु] *पुं. (तत्.)* किसी व्यक्ति की नकारात्मक विशेषता (जिसे सामाजिक मापदंड पर ठीक नहीं माना जा सकता) **पर्या.** बुराई, दुर्गुण, दोष, ऐब। **विलो.** गुण।

अवचूषण [अव+चूषण] *पुं.(तत्)* किसी वस्तु या तरल पदार्थ को अपने में चूस/सोख लेना। **पर्या.** अवशोषण। absorption

अवचेतन [अव+चेतना] *पूं. (तत्.)* **मनो.** चेतन मन और अचेतन मन के बीच की स्थिति। **जैसे:** स्वप्नावस्था। **उदा.** मेरा अवचेतन मन कुछ नहीं अनुभव कर सका। sub-conscious

अवचेतना *स्त्री.* चेतना की वह सुप्त अवस्था जिसमें किसी वस्तु का स्पष्ट ज्ञान नहीं होता। अर्धचेतना। **जैसे**: वह अवचेतना में किसी को सही पहचान नहीं सका।

अवज्ञा *स्त्री.(तत्.)* जो आज्ञा मानी जानी चाहिए उसकी की गई अवहेलना; आज्ञा का अपालन; बात न मानने का भाव। disobedience

अवतरण *पुं. (तत्.)* 1. आकाश से जमीन पर उतरना। **जैसे:** वायुयान का अवतरण। landing 2. अवतार लेना। incarnation

अवतरित *वि. (तत्.)* जिसने अवतार लिया हो, जो ऊपर से नीचे आया हो। discendant

अवतल *वि. (तत्.)* शा.अर्थ किसी भी गोलाकार या खोखली संरचना की अंदर की ओर धंसी हुई सतह; बीच में दबा हुआ वक्रपृष्ठ। **जैसे**: अवतल लैंस। *तु.*-उत्तल। concave

अवतार *पुं. (तत्.)* हिंदू पुराणों के अनुसार भगवान का मनुष्य रूप में लिया हुआ जन्म।

अवदात *(अव-दात) वि.(तत्*) 1. जो अत्यंत साफ-सुथरा व उज्ज्वल हो, स्वच्छ। 2. शुभ्र, सफेद। **जैसे**: मोती अवदात सदृश दशन तुम्हारे। 3. पवित्र, शुद्ध।

अवदान *पुं. (तत्.)* 'योगदान' के अर्थ में आजकल बहुधा प्रयुक्त शब्द जिसका प्राचीन अर्थ 'कीर्तिकर' या 'शौर्यसंपन्न' था। contribution

अवदाब *[तद्<अवदमन] पुं.* पृथ्वी पर पड़ने वाले वायुदाब का प्राकृतिक कारणों से कम हो जाना। **टि.** वायुदाब की कमी के कारण कई बार चक्रवात या भारी वर्षा आदि की संभावना हो जाती है। depression

अवध *(प्रांत) पुं. [तद् < अयोध्या]* मुगल शासन के समय आज के उत्तर प्रदेश के लखनऊ-फैजाबाद के आसपास का क्षेत्र।

अवधान *पुं. (तत्.)* किसी विषय में मन की एकाग्रता; एकाग्र या सावधान होने की अवस्था या भाव।

अवधारण *पुं. (तत्.)* 1. किसी वाद या मामले का विधिक दृष्टि से निस्तारण। 2. कर आदि की मात्रा का निश्चय। determination 2. (शब्द विशेष) पर डाला गया ज़ोर या दिया गया बल। **पर्या.** बलाघात स्ट्रेस

अवधारणा *स्त्री.(तत्.)* किसी भी विषय पर अच्छी तरह से विचार करने के उपरांत उसके बारे में प्रस्तुत सुनिश्चित कथन। **पर्या.** संकल्पना। concept

अवधि *स्त्री.(तत्.)* 1. एक तिथि से दूसरी नियत तिथि तक का समय। period 2. काम पूरा करने के लिए तय किया हुआ समय। **पर्या.** मियाद् limitation, limit 3. सीमा, हद।) **उदा.** राम को चौदह वर्ष की अवधि के लिए वनवास दिया गया था। *वि. [देशज. <अवध< अयोध्या]* 1. अवध से

संबंधित। 2. अवध प्रदेश का। 3. अवध की बोली। (**उदा.** तुलसीदास ने रामचरित मानस की रचना अवधी में की।)

अवन *पुं (अर.)* 1. ईंट, पत्थर, लोहा आदि का बना तंदूर जो रोटी सेंकने या भोजन बनाने का विशेष उपकरण या साधन है। 2. चूल्हा, अंगीठी। **जैसे**: अवन में सिकी रोटी स्वादिष्ट होती है। 3. बिजली की शक्ति से गर्मी देने वाला कृत्रिम चूल्हा। oven **तुल.** आवाँ।

अवनति [अव+नीति] *स्त्री.(तत्.)* शा.अर्थ नीचे की ओर झुकाव। 1. आगे बढ़ने के क्रम में ऊपर की ओर न जाकर नीचे की ओर चले आना, 2. गुणवत्ता की दृष्टि से बढ़ोतरी की जगह घटियापन आ जाना। **उदा.** नैतिकता की दृष्टि से हमारा समाज अवनति की दिशा में अग्रसर है। **पर्या.** अध:पतन। **विलो.** उन्नति।

अवमूल्यन *पुं (तत्.)* (तुलनात्मक दृष्टि से) मूल्य में गिरावट या कमी आना, मूल्य का घटना। **पर्या.**-गिरावट। devaluation

अवमूल्यित *वि. (तत्.)* जिसका अवमूल्यन हो गया हो; जिसके मूल्य में गिरावट आई हो। **दे.** अवमूल्यन।

अवयव *पुं. (तत्.)* किसी आकृति का कोई अंग; किसी समुच्चय का कोई सदस्य; शरीर का कोई भाग।

अवयस्क [अ+वयस्क] *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ-व्यक्ति (पुरुष या स्त्री) जो वयस्क न हुआ हो; जिसने वयस्क होने के लिए निर्धारित आयु प्राप्त न की हो। **तु.** वयस्क।

अवरोध *पुं. (तत्.)* जाने-आने, करने आदि पर लगा/लगाया हुआ नियंत्रण। obstruction; restraint 2. कार्य-साधन में आने वाली बाधा। intererruption, hindrance **पर्या.** रुकावट।

अवरोधक/अवरोधी *वि.(तत्.)* अवरोध या रुकावट उत्पन्न करने वाला।

अवरोधन *पुं. (तत्.)* रोकने या बाधा डालने की क्रिया या भाव।

अवरोह *[अव+रोह < रोहन] पुं. (तत्.)* ऊपर से नीचे आना, उतार की ओर चलना **विलो.** आरोह।

अवलंब *पुं.(तत्.)* आश्रय, सहारा।

अवलंबन *पुं. (तत्.)* आश्रय/सहारा लेने का सूचक भाव।

अवलंबित *वि.(तत्.)* 1. किसी सहारे से लटका हुआ (या टिका हुआ)। **पर्या.** आश्रित। 2. जो किसी अन्य आश्रित पर आधारित हो। dependent **टि.** अवलंबित में 'आश्रय' ऊपर होता है जिसके सहारे आश्रित वस्तु लटकी होती है, जबकि 'आधार' नीचे होता है और उस पर 'आधारित वस्तु' ऊपर की ओर स्थित होती है।

अवलंबित *वि.(तत्.)* जो किसी का सहारा/आश्रय लिए हो; जो किसी के सहारे (ऊपर की ओर या नीचे की ओर) टिका हो।

अवलरवादिता *स्त्री.(सं.)* [भाव.] उपयुक्त अवसर का भरपूर लाभ लेना।

अवलि/अवली *(तद्<आवलि) स्त्री.* पंक्ति, श्रेणी, कतार। **उदा.** दीपावली (दीप+अवली), पाठावली [पाठ+अवली]

अवलोकन *पुं. (तत्.)* 1. देखना, 2. अच्छी तरह जांचपूर्वक देखना। perusal **उदा.** 1. कृपया अपने पूर्व-पत्र का अवलोकन करें। 2. मसौदा/प्रारूप/अवलोकनार्थ।

अवशिष्ट *वि.(तत्.)* जो बच गया या छूट गया हो, बाकी बना हुआ। (व्यर्थ-पदार्थ या अंश)

अवशेष *(पुं. (तत्.)* बची हुई वस्तु, सामग्री आदि। इति., पुरा. प्राचीन सभ्यता के बचे रह गए अंश (जो तत्कालीन ऐतिहासिक महत्व को प्रकट करें) **जैसे:** सिंधु सभ्यता के ध्वंसावशेष।

अवशोषण *पुं. (तत्.)* रसा.,भौ. किसी वस्तु द्वारा अन्य वस्तु को (जैसे-द्रव्य को, ऊर्जा को) इस प्रकार सोख लेना कि वह सोखी हुई (अवशोषित) वस्तु सोखनेवाली (अवशोषक) वस्तु में ही समाविष्ट हो जाए। 2. **वाणि.** खर्च की किसी मद या वस्तु की कीमत में संभावित वृद्धि को ध्यान में रखते हुए उस वस्तु की कीमत न बढ़ाकर लाभ की मात्रा में उतनी ही कमी कर लेना। absorption **तु.** शोषण।

अवशोषित *सक.(तत्.)* जिसका अवशोषण किया गया हो। **दे.** अवशोषण। *तु.* शोषित।

अवश्यंभावी *वि.(तत्.)* जो अवश्य ही घटित होने वाला हो; जिसके होने में कोई संदेह न हो; जिसे

रोकना किसी के बस में न हो। **पर्या.** अपरिहा., भवितव्य, अनिवार्य।

अवश्य *क्रि.वि. (तत्.)* निश्चित रूप से, जरूर, निस्संदेह। *वि.(तत्.)* व्यु.अर्थ जो वश में न हो सके। सा.अर्थ जरूरी, निश्चित।

अवसंरचना *स्त्री.(तत्.)* किसी समाज अथवा किसी भी प्रकार की संरचना के लिए आधारभूत आवश्यकताएँ। **उदा.** नगर-निर्माण के लिए सड़कें, पुल, जलव्यवस्था, जलनिकासी, बाज़ार इत्यादि। **पर्या.** आधारभूत संरचना/ढाँचा।

अवसर *पुं. (तत्.)* मौका, सुयोग, समय, काल। 1. किसी काम या घटना के घटित होने का उल्लेखनीय समय। occasion 2. किसी काम या घटना के घटित होने का अनुकूल समय। opportunity **उदा.** स्वर्ण जयंती के अवसर पर आपने मुझे बोलने का जो अवसर दिया उसके लिए धन्यवाद। 1. अवसर occasion 2. अवसर opportunity **पर्या.** मौका, समय।

अवसरवाद/अवसरवादी पुं (सं.) सुअवसर से लाभ।

अवसरवादी *वि.(सं.)* किसी दृढ़ सिद्धांत या नीति पर स्थिर न रहकर अवसर के अनुसार अवसर का उपयोग करना।

अवसाद *पुं. (तत्.)* 1. शिथिलता, उदासी, थकान। 2. नाश, क्षय, अंत। 3. द्रवयुक्त मिश्रण का वह भाग जो नीचे तली में बैठ जाए। **पर्या.** तलछँट। sendiment

अवसादी शैल ***भू.वि.*** वर्षा, तूफान, नदी का प्रवाह आदि प्राकृतिक कारणों से चट्टानों आदि में हुई क्षति, टूट-फूट या घिसावट से होने वाले अवसादों के किसी दूसरे स्थान पर इकट्ठा होने और उन्हीं से लाखों-करोड़ों वर्षों के बाद बनने वाली चट्टानें। senedimentry rocks

अवसान *पुं. (तत्.)* समाप्ति, अंत end, termination **जैसे:** दिवस का अवसान समीप था।..........प्रिय प्रवास (हरिऔध)

अवस्था *स्त्री.(तत्.)* 1. किसी विषय, बात या घटना की कोई विशेष स्थिति, हालत, दशा। **उदा.** दारिद्र्यावस्था में भी उसने कभी हाथ नहीं पसारे। 2. समय, काल। **उदा.** मरणावस्था में भी वह बराबर सचेत रहा। 3. आयु, उम्र। **उदा.** वृद्धावस्था तक पहुँचते-पहुँचते उसकी सारी जमा-पूँजी समाप्त हो चुकी थी।

अवस्थान *पुं. (तत्.)* वह स्थान जहाँ कोई भवन, स्मारक, वस्तु आदि स्थित हो। location, site

अवस्थित *वि.(तत्.)* 1. उपस्थित, मौजूद। 2. स्थित, ठहरा हुआ।

अवस्थिति *स्त्री.(तत्.)* अवस्थित होने का भाव। **दे.** अवस्थित।

अवहेलना *स्त्री. (तत्.)* 1. जान-बूझकर किया गया किसी का तिरस्कार, अवज्ञा; किसी काम पर उचित या आवश्यक ध्यान न दिया जाना।

अवांछनीय *वि.(तत्.)* जिसकी इच्छा किया जाना आवश्यक न हो।

अवांछनीयता *स्त्री.(तत्.)* किसी बात की इच्छा न किए जाने का भाव।

अवांछित *वि.(तत्)* 1. जिसकी इच्छा न की कई हो, अनचाहा।, 2. अनुचित, बुरा।

अवाक् *वि.(तत्.)* व्यु.अर्थ बिना वाणी के। सा.अर्थ ऐसी स्थिति वाला (व्यक्ति) जब मुँह से शब्द न निकले।

अवायवीय श्वसन *पुं. (तत्.)* श्वसन का वह प्रकार जिसमें जीव उन अभिक्रियाओं से ऊर्जा प्राप्त करता है, जिनमें मुक्त ऑक्सीजन का संयोग नहीं होता, **जैसे**: आंतों में पाए जाने वाले फीता कृमियों की श्वसन क्रिया। anarobic respiration **पर्या.** अवायु श्वसन, अनॉक्सीय श्वसन, आयोग-अवायु-श्वसन, अनॉक्सीय श्वसन।

अवायु श्वसन *पुं. (तत्.)* **दे.** अवायवीय श्वसन।

अविकल *वि.(तत्.)* 1. बिना परिवर्तन किए, ज्यों का त्यों। 2. ऐसा (अनुवाद) जिससे शब्दों या भावों में कोई अंतर न आए। 3. (**उदा.** के रूप में) ज्यों-का-त्यों (अवतरित कथन आदि।), शब्दश: verbatim

अविकारी *वि.(तत्.)* प्रयोग के समय जिसमें किसी प्रकार का विकार या परिवर्तन न होता हो। **पर्या.** **व्या.** *अव्य.* (पुं.)। **विलो.** विकारी। **उदा.** यथा, बहुधा, अत: आदि।

अविचलित *वि. (तत्.)* शा.अर्थ जो अपने स्थान से डिगे नहीं, अडिग; स्थिर, अचल। प्रतिकूल परिस्थितियाँ उत्पन्न होने पर भी जो अपने

कथन या सिद्धांत या प्रतिज्ञा आदि पर दृढ़ता से टिका रहे। **विलो.** विचलित।

अविनाशी *वि. (तत्.)* जिसका विनाश न हो। **पर्या**. अक्षय, नित्य। **विलो.** विनाशवान।

अविभाज्य *वि. (तत्.)* जिसका विभाजन संभव न हो, जो बांटा न जा सके। **विलो.** विभाजनीय।

अविरल [अ+विरल] *वि.(तत्.)* 1. लगातार, बिना रुके। 2. सघन। **विलो.** विरल।

अविलंब *क्रि.वि. (तत्.)* बिना देर किए, बिना समय गंवाए। **पर्या.** तत्काल, तुरंत, फौरन।

अविवाहित *वि. (तत्.)* जिसका विवाह न हुआ हो। **पर्या.** कुआंरा/री, क्वांरा/री, कुमार/कुमारी। **विलो.** विवाहित।

अविवेक *पुं. (तत्.)* सही-गलत, भला-बुरा आदि में भेद करने की शक्ति का अभाव।

अविवेकी *(वि.)* जो विवेकपूर्वक काम/व्यवहार न करता हो। **दे.** अविवेक। **विलो.** विवेक।

अविश्वसनीय *वि. (तत्.)* 1. विश्वास न करने योग्य (कोई बात या व्यवहार) परि.अर्थ 2. व्यक्ति जो विश्वास करने की पात्रता न रखता हो। **विलो.** विश्वसनीय।

अविश्वास [अ+विश्वास] *पुं. (तत्.)* विश्वास की कमी, विश्वास का अभाव।

अविश्वास-प्रस्ताव *पुं. (तत्.) विधि-* वर्तमान सरकार के प्रति अविश्वास व्यक्त करने के लिए लोकसभा, विधानसभा इत्यादि विधानसदनों में किसी सदस्य के द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव जिसके बहुमत से पारित हो जाने पर सरकार को त्यागपत्र दे देना पड़ता है। no-confidence motion

अविस्मरणीय [अ+विस्मरणीय] *वि.(तत्.)* जो भुला देने के योग्य न हो; जिसे भुलाया न जा सके।

अवेस्ता *स्त्री. (पार.)* महात्मा जरथुस्त्र की वाणियों का वह संग्रह जो पारसियों के धर्मग्रंथ के नाम से प्रसिद्ध है। पूरा नाम-'जिंद अवेस्ता'।

अवैज्ञानिक [अ+विज्ञान+इक] *वि.(तत्.)* जो विज्ञान के नियमों के अनुसार न हो; जिसे युक्तिपूर्वक सिद्ध न किया जा सके।

अवैध *वि. (तत्.)* (i) विधि (कानून, नियम आदि) के विरूद्ध; (ii) विधि द्वारा निषिद्ध या अननुमत। **जैसे**: अवैध व्यापार, अवैध संतान। illegal, illicit **विलो.** वैध।

अवैधानिक *वि.(तत्.)* जो विधान या विधि सम्मत न हो। **पर्या.** अवैध

अव्यक्त *वि. (तत्.)* 1. जो प्रकट या प्रत्यक्ष न हो। अप्रत्यक्ष। 2. जिसे माना न जा सके, अज्ञात। 3. **गणि.** बीजगणित में वह राशि जिसका मान ज्ञात न हो। 4. दर्शन, परब्रह्म परमात्मा।

अव्यय *पुं. (तत्)* शा.अर्थ वि. जिसका व्यय न हो यानी जिसमें परिवर्तन न हो; अपरिवर्तनीय, अपरिवर्तनशील, जो विकारशून्य रहे, अविनाशी। *पुं. व्या.* वे शब्द जो सदा एक रूप रहें अर्थात जिनमें रूपात्मक परिवर्तन हो। **जैसे:** हाँ, नहीं, तथा, और, या, अरे!, ही, भी आदि।

अव्यवस्था *स्त्री.(तत्.)* 1. शांति और सुप्रंबध का अभाव। lawlessness 2. क्रम या पूर्वापरता का अभाव। disorder

अव्यवस्थित *वि. (तत्.)* 1. जो व्यवस्था के अनुसार न हो। 2. जो उचित क्रमानुसार न हो। 3. जिसमें कुछ गड़बड़ी हो या नियमों का उल्लंघन किया गया हो। **विलो.** व्यवस्थित।

अव्यावहारिक *वि. (तत्.)* व्यवहार के अयोग्य, जो व्यवहार में आने के लायक न हो; जो प्रयोग (व्यवहार) की दृष्टि से वर्तमान में उपयुक्त न हो। **विलो.** व्यावहारिक।

अव्वल *वि. (अर.)* प्रथम, सर्वश्रेष्ठ। **उदा.** मेरा दोस्त इम्तिहान में अव्वल रहा।

अशक्त *वि. (तत्.)* जो शक्ति से रहित हो, शक्तिहीन। **पर्या.** निर्बल।

अशांत *वि. (तत्.)* शा.अर्थ 1. शांतिरहित, 2. उदास, 3. बेचैन, 4. उद्विग्न। **विलो** शांत।

अशिष्ट *वि. (तत्.)* शिष्टतारहित, शिष्ट व्यवहारहीन। **विलो.** शिष्ट।

अशुद् ध *वि.(तत्.)* शुद्धता से रहित, जो शुद् ध न हो, गलत। **विलो.** शुद्ध, सही।

अशुभ *पुं. (तत्.)* सा.अर्थ जो शुभ न हो। **विलो.** शुभ।

अशोभनीय [अ+शोभन+ईय] *वि.(तत्.)* जो शोभा देने योग्य न हो। **पर्या.** अनुचित, भद्दा। **उदा.** अपशब्दों का प्रयोग करना आपके अशोभनीय व्यवहार का सूचक है।

अश्रु *पुं. बहु.(तत्.)* (अश्रुस्रावी) ग्रंथियों से बहने वाली (स्रवित) साफ़ और नमकीन स्वाद वाली तरल की बूँदे/धारा जो शोकाकुल या

अतिप्रसन्नता की स्थिति में भी) व्यक्ति की आँखों को नम कर देती है। **पर्या.** आँसू।

अश्रु ग्रंथियाँ *स्त्री. बहु. (तत्.)* आँख के कोने पर स्थित ग्रंथियाँ जिनसे आँसू निकलते हैं। यह स्राव आँखों को नम तथा साफ़ रखता है। lachrymal glands

अश्रुत [अ+श्रुत=सुना हुआ/हुई] *वि.(तत्.)* (कथन या वचन) जो सुना न गया हो; (बात) जो सुनी न गई हो।

अश्रुतपूर्व *वि. (तत्.)* (कथन या बात) जो पहले कभी सुना न गया हो/सुनी न गई हो।

अश्रुधार/धारा *स्त्री.(तत्.)* आँसुओं की लगातार बहने वाली धारा।

अश्रुपात *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ आँसूओं का गिरना, आँसूओं का टपकना/बहना। सा.अर्थ रोना।

अश्लील *वि.(तत्.)* 1. नैतिक मर्यादा का उल्लंघन करने वाला (व्यवहार, शब्द, चित्र आदि) **जैसे**: अश्लील चित्र, अश्लील शब्द, भद्दा, लज्जाजनक।, 2. ऐसा दृश्य या वाच्य सामग्री जिसे (स्थानीय) समाज अच्छा न माने। अश्लील होने का भाव।

अश्लीलता *स्त्री. (तत्.)* 1. अश्लील होने की अवस्था या गुण या भाव। अश्लीलपन। 2. नैतिक आदर्शों व सभ्यता के विपरीत आचरण। 3. भौंडापन, फूहड़पन, ग्राम्यता, गाली का प्रयोग। **काव्य** 1. अश्लील शब्दों का प्रयोग। 2. अश्लील वर्णन, चित्रण या अभिनय। **उदा.** हमें व्यावहारिक व साहित्यिक अश्लीलता से बचना चाहिए।

अश्व *पुं. (तत्.)* सा.अर्थ सवारी योग्य वह पशु जो अपनी तीव्र गति के कारण कभी युद्ध आदि में प्रयोग किया जाता था। **पर्या.** घोड़ा, तुरंग, हय। **प्राणि**. बिना फटे खुर वाला, लहरदार अयाल और पूंछ वाला, स्तनपायी तथा शाकाहारी, चौपाया (चार पैरों वाला पशु)।

अश्वत्थ *पुं. (तत्.)* पीपल का वृक्ष, पीपल।

अश्वशक्ति *स्त्री.(तत्.)* शा.अर्थ घोड़े की ताकत। **भौ.** शक्ति का मात्रक; प्रतीक। यह शक्ति 745.7 वाट के बराबर होती है। इस मात्रक का प्रयोग बिजली के मीटर या इंजन की शक्ति को व्यक्त करने के लिए होता (था) है। horse power **टि.** आजकल इसके स्थान पर 'वॉट, मात्रक का प्रयोग होता है।

अष्टम *वि. (तत्.)* आठवाँ (क्रमवाचक संख्या) **टि.** 'अष्टम' नहीं।

अष्टांग [अष्ट+अंग] *वि. (तत्.)* आठ अंगों वाला। **जैसे:** अष्टांग योग।

असंख्य [अ+संख्य] *वि.* जिसकी संख्या न बताई जा सके; जिसकी गणना न की जा सके, अगणतीय। **पर्या.** 1. अगणित, 2. बेशुमार, 3. बहुत अधिक।

असंगत *वि. (तत्.)* 1. जो मूल या आदर्श से मेल न खाता हो। inconsistant 2. जो प्रसंग के अनुरूप न हो। irrelevant **उदा.** इस विषय में तुम्हारी असंगत बातें मेरी समझ में तो नहीं आई।

असंतत [अ+संतत] *वि.(तत्.)* जो लगातार न हो यानी क्रम की दृष्टि से अलग-अलग दिखाई पड़े।

असंतुलन [अ+संतुलन] *पुं. (तत्)* संतुलन का अभाव अर्थात ऐसी स्थिति जिसमें भार, बल, रूप, गुण आदि बराबर न हो। **विलो.** संतुलन।

असंतुष्ट *वि. (तत्)* शा.अर्थ संतोष से रहित। सा.अर्थ 1. जिसे संतोष न हुआ हो, 2. जो किसी अन्य के कार्य से नाराज़ हो, अप्रसन्न। **विलो.** संतुष्ट।

असंतोष [अ+संतोष] *पुं. (तत्.)* चाहे कितना ही मिल जाए पर उससे संतुष्ट/प्रसन्न या तृप्त न होने का भाव या स्थिति। **विलो.** संतोष।

असंदिग्ध *वि. (तत्.)* जो संदिग्ध न हो यानी जिसमें संदेह या शंका की कोई जगह/गुंजाइश न हो। संदेह रहित; निश्चित।

असंबद्ध *वि. (तत्.)* 1. जो विषय या प्रसंग से मेल न खाता हो। 2. जो किसी से संबंध या मेल न रखे। 3. दो या अधिक बातें जो परस्पर संबंधित न हो। **विलो.** संबद्ध/संबंधित।

असंभव [अ+संभव] *वि. (तत्.)* जो संभव न हो यानी जो हो न सके। पर्या.-नामुमकिन। impossible **विलो.** संभव।

असंसदीय [अ+संसद+ईय] *वि. (तत्.)* जो संसद की मर्यादा के अनुसार न हो। ला.अर्थ अभद्र। **जैसे**: असंसदीय भाषा। **उदा.** आप यहाँ असंसदीय (अभद्र) भाषा का प्रयोग नहीं कर सकते। unparliament

असंस्कृत *वि. (तत्.)* शा.अर्थ संस्कारहीन। परि.अर्थ 1. जिसका संस्कार न किया गया हो; संस्कारहीन; अपरिमार्जित, 2. अपरिमार्जित।

असफल *वि. (तत्.)* 1. विफल (वह व्यक्ति) जिसने कुछ प्राप्त करने का प्रयत्न तो किया हो पर उसे उसमें सफलता न मिली हो। fail **विलो.** सफल।

असभ्य *वि. (तत्.)* 1. जो सभ्य न हो, जिसका आचरण समाज के नैतिक नियमों के प्रतिकूल हो, अनुकूल न हो। **विलो.** सभ्य।

असमंजन [अ+समंजन] *पुं. (तत्.)* समंजन यानी तालमेल की कमी/का अभाव। lack of co-ordination

असमंजस [अ+समंजस] *स्त्री. (तत्.)* ऐसी स्थिति जब निर्णय लेना कठिन हो जाए। suspense **पर्या.** दुविधा, आगा-पीछा। **उदा.** मैं बड़ी असमंजस की स्थिति में हूँ।

असमय [अ+समय] *1. पुं. (तत्.)* बुरा समय, विपत्ति का समय। 2. *क्रि.वि. (तत्)* अनुपयुक्त समय पर; बिना पूर्वसूचना के, अचानक। **विलो.** यथासमय।

असमर्थ [अ+समर्थ] *वि. (तत्.)* जिसमें सामर्थ्य न हो। **पर्या.**-दुर्बल, अशक्त, अयोग्य। **विलो.** समर्थ।

असमान *वि. (तत्.)* दो या दो से अधिक वस्तुओं या बातों की तुलना करने पर उनमें जो-जो गुण, आकार आदि परस्पर समान न दिखाई पड़ें।, जो समान न हो। **पर्या.** विषम।

असर *पुं. (अर.)* किसी घटना, कार्य, औषधि इत्यादि के कारण दिखलाई पड़ने वाला या अनुभव किया जाने वाला परिणाम। **पर्या.** प्रभाव।

असरदार *वि. (अर.)* जिसका असर हो या दिखाई पड़े। **पर्या.** प्रभावशाली।

असलियत [असल+इयत] *स्त्री. (अर.)* असल होने का भाव। **पर्या.** वास्तविकता। **दे.** असल।

असहज *वि. (तत्.)* जो सहज या स्वाभाविक न हो। पर्या. अस्वाभाविक।

असहजता *स्त्री. (तत्.)* असहज होने का भाव, कठिनाई। **पर्या.** अस्वाभाविकता। **दे.** असहज।

असहनीय *वि. (तत्.)* 1. जो सहन करने योग्य न हो, जिसे (तात्कालिक परिस्थितियों में) सहन न किया जा सके। **पर्या.** असह्य आजकल असहनीय/असह्य गर्मी पड़ रही है।

असहमत *वि. (तत्.)* (व्यक्ति) जो किसी काम, कथन अथवा निर्णय से सहमत न हो यानी उसके बारे में बोलकर या लिखकर विरोध। **उदा.** मैं आपके कथन से सहमत नहीं हूँ।

असहमति *स्त्री. (तत्)* किसी कृत्य अथवा सिफारिश का मौखिक या लिखित विरोध। **उदा.** बैठक में हुए निर्णय के बारे में एक सदस्य ने अपनी असहमति प्रकट की। **पर्या.** विमति discent **विलो.** सहमति।

असहय [अ+सहय] *वि. (तत्.)* जिसे सहन न किया जा सके, न सहने लायक; जिसे बर्दाश्त न किया जा सके। **जैसे:** असह्य वेदना/कष्ट।

असहयोग [अ+सहयोग] *पुं. (तत्.)* सहयोग न करने का भाव; साथ न देना। **विलो.** सहयोग, **दे.** सहयोग।

असहयोग आंदोलन *पुं. (तत्.)* सन् 1919-20 ई. में महात्मा गांधी ने प्रारंभ किया था। महात्मा गांधी द्वारा 1919-20 ई. में आरंभ किया गया आंदोलन जिसमें भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने भारत को 'डोमिनियन स्टेटस' देने की मांग की थी।

असहाय [अ+सहाय] *वि. (तत्.)* जिसका कोई सहायक या मदद करने वाला न हो; जिसका संगी-साथी न हो।

असहिष्णु *वि. (तत्.)* जो किसी भी प्रकार की प्रतिकूल बात या परिस्थिति को सहन न करे। **पर्या.** असहनशील। **विलो.** सहिष्णु।

असह्य [अ+सह्य] *वि. (तत्.)* जिसे सहन न किया जा सके, न सहने लायक; जिसे बर्दाश्त न किया जा सके। **जैसे:** असह्य वेदना/कष्ट।

असाढ़ *पुं. [तद्.* < आषाढ़] जेठ के बाद का महीना, आषाढ।

असाधारण [अ+साधारण] *वि. (तत्.)* 1. जो सामान्यत: नहीं होता। **पर्या.** विलक्षण। **उदा.** तीन आँख वाला बच्चा होना एक असाधारण घटना है। 2. सामान्य मानवशक्ति से परे। **पर्या.** विलक्षण, अतिमानवीय। **उदा.** आइंस्टाइन असाधारण प्रतिभा के धनी थे। **तुल**. असामान्य।

असाध्य *वि. (तत्.)* 1. जो साधा न जा सके; अति कठिन, लाइलाज (रोग) **जैसे**: असाध्य रोग। **विलो.** साध्य।

असामर्थ्य *स्त्री. (तत्.)* असमर्थता, सामर्थ्य से बाहर, सामर्थ्यहीनता, अक्षमता, निर्बलता। **विलो.** सामर्थ्य।

असामाजिक तत्त्व *(पदबंध) पुं. (तत्.)* समाज विरोधी, अनैतिक कार्यों **जैसे**: निर्दोषों को सताना, नारी-उत्पीड़न, बलात्कार, लूटपाट, हिंसा, अपहरण, साम्प्रदायिक विद्वेष की भावना अदि में लिप्त रहने वाले लोग। **जैसे**: सरकार को असामाजिक तत्त्वों के विरुद्ध सख्त कार्यवाही करनी चाहिए।

असामान्य [अ+सामान्य] *वि. (तत्.)* जो सामान्य से कुछ कम या अधिक हो। abnormal *तुल.* असाधारण।

असामी *(अर. आसामी) (पुं.)* 1. संपन्न व्यक्ति, **जैसे:** मोटा आसामी। 2. वह जिससे किसी प्रकार का लेन-देन हो। 3. वह जिसने लगान पर जोतने के लिए जमींदार से खेत लिया हो। छोटा काश्तकार।

असार *वि. (तत्.)* जिस वस्तु, बात में कोई तत्त्व न हो। 1. सार रहित, 2. तुच्छ। **उदा.** इस असार संसार में कौन किसका है?

असावधान *वि. (तत्.)* 1. जो सावधान न हो, जो सावधानी न बरते, 2. बेखबर, 3. जो सजग चौकन्ना न हो। **विलो.** सावधान।

असीम [अ+सीमा] *वि. (तत्.)* 1. सीमारहित, जिसकी सीमा सुनिश्चित या ज्ञात न हो; बहुत अधिक। **पर्या.** अपार, अनंत। limit less 2. संपूर्ण, परम। absolute

असीमित *वि. (तत्.)* **दे.** असीम।

असुंदर *वि. (तत्.)* जो देखने, सुनने, व्यवहार में अच्छा न लगे। 1. जो सुंदर न हो, 2. भद्दा, 3. कुरूप। **विलो.** सुंदर।

असुर *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ जो सुर (देवता) न हो। सा. अर्थ दैत्य, निशाचर। demon **विलो.** सुर।

असुरक्षा/असुरक्षित [अ+सुरक्षित] *वि. (तत्.)* जो सुरक्षित न हो, जिसकी रक्षा भली-भांति न की गई हो या न की जा सके।

असुविधा *स्त्री. (तत्.)* 1. कठिनाई, अड़चन, सुभीता न हो, दिक्कत, तकलीफ। **उदा.** यदि आपको असुविधा न हो तो मेरा वह काम कर दें। **विलो.** सुविधा।

अस्त *वि. (तत्.)* समाप्त; अदृश्य। **जैसे**: सूर्यास्त, शुक्रास्त।

अस्तबल *पुं. (अर.)* घोड़े बाँधने का स्थान, घोड़ों के रखने की जगह। stable

अस्त-व्यस्त *वि. (तत्.)* 1. जो व्यवस्थित रूप से रखी हुई चीज बिखर गई हो। 2. जिन वस्तुओं के रखने का उचित क्रम न हो। 3. इधर-उधर बिखरा हुआ। बेतरतीब। **जैसे**: चोरों ने घर का सारा सामान अस्त-व्यस्त कर दिया था। **पर्या.** तितर-बितर, गड्ड-मड्ड, उल्टा-पुल्टा।

अस्त होना *(स.क्रि.)* किसी दिखाई पड़ने वाली (अस्तित्ववान) वस्तु का दिखाई न पड़ना या समाप्त होना। **जैसे**: सूर्य का अस्त होना। **उदा.** भारत में मुगलों/अंग्रेजों का शासन अस्त हो गया।

अस्तित्व *पुं. (तत्.)* (अस्ति (है)+त्व (भाववाचक प्रत्यय) 1. किसी वस्तु तत्व आदि की विद्यमानता, स्थिति, मौजूदगी। **जैसे**: आज श्रीकृष्ण की द्वारिका का अस्तित्व ही नहीं है। 2. प्रतिष्ठा की सत्ता। **जैसे**: विद्वत् समाज में उनका कोई अस्तित्व नहीं है।

अस्त्र-शस्त्र [अस्त्र+शस्त्र] *पुं. बहु. (तत्.)* अस्त्र और शस्त्र armaments अस्त्र फेंक कर चलाए जाने वाले हथियार। **जैसे**: तीर, तथा बंदूक की गोली, बम, प्रक्षेपास्त्र आदि। (वेपन) शस्त्र=हाथ में रखकर ही युद्ध किए जाने वाले हथियार। **जैसे**: तलवार, भाला आदि। arms

अस्थायी *वि. (तत्.)* जो सदा रहने वाला न हो, जो स्थायी न हो या जिसे काम चलाने के सीमित अवधि पर रखा गया हो। **जैसे**: अस्थायी। temporary **विलो.** स्थायी।

अस्थि *स्त्री. (तत्.)* प्राणि. दृढ़ संयोजी ऊतक जिससे कंकाल बनता है। यह कौलेजन रेशों का जाल होता है, जिसमें कैल्शियम फॉस्फेट आदि लवण होते हैं। **पर्या.** हड्डी।

अस्थि-पंजर *पुं. (तत्.)* हड्डियों का ढाँचा।

अस्थिर *वि. (तत्.)* 1. जो स्थिर न हो। **पर्या.** चंचल**,** चलायमान, अस्थायी। **जैसे**: वह अस्थिर चित्त वाला व्यक्ति। **विलो.** स्थिर।

अस्थिरता *स्त्री. (तत्.)* अस्थिर होने का भाव। **दे.** अस्थिर।

अस्थि-विसर्जन/अस्थि प्रवाह *पुं. (तत्.)* धर्म-मृतदेह (शव) का दाह-संस्कार करने के उपरांत अस्थि-खंडों (फूलों) (हड्डियों के बने अंशों) का

संचय कर उन्हें पवित्र नदी के जल में विसर्जित करने/बहाने की प्रथा।

अस्पताल *पुं.* *(हास्पिटल-अं.)* वह स्थान जहाँ रोग का निदान एवं चिकित्सा होती हो। **पर्या.** चिकित्सालय, औषधालय, दवाखाना।

अस्पष्ट *वि.* *(तत्.)* 1. जो स्पष्ट दिखाई न दे या समझने में न आए। 2. धुंधला, 3. संदिग्ध। **विलो.** स्पष्ट।

अस्पृश्यता (अ+स्पृश्यता) *वि.* *(तत्.)* शा.अर्थ अछूतपना, स्पर्श न करने की स्थिति या भाव। सा.अर्थ. हिंदू समाज में परंपरा से चली आ रही वह प्रथा जिसके कारण कुछ जातियाँ अस्पृश्य यानी अछूत समझी जाती थीं। (पर अब इस प्रथा का भारत के संविधान के अनुच्छेद 17 द्वारा अंत कर दिया गया है। **पर्या.** छुआछूत untouchability

अस्मिता [अस्मि=मैं हूँ+ता] *स्त्री.* *(तत्.)* प्राचीन अर्थ-स्वयं के गौरव की भावना, 'मैं हूँ' का भाव। अहंभाव। ईगोटिज़्म आधु.अर्थ व्यक्ति की विशिष्ट पहचान की सूचक लक्षणों, गुणधर्मों आदि की विशेषताएँ। identity

अस्वस्थ *वि.* *(तत्)* 1. जो स्वस्थ न हो। **पर्या.** रूग्ण, रोगी, बीमार। 2. जिसका चित्त स्थिर न हो। **पर्या.** अनमना, बेचैन।

अस्वाभाविक *वि.* *(तत्.)* जो स्वाभाविक न हो, स्वभाव के विरूद्ध बनावटी। **विलो.** स्वाभाविक।

अस्वीकार *पुं.* *(तत्.)* प्रार्थना, निवेदन, दान आदि को स्वीकार न किए जाने की स्थिति या भाव हो। **विलो.** स्वीकार।

अस्वीकृत *वि.* *(तत्.)* **दे.** अस्वीकार। **उदा.** तुम्हारा छुट्टी का आवेदन अस्वीकृत कर दिया गया है।

अस्वीकृति *स्त्री.* *(तत्.)* स्वीकार न कि जाने का भाव या स्थिति।

अस्सी *वि.* *[तद्* < अशीति] गिनती में सत्तर और दस। *पुं.* 80 की संख्या।

अस्सीवाँ *वि.* गिनती करते समय क्रमसंख्या में 80वें स्थान वाला।

अहं/अहम् *(सर्वनाम)* *(तत्.)* मैं 1. मैं या मैं के होने का भाव। अपने को ही महत्वपूर्ण मानने वाली व्यक्ति की पूर्व निशचित धारणा। ego *पुं* अभिमान, अहंकार, घमंड।

अहंकार *पुं.* *(तत्)* 'मैं' पन।) दूसरों की तुलना में अपने गुणों को लेकर मन में पैदा हुई श्रेष्ठता की भावना और उसका बखान या प्रकटीकरण। **पर्या.** मिथ्याभिमान, मिथ्यागर्व। (**टि.** इसे अवगुण माना जाता है।) *तु.* दर्प; गर्व, अभिमान।

अहमियत [अहम+इयत] *स्त्री.* *(अर.)* अहम होने या माने जाने का सूचक भाव। **पर्या.** खासियत, श्रेष्ठता, प्रमुखता, महत्व।

अहम् *वि.* *(अर.)* खास, मुख्य, महत्वपूर्ण। **उदा.** यह शब्द अरबी/फारसी/उर्दू मूल का है और संस्कृत के 'अहम्' से पूर्णतया भिन्न है। अत: 'अहम' और 'अहम्' में अर्थ-भेद बनाए रखना आवश्यक है।

अहर्निश [अहर्=दिन+निशा=रात] *क्रि.वि.* *(तत्.)* शा.अर्थ दिन-रात। सा.अर्थ-1. बिना रूके, 2. सदा।

अहस्तांतरणीय *[अ+हस्तांतरणीय]* *वि.* *(तत्.)* 1. ऐसी वस्तु जो दूसरे को अधिकार रूप से न दी जा सके। **जैसे:** रेलवे का आरक्षित टिकट अहस्तांतरणीय है।, 2. जो दूसरे से छीना या लिया न जा सके। Inalianable, non-transferable

अहाता *पुं.* *(अर.)* 1. किसी स्थान को सीमा में बाँधने के लिए बनाई गई चहारदीवारी। **पर्या.** हरबंदी। 2. ऐसी चहारदीवारी से घिरा हुआ क्षेत्र। **पर्या.** घेरा, बाड़ा।

अहिंसा *स्त्री.* *(तद्.)* शा.अर्थ हिंसा कार्य में प्रवृत्त न होने की स्थिति। दर्श, मन, वचन और कर्म से किसी का अहित चिंतन न करना। **विलो.** हिंसा।

अहित *पुं.* *(तत्.)* हित का अभाव, किसी व्यक्ति या वस्तु को हानि पहुँचाने की स्थिति। **पर्या.** अपकार। **विलो.** हित।

अहितकर *वि.* *(तत्.)* जिससे किसी व्यक्ति या वस्तु को हानि पहुँचे, जिससे किसी का हित न हो।

अहो (अव्य.) (तत्.) विस्मय, प्रशंसा, दु:ख आदि मनोभावों को प्रकट करने के लिए उच्चरित शब्द; संबोधन में भी प्रयुक्त।

अहोरात्र [अहन्+रात्र] *पुं.* *(तत्.)* दिन-रात। **दे.** अहर्निश'।

आ

आ पुं. देवनागरी वर्णमाला का दूसरा (स्वर) वर्ण और 'अ' का दीर्घ रूप।

आंकलन [आ+ कलन*] पुं. (तत्.)* 1. शा. अर्थ-ठीक मूल्य से गिनना। calculation 2. मूल्य, संख्या अथवा मात्रा के बारे में लगाया गया मोटा अनुमान। estimation

आंचलिक *[अंचल + इक] वि (तत्.)* किसी अंचल (क्षेत्र विशेष) की भाषा, संस्कृति आदि से संबंधित या समन्वित। **उदा.** फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यास आंचलिक उपन्यास की श्रेणी में आते हैं।

आंतर कर्ण *पुं. (तत्.)* कान के तीन भागों, बाहरी, मध्य एवं भीतरी में से अंतिम यानी भीतर वाला भाग जो तीन अर्धवृत्ताकार नलिका और कर्णावर्त Cochlea का बना होता है। **तु.** बाह्य कर्ण, मध्य कर्ण।

आंतरिक *[अंत:/अंतर] वि. (तत्.)* 1. भीतरी, अंदरूनी, 2. भीतरी भाग से संबंधित। **जैसे**: आंतरिक व्यवस्था, आंतरिक भू-भाग, 3. मन में विकसित होने वाला। **जैसे**: आंतरिक प्रेम।

आंतरिक निषेचन पुं. जीव. मादा के शरीर के अंदर होने वाला निषेचन internal fertilization **तु.** बाह्य निषेचन **दे.** निषेचन।

आंत्रज्वर *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ आँतों का बुखार **दे.** 'टाइफाइड'।

आंदोलन पुं. *(तत्.)* शा.अर्थ झूलना; हिलना-डुलना; कंपन, कँपकँपा। 1. राज. किसी उद्देश्य विशेष को ध्यान में रखते हुए किसी व्यक्ति विशेष द्वारा या उसके नेतृत्व में जनसमूह द्वारा अपनी माँगे मनवाने के लिए किया गया प्रदर्शन भले ही उसमें सफलता मिले या नहीं movement 2. **संगी.** तंतुवाद्यों को उँगली से बजाने पर उत्पन्न नादमय कंपन।

आंशिक (अंश*+इक) वि. (तत्.)* अंश-संबंधी, किसी एक भाग से संबंधित partial

आँक *पुं. [तद्. < अंक]* संख्या

आँकड़ा *पुं. [आँक < अंक < ड़ा] (तद्.)* 1. संख्या सूचक चिह्न, अंक, 2. धातु निर्मित किसी वस्तु के सिरे पर बना टेढ़ा या तिरछा काँटेनुमा हिस्सा।

आँकड़े *पुं. बहु.* 1. संख्याओं का समुच्चय, 2. गणित में-अक्षरों, संख्याओं, आकृतियों का समूह जिसे विश्लेषण के लिए प्रस्तुत किया गया हो अथवा 3. कम्प्यूटर में विश्लेषण के फलस्वरूप प्राप्त सूचना जो अंकों के रूप में होती है। data

आँकना स.कि *[तद्. < अंकन]* 1. संख्या सूचक चिह्न लगाना, 2. किसी वस्तु के मूल्य का अंकन करना या अनुमान लगाना। **पर्या.** कूतना। आज कल

आँख *[तद्.<अक्षि] (स्त्री.)* 1. मनुष्यों और पशुओं की वह इंद्रिय जिसके द्वारा उन्हें किसी वस्तु या व्यक्ति के बाह्य हाव-भाव तथा आकार-प्रकार का ज्ञान होता है। **पर्या.** नेत्र, नयन, लोचन 2. गन्ने (ईख) के दो पोरों के संधि स्थल पर (आँख जैसा) उभार जिससे अँखुआ फूटता है। **मुहा.** 1. आँख में खून उतर आना = अत्यंत क्रोधित होना। 2. आँख में गड़ना, खटकना, अच्छा न लगना। 3. आँख ऊपर न उठाना = अपने-आप को लज्जित महसूस करना। 4. आँख में चुभना = पसंद न करना। 5. आँखों में धूल झोंकना = अपना हित साधने के लिए दूसरे को धोखा देना। 6. आँख में पानी भरना = किसी भी बुरे काम के लिए लज्जित न होना। 7. आँखें फेर लेना = पहले की तरह लगाव महसूस न करना। 8. आँख लगना = झपकी लेना या थोडे समय के लिए नींद आ जाना। 9. आँखे लड़ाना = स्त्री-पुरुष का परस्पर प्रेमपूर्वक देखना। 10. आँख उठाकर न देखना = बिलकुल ध्यान न देना। 11. आँख से ओझल होना = दिखाई न पड़ना, गायब हो जाना। 12. आँख से अंधा नाम नयन सुख = नाम और गुण में मेल न होना। 13. आँख का काँटा = स्वभाव न मिल पाने के कारण अच्छा न लगना। 14. आँख का तारा = अत्यंत प्रिय व्यक्ति। 15. आँख की किरकिरी = पीड़ाकारी व्यक्ति या वस्तु। 16. आँख खुलना = 1. नींद से जागना, 2. भ्रम दूर होना। 17. आँखें न मिलाना = किसी हीन भावना की वजह से सामने वाले से आँखे चुराना यानी उससे नजरें मिलने से बचना। 18. आँख मारना = आँख से इशारा करना (ताकि जिसे

इशारा किया गया है वह तो संकेत समझ ले किंतु दूसरे इसकी भावना भाँप न पाएँ। 19. आँखों-आँखों में ही रात काटना = किसी परेशानी के कारण सारी रात जगते रहना या सो न पाना। 20. आँखों से खून टपकना = बहुत क्रोधित होना। 21. आँखों से गंगा-जमुना बहना/बहाना = बहुत रोना। 22. आँखों देखते मक्खी नहीं निगली जाती = जानते बूझते कोई अप्रिय काम न करना। 23. आँखों से विष उगलना = बहुत क्रोधित होना। 24. फूटी आँखों न सुहाना = बिलकुल अच्छा न लगना।

आँख मिचौनी *[तद्. + देश.]* स्त्री. कई बच्चों का सम्मिलित खेल जिसमें एक बच्चा किसी दूसरे बच्चे की आँखें मूँदता (ढाँकता) है। इस बीच बाकी बच्चे इधर-उधर छिप जाते हैं। आँखें खुलने पर वह बच्चा छिपे बच्चों को ढूँढता है। जिस बच्चे को वह सबसे पहले ढूँढ लेता है उसे अपनी आँखें बंद करवानी पड़ती है। इस तरह यह खेल चलता रहता है। hide and reak

आँगन *[तद् < अंगण] पुं.* घर के अंदर का चारों ओर से घिरा वह खाली स्थान जिस पर छत न बनी हो। **पर्या.** सहन, चौक।

आँगनवाड़ी श.अर्थ आँगन में लगी वाटिका, **दे.** शाकवाटिका। शिक्षा-छोटे बच्चों की आरंभिक पाठशाला जहाँ खेल-कूद के माध्यम से भावी शिक्षा के लिए उन्हें तैयार किया जाता है। nursury

आँच *[तद् < अर्चि]* **स्त्री.** 1. वह गरमी या ताप जिसे आग के पास जाने पर महसूस किया जाता है। 2. आग की लपट, लौ। **उदा.** धीमी आँच पर बनी सब्ज़ी स्वादिष्ट होती है।

आँचल [तद्. *< अंचल] पुं.* 1. टूटे साड़ी आदि के दोनों छोरों में से वह छोर। **पर्या.** पल्ला, छोर जो सामने छाती पर और पीछे लटका रहता है। **मुहा.** आँचल फैलाना-कुछ माँगने के लिए दीनतापूर्वक कपड़े का पल्ला फैलाना।

आँत *[तद्. अंत्र] स्त्री.* आमाशय से मलाशय तक का पाचन-पथ (जिससे भोजन पच कर अंगीकृत होता है और शेष मल गुदाद्वार से होकर बाहर निकलता है।)

आँधी *(तद्.< अंध) स्त्री.* अत्यंत वेग से बहने वाली धूलभरी हवा, जिससे हल्की वस्तुएँ हवा में तैरती हुई दिखें और इतनी धूल फैल जाए कि अंधकार-सा लगने लगे। **पर्या.** अंधड़।

आँवला (पुं.) *(तद्.< आमलक)* 1. एक उष्णकटिबंधीय पादप जिसके फल गोलाकार तथा कसैले होते हैं तथा चटनी व अचार के रूप में खाने व दवाई के काम आते हैं। 2. **टि.** आयुर्वेद की दृष्टि से यह स्वास्थ्य के लिए अत्यंत उपादेय है। यह विटामिन 'सी' का भंडार है।

आँवाँ पुं. *(तद्.< आपाक)* वह गड्ढा जिसमें कुम्हार मिट्टी के बर्तन पकाता है। **पर्या.** भट्ठी। **मुहा.** आँवाँ बिगड़ जाना = समाज के सब लोगों का बिगड़ जाना।

आँसू *(तद्.< अश्रु) पुं.* शोक, पीड़ा, हर्ष आदि मनोभावों के अतिरेक के कारण आँखों से निकलने वाला पानी। **पर्या.** अश्रु **मुहा.** आँसू बहाना/गिराना/ढालना = अत्यधिक रोना। आंसू पोंछना = ढाढस देना। आँसू पीना = मन ही मन रोना। खून के आंसू = क्रोध के साथ हताशा का भाव। मगरमच्छ के आँसू = नकली आँसू। **टि.** सामान्यत: इस शब्द का प्रयोग बहुवचन में होता है।

आइंदा *(फा. < आइंदा:)* **अव्यय** आगे आने वाले समय में, भविष्य में; अगली बार। 1. **उदा.** इस बार तो हो गया सो हो गया ध्यान रहे, आइंदा ऐसा न हो।

आइरिस *पुं. (अंग्रे.)* **दे.** 'परितारिका'

आईना *पुं. (फ़ा.)* मुँह देखने का शीशा, दर्पण। **मुहा.** आईना दिखाना = (किसी के सामने) उसका असली रूप प्रकट कर देना।

आईवीएफ दे. 'पात्रे निषेचन'

आकंठ *(तत्.) [आ+कंठ] क्रि.वि.* कंठ पर्यंत, गले तक **जैसे: 1.** भूखे व्यक्ति ने आकंठ भोजन किया। 2. सरोवर में गज आकंठ डूबा हुआ था।

आकटि *(तत्.) [आ+कटि] क्रि.वि.* कमर पर्यंत **जैसे**: वह सरोवर में आकटि खड़ा हुआ सूर्योपासना कर रहा था।

आकरग्रन्थ *[आकर (खजाना) + ग्रंथ)* **पु.** *तत्.* 1. किसी भी साहित्य की वे प्राचीनतम श्रेष्ठ कृतियाँ जिनसे भावी साहित्यकारों को अन्य

रचनाएँ लिखने की अपेक्षित साम्री चिरकाल तक प्राप्त होती रहे। उपजीव्य ग्रंथ। **उदा.** रामायण एवं महाभारत भारतीय साहित्य के आकरग्रंथ हैं। 2. संदर्भ ग्रंथ **जैसे**: अमरकोश, आदि संस्कृत के कोशग्रंथ।

आकर्ष पु. *(तत्.)* 1. खिंचाव, 2. **आयु.** आकस्मिक पेशी संकोच। **पर्या.** ऐंठन **जैसे**: ग्रीवा आकर्ष।

आकर्षक *(आ+कर्ष+क) (तत्.)* **वि.** (अपनी ओर) खींचने वाला; जिसमें आकर्षण हो; ला. अर्थ देखने में लुभावना, सुंदर। किसी शक्ति या गुण विशेष के कारण किसी अन्य व्यक्ति या वस्तु को आकर्षण (आ + कर्ष + न) पुं. (तत्.) अपनी ओर खींचने की क्रिया, खिंचाव।

आकर्षण-शक्ति स्त्री. *(तत्.)* सा.अर्थ. किसी को अपनी ओर आकर्षित करने की शक्ति। **भौ.** 1. पिंडों का वह प्राकृतिक गुणधर्म जिससे वे एक-दूसरे को अपनी ओर खींचते हैं। **जैसे**: ठोस पदार्थ के कण एक दूसरे से चिपके रहते हैं। 2. पृथ्वी का वह बल जो अपने विशिष्ट क्षेत्र में आने वाली वस्तु को खींच लेता है। **उदा.** गुरुत्वाकर्षण शक्ति।

आकर्षित *[आकर्ष+इत] वि. (तत्.)* जिसे खींच लिया गया हो, खिंचा हुआ **दे.** 'आकर्षण'।

आकलन *[आ+कलन] पुं. (तत्.)* 1. शा.अर्थ. ठीक तरह से गिनना calculation 2. मूल्य, संख्या अथवा मात्रा के बारे में लगाया गया मोटा अनुमान। estimation

आकस्मिक *(वि.) (तत्.)* 1. अचानक हो जाने वाला; 2. किसी संयोगवश घटित होने वाला। **जैसे:** आकस्मिक कार्य, आकस्मिक आगमन, आकस्मिक घटना, आकस्मिक अवकाश।

आकस्मिक अवकाश *(पु.) (तत्.)* वह छुट्टी जो अचानक किसी आवश्यक कार्य के आ पड़ने पर या अपरिहार्य कारणों से ली जाए। casual leave

आकांक्षा *(आ+कांक्षा) (तत्.) स्त्री.* सा.अर्थ चाह, इच्छा अभिलाषा, कामना। **व्या.** वाक्य की अर्थवत्ता का एक अभिलक्षण जो घटकों की संबद्धता दिखाता है। **जैसे:** 'कर लिया है' क्रिया पदबंध को 'मैंने उसने' कर्ता की आकांक्षा है।

आकार *पुं. (तत्.)* किसी भौतिक वस्तु की बनावट को प्रकट करने वाला उसका स्वरूप। **पर्या.** आकृति, सूरत, स्वरूप, डील-डौल, बनावट, गठन।

आकार प्रकार *पुं. (तत्.)* (आकार = स्वरूप, सूरत, आकृति, गठन); (प्रकार = ढंग, तरीका) किसी वस्तु का वह स्वरूप और गुण की पहचान को अन्य वस्तुओं से अलग करता है।

आकाश *पुं. (तत्.)* 1. पृथ्वी से ऊपर नीले रंग का दिखाई देने वाला शून्य स्थान। **पर्या.** आसमान, नभ, अंतरिक्ष sky **विलो.** पाताल 2. समस्त आकाशीय पिंडों के चारों ओर का खाली भाग। 3. एक लचीला पारदर्शी तत्व जिसमें से होकर सूर्य की किरणें पृथ्वी तक पहुँचती हैं। ether 4. दर्शन. पंच महाभूतों में से एक, जिसका गुण 'शब्द' (आवाज़) है। **मुहा.** आकाश-कुसुम/पुष्प असंभव या अनहोनी बात। आकाश छूना/से बातें करना = बहुत ऊँचे जाना। आकाश के तारे तोड़ना = असंभव कार्य करना।

आकाश कुसुम *पुं.* (आकाश-कुसुम) *(तत्.)* 1. आकाश में फूल खिलने या उगने की कल्पना असंभव की कल्पना। 2. ऐसी वस्तु, बात या इच्छा इत्यादि जिसकी मात्र कल्पना की जा सके, अस्तित्वविहीन। **जैसे**: आकाश कुसुम देखना बंद करो।

आकाशगंगा *स्त्री. (तत्.)* शा. अर्थ आकाश में बहने वाली गंगा। **खगो.** बड़े घेरे के रूप में आकाश में रात में दिखाई पड़ने वाली तारों की फैली हुई एक धूमिल-सी लंबी पट्टी। milky way

आकाशदीप *पुं. (तत्.)* समुद्र में जा रहे जहाजों (जलपोतों) के मार्गदर्शन के लिए समुद्र तट पर निर्मित स्तंभ जिस पर तेज रोशनी चारों दिशाओं में बारी-बारी से चमकाई जाती है। **पर्या.** दीपस्तंभ light house

आकाशवाणी *(स्त्री.) (तत्.)* शा.अर्थ दैवी वाक्, देववाणी। सा.अर्थ 1. आकाश से सुनाई पड़ने वाली वह आवाज़ या बात जो ईश्वर की ओर से कही हुई मानी जाए। **जैसे:** कंस के प्रति देवकी को भेजे जाने के समय हुई आकाशवाणी। 2. वर्तमान में भारत के 'रेडियो तंत्र' के लिए स्थिर कर दिया गया व्यक्तिवाचक नाम।

आकुल *वि.* *(तत्.)* घबराया हुआ, व्यग्र। **टि.** समस्त पदों में यह उत्तरपद के रूप में प्रयुक्त होता है (**जैसे**: शोकाकुल, चिंताकुल आदि) अन्यथा एकल शब्द के रूप में आकुल के स्थान पर प्राय: 'व्याकुल' का प्रयोग देखा गया है। **दे.** 'आकुलता'।

आकुलता *स्त्री.* *(तत्.)* घबराने या परेशान होने की मानसिक स्थिति जो प्राय: शारीरिक लक्षणों से प्रकट होती है। **पर्या.** व्याकुलता।

आकृति *स्त्री.* *(तत्.)* किसी वस्तु या व्यक्ति आदि का वह दृश्यमान स्वरूप जो रेखाओं अथवा छाया-चित्रण से प्रकट होता है; बनावट, ढाँचा, गठन। **जैसे:** मानवाकृति, छायाकृति, मुखाकृति, त्रिभुजाकृति।

आकृष्ट *वि.* *(तत्.)* किसी की आकर्षण शक्ति से उसकी ओर खिंचा हुआ। **पर्या.** आकर्षित **दे.** आकर्षण।

आक्रमण *पुं.* *(तत्.)* युद्ध में या प्रतियोगिता के दौरान शत्रु पक्ष प्रतिपक्ष पर अपने निहित उद्देश्य की पूर्ति के लिए योजनाबद्ध तरीके से चढ़ बैठना (भले ही उसमें सफलता मिले या न मिले।) **पर्या.** हमला, धावा, चढ़ाई, attack, agression, invasion

आक्रमणकर्ता *वि./पु.* आक्रमण करने वाला (व्यक्ति, देश आदि)

आक्रमणकारी वि. *(तत्.)* आक्रमण करने वाला। **पर्या** आक्रांता **दे.** 'आक्रमण'।

आक्रांता *वि.* *(तत्.)* आक्रमण करने वाला। **पर्या.** आक्रमणकारी, आक्रमणकर्ता।

आक्रामक *वि.* *(तत्.)* ऐसी क्रिया जिससे आक्रमण जैसी स्थिति प्रकट हो; आक्रमण की क्रिया से युक्त, आक्रमणशील।

आक्रोशी *पुं.* *(तत्.)* दूसरे से अनुचित व्यवहार से पहले व्यक्ति के मन में उत्पन्न क्रोध की भावना। resentment

आक्षेप *पुं.* *(तत्.)* शा.अर्थ फेंकना। सा.अर्थ 1. किसी के बारे में ऐसी बात कहना जो उसकी प्रतिष्ठा को हानि पहुँचाए। **पर्या.** दोषारोपण, इल्जाम, आरोप। 2. किसी के व्यवहार या कथन आदि पर की गई आपिल challenge

आखनन *पुं.* *(तत्.)* भूमि की सतह के आसपास स्थित खनिजों को आसानी से खोदकर निकालने की प्रक्रिया। **तु.** खनन, प्रवेधन।

आखिरकार/आखिर *क्रि. विं.* *(फ़ा.)* 1. अंत में। 2. सारे प्रयत्न करने के बाद ही। **पर्या.** अंततोगत्वा।

आखिरी *वि.* *(फ़ा.)* 1. जो सबसे अंत में हो अंतिम। 2. पिछला।

आखेट *पुं.* *(तत्.)* जंगल में पशु-पक्षियों का पीछा कर उन्हें मारने के रूप में अपनाया गया मनोरंजन-प्रधान और शौर्य-कौशल प्रदर्शक क्रीड़ा (खेल) कार्य। **पर्या.** शिकार, मृगया।

आखेटक *पुं.* *(तत्.)* आखेट करने वाला व्यक्ति, शिकार खेलने वाला व्यक्ति, शिकारी।

आख्यान *पुं.* *(तत्.)* सा. अर्थ कथा, कहानी, किस्सा, वृत्तांत आदि। **इति.** प्राचीन काल से चली आ रही गाथा जिसका सामान्यत: ऐतिहासिक साक्ष्य उपलब्ध न हुआ हो।

आख्यायिका *स्त्री.* *(तत्.)* दे. आख्यान

आगंतुक *वि.* *(तत्.)* (भूले-भटके/बिना बुलाए/अचानक) आने वाला (मेहमान) **मुहा. आग बबूला होना**= क्रोधावेशपूर्ण नाराजगी प्रकट करना, क्रोधित होकर भला-बुरा कहना।

आग *स्त्री.* *[तद्. < अग्नि]* 1. तेज और प्रकाश का वह पुंज जिसमें दाहकता भी होती है। **पर्या.** अग्नि, अनल 2. जलन, ताप, गरमी। **मुहा.** आग लगना = क्रोध आना **उदा.** उसने गाली क्या दी, शर्माजी को आग लग गई। आग लगाना = झगड़ा शुरू करवाना। पानी में आग लगाना = असंभव कार्य करना। आग में घी डालना = और अधिक क्रोधित करना; झगड़ा बढ़ाना। आग पर पानी डालना = (क्रोध आदि) शांत करना।

आगमन *पुं.* *(तत्.)* 1. किसी व्यक्ति या वस्तु का कहीं अन्यत्र से उल्लिखित स्थान पर आना। **विलो.** गमन।

आगा-पीछा *[तद्. < अग्र भाग+पश्च भाग]* *पुं.* शा. अर्थ आगे का भाग/हिस्सा और पीछे का भाग/हिस्सा, यानी दोनों ओर या कहें सब तरफ। ला.अर्थ। हिचक, दुविधा, **जैसे**: आगा-पीछा करना = दुविधा में पड़ना। 2. परिणाम, नतीजा **जैसे:**

आगा-पीछा सोचकर यह काम शुरु करना आपके लिए ठीक रहेगा।

आगामी *वि. (तत्.)* आगे आने वाला, भावी। **उदा.** पत्रिका का आगामी अंक प्रेमचंद की कहानियों पर होगा।

आगे *[तद्.<अग्रत: /अग्रे] क्रि. वि.* 1. सामने की ओर **विलो.** पीछे 2. (किसी बात में) बढ़कर, **उदा.** रमेश दौड़ने में मुझसे आगे है। 3. आने वाले समय में, भविष्य में **उदा.** 1. आगे-आगे देखिए, होता है क्या। 2. आगे ऐसा मत करना। 4. पहने वाले समय में, भूतकाल में। **उदा.** 1. 'आगे ऐसा होता था। 2. मैं आगे भी यहां आ चुका हूँ'। **मुहा.** आगे आना = जिम्मेदारी स्वीकार करना।

आगे-पीछे क्रि.वि. 1. एक के पीछे/बाद एक, क्रम से। **जैसे:** आगे-पीछे चलिए। 2. ला.अर्थ वंश-परिवार में, उत्तराधिकार में। **जैसे:** उसके आगे-पीछे कोई नहीं है अर्थात् उसकी मृत्यु के साथ ही उसका वंश समाप्त हो जाएगा। आगे नाथ न पीछे पगुहा

आग्नेय शैल *पुं. (तत्.)* ज्वालामुखी के लावे के ठंडे हो जाने पर उससे निर्मित शैल। **जैसे:** basalt

आग्रह *पुं. (तत्.)* अपनी पूरी शक्ति के अनुसार दृढ़तापूर्वक कही जाने वाली बात (अनुरोध) या किया जाने वाला कार्य। **उदा.** (i) मेरा आपसे आग्रह है कि आप इस अवसर पर अवश्य उपस्थित रहें। (ii) सत्याग्रह।

आघात *पुं. (तत्.)* 1. धक्का, ठोकर, 2. जानबूझकर पहुँचाई गई चोट, मार, प्रहार injury 3. अकारण या प्रकृति से प्राप्त चोट, मन को लगने वाली चोट। शोक प्रस्ताव की अंतिम पंक्ति-ईश्वर से प्रार्थना है कि वह आपको इस आकस्मिक आघात को सहने की शक्ति प्रदान करे।

आघातवर्धनीयता [आघात=चोट] *स्त्री. (तत्.)* लगातार चोट मारे जाने पर बढ़ने-फैलने का गुण। **रसा.** धातुओं की वह विशेषता जिसके कारण उन्हें पीट कर पतली शीट में परिवर्तित किया जा सकता है। **जैसे**: चाँदी, सोना, ऐलुमीनियम।

आघातवर्ध्य *वि. (तत्.)* शा.अर्थ पीटने से बढ़ने योग्य। (धातु के संबंध में) घन आदि किसी भारी औज़ार से पीटे जाने पर लंबाई-चौड़ाई-मोटाई में बढ़ने योग्य।

आचमन *पुं. (तत्.)* हिंदुओं का एक धार्मिक संकल्पसूचक कृत्य जिसमें दाहिने हाथ की हथेली में थोड़ा (अंजलि भर) जल लेकर और मंत्र उच्चारित कर उस जल को पी लेना। **टि.** पूजा या धर्म संबंधी कार्यों/यज्ञों में ऐसा किया जाता है। भोजन से पहले ही हथेली में जल लेकर तीन बार (घूँट-घूँट) पीने को 'आस्वन' करना कहा जाता है।

आचरण *पुं. (तत्.)* निजी और सामाजिक दायित्वों का विधिपूर्वक निर्वाह करते रहने की व्यक्ति की अपेक्षा। **टि.** विधि का उल्लंघन किए जाने पर वह व्यक्ति दंड का भागी माना जाता है। **पर्या.** चाल-चलन कंडक्ट

आचार *पुं. (तत्.)* 1. (समाज के संदर्भ में) व्यक्ति के व्यवहार, चाल-चलन, रहन-सहन, आचरण conduct 2. रीति-व्यवहार **जैसे**: लोकाचार, देशाचार।

आचार-संहिता *पुं. (तत्.)* 1. समाज या वर्ग द्वारा स्वीकृत परस्पर व्यवहार और आचरण संबंधी नियमों का संग्रह। 2. चुनाव की औपचारिक घोषणा के बाद सरकार और राजनीतिक दलों द्वारा पालनीय नियमावली।

आचार्य *पुं. (तत्.)* प्राचीन अर्थ 1. वेद या शास्त्रों को पढ़ाने वाला गुरु। 2. यज्ञ कार्य संपादन कराने वाला याज्ञिक। 3. उपनयन-विवाह आदि संस्कार कराने वाला पुरोहित। आधु.अर्थ अध्यापक, professor

आज *क्रि. वि. [तद्.<अद्य]* 1. निरंतर प्रवहमान काल (समय) के स्तर पर बीत गए दिन और आगामी दिन के बीच वाला वर्तमान दिन। today 2. वर्तमान समय project time

आजकल *कि.वि. (देशज<*अद् य+कल्य) इन दिनों, वर्तमान समय में।

आजन्म *(क्रि.वि.) (तत्.)* जन्म से लेकर मृत्यु तक, जीवनभर **जैसे:** आजन्म ब्रह्मचारी।

आजमाइश *स्त्री. (फा.)* प्रयोग करके परखने का भाव। **उदा.** मैंने आजमाइश कर ली है। यह दवा ठीक है।

आजमाना *स.क्रि. (फा.)* किसी व्यक्ति या वस्तु की उपयोगिता जानने के लिए उसे अपने स्तर पर परखना या परीक्षा लेकर देखना। **उदा.** यह दवा मेरी आजमाई हुई है।

आज़ाद *वि. स्वतंत्र,* स्वाधीन, मुक्त (व्यक्ति) जो किसी के अधीन या परवश न हो।

आज़ादी *स्त्री. (फा.)* किसी के अधीन या परवश न रहने की स्थिति, स्वतंत्रता। **विलो.** गुलामी।

आजीवन *क्रि.वि. (तत्.)* जीवन पर्यन्त, जीवन रहने तक, जिंदगी भर। इस उपकार के लिए मैं तुम्हारा आजीवन ऋणी रहूँगा।

आजीविका *स्त्री.* (i) जीवन निर्वाह के लिए किया जाने वाला काम, रोजी, वृत्ति, रोजी-रोटी। (ii) जीवन की आवश्यकताएँ पूरी करने के लिए किया जाने वाला कार्य, व्यवसाय, पेशा।

आज्ञा *स्त्री.(तत्.)* बड़ों द्वारा छोटों को किसी काम करने के लिए कहा जाना। **पर्या.** हुक्म, आदेश। **टि.** 1. 'आज्ञा' शब्द का प्रयोग सामान्य भाषा में किया जाता है जबकि प्रशासनिक भाषा में इसके लिए 'आदेश' शब्द मान्य है। 2. किसी से जाने की 'अनुमति' माँगी जाती है, न कि 'आज्ञा', अत: 'अब मुझे जाने की आज्ञा दीजिए' के स्थान पर 'अब मुझे जाने की अनुमति दीजिए' का ही प्रयोग किया जाना वांछनीय है।

आज्ञाकारी *वि. (तत्.)* (बड़ों की) आज्ञा मानने वाला।

आठ *वि. [तद्. < अष्ट]* 1. विशेष संख्या जो 8 की तरह लिखी जाती है। (सात के बाद और नौ से पहले की संख्या) 2. संख्या जो दो की चार गुना और चार की दो गुना होती है।

आडंबर *पुं. (तत्.)* अपने धन, ज्ञान आदि से दूसरे को प्रभावित करने के लिए। उसको बाहरी दिखावा या ऊपरी तडक़-भडक़। **उदा.** विवाह समारोह में आडंबर की जगह सादगी होनी चाहिए।

आड़ *स्त्री (देश.)* 1. एक स्थान से दूसरे स्थान तक सुविधापूर्वक न जा/पहुँच सकने या उधर न देख सकने के निमित्त उत्पन्न बाधा। **पर्या.** ओट, परदा; बाधा 2. बहाना (**जैसे**: लालची राजनेता देश सेवा की आड़ में काफी धन-संपत्ति बटोर लेते हैं।

आड़ा *वि. (देश.)* धरती के समांतर फैला हुआ; पड़ा horizontal सं. [< आलि] (स्त्री. आड़ी।

आड़ू *पुं. (देश.)* एक वह गोलाकार खुरदरी गुठली वाला रसीला गूदेदार फल जिसका ऊपरी छिलका पीले व लाल रंग का होता है। peach

आढ़त *स्त्री. (देश.)* 1. किसान के यहाँ से कस्बे की मंडी में बिक्री के लिए आए हुए माल की बिचौलिए महाजन (व्यवसायी) द्वारा बिक्री कराए जाने का धंधा। brokerage, commission agency 2. इस तरह के धंधे के बदले बिचौलिए को मिलने वाला धन। brokerage money, commission

आढ़तिया/आढ़ती *पुं. (देश.)* आढ़त का धंधा अपनाने वाला व्यापारी। **दे.** 'आढ़त'।

आणविक/आण्विक *[अणु + इक] वि. (तत्.)* अणु से संबंधित **दे.** 'अणु'।

आतंकवाद *पुं.* किसी समूह या संगठन द्वारा अपने वर्तमान राजनीतिक अथवा धार्मिक व्यवस्था विरोधी लक्ष्य की सिद्धि के लिए हिंसक और भयोत्पादक उपायों का ही आश्रय लेने का विचार। terrorism

आतंकवादी/आतंकी *वि.(तत्.)* आतंकवाद से संबंधित। *पुं.* वह व्यक्ति, समूह या संगठन जो अपने वर्तमान व्यवस्था विरोधी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए हिंसा या भयोत्पादक उपायों का आश्रय ले। terrorist

आततायी *वि.(तत्.)* जो हत्या, लूटपाट, आगज़नी इत्यादि के स्वभाव वाला हो। tyrant

आतपन *पुं.(तत्.)* शा. अर्थ (सूर्य के ताप से) पृथ्वी का तपना। **भू.** सूर्य से आने वाली वह ऊर्जा जिसे पृथ्वी रोक लेती है और ऋतु के अनुसार स्थान विशेष का तापमान प्रभावित होता है।

आतिथेय *पुं.* [*तत्.* < अतिथि] जिसके यहाँ अतिथि ठहरे हों; अतिथि-सत्कार करने वाला। **पर्या.** मेज़बान host

आतिथ्य *[तत्. < अतिथि] पुं.* अतिथि की आवभगत **पर्या.** अतिथि-सत्कार, अतिथि-सेवा।

आतिशबाज़ी *[आतिश+बाज़ी] स्त्री.(फ़ा.)* शा.अर्थ आग का तमाशा/खेल। बारूद, गंधक, शोरे आदि के उपयोग से बने खिलौने (अनार, फुलझड़ी आदि) जिन्हें जलने पर रंग-बिरंगी चिनगारियाँ

निकलती हैं। यह तमाशा प्राय: अपनी प्रसन्नता व्यक्त करने के लिए (दीपावली, विवाह आदि के अवसर पर) किया जाता है।

आतुर *वि.(तत्.)* 1. किसी काम को करने में आवश्यकता से अधिक बेचैनी दिखाने वाला। 2. रोगी **जैसे:** आतुरालय, आतुरशाला, अस्पताल।

आत्म गौरव *पुं. (तत्.)* अपनी और अपने से संबंधित सभी बातों के प्रति महसूस किया जाने वाला बड़प्पन का भाव।

आत्मकथा [आत्म = अपनी कथा] *स्त्री.* (तत्.) खुद की लिखी हुई अपने जीवन की कथा। अपने संबंध में कही गई बातें auto-biography किसी की वह जीवनी जो उसने स्वयं लिखी हो। **पर्या.** आत्मचरित; **तु.** जीवनी।

आत्मघात *पुं. (तत्.)* शा. अर्थ खुद को (अपने-आप को) मार डालने का कृत्य; आत्महत्या।

आत्मघाती हमला *[तत्.+अर.] पुं.* किसी जघन्य उद्देश्य की पूर्ति के लिए अपनी जान को पूरी तरह से जोखिम में डालकर व्यक्ति द्वारा (विशेष रूप से आतंकवादी द्वारा) शत्रुपक्ष पर आक्रमण की कार्रवाई।

आत्म-नियंत्रण *पुं.(तत्.)* अपने ऊपर रखा जाने वाला नियंत्रण **पर्या.** आत्मसंयम, आत्मनिग्रह self-control

आत्म-निर्भर *[आत्म+निर्भर] वि. (तत्.)* (व्यक्ति) जो अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति स्वयं पूरी करने में समर्थ हो यानी जिसे दूसरे से मदद लेने की जरूरत न पड़े।

आत्म-निर्भरता *स्त्री. (तत्.)* व्यक्ति द्वारा स्वयं अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकने का सामर्थ्य।

आत्मनिष्ठ *[आत्म+निष्ठ] वि. (तत्.)* (व्यक्ति) जो (बाहरी बातों से प्रभावित न होकर) अपने ही विचारों का अनुसरण करे; अपने प्रति ही निष्ठा रखने वाला। **पर्या.** व्यक्तिनिष्ठ subjective **विलो.** विषयनिष्ठ।

आत्मप्रशंसा *(स्त्री.) (तत्.)* स्वयं के द्वारा अपनी की जाने वाली बड़ाई। खुद का अपना यशोगान। **पर्या.** आत्मश्लाघा **विलो.** आत्मनिंदा **उदा.** आत्मप्रशंसा करना शिष्टता नहीं मानी जाती।

आत्मबल *पुं. [आत्म+बल] (तत्.)* आत्मा का बल, आत्मा की ताकत, आध्यात्मिक शक्ति।

आत्ममंथन *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ अपनी आत्मा को मथना। सत्य-असत्य संबंधी किसी निष्कर्ष पर पहुँचने से पहले अपने मन में छिपी भावनाओं और विचारों का अच्छी तरह से परीक्षण करना।

आत्मरक्षा *(स्त्री.) (तत्.)* अपनी रक्षा या बचाव। **उदा.** हमें आत्मरक्षा में समर्थ होना चाहिए।

आत्म-विश्वास *(आत्म+विश्वास) पु. (तत्.)* अपनी योग्यता या कार्यक्षमता पर इस दृष्टि से पूरा भरोसा रखना कि 'अमुक कार्य मैं कर ही लूँगा' या कि 'मेरी जानकारी या अनुमान बिलकुल ठीक है।' self confidence

आत्मसमर्पण *(पुं.) (तत्.)* अपने विरोधी या अधिक शक्तिशाली के सम्मुख अपने आपको हवाले कर देने की यानी उसकी अधीनता स्वीकार कर लेने की कार्रवाई। युद्ध में पराजित सेना का विजयी सेना के समक्ष हथियार डालना।

आत्मसात् करना *स.क्रि. (तत्.)* 1. पूरी तरह अपने अंदर समाहित कर लेना। 2. कोई विद्या पूरी तरह सीख लेना। 3. अपने जीवन में उतार लेना।

आत्महत्या *[आत्म+हत्या] स्त्री. (तत्.)* खुद को (अपने आपको) मार डालना। **पर्या.** आत्मघात। suicide

आत्मा *[तत्.<आत्मन्] स्त्री.* 1. मन, बुद् धि एवं शरीर के समस्त व्यापारों का संचालन करने वाली सत्ता, 'मैं' का वास्तविक रूवरूप। **पर्या.** जीवात्मा, चिति, 2. परमात्मा का एक अंश solo, spirit

आत्माभिमान *[आत्मा<आत्मन् +अभिमान] पुं. (तत्.)* अपने और अपने से संबंधित सभी के बारे में होने वाला गर्व का अनुभव। **पर्या.** स्वाभिमान self respect

आत्मीय *वि. (तत्.)* 1. अपना, निजी **विलो.** परकीय 2. स्वजन, सगे रिश्तेदार।

आत्मीय व्यक्ति *पुं. (बहुवचन)* किसी को पराया मत समझो। यहाँ सभी अपने हैं।

आत्मीयता *स्त्री. (तत्.)* आत्मीय (अपना) होने का भाव, अपनापन।

आदत *स्त्री. (अर.)* किसी की वे क्रियाएँ जो अभ्यास के कारण स्वभाव का अंग बन जाती है और उन्हें न करने से बेचैनी-सी होने लग जाती है। (परंतु समय के अनुसार उसमें परिवर्तन आ सकता है।) **तुल.** स्वभाव = जन्मजात गुण, जो कभी बदलते नहीं। व्यसन, लत = बुरी आदतें।

आदम *पुं. (अर.)* 'इसलाम' एवं 'यहूदी' धर्मों के अनुसार सृष्टि का प्रथम पुरुष आदि मानव।

आदमक़द *[आदम=मनुष्य + कद=आकार] वि. (अ.)* मनुष्य के क़द या आकार वाला मानवाकार, आदमी की ऊँचाई के बराबर।

आदमियत *(अर.+फा.) स्त्री.* आदमी होने के गुण एवं विशेषताएँ, मनुष्यता, मानवता, इन्सानियत।

आदमी *[अर. < आदम] पुं.* 1. वयस्क नर man **विलो.** औरत **उदा.** औरतों के डिब्बे में आदमियों का प्रवेश मना है। 2. पशुओं से भिन्न नर और नारी का सूचक सामान्य शब्द इन्सान। **पर्या.** मनुष्य। 3. ग्रामीण प्रयोग-पति। **उदा.** इस समय मेरा आदमी हसबैंड घर में पर नहीं है। 4. मज़दूर। **उदा.** "आदमी काम पर हैं।"

आदर *पुं. (तत्.)* किसी व्यक्ति, पद या संस्था की उपलब्धियों अथवा गुणों के कारण उसके प्रति प्रकट की गई सम्मान की भावना। **विलो.** निरादर।

आदरणीय [आदर+*नीय] वि. (तत्.)* आदर के योग्य, **पर्या.** सम्माननीय **टि.** संस्कृत के नियमानुसार आ + दृ + अनीयर् से 'आदरणीय' विशेषण शब्द बना है।

आदर्श ईंधन रसा. ऐसा ईंधन जो सस्ता, सहज उपलब्ध होने वाला, सुगमता से जलने वाला तथा दहन के बाद हानिकारक उत्पाद न छोड़ता हो।

आदर्श *पुं. (तत्.)* 1. वह व्यक्ति, वस्तु या गुण जिसकी विशेषता अनुकरणीय हो, नमूना। ideal 2. आईना, दर्पण, शीशा।

आदर्शवाद *(तत्.) पुं.* यह सिद्धांत कि व्यक्ति को यथासंभव अपने जीवन में सुकर्म और परहित चिंतन की भावना का विस्तार तथा उसे यथार्थ में परिणत करते रहना चाहिए। idealism **टि.** साहित्य में इसी भावना का प्रतिबिंबन 'आदर्शवाद' कहलाता है; जबकि यथास्थिति के चित्रण को आदर्शवाद' के विलोम के रूप में 'यथार्थवाद' realism की संज्ञा दी जाती है।

आदर्शवादी *वि./पु. (तत्.)* आदर्शवाद का अनुकरण/अनुपालन करने वाला (व्यक्ति)। idealist

आदर्शीकरण *पुं.* किसी व्यक्ति, वस्तु आदि को अपने लिए आदर्श मानने या बना लेने की स्थिति।

आदान *पुं.* किसी से कुछ लेने या प्राप्त करने का कृत्य। **विलो.**-प्रदान।

आदान-प्रदान *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ लेना और देना। सा.अर्थ 1. किसी से कुछ ग्रहण करना और बदले में उसे कुछ अन्य देना। barter

आदाब *(पुं.) (अर.)* ('अदब' का बहुवचन) 1. शिष्टाचार, 2. सलाम, 3. बंदगी **उदा.** आदाब अर्ज़ है= (आपके लिए मेरा) नमस्कार/सलाम/अशिर्वादन।

आदि *पुं. (तत्.)* 1. प्रारंभ, मूल **विलो.** अंत वि. *(तत्.)* प्रारंभ का, प्रथम **जैसे**: आदि काल। **निपात (तत्.)** इसी प्रकार के अन्य, **पर्या.** वगैरह, इत्यादि **उदा.** मनुष्य, पशु आदि प्राणी।

आदि पुरुष *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ प्रथम व्यक्ति। सा.अर्थ 1. किसी जाति या वंश का पहला व्यक्ति **पर्या.** मूल पुरुष। 2. परमात्मा, ईश्वर।

आदित्य *पुं. (तत्.)* व्यु.अर्थ अदिति के पुत्र। सा. अर्थ-सूर्य, रवि। **टि.** इसीलिए कहीं-कहीं रविवार को 'आदित्यवार' भी कहते हैं।

आदिम *(वि.) (तत्.)* आदि का यानी बहुत पहले का, पुरातन, बहुत पुराना।

आदिम निर्वाह कृषि *स्त्री. (तत्.)* निर्वाह (परिवार की आवश्यकताएँ पूरी करना) के लिए कृषि की प्रारंभिक (आदिकालीन) परंपरा, जिसमें स्थानांतरी कृषि और चलवासी पशुचारण सम्मिलित हैं। **दे.** स्थानांतरी कृषि, चलवासी पशुचारण **तुल.** गहन निर्वाह कृषि = कृषि का वर्तमान प्रकार।

आदिवासी *(तत्.)* [आदि+वासी] शा.अर्थ प्राचीनतम निवासी। *वि./पुं.* वह निवासी जिसके पुरखे उस क्षेत्र विशेष में अतिप्राचीन काल से रहते आए माने जाते हैं और जिनकी विशिष्ट संस्कृति विकसित हो चुकी हो।

आदी *वि. (अर.)* जिसे कुछ (उल्लिखित काम) करने की लत पड़ गई हो। **पर्या.** अभ्यस्त।

आदेश *पुं. (तत्.)* सा.अर्थ आज्ञा हुकुम, **प्रशा.** अधिकारी या संस्था द्वारा अपने अधीनस्थ कर्मचारी। कर्मचारियों अनुपालन के लिए कोई भी मौखिक या लिखित प्राधिकारपूर्ण कथन। order

आद्यंत *(आदि+अंत) क्रि.वि. (तत्.)* प्रारंभ से अंत तक, **पर्या.**आद् योयोपांत **उदा.** मैंने पुस्तक को आद्यंत पढ़ लिया है।

आद् याक्षर *[आदि + अक्षर] पुं. (तत्.)* किसी व्यक्ति के नाम के प्रारंभिक अक्षर (जिससे नाम संक्षिप्त हो जाता है।) **जैसे:** जवाहर लाल नेहरू = ज.ला. नेहरु या ज.ला.ने. initials

आद्योपांत *(आद्य+उपांत)* **दे.** आद्यंत आदि (आरंभ) से लेकर उपांत तक।

आधा *[तद्. < अर्ध] वि.* किसी वस्तु के दो समान भागों में से एक भाग। **मुहा.** आधा तीतर आधा बटेर = दो अलग प्रकारों का मेल। आधा-अधूरा।

आधार *पुं. (तत्.)* 1. जिस पर या जिसके सहारे कोई चीज़ खड़ी या टिकी रहती हो। support 2. रेखागणित.-त्रिभुज की नीचे वाली भुजा जिस पर वह स्थित माना जाता है। base

आधारभूत *वि. (तत्.)* मूल, बुनियादी

आधारभूमि [*आधार + भूमि] स्त्री. (तत्.)* वह भूमि स्थान जो आधार बना हो। किसी कार्य या वस्तु का मुख्य आधार। 1. वह भू-खंड जिस पर कोई भवन बना हो। 2. किसी भी कार्य का मूल कारण।

आधारिक *[आधार*+इक] *वि.* आधार संबंधी, आधारभूत; मूल, बुनियादी। जिस पर कोई वस्तु टिकी हो।

आधारित [*आधार* + इत] *वि.* (तत्.) किसी आधार पर टिका हुआ। आधृत, आश्रित, अवलंबित।

आधि *स्त्री. (तत्.)* मन की चिंता, मानसिक बीमारी। **जैसे:** पागलपन-, चिंता, शोक, भय आदि। *तु.* व्याधि।

आधिकारिक [अधिकार + इक] *वि. (तत्.)* अधिकार संपन्न, अधिकारपूर्वक कहा गया। **जैसे:** आधिकारिक जानकारी, आधिकारिक सूचना आदि।

आधिपत्य *[तत्.<अधिपति] पुं.* अधिपति होने का भाव, प्रभुत्व, स्वामित्व, सर्वोपरिता।

आधुनिक *वि. (तत्.)* 1. वर्तमान काल से संबंधित। 2. वर्तमान काल का, चल रहे समय का। **विलो.** पुरातन **तु.** सम-सामयिक।

आधुनिकता *(आधुनिक +ता)(संस्कृ* + आधुनिक) *वि. (तत्.)* आधुनिक (नए) होने का भाव। नए ज़माने का चलन।

आधुनिका [आधुनिक+आ (स्त्री. प्रत्यय] पुं. *(तत्.)* 1. वर्तमान युग की नारी (महिला)। 2. पाश्चात्य संस्कृति में ढली हुई महिला (स्त्री.)।

आधुनिकीकरण [आधुनिक + ई + करण] *पुं. (तत्.)* आधुनिक काल के अनुरूप (या योग्य) करने का कार्य। **जैसे:** शिक्षा का आधुनिकीकरण।

आध्यात्मिक [अध्यात्म + इक] *(वि.) (तत्.)* (भाव-आध्यात्मिकता) आत्मा संबंधी, ब्रह्म और जीव संबंधी। **जैसे:** आध्यात्मिक आनंद, आध्यात्मिक शक्ति spiritual

आध्यात्मिकता *स्त्री. (तत्.)* 1. ब्रह्म एवं जीव संबंधी चिंतन, ज्ञान या सद्वृत्ति। 2. आत्मिक ज्ञान, 3. आत्मा एवं परमात्मा-संबंधी चिंतन शैली एवं ज्ञान।

आनंद *पुं.* किसी प्रिय या इच्छित वस्तु की प्राप्ति पर या अच्छा कार्य होने पर मन में अपने-आप पैदा होने वाला प्रसन्नता का भाव। **पर्या.** खुशी, प्रसन्नता, हर्ष। **विलो.** कष्ट, वेदना।

आनंददाता *पुं.* आनंद देने वाला, मन को चिंतामुक्त बनाने वाला।

आनंददायक [आनंद + दायक] *वि. (तत्.)* आनंद होने वाला **पर्या.** सुखकर **विलो.** कष्टदायक।

आनंदित [आनंद + इत] *वि. (तत्.)* (व्यक्ति) जिसे आनंद हुआ हो हर्षित।

आनंदोत्सव [आनंद + उत्सव] *पुं. (तत्.)* आनंद के लिए मनाया जाने वाला उत्सव।

आन *[तद्. < आणि] (स्त्री.)* प्रतिष्ठा; सम्मान; टेक। **उदा.** भगत सिंह जैसे क्रांतिकारी अपने देश की आन पर मर मिटने को सदा तैयार रहते थे।

आनत *(तत्.) वि.* झुका हुआ, ढाल युक्त, कुछ ढाल बनाकर रखा गया।

आनति *(तत्.) स्त्री.* झुकाव, ढाल।

आनन-फानन *क्रि.वि.* *(अर.)* तत्काल, उसी क्षण, तुरत, फ़ौरन।

आनर्त *पुं.(तत्.)* 1. गुजरात प्रांत के वर्तमान काठियावाड़ और सौराष्ट्र के एक क्षेत्र का प्राचीन नाम। 2. रंगमंच, नाच घर, नाट्यशाला। युद्ध अथवा लड़ाई।

आना *[तद्.<आवन < आगमन] क्रि.* 1. बोलने वाले के पास पहुँचना। **उदा.** इधर आओ। 2. प्रकट होना या सामने दिखना। **उदा.** मुंबई से कब आए। बिजली चार बजे आएगी, पसीना आना, बुखार आना। 3. समय प्रारंभ होना। **उदा.** अब गरमियाँ आएँगी। 4. पौधों में फल-फूल आदि लगना। **उदा.** गमले में फूल आया है। 5. मन के भाव प्रकट होना। **उदा.** मज़ा आना, हँसी आना, रोना आना। 6. ज्ञान होना। **उदा.** यह प्रश्न किसे आता है। अन्य प्रयोग-सपने आना, टॉफ़ी एक रुपए में आती है, पुस्तक में कई बार आया है, अब करोलबाग आएगा, एक नई पिक्चर आई है, किताबें आई है, आदि।

आनाकानी *[तद्.<अन+ आकर्णन = कान लगाकर सुनना] (स्त्री.)* किसी सुनी हुई बात को अनसुनी करने यानी ध्यान न देने का कार्य; टाल-मटोल। **उदा.** मैं जब भी उसे कुछ करने को कहता हूँ, वह आनाकानी करने लगता है।

आनुवांशिक *(तत्.)* [अनु +वंश+इक] वंश परंपरा से प्राप्त, पुश्तैनी।

आनुवांशिक *(तत्.)* [अनु+वंश+इक] वंश परंपरा से प्राप्त, पुश्तैनी।

आप *(तद्.+ आप्त) सर्व.* 1. बड़ों को आदर प्रकट करने के लिए 'तुम' या 'वह' के स्थान पर बहुवचनात्मक प्रयोग **जैसे**: 1. आप यहाँ बैठिए। 2. पं. रामचंद्र शुक्ल हिंदी के आचार्य है। आपने कई पुस्तकें लिखी हैं। 2. स्वयं, खुद **उदा.** मैं आप ही (अपने आप) यह कर लूँगा।

आपत्काल [आपद्+काल] पुं. *(तत्.)* संकट का समय।

आपत्ति *स्त्री.* *(तत्.)* 1. दु:ख, कष्ट, विपत्ति, संकट calamity 2. दु:ख-कष्ट का समय bad days 3. किसी बात में दोष निकालना या उससे असहमत होना। **उदा.** मुझे इस शब्द पर आपत्ति है। objection **पर्या.** एतराज़।

आपत्तिजनक *वि.* *(तत्.)* आपत्ति करने योग्य, जिस पर आपत्ति की जा सके। **उदा.** तुम्हारी आपत्तिजनक हरकतें अब सीमा से बाहर होती जा रही हैं। objectionable

आपत्तिजनक कृत्य *(पुं.) (तत्.)* कोई भी ऐसा काम जो सामाजिक मर्यादा (ओं) का उल्लंघन करने वाला हो।

आपदा *स्त्री.* *(तत्.)* अनजाने में घटित हुई (आ पड़ी) अत्यंत कष्टकर घटनाएँ; घोर विपत्ति। calamity, disaster misfortuine

आपदा प्रबंधन *पुं.* *(तत्.)* बाढ़, भूकंप, महामारी, सूखा जैसी प्राकृतिक दुर्घटनाओं से तत्काल निपटने के लिए अपनाए जाने वाले त्वरित, योजनाबद्ध एवं प्रभावकारी उपाय। desaster management

आपबीती [आप + बीती] *स्त्री.* *(देश.)* वह बात या घटना जो स्वयं अपने ऊपर घटित हुई हो या खुद ने अनुभव की हो।

आपसदारी [आपस+फा. दारी] स्त्री. (**दे.**) एक-दूसरे के बीच का संबंध, **पर्या.** पारस्परिकता।

आपसी [आपस+ई] *वि.* (**दे.**) एक दूसरे से संबंधित, आपस का **पर्या.** पारस्परिक।

आपा [*देशज < आप < आत्म*] *(पुं.)* 1. स्वयं की सत्ता, अपना अस्तित्व, 2. अहंभाव, अभिमान, 3. होश-हवास, सुध-बुध, चेतना। **उदा.** स्त्री. (हिंदी) बड़ी बहिन (के लिए संबोधन) **मुहा.** आपा खोना/तजना = अहंभाव छोड़ना, नम्र हो जाना। आपे में न रहना = अत्यंत क्रोधित होना, होश खो देना। आपे से बाहर होना = क्रोध में स्वयं पर नियंत्रण न रख पाना।

आपात *वि.* *(तत्.)* शा.अर्थ आ गिरा/गिरी) *पुं.* 1. सहसा उत्पन्न हुई (स्थिति जिसके निराकरण हेतु तत्काल कार्रवाई अपेक्षित है।) 2. राष्ट्रीय संकट की स्थिति जिसका पूर्वाभास न हो।)

आपातकाल (आपत्काल) *पुं.* *(तत्.)* शा.अर्थ कष्ट का समय, बुरा समय। वि. अर्थ वह घटना या विषम परिस्थिति जो अचानक ऐसे रूप में सामने आ जाए जिसकी पहले से कोई संभावना या कल्पना न की गई हो। वि.अ. अर्थ अचानक घटित वह विकट स्थिति जिसमें शासन जनता के वैयक्तिक अधिकारों को स्थगित कर देता है

और सारे अधिकार अपने नियंत्रण में कर लेता है। **पर्या.** आपात स्थिति emergency

आपातस्थिति *(आपत्+स्थिति)(स्त्री.) (तत्.)* अकस्मात् आई संकट की घड़ी। emergency

आपाधापी (आप + धाप) *(स्त्री.)* (देश.) अपने हित के लिए कुछ पा लेने हेतु भीड़ में मची अव्यव या धक्कामुक्की। **उदा.** भारत और पाकिस्तान के बीच होने वाले हॉकी मैच के टिकट के लिए दर्शकों में आपाधापी मची हुई है।

आपूर्ति *(तत्.)* [**आ + पूर्ति**] *स्त्री.* किसी वस्तु के अभाव को दूर करने के लिए उस वस्तु को आवश्यकतानुसार उपलब्ध करा देने की क्रिया; संभरण, पूर्ति करने का भाव, उपलब्ध करना। **पर्या.** पूर्ति।

आपेक्षिक *वि.* [**अपेक्षा** + **इक**] किसी अन्य की अपेक्षा, तुलना या अनुपात के सदंर्भ में; सापेक्ष, परस्पर आश्रित। **उदा.** दिल्ली की तुलना में शिमला की आपेक्षिक आर्द्रता उसकी ऊँचाई और हरियाली पर निर्भर करती है।

आप्रवासी *तत्.* [**आ** + **प्रवास** + **ई**] *वि./पुं.* किसी देश विशेष में अन्य देश से आकर बस जाने वाला व्यक्ति या व्यक्तियों का समूह। **उदा.** मारीशस में आप्रवासी भारतीयों की संख्या अत्यधिक है। immigrant **तु.** उत्प्रवासी।

आफ़त *स्त्री. (अरबी)* परेशानी में डालने वाली या कष्टकर स्थिति। विपत्ति, कष्ट, दु:ख। **उदा.** आफ़त आना; आफ़त मचाना; आफ़त खड़ी करना; आफ़त मोल लेना।

आबंटन *(तत्.)* [**आ + बंटन**] *पुं.* (i) किसी वस्तु-समूह का अनेक के बीच बँटवारा, बाँटना, विभाजित करना; वितरण करना, अलग रखना। (ii) किसी वस्तु समूह का विविध कार्यों के लिए आनुपातिक नियतन।

आब *(स्त्री.) (फा.)* चमक, तडक़ भडक़, शोभा। *पुं.* पानी।

आबरू *स्त्री. (फ़ा.)* इज़्ज़त, आत्म सम्मान, प्रतिष्ठा, शील। **मुहा.** 1. आबरू उतारना = इज़्ज़त मिट्टी में मिलाना। 2. आबरू में बट्टा लगना = इज़्ज़त में कलंक, धब्बा या दाग लगना। 3. आबरू लुटना = स्त्री का सतीत्व नष्ट होना।

आबाद *(फा.)* बसा हुआ (गाँव, नगर), बस्ती वाला इलाका।

आबादी *स्त्री. (फ़ा)* 1. स्थान विशेष पर बसे हुए/रहने वाले लोगों की कुल संख्या। **पर्या.** जनसंख्या population 2. किसी भौगोलिक इकाई के भीतर एक समय विशेष में रहने वाले लोगों की संख्या, जनसंख्या।

आबोदाना *पुं.(फा.)* 1. जल और अन्न या अन्न-जल 2. जीविका, रोज़ी। **जैसे:** जब तक यहाँ का आबोदाना रहेगा, तब तक रहेंगे। **मुहा.** आबोदाना उठ जाना=किसी स्थान विशेष में जीविका का साधन न रह जाना।

आबोहवा [अब + ओ < और हवा] *पुं. (फा.)* सर्दी-गर्मी स्वास्थ्य आदि के विचार से किसी देश की प्राकृतिक स्थिति; जलवायु। **प्रयो.** कश्मीर की आबोहवा बहुत अच्छी है।

आभा *(स्त्री.) (तत्.)* कांति, चमक-दमक। **उदा.** नवरात्रि में दुर्गा की सजी-धजी मूर्तियों की दर्शनीय होती है।

आभार *पुं. (तत्.)* सामान्य या विशेष अवस्था में सहयोग करने वाले के प्रति अथवा किसी के द्वारा उपकृत होने पर उसके प्रति प्रकट की गई कृतज्ञता। **जैसे:** रक्त देने पर मैंने मित्र के प्रति आभार व्यक्त किया। **पर्या.** एहसान।

आभारी *वि. (तत्.)* आभार मानने वाला, कृतज्ञ (i) जिसके साथ कोई उपकार किया गया हो; (ii) जो दूसरों द्वारा अपने पर किए गए उपकारों को दिल से महसूस करे। अहसानमंद।

आभास *पुं. (तत्.)* [आ+भास] (i) पूर्व ज्ञान, भावी परिणाम की झलक। **उदा.** जन भावना देखकर मुझे आभास हो गया था कि इस बार आम चुनाव में अमुक दल विजयी होगा। (ii) प्रतिबिंब, छाया। (iii) मिथ्या ज्ञान, भ्रम जैसे रात्रि में रस्सी देखकर साँप का आभास होना, रस्सी को साँप मान लेना।

आभिजात्य *वि. [(तत्. <अभिजात]* कुलीनों से संबंधित, श्रेष्ठवंशीय।

आभूषण *पुं. (तत्.)* किसी की शोभा या सुंदरता को बढ़ाने वाली वस्तु; जेवर, गहना, अलंकार।

आमंत्रण *पुं. (तत्.)* [आ+मंत्र+न] बुलावा, बुलाना, आह्‌वान।

आमंत्रित [आ+मंत्र+इत्] *(तत्.) वि.* बुलाए गए, आहूत।

आम *वि. (अर.)* 1. जिसमें जन-साधारण की भागीदारी हो। **जैसे**: आम चुनाव, 2. साधारण, मामूली **जैसे:** आम आदमी, 3. जनसाधारण के लिए खुला। **जैसे**: आम जलसा, दरबारे आम। **प्रयोग** खुले आम = सबके सामने (न कि छिपे तौर पर)। सर्वव्यापक, सार्वजनिक **जैसे**: आम माफ़ी, **विलो.** खास *पुं. [तद्.<आम्र]* उष्णकटिबंधीय और वसंत ऋतु में फलने वाला वृक्ष और उसके फल जिनके कड़वे होने पर उनकी सब्जी बनाई जाती है या अचार डाला जाता है और पकने पर या तो चूसा जाता है अथवा काट कर खाया जाता हैं mango

आम आदमी *पुं. (तत्.)* [आ + आदमी] किसी भी देश का वह नागरिक जिसे कोई विशेष पद या ओहदा प्राप्त न हो; वह साधारण या मामूली आदमी जिसकी गिनती गिने-चुने लोगों में न होती है। **उदा.** इस महँगाई में आम आदमी का जीवन सहज नहीं है।

आम चुनाव *पुं. [अर. तद्.]* (भारतीय संदर्भ में) लोकसभा के लिए होने वाली चुनाव प्रक्रिया जिसमें पूरे देश के मतदाता भाग लेते हैं। **पर्या.** आम निर्वाचन general election

आम जनता *(स्त्री.) (अ.* तत्.) किसी देश, प्रदेश या स्थान विशेष के विशेषाधिकार रहित सामान्य जनसमूह की वाचक संज्ञा, साधारण जनता, जनता public

आम सभा (अ.) *(स्त्री.)* 1. किसी संगठन द्‌वारा आयोजित वह सभा जिसमें सभी सदस्य सम्मिलित हो सकें। 2. किसी सार्वजनिक हित से संबंधित विषय पर आयोजित ऐसी सभा जिसमें सम्मिलित होने और विषय विशेषज्ञों तथा जन-प्रतिनिधियों (नेताओं) के विचार सुनने के लिए स्थानीय जनता सार्वजनिक सूचना के माध्यम से आमंत्रित हो। **पर्या.** सार्वजनिक सभा public meeting

आम हड़ताल *(स्त्री.) (अर.*+तद्.<हट्ट+ताला) 1. जन-सामान्य की हड़ताल, 2. अपनी माँगें न माने जाने पर अथवा किसी अन्याय के विरुद्‌ध अपना असंतोष व्यक्त करने के लिए संबंधित असंतुष्ट दल द्‌वारा सभी व्यवसायियों, कर्मचारियों या जनसाधारण से भी काम बन्द रखने का आह्‌वान अथवा जोर-जबरदस्ती से कामकाज बंद करवाने का प्रयत्न। general strike

आमतौर पर *क्रि.वि. (अर.)* सामान्य रूप से; प्राय:। **विलो.** विशेषतौर पर, खासकर। **उदा.** आमतौर पर बंगाल के लोग चावल और मछली भोजी हैं।

आमद *स्त्री. (फ़ा.)* 1. आगमन, आना, 2. आपूर्ति, 3. आय।

आमदनी *स्त्री. (फ़ा.)* आया हुआ या कमाया गया धन। **पर्या.** आय।

आमना-सामना *पुं. (देश. पहला पद अनु.)* 1. मुलाकात, भेंट **उदा.** मेले में हमारा आमना-सामना भर हुआ। 2. टकराव, संघर्ष **उदा.** उन दोनों के बीच आमना-सामना जरूर हुआ किंतु जीत किसी की नहीं हुई।

आमने-सामने *क्रि.वि. [देश.* पहला पद अनु.] एक दूसरे के समक्ष या मुकाबले में।

आमरण [**आ :तक+मरण**] *क्रि.वि.(तत्.)* जब तक मृत्यु न हो जाए तब तक, मृत्युपर्यंत **पर्या.** आजीवन, जीवनभर, ज़िंदगी भर।

आमरण अनशन *पुं. (तत्.)* किसी माँग की पूर्ति को सक्षम प्राधिकारी द्‌वारा अस्वीकृत कर दिए जाने पर व्यक्ति या व्यक्ति समूह द्‌वारा की गई ऐसी सार्वजनिक घोषणा की जब तक वह माँग मानी नहीं जाती तब तक वह व्यक्ति या व्यक्ति समूह अन्नजल ग्रहण नहीं करेगा, भले ही ऐसी स्थिति में उसकी मृत्यु ही क्यों न हो जाए। fast unto death

आमादा *वि. (फ़ा.)* तत्पर, उद्‌यत, तैयार **उदा.** वह लड़ने को आमादा हो गया।

आमाप *पुं. (तत्.)* किसी पदार्थ की मात्रा का निर्धारण करने वाली युक्ति। पैमाना, कसौटी, परख।

आमापन *पुं.* किसी पदार्थ की मात्रा का निर्धारण करने वाली क्रिया **जैसे:** बहुमूल्य धातुओं की शुद्धता का आमापन।

आमाशय *पुं.* *(तत्.)* [आम = बिना पका भोजन + आशय = स्थान] पेट के अंदर की वह थैली जहाँ दाँतों से चबा हुआ भोजन ग्रासनली के माध्यम से पहुँचता और पचता है। stomach

आमुख *पुं.* *(तत्.)* 1. किसी भी कृति की प्रस्तावना (प्रीएंबल)। **पर्या.** भूमिका, प्राक्कथन, पुरोवाक आदि। 2. **पत्र.** किसी समाचार के मुख्य अंश को प्रमुखता से व्यक्त करने वाला प्रारंभिक अनुच्छेद जो प्राय: काले या बड़े अक्षरों से योजित होता है। intro, lead **पर्या.** मुखड़ा।

आमूल *(क्रि.वि.)* *(तत्.)* जड़ से लेकर; जड़ तक (समूचा)। **उदा.** भारी आँधी में कई वृक्ष आमूल नष्ट हो गए।

आमूल-चूल *क्रि.वि.* *(तत्.)* शा.अर्थ 1. (वृक्ष की) जड़ से शिखर (ऊपरी चोटी)। **जैसे**: आमूल चूल परिवर्तन = संपूर्ण परिवर्तन। radical change **उदा.** फ्रांसीसी क्रांति ने मध्यकालीन यूरोप में आमूलचूल परिवर्तन के बीज बो दिए।

आमोद-प्रमोद *पुं.* *(तत्.)* मन को खुशियों से भर देने वाले हँसी-खुशी के कार्यकलाप। **पर्या.** मौज मस्ती meriment **उदा.** खेल भवन में बालकों के आमोद-प्रमोद के सभी साधन उपलब्ध हैं।

आम्र *पुं.* *(तत्.)* आम का पेड़, आम का फल **दे.** आम (पुं.)

आय *स्त्री.* *(तत्.)* शा.अर्थ आना, आगम, आवक। **अर्थ.** किसी निश्चित समयावधि में (विशेषकर एक वर्ष में) किसी व्यक्ति विशेष को होने वाली प्राप्ति जो मुद्रा में आँकी जाती है। **पर्या.** आमदनी income **विलो.** व्यय, खर्च।

आयकर शा.अर्थ आय पर लगने वाला कर। अर्थ नागरिकों, कंपनियों और अन्य व्यावसायिक प्रतिष्ठानों की वार्षिक आय पर केन्द्र सरकार द्वारा लगाया जाने वाला प्रत्यक्ष कर। income tax

आयत *वि.* *(तत्.)* शा.अर्थ विस्तृत, चौड़ा, विशाल; खींचा गया। 1. *पुं.* *(तत्.)* (रेखागणित) चार भुजाओं वाली वह आकृति जिसके चारों समकोण वाले यानी 90° वाले और आमने-सामने की भुजाएँ समान लंबाई वाली होती हैं। rectangle 2. *स्त्री.* *(अर.)* कुरान का कोई वाक्य।

आयतन *[आयत+न]* *पुं.* किसी ठोस पिंड द्वारा घेरी गई कुल जगह। इसका मात्रक घन होता है volume

आयतन कोण *पुं.* *आपतित* किरण तथा अभिलंब के बीच का कोण।

आयताकार *[आयत + आकार]* *(तत्.)* आयत के आकार वाला/वाली। **टि.** आयत-चार भुजाओं वाली वह आकृति जिसके सभी कोण समकोण (90°) होते हैं तथा लंबाई अधिक तथा चौड़ाई कम होती है किंतु आमने सामने की भुजाएँ बराबर होती है।

आयन मंडल *पुं.* *(तत्.)* पृथ्वी के चारों ओर फैले वायु के आवरण के मध्य क्षेत्र का वह भाग जहाँ से रेडियो तरंगें परावर्तित होकर पृथ्वी के सुदूर क्षेत्रों में संचरित होती है। inospear **टि.** आयन (ion): परमाणु या परमाणु समूह जिसमें इलेक्ट्रॉनों की न्यूनाधिकता के कारण ऋण (–) या धन (+ आवेश होता है)।

आया *स.क.* *(तद्.)* 1. 'आना' क्रिया का एकवचनांत भूतकाल का रूप। *स्त्री.* *(पुर्त.)* बच्चों की देखभाल करने वाली महिला। **पर्या.** दाई, धाय।

आयातित *वि.* [आयात + इत प्रत्यय] (तत्.) वह वस्तु या माल जो व्यापार हेतु दूसरे देश से अपने देश में मँगाया गया हो। imported **विलो.** निर्यातित।

आयाम *पुं.* शा.अर्थ 1. फैलाव, लंबाई। 2. नियमन, रोक जैसे प्राणायाम = प्राणवायु का नियमन। **भौ.** किसी आवर्त गति वाले दोलन या कंपन में दोलन या कंपन करने वाली वस्तु का मध्य स्थिति से दोनों ओर महत्तम विस्थापन। amplitude **टि.** सामान्य व्यवहार में 'डाइमेन्शन' के लिए 'आयाम' पर्याय का प्रयोग हो रहा है, किंतु विज्ञान विषयों में 'आयाम' डाइमेन्शन नहीं है, 'ऐमप्लिट्यूड' है। इन तकनीकी शब्दों के प्रयोग में सावधानी बरतना अनिवार्य है।

आयामी *वि.* एकाधिक आयामों से युक्त। **जैसे:** बहुआयामी व्यक्तित्व; विस्तृत आयाम वाला। 1. लंबा-चौड़ा **दे.** आयाम (सा.अर्थ) 2. नियम अथवा नियंत्रण में रखने वाला।

आयु *स्त्री.* *(तत्.)* 1. जन्म से मृत्यु तक का समय। life 2. जन्म से शणनाकाल तक का समय (वर्षों में) जिसका मानक वर्ष है और जिसकी अंतिम सीमा मृत्यु है। **पर्या.** वय, उम्र, जीवनकाल। age

आयु. रोग विशेष जिसके प्रभाव से शरीर का कोई अंग निश्चेतन अवस्था वाली या शक्तिहीन हो जाता है। लकवा (**दे.** पक्षाघात)

आयुक्त *पुं.* *(तत्.)* 1. एकाधिक जिलों के मंडल कमिश्नरी का सबसे बड़ा प्रशासनिक अधिकारी। 2. किसी आयोग का सर्वोच्च अधिकारी।

आयुध निर्माणी *स्त्री.* *(तत्.)* सैन्य कार्रवाई में प्रयुक्त होने वाले अस्त्र-शस्त्रों के निर्माण और संयोजन की शाला। ordnance factory

आयुध *पुं.* *(तत्.)* युद्ध के हथियार; सेना में काम आने वाले अस्त्रशस्त्र। ordnance, arms and ammunition

आयुधशाला *स्त्री.* *(तत्.)* रक्षाबलों द्वारा की जाने वाली कार्रवाइयों में प्रयुक्त अस्त्र-शस्त्रों की सुरक्षा और संग्रह का आगार। ordnance depot

आयुर्विज्ञान [आयु: + विज्ञान] *पुं.* *(तत्.)* 1. आयु संबंधी विज्ञान medical science 2. रोगों की चिकित्सा यानी उपचार से संबंधित विज्ञान। **पर्या.** चिकित्साशास्त्र medicine

आयुर्वेद [आयु: : वेद] पुं. *(तत्.)* 1. ऋग्वेद या कुछ विद् वानों के मतानुसार अथर्ववेद का एक उपवेद जिसमें स्वास्थ्य एवं दीर्घ आयु के सिद्धांतों की चर्चा है। 2. (ऐलोपेथी, होमियोपेथी जैसी विदेशी चिकित्सा पद्धतियों की तुलना में) प्राचीन भारतीय चिकित्सा पद्धति।

आयुवर्ग [आयु + वर्ग] *पुं.* *(तत्.)* 1. व्यक्तियों का आयु के अनुसार विभाजन या श्रेणीकरण। 2. लगभग समान उम्र के व्यक्तियों या छात्रों का समूह। **उदा.** 15 से 20 वर्ष तक का आयु वर्ग।

आयुष्मान [आयुष्+मान्-प्रत्य.] *स्त्री.* *(आयुष्मती)* *(वि.)* *(तत्.)* लंबी आयु वाला दीर्घजीवी, चिरंजीवी।

आयोग *पुं.* *(तत्.)* 1. एक या एक से अधिक निर्दिष्ट अधिकारसंपन्न व्यक्तियों का वह समूह जिसे किसी निर्दिष्ट कार्य या घटना की छानबीन करने तथा उसके संबंध में पूर्व निश्चित अवधि में अपनी रिपोर्ट देने के लिए सरकार द्वारा नियुक्त किया गया हो। commission 2. किसी निर्दिष्ट कार्य के सम्यक् निष्पादन के लिए एक अध्यक्ष के अधीन स्थापित स्थायी या अस्थायी अवधि का अभिकरण।

आयोजक *वि./पुं.* *(तत्.)* किसी नियत कार्य (**जैसे:** बैठक, संगोष्ठी, सभा आदि की संपूर्ण व्यवस्था की देखभाल करने वाला व्यक्ति या व्यक्ति समूह। organizer **दे.** आयोजन।

आयोजन *पुं.* *(तत्.)* समुचित योजना बनाकर किसी कार्य के आरंभ से लेकर अंत तक पूरा करने की व्यवस्था। **जैसे:** वार्षिकोत्सव का आयोजन, प्रतियोगिता खेल-कूद का आयोजन।

आयोजना *स्त्री.* *(तत्.)* **दे.** 'आयोजन'।

आयोजित *वि.* *(तत्.)* 1. जिसका आयोजन किया गया हो। **दे.** 'आयोजन'।

आरंभ *पुं.* 1. किसी भी कार्य के प्रवर्तन का शुरूआती चरण। 2. शुरू होने की क्रिया भी/उत्पत्ति।

आरंभिक [**आरंभ + इक**] *वि.* *(तत्.)* 1. आरंभ का, शुरू का। 2. किसी कार्य को शुरू करने से पहले के वे काम, जिन पर आगे का काम आधारित है। preliminary

आरक्षण *पुं.* *किसी* पद, आसन सुविधा आदि को सुनियोजित ढंग से, निश्चित करना। **जैसे:** रेलवे आरक्षण, अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति आदि के लिए पदों का आरक्षण। reservation

आरक्षित *वि.(तत्.)* जिसका आरक्षण किया गया हो। reserved **दे.** आरक्षण।

आरक्षी *वि.(तत्.)* पूरी तरह से रक्षा करने वाला। पुलिस का पर्याय police

आरजू *(स्त्री.)* *(फा.)* विनय, विनती, प्रार्थना, अनुरोध। **उदा.** आप से मेरी आरजू है कि कल आप मेरे घर पधारें।

आरती *स्त्री.* [तद्.<आरात्रि] 1. देवमूर्ति के सामने भक्ति सूचक दीपक घुमाने की क्रिया। **जैसे:** आरती उतारना। 2. वह दीप पात्र जिसे देवमूर्ति के आगे घुमाया जाए। 3. वे स्रोत या स्तुतियाँ जो इस अवसर पर गाई जाएँ। **जैसे:** आरती गाना।

आर-पार [**आर=इधर का/यह किनारा+पार=उधर का/दूसरा किनारा**] *क्रि.वि. (देशज.)* इस सिरे से उस सिरे तक, एक सिरे से दूसरे सिरे तक। **उदा.** लकड़ी में आर-पार छेद है।

आरा *(***तद्.** < **आदारक)** *(पुं.)* लोहे की बड़ी दाँतेदार पटरी जिससे लकड़ी चीरी जाती है।

आराधक *वि. (तत्.)* आराधना करने वाला **दे.** आराधना।

आराधना *स्त्री. (तत्.)* मूल अर्थ प्रसन्न करने के विविध उपाय। **पर्या.** अर्थ पूजन, पूजा, उपासना, अर्चना। worship

आराम तलब *वि. (फ़ा.)* आराम चाहने वाला (यानी मेहनत न करने वाला); **पर्या.** आरामपसंद।

आराम *पुं. (फ़ा.)* 1. शारीरिक और मानसिक परिश्रम के बाद शरीर और मन को विश्राम देने की स्थिति, थकावट मिटाने का कार्य। रेस्ट 2. बीमारी की स्थिति में पहले से कुछ/बहुत कमी। **उदा.** इस दवा के लेने से मुझे अब आराम महसूस हो रहा है। relief

आरामगाह [**आराम + शाह**] *(स्त्री.)* (फा.) आराम करने का कमरा, भवन आदि। **पर्या.** विश्राम स्थान/स्थल rest house **दे.** 'आराम'

आरामदेह [आराम+देह] *वि. (फा.)* आराम/देने वाला/वाली; विश्रामदायक।

आरी (तद्.<आदारिक) *(स्त्री.)* लकड़ी चीरने का एक हस्तचालित छोटा दाँतीदार औज़ार। hand saw **दे.** 'आरा'।

आरोग्य *पुं. (तत्.)* अरोग (नीरोग) होने की स्थिति भाव। **पर्या.** स्वास्थ्य। **उदा.** लंबी बीमारी के बाद कक्षा में उपस्थिति से पहले आरोग्य प्रमाण पत्र प्रस्तुत करना अनिवार्य है।

आरोप पत्र *पुं. (विधि:*) वह पत्र जिसके द्वारा किसी को अपराधी घोषित करने का आरोप लगाया गया है। charge sheet **दे.** आरोप।

आरोप *पुं. (तत्.)* 1. **विधि.** किसी पर अपराधी होने का लगाया गया चार्ज 2. एक पदार्थ में दूसरे पदार्थ के गुणधर्म की की गई कल्पना का दोषारोपण, दोषारोपण, इलजाम। 3. कर आदि लगाना, उगाहना या लेना।

आरोपक *वि/पुं. (तत्.)* 1. आरोप लगाने वाला (व्यक्ति) **दे.** आरोप। 2. पौधा रोपने वाला (व्यक्ति) **दे.** आरोपण।

आरोपण *पुं. (तत्.)* 1. आरोप लगाने की क्रिया या भाव। 2. एक जगह से उखाडक़र दूसरी जगह रोपने की अथवा कलम लगाने की क्रिया।

आरोपपत्र *पुं. (तत्)* 1. प्रशा. अनुशासन भंग करने वाले कर्मचारी को दिया गया उसके कदाचरणों/ दोषों का वह औपचारिक पत्र जिसके अनुसार उसके विरुद्ध कार्रवाई का सूत्रपात किया जाता है। 2. **विधि.** अभियोजन पक्ष द्वारा अदालत में अभियुक्त के खिलाफ़ दाखिल किया गया दस्तावेज। charge sheet

आरोपित *वि.* 1. **विधि**. जिस पर आरोप लगा हो या लगाया गया हो। accused charged 2. **कृषि**. एक जगह से उखाडक़र दूसरी जगह रोपा गया। transplanted

आरोपी *पुं.* वह व्यक्ति जिस पर अपराध करने का दोष लगाया गया हो ओर जो अपने पर आरोपित अपराध को मिथ्या सिद्ध करने के लिए प्रतिवादी हो।

आरोह *पुं. (तत्.)* ऊपर की ओर जाने (चढ़ने) का भाव। **विलो.** अवरोह।

आरोहण *पुं. (तत्.)* 1. ऊपर की ओर बढ़ना/चढ़ना। **जैसे**: पर्वतारोहण [पर्वत + आरोहण]। 2. सवारी करना **जैसे**: अश्वारोहण (अश्व + आरोहण)।

आरोही लता *स्त्री. (तत्.)* वह पौधा जो किसी सहारे के चारों ओर लिपटकर अथवा अपने प्रतान tendril आदि के द्वारा उससे चिपके रहकर ऊपर को बढ़ता है। climber

आर्गान *पुं. (अं.)* **रसा.** रंगहीन, गंधहीन, अधात्विक, अक्रिय गैसीय तत्व। प्रतीक Ar, परमाणु क्रमांक 18, आपेक्षिक परमाणु द्रव्यमान 39.948

आर्त *वि. (तत्.)* शारीरिक चोट खाने या मानसिक पीड़ा सहने के कारण उत्पन्न।

आर्तक्रंदन *पुं.* **[आर्त+क्रंदन]** *(तत्.)* पीड़ा जन्य ध्वनि, दु:ख से चिल्लाना, दर्द से कराहना। **दे.** 'आर्त'

आर्तनाद *पुं. (तत्.)* पीड़ा के कारण मुख से निकलने वाली दीर्घकालीन ध्वनि/आवाज़।

आर्थिक [**अर्थ+इक**] *वि. (तत्.)* धन अर्थात् रुपए-पैसे से संबंधित। **उदा.** उसकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है। economic

आर्द्र *वि. (तत्.)* गीला, नम। ला.अर्थ 1. मृदु, कोमल। 2. दयालु।

आर्द्रता [आर्द्र+ता] *स्त्री. (तत्.)* 1. गीलापन, 2. हवा में व्याप्त भाप की मात्रा, नमी। 3. ला.अर्थ मन का पसीज जाना; दयालुता।

आर्द्रतामापी *पुं. [आर्द्रता-मापी] (तत्.)* **भौति.** वायु में विद्यमान जलवाष्प या नमी मापने का विशेष मंच।

आलंबन *(पुं.)(तत्.)* 1. सहारा; लटकन। 2. साहि. शास्त्र विभाव का एक भेद जिस पर भाव या रस टिकता यानी अवलंबित होता है। **जैसे:** श्रृंगार रस में नायक-नायिका।

आलपिन *(स्त्री.) पुर्त.* वह छोटी और पतली लोहे के तार से बनी कील जिसका एक सिरा सुई की नौंक जैसा होता है तो दूसरे सिरे पर घुंडी होती है। यह कागजों को आपस में जोड़ने के काम आती है।

आलम *पुं. (अर.)* 1. संसार, दुनिया, जगत। **जैसे**: आलमपनाह = संसार का रक्षक, आलमगीर = संसार को जीतने वाला। 2. दुनिया के लोग। 3. भीड़, जनसमूह **उदा.** क्या आलम इकट्ठा कर लिया है। 4. दृश्य, नज़ारा **उदा.** काश्मीर का आलम ही विचित्र है। 5. (खराब) दशा, स्थिति, अवस्था **उदा.** तुमने अपना यह कैसा आलम बना रखा है।

आलमारी दे. 'अलमारी'।

आलय *पुं. (तत्.)* 1. घर, मकान। 2. स्थान **जैसे:** विद्यालय, पुस्तकालय, देवालय।

आलस *पुं. [तत्.< आलस्य]* 1. कार्य करने का उत्साह न होना। 2. कार्य करने का मन न होना, बिना कारण कार्य को टालते रहना। **पर्या.** सुस्ती, काहिली।

आलसी *वि./पुं. जो* आलस करता हो। काम करने में ढीलापन दिखाने वाला/बरतने वाला (व्यक्ति)। **पर्या.** सुस्त, काहिल, निरुत्साही।

आला *पुं. [तद्. < आलय]* दीवार में बना चौकोर स्थान जहाँ कोई वस्तु रखी जा सके। **पर्या.** ताखा। *पुं.* (अर.) 1. हथियार, औज़ार, 2. चिकित्सकों का एक उपकरण stethoscope *वि. (अर.)* 1. प्रथम श्रेणी का। **जैसे**: आला दरज़े का विद्वान/बेवकूफ़। 2. प्रमुख, प्रधान। **जैसे:** वज़ीरे आला (प्रधानमंत्री)

आलाप *(पुं.) (तत्.)* 1. आपस में होने वाली बातचीत, संभाषण। **उदा.** वहाँ दो संत परस्पर आलाप कर रहे थे। 2. संगीत में राग को मात्र स्वरों में प्रकट करना या स्वरों का विस्तारपूर्वक साधन, रागविस्तार, तान। **उदा.** गायन से पहले उन्होंने एक लंबा आलाप प्रस्तुत किया।

आलिंगन *पुं. (तत्.)* दो व्यक्तियों का परस्पर बातों में भरकर और गले मिलना। **उदा.** मेरा मित्र वर्षों बाद विदेश से लौटा तो मैंने उसे आलिंगन बद्ध कर लिया।

आलीशान (आली [अ.) बड़ा, ऊँचा + शान (अर.) = भव्यता, शोभा; प्रतिष्ठा] *वि.* जो देखने, सुनने में बड़ी भव्यता वाला हो। शानदार, भव्य। **जैसे:** आलीशान इमारत।

आलू *पुं. [तद्. < आलुक/आलूक]* खेतों में जमीन के अंदर गोलाकार गाँठ के रूप में पैदा होने वाला एक प्रकार का कंद, जिसमें मंड (स्टार्च) की प्रधानता होती है और जिसकी सब्जी बनती है।

आलूबुखारा *पुं. (फा.)* आलूचा नामक वृक्ष का सुखाया हुआ फल, जो औषधि के भी काम आता है।

आलेख *पुं. (तत्.)* 1. विषय विशेषज्ञ द्वारा अपने विषय पर किसी सभा-सम्मेलन या विचार गोष्ठी में पढ़ा जाने वाला स्वत:पूर्ण लेख। paper 2. रेडियो, दूरदर्शन, फिल्म आदि का पाठ या पटकथा। script

आलेखन *(सं.) (तत्.)* शब्दों से या रेखाओं से चित्रण करना। कोई रचना तैयार करना। लिखना तस्वीर बनाना चित्रांकन। शा. अर्थ शब्दों से या रेखाओं से तैयार की गई कोई कृति।

आलोक *पुं. (तत्.)* प्रकाश; चमक, ज्योति लाइट

आलोकित *वि. (तत्.)* प्रकाशित

आलोचक *(वि.) (तत्.)* किसी व्यक्ति या कथन वस्तु को देख-सुनकर गुण-दोष की दृष्टि से उसकी विवेचना करने वाला (व्यक्ति)। **पर्या.**

समालोचक। **उदा.** कवि का कार्य है रचना करना और आलोचक का कार्य है उसे परखना (गुण-दोषों की विवेचना करना)। 2. किसी व्यक्ति, वस्तु या कथन को देख-सुनकर उसके गुणों की अपेक्षा दोषों को अधिक उजागर करने वाला (व्यक्ति)।

आलोचना *स्त्री.(तत्.)* 1. किसी बात, कार्य, साहित्यिक रचना या व्यक्ति आदि के गुण-दोषों तथा उपयोगिता के विषय में किया जाने वाला दो टूक विचार। **पर्या.** टीका-टिप्पणी, समीक्षा। 2. निंदा या बुराई, कमियाँ गिनाने का कार्य। **जैसे**: कठोर आलोचना। 3. भले-बुरे की परख।

आल्हा *(व्यक्तिवाचक पुं. संज्ञा)* 1. एक योद्धा का नाम जो परमर्दिदेव के सेनापति थे। 2. आल्हा एक वीरगाथा है-जिसमें आल्हा और उसके छोटे भाई ऊदल के कार्यों का वर्णन है। 2. 31 मात्राओं वाला वीर छंद। 3. आल्हा-ऊदल के वीरतापूर्ण जीवन का यशवर्णन करने वाली पद्धात्मक गाथा।

आवभगत *स्त्री. (देशज)* आतिथ्य, (प्रसन्नता के साथ किसी का) स्वागत सत्कार। **जैसे**: परिवार के साथ चेन्नई पहुँचने पर मित्र ने हमारी बड़ी आवभगत की।

आवरण *पुं. (संज्ञा) (तत्.)* सा.अर्थ 1. किसी वस्तु को ढकने, छिपाने का सूचक भाव। 2. आड़ करने वाली या ढकने वाली वस्तु। **जैसे**: परदा। 3. पुस्तक को खराब होने से बचाने के लिए उस पर मढ़ा या चढ़ाया गया कागज़, प्लास्टिक आदि का खेल।

आवर्त [आ+वर्त] *पुं. (तत्.)* व्यु.अर्थ पूरी तरह से घूमना या चक्कर खाना। 1. पानी का भँवर। 2. एक निश्चित अवधि में पूँजी या माल के उपयोग की बारंबारता। **जैसे**: पण्यावर्त, पूँजी-आवर्त। 3. व्यावसायिक प्रतिष्ठान द्वारा एक निर्दिष्ट अवधि में किया गया कारोबार। turnover

आवर्तकाल *पुं.* 1. घटनाओं के पुनरावर्ती क्रम में वह समय जिसमें घटना का एक चक्र पूरा हो जाता है। **उदा.** लोलक के एक सिरे से दूसरे सिरे तक पहुँच कर फिर से पहले सिरे तक पहुँचने की अवधि। 2. वह समयावधि जिसमें बार-बार घटने वाली घटना एक बार पूरी घटती है। **जैसे:** किसी ग्रह की कक्षीय गति का आवर्त काल। 3. महिलाओं में रजस्वला होने की सामान्यत: तीन दिनों वाली अवधि।

आवर्तन *पुं.(तत्.)* चक्कर काटने की क्रिया, घूम-फिर कर पहले वाली स्थिति में आ जाना। **दे.** 'आवर्त'।

आवर्तिता *स्त्री.* बार-बार घटित होने का भाव। **जैसे**: राम के भाई के मित्र के साले के घर में। यहाँ संज्ञा + के का आवर्तन द्रष्टव्य है।

आवर्ती *वि. (तत्.)* 1. जो चारों ओर घूमता हो या चक्कर लगाता हो। 2. बार-बार होने वाला, आवर्तक। 3. एक निश्चित अवधि के पश्चात् बार-बार नियमित रूप से होने वाला, या किया जाने वाला **जैसे:** आवर्ती जमा, आवर्ती ब्याज, आवर्ती भूकंप आदि।

आवर्धक लेन्स *पुं.(अं.) वह* उत्तल लेन्स जो छोटी वस्तु को बड़े आकार में दिखाता हो।

आवर्धन *पुं.(तत्.)* किसी भी वस्तु/कथन को आकार-प्रकार में बढ़ाकर/बढ़ा-चढ़ाकर दिखाना/प्रस्तुत करना।

आवर्धित *पुं.(तत्.)* जिसके आकार को बड़ा बनाकर दिखाया गया हो, बढ़ाया या फैलाया हुआ।

आवश्यक *वि.(तत्.)* 1. जो (कार्य) बिना विलंब के अवश्य होना चाहिए, **पर्या.** जरूरी urgent 2. जिसे छोड़ा न जा सके, जिसके बिना काम न चल सके। अनिवार्य necessary

आवश्यकता *स्त्री. (तत्.)* ऐसी वस्तु जिसे छोड़ा न जा सके, जरूरी होने या लगने का भाव; ज़रूरत।

आवा (भट्टी) **दे.** आँवाँ।

आवागमन [आवह>आवा = आना + गमन = जाना] पुं. *(तत्.)* 1. लोगों, वाहनों आदि के आने और जाने की सूचक दोनों क्रियाओं का सम्मिलित नाम। **जैसे:** जुलूस की वजह से बहादुरशाह जफ़र मार्ग पर आवागमन घंटों प्रभावित रहा। 2. जन्म-मरण का चक्र।

आवाज़ *स्त्री. (फ़ा.)* 1. शब्द, ध्वनि, नाद। 2. बोली, वाणी, स्वर। **मुहा.** आवाज़ देना/लगाना = पुकारना, बुलना। आवाज़ उठाना = अपनी बात ज़ोर से रखना (सामान्यत: विरोध में बात कहना)

आवाज़ बैठना = मुख से आवाज़ का साफ़ न निकलना। 3. संदेश उदा. वक्त की आवाज़ है....

आवाजाही [आवा + जाही] *(फा.)* आने और जाने की सूचक दोनों क्रियाओं का सम्मिलित नाम। **पर्या.** आवागमन।

आवाजाही *स्त्री.* बार-बार या निरंतर आने और जाने की क्रिया।

आवारा *वि./पु. (फा.)* बिना किसी नियंत्रण के व्यर्थ इधर-उधर भटकने वाला। **पर्या.** आवारागर्द।

आवारागर्द *वि./पुं. (फा.)* **दे.** आवारा।

आवारागर्दी *स्त्री.(फा.)* बिना किसी नियंत्रण के व्यर्थ इधर-उधर भटकते रहने का काम।

आवास *पुं.(तत्.)* जीवों के रहने का (i) प्राकृतिक स्थान अथवा (ii) निर्मित स्थान। habitat

आवाहन *पुं. (तत्.)* प्रार्थना कर किसी को आदरपूर्वक बुलाना या आमंत्रित करना। **उदा.** पंडितों ने अग्निदेव का आवाहन कर यज्ञ आरंभ किया। invocation **तुल.** आह्वान।

आविर्भाव (वि. आविर्भूत) *पुं. (तत्.)* उत्पन्न होने, प्रकट होने, सामने आने आदि की सूचक क्रिया। **जैसे:** भारत में, राजा राम मोहन राय से आधुनिक युग का आविर्भाव माना जाता है। (वि. आविर्भूत)

आविष [**आ** + **विष**] *पुं. विष* जैसा पदार्थ; विष **जैसे:** प्रभाव वाला पदार्थ; विषैला पदार्थ (टॉक्सिन) **तु.** विषि (जहर), जीविष (जीव + विष)

आविषता *स्त्री. किसी* पदार्थ की जीव को क्षति पहुँचाने की क्षमता। **जैसे**: फैक्टरियों के दूषित रसायनों का नदी जल में छोड़े जाने पर उसके जीवों पर होने वाला विषैला प्रभाव। **पर्या.** आविषालुता। toxicity

आविष्कर्ता *वि. (तत्.)* आविष्कार करने वाला, **पर्या.** आविष्कारक दे. आविष्कार।

आविष्कार *पुं. (तत्.)* अपने ज्ञान, अनुभव और बुद्‌धि के बल पर प्रस्तुत नया ज्ञान (सिद्धांत) या नई वस्तु invention **तुल.** खोज discovery

आविष्कारक *वि./पुं.* आविष्कार करने वाला (विशेषज्ञ व्यक्ति)।

आवृत *वि. (तत्.)* (चारों ओर से) ढका हुआ, छिपा हुआ, लिपटा हुआ अथवा घिरा हुआ।

आवृत्ति *स्त्री. (तत्.)* 1. एक ही काम को बार-बार (कई बार) किया जाना। दुहराना, बारंबारता, अभ्यास। 2. किसी पुस्तक का पुन: प्रकाशन; अगली बार (ज्यों-का-त्यों) प्रकाशित किया जाना। **तु.** संस्करण।

आवेग *पुं. (तत्.)* सा.अर्थ किसी कार्य के निष्पादन के लिए सहसा उत्पन्न प्रेरणा। **जैसे:** तंत्रिका आवेग impulse **मनो.** 1. चित्त की वह प्रबल वृत्ति जो व्यक्ति को बिना सोचे-समझे कोई कार्य करने के लिए प्रवृत्त कर देती है। 2. अकस्मात् किसी शुभ या अशुभ घटना के कारण मन में आने वाले हर्ष, शोक, भय, क्रोध इत्यादि विकार।

आवेदक *वि. पुं.* आवेदनकर्ता, आवेदन पत्र देने वाला।

आवेदन *पुं. (तत्.)* 1. किसी बड़े के सामने अपनी बात रखना **पर्या.** निवेदन। 2. प्रार्थना।

आवेदनकर्ता (आवेदन-पत्र) *पुं. (तत्.)* प्रार्थना पत्र, अरज़ी। आवेदन करने वाला।

आवेश *पुं. (तत्.)* 1. मन का वह भाव जिसमें भावनाओं की प्रबलता एवं वेग की अधिकता होती है तथा व्यक्ति अपने आपको अधिक ऊर्जायुक्त समझने लगता है और बुद्धि का प्रयोग किए बिना सक्रिय हो जाता है। **पर्या.** तैश, जोश, झोंक। **उदा.** आवेश में आकर वह अपने साथी को भला-बुरा कहने लगा। flary of excite 2. **भौ.** चालक (उपकरण) पर विद्युत् की कुल मात्रा। charge **उदा.** तुम्हारा मोबाइल बंद हो गया है। इसे आवेशित कर लो। यह फिर से काम करना शुरू कर देगा।

आशंका *स्त्री. (तत्.)* 1. अनिष्ट का भय; किसी अनहोनी का डर। **पर्या.** डर, खटका। **जैसे:** हमले की आशंका। 2. अपने किसी व्यवहार के पश्चात् यह चिंता या भय उत्पन्न होना कि इसका परिणाम क्या निकलेगा या कि कहीं इसका परिणाम हानि कर न हो। apprehension

आशंसा *स्त्री. (तत्.)* 1. किसी के लिए शुभ कामना, इच्छा, अभिलाषा **जैसे:** आपके जन्मदिन पर मेरी शुभाशंसा। 2. आशा, उम्मीद। **उदा.** मैं आपके उत्तम परिणाम की आशंसा करता हूँ। 3. प्रशंसा: सिफ़ारिश।

आशय *पुं. (तत्.)* 1. किसी कही गई बात के स्वत: स्पष्ट न होने पर, उसके बारे में पुन: कहा गया तात्पर्यसूचक कथन। **पर्या.** अर्थ, भाव, तात्पर्य। **उदा.** मेरे कहने का आशय यह था कि 2. किसी वस्तु को धारण करने वाला स्थान अथवा अंग। **जैसे:** गर्भाशय, पित्ताशय।

आशा *स्त्री. (तत्.)* मन का वह संभावित या काल्पनिक भाव जिसमें यह लगने लगता है कि अमुक कार्य हो ही जाएगा या अमुक वस्तु मिल ही जाएगी। **पर्या.** उम्मीद, भरोसा। **उदा.** आशा है तुम्हें इस कार्य में सफलता अवश्य मिलेगी। **विलो.** निराशा, नाउम्मीदी। **मुहा.** आशा बँधना/जगना = मन में आशा उत्पन्न होना। आशा टूटना = आशा नष्ट हो जाना। आशा तोड़ना = किसी की आशा को भंग कर देना। आशा की किरण = आशा का आभास। **तुल.** विश्वास = मन का वह दृढ़ भाव कि कार्य निश्चित रूप से हो जाएगा।

आशातीत (आशा+अतीत) *वि. (तत्.)* जितनी आशा की गई हो उससे कहीं अधिक। **उदा.** उसे परीक्षा में आशातीत सफलता मिली।

आशावान/आशावान् *वि. (तत्.)* (किसी बात की) आशा रखने वाला।

आशिक *(पुं.) (अर.)* व्यु.अर्थ इश्क करने वाला। सा.अर्थ किसी पर आसक्त हो उससे प्रेम या इश्क करने वाला व्यक्ति। **पर्या.** प्रेमी।

आशिक मिज़ाज *वि. (अर.)* व्यक्ति जो स्वभाव से ही किसी के इश्क में पड़ जाए।

आशिकी *(स्त्री.)* प्रेम; आसक्ति।

आशीर्वचन *पुं.* **दे.** 'आशीर्वाद'।

आशीर्वाद [आशी:+वाद] *पुं. (तत्.)* कल्याण या मंगल कामना के वचन, जो प्राय: बड़ों के द्वारा छोटों के प्रति कहे जाते हैं। आशीष, दुआ। **तुल.** शुभकामना।

आशीष/आशिष *स्त्री.* (आशिस्/आशी) **दे.** आशीर्वाद।

आशुकवि *पुं. (तत्.)* (आशु-कवि) दिए गए किसी भी विषय पर तत्काल अर्थात् उसी समय कविता रचने में समर्थ कवि। **जैसे:** कुंज बिहारी शुक्ल (कानपुर) हिंदी के आशुकवि थे।

आश्चर्य *पुं. (तत्.)* किसी अनहोनी घटना के (घटित) होने अथवा असामान्य वस्तु आदि के देखने सुनने की वजह से मन में उत्पन्न विशेष भाव। **पर्या.** विस्मय, अचंभा, ताज्जुब। आश्चर्य का ठिकाना न रहना = बहुत अधिक आश्चर्य करना। आश्चर्य-चकित होना = आश्चर्य से भ्रम में पड़ जाना। आश्चर्यजनक।

आश्रम *पुं. (तत्.)* 1. प्राचीन काल में ऋषि-मुनियों, साधु-संतों के लिए स्थापित जन कोलाहल से दूर आश्रय-स्थल। **जैसे:** भारद्वाज आश्रम। **पर्या.** तपोवन। 2. आधुनिक युग में किसी वर्ग विशेष के निराश्रित व्यक्तियों के कल्याण के लिए स्थापित सार्वजनिक संस्थाएँ जैसे-विधवाश्रम, अनाथाश्रम, वृद्धाश्रम आदि। 3. हिंदू संस्कृति के अनुसार जीवनकाल की चार अवस्थाएँ-ब्रह्मचर्य गार्हस्थ्य (गृहस्थ), वानप्रस्थ और संन्यास।

आश्रय *पुं. (तत्.)* आधार, सहारा आदि बनने की (i) स्थिति या (ii) वस्तु, स्थान आदि। (i) support (ii) shelter

आश्रित *वि. (तत्.)* किसी पर टिका या ठहरा हुआ; किसी का सहारा लिए हुए।

आश्वस्त *वि. (तत्.)* जिसे आश्वासन मिला हो; जिसे सांत्वना मिली हो; जिसे तसल्ली दी गई हो।

आश्वस्ति *स्त्री.* (तत्.<आश्वासन) किसी वस्तु के विनिर्माता द्वारा वस्तु की गुणवत्ता के बारे में ग्राहक को दिया गया भरोसा (आश्वासन) कि यदि एक निश्चित कालावधि में उनके उत्पाद में कमी पाई गई तो वह (विनिर्माता) उसे दूर कर देगा या उत्पाद को ही बदल देगा, warranty **दे.** 'आश्वासन'।

आश्वासन *पुं.(तत्.)* विपरीत परिस्थितियों के उत्पन्न हो जाने पर किसी व्यक्ति को उनसे पार पाने के लिए दूसरे व्यक्ति से सहायता के रूप में मिला भरोसा; तसल्ली, सांत्वना, दिलासा।

आषाढ़ *पुं.* *(तत्.)* भारतीय कालगणना के अनुसार वर्ष का चौथा चांद्रभास जब पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करते हुए पूर्वाषाढा-उत्तराषाढा नामक नक्षत्रों की सीध में आ जाती है। **टि.** भारत में वर्षा का प्रारंभ आषाढ़ मास से माना जाता है।

आस *स्त्री.* (तद् < आशा) *(तत्.)* **दे.** 'आशा'।

आसक्त *वि.(तत्.)* जिसका मन किसी की ओर खिंचकर उससे जुड़-सा गया हो।

आसक्ति *स्त्री.(तत्.)* आसक्त होने का भाव। **दे.** 'आसक्त'।

आसन *पुं.* *(तत्.)* 1. स्थिरता और सुखपूर्वक बैठने की स्थिति। 2. बैठने की विशिष्ट मुद्रा, योग के अनुसार स्वास्थ्य की दृष्टि से लाभप्रद विविध मुद्राएँ या शरीर को मोड़ने के प्रकार **जैसे**: पद्मासन, शीर्षासन आदि। 3. जिस पर बैठते हैं, बैठने की वस्तु **जैसे**: चटाई, कुर्सी, चौकी आदि।

आसन्नभूत *(पुं.)* *(व्या.)* (आसन्न + भूत) *(तत्.)* **व्या.** 1. क्रिया का वह रूप जिससे ज्ञात हो कि क्रिया का व्यापार भूतकाल में आरंभ होकर अभी-अभी समाप्त हुआ है। **जैसे**: उसने मित्र को पत्र लिखा है। 2. भूतकाल की क्रिया का एक भेद।

आस-पड़ोस *पुं.* (अनु.आस+तद्.<प्रतिवेश) नज़दीक रहने वाले लोग, अपने घर के आस-पास के घर यानी वहाँ के निवासी। **उदा.** हमारा आस-पड़ोस अच्छा है।

आस-पास *क्रि. वि.* (प्रथम पद अनु. + पास) अपने घर, गाँव परिवेश आदि के समीप। **जैसे**: आस-पास के निवासी, आस-पास के गाँव, आस-पास के लोग आदि।

आसमान *पुं.* *(फ़ा.)* आस्माँ पृथ्वी से दिखाई पड़ने वाला अंतरिक्ष का नीलाभ क्षेत्र। **पर्या.** आकाश, गगन। **मुहा.** 1. आसमान के तारे तोड़ना = कोई कठिन या असंभव काम करना। 2. आसमान टूट पड़ना = विपत्ति से घिर जाना। 3. आसमान में उड़ना = अवास्तविक बातें करना या कल्पना के ख्वाब (सपने/देखना) 4. आसमान में छेद करना = असंभव काम करने का प्रयत्न करना। 5. आसमान सिर पर उठा लेना = बहुत शोरगुल मचाना।

आसरा *पुं.* *(तद्.* < आश्रय) **दे.** 'आश्रय'।

आसव *पुं.* *फल* आदि में खमीर द्वारा बनाया गया नशीला पेय, मदिरा; अर्क।

आसवन *पुं.* *(तत्.)* द्रव पदार्थ को वाष्प में परिवर्तन करने और उसे पुन: संघनित कर संचित करने की प्रक्रिया। शराब (मदिरा) बनाने के लिए प्राय: यही प्रक्रिया अपनायी जाती है। distillation

आसवनी *स्त्री.* 1. आसवन कर्म करने की शाला। 2. विभिन्न प्रकार की मदिरा बनाने की कर्मशाला; मदिरा निर्माणी। distillery

आसान *वि.(फ़ा.)* (वह काम) जिसे (हल) करने में कठिनाई न हो। सरल, सुगम। **उदा.** प्रश्न पत्र बहुत आसान था। **विलो.** कठिन।

आसानी *(स्त्री.)* *(फ़ा.)* बिना किसी कष्ट के सहज रूप से हो जाने या किए जा सकने की स्थिति। **जैसे:** (i) मुझे कविता की अपेक्षा निबंध लिखने में आसानी रहेगी। (ii) मैं इस नदी को **आसानी** से पार कर सकता हूँ। **पर्या.** सरलता, सुगमता।

आसामी *पुं.* *(तद्.<अ.स्वामी)* 1. कर्ज लेने वाला कोई व्यक्ति। **उदा.** आप अपने आसामी को बुलाइए। 2. दूसरे की भूमि को किसी निश्चित शर्त पर जोतने वाला किसान। 3. किसान।

आसार *पुं. बहु.* *(असर)* भावी घटना का सूचना देने वाले लक्षण। **उदा.** बारिश आने के आसार दिख रहे हैं।

आस्तिक *वि./पुं.* *(तत्.)* मूल अर्थ में 1. वेद वाक्यों को प्रमाण मानने वाला (व्यक्ति)। 2. ईश्वर की सत्ता में विश्वास करने वाला (व्यक्ति) theist **विलो.** नास्तिक। नास्तिक *वि./पुं.* *(तत्.)* **मूल अर्थ** 1. वेद वाक्यों को प्रमाण न मानने वाला (व्यक्ति) **वि.अर्थ** 2. ईश्वर की सत्ता में

विश्वास न करने वाला (व्यक्ति) ethiest non believer **विलो.** आस्तिक।

आस्तीन *स्त्री. (फ़ा.)* 1. बाँह (शरीर का अंग) 2. कमीज़ का वह हिस्सा जो बाँह को ढकता है। **मुहा.** आस्तीन का साँप = मित्र के वेश में शत्रु। आस्तीन चढ़ाना = लड़ने-झगड़ने के लिए तैयार होना।

आस्था *स्त्री. (तत्.)* शा.अर्थ (मन का) पूरी तरह से (किसी पर) टिक जाना या स्थिर हो जाना। चित्त की वह स्थायी धारणा जो किसी को पूज्य या श्रद्धेय मानती है। **पर्या.** दृढ़ विश्वास, निष्ठा **विलो.** अनास्था।

आस्थान *पुं. (तत्.)* भरोसे लायक टिकने की जगह; कुर्सी, बैठक, विश्राम स्थल, सभा भवन आदि। आस्थावान-आस्था से युक्त।

आह *स्त्री. (फ़ा.)* हृदय से होकर मुँह से निकलने वाली दु:खभरी करूण ध्वनि, ठंडी साँस, मुहा. आह भरना= दु:ख प्रकट करने हेतु ठंडी सांस लेना। **अव्य.** *(तद्.<अहह)* पीडा, दु:ख, हानि, शोक आदि का सूचक विस्मय बोधक शब्द जैसे- आह! मर गया!

आहट *स्त्री. (देश.)* किसी के चलने या हिलने से पैदा हुई हलकी-सी आवाज़। पद चाप पाँव की धमक, खटका। आहट प्रत्यय जो क्रिया (धातु) में जुडक़र संज्ञा बनाए। **जैसे**: घबराहट, चिल्लाहट आदि।

आहत *वि. (तत्.)* चोट खाया हुआ **पर्या.** घायल, ज़ख़्मी **तु.** हत

आहार नाल *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ भोजन की नली। मुँह से मलद्वार तक फैली हुई नलिकाओं का क्रम जो भोजन के पाचन, अवशोषण तथा मल-उत्सर्जन का काम करता है। इसके प्रमुख अंग हैं: मुख गुहा, ग्रसनी, ग्रासनली, आमाशय, दोनों आँतें तथा मलाशय। alimentary canal

आहार-तंत्र *पुं. (तत्.)* भोजन के अंतर्ग्रहण, पाचन, अवशोषण तथा अवशिष्ट मल-पदार्थों के उत्सर्जन का कार्य करने वाले अंगों का समूह। इसमें आहार-नाल तथा पाचक रसों का स्रवण करने वाली ग्रंथियाँ आती हैं। alimentary system

आहिस्ता *क्रि.वि. (फ़ा.)* बिना शब्द किए मंद गति से, धीरे से।

आहुति *स्त्री. (तत्.)* मंत्र पढ़ कर देवता की प्रसन्नता के निमित्त अग्नि में साकल्य (हवन सामग्री) डालना।

आह्लाद *पुं. (तत्.)* मन में जगा अति प्रसन्नता का भाव। **पर्या.** आनंद, खुशी, हर्ष।

आह्लादित (आह्लाद + इत) *वि. (तत्.)* जिसे आह्लाद हुआ हो। **पर्या.** अति प्रसन्न, आनंदित, हर्षित, बहुत खुश।

आह्लान *पुं. (तत्.)* सा.अर्थ बुलाना, बुलावा, पुकार। **जैसे:** 1. अध्यक्षता करने के लिए मंच पर मुख्य अतिथि का आह्वान। call 2. यज्ञ में मंत्र पढक़र देवता का आह्वान। invocation 3. न्यायालय में सुनवाई के लिए अभियुक्त का आह्वान (सम्मान)।

आह्वान *पुं. (तत्.)* सा.अर्थ बुलाना। 1. विधि न्यायालय में उपस्थित होने के लिए भेजा गया औपचारिक आदेश। saman 2. चुनौतीपूर्ण या ललकारते हुए बुलाना। **उदा.** झांसी की रानी ने अपने सैनिकों और देशवासियों का स्वतंत्रता के लिए मर मिटने का आह् वान किया। 3. दे. आवाहन।

ऑरिकल *पुं. (अंग्रे.)* **दे.** 'अलिंद'।

ऑरिकिल *पुं. (अं.)* **दे.** 'अलिंद'।

मुहा. आँख आना = आँख का एक रोग; आँख उठाना = विद्रोह करना; आँख खुलना = भ्रम दूर हो जाना; आँख दिखाना = डराना; आँखें चार होना = सामना होना; आँखें चुराना = छिपना; आँखे फेरना = बदल जाना; आँखें बिछाना = स्वागत करना; आँखों पर परदा पड़ना = भ्रम में रहना; आँखें भर आना = दु:खी होना; आँखों में धूल झोंकना = धोखा देना। 3. आँख के आकार का छिद्र **जैसे**: सुई की आँख। 4. ला.अर्थ. विचार, विवेक, परख, पहचान।

इ

इंकार/इनकार *पुं. (अर.)* जो अपने मन को न रुचे उसे करने को कहने पर मना कर देने की स्थिति। (रिफ्यूजल, डिनायल) **पर्या.** अस्वीकृति, मनाही।

इंगित *पुं. (तत्.)* अभिप्राय, स्पष्ट करने के लिए शरीर के किसी अंग से किया जाने वाला इशारा/संकेत। *वि.* जिसकी ओर इशारा किया गया हो।

इंच *पुं./वि. (अं.)* रैखिक लंबाई-चौड़ाई का एक अंग्रेजी माप जो लगभग 2.54 सेमी. के बराबर होता है। एक फुट का बारहवाँ भाग।

इंचभर *वि.(देश.)* बहुत थोड़ी मात्रा, ज़रा सी। **उदा.** पेट में इंचभर जगह नहीं है। इंचभर जमीन नहीं दूँगा।

इंजन *पुं. (अं.< एंजिन)* 1. भाप, पैट्रोल, गैस या बिजली की शक्ति से गति करने वाला (चलने वाला) यंत्र। 2. रेल का इंजन, जो बहुत सारे डिब्बों को खींचकर ले जाता है।

इंजीनियर *पुं. (अं.)* इंजीनियरी-शास्त्र का ज्ञाता अथवा इस विद्या के व्यावसायिक उपयोग में निष्णात व्यक्ति। **पर्या.** अभियंता। **दे.** इंजीनियरी।

इंजीनियरी *स्त्री. (अं.)* मूल.अर्थ. किसी इंजन/ मशीनरी की निर्माण-प्रक्रिया या संचालन-प्रक्रिया का शास्त्र। विस्तृत अर्थ-मशीनरी (मशीन इंजीनियरी), विद्युत (इलैक्ट्रिकल इंजी.) इलैक्ट्रानिकी (इलैक्ट्रानिक इंजी.) या भवन निर्माण (सिविल इंजी.) इत्यादि से संबंधित निर्माण एवं संचालन का शास्त्र। **पर्या.** इंजीनियरिंग, यांत्रिकी।

इंजीनियरी *स्त्री.* (अं.< इंजीनियरिंग का अनुकूलित रूप) भवनों, मशीनों, विद्युत उपकरणों आदि के अभिकल्पन (डिजाइन बनाने), निर्माण, उपयोग आदि में विज्ञान के सिद्धांतों का अनुप्रयोग।

इंजेक्शन *पुं. (अं.)* 1. किसी औषधि को रक्तनलिका या मांसपेशियों तक सुई के माध्यम से पहुँचाने की युक्ति। 2. सुई लगाना।

इंटरनेट *पुं.* कंप्यूटरों (अभिकलित्रों) का परस्पर जुड़ा हुआ विश्वव्यापी जाल-क्रम।

इंटरव्यू *पुं.(अं.)* **दे.** 'साक्षात्कार'।

इंतज़ाम *पुं. (अर.)* **दे.** 'प्रबंध'।

इंतजार *पुं. (अर.)* किसी व्यक्ति के आने या घटना के घटित होने के लिए की गई प्रतीक्षा।

इंदिरा *स्त्री. (तत्.)* 1. धन की देवी लक्ष्मी। **जैसे:** सतीविधात्री इंदिरा देखीं अमित अनूप। (तुलसी रा.च.मा. वा.का.दो.54) 2. कांति, चमक; छाटा, शोभा।

इंदु *पुं. (तत्.)* चंद्र, चंद्रमा।

इंद्रजाल *पुं. (तत्.)* जादू के विस्मयकारी करतब जहाँ बुद्धि सहजता से प्रवेश न कर सके। **पर्या.** जादू।

इंद्रधनुष [इंद्र+धनुष] पुं. *(तत्.)* वर्षाकाल में सूर्य प्रकाश के प्रभाववश आकाश में दिखाई पड़ने वाला धनुषाकृति चाप जिसमें सातों रंग दिखाई देते हैं। (रेनबो)

इंद्रिय *स्त्री. (तत्.)1.* ज्ञान प्राप्त करने के पाँच भौतिक साधन-आँख, कान, नाक, जीभ और त्वचा, इन्हें ज्ञानेंद्रियाँ कहते हैं। 2. कर्म करने के पाँच भौतिक साधन-हाथ, पैर, वाक्, मलस्थान और मूत्रस्थान, इन्हें कर्मेंद्रियाँ कहते हैं। 3. शरीर के अंदर रहने वाले और न दिखने वाले चार साधन-मन बुद्धि चित्त और अहंकार इन्हें अंत:करण कहते हैं।

इंद्रियगोचर *वि. (तत्.)* जो ज्ञान-इंद्रियों द्वारा अनुभव किया जा सकता हो, इंद्रियग्राह्य (विषय) **जैसे:** संसार की प्रत्येक वस्तु इंद्रियगोचर है स्वयं मनुष्य की आत्मा इंद्रियगोचर नहीं है। (क्योंकि उसका विषय इंद्रियों से परे हैं, **जैसे:** आँखों से परे हैं।) **विलो.** इंद्रिय-अगोचर

इंद्रियातीत (इंद्रिय+अतीत) *वि. (तत्.)* शा.अर्थ इंद्रियों से परे। सा.अर्थ जिसका ज्ञान या अनुभव इंद्रियों से न हो सके, **जैसे:** आत्मा या ईश्वर।

इंफ्लुएंजा (संक्षिप्त रूप-फ्लू) *पुं. (अं.)* विषाणु जन्य एक सामान्य रोग जो विषाणु के संक्रमण से होता है। **टि.** 1. तेज़ बुखार, शरीर में दर्द और नज़ला-जुकाम इस बीमारी के प्रमुख लक्षण हैं। 2. कभी-कभी यह महामारी का रूप धारण कर लेता है। **पर्या.** प्रतिश्याय।

इंसान/इन्सान/इनसान *पुं. (अर.)* मनुष्य, मानव, आदमी (जिसमें पुरूष, महिलाएँ और बच्चे सभी सम्मिलित हैं।) human teling

इंसानियत/इन्सानियत *स्त्री. (फा.)* **दे.** मनुष्यता।

इकट्ठा *वि. (तद् < एकस्थ)* कई लोगों या वस्तुओं का एक स्थान पर जमा होने का भाव। **पर्या.** एकत्र, जमा।

इकबालिया बयान *पुं. (अर.)* इक्बाल शा.अर्थ मान लेने/कबूल करने वाला बयान। अपने अपराध को स्वीकार करते हुए न्यायाधीश के समक्ष दिया गया मौखिक/लिखित कथन।

इकरार *पुं. (अर.)* मूल अर्थ स्वीकृति। सा.अर्थ कोई कार्य करने का वचन। **पर्या.** प्रतिज्ञा, वादा, वचन। agreement

इकरारनामा *पुं. (अर.)* किसी बात को स्वीकार करने का लिखित अनुबंध पत्र। agreement

इकलौता (इकला <अकेला+उत) *वि. (देशज)* 1. माँ-बाप की अकेली संतान। **जैसे:** इकलौता बेटा। 2. एकमात्र, अकेला। (स्त्री. इकलौती **जैसे:** इकलौती बेटी।)

इकाई [इक/एक+आई] *स्त्री. (देश.)* 1. संख्या लिखने के क्रम में सबसे दाहिनी ओर के पूर्णांक का मान। तुलना-दहाई, सैंकड़ा आदि। 2. कोई ऐसा भाग, मान अथवा मात्रा जो अपने आप में पूर्ण हो तथा उसका उल्लेख किया जा सके। unit **उदा.** हाथ, पैर, मुंह आदि हमारे शरीर की इकाईयाँ हैं।

इक्का *पुं. (देश.)* 1. ताश की गड्डी के चारों वर्गों (पान, ईंट, चिड़ी, हुकम) के 13-13 पत्तों में सर्वोच्च मानवाला पत्ता जिस पर केवल एक बूटी का संकेत चिह्न बना होता है। 2. **दे.** इक्कागाड़ी।

इक्कागाड़ी *स्त्री.* ताँगा जिसमें केवल एक घोड़ा जुता होता है।

इक्का-दुक्का *वि. (देश.)* एक या दो; कोई-कोई (नहीं के बराबर) गर्मी की दोहपर में सडक़ पर इक्का-दुक्का लोग ही नज़र आते हैं।

इक़्ता *पुं. (अर.)* ख़िलजी और तुग़लक शासकों द्वारा अपने सेनानायकों को सूबेदारी के लिए प्रदान किया गया ज़मीन का इलाका या क्षेत्र।

इक़्तेदार *पुं. (अ.)* ख़िलजी और तुग़लक शासकों के द्वारा अपने सेनानायकों को दिया जाने वाला खिताब जिसके अनुसार वे अपने इक़्ते के सूबेदार होते थे। **पर्या.** मुक्ती।

इक्विटी शेयर *पुं.(अं.)* अधिमान अंशों से भिन्न अंश/शेयर समान लाभ वाले शेयर।

इक्विटी *स्त्री. (अं.)* 1. कंपनी के अंशधारियों का लाभसमता की दृष्टि से स्वामित्व हित। 2. किसी कंपनी या योजना के तहत लगाई गई पूंजी का समानुपातिक रूप से घटना या बढ़ना, आनुपातिक दृष्टि से लाभ और स्वामित्व में हिस्सेदारी।

इख्तियार *पुं. (अ.)* 1. अधिकार 2. सामर्थ्य 3. प्रभुत्व 4. वश/नियन्त्रण

इग्लू *पुं. (अं.)* हिम-प्रदेशों antartica में रहने के लिए बर्फ का बना हुआ गुंबदाकार घर।

इच्छा *स्त्री. (तत्.)* मन का वह भाव कि कोई कार्य अपने स्वभाव, रुचि आदि के अनुसार हो, या अमुक वस्तु प्राप्त हो जाए सांसारिक या जागतिक विषयों के प्रति मन की अनुरक्ति। **पर्या.** कामना, अभिलाषा, चाह।

इच्छा-पूर्ति *स्त्री. (तत्.)* इच्छा की पूर्ति यानी इच्छा पूरी होने का भाव। **पर्या.** संतुष्टि।

इच्छुक *वि. (तत्.)* जिसे इच्छा हो, इच्छा करने वाला, लालायित।

इजाज़त *स्त्री. (अ.)* अनुमति।

इजाज़तनामा (चार्टर) अनुमति पत्र।

इज़ाफा *स्त्री. (अ. < इजाफह)* वृद्धि, बढ़ोतरी, तरक्की, उन्नति।

इज़ारबंद (इजार(पजामा)+बंद(फीता) *पुं.(फा.)* पजामा, सूट, लहंगा आदि को कमर में बांधने के लिए प्रयोग की जाने वाली डोरी। **पर्या.** कमरबंद, नाड़ा।

इज़्ज़त *स्त्री. (अर.)* 1. सम्मान, आदर, प्रतिष्ठा, मान-मर्यादा। **उदा.** बड़ों की इज़्ज़त करना हमारा कर्त्तव्य है। 2. सतीत्व, शुद्ध होने का भाव।

इज्ज़तदार *वि.(अर.+फा.)* जिसकी समाज में मान या प्रतिष्ठा हो, इज्जतवाला। **उदा.** 'राघव' हमारे गाँव के इज्जतदार व्यक्ति हैं।

इठलाना *अ.क्रि. (देश.)* अपनी ओर दूसरों का ध्यान आकृष्ट करने के लिए मुस्कराते हुए मस्तीभरी हरकतें करना। **पर्या.** इतराना। **उदा.** सौंदर्य प्राकृतिक देन है, उस पर इठलाना ठीक नहीं।

इडली *स्त्री.* चावल और दाल के पिसे हुए गाढ़े घोल में खमीर उठाकर भाप में पकाया जाने वाला दक्षिण भारतीय व्यंजन।

इतमीनान/इत्मीनान *पुं. (अर.)* 1. विश्वास, भरोसा। **उदा.** इत्मिनान रखो। तुम्हारी पुस्तक मिल जाएगी। 2. मन का वह भाव जब थोड़ा मिलने पर या न मिलने पर भी प्रसन्नता ही रहे। (**उदा.** और वह इत्मीनान से सो गया) **पर्या.** संतोष, तसल्ली, शांति, सब्र।

इतराना *अ.क्रि. (देश.)* **दे.** इठलाना।

इतिवृत्तात्मक *वि. (तत्.)* भावुकता या भावनाप्रधान न होकर जो वर्णनात्मक या आख्यानात्मक हो। इतिवृत्त (घटना) पर आधारित। **जैसे:** हिंदी साहित्य में द्विवेदीयुगीन कविताएँ विशेष रूप से इतिवृत्तात्मक थीं।

इतिश्री *स्त्री. (तत्.)* किसी कार्य, आंदोलन, साम्राज्य आदि का अंत पूरी तरह समाप्ति, खात्मा। **जैसे:** बहादुरशाह ज़फ़र की पराजय के साथ ही मुगल साम्राज्य की इतिश्री हो गई।

इतिहास *पुं. (तत्.)* बीती हुई घटनाओं और उनसे संबंधित व्यक्तियों का काल-क्रम के अनुसार वर्णन। पाश्चात्य इतिहासलेखन पद्धति के अनुसार बहुधा राज्य से संबंधित वर्णन इतिहासग्रंथों में मिलता है।) **पर्या.** तवारीख।

इतिहासकार *पुं. (तत्.)* इतिहास लिखने वाला विशेषज्ञ। **दे.** इतिहास।

इतै *क्रि.वि. (ब्रज.)* इधर, इस ओर।

इत्तफाकन *क्रि.वि. (अर.)* इत्तफाक से, संयोगवश।

इत्तफाकिया *क्रि.वि. (अर.)* इत्तफ़ाक से, संयोग से, आकस्मिक। **जैसे**: इत्तफाकिया छुट्टी = आकस्मिक अवकाश। casual leave

इत्तिफ़ाक *पुं. (अर.)* 1. दैवयोग; संयोग। **उदा**. इसे इत्तिफ़ाक ही समझिए कि आपसे हमारी भेंट हो गई। 2. एक राय, सहमति। **उदा.** इस विषय में मैं आपसे इत्तिफ़ाक नहीं रखता।

इत्तेसारे *वि. (देशज < इतने सारे)* आश्चर्य सूचित करने वाला पदबंध। **टि.** इतने सारे, इतनी अधिक संख्या या मात्रा में।

इत्यादि *[*इति+ आदि*] क्रि.वि. (तत्.)* इसी प्रकार अन्य भी, आदि-आदि, वगैरह-वगैरह। **उदा.** उसने उपदेशों की झड़ी लगा दी। **जैसे:** ऐसा करो, ऐसा मत करो। जल्दी उठो, जल्दी सोओ, परिश्रम करो, समय बरबाद मत करो इत्यादि।

इत्र *पुं. (अ.)* फूलों को उबालने से बनी भाप को संघनित कर आसवन विधि से बनाया गया संचित पदार्थ। **पर्या.** पुष्पसार, अतर।

इत्रदान *पुं. (अर.+फा.)* तरह-तरह के इत्र सुगांधित रखने का पात्र। **पर्या.** अतरदान।

इधर *क्रि.वि. (तद् < इत:)* इस ओर, इस दिशा में, इस तरफ। **उदा.** इधर आओ। **विलो.** उधर।

इधर-उधर *क्रि.वि. (इत:+तत:=इतस्तत:)* आसपास, सब ओर। **उदा.** एक जगह बैठे रहो। इधर-उधर मत फिरो। **मुहा.** इधर-उधर करना=टालमटोल करना। 2. इधर-उधर की बात=सुनी-सुनाई बात। इधर-उधर की हाँकना=मुख्य बात पर न आकर बेकार की बात करते रहना। इधर की उधर करना=झगड़ा करवाना; चुगली करना।

इनविट्रो निषेचन (आई वी एफ-IVF) दे. पात्रे निषेचन।

इनसान/इंसान कोई भी मनुष्य चाहे, वह आदमी हो, औरत हो, या बच्चा। **पर्या.** मानव, मनुष्य। **उदा.** इनसान हो, इनसान जैसा व्यवहार करो, हैवान जैसा नहीं। (ह्युमन बीइंग) **विलो.** हैवान, जानवर, पशु।

इनसाफ़/इंसाफ़ *पुं. (अर.)* न्याय।

इनाम *पुं. (अर.)* **दे.** पुरस्कार।

इनी-गिनी *वि. (स्त्री.)* जिनकी संख्या उंगलियों पर गिनी जा सके; सीमित संख्या वाली।

इने-गिने *वि.पुं.* (पूर्वपद अनु.) जिनकी संख्या उंगलियों पर गिनी जा सके; सीमित संख्या वाले, कुछ ही, थोड़े से। **उदा.** इस गाँव में इने-गिने लोगों ने ही उच्च शिक्षा प्राप्त की हैं।

इन्सुलिन *पुं. (अ.)* अग्नाशय की बीटा कोशिकाओं में बनने वाले हार्मोन जो शर्करा के अपाच्य को नियंत्रित करते हैं। मधुमेह के रोगी को यह औषधि इंजेक्शन लगाकर बाहर से दी जाती है।

इफ़्तार *पुं. (अर.)* दिनका रोजा (उपवास) रखने के बाद संध्या को रोजा खोलने के निमित्त जलपान करना।

इबादत *स्त्री. (अर.)* प्रार्थना।

इबादतखाना [इबादत=प्रार्थना+फा. खाना=स्थान] (इबादत=प्रार्थना+खाना=घर/मक) *पुं. (अ.) (अर.+फा.)* प्रार्थना गृह, मंदिर, मस्जिद आदि।

इबादतखाना पर्याय- इबादतगाह /प्रार्थनास्थल, पूजाघर, मंदिर।

इबादतगाह *स्त्री. (अर.+फा.)* प्रार्थना स्थल, मंदिर/मस्जिद आदि।

इमामबाड़ा [इमाम+बाड़ा] *पुं. (अर./देश.)* वह विशाल अहाता या भवन जिसमें शिया मुसलमान मुहर्रम के अवसर पर ताजिया समर्पित करते हैं तथा श्रद्धांजलि देते हैं।

इमारत *स्त्री. (अर.)* आकार में बड़ा और पक्का बना हुआ मकान; भवन।

इम्तहान *पुं. (अर.)* **दे.** परीक्षा। किसी की योग्यता, विशेषत, सामर्थ्य, अभिव्यक्ति आदि की परख के लिए लिखित या प्रायोगिक या मौखिक रूप से किया जाने वाला कार्य। examination **पर्या.** परीक्षा।

इरादा *पुं. (अर.)* 1. इच्छा, विचार। **उदा.** आज मेरा घूमने जाने का इरादा नहीं है। 2. आपका इरादा नेक है। 2. निश्चय, संकल्प। **उदा.** मैंने इरादा कर लिया है कि जब तक इस काम को पूरा नहीं कर लेता तब तक सोऊंगा नहीं।

इलज़ाम/इल्ज़ाम *पुं. (अर.)* 1. किसी व्यक्ति के विषय में यह कहना कि उसने अमुक गलत काम किया है। दोषारोपण, आरोप (चार्ज)। 2. नियम विरूद्ध कार्य करने के लिए न्यायालय में दावा प्रस्तुत करना। अभियोग। allegation

इलाका *पुं. (अर.)* तुलनात्मक दृष्टि से अपने रहने, बसने, काम करने आदि के आसपास का भूक्षेत्र। **पर्या.** क्षेत्र, प्रदेश, पड़ोस। **उदा.** तुम तो मेरे ही इलाके के रहने वाले हो।

इलाज *पुं. (अर.)* 1. बीमारी दूर करने की विधि। **पर्या.** चिकित्सा **उदा.** तुम्हें मधुमेह की बीमारी है। इसका इलाज बहुत जरूरी है treatment 2. उपाय, युक्ति, तरकीब, समाधान। **उदा.** इस समस्या का कोई इलाज नहीं है।

इलाही *वि. (अ.)* ईश्वरीय, खुदाई, दैवी। अव्य. हे ईश्वर, हे मेरे ईश्वर, मेरे खुदा।

इलेक्ट्रान *पुं. (अं.)* भरण विद्युत, आवेश वाला आधारभूत अति सूक्ष्मकण, जो परमाणु से छोटा होता है तथा समस्त परमाणुओं के कोशों में नाभिक के चारों ओर चक्कर लगाता रहता है।

इलेक्ट्रोड *पुं. (अग्रे.)* विद्युत परिपथ में धन-आवेश और ऋण आवेश वाले वे दो ध्रुव (सिरे) जिनके मध्य का विभवांतर voltage विद्युत धारा के प्रवाह को प्रेरित करता है। नोट-धन आवेश वाला ध्रुव 'एनोड' कहलाता है तथा ऋण आवेश वाला ध्रुव 'कैथोड़'। दोनों सिरे सामान्य रूप से इलेक्ट्रोड कहे जाते हैं।

इल्तिजा *स्त्री. (अर.)* किसी से विनम्रतापूर्वक की जाने वाली प्रार्थना, विनती, निवेदन, दरख़्वास्त। जैसे-आप से इल्तिजा है कि इसे आर्थिक सहायता देकर इसकी पढ़ाई में सहयोग प्रदान करें।

इल्लत *स्त्री. (अर.)* 1. किसी प्रकार का शारीरिक रोग, बीमारी। 2. झंझट, बखेड़ा। 3. बुरी लत, दुर्व्यसन। **मुहा.** इल्लत पालना=किसी संकटपूर्ण स्थिति का दायित्व लेना।

इल्ली *स्त्री. (देश.)* **जीव.** तितली, शलम (मॉथ) आदि कीटों का कृमि जैसा मुलायम डिंभक। इसके वक्ष में तीन जोड़ी जुड़ी हुई टांगे और उदर में चलने वाले अंग होते हैं। अं. **पर्या.** केटर पिलर।

इशारा *पुं. (अर.<इशार:)* उँगली, आँख आदि से किया गया संकेत। **उदा.** तुम बस इशारा भर कर देना, मैं बैठक से उठकर चला आऊँगा।

इश्तिहार/इश्तहार *पुं. (अर.)* **दे.** विज्ञापन।

इष्टापत्ति *स्त्री. (तत्.)* [इष्ट+आपत्ति] न्याय-किसी विवाद में न्यायालय के समक्ष वादी का ऐसा बयान या वक्तव्य जो प्रतिवादी के पक्ष में जाता है।

इसरार *पुं. (अर. < इस्रार)* हठ, जिद, आग्रह।

इस्तीफ़ा *पुं. (अर.)* **दे.** त्यागपत्र।

इस्तेमाल *पुं. (अर.)* उपयोग, काम में लेना, सेवन करना (**जैसे:** दवा आदि)

इस्पात *पुं. (सं. अयस पत्र)* लोहे का (मिश्र धातु) जिसमें कार्बन के अतिरिक्त मैंगनीज, फासफोरस आदि होते हैं, समुद्री जहाज तथा अन्य वाहनों/मशीनों के निर्माण में प्रयुक्त यह जंग न लाने वाली धातु प्रयुक्त होती है। steel

इस्लाम *पुं. (अर.)* शा.अर्थ ईश्वर के मार्ग में प्राण देने को प्रस्तुत होना। 2. मुसलमानों का मज़हब।

ईंट *स्त्री. (तद्.) (सं. < इष्टिका)* सामान्यत: चिकनी मिट्टी का पकाया हुआ आयताकार खंड जो पत्थर के विकल्प के रूप में भवन-निर्माण में काम आता है। (ब्रिक) **मुहा.** ईंट से बजाना- जिससे विरोध या शत्रुता हो उसका सब कुछ नष्ट कर देना।

ईंधन *पुं. (तद्.< इन्धन)* सभी ज्वलनशील पदार्थ **जैसे:** लकडी कोयला, घी, तेल पैट्रोल, डीजल गैस (सी एन जी, एल.पी.वी) इत्यादि, **पर्या.** जलावन भौ. रसा. उष्मा या ऊर्जा उत्पन्न करने वाला पदार्थ।

ईजाद *पुं. (अर.)* जो सुविधा या वैज्ञानिक जानकारी पहले उपलब्ध न हो उसका पहली बार पता लगाना। **दे.** आविष्कार invention **उदा.** ग्राहम बेल ने टेलीफोन का ईजाद किया। *तु.* खोज discovery

ईद गिर्द *क्रि.वि. (अर.)* आस-पास, चारों ओर **उदा.** 1. जब देखो तब वह नेता के ईदगिर्द ही दिखाई पड़ता है 2; पृथ्वी सूर्य के ईद-गिर्द घूमती रहती है।

ईद-गिर्द *क्रि.वि. (अरबी)* आस-पास, चारों ओर। **उदा** 1. जब देखो तब वह नेता के ईद-गिर्द ही दिखाई पड़ता है। 2. धरती सूरज के ईद-गिर्द घूमती रहती है।

ईमान *पुं. (अर.)* 1. धार्मिक आस्था या विश्वास। **उदा.** जो खुदा पर ईमान लाए वही सच्चा मुसलमान है। 2. चित्त की उत्तमवृत्ति, अच्छी नीयत, सत्यनिष्ठा। **उदा.** सामने पड़ा धन देखकर उसका ईमान डोल गया। ओनेस्टी

ईमानदार *वि.* (अर.ईमान+फा. दार) 1. अच्छी नीयत रखने वाला। 2. सत्य का पक्षपाती। 3. लेन-देन के व्यवहार में सच्चा; छल-कपट न करने वाला; जिस पर भरोसा किया जा सके। (ऑनेस्ट)

ईमानदारी *स्त्री. (अर.+फा.)* ईमानदार होने का भाव। **दे.** *ईमानदार*। **उदा.** पहले ईमानदारी, पीछे दुकानदारी। honesty, trustworthy

ई-मेल (इलैक्ट्रानिक मेल की संक्षिप्ति) *स्त्री. (अं.)* कंम्प्यूटर-जालक्रम (इंटरनेट) के माध्यम से एक प्रयोक्ता से दूसरे प्रयोक्ता तक लिखित संदेश भेजने की व्यवस्था।

ईर्ष्या *स्त्री. (तत्.)* अपनी तुलना में अन्य (परिचित) व्यक्ति की उन्नति या लाभ की स्थिति देखकर उसे पचा न पाने के कारण दुखी होना और अपनी प्रतिकूल भावना को येनकेन प्रकारेण प्रकट करते रहना। **पर्या.** डाह, जलन।

ईर्ष्यालु [ईर्ष्या+आलु] (विशेषण निर्माता प्रत्यय) *वि. (तत्.)* ईर्ष्या करने वाला, ईर्ष्या की भावना से युक्त। *दे.* ईर्ष्या।

ईश्वर *पुं. (तत्.)* मूल अर्थ जिसे ईशित्व की सिद्धि प्राप्त हो। 'ईशित्व'=सभी आज्ञा-पालन करें, इस प्रकार की सिद्धि। 1. परमेश्वर, भगवान। 2. स्वामी, मालिक, प्रभु।

ईश्वरीय [ईश्वर+ईय] *वि.(तत्.)* ईश्वर (भगवान) द्वारा निर्धारित; ईश्वर जैसा; ईश्वर से संबंधित।

ईसवी/ईस्वी *वि. (अर.)* मूल अर्थ ईसा से संबंधित। प्रच.अर्थ ईसामसीह की कल्पित जन्मतिथि से शुरू हुआ वर्षों का क्रम जिसे 'सन्' संज्ञा से व्यक्त किया जाता है। **उदा.** 2011 ईसवी या सन् 2011=ईसा के पश्चात 2011वाँ वर्ष। (ए.डी.)

ईसा *पुं. (अर.)* मूल अर्थ उपदेश देना, वसीयत करना। प्रच.अर्थ हज़रत ईसा मसीह, जिन्होंने ईसाई धर्म की स्थापना की।

ईसाई *वि./पुं. (अर.)* ईसामसीह से संबंधित; हजरत ईसा द्वारा प्रचलित धर्म का अनुयायी।

ईसापूर्व *वि.(अर.+तत्.)* ईसवी सन् से पहले की कालगणना का सूचक। **उदा.** 300 ई.पू. = ईसा से 300 वर्षपूर्व। **तु.** ईसवी/ईस्वी।

ईसाफैगस *स्त्री.(अं.)* **दे.** ग्रसिका।

उ

उँगली *स्त्री. (तद्. <अंगुलि)* मनुष्य के हाथों और पैरों में आगे की ओर निकले हुए छोटे (प्रवर्ध) हिस्से जो सामान्यत: प्रत्येक हाथ और पैरों में पाँच-पाँच होते हैं और जिनसे मनुष्य मुख्यत: पकड़ने का काम करता है। (इनके नाम क्रमश: कनिष्का, अनामिका, मध्यमा, तर्जनी और अंगुष्ठ (अँगूठा) हैं। **मुहा.** 1. उँगली उठाना=(किसी पर) आक्षेप करना। 2. उँगली पर नचाना=दूसरों से इच्छानुसार कार्य करवाना।

उद्धत *वि.(तत्.)* व्यु.अर्थ ऊपर उठाया हुआ। सा.अर्थ ऐसा व्यक्ति जिसका स्वभाव यह प्रकट करे कि वह दूसरों से श्रेष्ठ है और किसी का भी अपमान कर देने में कोई बुराई नहीं है। **पर्या.** घमंडी, ढीठ।

उऋण *वि.(तत्.) [उद् गत+ऋण]* जो ऋण (कर्ज) से मुक्त हो चुका हो, जिसने लिया हुआ कर्ज चुकता कर दिया हो। **पर्या.** ऋणमुक्त। *ला.* प्रयोग- जिसने किसी के उपकार के बदले में अपनी ओर से लगभग वैसा ही काम कर दिया हो।

उकताना *अ.क्रि. (तद्.<उत्कर्तन* वर्ण विपर्यय के बाद) वह मानसिक दशा जब कोई व्यक्ति बिना काम के बैठे रहकर या एक ही काम को बार-बार अथवा देर तक करते-करते धैर्य खो देता है। **पर्या.** ऊबना।

उकताहट *स्त्री. (तद्.)* ऊब जाने अर्थात धैर्य खो देने की स्थिति। **पर्या.** बोरियत। **दे.** उकताना।

उकसाना *स.कि. (तद्.<उत्कर्षणन)* अन्य व्यक्ति से कोई विशेष काम (विशेषत: गलत काम) करवाने के लिए उसे बार-बार उत्प्रेरित करना या उत्तेजित करना।

उकेरना *सं.क्रि. (तद्.<उत्कीर्ण)* किसी शिलाखंड, धातु अथवा काष्ठपट्ट पर खोदकर छेनी से सावधानीपूर्वक बेलबूटे बनाना, नक्काशी करना।

उक्त *वि. (तत्.)* जो कहा गया हो, कहा हुआ, कथित। **जैसे:** वेदोक्त=जो वेद में कहा गया। शास्त्रोक्त=शास्त्रों में कहा/बताया गया।

उक्ति *स्त्री. (तत्.)* 1. परंपरागत या लोक में कहा जाने वाला कोई प्रसिद्ध कथन। 2. चमत्कारपूर्ण वचन। 3. अद्भुत किंतु अनुभव पर आधारित कोई वाक्य। **जैसे**: यह उक्ति अत्यंत प्रसिद्ध है- 'बिनु भय होई न प्रीति।'

उखड़ना *(अ.क्रि.) (तद्<* उत्खात) 1. जमी हुई या गड़ी हई किसी वस्तु का अपने स्थान से अलग हो जाना। **जैसे:** वृक्ष का उखड़ना। 2. मजबूत स्थिति से कमज़ोर स्थिति में आ जाना। **उदा.** क्रिकेट मैच में आस्ट्रेलिया के पैर उखड़ गए।

उखाड़ना *सक्रि.* 1. जमी हुई या गड़ी हुई किसी वस्तु को प्रयत्न पूर्वक अपने स्थान से अलग कर देना। **उदा.** मजदूरों ने सूखे पेड़ को उखाड़ दिया। 2. मजबूत स्थिति से कमज़ोर स्थिति में ले आना। **उदा.** भारत ने पहले ही टैस्ट मैच में आस्ट्रेलिया के पैर उखाड़ दिए।

उगना *अ.क्रि. तद्. (उद्गमन)* 1. बीज में से अंकुर फूटने या निकलने और फिर यथासमय विकसित होते रहने की क्रिया। 2. सूर्य, चंद्र आदि का उदय होना।

उगलना *अ.क्रि. (तद्<उद्गिलन)* 1. मुँह या पेट में गए भोज्य पदार्थ को बाहर निकालना; उल्टी करना। **उदा.** उल्टी हुई और उसने खाया-पीसा सब उगल दिया। 2. गुप्त बात को प्रकट कर देना। (i) उसे कोई बात नहीं पचती, सब उगल देता है। (ii) पुलिस की मार खाकर उसने चोरी की बात उगल दी। **विलो.** निगलना।

उगाना *स.क्रि (प्रथम प्रेरणा. <उगना)* खेत, क्यारी, गमले आदि में बीज बोकर और खाद पानी देकर कुछ उपजने/पैदा होने का अवसर देने की क्रिया। **मुहा.** हथेली पर सरसों उगाना=असंभव कार्य करने में प्रवृत्त होना।

उगाहना *स.क्रि. (तद्.<उद्ग्राहण)* दिए गए कर्ज की किस्त, कर, चंदा, बकाया राशि आदि वसूल करना; दी गई वस्तु का मांगना; वसूल करना।

उगाही *स्त्री. (तद्.<उद्ग्रहित)* 1. उगाहने की क्रिया या भाव। 2. उगाहे गए धन की मात्रा।

उग्र *वि.(तत्.)* 1. गरम मिजाज वाला (व्यक्ति) **जैसे:** उग्र स्वभाव, उग्र व्यवहार। 2. जिसकी गति सामान्य से तेज़ हो। **जैसे**: उग्र वायु। **विलो.** मंद/शांत।

उग्रता *स्त्री.(तत्.)* उग्र होने का भाव। **दे.** उग्र।

उग्रवाद *पुं.(तत्.)* किसी भी विषय में, विशेष रूप से धार्मिक या राजनीतिक क्षेत्र में मर्यादित सीमा का उल्लंघन कर अपनाई गई चरम विचारधारा। extremism

उग्रवादी *वि./पुं. (तत्.)* व्यक्ति या समूह जो किसी भी विषय में, विशेष रूप से राजनीतिक अथवा धार्मिक क्षेत्र में मर्यादित सीमा का उल्लंघन कर चरम विचारधारा का पोषक हो तथा तदनुसार आचरण करता हो। extremist

उघाड़ना *सं.क्रि. (तद्.<उद् घाटन)* ढकी चीज पर से पर्दा हटाना।

उचकना *अ.क्रि.* (तद्<सं. उच्चकरण) 1. पंजों के बल यानी एड़ियाँ उठाकर और अंगूठे-उंगलियों के सहारे खड़े होकर वस्तु को उठाने, पकड़ने या देखने की क्रिया का प्रयत्न करना। 2. कमानी (स्प्रिंग) की तरह झटके से उछलना। **उदा.** वह उचककर घोड़े/साइकिल पर सवार हो गया।

उचक्का *वि./पुं. (उचकना)* यकायक झपटकर किसी भी चीज को ले भागने वाला (व्यक्ति), उठाईगीर।

उचक्कापन *पुं.(देश.)* यकायक झपटकर किसी की चीज़ को ले भागने का अनैतिक स्वभाव।

उचटना *(अ.क्रि.) (तद् < उच्चाटन)* किसी व्यक्ति या बात से मन का उदासीन या विरक्त हो जाना। **उदा**. हम दोनों के बीच अब तक बहुत स्नेह था, पर जबसे उसने मेरे साथ धोका किया तब से मेरा मन उससे उचट गया है।

उचाट *पुं. (तद्<उच्चाट)* मन न लगने की स्थिति। **दे.** उचटना।

उचित *वि.(तत्.)* 1. जैसा होना चाहिए वैसा ही। **पर्या.**-योग्य, मुनासिब, ठीक, वाजिब; जैसे उचित समय पर proper 2. आवश्यकता, परिस्थिति, देश, काल, पात्र आदि के अनुसार करने या होने के योग्य। fit **विलो.** अनुचित।

उच्च *वि.(तत्.)* आकार, प्रकार, गुण, योग्यता, आदर्श, पद, स्थान आदि के बारे में व्यक्ति के मन में पूर्व निर्धारित सामान्य स्तर की अवधारणा से ऊपर का। **जैसे:** उच्च शिखर, उच्च कोटि, उच्च जाति, उच्च पद, उच्च कुल, उच्च विचार, उच्च स्वर, उच्च सीमा, उच्च आदर्श, उच्च शिक्षा आदि।

उच्च न्यायालय *वि.(तत्.)* राज्य स्तर की न्यायपालिका का शीर्ष न्यायालय High Court **दे.** न्यायालय **तु.** उच्चतम न्यायालय।

उच्चतम *वि. (तत्.)* गुण, योग्यता, मूल्य आदि की दृष्टि से जो सभी से ऊँचा या श्रेष्ठ हो। **जैसे**: उच्चतम शिखर, उच्चतम योग्यता आदि। **जैसे**: 1. सभी पर्वतों में हिमालय उच्चतम है। 2. उच्चतम विद्यालय। (XI-XII)

उच्चतम न्यायालय *पुं. (तत्.)* किसी भी देश की न्यायपालिका का सर्वोच्च न्यायालय। supreme court

उच्चतर [उच्च+तर] *प्रत्य. वि. (तत्.)* तुलनावाची *वि. (तत्.)* गुण, योग्यता, भाव, स्थान आदि की दृष्टि से किन्हीं दो की तुलनात्मक स्थिति में एक की अन्य से ऊपरी स्थिति। **जैसे**: उच्चतर शिक्षा, उच्चतर विद्यालय।

उच्च शिक्षा/उच्चतम शिक्षा *स्त्री. (तत्.)* स्कूल/विद्यालय स्तर से ऊपर की शिक्षा जिसमें महाविद्यालयों/कॉलिजों, विश्वविद्यालयों तथा व्यावसायिक/पेशेवर संस्थाओं द्वारा दी जाने वाली शिक्षा सम्मिलित है। higher education

उच्चाटन *पुं. (तत्.)* 1. किसी विशिष्ट प्रक्रिया द्वारा किसी का चित्त कहीं से हटाना। 2. तंत्र प्रक्रिया के अभिचारों में से एक। 3. अनमनापन, विरक्ति। **उदा.** उसके मन का ऐसा उच्चाटन हुआ कि उसका पढ़ाई में मन ही नहीं लगता।

उच्चाधिकार समिति *स्त्री. (तत्.)* किसी विशेष महत्वपूर्ण मामले पर विचार करने के लिए गठित समिति जिसके सदस्य उच्च पदस्थ सरकारी अधिकारी अथवा उच्चस्तरीय विशेषज्ञ अथवा दोनों हों और जिसकी सिफारिशों को सरकार पूरी गंभीरता से ले।

उच्चाधिकारी [उच्च+अधिकारी] *पुं. (तत्.)* संदर्भ बिंदु अथवा वक्ता के पद स्तर से बड़े स्तर का अधिकारी/अधिकारियों का समूह। high efficials

उच्चायुक्त [उच्च+आयुक्त] *पुं. (तत्.)* उच्चायोग में पदस्थापित सर्वोच्च राजनयिक अधिकारी। High Commissioner **दे.** उच्चायोग।

उच्चायोग [उच्च+आयोग] *पुं. (तत्.)* **राज.** राष्ट्रमंडलीय में से किसी भी देश का दूसरे राष्ट्रमंडलीय देश में स्थित राजनयिक कार्यालय। High Commission **तु.** दूतावास।

उच्चारण *पुं. (तत्.)* 1. भाषा विशेष के स्वनों (की ध्वनियों) और उनसे बने शब्दों और वाक्यों को बोलकर प्रकट करने की रीति। pronounciation 2. भाषा विशेष के स्वनों (की ध्वनियों) का मुख विवर में स्थान और प्रयत्न के अनुसार प्रस्तुत विवरण। articulation

उच्चावच *वि.(तत्.)* शा.अर्थ ऊँचा-नीचा, घट-बढ़, असमान। *पुं.* **भू.** मानचित्र में विभिन्न संकेत-चिह्नों से प्रस्तुत किए जाने वाले पृथ्वी के धरातलीय लक्षणों (पर्वत, पठार, मैदान, घाटी, जलाशय आदि) के लिए दिया गया सामूहिक नाम। (रिलीफ़) **गणि.** 1. संख्याओं की किसी श्रेणी के क्रमागत पदों में होने वाली घट-बढ़। **वाणि./जलवायु** 1. कीमत, लाभ, तापमान, जलस्तर आदि से संबंधित आँकड़ों का बराबर, कम-ज्यादा या ऊपर-नीचे होते रहना।

उच्चावचन *पुं.* सा.अर्थ ऊँचे-नीचे होने, घटने-बढ़ने आदि का भाव।

उच्छिष्ट *वि./पुं. (तत्.)* खाने के बाद बचा हुआ (भोजन); खाने के बाद छोड़ा हुआ (अन्न), झूठा, झूठन।

उच्छृंखल *वि.(तत्.)* शा.अर्थ जंज़ीर से छूट गया; बंधन रहित, स्वेच्छाचारी, अपनी मर्जी से काम करने वाला, मनमानी करने वाला, उद्दड, नियम न मानने वाला।

उच्छृंखलता *स्त्री.(तत्.)* उच्छृंखल होने का भाव, मनमानी करने की स्थिति, स्वेच्छाचारिता, उद्दंडता।

उछलकूद [उछल(ना)+कूद(ना] *स्त्री. (तद्.< उच्छलन+कूर्दन)* शा.अर्थ **1.** उछलना और कूदना। 2. किसी कार्य के लिए छटपटाहट के साथ दौड़-भाग करना। **टि.** उछलना और कूदना में अंतर है। उछलना, पैर के पंजों के बल पर एक ही स्थान पर उछलकर वहीं उतरना। कूदना, असमस्तरीय स्थल पर ऊपर से नीचे अथवा समस्तरीय स्थल पर आगे की ओर होता है।

उछलना *अ.क्रि. (तद्. <* उच्छलन) 1. किसी ऊँचे स्थान पर पहुँचने के लिए जल्दी में झटके के साथ उठना या बढ़ना। अपने आधार को झटके के साथ पाँवों से अलग करके ऊपर उठना और फिर या तो उसी स्थान पर तत्क्षण उतर आना या किसी अन्य आधार पर जा चढ़ना। इस प्रक्रिया में ऊँचाई अधिक होती है किंतु दूरी अपेक्षाकृत कम। **जैसे:** 1. उछलकर घोड़े पर चढ़ना (आधार भिन्न), 2. मित्र को अचानक देखकर वह उछल पड़ा। (आधार वही)

उछाल *स्त्री. (तद्. <* उच्छलन) उछलने की क्रिया। **दे.** उछलना।

उछालना *स.क्रि. (तद्. < उच्छालन)* ऊपर की ओर इस तरह फेंकना कि लगभग आसपास ही आकर गिरे। **जैसे:** बच्चे को उछालना, सिक्का उछालना।

उजड़ना *अ.क्रि.* 1. किसी बसे हुए स्थान या लहलहाते खेत का प्राकृतिक आपदा अथवा मानवीय कुकृत्य के कारण बरबाद हो जाना, ध्वस्त हो जाना, विनष्ट हो जाना। **उदा.** 1. दिल्ली कई बार उजड़ी और कई बार बसी। 2. टिड्डी दल ने खेतों को उज़ाड दिया। **विलो.** बसना; लहलहाना।

उजबक *वि. (तु. < उज्बेक* (तुर्क कबीला) 1. (एक तिरस्कार सूचक शब्द) अनुशासनहीन, जिद्दी या मनमानी करने वाला। शरारती; मूर्ख।

उजरत *स्त्री. (अर.)* किसी कार्य के बदले में कार्य करने वाले को दिया जाने वाला पारिश्रमिक, मज़दूरी।

उजला *वि. (तद्. < उज्जवल)* जो मैला न हो या जिसका मैल साफ कर दिया गया हो। **पर्या.** स्वस्छ, निर्मल, साफ़, चमकदार। **जैसे:** उजला वस्त्र। 2. सफेद, श्वेत, धवल। **जैसे:** उजली चांदनी।

उजलापन *पुं. (तद्.)* स्वच्छ, सफ़ेद या चमकदार होने का भाव। **दे.** उजला।

उजागर *वि. (तद्.)* 1. प्रकाशित, प्रकट, व्यक्त। **उदा.** अब तो रहस्य उजागर हो ही गया है। 2. मुझे प्रसन्नता है कि तुमने अपने परिवार का नाम खूब उजागर किया है।

उजाड़ *पुं.(तद्.)* 1. वह स्थल जो उजड़ गया हो; उजड़ा हुआ स्थान। **दे.** उजड़ना। **वि.** उजड़ा हुआ, ध्वस्त, वीरान, जनहीन।

उजाड़ना *सं.क्रि. (उजाड़)* बसे हुए स्थान, घर, खेत, स्मारक, बस्ती आदि को नष्ट कर देना, वीरान बना देना।

उजाला *पुं.(तद्.< उज्जवल)* प्रकाश, रोशनी। **उदा.** सूरज निकला और उजाला हो गया। **विलो.** अँधेरा।

उज्ज्वल (उत्+ज्वल) *वि.(तत्.)* 1. प्रकाश से युक्त, चमकीला, चमकदार। 2. जिसमें कोई दाग न हो, 3. शुभ्र, स्वच्छ, मलहीन। **जैसे:** उज्जवल वस्त्र। 2. चमकदार, प्रकाशमान। **जैसे:** शरद पूर्णिमा को चंद्रमा पूर्णत: उज्जवल दिखाई दिया। shining 2. ला.प्रयोग इसी तरह परिश्रम करते रहे तो मुझे तुम्हारा भविष्य उज्जवल दिखलाई देता है। bright

उज्बेक शा.मूल अर्थ उज=खुद, बेक-शासक। उज्बेक=स्वयं अपना शासक, स्वाधीन तुर्क प्रजाति का एक कबीला; उज्बेकिस्तान के निवासी।

उज्र *पुं. (अर.)* किसी कार्य या बात से असहमत होते हुए उसके बारे में अपनी ओर से विनयपूर्वक प्रकट किया गया विरोध। **पर्या.** आपत्ति। objection

उठना *अ.क्रि. (तद्. < उत्थान)* 1. निद्रा त्यागकर बिस्तर (शय्या) छोड़ना, जागना। **उदा.** प्रात: सूर्योदय से पूर्व उठना स्वास्थ्यकर है। 2. सामान्य स्थिति से अधिक ऊँचाई (संपन्नता आदि की दृष्टि से) तक पहुँचना। **उदा.** यह परिवार मेहनत के बल पर गरीबी से बहुत ऊपर उठ गया है। **मुहा.** उठ जाना=(i) समाप्त होना। **उदा.** मृत्युभोज का रिवाज उठ गया है।, मेरा अन्न-जल अब दिल्ली से उठ गया लगता है; (ii) मृत्यु होना। **उदा.** सर्दी की रात में भिखारी संसार से उठ गया और किसी ने उसकी ओर ध्यान तक नहीं दिया।

उठाईगीर *(वि.)* **[हि.उठाई< उठाना+गीर=वाला/ धारक]** सामने या पास में रखी हुई किसी की वस्तु को, उसकी आँख से बचाते हुए उठाकर ले भागने वाला। **पर्या.** उचक्का।

उठाईगीरी *स्त्री. (हि.* उठाई< उठना+गीरी भाववाचक प्रत्यय) सामने या पास में रखी किसी की वस्तु को उसकी आँख बचाते हुए उठाकर ले भागने का कुकृत्य।

उठाना *स.क्रि. (प्रथम प्रेरणार्थक < उठना)* 1. पड़ी स्थिति से खड़ी स्थिति में लाना। 2. बैठे या सोए हुए को खड़ा करना, जगाना। 3. किराए पर देना, **जैसे:** कमरा उठाना। 4. कसम खाना, **जैसे:** गंगा जल उठाना।

उड़नखटौला *पुं. तद्.* शा.अर्थ उड़ने वाला खटौला या खाट के आकार से मिलता-जुलता यान। **टि.** वायुयान के लिए प्रचलित प्राचीन ग्रामीण नाम।

उड़नतश्तरी *स्त्री. (तद्.)* शा.अर्थ उड़ने वाली तश्तरी यानी तश्तरी के आकार-प्रकार का कोई पिंड। एक प्रकार का अज्ञात ज्योतिर्मय पिंड जो कुछ लोगों द्वारा आकश में कभी-कभी उड़ता हुआ देखा गया है।

उड़नदस्ता *पुं. (उड़ना+फा.)* दोषियों को रंगे हाथों पकड़ने के लिए गठित, पुलिस दल जो सूचना मिलते ही त्वरित गति से घटना स्थल पर पहुँच जाता है। flying squed

उड़ना *अ.क्रि.* (तद्. *< उड्डयन)* 1. पक्षियों आदि का आकाश में विचरण करना। 2. विमान, हेलिकॉप्टर आदि में बैठकर आकाशमार्ग से अपने गंतव्य तक जाना। 3. फीका पड़ना। **उदा.** कपड़े का रंग उड़ गया। 4. फैलना **जैसे:** ख़बर उड़ना।

उड़वाना *(प्रेर. सक.क्रि.)* (तद्-उड्डयन) (उड़ना-उड़ाना-उड़वाना) 1. 'उड़ना' क्रिया का वह प्रेरणार्थक रूप जिसमें कोई अन्य व्यक्ति किसी दूसरे से उस क्रिया को करवाता है। **उदा.** भानु, मयंक से पतंग उड़वाता है। 2. अन्य व्यक्ति के माध्यम से किसी (बुरी) बात को फैलाना। **उदा.** सोहन ने मोहन से तुम्हारें हार जाने की अफवाह उड़ा दी।

उड़ान *स्त्री. (उड्डयन) (तद्.)* पंख युक्त प्राणियों और यंत्रों की आकाश में उड़ने की क्रिया। **जैसे:** पक्षियों की उड़ान। 2. वायुयान की उड़ान। ला.प्रयो. कल्पना की उड़ान।

उड़ेलना *सक.क्रि. (तद्.उत्+इलन=एलन)* किसी पात्र को टेढ़ा करके उसमें रखे हुए तरल पदार्थ को

दूसरे पात्र में डालने की क्रिया। **उदा.** बाल्टी के पानी को कूलर में उड़ेलना।

उड्डयन-विभाग *पुं. (तत्.)* नागरिक विमानों की उड़ान और तत्संबधी प्रचालन व्यवस्था का प्रबंधन करने वाला विभाग। aviiation department

उतरन *स्त्री.* उतरी हुई वस्तु/वस्त्र पुराने वस्त्र जो अब पहनने के काम नहीं आ रहे।

उतरना *अ.क्रि. (तद्* < अवतरण) 1. ऊपर से नीचे आना। **जैसे:** गाड़ी से उतरना, सीढ़ियाँ उतरना; पारा उतरना; भाव उतरना। 2. मात्रा का कम या समाप्त होना। **उदा.** बुखार उतरना। 3. फीका पड़ना। **जैसे:** रंग उतरना, चेहरा उतरना। 5. स्थान से हट जाना। **जैसे:** बांह उतरना, आंत उतरना। 6. याद न रहना, भूल जाना, **जैसे:** ध्यान से उतरना। **विलो.** चढ़ना।

उतार *पुं. (तद्. हिं उतरना) उतरने* का भाव। **पर्या.** ढाल। **जैसे:** पहाड़ का उतार; बुखार उतार पर है; भाव का उतार-चढ़ाव। **विलो.** चढ़ाव।

उतारना *स.क्रि. (तद्.<उत्तारण)* ऊपर से नीचे लाना। **उदा.** गाड़ी रवाना होने वाली है, सामान जल्दी-जल्दी उतार लो।, शरीर से अलग करना। **उदा.** कमीज उतार लो। **उदा.** पुस्तक में से ज्यों का त्यों न उतारो।

उतावला *वि. (तद्.<त्वरणशील)* जल्दी करने वाला, जल्दबाज, बेसब्र, अधीर, जिसे धीरज न हो।

उतावली *स्त्री. (हि. उतावला)* किसी कार्य के करने में आगे-पीछे सोचे बिना करने का भाव, शीघ्रता, जल्दबाजी। **उदा.** किसी कार्य के करने में उतावली नहीं करनी चाहिए।

उत्कंठा *स्त्री. (तत्.)* किसी बात को करने, पाने, जानने आदि की अति उत्सुकता या तीव्र अभिलाषा। **उदा.** परीक्षा में प्रथम स्थान पाने की उत्कंठा है तो डटकर परिश्रम करो।

उत्कंठित *वि. (तत्.)* (व्यक्ति) जिसके मन में किसी बात को करने, पाने, जानने आदि की अति उत्सुकता हो या प्रबल अभिलाषा हो। **पर्या.** अधीर, बेसब्र। **उदा.** पहली बार विदेश यात्रा पर जाने की खबर सुनकर वह बहुत उत्कंठित है।

उत्कट *वि. (तत्.)* जिसे दबाया न जा सके। **जैसे:** उत्कट अभिलाषा/इच्छा।

उत्कर्ष *पुं. (तत्.)* ऊपर की ओर उठने, विकसित होने, समृद् ध होने का उत्तरोत्तर प्रक्रम। **उदा.** तुम्हारे उत्कर्ष को देखकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। **विलो.** अपकर्ष।

उत्कीर्ण (उद्+कीर्ण) *वि. तत्.* खुदा हुआ, खोदकर लिखा हुआ, लिखित। **जैसे:** अशोक के शिलालेख (जो चट्टानों पर टांकी से खोद कर लिखे हुए मिलते हैं।)

उत्कृष्ट *वि. (तत्.)* श्रेष्ठ, सबसे अच्छा, उत्तम, बहुत बढ़िया। **उदा.** ताजमहल मुगल स्थापत्य कला का उत्कृष्ट उदाहरण है।

उत्कृष्टता *स्त्री. (तत्.)* 1. किसी भी क्षेत्र में बढ़िया/उत्कृष्ट होने की अवस्था या भाव। **पर्या.** श्रेष्ठता। **उदा.** ताजमहल की रचनात्मक उत्कृष्टता विश्वप्रसिद्ध है। **विलो.** निकृष्टता।

उत्खंड भ्रंश *पुं.* (तत्.) (उत्+खंड) भ्रंशोत्थ पर्वतों का उठा हुआ भ्रंश या भाग। **दे.** भ्रंशोत्थ पर्वत। horst **तु.** द्रोणिका भ्रंश=धंसा हुआ भ्रंश या भाग।

उत्खनन (उत्+खनन) *पुं. (तत्.)* ज़मीन के अंदर से कोई चीज बाहर निकालने के लिए, या प्रकाश में लाने के उद्देश्य से की जाने वाली खोदने की क्रिया या खुदाई। (ऐक्सावेशन) **उदा.** सिंधु घाटी में उत्खनन के फलस्वरूप प्राचीन भारतीय सभ्यता के असंख्य प्रमाण उपलब्ध हुए हैं।

उत्तम पुरूष *पुं. (तत्.)* व्याकरण में, वह पद (शब्द) जो बोलने वाले का वाचक हो; बोलने वाले का सूचक सर्वनाम। **जैसे:** मैं, हम।

उत्तम *वि. (तत्.)* जो देखने, सुनने या प्रयोग की दृष्टि से बहुत अच्छा हो। सबसे अच्छा, श्रेष्ठ, बहुत बढ़िया। **जैसे:** उत्तम भोजन, उत्तम स्वास्थ्य, उत्तम संगीत, उत्तम कला।

उत्तमोत्तम [उत्तम+उत्तम] *वि.(तत्.)* अच्छे से अच्छा, सर्वोत्तम, सबसे अच्छा, एक से बढ़कर एक।

उत्तर *पुं. (तत्.)* 1. वह दिशा जो दक्षिण दिशा के ठीक सामने अर्थात विपरीत दिशा में है। **उदा.** हिमालय भारत के उत्तर में है। 2. मौखिक या लिखित रूप में पूछे गए प्रश्न का जवाब। **उदा.** मैंने सभी प्रश्नों के उत्तर लिख दिऐ। 3. किसी अप्रिय व्यवहार के बदले किया गया व्यवहार,

प्रतिकार या बदला। **उदा.** तुमने उसके दुर्व्यवहार का सही उत्तर दे दिया।

उत्तर अयनांत *पुं. (तत्.)* भू.वि. वह क्षण जब सूर्य की किरणें पृथ्वी की गति के कारण घूमती हुई 23.5 अंशवाली कर्क रेखा पर सीधी पड़ती है। summer solstice

उत्तरजीविता (उत्तर+जीवी+ता) *स्त्री. (तत्.)* 1. किसी संपत्ति में इस आधार पर मिला अधिकार कि उसमें जिस अन्य का भी अधिकार था वह अब जीवित नहीं है। 2. जीवधारियों के जीवन की निरंतरता। **जैसे**: योग्यतम की उत्तरजीविता survical of the fitest

उत्तरजीवी *वि./पुं.* बाद में जीवित रहने वाला व्यक्ति अथवा हिताधिकारी। **जैसे:** बैंक में संयुक्त खाता होने पर दोनों में से किसी एक खातेदार की मृत्यु हो जाने पर दूसरा (जीवित) खातेदार। survivor

उत्तरदायित्व *पुं. (तत्.)* उत्तरदायी होने का भाव। **पर्या.** जवाबदेही। **दे.** उत्तरदायी।

उत्तरदायी *वि.* शा.अर्थ उत्तर देने वाला। (व्यक्ति) जिस पर सौंपे गए कार्य के ठीक तरह से किए जाने की जिम्मेदारी डाली गई हो और ठीक तरह से न होने पर 'क्यों नहीं हुआ?' की जवाबदेही हो। का उत्तरदायित्व हो। **पर्या.** जिम्मेवार, जवाबदेह।

उत्तरध्रुव/उत्तरी ध्रुव *पुं. (तत्.)* **भू.** पृथ्वी के अक्ष का उत्तरी अंतिम सिरा, छोर या बिंदु।

उत्तरवर्ती *वि.(तत्.)* समय की दृष्टि से बादका, अगला। **विलो.** पूर्ववर्ती। **उदा.** भारमेंदू काल उत्तरवर्ती हिंदी काव्य में खड़ी बोली का प्रयोग होने लगा।

उत्तराधिकारी (उत्तर+अधिकारी) *वि.* वह व्यक्ति या अभिकरण जो किसी के संपत्ति या कार्य आदि को उसके जीवनमुक्त/पदमुक्त होने के बाद प्राप्त करे। **पर्या.** वारिस।

उत्तरापेक्षी (उत्तर+अपेक्षी) *वि. (तत्.)* जो अपने पत्र, प्रार्थना पत्र, निमंत्रणपत्र, कथन आदि के उत्तर की अपेक्षा करता हो; जवाब चाहने वाला।

उत्तरायण (उत्तर+अयन) *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ उत्तर की ओर गमन (जाना) सूर्य की दक्षिण दिशा की तरफ से उत्तर की ओर बढ़ना अर्थात मकर रेखा से कर्क रेखा की ओर सूर्य की गति।

उत्तरार्ध (उत्तर+अर्ध) *पुं.* बादवाला आधा भाग। *तु.* पूर्वार्ध।

उत्तरी गोलार्ध *पुं. (तत्.)* भूगोलक पर खिंची विषुवत रेखा (भूमध्य रेखा) से उत्तर की ओर का आधा भाग। North Hemisphere

उत्तरोत्तर (उत्तर+उत्तर) *वि./क्रि.वि. (तत्.)* लगातार, क्रमश:। **उदा** 1. उसके स्वास्थ्य में उत्तरोत्तर सुधार हो रहा है। 2. उसका स्वास्थ्य उत्तरोत्तर क्षीण होता जा रहा है।

उत्तल *वि.(तत्.)* शा.अर्थ उठा हुआ तल। किसी भी गोलाकार या खोखली संरचना की बाहर की ओर उभरी हुई सतह। **जैसे:** ग्लोब का बाहरी दृश्य भाग; उत्तल। (कोन्वेक्स) **तु.** अवतल।

उत्तीर्ण *वि.(तत्.)* व्यु.अर्थ (इस पार से उस पार पहुँचा हुआ) सा.अर्थ परीक्षा में सफल हुआ (व्यक्ति)

उत्तेजक *वि.* 1. उत्तेजना पैदा करने वाला। 2. उभारने, भडक़ाने, उकसाने का काम करने वाला। 3. मनोवेगों को तीव्र करने वाला।

उत्तेजन *पुं.* **दे.** उत्तेजना।

उत्तेजना *स्त्री.(तत्.)* किसी कार्य या कथन विशेष के फलस्वरूप प्रभावित व्यक्ति के मनावेगों को तीव्रतर हो जाने की स्थिति। excitment

उत्तेजित (उत्तेज+इत) *तत्.* उत्तेजना से आविष्ट, जिसमें उत्तेजना पैदा हुई या आई हो। **उदा.** ज्यों-ज्यों तुम मुझे उत्तेजित करते रहोगे, त्यों-त्यों मेरा क्रोध बढ़ता जाएगा।

उत्तोलक (उत्+तोलक) *पुं.* (तराजू की तरह एक पलड़ा), ऊपर उठाने वाला। एक युक्ति विशेष जो किसी बहुत भारी वस्तु को सरलतापूर्वक एक स्थान से उठाकर दूसरे स्थान पर पहुँचा देती है। crane

उत्थान *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ ऊपर की ओर उठना। सा.अर्थ दयनीय स्थिति से उन्नत दशा में पहुँचने का भाव, समर्द्धि। **उदा.** शिक्षा और कठोर परिश्रम से ही देश का उत्थान संभव है। **विलो.** पतन।

उत्थित *वि. (तत्.)* ऊपर उठा हुआ। **उदा.** उत्थित भूभाग को पठार कहते हैं।

उत्पत्ति *स्त्री. (तत्.)* जन्म; अस्तित्व में आने की स्थिति, आरंभ, उद्‌भम।

उत्पन्न *वि. (तत्.)* जो पैदा किया गया हो या पैदा हुआ हो।, जन्मा हुआ born पैदा हुआ produced

उत्पात *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ ऊपर की ओर उठना। सा.अर्थ उपद्रव, खुराफात, आफत, अशांति।

उत्पाद *पुं. (तत्.)* 1. कृषि कर्म द्वारा पैदा हुई फसल। 2. पूंजी प्रधान उद्योगों द्वारा तैयार की गई वस्तु/वस्तुएं। product **दे.** उत्पादन।

उत्पादक *(तत्)* 1. उत्पादन से संबंधित या जुड़ा हुआ; उत्पादन संबंधी, 2. उत्पादन करने वाला, उत्पादनकर्ता। **पुं.** 3. माल पैदा करने/तैयार करने वाला व्यक्ति productivity

उत्पादकता *स्त्री.(तत्.)* उत्पादन संबंधी कार्यक्षमता या मात्रा। productivity

उत्पादन *(तत्.) पुं.* 1. किसी वस्तु या माल के पैदा करने/निर्माण करने की क्रिया या भाव। 2. उपर्युक्त क्रिया के अनुसार उत्पादित वस्तुएँ या माल भी। **जैसे:** 1. खेतों में उपजी वस्तुएँ, पैदावार। 2. कारखानों में तैयार हुआ मात्र। production

उत्पादनशुल्क/उत्पाद शुल्क *पुं. (तत्.)* 1. देश में तैयार होने वाले माल/वस्तु पर लगने वाला शुल्क/कर। 2. उत्पादनकर, आबकारी। excise duty

उत्पादशुल्क *पुं.(तत्.)* देश के भीतर तैयार होने वाले माल, वस्तुओं पर लगने वाला शुल्क, कर। **पर्या.** उत्पादन शुल्क, आबकारी।

उत्पादिता *स्त्री.(तत्.)* **दे.** उत्पादकता।

उत्प्रवास *पुं. (तत्.)* स्थायी रूप से रहने के विचार से अपना देश छोड़कर किसी दूसरे देश में जा बसने की क्रिया या भाव। emigration **विलो.** आप्रवास।

उत्प्रवासी *वि. (तत्.)* (उत् + प्रवास + ई) *वि./पुं.* किसी देश से उठकर अन्य देश विशेष में जाकर बस जाने वाला व्यक्ति या व्यक्तियों का समूह। **उदा.** भारत के कई उत्प्रवासी मारीशस में स्थायी रूप से बस गए हैं। emigriant **विलो.** आप्रवासी।

उत्प्रेक्षा *स्त्री.(तत्.)* अनुमान, उदासीनता। **साहि.** एक अर्थालंकार, जिसमें उपमेय और उपमान का भेद ज्ञात होने पर भी ऐसा उल्लेख होता है जैसे उपमेय मानो उपमान के समान है। **उदा.** 1. इतना अंधेरा छा गया मानो रात हो गई हो। 2. सोहत ओढ़े पीत पट स्याम सलौने गात। मनो नील मणि सैल पर आतप परयो प्रभात।

उत्प्रेरक *वि./पुं. (तत्.) वि.* उत्प्रेरित करने वाला। *पुं. रसा.-वह* पदार्थ जो किसी रासायनिक या जैवरासायनिक अभिक्रिया की चाल में परिवर्तन करता है या अभिक्रिया को संपन्न करता है और स्वयं अभिक्रिया के अंत में अपरिवर्तित रहता है। catalyst **दे.** उत्प्रेरण।

उत्प्रेरण *पुं. (तत्.)* **रसा.** उत्प्रेरक द्वारा किसी रासायनिक या जैवरासायनिक अभिक्रिया को त्वरित करने की क्रिया। catalysis

उत्प्रेरणा *स्त्री. (तत्.)* **मनो.** कार्य जिसके फलस्वरूप कोई कुछ करने को उद्यत हो जाए। inducement

उत्प्लावकता *स्त्री. (तत्.)* **रसा.** पदार्थ का तैरते रहने का गुण। **पर्या.** तरणशीलता।

उत्प्लावकता *स्त्री.(तत्.)* **रसा.** पदार्थ का तैरते रहने का गुण। पर्या. तरणशीलता।

उत्सर्ग *पुं. (तत्.)* 1. किसी के लिए किया गया त्याग, भेंट, अर्पण। **जैसे:** राष्ट्र के लिए कितने राष्ट्रभक्तों ने अपने सर्वस्व का उत्सर्ग किया। 2. बलिदान, **जैसे:** चंद्रशेखर ने प्राणों का उत्सर्ग कर दिया पर समर्पण नहीं किया। 3. समाप्ति, **जैसे:** किसी व्रत आदि का उत्सर्ग।

उत्सर्जन *पुं. (तत्.)* सा.अर्थ छोड़ना, बाहर निकलना। **जीव.** अवांछित पदार्थ (मल/अपशिष्ट) का बाहर निकलना। कोशिकाओं, ऊतकों या अंगों से उपापचय के परिणामस्वरूप अपशिष्ट उत्पादों waste products को त्यागने या बाहर निकालने की विधि। excresence

उत्सर्जन तंत्र *पुं. (तत्.)* उन सभी संरचनाओं और अंगों का समुच्चय जो शरीर से वर्ज्य (त्यागने लायक) पदार्थ को बाहर निकालने में योगदान करते हैं। excrcscence system

उत्सर्जित *वि.* बाहर निकाले हुए, छोड़े हुए। **दे.** उत्सर्जन।

उत्सर्जी *वि. (तत्.)* उद्योगों, तापीय विद्युत संयंत्रों तथा गाड़ियों से निकाला (अपशिष्ट पदार्थ)

उत्सव *पुं. (तत्.)* धूमधाम से मनाया जाने वाला कोई भी मंगलकार्य, **जैसे:** विवाहोत्सव, वसंतोत्सव, वार्षिकोत्सव।

उत्सादन *पुं. (तत्.)* 1. पहले से चले आ रहे किसी पद, स्थान आदि को समाप्त कर देने का भाव। **जैसे:** इस विभाग में सहायक के पद का उत्सादन कर दिया गया। abolition 2. पहले दी गई किसी आज्ञा को निरस्त या स्थगित करने का भाव। **जैसे:** हाईकोर्ट ने सेशन कोर्ट के आदेश का उत्सादन कर दिया। set side

उत्सादित *वि. (तत्.)* जिसका उत्सादन किया जा चुका हो। **दे.** उत्सादन।

उत्साह *पुं. (तत्.)* मन का वह भाव जो व्यक्ति को रुचिपूर्वक सतत् कार्य करते रहने व आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। **पर्या.** जोश, हौसला। **उदा.** सभी बच्चों ने बड़े उत्साह से खेलकूद प्रतियोगिताओं में भाग लिया।

उत्साहित [उत्साह+इत] *वि.(तत्.)* किसी समय विशेष में उत्साह या जोश से लबालब भरा हुआ। (फिल्ड विद एंथूजियाज्म) **उदा.** मैं यह काम करने के लिए बहुत उत्साहित हूँ। **दे.** उत्साह। **तु.** उत्साही।

उत्साही (उत्साह+ई) *तत् वि.* उत्साह से काम करने के स्वभाव वाला। **दे.** उत्साहित। **उदा.** वह व्यक्त बहुत उत्साही है। *तु.* उत्साहित (एंथूजियास्टिक) *पुं.* एंथूजियास्ट।

उत्सुक *वि. (तत्.)* 1. जो किसी बात को जानने के लिए या कोई अनुभव प्राप्त करने के लिए अत्यंत इच्छुक हो। **पर्या.** उत्कंठित, लालायित। 2. किसी वस्तु या कार्य को शीघ्रता से पूरा करने या पूरा होता हुआ देखने को लालायित। **उदा.** जो बच्चे पर्वतीय क्षेत्र में पर्यटन के लिए जाने को उत्सुक हों वे चलकर अपना पंजीकरण अवश्य करा लें।

उत्सुकता *स्त्री. (तत्.)* किसी बात को जानने या किसी कार्य को शीघ्रता से पूरा करने की ललक। **उदा.** ज्यों-ज्यों परीक्षा परिणाम निकलने की तारीख निकट आती जा रही है त्यों-त्यों सभी की उत्सुकता बढ़ती जा रही है।

उथल-पुथल [उथलना+अनु. पुथलना] *स्त्री.* ऐसी स्थिति जिसमें सारी व्यवस्था गड़बड़ा गई हो, भारी उलटफेर। **उदा.** कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ जिससे उथल-पुथल मच जाए एक लहर इधर से जाए एक लहर उधर से आए।

उदत्तर *पुं.(तद् < उद्धर)* 1. इस आशा से किसी अन्य को दिया गया धन आदि कि वह यथा समय पहले वाले व्यक्ति को लौटा देगा। loan 2. बाद में लौटा देने का वचन देकर कोई वस्तु या धन किसी से लेना। borow

उदधि *पुं.(तत्.)* शा.अर्थ जल को धारण करने वाला। 1. समुद्र, सागर। 2. बादल, मेघ।

उदय *पुं.(तत्.)* व्यु.अर्थ ऊपर की ओर उठना। 1. सूर्य, चद्रं, तारों आदि का निकलना। **विलो.** अस्त। 2. नई शक्ति के रूप में प्रकट होना। **जैसे:** बंगला देश का उदय, भाग्योदय। 3. नई शक्ति, देश का उदय।

उदर *पुं. (तत्.)* सा.अर्थ पेट। **उदा.** उदर-पूर्ति (पेट भरने) के लिए सभी प्राणियों को कष्ट झेलने पड़ते हैं। stomach **आयु.** प्राणियों में वक्ष और श्रोणि के बीच वाला भाग जिसके अंदर जठर, आंतें, वृक्क, मूत्राशय, गर्भाशय आदि स्थित होते है। abedoman गैर-तकनीकी। **टि.** स्त्री का गर्भाशय जिसमें भ्रूण पलकर बढ़ता है।

उदरपूर्ति *स्त्री. (तत्.) [उदर+पूर्ति]* शा.अर्थ पेट भरना, पेट का भरण। वह कार्य जो स्वयं अपने और कुटुंबियों का पेट पालने यानी जीवित रहने के लिए अपनाया गया हो। **उदा.** उदरपूर्ति के लिए कुछ न कुछ तो करना पड़ता ही है।

उदात्त *वि. (तत्.)* सा.अर्थ 1. ऊँचा/महान। **जैसे:** उदात्त चरित्र। (सब्लाइम, ऐग्जाल्टेड) 2. जिसके उच्चारण में सुर और तान उठे। **टि.** वैदिक संस्कृत में स्वर (सुर) के तीन भेद हैं- उदात्त, अनुदात्त और स्वरित।

उदार *वि.(तत्.)* 1. जो संकुचित या रूढ़ विचारों से बंधा न रहे। liberal 2. जो गरीबों की या जरूरतमंद लोगों की खुलेदिल से (वित्तीय) सहायता करे। दानशील (जेनेरस)

उदारता [उदार+ता] *स्त्री.(तत्.)* उदार होने का भाव या क्रिया। **दे.** उदार।

उदारवाद *पुं.* कट्टरपंथी विचारधारा के स्थान पर नरम नीति अपनाकर सुधारों की पोषक धारणा।

उदारवादी *वि./पुं.* कट्टरता को तिलांजलि देकर नरमनीति अपनाते हुए सुधारों का पोषक (व्यक्ति या समुदाय)।

उदारीकरण *स्त्री. (तत्.)* (आधुनिक संकल्पना) में मुख्यत: वह आर्थिक उदारीकरण जिसमें देश की अर्थव्यवस्था को अपने ही क्षेत्र में सीमित न रखकर अंतरार्राष्ट्रीय बाज़ार के लिए खोल दिया जाता है। librralisation

उदास *वि. (तत्.)* 1. जिसके चेहरे से अप्रसन्नता और निराशा की भावना झलके तथा जिसका काम करने में मन न लगे। **पर्या.** खिन्न। जिसका मन किसी काम या घटना के प्रति किसी कारण विशेष से दुखी या खिन्न हो जाए।

उदासी *वि. (देश. < उदास)* 1. उदास हो जानें को प्रकट करने वाला मन का भाव। 2. अप्रसन्नता और निराशा की भावना जो प्राय: चेहरे से भी प्रकट होती है। खिन्नता।

उदासीन *वि. (तत्.)* 1. जिसका मन काम को करने में न लगे। 2. दो परस्पर विरोधी पक्षों में से किसी एक के प्रति या दोनों के प्रति लगाव महसूस न करे। **पर्या.** तटस्थ। तटस्थ neutral 2. सांसारिक मोह-माया आदि से अलग, पृथक।

उदासीनता *(स्त्री.)* 1. किसी बात या परिस्थिति से चित्त से दुखी होने पर मन में जगा विरक्ति का भाव। **उदा.** आज काम के प्रति तुम्हारी उदासीनता देखकर मुझे हैरानी हो रही है। 2. तटस्थता, निरपेक्षता। 3. अरुचि, विरक्ति। **विलो.** रूचि।

उदाहरण *पुं. (तत्.)* किसी बात या घटना को सही या गलत सिद्ध करने के लिए वैसी ही किसी बात या घटना आदि का किया गया उल्लेख। **पर्या.** मिसाल।

उदित *वि. (तत्.)* शा.अर्थ जिसका उदय हो चुका हो। सा.अर्थ-उगा हुआ, निकला हुआ। **उदा.** सूर्य/चंद्र को उचित हुए लगभग एक घंटा हो चुका है।

उदीयमान *वि. (तत्.)* 1. जिसका उदय हो रहा हो। **उदा.** उदीयमान सूर्य को सभी नमस्कार करते हैं। 2. जिसमें जन्म से ही गुण संपन्न होने के लक्षण दिखाई दें; **पर्या.** होनहार; जिसमें शुरू से ही विकास की अच्छी संभावनाएँ दिखाई पड़े। **उदा.** जीव प्राद्यौगिक आधुनिक युग का उदायीमान उद्योग है।

उद्दहन *स.क्रि. पुं.* (उत्+दहन) *(तत्.)* अकस्मात आंच देकर जलाना। **जैसे:** उद्दहन चम्मच में deflagration

उद्देश्यहीन *वि. (तत्.)* जो कार्य उद्देश्य निर्धारित किए बिना किया जाए। **पर्या.** निररूद्देश्य। **उदा.** हमें उद्देश्यहीन कार्य नहीं करना चाहिए।

उद्गम *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ ऊपर आना; बाहर निकलना। 1. उदय, उत्पन्न होने का भाव, आविर्भाव। 2. उत्पन्न होने का स्थान, निकास। 3. नदी के निकलने का स्थान। **उदा.** गंगोत्री गंगा नदी का उद्गम स्थान है।

उद्गर *पुं.(तत्.)* वे मन के भाव जो वाणी के माध्यम से औरों के सम्मुख प्रकट हो चुके हों।

उद्घाट *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ नीचे से निकाल कर ऊपर लाना, बाहर निकालना। सा.अर्थ 1. कष्टों से छुटकारा। 2. (भारतीय दर्शन के अनुसार) जन्म और मरण के बंधन से मुक्ति)।

उद्घाटन *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ खोलना, उघाड़ना, प्रकट करना। किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति के हाथों किसी नवनिर्मित भवन का फीता काट कर अथवा सम्मेलन का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करना inaugenation **तु.** विमोचन, लोकार्पण।

उद्घाटित *वि.(तत्.)* जिसका उद्घाटन हो चुका हो। **दे.** उदघाटन।

उद्घोषणा *स्त्री. (तत्.)* सार्वजनिक और खुले रूप में की गई औपचारिक घोषणा। proclamation

उद्दंड (उत्/द्+दंड) *वि. (तत्.)* व्यु.अर्थ (जो सदा हाथ में) डंडा उठाए खड़ा रहे। किसी नियम, नियंत्रण, मर्यादा को न मानते हुए मनमानी आचरण करने वाला; किसी से न डरने या दबने वाला। **उदा.** उद्दड स्वभाव वाले बालकों को कोई पसंद नहीं करता।

उद्दंडता (उद्+दंडता) *स्त्री. (तत्.)* किसी नियम, नियंत्रण, मर्यादा को न मानते हुए मनमाना

आचरण करने का भाव, किसी से न दबने या डरने की स्थिति।

उद्दीपक *वि./पुं. (तत्.)* 1. उत्तेजना पैदा करने वाला; उत्तेजक। 2. प्रकाशित करने वाला; प्रकाशक। **मनो.** कोई कारक विशेष जिसकी अनुक्रिया में कोई अन्य क्रिया हो। stimulas stimulatant

उद्दीपन *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ उद्दीप्त करने वाली क्रिया या उसका सूचक भाव। 1. ऐसा कोई भी बाहरी या भीतरी कारक जिसके प्रभाववश जीव कुछ करे। 2. कोई स्थिति या क्रिया जिसके प्रति कोई अनुक्रिया की जाए। stimulus 3. दहकाना, जलाना। 4. उत्तेजना। **मनो.** किसी ज्ञानेंद्रिय का ऊर्जा में परिवर्तन से सक्रिय अर्थात उत्तेजित होना। stimulation

उद्दीप्त (उत्+दीप्त) *वि. (तत्.)* शा.अर्थ 1. दहकता हुआ, चमकता हुआ। 2. उत्तेजित। **दे.** उद्दीपन। (स्टिम्युलेटैड)

उद्देश्य *पुं.(तत्.)* 1. वह कार्य, वस्तु या बात जिसे ध्यान में रखकर या लक्ष्य मानकर कोई कार्य किया जाए या कहा जाए। **पर्या.** लक्ष्य, प्रयोजन। 2. **व्या.** वह पद जिसके बारे में कुछ कहा जाए या विधान किया जाए। **उदा.** लडक़ा खाना खा रहा है। में 'लड़का' subject objeetive

उद्धम *पुं.(तत्.)* सा.अर्थ मेहनत, परिश्रम, प्रयत्न, प्रयास, उद्योग। अर्थ 1. जीविकोपार्जन के लिए किया जाने वाला नियत काम। occupation 2. उत्पादन का वह कारक जो जोखिम उठाता है। (ऐन्टरप्राइज़) 3. फर्म, कंपनी का पर्याय। enterprise

उद्धरण (उद्/उत्+हरण/धरण) *पुं. (तत्.)* व्यु.अर्थ उठाकर लाना/धरना। सा.अर्थ किसी वक्ता या लेखक के कथन को वहां से उठाकर अन्यत्र ज्यों का त्यों लाना या रखना। quatation

उद्धरण-चिह्न *पुं. (तत्.)* किसी वक्ता या लेखक के कथन को वहाँ से उठाकर अन्यत्र ज्यों-का-त्यों प्रस्तुत करने के लिए प्रयुक्त विरामादि चिह्न ("......") quatation mark

उद्धृत *वि.* शा.अर्थ खींचकर ऊपर निकाला हुआ। किसी विस्तृत कथित या लिखित सामग्री में से एक अंश बाहर निकालकर अन्यत्र अविकल रूप से उदाहरणस्वरूप प्रस्तुत किया हुआ।

उद्धान *पुं.(तत्.)* सैर तथा मनोविनोद के लिए बना और पेड़-पौधों से सजा तथा हरी-भरी घास वाला चारों ओर से घिरा भूखंड। **पर्या.** बगीचा, वाटिका, बाग।

उद्धानकृषि *स्त्री. (तत्.)* वाणिज्यिक स्तर पर सब्जियों, फूलों और फलों के उत्पादन का कार्य। **पर्या.** बागवानी। harticulature **दे.** कृषि।

उद्बोधन *पुं. (तत्.)* 1. जगाने का भाव। 2. ज्ञान-वृद्धि कराने की क्रिया। **वि.** उद्बोधक, उद्बोधनीय, उद्वोधित।

उद्भावना *स्त्री.(तत्.)* मन में उत्पन्न कोई नई बात।

उद्भिज *वि./पुं. (तत्.)* धरती फोडक़र उगने/ निकलने वाले पादप (लताएँ, पौधे, वृक्ष आदि) *तु.* स्वेदज, अंडज, जरायुज (पिंडज) vetitative

उद्भुत *वि.(तत्.)* किसी कार्य के लिए सदा तैयार, तत्पर। **उदा.** वह लड़ने-भिड़ने के लिए सदा उद्युत (तैयार) रहता हो।

उद्भुव *पुं. (तत्.)* अस्तित्व में आना, उत्पन्न होना, प्रकट होना, जन्म, उत्पत्ति।

उद्यमी *वि.* उद्यम करने वाला। **पर्या.** उद्योगी, मेहनती, परिश्रमी। **दे.** उद्यम (सही अर्थ)

उद्यान *पुं. (तत्.)* सजावटी और उपयोगी दोनों प्रकार के फल-फूलों से लदा छोटे आकार का बाग। **पर्या.** बगीचा, वाटिका।

उद्योग *पुं. (तत्.)* 1. कारखानों में निर्मित वस्तुओं का उत्पादन। 2. वह संयंत्र या कारखाना जो किसी वस्तु के उत्पादन या निर्माण के लिए स्थापित किया गया है। industry **जैसे:** इस्पात-उद्योग, सूत-उद्योग आदि। 2. कठिन परिश्रम, प्रयत्न, प्रयास, कोशिश। **उदा.** मैनें स्वयं शिक्षक के माध्यम से तमिल भाषा सीखने का उद्योग किया किंतु उसमें अधिक सफलता नहीं मिली।

उद्योगपति (उद्योग+पति) *पुं. (तत्.)* उद्योग कामालिक, कारखाने का मालिक। industrialist **दे.** उद्योग।

उद्योगीकरण (उद्योग + ई + करण) *पुं. (तत्.)* नवीनतम कारखाने लगाने का काम; विशाल

उद्योगों को स्थापित करने का काम। **टि**. व्याकरणिक शुद्धता की दृष्टि से इस शब्द के स्थान पर 'औद्योगिकरण' का प्रयोग होना चाहिए।

उद्वग्निता *स्त्री. (तत्.)* उद्विग्न होने का भाव। **दे.** उद्विग्न।

उद्वर्ध (उत् + वर्ध) *वि./पुं.* 1. ऊपर की ओर वर्धनशील या उठा हुआ।

उद्विहन *वि. (तत्.)* घबराया हुआ, परेशान, चिंतित और व्याकुल।

उद्वेग *पुं. (तत्.)* घबराहट, परेशानी, चित्त की व्याकुलता। **उदा.** क्रोध के उद्वेग में वह न जाने क्या-क्या बकता रहा।

उधर *क्रि.वि. [तद् < उत्तर]* उस ओर, उस तरफ। **उदा**. कमरे में इधर पुस्तकें रखी है और उधर पत्रिकाएँ हैं। **वि.** इधर।

उधार *पुं [तद् < उद्धार]* 1. इस आशा से किसी अन्य को दिया गया धन आदि कि वह यथा समय पहले वाले व्यक्ति को उसे लौटा देगा। loan 2. बाद में लौटा देने का वचन देकर कोई वस्तु या धन किसी लेना borrow

उधेड़ना *स.क्रि. (तद् < उद् धारण)* सिलाई के टांके या बुनाई को खोलना। **उदा.** रजाई की सिलाई उधेड़ना, स्वेटर उधेड़ना।

उधेड़-बुन [उधेड़ना+बुनना] *पुं. (देशज)* शा.अर्थ पर्याप्त सोच-विचार लेने के बावजूद किसी निर्णय या निश्चय पर नहीं पहुँचने की स्थिति; उलझन।

उनींदा *वि.(तद्. <* उन्निद्र) रात में देर रात सोने के कारण जिसकी आँखों में जागने के बाद भी नींद का आलस्य भरा हुआ हो; नींद से भरी आँखों वाला, उँघता हुआ।

उन्नत *वि.(तत्.)* 1. ऊपर उठा हुआ, ऊँचा। **जैसे:** उन्नत शिखर। 2. आगे बढ़ा हुआ। **जैसे**: उन्नत देश। **विलो.** अवनत।

उन्नति *स्त्री.(तत्.)* 1. वर्तमान स्थिति पद आदि से आगे बढ़ने या ऊपर जाने की दशा का सूचकभाव। **जैसे:** भौतिक उन्नति, पदोन्नति। **पर्या.** तरक्की (प्रोमोशन)। 2. पूर्व स्थिति की तुलना में दिखाई पड़ने वाला सुधार। (इंप्रूवमेंट)

उन्नयन [उत्+नयन] *पुं.(तत्.)* शा.अर्थ ऊपर की ओर ले जाना। सा.अर्थ वर्तमान स्थिति से श्रेष्ठतर स्थिति में पहुँचना/पहुँचाना; ऊँची कक्षा या पद पर जाना। **विलो.** अवनयन।

उन्नायक (उत्+नायक) *वि.(तत्.)* ऊपर उठाने या ले जाने वाला, उन्नत करने वाला; आगे बढ़ाने वाला। **उदा.** स्वतंत्रता से पहले हमारे देश के उन्नायकों में महात्मा गाँधी का नाम आदर के साथ लिया जाता है।

उन्नीस *वि.(तद् <* एकोनविंशति) बीस से एक कम; दस जमा नौ। ला.अर्थ कुछ कम, **जैसे:** पढ़ाई में वह उन्नीस है। (यानी श्रेष्ठता की सूचक एक इकाई के रूप में मान्य, बीस की संख्या से कुछ कम है।) **मुहा.** 1. उन्नीस होना=किसी की तुलना में कुछ कम होना। 2. उन्नीस-बीस होना=कुछ कम-ज्यादा होना, लगभग।

उन्मत्त *वि.(तत्.)* 1. नशा चढ़ा होने के कारण जो आपे में न हो। 2. जिसकी बुद्धि व्यवस्थित रूप से कार्य न कर रही हो। **पर्या.** पागल, बावला।

उन्माद *पुं.(तत्.)* सा.अर्थ-पागलपन। **मनो.** उग्र और अनियंत्रनीय आवेगात्मक व्यवहार। mania **तु.** विक्षेप, विक्षिप्तता। विक्षिप्तता *स्त्री.(तत्.)* सा.अर्थ-पागलपन। **मनो.** मनोविकृति की ऐसी दशा जिसमें व्यक्ति अपनी मन:शांति, संवेगों पर नियंत्रण और संतुलन खो बैठता है। insanity

उन्मुक्त [उत्+मुन्क] *वि.(तत्.)* 1. जो पहले बंधन में हो पर अब मुक्त कर दिया गया हो। 2. जो कभी बंधा न रहा हो, खुला। **जैसे**ः उन्मुक्त वातावरण।

उन्मुक्ति 1. जो पहले बंधन में हो उसे बंधनमुक्त किया जाना। 2. कभी बंधन में न रहने की स्थिति।

उन्मूलन (उत्+मूलन) *पुं. (तत्.)* जड़ से निकाल फेंकना, समाप्ति, नाश। **जैसे:** मलेरिया उन्मूलन।

उपकरण *पुं. (तत्.)* [उप+करण] 1. किसी प्रयोग में आने वाला औजार या पुर्जा, **जैसे:** इस मशीन के उपकरण सरलता से नहीं मिलते। 2. साधन, **जैसे:** उपकरणों के बिना कारीगर अधूरा है। 3. यंत्र या यंत्र के भाग।

उपकार *पुं. (तत्.)* बिना लोभ या लालच के किसी दूसरे के लिए किया गया ऐसा कार्य जो उसके लिए लाभकारी हो। **पर्या.** भलाई, नेकी। **उदा.** मेरे प्रति आपका उपकार मैं कभी नहीं भूलूँगा।

उपक्षेत्र *पुं. (तत्.)* किसी बडे भूभाग का सीमांकित एक छोटा भाग।

उपखंड *पुं.(तत्.)* प्रशासन के सुचारू संचालन के उद्देश्य से ज़िले को बांटकर बनाई गई कई इकाईयों में से कोई एक इकाई। **पर्या.** उपप्रभाग। subdivision

उपग्रह *पुं.(तत्.)* वह आकाशीय (प्राकृतिक या कृत्रिम) पिंड जो किसी ग्रह की परिक्रमा करे। **जैसे:** पृथ्वी का उपग्रह चंद्रमा अथवा मानव निर्मित कोई भी कृत्रिम संचार उपग्रह। satellite

उपचार *पुं.(तत्.)1.* रोगी का दवा से इलाज। **पर्या.** चिकित्सा treatment 2. रोगी की सेवा। 3. रस्म अदायगी।

उपचारिका *स्त्री. (तत्.)* अस्पताल में चिकित्सक की सलाह के अनुसार रोगी को दवा देने का तथा उसके लिए अनावश्यक सेवा का कार्य करने वाली महिला। nurse

उपचुनाव *पुं.(तत्.)* दो नियमित चुनाव और अगले चुनाव के समय के बीच में किसी सदस्य के त्यागपत्र या मृत्यु से उत्पन्न रिक्त स्थान को भरने के लिए किया जाने वाला विशेष चुनाव। by election **पर्या.** उपनिर्वाचन।

उपज *स्त्री.(तद्. < उपचय)* 1. उत्पन्न/पैदा होने की क्रिया या भाव। 2. उत्पन्न/पैदा हुई वस्तु की मात्रा। 3. खेत-खलिहान, बागवानी आदि में पैदा हुई वस्तु की मात्रा। **पर्या.** पैदावार। 4. produce मन में उठी हुई कल्पना।

उपजना *अ.क्रि. (तद्*<उपजन्यते) 1. जमीन में या खेत में किसी चीज़ का पैदा होना या उगना। **उदा.** खेतों में कुछ पौधे अपने आप उपजते हैं। 2. मन में किसी विचार या भाव का पैदा होना/उत्पन्न होना। **उदा.** हमारे मन में तरह-तरह के भाव उपजते हैं।

उपजाऊ (उपज+आऊ) *वि.(देश.<उपज)* जिसमें अधिक उपज संभावित हो। **पर्या.** उर्वर। **जैसे:** उपजाऊ भूमि। **विलो.** बंजर।

उपत्यका *स्त्री.(तत्.)* 1. पहाड़ की तलहटी; पहाड़ के नीचे का भूक्षेत्र, तराई foothils 2. दो पहाड़ों के बीच का संकरा भूक्षेत्र, घाटी (वैली) **तुल.** अधित्यका।

उपदेश *पुं. (तत्)* 1. नेक सलाह, हित की बात, शिक्षा, सीख, सलाह। 2. धार्मिक प्रवचन।

उपदेशक *वि./पुं. (तत्.)* दूसरों को धार्मिक, नैतिक आदि उपदेश या सीख देने वाला (व्यक्ति)।

उपद्रव *पुं. (तत्.)* शांति-व्यवस्था को भंग करने वाला प्राय: हिंसा या तोडफ़ोड़ करने वाला (कु) कृत्य। **पर्या.** उत्पात, दंगा-फसाद, हंगामा।

उपद्रवग्रस्त *वि. तत्.)* (वह क्षेत्र) जहाँ हिंसा या तोडफ़ोड़ की भारी मात्रा में घटनाएँ घट रही हों।

उपद्रवी *वि. (तत्.)* 1. उपद्रव या ऊधम मचाने वाला 2. नटखट **जैसे:** विद्यालय में कुछ छात्र उपद्रवी होते हैं 3. दंगा फ़साद करने वाला।

उपधातु [उप+धातु] *पुं. (तत्.)* तत्वों का वर्ग जिनके गुण-धर्म धातु और अधातु के बीच के होते हैं, **जैसे:** जर्मेनियम, एन्टीमनी आदि। metalliod

उपनगर *पुं. (तत्.)* किसी नगर की सीमा से लगा अपेक्षाकृत छोटा और बाद में विकसित रिहायशी इलाका जो नागरिक सुविधाओं की दृष्टि से उसी (महा) नगर की प्रमुख इकाई बन गया हो। **जैसे**: (दिल्ली/नई दिल्ली का) द्वारका उपनगर। sub city

उपनयन [उप+नयन] *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ (गुरू के) समीप ले जाना। **जैसे:** उपनयन संस्कार यानी प्राचीन काल का वह संस्कार जिसमें (अष्टवर्षीय) बालक को यज्ञोपवीत पहना कर शिक्षा ग्रहण करने के लिए गुरू के पास भेजा जाता था और जो अब भी किसी-न-किसी रूप में भारत में प्रचलित है। **पर्या.** यज्ञोपवीत संस्कार।

उपनाम *पुं. (तत्.)* 1. वास्तविक नाम से भिन्न नाम, पुकारा जाने वाला नाम। **जैसे:** छुट्टन, बबलू आदि। 2. कुलनाम 3. कवियों, लेखकों आदि का स्वयं रखा नाम। **जैसे:** कन्हैया लाल मिश्र 'प्रभाकर', सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' 4. पदवी surname

उपनियम *पुं.(तत्.)* किसी नियम के एकाधिक भागों में से एक जिसका संख्यांकन नियम से भिन्न रीति से किया जाए। **जैसे:** नियम 5 का उपनियम (अ) sub rule

उपनिर्वाचन *पुं.(तत्.) [उप+निर्वाचन]* नियमित चुनाव और अगले चुनाव की अवधि के दौरान

किसी सदस्य की मृत्यु या त्यागपत्र से उत्पन्न रिक्त को भरने के लिए किया जाने वाला विशेष चुनाव। **पर्या.** उपचुनाव। byelection

उपनिवेश *पुं.(तत्.) [उप+निवेश]* 1. दूसरे देश से आकर बसे लोगों की बस्ती। **जैसे**: कोच्चि में यहूदियों का उपनिवेश (बस्ती।) 2. वह देश या क्षेत्र जो किसी अन्य प्रभावी देश के नियंत्रण में हो और जहाँ उस नियंत्रक देश के निवासी आकर बस गए हों। **जैसे:** स्वतंत्रता से पूर्व गोवा पुर्तगालियों का तथा पांडिचेरी (पुदुच्चेरी) फ्रांस का उपनिवेश था। colony

उपनिवेशवाद *पुं.(तत्.) [उपनिवेश-वाद]* दूसरे देशों को अथवा उसके कुछ क्षेत्रों को अपने कब्जे में लेकर वहाँ अपने देश के लोगों को बसाने की प्रक्रिया अथवा इस प्रक्रिया में विश्वास रखने का सिद्धांत। colonialism

उपनिवेशवादी *वि./पुं. (तत्.) [उपनिवेश+वादी]* 1. उपनिवेशवाद से संबंधित। 2. उपनिवेश स्थापित करने वाला देश अथवा उपनिवेशवाद में विश्वास करने वाला व्यक्ति या समुदाय। colonialist

उपनिषद *स्त्री. (तत्.) [उप+नि+सद्]* शा.अर्थ 1. ब्रह्मविद्या की ज्ञान प्राप्ति के लिए गुरू के निकट बैठना 2. वेद की शाखाओं वाले ब्राह्मण ग्रंथों के अंतिम भाग जिनमें आत्मा और परमात्मा आदि का वर्णन किया गया है। इन ग्रंथों की संख्या 108 मानी जाती है 3. वेदांत दर्शन।

उपन्यास *पुं.(तत्.)* 1. साहित्य की एक कल्पना प्रधान रचनात्मक विधा, जिसमें प्रबंधकाव्य की शैली पर बहुत लंबी गद्यात्मक कथा होती है तथा जिसमें अनेक मुख्य तथा गौण पात्रों, घटनाओं का समावेश होता है 2. उक्त विधा की रचना nobel *वि.* औपन्यासिक। **उदा.** 'गोदान' उपन्यास की रचना प्रेमचंद ने की।

उपन्यासकार *पुं. (तत्.)* उपन्यास का रचयिता। (नोवेलिस्ट) **दे.** उपन्यास। **उदा.** उपन्यासकार प्रेमचंद ने 'गोदान' की रचना की।

उपभोक्ता *वि./पुं.* 1. किसी उत्पाद का उपभोग करने वाला या उसे काम में लाने वाला।, 2. वह व्यक्ति जो जीवनयापन के लिए उपयोगी वस्तुओं को बाजार से खरीदकर उनका इस्तेमाल करता है। consumer 3. बरतने वाला, भोग करने वाला।

उपभोग *पुं.(तत्.)* 1. **वाणि.** प्राप्त या खरीदी हुई वस्तु का उपयोग। consumtion 2. मनपसंद किसी वस्तु का आनंद उठाना या उसके सुख का अनुभव करना। **उदा.** आजकल लोग पैसे के बल पर नई-नई वस्तुओं का उपभोग करते हैं। enjoymnet

उपमहाद्वीप *पुं. (तत्.) (उप+महा+द् वीप)* किसी महाद्वीप का वह विस्तृत भू-क्षेत्र जो सामान्यत: तीन और से समुद्र से घिरा होता है ओर अपनी-अलग जैसी पहचान प्रकट करता है। **जैसे**: भारतीय उपमहाद्वीप जिसमें (भारत, पाकिस्तान, श्रीलंका, नेपाल, बांग्लादेश आदि आते हैं।) *तु.* महाद्वीप।

उपमा *स्त्री.(तत्.)* शा.अर्थ समानता; समानता। साहि.अर्थ एक अर्थालंकार जिसमें किसी प्रसिद्ध वस्तु या व्यक्ति की समानता के आधार पर किसी वस्तु या व्यक्ति के रूप, गुण आदि का वर्णन किया जाता है। **उदा.** 1. पीपर पात सरिस मन डोला। 2. महंगाई बढ़ रही निरंतर द्रुपद सुता के चीर सी।

उपमान *पुं.(तत्.)* शा.अर्थ समरूपता। वह वस्तु, गुण जिससे किसी की तुलना की जाए। **उदा.** उसका मुख चंद्रमा के समान सुंदर है। यहाँ 'चंद्रमा' उपमान है, जिसकी तुलना या समानता 'मुख' से की गई है। **तु.** उपमेय।

उपमृदा *स्त्री.(तत्.)* मृदा के विभिन्न स्तरों में से ऊपरी मृदा से निचले स्तर वाली मृदा। subsoil

उपमेय *पुं.(तत्.)* शा.अर्थ उपमा (तुलना) के योग्य। साहि. जिसकी किसी से तुलना की जाए यानी उपमा दी जाए। **उदा.** उसका मुख चंद्रमा के समान सुंदर है में 'मुख' उपमेय है क्योंकि इसकी तुलना चंद्रमा से की जा रही है। **तु.** उपमान।

उपमेयोपमा *स्त्री. (तत्.)* [उपमेय+उपमा] काव्य. एक अर्थालंकार जिसमें उपमेय और उपमान को परस्पर उपमान और उपमेय कहा जाता है। **जैसे:** चंद्रमा के समान दूध है और दूध के समान ही चंद्रमा है।

उपयुक्त *वि. (तत्.)* 1. जो किसी अन्य वस्तु, व्यक्ति आदि के अनुसार ठीक-ठीक मेल खाए।

जैसे: उपयुक्त औषधि। (फिट/स्यूटेबल) 2. जैसा होना उचित हो, वैसा ही। **जैसे:** उपयुक्त उत्तर। proper 3. उपयोगी। useful

उपयुक्तता *स्त्री. (तत्.)* उपयुक्त होने का भाव। समय, परिस्थिति आवश्यकता आदि के अनुरूप होने की स्थिति। suitability, apporoprate property, fitness usefulness

उपयोग *पुं. (तत्.)* किसी चीज़ के काम में लेने या आने की स्थिति अथवा भाव, वस्तु आदि का व्यवहार में लाया जाना। **पर्या.** इस्तेमाल, व्यवहार, use

उपयोगिता *स्त्री. (तत्.)* उपयोगी या लाभकारी होने का सूचक भाव। **उदा.** खेतीबाड़ी के कार्य में हल की उपयोगिता स्वयंसिद्ध है। utility **पर्या.** उपादेयता।

उपयोगितावाद *स्त्री. (तत्.)* यह मान्यता कि वही कार्य सबसे अच्छा माना जाना चाहिए जो सबका हित करने वाला हो। (सर्वजन सुखाय, सर्वजन हिताय) utilitarianism

उपयोगितावादी *वि./पुं. (तत्.)* 1. उपयोगितावाद संबंधी। 2. वह व्यक्ति जो उपयोगितावाद में विश्वास रखता हो या अनुयायी हो।

उपयोगी *वि. (तत्.)* काम में आने/लिए जाने के योग्य; लाभदायक, फायदेमंद। **दे.** उपयोगिता।

उपरांत *क्रि.वि. उपरांत (तत्.)* पीछे, बाद में, अनंतर।

उपराज्यपाल *पुं.(तत्.)* भारत के संविधान के अनुसार केंद्र प्रशासित क्षेत्र अथवा सीमित अधिकार वाले राज्य का सर्वोच्च पदाधिकारी जो राष्ट्रपति द्वारा नियुक्त होता है और उसी के प्रति उत्तरदायी होता है।

उपराम *पुं.(तत्.)* 1. विरक्ति, वैराग्य। **जैसे:** उन्हें गृहस्थ जीवन से उपराम हो गया है। 2. निवृत्ति, छुटकारा। **जैसे:** सांसारिक भोगों से मन को उपराम कहाँ? 3. विश्राम, विश्रांति। 4. मृत्यु।

उपरिपुल *पुं.* सडक़/राजमार्ग को पार करने के लिए उसके ऊपर आरपार बना पुल। fly over

उपर्युक्त (उपरि+उक्त) *वि. (तत्.)* ऊपर कहा गया, जिसका ऊपर उल्लेख किया जा चुका है। **टि.** 'उपर्युक्त' के स्थान पर कई लोग 'उपरोक्त' का प्रयोग करते हैं जो व्याकरणिक रचना की दृष्टि से सही नहीं है।

उपलब्ध *वि.(तत्.)* जो प्राप्त हो या हो सके। **जैसे**: कार्यालय आने-जाने के लिए मुझे सरकारी वाहन स्टाफकार उपलब्ध है।

उपलब्धता *स्त्री. (तत्.)* उपलब्ध होने की सुविधा।

उपलब्धि *स्त्री.* 1. प्रयत्नपूर्वक प्राप्त वस्तुएँ या सफलता achivement **उदा:** साहित्य के क्षेत्र में आपकी उपलब्धियाँ क्या हैं?

उपला *पुं.* गोबर को पाथकर और सुखाकर बनाया गया इंर्धन, कंडा।

उपवन *पुं.(तत्.)* शा.अर्थ छोटे आकार का वन। सा.अर्थ बाग, बगीचा, फुलवाड़ी आदि।

उपवास *पुं.(तत्.)* 1. धार्मिक कृत्य के रूप में भोजन का त्याग। वह व्रत जिसमें अन्न ग्रहण नहीं किया जाता (पर फलाहार की अनुमति होती है।) fast **तु.** भूखहड़ताल, अनशन।

उपशीर्षक [उप+शीर्षक] *पुं.(तत्.)* मूल शीर्षक के अंतर्गत आए विषय को अधिक स्पष्ट करने वाले विभाजन का सूचक गौणशीर्षक। sub heading

उपसंपादक [उप+संपादक] *पुं. (तत्.)* मुख्य संपादक के अधीन या उसके साथ काम करने वाला, वह संपादक जिसे कोई नियत कार्य सौंपा जाता है और जो मुख्य संपादक की अनुपस्थिति में मुख्य संपादक का कार्यभार भी वहन करता है। sub-editor

उपसंहार *पुं. (तत्.)* किसी पुस्तक या लेख के अंत में जोड़ा गया वह अध्याय या अंश जिसमें उस पुस्तक या लेख का निचोड़ होता है यानी सारांश के रूप में (संक्षेप में) सारी बात/बातें बता दी जाती हैं।

उपसभापति *पुं. (तत्.)* 1. किसी संस्था, सभा, समिति का वह प्राधिकारी जो सभापति से क्रम में दूसरा होता है और सभापति की अनुपस्थिति में उसके कार्यों का संचालन, नियमन आदि करता है। Vice President 2. राज्यसभा में सभापति की अनुपस्थिति में उसके कार्यों का संचालन, नियमन करने के लिए उसी सदन के सदस्यों में से निर्वाचित प्राधिकारी। deputy chairman

उपसमिति *स्त्री. (तत्.)* किसी बड़ी समिति के ही सदस्यों में से नामित तीन-चार सदस्यों वाली छोटी समिति जो सौंपे गए कार्य विशेष की रिपोर्ट बड़ी समिति में प्रस्तुत करती हैं sub committee

उपसर्ग *पुं. (तत्.)* व्युं.अर्थ समीप छोड़ा गया। **व्या.** वह शब्दांश जो किसी शब्द से पहले लग कर उसका अर्थ बदल देता है। **जैसे**: उपहार में 'उप' उपसर्ग है, इसी तरह सरपंच में 'सर' उपसर्ग है। (प्रीफिक्स) **तु.** प्रत्यय।

उपस्थित *वि.(तत्.)* जो अपेक्षित स्थान पर मौजूद हो। **पर्या.** हाज़िर। उदा. कक्षा में सभी छात्र उपस्थित है।।

उपस्थिति *स्त्री.* 1. अपेक्षित स्थान पर किसी/किन्हीं की मौजूदगी। 2. मौजूद लोगों की कुल संख्या।

उपस्थितिपंजिका *स्त्री. (तत्.)* वह पंजिका यानी रजिस्टर जिसमें छात्रों, कर्मचारियों आदि की हर दिन की समय पर मौजूदगी दर्ज (अंकित) की जाती है। attendance register

उपहार *पुं. (तत्.)* किसी अवसर विशेष पर अपने प्रिय या आदरणीय व्यक्ति को सम्मानार्थ दी जाने वाली वस्तु। **पर्या.** भेंट, सौगात। **उदा.** मुझे अपने जन्मदिन पर तरह-तरह के उपहार प्राप्त हुए। project gift

उपहास *पुं. (तत्.)* हंसते हुए किसी की बुराई या निंदा करने का (अवांछित) कृत्य। **पर्या.** मज़ाक।

उपाख्यान [उप+आख्यान] *पुं. (तत्.)* 1. मुख्य कथा के अंतर्गत आई हुई उपकथा। **जैसे:** रामायण में शबरी का उपाख्यान। 2. विस्तार से वर्णित कोई पुरातन कथा। **जैसे**: नचिकेतोपाख्यान।

उपादान *पुं.(तत्.)* वह कच्चा माल (आधार सामग्री) जिससे कोई वस्तु बनी हो। **जैसे:** मिट्टी जिससे घड़ा बनता है।

उपादानकारण *पुं.(तत्.)* वह कारण जो कार्य में परिणत हो जाता है; वह आधार सामग्री जिससे कोई वस्तु बनती है। **दे.** उपादान।

उपादेय *वि.(तत्.)* लेने योग्य, ग्रहण करने योग्य, उपयोगी, लाभदायक।

उपादेयता *स्त्री.(तत्.)* ग्रहण करने की योग्यता, लाभदायक स्थिति का सूचक भाव।

उपाधि *स्त्री.(तत्.)* 1. किसी शैक्षिक पाठ्यक्रम की सफल समाप्ति पर विद्यार्थियों/छात्रों को प्रदान किया जाने वाला श्रेणीसूचक नाम। **जैसे**: स्नातक की उपाधि, डॉक्टर (वाचस्पति) की उपाधि आदि। 2. जनता द्वारा प्रदत्त मान अथवा सम्मानसूचक शब्द। किसी अतिविशिष्ट व्यक्ति के प्रथम नाम के साथ जनता द्वारा जोड़ा गया सम्मानसूचक शब्द। **जैसे:** महात्मा गांधी, <u>लोकमान्य</u> तिलक, <u>महामना</u> मालवीय, <u>नेताजी</u> सुभाषचंद्र बसु आदि।

उपाध्यक्ष [उप+अध्यक्ष] *पुं.(तत्.)* 1. अध्यक्ष की सहायता तथा उसकी अनुपस्थिति में उसके कार्य का निर्वहन करने के लिए अधिकृत व्यक्ति। deputy chairman 2. लोकसभा में अध्यक्ष की अनुपस्थिति में उसके कार्यों का संचालन, नियमन आदि करने के लिए उसी सदन के सदस्यों में से निर्वाचित प्राधिकारी। deputy speaker

उपानह *पुं.(तत्.)* चलते समय पैरों को सुरक्षित रखने का साधन। **पर्या. जूता**, पादत्राण, चप्पल आदि।

उपाय *पुं.(तत्.)* 1. युक्ति, साधन device 2. सुरक्षा आदि के लिए अपनाए गए साधन। measures 3. दोषों के निवारण के लिए किए गए कार्य। remedy 4. निष्पादन के लिए अपनाए गए साधन। means

उपार्जन [उप+अर्जन] *पुं.(तत्.)* परिश्रम से धन कमाने का कार्य।

उपार्जनीय *वि.(तत्.)* उपार्जन करने के योग्य।

उपार्जित *वि.(तत्.)* [परिश्रम से कमाया] गया।

उपालंभ *तत्* **दे.** उलाहना।

उपासक *वि. (तत्.)* (स्त्री-उपासिका) उपासना/पूजा करने वाला। **उदा.** वह हनुमानजी का उपासक है। **दे.** उपासना।

उपासना *स्त्री. (तत्.)* व्यु.अर्थ निकट बैठना,। सा.अर्थ-सामान्यत: सम्मुख बैठकर अपने इष्टदेव की वाणी, पुष्प और अर्चना से की गई पूजा। पूजा, अर्चना, सेवा, आराधना, भक्ति।

उपेक्षा *स्त्री. (तत्.)* 1. अयोग्य समझकर ध्यान न देना। **पर्या.** अवहेलना तिरस्कार। neglect2.

उदासीनता का भाव। **पर्या.** अन्यमनस्कता, लापरवाही (इंडिफडेन्स)

उपोष्ण कटिबंध [उप+उष्ण=कम गरम+कटिबंध= कमरपेटी] *पुं.(तत्.)* भूमध्यरेखा के दोनों ओर का 10^{0} से 30^{0} अक्षांश के बीच का भाग जहाँ उष्णता अपेक्षाकृत कम होती है। **उदा.** भारतीय उपमहाद्वीप मं गंगा-ब्रह् मपुत्र का बेसिन उपोष्णकटिबंध (10^{0} से 30^{0} उत्तर अक्षांश के मध्य) में स्थित है। tropical zone

उफ़ *(अव्यय.) (अर.)* दु:ख, कष्ट, पीड़ा आदि भावों को सूचित करने वाला शब्द। ओह, च्च्, अरे-अरे, आह, हाय। शा.अर्थ बड़े दुख की बात है। **जैसे:** उफ़ उसका बच्चा छत से गिर गया। **मुहा.** 1. उफ़ करना=कष्ट या दु:ख के भाव को व्यक्त करना। 2. उफ़ तक न करना=कष्ट, व्यथा, या चोट आदि को चुपचाप सहन कर लेना।

उफनना *अ.क्रि.(तद्.<उत्फणन/उत्स्फालन)* उबलते द्रव पदार्थ का पात्र की सीमा पारकर बाहर निकलना। **जैसे:** दूध का उफनना; वर्षाऋतु में नदी का उफनना। **तु.** उबलना।

उफान *पुं.(उफनना)* उफनने की स्थिति का सूचक भाव; आवेग में सीमा छोडक़र बाहर निकल जाने की स्थिति। **जैसे:** दूध का उफान; नदी का उफान, क्रोध का उफान। **दे.** उफनना। **तु.** उबाल।

उबटन *पुं.(तद्.<उद्वर्तन)* बदन को कांतिमान बनाने के लिए स्नान से पहले शरीर पर मलने के लिए तैयार किया गया लेप। **टि.** यह लेप प्राय: सरसों/तिल के तेल में जौ का आटा/बेसन एवं हल्दी चंदन का बुरादा आदि मिलाकर तैयार किया जाता है। कभी-कभी दही में बेसन, हल्दी मिलाकर भी इसे बनाते हैं।

उबरना *अ.क्रि. (तद्* द्विवियते) किसी विषम परिस्थिति से निकलना या मुक्त होना। निस्तार पाना, छूटना। **उदा.** 1. तुमने मुझे पारिवारिक संकट से उबरने में मदद की, इसके लिए धन्यवाद। 2. देश अब आर्थिक संकट से उबर गया है।

उबलना *अ.क्रि.(तद्<*उद्वलन) उच्च तापमान पर द्रव पदार्थ का इस स्थिति में पहुँचना कि उसमें बुलबुले उठने लगें और कुछ अंश भाप बनकर उड़ता दिखाई दे। **उदा.** दूध उबल गया है, चूल्हे से नीचे उतार लो।

उबाऊ *वि.* उबा देने वाला, उकताने वाला। **जैसे:** यह कार्य बहुत उबाऊ है। boring

उबारना *प्रेर.स.क्रि. [तद्* <उद्वारयति] **दे.** उबरना। उदाहरण-तुमने मुझे पारिवारिक संकट से उबार दिया इसके लिए धन्यवाद।

उबाल *पुं.(उबलना/उबालना)* उबलने की स्थिति का सूचक भाव। **दे.** उबलना/उबालना।

उबालना *सं.क्रि. [तद् उद्वालन]* द्रव पदार्थ को इतना अधिक ताप देना कि उसमें बुलबुले उठने लगें तथा कुछ अंश भाप बनकर उड़ता दिखाई दे। **उदा.** पानी को उबालकर पीने से जलजनित बीमारियों से बचा जा सकता है। **तु.** उफनना। (**टि.** उबलना उफनने की पूर्व स्थिति का सूचक है।)

उभरना *अ.क्रि. [तद्<उद्भरण]* 1. ऊपर उठना, प्रकट होना। 2. सामने आना। **जैसे:** 1. नई विपत्ति उभर आई है। 2. एकांत में बैठा तो मन में कई विचार उभरने लगे।

उभार *पुं.* उभरने की क्रिया का सूचक शब्द, ऊँचा उठा हुआ भाग।

उमंग *स्त्री. (तद्.* < उन्मंग) मन में उत्पन्न होने वाला वह उत्तेजनापूर्ण और सुखद भाव जो किसी काम को प्रसन्नतापूर्वक करने में तत्पर करता है। **उदा.** उसने अपने भाई की शादी में सभी मित्रों को बड़ी उमंग से निमंत्रित किया। **पर्या.** उल्लास, मौज

उमड़ना *अ.क्रि.* घनीभूत होकर फैलना, बिखना, बरसना आदि। **जैसे:** बादलों का उमड़ना, आँसुओं का उमड़ना, नदी का उमड़ना, भीड़ का उमड़ना आदि।

उमराव *पुं. (अ.* < उमरा) 'अमीर' का बहुवचन। 1. अमीर लोग, 2. स्वतंत्रतापूर्व की रियासतों के ठिकानों के मालिक। (ठाकुर, सरदार आदि।) **दे.** अमीर।

उमस *स्त्री. (फ़ा.)* हवा न चलने से होने वाली गरमी, बरसात की गरमी जिसमें पसीना नहीं सूखता और शरीर में चिपचिपाहट बनी रहती है। humidity

उम्दा *वि.(अ.<उम्दः)* जो गुणों की दृष्टि से श्रेष्ठ हो। **पर्या.** बढ़िया**,** उच्च कोटि का। **जैसे**: उम्दा सामाना। **उदा.** आपके उम्दा सुझाव के लिए धन्यवाद।

उम्मीद *स्त्री. (फा.)* आशा, अपेक्षा, इच्छा। 1. आशा। **उदा.** मुझे तुम्हारे पास हो जाने की पूरी उम्मीद है। hope 2. अपेक्षा। **उदा.** तुमने इतना-सा काम नहीं किया, बताओ, तुमसे और क्या उम्मीद की जा सकती है। expeetation **मुहा.** उम्मीदों पर पानी फिरना=सारी आशाएँ ध्वस्त हो जाना।

उम्मीद्वार *वि./पुं. (फ़ा.)* व्यक्ति जो वह पाने की उम्मीद(आशा) लगाए हो जिसकी उसने मांग की है या जिसके लिए उसने आवेदन किया है। **पर्या.** प्रत्याशी**,** अभ्यर्थी (कैंडिडेट) **जैसे**: वह निदेशक के पद का उम्मीदवार है।

उम्मीदवारी *स्त्री. (फा.)* उम्मीदवार होने की स्थिति। **दे.** उम्मीदवार।

उम्र/उमर *स्त्री.(अर.)* 1. जन्म के पश्वात वर्तमान तक बीते हुए वर्ष। **पर्या.** अवस्था**,** आयु, वय। **उदा.** आपके भाई की उम्र/उमर कितनी है? 2. जन्म से लेकर मृत्यु तक का समय (वर्षों में), पूरा जीवनकाल। **पर्या.** आयु। **उदा.** मैं तुम्हें याद कर रहा था कि तुम आ गए। तुम्हारी उमर/उम्र बड़ी लंबी है।

उम्रकैद *स्त्री. (अ.)* आजीवन कारावास का दंड।

उर *पुं.(तत्.)* 1. छाती, 2. सीना। 3. वक्षस्थल।

उर्वर *वि.(तत्.)* 1. (भूमि या खेत) जिसमें पेड़-पौधे या फसल की पैदावार अधिक मात्रा में हो। 2. प्राणी (मानव, पशु और पादप) जो संतोनोत्पत्ति, बीज आदि पैदा करने में समर्थ हों। 3. जो अच्छे परिणाम, विचार का जनक हो। **जैसे**: उर्वर मस्तिष्क।

उर्वरक *वि./पुं. (तत्.)* शा.अर्थ उपजाऊ करने वाला या उपज बढ़ाने में काम आने वाला (पदार्थ)। **रसा./कृषि** पौधों को सघन मात्रा में पोषक तत्व पहुँचाने वाला (पदार्थ) जो जैविक तथा रासायनिक दोनों प्रकार का होता है। **टि.** जैविक (या carbonic) उर्वरक को खाद कहते हैं तथा कारखाने में तैयार किए जाने रासायनिक लवण को सामान्यत: उर्वरक कहा जाता है। रासायनिक उर्वरक के उदाहरण है। यूरिया, अमोनिया, सल्फेट, सुपर फॉस्फेट, पोटाश, NKP आदि। **तु.** खाद।

उर्वरता *स्त्री.(तत्.)* उपजाऊपन, उपजाऊ होने का गुणधर्म। उर्वर होने का भाव। **दे.** उर्वरक।

उलझन *स्त्री.(तद्.>अवरुंधन)* 1. उलझने की ऐसी स्थिति जिसे सुलझाना भले ही असंभव हो किंतु अत्यंत कठिन अवश्य हो। परस्पर फँस जाने की स्थिति। 2. गुत्थी। 3. समस्या। **जैसे**: 1. नई-नई उलझने पैदा करना उसका स्वभाव बन गया है। **दे.** उलझना।

उलझना *अ.क्रि. (तद् < अवरुंधन)* 1. धागा, डोरी, बाल आदि का आपस में इस तरह फँस जाना कि उन्हें पूर्वस्थिति में लाने (यानी सुझलाने) में बड़ी कठिनाई आए। 2. किसी ऐसे वाद-विवाद में फँस जाना जिसका हल न निकले। **जैसे**: मामला बहुत उलझ गया है। 3. एक व्यक्ति की दूसरे व्यक्ति से शारीरिक या वैचारिक स्तर पर छोटी-मोटी झड़प। **विलो.** सुलझना।

उलट, पलट/उलट/पुलट *स्त्री.(देश.)* 1. अदल-बदल। 2. अव्यवस्था, गड़बड़ी।

उलटना *अ.क्रि. (देश.)* 1. नीचे का भाग ऊपर और ऊपर का भाग नीचे होना/करना। **जैसे**: बस उलट गई और कई लोग जख्मी हो गए। 2. अभी कपड़े गीले हैं उन्हें उलट/उलटा दो। *स.क्रि.* उलटाना। **मुहा**. उलटना-पलटना=कुछ का कुछ कर देना, अस्त-व्यस्त कर देना। 2. उलटे पाँव लौटना=गंतव्य तक पहुँचने या उद्देश्य की पूर्ति से पहले ही वापस आ जाना।

उलट-फेर *पुं.(देश.)* 1. अदल-बदल, परिवर्तन, हेर-फेर। 2. जीवन में सुख-दुख का आना-जाना।

उलटबाँसी *स्त्री. (देश.)* ऐसी कविता, उक्ति जिसमें सामान्य से उलटी बात कही गई हो, लेकिन उसका कुछ गूढ़ अर्थ भी हो। **जैसे**: अमीर खुसरो या कबीर की उलटबाँसिया। **उदा.** 1. ठाढ़ा सिंह चरावै गाई। 2. रंगी को नारंगी कहैं, बने दूध को खोया, चलती को गाड़ी कहैं, देख कबीरा रोया।

उलटा *वि.(देश.)* उलटा हुआ, **पर्या.** विपरीत, विरूद्ध। **दे.** उलटना। **मुहा.** 1. उलटे पाँव लौटना=तुरंत वापस जाना। 2. उलटी गंगा=नियम विरूद्ध बात। 3. उलटी माला फेरना=बुरा चाहना। 4.

उलटा जमाना=ऐसा समय जहाँ सब नियम विरूद्ध हो। 5. उलटी खोपड़ी=महामूर्ख। 6. उलटी-सीधी सुनाना=भला-बुरा कहना।

उलटा-पलटा-उल्टा-पुलटा *स्त्री. (देश)* क्रम विरूद्ध, इधर का उधर और उधर का इधर (करना), बैसिरपैर का। आदि। **उदा.** तुम्हारा हर काम उलटा-पलटा होता है, कभी तो ठीक काम किया करो।

उलटा-सीधा *वि.(देश.)* अव्यवस्थित, बिना क्रम का। 1. अनुचित। **उदा.** वह हमेशा उलटी-सीधी बातें करता रहता है। 2. आधारहीन। **उदा.** उलटे-सीधे आरोप लगाना उसकी आदत बन चुकी है।

उलटी *स्त्री. (देश.)* आमाशय में पहुँचे खाद्य पदार्थ का मुँह से बाहर निकल जाना। **पर्या.** वमन, कै। vimiting

उलाहना *पुं. (तद्. उपालंभ)* किसी के तथाकथित अनुचित व्यवहार की उसी से हलकी-सी, प्रभावित व्यक्ति द्वारा शिकायत करना। **पर्या.** गिला-शिकवा। (नाभित क्रिया)

उलीचना *स.क्रि. (तद् < उल्लुंचन)* अनावश्यक रूप से प्रवेश कर गए पानी को हाथ या बरतन से बाहर फेंकना।

उलूक *पुं.(तत्.)* **दे.** उल्लू।

उल्का *स्त्री.(तत्.)* आकाशीय पिंडों के वे जलते हुए टुकड़े जो पृथ्वी पर गिरते हैं या आकाश में चमकते हुए इधर-उधर जाते दिखाई देते हैं।

उल्कापात [उल्का+पात] *पुं.(तत्.)* अंतरिक्ष से जलते पिंडों का टूटकर पृथ्वी पर गिरना।

उल्कापिंड *पुं.(तत्.)* **खगो.** अंतरिक्ष में पृथ्वी, चंद्रमा आदि की सतह पर गिरने वाली चट्टानें या धातु के टुकड़े जो भस्मीभूत उल्का के अंश होते हैं। meteoroid

उल्लंघन [उद्+लंघन] *पुं. (तत्.)* किसी सीमा, बाधा, मर्यादा, नियम को लांघने का कृत्य।

उल्लसित *वि.(तत्.)* प्रसन्न, उल्लासपूर्ण।

उल्लास [उत्+लास] *पुं.(तत्.)* व्यु.अर्थ चमक, आभा। सा.अर्थ **1.** मन की प्रसन्नता। **पर्या. आनंद,** हर्ष, खुशी।, 2. ग्रंथ का अध्याय। **जैसे:** प्रथम उल्लास, चतुर्थ उल्लास) 3. एक अलंकार जिसमें एक के गुण या दोष का दूसरे पर आरोप किया गया हो।

उल्लिखित [उत्+लिखित] *वि.(तत्.)* शा.अर्थ ऊपर लिखा हुआ। सा.अर्थ जिसका ऊपर यानी पहले उल्लेख हो चुका है। **पर्या.** पूर्वकथित, पूर्वोक्त।

उल्लू *पुं.(तद् < उलूक)* 1. चौड़े सपाट से मुख में मोटी गोल आँखें और अंकुशाकार चोंच वाला वह शिकारी पक्षी जो रात में शिकार करता है और जिसे दिन में दिखाई नहीं देता। इसकी आवाज़ भयावह होती है। 2. सा.अर्थ मूर्ख। मुहा.-अपना उल्लू सीधा करना=किसी को मूर्ख बनाकर अपना काम निकालना।

उल्लेख [उत्+लेख] *पुं. (तत्.)* मूल अर्थ ताड़पत्र/भोजपत्र**,** प्रस्तरशिला, फिर कागज़ पर उकेरना/लिखना। आधु.अर्थ किसी घटना, व्यक्ति आदि के बारे में लिखकर या बोलकर किया गया कथन। **पर्या.** कथन**,** वर्णन, चर्चा, जिक्र। (मेन्शन)

उल्लेखनीय/उल्लेख्य *वि. (तत्.)* [उल्लेखन+ईय, उललेख+य] उल्लेख करने योग्य, बताने योग्य।

उषा *स्त्री.(तत्.)* आसमान में सूर्य की पहली किरण का प्रकाश, प्रभात, ब्रह्ममुहूर्त, प्रातःकाल, भोर।

उषाकाल *पुं. (तत्.)* **दे.** उषा।

उष्ण *वि.(तत्.)* जिसकी तासीर गरम हो। **पर्या.** गरम।

उष्णकटिबंध *पुं. (तत्.)* **भू.** भूमध्य रेखा के 23½^{o} उत्तर (कर्क रेखा) और 23½^{o} दक्षिण (मकर रेखा) के बीच फैला पृथ्वी का क्षेत्र जहाँ सूर्य से अधिकतम उष्णता (ऊष्मा) प्राप्त होती है। tropical zone **तु.** शीतकटिबंध।

उष्णता *स्त्री.(तत्.) [उष्ण+ता]* गरम होने का भाव, गरम तासीर।

उष्म/ऊष्म वर्ण *पुं. (तत्.)* श, ष, स, ह-ये चार घार्षी व्यंजन जिनके उच्चारण में हवा के रगड़ खाते हुए निकलने के कारण अधिक ऊष्मा व्यय होती है। sibilant

उष्मा *स्त्री.(तत्.)* शा.अर्थ गरमी, ताप। **भौ.** किसी पदार्थ की आंतरिक उर्जा जो उसके अणुओं अथवा परमाणुओं की गतिज ऊर्जा के कारण होती है। इसका एस.आई. मात्रक 'जूल' है। heat **टि.** 'उष्मा' और 'ऊष्मा' दोनों ही शब्दरूप प्रचलित हैं।

उसाँस *स्त्री. (तद्<* उत्+श्वास) 1. ऊपर की ओर खींची गई साँस। 2. दु:ख या कष्ट के समय ली

जाने वाली गहरी साँसे। **उदा.** उसने उसाँसे भरते हुए अपनी दु:खभरी कथा कही।

उसूल *पुं.(अर.)* नियम, कायदा, सिद्धांत। **उदा.** वह अपने उसूलों का पक्का है, वादा किया तो जरूर निभाएगा।

उस्तरा *पुं.(फ़ा.)* हजामत करने (बाल उतारने या दाढ़ी बनाने) के काम आने वाला धारदार औज़ार। razor

उस्ताद *पुं. (फा.)* 1. गुरू, शिक्षक (teacher) 2. अपने विषय का उच्चकोटि का विशेषज्ञ (master) 3. अर्थापकर्षी 4. ला.अर्थ धूर्त, चालाक, गुरूघंटाल। 5. किसी भी फन का विशेषज्ञ। **जैसे**: संगीत का उस्ताद। **टि.** गाड़ी चलाने वाले को अथवा बड़े मिस्त्री को 'उस्ताद' संबोधन से पुकारने की प्रथा है।

उस्तादी *स्त्री. (फा.)* 1. शिक्षक की वृत्ति (जिसमें निपुणता, दक्षता आदि गुण निहित हैं।) 2. ला.अर्थ (व्यंग्य में) चालाकी, धूर्तता। **उदा.** वह मेरे साथ उस्तादी कर गया।

ऊँघ *स्त्री.* (**दे.**) नींद आने की पहली अवस्था जब व्यक्ति हलकी और अल्पकालिक नींद की खुमारी में आता है और उसका सिर झटके खाने लगता है। **पर्या.** अर्धनिद्रा, झपकी। **उदा.** ऊँघ क्यों रहे हो? क्या नींद आ रही है?

ऊँघना *अक्रि. (देश.)* 1. निद्रा की आरंभिक स्थिति में होना। 2. थकावट या मन न लगने के कारण बैठे-बैठे ही झपकी लेना।

ऊँच-नीच [ऊँच+नीच] *स्त्री. (तद्.)* 1. वर्णव्यवस्था संबंधी श्रेणी विभाजन। **उदा.** आजकल के लोग ऊँच-नीच पर ज्यादा विचार नहीं करते। 2. परिणाम **उदा.** कोई कदम उठाने से पहले उसके ऊँच-नीच पर विचार कर लेना ठीक रहेगा।

ऊँचा *वि. (तद्.<उच्च)* 1. ऊपर उठा हुआ, उन्नत। 2. श्रेष्ठता में बढ़ा हुआ, महान्, बड़ा। 3. जिसका स्तर अत्यंत उन्नत हो ऐसा (स्वर), तीव्र **तुल.** लंबा **टि.** **'लंबा'** में लगातार विस्तार देखा जाता है जबकि 'ऊँचा' में उच्चतम बिंदु पर ध्यान दिया जाता है। **उदा.** छत ऊँची है। **मुहा.** ऊँची नाक होना = इज्ज़त होना। ऊँचा सुनना = ज़ोर से बोली गई बात ही सुन पाना (यानी धीरे बोली गई बात को सुनने में कठिनाई होना।)

ऊँचाई [ऊँचा+ई] *स्त्री. < तद्.)* ऊँचा होने का भाव।

ऊँचा-नीचा *वि (तद्.)* 1. जो समतल न हो। **पर्या.** ऊबड़-खाबड़ 2. हानि-लाभ, भला-बुरा।

ऊँचे *क्रि वि. (तद्. < उच्चै:)* 1. ऊँचाई पर, ऊँचाई की ओर **उदा.** फल ऊँचे (ऊँचाई पर) लगे हैं। वहाँ तक तुम्हारा हाथ नहीं पहुँचेगा। 2. ज़ोर से (शब्द करना) **उदा.** ज़रा ऊँचे बोलो।

ऊँट *पुं. (तद्. < उष्ट्र)* ऊँचे कद का गद्दीदार पंजों और लंबी टाँगों वाला, जुगाई करने वाला, स्तनपोषी और कूबड़ वाला रेगिस्तानी चौपाया जो सवारी व बोझा ढोने के काम आता है और बिना पानी पिए अधिक दिनों तक सरलता से चल सकता है। camel **मुहा.** बेनकेल का ऊँट = ऐसा व्यक्ति जिस पर कोई बंधन न हो।

ऊट-पटाँग *वि. (देश.)* (काल्पनिक व्युत्पत्ति < ऊँट पर टाँग) 1. अटपटा, टेढ़ा-मेढ़ा, बेढंगा, विचित्र, 2. निरर्थक, व्यर्थ, वाहियात, 3. अंटसंट। **उदा.** कैसी ऊट-पटाँग बातें करते हो!

ऊतक *पुं. (तत्.)* समान कार्य करने के लिए समान कोशिकाओं का समूह। प्राणी शरीर में संयोजी ऊतक, तंत्रिका ऊतक, पेशी ऊतक आदि कई प्रकार के ऊतक होते हैं जिनके अलग-अलग कार्य होते हैं। (टिशु tissue)

ऊदबिलाव *पुं. (तद्. < उद्‌बिडाल)* शा.अर्थ पानी की (में रहने वाला) नेवले की आकृति का मीन भक्षी, स्तनपोषी, सघन जलसह लोमकेशी, जालपाद् प्राणी जो जल में भी रह सकता है। oter

ऊधम *पुं. (तद्. > उद्धम)* शोरगुल, लड़ाई-झगड़ा, वस्तुओं की उठापटक-इन सबका सम्मिलित रूप। **पर्या.** उपद्रव, उत्पात।

ऊधमी [ऊधम + ई] *वि. (< तद्)* ऊधम करने वाला। **दे.** ऊधम।

ऊन *पुं. (तद्.< ऊर्ण)* 1. भेड़, बकरी आदि के बालों को काटकर बनाया गया लंबा धागा, जिससे वस्त्र, कंबल आदि बनाते हैं। 2. *वि. (तत्.)* कम या एक कम **जैसे:** उनतीस, नि + ऊन = न्यून।

ऊनी (ऊन + ई) *वि. (तद्.)* ऊन का (बना हुआ)। **दे.** ऊन, तु. रेशमी, सूती आदि।

ऊपर *क्रि.वि. (तद्. < उपरि)* 1. ऊँचाई पर, ऊँचे स्थान पर। **उदा.** शर्माजी ऊपर रहते हैं। 2. आधार पर **उदा.** पुस्तक संदूक के ऊपर है। 3.

ऊँची श्रेणी का **उदा.** उनका पद मेरे ऊपर है। 4. (लेख आदि में) पहले **उदा.** ऊपर कहा गया है कि...। 5. अतिरिक्त **उदा.** ऊपर की आमदनी....।

ऊपरवाला *वि./पु. (तद्.+फ़ा)* ऊपर (आसमान, स्वर्ग में) निवास करने वाला यानी ईश्वर।

ऊपरी *वि. (तद्.)* 1.जो ऊपर स्थित हो, 2. बाहरी, बाहर का, 3. दिखावटी।

ऊब *(स्त्री.) (तद्.)* किसी एक ही क्रिया को बार-बार करते रहने पर मन में उसके प्रति पैदा हुई अरुचि; किसी चीज से जी भर जाने की स्थिति। **उदा.** 1. शादी में कई दिनों से मिठाई खाता रहा हूँ। अब मेरा मन मिठाई से ऊब गया है। 2. चुप हो जाओ। सुबह से ही तुम्हारी बातों की रट सुनते-सुनते में ऊब गया हूँ।

ऊबड़-खाबड़ वि. (तद्. अप. उब्भड़-खब्बड़ < उर्बट-खर्बट) ऊँचा-नीचा (स्थल) वह भूमि जो समतल न हो और जहाँ चलना कष्टप्रद हो।

ऊबना *अ.क्रि. (तद्. < उद्वेजन)* 1. एक ही स्थिति में देर तक रहने से मन का किसी वस्तु व्यक्ति आदि में स्थिर न रह पाना। उकताना। मन का उचटना। 2. घबराना, अकुलाना। **उदा.** 1. किसी एक वस्तु का निरंतर सेवन करते-करते मन ऊब जाता है। 2. कई दिन से अकेले रह रही मां अब ऊब गई है।

ऊर्जस्वी *वि. (तत्.)* 1. जिसमें ऊर्जा (अधिक) हो। **पर्या.** बलवान, पराक्रमी, स्फूर्तियुक्त। 2. ऊर्जा देने वाला **उदा.** उसका देशभक्तिपूर्ण ऊर्जस्वी भाषण सुनकर मेरे रोंगटे खड़े हो गए। eneyetic

ऊर्जा *स्त्री. (तत्.)* (भौतिक पदार्थों या रासायनिक तत्वों की) कार्य करने की क्षमता या शक्ति। **जैसे:** नाभिकीय ऊर्जा, सौर ऊर्जा आदि।

ऊर्ध्व *क्रि.वि. (तत्.)* ऊपर की ओर, ऊपर की दिशा में **जैसे:** ऊर्ध्वगति**,** ऊर्ध्वगामी।

ऊर्ध्वाधर *(ऊर्ध्व+*अधर) *वि. (तत्.)* तल के ऊपर लंबाई में सीधा खड़ा; क्षैतिज तल पर समकोण बनाते हुए vertical upright **विलो.** क्षैतिज।

ऊर्मि *स्त्री. (तत्.)* लहर, तरंग wave

ऊल जलूल *वि. (देश.)* असंबद्ध, बेसिर-पैर का, वाहियात, अंडबंड। **उदा.** वह ऊल जलूल बकता रहा।

ऊषा/उषा *स्त्री. (तत्.)* सूर्योदय के पूर्व की लालिमा (इसे ही वैदिक साहित्य में सूर्य का सारथि (अरुण) कहा गया है।)

ऊषाकाल/उषाकाल/उषःकाल *पुं. (तत्.)* प्रातःकाल, सवेरा।

ऊष्णन *पुं. (तत्.)* गरम करने या होने का भाव (वार्मिंग) **जैसे:** विश्व ऊष्णन global worning

ऊष्मा *स्त्री.* ताप, गर्मी। किसी पदार्थ की आंतरिक ऊर्जा जो उसके अणुओं और परमाणुओं की गतिज ऊर्जा के कारण होती है, इसका मानक 'जूल' है। heat

ऊष्मायन *पुं.(तत्.) ऊष्मा* (गरमी) प्रदान करने का कृत्य। गर्म करना, सेना, सेंकना। **जैसे**: मुर्गी अंडों के ऊष्मायन के लिए उन पर बैठी रहती है।

ऊसर *वि. (तद्. < ऊषर)* वह (भूमि) जो पेड़-पौधों के उगने या खेती के पर्याप्त योग्य न हो। **पर्या.** बंजर यानी ऊसर ज़मीन barren land

ऊहापोह (ऊह + अपोह) *पुं. (तत्.)* ऊह = तर्क, अनुमान, अपोह = शंकाओं का निराकरण। ऊहापोह = शंकाएँ उत्पन्न होना तथा मन में ही उनका निराकरण करना। ऐसा बार-बार होने के कारण अनिश्चय की स्थिति में विचार करते रहना। **पर्या.** उधेड़बुन, तर्क-वितर्क।

ऋ

ऋक्ष *पुं. (तत्.)* 1. भालू, रीछ 2. एक विशिष्ट तारा समूह या राशि 3. प्राचीन काल की एक जाति जिसमें जाम्बवान् हुए थे।

ऋग्वेद *[ऋक् + वेद] (तत्.)* चारों वेदों (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद) में से एक वेद जो प्राचीनतम माना जाता है। **पर्या.** ऋक् संहिता।

ऋचा *स्त्री. (तत्.)* 1. वेदमंत्र, जो पद्यात्मक हो। 2. स्तुति।

ऋजु *वि. (तत्.)* 1. सरल, सीधी-सीधी। 2. सरल स्वभाव वाला, सज्जन, भोला-भाला, 3. ईमानदार honest

ऋजु कोण *पुं. (तत्.)* कोण जिसकी भुजाएँ एक ही सरल रेखा पर शीर्ष बिंदु से दो विपरीत दिशाओं में स्थित हो; 180° का कोण। straight angle

ऋण पत्र *पुं. (तत्.)* 1. कंपनी की उधार पूँजी। 2. कंपनी द्वारा लिए गए कर्ज़ (ऋण) के प्रमाण स्वरूप जारी किया गया दस्तावेज जिस पर उसका मूल्य और ब्याज दर अंकित रहते हैं। debenture **तु.** शेयर।

ऋणावेश *(ऋण+*आवेश) *पुं. (तत्.)* वस्तु में निहित विद्युत की मात्रा negative charge **वि.** धनावेश।

ऋणी *वि. (तत्.)* 1. जिसने ऋण लिया हो, कर्ज़दार debtor 2. जो उपकार से दबा हो, उपकृत। **उदा.** मैं सदा आपका ऋणी रहूँगा = आपका उपकार याद रखूँगा।

ऋतु *स्त्री. (तत्.)* (भारतीय संदर्भ में) प्राकृतिक परिवर्तनों के अनुसार संपूर्ण वर्ष के दो-दो महीनों के छह भागों में से कोई भी भाग। **जैसे:** वसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमंत और शिशिर। season **तुल.** मौसम

ऋतु-परिवर्तन *पुं. (तत्.)* एक ऋतु से दूसरी ऋतु में होने वाला बदलाव; वह संधि-काल जिसमें एक ऋतु दूसरी ऋतु में बदल रही होती है। इस काल में दोनों में से किसी का प्रभाव अधिक नहीं होता। **जैसे:** फाल्गुन मास में हेमंत और वसंत का संधिकाल होता है।

ऋतु प्रवास *पुं. (तत्.)* 1. ऋतु परिवर्तन के क्रम में पक्षियों, मछलियों आदि द्वारा अपने निश्चित स्थान से दूसरे स्थान को जाना। migration

ऋतुराज *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ ऋतुओं का राजा। वसंत ऋतु। **पर्या.** मधुमास।

ऋद्धि *स्त्री. (तत्.)* संपन्नता, समृद्धि, वैभव।

ऋषि *पुं. (तत्.)* 1. वेदमंत्रों के द्रष्टा यानी उन्हें प्रकाशित करने वाले। 2. आध्यात्मिक तत्वों के ज्ञाता-बुद्धिमान, सच्चरित्र और त्यागी मुनि।

ए

एंटीबायोटिक *पुं. (अं.)* 1. जीवाणुओं को नष्ट कर देने वाली दवा। 2. सूक्ष्म जीवों द्वारा उत्पन्न रासायनिक यौगिक या उनसे मिलते-जुलते कृत्रिम रूप से संश्लेषित पदार्थ। हिन्दी पर्याय प्रतिजैविक antibiotic **टि.** यह कम सांद्रता में भी अन्य सूक्ष्म जीवों को मारने या उसकी वृद्धि रोकने में सक्षम होते हैं।

एक *वि./पुं. (तत्.)* 1. पहली प्राकृत संख्या 2. बेजोड़, अनुपम, अद्वितीय **उदा.** लाखों में एक होना। 3. बराबर, समान **उदा.** आप आएँ, न आएँ, एक ही बात है। **मुहा.** 1. एक आँख से देखना = समान भाव रखना। 2. एक-एक करके = क्रम से। एक टक देखना = बिना पलक झपकाए देखना। एक दम = लगातार, तुरंत, एक बारगी।

एकक *पुं. (तत्.)* कार्यालय की छोटी से छोटी इकाई। unit **जैसे:** हिंदी एकक।

एककोशिक/एककोशीय *वि. (तत्.)* (ऐसे प्राणी जिनका पूरा शरीर) जो केवल एक ही कोशिका का बना होता है। **उदा.** अमीबा unicellular **तु.** बहुकोशिक/बहुकोशीय।

एक-चौथाई/चौथाई *वि. (तद्.)* समान चार भागों में से एक भाग, चौथा भाग, **पर्या.** चतुर्थांश।

एकछत्र *वि. (तत्.)* जहाँ पूरे राज्य में कहीं भी, किसी अन्य का प्रभुत्व न हो; संपूर्ण प्रभुता संपन्न। **जैसे:** एक छत्र राज्य।

एकजुट *वि. (तत्.+तद्.)* (i) मिलकर एक हुआ (रूप)। (ii) ठोस रूप में **दे.** एकजुटता।

एकजुटता *स्त्री. (तत्.+तद्.)* 1. कई इकाइयों का इस तरह मिलना या इकट्ठा होना कि वे एक (संयुक्त) इकाई के रूप में दिखाई पड़े। solidarity 2. अलग-अलग समूहों में बँटे लोगों का एक ही लक्ष्य की प्राप्ति के लिए एकाकार होकर यानी एक इकाई बनकर प्रयत्न करने की स्थिति का सूचना भाव।

एकटक *क्रि.वि. (देश.)* आश्चर्य के साथ बिना पलक झपकाए, अनिमेष। **जैसे:** एकटक देखते रहना।

एकड़ *पुं. (अं.)* भूमि के क्षेत्रफल की माप जो 4,840 वर्ग गज़ या 0.405 हेक्टेयर के बराबर होती है।

एकता *(स्त्री.) (तत्.)* किसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए समाज के सभी सदस्यों का आपस में मिलकर एक होने का भाव। **पर्या.** ऐक्य, एका। **उदा.** हमें राष्ट्रीय **एकता** के प्रति सदा जागरूक रहना चाहिए। unity **विलो.** अनेकता।

एकत्र [एक + त्र] अव्य. *(तत्.)* एक स्थान पर, एक जगह (स्थित) **टि.** संस्कृत में *त्र-प्रत्यय (त्रल्)* एक स्थानवाचक प्रत्यय है। इसके प्रयोग से स्थानसूचक शब्द बनते हैं। **जैसे:** सर्व + त्र = सर्वत्र = प्रत्येक स्थान पर, सभी जगह। **अन्य + त्र** = अन्यत्र =किसी दूसरी जगह, और जगह।

एक दफ़ा *क्रि.वि. (तत्.<अर.दफ़अ)* 1. एक बार, **जैसे:** एक दफ़ा वह पेड़ से गिर गया था। 2. एक समय **जैसे**: एक दफ़ा की बात है... **विलो.** अनेक दफ़ा, कई दफ़ा।

एकदम *क्रि.वि. (फा.)* 1. एकाएक, एकबारगी, सहसा 2. पूर्ण रूप से **जैसे:** एकदम सही। 3. तुरंत, फ़ौरन **उदा.** एकदम चले आओ।

एकपूर्वजक *वि. /पुं. (तत्.)* शा.अर्थ एक ही पूर्वज से उत्पन्न (जीव) **दे.** क्लोन।

एकबारगी *क्रि.वि. (फा.)* 1. एक बार में या एक समय में होने वाला, अचानक सहसा। **उदा.** यह कार्य एकबारगी निपट जाए तो अच्छा है।

एकमत *वि. (तत्.)* एक या समान मत रखने वाले। **पर्या.** मतैक्य, एकराय, सर्वसम्मत। **उदा.** इस विचार के बारे में हम सब एकमत हैं।

एकमात्र *(वि.) (तत्.)* मात्र एक (कोई दूसरा नहीं), केवल एक, अकेला, एक ही। **जैसे:** एकमात्र वितरक (सोल डिस्ट्रिब्यूटर) **उदा.** तुम मेरे एकमात्र विश्वसनीय मित्र हो।

एकमुश्त *वि. (तत्.* एक+फ़ा. = बँधी मुट्ठी) कई बार (यानी किस्तो में) न होकर एक ही बार में (किया गया भुगतान)। lermpsum

एकरसता स्त्री. *(तत्.)* 1. प्रारम्भ से अंत तक एक जैसा होने का भाव। 2. तल्लीन हो जाने का भाव। 3. लगातार एक ही तरह के काम में लगे रहने के कारण उससे मन भर जाने या ऊब जाने की स्थिति का सूचक भाव monotony

एकरूपता *स्त्री. (तत्.)* दो या अधिक वस्तुओं या स्थितियों में समानता का भाव, समानता।

एकवचन *पुं. (तत्.)* व्या. में शब्द का वह रूप जिसके अनुसार उस शब्द से संख्यात्मक दृष्टि से एक (इकाई) का ही बोध हो। **जैसे:** लडक़ा, मैं, पुस्तक आदि।

एकहरा/इकहरा *वि. (देश)* 1. एक परत वाला 2. एक लड़ी वाला 3. शरीर से दुबला-पतला।

एकांगी *वि. (तत्.)* विभिन्न व्यक्तियों से संबंधित होने के बावजूद एक ही व्यक्ति या विषय के पक्ष में **उदा.** यह विचार एकांगी (एकपक्षीय) है। इका/एकतरफा **जैसे:** एकांगी निर्णय। **विलो.** सर्वांगपूर्ण।

एकांत [एक+अंत] *वि. (तत्.)* सूना या निर्जन (स्थान)

एकांतर [एक+अंतर] *वि. (तत्.)* किसी श्रृंखला में एक के बाद एक करके आने या घटित होने वाला। altermate

एकातंर कोण *पुं. (तत्.)* **ज्या.** कोई तिर्यक छेदी रेखा दो रेखाओं के साथ जब दो आसन्नेतर कोण बनाती है उनमें से कोई एक कोण। ये दो कोण तिर्यक छेदी रेखा के विपरीत पार्श्वों में होते हैं। **विलो.** आसन्न कोण।

एकांतर क्रम *पुं. (तत्.)* कृषि फसल चक्रण फसल को बदल-बदल कर बोने की रीति या क्रम।

एकांतवास [एकांत + वास] *पुं. (तत्.)* एकांत में निर्जन में या अकेले ही रहना। **उदा.** ऋषि-मुनि प्राय: एकांतवास किया करते थे।

एका *पुं. [तद्. < एकता]* कई लोगों के बीच में व्यवसाय, स्वभाव, विचारधारा इत्यादि में एक जुट होने का भाव। **पर्या.** एकता।

एकाएक/यकायक *क्रि.वि. (देशज.)* जिसका पूर्वाभास न हो। **पर्या.** अकस्मात्, अचानक, सहसा।

एकाकी *वि. (तत्.)* अकेला ही (रहने वाला) **उदा.** मैं कई दिनों से एकाकी जीवन व्यतीत कर रहा हूँ।

एकाग्र [एक + अग्र] *वि. (तत्.)* 1. किसी विषय पर एकचित्त होकर चिन्तन करता हुआ (तन्मय, तल्लीन) **जैसे:** वह एकाग्र होकर अध्ययन कर रहा था। 2. ध्यान स्थित **जैसे:** एकाग्र होकर तप में लीन।

एकाग्रता (एक+अग्र+ता) *(स्त्री.) (तत्.)* एकाग्र होने का भाव। **दे.** एकाग्र concentration

एकादश *वि. (तत्.)* 1. एक और दस = ग्यारह। 2. ग्यारह का समूह (टीम) **जैसे:** फुटबॉल एकादश। 3. ग्यारहवाँ।

एकादशी *स्त्री. (तत्.)* मूल अर्थ ग्यारहवी। सा. अर्थ हिंदू मास के प्रत्येक पक्ष की ग्यारहवीं तिथि (जिस दिन कई लोग उपवास रखते हैं।) **उदा.** आज मेरी एकादशी है। कुछ खाऊँगा पीऊँगा नहीं।

एकाध *वि. (तद्.)* शा.अर्थ एक या और आधा, सा.अर्थ केवल एक-दो यानी अति नगण्य संख्या।

एकाधिकार *पुं. (तत्.)* किसी वस्तु, भवन, कार्य या व्यापार आदि पर किसी व्यक्ति, संस्था, समाज या दल आदि का एकमात्र अधिकार अर्थात् उसका प्रयोग अन्य कोई नहीं कर सकता। monopaly

एकीकरण (एक+करण) *पुं.* मिलाना, एक कर देना, एक साथ कर देना। 1. दो या दो से अधिक खंडों को मिलकर एक करना। integration **उदा.** भारत संघ में देशी रियासतों का विलयन। 2. अलग-अलग हुए अंशों को मिलाना ताकि एक बन सके। unification **जैसे:** पश्चिमी जर्मनी और पूर्वी जर्मनी का एकीकरण।

एकेश्वरवाद [एक+ईश्वर+वाद] *पुं. (तत्.)* यह मान्यता है कि ईश्वर एक ही है, तथा वही सर्वशक्ति संपन्न है। monotheism, monotheist

एचआईवी HIV *पुं. (अ.)* आयु. मनुष्यों में एड्स रोग को उत्पन्न करने वाला खतरनाक पश्चविषाणु retrovirus अंग्रेज़ी के तीन शब्दों का आद्यक्षरी संक्षिप्त नाम। **दे.** एड्स Human Immunodeficiency Virus

एटलस *पुं. (अं.)* जिल्द बँधी पुस्तक जिसमें संबंधित स्थानों, प्रदेशों या देशों के मानचित्रों का संग्रह हो। **पर्या.** मानचित्रावली।

एड़ी *स्त्री. (देश.)* 1. पैर के पंजे का टखने से नीचे का (पिछला) भाग। 2. जूते के तले का पिछला उभरा भाग जो पैर की एड़ी को सहारा देता है। **मुहा.** एड़ियाँ रगड़ना = बहुत दौड़ भाग और परिश्रम करना। एड़ी-चोटी का ज़ोर = किसी काम में लगी पूरी ताकत। एड़ी से चोटी तक = पूरे शरीर में, नखशिख।

एडीज *पुं. (अं.)* एक मादा मच्छर जो डेंगू नामक रोग को फैलाता है।

एड्रिनल ग्रंथि दे. *अधिवृक्क* ग्रंथि।

एड्रिनल *पुं. (अं.)* अधिवृक्क, अग्नाशय के निकट स्थित एक अंत:स्रावी ग्रंथि।

एड्रिनेलिन हार्मोन *पुं. (अं.)* अधिवृक्क (एड्रिनल) के केन्द्रीय भाग medulla से निकलने वाला हार्मोन जो ग्लाइकोजन को ग्लूकोस में बदलने में सहायक होता है। adrenaline

एड्स *पुं. (अं.)* एच आई वी (HIV) अंग्रेजी के चार शब्दों Acquired Immunity Deficiency Syndrome का आद्यक्षरी संक्षिप्ति। **आयु.** विषाणु से उत्पन्न होने वाला रोग। इस रोग में रोगी के शरीर की संक्रमण से अपनी रक्षा करने की क्षमता बहुत ही कम हो जाती है और अंत में रोगी की मृत्यु तक हो जाती है। यह रोग पश्चविषाणु retrovirus के कारण होता है। हिंदी में इसे उपार्जित प्रतिरक्षा न्यूनता संरक्षण रोग कहा जाता है। यह रोग पहले इस्तेमाल की गई सिरिंज से, माँ के दूध से शिशु में, पीडित व्यक्ति का खून स्वस्थ व्यक्ति को देने से तथा एचआईवी से पीडित व्यक्ति के साथ लैंगिक संपर्क स्थापित करने से फैल सकता है।

एतराज़ *पुं. (अर.)* किसी कार्य या विचारधारा के प्रति व्यक्ति द्वारा की गई सकारण असहमति। **पर्या.** आपत्ति, विरोध।

एनोफ्लीज़ *पुं. (अं.)* मलेरिया फैलाने वाला मच्छर।

एनाफ्लीज मच्छर *पुं. (अं. + तद्.)* रक्त का चूषण कर मलेरिया नामक रोग को फैलाने वाला कीट। मादा एनॉफ्लीज मच्छर मलेरिया रोग वाहक carrier है। **दे.** मलेरिया।

एन्थ्रेक्स रोग *पुं. (अं.+तत्.)* **आयु.** संक्रमित पशुओं जैसे गाय, भैंस, भेड़, बकरियों, घोड़ों आदि

के संपर्क से वैसीलस एन्थ्रेक्स नामक जीवाणु द्वारा उत्पन्न एक विशिष्ट तीव्र संक्रामक रोग। यह रोग कई प्रकार का हो सकता है; **जैसे**: cataneous, intestinal तथा Pulmonary जिनमें से अंतिम दो के कारण मृत्यु भी हो जाती है।

एम. ए *वि. (अं.)* Master of Arts की संक्षिप्ति 1. किसी विश्वविद्यालय या संस्थान का दो वर्षीय कला या मानविकी में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम/परीक्षा 2. 'कला निष्णात' नामक उपाधि। Master of Arts

एलर्जी *स्त्री. (अं.)* किसी वस्तु के हानिकर होने के बावजूद उसे खाने अथवा उसके संसर्ग में आने पर व्यक्ति महसूस होने वाली असामान्य अनुक्रिया। **पर्या.** प्रत्यूर्जता।

एलान *पुं. (अर.)* 1. राष्ट्र के सर्वोपरि अधिकारी की ओर से की जाने वाली औपचारिक घोषणा। **पर्या.** उद्घोषणा (प्रोक्लेमेशन) 2. सार्वजनिक तौर पर घोषित की गई। की जाने वाली कोई सूचना। **पर्या.** ढिंढोरा, मुनादी। **जैसे:** ऐलान-ए-जंग।

एल्कोहॉल *पुं. (अं.)* हल्का सुगंध युक्त और रंगहीन द्रव जो बियर, शराब और स्पिरिट में मादकता उत्पन्न करता हैं मद्य सार शराब, मदिरा, मादक पदार्थ। alcohol

एल्यूमिनियम/ऐल्यूमिनियम *पुं. (अं.)* रजत-श्वेत, तन्य, आघातवर्ध्य और हलके भार वाला धात्विक तत्व। aluminium **टि.** यह भूपर्पटी पर प्रचुर मात्रा में पाया जाता है विद्युत का अच्छा चालक है। भार हलका होने के कारण यह बर्तन, वायुयान, पानी के जहाज़ आदि के निर्माण में बहुत उपयोगी है।

एवं/एवम् *अव्यं. (तत्.)* 1. इस प्रकार 2. और।

एस्ट्रोजन *पुं. (अं.)* शरीर में विद्यमान मादा सेक्स हार्मोन उत्पन्न कर सकने वाला पदार्थ जो अन्य कृत्रिम विधि से भी बनाया जाता है। astrogen

एहसान *पुं. (अर.)* 1. किसी के साथ की गई नेकी, उपकार। 2. कृतज्ञता।

एहसान फरामोश *वि. (अर. फा.)* किसी के द्वारा अपने पर किए गए उपकार को भूल जाने वाला (व्यक्ति), कृतघ्न।

एहसानमंद *वि. (अर.+फ़ा.)* किसी के द्वारा अपने पर किए गए उपकार को मानने वाला (व्यक्ति), कृतज्ञ

ऐ

ऐंठ *(स्त्री.)* (तद् < आमृष्टि) अपने-आप में घमंड की अधिकता, गर्व, ठसक। **पर्या.** अकड़। **मुहा.** रस्सी जल गई पर ऐंठ न गई।

ऐंठन *अ.क्रि. (तद्.)* 1. टेढ़ा हो जाना, घुमावदार हो जाना 2. घमंड या रोब दिखाना 3. अस्वीकार करना। 4. *स्त्री. (देश.)* मरोड़ने या ऐंठने का भाव।

ऐंठना *स.क्रि.* 1. किसी वस्तु को जोर से दबाते हुए घुमाव देना। 2. भय दिखाकर या दबाव डालकर कुछ लेना/वसूलना। **जैसे:** रस्सी ऐंठना, कान ऐंठना, कान का मरोड़ना। लोगों से रुपए ऐंठना। **दे.** ऐंठ।

ऐंठा *पुं. (देश.)* रस्सी बँटने का एक यंत्र। मरोड़ देना, घुमाव देना, ऐंठा लगाना। 2. भूतकालिक कृदंत - मरोड़ा हुआ।

ऐंड्रोजन *(अं.)* वे रासायनिक स्राव जिनमें नरत्व के लक्षण विकसित करने की क्षमता होती है **जैसे:** वृषण हार्मोन androgen

ऐक्य *पुं. (तत्.)* **दे.** 'एकता'।

ऐक्रिलिक *वि./पुं. (अं) ऊन* के स्थान पर उपयोग में लाए जाने वाले संश्लेषित रेशे से तैयार ऊन जैसा पदार्थ या वस्तु। इसके बने वस्त्र ऊन की अपेक्षा सस्ते होते हैं।

ऐच्छिक *वि. (तत्.)* 1. स्वेच्छा से किया जाने वाला जिसे करना या न करना अपनी इच्छा पर निर्भर हो। **जैसे:** ऐच्छिक अंशदान voluntary 2. कई में से इच्छानुसार किसी एक का चुनाव। **पर्या.**वैकल्पिक **जैसे:** इन चार ऐच्छिक/वैकल्पिक

विषयों में से तुमने कौन-सा विषय चुना। optional

ऐतिहासिक [इतिहास+इक] *वि. (तत्.)* 1. इतिहास से संबंधित। **उदा.** गाँधीजी के अधिकतर पत्र ऐतिहासिक महत्व के हैं। 2. जिसका उल्लेख इतिहास में हुआ है। **उदा.** मैंने दिल्ली के लगभग सभी ऐतिहासिक स्थानों का भ्रमण कर रखा है। historical

ऐन *वि. (अर.)* ठीक, उपयुक्त **जैसे**: ऐन मौके पर उसने अपनी बात पलट दी।

ऐनक *(स्त्री.) (अ.)* दृष्टिदोष होने पर नज़र को सही रखने के लिए पहना जाने वाला चश्मा। **पर्या.** उपनेत्र।

ऐब *पुं. (अर.)* किसी व्यक्ति या कार्य में दिखाई पड़ी/पड़ने वाली कोई कमी, भूल या त्रुटि। **पर्या.** अवगुण, दोष। **जैसे:** ऐब ढूँढना।

ऐबदार *वि. (अर.+फ़ा.)* **दे.** ऐबी।

ऐबी *वि. (अर.)* जिसमें ऐब हो। **जैसे:** ऐबी घोड़ा, ऐबी लडका।

ऐमीनो अम्ल *पुं. (अं.+तत्.)* **रसा.** कार्बनिक यौगिकों का एक ऐसा वर्ग जो ऐमीनो (NH_2) तथा कार्बोक्सिल (–COOH) समूह युक्त होता है तथा जिसके साथ पार्श्व शृंखला भी लगी रहती है। यह प्रोटीन की आधारगत संरचनात्मक इकाई है। amino acid

ऐम्बर *पुं. (अं.)* एक प्रकार की राल। इसे फर (एक प्रकार की बिछावन) से रगड़ने पर यह बालों जैसी हल्की वस्तुओं को खींच लेता है। 2. कड़रुवा 3. एक प्रकार का गहना या आभूषण जो गले में पहना जाता है।

ऐयाश *वि. (अर.)* जो बहुत ऐश या अनुचित मौजमस्ती करने वाला हो। **पर्या.** 1. विलासी 2. व्यभिचारी। **उदा.** कुछ लोग अनुचित धन पाकर ऐयाश बन जाते हैं।

ऐयाशी स्त्री. *(अर.)* 1. विलासी का आचरण 2. विलासी का जीवन 3. विलास 4. व्यभिचार।

ऐरा-गैरा *(वि.) (प्रथम पद अनु. + < अर. गैर)* (हीन अर्थ में) जो पूर्व परिचित न हो। **मुहा.** ऐरा गैरा नत्थू खैरा = अपरिचित और सम्मान का अनधिकारी कोई भी (व्यक्ति)।

ऐश *पुं. (अर.)* 1. भोगविलास। **उदा.** पुराने ज़माने में अधिकतर राजा-महाराजा ऐश का जीवन जीते थे। 2. खाने-पीने-पहनने और घूमने का सुख sensual enjoyment **पर्या.** मज़े। **उदा.** तुम्हारे नाम लॉटरी निकली है। अब तुम्हें ऐश करने में कोई कठिनाई नहीं होगी। meri making meriment

ऐशपरस्त *वि. (अर.+फ़ा परस्त = पूजा करने वाला)* जिसका मन भोग-विलास या सुखमय जीवन जीने में ही अधिक रमता हो। luxirious

ऐशोआराम *[ऐश+ओ(.और) आराम] पुं. (अर.+फा)* ठाठ बाट **उदा.** ऐशो आराम की जिंदगी किसे पसंद नहीं है?

ऐश्वर्य *पुं. (तत्. < ईश्वर)* 1. प्रभु होने का भाव, ईश्वरत्व, प्रभुता, विभुता 2. धन-संपत्ति, विभूति।

ऐश्वर्यवान/ऐश्वरवान)/ऐश्वर्यशाली *वि. (तत्.)* धन संपत्ति यानी भौतिक समृद्धि से युक्त। **उदा.** अमेरिका हमसे कई गुना ऐश्वर्यवान/ ऐश्वर्यशाली देश है।

ऐसा *वि. (तद्. < ईदृश)* इस प्रकार का, इस जैसा **उदा.** ऐसा नहीं हो सकता; कहीं ऐसा न हो कि तुम न आओ; ऐसा ही सही।

ऐसे अव्य. *(देश.)* 1. इस प्रकार/तरह, इस विधि से **उदा.** ऐसे क्या देख रहे हो? 2. बिना किसी कारण के **उदा.** तुम ऐसे ही क्यों आए?

ऐस्टर *पुं. (अं.) रसा.* कार्बनिक यौगिकों के समूह में से कोई एक जिसका निर्माण ऐल्कोहॉल पर अम्ल की अभिक्रिया से होता है। इसके अंतर्गत तेल, प्राकृतिक वसा, मोम आदि आते हैं और इनका उपयोग विस्फोट प्लास्टिक, रेयॉन आदि के उत्पादन में होता है। ester

ऐस्टेरीकरण *पुं. (अं.)* रसा. शा.अर्थ ऐस्टर का निर्माण। हाइड्रोजन आयनों की उपस्थिति में ऐल्कोहॉल पर अम्ल की सीधी क्रिया के फलस्वरूप ऐस्टर का निर्माण esterification

ऐहिक [इह + इक] *वि.* *(तत्.)* इह (इस लोक) से संबंधित, **पर्या.** लौकिक, सांसारिक **विलो.** पारलौकिक।

ओ

ओंठ *पुं.* *(तद्.>ओष्ठ)* मुख के बाहर का ऊपर-नीचे उभरा मांसल भाग जिससे मुँह का अंदर का भाग ढँका रहता है। **पर्या.** होंठ। **टि.** ऊपर के भाग को 'ओष्ठ' और नीचे के भाग को 'अधर' कहते हैं।

ओखली *स्त्री.* *(तद्.)* **दे.** ऊखल **मुहा.** ओखली में सिर देना = जानबूझकर मुसीबत में फँसना।

ओछा *वि.* *(तद्.<अपतुच्छ)* जो गंभीर न हो, छिछला। **पर्या.** तुच्छ, नीच **जैसे:** ओछा व्यक्ति, ओछी बात **विलो.** गंभीर

ओछापन *पुं.* *(तद्.)* छिछला होने यानी गंभीर न होने अथवा नीच प्रकृति का सूचक भाव।

ओज *पुं.* *(तत्. ओजस्)* 1. ऊर्जा 2. प्राणवत्ता 3. सामर्थ्य, शक्ति।

ओजस्वी वि. *(तत्.)* 1. ओज भरा, जोश पैदा करने वाला **जैसे:** ओजस्वी भाषण। 2. बल-वीर्य शाली **जैसे:** ओजस्वी व्यक्तित्व।

ओज़ोन *स्त्री.* *(अं.)* ऑक्सीजन का एक अन्य रूप (प्रतीक O_3) जो अति अभिक्रियाशील और रंगहीन गैस है। वायुमंडल में इसकी पतली परत है जो सूर्य की पराबैंगनी किरणों के कुप्रभाव से पृथ्वी की रक्षा करती है।

ओझल *वि.* *(देश.)* देख सकने की सीमा से दूर; किसी आड़ के हुआ; जो दिखाई न पड़े।

ओझल होना *अ.क्रि.* *(देश.)* नजर से दूर होना; छिप जाना, ओट में हो जाना **जैसे:** आँख से ओझल हो गया।

ओझा *पुं.* *(तद्. < उपाध्याय)* 1. ब्राह्मणों की एक उपाधि 2. भूत-प्रेत की बाधा दूर करने वाला, झाड़-फूँक करने वाला।

ओट *स्त्री.* *(तद्.< अवटि)* ऐसी रुकावट जिसके कारण वस्तु या व्यक्ति स्पष्ट रूप से दिखलाई न पड़ सके। **पर्या.** आड़, व्यवधान। **उदा.** सूर्य बादलों की ओट में आ गया।

ओढ़ना *क्रि.* *(तद्.)* किसी वस्तु को अपने ऊपर पसारना या फैलाना। **उदा.** रात में सोते समय चादर ओढ़ लेना, नहीं तो मच्छर काटेंगे। 2. दूसरे की जिम्मेदारी अपने ऊपर लेना।

ओढ़नी/ओढ़निया *स्त्री.* *(तद्.)* 1. सिर पर ओढ़ने का स्त्रियों का एक मर्यादित वस्त्र। 2. शरीर छिपाने हेतु स्त्रियों द्वारा प्रयुक्त दुपट्टा या चादर।

ओत-प्रोत [ओत = बुना हुआ (ताना) + प्रोत = कसा हुआ/ अच्छी तरह बुना हुआ] *वि.* *(तत्.)* शा.अर्थ ताने-बाने की तरह (अच्छी तरह) बुना हुआ। सा.अर्थ इस तरह मिला हुआ कि उसके अंशों को सामान्यत: अलग करना कठिन हो। **जैसे:** प्रेम से ओत-प्रोत।

ओर *स्त्री.* *(तद्.>अबर)* दिशा की सूचना देने हेतु प्रयुक्त शब्द **जैसे**: इस ओर, दाहिनी ओर, नीचे की ओर, गाँव की ओर इत्यादि। **पर्या.** तरफ़, दिशा में।

ओला *पुं. बहु.* *(तद्. > उपल)* आकाशीय वायुमंडल में अत्यधिक ठंडक के कारण जमकर बर्फ के टुकड़ों के रूप में बरसने वाला जलकण। **मुहा.** सर मुँड़ाते ही ओले पड़ना = कार्यारंभ में ही विघ्न उपस्थित होना। **टि.** सामान्यत: बहुवचन में ही प्रयोग होता है।

ओलावर्षण *पुं.* *(तद्. + तत्.)* ओलों की बरसात **पर्या.** उपलवर्षा **दे.** ओला।

ओषजन *पुं.* ऑक्सीजन नाम की एक गैस।

ओस *स्त्री. (देश.)* वातावरण में फैली भाप जो सघन होकर रात में बारीक-बारीक जल कणों के रूप में ठंडे स्थान पर गिरती है। **पर्या.** शबनम dew

ओसाई मशीन स्त्री. *(देश+अं)* ओसाई के लिए काम आने वाला यंत्र। Winnowing machine **दे.** ओसान।

ओसाना *स.क्रि./पु. (देश.)* काटी गई फसल से दानों को वायु-प्रवाह द्वारा भूसी से अलग करने की क्रिया।

ओहदा *पुं. (अर. < ओहदः)* सा.अर्थ पद। **सैवि.** समान स्तरों में बँटे एकाधिक पद, भले ही उन पदों के नाम अलग-अलग क्यों न हों। rank

ओहदेदार *पुं. (अर. + फा.)* किसी पद को धारण करने वाला व्यक्ति; पदाधिकारी।

औ

औंटना/औंटाना *स.क्रि. (तद्. < उत्तापन)* दूध को या पानी मिले आटे को उबालते और कड़छुल आदि से हिलाते/घोंटते रह कर गाढ़ा करना।

औंधा/औंधी *वि. (तद्.)* 1. जिसका मुँह नीचे की ओर हो; उलटा। 2. पट लेटा हुआ यानी जिसका मुँह और पेट धरती की ओर हो तथा पीठ आसमान की ओर।

औकात *स्त्री. (अर.)* व्यु.अर्थ वक्त का बहुवचन। सा.अर्थ प्रतिष्ठा, इज्ज़त, हैसियत, बिसात **उदा.** उसकी औकात इतनी ही है।

औचक *वि. (देश.)* अचानक **जैसे:** औचक निरीक्षण।

औचित्य *पुं.(तत्.)*उचित होने का भाव। **दे.** उचित।

औज़ार *पुं. (अर.)* वे उपकरण जो किसी निर्माण कार्य, युद्ध आदि में प्रयुक्त होते हैं। **पर्या.** उपकरण instruments

औद्योगिक [उद्योग+इक] *वि.* उद्योग से संबंधित; उद्यनपरक।

औद्योगिक क्रांति *स्त्री. (तत्.)* 1. नवीन वैज्ञानिक अनुसंधानों के फलस्वरूप उद्धोग-धंधों के क्षेत्र में हुआ युगांतरकारी परिवर्तन 2. उद्योग-क्षेत्र में हुई द्रुतगामी प्रगति।

औने-पौने *क्रि.वि. (प्रथम पद अनु.+तद्)* शा. अर्थ तीन-चौथाई कीमत में। सा.अर्थ जितनी कम कीमत में मिल जाए (वही ठीक)

औपचारिक *[उपचार+इक] वि. (तत्.)* 1. जो नियमानुसार या विधि-अनुसार हो। 2. जो केवल रस्म अदायगी के लिए किया गया हो। रस्मी। 3. बाहरी दिखावा। **विलो.** अनौपचारिक।

औपनिवेशिक [उपनिवेश इक] *वि. (तत्.)* उपनिवेश से संबंधित। **दे.** उपनिवेश। **उदा.** अंग्रेज़ों के औपनिवेशिक साम्राज्य में सूर्यास्त नहीं होता था।

और अव्य. *(तद्. < अवर < अपर)* दो शब्दों या वाक्यों को जोड़ने के लिए प्रयुक्त शब्द *वि.* (तद्.<अपर) 1. दूसरा, अन्य **उदा.** और क्या कहोगे? 2. अधिक **उदा.** थोड़ा और दें। **मुहा.** और का और = कुछ का कुछ, अर्थात् बेकार।

औरत *स्त्री. (अर.)* 1. महिला, स्त्री 2. (ग्राम्य प्रयोग) पत्नी 3. घर में काम करने वाली (नौकरानी)।

औलाद *स्त्री. (अर.)* संतान, संतति।

औषध शा.अर्थ *वि. (तत्.)* ओषधि/औषधि से बना हुआ *पु.* किसी रोग को दूर करने के लिए चिकित्सकों द्वारा प्रयुक्त जड़ी बूटियाँ या उनसे बनाई गई दवा। **पर्या.** दवा, दवाई medicine

औषधालय [औषध = दवाई + आलय = घर] *पुं. (तत्.)* जहाँ दवाई प्राप्त हो, **पर्या.** दवाखाना।

औषधि/औषधि *स्त्री. (तत्.)* 1. जड़ी बूटी 2. वनस्पति।

औषधीय *वि. (तत्.)* औषध संबंधी, जड़ी-बूटी से संबंधित। **दे.** औषध। **उदा.** लहसुन में बहुत से औषधीय गुण हैं।

औसत *स्त्री. (अर.)* दो या दो से अधिक संख्याओं को जोडकर उनकी कुल संख्या से भाग देने पर प्राप्त राशि। **जैसे:** 2 + 4 + 6 + 8 + 10 + 12 का औसत है 7 average

क

कंकड़ *पुं. (तद्. < कर्कर) स्त्री.* कंकड़ी/री पत्थर का छोटा गोल-सा टुकड़ा। *वि.* कंकड़ीला।

कंकाल *पुं. (तत्.)* अस्थियों, उपास्थियों का बना शरीर का दृढ़ ढाँचा जो आंतरिक अंगों को सुरक्षा प्रदान करता है। पर्या. अस्थि। पिंजर, ठठरी।

कंक्रीट *स्त्री. (अं.)* सीमेंट, रेत, बजरी आदि का आनुपातिक मिश्रण जो पक्के घर, सड़क आदि बनाने के काम आता है। **पर्या.** (बोलचाल) मसाला।

कंगन *पुं. (तद्.<कंकण)* सोने, चाँदी आदि का बना गोलाकार गहना/आभूषण जो कलाई में पहना जाता है। 2. सिक्ख धर्म के अनुसार पंच 'ककारों' में मान्य इस्पात का बना गोल कड़ा जो हाथ में पहना जाता है। bangle **मुहा.** हाथ कंगन को आरसी क्या पढ़े लिखे को फारसी क्या।

कंगाल *वि. (तद्. < कंगु)* जिसके पास खाने-पीने, पहनने आदि का सामान लगभग न के बराबर हो, अति निर्धन। **पर्या.** मुफलिस।

कंगाली *स्त्री. (तद्.)* कंगाल होने की स्थिति। **पर्या.** मुफ़लिसी **मुहा.** कंगाली में आटा गीला = कष्टों की दोहरी मार, मुसीबत पर मुसीबत।

कंगुरा/कंगूरा *पुं. (फ़ा.)* किले की चारदीवारी पर थोड़ी दूरी पर बनी हाथ के पंजेनुमा आकृतियों में से कोई एक आकृति। वे आकृतियाँ प्राय: शोभा के लिए होती थीं किंतु इनके नीचे बने छेदों में से सिपाही अपनी बंदूके तान कर किले पर आक्रमण करने वाली शत्रुसेना पर गोलीबारी किया करते थे।

कंचन *पुं. (तत्.)* 1. सोना, 2. ला.अर्थ धन-सम्पत्ति।

कंचुक *पुं. (तत्.)* (स्त्री. कंचुकी) 1. पुराने जमाने का मर्दाना अंरखा; महिलाओं की चोली, अँगिया। 2. साँप की केंचुली।

कंजूस *वि. (तद्. < कणयूष)* **पर्या.** कृपण, सूम मक्खीचूस। (व्यक्ति) जो धन होने पर भी अनिवार्य आवश्यकताओं की पूर्ति न करे।

कंटक *पुं. (सं.)* 1. पेड़-पौधों की डालों का नुकीला, बारीक चुभने वाला भाग काँटा 2. ऐसी वस्तु जिसका सिरा नुकीला हो। 3. लोगों के रास्ते में बाधा पहुँचाने वाली वस्तु। 4. मछली फँसाने के लिए एक टेढ़ी अंकुसी या कील। 5. कष्ट या हानि पहुँचाने वाली चीज या बात। **उदा.** दुष्ट लोग सदैव भले लोगों के मार्ग में काँटे बोते हैं। **मुहा.** 1. कंटक निकलना, 2. राह में कंटक बनना।

कंट काकीर्ण (कंटक=काँटे+आकीर्ण= पूरी तरह भरा हुआ) शा.अर्थ (मार्ग) जिस पर काँटे बिछे हुए हों। ला.अर्थ अत्यंत कष्टप्रद।

कंटकित [कंटक+इत] *वि.(तत्.)* कँटीला, काँटेदार।

कंठ *पुं. (तत्.)* 1. गले का भीतरी भाग जिससे भोजन पेट में जाता है तथा स्वर यंत्र से होकर, उससे आवाज़ निकलती है। 2. गरदन, गला। 3. गले की आवाज़ या स्वर। **उदा.** इस व्यक्ति का कंठ बड़ा मधुर है।

कंठतालव्य [कंठ+तालु+य] जिसका उच्चारण कंठ और तालु दोनों के योग से हो **जैसे**: ए और ऐ स्वर वर्ण।

कंठ संगीत *पुं. (तत्.)* संगीत की वह विधा जिसमें प्रधानत: मुँह (कंठ से) से गाया जाता है (वाद्य यंत्रों का सहयोग नहीं लिया जाता और यदि लिया भी जाता है तो केवल गौण रूप से ही)। vocal music

कंठस्थ [कंठ+स्थ] *वि. (तत्.)* शा.अर्थ कंठ में स्थित, कंठगत सा.अर्थ जबानी याद। **पर्या.** कंठाग्र। **उदा.** कोई कंठस्थ कविता सुनाइए।

कंठा *पुं. (तद्.< कंठक((स्त्री. कंठी)* गले में पहनने की माला जिसमें बड़े-बड़े मनके होते हैं।

कंठाग्र [कंठ+अग्र] *वि. (तत्.)* शा.अर्थ जो कंठ के अगले हिस्से में हो। सा.अर्थ जबानी याद। **पर्या.** कंठस्थ **उदा.** कोई कविता कंटाग्र/कंठस्थ करके सभा में सुनाना।

कंठौष्ठ्य होंठ [कंठ+ओष्ठ्य] *वि. (तत्.)* जिसका उच्चारण कंठ और होंठ दोनों के योग से हो। **जैसे:** 'ओ' और 'औ' स्वर वर्ण।

कंठ्य *वि. (तत्.)* कंठ संबंधी, गले से उत्पन्न (वर्ण) (वह वर्ण)। जिनका वे उच्चारण कंठ से

होता है। **जैसे:** अ, आ, क, ख, ग, घ, ह और विसर्ग।

कंडक्टर *(अं.)* बस का वह कर्मचारी जो यात्रियों से शुल्क लेकर उन्हें यात्रा-पत्र (टिकटें) देता है जिससे वे अपने गंतव्य को जाते हैं। conductor

कंद *पुं. (तत्.)* 1. भूमिगत फूला हुआ गूदेदार और बिना रेशे का तना या जड़ जो खाने के काम आता/आती है। **जैसे:** आलू, शकरकंद, जिमीकंद, अरबी आदि। 2. समस्त पद का पश्चपद जो जमाई हुई मिठाई का वाचक बनता है। **जैसे:** कलाकंद, गुलकंद आदि।

कंधा *पुं. (तद्. < स्कंध)* गले के दोनों तरफ फैला ऊपरी भुजा का धड़ से जोड़-स्थल, जो भार वहन कर सकता है। shoulder **मुहा.** (i) कंधा देना- अरथी ढोने में मदद करना। (ii) कंधे से कंधा मिला कर= दूसरे से पूरा सहयोग कर, मिलकर। (iii) दूसरे के कंधे पर रखकर बंदूक चलाना = दूसरे की आड़ लेकर गलत काम करना ताकि अपना नुकसान न हो (नुकसान हो तो दूसरे का)।

कंपन *पुं. (तत्.)* 1. द्रुत गति से हिलने की स्थिति। **जैसे:** सितार के तारों के छेड़े जाने पर होती है। vibration 2. शीत, क्रोध, भय आदि के कारण शरीर के अंगों का बारंबार हिलना-डुलना) काँपना, कँपकँपी। shivering 3. आंतरिक उथल-पुथल के कारण धरती का हिलना-डुलना। **पर्या.** (भू)कंप

कंपनी *स्त्री. (अं.)* 1. व्यापारियों या व्यवसायियों का वह दल जो एक साथ मिलकर व्यापार या व्यवसाय करते हैं। 2. सैन्य-दल 3. साथ **जैसे:** मुझे कंपनी देने के लिए ही आ जाओ। company

कंपायमान *वि. (तद्.< कंपमान्)* 1. हिलता-डुलता हुआ, थरथराता हुआ। 2. जो काँप रहा है।

कंपित *वि. (तत्.)* काँपता हुआ।

कंपोस्ट *पुं. (अं.)* सड़ी-गली वनस्पतियों से तैयार किया मिश्रण जो मृदा की उर्वरक शक्ति को बढ़ाता है। **पर्या.** जैव उर्वरक, खाद। compost

कंप्यूटर *पुं. (अं.)* एक जटिल इलैक्ट्रॉनिक युक्ति (या यंत्र) जो भंडारित क्रमादेश के अनुसार द्रुत गति से आँकड़ों/सूचनाओं का भंडारण और संसाधन कर प्राप्त परिणामों का प्रदर्शन कर सकने में समर्थ है। **पर्या.** अभिकलित्र। **तु.** संगणक। computer

कंबल *पुं. (तत्.)* ऊन से निर्मित गाढ़ी और आयताकार चादर जो शरीर को गरम रखने के लिए सरदी में ओढ़ने और कभी-कभी बिछाने के काम आती है।

कँटिया *स्त्री. (<हिं.काँटी)* 1. छोटी कील 2. मछली पकड़ने का नोकदार काँटा। 3. अंकुशनुमा कई मुँह वाला लोहे का गुच्छा जिसे रस्सी के सहारे कुएँ में लटकाकर उसमें गिरे बर्तनों को निकाला जा सकता है। 4. स्त्रियों के सिर का गहना।

कँटीला *वि. काँटेदार,* जिसमें काँटें हों। **उदा.** सीमा पर कँटीले तारों की बाड़ खींच दी गई है ताकि विदेशी लोग हमारी सीमा में घुस न सकें।

कई *वि. (तद्.<कति)* एक से अधिक, अनेक **जैसे**: कई लोग; कई दिन हुए...

कक्ष *पुं.(तत्.)* कमरा, कोठरी आदि **जैसे:** शयन कक्ष (सोने का कमरा)

कक्षा *स्त्री.(तत्.)* 1. अंतरिक्ष में वह वर्तुलाकार पथ जिसमें कोई खगोलीय पिंड अथवा उपग्रह दूसरे बड़े खगोलीय पिंड की परिक्रमा करता है। orbit 2. औपचारिक शिक्षा में वर्षवार वह अनुक्रमात्मक व्यवस्था जिसमें विद्यार्थियों/छात्रों को ज्ञानार्जन की सुविधा प्रदान की जाती है। **जैसे:** पाँचवीं कक्षा, बारहवीं कक्षा आदि। class 3. ऐसे छात्रों/विद्यार्थियों के लिए बैठने का कमरा। class room

कगार *पुं. (देश.)* (नदी का) ऊँचा ढालू किनारा। **जैसे:** जबलपुर के समीप नर्मदा का कगार; सर्वनाश का कगार।

कचरा *पुं. (तद्.<कड़चर)* किसी वस्तु का रद्दी अंश, कूड़ा-करकट 2. अनाज आदि साफ करने पर उससे निकला हुआ बेकाम का छटा हुआ भाग। 3. फैक्ट्रियों का वाहित मलांश। **जैसे:** फैक्ट्रियों के कचरे को नदियों में बहा देने से प्रदूषण फैलता है। 3. कंप्यूटर-व्यर्थ के आँकड़े। garbage

कचहरी *स्त्री. (फ़ा.)* वह स्थान जहाँ न्यायाधीश विपक्षी दलों के तर्क-वितर्क सुनकर अपना निर्णय सुनाता है। **पर्या.** न्यायालय, अदालत, कोर्ट।

कचूमर *पुं. (देश.)* कुचली हुई वस्तु का संग्रह। **मुहा.** कचूमर निकालना**=** बहुत पीटना; इतना पीटना कि व्यक्ति अधमरा हो जाए।

कचोटना *अ.कि. (देश.)* मन को पीड़ा पहुँचना या पहुँचाना।

कच्चा माल *पुं. (देश.)* 1. कारखानों में, प्रयोग में आने वाला वह खनिज और वानस्पतिक पदार्थ जो अपनी प्रारंभिक और प्राकृतिक अवस्था में होता है और उससे मशीनों द्वारा अनेक वस्तुएँ तैयार की जाती हैं। raw material

कच्चा *वि. (तद्.<कच्वर)* 1. जिसके पकने, पुष्ट होने या तैयार होने में कमी या कसर रह गई हो। **पर्या.** अपरिपक्व, अपुष्ट, कमजोर, (फल के अर्थ में हरा) **विलो.** पका। 2. जिसमें दृढ़ता का अभाव हो। **जैसे:** कच्चा धागा **विलो.** पक्का।

कच्चा-चिट्ठा *पुं. (देश.)* शा.अर्थ 1. कच्ची बही में लिखा गया आय-व्यय का वास्तविक लेखा। जिसे पक्की बही में उतारने से पहले नियमानुकूल कई प्रकार के परिवर्तनों से होकर गुज़रना पड़ता है। सा.अर्थ गुप्त भेद, गोपनीय बात, रहस्य। **मुहा.** कच्चा-चिट्ठा खोल देना = गुप्त बातें सार्वजनिक करना।

कच्छ *पुं. (तत्.)* समुद्र का तटवर्ती नमी वाला कीचड़ भरा भू-क्षेत्र जो ज्वार-भाटों के प्रभाव से लवणयुक्त हो जाता है। marsh land

कछार *पुं. (तद्.<कच्छवाट)* नदी अथवा समुद्र के किनारे की तर और उपजाऊ भूमि जिसकी सतह नीची तथा बालू से भरी हुई होती है। aluvial land

कछुआ/कछुवा *पुं. (तद्.< कच्छप)* मंदगति वाला सरीसृप और उभयचर जल-जीव, जिसकी पीठ पर कड़ी ढाल का आवरण होता है और जो खतरे के समय अपनी खोपड़ी को अंदर खींच लेता है।

कटहल *पुं. (तद्.<कंटकि फल)* आर्तोकार्पुस हेलेरोफिलस वर्ग का पूर्वी भारत में उगने वाला विशालकाय पेड़ और उस पर लगने वाला बड़ा फल, जिसका छिलका काँटेदार और कड़ा होता है, कच्चा होने पर इससे अचार और सब्जी बनती है तथा पकने पर इसके बीच खाए जाते हैं।

कटाई *स्त्री. (तद्.)* 1. काटने का काम [जैसे कपड़े की कटाई, फसल की कटाई] 2. काटने की मज़दूरी।

कटाक्ष *[कट + अक्ष] पु. (तत्.)* 1. प्रेमपूर्ण तिरछी निगाह, तिरछी चितवन। 2. किसी को लज्जित करने के लिए कही गई व्यंग्यपूर्ण बात।

कटार *स्त्री. (तद्. < कट्टार) (स्त्री. कटारी)* नीचे से चौड़ा और ऊपर से तीखा एक दुधारा हथियार। **पर्या.** खंजर (डेगर)

कटाव *पुं. (हि. काटना)* 1. कटने के बाद उभरी आकृति; वर्षा, बाढ़ आदि के बाद जमीन के कट जाने से बनी आकृति। **जैसे**: नदी का कटाव।

कटि *स्त्री. (तत्.)* 1. पेट और नितंबों के बीच का भाग 2. कमर 3. किसी वस्तु का मध्य भाग।

कटिबंध *पुं. (तत्.)* 1. कमर में बाँधने की पट्टी; कमर में पहना जाने वाला गहना, कमर बंद। 2. भूगोल-गरमी-सरदी के विचार से बाँटे गए पृथ्वी के पाँच भागों में से हर एक (ज़ोन)। **जैसे**: उष्ण कटिबंध, शीत कटिबंध।

कटिबद्ध (कटि = कमर + बद्धस = बँधी हुई) *वि. (तत्.)* शा.अर्थ जिसने कमर कस ली हो। सा. अर्थ जिसने कोई कार्य करने का दृढ़ निश्चय कर लिया हो।

कटिबद्धता *स्त्रीं. (तत्.)* कमर कस लेने का भाव; दृढ़ निश्चय कर लेने का भाव।

कटुक *वि. (तत्.)* 1. कड़ुआ 2. कटु 3. जिसे सुनकर मन को बुरा लगे। **उदा.** 'अरी मधुर अधरान ते कटुक वचन जनि बोलि।'

कटोरा *पुं. (तद्.<करोट) (स्त्री. कटोरी)* तरल पदार्थ या अन्य पदार्थ रखने का धातु से बना छोटे आकार वाला (हाथ में पकड़ा जा सकने वाला) गोलाकार पात्र जिसकी चौड़ाई अधिक व ऊँचाई कम होती है। **मुहा.** हाथ में कटोरा लेना = भीख माँगना।

कटौती *स्त्री. [देश.< काटना + औती]* 1. किसी को दिए गए ऋण आदि में से ब्याज का कुछ हिस्सा पहले ही काट लेने का तरीका।

कटौती प्रस्ताव *पुं. (देश.+तत्.)* **विधि** संसद् या विधानमण्डल में विपक्ष द्वारा बजट प्रस्ताव का विरोध करने की एक विधि जिसमें बजट में सम्मलित किसी माँग में कमी करने का प्रस्ताव

किया जाता है। इसे सरकार की निंदा के रूप में लिया जा सकता है। cut motion

कट्टर *वि. (तद्.<काष्ठ)* शा.अर्थ काष्ठ (लकड़ी की तरह कठोर) सा.अर्थ 1. अपने विचार और विश्वास पर डटा रहने वाला; अपनी बात के प्रतिकूल कही गई किसी बात को न मानने वाला। **पर्या.** दुराग्रही 2. उदार विचारों में विश्वास न करने वाला। **पर्या.** हठधर्मी।

कट्टरपंथी *वि. (तद्.)* 1. कट्टरता के मार्ग पर चलने वाला, अपने विश्वास और विचार पर अडिंग रहने वाला; 2. अंध-विश्वासी, 3. चरमपंथी, अतिवादी।

कठपुतली *[कठ<काष्ठ+पुतली<पुत्तलिका] स्त्री. (तद्.)* 1. काठ की बनी हुई पुतली या गुडिया जिसे उँगलियों बँधे धागों द्वारा नचाया जाता है। **जैसे:** कठपुतली का तमाशा। ला.अर्थ दूसरे के इशारे पर नाचने वाला; दूसरे के कहे अनुसार काम करने वाला। **उदा.** मैं तुम्हारे हाथ की कठपुतली नहीं हूँ कि जैसा नचाओगे, नाचता रहूँगा।

कठफोड़वा *पुं. हिं. (काठ+फोड़ना=फोड़ने वाला/छेद करने वाला)* चिड़िया जो अपनी लंबी और नुकीली चोंच से पेड़ों की छाल छेद कर उसके अंदर के कीड़ों को खाती है। wood pecker

कठमुल्ला काठ+मुल्ला *(वि.) [तद्.+अर.]* 1. कट्टर मुल्ला या मौलवी। 2. वह व्यक्ति जो अपने विचारों में किसी प्रकार का परिवर्तन या नयापन स्वीकार न करे। 3. दुराग्रही व्यक्ति। 4. अतिमूर्ख।

कठमुल्लापन *पुं.* रुढ़िवादिता।

कठिन *वि. (तत्.)* 1. जिसे समझना, सुलझाना या करना सरल न हो, अपितु कष्टसाध्य हो। 2. कठोर, सख्त, कड़ा। **पर्या.** मुश्किल, दुसाध्य। **जैसे:** कठिन समस्या, कठिन प्रश्नपत्र; कठिन परीक्षा की घड़ी।

कठिनाई *स्त्री. (तद्.)* 1. कठिन या दुस्साध्य होने की स्थिति। 2. सख्ती, कठोरता **दे.** कठिन।

कठोर *(तत्.) वि.* जो कड़ा या सख्त हो। **जैसे**: कठोर पदार्थ hard कठोर अनुशासन strict 2. निर्दयी **जैसे**: कठोर व्यक्ति cruel 3. कष्टप्रद **जैसे**: कठोर कारावास (टिगरस) **विलो.** कोमल, मृदुल।

कठोरता *स्त्री. (तत्.)* 1. भौतिक रूप से कड़ापन **जैसे**: कठोर पदार्थ 2. कड़ेपन का बर्ताव। **जैसे**: कठोर अनुशासन। 3. दया का अभाव। **जैसे**: कठोर हृदय।

कडक़ *स्त्री. (हि.)* कडक़ड़ आकाश में बिजली चमकने के बाद की कर्कश ध्वनि। **जैसे**: बिजली की कडक़।

कड़ा *पुं. (तद्.<कढक़) स्त्री. कड़ी* 1. हाथ और पैर में पहनने का धातु का बना गोलाकार गहना। 2. सिक्ख धर्म (पंथ) में बताए गए पाँच ककारों (केश, कंघी, कच्छा, कृपाण और कड़ा) में से एक। *वि.* 3. कठोर, सख्त, जो नरम न हो, न डरने वाला। **वि.** नरम।

कड़ाह *पुं. (तद्.<कटाह) (स्त्री. कड़ाही)* लोहे पीतल का बना गोलार्थ जैसा बरतन जो नीचे से सँकरा और ऊपर से चौड़ा होता है।

कड़ाही *[कड़ाह+ई] स्त्री. (तद्.<कटाह)* लोहे, स्टेनलैस स्टील या पीतल का अर्ध्गोलाकार छोटे आकार वाला बर्तन जो पूरियाँ तलने, सब्जी आदि बनाने के काम में लाया जाता है।

कड़ी[1] *स्त्री. (तद्.<कअक)* 1. जंजीर की लड़ी का कोई एक छल्ला 2; जोड़ने वाली बात 3. गीत का पद।

कडी[2] *स्त्री. (तद्.<कोड)* छत में लगाई जाने वाली लकड़ी की धरन।

कड़ी[3] *वि.(तद्.<कठ)* कड़ा का स्त्री., कठोर **मुहा**. कड़ी परीक्षा लेना, **विलो.** मुलायम।

कण *पुं.* पदार्थ या द्रव्य का सूक्ष्मतम रूप partical गोलाकार दाना grain **जैसे:** अन्नगण, सिकताकण (रेत का दाना)

कतई *क्रि.वि. (अर)* बिल्कुल ही, निश्चित रूप से, कदापि नकारात्मक अर्थ सूचक, **जैसे**: यह कार्य कतई संभव नहीं है।

कतरन *स्त्री. (तद्.<कर्तरण)* काट-छाँट करने के बाद बने हुए कागज, कपड़े अथवा किसी धातु के टुकड़े। **जैसे:** कपड़े की कतरन, पान की कतरन अखबार की कतरन।

कतरना *सं.क्रि.* (तद्.) कैंची से कपड़े, गत्ते, कागज़ आदि के पतले-पतले टुकड़े काटना।

कतर-ब्योंत *स्त्री.(हि.* कतरन+ब्योंत=नापना) काट-छाँट।

कतल/कत्ल *पुं. (अर.)* किसी धार वाले हथियार से जान से मार डालना। **पर्या.** वध, हत्या।

कतार *स्त्री.(अर.)* पंक्ति, पाँत; line **उदा.** सब बच्चे कतार बना कर खड़े हो जाएँ।

कतिपय *वि.(तत्.)* कुछ, संख्या में कम। **जैसे:** कतिपय साहित्यकार अच्छे आलोचक भी है।

कत्थई *वि.(हिं. कत्था)* कत्थे जैसा, कत्थे के रंग का। **जैसे:** मुझे कत्थई रंग के कपड़े अच्छे लगते हैं।

कत्था *पुं. (तद्. क्वाथ)* खैर के पेड़ की छाल को उबालकर निकाले गए सत को जमाने से बना पदार्थ, जो पान के ऊपर चूने के साथ लगाया जाता है। खदिरसार। **जैसे:** मेरे पान पर कत्था कम लगाना।

कत्ल *पुं. (अऱ.)* क़तल, वध, हत्या, जान से मार देना।

कत्लेआम *पुं.(अर.)* बड़ी संख्या में आम जनता की हत्या। **पर्या.** नरसंहार। **उदा.** नादिरशाह ने चाँदनी चौक में अपने सिपाहियों को कत्लेआम की छूट दे दी।

कथन *पुं.(तत्.)* कही हुई बात; **विधि.** किसी व्यक्ति द्वारा विषय विशेष के बारे में दिया गया निश्चायक और विवरण प्रधान बयान। **पर्या.** बयान, वक्तव्य statement

कथनी *(कथन+ई)* (मुख से) कही हुई बात, कथन। **उदा.** उस पर विश्वास न करो। उसकी कथनी और करनी में बहुत अंतर है।

कथा *स्त्री. (तत्.)* शा.अर्थ जिसका कथन किया गया हो यानी जिसे कहा गया हो। 1. साहित्यकार द्वारा रचित उपन्यास आदि। **जैसे:** 1. हिन्दी का कथा साहित्य 2. धर्माचार्य द्वारा श्रोताओं के सम्मुख सुनाया गया कोई धार्मिक या पौराणिक आख्यान। **जैसे:** रामकथा, भागवत की कथा।

कथानक *पुं. (तत्.)* कहानी, उपन्यास, नाटक आदि में वर्णित विषय का संक्षिप्त कथन, कथावस्तु।

कथावस्तु *स्त्री. (तत्.)* **दे.** कथानक।

कथावस्तु *स्त्री. (तत्.)* 1. किसी कहानी, नाटक उपन्यास, महाकाव्य आदि का संक्षिप्त विवरण। **पर्या.** कथानक। plot कथा।

कथा-वार्ता *स्त्री. (तत्)* [कर्ता और वार्ता] किसी भी पौराणिक अथवा धार्मिक विषय पर विद्वतापूर्ण प्रवचन।

कथा-शिल्प *पुं. (तत्.)* **[कथा-शिल्प]** कथा साहित्य की रचना करते समय उसका कलात्मक पक्ष। **जैसे:** शब्द-रचना, वाक्यों का गठन, घटनाओं की प्रस्तुति आदि। **उदा.** कथावस्तु को उसका कथाशिल्प ही रोचक व मनोरंजक बनाता है।

कथित *वि.(तत्.)* 1. कहा हुआ, जिसका किसी ने कथन किया हो। stated said narrated 2. जैसा व्यक्ति ने कहा या जैसा बहुत लोग कहते हैं, पर जिसकी पुष्टि होना शेष है। (एलेज्ड़)

कथोपकथन [कथा < कथन+उपकथन] *पुं.(तत्.)* 1. दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच होने वाली बातचीत, वार्तालाप, संवाद। 2. उपन्यास, कहानी, नाटक के पात्रों में होने वाली वार्ता/बातचीत। conversation dialogue

कदंब *पुं. (तत्.)* एक पेड़ जिस पर आषाढ़-श्रावण मास में गोल-गोल पीले फूल लगते हैं और वे बहुत अच्छे महकते हैं। फूल की पंखुड़ी हट जाने पर फूलों से चटनी या अचार भी बनाया जाता है। **पर्या.** नीप, सुरभि, कर्णपूरक। **उदा.** 'जौ खग हौं तौं बसेरौ करों, मिलि कालिंदी कूल कदंब की डारन।"

कदम *पुं. (अर.<क़दम)* 1. सहज रूप में चलते समय एक पाँव से दूसरे पाँव तक की दूरी। **उदा.** भोजन के बाद सौ कदम चलना स्वास्थ्य के लिए अच्छा माना जाता है। 2. पगतल, चरण। **उदा**. मेरा सौभाग्य है कि आपके कदम मेरे घर में पड़े। **मुहा.** 1. कदम चूमना-विशेष आदर देना। 2. कदम उठाना-तेज़ चलना।

कदली *स्त्री.(तत्.)* केले का पेड़ या उसका फल।

कदाचार [कद्+आचार] *पुं.(तत्.)* **टि.** समास में 'कु' के स्थान पर 'कद्' प्रयुक्त होता है जिसका अर्थ है अल्पता, न्यूनता, बुराई। **प्रशा.** (कर्मचारी का) ऐसा आचरण या व्यवहार जो नियम विरूद्ध, निदंनीय, अनैतिक या अशोभनीय हो और जिसके

लिए उसके विरूद्ध कार्रवाई की जा सकती है। misconduct

कदाचित *क्रि.वि. (तत्.)* शायद, शायद कभी, कभी।

कदापि *क्रि.वि.(तत्.)* कभी, हर्गिज। **टि.** उसका प्रयोग नकारात्मक अर्थ में ही होता है। **उदा.** मैं यह कार्य कदापि नहीं करूँगा।

कद्दावर *वि.(फ़ा.<क़द्दावर)* शा.अर्थ जिसका कद अपेक्षा से अधिक लंबा हो, ऊँचे कद वाला। ला.अर्थ पद-प्रतिष्ठा में अन्य लोगों से श्रेष्ठ। **उदा.** कुछ कद्दावर नेताओं ने बगावत नहीं की होती तो पार्टी को बहुमत मिल जाता।

कद्र *स्त्री.(अर.)* आदर, सम्मान, प्रतिष्ठा। **विलो.** बेकद्री।

कनक *पुं.(तत्.)* 1. सोना, सुवर्ण, स्वर्ण। **पर्या.** कंचन। 2. धतूरा **उदा.** कनक-कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय (बिहारी) 3. ढाक, पलाश, 4. खजूर 5. (कणिक, कनिष्ठ) गेहूँ।

कनकटा *वि.(देश.)* (कान-कटना) जिसका एक कान कटा हो, या दोनों कान कटे हों। जैसे-कनकटा कुत्ता।

कनखजूरा *पुं. (तद्.<कर्णखर्जूरक)* एक कई टांगों वाला कीट (कीड़ा) जिसके शरीर का आकार लंबा और पतला होता है।

कनखी *स्त्री.* 1. तिरछी निगाह से देखने की क्रिया। **दे.** कटाक्ष।

कनपटी *स्त्री. (तद्.<कर्णपट्टिका)* कान और आँख के बाहरी किनारे के बीच वाला सिर के दोनों ओर का चपटा-सा भाग। temple

कनस्तर *पुं. (अं.)* टीन का बना चौखूँटा पीपा, जिसमें घी, तेल आदि रखते हैं। canister **टि.** आजकल कनस्तर प्लास्टिक के भी बने होते हैं।

कनात *स्त्री. (तु.)* मोटे कपड़े (प्राय: मोमजामे) का वह परदा जिससे किसी कार्यक्रम के आयोजन के लिए कोई खुला स्थान घेरा जाता है। **टि.** आजकल नायलोन के भी कनात तैयार होते हैं।

कनिष्ठ *वि. (तत्.)* (यंगर) (व्यक्ति) जो किसी अन्य की तुलना में पद, हैसियत, आयु आदि की दृष्टि से कम हो। (जूनियर) **जैसे:** कनिष्ठ अधिकारी।

कनी *स्त्री. (तद्.<कण)* 1. किसी अन्न आदि का बहुत छोटा टुकड़ा। कण, कणिका। **जैसे:** दाल की कनी। 2. ओस, पानी, पसीने या रक्त आदि की छोटी बूँद। **उदा.** झलकी भरि भाल कनीं जल की। (कवितावली) 3. अग्नि का छोटा कण, चिनगारी। 4. हीरे का बहुत छोटा टुकड़ा।

कन्नी *स्त्री. (देश.)* 1. पतंग का किनारा, कोर। 2. संतुलन के लिए पतंग की कमानी में बाँधी जाने वाली कपड़े की चिंदी। 3. वह औजार जिससे राजगीर पलस्तर को समतल करता है। **पर्या.** पाटा। **मुहा.** कन्नी काटना=किसी से न मिलने की चाह लिए, उसके सामने न आना। (संदर्भ-पहला अर्थ)

कन्या *स्त्री. (तत्.)* 1. अविवाहित/कुँआरी लडक़ी। 2. पुत्री, बेटी। 3. बारह राशियों में से एक।

कन्यादान *पुं. (तत्.)* माता-पिता द्वारा वर के साथ कन्या का विवाह करना।

कपट *पुं. (तत्.)* अनुचित लाभ उठाने अथवा किसी के उचित अधिकार को क्षति पहुँचाने की मनोवृत्ति से कोई मिथ्या कथन करने या धोखे में डालने का आपराधिक कृत्य। fravd

कपड़ा *पुं. (तद्.<कर्पट)* ऊन, रेशम, रूई, नायलोन आदि के धागों से निर्मित पट और उससे बनने वाले पहनने के वस्त्र।

कपाट *पुं. (तत्.)* 1. दरवाज़े का पल्ला आदि जिसे खोला और बंद किया जा सकता है। 2. कोई भी आवरण।

कपाल *पुं. (तत्.)* खोपड़ी का वह हिस्सा जो मस्तिष्क को घेरे रहता है। **पर्या.** खोपड़ी, करोटि, खप्पर।

कपालक्रिया *स्त्री. (तत्.)* हिंदुओं में प्रचलित एक प्रथा जिसके अनुसार शवदाह के समय मुर्दे की खोपड़ी को बाँस से फोड़ा जाता है।

कपास *स्त्री. (तद्.<कर्पास)* एक पादप और उसके कंद से निकलने वाला बिनौले से लिपटा श्वेत रेशेदार नरम पदार्थ जिसे रूई कहते है और जिससे कता धागा वस्त्र निर्माण तथा सिलाई के काम में आता है। cotton

कपूत *पुं. (तद्.< कुपुत्र)* बुरे आचरण वाला बेटा, नालायक पुत्र। **विलो.** सुपुत (सुपुत्र)

कपूर *पुं. (तद्.<कर्पूर)* सफ़ेद रग का एक तेज गंध वाला द्रव्य जो दालचीनी जाति के पेड़ों से निकाला जाता है। यह दवा, कीटनाशक और पूजा

के समय आरती के काम आता है। खुले में रखने से हवा में उड़ जाता है। (कैम्फर)

कपोल-कल्पना *स्त्री.(तत्.)* केवल कल्पना पर आधारित, (न कि वास्तविक रूप में घटित बात) मनगढ़ंत या बनावटी बात।

कप्तान *पुं. (अं.)* कैप्टन का अनुकूलित रूप। 1. स्थल सेना में, ओहदे के क्रम में मेजर से एक क्रम कनिष्ठ अफसर। 2. नौ सेना में, ओहदे के क्रम में कमाण्डर से एक क्रम कनिष्ठ अफसर। 2. खेल प्रतियोगिताओं में दल का नेतृत्व करने के लिए नामित खिलाड़ी। captain

कप्तानी *स्त्री.* दल का नेतृत्व करने की क्षमता; कप्तान का पद। **दे.** कप्तान।

कफ़ *पुं. (अं.)* कुर्ते की बांह की कलई से ढक़ने वाला दोहरा मुड़ा सिरा।

कफ *पुं. (तत्.)* आयुर्वेद के अनुसार शरीर को संतुलित बनाए रखने वाली तीन धातुओं (वात, पित्त और कफ में से तीसरी धातु; श्लेष्मा (बलगम) जो शीत प्रकृति का और फेफड़ों, गले और नासिका को प्रभावित करने वाला होता है।

कफ़न *पुं. (अर.)* श्मशान में दाहकर्म, कब्र में दफनाने के लिए ले जाते समय शव या मुर्दे के ऊपर लपेटा जाने वाला कपड़ा। **मुहा.** 1. कफ़न के लिए कौड़ी न होना=बहुत ही गरीब। 2. कफ़न सिर पर लपेटना/बांधना=वीरता की भावना से भरे हुए मृत्यु तक को गले लगाने से न डरना।

कबड्डी *स्त्री. (देश.)* खुले मैदान में खेला जाने वाला एक भारतीय खेल जिसमें प्रतिपक्षी खिलाड़ी दो अलग-अलग पालों में बंटे होते हैं। बारी-बारी से दोनों पक्षों का एक-एक खिलाड़ी बीच की रेखा पार कर दूसरी तरफ ध्वनि करते हुए जाता है और विपक्षी के किसी खिलाड़ी को छूकर अपने पाले में लौट आने का प्रयत्न करता है। छू लिया गया खिलाड़ा 'मरा' माना जाता है और खेल से हट जाता है, किंतु हमलावर खिलाड़ी के पकड़ लिए जाने पर या विभाजक रेख को न छू पाने अथवा सांस टूट जाने पर उसे खेल से बाहर होना पड़ता है। इस तरह जिसके सभी खिलाड़ी खेल से बाहर हो जाते है। वह पक्ष हारा हुआ और दूसरा पक्ष जीता हुआ माना जाता है।

कबाड़ *पुं. (तद्<कर्पट)* किसी काम न आने वाला सामान; टूट-फूट गया सामाना, रद्दी वस्तुओं का ढेर junk

कबाड़खाना *पुं. (कबाड़+फ़ा)* वह स्थान या कमरा जहाँ टूटे-फूटे सामाना/रद्दी वस्तुओं को बेतरतीब से भर दिया जाता है। junk house

कबाड़ा *पुं.* काम बिगड़ जाने या अव्यवस्थित हो जाने का सूचक भाव। **उदा.** सब कबाड़ा हो गया अब क्या होगा।

कबाड़ी *पुं.* (कबाड़+ई) टूटी-फूटी और रद्दी वस्तुओं का व्यवसायी junk dealer

कबाब *पुं. (अर.)* वह कुटा हुआ मांस जो सींकों पर भूनकर पकाया जाता है। **मुहा.** 1. कबाब होना=क्रोध से जलभुन जाना। **उदा.** मेरी बात सुनते ही वे कबाब हो गए। 2. कबाब में हड्डी=सुखमय स्थिति में अचानक (i) बाधा पहुँचने की स्थिति पैदा हो जाना अथवा (ii) बाधा पहुँचाने वाला कारक (व्यक्ति)।

कबीरपंथ [कबीर+पंथ] *पुं. (देश.)* संत कबीर के उपदेशो और उनकी मान्यताओं के अनुसार उनके अनुयायियों द्वारा स्थापित संप्रदाय।

कबीरपंथी [कबीर+पंथी] *वि. (देश.)* कबीर संप्रदाय के अनुयायी।

कबीला *पुं. (अर.)* 1. (i) एक ही पूर्वज के सभी वंशजों का समूह, (ii) एक ही जनजाति के लोग। **पर्या.** खानदान, वंश। 2. एक समान कार्य करने वाले लोगों का दल या समूह। tribe

कबूतरख़ाना *पुं. (फ़ा.)* 1. कबूतरों को पालने/रखने की जगह। 2. ला.अर्थ वह कमरा जहाँ कई बच्चे इकट्ठा होने पर बिना नियंत्रक के शोरगुल और धमाचौकड़ी मचाते रहते हैं।

कबूतरबाज़ *वि./पुं. (फ़ा.)* 1. (वह व्यवसायी) जो कबूतरों को पालता और बेचता है। 2. (वह व्यक्ति) जो दाँव लगाकर कबूतरों को लड़ाने या उड़ाने की प्रतियोगिता में भाग लेता है। 2. वह व्यक्ति या समूह जो लोगों से अनुचित ढंग से धन वसूलकर उन्हें विदेश भेजने का गैरकानूनी धंधा करता है।

कबूतरबाज़ी *स्त्री. (फ़ा.)* 1. कबूतर पालने, बेचने, उड़ाने तथा लड़ाने का व्यवसाय या खेल

प्रतियोगिता। 2. लोगों से धन ऐंठकर उन्हें विदेश भेजने का गैरकानूनी धंधा।

कबूलना *अ.क्रि. (अर.)* पूछने पर कही बात को और किए (अनुचित) काम को अथवा दोष, अपराध को मान लेना/स्वीकार कर लेना। **पर्या.** स्वीकार करना। (accept, admit कन्फेस)

कब्ज़ा *पुं. (अर.)* 1. किसी औजार को पकड़ने का स्थान, मूठ, दस्ता। 2. दरवाजे इत्यादि को चौखट से जोड़ने के लिए लोहे या पीतल आदि के चौकोर टुकड़े जिसमें पेच कसे जाते हैं। (हिंज) 3. अधिकार, भूमि, भवन आदि पर वास्तविक नियंत्रण। possession

कब्र *स्त्री. (अर.)* 1. मुसलमानों, इसाइयों और यहूदियों में मुर्दे या शव को गाड़ने के लिए खोदा गया गड्ढ़ा। 2. वह स्मारक जो ऐसे स्थलों के ऊपर बनाया जाता है। **मुहा.** (i) कब्र खोदना=किसी की बरबादी के घटिया तरीके अपनाना। (ii) कब्र में पैर लटकना=मरने को होना, बहुत बूढ़ा होना।

कब्रगाह *स्त्री.(फ़ा.)* शा.अर्थ कब्र की जगह। सा.अर्थ चहारदीवारी से घिरा वह सार्वजनिक स्थल या मैदान जहाँ मुर्दे को गाड़ते हैं। **पर्या.** कब्रिस्तान।

कब्रिस्तान [कब्र+इस्तान=स्थान] *पुं. (अर.+फ़ा.) दे.* कब्रगाह। जहाँ मुर्दे गाड़े जाते हैं।

कम *(फ़ा.) वि.* जितना होना चाहिए उससे मात्रा, गुण आदि में थोड़ा या खराब। **पर्या.** अल्प। **जैसे:** इस साल बारिश कम हुई है। 1. अल्प, 2. थोड़ा, 3. बुरा, 4. खराब। **विलो.** अधिक, ज्यादा।

कमअक्ल *वि. (फ़ा.+अर.)* जिसमें अक्ल यानी बुद्‌धि सामान्य मात्रा से कम हो; अल्पबुद्‌धि या मूर्ख।

कम उम्र *वि. (फ़ा.+अर.)* जिसकी उम्र कम हो यानी जो वयस्क माने जाने की आयु तक न पहुँचा हो। juvenile

कमख़र्च *पि. (फ़ा.)* थोड़ा खर्च करने वाला, किफायत से चलने वाला। **पर्या.** मितव्ययी, अल्पव्ययी। **तु.** कंजूस।

कमज़ोर *वि. (फ़ा.)* 1. जिसमें शक्ति (ताकत) की कमी हो, निर्बल/दुर्बल, 2. सामान्य मानक से कम स्तर का। **जैसे:** कमज़ोर दिमाग का; पढ़ने में कमजोर।

कमज़ोरी *स्त्री. (फ़ा.)* निर्बलता, दुर्बलता।

कमतर *वि. (फ़ा.)* किसी से तुलना करने पर उससे कम।

कमबख़्त *वि. (फ़ा.)* दुर्भाग्य का मारा, अभागा, हतभाग, बदकिस्मत, तकदीर का मारा।

कमर *स्त्री.(फ़ा.)* 1. मानव शरीर के बीच का यानी पेट से नीचे और कूल्हे के ऊपर वाला भाग (जहाँ धोती, पजामा आदि बांधते हैं।) **पर्या.** कटि। **मुहा.** (i) कमर कसना (कटिबद्‌ध होना) = किसी कार्य को करने के लिए पूरी तरह से तैयार होना/तैयारी करना (ii) कमर टूटना=कड़े परिश्रम की वजह से कुछ करने योग्य न रहना; हतोत्साहित होना (iii) कमर झुकना=बूढ़ा हो जाना। 2. वस्त्र का वह भाग जो उपर्युक्त हिस्से (कमर) को ढाँकता है या वहाँ बांधा जाता है। जैसे-इस पेंट की कमर थोड़ी ढीली है।

कमरतोड़ *वि.(फ़ा.)* शा.अर्थ कमर को तोड़ देने वाला। सा.अर्थ (काम) जिसे पूरा करने में बहुत मेहनत करनी पड़ी। **उदा.** उसने कमरतोड़ मेहनत की इसलिए प्रथमश्रेणी प्राप्त कर पाया। 2. कमरतोड़ मंहगाई।

कमरबंद *पुं. (फ़ा.)* 1. कमर में बांधने का दुपट्टा या पेटी, 2. पजामें आदि की डोरी, नाड़ा।

कमरा *पुं.(फ्रांसीसी-कामेरा)* किसी घर या भवन का वह भाग जो चारों ओर से दीवारों से घिरा हो और जिसमें प्रवेश के लिए दरवाज़ा बना हो तथा नीचे फर्श और ऊपर छत हो। **उदा.** मेरे घर में चार कमरे हैं।

कमल *पुं.(तत्.)* तालाब में ठहरे पानी में पैदा होने वाला मुख्यतः लाल (गुलाबी) रंग का और गौणतः नीले या श्वेत रंग का एक भारतीय पौधा और उसका फूल (पुष्प) जो अपनी सुंगधि और सुंदरता के लिए प्रसिद्‌ध है। **पर्या.** नीरज, जलज, पंकज, अंबुज, सरसिज, पद्‌य, अरबिंद, राजीव lotus

कमल-ककड़ी *[कमल+हिं.ककड़ी] स्त्री. (तत्.)* कमल का डंठल जिसकी सब्ज़ी बनती है। **पर्या.** कमल नाल।

कमल-गट्टा *पुं.* कमल के बीज जिनसे सब्जी बनती है।

कमलनयन *वि. (तत्.)* (स्त्री. कमलनयनी) जिसकी आँखें कमल की पंखुड़ी के आकार की या उसके समान सुंदर और बड़ी हों।

कमलनाल *स्त्री. (तत्.)* **दे.** कमलककड़ी।

कमसिन *वि. (फ़ा.)* 1. छोटी उम्र का, कम उम्र; नाबालिग, कोमल अंगों वाला। adolesence

कमसूरती *स्त्री. (फा.)* बदसूरत होने का भाव, सुंदर न होने का भाव। **विलो.** खूबसुरती।

कमांड *अं.* सा.अर्थ आज्ञा, हुक्म, आदेश। **सैन्य** (i) एक निश्चित भौगोलिक क्षेत्र अथवा किसी विशिष्ट कार्य के लिए गठित प्रमुख कमांडिंग सर्वोच्च. अफ़सर के अधीन सेना का प्रमुख विभाग। **जैसे**: वायुसेना में दक्षिणी कमान, स्थल सेना में उत्तरी कमान, नौसेना में पश्चिमी नौसेना कमान आदि।, (ii) सैन्य अफसरों द्वारा दिया गया आदेश। (प्राय: परेड के समय) command

कमाई (कमाना+ई) *स्त्री.* 1. कमाया हुआ धन या माल। 2. कमाने का काम; धर्नोपार्जन।

कमाऊ *वि.(देश.)* 1. कृषि व्यवसाय, कला आदि से पर्याप्त लाभ अर्जित करने वाला। 2. यथेष्ट धन का उपार्जन करने वाला। धनोपार्जक। **जैसे**: उनका यह कमाऊ पूत है जो संगीतकला में प्रतिदिन पर्याप्त धनोपार्जन करता है।

कमान *स्त्री.(फ़ा.)* 1. धनुष, तीर चलाने का यंत्र, 2. मेहराब, मेहराबदार बनावट, 3. इंद्रधनुष, 4. तोप. बंदूक। **उदा.** गरगज बाँध कमानैं धरी' (जायसी)। 2. सैन्य (क) एक निश्चित भौंगलिक क्षेत्र अथवा किसी विशिष्ट कार्य के लिए गठित प्रमुख कमांडिंग सर्वोच्च अफसर के अधीन सेना का प्रमुख विभाग। **जैसे:** वायुसेना में दक्षिणी कमान, स्थल सेना में उत्तरी कमान, नौसेना में पश्चिमी नौसेना कमान आदि। (ख) सैन्य अफसरों द्वारा दिया गया आदेश (प्राय: परेड के समय)

कमाना *सं.क्रि. (देश.)* 1. मेहनत से धन कमाना। 2. अनाज उपजाना/पैदा करना। 3. काम लायक खेत तैयार करना। 4. प्रतिष्ठा प्राप्त करना। **जैसे:** नाम कमाना। 5. कच्चे को पक्का करना। **जैसे:** चमड़ा कमाना। 6. (प्राचीन प्रयोग) पाखाना/शौचालय साफ करने तथा मैला ढोने का काम। (अब प्रतिबंधित)

कमानी *स्त्री. (फ़ा.)* 1. कमान की तरह मुड़ी या झुकी चीज़ सा पुर्ज़ा। 2. लोहे आदि की बनी लोचदार तीली।

कमानीदार तुला *स्त्री.* [कमानीदार (फ़ा.)+तुला (तत्.] वस्तु पर लगने वाले बल को मापने वाला यंत्र या युक्ति। (इसमें एक कुंडलित कमानी होती है जिसमें बल लगाने पर प्रसार (फैलाव) हो जाता है। कमानी के प्रसार (फैलाव) की माप इसके अंशांकित पैमाने पर चलने वाले संकेतक द्वारा की जाती है। पैमाने के पाठ्यांक द्वारा बल का परिणाम प्राप्त होता है। spring balance

कमाल *पुं. (अर.)* अद्भुत कार्य। *वि.* अतिशय, सर्वोत्तम। मुहा.-कमाल करना=अद्भुत कुशलता दिखाना, विशिष्ट योग्यता का परिचय देना। **उदा.** सुरेश ने ऊँची कूद में कमाल कर दिखाया।

कमी *स्त्री.* मात्रा, गुण आदि में आवश्यकता से कम होने की स्थिति। **विलो.** अधिकता। **दे.** कम। कम, गलती अथवा छोटा होने का भाव। **जैसे:** पानी की कमी, खून की कमी।

कमीज़ *स्त्री. (अर.)* लंबी बाहों वाला और सामने बटन टंगा कालरदार कुरता। उपरि वस्त्र जो बदन ढकने के लिए पहना जाता है shirt **तु.** कुरता/कुर्ता।

कमीशन *पुं. (अं.)* 1. कोई सामान बेचने, बिकवाने के बदलने बिचौलिए को मिलने वाला नियत आंशिक धन। **पर्या.** दलाली। 2. किसी निर्दिष्ट कार्य को सम्यक निष्पादन हेतु सरकार द्वारा नियुक्त सावधि या निरवधि विशेष स्तर का अभिकरण। **पर्या.** आयोग, **जैसे:** इन्क्वायरी कमीशन (जाँच आयोग), इलेक्शन कमीशन (निर्वाचन आयोग) आदि।

कम्पोस्ट *पुं.(अं.)* **कृषि वि.** खेती में प्रयोग की जाने वाली वह खाद जिसमें प्रमुख रूप से कार्बन और खनिज पदार्थ रहते हैं तथा जो कार्बनिक

पदार्थों के विघटन से तैयार की जाती है। **टि.** प्राय: सड़े-गले पौधों, पशुओं के मल इत्यादि को मिटटी में कुछ समय तक दबाकर यह खाद प्राप्त की जाती है। compost

कयामत *स्त्री. (अर.)* मुसलमानों, इसाइयों, यहूदियों के अनुसार सृष्टि का वह अंतिम दिन जब सब मुर्दे उठकर खड़े हो जाएंगे और ईश्वर के सामने उनके कर्मों का हिसाब प्रस्तुत किया जाएगा। **पर्या.** प्रलय। **जैसे:** कयामत का दिन; कयामत की घड़ी, कयामत बरपा करना, कयामत को अपने पैरों पर खड़ा करना, भारी आफ़त खड़ी करना।

कयास *पुं. (अर.)* शा.अर्थ नाप-तोल, गणना या तर्क इत्यादि के आधार पर निर्णय करने का प्रयत्न। सा.अर्थ अनुमान, अंदाजा, विचार। **जैसे:** मेरे मित्र ने जैसा कयास लगाया था हिंदी का प्रश्नपत्र वैसा ही आया।

कर *पुं. (तत्.)* 1. हाथ, 2. हाथी की सूँड, 3. किरण (सूर्य या चंद्रमा की) 4. राजस्व की वृद्धि के लिए सरकार द्वारा व्यक्ति, वस्तु, भूमि, उत्पाद आदि पर आरोपित अंशदान। tax 5. प्रत्यय-कर=करने वाला। **जैसे:** हानिकर, सुखकर।

करघा *पुं. (फ़ा. करगह)* कपड़ा बुनने का यंत्र।

करण *पुं. (तत्.)* 1. कोई कार्य करने की क्रिया, **जैसे:** सरलीकरण, भारतीयकरण। 2. कोई कार्य करने का साधन। **पर्या.** उपकरण। 3. व्याकरण में एक कारक-जो क्रिया व्यापार के साधन का सूचक बनता है। **जैसे:** मैं हाथ से खाना खाता हूँ; वह डंडे से मारता है। यहाँ हाथ और डंडा करण कारक में हैं।

करतब *पुं. (तद्.< कर्त्तव्य)* 1. किया हुआ काम, 2. कोई कौशलपूर्ण, अनोखा कार्य। **पर्या.** बाजीगरी (फीट) **जैसे:** पहलवान के करतब। 3. दूषित या नियम विरूद्ध कार्य। **पर्या.** करतूत। misdeed **जैसे:** उसके करतब निंदा योग्य हैं।

करतबी *वि./पुं.* 1. करतब दिखाने वाला, 2. बाज़ीगर, ऐंद्रजालिक, 3. धोखेबाज़।

करतल ध्वनि [करतल=हथेली+ध्वनि+आवाज़] *स्त्री.(तत्.)* शा.अर्थ हथेलियों की आवाज़। सा.अर्थ प्रसन्नता की स्थिति में श्रोताओं या दर्शकों द्वारा हथेलियों को लगातार एक-दूसरे पर मारते रहने से उत्पन्न आवाज़। hand clapping applaud

करताल *पुं.(तत्.)* 1. झाँझ, मजीरा। 2. ताल देने का बाजा। 3. दोनों हथेलियों को एक-दूसरे पर पीटने से उत्पन्न होने वाली ध्वनि।

करतूत *स्त्री.(तद्.<कर्त्तव्य)* अनुचित और निंदय कार्य। (दे. 'करतब' अर्थ) **जैसे**: उसकी करतूत देखकर मुझे शर्म आती है।

करनी *स्त्री.(तद्.) (सं. करणीय)* 1. किया जाने वाला कार्य। **उदा.** (i) उसकी कथनी और करनी में बहुत अंतर है (ii) जैसी करनी वैसी भरनी। 2. राजगीर द्वारा प्रयुक्त एक उपकरण जो चुनाई के कार्य में मसाला आदि उठाने के काम आता है। उच्चरित रूप-कन्नी। 3. निदंनीय, अनुचित कार्य। **उदा.** उसकी करनी का उसे तत्काल फल मिल गया 4. कंघी।

करबला/कर्बला *स्त्री. (अर.)* 1. सऊदी अरब में वह नगर जहाँ अली के छोटे बेटे इमाम हुसैन अपने साथियों सहित शहीद हुए थे। 2. वह स्थान जहाँ ताजिए दफ़न किए जाते हैं। **तु.** काबा।

करवट *स्त्री. (तद्.*<करव्यावर्तन) दाहिनी या बाईं बाजू लेटने की स्थिति; शरीर के दोनों पार्श्ववर्ती हिस्से जिन पर दोनों लटके हाथ टिकते हैं और जिनके सहारे बारी-बारी से लेटा जाता है। **मुहा.** (i) करवट बदलना=नींद न आना। ला.अर्थ बेचैनी की स्थिति में बार-बार दाहिनी या बाईं ओर पलटते रहना, सो न पाना। (ii) ऊँट किस करवट बैठता है=आगे क्या होता है।

कराधान [कर+आधान] *पुं. (तत्.)* सरकार द्वारा व्यक्तियों की आय, कंपनियों के व्यवसाय आदि पर कर निर्धारित करने और उसे वसूलने की प्रक्रिया। taxation

करामात *स्त्री. (अर.)* ऐसे कार्य जो अद्भुत व आश्चर्यजनक हों। चमत्कार miracle **जैसे**: चिकित्सकों की करामात से वह पुन: स्वस्थ हो गया। **टि.** 'करामात' फ़ारसी में ('करामत' का) बहुव. रूप है पर हिंदी में एकव. प्रयोग भी होता है।

करामाती *वि.* 1. करामात दिखाने वाला, चमत्कारी मनुष्य। 2. ऐसा कार्य जिसमें चमत्कार हो।

करार *पुं.(अर.)* **वाणि.** दो व्यक्तियें या समूहों के बीच कुछ करने या न करने के बारे में हुआ मौखिक या लिखित समझौता। **पर्या.** अनुबंध, करारनामा।

करार देना *पुं. (अर.)* निश्चयपूर्वक कह देना। **उदा.** उसे अपराधी करार दिया गया।

करारा *वि.(तद्. देश.)* 1. कुरकुरा यानी खाते समय सुविधापूर्वक टूट जाने वाला और 'कुरकुर' आवाज़ वाला। **जैसे**: करारा पापड़। 2. कड़ा, तेज, कठोर, उग्र। **जैसे:** करारा जवाब, करारा तमाचा। **जैसे**: करारा आदमी (चुस्त या तेज व्यक्ति)। hard hittng

कराहना *अ.क्रि. (देश)* मुख से पीड़ा या कष्ट सूचक ध्वनि निकालना, 'आह-आह' करना। bemoaning

करिश्मा *पुं. (फ़ा.)* कोई अद्‌भुत या विलक्षण कार्य, चमत्कार, करामात। miracle

करूण *वि. (तत्.)* मन में दया की भावना पैदा कर देने वाला/वाली (दृश्य, घटना आदि)

करूणा *स्त्री. (तत्.)* अन्य लोगों द्वारा भोगी जा रही पीड़ा देखकर/सुनकर उनके प्रति मन में उत्पन्न दया या गहरी सहानुभूति का भाव। compassion **जैसे**: करूणानिधि ईश्वर।

करूणानिधि [करूणा= दया + निधि = ख़ज़ाना] *वि.(तत्.)* शा.अर्थ दया या करूणा का खज़ाना। सा.अर्थ भगवान का विशेषण जिनकी दयादृष्टि सब पर रहती है।

करूना *स्त्री.* **दे.** करूणा।

करूनानिधि *पुं. (देश.)* करूणानिधि।

करोड़ *वि.(तद्. < कोटि)* शब्दों में एक लाख की संख्या से सौ का गुणनफल, अंकों में 1,00,00,000। **पर्या.** कोटि।

कर्क *पुं.(तत्.)* 1. केकड़ा, 2. बारह राशियों में से चौथी राशि।

कर्कश *वि. (तत्.)* (स्त्री.-कर्कशा) कठोर, सख्त (शब्द या वाक्य) जो सुनने में कानों को मधुर न लगे। **पर्या.** कटु, अप्रिय ध्वनि। **जैसे:** कर्कश आवाज़।

कर्ज़ *पुं. (अर.)* उधार लिया हुआ धन। **पर्या.** ऋण, उधार, कर्जा। **दे.** कर्जा।

कर्जा/कर्ज़ *पुं. (अर.)* दूसरे से लिया हुआ धन जिसे (ब्याज सहित) लौटाने की शर्त हो। **पर्या.** ऋण, उधार। **मुहा.** कर्जा उतारना=कर्ज़ चुकाना, उऋण होना।

कर्ण *पुं. (तत्.)* 1. प्राणियों की वह इंद्रिय जिससे वे सुनते हैं; कान। 2. गणित-वह रेखा जो किसी चतुर्भुज के आमने-सामने के कोणों को मिलाती है। 3. पतवार।

कर्णकटु *वि. (तत्.)* कानों को कटु=कड़वा (अप्रिय) लगने वाला, जो सुनने में कर्कश हो।

कर्णगोचर [कर्ण+गोचर] *वि.(तत्.)* कानों को सुनाई देने वाला; कानों को सुनाई देने योग्य, जो सुना जा सके।

कर्णधार *पुं.(तत्.)* 1. पतवार पकड़ने वाला, नाविक, माँझी, केवट, मल्लाह। 2. नेता, किसी संस्था, समाज, देश को मुख्य रूप से आगे बढ़ाने वाला। **उदा.** जवाहर लाल नेहरू देश के महान कर्णधारों में से एक थे।

कर्णपटह *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ कान का परदा। **प्राणि.** ध्वनितरंगों के आवेशों को ग्रहण कर मस्तिष्क तक पहुँचाने वाला कान का पट (परदा) Tympanum ear drun

कर्णपटह झिल्ली *स्त्री.[तत्+तत्+तद्] [तत्.+तत्.+तद्.]* बाह्‌य कर्ण को मध्यकर्ण से अलग करने वाला एक परदा या झिल्ली। ध्वनि के कंपन से कंपित होकर यह झिल्ली ध्वनि को भीतर कान में भेजती है। ear drum, lymfranic membrane

कर्णपल्लव *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ कान का पत्ता यानी वह नरम भाग जिसे घुमाया या मोड़ा जा सके। **प्राणि.** कान का बाहर की ओर निकला हुआ उपस्थित भाग जिसे इच्छानुसार घुमाया जा सके। ear lobe

कर्णवेध *पुं. (तत्.)* कान छेदने का संस्कार (जो शैशवकाल में संपन्न होता है।)

कर्णावर्त [कर्ण+आवर्त] *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ कान का घुमावदार यानी सर्पिल भाग। **प्राणि.** स्तनधारी प्राणियों में आंतरिक कर्ण का सर्पिल भाग जो ध्वनि कंपनों को ग्रहण कर श्रवण तंत्रिका के माध्यम से केंद्रीय तंत्रिका तंत्र को विद्युत आवेग प्रेषित करता है। cochlea

कर्ता *(तत्.)* 1. *वि.* करने वाला, बनाने वाला। 2. *पुं.* वह जो घर, संस्था आदि का मालिक हो और जिसके मार्गदर्शन में सारे कार्य होते हैं। 3. **व्या.** वाक्य में प्रयुक्त संज्ञा-सर्वनाम का वह रूप जिससे क्रिया के करने वाले का बोध होता है। उदाहरण-राम ने रावण को मारा, में 'राम' कर्ता है।

कर्त्तव्य *पुं. (तत्.)* 1. कार्य जिसे करने के लिए कोई व्यक्ति नैतिक और विधिक दृष्टि से बंधा हुआ हो। 2. कार्य जिसे हम कर सकते हैं तथा जिसे अवश्य करना चाहिए और जिसे करने से उद्देश्य की सिद्धि होती है। duty

कर्म *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ जो किया जाए। **व्या.** वाक्य में जिस वस्तु पर क्रिया के व्यापार का फल पड़ता है, उसे सूचित करने वाला संज्ञा या सर्वनाम का रूप। **उदा.** 'राम ने रावण को मारा' में 'रावण'। 'उसने मुझे आम दिया, में 'आम'।

कर्मकांड *पुं. (तत्.)* 1. पूजा, यज्ञ आदि से संबंधित सभी औपचारिक कार्य। 2. संस्कारों की विधि बताने वाला शास्त्र। 3. किसी धर्म के वे धार्मिक कार्य जो समय-समय पर होते हैं।

कर्मक्षेत्र *पुं.(तत्.)* कर्मभूमि, कार्य करने का स्थान अथवा विषय। **जैसे:** (i) पांडवों का कर्मक्षेत्र इंद्रप्रस्थ बना (ii) मेरा कर्मक्षेत्र साहित्य है। **पर्या.** कार्यक्षेत्र।

कर्मचारी *पुं.(तत्.)* शा.अर्थ काम में गतिशील। सा.अर्थ किसी संस्था या संगठन का पदानुसार वेतनभोगी कार्यकर्ता। employee, staff member

कर्मठ *वि.(तत्.)* तत्परता से काम करने वाला। **पर्या.** कर्मनिष्ठ।

कर्मनिष्ठ *वि.(तत्.)* अपने कार्य में पूरी निष्ठा यानी आस्था रखकर उसे पूरा करने वाला (व्यक्ति)। **पर्या.** कर्मठ व्यक्ति।

कर्मयोगी *वि./पुं.(तत्.)* 1. वह जो कर्मयोग के सिद्धांतों के अनुसार काम करे। 2. हानि-लाभ की चिंता न कर अपना कर्तव्य पूरे मनोयोग से पालन करने वाला (व्यक्ति) 3. स्वार्थ रहित सेवा का मार्ग अपनाने वाला

कर्मशाला *स्त्री.(तत्.)* 1. वह जगह जहाँ कारीगर, मज़दूर कार्य करते हों। **पर्या.** कारखाना। 2. वह जगह जहाँ मशीन आदि के मरम्मत का कार्य किया जाए।

कर्मशील *वि.(तत्.)* जो हानि-लाभ की चिंता छोडक़र पूरे मनोयोग से और परिश्रमपूर्वक काम करे।

कर्षण *पुं. (तत्.)* एक वस्तु द्वारा बल लगाकर दूसरी वस्तु को अपनी ओर खींचना। **पर्या.** आकर्षण।

कलंक *पुं. (तत्.)* 1. धब्बा, दाग, लांछन, कालिख। 2. कोई ऐसा कार्य जिससे अपयश मिलता हो। **वि.** कलंकित।

कल *स्त्री. (तत्.)* 1. मंद, मधुर, अस्पष्ट ध्वनि। **जैसे:** नदी की 'कल-कल ध्वनि', पक्षियों का 'कल-रव', गायिका का 'कल-कंठ'। *पुं.(कल्य)* 1. आज के दिन से ठीक पहले निकला हुआ दिन **जैसे:** कल हम ताजमहल देखने गए थे। yesterday **जैसे**: कमल हम आगरा जायेंगे। tomorrow 2. चैन, आराम, शांति **जैसे:** मुझे रातभर कल नहीं पड़ी। **विलो.** बेकली। **मुहा.** कल का छोरा=उम्र में छोटा, नादान, अनुभवहीन।

कलई *स्त्री. (अर.)* 1. सफेद रंग का खनिज पदार्थ जो पीतल आदि के बरतनों को चमकीला बनाने के लिए प्रयुक्त होता है, राँग। 2. मकान की दीवारों आदि पर की जाने वाली चूने की पुताई। 3. तथ्यों को छिपाने के लिए बनावटी आवरण। **मुहा.** कलई खुलना=असलियत का पता लगना।

कलकल *पुं. (तत्.)* झरनों, नदियों आदि के पानी की आवाज़, कोलाहल, शोर। **जैसे**: नदी का कलकल का स्वर मंत्रमुग्ध कर रहा हैं।

कलख [कल+ख] *पुं. (तत्.)* कल-कल जैसी आवाज़ जो प्राय: पक्षियों की चहचाहट होती है; मधुर स्वर/ध्वनि।

कलगी *स्त्री. (फ़ा.)* 1. मोर या मुर्गे के सिर की चोटी, 2. पगड़ी में लगाया जाने वाला तुर्रा या फुँदना। 3. ऊँची इमारत की चोटी या शिखर।

कलछी *स्त्री. [तद्.< कर+रक्षा]* लंबी डांडी वाला बड़ा चम्मच जिसको एक सिरा कटोरीनुमा होता है और जिससे सब्जी, दाल आदि बनाते या निकालते हैं।

कलपुर्ज़ा *पुं. [कल+पुर्ज़ा] (फ़ा.)* 1. मशीन और उसका पुर्ज़ा, 2. मशीन का पुर्ज़ा।

क़लम[1] *स्त्री. (अर.)* 1. नया पौधा तैयार करने के लिए पेड़-पौधे की काटी हुई टहनी जिसे दूसरी टहनी से जोड़ दिया जाता है ताकि नया पौधा तैयार हो सके। 2. कनपटियों पर कुछ लंबाई में छोडक़र काटे हुए बाल।

कलम[2] *स्त्री. (तत्.)* लिखने या चित्र बनाने का उपकरण। **पर्या.** क़लम, लेखनी।

कलमदान *पुं. (फ़ा.)* कलम, दवात रखने का पात्र, जो लकड़ी या पीतल आदि का होता है।

कलश *पुं. (तत्.) (स्त्री.-कलशी)* 1. मिट्टी का बना या धातु का गढ़ा हुआ गोलपात्र जिसमें जल आदि भरा जाता है। **पर्या.** घड़ा, गागर। 2. मंदिर आदि के शिखर पर लगा हुआ कँगूरा जो उलटे कलश के आकार का होता है।

कलसा *पुं. [तद्.<कलश] (स्त्री.* कलसी) कलश।

कला *स्त्री (तत्.)* 1. ऐसी रचना जिसमें बौद्धिक ज्ञान की अपेक्षा भावों और सौंदर्यात्मक कौशल की प्रधानता हो। आर्ट 2. बुद्धि का विकास करने वाली (विज्ञान, वाणिज्य और विधि से इतर) उच्च शिक्षा का क्षेत्र। **जैसे**: कला संकाय faculty of arts 3. पृथ्वी से दिखाई पड़ने वाला चंद्रमा का दीप्त अंश जो अमावस्या की शून्य स्थिति से शुरू होकर प्रतिदिन बढ़ती हुई पूर्णिमा को पूर्ण रूप प्राप्त करता है। faze 4. जीव शरीर में सामान्यत: वसा-अणुओं की बनी अविच्छिन्न परत जो अंगों आदि का अस्तर बनाती है। **पर्या.** झिल्ली membrane

कलाई *स्त्री. [तद्.<कलाची]* बाँह की हथेली से जुड़ने वाला भाग (जिसमें कंगन, चूड़ियाँ, घड़ी आदि पहनी जाती है।) **पर्या.** मणिबंध, पहुँचा। 2. कमीज आदि का उतना भाग जो कलाई को ढकता हो।

कलाकार *पुं.(तत्.)* सा.अर्थ कलापूर्ण रचना करने वाला, कलाकुशल। **जैसे:** कवि, चित्रकार, संगीतज्ञ, अभिनेता, मूर्तिकार आदि artist ला.अर्थ बनावटी बातें करने वाला। धूर्त।

कला-कौशल *पुं.(तत्.)* 1. किसी कला की रचना में लगनेवाली कुशलता, कारीगरी। 2. कारीगरी के कार्य, शिल्प।

कलात्मक *वि.(तत्.)* 1. कला से युक्त, 2. जिसमें कला का प्रदर्शन किया गया हो। **पर्या.** कलापूर्ण।

कलाबाज़ [कला+फ़ा.बाज़] *वि.* ऐसी चतुराईपूर्ण कला दिखाने वाला जिससे लोगबाग आश्चर्यचकित हो जाए। **भाव**. कलाबाज़ी।

कलावा *पुं. [तद्.<कलापक]* लाल-पीले रंग के धागों का सूह जिसे मांगलिक अवसरों पर कलाई, घड़े आदि पर बाँधा जाता है। **पर्या.** लच्छ।

कली *स्त्री.(तद्)* 1. फूल का प्रारंभिक अविकसित रूप जिसमें पंखुड़ियाँ अलग से दिखाई न दें। 2. खुलापन देने के लिए कपड़े का काटा हुआ लंबा तिकानो टुकड़ा **जैसे:** कलीदार कुर्ता।

कलुष *पुं.(तत्.)* 1. मलिनता, गंदगी, कालिमा। 2. बुरे कार्य, पापकर्म। 3. काम, क्रोध आदि बुरे विचार।

कलुषित [कलुष+इत] *वि.(तत्.)* कलुष (कालिमा) से युक्त। **पर्या.** गंदा, अपवित्र।

कलेजा *पुं. [तद्.<यकृत] (तद्.<कालेय)* **दे.** यकृत, जिगर liver 2. हृदय। **मुहा.** कलेजा फटना=बहुत दुखी होना। कलेजे पर सांप लोटना=ईर्ष्या करना। कलेजा मुंह को आना=घबरा जाना। कलेजे पर पत्थर रखना=मन कठोर कर लेना।

कलेजी *स्त्री.* बकरे या भेड़ के कलेजे (जिगर) का खाया जाने वाला पका मांस।

कलेवा *पुं. [तद्.<कल्पवर्त]* प्रात:काल का नाश्ता, जलपान। **पर्या.** प्रातराश, नाश्ता, उपाहार। breakfast

कलोल *पुं. [तद्.<कल्लोल]* 1. मन के प्रसन्न होने की भावना। 2. मनोविनोद, कौतुक-क्रीडा, आमोद-प्रमोद, मनोरंजन।

कल्टीवेटर *पुं.(अं.)* 1. हल, लोहे के सात या अधिक फालों वाला यंत्र जिसे ट्रेक्टर के साथ लगाकर खेत जोता जाता है। 2. किसान, कृषक जो कल्टीवेशन अर्थात खेती का धंधा करता हो।

कल्पना *अ.क्रि. [तद्.<कल्पन]* विलाप करना, रोना, बिलखना। *स्त्री.(तत्.)* 1. मन की वह शक्ति जो

नई, अनदेखी, विचित्र भावनाओं को जन्म देती है। imagination 2. किसी बात को कुछ समय के लिए सत्य मान लेना। **उदा.** कल्पना कीजिए, आप वृक्ष पर बैठे हैं। supposition assumption

कल्पनातीत **[कल्पना+अतीत=परे]** *वि.(तत्.)* कल्पना से परे।

कल्पनाशक्ति *स्त्री.(तत्.)* कल्पना करने की मानसिक शक्ति।

कल्पनीय *वि.(तत्.)* कल्पना करने योग्य। **विलो.** अकल्पनीय।

कल्पित *वि.(तत्.)* 1. सोचा या कल्पना किया हुआ। 2. मनगढंत, फ़र्जी, बनावटी, नकली।

कल्याण *पुं.(तत्.)* व्यक्ति या समूह की इच्छा सुख-समृद्धि, सुरक्षा, शांति, प्रसन्नता आदि। **उदा.** ईश्वर आपका कल्याण करे।

कवक *पुं.(तत्.)* निम्नतर पादप वर्ग जिसमें मूल, तना, पत्तियों वाला विभेदन नहीं होता। इसकी कोशिकाओं में पर्णहरित भी नहीं होता, जिसकी वजह से यह प्रकाश संश्लेषण भी नहीं कर सकता। अत: यह भोजन के लिए दूसरे पौधों पर निर्भर रहता है। यह रोगकारी भी है। fungus

कवकनाशी *वि./पुं. (तत्.)* कवकों को नष्ट कर देने वाला रासायनिक पदार्थ fungicide **उदा.** शाक-सब्जियों पर कवकनाशी का छिडक़ाव किया जाता है।

कवच *पुं. (तत्.)* 1. आवरण, छिलका, छाल। 2. लोहे की कड़ियों तथा लड़ियों से बना हुआ एक देहावहरण जो युद्ध में योद्धाओं के शरीर को आघात से बचाता है। **पर्या.** जिरह-बख़्तर। armour 3. युद्धपोतों तथा गाड़ियों की बाहरी मोटी-चादर shield 4. आपत्ति में अपनी एवं अगों की रक्षा के लिए पहना गया तावीज या पढ़ा गया मंत्र। amulet

कवयित्री *स्त्री. (तत्.)* कविता रचने वाली स्त्री; महिला कवि। poetess

कवायद् *स्त्री. (अर.)* (कायदा का बहुवचन) 1. नियम, व्याकरण। 2. नियमानुसार, शारीरिक अभ्यास। drill, P.T.

कवि *पुं.* कविता करने वाला। **पर्या.** शायर poet

कविता *स्त्री. (तत्.)* 1. (कवि द्वारा रचित) पद्यात्मक रचना। **पर्या.** शायरी poetry

कवित्त *पुं. (तद्.<कवित्त)* 1. काव्य, कविता, कविकर्म। 2. हिंदी का एक प्राचीन छंद, जिसमें 31 वर्ण होते थे और 8-16-24-31 पर यति होती थी तथा अंतिम वर्ण गुरू होता था।

कवित्व *पुं. (तत्.)* 1. कवि की भावना। 2. काव्य रचना का गुण।

कव्वाल *पुं. (अर.)* कव्वाली गाने वाला।

कव्वाली *स्त्री.(अर.)* 1. वह इस्लामी गीत जो ईश्वरीय आराधना के लिए सूफ़ियों द्वारा गया जाता है। 2. इस धुन में गाई जाने वाली कोई भी गज़ल।

कशमकश *स्त्री. (फ़ा.)* प्राय: विपरीत दिशाओं में चल रही खींचातानी। **उदा.** हमारे बीच काफी दिनों से कशमकश की स्थिति बनी हुई है। 2. सोच-विचार के बावजूद अनिश्चय की स्थिति। **पर्या.** असमंजस, दुविधा, पसोपेश, उधेड़बुन।

कशीदाकारी *स्त्री. (फ़ा.)* कपड़ों पर रंग-बिरंगे धागों से बेल-बूटे काढ़ने बनाने की कला।

कशेरूक *स्त्री. [तत्.<कशेरूका/कषेरूका=रीढ़]* रीढ़ या कशेरूकदंड (मेरूदंड) बनाने वाली अनेक छोटी-छोटी अस्थियों में से एक। vertabra

कशेरूका *स्त्री. (तत्.)* 1. रीढ़ की अनेक छोटी अस्थियों (हड्डियों) में से एक। 2. रीढ़ की हड्डी। vertebra, back bone

कशेरूकी *वि.* (जंतु) जिनमें रीढ़ की हड्डी होती है। **जैसे:** मछली, पक्षी, स्तनपोषी आदि। vertebrate **विलो.** अकशेरूकी।

कषेरूका *स्त्री.(तत्.)* रीढ़ backbone

कष्ट *पुं. (तत्.)* 1. मन और शरीर को होने वाला दूख जिससे छुटकारा पाने के लिए प्रयत्न किया जाए। **पर्या.** पीड़ा, तकलीफ़। 2. संकट या मुसीबत की स्थिति।

कष्टकर **[कष्ट+कर]** *वि. (तत्.)* कष्ट देने वाला, कष्टकारक। **दे.** कष्ट।

कष्टदाता *वि. (तत्.)* कष्ट देने वाला/पहुँचाने वाला।

कष्टसाध्य *वि. (तत्.)* जिसे करने में बहुत मेहनत या परिश्रम करना पड़े; जो कार्य कठिनाई से पूर्ण हो। **उदा.** पर्वतीय क्षेत्र की यात्रा बहुत कष्टसाध्य होती है।

कसक *स्त्री. [तद्.<*कषक] 1. रह-रह कर उठने वाला हल्का और मीठा दर्द, टीस। **ला.अर्थ**. उसके कटु वचनोंकी कसक आज भी मेरे दिल में है। 2. कार्य में सफल न होने पर या इच्छा पूरी न होने पर होने वाला मन का हल्का कष्ट। **उदा.** कोई कसर रह गई हो तो वह भी निकाल लो।

कसकना *अ.क्रि. (कसक)* 1. रह-रह कर हल्का और मीठा दर्द महसूस होना। **उदा.** फोड़ा अभी तक कसक रहा है।

कसना *स.क्रि. [तद्.<कर्षण]* 1. रस्सी आदि लपेटकर या बाँधकर इस तरह खींचना कि खुल न पाए और खुले भी तो बहुत कठिनाई से। 2. मशीन के पुरजे को तालमेल के साथ मजबूती से बैठाना। **जैसे**: पेंच कसना। 3. घोड़े, बैल आदि को गाड़ी में बाँधना। 4. कद्दू-कस करना। **जैसे**: रायते के लिए घिया कसना। 5. परखना। **जैसे**: सोने की कसौटी पर कसना।

कसबा *पुं. (अर.)* छोटा शहर। आकार या जनसंख्या की दृष्टि से गाँव और शहर के बीच की बस्ती।

क़सम *स्त्री (अर.)* शपथपूर्वक कही गई बात, सौगंध, शपथ। **जैसे**: कसम खाना, कसम खिलाना, कसम दिलाना, कसम तोड़ना।

कसर *स्त्री.(अर.)* 1. किसी प्रयत्न या क्रिया में रह जाने वाली कमी। समारोह की तैयारी पूरी होने में कुछ ही कसर बाकी है। 2. पूर्णता का अभाव, गेहूँ की फसल पकने में अभी कसर है। 3. दोष, विकार, त्रुटि। देश में हरित क्रान्ति आने में अभी कसर है। **मुहा.** कसर निकलना= (i) कमी पूरी होना (ii) कसर निकालना=कमी पूरी करना, किसी से अपनी हानि का बदला लेना, वैर का बदला लेना।

कसरत *स्त्री. (अर.)* स्वस्थ रहने के लिए या शरीर को अधिक मज़बूत बनाने के लिए किया गया शारीरिक अभ्यास या श्रम। **पर्या.** व्यायाम।

कसाई 1. *पुं [अर.<*कस्साब] जानवरों को काटने वाला, गोश्त का व्यापारी। 2. *वि.(अर.)* निर्दय, कठोर। 3. *स्त्री.* (कसना) कसने की क्रिया; कसने का मेहनताना।

कसीदा *पुं. (फ़ा.)* 1. कपड़े पर रंगीन धागों से बेल-बूटे काढ़ना। 2. काव्य रचना का एक प्रकार जिसमें प्रख्यात व्यक्ति का गुणगान किया जाता है। **मुहा.** कसीदा पढ़ना=गुणगान करना।

कसीदाकारी *स्त्री. (फ़ा.)* 1. कपडे पर रंगीन धागों से बेलबूटे काढ़ने की कला। 2. गद्य रचना में काव्यात्मक चमत्कार लाने का प्रयत्न।

कसौटी [कसना+पट्टी] *स्त्री.(तत्.)* 1. सोने की उत्तमता की जांच के लिए प्रयुक्त एक काला पत्थर; कसौटी। toch stone 2. किसी वस्तु या व्यक्ति के खरेपन या गुणों की जाँच। परख के लिए प्रस्तुत ठोस आधार रूपी वस्तु या बात। criteria

कस्तूरी *स्त्री. (तत्.)* एक तीव्र गंधवाला पदार्थ जो एक विशिष्ट जाति के नरमृग की नाभि से प्राप्त किया जाता है और जिसका उपयोग सुगंधित द्रव्य निर्माण में होता है। **टि.** वस्तुत: यह नाभि का मैल होता है जो अत्यंत सुगंधित होता है।

कस्तूरी मृग *पुं. (तत्.)* हिमालय में पाया जाने वाला एक विशिष्ट प्रजाति का हिरन जिसकी नाभि से कस्तूरी निकाली जाती है।

कहना *स.क्रि. [तद्.<कथन]* 1. मुंह से कोई बात बोलना। 2. बतलाना। *पुं.* 1. सुझाव, परामर्श। **उदा.** 1. अध्यापक के कहने पर मैंने वाद-विवाद में भाग लिया। 2. कथन। **उदा** 1. वह अपने भाई का कहना बिल्कुल नहीं मानता। 2. कहने की बात यह है कि.....। 3. कहने को तो सभी कहते हैं पर करता कोई नहीं।

कहर *पुं. (अर.) कष्ट,* विप्त्ति, आफ़त। **मुहा.** कहर टूटना=आपत्ताग्रस्त होना। कहर ढोना-जुल्म करना, आपत्ति ग्रस्त।

कहवा *पुं. (अर.)* 1. कॉफेआ वंश का उष्णकटिबंधीय वृक्ष जिसके बीजों को भूनकर और चूर्ण बनाकर गरम पेय बनाया जाता है। 2. इस वृक्ष के बीज और उसका चूर्ण और तैयार पेय भी। coffee

कहानी [क=जल+हार=लाना] *पुं. (तद्.)* 1. जल भरकर लाने वाला सेवकवर्ग। 2. पालकी ढोने वाला वर्ग। **टि.** हिंदुओं में व्यवसाय आधारित यह एक जाति है।

कहानी *स्त्री. [तद्.<कथानिका]* 1. वास्तविक या कल्पित घटना को आधार बनाकर रची गई गद्यात्मक कृति जिसे मनोरंजन के लिए सुना

या पढ़ा जाता है। **पर्या.** कथा, किस्सा, आख्यायिका short story 2. ला.अर्थ झूठी या कपोलकल्पित बात। **उदा.** क्यों कहानियाँ सुना रहे हो कुछ काम भी कर लो।

कहानीकार *पुं.* कहानी की रचना करने वाला; कहानी का लेखक। **दे.** कहानी।

कहावत *स्त्री. (देश.)* कोई लोकप्रसिद्ध वाक्य जो किसी सत्य घटना पर आधारित हो या अनुभवसिद्ध हो। ऐसा वाक्य लक्षणा-व्यंजना के द्वारा किसी वर्तमान घटना के साथ जोड़ दिया जाता है। **जैसे**: मेरे सामने पुस्तक पड़ी है और मैं इधर-उधर ढूँढे जा रहा हूँ। ठीक ही कहा-गोद में छोरा गाँव में ढिंढोरा। **पर्या.** लोकोक्ति। **तुल.** मुहावरा। proverb, saying

कहीं *अव्य.(देश.)* 1. किसी स्थान पर। **जैसे**: मुझे कहीं जाना है। 2. यदि, अगरचे। **जैसे:** कहीं यह मर गया तो?

काँख *स्त्री. [तद्.[तक्ष]* कंधे और बाँह के जोड़ स्थल के नीचे का कटोरीनुमा गड्ढ़ा। **पर्या.** बाहुमूल armpit **कहावत-** काँख में छोरा और नगर में ढिंढोरा।

काँच *पुं. [तद्.[काँच]* 1. शीशा (बालू और रेत, खारी मिट्टी को आग में जलाने से बनता है और पारदर्शी होने के साथ ही इससे दर्पण, बोतल आदि वस्तुएँ बनती हैं।) **उदा.** आजकल मकानों के निर्माण में शीशे का प्रयोग बढ़ गया है 2. गुदा के भीतर का मार्ग; कमजोरी के कारण शौच के समय काँच बाहर निकल आती है। **मुहा.** काँच मारूँगा तो काँच निकल जाएगी।

काँजी हाउस/काँजी हद *पुं. (काइन हाउस-अं.)* सरकार की ओर से स्थापित बाड़ा जहाँ लावारिस/आवारा पशुओं को पकडक़र बंद रखा जाता है।

काँटा *पुं. [तद्.[कंटक]* 1. किसी वृक्ष, लता, झाड़ी इत्यादि का वह प्रांकुर जो नुकीला और चुभनशील होता है। **जैसे:** गुलाब का काँटा, बबूल का काँटा। 2. मछली पकड़ने की कील। कुएँ से डूबे हुए बरतन निकालने का उपकरण। तराजू, तुला। 5. पशुओं के शरीर का काँटेनुमा भाग। **जैसे:** साही के काँटे। 6. पाश्चात्य पद्धति से भोजन करते समय काम जाने वाला चम्मच के साथ का पंजेनुमा उपकरण।

कांति *स्त्री. (तत्.)* चमक, दीप्ति, दयु। 2. आभा, शोभा, सौंदर्य, छवि।

कांतिमान *वि. (तत्.)* कांति से रहित, बिना चमक वाला।

कांस्य *पुं. (तत्.)* ताँबे और जस्ते के मिश्रण से बनी धातु, कांसा। bronze *वि.(तत्.)* 1. काँसे का बना हुआ। **जैसे:** कांस्य पदक। 2. काँसे से संबंधित। कांस्य युग।

कांस्य युग *पुं. (तत्.)* वह प्रागैतिहासिक युग जो पाषाण काल के बाद और लौह युग के पूर्व का माना जाता है। इस युग में बरतन, हथियार और औजार कांसे के ही बनते थे। **पर्या.** ताम्र युग।

काँपना *अ.क्रि. (तद्. [कंपन)* भय, क्रोध या अन्य किसी कारण से भी (**जैसे:** ठंड से) शरीर का बार-बार हिलना, थरथराना, थर्राना।

काँवड़/काँवर *स्त्री. (तद्.[कार्पटिक)* एक लंबे डंडे के दोनों ओर लटकी हुई टोकरियों वालाख् तराजुनुमा साधन, जिसे कंधें पर रखकर तीर्थयात्री श्रावणमास में गंगाजल लाकर शिवलिंग पर चढ़ाते हैं। **पर्या.** बहँगी।

काँसा दे. कांस्य।

काई *स्त्री. (तद्.[कावार)* जलीय हरी वनस्पति। **पर्या. दे.** शैवाल algae **वन** ब्रायोफाइटा कुल के छोटे-छोटे अपुष्पी पादप जो नम दीवारों, पेड़ के तनों आदि पर जमकर हरे मखमल से दीखते हैं। इनमें तने और पत्तियों का विभेद तो होता है पर वास्वविक मूल नहीं होता। moss

काका *पुं. (देश.)* वि. छोटा। पिता का छोटा भाई, चाचा। (स्त्री. 'काकी)

कागज़ *पुं. (अर.)* घास, बाँस इत्यादि की लुग्दी से बना बारीक चादरनुमा पतला पन्ना जिस पर कुछ लिखा या छापा जाए अथवा लपेटने के काम आए। paper **मुहा.** कागज़ की नाव=कम समय तक चलने वाली या क्षणभगुंर बात। कागज़ काले करना=बेकार की बातें लिखते रहना।

कागज़ी *पुं.(अर.)* 1. कागज़ से संबंधित। **जैसे:** कागज़ी सबूत, कागज़ी कार्यवाही। **पुं.** कागज़ का व्यापारी। 2. कागज़ की तरह (पतले छिलके वाला) **जैसे:** कागज़ी बादाम।

कागद *पुं. ([अर./फा.-कागज़)* **दे.** कागज़। 2. पत्र letter

काज *पुं. (तद्.कार्य)* कार्य, काम, उद्देश्य।

काजल *पुं. (तद्.कज्जल)* (घी तेल से जलते) दीपक के धुएँ से पैदा हुई कालिख से बना सुरमा। **पर्या.** सुरमा।

काजी[1] *[काज+ई] वि.* काम करने वाला। **जैसे:** काम-काजी आदमी।

काज़ी[2] *पुं. (फ़ा.)* मुसलमानों के धार्मिक और नैतिक विवादों में निर्णायक प्राधिकारी। **लोको.** जब मियां-बीवी राजी तो क्या करेगा काजी।

काट-छाँट [काट+छाँट] स्त्री. *(तद्.कर्तन+छर्दन)* 1. निरूपयोगी भाग को काटकर उपयोगी भाग से अलग करना। 2. पहनने के लिए पोशाक सीने से पहले कपड़े को नाप-जोख के अनुसार सही-सही कतरना।

काटना *सं/क्रि. (तद्.[कर्तन)* 1. किसी धारदार उपकरण से दो या अधिक टुकड़े करना। 2. चबाने के लिए या कष्ट देने के लिए अगले दाँतों से टुकड़े करना या क्षति पहुँचाना। 3. लिखे हुए को रद्द करना। 4. एक रेखा के बीच से होते हुए दूसरी रेखा खींचना (जो चार कोण बनाए)। 5. कम करना। **जैसे:** मजदूरी काटना, वेतन काटना। 6. अन्य प्रयोग- दिन काटना (बिताना), रास्ता काटना (बीच में आ जाना, तय करना), जेल काटना (भोगना), कीड़े द्वारा काटना (डंक मारना), बात काटना (खंडन करना)।

काढ़ना *स्त्री. (तद्.कर्षण)* 1. अंदर से बाहर करना, वाहन निकालना। 2. अलग करना, छाँटना। 3. आवरण से बाहर करना, निकालना। 4. कपड़े इत्यादि पर बेल-बूटे बनाना। 5. सँवारना। **जैसे:** बाल काढ़ना, टीका काढ़ना। 6. अच्छी प्रकार उबालकर गाढ़ा करना, उसका स्वरस प्राप्त करना, कढाना। **जैसे:** मक्खन कढ़ाकर घी काढ़ना।

काढ़ा *पुं. (तद्.क्वाथ)* विभिन्न औषधियों को उबालकर कुछ गाढ़ा किया गया रस। **पर्या.** क्वाथ

कातना *स.क्रि. (तद्..कर्तन)* चरखे, तकली आदि पर ऊन आदि के रेशों को बटकर तागा (धागा) बनाना।

कातर *वि. (तत्.)* कातरता के भाव से ग्रस्त जीव। **उदा.** वध के लिए ले जाए जा रहे पशु की कातर दृष्टि मुझसे देखी न गई। **दे.** कातरता।

कातरता *स्त्री. (तत्.)* निराशा, भय और करूणा के मिले जुले भाव को प्रकट करने वाली व्यथा या दु:ख की अवस्था।

कातिल *वि./पुं. (अर.)* कत्ल या हत्या करने वाला, मार डालने वाला।

कादंबिनी *स्त्री. (तत्.)* आकाश में छाई हुई बादलों की पंक्ति; मेघमाला। **जैसे:** वर्षा ऋतु में नभ में कांदबिनी को देखकर मयूर नृत्य करने लगे।

कान *पुं. (तद्.कर्ण)* शरीर की वह इंद्रिय जो ध्वनि को ग्रहण कर मस्तिष्क तक पहुँचती है। **पर्या.** श्रवणेंद्रिय, श्रोत्र, श्रुति। **मुहा.** (i) कान उमेठना=किसी को गलती का दंड देना। (ii) कान देना=ध्यान देना। (iii) कान खाना=शोर करना या शिकायतें करना। (अपना) (iv) कान पकड़ना= क्षमा माँगना या भविष्य में वैसा ही कोई काम न करने का निश्चय करना। (v) कान पर जूँ न रेंगना=ध्यान न देना। (vi) कानों-कान खबर न होना=दूसरों को पता न लगने देना। (vii) कान का कच्चा होना=किसी की बात पर सहज विश्वास कर लेना।

कानन *पुं. (तत्.)* 1. उद्यान, वन, जंगल। 2. घर, आवास-स्थान।

काना *वि. (तद्.काण)* 1. जो केवल एक आँख से ही देख पाता हो यानी जिसकी दूसरी आँख किसी वजह से दृष्टिहीन हो गई हो। 2. सब्जी या फल जिसमें कीड़ा लग गया हो। **जैसे:** काना बैंगन, कानी भिंडी आदि।

कानाफूसी/कानाबाती *स्त्री. (देश.)* दो व्यक्तियों के बीच कानों में फुसफुसाकर (धीरे से) बातें करने का कृत्य।

कानी कौड़ी *स्त्री. (देश.[काण+कवटी]* न के बराबर धन। **उदा.** मेरे पल्ले में इस समय कानी कौड़ी भी नहीं है। **टि.** प्राचीन काल में धन (सिक्के) का सबसे छोटा मात्रक कौड़ी माना जाता था।

कानून *पुं. (अर.)* 1. राज्य में व्यवस्था, न्याय, शांति, सुरक्षा आदि से संबंधित नियम। **पर्या.** राजनियम, विधि। 2. इस प्रकार बनाए गए

नियमों का संकलन। **पर्या.** विधान। **मुहा.** कानून छाँटना=कुतर्कों के आधार पर बहस करना।

कानूनगो *पुं. [कानून+गो-फा.प्रत्यय]* पटवारियों के कागजों की जाँच करने वाला माल विभाग का अधिकारी।

कानूनी [कानून+ई]वि. *(अर.)* कानून से संबंधित, कानून के अनुसार। **पर्या.** विधिसम्मत।

काफिला *पुं. (अर.)* यात्रियों का समूह। **पर्या.** यात्री-दल।

काफी *वि. (अर.)* जितना आवश्यक हो उतना, पर्याप्त, कॉफी। *स्त्री. (अं.)* एक प्रसिद्‌ध पेय जो कोफेआ नामक वंश के उष्णकटिबंधीय पादप (झाड़ी) के भुने बीजों को पीसकर बने पाउडर से तैयार किया जाता है। **पर्या.** कहवा।

काबा *पुं. (अर.)* सऊदी अरब में 'मक्का' शहर का एक स्थान जहाँ सारी दुनिया से मुसलमान हज करने जाते हैं।

काबिल *वि. (अर.)* किसी कार्य को कुशलतापूर्वक पूरा करने के लिए सर्वथा योग्य, लायक।

काबिलियत *स्त्री. (अर.)* योग्यता, लायकपन।

काबू *पुं. (तु.)* 1. वश, सामर्थ्य । **उदा.** उसने घोड़े पर काबू पा लिया। 2. अधिकार, अख़्तियार, कब्जा। **उदा.** ज़मीन काबू में कर लेना।

काम[1] *पुं. (तद्.,कर्म)* कार्य, व्यापार। वह जो किया जाए। **जैसे:** घर का काम, दफ्तर का काम, कोश का काम।

काम[2] *(तत्.)* इच्छा, मनोरथ, कामना task **मुहा.** काम आना (i) लड़ाई में काम आना **जैसे:** करगिल की लड़ाई में कई जवान काम आए। (ii) उपयोगी सिद्‌ध होना। **जैसे:** जो पुस्तक आपने दी वह मेरे बहुत काम आई। **मुहा.** (i) काम निकालना- प्रयोजन सिद्‌ध होना। **जैसे:** काम निकला और तुम चलते बने। (ii) **काम पड़ना-** वास्ता पड़ना, उपयोगी होना। **जैसे:** आए दिन मेरा पुस्तकालय जाने का काम पड़ता ही रहता है।

कामकाज *पुं. (तद्.[कर्म+कार्य)* काम-धंधा, आजीविका, व्यापार आदि से संबंधित कार्य, काम-धंधा। **टि.** द्‌वित्व शब्द, कर्म और कार्य दोनों ही समानार्थी हैं। अनुरणन के कारण इन्हें साथ-साथ बोलते हैं।

कामगार [काम [सं.कर्म+गार फ़ा.प्रत्यय=करने वाला/कर्ता] काम करने वाला। **पर्या.** कार्यकर्ता, कर्मिक। **टि.** आजकल इस शब्द का प्रयोग 'मजदूर' अर्थ में अधिक हो रहा है। worker

कामचलाऊ [काम+चल+आऊ] *वि. (देश.)* काम चलाने भर का जिससे तात्कालिक काम चल जाए। **जैसे:** कामचलाऊ सरकार Caretaker Government

कामचोर [काम+चोर] *वि. (देश.)* काम से जी चुराने वाला, जो सौंपा गया काम न करना चाहे।

कामदानी *स्त्री. (देश.)* 1. रेशमी, सूती या पतले धातु के तारों और सलमे-सितारों से कपड़े पर कढाई करना। 2. इस प्रकार बने हुए बेल-बूटे।

काम-धंधा *पुं. [तद्.[कार्य+धन+धान्य]* आजीविका के लिए किया जाने वाला कोई सा कार्य। **जैसे:** व्यापार, नौकरी इत्यादि। **पर्या.** काम-काज, कारोबार।

काम-धाम दे. कामकाज।

कामधेनु *स्त्री. (तत्.)* पुराणों के अनुसार सभी कामनाओं को पूरा करने वाली गाय।

कामना *स्त्री. (तत्.)* मन की इच्छा। **पर्या.** चाह, ख्वाहिश।

कामयाब *वि. (फ़ा.)* जिसका शुरू किया गया काम सफलतापूर्वक पूरा हो गया हो। **पर्या.** सफल।

कामयाबी *स्त्री. (फ़ा.)* शुरू किए गए काम की सफलता पूर्वक पूर्ति। **पर्या.** सफलता।

कामला *पुं. (तत्.)* **दे.** पीलिया।

काय *पुं. (तत्.)* शरीर, काया, तनु, तन। **टि.** हिंदी में इस शब्द का प्रयोग समस्त पद में ही होता है। **जैसे:** क्षीणकारय (कमजोर शरीर वाला) काय चिकित्सा शारीरिक चिकित्सा

कायदा *पुं. (अर.)* 1. काम करने का व्यवस्थित ढंग और उससे संबद्‌ध नियमावली भी। विधि, नियम, व्यवस्था, कायदे से रखना, कायदे से करना, कायदे कानून का पालन करना। 2. किसी भाषा के सीखने की पहली पुस्तक। अंग्रेज़ी, उर्दू या हिंदी का कायदा।

कायम *वि. (अर.)* दृढ़तापूर्वक निश्चित स्थान पर ठहरा हुआ। स्थिर, स्थापित, निर्धारित। **उदा.** इरादे पर कायम रहना, स्कूल कायम करना, हद कायम करना, राय कायम करना।

कायर *वि. (तद्.[कातर])* जोखिम से भरे काम में हाथ डालने से डरने वाला (व्यक्ति)। **पर्या.** डरपोक, भीरू। **विलो.** साहसी, वीर।

कायल *वि. (अर.)* 1. सामने वाले के तर्कों को मान लेने वाला। 2. किसी के गुणों को या श्रेष्ठता को स्वीकार करके उसे आदर्श मान लेने वाला। **उदा.** मैं आपकी वीरता का कायल हूँ। **पर्या.** प्रशंसक।

कायांतरण [काया+अंतरण] *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ काया (शरीर)में परिवर्तन। प्राणियों में डिंभक या भ्रूण के बाद की अवस्था से लेकर वयस्क बनने तक रूप, रचना, आकार आदि के परिवर्तन का क्रम। **जैसे:** टैडपोल से वयस्क मेंढ़क और प्यूपा से वयस्क तितली बनते समय होने वाला परिवर्तन। metamosphosis

कायांतरित *वि. (तत्.)* जिसका कायांतरण हुआ हो। **दे.** कायांतरण।

कायांतरित शैल *पुं. (तत्.)* ऐसी चट्टान जो बहुत अधिक समय बीत जाने पर ताप, दाब या अन्य प्राकृतिक कारणों से रूप बदल चुकी है।

कायाकल्प [काया+कल्प] *पुं. (तत्.)* औषधि आदि सेवन कर अथवा प्लास्टिक सर्जरी करवाकर शरीर को फिर से स्वास्थय लाभ कराने या तरूणाई युक्त दिखाने की विधि। **उदा.** उसने अपना कायाकल्प करवा लिया है।

काया पलट दे. कायांतरण।

कायिक *वि. (तत्.)* [काय+इक] काया या देह संबंधी, शरीर से संबंध रखने वाला या शरीर के द्वारा किया जाने वाला या होने वाला। कायिक पाप, कायिक पुण्य।

कार *स्त्री. (अं.)* 1. तीव्रगति वाला एक लघु मोटर वाहन जो पेट्रोल, सी एन जी, डीजल आदि से चलता है तथा चार या छः लोग बैठकर यात्रा कर सकते हैं। 2. रेल में प्रयुक्त होने वाला 'कार यान' जो एक डिब्बे के रूप में होता है। car

कारक *वि.(तत्.)* शा.अर्थ करने वाला- (सामाजिक शब्दों में पश्चपद के रूम में प्रयुक्त)। **जैसे:** हानिकारक, नलकारक आदि। 1. **व्या.** संज्ञा या सर्वनाम शब्द का वाक्य के क्रियापद के साथ संबंध बतलाने वाला रूप। **जैसे:** कर्ताकारक, कर्मकारक आदि। ये छह होते हैं-कर्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादान और अधिकरण। (केस) **टि.** परंपरागत व्याकरण में संबंध कारक और संबोधन को भी कारकों के अंतर्गत गिनाया जाता है। 2. किसी परिणाम की सिद्धि में मुख्य योगदान करने वाला कारण। factor

कारगर *वि. (फा.)* तुरन्त अनुकूल एवं उत्तम प्रभाव दिखाने वाला; असर कारक। **उदा.** सरकार ने शिक्षा सुधार के कारगर उपाय किए हैं।

कारगुजारी *(भाव) स्त्री. (फ़ा.)* 1. मुस्तैदी और होशियारी से पूरा किया गया काम, कर्तव्यपालन। 2. (व्यंग्यमें) दुर्व्यवहार। **उदा.** तुम्हारी कारगुजारी अब मेरी सबझ में आई है।

कारपोरेट जगत *पुं. (अं.)* 1. उद्यमों का समूह। 2. विभिन्न उद्यमों से संबंध रखने वाले लोगों का समूह। **जैसे:** आजकल कारपोरेट जगत का विस्तार बहुत बढ़ गया है।

कारवाँ *पुं. (फ़ा.)* मूल अर्थ रेगिस्तान को पार करने वाले लोगों का समूह। सा.अर्थ यात्रियों का दल। **पर्या.** काफिला। **उदा.** कारवाँ गुजर गया गुबार देखते रहे।

कारागार [कारा+आगार=घर] पुं. *(तत्.)* स्थान जहाँ दंडित अपराधियों को बंद रखा जाए। जेल (prison, जेल)। **पर्या.** बंदीगृह, जेलखाना, कैदखाना।

कारागृह *पुं. (तत्.)* **दे.** कारागार।

कारावास [कारा+वास] *पुं. (तत्.)* 1. कारागार में निरूद्ध (बंद) रखे जाने का दंड imprisonment 2. बंदीगृह, जेल, कारागार। (प्रिजन, जेल)

कारिंदा *पुं. (फा.)* किसी के अधीन रहकर उसकी ओर से काम करने वाला। **पर्या.** गुमाश्ता worker agent

कारीगर *वि./पुं. (फ़ा.)* मुख्यत: हाथ से और गौणत: अब मशीनों की सहायता से लकड़ी, पत्थर, धातु इत्यादि से सुंदर वस्तुओं का निर्माण करने वाला दक्ष व्यक्ति। **पर्या.** शिल्पी, शिल्पकार। artisan, craftsman

कारीगरी [कारीगर+ई]स्त्री. *(फा.)* 1. कारीगर का कला-कौशल। **दें.** कारीगर।

कार्बनन *पुं. (तत्.) [अं+तत्.]* **दें.** कार्बनीभवन/करण।

कार्बनिक *वि.* [कार्बन+इक] कार्बन से युक्त। **दें.** कार्बन।

कार्बनीभवन/करण *पुं. (अं+तत्.)* 1. कार्बनिक पदार्थ से कार्बन बनने की प्रक्रिया; **जैसे:** मृत वनस्पति का कालांतर में कोयला बन जाना। Carbonization

कार्बोहाइड्रेट *पुं. (अं.)* कार्बन, हाइड्रोजन और ऑक्सीजन अणुओं से बना कार्बनिक यौगिक (CH_2O) जो ऊर्जा का प्रमुख स्त्रोत है। **टि.** इसके अपचय से कार्बन डाइ ऑक्साइड, जल और ऊर्जा प्राप्त होती है। रासायनिक दृष्टि से यह एल्डिहाइडों अथवा कीटोनों का पॉलिहाइड्रॉक्सीव्युत्पन्न यौगिक है। यह संतुलित आहार का एक प्रमुख घटक है। Carbonhydrate

कार्यकर्ता *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ कार्य करने वाला। सा.अर्थ किसी संस्था के दैनंदिन कार्य निष्पादन के लिए नियुक्त या नामित वेतनभोगी या अवैतनिक व्यक्ति जो बड़े अधिकारी के मार्गदर्शन में काम करे। worker **तु.** कर्मचारी।

कार्यकलाप *पुं. बहु. (तत्.)* किसी विषय से संबंधित अवश्य करणीय कार्यों का समूह। समस्त कार्यों की श्रृंखला।

कार्यकारिणी (समिति) *स्त्री. (तत्.)* किसी भी संस्था के निर्वाचित या नामित पदाधिकारियों का समूह जो उस संस्था के हित, संबर्धन, प्रबंधन व कल्याण के लिए नियमानुसार कार्य करे। **पर्या.** प्रबंध-समिति। executive managing committee

कार्यकारी *वि. (तत्.)* शा.अर्थ कार्य करने वाला। **प्रशा.** (व्यक्ति) जो अपने से ऊपर के रिक्त पर का अस्थायी रूप से काम चलाऊ व्यवस्था के तौर पर उत्तरदायित्व भी निभा रहा हो। एक्टिंग

कार्यक्षेत्र *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ कार्य का क्षेत्र यानी काम करने का इलाका। वह स्थान या इलाका जहाँ किसी को उसके अनुरूप कार्य करने हेतु नियुक्त किया गया हो। **उदा.** इस समय मेरा कार्यक्षेत्र जम्मू है।

कार्यनीति *स्त्री. (तत्.)* किसी कार्य, योजना या प्रक्रिया का पूर्ति के लिए अपनाया गया व्यवस्थित तरीका या प्रक्रम।

कार्यपालिका [कार्य+पालिका] *स्त्री. (तत्.)* राज्य के तीनों अंगों-कार्यपालिका, न्यायपालिका और विधायिका में से एक अंग जो प्रशासनिक व्यवस्था का संचालन करता है। ऐसा करते समय वह विधायिका द्वारा पारित अधिनियमों तथा न्यायपालिका के निर्णयों को कार्यरूप में परिणत करता है। **तु.** विधायिका, न्यायपालिका।

कार्यवाहक *वि. (तत्.)* शा.अर्थ कार्य का वहन करने वाला। **प्रशा.** किसी पदाधिकारी के अवकाश ले लेने पर या छुट्टी लेकर अन्यत्र चले जाने पर उसके स्थान पर अस्थायी रूप से काम करने के लिए नियुक्त officiating

कार्यवाही *पुं. (तत्.)* किसी बैठक, सभा-सम्मेलन आदि की कार्यसूची के अनुसार चली समस्त प्रक्रिया (विचार-विमर्श), खंडन-मंडन, निष्कर्षों आदि का लिखित रूप में प्रस्तुत ब्यौरेवार विस्तृत वर्णन। प्रेसिडिंग्स। **टि.** कार्यवाही और कार्रवाही शब्दों का पर्यायों के रूप में प्रयोग देखा गया है। पारिभाषिक दृष्टि से दोनों में भेद किया गया है। **तु.** कार्रवाई।

कार्य-विवरण [कार्य+विवरण]पुं. *(तत्.)* (किसी बैठक या सभा में हुए समस्त) कार्यों का विवरण। proceedings **पर्या.** कार्यवाही। **तु.** कार्यवृत्त।

कार्यशैली [कार्य+शैली] *स्त्री. (तत्.)* कार्य करने की शैली; काम करने का विशेष ढंग या तरीका। **उदा.** मेरी कार्यशैली उसकी कार्यशैली से पर्याप्त भिन्न है।

कार्यस्थिति [कार्य+स्थिति] *स्त्री. (तत्.)* कार्य की (पुरातन या अद्यतन) स्थिति। अब तक जो काम हो चुका हो और आगे होना शेष हो, उसकी ब्यौरेवार जानकारी।

कार्यान्वयन [कार्य+अन्वयन] *पुं. (तत्.)* किसी नियम, कानून, आदेश, निर्णय, विचार, योजना आदि को व्यवहार में लाने का कार्य।

कार्यान्वित [कार्य+अन्वित] *वि. (तत्.)* किसी नियम, कानून, आदेश, निर्णय, विचार, योजना आदि को व्यवहार में परिणत किया गया।

कार्योत्तर [कार्य+उत्तर] *वि. (तत्.)* तात्कालिक आवश्यकतानुसार किसी कार्य को कर लेने के बाद (तत्संबंधी शर्तों की पूर्ति या स्वीकृति)। **जैसे:** कार्योतर स्वीकृति ex post facto।

कार्रवाई *स्त्री. (फ़ा.)* किसी भी कार्य के निष्पादन के लिए अपनाई गई विधिवत् प्रक्रिया। **जैसे:** अनुशासनिक कार्रवाई, अदालती कार्रवाई। action

टि. कार्रवाई और कार्यवाही शब्दों का पर्यायों के रूप में प्रयोग देखा गया है। पारिभाषिक दृष्टि से दोनों में भेद किया गया है। **तु.** कार्यवाही

काल-कवलित [काल+कवलित=चबाया/निगला/खाया हुआ] *वि. (तत्.)* व्यु.अर्थ जिसे काल ने अपना ग्रास बना लिया हो। सा.अर्थ मृत।

कालकूट [काल+कूट]पुं. *(तत्.)* शा.अर्थ काल रूपी पर्वत का शिखर। ला.अर्थ भयंकर विष जिसके स्पर्शमात्र अथवा रंचमात्र सेवन से मृत्यु निश्चित हो। (पुराणानुसार समुद्र-मंथन से निकला हलाहल जिसका शिवजी ने पान कर लिया और वे नीलकंठ कहलाए)

कालक्रम *पुं. (तत्.)* घटनाओं या कार्यों आदि का उनके घटित होने के तिथि/काल/क्रम से प्रस्तुत विवरणात्मक व्यवस्था। chronology

काल-निर्धारण [काल+निर्धारण] *पुं. (तत्.)* काल का निर्धारण, ऐतिहासिक दृष्टिकोण से समय निश्चित करना। **उदा.** आचार्य रामचंद्र शुक्त ने हिंदी साहित्य का कालनिर्धारण करते हुए उसे चार खंडों (कालों) में विभाजित किया था। 1. वीरगाथाकाल 2. भक्तिकाल 3. रीतिकाल और 4. आधुनिककाल।

कालबेलिया *पुं. (देश.)* 1. एक जाति विशेष का व्यक्ति जो सर्पों को पकड़ने, उनका ज़हर निकालने अथवा सर्पदंश से पीडित व्यक्ति का उपचार करने आदि में सिद्‌ध हस्त होता है 2. एक विशेष प्रकार की राजस्थानी नृत्य शैली।

कालांश [काल+अंश] *पुं. (तत्.)* (काल का अंश) समय का एक भाग period शिक्षा हमारे विद्‌यालय में प्रतिदिन का अध्ययन-अध्यापन छह कालांशों में बँटा हुआ है।

काला बाज़ार *पुं. (तद्.+फ़ा)* 1. अवैध बाज़ार, जिसमें वस्तुएँ वैध कीमत-सीमा से अधिक कीमत पर बेची और खरीदी जाती है। 2. वस्तुओं का वह व्यापार जो निर्धारित नियमों के अनुसार न होकर चोर रास्तों या तरीकों से होता है अथवा जिसे आयकर बचाने के लिए खातों में न दिखाया जाता है। Black market

कालावधि [काल+अवधि] *स्त्री. (तत्.)* काल की अवधि। 1. किसी काम को पूरा करने के लिए नियत किया गया कालखंड या समय। time limit 2. एकाधिक घटनाओं या तरीकों के बीच की अवधि। period

कालिख *स्त्री. (तद्.)* 1. किसी वस्तु पर जमने वाला धुएँ का अथवा किसी अन्य प्रकार का काला मैल। 2. (ला. अर्थ) अति लज्जाजनक या कलंक लगने वाली बात। **मुहा.** मुँह पर कालिख पुतना या लगना=काले कारनामे/कारनामों के फलस्वरूप हुई बदनामी के कारण किसी को मुँह दिखाने लायक न रहने की स्थिति।

कालीन *1. वि. (तत्.)* किसी विशेष काल (समय) से संबंध रखने वाला। **टि.** समस्त पद में यह विशेषण परपद के रूप में प्रयुक्त होता है। **उदा.** मध्यकालीन, समकालीन। 2. *पुं. (अ.)*- ऊन, सूत आदि का बना मोटा, महँगा फर्श बिछावन जिस में रंग-बिरंगे बेल, बूटे बने रहते हैं। **पर्या.** गलीचा।

काल्पनिक [कल्पना+इक] वि. *(तत्.)* जिसकी केवल कल्पना की गई हो, जिसका कोई वास्तविक आधार न हो। **पर्या.** मनगढ़ंत emaginary

काशीवास *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ काशी में रहना, काशी (वाराणसी का प्राचीन नाम) में निवास करना। **टि.** कहीं-कहीं इस शब्द का प्रयोग लाक्षणिक अर्थ में 'मृत्यु' का सूचक ताना जाता है, क्योंकि पौराणिक मान्यता के अनुसार काशी मोक्षदायिनी नगरी मानी जाती रही है।

काश्तकार *पुं. [काश्त फ़ा. +कार तत्.] पुं. (तत्.)* 1. जीविकोपार्जन के रूप में खेती करने वाला व्यक्ति। **पर्या.** किसान, कृषक, खेतिहर। 2. वह खेतिहर जिसने ज़मीदार को लगान देकर उसकी ज़मीन पर खेती करने का अधिकार प्राप्त किया है।

काष्ठ *पुं. (तत्.)* 1. काठ, लकड़ी। 2. ईंधन।

काष्ठ-कोयला *पुं. (तत्.)* काष्ठ का कोयला। लकड़ी के जलकर बुझ जाने के बाद बचा हुआ काले रंग का ठोस अंश जो बाद में भी जलाने के काम आता है। charcoal **तु.** खनिज कोयला, पत्थर का कोयला। coal

काष्ठाश्म [काष्ठ=लकड़ी+अश्म=पत्थर] पुं *.(तत्.)* लाखों वर्ष पुरानी वह लकड़ी जो दबकर अब पत्थर सी सख्त हो गई है। **तु.** जीवाश्म।

किट्ट *पुं. (तत्.)* **दे.** rust 1 और 2

किण्वन *पुं. (तत्.)* कार्बनिक पदार्थ का किण्व फर्मेन्ट द्वारा उत्प्रेरित मंद विघटन। **जैसे:** खमीर का उठना। बीयर, वाइन स्पिरिट के उत्पादन में सूक्ष्मीजीवों **जैसे:** यीस्ट और बैक्टीरिया, द्वारा कार्बनिक पदार्थ, खासकर शर्करा का ऐथिल ऐल्कोहॉल में विघटन। fermentation

किताबी ज्ञान *पुं. [किताबी-अर.+ज्ञान-तत्.]* कोरा पुस्तकीय ज्ञान यानी जिसमें व्यवहार ज्ञान का अभाव हो।

किती *वि. (तद्.<कियत् कति)* 1. परिमाण, संख्या आदि जानने के लिए प्रश्नवाचक शब्द उदा. कितना पानी, कितने लोग? कितनी दूरी? 2. बहुत अधिक; अनेक, कई बहुत से। **उदा.** आजकल कितनी ठंड है (यानि बहुत अधिक); कितने ही लोग ऐसे है जो देर से सोकर उठते हैं (यानि अनेक, कई, बहुत से)

किबला *पुं. (अर.)* 1. मुसलमानों का पवित्र धर्म स्थान, काबा। 2. पश्चिम दिशा जिधर काबा है या जिधर मुँह करके नमाज़ अदा की जाती है। 3. पिता, पितामह आदि वय:प्राप्त पुरुषों के लिए किया जाने वाला संबोधन।

किरण *स्त्री. (तत्.)* **भौ.** 1. प्रकाश अथवा किसी अन्य प्रकार की ऊर्जा के प्रवाह का रैखिक पथ; रोशनी की लकीर। 2. एक ही रेखा में चलने वाले द्रव्य कणों का प्रवाह। **जैसे:** ऐल्फा किरणें, कैथोड़ किरणे। **पर्या.** रश्मि, अंशु ray

किरणपुंज *पुं. (तत्.)* 1. विकिरण या कणों का एकदिशीय प्रवाह। 2. प्रकाश की किरणों का समूह। beam

किरदार *पुं. (फ़ा)* अभिनय का फारसी पयार्यवाची। **दे.** अभिनय।

किरमिच *पुं. (देश.)* चिकना, मोटा कपड़ा जिससे परदे, जूते आदि बनते हैं और जिस पर तैल चित्र बनाए जाते हैं। canvas

किरात *पुं. (तत्.)* एक आदिम जाति समूह। मोटे तौर पर 'भील' के पर्यायवाची की तरह प्रयुक्त।

किराया *पुं. (अर.)* किसी संपत्ति (मकान, भूमि, वस्तु आदि) को अपने काम में लेने के लिए उसके मालिक को नियमित रूप से दी जाने वाली धनराशि। **पर्या.** भाड़ा।

किलकारी *स्त्री.* [*तत्. किलकिला*] 1. शिशुओं के मुख से निकलने वाली (वाणी के अभाव में) अति हर्ष की अवस्था में ऊँची, अस्पष्ट और मधुर ध्वनि।

किला *पुं. (अर.)* राजाओं व उनके सैनिकों के रहने के लिए प्रयुक्त अत्यंत सुरक्षित एवं विशाल भवन। इसके चारों ओर प्राय: सुरक्षा के लिए खाई भी खुदवा ली जाती थी। **जैसे:** लाल किला। **पर्या.** गढ़, कोट। **तु.** दुर्ग = पहुँचने के लिए दुर्गम किला।

किलेबंदी *स्त्री. (फ़ा.)* 1. किसी स्थान को चहारदीवारी, खाइंर आदि से सुरक्षित करना। 2. लड़ाई के लिए किले या मोरचे बनाने का काम। 3. किसी प्रकार के आक्रमण से अपनी रक्षा करने की योजना।

किलो जूल एक हजार जूल किलो जूल कहलाता है। **जूल** *पुं. (अं.)* ब्रिटेन के भौतिकीविद् (1818-89) जे पी जूल Joule के नाम पर आधारित कार्य या ऊर्जा का एकआई (SI) मात्रक। Joule

किलोग्राम *वि. (अं.)* मीट्रिक प्रणाली के अनुसार वजन नापने की एक तोल जो एक हजार ग्राम के बराबर होती है। **वि.** 1 अप्रैल 1957 तक भारत में तोल का पैमाना 'सेर' था। जो वर्तमान में 933 ग्राम के बराबर होता था। 40 सेर का एक मन हुआ करता था।

किलोमीटर *वि. (अं.)* वर्तमान मीट्रिक प्रणाली के अनुसार लम्बाई या दूरी की एक माप जो एक हजार मीटर के बराबर होती है। **जैसे:** दिल्ली से लखनऊ लगभग 500 कि.मीटर है। **वि.** पहले भारत में दूरी मील में मापी जाती थी जो 1.6 कि.मी. के बराबर होती थी। Kilometre

किलोल/कलोल *पुं. [तद्.<कल्लोल]* प्रसन्न होने या प्रसन्नता व्यक्त करने की क्रिया।

किल्लत *स्त्री. (अर.)* सार्वजनिक उपयोग की वस्तु का अभाव या कमी। **पर्या.** न्यूनता, कमी, तंगी, कठिनता। **उदा.** गरमी में पानी की किल्लत हो जाती है।

किशोरावस्था *[किशोर+अवस्था] स्त्री. (तत्.)* मनुष्य के जीवनकाल में बालपन और प्रौढ़ावस्था के बीच की वह अवस्था जब शरीर में परिवर्तन के फलस्वरूप जनन परिपक्वता आ जाती है। सामान्यत: 13 वर्ष की आयु से 18-19 वर्ष तक की अवस्था किशोरावस्था मानी जाती है। adolescence, teen age

किसान *पुं. (तद्.)* खेती को व्यवसाय के रूप में अपनाने वाला व्यक्ति। **पर्या.** कृषक, खेतीहर farmer

किस्म *स्त्री. (अर.)* एक ही तरह की वस्तुओं का वर्ग, जो दूसरों से भिन्न हो। 1. प्रकार, भाँति, तरह kind **उदा.** किस्म-किस्म के लोग। 2. ढंग, तर्ज variety **उदा.** किस्म-किस्म की बातें।

किस्मत *स्त्री. (अर.)* भाग्य, प्रारब्ध, तकदीर, नसीब। **जैसे:** किस्मत का धनी, किस्मत का फेर; किस्मत वाला=भाग्यवान।

किस्सा *पुं. (अर.)* 1. कहानी, कथा, आख्यान 2. वृत्तांत, हाल, समाचार।

कीकर *पुं. [तद्.<किकरा]* वह काँटेदार वृक्ष जो देशी बबूल की प्रजाति का माना जाता है किंतु उसमें बबूल की तरह गोंद नहीं निकलती तथा आकृति में भी कुछ भिन्नता होती है।

कीचड़ *पुं.* [*तद्.)* (<कीच+ड़ (लघुतासूचक प्रत्यय)] पानी में गंदगी मिल जाने से बनने वाला गाढ़ा मल द्रव्य। **पर्या.** पंक, कीच mud **मुहा.** कीचड़ में फँसना (ऐसी परेशानी में पड़ जाना जिससे पार पाना अति कठिन हो) मुहा. कीचड़ उछालना- दोषारोपण करना।

कीट *पुं. (तत्.)* सा.अर्थ रेंगने वाला छोटा जीव, कीड़ा। **उदा.** रेशम का कीड़ा। **मुहा.** कीड़े पड़ना। **जीव.** संधिपाद प्राणियों का वर्ग जिनके शरीर में तीन खंड होते हैं-शीर्ष, वक्ष और उदर। insect

कीटनाशक/कीटनाशी *वि./पुं. (तत्.)* (रासायनिक पदार्थ या पदार्थों का मिश्रण) जिसका उपयोग हानिकारक कीटों को रोकने या नष्ट करने के लिए किया जाता है। insecticide

कीर्तन *पुं. (तत्.)* गुणों का बार-बार और लगातार गान करना (विशेष रूप से ईश्वर या देवता के गुणों का गान करना)।

कीर्ति *स्त्री. (तत्.)* व्यक्ति के सद्गुणों के बारे में समाज में प्रचलित प्रसिद्धि। glory reputed **वि.** अपकीर्ति, निंदा।

कीर्तिगान *पुं. (तत्.)* व्यक्ति के सद् गुणों का लंबे समय तक बखान करना। glorification

कीर्तिमान *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ कीर्ति (प्रतिष्ठा) का मानक। आधु. अर्थ किसी भी क्षेत्र में अब तक की सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि। **उदा.** क्रिकेट में तेंडुलकर ने कई कीर्तिमान स्थापित किए हैं। record

कीश *पुं. (तत्.)* वानर **जैसे:** कीशपति सुग्रीव।

कुँजड़ा *पुं. [सं. कुंज+ड़ा (प्रत्य.]* 1. तरकारी बेचने वाला। 2. एक जाति जो तरकारी बोने और बेचने का काम करती है। (स्त्री. कुँजडिन या कुँजड़ी।)

कुंड *पुं. (बरतन) (तत्.)* 1. धार्मिक प्रयोजन से निर्मित सीढ़ीदार जलाशय। 2. निर्मित पात्र जिसमें समिधा डालकर हवन किया जाता है।

कुंडल *पुं. (तत्.)* 1. कान में पहना जाने वाला गोल आकृति का आभूषण। ear ring 2. लपेटे गए तार या रस्सी का बना गोलाकृति वाला छल्ला। coil 3. बदली के पार दिखाई पड़ने वाला सूर्य या चंद्र के चारों ओर का मंडल। helo

कुआँ *पुं. (तद्.)* पानी निकालने के लिए जमीन में खोदा गया गहरा व गोल गड्ढा। **पर्या.** कूप। **तु.** बावड़ी। **मुहा.** (i) कुआँ खोदना- हानि पहुँचाना (ii) कुएँ में गिरना- आफत में पड़ना कुएँ में भाँग पड़ी होना सबकी बुद्धि भ्रमित हो जाना यानी भाँग मिले पानी को पीने से बुद्धि चकरा जाती है।

कुकर *पुं. (अंग्रे.)* खाना पकाने का बर्तन। शा.अर्थ 'कुक' यानी पकाने वाला। रसोई में प्रयुक्त खाना पकाने का वह ढक्कन मय पात्र जिसमें सब्जी, दाल, चावल आदि भाप की सहायता से कम समय में पकाया जा सकते हैं। **पर्या.** प्रेशर कुकर।

कुकर्म *पुं. [कु + कर्म) (तत्.]* 1. मानव द्वारा किया जाने वाला वह कार्य जो सामाजिक दृष्टि से अमर्यादित तथा छिपकर या विश्वासघात कर किया जाए। बुरा काम। **पर्या.** दुष्कर्म, जघन्य कर्म। **जैसे**: गरीब को सताना, किसी का धन छीनना, बच्चों का अपहरण, हिंसा आदि कुकर्म अपराध की श्रेणी आते में हैं। 2. पाप कर्म।

कुकर्मी *वि.* बुरा काम करने वाला।

कुकुरमुत्ता *पुं. (तद्.)* शा.अर्थ कूकर (कुत्ते) के पेशाब से उत्पन्न पौधा। **पर्या.** छत्रक। **वन.** कवक फंगस विशेष का फलन काय। इसमें तना और छातेनुमा टोपी-ये दो अंग होते हैं। इसकी कुछ जातियाँ भोज्य होती हैं और कुछ विषैली। भोज्य छत्रक अब व्यावसायिक रूप में खूब उगाया जाने लगा है। मशरूम

कुकृत्य *[कु+कृत्य) पुं. (तत्.]* 1. वह काम जो सामाजिक दृष्टि से बुरा माना जाता हो। **पर्या.** कुकर्म। 2. पापकर्म, कानून की दृष्टि से वर्जित कर्म। **जैसे:** निर्दोष की हिंसा, विश्वासघात आदि।

कुक्कुट *पुं. (तत्.)* मुख्यत: अंडे और मांस प्राप्त करने के लिए पाला जाने वाला मादा और नर पक्षी। **पर्या.** मुर्गी, मुर्गा फाउल।

कुख्यात *वि. (तत्.)* (व्यक्ति) जो किसी विशेष दोष या दुराचरण के कारण समाज में प्रसिद्धि प्राप्त कर लें। **पर्या.** बदनाम। **विलो.** ख्यात (सुख्यात)।

कुख्याति *स्त्री.* बुरे कार्य के लिए प्राप्त प्रसिद्धि। **दे.** कुख्यात।

कुचलना *स.क्रि. (तद्.<कूर्च)* किसी वस्तु को किसी भारी चीज से इस तरह दबाना कि वह लगभग पूरी तरह विकृत या नष्ट हो जाए। **जैसे:** किसी को कार से कुचल देना; विद्रोह को कुचल देना।

कुचाल *स्त्री.* [कु+चाल<चल] 1. निदंनीय आचरण, शरारतें। **उदा.** अपने भाई की कुचालों से वह बहुत दु:खी रहता है। 2. छल-कपटपूर्ण व्यवहा।र **उदा.** अपने विरोधियों की कुचालों से सदा सावधान रहना।

कुचालक[1] *(कु+चालक) वि. (तत्.)* ऊष्मा, विद्युत आदि के संचलन में कम क्षमता रखने वाला (पदार्थ)। **जैसे:** लकड़ी सुचालक।

कुचालक[2] [कु+चालक] *वि. (तत्.)* **भौ.** उष्मा और विद्‌युत के संचरण को रोकने वाला (पदार्थ) **उदा.** लोहे की तुलना में लकड़ी कुचालक होती है। **विलो.** सुचालक।

'कुचीपुड़ी' *स्त्री. (देश.)* भारतीय शास्त्रीय नृत्य की एक शैली जिसका उत्स आंध्रप्रदेश के (कुचपुड़ी ग्राम में हुआ था। इसी के कारण इसे 'कुचीपुड़ी' कहा जाता है।) **तु.** की. भरतनाट्यम, कथकली, ओडिसी, मणिपुरी, कत्थक।

कुटिया *स्त्री. (तत्.)* घास फूस या बाँस से बना छोटा आवास जिसमें प्राय: न्यूनतम सुविधाएँ उपलब्ध होती हैं तथा ग्राम या नगर से बाहर बनाया जाता है। **पर्या.** झोंपड़ी, कुटी।

कुटीर उद्‌योग *पुं. (तत्.)* वह उद्‌योग या धंधे जो अपने घर में बैठकर ही किया जा सकता है जिसके लिए बड़े यंत्रों की आवश्यकता न हो। **जैसे:** अगरबत्ती, दियासिलाई, साबुन, खिलौने आदि का निर्माण कार्य।

कुटुंबी *वि. (तत्.)* कुटुंब से संबंध रखने वाला; कुटुंब का। निकट के रिश्तेदार, संबंधी। **दे.** कुटुंब।

कुटुंबी जन *पुं. बहु. (तत्.)* समान पूर्वज की वंशावली से संबंधित एकाधिक पीढ़ी के सदस्यों का वह समूह जो सामान्यत: एक साथ या पास-पास रहते आए हों। (फिर भले ही वे कारण विशेष से भिन्न-भिन्न स्थानों पर ही क्यों न रहते हों)। **पर्या.** परिवार, कुनबा।

कुटुंबीय *वि. [कुटुंब+ईय] (तत्.)* जो कुटुंब से संबंधित हो। कुटुंब का। **जैसे:** उनकी यह कुटुंबकीय प्रथा है। *पुं.* कुटुंब के लोग या सदस्य। **जैसे:** आज सारे कुटुंबीय इकट्ठा होंगे।

कुठार *पुं. (तत्.)* मुख्य रूप से लकड़ी काटने और विशेष रूप से शत्रु का सिर छेदन करने के लिए प्रयुक्त औज़ार। **पर्या.** कुल्हाड़ा, परशु, फरसा।

कुठाहर *पुं. (देश.)* शा.अ. वह स्थान जहाँ जीवन को भय हो। सा.अर्थ 1. दुष्टों के मध्य रहने का स्थान, बुरा स्थान। **जैसे:** कहु लंकेश सहित परिवारा। कुशल कुठाहरेवास तुम्हारा पर्या. कुठॉव-कुठौर।

कुठौर *पुं. [तद्.<कुस्थान]* 1. न रहने योग्य अर्थात् बुरा स्थान। 2. अनवसर, बेमौका। 3. मर्म स्थल।

कुढ़ना *अ.क्रि. (देश.)* 1. किसी की उन्नति होते देखकर और उससे अपनी स्थिति की तुलना करते हुए परेशा होना 2. ईर्ष्यावश मन ही मन में जलना या दु:खी होना 3. कष्ट या विपत्ति में मन ही मन होने वाला दुख।

कुतरना *स.क्रि. [<सं.कर्त्तन]* 1. दाँतों से किसी चीज़ को लगातार इस तरह काटते रहना कि उसके बारीक-बारीक टुकड़े हों जाएं। **उदा.** चूहे ने वस्त्र को कुतर-कुतर कर खराब कर दिया। ला.अर्थ. बीच में से कुछ अंग अपने लिए काट

लेना **जैसे:** मेरे दो हजार रुपए में से प्रकाशक ने दौ सौ रुपए कुतर लिए।

कुतुबनुमा [कुतुब+नुमा] *पुं. (फा.)* दिशा को सूचित करने वाला यंत्र जिसकी चुंबकीय सुई उत्तर दिशा की ओर ही रहती है। **पर्या.** दिक्सूचक/दिग्दर्शक यंत्र compass **वि.** इस यन्त्र की चुम्बकीय सुई का एक सिरा सदा उत्तर दिशा की ओर रहता है।

कुतूहल *पुं. (तत्.)* किसी रहस्यमयी या अद्भुत वस्तु या बात को जानने की न दबाई जा सकने वाली इच्छा। **पर्या.** आश्चर्य, अचम्भा, कौतुक

कुदरत *स्त्री. (अर.)* (i) वह मूल शक्ति जिसने इस पांच भौतिक जगत् की रचना की, (ii) ईश्वर की शक्ति। **पर्या.** प्रकृति।

कुदरती *वि. (अर.)* कुदरत संबंधी। **पर्या.** सहज, स्वाभाविक, प्राकृतिक। **विलो.** कृत्रिम।

कुदाल[1] *पुं. (तत्.) (स्त्री. कुदाली)* मिट्टी खोदने के काम आने वाला लोहे का बना औज़ार जिसका अग्रभाग नुकीला होता है।

कुदाल[2]**/कुदाली** *स्त्री.* ठोस मिट्टी या पथरीली ज़मीन को भुरभुरा करने, खोदने या खरपतवार निकालने का लोहे के मोटे सरिए से बना एक और तीखा और सरल औजार। दूसरी ओर थोड़ा चपटा उपकरण जिसके बीच में लकड़ी का हत्था लगा होता है। hoe **तु.** फावड़ा।

कुनबा *पुं.* [*तद्. < कुटुंब*] एक ही वंश परंपरा वाले समसामयिक परिवार के लोग। **पर्या.** कुटुंब, परिवार।

कुपित *वि. (तत्.)* जो किसी कारण से क्रुद्ध हो गया हो।

कुपोषण [कु+पोषण] *पुं. (तत्.)* (i) अपर्याप्त या असंतुलित पोषण जो शारीरिक वृद्धि को कुंठित कर देता है; (ii) शरीर की पुष्टि करने वाले हितकारी तत्वों का भोजन के माध्यम से शरीर में पर्याप्त मात्रा में न पहुँचना। malnutrition

कुबड़ा वि./पुं. व्यक्ति जिसकी कूबड़ निकली हुई हो। **दे.** कूबड़।

कुमक/कुमुक *स्त्री. (तत्.)* सहायता; सैनिक सहायता, सहायता के लिए भेजी गई अतिरिक्त सैनिक टुकड़ी।

कुमारामात्य [कुमार+अमात्य] *पुं. (तत्.)* प्राचीन काल में राज्य में एक महत्त्वपूर्ण मंत्री का पद जो दंडनायक के अधीन होता था। प्राय: राजपरिवार के लोग रखे जाते थे। **जैसे:** कवि हरिषेण महारंडनायक के साथ-साथ कुमारामात्य भी थे।

कुम्हारी *स्त्री. (देश.)* कुम्हार का धंधा; मिट्टी के बरतन बनाने का काम।

कुरमुरा *वि. [अनु.]* (खाद्य पदार्थ) जिसे चबा कर खाते समय 'कुर-मुर' जैसी ध्वनि निकलती है।

कुरूप *वि. (तत्.)* जो देखने में सुंदर न हो; बेडौल, बदसूरत।

कुरूपता *स्त्री. (तत्.)* सुंदरता का अभाव, बदसूरती। बेडौलपन।

कुर्बानी *स्त्री. (अर.)* मूल अर्थ किसी महान् उद्देश्य की पूर्ति के लिए किया जाने वाला त्याग, विशेषत: प्राणों का त्याग। **पर्या.** बलिदान, शहादत। सामान्य अर्थ (देवी देवता को प्रसन्न करने हेतु) की गई पशु-हत्या (**जैसे:** बकरे या भैंसे का सर कलम कर देने का कृत्य) या यदा-कदा नर हत्या भी।

कुर्सी/कुरसी *स्त्री. (अर.)* 1. एक प्रकार की ऊँची चौकी जिसमें पीठ के सहारे के लिए तख्ता आदि लगा हो। chair 2. **ला.** पद **उदा.** सभी कुरसी को सलाम करते हैं। 3. वह चबूतरे जैसा भू भाग जिस पर कोई इमारत बनी हो।

कुल नायक *पुं. (तत्.)* वह व्यक्ति जो अपने कुल का मुखिया हो।

कुल *पुं. (तत्.)* **समा.** एक ही मूल पूर्वज से पीढ़ी-दर-पीढ़ी बढ़ता चला आया समरक्त व्यक्तियों का समूह। 1. वंश, खानदान। 2. **जीव.** जीव वर्गीकरण के इकाई जिसका स्थान गण के नीचे और वंश jeans के ऊपर आता है। **जैसे**: मानव का कुल hominidae **विशे.** सारा, समस्त। **उदा.** कुल आय, कुल योग।

कुलबुलाना *अ.क्रि (अनु. कुलबुल)* 1. छोटे-छोटे जीवों, कीड़ों, मछलियों आदि का झुंड में मिलकर हिलना-डोलना या इधर-उधर रेंगना। 2. शरीर को बार-बार हिलाते-डुलाते हुए मन की बेचैनी प्रकट करना।

कुलाँच *स्त्री.* **तु.** लंबी कूद। **दे.** कुलाँचना।

कुलाँचना *अ.क्रि.* छलाँगे मार-मार कर हिरन की दौड़ने की क्रिया। अगले दोनों पैर एक साथ उठाकर लंबी कूद लेते हुए लगातार भागते रहने की क्रिया। **जैसे**: हिरण का कुलाँचे भरना।

कुलाहल दे. कोलाहल

कुली *पुं. (तु.)* प्राय: रेलवे स्टेशनों, बस अड्डों आदि पर यात्रियों/मुसाफिरों का असबाब ढोने वाला मज़दूर।

कुलीन *वि. (तत्.)* व्यु.अर्थ कुल में उत्पन्न; कुल से संबंधित। सा.अर्थ श्रेष्ठ कुल (खानदान) से संबंधित या उत्पन्न। noble **पर्या.** अभिजातवंशीय, अभिजात्य।

कुल्हड़ *पुं. [तद्.<कुल्हर]* मिट्टी का बना और पका लोहे प्याले नुमा छोटा पात्र जिससे जल, भट्ठा, चाय आदि पिए जाते हैं।

कुल्हाड़ा *पुं. [तद्.<कुठार]* लोहे का बना तीखे फाल वाला और हत्था लगा भारी औज़ार जिससे पेड़, लकड़ी आदि काटे जाते हैं। axe

कुल्हाड़ी *स्त्री. (दे.<कुल्हाड़ा)* पेड़ काटने और लकड़ी चीरने के काम आने वाला वह लोहे का औज़ार जो कुल्हाड़ की तुलना में छोटा होता है।

कुशल *वि. (तत्.)* सौंपे गए कार्य को पूरी सावधानी और अपेक्षित योग्यता से संपन्न करने वाला। 1. दक्ष, प्रवीण, चतुर। sklful efficient 2. व्यवहार में चतुर। मंगल, कल्याण, खैरियत (प्राय: कुशल-मंगल साथ-साथ बोला जाता है)।

कुशलक्षेम *पुं. (तत्.)* सुखी अथवा स्वस्थ होने रहने का भाव। **पर्या.** खैरियत, राजी-खुशी। **जैसे**: कुशल क्षेम पूछना= किसी के भले-चंगे होने के बारे में जानकारी प्राप्त करना।

कुशलता *स्त्री. (तत्.)* 1. दक्षता 2. कल्याण। **दे.** कुशल।

कुशाग्र [कुश + अग्र] वि. (तत्.) मूल अर्थ कुश की नोक जैसा तीक्ष्ण, तेज। **उदा.** कुशाग्र बुद्धि = तीक्ष्ण (पैनी) बुद्धि वाला।

कुशाग्र-बुद्धि *वि. (तत्.)* कुश की नोक जैसी तेज़ या कहें पैनी बृद्धि **पर्या.** तीव्रबृद्धि तीक्ष्णमति।

कुहरा *पुं. (तद्.<कूहा)* भूपृष्ठ पर संघनित हवा जिसमें जल या तुषार की बूँदें बिखरी रहती हैं और जिनकी वजह से वह अपारदर्शी हो जाती है। fog

कुहासा *पुं. (देश.)* 1. हवा में मिले हुए वे ओस के कण/जलकण जो ठंड से जम कर वातावरण में फैल जाते हैं और पारदर्शिता को कम कर देते हैं। **पर्या.** कुहरा/कोहरा।

कूँची/कूची *स्त्री. [तद्.<कूर्चिका]* 1. छोटा बुरुश (तूलिका) जिससे रेखाचित्र में रंग भरा जाता है या लकड़ी पर रंग-रोगन चढ़ाया जाता है। 2. दीवारों पर चूना पोतने या रंग चढ़ाने का बुरुश। 3. ताला खोलने या बंद करने का उपकरण। **पर्या.** कुंजी की।

कूच *पुं. (तु.)* 1. कहीं से यात्रा आरंभ करना। **पर्या.** प्रस्थान, खानजी। epacture 2. ला.प्रयोग मृत्यु। संसार से कूच कर जाना। सेना की रवानगी। march

कूदना *अ.क्रि. [तद्.<कूर्दन]* 1. किसी आधार से उछलकर पुन: उसी आधार पर आ जाना। **उदा.** बच्चे चारपाई पर उछल रहे हैं। 2. किसी ऊँचे स्थान से जानबूझकर नीचे की ओर गिरना। **उदा.** वह छत से नीचे कूद गया। **मुहा.** किसी के बल पर कूदना= किसी बड़े व्यक्ति के सहारे से बड़ी-बड़ी बातें करना। 3. उछल-कूद = व्यर्थ की दौड़भाग। **तुल.** उछलना = पंजे के बल पर अपने स्थान पर ही कूदना। लाँघना, फाँदना = उछल कर किसी बाधा को पार करना।

कूपकी खनन *पुं. (तत्.)* 1. अधिक गहराई में स्थित खनिज निक्षेपों तक पहुँचने के लिए बनाए गए गहरे कुएँ नुमा गड्ढे।

कूबड़ *पुं. [तत्.<कूबर]* ऊँट और आदमी। 1. मुख्यत: ऊँट और गौणत: अन्य पशुओं की पीठ

का सामान्य रूप से उभरा हिस्सा। पीठ की हड्डी का इस प्रकार उभार होना जिससे वह टेढ़ी प्रतीत होती है। 2. मनुष्य की पीठ का अपसामान्य रूप से उभरा हिस्सा दिखाई देना जो रोग का लक्षण माना जाता है।

कूलर *पुं. (अं.)* शा.अ. ठंडा करने वाला। सा.अ. विद्युत चालित वह विशेष उपकरण जिसके अंदर पानी भरा जाता है तथा चालू करने पर उसके अंदर स्थित पंखुडियाँ ठंडी तेज हवा बाहर फेंकती हैं। गर्मी के मौसम में इसका प्रयोग किया जाता है। **विलो.** हीटर। **पर्या.** शीतल। Cooler

कृंतक दंत *पुं. बहु.* शा.अर्थ कुतरने वाले दाँत। **प्राणि.** स्तनधारी प्राणियों के मुँह में सामने वाले छेनी जैसे दाँत जो भोजन को पकड़ने, काटने और कुतरने के काम आते हैं। मनुष्य में सामने के ऊपर-नीचे चार-दाँत कृंतक दंत कहलाते हैं। incisor teeth

कृंतक *वि. (तत्.)* शा.अर्थ कुतरने वाला। *पुं.* स्तनपोषियों का गण जिसके सदस्यों में कुतरने की क्षमता अधिक होती है। **जैसे:** चूहे, गिलहरी, गिनीपिग। rodent

कृतघ्न *वि. (तत्.)* (व्यक्ति) जो अपने हित में दूसरों द्वारा किए गए कार्यों का उपकार न माने; अकृतज्ञ, एहसानफरोमश। **विलो.** 'कृतज्ञ'।

कृतघ्नता *स्त्री. (तत्.)* अपने हित में दूसरों द्वारा किए गए कार्यों का उपकार न मानना।

कृतज्ञ *वि. (तत्.)* (व्यक्ति) जो अपने हित में दूसरों द्वारा किए गए कार्यों का उपकार माने; एहसानमंद। **विलो.** कृतघ्न।

कृतज्ञता *स्त्री. (तत्.)* कृतज्ञ होने का भाव। **दे.** कृतज्ञ।

कृतांत *वि. [कृत + अंत) (तत्.)* 1. जो है, उसे समाप्त करने वाला। 2. पूरी तरह अंत करने वाला। *पुं.* प्राणों का अंत करने वाला यमराज। **उदा.** आवत देखि कृतांत समाना। (तुलसी. मानस)

कृति *स्त्री. (तत्.)* 1. किया हुआ काम। 2. कोई रचना जैसे, काव्य, चित्र, मूर्ति आदि। **उदा.** (i) कामायनी जयशंकर 'प्रसाद' की कृति है। (ii) यह कलाकृति बहुत सुन्दर है।

कृतिकार *पुं. (तत्.)* रचना करने वाला व्यक्ति **पर्या.** लेखक, रचनाकार। कामायनी के कृतिकार जयशंकर 'प्रसाद' हैं।

कृत्य *पुं. (तत्.)* किया जाने वाला काम, करने योग्य काम। **जैसे:** दैनिक कृत्य।

कृत्रिम *वि. (तत्.)* जो प्राकृतिक रूप से निर्मित न होकर मोटे-तौर पर नकल करके बनाया गया हो। **पर्या.** बनावटी, नकली। **विलो.** प्राकृतिक artificial

कृमिकोष *पुं. (तत्.)* रेशम के कीट के लार्वा द्वारा बुना गया रेशम के तंतुओं का अंडाकार खोलनुमा गुच्छा, जो मूलत: अंदर स्थित प्यूपा की सुरक्षा के लिए बनाया जाता है। रेशम प्राप्त करने के लिए इन्हीं कृमिकोषों का उपयोग किया जाता है। cocoon

कृषक *पुं. (तत्.)* हल जोत कर खेती करने वाला; किसान।

कृषि *स्त्री. (तत्.)* सीमित अर्थ. ज़मीन में जुताई, बुआई (खाद-बीज डालकर) और सिंचाई करके फसल पैदा करने का काम। **पर्या.** खेती। विस्तृत अर्थ स्थलीय संसाधनों का इष्टतम उपयोग करके खाद्य पदार्थ (फसल, दूध, माँस), रेशा (कपास, सूत, रेशम), ईंधन (जंगल की लकड़ी), मत्स्य पालन, अंगूरों की खेती तथा वाणिज्यिक उपयोग के लिए सब्जियाँ, फल-फूल आदि उगाने से संबंधित मानवीय गतिविधि। **पर्या.** खेती।

कृषि पद्धतियाँ [कृषि+पद्धति](तत्.) खेती करने के तरीके।

कृषियंत्र *पुं.बहु.* खेती-बाड़ी में काम आने वाले छोटे-छोटे बड़े यंत्र (**जैसे:** हल, गाड़ी, दराँती, फावड़ा आदि)। पर्या. खेती के औज़ार

कृष्ण पक्ष *पुं. (तत्.)* **खगो.** भारतीय चंद्र मास के अनुसार पूर्णिमा के बाद से अमावस्या तक के पंद्रह दिनों का वह समूह जिसमें सूर्यास्त के बाद चंद्रमा की कलाएँ क्रमश: समयांतर से घटती जाती हैं और अमावस्या को चंद्र दर्शन बिल्कुल नहीं होता।

केंचुआ *पुं.(तद्.)* 1. मिट्टी खाने वाला और मिट्टी में ही घर बनाने वाला कीट। 2. आँतों में पलने वाला और मल के साथ निकलने वाला कृमि।

केंद्र *पुं. (तत्.)* 1. किसी वृत्त के अंदर का वह बिंदु जहाँ से वृत्त के प्रत्येक बिंदु की दूरी एक समान हो। 2. वह स्थान (भले ही वह भौगोलिक दृष्टि से केंद्र में न हो, पर सत्ता की दृष्टि से) जहाँ से दूर-दूर तक फैले हुए कार्यों का संचालन किया जाता है। center

केंद्रक *पुं. (तत्.)* 1. (ज्या.) किसी ज्यामितीय आकृति में वह बिंदु जिसके निर्देशांक आकृति के सकल निर्देशांकों के माध्यमान होते हैं। centroud *(जीव.)* कोशिका का लगभग गोलाकार और झिल्ली से घिरा घटक जो कोशिका के कार्यों का नियंत्रण करता है। गुणसूत्र इसी में पाए जाते हैं nucleus

केंद्रक झिल्ली *स्त्री. [तत्.+तत्.]* केंद्रक को चारों ओर से घेरे रहने वाली सरंध्र झिल्ली जो इसे कोशिका द्रव्य से अलग करती है तथा कोशिका द्रव्य और केंद्रक के बीच पदार्थों के आवागमन का नियमन करती है। nuclear membrane

केंद्रकावरण [केंद्रक+आवरण] *पुं. (तत्.)* **दे.** केंद्रक झिल्ली।

केंद्रित *वि. (तत्.)* एक ही जगह या केंद्र में एकत्रित। 1. केंद्र में स्थित 2. एक जगह लाया हुआ। centraclised

केंद्रीय *वि. (तत्.)* 1. केंद्र से संबंधित, केंद्र का/वाला। 2. प्रमुख, सर्वोपरि **जैसे**: केंद्रीय शासन।

केक *पुं. (अं.)* मैदा, चीनी तथा अंडे के योग से बनने वाला भट्टी में सिका हुआ खाद्य पदार्थ।

केरोसिन *पुं. (अं.)* पेट्रोलियम से प्राप्त हल्का ईंधन-द्रव। **पर्या.** मिट्टी का तेल।

केश राशि *स्त्री. [केश + राशि]* सिर के बाल।

केशसज्जा *स्त्री. (तत्.)* बालों को सजाना; बालों को काटकर या बिना काटे विभिन्न रूपों में उन्हें सजाना-सँवारना, जूड़ा इत्यादि बाँधना या उसमें विभिन्न सौंदर्य-प्रसाधन लगाकर उसमें फूल, आभूषण इत्यादि सजाना। **पर्या.** केश-विन्यास hairdo, hair dressing

केशिका *स्त्री. (तत्.)* 1. शिशओं और धमनियों को जोड़ने वाली बहुत ही बारीक तथा एक कोशिकीय वाहिका। इसके द्वारा ऊतकों में सोषण,ऑक्सीजन आदि घुले पदार्थों का आना-जाना होता है **जैसे:** रुधिर कोशिकाएँ, पित्त कोशिकाएँ। Capillary **टि.** कोशिका' और 'कोशिकाक' (cell) में अंतर बनाए रखना आवश्यक है। कोशिकाएँ बहु. केपिलरीज़ 2. छोटे रोएँ जो किसी वस्तु के ऊपर हो।

कैंकर *पुं./अं.* शा.अर्थ लातानी भाषा के Cancer से उत्पन्न शब्द जिसका अर्थ है 'केकड़ा'। 1. **वन.** पेड़-पौधों में होने कवक fungus द्वारा। वाला विनाशकारी रोग। 2. वृक्ष या पौधों के तने पर का खुला घाव। **प्राणि.** 3. जानवरों के कान में होने वाला अल्सर ulcerous रोग Canker

कैंटीन *स्त्री. (अं.)* 1. किसी फैक्ट्री (उद्योगशाला) बड़ी दुकान, कार्यालय या कॉलेज इत्यादि के अंदर बना वह स्थान या कक्ष जहाँ, वहाँ के कर्मचारियों या विद्यार्थियों को भोजन, चाय, जलपान आदि प्रदान करने की व्यवस्था होती है। **जैसे:** उन्होंने कैंटीन में जाकर चाय पी। स्कूल कैंटीन। 2. एक प्लास्टिक की बोतल जो पानी या अन्य पेय पदार्थ ले जाने के लिए सैनिकों द्वारा प्रयुक्त की जाती है।

कैंप *पुं. (अं.)* 1. सैनिकों द्वारा बनाए गए अस्थायी आवास। 2. भ्रमण, मनोरंजन, पर्वतारोहण आदि के कार्यक्रमों में बनाए जाने वाले अस्थायी आवास। **पर्या.** डेरा, खेमा, शिविर।

कैंपफायर *पुं. (अं.)* 1. कैंप के बाहर खुले में जलाई जाने वाली आग। 2. कैंप के बाहर जलाई गई आग के चारों ओर घूमते हुए या अन्य प्रकार से किए जाने वाले नृत्य, संगीत आदि मनोरंजन के कार्यक्रम।

कैटरपिलर *पुं. (अं.)* **दे.** इल्ली।

कैद *स्त्री. (अर.)* 1. न्यायपालिका द्वारा दंड के रूप में दिया गया कारावास। 2. ला.अर्थ आने-जाने आदि पर लगाई गई रोक, बंधन।

क़ैदख़ाना *पुं. [कैद-अ.+खाना फ़ा.]* 1. वह सींखचेदार कमरा जहाँ कैद की सज़ा पाने वाले अभियुक्तों को बंद रखा जाता है। कारागार, जेल। 2. ला.अर्थ वह कमरा जिसमें से बाहर निकलने की किसी को मनाही कर दी गई हो।

कैदी *पुं. (अर.)* वह सज़ायाफ्ता (कैद की सज़ा पाने वाला) मुलजिम (सिद्धदोष व्यक्ति) जिसे कारागार में बंद रखा जाता है।

कैधों, किधौं *(तद्.)* अ. 1. 'या तो', 2. अथवा 3. या।

कैमरा *पुं. (अं.)* फोटो खींचने की मशीन।

कैलिको *वि. (अं.)* 1. (ब्रिटेन) सफेद सूती कपड़ा। 2. (अमेरिका) छपाई दार सूती कपड़ा। **टि.** जब पुर्तगाली भारत आए तो वे केरल स्थित 'कालीकट' नामक स्थान से सूती कपड़ा खरीद कर ले गए। तब उसका नाम 'कैलिको' रखा गया। बाद में सभी सूती कपड़ों को 'कैलिको' कहा जाने लगा।

कैलीग्राफी *स्त्री. (अं.)* **दे.** लेखन कला।

कॉकरोच *पुं. (अं.)* डिक्टियोप्टेरा गण के कीटों का नाम। **टि.** सामान्यतया कॉकरोच पेरीप्लेनेटा अमेरिकाना को कहा जाता है जो अमेरिका से भारत में प्रवेश कर आम हो गया है। या प्राय: घरों में सीवर तथा अँधेरे स्थान में रहता है। **पर्या.** तिलचट्टा। () यथास्थान- तिलचट्टा (तिल [तेल+चट्टा=चाटने वाला) *पुं.*। **दे.** कॉकरोच।

कॉपी *स्त्री. (अं.)* 1. लिखने की कोरे कागजों की पुस्तिका, उत्तर पुस्तिका। 2. प्रतिलिपि, नकल। **जैसे:** न्यायाधीरा के निर्णय की एक कापी हमें भी चाहिए। 3. किसी पुस्तक की मूल प्रति। **जैसे**: इस पुस्तक की एक कापी उन्हें भी दें।

कॉर्निया *पुं. (अं.)* आँख के आगे का पारदर्शी परदा।

कोकून *पुं. (अं.)* 1. कुछ कीटों में प्यूपा की सुरक्षा के लिए रेशम का आवरण जो डिंभक द्वारा निकले स्राव secretion से बनता है। **पर्या.** कृतिकोश, कोया। 2. केंचुए, मकड़ी आदि में एक से अधिक अंडों की सुरक्षा के लिए थैलीनुमा कठोर आवरण। Cocoon कोकून

कोख *स्त्री. [तद्.<कुक्षि]* गर्भाशय। **मुहा.** कोख उजड़ना = संतान का मर जाना।

कोट *पुं. [<तद्. कोट्ट]* 1. कमीज़ के ऊपर पहना जाने वाला पूरी बाहों और बंद या खुले गले का वस्त्र। 2. *पुं.* नगर, खेत, बाड़ा आदि के चारों ओर खिंची दीवार। **पर्या.** गढ़, दुर्ग, पर कोटा।

कोटा *पुं. (अं.)* 1. किसी सम्पूर्ण भाग का वह अंश जो किसी के लिए निर्धारित हो। **जैसे:** राशन का कोटा। 2. राजकीय स्तर पर किसी वर्ग के लिए निश्चित किया हुआ वह प्रतिशत हिस्सा जो उसे नौकरी, सुविधा या शिक्षण संस्था में प्रवेश आदि के लिए देय हो। Quota

कोटि *स्त्री.* 1. उत्तमता अथवा श्रेष्ठता को आधार बनाकर निर्मित की गई व्यक्तियों या वस्तुओं की अनुक्रमात्मक श्रेणी या वर्ग। **पर्या.** 1. दर्जा grade **जैसे:** उत्तम कोटि, मध्यम कोटि, निम्न कोटि आदि। 2. एक करोड़ की संख्या। 3. धनुष की नोक, सिरा। 4. ज्या. समकोण त्रिभुज की एक भुजा।

कोठरी/कोठड़ी *स्त्री. [<कोठा<कोष्ठ]* ऊपर-नीचे और चारों ओर से बंद बहुत छोटा कमरा। **जैसे:** काल कोठरी।

कोण *पुं. (तत्.)* सा.अर्थ कोना (ज्या.) 1. दो सरल रेखाओं की एक-दूसरे के सापेक्ष नति। 2. किसी बिंदु से शुरू होने वाली या उससे होकर जाने वाली दो सरल रेखाओं से बनने वाली आकृति। 3. दो भिन्न दिशाओं से आकर एक बिंदु पर मिलने वाली रेखाओं या धरातलों के बीच का अंतर। angle 4. ज्यों. लग्न से पाँचवा और नवाँ 5. कोना 6. सारंगी बजाने का उपरकण।

कोदों *[तद्.<कोद्रक] पुं.* खरीफ़ की फसल का एक मोटा सॉवा जैसा अनाज।

कोमल *वि. (तत्.)* जो स्पर्श अथवा व्यवहार में नरम हो। 1. नरम, मुलायम **जैसे:** कोमल मिट्‌टी। 2. मधुर **जैसे**: कोमल हृदय। 3. अपरिपक्व, कच्चा। **जैसे**: कोमल कली।

कोरा *वि. (देश.)* जिसका उपयोग न किया गया हो, यानी। 1. वह (कपड़ा या मिट्‌टी का बरतन) जो धोया न गया हो। 2. वह (कागज़) जिस पर कुछ लिखा न गया हो। 3. जिस पर रंग न चढ़ा हो। **पर्या.** सादा। ला.अर्थ. 1. मूर्ख, अनपढ़, 2. धनहीन, दरिद्र, 3. सरल, बेदाग, 4. स्पष्ट शब्दों में अस्वीकृति। **जैसे:** कोरा जवाब। (स्त्री. कोरी)

कोरी *वि. स्त्री. (देश.)* **दे.** कोरा।

कोर्ट मार्शल *पुं. (अं.)* किसी सैनिक या सैन्य-अधिकारी द्‌वारा सैनिक-नियमों का गंभीर उल्लंघन किए जाने के आरोप की सुनवाई करने के लिए स्थापित सैनिक-न्यायालय और उसमें चलने वाली समस्त कार्रवाई।

कोलतार *पुं. [< अलकतर:-अद.]* पत्थर के कोयले को गलाकर प्राप्त किया गया काले रंग का गाढ़ा तरल पदार्थ। प्राय: मजबूती के लिए सडक़ बनाने में इसका प्रयोग होता है। लकड़ी के दरवाज़ों को कीड़े से बचाने के लिए कोलतार का लेप भी किया जाता है।

कोलाज *पुं. (अं.)* विभिन्न चपटी वस्तुएँ-यथा-फ़ोटोग्राफ़, अखबार की कतरनें, सूखी पत्तियों आदि चिपकाकर बनाई गई कलाकृति इस कलाकृति को गत्ते आदि मजबूत आधार पर बनाया जाता है।

कोलाहल *पुं. (तत्.)* बहुत से लोगों का एक साथ व्यवस्थाहीन होकर ऊँचे-ऊँचे स्वर में इस तरह बोलना कि अर्थ स्पष्ट न हो सके। **पर्या.** शोर।

कोली *पुं. (देश.)* एक हिंदू जाति जिसके सदस्य कपड़े बुनकर निर्वाह करते हैं। **पर्या.** हिंदू जुलाहा।

कोश *पुं. (तत्.)* सा.अर्थ संग्रह, भंडार; आवरण, आच्छादन। 1. संचित धनराशि या बहुमूल्य धातु रत्नों का संचित भंडार। **पर्या.** खज़ाना। **टि.** इस अर्थ में अब 'कोष' शब्द स्थिर कर दिया गया है। treasury 2. वह ग्रंथ जिसमें शब्दों के अर्थ, परिभाषा, प्रयोग आदि दिए रहते हैं। **टि.** शब्द कोश का संक्षिप्त रूप। **पर्या.** शब्द कोश dictionary 3. कोई भी ऐसा आगार जिसमें कुछ सुरक्षित रखा जाता है। **जैसे**: असिकोश (=म्यान)। 4. भारतीय दर्शन के अनुसार वे पाँच कोश जिनसे मानव शरीर की रचना होती है। अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय तथा आनंदमय।

कोशकार *वि./पुं. (तत्.)* शब्द-कोश की रचना करने वाला; वह विशेषज्ञ जो शब्दकोश का निर्माण करे या बनाए।

कोशिका *स्त्री. (तत्.)* **जीव.** शिराओं और धमनियों को जोड़ने वाली बहुत ही बारीक तथा एक कोशिक परत वाली दीवारों की वाहिका। इसके द्‌वारा ऊतकों में पोषण, ऑक्सीजन आदि घुले पदार्थों का आना-जाना होता है। Capillary **टि.** **'केशिका'** और **'कोशिका'** (Cell) में अंतर बनाए रखना आवश्यक है।

कोशिका झिल्ली *स्त्री. (तत्.)* प्राणियों की कोशिका के चारों ओर लिपटी दो परत वाली अर्धपारगम्य झिल्ली। यह अधिकांशत: वसा तथा प्रोटीन अणुओं से बनी होती है। cell membrane

कोशिका द्रव्य *पुं. (तत्.)* कोशिका झिल्ली के भीतर और केंद्रक के चारों ओर स्थित जीव द्रव्य। cytoplasm

कोशिका-भित्ता *स्त्री. (तत्.)* **वन.** पादपों तथा जीवाणुओं की कोशिकाओं का सबसे बाहरी दृढ़ सुरक्षात्मक आवरण। यह मुख्यत: सेलुलोस का बना होता है तथा पूर्णत: पारगम्य होता है। Cell wall

कोशिका विभाजन *पुं. (तत्.)* पूर्व विद्‌यमान कोशिका से नई कोशिकाएँ बनने की प्रक्रिया। Cell division

कोशित *वि./पुं. (तत्.)* **दे.** pupa।

कोषकक्ष *पुं. (तत्.)* बैंक आदि में ग्राहकों से किराया लेकर उनके धन, आभूषण, महत्वपूर्ण प्रलेख आदि बहुमूल्य वस्तुओं को सुरक्षित रखने के लिए बनवाया गया अग्निसह प्रकोष्ठों वाला विशेष कमरा। strong room

कोषागार [कोष+आगार<अगार] *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ कोष (धन-संग्रह) का घर। **प्रशा.** सार्वजनिक धन के प्रबंधन के लिए बना स्थान और कार्यालय। **पर्या.** खजाना। treasury **तु.** कोश।

कोस *(तद्.<क्रोश) पुं.* दूरी का एक प्राचीन नाप, जो दो मील या लगभग 3.2 किलोमीटर के बराबर होता है।

कोहनी *(तद्.<कफोणि) स्त्री.* बाँह के बीच के जोड़ का पीछे की ओर उभरा तिकोना-सा भाग जहाँ से आगे की ओर मोड़कर उँगलियों से कंधे का स्पर्श हो सकता है।

कोहरा दे. कुहरा।

कौटुंबिक [कुटुम्ब+इक] *वि. (तत्.)* कुटुम्ब संबंधी, कुटुंबका। पारिवारिक **जैसे**: इस विद्यालय में कौटुंबिक वातावरण देखकर मन मोद से भर जाता है।

कौड़ी *[तद्.<कपर्दी]* छोटे समुद्री जीव का लंबाकार और सँकरे मुख वाली सुरक्षा कवच। **टि.** प्राचीन काल में कौड़ी का प्रयोग आर्थिक मुद्रा के रूप में प्रचलित रहा था। **मुहा.** (i) कौड़ियों के मोल = बहुत सस्ता; अतितुच्छ (ii) कौड़ी-कौड़ी का हिसाब = पाई-पाई तक का विस्तृत विवरण (iii) दो कौड़ी का = महत्वहीन।

कौतूहल *(<कुतूहल) पुं.* किसी बात के अज्ञात तत्व को जानने की उत्कट इच्छा।

कौम *स्त्री. (अर.)* 1. जाति, विशेषकर जन्मानुसार जाति। **उदा.** तुम किस कौम के हो? मैं कायस्थ हूँ। 2. 'राष्ट्र' का पर्याय। **जैसे**: पाकिस्तान और भारत के विभाजन में 'दो कौमों' का सिद्धांत प्रमुख कारण था।

कौर *(<कवल) पुं.* 1. भोजन का इतना भर अंश जो एक बार हाथ से उठाकर मुँह में रखा जाए। **पर्या.** ग्रास, निवाला। **मुहा.** मुँह का कौर छीनना = रोटी-रोज़ी का साधन समाप्त कर देना। 2. [<कुमारी] सिख परिवारों में महिलाओं के प्रथम नाम के बाद जुड़ने वाला (स्त्री सूचक) शब्द। **जैसे:** कुलदीप कौर।

कौशल *पुं. (तत्.)* कोई कार्य बहुत अच्छी तरह और सफाई के साथ करने की कला। **पर्या.** कुशलता, दक्षता, चतुराई, निपुणता, फ़न। skill

क्रमबद्ध *वि. (तत्.)* एक क्रम में बँधा हुआ, सिलसिलेवार।

क्रमबद्धता *स्त्री. (तत्.)* एक क्रम में बँधे होने यानी सिलसिलेवार होने की स्थिति। **विलो.** क्रमभंग।

क्रमभंग (क्रम+भंग) *पुं. (तत्.)* चले आ रहे क्रम, परिपाटी, पद्धति आदि का टूटना यानी उसमें आया/आई व्यवधान/रुकावट। **विलो.** क्रमबद्धता

क्रमश: *अ. (तत्.)* 1. क्रम से, सिलसिलेवार। 2. एक-एक करके, थोड़ा-थोड़ा करके, धीरे-धीरे, थोड़े-थोड़े समय बाद इत्यादि।

क्रमिक *(क्रम+इक) वि. (तत्.)* क्रम से आया हुआ, क्रमागत, एक के बाद एक।

क्रय-विक्रय *पुं. (तत्.)* खरीदना और बेचना, बाज़ार के माध्यम से खरीदने और बेचने की क्रियाएँ।

क्रांति *स्त्री. (तत्.)* 1. वह आमूलचूल परिवर्तन या भारी उलट-फेर जो चलती आ रही स्थिति के स्वरूप को ही बदल दे। **जैसे:** राजनीतिक क्रांति (स्थापित शासन-व्यवस्था को जबरन उखाड़-फैंक कर नई शासन-व्यवस्था को लागू कर दे); सामाजिक क्रांति (स्पष्ट दिखाई पड़ने वाला सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन। **जैसे**: छुआछूत की समाप्ति); आर्थिक क्रांति (औद्योगिक क्रांति) आदि।

क्रांतिकारी *वि. (तत्.)* 1. क्रांति करने वाला 2. क्रांति से संबंधित। **दे.** क्रांति।

क्रिकेट *पुं.अं.* खेल (मूलत: इंग्लैंड से आयातित) घास के खुले मैदान में गेंद और बल्ले का खेल जो दो टीमों के (11-11) खिलाड़ियों द्वारा बारी-बारी से खेला जाता है। विरोधी दल के गेंदबाज द्वारा गेंद करने पर बल्लेबाजी करने वाले खिलाड़ी गेंद पर प्रहार कर दोनों ओर लगी गिल्लियों (22 गज की दूरी) के बीच दौड़ते हुए रन लेते हैं आजकल इस खेल के कई प्ररूप हैं। **जैसे:** test match एक दिवसीय तथा T-20 मैच।

क्रिया *स्त्री. (तत्.)* 1. किसी कार्य का होना या किया जाना। **पर्या.** कार्य। **जैसे:** शल्य क्रिया। 2. हिलना-डोलना या अन्य किसी भी प्रकार की शारीरिक चेष्टा। 3. व्याकरण शब्द का वह प्रकार जिससे किसी कार्य का होना या करना प्रकट हो। **उदा.** लड़का पुस्तक पढ़ता है में पढ़ता है। और उसका कोशीय रूप 'पढ़ना'। 3. किसी की मृत्यु के पश्चात् उसके निमित्त किए जाने वाले समस्त शास्त्रीय कर्मकांडों में से कोई-सी भी क्रिया। **जैसे:** अंत्येष्टि क्रिया।

क्रियाकलाप *पुं. बहु. (तत्.)* किसी विषय से संबंधित अवश्य करणीय क्रियाओं/कार्यों का समूह; समस्त कार्यों/क्रियाएँ की शृंखला। activities

क्रियान्वयन [*क्रिया+अन्वयन] (तत्.)* किसी नियम, कानून, आदेश, निर्णय, विचार, योजना आदि को व्यवहार में लाने का कार्य। **पर्या.** कार्यान्वयन। किसी चीज को लागू करना।

क्रियान्वित [क्रिया+अन्वित] *वि. (तत्.)* किसी नियम, कानून, आदेश, निर्णय, विचार, योजना आदि को व्यवहार में (कार्य/क्रिया रूप में) परिणत किया गया। **पर्या.** कार्यान्वित।

क्रुद्ध *वि. [तत्.<क्रोध]* क्रोध से भरा हुआ, क्रोधित। **दे.** क्रोध।

क्रूर *वि. (तत्.)* (ऐसा व्यवहार) जो दूसरे को घोर यातना पहुँचा कर सुख का अनुभव करे या कम-से-कम उसके दु:ख से दुखी न हो; निर्दयी।

क्रूरता *स्त्री. (तत्.)* किसी अन्य प्राणी को घोर यातना देकर कर या उसके साथ हिंसक व्यवहार कर खुद सुख का अनुभव करने की या कम-से-कम उसके दु:ख से दुखी न होने की भावना; निर्दयता का व्यवहार।

क्रोड/क्रोड़ *पुं.(तत्.)* 1. गोद। 2. कुछ फलों, सब्जियों और कंदों का मध्य भाग। **जैसे:** गाजर, लौकी, आलू आदि।

क्रोध *पुं. (तत्.)* मनोनुकूल कार्य न होने पर तत्काल प्रकट होने वाली अत्यधिक अप्रसन्नतासूचक तीव्र प्रतिक्रिया जो कई रूपों में प्रकट हो सकती है **जैसे:** आँखों का लाल हो जाना, शरीर का काँपना, चोट पहुँचाना, गाली-गलौज करना, आदि-आदि।

क्रोमोसोम *पुं. (अं.)* **दे.** गुणसूत्र।

क्लोन *पुं. (अं.)* **जीव.** अलैंगिक जनन से प्रत्युत्पन्न कोशिका समूह या जीव जो लक्षणों में अपने जन्मदाता से हूबहू मिलता है। **जैसे**: डौली भेड़ जैव क्लोन का पहला उदाहरण है। **टि.** इसे एक तरह से 'कलमी जीव' कहा जा सकता है।

क्लोनन *पुं. [अं.+संस्कृत प्रत्यय]* **दे.** cloning कोशिकाओं, जीनों अथवा डी.एन.ए. के खंडों से अलैंगिक जनन की प्रक्रिया या पद्धति। **टि.** यह पद्धति कलम लगाने से मिलती-जुलती है।

क्लोरीनन *पुं.[अं.+संस्कृत प्रत्यय]* **दे.** क्लोरोनीकरण। क्लोटीनीकरण क्लोरीन से संयोग करना; क्लोरीन के साथ अभिक्रिया करना। **जैसे**: पानी में क्लोरीन मिलाकर उसे पीने लायक बना देना।

क्लोरोप्लास्ट *पुं. (अं.)* **दे.** हरित लवक।

क्लोरोफिल *पुं. (अं.)* **दे.** पर्णरहित।

क्वाँर/क्वार *[< कुमार] पुं.* आश्विन मास के लिए प्रयुक्त एक ग्राम्य प्रयोग।

क्ष

क्षत *वि. (तत्.)* जिसे चोट या हानि पहुँची हो, चोटिल। 2. जो लड़ाई में घायल हुआ हो। *पुं.* घाव woond

क्षत विक्षत ***वि. (तत्.)*** घायल, चोटिल, बुरी तरह से घायल। **उदा.** रेल दुर्घटना में कई यात्री क्षत-विक्षत हो गए; युद्ध क्षेत्र में सैनिकों के क्षत-विक्षत शरीर चारों ओर बिखरे पड़े थे।

क्षति *स्त्री. (तत्.)* 1. किसी व्यक्ति या वस्तु को जानबूझकर या अनजाने में अथवा-प्राकृतिक प्रकोप की वजह से पहुँची चोट अथवा इंजरी हानि डेमेज (लौस) आर्थिक नुकसान

क्षतिग्रस्त *वि. (तत्.)* जिसे चोट पहुँची हो, जिसकी हानि हुई हो, जिसका नुकसान हुआ हो।

क्षतिज *वि.* (*तत्.*) 1. क्षितिज के समांतर; पृथ्वी तल के समानांतर; भूमध्य रेखा के समानांतर horizantal *तु.* ऊर्ध्वाध। vertical

क्षत्रिय *पुं. (तत्.)* हिंदुओं के चार वर्णों के सोपान क्रम में से दूसरा। **टि.** क्षत्रिय वर्ग के मूल कार्यों में समाज की रक्षा करना, शासन करना, दुष्टों को दंड देना आदि था।

क्षमता *स्त्री.(तत्.)* किसी काम को करने की योग्यता और सामर्थ्य।

क्षमा *स्त्री.(तत्.)* किसी व्यक्ति द्वारा हमारे प्रति अपराध, अपमान आदि करने पर उसे दंड देने या दिलाने की, अपने में शक्ति होते हुए भी उसे दंड न दिया जाए इस तरह का मन में उपजा भाव।- **पर्या.** माफ़ी pardon

क्षमादान *पु.(तत्.)* शा.अर्थ क्षमा का दान। शा.अर्थ क्षमा किया जाना। pardon **दे.** क्षमा।

क्षमायाचना *स्त्री.(तत्.)* किसी किए हुए अपराध, अपमान, दोष, भूल आदि के लिए खेद प्रकट करते हुए क्षमा कर देने का निवेदन। apology

क्षयरोग *पु.(तत्.)* एक संचारी रोग जो जीवाणु माइक्रोबैक्टीरिया ट्यूबरकुलोससि के संक्रमण से मुख्यत फेफड़ों को प्रभावित करता है। इसके लक्षण हैं- ज्वर, खाँसी, थूक में खून आना या छाती में दर्द होना। **पर्या.** तपेदिक tuberculosis **टि.** पहले यह रोग दु:साध्य था किंतु अब: इसका उपचार संभव है।

क्षरण *पु.(तत्.)* रिस रिस कर समाप्त होना, धीरे-धीरे क्रमश: क्षीण होते जाना।

क्षार *पुं.(तत्.)* सा.अर्थ भस्म या राख। **रसा.** पदार्थ जो किसी अम्ल के रूप में अभिक्रिया कर लवण बनाता है। alkali *तु.* अम्ल।

क्षारक *वि.(तत्.)* जलाने वाला, दाहक। **रसा** .1 .वह पदार्थ जो किसी विलयन में H+ आयन अथवा एक प्रोटीन ग्रहण करता है base वह यौगिक जो जल अथवा दूसरे विलायक में घुलने पर OH hydrocil आयन देता है। यह अम्लों के साथ अभिक्रिया कर लवण और जल बनाता है।

क्षारीय *वि.* (*तत्.*) क्षार युक्त alkaline

क्षितिज *पुं.* (*तत्.*) वह काल्पनिक रेखा जहॉ धरती या समुद्र आसमान से मिलते दिखाई पड़ते हैं। horizon

क्षीण *वि.(तत्.)* दुबला पतला- **जैसे**: क्षीणकाय। 2. पतले शरीर वाला। दुबले कमजोर। **जैसे:** बीमारी के बाद उसकी शक्ति बहुत क्षीण हो गई है।

क्षुद्र *वि.* (*तत्.*) 1. बहुत छोटा very small 2. अत्यल्प (पैटी) 3. महत्वहीन। 4. अधम (मीन, लो वेसे) mean

क्षुद्रग्रह *पुं.* (*तत्.*) बहुत छोटा या महत्वहीन ग्रह। खगो. मंगल और बृहस्पति ग्रहोंके बीच स्थित और सूर्य की परिक्रमा करने वाले हजारों छोटे-छोटे asterio ग्रहों में से कोई भी ग्रह।

क्षुब्ध *वि.* (*तत्.*) व्याकुल, बेचैन, उत्तेजित; अशांत, विचलित खफा। **दे.** क्षोभ। 2. जिसमें जोर-शोर से लहरेंउठ रही हों। **जैसे:** क्षुब्ध-सागर।

क्षेत्र *पुं.* (*तत्.*) कृषि योग्य भूमि-पर्या. खेत। 2. भूमि का एक बड़ा टुकड़ा। पर्या. भूखंड। 3. प्रदेश, इलाका area 4. प्राकृतिक, भौगोलिक, राजनैतिक या धार्मिक दृष्टि से कोई विशिष्ट भूखंड जिसकी कोई विशेषता हो। 5. वैचारिक दृष्टि से समान विचारों वाला जनसमूह। **उदा.** साहित्य के क्षेत्र में ऐसी मान्यता है कि.............. 6. गणित. आकृति का पृष्ठीय विस्तार। (ऐरिया)।

क्षेत्रमिति *स्त्री.* (*तत्.*) गणित की वह शाखा जिसमें रेखाओं की लंबाई-चौड़ाई के आधार पर किसी का समतल, आकृति, क्षेत्रफल तथा ठोस पदार्थों का घनफल आदि प्राप्त करने के नियमों का विवेचन होता है। पर्या. ठोस ज्यामिति। mensurtion

क्षोभ *पुं.* (*तत्.*) मन में व्याकुलता पैदा हो जाने की स्थिति; मानिसक स्तर पर उत्पन्न व्याकुलता या बेचैनी। 2. किसी खगोलीय पिंड की कक्षा में किसी अन्य पिंड के आकर्षण से उत्पन्न विचलन।

क्षोभमंडल *स्त्री.* (*तत्.*) पृथ्वी के चारों ओर स्थित वायुमंडल की पाँच परतों में से पृथ्वी की सतह की ओर से पहली परत। यह वायुमंडल का सबसे सघन भाग है। troposphere **टि.** अन्य परते हैं समतापमंडल, मध्य मंडल, अयन मंडल और बहिर्मंडल।

श्रुद्रांत्र [**क्षुद्र**= **छोटी**+**अंत्र**=**आँत**] (शा.अर्थ.) छोटी आँत **प्राणि.** आहारनाल में आमाशय और वृहदांत्र के अमाशय पदार्थों का अवशोषण, बीच का भाग जहाँ पोषक होता है। पर्या. छोटी आँत। small intestine

ख

खंड *पुं. (तत्.)* 1. किसी इकाई के टूटने पर उससे अलग से साफ दिखाई पड़ने वाले कई हिस्सों या भागों में से एक या कोई भी। part, piece, portion 2. **पुं.** किसी बड़े ग्रंथ के जिल्द बँधे अलग-अलग भाग। volume 3. वास्तु किसी भवन का वह हिस्सा जो साफ़तौर पर एक अलग-सी इकाई के रूप में दिखाई पड़े। block **जैसे:** केंद्रीय सचिवालय का उत्तरी या दक्षिणी खंड। **4. गणि.** आकृति का वह भाग जो किसी रेखा या समतल द्वारा अलग दिखाई पड़ता है। segment **5. प्रशा.** विकास कार्य को सुचारू ढंग से चलाने के लिए किए गए ज़िले के भागों में से कोई एक block **6. विधि.** किसी अधिनियम, प्रलेख, संधि आदि का स्वत:पूर्ण भाग। close

खंड विकास अधिकारी *पुं. (तत्.)* खंड विकास अधिकारी-वह प्रभारी अधिकारी जो किसी जनपद (ज़िले) के वर्गीकृत ग्रामीण क्षेत्र विशेष के विकास एवं निवासियों की अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए राज्य सरकार द्वारा नियुक्त होता है। block development officer

खंडहर *पुं. [तत्. खंड + दे. हर.]* सा.अर्थ 1. किसी भवन की उपयुक्त देखरेख के अभाव में उसके कुछ हिस्सों के गिर जाने पर शेष बचा भाग। 2. प्राचीन भवनों शिलालेखों आदि के कालकवलित भग्नावशेष जिनको आधार बनाकर इतिहासविद् और पुरातत्ववेत्ता तत्कालीन संस्कृति और समाज का अध्ययन कर अपनी-अपनी स्थापनाएँ प्रस्तुत करते हैं। **पर्या.** ध्वंसावशेष, भग्नावशेष। remains, ruins

खंडित *वि. (तत्.)* 1. जिसके टुकड़े हो गए या कर दिए गए हों। **जैसे:** खंडित भारत। 2. जिसके कुछ हिस्से तोडक़र विकृत कर दिया गया हो। **जैसे:** खंडित मूर्ति। **पर्या.** भग्न। **विलो.** अखंड।

खँगालना *स.क्रि. [तद्.<क्षालन]* मँजे-धुले बरतनों या कपड़ों को पूरी सफ़ाई के लिए एक बार फिर से साफ़ पानी में डालकर हाथ से ऊपर-नीचे करते हुए निकलना। सब कुछ उठा ले जाना।

खगोल *पुं. (तत्.) [ख=आकाश+गोल = गोलाकृति]* गोलाकृति वाला आकाश, आकाशमंडल। वह काल्पनिक गोला जिसमें सभी खगोलीय पिंड परिक्रमण करते प्रतीत होते हैं।

खगोलशास्त्र/विज्ञान *पुं. (तत्.)* वह शास्त्र या विज्ञान जिसमें आकाश के ग्रहों, नक्षत्रों, पिंडों, उपग्रहों आदि के प्रकाश, दूरी, स्थिति आदि का अध्ययन किया जाता हैं।

खगोलीय पिंड *पुं. (तत्.)* पृथ्वी के वायुमंडलीय आवरण से परे आकाश/आसमान में दिखाई देने वाले सभी पिंड। **जैसे:** सूर्य, चाँद, ग्रह और उनके उपग्रह, उल्काएँ, धूमकेतु, तारे, नीहारिकाएँ आदि। **टि.** हमारी पृथ्वी भी एक खगोलीय पिंड ही है। **पर्या.** आकाशीय पिंड।

खच्चर *पुं. (तु.)* नर घोड़े और (मादा) गधी की संकर संतान जिससे प्राय: बोझा ढोने का काम लिया जाता है। mule

खज़ांची *पुं. (फ़ा.)* 1. किसी सेठ, साहूकार या सरकारी कार्यालय के धन का हिसाब-किताब रखने वाला वेतन भोगी कर्मचारी। **पर्या.** कोषाध्यक्ष treasurer खज़ाना सा.अर्थ संग्रह**,** भंडार, कोश/कोष। **जैसे**: सरकारी खजाना; ज्ञान का खजाना। **प्रशा.** वह स्थान जहाँ पहले राजाओं, सेठों का और अब सरकारी धन (राजकोष) भावी उपयोग के लिए सुरक्षित रखा जाता है।

खटना *अ.क्रि. [तद्. < क्षय]* किसी कठिन काम को पूरा करने में इतना अधिक परिश्रम करना कि शरीर क्षीण या शिथिल हो जाए; घोर परिश्रम करना (अवमानना सूचक प्रयोग)। **उदा.** मैं जीवन भर खटता रहा किंतु पूँजी जमा न कर पाया।

खटमिट्ठा *वि.* शा.अर्थ खट्टा और मीठा। (किसी फल या गोली का वह स्वाद) जिसमें मीठेपन के साथ-साथ खट्टापन भी महसूस हो। **जैसे:** खटा मिट्ठा आम, खटमिट्ठी गोली।

खटारा *वि. (अनु.)* (बहुत पुरानी मोटर गाड़ी या मशीन जिसके पुर्जे ढीले पड़ गए हों और जो चलते समय खट-खट जैसी अप्रिय ध्वनि करे। **जैसे:** खटारा गाड़ी, खटारा मशीन।

खड़ाऊँ *(< काष्ठ पादुका) स्त्री.* पैरों में पहनी जाने वाली काठ के तले वाली खूँटीदार पादुका (चप्पल)। **पर्या.** पादुका।

खतरनाक *वि. (फ़ा.)* ख़तरे से भरा हुआ; हानि पहुँचाने, चोट लगने यहाँ तक कि मृत्यु हो जाने की संभावना से भरी (कोई घटना)। **दे.** ख़तरा।

ख़तरा *पुं. (अर.)* हानि पहुँचने अथवा चोट लगने आदि की आशंका। danger **मुहा.** खतरा मोल लेना = जान बूझ कर ऐसे कार्य में हाथ डालना जिससे हानि की पूरी संभावना हो।

खदान *स्त्री. (अर.)* **भू.वि.** भूपृष्ठ का वह क्षेत्र जहाँ गहरी खुदाई कर भीतर से खनिज पदार्थ निकाले जाते हैं। **पर्या.** जैसे पत्थर की खदान, खान।

खदेड़ना *स.क्रि. (देश.)* किसी को डरा-धमकाकर या बलपूर्वक दूर भगाना। **उदा.** हमारी सेना ने शत्रु की सेना को खदेड़ दिया।

खनन *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ भूमि पृष्ठ को खोदना, खुदाई। **भूवि.** खानों से खनिज पदार्थ (कोयला आदि) खोदने और निकालने की कार्य।

खनिज [खनि+ज] *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ खोदने की क्रिया से (पैदा हुआ) निकाला गया पदार्थ। **भूवि.** प्रकृति की अकार्बनिक प्रक्रियाओं द्वारा पृथ्वी के अंदर बनने वाला ठोस, समांगी, क्रिस्टलीय रासायनिक पदार्थ। **जैसे:** सोना**,** चांदी, हीरा, कोयला आदि। mineral

खपत *[देश<खपना] स्त्री.* शा.अर्थ खपने की प्रक्रिया। 1. वस्तु की उतनी मात्रा, जिनती उपयोग में आई हो। 2. जितना माल बेचा जा सके। **उदा.** (i) आजकल शहरों में ही नहीं, गाँवों में भी इलैक्ट्रॉनिक वस्तुओं की खपत बढ़ गई है। (ii) आजकल हाथ से बने माल की खपत कम हो गई है।

खपना *अ.क्रि. [तद्. क्षेपण]* किसी वस्तु का उपयोग में आना। खपाना *स.क्रि.* किसी अतिरिक्त या खराब वस्तु को यत्नपूर्वक काम में लाना या लगाना।

खफ़ा *(अर.) वि.* रुष्ट, नाराज, क्रुद्ध।

खबर *स्त्री. (अर.)* किसी भी स्रोत से प्राप्त कोई नई या विशेष जानकारी या सूचना। **पर्या.** समाचार, पता। **मुहा.** (i) खबर उड़ना- चर्चा फैलना; (ii) अफवाह उड़ना। **खबर** लेना - (i) हालचाल पूछना। (ii) (ला.अर्थ) डाँटना, फटकारना यहाँ तक कि दंड भी देना।

खबरदार *वि.* सावधान रहने, चेतावनी देने आदि के लिए प्रयुक्त शब्द।

खबरिया *वि.पुं. [<खबर] वि.* (i) खबरों से संबंधित; (ii) खबरें पहुँचाने वाला। **जैसे:** खबरिया चैनल।

खमा *(राजस्थानी < क्षमा) स्त्री.* 1. **दे.** क्षमा। 2. राजाओं, महाराजाओं, ठाकुरों यानी अपने आश्रयदाताओं को लिए जाने वाले वाचिक अभिवादन में प्रयुक्त शब्द घणी खमा/खम्मा

खमीर *पुं. (अर. ख़मीर)* सा.अर्थ 1. गुंथे हुए आटे आदि में, पर्याप्त देर तक पड़े रखने से, पैदा होने वाली खटास और उभार। 2. वह पदार्थ (फफूंद) जिससे यह गुण पैदा होता है। **पर्या.** खमीरा (लेबन)। **वन.** ऐस्कोमाइसिटीज़ कुल का एक कवक (फूफँद) जो जाइमेस नामक एंज़ाइम उत्पन्न करता है। yeast

खयाल/ख्याल *पुं. (अर.)* 1. सुध-बुध का भाव सूचित करने वाली मन की वृत्ती। **जैसे**: वह अपने ख्याल में ही मगन (मग्न) रहता है। 2. स्मृति, याद। **जैसे:** कभी-कभी मेरे दिल में ख्याल आता है। 3. ध्यान, सावधानी। **जैसे:** यात्रा में अपना खयाल सूचना। 4. मत, विचार। **जैसे**: मेरे खयाल में............**मुहा.** खयाली पुलाव-कोरी कल्पना । **संगी.** लोक-संगीत का एक प्रकार। राग/रागिनी का एक विशिष्ट स्वरूप। ध्रुपद पद्धति के गायन ने इसे शास्त्रीय रूप दे दिया है। संगीतशास्त्र में छोटा खयाल और बड़ा खयाल ये दो प्रकार प्रचलित हैं।

खरपतवार *स्त्री. (देश.)* खर = हानिकारक + पत<पात=पत्ते/घासफूस + वार = बढ़ोतरी/वृद्धि) अनचाहे और अनावश्यक रूप से उगने वाले पौधे जो फसल को नुकसान पहुँचाते हैं। **पर्या.** अपतृण weed

खरपतवारनाशी *वि.* खरपतवार का नाश करने वाली (औषधि या कीट)। **दे.** खरपतवार।

खरा *वि. [तद्. < खर]* अच्छा, बढ़िया, उत्तम कोटि का, स्पष्ट, विशुद्ध, जिसमें मिलावट न हो; जिसमें बेईमानी न हो। **जैसे:** खरी कमाई; खरा सोना। **विलो.** खोटा। **मुहा.** (i) खरी-खरी सुनाना = स्पष्ट बात कहना, चाहे कटु ही क्यों न हो। (ii) खरा सौदा = सच्चा सौदा।

खराद *स्त्री. (फा.)* लकड़ी या धातु पिंड को छील कर मनचाहा आकार देने वाला हस्तचालित या विद्युत् चालित मशीनी औज़ार। lathe

खरी-खोटी *वि. स्त्री. [हिं.-खरा-खोटा]* 1. साफ साफ (स्पष्ट) शब्दों में बिना लाग लपेट के दुर्गुणों को बखानते हुए और धमकी भरे शब्दों से युक्त। 2. अच्छी और बुरी, भली-बुरी। **उदा.** आज उसने सबके सामने उस दुकानदार को खूब खरी-खोटी सुनाई।

खरीदना *स्त्री. (फ़ा.)* खरीदने की क्रिया। **विलो.** बेचना।

खरीफ़ *स्त्री. (अर.)* वर्षा ऋतु में बोई जाने वाली और शीत ऋतु से पहले वाली फसले। **जैसे:** धान, मक्का, सोयाबीन, कपास, मूँगफली आदि। **तु.** रबी।

खरीफ़ फ़सल *स्त्री. (अर.)* वह फसल जो आषाढ़-श्रावण (वर्षा ऋतु) में बोई जाती है और कार्तिक अग्रहायण तक काट ली जाती है। (धान, मक्का, बाजरा आदि)

खरोंच *स्त्री. [< खुरचना < तत्. क्षरण]* काँटे, नाखून या किसी अन्य पैनी चीज़ से त्वचा के छिल जाने पर पड़ा निशान।

खरोष्ठी *स्त्री. (तत्.)* एक प्राचीन लिपि जो फारसी की तरह दाहिने से बाएं लिखी जाती थी और मौर्यकाल में पश्चिमोत्तर भारत में (गंधार) प्रचलित थी। **पर्या.** गांधारी लिपि।

खर्रा *पुं. [देश. अनु.]* सा.अर्थ (i) लपेटा जा सकने वाला लंबा कागज। (ii) बोलचाल में लिखे गए लंबे पत्र के लिए प्रयुक्त अपमानजनक शब्द। (ii) पुराने समय की ऐसी पुस्तक या पत्र जो कपड़े की लंबीपट्टी पर लिखी गई। लिखा गया हो और डंडे पर लपेटी/लपेटा जाता है। scroll

खर्राटा *पुं. (अनु.)* पारि.अर्थ. गहरी नींद में किसी की नाक और मुख निकलने वाली खर्र-खर्र की तेज़ आवाज़। **मुहा.** खर्राटे भरना = गहरी नींद में या बेखबर सोना।

खलनायक [खल = दुष्ट + नायक = प्रमुख पात्र] *पुं. (तत्.)* (काव्यशास्त्र के अनुसार) साहित्यिक कृति के मुख्य चरित्र का (नायक का) प्रतिद्वंद्वी (दुष्ट) पात्र। **जैसे**: रामायण में रावण एंटी हीरो स्त्री. खलनायिका

खलबली *स्त्री. [देश.<खलबल] (दे.)* अचानक कोई विपत्ति आ जाने पर लोगों में व्याकुलता का होना। शा.अर्थ. 1. हलचल, 2. बेचैनी, 3. घबराहट। **उदा.** यमुना में आई भीषण बाढ़ से लोगों में खलबली मचना। अचानक किसी विषम स्थिति के उत्पन्न हो जाने पर लोगों में फैली अव्यवस्था, हलचल, भगदड़, शोर, बेचैनी/घबराहट आदि की मिली-जुली स्थिति। commotion

खलिहान/खलियान *पुं. (तत्.)* वह खुला स्थान जहाँ काटकर रखी गई फसल से भूसी और दाने अलग किए जाते हैं।

खलीफ़ा *पुं. (अर.)* 1. उत्तराधिकारी, वारिस, विशेषकर हज़रत मुहम्मद साहब के उत्तराधिकारी जो इस्लाम में श्रेष्ठ समझे जाते हैं। *वि. (अर.)* बहुत चतुर और धूर्त।

खसरा *पुं.* 1. **आयु.** रूबियोला विषाणु के संक्रमण से जाड़ों तथा वसंत ऋतु में सामान्यत: बच्चों में फैलने वाला संचारी रोग। इसके मुख्य लक्षण हैं : शरीर पर लाल रंग के छोटे-छोटे दाने और तेज़ बुखार। measles **2. प्रशा.** पटवारी द्वारा तैयार दस्तावेज़ जिसमें खेत का नंबर, रकबा आदि लिखे जाते हैं।

ख़स्ता *वि.(फ़ा.)* 1. पुराना पड़ जाने के परिणामस्वरूप टूट-फूट की स्थिति में पहुँचा हुआ। **जैसे:** खस्ता मकान। 2. हलके से दबाव के कारण टूटने और बिखर जाने वाला। **जैसे:** खस्ता पापड, खस्ता कचौड़ी।

खाँचा *(देश.) पुं.* खोदकर बनाया गया छेद या बुनकर बनाया गया झब्बा जिसमें कोई चीज़ ठीक से बिठाई जा सके या रखी जा सके। groove niche

खाँचेदार *वि.* जिसमें खाँचा बना हो। **दे.** खाँचा।

खाँसता *क्रि. (अ.क्रि.)* बलगम आदि बनने और बढ़ने या किसी अन्य प्रकार की रुकावट के कारण साँस लेते वक्त में झटके लगना और मुँह से आवाज़ के साथ हवा निकालना।

खाँसी *स्त्री. (तद्.)* कंठद्वार में रुकावट के कारण साँस लेते समय फेफड़ों से हवा आवाज़ के साथ तेज़ी से बाहर निकलने की स्थिति। **टि.** ऐसी खाँसी सामान्य और रोगसूचक-दोनों प्रकार की हो सकती है। coughing

खाई *स्त्री. [तद्.<खानि]* 1. पुराने समय में किसी किले नगर आदि के चारों ओर सुरक्षात्मक दृष्टि से खोदी जाने वाली नहर। खंदक। 2. खोदा गया वह गड्ढा जिसमें छिपकर सैनिक शत्रुपक्ष पर हमला कर सकें। 3. पहाड़ी क्षेत्र में प्राकृतिक रूप से बना गहरा खड्ड।

खाक *स्त्री. (फ़ा.)* 1. मिट्टी, धूल। 2. राख, भस्म। **मुहा.** (i) ख़ाक छानना - किसी चीज की तलाश में बहुत हैरान होना और मारे-मारे फिरना। (ii) खाक में मिलना = नष्ट हो जाना। (iii) खाक फाँकना = गरीबी की स्थिति में गुज़र-बसर करना।

ख़ाका *पुं. (फ़ा.)* किसी भवन, मानचित्र आदि का पूर्वरूप या उसकी बाह्य स्थूल मात्र। sketch, map, line-drawing

खाकी *वि. (फ़ा.)* 1. मिट्टी (खाक) के रंग का भूरा। 2. बिना सींची हुई भूमि। **स्त्री.** भूरे रंग के कपड़े की पुलिस या सैनिकों आदि की वर्दी। **जैसे:** खाकी वस्त्र।

खाट *पुं. [तद्.<खट्वा]* चारपाई, खटिया। **मुहा.** (i) खाट करना - अधिक बीमार होने पर खाट पर ही मलमूत्र आदि का प्रबन्ध होना। (ii) खाट से उतारा जाना - मरने के निकट होना, आसन्त मृत्यु की स्थिति। (iii) खाट से लगना - अधिक बीमार होने से उठने-बैठने में भी परेशानी होना।

खाड़ी *स्त्री. [तद्. < खात]* सागर/समुद्र का वह भाग जो तीन ओर से भूमि से घिरा हुआ हो। **जैसे**: बंगाल की खाड़ी bay

खाता *पुं.* **वाणि.** 1. व्यावसायिक लेन-देन का हिसाब और उसकी बही या रजिस्टर में प्रविष्टि। **उदा.** मैंने बैंक में खाता खुलवा लिया है। account 2. खाता-बही laser

खातिर *अव्यय.* के लिए, निमित्त, वास्ते, के समय में। **जैसे**: उसने तुम्हारे खातिर यह घर दे दिया।

खातिर *स्त्री. (अर.)* 1. किसी के स्वागत में किया जाने वाला अतिथ्य। 2. किसी का उत्तम भोज्य पदार्थ व सुंदर निवास आदि की सुविधा देकर प्रसन्नता के साथ सत्कार करना। **जैसे**: खातिरदारी, आवभगत वहाँ कन्या पक्ष ने बारातियों की बड़ी खातिर की।

खातिरदारी *स्त्री. (अर.)* आवभगत, आदर-सत्कार hospitality **उदा.** मेरे भाई की बारात में मेहमानों की खून खातिरदारी हुई।

खाद *स्त्री. (फ़ा.)* खेती की जमीन का उपजाऊपन बढ़ाने के लिए काम आने वाला पशुओं का गोबर (जैविक खाद) या अन्य रासायनिक पदार्थ रासायनिक खाद। **पर्या.** उरर्वक

खाद्य *(तत्.) वि.* 1. खाने योग्य, *विलो.* अखाद्य। *पुं.* 2. खाने की चीज़, भोजन आदि।

खाद्य धानी *स्त्री. (तत्.)* जीवद्रव्य में खाद्यकण के चारों ओर बना तरल युक्त अस्थायी अवकाश space जिसमें पाचन क्रिया होती है। **जैसे**: अमीबा amoeba में।

खाद्य पदार्थ *पुं. (तत्.)* खाने योग्य वस्तुएँ।

खाद्य परीक्षण *पुं. (तत्.)* खाने-पीने की वस्तुओं को लंबे समय तक सुरक्षित बनाए रखना (की वैज्ञानिक प्रक्रिया)

खाद्य विषाक्तन (खाद् य+विषाक्त + अर.) *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ खाद्य पदार्थों का विषैला हो जाना या किया जाना। **रसा.** सूक्ष्मी जीवों द्वारा या अन्य कारणों से खाद् य पदार्थों का दूषित या हानिकारक हो जाना या कर दिया जाना।

खाद्यान्न (खाद्य + अन्न) *पुं. (तत्.)* खाने के काम आने वाला अन्त। **टि.** आजकल 'फूड ग्रेन्स' के शाब्दिक अनुवाद के रूप में 'खाद्यान्न' शब्द प्रचलित है अन्यथा इस संकल्पना को प्रकट करने के लिए 'अन्त' शब्द ही पर्याप्त है।

खानदान *पुं. (फ़ा.)* किसी व्यक्ति के पिता, पितामह, प्रपितामह आदि पूर्वजों को सामूहिक रूप से संकेतित करने वाला शब्द। **पर्या.** वंश, कुल **तु.** परिवार।

खानदानी *वि. (फा.)* 1. वंश पंरपरागत, पैतृक। 2. ऊँचे वंश या कुल वाला। **जैसे**: वह खानदानी व्यक्ति है, कोई अनुचित कार्य नहीं करेगा।

खान-पान *पुं. (तद्.)* मुख्यत: खाना-पीना; खाने-पीने का ढंग या व्यवहार। **गौणत:**जीवन यापन की शैली।

खानसामा *पुं. (फ़ा.)* वह जो खाना बनाता हो; मुसलमान रसोइया; बावर्ची।

खाना तलाशी *स्त्री. (फ़ा.)* किसी खोई हुई या चुराई हुई चीज़ को ढूँढ़ने के लिए संदिग्ध व्यक्ति के घर की तलाशी लेने का काम।

खानाबदोश *वि. (फ़ा.)* जिसका कोई स्थायी घर बार या ठौर ठिकाना न हो। *पुं.* **इति.** घुमंतु दल का सदस्य जो अपने जीवन यापन अथवा पशुओं के लिए चरागाहों की खोज में एक स्थान से दूसरे स्थान पर विचरण करता रहता था। **टि.** खानाबदोशों का स्थायी घर या निश्चित भू क्षेत्र नहीं होता। **पर्या.** यायावर normad

खामी *स्त्री. (फ़ा.)* कमी, खराबी, दोष। **उदा.** तुम्हारे काम में बहुत-सी खामियाँ दिखाई पड़ रही है।

खामोश *वि. (फा.)* लोगों द्वारा बिल्कुल आवाज न करना, चुप, मौन।

खामोशी *स्त्री. (फा.)* खामोश होने या रहने की स्थिति, चुप्पी, मौन।

खारा *[तत्र. < क्षार] वि.* 1. जो नमक के स्वाद वाला हो। 2. जिसमें खरापन हो। **पर्या.** नमकीन, क्षारीय।

खाली *वि. [अर. ख़ाली]* 1. जिसमें कुछ रखा या भरा न हो। **जैसे:** खाली बर्तन। 2. जिसमें कोई रहता न हो । 3. जिसके पास कोई काम न हो। **जैसे:** मकान किराए के लिए खाली है। बेरोजगार, ढाल।

ख़ास *वि. (अर.)* जो विशिष्ट या निजी हो; जो साधारण न हो। **विलो.** आम।

खासतौर से/खासतौर पर/खासकर *क्रि.वि.* विशेष रूप से, विशेषत:।

खासियत *स्त्री. (अर.)* विशेषता।

खिंचाव *पुं. [तद्. < कर्षण]* 1. खींचने की शक्ति; किसी को अपनी ओर आकृष्ट करने का कार्य। 2. मांसपेशी की प्राकृतिक स्थिति में आया कोई विकार।

खिताब *पुं. (अर.)* श्रेष्ठ ज्ञान या उत्कृष्ट कार्यों के लिए सरकार की ओर से या विश्वविद्यालय आदि के द्वारा दी जाने वाली उपाधि, तमगा, सम्मानपत्र आदि। **पर्या.** उपाधि, degree

खिताब देना *स.क्रि.* किसी को पदवी देना, उपाधि से अलंकृत करना।

खिदमत *स्त्री. (अर.)* उम्र, पद-प्रतिष्ठा आदि में बड़े व्यक्ति की विनम्रतापूर्वक सेवा करने का अर्थ। **उदा.** आपकी खिदमत में क्या पेश किया जाए?

खिन्ना [भाव.<खिन्नता] *वि. (तत्.)* किसी प्रतिकूल परिस्थिति या दुर्व्यवहार से अप्रसन्न या दु:खी।

खिलखिलाना *अ.क्रि. [देश.-अनु.]* 'खिल-खिल' जैसी ध्वनि करते हुए हँसना; कली खिलने जैसा खुलकर हँसना; हिलते हुए ज़ोर से हँसना। **तुल.** हँसना = प्रसन्नतापूर्वक सामान्य ध्वनि करना। मुसकराना = बिना मुँह खोले धीरे-धीरे हँसना। ठहाका लगाना = बहुत ज़ोर की आवाज़ के साथ हँसना।

खिलवाड़ *स्त्री. [<खेल]* बच्चों जैसा मनोरंजक अति सामान्य खेल। **उदा.** मैं तो तुमसे खिलवाड़ कर रहा था। ला.अर्थ-अति सरल काम।

खिलाफ़ *वि. (अर.)* (भाव-खिलाफत) (कोई बात या कोई निर्णय) जो अनुकूल न हो। **पर्या.** विरुद्ध, प्रतिकूल, उलटा। **उदा.** कल तक तो तुम मेरे पक्ष में हो। अब अचानक खिलाफ कैसे हो गए?

खींचना *स.क्रि. तद् [प्रा. खंच < कर्षण]* 1. किसी वाहन के आगे जुत/जुडकर उसे आगे बढ़ाना। **उदा.** बैल गाड़ी खींचता है, इंजन रेल को खींचता है। to pull 2. भीतर से बाहर निकालने की क्रिया। **उदा.** जोश में भरकर उसने म्यान से तलवार खींची, खेत सींचने के लिए आज भी कूओं से पानी खींचा जाता है। 3. कागज या किसी अन्य सतह पर पैंसिल, स्याही आदि से कोई आकृति बनाना। **जैसे**: रेखा खींचना, 4. पर्दे आदि में पहले से बंद दृश्यावली को खोल देना, केमरे से फोटो खींचना अथवा पहले से दृश्यमान वस्तु को आँखों से ओझल कर देना। **जैसे**: पर्दा खींचना (खोलना और बंद करना दोनों ही) 5. रुचि लेना बंद कर देना। **जैसे:** हाथ खींच लेना।

खींचा-तानी/खींच-तान *स्त्री. (देश.)* पारि.अर्थ. 1. किसी पद या वस्तु को पाने के लिए अथवा अपने-अपने पक्ष का समर्थन करने के लिए अपने-अपने तर्क प्रस्तुत करते हुए विवाद की स्थिति पैदा करना। 2. किसी विषय या शब्द के सामान्य से अर्थ को शास्त्रीय तर्कों से अधिक जटिल बना देना।

खीज/खीझ *स्त्री. (तद्.)* खीजने का भाव। एनोयंस **दे.** anodyance

खीजना/खीझना *[तद्. < प्रा. खिज्जइ < सं. खिद्यते] अ.क्रि.* मन ही मन अपनी नाराज़गी जताना जो उस व्यक्ति की शारीरिक क्रियाओं से प्रकट हो जाती है।

खुजलाना *स.क्रि. [तद्. < खर्जन]* शरीर के अंग में महसूस की जाने वाली, त्वचा संबंधी असहनीय संवेदनशीलता (खुजली) को मिटाने के लिए नाख़ूनों से या किसी अन्य साधन से वहाँ की त्वचा को सहलाना, रगड़ना या खरोंचना। *अ.क्रि.* खुजली महसूस करना।

खुजली *स्त्री.* 1. शारीरिक अंग में महसूस की जाने वाली त्वचा संबंधी असहनीय संवेदनशीलता (जिसका शमन करना आवश्यक हो)। 2. इसी प्रकार का चर्म रोग भी जिसमें त्वचा पर छोटे-छोटे दाने दिखाई पड़ने लगते हैं।

खुद *सर्व./क्रि.वि. (फ़ा.)* सर्व. 1. स्वयं, आप, **उदा.** मैं खुद एक पुलिस अधिकारी हूँ। 2. अपने आप, स्वयं की शक्ति से। **उदा.** यह काम तो खुद ही हो जाता।

खुद-ब-खुद *क्रि.वि. (फा.)* अपने-आप, आप से आप, स्वतः, खुद।

ख़ुदा *पुं. (फ़ा.)* ईश्वर, परमात्मा, सर्वशक्तिमान। **मुहा.** खुदा की मार- दैवी प्रकोप, प्राकृतिक आपदा। ख़ुदा-ख़ुदा करके - बड़ी कठिनाई से, केवल भगवान का नाम लेकर या उसकी कृपा से। खुदा खैर करे - ईश्वर रक्षा करे, भगवान बचाए। खुदा-न-ख़्वास्ता - ईश्वर न करे.....। ख़ुदा हाफिज़ - (किसी से विदाई लेते समय प्रयुक्त वाक्य) = ईश्वर रक्षा करे।

खुदाई *स्त्री. (दे. खोदना)* 1. खोदे जाने की क्रिया या भाव। 2. जमीन की मिट्टी निकालकर गड्ढा या नींव खोदने का काम। 3. खोदे जाने की मज़दूरी।

ख़ुदाई *वि. (फ़ा. ख़ुदाई)* ईश्वरीय (शक्ति) *स्त्री.* 1. ईश्वर की सृष्टि, 2. ईश्वर की महिमा, 3. विभूति। लोको. **उदा.** ख़ुदा की ख़ुदाई एक तरफ़, जोरू का भाई एक तरफ़।

खुदी *स्त्री. (फ़ा.)* मैं-पन। **उदा.** खुदी को कर बुलंद इतना कि....

खुफिया *वि. (अर.)* (ऐसा कार्य) जो प्रकट न किया जाए, अप्रकट, छिपा हुआ, गुप्त। **जैसे**: खुफिया पुलिस, खुफिया विभाग।

ख़ुमार/खुमारी *पुं./स्त्री. (अर.)* आँखों में छाया हुआ नींद अथवा शराब आदि का नशा।

खुर *पुं. [तद्. < क्षुर]* चौपायों के पैरों के नीचे वाला भाग जो पंजों के स्थान पर होता है और सींग की ही तरह कठोर होता है। अधिकतर पशुओं का खुर बीच में से फटा होता है। welven hoof

खुरचना *स.क्रि.* (तद्. < क्षुरण) 1. (बरतन में) चिपकी हुई चीज़ को रगड़कर हटाना। **जैसे**: कढ़ाई से जले हुए मसाले/दूध को खुरचना। 2. (वृक्ष के) ऊपर की परत को हटाना। **जैसे**: पेड़ की छाल खुरचना।

खुरदरा *वि. (देश.)* **पारि.अर्थ** स्पर्श करने पर जिसकी सतह चिकनी या समतल न लगकर थोड़ी ऊँची-नीची लगे। **वि.** चिकना।

खुरपा/खुरपी *पुं. (स्त्री.)* [तद्. < क्षुरप] *पुं.* घास काटने/छीलने का लोहे से बना एक औज़ार। *स्त्री.* छोटा खुरपा।

खुराक *स्त्री. (फ़ा.)* 1. शरीर-रक्षा के लिए व्यक्ति (और पशु) द्वारा सामान्यतः ग्रहण किया जाने वाला भोजन या खाना खाद्य पदार्थ (भोजन, दवा आदि) की निर्धारित मात्रा। **उदा.** दवा की दो खुराक ने ही अपना असर दिखाना शुरू कर दिया। 1. खुराक बढ़ाओ ताकि शरीर में ताकत आए।

खुराफ़ात *स्त्री. (अर.)* ऐसी बातें या हरकतें जो अनुचित और बेहूदा हों। **टि.** यह शब्द मूलतः 'ख़ुराफ़त' का बहुवचन है।

खुराफ़ाती *वि. (अर.) वि./पुं.* खुराफ़ात करने वाला (व्यक्ति), शराती तत्व। **दे.** खुराफ़ात।

खुला अधिवेशन *पुं.* किसी राजनीतिक दल अथवा सांस्कृतिक/शैक्षिक/सामाजिक संगठन का ऐसा सम्मेलन (अधिवेशन) जिसमें प्रवेश पर पाबंदी न हो।

खुला दरबार *पुं.* यदा-कदा या निर्धारित दिन के निर्धारित समय में आयोजित ऐसा सम्मेलन जहाँ स्थानीय जनता के बीच मंत्री अथवा पदस्थ अधिकारी उपस्थित होकर शिकायतें सुनता है और तात्कालिक निर्णय सुनाता है।

खुली अदालत *स्त्री (फ़ा.)* 1. सुनवाई कर रहे न्यायालय की वह स्थिति जिसमें वादी, प्रतिवादी, गवा हो आदि के अतिरिक्त सामान्य जनता भी उपस्थित रह सके। 2. (यदा-कदा) खुली जगह में चलने वाली न्यायालय संबंधी विभागीय कार्यवाही जहाँ शिकायतें सुनकर तत्काल फैसला दे दिया जाता है। **जैसे:** बिजली अदालत या टेलीफोन अदालत आदि।

खुलेआम *क्रि.वि. (फ़ा.)* आम (जनता) के सामने, सबके सामने, सार्वजनिक रूप से।

खुश किस्मत *वि. (फा.)* भाग्यशाली। **विलो.** बंद किस्मत।

खुशकिस्मती *स्त्री. (फा.)* भाग्य, सौभाग्य **विलो.** बदकिस्मती।

खुशनसीब *वि.(फा.) (नसीब=भाग्य)* भाग्यशाली।

खुशनसीबी *स्त्री. (फार.)* अच्छा भाग्य, सौभाग्य।

खुशबू *स्त्री. (फा.) [खुश = रुचिकर + बू = गंध]* गंध जिसे सूँघकर मन खुश हो जाए। **विलो.** बदबू।

खुशहाल *(फ़ा) वि.* हर तरह से, विशेष रूप से आर्थिक स्थिति (हालत) की दृष्टि से, सुखी और संपन्न।

खुशहाली *स्त्री. (फ़ा.)* हर तरह से, विशेष रूप से आर्थिक स्थिति (हालत) की दृष्टि से, सुखी और संपन्न होने की स्थिति।

खुसर-फुसर *स्त्री. (दे. अनु.)* दो साथियों के बीच जान बूझकर धीमी आवाज में चल रही ऐसी बातचीत जो दूसरों को सुनाई न पड़ने के उद्देश्य से की जाए।

खूँखार *[खूँ < ख़ून + खार < ख़्वार] वि. (फा.)* शा.अर्थ खून पीने वाला। निर्दयता से काम करने वाला वह व्यक्ति जिसे किसी की हिंसा करने में रंचमात्र भी संकोच न हो। **पर्या.** 1. क्रूरकर्मा 2. खूनी 3. हिंसक 4. जालिम। वह प्राणी (पशु या व्यक्ति) जो हिंसा करने का अभ्यासी हो या बन जाए। **जैसे:** खूँखार पशु। विक.अर्थ हिंसक; क्रूर, निर्दयी। **उदा.** नादिरशाह ने चाँदनी चौक में कत्ले आम का हुक्म देकर अपनी खूँखार आदत का परिचय दिया।

खूनख़राबा *पुं. (फ़ा.)* असामाजिक तत्वों द्वारा या शत्रुदल द्वारा किया गया भीषण रक्तपात। **पर्या.** रक्तपात; मारकाट; जनसंहार bloodshed, massacre

ख़ूबसूरत *वि. (फ़ा.)* शा.अर्थ बढ़िया है सूरत जिसकी, अच्छी (दर्शनीय) सूरत वाला। **पर्या.** रूपवान। **वि.** बदसूरत।

खूबसूरती *स्त्री. (फ़ा.)* सुंदरता, सौंदर्य। **विलो.** बदसूरती।

खेतिहर *पुं. [तद्. < क्षेत्रधर]* खेती करने वाला। **पर्या.** कृषक, किसान।

खेतिहर मज़दूर *पुं.* वे भूमिहीन मज़दूर जो भूस्वामियों के खेतों में मज़दूरी करके अपना जीवन-निर्वाह करते हैं। **पर्या.** कृषि श्रमिक।

खेद *पुं. (तत्.)* 1. किसी उचित कार्य के उचित समय में न होने पर मन में होने वाला दु:ख, रंज। 2. कोई अनुचित कार्य कर लेने या वांछित कार्य न कर पाने के कारण होने वाला मानसिक कष्ट या पश्चात्ताप, अफ़सोस, ग्लानि। **उदा.** 1. मुझे खेद है कि मैं तुम्हारा कार्य नहीं कर सका। 2. खेद है कि मेरे मित्र ने तुम्हें भला-बुरा कहा।

खेप *स्त्री. [तद्. < क्षेप्य]* 1. वस्तु की उतनी मात्रा जितनी एक बार में ढोकर ले जाई जा सके। 2. एक फेरा।

ख़ैर *स्त्री. (अर.)* कुशल, क्षेम, मंगल। तुमने मेरी बात नहीं मानी तो देखना तुम्हारी ख़ैर नहीं। खैर मनाओं कि जब यह हादसा हुआ तब तुम वहाँ नहीं थे। जो हुआ सो ठीक; बस, ऐसा ही जाने दो। **पर्या.** अस्तु।

खोखला *वि. (देश.)* 1. वह जो अंदर से खाली या पोला हो। **पर्या.** 2. ला.अर्थ जिसमें रस न बचा हो। **जैसे**: खोखली बातें = 1. सार रहित बातें 2. रसहीन बातें।

खोज *[तद्.< प्रा.खोज्ज]* स्त्री. 1. ढूँढ़ने या खोजने की क्रिया। **पर्या.** तलाश 2. जो वस्तु पहले से ही होकर जिसकी जानकारी किसी को न रही हो उसे पहली बार ढूँढ निकालना। **तु.** आविष्कार, **टि.** प्राचीन अर्थ- 'पैर' का वह, निशान जो चलने से मिट्टी पर बन जाता है। उसी को देखकर व्यक्ति या पशु की खोज की जाती थी।

खोजबीन *स्त्री. [< खोजना + < बीनना]* खोजना-बीनना। (बड़ी सावधानी से) खोजना और उनमें से उपयोगी बातों का संग्रह करना।

खोना *स.क्रि. [तद्. < क्षेपण]* अपनी वस्तु, धन आदि का असावधानी के कारण गिर जाने या निकल जाने की क्रिया। **पर्या.** गँवाना।

खोपरा *पुं. [तद्. < खर्पर]* 1. नारियल की गरी।

खौफ़नाक *वि. (फा.)* डरावना, भयानक।

खोमचा *पुं. (फा.)* बड़ा थाल या परात जिसमें फेरी वाले मिठाई आदि रखकर बेचते हैं।

खोलना *स.क्रि. (दे.<तत् क्षुद्)* बाँधने वाली, जोड़ने वाली, ढकने वाली या रोकने वाली वस्तु को हटाना। शा.अर्थ 1. अवरोध हटाना। 2. अनावृत करना। 3. बंधन हटाना। 4. कलपुर्जे अलग करना। 5. आरंभ करना। **जैसे:** आवागमन के लिए पुल खोलना। 6. उधेड़ना।

ख्याति *स्त्री. (तत्.)* प्रसिद्धि, मशहूरी, शोहरत।

ग

गंगोत्री *स्त्री. (तत्.)* हिमालय में स्थित एक स्थान जहाँ से गंगा निकलती है। गंगा का यह उद्गम स्थल हिंदुओं का एक प्रसिद्ध पवित्र तीर्थ माना जाता है।

गंडासा/गँड़ासा *पुं. (देश.)* घास तथा पशुओं का चारा काटने का औज़ार।

गंतव्य *वि. (तत्.)* (वह जगह) जहाँ जाना (लक्षित) हो।

गंतव्य स्थल/स्थान *पुं. (तत्.)* वह जगह जहाँ जाना लक्षित हो। destination

गंदा *वि. (फा.)* 1. जो स्वच्छ न हो, जो साफ-सफाई न रखता हो। **पर्या.** मैला, मलिन। **विलो.** साफ, स्वच्छ। 2. जिसमें शुद्धता या पवित्रता न हो। **पर्या.** अशुद्ध, अपवित्र, घृणित। **विलो.** स्वच्छ, पवित्र। 3. (बोलचाल में) जिसकी आदतें अच्छी न हो; जो बात न मानता हो आदि। **उदा.** तुमने मेरी बात नहीं मानी/तुम बहुत शोर मचाते हो-बड़े गंदे बच्चे हो।

गंदी बस्ती *स्त्री. (फा. < गंद + तद् < वसति)* सा.अर्थ लोगों के रहने की वह बस्ती जो सामान्यत: गंदी (यानी मैली-कुचैली अवस्था में) हो। सा.अर्थ **दे.** झोंपड़-पट्टी।

गंध *स्त्री. (तत्.)* वायु के माध्यम से प्रसरित किसी पदार्थ का वह गुण (घ्राणेंद्रिय), गंध दो प्रकार की होती है-सुगंध और दुर्गंध (बुरी गंध यानी बदबू) (अच्छी गंध यानी खुशबू) ला. अर्थ **मुहा.** गंध न लगवा किसी बात का बारीकी से ही पता लगाना। **उदा.** उसने जो किया उसकी किसी को गंध तक न लगी।

गंधर्व *पुं. (तत्.)* (पुराणों के अनुसार) अर्धदेवों (गौण देवताओं) का एक वर्ग जो देव लोक के संगीतकार और गायक माने जाते हैं।

गंभीर *वि. (तत्.)* 1. बहुत अधिक गहरा जिसकी गहराई की थाह न मिले। **उदा.** गंभीर समुद्र। 2. अत्यधिक कष्टकर 3. जिसके विषय में बहुत सोच विचार आवश्यक हो। **उदा.** गंभीर स्थिति **जैसे:** गंभीर समस्या। 3. बहुत कम बोलने वाला और जब भी बोले तब बहुत सोच-विचार कर ही बोले।

गंभीरता *स्त्री. (तत्.)* गंभीर होने का भाव। **पर्या.** गहराई **दे.** गंभीर।

गँवाना *स.क्रि. (तद्.)* असावधानी के कारण अपनी पूँजी या समय व्यर्थ में खो देना। **पर्या.** खोना। **उदा.** धन गँवाना, समय गँवाना।

गउवन ब्रज, गाएँ

गगन *पुं. (तत्.)* धरती से ऊपर की ओर दिखाई देने वाला नीलापन लिए खुला स्थान। **पर्या.** आकाश, आसमान, अंबर, अंतरिक्ष।

गज *पुं. (तत्.)* हाथी, एक मीटर से छोटा। **गज़** *पुं. (फा.)* छत्तीस इंच या सोलह गिरह की लंबाई का एक माप yardstic 3. पुराने ज़माने में बंदूक भरने के लिए प्रयुक्त लोहे की छड़।

गज़ब *पुं. (अर.)* 1. कोई विलक्षण बात; आश्चर्य की बात। **पर्या.** अजूबा। 2. दैवी कोप, ईश्वरीय कोप। 3. विपत्ति, आफ़त।

गजराज *पुं. (तत्.)* बड़ा हाथी। **पर्या.** गजेन्द्र।

गट्ठर *पुं. [< गाँठ]* 1. रस्सी से बँधा हुआ सामान। **जैसे:** लकड़ी का गट्ठर। 2. बड़े कपड़े में लपेटकर और गाँठ लगाकर इकट्ठा किया गया सामान। **जैसे:** धोबी के कपड़ों का गठ्ठर bundle

गठ्ठी *स्त्री. [< गाँठ]* 1. छोटा गट्ठर। 2. धागों की लच्छी।

गठजोड़ [गठ<गँठ+जोड़] *पुं. (तद्.)* दो धागों, रस्सियों या वस्त्रों के पल्लुओं में गाँठ लगाकर बनाया गया जोड़। **दे.** गठबंधन।

गठबंधन [गठ < गँठ < गाँठ + बंधन] *पुं. (तद्)* दो व्यक्तियों या दलों द्वारा किसी समय विशेष

में मिलकर एक हो जाने की प्रक्रिया या स्थिति। **उदा.** 1. विवाह के समय विशेष में मिलकर एक हो जाने की प्रक्रिया या स्थिति। **उदा.** 1. विवाह के समय ग्रंथि बंधन के फलस्वरूप बनी पति-पत्नी की जोड़ी। 2. कई राजनीतिक दलों से मिलकर बना संगठन **जैसे:** कांग्रेस नीत संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (सं.प्रग) अथवा भाजपा नीत राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (रा.ज.ग)

गठन *पुं. [तद्.<घटन]* 1. किसी संस्था, समिति आदि की रचना, बनावट का वर्तमान स्वरूप। 2. शरीर की बनावट।

गठित *वि. [< गठना < घटन]* गठा हुआ। **जैसे:** नवगठित समिति; सुगठित शरीर।

गठबंधन सरकार *स्त्री. [गठ < गँठ < गाँठ]* राज. किसी एक ही राजनीतिक दल का बहुमत न होने पर दो या अधिक राजनीतिक दलों के मिलन से बनी सरकार।

गठित [गठ + इत] *वि. (तत्.)* गठा हुआ, (सु) घड़।

गठीला *वि. (हिं. गाँठ + ईला (प्रत्य.)* 1. गठा हुआ, कसा हुआ। **जैसे**: गठीला बदन/शरीर। 2. जिसमें एक से अधिक गाँठें पड़ी हों, गाँठों वाला। **जैसे:** गठीला धागा।

गड़गड़ाना *अ.क्रि. (अनु.)* 'गड़' 'गड़' की आवाज़ होना या उत्पन्न करना। **उदा.** 1. बादलों का गड़गड़ाना। **टि.** बादल गड़गड़ाते हैं जबकि हुक्का गुड़गुड़ाया जाता है।

गड़गड़ाहट [गड़गड़ + आहट] *स्त्री.* 'गड़गड़' करने की आवाज़। **जैसे**: बादलों की गड़गड़ाहट, तालियों की गड़गड़ाहट।

गड़बड़/गड़बड़ी *स्त्री. (देश.)* 1. व्यवस्था-भंग, क्रम-भंग **उदा.** मैंने पुस्तकें ठीक-से रखी थीं। तुमने इन्हें गड़बड़ कर दिया। 2. नियम विरुद्ध कार्य। **उदा.** तुम्हारे हिसाब में बहुत गड़बड़/गड़बड़ी है।

गड़बड़ करना *अ.क्रि.* नियम विरुद्ध कार्य करना।

गड़बड़-घोटाला *पुं* काम में भारी अव्यवस्था और भ्रष्टाचार (नियम विरुद्ध कार्य)-दोनों ही। **उदा.** मशीनों की खरीद में बहुत गड़बड़-घोटाला हुआ है।

गड़बड़ झाला *पुं.* घोर अव्यवस्था। **उदा.** तुम्हारा काम तुम सँभालो। मैं इस गड़बड़ झाले में नहीं पड़ता। hotch-potch

गडरिया *पुं. [तद्. < गाड्डरिकः]* भेड़-बकरियाँ चराने वाला।

गड्डमड्ड *वि. (देश.)* वस्तुओं की अव्यवस्थित रूप से एक-दूसरे में मिल जाने या मिला दिए जाने की स्थिति का वाचक (शब्द)।

गड्ढा *पुं. (तद्.)* आसपास की समतल ज़मीन की तुलना में बना गहराई वाला तल या स्थान। **पर्या.** गर्त। **मुहा.** गड्ढा खोदना=किसी का बुरा चाहते हुए उसके प्रति कोई अनुचित कार्य करना।

गढ़ *पुं. (तत्.)* 1. ऊँची पहाड़ी पर बना परकोटे वाला और सामरिक दृष्टि से सुरक्षित आवासीय स्थल। **पर्या.** दुर्ग, किला। **मुहा.** गढ़ जीतना। लोफ. प्रयोग-स्थान जहाँ विशेष प्रकार के कार्यों या व्यक्तियों का जमावड़ा होता है। **पर्या.** अड्डा। **उदा.** 1. यह मुहल्ला बदमाशों/चोरों का गढ़ है। 2. इलाहाबाद कभी साहित्यकारों का गढ़ माना जाता था।

गढ़ना *स.क्रि. (तद्.)* आकार देना, रचना करना, संवारना।

गण *पुं. (तत्.)* 1. कर्त्तव्य में समानता रखने वाले व्यक्तियों का समूह। **पर्या**. झुंड, समूह, वर्ग, समुदाय। **उदा.** लेखकगण, सेवकगण। 2. अनुचरों का छोटा दल। **जैसे**: शिवजी के गण। 3. (प्राचीन भारत के इतिहास के संदर्भ में) राजनीतिक दृष्टि से वह संगठित इकाई जिसमें राजा भी प्रजा द्वारा चुना जाता था। (**जैसे**: लिच्छवी गण) 4. (आधुनिक संदर्भ में) राजनीतिक दृष्टि से संगठित वह इकाई जिसका प्रधान (राज्याध्यक्ष) सीधे जनता द्वारा अथवा जनता के प्रतिनिधियों द्वारा चुना जाता है। 5. (साहित्य में) लघु-गुरू के विचार से तीन-तीन मात्राओं वाले समूह, **जैसे**: तगण, मगण, जगण आदि। 6. **जीव.** जीव वर्गीकरण की इकाई जिसका स्थान वर्ग के नीचे और कुल के ऊपर आता है। **उदा.** स्तनपोषसी mammles वर्ग का नर-वानर primates गण। order

गणतंत्र [गण+तंत्र] *पुं. (तत्.)* वह राज्य जिसमें शासन चलाने के लिए जनता अपने प्रतिनिधि चुनती है। repunlic **तु.** प्रजातंत्र।

गणवेश [गण-वर्ग+वेश=वस्त्र] *पुं. (तत्.)* किसी वर्ग विशेष के लोगों के लिए अवसर विशेष पर पहने जाने वाले एक ही प्रकार के वस्त्र। **दे.** पोशाक।

गणसंघ (गण+संघ) *पुं. (तत्.)* गणों का समूह। **दे.** गण।

गणितज्ञ (गणित+ज्ञ=जानने वाला) *पुं. (तत्.)* गणित विषय का मर्मज्ञ/ज्ञाता।

गति *स्त्री.(तत्.)* 1. सा.अर्थ *किसी* वस्तु अथवा व्यक्ति की हिलने, डुलने या चलने की क्रिया। उदाहरण-गाड़ी की गति, तीव्र गति, मंदगति। **2. भौ.** किसी कण अथवा पिंड की स्थिति में परिवर्तन जो उसके जड़त्व की समाप्ति का सूचक है। motion **तु.** वेग, चाल।

गतिरोध *पुं.(तत्.)* गति में पड़ने वाली बाधा। **उदा.** काम में एक बार गतिरोध आ जाए तो फिर उसे पूरा करना मुश्किल हो जाता है।

गतिरोधक *वि.(तत्.)* गति में बाधा डालने वाला। *पुं.* सडक़ों पर बनाया गया उभार जो इस बात का सूचक है कि वहाँ वाहनों की गति कम कर दी जाए ताकि दुर्घटना की आशंका न रहे। speed braker

गतिविधि [गति+विधि] *स्त्री.(तत्.)* कार्य व्यापार आदि का दिखाई पड़ने वाला हर रोज का तरीका, व्यवहार, चाल। **उदा.** अध्यापक छात्रों की गतिविधियों पर दृष्टि जमाए रखता है।

गतिशील *वि.(तत्.)* 1. जिसमें गति हो, चलने वाला, चलता हुआ; जो स्थिर न हो। 2. निरंतर आगे बढ़ने वाला; प्रगतिशील।

गतिशीलता [गतिशील+ता] *स्त्री.(तत्.)* चलते-फिरते रहने की क्रिया का सूचक/भाव।

गतिसीमा *स्त्री.(तत्.)* शा.अर्थ गति की सीमा। किसी वाहन या यन्त्र के चलने स्थानानुसार निर्धारित उच्चतम सीमा। **जैसे:** 1. भारी वाहन गति सीमा 40 कि.मी. प्रतिघंटा। 2. टाइपराइटर में शब्द टाइप करने की सीमा 200 शब्द प्रतिघंटा।

गतिहीन *वि.(तत्.)* जिसमें गति न हो, गतिरहित।

ग़दर *पुं.(अर.)* शासन समाप्त करने के लिए किया गया सैनिक विद्रोह। **पर्या.** विप्लव, बगावत, क्रांति। 1857 की क्रांति को हम प्रथम स्वतंत्रता संग्राम कहते हैं तो अंग्रेज इतिहासकारों ने उसे गदर नाम दिया।

गद्गद् *वि. (तत्.)* बहुत अधिक प्रसन्नता के आवेग से गला इतना भर जाना कि आवाज़ ठीक से न निकले या अटक-अटक कर निकले। **मुहा.** गद्ग होना।

गद्दार *वि. (अर.)* (व्यक्ति) जो अपने देश, समाज, संस्था आदि के विरूद्ध कार्य करे। **पर्या.** नमकहराम, कृतघ्न, देशद्रोही।

गद्य *पुं. (तत्.)* 1. साहित्यलेखन की एक विधा, जिसमें (पद्य की तरह) छंद, लय, तुक आदि पर विशेष विचार नहीं होता है। 2. सामान्य बोलचाल की भाषा। **वि.** पद्य।

गप-गप/गपागप *क्रि.वि.* (गप=निगलने का शब्द) बहुत अधिक मात्रा में तेज़ी से खाने का एक तरीका जिसमें चबाने पर अधिक बल न देते हुए कौर को मुँह में रखने के बाद तत्काल निगल लिया जाता है।

ग़फ़लत *स्त्री.(अर.)* 1. असावधानी, बेपरवाही। **उदा.** उसकी गफ़लत के कारण मामला बिगड़ गया। 2. भ्रम, मैं इस गफ़लत में था कि तुम सोमवार को दिल्ली पहुँचोगे इसलिए आज (यानी रविवार को) तुम्हें लेने स्टेशन नहीं आया।

गफ़श *वि.[अर. < गफ़्स]* 1. दलदार, मोटे दल का। 2. ऐसा कपडा जो घना बुना हो। **पर्या.** गाढ़ा मोटा (गफ़)

गभुआर *वि.(देश.)* 1. गर्भ से ही प्राप्त बालों वाला, जिसका अभी मुंडन संस्कार न हुआ हो। 2. गर्भ से प्राप्त बुद्धि वाला, जिसे संसार का ज्ञान न हो। अबोध, नादान, नासमझ, निर्दोष। 3. छोटा बालक, शिशु। **उदा.** इस गभुआर बालक को न रूलाए।

ग़म *पुं. (अर.)* किसी प्रकार के अभाव, असफलता, हानि आदि से उत्पनन पश्चाताप। **पर्या.** दु:ख, शोक, संताप, चिंता। **मुहा.** ग़म खाना=1. अपमान या पीड़ा को सह लेना। 2. अधीर न होना।

गमछा *पुं. (अंगोछा)* भीगे शरीर को पोंछने का वस्त्र। **पर्या.** अंगोछा। **टि.** गमछा/अंगोछा प्राय: पतले कपड़े का बना होता है जबकि तौलिया मोटे और रोंएदार कपड़े का।

गरचे *अव्य.[अर. अग़रचे]* यद्यपि, गोकि।

गरज *स्त्री. (गर्जन)* जलभरे बादलों के टकराने से होने वाली आवाज़, बादलों की गड़गड़ाहट; शेर की दहाड़।

ग़रज़ *स्त्री.(अर.)* मतलब, प्रयोजन। **उदा.** तुम अपनी गरज़ से आज यहाँ आए हो। पहले तो यहाँ कभी नहीं आए। **अव्य.** गरज़ यह कि, सारांश यह कि, मतलब यह कि....

गरजना *अ.क्रि. (गरज)* 1. बादल का गड़गड़ाना। **उदा.** बादल गरज रहे हैं। 2. शेर का दहाड़ना। 3. गुस्से में आदमी का बहुत कडक़ती आवाज़ में बोलना। **उदा.** क्यों गरज रहे हो, चुप हो जाओ।

गरदन/गर्दन *स्त्री. (फा.)* प्राणियों के सिर और धड़ को जोड़ने वाला लंबोतर अंग। **पर्या.** गला, ग्रीवा। **मुहा.** गरदन झुकाना=बात मान लेना, अधीनता स्वीकार करना। गरदन मोड़ना=मार डालने की हद तक तकलीफ देना। गरदन उड़ाना=गला काटकर मार डालना।

गरम/गर्म-धारा *स्त्री.* भूगो. महासागरों के नीचे विषुवतीय क्षेत्रों से ध्रुवीय क्षेत्रों की ओर बहने वाली गर्म जल की धारा। (हॉट करेंट्स) **तु**. ठंडी धाराएँ-ध्रुवीय क्षेत्र से विषुवतीय क्षेत्र की ओर बहने वाली धाराएँ।

गरमी/गर्मी *स्त्री.(फा.)* गरम होने का भाव। **पर्या.** उष्णता, ताप। **उदा.** सूर्य की गरमी, आग की गरमी। ला.अर्थ क्रोध। **उदा.** गरमी क्यों खा रहे/दिखा रहे हो।

गरारा *पुं. [फ़ा. ग़रार:]* मुख में पानी भरकर और मुख ऊपर करके 'गर-गर' की आवाज करते हुए कुल्ला करना। **जैसे**: गले की बीमारी में नमकयुक्त उष्ण जल का गरारा करना लाभप्रद होता है।

गरिमा *स्त्री. (तत्.)* 1. भारीपन, 2. महत्व, बड़प्पन, महिमा, 3. श्रेष्ठता 4. आठ सिद्धियों में से एक सिद्धि जिससे साधक अपने आप को स्वेच्छा से भारी या हल्का कर सकता है।

गरिमामय *वि.(तत्.) स्त्री.* गरिमामयी। गरिमा से युक्त, गरिमा से पूर्ण। **उदा.** इस सम्मेलन में राष्ट्रपति की गरिमामयी उपस्थिति से हम अपने आपको सौभाग्यशाली मानते हैं।

गरियार *वि. [तद्< गुरु]* जो काम करने में सुस्त या आलसी हो। **जैसे**. उस किसान के दो बैलों में से एक बैल बहुत गरियार है, जो खेत जोतने के समय बैठ जाता है। **टि.** ग्रामीण प्रयोग।

गरीबी रेखा *स्त्री. (तत्.)* आय आमदनी के आधार पर सरकार द्वारा स्थिर की गई वह सीमा, जिससे नीचे आने वाले लोग 'गरीब' माने जाते हैं। **टि.** ऐसे गरीब लोगों को सरकार की ओर से कुछ विशेष सुविधाएँ दी जाती हैं।

गर्जन *पुं.(तत्.)* ऊँची भारी आवाज़ में बोलना, ऐसी आवाज़ में बोलना जो दूर तक सुनाई। **दे.** भय उत्पन्न करने वाली आवाज़। **मुहा.** गर्जन-तर्जन=ज़ोर-ज़ोर से क्रोधपूर्वक बोलना, किसी की ओर इशारा करते हुए या किसी को लक्ष्य करके ज़ोर-ज़ोर से बोलना।

गर्जना *स्त्री. (तत्.)* शेर की गर्जना सुनकर बच्चे डर गए।

गर्त *पुं.(तत्.)* आसपास की समतल जमीन की तुलना में गहरा स्थल। **पर्या**. गड्ढा।

गर्तवास [गर्त=गड्ढा+वास=रहना] *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ गड्ढे में रहना। पुराकाल में बुर्ज़होम (वर्तमान कश्मीर में) के लोगों द्वारा रहने के लिए गड्ढे के अंदर बनाए गए घर। गड्ढे के अंदर जाने के लिए सीढियाँ भी बनाई जाती थीं।

गर्भ *पुं.(तत्.)* 1. मूल अर्थ अंदर का भाग। **उदा.** मातृ-गर्भ (माँ का गर्भाशय); समुद्र के गर्भ में कई प्रकार की उपयोगी वनस्पतियाँ मिलती हैं; मंदिर का गर्भ-गृह (जिसमें देव प्रतिमा स्थापित होती हैं।) foetus

गर्भगृह *पुं. (तत्.)* मंदिर में रखी गई मूर्ति के नीचे, या कभी-कभी के साथ बना कक्ष, जहाँ पुजारी तो पूजा-अर्चना के लिए प्रवेश करता है

किंतु सामान्यत: दर्शनार्थियों को वहाँ प्रवेश करने की अनुमति नहीं होती। sanctum sanctorum

गर्भाशय [गर्भ + आशय] *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ गर्भ विकसित होने का स्थल। **जीव.** अंडवाहिनी का फूला हुआ अंतिम भाग जिसमें एक या अनेक अंडे या भ्रूण स्थित होते हैं। स्तनियों में यहाँ भ्रूण का परिवर्धन होता है।

गर्भाशय *पुं.(तत्.)* स्त्रियों, मादा पशुओं के पेट के अंदर का वह हिस्सा जिसमें जन्म से पहले बच्चा एक निश्चित कालावधि तक पलता है। **पर्या.** बच्चादानी utrass

गर्व *पुं. (तत्)* दूसरों की तुलना में अपने या अपने से संबंद्ध किसी भी वस्तु, व्यक्ति, देश आदि की श्रेष्ठता की वजह से मन में होने वाली खुशी या संतोष की भावना। **उदा.** हमें अपने देश पर गर्व है। pride **टि.** इसे गुण माना जाता है, अवगुण नहीं। 2. किसी के अच्छे गुण, कार्य आदि का स्मरण कर उसके बारे में वक्ता के मन में उठने वाली श्रेष्ठता की भावना। **उदा.** (i) हमें अपने देश पर गर्व है। (ii) महाराणा प्रताप/शहीद भगतसिंह आदि का नाम लेते ही हमारा सीना गर्व से फूल जाता है। 3. अहंकार, घमंड, शेखी आदि का सूचक हीनतावाचक शब्द जिससे बचे रहने की सलाह प्राय: दी जाती है।

ग़लत *वि.(अर.)* 1. जो ठीक न हो, अशुद्ध। 2. असत्य, मिथ्या। **विलो.** सही।

गलतफहमी *स्त्री.(फा.)* किसी के द्वारा कही अच्छी बात का कुछ और ही अर्थ समझना; बात का मर्म समझने में धोखा होना। (जो प्राय: श्रोता को अनुचित लगता है।)

गलियारा *पुं. (देश.)* गली जैसा संकरा, लंबा और सीधा रास्ता। जो (i) आवास में एक कमरे के दरवाजे से दूसरे कमरे में; (ii) रेल के डिब्बे में प्रवेश द्वार से कई बैठने/सोने के कक्षों (खाँचों) में और (iii) दो देशों के बीच आने-जाने वाले मार्ग का सूचक है। corridor

गली *स्त्री. (तत्.)* बस्ती का तंग रास्ता। **पर्या.** कूचा, सरणी lane, street **मुहा.** गली-गली में मारे-मारे फिरना=इधर-उधर भटकना। **तु.** सडक़, मार्ग, राजमार्ग।

गलीचा[1] *पुं. (अर.)* ऊन या सूत से बना भारी कलात्मक और महँगा बिछावन (जो प्राय: बैठक (आधुनिक ड्राइंगरूम) में बिछाया जाता है।) **पर्या.** कालीन।

गलीचा/ग़लीचा[2] *पुं.(तुर्की ग़लीच:)* फर्श पर बिछाने का मोटा व कोमल बिछौना। **पर्या.** कालीन।

गवाह *पुं. (तत्.)* किसी घटना या दावे के प्रामाणिक या अप्रमाणिक होने के साक्ष्य रूप में बयान(गवाही) देने वाला व्यक्ति। **दे.** गवाही।

गवाह *पुं.(फा.)* किसी विवाद्य विषय में पक्ष अथवा विपक्ष की ओर से प्रस्तुत व्यक्ति जो संबंधित के बारे में अपनी निजी जानकारी या आँखों देखा हाल बताए। **पर्या.** साक्षी विटनेस

गवाही *स्त्री. (फ़ा.)* (अदालत में) किसी घटना या दावे के साक्ष्य रूप में गवाह द्वारा दिया गया बयान। **पर्या.** साक्ष्य।

गवैया *[तद्.< गातृक] वि./पुं.* गाने वाला, गायक।

ग़श *पुं.(अर.)* मूर्छा या बेहोशी। **जैसे**: वह अकस्मात् भयानक दुर्घटना देखकर ग़श खाकर गिर गया।

गहन *वि. (तत्.)* 1. जहाँ प्रवेश कठिनाई से हो, घना। **जैसे**: गहनवन। 2. परिश्रमपूर्वक और गहराई से किया गया, गहरा, गंभीर। **जैसे**: गहन अध्ययन 3. जिसे समझना कठिन हो, कठिन, दुरूह। **जैसे**: गहन विषय।

गहमागहमी *स्त्री. (देश.)* लोगों का आना-जाना, परस्पर बातें करना, आदि-आदि। **जैसे**: गहमागहमी भरा माहौल। **उदा.** शादी की गहमागहमी के माहौल में मैं थोड़ा भी आराम नहीं कर सका। **पर्या.** चहल-पहल, रौनक।

गहरा *[तद्.< गंभीर] वि.* 1. जिसकी थाह अधिक हो, ऐसा (पानी); अंदर की ओर फैला हुआ। 2. जिसका विस्तार नीचे की ओर अधिक हो, ऐसा (गड्ढा) **मुहा.** गहरा आदमी=चतुर, आदमी (जो अपने मन के रहस्य छिपाए) गहरी घुटना/छनना=गहरी मित्रता, घनिष्ठ होना। गहरे जाना=किसी बात की गहराई में जाना।

गहराई *स्त्री.* 1. ऊपरी तल से भीतरी तल तक की दूरी। **उदा.** इस तालाब की अधिकतम गहराई 70 फुट है; चार फुट गहराई वाला गड्ढा खोदो। 2. जिसे जानना कठिन हो। **उदा.** इस व्यक्ति के मन की गहराई कोई नहीं भाँप सकता। 3. गहन

अध्ययन। **उदा.** मैंने रामचरित मानस का गहराई से अध्ययन किया है।

गहराना *अ.क्रि. (तद्.)* 1. गहरा होना, 2. घना होते जाना। **उदा.** आसमान में बादल गहराने लगे हैं।

गह्वर *वि. (तत्.)* गहरा और अँधेरा खाईनुमा गडढ़ा जहाँ वस्तुओं को छिपाकर रखा जा सके या छिपकर रहा जा सके। **उदा.** गुफा, कंदरा, खोह।

गात *पुं.[तद्<*गात्र] 1. देह, शरीर। 2. शरीर का अंग। **जैसे:** गंगा स्नान से गात निर्मल हो गया, हृदय हर्ष से भर गया। **टि.** काव्य में प्रयोग।

गाथा *स्त्री. (तत्)* 1. (हिंदी साहित्य के आरंभिक काल की) वह पद्यात्मक रचना जिसमें वीर नायकों का विस्तृत विवरण प्रभावोत्पादक शैली में गाया जाता था। बैलेड 2. प्राकृत भाषा में एक छंद का नाम। 3. प्रचलित। सा.अर्थ कोई भी कथा, कहानी या वृतांत (उलाहना के रूप में प्रयुक्त)। **जैसे**: तुम यह कौन सी गाथा गाने लगे?

गाद *स्त्री.(तत्.)* तरल पदार्थ (पानी, तेल आदि) के नीचे बैठी अथवा उसके बह जाने पर जमा हुई गाढ़ी मैल, तलछट।

गान *पुं.(तत्.)* वह जो गाया जा सके; गाई जा सकने वाली काव्य रचना। **पर्या.** गीत। **उदा.** राष्ट्रगान (**टि.** भारतीय संदर्भ में राष्ट्रगान 'नेशनल एंथम' (जन गण मन....) और राष्ट्रगीत national song (वंदे मारतम्) में तकनीकी दृष्टि से भेद किया जाता है।

गायक *वि./पुं.(तत्.)* 1. गायन करने वाला, गाने वाला। 2. गाने की विद्या में निपुण। **पर्या.** गवैया।

गायन *पुं.(तत्.)* 1. गाने की क्रिया या भाव। **उदा.** भजन गायन। 2. वह रचना जो गाई जा सके या गाई गई हो। **पर्या.** गाना, गीत, गान।

गायब *वि.(अर.)* 1. जो पहले दिखाई दे रहा हो, पर अब नहीं दीखता हो। अदृश्य। 2. जो एकाएक अदृश्य हो गया हो। **पर्या.** लुप्त, अन्तर्धान। **जैसे:** हमारे देखते-देखते वह कहीं गायब हो गया।

गारा *पुं. (देश.)* 1. भवन बनाते समय ईंटो को जोड़ने के लिए प्रयुक्त रेत या चूना, मिट्टी आदि का पानी सना लसदार मिश्रण, जिसे 'मसाला' भी कहा जाता है। 2. चिकनी काली मिट्टी का पानी सना लसदार कंकड या गांठ रहित मिश्रण जिससे कुम्हार मिट्टी के बर्तन गढ़ता है।

गारी *स्त्री. [ब्रज<*गाली] 1. क्रोध में कहे गए दुर्वचन या अश्लील वचन। 2. लोकगीतों में हास्य-व्यंग्य प्रधान गारियाँ (गालियाँ) जिनका बुरा नहीं माना जाता।

गॉल्जीकाय *स्त्री. (अं.+तत्.)* **प्राणि.** कोशिकाओं में पाई जाने वाली प्रोटीन तथा लिपॉइडकी पटलिकाओं से बनी संरचना या अंगक, जो संभवत: कुछ स्रावों के बनने में योगदान देता है। golgi trodies

गाहन *सं.क्रि./पुं.* कृषि पक जाने पर काटी गई फसल से बीजों/दानों को भूसी से अलग करने की क्रिया। अब यह कार्य थ्रेशर या मशीन द्वारा किया जाता है।

गाहनयंत्र *पुं.* **दे.** गाहना।

गाहना *स.क्रि.(देश)* अनाज के डंठलों से दाने अलग करने की क्रिया। थ्रैशिंग

गिड़गिड़ाना *अ.क्रि.(देश.)* अत्यधिक दीनता प्रदर्शित कर अनुनय-विनय करना। **उदा.** चोर गिड़गिड़ाता रहा किंतु पुलिस ने उसकी एक न सुनी और ले जाकर थाने में बद कर दिया।

गिद्दा *वि.(देश.)* पंजाब का एक लोकनृत्य जो प्राय: स्त्रियों द्वारा मांगलिक उत्सवों पर किया जाता है। **तु.** भांगड़ा।

गिद्ध *पुं.(तद्.< गृध्र)* एक बड़े आकार का शिकारी पक्षी जो प्राय: मृत शरीर को खाता है तथा दृष्टिशक्ति तीक्ष्ण होने के कारण बहुत ऊँचाई से भी अपने शिकार/खाद्य को देख लेता है। vulture

गिरधर *(तद्<*गिरिधर) *पु.* शा.अर्थ वि. पर्वत को धारण करने वाला। बहुव्रीहि समास-गोवर्धन पर्वत धारण करने वाले यानी अपनी उंगली पर उठा लेने वाले श्रीकृष्ण।

गिरफ़्तार *वि.(फा.)* 1. जिसे पकड़ लिया गया हो, जिसे सैनिकों या पुलिस द्वारा कब्ज़े में कर लिया गया हो। 2. किसी विपत्ति, बीमारी या लत आदि में फंसा हुआ।

गिरफ़्तारी *स्त्री. (फ़ार)* गिरफ़्तार किए जाने की क्रिया या स्थिति।

गिरि *पुं. (तत्.)* पर्वत, पहाड़। **जैसे**: मलय गिरि।

गिरोह *पुं. (फा.)* लोगों का समूह या झुंड। **पर्या.** टोली। **टि.** प्राय: बुरे लोगों की टोली के अर्थ में प्रयुक्त।

गिरोहबंदी *स्त्री. (फा.)* गिरोह बनाने का कार्य। **दे.** गिरोह।

गिलट *पुं. [अं.< गिल्ड]* 1. एक कम मूल्यवाली धातु (निकल) जो चाँदी जैसी दिखती है और इसलिए चाँदी में इसकी मिलावट भी कर दी जाती है। 2. सोने-चाँदी का मुलम्मा।

गिल्ली-डंडा [गिल्ली+डंडा] *पुं.(तद्.)* बच्चों का एक खेल विशेष जिसमें लकड़ी से बनी चार अंगुल की गिल्ली और हाथ भर लंबा डंडा काम आता है।

गीतकार *वि./पुं.(तत्.)* गीत लिखने वाला, ऐसा कवि जो गाने योग्य कविताएँ लिखता हो। lyric poet

गुंजन *पुं.(तत्.)* पक्षियों और कीट-पतंगों की समेकित मधुर ध्वनि। **जैसे**: भौंरों का गुंजन।

गुंजाइश *स्त्री.(तत्.)* किसी कार्य के घटित होने के लिए आवश्यक पर्याप्त स्थान, समय, धन, सुविधा आदि की स्थिति। **उदा.** 1. इस सभा भवन में सौ लोगों के बैठने की गुंजाइश है। 2. मेरे लिए इस समय और अधिक खर्च करने के लिए गुंजाइश नहीं है।

गुंडई *स्त्री.(हिं. गुंडा)* 1. गुंडा होने की अवस्था या भाव, गुंडापन, गुंडागर्दी। 2. दुष्टता, नृशंसता, शरारत। **उदा.** थोड़ी सी बात को लेकर वे कल गुंडई पर उतर आये।

गुंडा *[तद् <* गुण्डक/गण्डक] *वि.* 1. उद्दंड व दुश्चरित्र। 2. परपीडक, 3. बदमाश। **उदा.** आजकल गुंडों का खौफ सब जगह व्याप्त है।

गुंबद *पुं.(फा.)* उलटे घड़े के आकार की अर्धगोलाकार छत। **जैसे**: ताजमहल का गुबंद। (डोम)

गुग्गल *पुं.(तत्.)* < गुग्गुल) वृक्ष विशेष का गोंद जिसे सुगंध के लिए जलाते हैं।

गुज़रना *अ.क्रि. (फा.)* 1. बीतना, **उदा.** समय गुज़रना। 2. (से होकर) निकलना/जाना। **उदा.** हरिद्वार जाते समय मैं दिल्ली स्टेशन होकर गुजरा।

गुज़रना *अ.क्रि. (फा.)* समय बीताना। **उदा.** इतना समय गुजर गया और पता ही नहीं चला। किसी स्थान से होकर निकलना। **उदा.** यात्रा पर जाते हुए जब हम तुम्हारे गांव से गुजरेंगे तो थोड़ी देर के लिए वहाँ जरूर रूकेंगे। **मुहा.** (पर) गुज़रना=विपत्ति पड़ना। **उदा.** मेरे ऊपर क्या गुज़र रही है मैं ही जानता हूँ। गुज़रना/गुज़र जाना=मृत्यु हो जाना। **उदा.** पिताजी को गुज़रे छह महीने हो गए; लालाजी कल रात गुज़र गए।

गुज़ारना *स.क्रि.(फा.)* 1. बिताना, **जैसे:** समय गुजारना। 2. (से होकर) निकालना। जैसे-सुई के छेद से धागा गुजारना।

गुज़रना *अ.क्रि.(फा.)* 1. बीतना। उदा. समय गुजरना 2. (से होकर निकलना/जाना। **उदा.** हरिद्वार जाते समय मैं दिल्ली स्टेशन होकर गुज़रा)।

गुज़र-बसर *पुं.(फा.)* मूल.अर्थ समय बीतना। *सा.अर्थ*-जीवन-निर्वाह, गुज़ारा। **उदा.** महंगाई के दिनों में गरीबों का गुज़र-बसर बड़ी मुश्किल से हो पाता है।

गुज़ारा *पुं.(फा.)* 1. भरण-पोषण जीवन-निर्वाह। **उदा.** तुम नौकरी नहीं करते हो, फिर तुम्हारे परिवार का गुज़ारा कैसे होता है? 2. जीवन-निर्वाह के लिए मिलने वाला धन। **उदा.** निलंबित होने पर उसे गुज़ारा भत्ता मिलने लगा।

गुटनिरपेक्ष *[तद्<*गोष्ठ+सं. निरपेक्ष] *पुं.* 1. जो किसी विशेष गुट या दल से जुड़ा हुआ न हो तथा विचार करते समय किसी गुट या विशेष विचारधारा से प्रभावित न हो। 2. समान अंतराष्ट्रीय उद्देश्यों और हितों वाले कुछ राष्ट्राध्यक्षों की मंडली जो महाशक्ति वाले राष्ट्रमंडल में शामिल न होकर, स्वतंत्र रूप से काम करती हैं। विशेष-1961 में यूगोस्लाविया में वहाँ के राष्ट्रपति टीटो, मिस्र के राष्ट्रपति 'कर्नल नासिर' तथा भारत के प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू ने मिलकर अंतर्राष्ट्रीय गुटनिरपेक्ष संगठन बनाया। बाद में अफ्रीका, पाकिस्तान आदि एशियाई देश भी इसमें शामिल हो गए। इसमें भारत की प्रमुख भूमिका थी। ये देश संयुक्त राज्य अमेरिका और तत्कालीन सोवियत यूनियन से किसी भी रूप में संबंद्ध नहीं थे।

गुटर-गूँ *[देश.* अनु.] *स्त्री.* 1. कबूतर की आवाज़। 2. दो लोगों के बीच परस्पर घुल-मिलकर एकांत में हुई बातचीत। (विशेष रूप से प्रेमालाप)।

गुड़ *[तद्<*गुड] *पुं.* ईख या खजूर के रस को पकाकर गाढ़ा किया हुआ मीठे स्वाद वाला ठोस पदार्थ। **मुहा.** गुड़-गोबर होना/करना=काम का बिगड़ जाना; काम (को) बिगाड़ देना। गूंगे का गुड़=सुखद बात किंतु जिसका वर्णन न किया जा सके।

गुड़गुड़ाना *अ.क्रि./स.क्रि. (अनु.)* 'गुड़-गुड़' जैसी आवाज़ निकलना/निकालना। **जैसे**: हुक्का गुड़गुड़ाना। **तु.** गड़गड़ाना।

गुड़िया *स्त्री.(देश.)* 1. मनुष्य की आकृति वाला कोई खिलौना जिससे बच्चे खेलते हैं। dall **जैसे**: गुडियाघर dalls museum 2. खूब सजी हुई कोई लकड़ी या प्लास्टिक की लडकी नुमा आकृति। **मुहा.** गुडियों का खेल=बहुत ही सरल काम।

गुण *पुं.(तत्.)* किसी में पाई जाने वाली विशेषता जिससे वह सामान्य की अपेक्षा अलग लगे; प्रशंसनीय बात, विशेषता। **उदा.** लाठी में गुण बहुत है, सदा राखिए संग। **विलो.** अवगुण, दोष।

गुणक *पुं.(तत्.)* **गणि.** वह संख्या जिससे दूसरी संख्या को गुणा किया जाए। **जैसे:** 12x4 = 48 में 4 गुणक है। multiplayer

गुणगान (गुण+गान) *पुं.(तत्.)* किसी के गुणों का बखान; यानी बार-बार कथन या वर्णन।

गुणज *पुं.(तत्.)* **गणि.** वह संख्या जो किसी पूर्णांक और एक अन्य पूर्णांक का गुणनफल हो। multipal

गुणता *स्त्री.(तत्.)* किसी वस्तु की सर्वमान्य कसौटी के अनुरूप होने की स्थिति या भाव। quality

गुणता/गुणवत्ता नियंत्रण *पुं.(तत्.)* उत्पादन के विभिन्न चरणो में कड़ी जाँच के जरिए वह सुनिश्चित करते रहना कि वस्तु पूर्वानिर्धारित मानकों के अनुसार ही तैयार हो रही है। quality control

गुणधर्म [गुण+धर्म] *पुं.(तत्.)* किसी व्यक्ति, वस्तु या पदार्थ में निहित नैसर्गिक गुण या लक्षण। **उदा.** 'विवेक' मनुष्य का, 'दहन' अग्नि का और 'बहना' द्रव का गुणधर्म है। property

गुणन *पुं.(तत्.)* **गणि.** वह गणितीय संक्रिया जिसके अनुसार दो अलग-अलग दी गई पूर्णांक संख्याओं में से किसी एक संख्या को दूसरी (अन्य) संख्या के बराबर दोहरा कर परिणाम निकाला जाता है। इसका संक्रिया का चिह् न x है। **जैसे:** 4x3 = 4+4+4 या 3+3+3+3 multiplaction

गुणनखंड *पुं.(तत्.)* **गणि.** दी गई संख्या को विभाजित करने वाली एकाधिक संख्याओं में कोई एक। **जैसे**: 12 = 4x3, या 3x4 या 2x2x3 factor

गुणनफल *पुं.(तत्.)* **गणि.** दो या दो से अधिक संख्याओं पर गुणन संक्रिया लागू करने पर प्राप्त फल। **जैसे**: 4x3 = 12, 4x3x2 = 24 आदि। product

गुणवत्ता *स्त्री.(तत्.)* किसी वस्तु की उत्कृष्टता, शुद्धता आदि सर्वमान्य कसौटियों के अनुरूप होने की स्थिति या भाव। **पर्या.** गुणता। quality

गुणसूत्र *पुं.(तत्.)* व्यु.अर्थ गुणों का वहन करने वाला और धागे के आकार वाला पदार्थ। **जीव.** कोशिका कैंद्रकों में विद्यमान सूक्ष्म सघन धागे के समान आनुवांशिकता की वाहक इकाईयाँ। जीव विशेष में इनकी संख्या नियत होती है। chromosome

गुणात्मक [गुण+आत्मक] *वि.(तत्)* 1. गुणों के अनुसार, **जैसे:** गुणात्मक दृष्टिकोण qualititye 2. (गणि.) गुणन की प्रक्रिया वाला, जैसे-गुणात्मक श्रेणी - 1, 2, 4, 8.....। (जीव. वि.) गुणात्मक सूत्र।

गुणानुक्रम [गुण+अनुक्रम] *पुं.(तत्.)* गुण, योग्यता, श्रेष्ठता आदि के आधार पर प्रथम, द्वितीय, तृतीय आदि स्थानों का निर्धारित क्रम।

गुत्थी *[<*गुथना] *स्त्री.* 1. इकट्ठी हो गई कोई रस्सी, डोरी, धागा आदि जिसे सीधा या अलग-अलग करना कठिन हो रहा हो। **पर्या.** उलझन। entanglement

गुदगुदा *[<*गोदना/तद्.<गुर्दगुर्दक] *वि.* ऐसे कोमल अंगों वाला जिन्हें छूने या सहलाने मात्र से गुदगुदी का अनुभव हो। **दे.** गुदगुदी।

गुदगुदाना *(<*गुर्दगुर्दयति) *स.क्रि.* किसी के कोमल अंगों को छूने या सहलाने की क्रिया जिसके फलस्वरूप उसे गुदगुदी महसूस हो। **दे.** गुदगुदी।

गुदगुदी [<गोदना/गुर्दिका गुर्द] *स्त्री.* 1. किसी के कोमल अंगों को छूने या सहलाने मात्र से उसे

होने वाला मधुर अनुभव। 2. मधुर स्मृतियों में खो जाने से होने वाला अनुभव। 3. मधुर भविष्य का चिंतन करते समय होने वाली उत्कंठा।

गुदड़ी *[देश.*<क्षुद्र] *स्त्री.* फटे-पुराने कपड़ों को सीकर बनाया गया बिछावन या ओढ़न। **पर्या.** कन्था। **मुहा.** गुदड़ी का लाल=निर्धन परिवार में जन्मा गुणी बालक।

गुदा *स्त्री.(तत्.)* (मलद्वार) आहार नाल के अंतिम भाग, मलाशय (खेतम) का बाहर की ओर खुलने वाला छिद्र जिससे होकर मल बाहर निकलता है। **पर्या**. मलद्वार। anus

गुप्त *वि. (तत्.)* छिपा हुआ., जिसे लोग न जानते हों या दूसरे लोगों से छिपाकर किया गया हो **जैसे**: गुप्तधन, गुप्तमार्ग, गुप्तदान।

गुप्तचर [गुप्त+चर] *पुं.(तत्.)* शा.अर्थ गुप्त रूप से यानी छिपकर चलने वाला अर्थात गोपनीय ढंग से कार्य करने वाला। **राज.** कर्मचारी जो गुप्त रूप से किसी बात का पता लगा कर अपने मालिक (या नियोक्ता) को सही बात की जानकारी उपलब्ध कराए। **पर्या.** जासूस। detective sped

गुफ़ा *स्त्री.(तत्.)* पहाड़ के अंदर बना प्राकृतिक या किसी सतह के नीचे कृत्रिम रूप से निर्मित लंबाई-चौड़ाई वाला स्थान। **जैसे**: शेर की गुफ़ा, अजंता-ऐलोरा की गुफाएँ। **पर्या**. कंदरा।

गुमटी *[तद्.*<गुल्मटिका] *स्त्री.* 1. लकड़ी, लोहे की चादरों से बनी दरवाजों से युक्त वह अस्थायी दूकान जिसे स्थानांतरित किया जा सकता है। **पर्या.** खोखा। 2. चौकीदार आदि के बैठने का इसी प्रकार का कमरा।

गुमराह *वि.(फ़ा.)* शा.अर्थ 1. रास्ते से भटका; गुम हो गई (खो गई) राह। 2. संमर्ग या नीति मार्ग से च्युत।

गुमसुम [गुम=खोया हुआ+सुम=गूंगा-बहरा] *पुं.(अर.)* 1. वह व्यक्ति जो किसी शोक या चिंता या किसी की स्मृति में इतना खो जाए कि कुछ बोल-सुन न सके। 2. शांत, नि:स्तब्ध व्यक्ति जो एकांत चिंतन में लगा हो। **जैसे**: कवि, साहित्यकार आदि।

गुमान *पुं.(फ़ा.)* अपने को दूसरों से श्रेष्ठ समझने की भावना जिसे प्राय: अनुचित समझा जाता है। **पर्या.** घमंड, अहंकार।

गुर *पुं.(तत्.)* कठिन काम संपन्न करने का सही, संक्षिप्त व सरल उपाय या तरीका; युक्ति। **उदा.** अपना काम निकलने के गुर कोई तुमसे सीखे।

गुरु *पुं.(तत्.)* 1. मंत्र दीक्षा या ज्ञान का मार्ग बताने वाला व्यक्ति। 2. छात्रों को पढ़ाने वाला, शिक्षक, अध्यापक। **पर्या.** आचार्य, उस्ताद। 3. माता-पिता या बड़ी आयु के लोग। 4. बृहस्पति ग्रह। (वि.) भारी, वजनी 5. छंद में मात्रा के लिए प्रयुक्त "S" गुरु।

गुरुत्व बल [गुरुत्व+बल] *पुं.(तत्.)* शा.अर्थ भारीपन की शक्ति। **भू.** पृथ्वी की वह गुरूत्वाकर्षण शक्ति जिससे वस्तुएँ आसमान से पृथ्वी की ओर आकृष्ट होकर उस पर गिरती हैं। gravitation, gravitational force

गुरुत्वाकर्षण [गुरूत्व+आकर्षण] *पुं.(तत्.)* शा.अर्थ (परस्पर) आकर्षित करने का सूचक भाव। 1. खगोलीय पिंडों का वह प्राकृतिक गुणधर्म जिससे वे एक-दूसरे को अपनी ओर आकृष्ट करते हैं। 2. पृथ्वी का वह बल जो उसके गुरुत्वीय क्षेत्र में किसी वस्तु को स्वत: अपनी ओर आकृष्ट कर लेता है। gravitation

गुरूमंत्र *पुं.(तत्.)* 1. वह मंत्र जो गुरु के द्वारा किसी को अपना शिष्य बनाते समय दिया जाता है, इसे प्राय: गुप्त रखा जाता है। 2. ला.अर्थ किसी व्यक्ति के द्वारा सफलता प्राप्ति के लिए या विपत्ति से बचाव के लिए बताया गया कोई गोपनीय विशिष्ट उपाय। **उदा.** मैं सत्ता प्राप्ति का तुम्हें गुरुमंत्र बताता हूँ ध्यान से सुनो।

गुरुमाता *स्त्री.(तत्.)* 1. गुरु की पत्नी। 2. धार्मिक उपदेश देने वाली महिला जिसे भक्तगण माता का दर्जा दे देते है। **पर्या.** गुरुमाँ।

गुल *पुं.(फ़ा.)* 1. फूल, पुष्प। मुहा. गुल खिलाना=(व्यंग्य में) कोई अनोखा काम करना। 2. दीपक की बत्ती। **मुहा.** चिराग गुल करना=दीपक बुझाना।

गुलदस्ता [गुल=फूल+दस्ता=हाथों में रहने वाला] *पुं.(फ़ा.)* फूल-पत्तियों का बनाया हुआ सुंदर गुच्छा या समूह। **पर्या.** फूलों का गुच्छा, पुष्पगुच्छ।

गुलदान [गुल=फूल+दान=रखने का पात्र] *पुं.(फा.)* वह पात्र जिसमें शोभा के लिए फूल पत्तियाँ सजा कर रखे जाते हैं।

गुलशन *पुं.* बाग, वाटिका, उद्यान।

गुलिका *स्त्री.(तत्.)* 1. फलियों वाले पौधों की जड़ों की ग्रंथियाँ जिसमें नाइट्रोजन को स्थिर करने वाले जीवाणु होते हैं। 2. एक छोटा कंद tuber 3. कंद (ट्यूबर) जैसी प्रतीत होने वाली जड़ जिससे अपस्थानिक मूल (Adventitions root) निकलते रहते हैं। Tubercle, tuberculum

गुल्म *पुं.(तत्.)* 1. घने वृक्षों या झाड़ियों का समूह। **पर्या.** झुरमुट। 2. तिल्ली में होने वाली गांठ (एक रोग) 3. सैनिकों की टुकड़ी विशेष।

गुल्लक *[तद्. <गोलक] स्त्री.* 1. मूलत: मिट्टी का बना वह गोल और बंदमुख वाला पात्र जिसके सिर से सिक्के डालकर बच्चे पुराने समय में धन संग्रह किया करते हैं। आधुनिक युग में इस पात्र ने प्लास्टिक के खिलौने अथवा टिन के रंग-बिरंगे डिब्बे का रूप ले लिया है। 2. दुकानों में प्रयुक्त प्रतिदिन की आय का संग्रह करने वाली छोटी पेटी।

गुल्ली/गिल्ली *[तद्<गुलिका=गुठली]* स्त्री. 1. किसी फल की गुठली। 2. लकड़ी के दोनों सिरों पर नुकीला गढ़ा हुआ छोटा टुकड़ा, जिससे 'गुल्ली-डंडा' नामक खेल खेला जाता है।

गुसलखाना [गुसल/गुस्ल=स्नान+ख़ाना=घर] *पुं. (अर.+ फा.)* नहाने का कमरा। **पर्या.** स्नानघर। bathroom

गुस्सा *पुं.(अर.)* किसी के प्रति बहुत अधिक अप्रसन्नता की भावना जो शारीरिक हाव-भावों से प्रकट हो जाती है। **पर्या.** क्रोध, कोप। **मुहा.** गुस्सा चढ़ना=क्रोध से आवेश में आना। गुस्सा उतरना/निकलना=क्रोध शांत हो जाना। गुस्सा पीना=संयमपूर्वक क्रोध को दबा लेना।

गुहार *स्त्री.(देश.)* अचानक आई किसी मुसीबत से छुटकारा पाने या बचाव के लिए की जाने वाली पुकार। **जैसे**: घर में डाकुओं के घुसने पर वृद्ध महिला ने रक्षा या बचाव के लिए गुहार लगाई।

गुहय *वि.(तत्.)* 1. जो छिपने या छिपाने योग्य हो, गोपनीय। 2. जिसका समझना सरल न हो, गूढ़। 3. छिपा हुआ या छिपाया हुआ, गुप्त। **जैसे**: गुहय अंग, गुहय बात। 4. रहस्यमय, **जैसे:** यह विद्या अत्यंत गुह्य है। *(पुं.)* शरीर के गुप्त अंग, रहस्य।

गूँथना *(तद्<ग्रथन) स.क्रि.* 1. एक-दूसरे के साथ मिलाना। **जैसे**: बाल गूँथना, चोटी गूँथना। 2. धागे में पिरोकर माला बनाना। **जैसे**: फूल गूँथना, मोती गूँथना।

गूदा *[<गुद्द-फ़ार.] पुं.* पके हुए फल का छिलके और गुठली के बीच का कुछ ठोस पर मुलायम भाग। pulp

गृहकलह *पुं.(तत्.)* 1. घर या परिवार के सदस्यों के बीच आपसी लड़ाई-झगड़ा। 2. किसी राजनीतिक दल के गुटों के बीच चल रहा सत्ता-संघर्ष।

गृहकार्य (गृह+कार्य) *पुं.(तत्.)* 1. घर का काम, घर में किए जाने वाले सारे काम। **उदा.** यह बालिका गृहकार्य में निपुण है। 2. अध्यापक द्वारा छात्रों को घर में करने के लिए दिया जाने वाला कार्य। **उदा.** तुम आज गृहकार्य करके क्यों नहीं लाए? home work

गृहनगर *पुं.(तत्.)* 1. मूल निवास स्थान।, 2. व्यक्ति द्वारा नियमानुसार स्वत: घोषित उस नगर का नाम जहाँ कर्मचारी को उसका नियोजक/विद्यालय आने-जाने के लिए आर्थिक सुविधा प्रदान करता है। home town

गृहपत्नी [गृह+पत्नी] *स्त्री.(तत्.)* घर की मालकिन जो घर के सारे कामों की देखभाल करती है। **पर्या.** गृहिणी, गृहस्वामिनी।

गृहप्रवेश *पुं.(तत्.)* नया घर बन जाने या खरीद लेने के बाद शुभ मुहूर्त में पूजा-पाठ करके पहली बार उसमें निवास करने की रस्म।

गृहयुद्ध (गृह+युद्ध) *पुं.(तत्.)* 1. घर की लड़ाई। **पर्या.** गृहकलह। 2. एक ही देश के विभिन्न समूहों के बीच की आपसी लड़ाई। civil war

गृहस्थ [गृह+स्थ] *पुं.(तत्.)* शा.अर्थ घर में स्थित। सा.अर्थ गृहस्थाश्रम मे स्थित व्यक्ति; जो घरबार चलाते हुए परिवार का पालन-पोषण करता है। **पर्या.** घरबारी।

गृहस्थाश्रम [गृहस्थ+आश्रम] *पुं. (तत्.)* भारतीय संस्कृति के अनुसार मनुष्य जीवन के चार आश्रमों (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संयास) मे से सबसे महत्वपूर्ण दूसरा आश्रम। इस आश्रम में व्यक्ति विवाह कर अपने परिवार का पालन-पोषण करता है। अन्य तीनों आश्रम भी किसी-न-किसी रूप में इसी आश्रम पर आश्रित रहते हैं।

गृहस्थी *स्त्री.(तत्.)* गृहस्थ जीवन। **दे.** गृहस्थ।

गृहस्वामिनी *स्त्री.(तत्.)* घर की मालकिन।

गृहस्वामी *पुं.(तत्.)* 1. घर का मालिक, घर के कागज़ात जिसके नाम पर लिखे गए हों। 2. घर का मुखिया।

गृहिणी *स्त्री.(तत्.)* 1. घर की मालकिन; परिवार का पालन-पोषण करने वाली। 2. वह महिला जो कहीं नौकरी न कर केवल घर का कामकाज ही करती हो। house wife

गेट *पुं. (अर.)* 1. किसी भवन, ग्राउंड, उद्यान आदि में प्रवेश के लिए लकड़ी या लोहे का बनाया गया विशेष द्वार, फाटक, दरवाजा। **जैसे**: इस सचिवालय में जाने का गेट उत्तर दिशा में है। 2. प्रवेश मार्ग, प्रवेश द्वार। 3. विशेष ऐतिहासिक स्थान। **जैसे**: इंडिया गेट, दिल्ली गेट आदि।

गेरू *(तद्. < गैरिक) पुं.* 1. एक प्रकार की लाल रंग की खनिज मिट्टी जो पहले गाँवों में घर लीपने-पोतने के काम आती थी। 2. हेमाटाइट की एक लाल मटमैली किस्म जो वर्णक के रूप में प्रयोग में लाई जाती है। **पर्या.** गैरिक।

गैंगरीन *पुं. (अर.)* एक रोग जिसमें किसी अंग को रक्त-आपूर्ति न हो पाने के कारण या विषाणु संक्रमण के परिणामस्वरूप उस अंग के ऊतक नष्ट हो जाते हैं और वह हिस्सा चेतना शून्य हो जाता है। रोग को फैलने से बचाने के लिए उस अंग को काट देना ही उचित उपाय माना जाता है। **पर्या.** कोथ।

गैर *वि. (अर.)* 1. अपने से भिन्न, पराया, दूसरा, अन्य। 2. अपने समाज, बिरादरी, वर्ग आदि से बाहर का। **उपसर्ग** *(अर.)* निषेधसूचक अर्थ देने वाला उपसर्ग। **जैसे:** गैर हाज़िर, गैरज़रूरी।

गैर आबाद *[अर.+ फ़ा] वि.* 1. वह इलाका या घर जहाँ कोई रहता न हो। 2. वह खेत जो जोता-बोया न गया हो।

गैर-इंसाफ़ी *[अर. + अर.] स्त्री.* न्याय न हो पाने की स्थिति।

गैर-कानूनी *[अर. + अर.] वि.* जो विधि सम्मत न हो। **उदा.** सड़क पर अतिक्रमण गैर कानूनी है।

गैर-ज़िम्मेदार *[अर. + अर. + फ़ा.] वि.* (वह व्यक्ति) जिसमें ज़िम्मेदारी (दायित्व निर्वाह) का भाव न के बराबर हो। **पर्या.** अनुत्तरदायी।

गैर-ज़िम्मेदारी *(अर.+अर.+ फ़ा.) स्त्री.* दायित्व-निर्वाह न करने का सूचक भाव।

गैर-सरकारी *(अर.+फा.) वि.* जिस पर सरकार का प्रत्यक्ष नियंत्रण न हो; जो सरकार के अधीन न हो। **जैसे**: गैर-सरकारी सदस्य, गैर-सरकारी संगठन।

गैर हाज़िर *वि. (अर.)* जो हाज़िर न हो, अनुपस्थित।

गैर मिलनसार (व्यक्ति) जिसमें अपने समाज/वर्ग के अन्य सदस्यों से मिलने-जुलने या आत्मीयता बढ़ाने की भावना न्यूनतम हो।

गैर मुनासिब [गैर+मुनासिब=उचित] *वि. (अर.)* जो उपयुक्त या उचित न हो। **पर्या.** अनुचित।

गैलन *वि. (अर.)* इंग्लैंड की नाप-तौल प्रणाली के अनुसार द्रव पदार्थों की धारिता का एक माप जो मीट्रिक प्रणाली के अनुसार लगभग 4.55 लीटर के बराबर होता है। अमेरिकन मीट्रिक प्रणाली में यह 3.79 लीटर के बराबर माना जाता है। एक गैलन = आठ पिंट।

गैस *स्त्री. (अं.)* 1. द्रव्य की हवा जैसी वह अवस्था जिसका अपना कोई निश्चित आकार और आयतन नहीं होता, इसलिए ऑक्सीजन गैस, हाइड्रोजन गैस आदि। **जैसे**: वह जिस प्रकार के पात्र में संचित होती है उसी का आकार और आयतन ग्रहण कर लेती है। 2. ईंधन के रूप में उपलब्ध ज्वलनशील द्रव्य। **जैसे**: रसोई गैस

गैस लाइटर *पुं. (अर.)* गैस जलाने के उपयोग में आने वाला उपकरण।

गॉथ *पुं. (अं.)* मूल रूप में जर्मनी के निवासी जाति जो तीसरी से पाँचवीं शताब्दी के बीच रोमन साम्राज्य में बस गए थे।

गॉथिक *वि.(अं.)* गांथ लोगों से संबंधित। **टि.** गॉथिक भवननिर्माण कला नुकीले मेहराबदार निर्माण के लिए प्रसिद्ध है। गॉथिक संगीतकला रहस्यमय संगीत देने वाली मानी जाती है। गॉथिक लेखन में टेढ़े नुकीले अक्षर लिखे जाते हैं।

गॉल्जीकाय *स्त्री. [अं.+तत्.]* प्राणि-कोशिकाओं में पाई जाने वाली प्रोटीन तथा लिपाइड Lipoid की पटलिकाओं से बनी संरचना या अंगक, जो संभवत: कुछ स्रावों के बनने में योगदान देता है। Golgitrodies

गोंद *पुं. (देश.)* कुछ विशेष पेड़ों के तने पर इकट्ठा होने वाला लेसदार स्राव।

गोकि *(गोया कि) अव्य. (फा.)* **जैसे:** कि, मानो, कैंधो (कविता में) **उदा.** इतना उजाला हो गया, गो कि कई सूरज उग आए हों।

गोठ *[तद्. < गोष्ठ] स्त्री.* 1. गौएँ बाँधकर रखने का स्थान। **पर्या.** गोशाला। 2. मिल जुलकर की गई दावत।

गोता *पुं. (अर.)* गहरे पानी में शरीर को पूरी तरह डुबोना। **पर्या.** डुबकी। **मुहा.** गोता लगाना (कुछ समय के लिए अदृश्य हो जाना)

गोताख़ोर *[अर. + फ़ा.] वि.* 1. गहरे पानी में डुबकी लगाने वाला (व्यक्ति या पक्षी)। 2. नदी, तालाब आदि में डूबते व्यक्ति को बचाने में सिद्धहस्त तैराक। 3. वह खिलाड़ी जो ऊँचाई से पानी में कूदने की प्रतियोगिता में भाग लेता हो।

गोताखोरी *[अर. + फ़ा.] स्त्री.* 1. पानी में गोता लगाने की क्रिया। 2. ऊँचाई से पानी में कूद कर गहराई में पहुँचने के बाद तुरंत पानी की सतह पर आने से संबंधित खेलकूद प्रतियोगिता।

गोतिया *[तद्. < गोत्र] वि.* 1. जो एक ही गोत्र से संबंधित हो, अपने ही गोत्र का। गोती। **जैसे**: यहाँ पर हमारा गोतिया भाई रहता है। **2.** गोत्र संबंधी **जैसे:** यही हमारी गोतिया परंपरा है।

गोतीत *[तद्. > गोऽतीत] वि.* जिसे इंद्रियों से जाना न जा सके। अगोचर। **जैसे:** आत्मा और परमात्मा गोतीत हैं।

गोदाम *(अंग्रेजी से अनुकूलित गोडाउन< मलय भाषा गोदोंग) पुं.* वह स्थान जहाँ बिक्री योग्य सामान निर्माण के बाद और बाज़ार में भेजे जाने से पहले इकट्ठा करके रखा जाता है। ware house, godown

मालगोदाम *पुं.* **दे.** गोदाम।

गोपनीय *वि. (तत्.)* छिपाकर रखने या प्रकट न होने देने के लायक confidential

गोपनीयता *(स्त्री.)* छिपाकर रखने या प्रकट न होने का भाव।

गोपाल *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ गाय पालने वाला; गोपालक। 1. ग्वाला, अहीर। 2. भगवान श्रीकृष्ण का एक नाम।

गोबर *पुं. (देश.)* गाय का मल। ला.अर्थ निकृष्ट वस्तु; सारहीन तत्व।

गोया दे. गोकि

गोरखधंधा *पुं. (देश.)* 1. बुद्धि के खेल; तारों, लकड़ी के टुकड़ों आदि से बनी पहेलियाँ। 2. कोई उलझन-जिसे सुलझाना कठिन हो। **टि.** बाबा गोरखनाथ की बातें लोगों को समझ में न आने वाली और अटपटी लगती थीं। इस आधार पर यह शब्द प्रचलित हो गया।

गोरस *[गो + रस] पुं. (तत्.)* 1. गौ (गौ = गाय) का दूध या इस दूध से बने पदार्थ। 2. गौ (इंद्रिय) जन्य सुख; भोग-विलास आदि।

गोल *वि. (तत्.)* वृत्त के आकार वाला। **गणि.** वह समतल आकृति जिसकी परिधि प्रत्येक बिंदु उसके केंद्र बिंदु से बराबर दूरी पर हो। **उदा.** चक्र, गेंद, पहिया आदि। **मुहा.** गोल होना (= बिना बताए गायब हो जाना)। 2. *पुं. (अं.)* लक्ष्य खेल. फुटबॉल, हॉकी के मैदान का वह चिह्नित स्थल जिसे पार गेंद पहुँचाकर प्रतिपक्षी दल जीत के लिए अधिक अंक अर्जित करना चाहता है।

गोलमाल *[तत्. + अर.] पुं.* 1. धन संबंधी हिसाब-किताब के प्रस्तुतीकरण में यह मानते हुए जान-बूझकर की गई गड़बड़ी कि गलती पकड़ी नहीं जा सकेगी। bungling **टि.** 'गोलमाल' और 'गोलमाल' में अंतर बनाए रखा जाए।

गोलाबारी *(फ़ार. < गोलाबारी) स्त्री.* 1. युद्ध के दौरान शत्रु सेना उपस्करों तथा आधार शिवरों को नष्ट करने के उद्‌देश्य से तोपखाने से की गई गोलों की वर्षा।

गोलार्ध (गोलाद्‌र्ध) (गोल रु अर्ध/अद्‌ध) *पुं. (तत्.)* शा. अर्थ गोले का आधा भाग। **भू.** विषुवत् रेखा (भूमध्य रेखा) से दो भागों में विभक्त भू-गोलक का कोई-सा भाग। **जैसे**: उत्तरी गोलाद्‌र्ध, दक्षिणी गोलाद्‌र्ध hemisphere

गोली *स्त्री. (तद्.)* गोल आकार की ठोस छोटी वस्तु या पिंड। **उदा.** दवाई की गोली, बंदूक की गोली, काँच की गोली।

गोशाला/गौशाला *स्त्री. (तत्.)* 1. गायों के बाँधने-दूहने आदि का स्थान। 2. वह विशिष्ट स्थान, जहाँ अनाथ गायों के पालन-पोषण की व्यवस्था की जाती है। 3. वह केंद्र जहाँ व्यावसायिक उपयोग के लिए सामूहिक रूप से गायों का पालन-पोषण किया जाता है।

गौण लैंगिक लक्षण *पुं. बहु. (तत्.)* लिंग (लडक़ा, लडक़ी) के भेद को बताने वाले लक्षण जो युवावस्था के प्रारंभ में दिखाई देते हैं। **उदा.** लडक़ों में दाढ़ी-मूँछ आना; लडक़ियों में स्तनों का विकास होना।

गौर *वि. (तत्.)* 1. गोरे रंग का। **पर्या.** सफ़ेद, श्‍वेत। **उदा.** गौरवर्ण बालक। 2. *पुं. (अर. ग़ौर)* ध्यान, सोच-विचार। **उदा.** गौर करना (= ध्यान देना)।

गौरव गाथा *स्त्री. (तत्.)* किसी व्यक्ति, समाज, देश-काल आदि की स्मरणीय और प्रेरणादायक घटनाओं, कथाओं का प्रशंसापूर्ण कथन या प्रस्तुत विवरण। **जैसे**: महाराणा प्रताप की गौरवगाथा, मेवाड़ की गौरख-गाथा, प्राचीन भारत की गौरव गाथाएँ।

गौरवशाली [गौरव + शाली] *वि. (तत्.)* बड़प्पन या महिमा से युक्त। गौरवपूर्ण glorious **जैसे**: भारत का गौरवशाली इतिहास।

गौरैया/गवरहया *स्त्री. (देश.)* मनुष्यों की बस्ती में दिखने वाली एक छोटी चिडिया। 'चटक' नामक पक्षी। *पुं.* नर गौरैया।

ग्यान *[देश.<ज्ञान] पुं.* 'ज्ञान' शब्द के उत्तर भारतीय उच्चारण को यथावत् वर्तनी में लिखा गया रूप।

ग्रंथ *पुं. (तत्.)* 1. व्यु.अर्थ लिखित पन्नों को बाँधकर (गाँठ लगाकर) तैयार की गई बड़ी पुस्तक कोई भी पुस्तक या किताब। **पर्या.** किताब, पुस्तक। **उदा.** धर्मग्रंथ, गुरु ग्रंथ साहिब। **ग्रंथकार** *पुं.* ग्रंथ (पुस्तक) का रचयिता, पुस्तक का लेखक। **दे.** ग्रंथन।

ग्रंथि *स्त्री. (तत्.)* 1. सा.अर्थ दो या दो से अधिक धागों, रस्सियों आदि को जोड़ने के स्थान पर पड़ी गाँठ। 2. आयु. शरीर का वह गाँठ जैसा अवयव जो विशिष्ट रासायनिक यौगिकों जैसे एंजाइम या हार्मोन आदि का स्रवण करते हैं। ग्लैंड। **उदा.** लार ग्रंथि। 3. मनो. दमित भावनाओं या विचारों का वह परस्पर संबद्‌ध समूह जो व्यक्ति के अपसामान्य व्यवहार या मानसिक स्थिति का द्‌योतक होता है। **जैसे**: हीनता की ग्रंथि inferiarity complex

ग्रंथिका *स्त्री. (तत्.)* पौधे के किसी अंग का गोल उभरा हुआ भाग। **जैसे:** मटर की जड़ों की गुलिकाएँ tubercale **दे.** गुलिका।

ग्रसिका *वि/स्त्री. (तत्.)* शा.अर्थ निगलने वाली (नलिका)। आहार नाल में गले वस्तुत: (ग्रसनी और अमाशय के बीच का भाग जो पेशीय आकुंचन फैलने-सिकुड़ने) की वजह से भोजन को अमाशय में भेजता है। **पर्या.** ग्रासनली oesophagus/esophagus (U.S.)

ग्रह *पुं. (तत्.)* वह खगोलीय पिंड जो अपने परिक्रमा पथ पर नियत गति से सूर्य की परिक्रमा करता है। **उदा.** शनि, बुध, मंगल आदि planets **तु.** उपग्रह।

ग्रहण *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ. 1. किसी वस्तु को प्राप्त करने पकड़ने, स्वीकार करने अथवा बात या भाव को समझ लेने की क्रिया का भाव। **भू.** किसी स्थल विशेष से देखने पर परिक्रमा के दौरान एक आकाशीय पिंड के दूसरे आकाशीय पिंड की ओट में आ जाने के कारण उससे आते हुए प्रकाश का कुछ समय के लिए अवरुद्ध हो जाना। **उदा.** सूर्यग्रहण, चंद्रग्रहण eclipse

ग्रहराज *पुं. (तत्.)* सूर्य। (सभी ग्रह सूर्य के चारों ओर घूमते हैं इस कारण)

ग्राम *पुं. (तत्.)* 1. गाँव 2. देहात की बस्ती। **(अं.)** 3. मीट्रिक प्रणाली की एक तौल।

ग्राम भोजक *वि./पुं. (तत्.)* (लगभग दो हजार वर्ष पूर्व की व्यवस्था के अनुसार)। गाँव का प्रधान। **टि.** साधारणतया यह गाँव का सबसे बड़ा भू-स्वामी होता था। इसी कारण यह पद-पैतृक होता था। राजा द्वारा इसे कर वसूलने का अधिकार भी दिया जाता था। कभी-कभी ये न्यायाधीश का काम भी कर लेते थे।

ग्रामसभा *स्त्री. (तत्.)* शा.अर्थ गाँव की सभा। **राज.** लोकतंत्र में विधायिका, न्यायपालिका एवं कार्यपालिका तीनों की प्राथमिक इकाई। ग्राम स्तर पर सभी कार्यों को देखने वाला निर्वाचित निकाय।

ग्राम सेवक *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ गाँव का सेवक। **राज.** जिला परिषद् द्वारा नियुक्त ग्रामीण स्तर का वेतनभोगी अधिकारी; ग्राम पंचायत का सचिव। **टि.** ग्रामसेवक गाँव एवं जिला प्रशासन के बीच सेतु का कार्य करता है तथा प्रशासन संबंधी स्थानीय कार्यों की देखभाल करता है। यह अपने कार्यों की सूचना report खंड विकास अधिकारी तक पहुँचाता है।

ग्रामापयोग दातू न दातौन *स्त्री.* दाँत. 1. नीम, बबूल आदि की पतली, छोटी, नरम टहनी जिसके एक सिरे को दाढ़ों से कुचलकर और बुरशसा-बनाकर दाँत साफ करते हैं। । 2. दाँत को साफ करने माँजने/ की क्रिया।

ग्रामीण *वि./पुं. (तत्.)* ग्राम (गाँव) से संबंधित, गाँव का। **पर्या.** देहाती। गाँव में निवास करने वाला व्यक्ति। **पर्या.** ग्रामवासी, देहाती।

ग्रामोद्योग [ग्राम + उद्योग] *पुं. (तत्.)* गाँव में बनी वस्तुओं को शहरों में होने वाली या अन्यत्र बेचने-खरीदने का व्यवसाय, जिसका मुख्य उद्देश्य है ग्रामीणों को रोज़गार मिलता रहे। village industry

ग्रास-नली *स्त्री. [तत्. + तद्.]* निगलने वाली नलिका। **दे.** ग्रसिका।

ग्राहक *वि. (तत्.)* ग्रहण करने/लेने वाला। *पुं.* 1. बेची जाने वाली वस्तु का मूल्य चुकाकर प्राप्त करने वाला व्यक्ति। **पर्या.** खरीददार/खरीदार custmer buber

ग्राह्य *वि. (तत्.)* जो ग्रहण करने या पकड़ने योग्य हो, लेने लायक, स्वीकार्य।

ग्रीज *स्त्री. (अं.)* कोई भी चिकना अथवा वसायुक्त पदार्थ जो मशीन के पहियों और पुर्जों पर चुपड़ देने पर उस मशीन का परिचालन ठीक तरह से होने लगता है।

ग्रीन हाउस *पुं. (अं.)* ऊष्मारोधी दीवारों वाला कमरा जिसकी छत शीशे या पारदर्शी प्लास्टिक की होती है। परिणामस्वरूप सूर्य का प्रकाश कमरे में पहुँच कर वहाँ के तापक्रम को बढ़ा देता है पर ऊष्मा का विकिरण बाहर की ओर बहुत कम हो पाता है। लतः ऐसे कमरे में शीत ऋतु में भी ग्रीष्म ऋतु की सब्जियाँ और फूल-पत्तियाँ उगाई जा सकती हैं।

ग्रीन हाउस प्रभाव *पुं. (अं.+तत्.)* बढ़ते औद्योगिकीकरण और वनों की निरंतर कटाई के कारण वायुमंडल में कार्बन-डाईऑक्साइड और कुछ अन्य गैसों के अधिकाधिक उत्सर्जन होते रहने की वजह से इसकी बढ़ी मात्रा पृथ्वी पर सौर-ऊर्जा के आने में बाधा डालती है और पृथ्वी की भीतरी ऊष्मा सतह से बाहर अंतरिक्ष में उस

अनुपात में आ नहीं पाती जिससे वायुमंडल का ताप-संतुलन बना रहे। फलस्वरूप वायुमंडल का औसत ताप धीरे-धीरे बढ़ जाता है जो प्राकृतिक पर्यावरण के लिए कई प्रकार से हानिकारक है। इसी प्रभाव को 'ग्रीन हाउस प्रभाव' कहते हैं। green house effect

ग्रीवा *स्त्री. (तत्.)* सिर और धड़ को मिलाने वाला/जोड़ने वाला शरीर का अंग विशेष जो मोटाई में दोनों से अपेक्षाकृत पतला होता है। **पर्या.** गला, गरदन गर्दन

ग्रीष्म ऋतु [ग्रीष्म + ऋतु] *स्त्री. (तत्.)* (भारतीय परंपरा में) वसंत से शुरू होने वाली छह ऋतुओं में से वह ऋतु जिसमें अपेक्षाकृत सबसे अधिक गरमी पड़ती है (और जिसके परिणामस्वरूप अगली ऋतु में वर्षा होती है)।

ग्रेनाइट *पुं. (अं.)* एक अंतर्भेदी आग्नेय शैल, जो पिघले हुए मैग्मा के भूपर्पटी के अंदर गहराई में ठंडा होने के कारण निर्मित होता है।

ग्लानि *स्त्री. (तत्.)* कुछ बुरा कर गुजरने के बाद मन में उत्पन्न अपराध-बोध की भावना।

ग्लूकोस (ग्लूकोज़) *पुं. (अं.)* मोनोसैकेराइट तथा हैक्सोस के रूप में वर्गीकृत कार्बोहाइड्रेट जो अनेक सूक्ष्म जीवों में ऊर्जा प्रदान करता है। **पर्या.** डैक्सट्रोस, अंगूर शर्कर हैं।

ग्लेशियर *स्त्री. (अं.)* पर्वत शिखरों के गर्तों में जमी सीमित विस्तार वाली बर्फ़ की नदी जो धीरे-धीरे खिसकती रहती है। **पर्या.** हिमनदी, हिमानी।

ग्लोब *पुं. (अं.)* 1. पृथ्वी का गोलाकार तल। 2. पृथ्वी का गोलाकार प्रतिरूप जिस पर अक्षांश और देशांतर रेखाओं तथा महासागरों और देशों के नक्शों को अध्ययनार्थ प्रदर्शित किया जाता है। **पर्या.** भूगोलक।

ग्वाला *पुं. [तद्. < ग्वाल]* 1. गौएँ पालने तथा दूध-दही बेचने वाली जाति का कोई भी नर सदस्य (स्त्री. ग्वालिन)। 2. गाँव की गाय-भैंसों को प्रतिदिन सुबह इक्ठा कर सामूहिक रूप से उन्हें दिन भर जंगल में चराकर संध्या समय उनके मालिकों को सौंप देने का कार्य करने वाला पारिश्रमिक प्राप्त जिम्मेदार व्यक्ति। **पर्या.** चरवाहा।

ग्वालिन *स्त्री. (तत्.)* ग्वाले की स्त्री या ग्वाल जाति की स्त्री। **दे.** ग्वाला।

घ

घंटा *पुं. (तत्.)* 1. पीतल या काँसे का बना कनेर के फूल जैसा बड़े आकार का उपकरण जिसे मंदिर, गिरजाघर आदि में बजाया जाता है। (बेल) 2. दिन-रात मिलाकर बने दिन का साठ मिनट के बराबर चौबीसवाँ भाग जिसे घड़ियों में समय-विभाजन का प्रमुख सूचक माना जाता है। आवर 3. विद्यालयों में भिन्न-भिन्न विषयों को पढ़ाने के लिए नियत कालखंड। **जैसे:** पहला घंटा, दूसरा घंटा आदि period

घंटाघर *(तत्.+तद्.) पुं.* शा.अर्थ. घंटा बजाने का घर। सा.अर्थ ऊँची बनी मीनार जिसके ऊपरी सिरे पर चारों ओर समय देखने के लिए घड़ियाँ लगी होती हैं तथा हर आधे घंटे/घंटे के बाद घंटा बजते सुनकर समय की जानकारी प्राप्त की जा सकती है। ऐसी मीनारें प्राय: सार्वजनिक स्थलों पर निर्मित होती हैं ताकि आम जनता को समय जानने में सुविधा हो। clock tower

घंटी *स्त्री. [घंटा]* 1. कनेर के फूल जैसा छोटे आकार का उपकरण जिसे मंदिरों में या घरों में पूजा करते समय बजाया जाता है। 2. कक्षा शुरू होते या समाप्त होने अथवा छुट् टी होने की जानकारी देने के लिए संख्या के अनुसार घंटीवादन। **जैसे:** दो बार घंटी बजने का अर्थ है दूसरा पीररियड शुरू हो रहा है अथवा लंबी घंटी बजने का अर्थ है-छुट् टी हो गई। 3. किसी भी प्रकार का (अन्य) उपकरण जिसे बजाकर लोगों का ध्यान आकृष्ट किया जाए। **जैसे**: दरवाज़े पर लगी घंटी, कार्यालय के कमरे में बजाई जाने वाली घंटी, साइकिल की घंटी, टेलीफ़ोन या मोबाइल की घंटी बजना।

घटक *पुं. (तत्.)* किसी रचना में सहायक तत्व; किसी निर्मित वस्तु का कोई भी उल्लेखनीय अंश factor, component

घड़ी *स्त्री [तद्. < घटी]* 1. समय सूचक उपकरण जो घंटे-मिनट की सही स्थिति बताए। clock, watch 2. पूरे दिन का साठवाँ भाग, चौबीस मिनट का समय। 3. समय, अवसर **मुहा.** आखिरी घड़ी = मृत्यु का समय। घड़ी-घड़ी = बार-बार, हर क्षण। घड़ी गिनना = प्रतीक्षा करना। 4. (ग्राम्य प्रयोग) कपड़े आदि की करीने से जमाई गई तह।

घनघनाना *अ.क्रि. (अनु.)* 'घन-घन' की या घंटी जैसी ध्वनि करना।

घनत्व *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ घनापन, घना होने का भाव। 1. भौ. किसी पदार्थ में, कम स्थान में अणुओं का सापेक्षिक रूप से बढ़ जाने का भाव। कणों का पास-पास होना। घना होना। 2. भू. किसी निश्चित क्षेत्र में सापेक्षिक रूप में जनसंख्या, घर, जंगल आदि अधिक होने का भाव। इसका माप संख्या/किमी^{2} माना जाता है। **दे.** घना। **विलो.** विरलता। dencity

घना *[तद्.<सघन] (स्त्री. घनी) वि.* 1. बहुत पास-पास सटे पौधों/वृक्षों वाला। **जैसे**: घना जंगल। 2. बहुत पास-पास बने घरों वाली (बस्ती) घनी बस्ती। 3. तुलनात्मक दृष्टि से एक ही स्थान पर भारी संख्या में रहने वाले (लोग)। **जैसे**: घनी आबादी।

घनी [घन + ई] *(तत्.)* जिसके कण, अंश या अंग परस्पर इस प्रकार सटे हुए हों जिससे कि वह वस्तु समूह न होकर एक ही प्रतीत हो। सघन, गहन। **जैसे**: घनी आबादी, घनी बस्ती। **पुं.** घना।

घपला *पुं. (देश.)* छिपाकर की गई गड़बड़ी, विशेष रूप से हिसाब-किताब में यह मानते हुए की गई गड़बड़ी कि इसका दूसरे को पता नहीं चलेगा। **पर्या.** घोटाला bungling, misappropriation

घबराना/घबड़ाना *अ.क्रि. [देशज < गड़बड़ाना]* 1. चित्त का अकस्मात् व्याकुल हो जाना। 2. भय या लंबी प्रतीक्षा आदि दु:ख के कारण मन में क्षोभ उत्पन्न होना; मन का अस्थिर हो जाना। 3. विपत्ति से बाहर निकलने का मार्ग न दीखना; क्या करें क्या न करें-यह समझ में न आना कि कर्तव्य विमूढ़ हो जाना।

घबराहट/घबड़ाहट *स्त्री. (देश.)* घबराने का भाव। **दे.** घबराना।

घमंड *पुं.* अपने बारे में आडंबरपूर्ण और मिथ्या अभिमान की ऐसी भावना जो बड़बोलेपन के रूप में प्रकट होती है और अपनी तुलना में दूसरों को हीन समझती है।

घमंडी *वि. (देश.)* **तु.** अभिमान। घमंड करने वाला। **दे.** घमंड।

घमासान *वि. (अनु. देशज शब्द)* घोर, भयंकर। **उदा.** घमासान युद्ध। **जैसे:** राम-रावण के बीच घमासान युद्ध हुआ।

घरेलू [घर + एलू] *(तद्.) वि.* 1. घर-गृहस्थी से संबंधित। **जैसे:** घरेलू सामान domestic 2. घर जैसा। **उदा.** घरेलू वातावरण homely 3. जो पालतू हों। **जैसे**: घरेलू पशु। **विलो.** जंगली।

घरेलू हिंसा [घरेलू + हिंसा] *स्त्री. (तद्.)* घर के अंदर यानीपारिवारिक स्तरपर होनेवालीहिंसा। **जैसे:** बच्चों की पिटाई, (पति द्वारा) पत्नी की पिटाई आदि।

घरौंदा *पुं. (घर.)* 1. (तुच्छता प्रदर्शन हेतु प्रयोग) घर, 2. बच्चों के खेलने के लिए मिट्टी, रेत, कागज़ आदि से बनाए गए घर जैसी आकृति।

घर्षण *पुं. (तत्.)* सा.अर्थ घिसने या रगड़ खाने की क्रिया या भाव। **भौ.** बल जो परस्पर स्पर्श करने वाले दो पृष्ठों की सापेक्ष गति का विरोध करता है। यह बल गति की विपरीत दिशा में लगता है। friction

घसीटना *स.क्रि. [तद्.<घृष्टन]* किसी वस्तु या व्यक्ति को इस तरह खींचना कि वह अनिच्छापूर्वक ज़मीन पर रगड़ खाते हुए खिंचती चली जाए/खिंचता चला जाए।

घाघरा *पुं. [तद्. < घर्घर]* 1. स्त्रियों का नीचे की ओर बड़े घेर वाला (यानी घंटे नुमा) कमर में पहना जाने वाला एड़ी तक लंबा वस्त्र। 2. सरयू नदी का एक अन्य नाम।

घाट^1 *[तद्.>घट्ट ट] पुं.* 1. किसी नदी या जलाशय आदि के तट पर नहाने-धोने या नाव पर चढ़ने-उतरने के लिए निश्चित स्थान। **जैसे:** काशी में दशाश्वमेघ घाट। 2. पर्वतीय क्षेत्रों के बीच आवागमन का मार्ग या ऊँचा नीचा स्थान घाटी। 3. पहाड़ **जैसे**: पूर्वी घाट। **मुहा.** घाट-घाट का पानी पीना अनेक जगहों पर रहकर या भटकते हुए विविध प्रकार के अनुभव प्राप्त करना।

घाट^2 *वि. (तद्.>घृष्टन)* किसी वस्तु का अपेक्षा से न्यून या कम होना। न्यून, कम, थोड़ा। **जैसे:** जब तौलो तब घाट।

घातक *वि. (तत्.)* शा.अर्थ घात (प्रहार, चोट) करने वाला। अत्यधिक कष्ट या हानि (जिसमें प्राण् गँवाने तक का भय हो) पहुँचाने वाला। **उदा.** घातक रोग, घातक प्रहार fatal **पुं.** मार डालने वाला व्यक्ति, हत्यारा।

घालमेल *पुं. [< घुलना + मिलना]* भिन्न-भिन्न प्रकृति की वस्तुओं या विचारों इत्यादि का इस प्रकार मिल जाना कि बाद में उनमें भेद करना बहुत कठिन हो जाए। **पर्या.** गड्ड-मड्ड।

घिरनी *स्त्री. (तद्.)* 1. कोई दाँतेदार पहिया या ऐसे ही पहियों का समूह जो अपने से बड़े और भारी यंत्र के चालन-बल को हलका कर देता है। 2. दरार पड़ा और अपनी धुरी में अटका पहिया जो रस्सी या पट्टे की सहायता से गतिवर्धक होता है और चालन-बल को सुगम बना देता है। **पर्या.** चरखी पुली

घिसटना *[तद्. < घृष्टन] अ.क्रि.* 1. जमीन पर रगड़ खाते हुए खिंचे चले जाना, घसीटा जाना। 2. ला.अर्थ अनिच्छापूर्वक विवश होकर किसी के साथ जाना या कुछ काम करना। **उदा.** अफसरों की सेवा में घिसट रहा हूँ।

घिसापिटा [घिसा+पिटा] *वि.पुं. (तद्.)* शा.अर्थ घिसा हुआ और पिदा हुआ। *स्त्री. वि.* घिसी-पिटी (घिसी + पिटी) बहुत दिनों से चली आ रही, पुरानी, पड़ चुकी मरणशील। **उदा.** घिसी-पिटी परंपराएँ।

घुंडी *स्त्री. [तद्.<ग्रंथि]* 1. कोई भी गोलाकार गाँठ (नॉब) 2. कपड़े का बना पुराने जमाने का गोलाकार बटन।

घुँघरू *पुं. (तद्.)* पीतल आदि धातु से बने गोल आकार के पोले छोटे-छोटे गोले जिनमें वैसे ही बारीक आकार वाले ठोस दाने भरे होते हैं और जिनके हिलने से मधुर आवाज निकलती है। नृत्यांगनाएँ और नर्तक इन्हें अपने पैरों में पहनते हैं।

घुड़कना *स.क्रि. (देश.)* 1. ज़ोर से बोलकर क्रोध और धमकी भरे स्वर में डाँटना। **उदा.** ज्योंही मैं साहब के कमरे में देर से पहुँचा त्यों ही उन्होंने मुझे घुड़क दिया।

घुड़की *स्त्री. (देश..)* 1. ऊँची आवाज़ में क्रोध और धमकी भरे स्वर में डाँटने या डराने की क्रिया। **जैसे:** साहब की घुड़की, बंदर-घुड़की।

घुड़सवार [घुड़ < घोड़ा + सवार] *पुं. (फा.)* वह जो घोड़े पर सवार हो।

घुन्ना *वि. (देश.)* किसी के प्रति क्रोध, द्वेष, कटुता आदि भाव मन में ही रखने वाला। अर्थात् उक्त भावों को जो व्यक्त न करता हो। परंतु मन ही मन बदला लेने की भावना रखता हो। **पर्या.** चुप्पा। **उदा.** घुन्ना व्यक्ति व्यावहारिक दृष्टि से ठीक नहीं होता।

घुन्नाना *अ.क्रि. (देश.)* मन ही मन या हल्की आवाज़ में चिढ़ने कुढ़ने जैसी ध्वनि निकालते रहना। (साथ में तिरछीं नजरों से प्रतिद्वंद्वी को देखते रहना)

घुमंतू *वि. (देश.)* इधर-उधर घूमने वाला; स्थायी रूप से एक जगह टिककर इधर-उधर घूमते-फिरते रहने वाला (जन समूह)। **जैसे:** बंजारी जाति। **तु.** घुमक्कड़।

घुमक्कड़ *वि. (देश.)* बहुत अधिक घूमने वाला (व्यक्ति)। **टि.** पहले इस शब्द का प्रयोग प्राय: अनादरसूचक अर्थ में होता था किंतु अब बहुत अधिक पर्यटनशील व्यक्ति के लिए भी इसका प्रयोग होने लगा है। **जैसे**: राहुल सांकृत्यायन घुमक्कड़ प्रकृति के व्यक्ति थे। यहाँ तक कि इन्होंने 'घुमक्कड़शास्त्र' नामक पुस्तक की भी रचना की।

घुलनशील *वि.* घुल जाने वाला, मिलकर एकाकार हो जाने वाला।

घुलनशीलता *स्त्री. [तद्.<घूर्णनशील]* कुछ ठोस या गैसीय पदार्थों का यह गुणधर्म कि जब वे किसी द्रव में मिलाए जाते हैं तो वे उससे एकाकार हो जाते हैं। **जैसे**: नमक या चीनी आदि।

घुलना-मिलना (घुलना और मिलना) *अ.क्रि. [तद्.<घूर्णन+मिलन]* सा.अर्थ दो पदार्थों का मिलकर

एकाकार हो जाना। ला.अर्थ व्यक्ति/व्यक्तियों का अन्य व्यक्ति/व्यक्तियों से मेलजोल बढ़ाना। **उदा.** तुम घर में अकेले बैठे रहते हो। बाहर जाकर दोस्तों से घुला-मिला करो।

घुसपैठ [घुसना+पैठना] *स्त्री.* गुप्त और अनाधिकृत रूप से कहीं भी घुस कर यानी पहुँचकर वहाँ अपनी (अवैध) कार्रवाई अंजाम देने की प्रवत्ति।

घुसपैठिया *पुं. (देश.)* घुसपैठ करने वाला, गुप्त व अनाधिकृत रूप से कहीं भी घुस जाने वाला (व्यक्ति)। **दे.** घुसपैठ

घूँट *पुं. (देश.)* एक ही बार में गले के नीचे उतारे जाने वाली पेय पदार्थ की मात्रा। **उदा.** एक घूँट लेकर तो देखो। तुम यह पेय।

घूरना *[देश.<घूर्णन] स.क्रि.* आँखें चौड़ीकर बिना पलक झपकाएँ किसी की ओर लगातार देखते रहना; टकटकी लगाकर ध्यान से देखना; बुरी दृष्टि से किसी को देखना; क्रोध से देखना।

घूरा *(तद्.<कूट) पुं.* कूड़े-करकट का ढेर। **लोको.** घूरे के दिन फिरना-बुरे दिनों के बाद अच्छे दिन देखना।

घूर्णन *पुं. (तत्.)* सा.अर्थ घूमना, चक्कर लगाना। **भौ.** किसी पिंड का अपने अक्ष पर (अपनी घुरी पर) चक्कर लगाना। **जैसे:** पृथ्वी या लट्टू का घूर्णन rotation

घृणा *स्त्री.* किसी के प्रति नापसंदगी की तीव्र भावना जो शब्दों या हाव-भावों से व्यक्त होती है। **पर्या.** 1. नफरत, घिन 2. जुगुप्सा, 'वीभत्स' रस का स्थायी भाव।

घृणित *वि. (तत्.)* 1. घृणा के योग्य **जैसे**: घृणित कार्य। 2. घृणा के साथ **जैसे**: घृणित नज़रों से देखना। **दे.** घृणा।

घृत *पुं. (तत्.)* मक्खन, मलाई को तपाकर तैयार किया गया चिकना खाद्य पदार्थ। **पर्या.** घी।

घेरना *[तद्. < घिरना < ग्रहण] स.क्रि.* चारों ओर से घेर कर रोकना, घेरे में लेना। **उदा.** उसने घर के सामने की खाली जगह को घेर कर वहाँ सब्ज़ी बोना शुरू कर दिया है।

घेरा *पुं. (देश.)* किसी वस्तु, आकृति, शब्द/वाक्य, भूखंड आदि को चारों ओर से घेरती कोई खिंची रेखा या बाड़ आदि।

घेराबंदी [घेरा + बंदी] *स्त्री. (देश.)* शा.अर्थ घेरे में बाँधना, घेरा डालना। 1. किसी भूखंड को चारों ओर बाड़ लगाकर घेरने की क्रिया। encircle 2. किसी व्यक्ति या व्यक्ति समूह को संख्या में अधिक लोगों द्वारा घेर कर अपनी उचित-अनुचित माँगें मनवाने के लिए अपनाया जाने वाला एक तरीका। cease 3. किसी स्थान विशेष को चारों ओर से घेर कर जम जाना ताकि उसमें रहने वाले व्यक्तियों अथवा वस्तुओं का सहज आवागमन रोक दिया जाए। **जैसे:** अकबर की सेनाओं द्वारा चित्तौड़ के किले की लंबे समय तक घेराबंदी कर दी गई थी जिसके परिणामस्वरूप चित्तौड़ का पतन हुआ था। blocked **प्रशा.** कर्मचारियों द्वारा अपनी माँगों को मनवाने के लिए उच्च अधिकरियों या मिल मालिकों को घेर कर अपना आक्रोश व्यक्त करने का एक तरीका।

घेराव *पुं.* अपनी माँगें मनवाने के लिए किसी वर्ग विशेष द्वारा संबंधित उच्चाधिकारियों को घेरकर अपना आक्रोश प्रकट करने का एक तरीका।

घोंघा *पुं.* 1. एक कीड़ा जो शंखनुमा कवच में पैदा होता है। 2. गेहूँ के दाने वाला बाल का कोश *वि.* मूर्ख, बेवकूफ, खोखला।

घोंसला *पुं. (देश.)* पक्षियों द्वारा घास-फूस के तिनकों से बनाया गया अस्थायी आवास जहाँ वे अंडे देते, सेते और उनका लालन-पालन करते हैं। **पर्या.** नीड़।

घोषणा *स्त्री. (तत्.)* किसी विषय विशेष से संबंधित सर्वसाधारण के लिए लिखित या मौखिक रूप में किया गया सूचनात्मक कथन। declaration

घोषणापत्र *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ (कार्यक्रम) की घोषणा से संबंधित (प्रकाशित) पत्रक। राज. चुनाव-प्रचार के समय सभी (राजनीतिक) दलों द्वारा सार्वजनिक रूप से अपने-अपने कार्यक्रमों की सूचना संबंधी प्रकाशित पत्रक। manefesto

च

चंगा *वि.* (देश.) 1. स्वस्थ, तंदुरस्त। **उदा.** कैसे हो? चंगा हूँ। 2. विकार रहित। **उदा.** मन चंगा तो कठौती में गंगा।

चंगुल *पुं. (फ़ा.)* 1. पक्षियों का पंजा। 2 पंजे की पकड़।

चंचु *पुं. (तत्.)* 1. पक्षियों का बाहर की ओर उभरा हड्डी का नुकीला जबड़ा। 2. किसी वस्तु का नुकीला अग्रभाग। **पर्या.** चोंच।

चंदा *पुं. (तद्. चंद्र)* 1. चंद्रमा। 2. गोल आकार की कोई भी चिपटी सी टिकली।

चंदा *पुं. (फ़ा. चंद)* 1. थोड़ी थोड़ी मात्रा में अनेक लोगों से प्राप्त सहायता राशि। contribution 2. किसी पत्र-पत्रिका आदि के नियतकालिक शुल्क के एक मुश्त भुगतान की राशि। subscription

चंद्रमा *पुं.* पृथ्वी की परिक्रमा करने वाला उपग्रह जो सूर्य के प्रकाश के प्रतिबिंब से रात को उजाला करता है, चंदा। **पर्या.** चंदा, चाँद, शशि, चंद्र, शशांक।

चंद्रिका *स्त्री. (तत्.)* 1. चंद्रमा का शीतल प्रकाश। 2. मोर की पूँछ पर बना गोल चिह्न। **पर्या.** चाँदनी, ज्योत्स्ना, कौमुदी, चंद्रप्रभा।

चंपी *स्त्री. (देश.)* सिर में तेल की मालिश (विशेष रूप से विशेषज्ञ द्वारा)।

चँवर *पुं. (तद्.<चामर)* चमरी गाय (सुरा गाय) के पूँछ के बालों का गुच्छा जिसे एक छोटे डंडे में बाँधकर देवाताओं या राजा महाराजाओं के ऊपर डुलाया जाता है। इसे 'चँवर डुलाना' कहते हैं।

चँवरी *स्त्री.* सजा-सजाया विवाह-मंडप जिसके नीचे वर-वधु अग्नि की परिक्रमा करते हैं।

चकमक *वि. (तु.)* एक विशेष प्रकार का कठोर, कणदार क्रिस्टली पत्थर जिसे रगड़ने या जिस पर चोट करने से चिनगारियाँ निकलती हैं। **टि.** आदिम काल में इस पत्थर से औज़ार बनाए जाते थे और अग्नि प्रज्वलित करने के लिए इसका उपयोग होता था।। आधुनिक युग में गैस लाइटर और सिगरेट लाइटर में इसके टुकड़े का उपयोग होता है। flint

चकमा *पुं. (तद्.(चक्रम्)* धोखा देने का कार्य, भुलावा। **जैसे:** चकमा देना = धोखा देना; चकमा खाना = धोखा खाना, भुलावे में आना।

चकराना *अ.क्रि. (तद्.चक्र)* (सिर के संदर्भ में) चक्कर खा रहा हो ऐसा महसूस करना। **उदा.** शा अर्थ- चक्कर खाना, भ्रमित होना, धोखे में पड़ना। ला. अर्थ **मुहा.** सिर चकराना।

चकला *पुं. [तद्., चक्रलोट]* 1. पत्थर, लोहे या लकड़ी इत्यादि से बना गोल पाटा जिस पर बेलन से रोटी, पूरी आदि बेली जाती है। 2. वेश्यालय।

चक्कर *पुं. (तद्. (चक्र)* 1. पहिए, लट्टू या गेंद की तरह घूमने वाली गोल वस्तु। 2. गोल घेरा, मंडल, परिधि। 3. गोलाई में घूमने की क्रिया, परिक्रमा rotation 4. पहिए की तरह एक अक्ष के चारों ओर घूमना revolutation 5. सिर घूमने का भाव। **मुहा.** चक्कर काटना-किसी व्यक्ति या वस्तु के चारों ओर बार-बार घूमना, मँडराना। चक्कर खाना-भटकना, हैरान हो जाना। चक्कर में आना, पड़ना, फँसना-किसी धोखे में फँस जाना।

चक्का जाम *पुं. (देश. [चक्र=पहिया+जैम. अं.]* शा.अर्थ पहियों का चलना रुक जाना। सा.अर्थ- सरकार के प्रति विरोध प्रकट करने के लिए जबरन वाहनों को सडकों पर चलने से रोकना।

चक्र *पुं. (तत्.)* सा.अर्थ पहिया इंजी पहिए के आकार का धातु का बना उपकरण जिसकी परिधि पर दाँते बने होते हैं। खेल-खेल-प्रतियोगिता की या गोली चालन की संपूर्ण कालावधि का कई चरणों में बँटा हिस्सा। **पर्या.** दौर round योग-हठयोग एवं तांत्रिकों के अनुसार मनुष्यदेह में स्थित षट्चक्रों (मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूर, अनाहत, विशुद्ध तथा आज्ञा चक्रों) में से कोई भी।

चक्रण *पुं. (तत्)* महासागरों में जल का चक्कर बनाते हुए तेजी से ऊपर उठना।

चक्रवर्ती *वि. (तत्.)* सार्वभौम (राजा), ऐसा राजा जिसका शासन दूर-दूर तक फैला हो। **जैसे:** चक्रवर्ती सम्राट् दशरथ।

चक्रवात *[चक्र+वात] पुं. (तत्.)* सा.अर्थ हवा का चक्कर, बवंडर। 1. अत्यंत उग्र रूप धारण कर उठा समुद्री तूफान। 2. उष्णकटिबंधीय सागरों में बनने वाला वह निम्नदाब तंत्र जिसके

परिणामस्वरूप समुद्री हवाएँ चारों ओर से निम्न वायुदाब के केंद्र की ओर तेजी से बढ़ती है और तब उससे तेज गति से घूमने वाला चक्र बन जाता है और चक्राकार घूमती वायु समुद्री जल के साथ काफी ऊपर उठने लगती है। cyclone

चटकना *अ.क्रि. (देश.अनुर.)* 1. 'चट' की ध्वनि के साथ टूटना। 2. टूटने का चिह्नमात्र बनना। **जैसे:** बरतन चटक गया है। 3. कलियों का खिलना।

चटखारा/चटकारा *पुं. (देश.)* किसी मसालेदार या खट्टी वस्तु का स्वाद लेते समय मुँह से निकली 'चट' जैसी ध्वनि।

चटाई *स्त्री. (तद्. (चट)* पहले तिनकों, बाँस का खपच्चियों आदि से और अब प्लास्टिक की फीतियों से बना आसन या फर्श का बिछावन। mat

चट्टान *स्त्री. (देश.)* पत्थर का बड़ा और भारी टुकड़ा जिसे सरलता से हिलाया न जा सके, वृहत् शिला, शैल। rock

चढ़ना *अ.क्रि. (तद्. (उच्चलन)* 1. पहाड़ आदि पर ऊपर की ओर जाना, चढ़ाई या ऊँचाई की ओर जाना। 2. नदी का तल बढ़ना। **उदा.** नदी में पानी चढ़ रहा है। 3. भाव (दाम) ऊँचा होना। 4. आक्रमण करना। **उदा.** शिवाजी ने शत्रुसेना पर चढ़ाई कर दी। 5. खाते आदि में लिखा जाना। **जैसे:** खाते में चढ़ाना। 6. पकाने के लिए बरतन चूल्हे पर रखा जाना। 7. दिन का आगे बढ़ना। **उदा.** दिन चढ़ आया। 8. घोड़े आदि पर बैठना। **उदा.** घुड़चढ़ी की रस्म।

चतुरंगिणी *स्त्री. (तत्.)* शा.अर्थ चार अंगों वाला (सेना)। सा.अर्थ प्राचीनकाल में हाथी, घोड़ा, रथ और पैदल इन चार अंगों से युक्त सेना।

चतुर *पुं. (तत्.)* 1. अपने हित को ध्यान में रखते हुए समझदारी से काम करने वाला। व्यवहार कुशल। **पर्या.** होशियार clever 2. कार्य करने में निपुण। **पर्या.** कुशल, दक्ष skilled, skillful 3. अनुभव और ज्ञान से युक्त। **पर्या.** मेधावी, तीक्ष्णबुद्धि, बद्धिमान।

चतुराई *स्त्री.* चतुर होने का भाव। **दे.** चतुराई जो काम मुझसे नहीं हो सकता था उसे उसने बड़ी चतुराई से पूरा कर दिया।

चपेट *स्त्री. (तत्.)* 1. तमाचा, थप्पड़, 2. अकस्मात् आघात या प्रहार के कारण उपस्थित हुआ संकट। **मुहा.** चपेट में आना। **उदा.** 1. वह बस की चपेट में आ गया। 2. सारा गाँव बाढ़ की चपेट में आ गया।

चबाना *(तद्.<चर्वण)* स.क्रि. दाँतों से पीसकर महीन करना। ला.अर्थ (डराने-धमकाने वाले अर्थ में) खा जाना। **उदा.** तुम अपनी आदतों से बाज नहीं आओगे तो मैं तुम्हें कड़वा ही चबाए जाऊँगा। **मुहा.** चबा-चबाकर बातें करना=वाक्य के शब्दों को रुक-रुक कर अलग-अलग बोलना।

चबूतरा *पुं. (तद्.<चतुस्तटक)* जमीन की सतह से ऊँचा उठा हुआ चौकोर या आयताकार बनाया गया बैठने के लिए स्थान।

चमक-दमक *स्त्री. (देश.) [चमक+दमक]* 1. प्रकाशित एवं आभायुक्त होने का भाव, **पर्या.** आभा, दीप्ति। 2. दिखावा, आडंबर, तडक़-भडक़।

चमकदार दे. चमकीला।

चमकीला *वि. (तद्.)* चमकदार, चमक-दमक से युक्त। **उदा.** अँधेरी रात में चमकीले तारे जगमगाते रहते हैं।

चमत्कार *पुं.* असंभव सा दिखने वाला आश्चर्यजनक कार्य; अद्भुत कार्य या बात। **पर्या.** करामात।

चमत्कृत *वि. (तत्.)* चमत्कार से प्रभावित। **दे.** चमत्कार।

चयन *पुं. (तत्.)* बहुत-सी वस्तुओं या व्यक्तियों में से अपनी आवश्यकता या रुचि के अनुसार कुछ वस्तुओं या व्यक्तियों को छाँट कर अलग करना। चुनना। **उदा.** इस पद पर मेरा चयन संघ लोक सेवा आयोग के माध्यम से हुआ है।

चयन-समिति *[चयन+समिति] (स्त्री.) (तत्.)* शा.अर्थ वयन के लिए गठित विशेषज्ञों का समूह। विशेषज्ञों का वह समूह जो किसी पद आदि के लिए अभ्यार्थियों (उम्मीद्वारों) से साक्षात्कार कर/या अन्य निर्धारित विधि से उपयुक्त व्यक्ति के नाम का सुझाव संबंधित संस्था को प्रस्तुत करती है। selection committee

चरखा *पुं. (फ़ा. चर्ख))* लकड़ी का बना उपकरण जिसकी सहायता से रुई या ऊन को कातकर धागा बनाया जाता है।

चरखी *स्त्री. (फ़ा.)* 1. छोटा चरखा, 2. सूत लपेटने की गिर्री या गराड़ी, 3. गन्ना पेलने का यंत्र।

चरण कमल *पुं. (तत्)* कमल के समान (कोमल) चरण। **उदा.** चरण कमल बंदौ हरिराई।

चरण *पुं. (तत्.)* 1. पैर (विशेष रूप से पूज्य या महान व्यक्ति के पैरों (पाँवों) के लिए इस शब्द का प्रयोग किया जाता है। **उदा.** प्रात:काल उठकर बड़ों के चरण छूने चाहिए। 2. श्लोक की एक पंक्ति या भाग। 3. काल का चौथाई भाग। **उदा.** प्रथम चरण, अंतिम चरण। **मुहा.** चरण छूना, चरणामृत लेना, चरण धोकर पीना।

चरण-चिह्न *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ चरणों (पैरों) के निशान। ला.अर्थ महान् व्यक्तियों के वे महत्त्वपूर्ण कार्य जिनका अनुसरण करना सामान्य व्यक्ति का कर्त्तव्य माना जाता है।

चरण-पादुका *स्त्री. (तत्.)* 1. लकड़ी के खड़ाऊँ, पाँवड़े। 2. किसी साधु-संत के स्मृतिचिह्न के रूप में बने खडाऊँ।

चरम *वि. (तत्.)* 1. (वह स्थिति) जिसके ऊपर या आगे कुछ नहीं होता। **जैसे**: चरम सत्य absolute 2. अंतिम, आखिरी **जैसे:** चरम लक्ष्य (अल्टीमेट); चरम सीमा farthest, almost चरम अवस्था last

चरमराना *[देश.-अनुर.] अ.क्रि.* 1. चर्र-मर्र का शब्द करना। **उदा.** वर्षा ऋतु में लकड़ी का दरवाजा खोलने पर चरमराता है। 2. इस प्रकार का काल्पनिक शब्द करते हुए हिल जाना। **उदा.** भूकंप के पहले झटके में ही भवन चरमरा गया।

चरवाहा *[देश.(चरि=प्राणी+वाह] पुं.* गाँव के पशुओं को चरागाह/जंगल में ले जाने वाला; पशु चराकर जीविका पार्जन करने वाला।

चरागाह *[चरना+गाह= जगह] पुं. (फ़ा.)* पशुओं के चरने की जगह, सर्वाधिक घास का मैदान।

चरित *पुं. (तद्.चरित्र)* **जैसे:** रामचरित्रमानस। **दे.** चरित्र।

चरितार्थ *[चरित+अर्थ]वि. (तत्.)* जिसने अपना इच्छित प्रयोजन सिद्ध कर लिया है; जिसका अभीष्ट उद्देश्य पूरा हो गया है; सही सिद्ध हो जाने वाला; सफल; कार्यान्वित; संपन्न। (चरितार्थ करना। स.क्रि. चरितार्थ होना अ.क्रि.)

चरित्र *पुं. (तत्.)* 1. कार्य एवं आचरण-संबंधी सद्‌गुण। विद्यालय में चरित्र-निर्माण की शिक्षा दी जाती है। 2. वर्णनीय कार्य एंव क्रियाकलाप, जीवन-गाथा। राम का पूरा चरित्र हमें मर्यादा की शिक्षा देता है।

चरित्र हनन *पुं. (तत्.)* किसी व्यक्ति के चरित्र को निंदनीय और गर्हित ठहराने का हर संभव प्रयास।

चरित्र-चित्रण *पुं. (तत्.)* साहित्यिक कृति में आए किसी प्रमुख पात्र के जीवन की विशेषताओं का वर्णन। **उदा.** 'बड़े घर की बेटी' कहानी की नायिका का चरित्र-चित्रण दीजिए।

चरित्र प्रमाणपत्र *पुं. (तत्.)* इस आशय का प्रमाणपत्र कि प्रमाण पत्र-प्रदाता की जानकारी एंव विश्वास के अनुसार प्रमाणपत्र में उल्लिखित व्यक्ति का चरित्र ठीक है।

चर्चा *स्त्री. (तत्.)* ***सामान्य*** अर्थ-बातचीत*;* उल्लेख, जिक्र; विचार-विमर्श। किसी विषय विशेष पर दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच हुआ विचार-विमर्श । **उदा.** सम्मेलन में दो दिनों तक प्रेमचंद के उपन्यासों पर जमकर चर्चा हुई। discussion

चर्चित *वि. (तत्)* 1. जिसके विषय में चर्चा की गई हो; जो चर्चा में हो या जिसका उल्लेख हुआ हो। 2. लेप लगाया हुआ, लेप युक्त। **जैसे:** चंदनचर्चित।

चर्म *पुं. (तत्.)* 1. खाल, त्वचा, चमड़ी (शरीर का ऊपरी आवरण)। 2. चमड़ा (मरे हुए पशुओं की खाल जो जूते, बैग आदि बनाने के काम आती है)।

चर्वणक दंत *पुं. (तत्.)* स्तनधारी प्राणियों में कई जड़ों वाले सबसे पिछले दाँत जो पीसने-चबाने के काम आते हैं। मनुष्य में सामान्यत: इनकी संख्या 12 (छह ऊपर एवं छह नीचे) होती है। molar teeth

चल संपत्ति ऐसी संपदा धन-दौलत जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर सुविधापूर्वक स्थानांतरित की जा सके। **जैसे:** रुपए-पैसे, गहने, कपड़े, बरतन आदि। **वि.** अचलसंपत्ति।

चलचित्र *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ चलते हुए चित्र। सा.अर्थ 'सिनेमा' के लिए प्रयुक्त शब्द motion, picture, movie

चलन *पुं. (तत्.)* मूल अर्थ 1. चलने की क्रिया। 2. रिवाज़, रस्म, प्रथा। **उदा.** राजस्थान में

'गणगौर' पूजा का चलन बहुत है। 3. लगातार चलते रहने वाला व्यवहार। **जैसे:** मेरे ड्राइविंग लाइसैंस का चलनकाल पंद्रह वर्ष है। runing time 4. फैशन, प्रचार। **उदा.** आजकल मोबाइल का बड़ा चलन है।

चलनशील *वि. (तत्.) [चलन+शील]* 1.जिसका वर्तमान में प्रचलन हो। चलने योग्य। **जैसे:** चलनशील मुद्रा, चलनशील परिधान। 2. गतिशील, गतियुक्त।

चर्वणक *वि. (तत्.)* चबाने वाला।

चवन्नी *स्त्री. (देश.)* देश में मीट्रिक मुद्रा प्रणाली से पूर्व का चार आने मूल्य का सिक्का। जो रुपए का चौथा भाग होता था। **पर्या.** चार आना। 1 रुपया=100 पैसे=पुराने 16 आने। 1 अठन्नी=50 पैसे=पुराने 8 आने। 1 चवन्नी=25 पैसे=पुराने 4 आने।

चहक *स्त्री. (देश.)* चहकने की क्रिया या भाव; प्रसन्नतापूर्वक बोलने का भाव; चिड़ियों की चहचह की आवाज़।

चहकना *अ.क्रि. (अनु.)* पक्षियों द्वारा निरंतर चह- चह जैसी आवाज़ निकालना। ला.अर्थ प्रसन्नता के अतिरेक में जगह-जगह उसकी अभिव्यक्ति करना। **उदा.** लाटरी निकलने पर वह चहकने लगा।

चहचहाना *अ.क्रि. (देश.)* पक्षियों की निरंतर चल रही चह-चह जैसी आवाज़। चहकना।

चहचहाहट *स्त्री. (देश.)* पक्षियों के सामूहिक रूप से 'चह' 'चह' ध्वनि करने (चहचहाने) की आवाज़। chirping

चहल-पहल *स्त्री. (देश.+दूसरा पद अनुकरणनात्मक)* 1. खुशी से इधर-उधर घूमते हुए लोगों की भीड़, धूमधाम, वातावरण का सजीव होना। 2. रौनक।

चहार दीवारी *[चहार=चार+दीवार+ई] स्त्री. (फा.)* शा.अर्थ *चार* दीवारों वाली। सा.अर्थ किसी शहर, मैदान या भवन आदि की सीमा व्यक्त कराने वाली दीवार का अटूट घेरा।

चहेता *वि. (देश.चाह)* जो अत्याधिक प्रिय हो। **पर्या.** लाड़ला, प्रिय।

चाँदनी *स्त्री. (देश.[चाँद[चंद्र-सं)* 1. चंद्रमा का प्रकाश, चाँद का उजाला। **पर्या.** चंद्रिका। 2. बिछाने की बड़ी सी सफेद चादर। *स्त्री. (तद् [छादनी) 3.* ऊपर तानने की सफेद चादर। **पर्या.** चँदोवा।

चाँद्रमास *पुं. (तत्.)* 1. चंद्रमा के भ्रमण का वह काल जिसके दौरान चंद्रमा पृथ्वी का एक चक्कर पूरा कर लेता है, जिसकी अवधि लगभग तीस दिन मानी गई है। 2. पूर्णिमा से पूर्णिमा तक का एक मास। **जैसे:** आषाढ़ मास की पूर्णिमा से श्रावण मास की पूर्णिमा तक का काल एक चाँद्रमास होता है।

चाक *पुं. (तद्.चक्र)* पहिएनुमा (गोल, चक्राकार) पत्थर का गढ़ा हुआ उपकरण जिसे घुमाकर कुम्हार मिट्टी के बर्तन बनाता है।

चाकरी *[चाकर+ई] स्त्री. (फा.)* सामान्य रूप से अवैतनिक यानी केवल भरण-पोषण के आधार पर की जाने वाली नौकरी, सेवा, टहल, दासता। **उदा.** 1. 'श्याम म्हानै चाकर राखो जी'-मीरा। 2. अजगर करे न चाकरी पंछी करे न काम। दास मलूका कह गए सबके दाता राम।।

चाकू *पुं. (तुर्की.)* 1. फल सब्ज़ी आदि काटने का धारदार उपकरण। 2. बड़ी छुरी या छुरा जो हत्या, मार-काट में प्रयोग किया जाए। **जैसे:** रामपुरी चाकू।

चाक्षुष *वि. (तत्.)* 1. चक्षु अर्थात् आँख संबंधी। 2. दिखाई पड़ने वाला। visual

चादर *स्त्री. (फा.)* 1. आयताकार कपड़ा जो ओढ़ने या बिछाने के काम आता है। 2. लोहे, शीशे या प्लास्टिक की बनी सपाट परत। 3.स्त्रियों द्वारा ओढ़ी जाने वाली चुन्नी। **मुहा.** चादर उतारना=अपमानित करना। चादर देखकर पाँव फैलाना=हैसियत के अनुसार काम करना।

चापि *अव्य. अभिव्यक्ति [च+अपि] (तत्.)* और भी। इसके अतिरिक्त यह भी।

चाबुक *पुं. (फा.)* लकड़ी की डंडी (हत्थी) में चमड़े की पट्टी या रस्सी लगाकर बनाई हुई ऐसी युक्ति जो पशुओं को (विशेषकर घोड़ों को) हाँकने या अपराधियों को दंड देने के काम आता है। **पर्या.** कोड़ा।

चारण *पुं. (तत्.)* देशी नरेशों के दरबार में राजवंश के यश का गान करने वाली जाति का कोई सदस्य।

चारा *(देश.[चरना) पुं.* शा.अ. पशुओं को खाने के लिए डाली जाने वाली घास। 1. हिंसक पशुओं का शिकार करते समय उन्हें शिकारगाह की ओर आकृष्ट करने के लिए बँधा निरीह पशु (भेड़ बकरी आदि)। 2. दूसरों को फँसाने के लिए दिया जाने वाला प्रलोभन। **मुहा.** चारा डालना=प्रलोभन देना।

चारू *वि. (तत्.)* सुंदर। जो सुंदर लगता हो, मनोहर। **उदा.** *चारू* चंद्र की चंचल किरणें.....

चार्जशीट *पुं. (अं.)* **दे.** आरोप-पत्र।

चाल *स्त्री. (देश.)* सा.अर्थ 1. चलने की क्रिया; चलने का ढंग या तरीका। **जैसे:** घोड़े की चाल (गैठ) 2. गति। **जैसे:** मोटर की गति सीमा 60 कि. प्रतिघंटा से अधिक न हो। speed 3.खेल. (शतरंज, ताश आदि) मोहरे को आगे बढाने या पीछे हटाने की क्रिया। **जैसे:** चाल चलना। move 4. **गृह.** भीड़भाड वाली सामूहिक आवास व्यव्स्था में कोई कमरा। **जैसे**: मुबंई में लाखों लोग चालों में रहते हैं। 5. दूसरे को नुकसान पहुँचाने वाला चालाकी भरा सोचा समझा व्यवहार। **उदा.** तुम्हारी चाल को कौन नहीं जानता? 6. **भौं** वस्तु विशेष की गति करने की दर। यह दूरी को समय से भाग देने पर प्राप्त होती है। speed

चालक *वि./पुं. (तत्.)* किसी वाहन को चलाने वाला (व्यक्ति)। **जैसे:** साइकिल चालक, मोटर चालक, वायुयान चालक।

चालमापी *वि./पुं. (तत्.)* **इंजी.** वह उपकरण या यंत्र जिसके द्वारा वाहन आदि की चाल को मापा जाता है या उसके द्वारा तय की गई दूरी का पता लगाया जाता है। speedometer

चाव *पुं. (तद. चाह)* संतोष भरी इच्छा, जिसमें उमंग का भाव भरा हो। चाह, रूचि। **उदा.** एक गरीब और भूखे बच्चे को बड़े चाव से सूखी रोटी का टुकड़ा चबाते देखकर मेरा मन भर आया।

चाह *स्त्री. (वांछा)* इच्छा, अभिलाषा। **उदा.** 'चाह नहीं मैं सुरबाला के गहनों में गूँथा जाउँ' (माखनलाल चतुर्वेदी)। **लो.** जहाँ चाह वहाँ राह- इच्छा हो तो मार्ग निकल ही आता है।

चाहत *स्त्री. [चाह]* 1. तीव्र इच्छा, लालसा, मनोकामना। 2. प्रेम, प्यार।

चिंगारी *स्त्री.* **दे.** चिनगारी।

चिंघाड़ना *अ.क्रि. (देश.)* सा.अर्थ=हाथी की आवाज़ करना, हाथी की आवाज़। ला.अर्थ गुस्से में ज़ोर से चीखना-चिल्लाना।

चिंतक *वि./पुं. (तत्.)* 1. चिंतन करने वाला। **दे.** चिंतन। 2. चाहने वाला। **जैसे:** आप मेरे सदा ही शुभ-चिंतक रहे हैं।

चिंतन *पुं (तत्.)* किसी विषय पर यथा समय गंभीरतापूर्वक किया जाने वाला विचार। **तु.** चिंता।

चिंतनीय *वि. (तत्.)* चिंता करने लायक, गंभीर। **पर्या.** चिंताजनक। **उदा.** रोगी की स्थिति बहुत चिंतनीय है। **दे.** चिंता।

चिंता *स्त्री. (तत्.)* व्याकुलता, व्यग्रता, बेचैनी, बेताबी। **तु.** चिंतन।

चिंताग्रस्त [चिंता+ग्रस्त] *पुं. (तत्.)* चिंता से व्याकुलता पीड़ित **दे.** चिंता **वि.** चिंतामुक्त

चिंतामणि *पुं. (तत्.)* 1. (भारतीय पुराणानुसार) सभी प्रकार की आवश्यकताओं या इच्छाओं को पूरा करने वाली (काल्पनिक) मणि विशेष। 2. परमात्मा।

चिंतित *वि. /पुं.(तत्.)* चिंता से ग्रस्त। (i) बेचैन। (ii) सोच में डूबा हुआ। **दे.** चिंता।

चिंदी *स्त्री. (देश.)* कपड़े या कागज़ का छोटा, लम्बा और निरुपयोगी टुकड़ा। **मुहा.** चिंदी निकालना=निरर्थक तर्क करना। चिंदियाँ उड़ाना=टुकड़े-टुकड़े कर नष्ट कर देना।

चिक *स्त्री. (तुर्की. =[चिक़)* 1. बाँस या सरकंडे की तीलियों से बना परदा। **पर्या.** चिलमन।

चिकन गुनिया *पुं. (अफ्री.)* **आयु.** एडीज़ एजिप्टी नामक मच्छर प्रजाति के काटने से संचरित विषाणुजन्य रोग जिससे रोगी को सिरदर्द, ज्वर, सूजन, थकान, मिचली, उल्टी तथा बदन दर्द जैसी शिकायते हो जाती है। अभी इसका टीका उपलब्ध न होने के कारण केबल लक्षणों के आधार पर चिकित्सा की जाती है।

चिकन पॉक्स *स्त्री. (अं.)* विषाणु से उत्पन्न होने वाला एक तीव्र संक्रामक रोग/तेज बुखार, सिर में दर्द तथा बाद में शरीर पर दाने निकल आना इस

रोग का लक्षण है। **पर्या.** मसूरिका। Chicken pox **तु.** small pox

चिकित्सक *पुं. (तत्.)* रोगग्रस्त व्यक्तियों का उपचार करने वाला। **पर्या.** वैद्ध, हकीम, डॉक्टर।

चिकित्सा *स्त्री. (तत्.)* किसी रोगी को इलाज संबंधी सभी कार्यों का सामूहिक नाम। **पर्या.** उपचार।

चिकित्सा अधिकारी *पुं. (तत्.)* 1. चिकित्सा (इलाज) करने वाला विशेषज्ञ। 2. चिकित्सालय का प्रशासनिक अधिकारी।

चिकित्सा-छुट्टी *स्त्री. (तत्.+देश.[छुटना)* विद्यार्थी, कर्मचारी आदि के अस्वस्थ होने पर अधिकृत चिकित्सक (डाक्टर) की सलाह पर ली गई छुट्टी। **पर्या.** चिकित्सा अवकाश।

चिकित्सा पर्यटक *पुं. (तत्.)* चिकित्सा के उद्देश्य से दूसरे देशों में पर्यटन करने वाला (जाने वाला बीमार व्यक्ति।)

चिकित्साविज्ञान *पुं. (तत्.)* वह विज्ञान या शास्त्र जिसमें विविध प्रकार के लक्षणों तथा उपचार आदि का विवेचन हो। पर्या. आयुर्विज्ञान

चिकित्सीय यंत्र *[चिकित्सीय+यंत्र] पुं. (तत्.)* रोगों के उपचार के लिए प्रयोग में लाए जाने वाले उपकरण।

चिचियाना *अ.क्रि. (अनु.)* 1. पक्षियों द्वारा जोर-जोर से चीं चीं की ध्वनि निकालना। 2. चीखना।

चिट्ठी *स्त्री. (देश.)* वह कागज जिस पर कोई संदेश, आवेदन आदि लिखकर किसी व्यक्ति या संस्था को दस्ती दिया जाता है या डाक द्वारा भेजा जाता है। **पर्या.** पत्र, खत।

चिढ़ना *अ.क्रि. (तद्. छिद्रति)* अपने प्रतिद्वंद्वी की प्रशंसा सुनकर या उसकी उन्नति होते देखकर उससे अप्रसन्न होने और आवश्यक हो तो उसके अवगुण गिनाना शुरू करना।

चिढ़ाना *[चिढ़ाना का प्रेर.] स.क्रि. (देश. [चिंतिड़ी=इमली ?)* 1. किसी को उकसाने या उसका मज़ाक उड़ाने के लिए जानबूझकर ऐसा कुछ करना या बोलना जिससे देखने-सुनने वाले को बुरा लगे किंतु करने/कहने वाले को आंनद मिले। **मुहा.** मुँह चिढ़ाना=नकल उतारते समय अपनी मुखाकृति को भी उसके तदनुरूप करके चिढ़ाना।

चित्त/चित *पुं. (तत्.)* 1.अंत:करण के चार प्रकारों में से एक जो भावनाओं और आवेगों से संबंधित होता है। अन्य तीन हैं-मन, बुद्धि, अहंकार। 2. सामान्य अर्थ में मन। **मुहा**. चित्त रमना, चित्त लगना, चित्त उचटना आदि। **वि.** (तत्. चित)। *व्यु.* अर्थ ढेर किया हुआ, चयन किया हुआ। *सा.अर्थ-पीठ* के बल लेटा हुआ। **विलो.** पट या पट्ट।

चित्र *पुं. (तत्.)* 1. रेखाओं और रंगों आदि से बनी आकृति, तस्वीर picture 2. किसी वस्तु या व्यक्ति की हूबहू अनुकृति photo 3. सजीव और विस्तृत वर्णन illustration

चित्रकथा *स्त्री. (तत्.)* चित्रों में माध्यम से लिखी गई कथा। **पर्या.** कौतुक कथा। **टि.** इसमें संवाद दिखलाने के लिए बादलों जैसा घेरा बनाकर उसमें संवाद के शब्द लिख दिए जाते हैं तथा आकृति में एक चोंच सी बना दी जाती है जो बोलने वाले की ओर संकेत करती है।

चित्रकला [चित्र+कला] *स्त्री. (तत्.)* कागज पर कलम, रंग, कूँची आदि की सहायता से तस्तीर बनाने की कला।

चित्रकार *पुं. (तत्.)* चित्र की रचना करने वाला कलाकार, चित्र बनाने वाला और उसमें रंग भरने वाला।

चित्रण *पुं. (तत्.)* 1. लंबाई, चौड़ाई तथा गोलाई आदि की विशेषताओं के अनुसार आकृति बनाना; चित्र बनाना, तस्वीर बनाना; वर्णन करना।

चिनगारी *स्त्री.* 1. जलती हुई वस्तु से निकलकर बाहर आ रहा आग का छोटा कण। 2. दो कठोर वस्तुओं की रगड़ से उत्पन्न होने वाला आग का कण। (स्फुलिंग) 3. बिजली, (विद्युत) के सतत प्रवाह में किसी बाधावश बाहर की ओर प्रकट होने वाला ध्वनियुक्त क्षणिक अग्निकण या प्रकाश-रेखा। स्पार्क

चिपचिपा *वि. (देश. (अनु.)* चिपकने जैसा गुण रखने वाला परंतु पूरी तरह चिपकाने वाला नही। **जैसे**: तैलीय पदार्थ।

चिबिड्डी दे. स्टापू।

चिमनी *स्त्री. (अं.)* 1. रसोई, कारखाने आदि में जल रही आग का धुँआ बाहर निकालने वाली लंबी मीनारनुमा नली। **उदा.** कारखाने की चिमनी, रसोईघर की चिमनी। 2. मिट्टी के तेल से जलने वाला छोटा दीपक।

चिरंजीवी/चिरजीवी *वि. (तत्.)* दीर्घकाल तक जीवित रहने वाला। **जैसे:** 'चिरंजीवी भव' (आशीर्वाद)

चिरपरिचित *[चिर+परिचित] वि. (तत्.)* बहुत समय से परिचित, पुराना परिचित। लंबे समय से जानी-पहचानी। **उदा.** उनकी चिरपरिचित हँसी सबके मन को मोह रही थी।

चिरस्थायी *[चिर+स्थायी] पुं. (तत्.)* बहुत लंबे समय तक बने रहने वाला।

चिलचिलाना *अ.क्रि. (देश.)* 1. रह-रहकर चिलक (दर्द) उठना। **पर्या.** चिलकना। 2. चमकना। **प्रयोग**-चिलचिलाती धूप=अत्यंत चमकदार और चुभने वाली धूप।

चिलम *स्त्री. (फा.)* शंक्वाकार (ऊपर से कटोरी के आकार का और क्रमशः संकरा होता जाता नली-सा) जिसमें आग व तंबाकू (आदि) रखकर ग्रामीण जन और नशेड़ी धूम्रपान करते हैं। **मुहा.** चिलम भरना=चापलूसी करना, खुशामद करना।

चिह्नित *वि. (तत्.)* जिस पर निशान लगा हो।

चिह्न *पुं. (तत्.)* किसी की पहचान कराने वाला चिह्न विशेष। पर्या. प्रतीक, निशान, मार्क, साइन। **उदा.** पदचिह्न।

चीकट *वि. (देश. (कीचड़)* 1. चिकना, तैलीय *पुं.(देश.)* लसलसी या चिपचिपी मिट्टी, कीचड़।

चीख *स्त्री. (देश.<चीत्कार)* पतली परंतु तीव्र आवाज में पीड़ा के कारण चिल्लाने की ध्वनि। ककणापूर्ण चिल्लाहट। आर्तनाद, चीत्कार। **मुहा.** चीख मारना=बार-बार चीखना। चीख-पुकार=सहायता के लिए चीखना।

चीखना-चिल्लाना *अ.क्रि. (देश.)* 1. मुँह से चीख की ध्वनि निकालना। **दे.** चीख। 2. करुणापूर्ण विलाप करना। 3. सहायता के लिए पुकार लगाना। 4. किसी पर बोलकर क्रोध उतारना।

चीज *स्त्री. (फा.)* 1. कोई, वस्तु, द्रव्य, पदार्थ आदि। 2. कोई महत्त्वपूर्ण वस्तु आदि।

चीत्कार *पुं. (तत्.)* चीत् (चीं) की ध्वनि के साथ क्रंदन या विलाप की ध्वनि।

चीरना *सक्रि. (तद्.<चीर्ण)* किसी समूची वस्तु को (लकड़ी, वस्त्र, आदि का) किसी तेज धारदार उपकरण से दो फाड़ करना। **जैसे**: लकड़ी चीरना।

चुंगी *स्त्री. [तद्.<शुंक-प्रा. (शुल्क<-सं.]* दूसरे शहर से आने वाले माल पर नगरपालिका या समकक्ष निकाय द्वारा लगाया जाने वाला यात्रा महसूल या कर।

चुंबक *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ चूमने वाला। 1. पत्थर या धातु जो लोहे को अपनी ओर खींचती है। 2. लोहे से बना उपकरण जिसमें लोहे को अपनी ओर खींचने का गुण हो। megnet

चुगना *स.क्रि. (फा.<चुंग)* चिड़ियों द्वारा आगे झुकते हुए चोंच से दाना उठाना।

चुग्गा *पुं. (देश.)* चिड़ियों को चुगने हेतु डाला जाने वाला चारा (दाने)।

चुनना *स.क्रि. (तद.<चयन)* 1. कई वस्तुओं में से किसी एक अथवा कुछ को उपयोगी मानकर अलग निकाल लेना। 2. निर्वाचन इत्यादि के समय किसी एक व्यक्ति प्रतिनिधि रूप में स्वीकार करना। 3. वृक्ष आदि से फूल तोडक़र इकट्ठा करना। 4. अनावश्यक वस्तु को बाहर करना। **जैसे**: चावल चुनना। 5. दीवार बनाने हेतु ईंटें जोड़ना। **मुहा.** दीवार में चुनना-मृत्युदंड देने के लिए चारों ओर दीवार खड़ी करना।

चुनरी/चूनरी *स्त्री. (देश.)* स्त्रियों के ओढ़ने या देवी को चढ़ाने का लाल रंग का कढ़ाई दार या गोल बूटों वाला कपड़ा।

चुनाव *पुं. [तद्.<चयन]* चुनने की क्रिया अथवा भाव। 1. ढ़ेर में से किसी वस्तु को पसंद किया जाना। selection 2. सलैक्शन (पद आदि विषयों में)। 3. कई लोगों में से एक को अनावश्यकतानुसार चुनना। election **उदा.** वे विधान-सभा का चुना, जीत गए।

चुनौती *[चुनना+ओती] स्त्री. (देश.)* (युद्ध के लिए या शास्त्रार्थ के लिए) किसी से अहंकारपूर्वक कहा गया ऐसा कथन तुममें साहस हो तो सामने आओ। challange **पर्या.** आह्वान, ललकार।

चुप *वि. [तद्.<चुप = चुपचाप चले जाना]* जिसके मुख से शब्द न निकले, मौन, अवाक्।

चुपचाप *क्रि. वि.* शांत भाव से, बिना कुछ बोले या कहे-सुने।

चुपचाप *क्रि. वि. (दे.<चुप)* 1. बिना बोले, 2. छिपकर, 3. बिना विरोध किए। **मुहा.** चुपके से = चुपचाप।

चुपड़ना *स.क्रि. (देश.)* (किसी वस्तु का) लेप लगाना। **जैसे**: रोटी चुपड़ना = रोटी पर घी लगाना। **मुहा.** चिकनी-चुपड़ी (बातें करना) खुशामद करना।

चुप्पा *वि. (देश. (चुप)* (व्यक्ति) जो स्वभावत: चुप ही रहे, बोले नहीं या कम से कम बोले।

चुप्पी *स्त्री. (दे.)* चुप रहने का भाव। **मुहा.** चुप्पी साधना-लंबे समय तक चुप रहना।

चुभन *स्त्री. [हि.<चुभना]* 1. चुभने की क्रिया या भाव। 2. चुभने से होने वाली पीड़ा, तकलीफ। **उदा.** सुई की चुभन से उसकी उँगली से खून की बूँद निकल आई।

चुभना *(अ.क्रि.) (अनु.)* 1. किसी नुकीली वस्तु का शरीर के किसी भाग में घुसना, गड़ना, धँसना। **उदा.** मार्ग में नंगे पैर चलते हुए उसके पैर में काँटा का चुभ गया। 2. किसी की कही बात का मन को बुरा लगना। **उदा.** उसके कड़वे बोल मेरे मन में अब भी चुभ रहे हैं।

चुभाना *(स.क्रि.)* किसी नुकीली वस्तु को किसी के शरीर के किसी भाग में जानबूझ कर इस उद्देश्य से धँसाना कि उसे कष्ट पहुँचे।

चुलबुल *वि. (हि. चुलबुलाना)* 1. मस्ती आदि के कारण जिसमें चंचलता और नटखटापन हो। **पर्या.** चंचल, चपल; नटखट। **उदा.** 'तुम्हारा बेटा बहुत चुलबुला है। चुलबुली *(स्त्री.)*

चुल्लू *पु. [तद्.<चुलुक]* हथेली में बना गड्‌ढा; हथेली के गड्‌ढे में समाया पानी। शा.अर्थ. चुल्लू भर पानी उतना, भर पानी जितना एक बार में चुल्लू में समा सके। **मुहा.** चुल्लू भर पानी में डूब मरना = लज्जाजनक स्थिति में पड़ना, मुँह दिखाने के योग्य न रहना।

चुसकी *[चूसना तद्. चूषण] स्त्री.* 1. कसने के बाद गोला बनाकर और उस पर चाशनी छिड़कर बनी मिठाई, जिसे बच्चे चूसकर खाते हैं। 2. स्वाद लेने के लिए शब्द करते हुए एक बार चूसने का भाव।

चुस्त *वि. (फा.)* 1. जो कसा हुआ हो, तंग। **उदा.** चुस्त कपड़े पहनना आजकल फैशन बन गया है। 2. जिसमें फुर्तीलापन हो, फुर्तीला। **जैसे**: यह काम उसे सौंप दो। वह बहुत चुस्त है, इसलिए वह इसे जल्दी कर लेगा। smart 3. निपुण/दक्ष-वह अपने कार्य में चुस्त है।

चुस्ती *स्त्री. (दे.)* चुस्त अर्थ। 2. जिसमें फुर्तीलापन हो, फुर्तीला। **जैसे:** यह काम उसे सौंप दो। वह बहुत चुस्त है, इसलिए वह इसे जल्दी कर लेगा। smartness 3. निपुण/दक्ष-वह अपने कार्य में **चुस्त** है।

चुहल/चुहल-बाजी *स्त्री. (देश.अनु.)* हँसी-मजाक, ठट्‌टा, ठिठोली। **उदा.** मेरे साथ चुहल मत करो। मुझे चुहलबाजी पसंद नहीं है।

चूंकि *अर. (फा.)* क्योंकि, इसलिए कि, यत:। चूँकि तुम मुझसे बड़े हो, इसलिए मैं तुम्हारा आदर करता हूँ।

चूँ *स्त्री. (देश. अनु.)* 1. छोटी चिडिया की आवाज, 2. बहुत धीमी आवाज। **मुहा.** चूँ करना = नाममात्र का प्रतिवाद करना। चूँ न करना = कुछ भी न बोलना, मुँह बंद रखना।

चूक *स्त्री. (चूकना)* सा.अर्थ 1. भूलने से या गलती करने की स्थिति। **पर्या.** भूल, गलती error **उदा.** प्रश्न का सही उत्तर लिखने में मुझसे चूक हो गई। वि.अर्थ 2. नियम जानते हुए भी अनजाने में होने वाली भूल। 3. समय पर कोई कार्य न कर पाने की स्थिति यानी मैं प्रश्न का उत्तर नहीं जानता था इसलिए सही उत्तर नहीं लिख पाया। **उदा.** आपकी पीठ मेरी ओर थी। इसलिए आपको पहचानने में मुझसे चूक हो गई।

चूजा *पुं. (फा.)* मुर्गी का बच्चा। चिकन

चूड़ी *स्त्री. (तद्.चूड़ा)* स्त्रियों की कलाई में पहनने का एक गोलाकार आभूषण जो काँच, लाख, स्वर्ण आदि का बनता है तथा विशेष रूप से शोभा के लिए या सौभाग्यसूचक चिह्‌न के रूप में धारण किया जाता है। **मुहा.** चूडियाँ पहनना = पुरुष होकर भी कायरता का प्रदर्शन करना। **उदा.** वह तुम्हें पीटता रहा और तुम पिटते रहे। तुमने क्या हाथ में चूडियाँ पहन रखी थीं?

चूनरी *स्त्री. (देश.)* स्त्रियों द्वारा ओढ़ा जाने वाला रंगीन बुंदकीदार वस्त्र।

चूना *पुं. (तद्.<चूर्ण)* 1. एक विशेष प्रकार के पत्थर को जलाने से प्राप्त अल्कली पदार्थ (क्षार) जिसमें कैल्शियम नामक पदार्थ अत्यधिक मात्रा में पाया जाता है। 2. घरों में सफेदी करने के लिए, कक्षाओं में श्यामपट्ट पर लिखने के लिए या पान में लगाने के लिए प्रयुक्त सफेद पदार्थ। अ.क्रि. *(तद्< च्यवन)* बूँद-बूँद करके टपकना।

चूमना *स.क्रि (तद्.<चुंबन)* 1. होठों से मीठी ध्वनिपूर्वक किसी का कोई अंग विशेष रूप से गाल या होंठ। इस प्रकार स्पर्श करना जैसे कि उसका रसपान कर रहे हों; चुम्मा लेना। 2. वात्सल्यभाव का प्रकटीकरण-बड़ों द्वारा बच्चों को चूमना। 3. श्रृंगारिक चेष्टाएँ-प्रेमी-प्रेमिका का परस्पर चूमना। **जैसे:** सिर चूमना, हाथ चूमना, गाल चूमना आदि।

चूर *वि. (तद्.<चूर्ण)* 1. तोड़ने, कूटने और फिर पीसने या बाँटने आदि की क्रिया से जो चूर्ण बन गया हो या चूरा हो गया है। **जैसे:** 1. आँवले का चूर्ण/चूरा, चावल का चूर्ण/चूरा। 2. लाक्ष.अर्थ वे थककर चूर हो गए = थकावट के कारण शिथिल नशे में चूर, मदहोश बेसुध, घमंड में चूर = बहुत अधिक घमंड।

चूरन *पुं. (तद्.<चूर्ण)* 1. दे. चूर्ण। 2. स्वादिष्ट चटपटे या चटपटे स्वाद वाला पाचक चूर्ण।

चूर्ण *पुं. (तत्.)* 1. किसी ठोस वस्तु या पदार्थ का सूखा और बारीक पिसा हुआ रूप। **पर्या.** चूरा, बुकनी। 2. औषधि के रूप में प्रयुक्त पिसी हुई सूखी जड़ी-बूटी।

चूर्णित *[चूर्ण +इन्] वि. (तत्.)* चूरा किया गया, बारीक पीसा गया/पिसा हुआ।

चूल्हा *पुं. (तद्.)* मिट्टी या लोहे से बना उपकरण जिसमें भोजन पकाने के लिए आग जलाई जाती है।

चूसना *स.क्रि. (तद्.<चूषण)* 1. किसी फल इत्यादि ठोस पदार्थ के रस को मुँह से अंदर की ओर खीचना। 2. ला.अर्थ किसी से निर्दयतापूर्वक धन आदि वसूलना। **मुहा.** खून चूसना = शोषण करना।

चेक (*अं.) पुं.* 1. अवरोध, नियंत्रण 2. किसी चीज या व्यक्ति की सुरक्षा या स्वास्थ्य की दृष्टि से जॉच, परीक्षण, निरीक्षण जैसे चेक पोस्ट, मेडिकल चेक आप check 3. बैंक की हुंडी। किसी बैंक के नाम से लिखा वह बिनिमय पत्र जिस पर देय राशि भरने पर खातेदार के खाता Account से उसे नकद राशि का भुगतान किया जाता है। cheque 4. चेकोस्लोवाकिया नामक देश से संबंधित; चेकोस्लोवाकिया का निवासी।

चेचक *स्त्री. (फा.)* 1. पुराने जमाने की एक जानलेवा बीमारी जिसमें शरीर पर बहुत से छाले निकलते हैं। शरीर और पैर स्थायीतौर पर जिनमें पीव भरा होता है। ठीक होने के बाद ग्रामीण प्रयोग-माता। 2. शीतला रोग-यह दो प्रकार की होती है 1. छोटी चेचक/माता मीजल्स 2. बड़ी चेचक small pox **उदा.** आजकल छोटे बच्चों को **चेचक** का टीका लगाया जाता है।

चेतन *वि. (तत्.)* 1. जिसमें चेतना या ज्ञान हो, चेतनायुक्त। एनिमेट। मनुष्य, पेड़-पौधे आदि चेतन प्राणी हैं। **विलो.** 1. अचेतन, 2. जड़।

चेतना *स्त्री. (तत्.)* 1. चेतन होने का भाव अपने आस-पास के वातावरण के प्रति सजग रहना और तद्नुकूल प्रतिक्रिया करना। **पर्या.** होश, चैतन्य। 2. बुद्धि, ज्ञान प्राप्त करने की शक्ति। अ. क्रि. (देश.-चेत-नामधातु) जागरुक होना, सावधान होना।

चेतना केंद *पुं. (तत्.)* शा.अ. चेतना जाग्रत करने का केंद्र (स्थान)। 1. अपने सान्निध्य से प्राणी को शक्ति का केंद्र। 2. ज्ञान के मूल आधार वाली शक्ति का केंद्र।

चेतावनी *स्त्री. (देश. (चेतना))* 1. भूल होने पर पुन: न होने देने हेतु सतर्क रहने की सूचना। 2. कोई अनुचित कार्य या अनुशासन भंग होने पर उसे न दोहराने के लिए दी गई धमकी। 3. संभावित अनिष्ट की जानकारी और उससे बचने की सलाह। warning

चेष्टा *स्त्री. (तत्.)* 1. अंगों को हिलाने की या गति देने की क्रिया। **पर्या.** हरकत। 2. मन का भाव प्रकट कर देने वाली मुख की या अंगों की स्थिति। 3. प्रयत्न, कोशिश। **उदा.** मैं उसे मनाने की चेष्टा कर-कर के हार गया, किन्तु वह नहीं माना।

चेहरा-मोहरा *पुं. (फा.हि.)* चेहरे का आकार-प्रकार, मुखाकृति। **उदा.** वह आदमी चेहरे-मोहरे से तो

बड़ा शरीफ लग रहा था किंतु निकला बड़ा छँटा हुआ बदमाश।

चैक[1] *पुं. (अं.)* 1. अवरोध, नियंत्रण, 2. किसी चीज या व्यक्ति की सुरक्षा या स्वास्थ्य की दृष्टि से जाँच, परीक्षण, निरीक्षण **जैसे:** चेकपोस्ट**,** मेडिकल चेक अप check

चैक[2] *पुं.* 3. बैंक की हुंडी। 'चेक' किसी बैंक के नाम से लिखा हुआ वह विनिमय पत्र है जिस पर देय राशि भरने पर खातेदार के खाता account से उसे नकद राशि का भुगतान किया जाता है। चेक काटने वाला उस पर हस्ताक्षर करता है।

चैक[3] *पुं.* 1. चेकोस्लोवाकिया नामक देश से संबंधित। 2. चेकोस्लोवाकिया नामक देश से संबंधित निवासी।

चैत्य *पुं. (तत्.)* 1. किसी देवी-देवता के नाम पर बनाया गया भवन या चबूतरा। 2. बौद्ध भिक्षुओं के रहने का मठ या विहार। 3. गौतम बुद्ध की मूर्ति।

चैत्र *पुं. (तत्.)* महीना भारतीय चांद्रमासों की गणनानुसार, सूर्य की परिक्रमा करते समय चित्रा नक्षत्र की सीध में पृथ्वी के आने के समय वाला महीना, भारतीय गणना के अनुसार पहला महीना।

चैतन्य *पुं. (तत्.)* 1. चेतन होने का भाव, चेतनता। 2. परमात्मा, ब्रह्म्। 3. प्राण। 4. बंगाल के प्रसिद्ध वैष्णव संत चैतन्य महाप्रभु। **उदा.** जड़हि करइ चैतन्य (रा. च. मानस तुलसी) दे. चेतनता। **विलो.** जड़ (पर्वत, पत्थर, लकड़ी आदि।)

चैन *पुं. (तद्. चैतन्य)* सुख का काल; मन की शांति, आराम। **उदा.** जब तक इस काम को पूरा नहीं कर लूँगा, मुझे चैन नहीं मिलेगा। **मुहा.** चैन की नींद सोना=(काम पूरा हो जाने के बाद) शांत चित्त होकर सो जाना।

चोंच *स्त्री. (तद्. (चंचु)* प्राणि-पक्षियों का बाहर की ओर उभरा अस्थिमय हनु (जबड़ा) beak

चोंचला/चोचला *पुं. (देश.)* किसी को रिझाने/खिझाने (अथवा दिखावा करने) के लिए की गई शारीरिक चेष्टा, हावभाव। **पर्या.** नखरा। **जैसे:** अमीरों के चोचले अच्छी स्थिति न होने पर भी जरूरत से ज्यादा घर में दिखाने की चीजें लाना।

चोखा *वि.(तद्.[चोक्ष)* ग्रामीण प्रयोग*:* 1.जो विशुद्ध एंव उत्तम हो, मिलावटरहित। **जैसे:** तुम्हारा माला *चोखा* है। 2. रंग जो बहुत अच्छा और गहरा चढ़ा हुआ हो। **जैसे:** हर्र लगी न फिटकरी, रंग चोखा आया।

चोगा *पुं. (तु.)* घुटने तक लंबा कुरतेनुमा वस्त्र। **पर्या.** लबादा।

चोचलेबाज़ *वि.* जरूरत से ज्यादा दिखावा करने वाला।

चोचलेबाजी *स्त्री.* जरूरत से ज्यादा दिखावा करने की स्थिति।

चोट *स्त्री. (तत्.)* 1. किसी के द्वारा या किसी वस्तु का शरीर पर होने वाला ऐसा आघात या प्रहार, जिससे शरीर में पीड़ा उत्पन्न हो। **जैसे:** लाठी की/तलवार की/पत्थर की। 2. किसी ठोस वस्तु पर भारी उपकरण का आघात। **जैसे:** हथौड़े से लोहे के सरिया पर चोट।

चोटी *स्त्री.* पुरूषों के सिर के केन्द्र वाली बालों की शिखा। **पर्या.** चुटिया, शिखा। 2. स्त्रियों के सिर के गुँथे हुए बाल जो नीचे की ओर एकाकार होकर लटकते हैं। 3. मुर्गे और अन्य पक्षियों के सिर पर उठे हुए बाल या कलगी। 4. पर्वतमाला का सबसे ऊपरी भाग यानी शिखर।

चोर ताला *पुं.* 1. ताला जो सामने से दिखाई न दे या 2. जिसे खोलने की तरकीब आम तालों से भिन्न होकर केवल मालिक को ही मालूम हो।

चोर *पुं. (तत्.)* 1. चोरी करने वाला, किसी की वस्तु या धन को चुराने वाला व्यक्ति।

चोर बाज़ार *पुं. (तद्.+फा.)* 1. बाज़ार जहाँ आयात शुल्क चुकाए बिना चोरी छिपे लाया गया विदेशी सामान बिकता हो। 2. बाज़ार जहाँ नियंत्रित मूल्यवाली वस्तुएँ चोरी छिपे अधिक दाम पर बेची और खरीदी जाती हैं। black market

चोर बाज़ारी *स्त्री. (तद्.+फा.)* नियंत्रण मूल्यवाली वस्तुओं अथवा गैरकानूनी ढंग से आयातित वस्तुओं की खरीद-फरोख्त का (पकड़े जाने पर) दंडनीय धंधा।

चोरी *स्त्री.* 1. बिना अनुमति के और न लौटाने की नीयत से किसी की चीज़ को चुपके से उठा ले जाने का आपराधिक कृत्य।

चोला *पुं. (तद्.[चोलक)* 1. साधुओं, फकीरों और शहीदों आदि का पहनावा/कुर्ता; वस्त्र। **उदा.** मेरा रंग दे बसंती चोला। (गीत)। 2. धार्मिक रूप से किसी देवी-देवता को अर्पित किए जाने वाले वस्त्र। **जैसे:** हनुमान जी को चोला चढ़ाना। 3. *ला.अर्थ* शरीर/देह (आत्मा का वस्त्र)-चोला बदलना।

चोली *[तद्.<चेलिकार<चोली<तत.] स्त्री.* 1. स्त्रियों का एक परिधान जो गले से नीचे और पेट के ऊपर पहना जाता है। अंगिया, ब्लाउज। 2. स्त्रियों का एक आधुनिक परिधान जो वक्ष पर स्तनों को कसे रखने के लिए अंदर अर्थात् ब्लाउज़ आदि के नीचे पहना जाता है। **मुहा.** चोली-दामन का साथ-कभी न छूटने वाला घनिष्ठ संबंध।

चौंकना *अ. (तद्.[चमत्कृ)* डर के कारण अचानक लगे झटके जैसा महसूस होना। बोलियों में चमकना।

चौंधियाना *(चौंधनामधातु) अ.क्रि. (देश.<चमत्+अंधति]* तेज़ रोशनी पड़ने के कारण आँखों का बँद-सा हो जाना और स्पष्ट न देख पाना।

चौक *पुं. (तद्.<चतुष्क)* 1. चारों ओर से खुली भूमि। 2. नगर, गाँव आदि के बीच का वह खुला स्थान/मैदान जहाँ चारों ओर से कई रास्ते मिलते हों। **जैसे:** चाँदनी चौक, राजीव चौक। 3. घर के बीच का वह खुला स्थान जिसके ऊपर छाजन न हो। **पर्या.** आँगन, सहन।

चौकड़ी *स्त्री. (तद्.<चतुष्क)* 1. चारक इकाइयों का समूह। **जैसे:** चांडाल चौकड़ी। 2. ताश का खेल जिसमें चार व्यक्ति आमने-सामने वाले को जोड़ीदार बनाकर खेलते हैं। 3. पशुओं द्वारा (विशेषकर हिरण की) चारों पैर एक साथ उठाते हुए लगाई गई लंबी छलांग या दौड़। **उदा.** हिरण चौकड़ी भरता है। 4. जाँघें और घुटने जमीन पर टेककर बैठने की मुद्रा, पालथी।

चौकन्ना *वि. (चतुष्कर्ण)* शा.अर्थ. चार कानों वालो जैसा। ला.अर्थ सावधान, चौकस, सचेत, सर्तक।

चौकस *वि. (देश.)* शा.अर्थ. चारों ओर से अच्छी तरह कसा हुआ। 1. पूरी तरह सावधान या तैयार। **उदा.** चौकस रहना। आजकल चोरियाँ बहुत हो रही हैं। 2. ठीक, दुरूस्त। **जैसे:** चौकस माल, तोल में चौकस।

चौकसी *स्त्री. [देश. चौ+कस]* सौंपे गए कार्य के बारे में बरती जाने वाली हर प्रकार की सावधानी; सतर्कता। **उदा.** पुलिस की चौकसी से कार चोर पकड़े गए।

चौकी *(तद्. [चतुष्की) स्त्री.* 1.चार पायों वाला कम ऊँचाई का आसन। 2. नगर सीमा पर स्थित सीमाशुल्क विभाग का कार्यालय जहाँ इस बात का ध्यान रखा जाता है कि बिना चुंगी चुकाए कर योग्य वस्तुएँ लाई-ले जाई न जा सकें। octroi post 3. ऐसा स्थान जहाँ पड़ोसी देश के घुसपैठियों के अवैध प्रवेश को रोकने पर निगरानी रखने के लिए फौज़ या पुलिस के सशस्त्र सैनिक/सिपाही तैनात हों।

चौकीदार *(देश.) पुं.* भवन, मुहल्ले आदि की रखवाली करने वाला कर्मचारी, पहरा देने वाला व्यक्ति जो प्रवेश द्वार पर तैनात होकर अथवा घूम-फिर कर यह निगरानी रखे कि कोई अवांछिय व्यक्ति अवैध रूप से प्रवेश न पा सके। **पर्या.** पहरेदार, द्वारपाल।

चौकीदारी *स्त्री.* 1. रखवाली करने, निगरानी रखने, पहरा देने का व्यवसाय या कार्य। 2. चौकीदार को दिया गया मेहनताना।

चौकोर *वि. (तद्.[चतुष्कोण)* शा.अर्थ चार कोनों वाला। जिसकी चारों भुजाएँ या चारों कोने बराबर हों।

चौखट *(तद्.[चतुष्काष्ठ) स्त्री.* 1. दरवाज़े में किवाड़ों को साधने वाला चार लकडियों का ढाँचा। 2. देहरी, देहली, दहलीज।

चौगुना *(तद्.[चतुर्गुण) वि.* आधार संख्या या मात्रा को चार बार रखकर जोड़ देने/मिला देने जितना।

चौतरफा *[चौ+तरफ़ा] वि.* चार/चारों ओर से होने वाला। **जैसे:** चौतरफा हमला।

चौथाई *पुं. (तत्.[चतुर्थ)* 1. किसी वस्तु या राशि का चौथा भाग, चतुर्थांग। **जैसे:** वह कृषि से प्राप्त लाभांश में चौथाई का मालिक है। 2. किसी

वस्तु, क्षेत्र आदि के लिये गए लगभग बराबर चार भागों में से एक भाग।

चौपाई *स्त्री. (तद्.[चतुष्पदी)* वह मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में 16 मात्राएँ होती हैं।

चौपाया *वि. (तद्.[चतुष्पद)* शा.अर्थ चार पैरों वाला। सा.अर्थ (चार पैरों वाला) उपयोगी पालतू पशु। **जैसे:** गाय, भैंस, घोड़ा, बकरी आदि। **पर्या.** मवेशी cattle

चौबारा *पुं. (तद्.[चतुद्‌वर)* शा.अर्थ चारों ओर निकासी (दरवाज़े वाला)। छत पर बना कमरा।

चौमासा *(तद्.[चातुर्मास) पुं.* 1.वर्षा ऋतु के चार महीने। 2. चार महीनों में होने वाला।

चौराहा/चौरस्ता *(तद्.[चतुः+फा-रराह) पुं.* वह केंद्रीय स्थल जहाँ दो चौड़े रास्ते परस्पर एक-दूसरे को काटते हों। **टि.** जहाँ दो से अधिक सडकें एक-दूसरी को काटती हों यानी चार से अधिक सडकों के मिलन स्थल को 'चौराहा' ही कहा जाता है।

चौसर *(तद्.[चतुःसारि) पुं.* खेल जो बिसात पर चार रंग की चार-चार गोटियों से खेला जाता है। गोटी चलने के लिए पाशा फैंका जाता है। **पर्या.** चौपड़। **टि.** वर्तमान 'लूडो' की तरह का प्राचीन खेल।

च्युत *(तत्.) वि.* हटा/हटाया हुआ। गिरा हुआ। **जैसे:** पदच्युत=पद से हटा हुआ। धर्मच्युत=धर्म से गिरा हुआ, धर्मभ्रष्ट।

छ

छंद *पुं. (तद्. (छंदस्)* पद्य रचना के विविध प्रकार जिनसे वे पद्य गेय हो जाते हैं। **टि.** वर्णों एवं मात्राओं की संख्या के आधार पर छंदों की संख्या बहुत अधिक है। छंदशास्त्र (छंद:शास्त्र) को वेदांग माना गया है।

छंदशास्त्र *पुं. (तत्.)* वह शास्त्र जो काव्य में प्रयुक्त छंदों के लक्षणों, नियमों और सिद्धांतों का विवेचन करता है।

छँटना *अ.क्रि. (देश.)* 1.कटना या छिन्न-भिन्न होकर नष्ट हो जाना। **जैसे:** बादल छँट गए हैं। 2. चुन लिया जाना। **जैसे:** छँटे हुए फल टोकरी में रख दो। 3. साफ़ होना। **जैसे**: चावल छँटे हुए हैं। (साफ़ किए हुए हैं) 4. मोटापा कम होना। **जैसे:** शरीर कुछ छँट गया है। **मुहा.** छँटा हुआ=धूर्त, चतुर बदमाश, शातिर।

छँटनी *स्त्री. [छाँटन+ई] प्राय.* 1. छाँटने की क्रिया का भाव, छँटाई। **उदा.** घर के सारे वस्त्रों में से पुराने वस्त्रों की छँटनी कर दी। 2. किसी संस्था/विभाग/कंपनी आदि में से कुछ कार्यकर्ताओं को निकाले जाने या हटाए जाने का काम। **उदा.** एयर इंडिया के लगभग सौ कर्मचारियों की छँटनी कर दी गई।

छँटा *वि. (देश.)* राशि (ढेर) में से छाँट कर निकाली गई चीज। वह इस क्षेत्र का छँटा बदमाश है।

छकना *(तद्. (चकन)* जी भरकर खाना; खाकर तृप्त हो जाना। 2. नशे में चूर होना। अ.क्रि. *(तद्(चक्रण)* 1. चकराना, परेशान होना। 2. धोखा खाना, मूर्ख बन जाना।

छकाना *स. क्रि. (तद्.)* 1. खिलाकर पूरी तरह संतुष्ट करना। **जैसे:** 1. भोजन छकाना। 2. परास्त करना, इतना परेशान करना कि वह व्यक्ति थककर चूर हो जाए। छका मारना, छका डालना।

छछूँदर *पुं. (तद्.<छुछंदरः)* चूहे की जाति का दुर्गंध फैलाने वाला एक जंतु जो 'चिलिक चिलिक' जैसी आवाज करता है।उदा. छछूँदर की गति दुविधा की स्थिति में होना। **टि.** कहते हैं कि साँप छछूँदर को चूहा समझकर जब पकड़ लेता है तो उसके लिए छछूँदर को न निगलते बनता है और न छोड़ते बनता है 'निगले अंधा उगले कोढ़ी।'

छज्जा *पुं. (देश.)* दीवार से बाहर निकला हुआ छत का हिस्सा। 1. ढलवाँ छज्जा वर्षा के पानी से निचले भाग की रक्षा करता है और पानी को नीचे दूर बहा देता है; cornice समतल छज्जा धूप और पानी से रक्षा करने के साथ-साथ खड़े होने और सामान रखने के काम भी आता है। balconi

छटपटाना *अ.क्रि. (देश-अनु.)* 1. पीड़ा से व्याकुल होकर हाथ-पैर पटकना या लोट-पोट होना तथा रह-रहकर कराहना इत्यादि। 2. किसी विशेष विचार या भाव इत्यादि के कारण मन ही मन में दु:खी होते रहना। **जैसे:** वीर सावरकर जेल में रहते हुए भी भारत की स्वतंत्रता के लिए

छटपटाते रहते थे। **पर्या.** बेचैन होना, **तु** फड़फड़ाना।

छटपटाहट *स्त्री. [अनु./प्रा.चटपट)(छटपट+आहट]* 1. छटपटाने की क्रिया/अवस्था/भाव। 2. किसी पीड़ा या बंधन के फलस्वरूप उसे ने सह पाने के कारण मन और शरीर दोनों से प्रकट होने वाली व्यग्रता, बेचैनी। **उदा.** तीव्र ज्वर से उत्पन्न छटपटाहट के कारण वह सो नहीं पा रहा है।

छटा *स्त्री. (तत्.)* देखने में सुंदर लगने और मन को आने वाली आकृति या दृश्यावली। **पर्या.** छवि। **जैसे:** उनके विवाहमंडप की छटा दर्शनीय थी। दीपावली के दिन रोशनी में नहाए राष्ट्रपति भवन की छटा देखते ही बनती है।

छड़ *पुं. (तद्. (शर)* धातु से बना पतला, लंबा, गोलकाट टुकड़ा। (रॉड, बार)

छड़ी *स्त्री. (तद्.)* अपंग या वृद्ध द्वारा सहारे के लिए हाथ में लेकर चलने के काम आने वाला काष्ठ (या लौह) दंड। stic

छत *स्त्री. (तद्.<छत्र)* पत्थर, कंक्रीट, घास-फूस आदि से ढकी घर की छाजन। **पर्या.** छाजन, पाटन। 2. ऊपर का ढकने जैसा भाग। 3. ला.अर्थ-रहने का स्थान। **पर्या.** आश्रय, सहारा। **उदा.** दिल्ली में छत मिल जाए तो फिर जीवन बसर करना मुश्किल नहीं है।

छतरी *स्त्री. [तद्.<छत्री<(छत्र]* 1. धूप और वर्षा से बचने के लिए उपयोग में आने वाला छोटा छाता। 2. राजा-महाराजाओं की मृत्यु के उपरांत उनके दाह-स्थल पर स्मृति-स्वरूप निर्मित्त छत्र जैसी संरचना। 3. जिसे लेकर सैनिक या अन्य लोग हवाई जहाज से हवा भर जाने पर गति को नियंत्रित कर देने वाली युक्ति छलाँग लगाते हैं। **पर्या.** हवाई छतरी। parachut 4. मंदिरों आदि के मंडप का ऊपरी गोल भाग।

छत्ता *पुं. (तद्. (छत्र)* मधुमक्खियों द्वारा बनाया गया मोम का घर जिसमें वे शहद इकट्ठा करती हैं तथा अंडे भी देती हैं। hive

छत्र-छाया *स्त्री. (तत्.)* शा.अर्थ छाते की छाया। 2. ला.अर्थ आश्रय, शरण peronage **उदा.** आपकी छत्रछाया मुझ पर बनी रहे-यही कामना है।

छद्‌मादवरण *[छद्‌य +आवरण] पुं. (तत्.)* अपनी रक्षा या परभक्षी प्राणियों का शिकार बनने से बचने के लिए कुछ प्राणियों में पाया जाने वाला स्वांग, छल या पर्यावरण से मिलती-जुलती आकृति या रूप-रंग। camollflage

छनना *अ. क्रि. (तद्. (क्षरण)* 1. किसी चूर्ण (**जैसे:** आटे) तरल पदार्थ (**जैसे**: रस) का (छलनी में से इस तरह गुजरना कि कपड़े या अन्य किसी माध्यम से वांछित और अवांछित अंश अलग-अलग हो जाएँ। **मुहा.** गहरी छनना = गहरी दोस्ती होना। 2. कड़ाही से पूरी आदि बाहर निकलना। **दे.** छानना।

छप *स्त्री. (अनु.)* किसी तरल पदार्थ जैसे पानी में किसी वस्तु का, दबाव पड़ने से उत्पन्न होने वाली हल्की आवाज। **उदा.** पानी से भरी सडक़ पर चलते समय बच्चे छप-छप की ध्वनि करते चलते हैं। छपाक: पानी में किसी वस्तु के जोर से गिरने के फलस्वरूप उत्पन्न होने वाली भारी आवाज। जब कोई तालाब में कूदता है तो छपाक की आवाज होती है।

छपना *अ.क्रि. (देश.)* किसी मुहर इत्यादि से काग़ज या कपड़े पर अक्षर या चित्र आदि अंकित होना। 2. कागजों पर (मुद्रण) यंत्र की सहायता से किसी लेख, समाचार आदि का अंकन। Printing

छपाई *स्त्री. (तत्.)* 1. छपने की क्रिया; 2. उसके लिए दी गई मजदूरी। **दे.** छपना। Printing

छपाका *पुं. [ध्वन्यात्मक शब्द]* पानी में जोर से गिरने की और उससे पानी के फैलने की ध्वनि।

छप्पर *पुं. (देश./प्रा. छिप्पीर)* कच्चे मकान या झोंपड़ी की छत में जिसमें छाजन के रूप बाँस, लकड़ी, पत्ते, घास-फूस खपरैल आदि का प्रयोग होता है। **पर्या.** छानी/छान। **उदा.** वह नये **छप्पर** के घर में रहता है। **मुहा.** छप्पर टूट पड़ना =

बड़ी विपत्ति आना। छप्पर फाड़कर देना = बिना माँगे या अकस्मात् और बहुत अधिक देना।

छबीला *[हि. छबि+ईला प्रत्य] वि. (पुं.)* 1. जो छवि युक्त व सुंदर हो। 2. जो युवक हमेशा सजधज कर सुंदर ढंग से रहता हो।

छबीली *स्त्री. (वि.)* **उदा.** छैल छबीला कृष्ण और छैल छबीली राधा की जोड़ी अनुपम है।

छरहरा *वि. (देश.)* शरीरिक संरचना में दुबला-पतला (परंतु (नौजवान) बीमारी के कारण नहीं)

छल *पुं. (तत्.)* 1. जो दिखने में कुछ हो, पर वास्तव में कुछ और ही हो। **उदा.** रावण ने छल से सीता को हर लिया। 2. स्वार्थ पूरा करने के लिए भला आदमी बनने का स्वाँग करने का भाव। **पर्या.** धूर्तता। froud

छलकना *अ. क्रि. (तद्.<क्षरण)* 1. किसी भरे हुए बर्तन के हिलने से तरल पदार्थ का बाहर गिरना। 2. (आँखों में आँसुओं का) भर आना और अधिकता के कारण बाहर आ जाना। **पर्या.** छलछलाना।

छल-कपट *पुं. (तत्) (छल+कपट)* छल या धूर्तता का व्यवहार।

छलछलाना *अ.क्रि. (देश.अनु:)* 1. किसी पात्र में भरे हुए पानी आदि का 'छल-छल' शब्द करते हुए थोड़ा-थोड़ा करके बाहर गिरना। **उदा.** चलती गाड़ी में रखे जल से भरे मटके छलछला रहे हैं। आँखें छलछला आना = आँखों में आँसू भर आना और उसमें से आँसू की कुछ बूँदें टपकना। **उदा.** हर्ष, शोक, पश्चात्ताप आदि स्थितियों में आँखों में आँसू छलछला पड़ते हैं।

छलनी *स्त्री. (तद्.) (क्षरणी)* चूर्ण (जैसे आटा) और तरल पदार्थ (जैसे रस) इत्यादि छानने के लिए प्रयुक्त एक उपकरण, **पर्या.** चलनी। **मुहा.** छलनी हो जाना = बहुत अधिक छेद हो जाना। छलनी में पानी भरना = व्यर्थ काम करना। कलेजा छलनी होना = अत्यन्त, दुखित हो जाना।

छलाँग *स्त्री. (तद्.)* एक स्थान से उछलकर दूसरे स्थान पर अवतरित होना (उतरना) पहुँचना। ऊँची/लंबी कूद। **मुहा.** छलाँग भरना = उछलते-उछलते बहुत तेजी से भागना।, शेरनी को देखकर हिरन छलाँगें भरता हुआ भाग गया।

छलावा *पुं. (देश.)* छल, धोखा; दिखावा **जैसे:** तुम्हारा यह कार्यक्रम गरीबों के लिए छलावा मात्र है।

छलिया *पुं. (तद्. (छली)* वह व्यक्ति जो मीठी-मीठी बातें करके, ऊपरी व्यवहार कुशलता दिखाकर प्यार का नाटक करता है किंतु जो प्यार नहीं करता। **जैसे:** इस छलिया पर विश्वास मत करना।

छलिया *वि.* **दे.** छली।

छली *वि. (तत्.)* छल करने वाला, कपटी, धोखेबाज। **उदा.** तुम उस छली लडके से बचकर रहना, नहीं तो पछताओगे। **विलो.** निश्छल।

छवि/छबि *स्त्री. (तत्.)* देखने में सुंदर लगने और मन को भाने वाली आकृति; छटा। **उदा.** कश्मीर में प्रकृति की छवि देखते ही बनती है।

छाँटना *स.क्रि. (देश.)* छँटना का प्रे. रूप। 1. काटकर अलग करना **जैसे:** पौधों को छाँटना। cutting, pruning 2. अच्छी चीजें चुनना to select 3. साफ करना। 4. अपनी योग्यता बढ़ा-चढ़ा कर दिखलाना।

छाँह *स्त्री. (तद्.छाया)* 1. वह स्थान जहाँ धूप आने में रूकावट हो, छाया। किसी तल पर प्रकाश के मार्ग में आने के कारण बना किसी का प्रतिबिंब। 2. पेड़ का साया। **उदा.** पथिक वटवृक्ष की घनी छाँह में बैठकर विश्राम कर रहे हैं।

छाछ *स्त्री. (देश.)* दही में पानी मिलाकर और उसे अच्छी तरह मथकर मक्खन निकालने के बाद बचा हुआ पेय पदार्थ। **पर्या.** तक्र, मट्ठा। **उदा.** गर्मियों में लू से बचने के लिए छाछ पीना लाभदायक है।

छाज *पुं. (तद्. (छाद)* 1. अनाज फटकने के लिए सीकों या बाँस की खपच्चियों आदि से बना हुआ एक उपकरण। **पर्या.** सूप। **उदा.** वह छाज से चावल फटक रही है। 2. छज्जा।

छाजन *स्त्री. (तद्. (छादन)* 1. छाने की क्रिया या भाव। 2. छप्पर। 3. त्वचा का एक रोग eczema

छाता *पुं. (तद्.)* वर्षा या धूप से बचने का प्रसिद्ध उपकरण। (स्त्री. छतरी)

छाती *स्त्री. (तत्. (छादिन्)* पेट और गरदन के बीच का दिखाई पड़ने वाला शरीर का चमड़ी से ढ़का भाग। **टि.** चमड़ी के नीचे हड्डियों का पिंजरेनुमा भाग जो हृदय, फेफड़े आदि कोमल अंगों को सुरक्षा प्रदान करता है। **मुहा.** छाती पर मूँग दलना = अत्यधिक कष्ट देना। 2. छाती फटना = बहुत दु:ख पहुँचना। 3. छाती पीटना = बहुत शोक व्यक्त करना। 4. छाती से लगाना = स्नेह करना। 5. छाती पर पत्थर रखना = जी कड़ा करना।

छात्र *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ (गुरु की) छतरी के नीचे छत्रछाया में आया हुआ (बालक)। सा.अर्थ जो गुरु से विद् या ग्रहण करता हो। **पर्या.** शिष्य, विद्यार्थी।

छात्रवृत्ति *स्त्री. (तत्.) [छात्र+वृत्ति]* छात्र को अध्ययन एवं निर्वाह हेतु मिलने वाली आर्थिक सहायता। scholarship

छात्रावास *पुं. (तद्.) [छात्र+आवास]* छात्रों के आवास (रहने) के लिए निर्मित भवन। boarding house

छान *स्त्री. (तद्. (छादन)* कच्चे मकान को छाने का घास-फूस का छप्पर। **पर्या.** छप्पर।

छानना *स.क्रि. (तद्. (चालन/क्षरण)* 1. किसी सूखे चूर्ण या तरल पदार्थ को महीन जाली या कपड़े के आर-पार निकालने की प्रक्रिया (जिससे वांछित और अवांछित तत्वों को अलग किया जा सके।) 2. किसी वस्तु को यथासंभव सभी स्थानों पर ढूँढ़ना। **उदा.** जंगलों की खाका छानना/

छान-बीन *[छानना+बीनना] स्त्री. (देश.)* बारीकी से जाँच-पड़ताल करना, अच्छी तरह खोजकर मामले को सुलझाना।

छाना *स. क्रि. (छा जाना) (तद्.)* 1. किसी वस्तु पर अन्य वस्तु का फैल जाना या पसरना। 2. आच्छादित करना, ढकना।

छाप *स्त्री. (तद्.)* 1. छापने के कारण बना हुआ चिह्न। imprint 2. किसी व्यक्ति, पुस्तक, घटना आदि का प्रभाव। impression 3. किसी उत्पाद आदि का विशेष चिह्न। (ब्रांड) **जैसे**: गाय छाप आटा, लाल-किला छाप चावल।

छापना *स. क्रि (तद्.)* 1. स्याही, रंग आदि की सहायता से किसी ठप्पे को दबाकर कागज, कपड़े आदि पर आकृति या अक्षर अंकित करना। 2. मुद्रण, प्रकाशन।

छापा *पुं. (देश.) [छापना]* 1. स्याही या रंग लगाकर छपाई के काम आने वाला ठप्पा। 2. ठप्पा लगाने से उभरा चिह्न या चित्र। 3. अपराधियों का पता लगाने के लिए की गई आकस्मिक हमले जैसी कार्रवाई। 4. शत्रुओं पर अचानक किया गया हमला।

छापा *पुं. (देश.)* 1. वह साँचा जिसकी सहायता से आकृतियाँ छापी जाती हैं। 2. मुहर, मुद्रा। 3. (सैन्य.) असावधान शत्रु पर अचानक आक्रमण। 4. **प्रशा.** अवैध कृत्यों पर पुलिस आदि का धावा।

छापाखाना *पुं. [तद्.छापा+खाना]* वह कर्मशाला जहाँ पुस्तकें, अखबार आदि की छपाई होती है। **पर्या.** मुद्रणालय printing press

छापामार *[छापा+मार] वि. (देश.)* अचानक आक्रमण से संबंधित। **जैसे:** छापामार युद्ध।

छाया *स्त्री. (तत्.)* प्रकाश की किरणों के बीच में अपारदर्शी वस्तु के आ जाने से उत्पन्न अँधेरा क्षेत्र। shadow

छाल *स्त्री. (तद्.<छल्लि)* 1. वृक्ष के तने का कठोर ऊपरी छिलका।

छाला *पुं. [देश.>क्षार]* 1. जलने, रगड़ने या रक्त विकार आदि के कारण शरीर पर कुछ उभरा हुआ भाग जिसमें गाढ़ा, चिपचिपा द्रव पदार्थ भरा होता है। **पर्या.** फफोला। 2. (बहुवचन-छाले) गर्म वस्तु खाने या अन्य किसी विकार के कारण मुँह में, जीभ पर या गले में होने वाले दाने।

छावनी *स्त्री. (देश.)* शा.अर्थ छप्पर डालकर बनाया गया (अस्थायी) आवास। 1. सैनिकों के पड़ाव के लिए तंबू तानकर बनाया गया (अस्थायी) आवास-स्थल। 2. सैनिकों के लिए बनाई गई

बस्ती या विकसित नागरिक क्षेत्र। cantonment, cantt

छि छि/विस्मयादि. (अव्य.) *(देश.)* घृणा, तिरस्कार, जुगुप्सा के अर्थ को सूचित करने वाला शब्द। **उदा.** छि छि। तुम गंदे हाथों से भोजन परोस रहे हो।

छिछला *वि. (देश.)* 1. बकम गहरा। **पर्या.** उथला। 2. ऐसा (विचार) जिसमें गंभीरता का अभाव हो। **पर्या.** हलका, तुच्छ, क्षुद्र। 3. तुच्छ विचारों वाला (व्यक्ति), निम्न बौद्धिक स्तर वाला। **पर्या.** अज्ञानी।

छिटकना *अ.क्रि. (तद्.)* 1. किसी वस्तु के कणों का इधर-उधर बिखरना। **उदा.** हाथ में से दाने छिटक कर गिर पडे। 2. फिसलकर या उछलकर दूर जा गिरना। **उदा.** हाथ से छिटककर पैन दूर जा गिरा। 3. समूह में से अलग हो जाना।

छिड़कना *स.क्रि. (तद्.)* 1. द्रव पदार्थ (जल आदि) के छींटे उछालकर गीला करना। **जैसे:** क्यारी में पानी छिडक़ना। 2. बारीक या पिसी वस्तु को किसी अन्य वस्तु पर हलके-हलके फैलाना। **जैसे:** कटे फलों पर नमक छिड़कना।

छिड़काव *पुं. (तद्.)* जल या तरल पदार्थ छिडक़ने की क्रिया। **उदा.** कीटनाशक दवाओं का छिड़काव, जल का छिड़काव।

छिड़काव तंत्र *पुं. (देश.)* सिंचाई की एक प्रमुख आधुनिक विधि जिसका उपयोग प्राय: असमतल भूमि पर किया जाता है। इस विधि में जल ऊँचे उठे पाइपों (नलों) के ऊपरी सिरों पर लगी घूमने वाली चोंच से वर्षा की धार की भांति बाहर निकलतर पौधों पर छिडक़ाव करता है।

छिड़ना *अ.क्रि. (देश.)* किसी बात का प्रारंभ होना। **जैसे:** लड़ाई छिड़ना, चर्चा छिड़ना, जंग छिड़ना।

छितरना *अ.क्रि (तद्.[क्षिप्तीकरण)* (किसी वस्तु का) बिना किसी व्यवस्था के 1. इधर-उधर बिखरना। 2. दूर-दूर फैलाकर रखा जाना। **जैसे**: घर में कपड़े इधर-उधर छितरे हुए थे।

छितराना *स.क्रि. (तद्.)* [छितरना का रूप] 1. किसी चीज को इधर-उधर बिखेरना। 2. तितर-बितर करना, दूर-दूर या विरल करना। **जैसे:** छत पर पक्षियों के लिए कुछ अन्न कण छितराये गए थे।

छिदना *अ.क्रि. (तद्.) (*छेदना) 1. किसी चीज के चुभने से छिद्र होना। **उदा.** भाले से शत्रु का सिर छिद गया। 2. छेदा जाना। **जैसे:** बैल की नाक छिदना। 3. आर-पार छेद होना। **जैसे:** कान छिदना।

छिद्र *पुं. (तत्.)* 1. किसी दीवार, कपड़े इत्यादि में होने वाला 'शून्य' स्थान। **पर्या.** छेद, सूराख। 2. जमीन में होने वाला रास्तेनुमा आकार में छोटा गड्ढा। **पर्या.** बिल, विवर। 3. मनुष्य स्वभाव में कोई कमी। **पर्या.** दोष, ऐब, खोट।

छिद्रान्वेषण *पुं. (तत्.) [छिद्र+अन्वेषण]* शा.अर्थ. छेद ढूँढना। सा.अर्थ. दूसरे के दोष या त्रुटियाँ ही खोजते रहना (अर्थात् उसके गुणों की ओर ध्यान न देना)। **उदा.** कुछ लोग दूसरों के छिद्रान्वेषण में ही लगे रहते हैं।

छिद्रान्वेषी *वि. (तत्.)* छिद्रान्वेषण करने वाला।

छिनना *अ.क्रि.* [सं.क्षीण-हि.छीनना] किसी वस्तु, अधिकार आदि को उसके प्रयोक्ता से अलग कर दिया जाना। **जैसे:** आवास छिनना, वाहन सुविधा छिनना, अधिकार छिनना आदि।

छिन्न-भिन्न *वि. (तत्.)* शा.अर्थ. *टूटकर* अलग हो जाने या बिखर जाने वाला, तितर-बितर, टुकडे-टुकड़े, नष्ट-भ्रष्ट। **उदा.** पुलिस के पहुँचते ही उपद्रवियों की टोली छिन्न-भिन्न हो गई।

छिपकली *स्त्री. (देश.)* एक रेंगने वाला (सरीसृप) जंतु, जो प्राय: घरों की दीवारों पर देखा जाता है, जिसके चार पैर होते हैं और जो कीड़े-मकोड़े खाता है। पैरों की विशिष्ट स्थिति होने के कारण यह दीवार पर चल सकता है। शत्रु द्वारा आक्रमण होने पर यह अपनी पूँछ गिरा देता है, जिससे शत्रु भ्रमित हो जाता है। बाद में पूँछ पुन:

उग जाती है। ऐसा अन्य प्राणियों में नहीं होता। **पर्या.** गृहगोधिका।

छिपना *अ.क्रि. (तद्.)* ओट या आड़ में हो जाना या चले जाना ताकि दूसरे को दिखाई न पडे। **उदा.** सूर्य बादलों की ओट में छिप गया; बच्चा दरवाजे के पीछे छिप गया।

छिपाना *स.क्रि. (तद्.)* छिपना का प्रेर.रूप 1. किसी वस्तु, व्यक्ति,आदि को दूसरों की दृष्टि से बचाना, सुरक्षित रखना। **पर्या.** गोपन conceal 2. सार्वजनिक न करना। **उदा.** लोग काले धन को छिपाने की कोशिश करते हैं।

छिलका *पुं. (तद्.)* फल आदि का आवरण जिसे छीलकर जो प्राय: फेंक दिया जाता है। **जैसे:** आम के छिलके; मूँगफली के छिलके। (प्राय: बहुवचन में प्रयुक्त)

छींक *स्त्री. (तद्.) [छिक्का)* शरीर का एक व्यापार जिसमें 'छीं' शब्द के साथ वायु झटके के साथ नाक से बाहर निकलती है। नथुनों में किसी प्रकार की उत्तेजना पैदा हो जाने पर प्राकृतिक रूप से यह क्रिया अनजाने में या न चाहते हुए भी हो जाती है।

छींकना *अ.क्रि. (तद्.) [छिक्कन)* छींक निकलने की क्रिया। **दे.** छींक।

छींका *पुं. (तद्.)* प्राय: रस्सी की बनी हुई झूलेनुमा जाली जो छत से उँचाई पर लटकी रहती है और जिस में खाने-पीने की वस्तुएँ रखी जाती हैं ताकि चूहे, बिल्ली तथा बच्चे आदि उस तक न पहुँच सकें।

छींटा *पुं. (तद्.)* किसी द्रव की छिटकी हुई बूंदों का समूह। **पर्या.** जलकण। 2. बूंदों के रूप में हलकी वर्षा। **जैसे:** शाम को छींटें पड़े थे। 3.छोटे-छोटे चिह्न, दाग। **जैसे:** कपड़े पर छींटे पड़े हैं।

छींटा-कशी (संकर) [हि.छींटा+फा.कशी] *स्त्री.* बुराई करना, व्यंग्य-बाण चलाना।

छीछालेदर *स्त्री.* (*तद्.)* 1. भ्रष्टाचार या अनैतिक आचरण के संबंध में रहस्योद् घाटन के बाद सार्वजनिक रूप से व्यक्ति की निंदा, बुरी तरह अपमानित करने की स्थिति। **उदा.** विश्वासघात को लेकर उसकी खूब छीछालेदर हुई पर इसका उस पर कोई असर नहीं हुआ।

छीनना *स.क्रि. (देश.)* दूसरे के हाथ/पास से जबरदस्ती किसी वस्तु को खींच लेना। **तुल.** झपटना।

छीना-झपटी *स्त्री. (देश.) [छीनना-झपटना]* एकाधिक (दो या कई) लोगों के बीच किसी वस्तु को छीनने-झपटने की परस्पर क्रिया जिसमें प्राय:किसी को सफलता नहीं मिलती और उस वस्तु के नष्ट होने की संभावना अधिक रहती है।

छीलना *स.क्रि. (तद्.)* छिलका उतारना, ऊपरी आवरण उतारना। **जैसे:** केला छीलकर खाया जाता है। 2. ऊपरी परत खुरचकर सतह को चिकना करना। **उदा.** बढ़ई ने दरवाजे को छीलकर ठीक कर दिया।

छुआछूत *स्त्री. (देश.)* मन में घर कर गई यह भावना कि अमुक व्यक्ति को स्पर्श करना चाहिए और अमुक को नहीं। **पर्या.** अस्पृश्यता। **टि.** प्राचीनकाल से चली आ रही इस सामाजिक बुराई का प्रचलन बहुत कम हो गया है। अब यह दंडनीय अपराध भी है।

छुई-मुई *स्त्री. (देश.) (छूना+मरना) शा.अर्थ-छूते* ही मर जाने की स्थिति। 1. एक छोटा पौधा जिसकी पत्तियाँ छूते ही मुरझा जाती है अर्थात् सिकुड़ जाती हैं, फिर कुछ देर बाद पहले वाली स्थिति में आ जाती हैं। **पर्या** लाजवंती। 2. (वि.) (लाक्ष.) बहुत लजाने वाली, अति लज्जाशील। **उदा.** वह तो किसी से बात करने से पहले ही छुई-मुई सी हो जाती है।

छुटकारा *पुं. (तद्.)* किसी बंधन विपत्ति, परेशानी या कठिनाई से मुक्ति। तीन वर्ष बाद अच्छे व्यवहार के कारण उसे जेल से छुटकारा मिल गया।

छुटपुट/छिटपुट *वि. (तद्.) (देश.)* 1. कहीं-कहीं या फुटकर रूप से यानी एक साथ या समेकित रूप से नहीं घटित होने वाला। **जैसे:** छुटपुट वर्षा, छुटपुट काम। **पर्या.** कहीं-कहीं। 2. गिनती या परिमाण में बहुत थोड़ा या बहुत कम। **जैसे**: छुटपुट शिकायतें ही आई हैं।

छुटभैया *पुं. (छोटा+भैया)* शा.अर्थ छोटा भाई/छोटे भाई की तरह व्यवहार करने वाला यानि अधिकार संपन्न व्यक्ति की 'हाँ' में 'हाँ' मिलाने वाला (व्यक्ति)। **ला.अर्थ** बड़े या अच्छे लोगों की तुलना में छोटा या नगण्य-सा माना जाने वाला मनुष्य। **उदा.** आजकल समाज में छुटभैया नेताओं की बाढ़ सी आ गई है।

छुट्टा *वि. (तद्.)* 1. जो बंधा न हो यानी खुला, अनियंत्रित। **जैसे:** छुट्टा पशु; 2. खुले (पैसे/रुपये) **जैसे:** आपके पास सौ रुपए का छुट्टा मिलेगा?

छुट्टी *स्त्री. (देश.)* 1. किसी कार्य के बीच में या समाप्ति पर मिलने वाला खाली समय। **पर्या.** अवकाश। 2. काम बंद रखने का दिन। holiday 3. कार्य दिवसों के दौरान कुछ समय या कुछ दिनों के लिए काम से अनुपस्थिति के दिन। leave 4. पद से मुक्त किया जाना, **पर्या.** पदच्युति

छुड़ाना *स.क्रि. (तद्.)* 1. किसी बंधन/विपत्ति या उलझन से मुक्त कराना। **उदा.** उसने मुझे गुंडों की गिरफ्त से छुड़ाया । 2. दंड या देय ऋण चुका कर अपनी वस्तु वापस लेना। **उदा.** मैंने सारा ऋण अदाकर उससे अपना मकान **छुड़ा** लिया। 3. किसी खराब आदत को दूर करने में मदद करना। **जैसे:** नशा छुड़ाना, सिगरेट पीने की आदत छुड़ाना। 4. साफ करना=वस्त्रों में लगे धब्बे छुड़ाना।

छुतहा *वि. (देश.)* छूत से होने वाला (रोग), संक्रामक। **जैसे:** चेचक छुतहा रोग है।

छुद्र *वि. (तद्.*<क्षुद्र) तुच्छ; नीच; छोटा (क्षुद्र जीव)

छुपना/छिपाना *अ. क्रि. (देश.)* 1. किसी की ओट में हो जाना जिससे वह दूसरे के द्वारा नहीं देखा जा सके। 2. आड़ में होना, दिखाई न देना। **उदा.** चाँद बादलों में छुप गया। 3. प्रकट न होना। इसका रहस्य छुपा नहीं रह सकेगा। **मुहा.** छुपा/छिपा रूस्तम=ऐसा जिसके गुण अभी तक छिपे हुए हों।

छुरा *पुं.(तद्<क्षुर)* 1. लोहा या अन्य धातु से बना तेज धार वाला बड़ा चाकू, कटार। 2. उस्तरा, जिससे नाई हजामत बनाता है।

छुरी *स्त्री.(तद्.)* सब्जी, फल आदि काटने का छोटा औजार, छोटा छुरा, चाकू।

छूट *स्त्री. (तद्.)* 1. छूटने की क्रिया या भाव। 2. कोई कार्य करने या न करने की विशेष अनुमति। 3. कर, दंड आदि में की गई आंशिक कमी या पूरी माफी। exemption 4. मूल्य में की गई कमी या कोई रियायत। discount 5. दयापूर्वक दी गई रियायत। concession

छूटना *अ. क्रि. (देश)* 1. बंधन से मुक्त होना। **जैसे:** शरीर छूट गया; चोर जेल से छूट आया। 2. (दाग) साफ होना। **जैसे:** धोने से कपड़े का मैल छूट जाता है। 3. प्रारंभ होना। **जैसे:** गाड़ी छूटना, आतिशबाजी छूटना। 4. भूल जाना, रह जाना। **जैसे:** छाता घर पर छूट गया।

छूना *स. क्रि. (देश.)* किसी को स्पर्श करना।

छूमंतर *पुं. (तद्.'छू'+तत्.मंत्र)* 1. जादू दिखाते समय या झाड़-फूँक करते समय अस्फुट स्वर में मंत्र पाठ कर अंत में 'छू' शब्द की मुखर ध्वनि का उच्चारण कर यह प्रदर्शित करना कि अब वस्तु, बीमारी गायब हो जाएगी। 2. क्रि. वि. अदृश्य हो जाना, गायब हो जाना। **उदा.** दवाई लेते ही उनका रोग छूमंतर हो गया।

छेड़खानी *स्त्री. (देश.)* 1. किसी को अनावश्यक तंग/परेशान करने के लिए छेड़ने की क्रिया या भाव, छेड़-छाड़। 2. शरारत। 3. किसी असामाजिक तत्त्व द्वारा या मनोविकार ग्रस्त व्यक्ति द्वारा किसी स्त्री के साथ किया गया अमर्यादित आचरण। 4. हँसी-मजाक, नोक-झौंक। **उदा.** उसके साथ छेड़खानी मत करो।

छेड़छाड़ *स्त्री. (देश.)* दे. छेड़खानी।

छेड़ना *स.क्रि. (देश.)* 1. किसी कार्य की शुरूआत करना। **उदा.** मकान बनाने का काम छेड़ दो तो खत्म होने का नाम ही नहीं लेता। 2. संगीत के वाद् य यंत्र से स्वर निकालना। **जैसे:** वीणा के तार छेड़ना। 3. चिढ़ाना, मजाक करना, तंग करना। **उदा.** मुझे अकारण छेड़ा मत करो।

छेद *पुं. (तद्.<छिद्र)* **दे.** छिद्र।

छेना *पुं. (तद्.)* फटे हुए दूध का ठोस भाग, **पर्या.** पनीर। **उदा.** छेने की मिठाई; रसगुल्ला छेने से बनता है।

छेनी *स्त्री. (तद्.)* पत्थर या दीवार आदि काटने के लिए लोहे का बना चपटे मुँह वाला उपकरण। मोटी-कीलनुमा औजार।

छोकरा *पुं. (तद्.)* (शावक) लडक़ा, बालक। **पर्या.** छोरा।

छोकरी *स्त्री. (तद्.)* लडक़ी, बालिका। **पर्या.** छोरी।

छोटा *वि. (तद्)* 1. लंबाई, विस्तार, कद-काठी, आयु, पद, प्रतिष्ठा इत्यादि में तुलनात्मक दृष्टि से कम। 2. तुच्छ, क्षुद्र, अल्प, लघु। पदबंध- छोटा-मोटा=सामान्य।

छोटापन *[छोटा+पन] पुं. (देश.)* छोटा होने का भाव, क्षुद्रता **दे.** छोटा। **वि.** बड़प्पन।

छोटी आँत *स्त्री. (तद्.)* **दे.** क्षुद्रांत्र।

छोड़ना *स.क्रि.(देश.)* 1. बंधन मुक्त करना। **उदा.** तोते को छोड़ दो। 2. स्वीकार न करना। **उदा.** सड़े फल छोड़ दिए गए। 3. प्रस्थान करना। **उदा.** महात्मा बुद्ध ने घर छोड़ दिया। 4. अलग करना/होना। **उदा.** संन्यासी परिवार छोड़ देते हैं। कक्षा दस को छोड़कर सभी छात्र पिकनिक मनाने गए। (अलग करके, अतिरिक्त, सिवाय)

छोर *पुं. (देश.)* किसी भी वस्तु, क्षेत्र आदि का किनारा, सीमा। जैसे: धोती का छोर। धरती का छोर। **उदा.** उद्यान के छोर पर देवालय है।

छोह *पुं. (तद्.<क्षोभ)* प्रेम, स्नेह दया। **टि.** लोकभाषा में क्रोध, गुस्सा। **मुहा.** छोह आना=गुस्सा करना। क्यों छोह में आ रहा है?

छौंक *स्त्री. (देश.)* गरम घी, तेल में राई, जीरा, हींग आदि डालकर दाल आदि में मिलाना।

छौंकना *स.क्रि. (देश.)* बघारना, तडक़ा देना।

छौना *पुं.(तद्.)* किसी पशु का छोटा बच्चा। **जैसे:** मृगछौना।

ज

जंकफूड *पुं. (अं.)* 1. (अनौपचारिक अर्थ में) बेकार का अथवा अस्वास्थ्यकर खाद्य पदार्थ। 2. डिब्बाबंद अथवा पैकेटों में अपेक्षाकृत अधिक समय तक सुरक्षित रखे जा सकने वाले तले खाद्य पदार्थ। **जैसे:** चिप्स, बर्गर, पिज्जा आदि। **पर्या.** fast food

जंग *पुं. (फ़ा.)* सा.अर्थ लोह पर लगने वाला मोरचा। rust **टि.** जंग (मोरचा) और जंग (लड़ाई, युद्ध) में भेद बनाए रखना आवश्यक है।

जंगल *पुं. (तत्.)* 1. वह विशाल निर्जन स्थान जहाँ विविध प्रकार के वृक्ष बेतरतीब ढंग से अपने आप उग आए हों तथा उनका पालक कोई न हो। वन, अरण्य। 2. एकांत स्थान। forest **मुहा.** 1. जंगल जाना-(गाँवों में) शौच के लिए बाहर जाना। 2. जंगल में मंगल होना-किसी निर्जन स्थान में चहल-पहल, रौनक होना।

जंजाल *पुं. (तद्.)* कोई भी उलझनपूर्ण वस्तु या स्थिति जो परेशानी का कारण बनती है। **पर्या.** झंझट, बखेड़ा। **मुहा.** 1. जी का जंजाल होना। प्रयोग यह नौकरी तो मेरे लिए जी का जंजाल बन गई।

जंजीर *स्त्री. (फा.)* 1. धातु से बनी कडियों को जोडक़र बनाई गई लड़ी। chain **पर्या.** श्रृंखला, साँकल। 2. क्रम

जंतर *पुं. (तद्.)* 1. धातु निर्मित तांत्रिक यंत्र। **जैसे:** श्रीयंत्र आदि। 2. खगोल शास्त्र संबंधी जानकारी देने वाले यंत्रों से युक्त संरचना। **जैसे:** दिल्ली और जयपुर स्थित जंतर-मंतर।

जंतु *पुं. (तत्.)* गतिशीलता के गुण तथा देखने के अंग से युक्त प्रणाली; जानवर animal

जँभाई/जम्हाई *स्त्री. (तद्.)* नींद, आलस्य या थकावट के कारण मुँह के खुलने और तनिक हवा oxygen के अंदर खींचने की दिखाई पड़ने वाली क्रिया। **पर्या.** उबासी।

जकड़ *स्त्री. (तद्.)* जकड़ने यानी कसने जैसी क्रिया या भाव। **उदा.** ठंडे जल में स्नान करने से उसका शरीर जकड़ गया।

जकड़ना *स.क्रि. (देश.)* चारों ओर से मज़बूत बंधन में बाँधना; कसकर बाँधना या पकड़ना।

जक़ात *स्त्री. (अर.)* 1. इस्लाम धर्म के अनुसार अमीरों द्वारा गरीबों को दिया जाने वाला दान-पुण्य, खैरात। 2. कर।

जखीरा *पुं. (अर.)* 1. भंडार, ढेर, ख़जाना। 2. एक ही प्रकार की वस्तुओं का समूह। **प्रयो.** आतंकवादियों के ठिकानों से हथियारों का बहुत बड़ा जखीरा पकड़ा गया।

ज़ख़्म *पुं. (फ़ा.)* चोट लगने के कारण त्वचा के कटने और वहाँ से रक्त बहने वाला घाव। **मुहा.** जख्म हरा होना/पुराना दु:ख फिर याद आना। जख्म पर नमक छिड़कना-दुखी व्यक्ति को और अधिक दुखी करना।

जग *पुं. (तद्.)* 1. संसार, दुनिया। 2. संसार के लोग। 3. पुं. (अं.) किसी तरल पदार्थ का संग्रह करने के लिए बना धातु या प्लास्टिक का बेलनाकार या गोल पात्र जिस पर पकडने के लिए हत्था और उँडेलने के लिए चोंच सी बनी होती है।

जगना *अ.क्रि. (तद्.)* 1. नींद छोड़कर उठना, सोते से जागना। 2. सावधान होना। 3. आग का अच्छी तरह जलना। 4. चमकना। 5. होश में आना।

जगमगाना [जगमग] *अं.क्रि. (तद्.)* अपनी या दूसरे की रोशनी से खूब चमकना या दमकना। **जैसे:** 1. आकाश में तारों का जगमगाना। 2. उत्सव में बिजली की लड़ियों/बल्बों का जगमगाना।

जगह *स्त्रीं. (फ़ा.)* 1. स्थान। 2. गुंजाइश। **जैसे:** बस में बिल्कुल जगह नहीं है।

जघन्य *वि. (तत्.)* अत्याधिक निंदनीय, सबसे बुरा, अधम। **जैसे**: जघन्य अपराध।

जच्चा *स्त्री. (फ़ा.)* वह स्त्री जिसने हाल ही में बच्चे को जन्म दिया हो। **पर्या.** प्रसूता (स्त्री), सूतिका, प्रजाता।

जज *पुं. (अं.)* 1. न्याय विभाग का वह अधिकारी जो न्यायालय में बैठकर मुकदमों को सुनता या उन पर विचार कर निर्णय देता है। न्यायाधीश। 2. किसी प्रतियोगिता, खेल आदि का निर्णय करने वाला निर्णायक।

जज़्ब *वि. (अर.)* एक में समाया हुआ।

जज़्बा *पुं. (अर.)* 1. भाव, भावना। जज़्बात

जटिल *वि. (तत्.)* शा.अर्थ जटा से युक्त अर्थात् जटा जैसा, पेचीदा। 1. अत्याधिक उलझा हुआ। 2. जिसे सरलता से समझा न जा सके। दुरूह। **उदा.** बेरोज़गारी एक जटिल समस्या है।

जड़ *स्त्री. (तद्.)* 1. वृक्षों का जमीन के नीचे दबा वह भाग जो वहाँ से पोषकतत्व ग्रहण कर वृक्ष को जीवित रखता है)। **उदा.** पौधों को जड़ से मत उखाड़ो। 2. जिसमें जीवन न हो, निर्जीव, अचेतन।

जड़ता स्त्री. *(तत्.)* 1. जड़ अर्थात् निर्जीव होने का भाव, अचेतनता। **विलो.** चेतनता। 2. मूर्खता, विवेकहीनता।

जड़ित वि. *(तद्.)* जिसमें नगीने आदि जड़े हों, जड़ा हुआ, जड़ाऊ ।

जड़ी-बूटी *स्त्री. (तद्.)* पेड़-पौधों की जड़ें (और छाल) तथा छोटे आकार की वनस्पतियाँ जो औषधि के रूप में प्रयुक्त होती हैं।

जताना *स.क्रि. (तद्.)* 1. किसी व्यक्ति या वस्तु के बारे में बतलाना, परिचित कराना। 2. किसी बात की पहले से सूचना देना। **उदा.** उसने मुझे पहले ही जता दिया था कि आज वहाँ वनोत्सव है।

जथाजोग *क्रि.वि. (तद्.)* 1. जिसके साथ जैसा व्यवहार चाहिए वैसा करना, यथायोग्य। 2. अनुरूप व्यवहार। **उदा.** जथाजोग सबको उपहार

देकर सम्मानित करो। **टि.** सामान्यतया बोलियों या काव्य में प्रयुक्त।

जनक *पुं. (तत्.)* 1. पैदा करने वाला, जन्म देने वाला, उत्पन्न करने वाला (व्यक्ति); पिता (स्त्री जननी)। **टि.** समास में प्रयुक्त **जैसे:** संतोषजनक

जनगणना *स्त्री. (तत..)* शा.अर्थ लोगों की गिनती। **प्रशा.** (भारत में) प्रति दस वर्ष में की जाने वाली लोगों की गणना जिसमें साक्षरता, शिक्षा, आर्थिक स्थिति, भाषा, जाति, धर्म, भवन, रोजगार आदि कई बातों की जानकारी प्राप्त कर उन्हें सूचिबद्ध किया जाता है। इन्ही तथ्यों को आधार बनाकर सरकार द्वारा सामाजिक विकास की भावी योजनाएँ तैयार की जाती हैं। census

जनजाति *स्त्री. (तत्.)* जंगलों, पहाड़ों में रहने वाले वे सगोत्र विवाही सामाजिक वर्ग के लोग जो एक ही पूर्वज के वंशज होते हैं और जिनका एक जैसा पेशा और एक जैसा रहन-सहन होता है तथा वे एक ही मुखिया के अधीन संगठित होकर रहते हैं। **पर्या.** क़बीला tribe

जनता *स्त्री. (तत्.)* 1. देश के समस्त निवासी 2. जनसमूह 3. जनसाधारण, जनता।

जनता जनार्दन *पुं. (तत्.)* जनतारूपी भगवान। शासकवर्ग के लिए जनता ही भगवान का रूप है। अत: उसे जनता की संतुष्टि के लिए कल्याणकारी कार्य करने चाहिए। जनता की कृपा से ही शासक की सत्ता चिरस्थायी रह सकती है।

जनन *पुं. (तत्.)* 1. जन्म देने की क्रिया का भाव। 2. जीव प्रक्रम, अपने जैसे दूसरे जीव (अर्थात संतान) उत्पन्न करने की प्रक्रिया। reproduction

जननक्षमता *स्त्री. (तत्.)* जीवनक्षम होने का भाव; जीवनक्षम युग्मकों अथवा संतति को उत्पन्न करने की क्षमता।

जननांग *पुं. (तत्.)* प्राणी के शरीर का वह अंग विशेष जो जनन (संतानोत्पत्ति) का कारक हो। **जैसे:** पुरुष का लिंग, स्त्री की योनि। **पर्या.** जननेंद्रिय।

जनपद *पुं. (तत्.)* सा.अर्थ. मनुष्यों से बसा हुआ स्थान, बस्ती। प्राचीन अर्थ-राज्य जो 'सिटी स्टेट' जैसी संकल्पना का वाचक था। **जैसे:** काशी जनपद, वैशाली जनपद। आधुनिक अर्थ-किसी राज्य का वह भाग जिसके विभाजन की भौगोलिक सीमा निर्धारित हो। **जैसे:** गौतम बुद्ध नगर जनपद। जिला district का पर्यायवाची।

जन-प्रचलित *वि. (तत्.)* जनता (समाज) में प्रचलित (कथा, मान्यता, विश्वास आदि)। **पर्या.** लोक-प्रचलित।

जनश्रुति *स्त्री. (तत्.)* जनता के बीच प्रचारित ऐसी खबर जिसका प्रत्यक्षत: कोई पुष्ट प्रमाण उपलब्ध न हो। **पर्या.** किंवदंती।

जनसंख्या *स्त्री. (तत्.)* शा.अर्थ लोगों की गिनती। 1. किसी क्षेत्र विशेष में रहने वाले सभी व्यक्तियों/मनुष्यों का समुदाय सूचक शब्द। 2. किसी क्षेत्र विशेष में रहने वाले लोगों की कुल संख्या (जो समय-समय पर बदलती या घटती-बढ़ती रहती है)। **पर्या.** आबादी। population **उदा.** आजादी के समय भारत की जनसंख्या पैंतीस करोड़ थी।

जनसंख्या विस्फोट *पुं. (तत्.)* वह स्थिति जब किसी क्षेत्र विशेष की (देश, राज्य, भू-भाग आदि की) आबादी इष्टतम जनसंख्या से बहुत अधिक बढ़ जाए। ऐसी स्थिति में पूरी आबादी का पालन-पोषण उपलब्ध साधनों से नहीं हो पाता।

जनसंघर्ष *पुं. (तत्.)* 1. कई लोगों के बीच आपस में हुआ अव्यवस्थित लड़ाई-झगड़ा। **उदा.** मेले के दौरान लूटपाट के लिए हुए जनसंघर्ष में कई लोगों को चोट आई। 2. लोक हित के लिए दूसरों से हुआ संघर्ष। **उदा.** महात्मा गाँधी ने अंग्रेजों के खिलाफ जनसंघर्ष का नेतृत्व किया।

जन-संचार माध्यम *पुं. (तत्.)* समाचार, सूचनाएँ, विज्ञापन, मनोरंजन इत्यादि से संबंधी जानकारी जन-सामान्य तक पहुँचाने के साधन। **जैसे:** समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, पुस्तकें तथा रेडियो, टी.वी. नेट वर्किंग, केबल्स, डी.टी.एच. आदि। mass media

जनसंपर्क *पुं. (तत्.)* 1. सरकार या संस्था विशेष द्वारा जनता से संपर्क साधने की नियम-

व्यवस्था; 2. उत्पादक और उपभोक्ता के बीच सद्भाव और विश्वास उत्पन्न करने के विविध प्रकार। **पर्या.** लोकसंपर्क।

जनसंपर्क माध्यम *पुं. (तत्.)* जनता से संपर्क स्थापित करने के विभिन्न साधन।

जनसंहार *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ जनता का विनाश। **सा.अर्थ**-बड़ी संख्या में जनता का विनाश, किसी जाति/वर्ग को समाप्त करने के लिए उसके सदस्यों की संघटित रूप से की जाने वाली सामूहिक हत्या। **पर्या.** नर-संहार, कत्ले आम। **उदा.** जलियाँवाला बाग में भीषण जनसंहार हुआ।

जनहित याचिका *स्त्री. (तत्.)* जन साधारण की भलाई से संबंधित किसी मामले के बारे में विचार करने के लिए न्यायालय में दाखिल किया गया आवेदन-पत्र।

जनाब *पुं. (अर.)* 1. बड़ों के लिए संबोधन के रूप में प्रयुक्त आदर सूचक शब्द। **पर्या.** महाशय, महोदय sir 2. चौखट 3. दरगाह, आश्रम 4. सम्मुख, सामने 5. पार्श्व, पहलू।

जनार्दन *पुं. (तत्.)* विष्णु, भगवान, ईश्वर।

जनून/जुनून *(पुं.) (अर.)* सा.अर्थ पागलपन, उन्माद। विशेष अर्थ किसी मनपसंद या अत्यावश्यक कार्य को पूरा करने में पागलपन की हद तक पहुँचा जोश। **जैसे:** उस पर घर खरीदने का जनून सवार है।

जन्मदर *स्त्री. (संकर)* देश की कुल जनसंख्या के अनुपात में क्षेत्र-विशेष में प्रति वर्ष एक हजार व्यक्तियों की तुलना में जन्म लेन वाले (नवजात) शिशुओं की संख्या। birth rate **तु.** मृत्युदर।

जन्मना *अव्य. (तत्.)* 1. जन्म से, 2. जन्म के कारण। **उदा.** जन्मना जायते शूद्रः संस्कारात् द्विज उच्यते। (मनुस्मृति)

जन्मसिद्ध *वि. (तत्.)* जिसकी प्राप्ति जन्म लेने के साथ ही मान ली जाए। सिद्ध लोकमान्य तिलक ने नारा दिया-स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।'

जबरई *स्त्री. (फ़ा.)* 1. अपनी सामर्थ्य के दंभ में किसी के साथ उसकी इच्छा के विपरीत किया जाने वाला अन्यायपूर्ण कार्य। बलप्रयोग। 2. अन्याय। 3. ज्यादती, अत्याचार, जबरदस्ती। **उदा.** उसने जबरई उसके प्लाट पर कब्जा किया हुआ है।

जबरदस्त *वि. (फ़ा.)* शा.अर्थ जिसका हाथ शक्तिशाली हो, ताकतवर हाथ वाला। 1. जो बहुत अधिक शक्तिशाली या प्रभावशाली हो। तगड़ा, बलवान। **उदा.** जबरदस्त कारनामा; जबरदस्त भाषण। 2. अत्यधिक, महत्त्वपूर्ण, जबरदस्त प्रश्न। 3. भयंकर, बहुत अधिक, कड़ा/कड़ी जबरदस्त गर्मी, जबरदस्त नुकसान।

जबरदस्ती *स्त्री. (फ़ा)* बल का प्रयोग करते हुए करवाया गया। **जैसे**: जबरदस्ती का सौदा। काम। **उदा.** आपकी जबरदस्ती से मुझे बहुत नुकसान हुआ। क्रि.वि. बलपूर्वक।

जबानी/जुबानी *वि. (फ़ा.)* जो केवल जबान से (बोलकर) कहा गया हो, लिखा न गया हो। **पर्या.** मौखिक। **विलो.** लिखित। **मुहा.** जबानी जमाखर्च-वह हिसाब-किताब जो मौखिक रूप से ही बताया गया हो, लिखित रूप में न दिया गया हो। ला.अर्थ केवल दिखाने भर के लिए, वास्तविक रूप में नहीं।

जब्त *वि. (अर.)* जब्त किया हुआ। **जैसे:** जब्त पुस्तक। **दे.** जब्ती।

जब्ती *स्त्री. (अर.)* चोरी-छिपे लाए हुए निषिद्ध माल को पकडक़र उसे सरकारी संपत्ति घोषित कर देना।

जमघट *पुं.(संकर)* 1. मनुष्यों की भीड़-भाड़, जमावड़ा।

जमना *(अ.क्रि.) (देश.)* 1. तरल पदार्थ का गाढ़ा या ठोस हो जाना। **जैसे**: दूध का दही जमना, पानी का बर्फ जमना। 2. मजबूती से बने रहना। स्थिर कर लेना। **उदा.** 1. उसके घर मेहमान तो जम ही गए, टलने का नाम ही नहीं लेते। 3. किसी कार्य का अच्छी तरह संपन्न होना। **उदा.** आज तो तुम्हारा संगीत खूब जमा।

जमाखोर *वि. (पुं.)* नियत मात्रा से अधिक अनाज या किसी वस्तु को अवैध रूप से जमा करने वाला (ताकि अभाव के दिनों में उससे अनुचित लाभ कमाया जा सके)। **उदा.** जमाखोरों की वजह से बाजार में चीनी का अभाव हो गया है।

जमाखोरी *स्त्री. (संकर)* जरुरत से ज्यादा धन, माल, अन्न, फल आदि जमा करने की लोभी प्रकृति।

जमात *स्त्री. (अर.)* समान वर्ग के लोगों का समूह **जैसे:** साधुओं की जमात। सहपाठी विद्यार्थियों की जमात या कक्षा। **जैसे:** पहली दूसरी नवीं, दसवीं जमात।

जमादार *पुं. (अर.+फ़ा.)* किसी कार्यकर्त्ता के सभी लोगों के काम पर निगरानी रखने वाला नायक या मुखिया। **जैसे:** पुलिस में, सिपाही जमादार (सिपाही प्रमुख); सेना में सैनिकों की एक टुकड़ी का नायक; मजदूरों का जमादार आदि।

जमादारी *स्त्री. (अर.फा.)* जमादार का कार्य या पद।

जमानत *स्त्री. (अर.)* 1. जिम्मेदारी। 2. किसी व्यक्ति द्वारा लिए गए ऋण के समय पर चुकाए जाने अथवा उसे सौंपे गए दायित्व का समुचित निर्वाह करने के लिए किसी अन्य जिम्मेदार व्यक्ति द्वारा मौखिक या लिखित रूप में दिया गया आश्वासन। **पर्या.** प्रतिभूति security, surety

जमाना *पुं. (अर.)* 1. काल या युग। पुराने जमाने में लोग बैलगाड़ी में यात्रा करते थे; उस जमाने में रेलें नहीं थीं। *सं.क्रि. (देश.)* 1. उत्पन्न करना या उगाना। **जैसे:** घास जमाना। 2. किसी तरल पदार्थ को ठोस या गाढ़ा बनाना। **जैसे:** दूध का दही जमाना। 3. दृढ़तापूर्वक स्थिर होना। **जैसे:** अभी तो इस कार्यालय में पैर जमा रहा हूँ।

जमाव *पुं. (देश.)* एक ही स्थान पर जमा या इकट्ठा होने का भाव। **जैसे:** सड़क पर पानी का जमाव, मैदान में लोगों का जमाव।

जमावड़ा *पुं. (देश.)* बहुत से लोगों का किसी उद्‌देश्य से एक स्थान पर एकत्रित होना। भीड़-भाड़, एकत्रीकरण। **जैसे:** आज यहाँ संत का प्रवचन सुनने के लिए लोगों का जमावड़ा लगा है।

जमींदार *पुं. (फ़ा.)* जमीन का मालिक (विशेषत: वह व्यक्ति जो अपनी जमीन किसानों को लगान पर जोतने के लिए देता है।) **पर्या.** भू-स्वामी।

जमींदारी प्रथा *स्त्री. (फ़ा.+तत्.)* अर्थव्यवस्था का वह रूप जिसमें जमींदार (भू-स्वामी) स्वयं तो कृषि कार्य नहीं करता किंतु किसानों से काम करवाकर उत्पादित वस्तुओं पर अपना स्वामित्व रखता है।

जमीकंद *पुं. (फ़ा.)* जमीन के अंदर (मृदा के नीचे) पैदा होने वाला फूला हुआ गूदेदार और बिना रेशे का तना या जड़ जिसका उपयोग सब्जी के रूप में होता है।

ज़मीन *स्त्री. (फ़ा.)* 1. धरती, भूमि, पृथ्वी, 2. भूमि का टुकड़ा, खेत। **विलो.** आसमान। **मुहा.** 1. जमीन-आसमान एक करना - घोर परिश्रम करना। 2. जमीन-आसमान का अंतर-बहुत अधिक और वह भी स्पष्ट अंतर। 3. पैरों के तले से जमीन खिसकना-इतना डर जाना कि होश खो बैठे। 4. जमीन चाटना-जमीन पर मुँह के बल गिरना, धराशायी हो जाना। 5. जमीन पर पाँव न रखना-बहुत अधिक प्रसन्न होना। 6. जमीन में गड़ जाना-इतना अधिक लज्जित होना कि मुँह न उठा/दिखा सके।

जमीनी *वि. (फ़ा.)* 1. जमीन संबंधी, जमीन से संबंधित। 2. ला.अर्थ वास्तविक। **जैसे**: जमीनी सच्चाई यह है कि........

जमीर *पुं. (अर.)* भले-बुरे का विचार करने वाली अंत:करण की वृत्ति, अंतरात्मा।

जम्हाई/जँभाई *स्त्री. (तद्.)* नींद या आलस्य के कारण मुँह के खुलने की एक स्वाभाविक क्रिया जिसमें मनुष्य गहरी साँस भरता है।

जयंती *स्त्री. (तत्.)* शा.अर्थ जय बोलना, अभिनंदन करना; मंगल कामना करना। सा.अर्थ 1. किसी स्वर्गीय महापुरुष का जन्मदिन, जब उनका विशेष रूप से स्मरण किया जाता है। **जैसे**: गाँधी

जयंती, महाबीर जयंती आदि। 2. किसी महत्त्वपूर्ण संस्था की स्थापना की तिथि को मनाया जाने वाला उत्सव। **जैसे**: रजत जयंती, स्वर्ण जयंती, हीरक जयंती आदि।

जयघोष *पुं. (तत्.)* जीत अथवा सफलता की घोषणा के लिए ऊँची आवाज में नारे लगाना। acclamation

जय-जयकार *स्त्री. (तत्.)* 1. किसी की जीत या सफलता की खुशी में किया जाने वाला जयघोष। 2. किसी महापुरुष के जन्मोत्सव या सम्मान में किया जाने वाला जयघोष। **जैसे:** स्वामी श्रद्धानंद की जय हो। 3. धार्मिक उत्सवों में किया जाने वाला जयघोष।

जरथुष्ट्र/जरतुश्त *पुं. (फ़ा.)* प्राचीन पारसी धर्म के प्रवर्तक और जंद-अवेस्ता के रचयिता।

ज़रा *स्त्री. (तत्.)* 1. शरीर की वह स्वाभाविक अवस्था जब वह जीर्ण होने लगता है। पर्या. बुढ़ापा, वृद्‌धावस्था 2. बुढ़ापे के कारण उत्पन्न कमजोरी। *वि. (तुर्की)* परिमाण में बहुत थोड़ा, कम तनिक। ज़रा-ज़रा-थोड़ा-थोड़ा। ज़रा सा-बहुत कम। क्रि.वि. अनुरोध विशेष कि फलाँ काम करेंगे तो आपको अधिक कष्ट नहीं होगा; कृपापूर्वक ज़रा रुकिए, ज़रा ठहरो तो।

जराअत *स्त्री. (अर.)* खेती-बाड़ी, कृषि, काश्त।

ज़राअतपेशा *वि. (अर.)* खेती-बाड़ी का काम करने वाला किसान, कृषक, काश्तकार।

ज़राअती *वि. (अर.)* खेती-बाड़ी से संबंधित। **उदा.** ज़राअती औजार।

जरायु *पुं. (तत्.)* वह झिल्ली जिसमें गर्भ से उत्पन्न होने वाला बच्चा लिपटा रहता है। placenta

जरायुज *पुं. (तत्.)* 1. प्राणी जो माता के गर्भ में जरायु में लिपटा हुआ रहे और फिर उसका जन्म हो। 2. वे जंतु जो बच्चे देते हैं। **जैसे:** स्तनपोषी। **दे.** जरायु। **तु.** अंडज, स्वेदज, उद्‌भिज।

जरिया *वि. (तद्.)* रत्न जडक़र आभूषण बनाने वाला। जडिया। *पुं. (अर.)* 1. किन्हीं दो को परस्पर मिलाने या मेल करने का साधन **जैसे**: एक संत के जरिये उन दोनों के मतभेद समाप्त हो गए। 2. किसी प्राप्ति का साधन, उपाय/माध्यम। **जैसे:** खेती ही उसकी आय का प्रमुख जरिया है।

ज़री *स्त्री. (फ़ा.)* सोने, चाँदी के बने वे धागेनुमा पतले तार जिनसे कपड़ों पर बेल-बूटे बनाए जाते हैं; ऐसे तारों से बुना वस्त्र। **उदा.** शादी के मौके पर स्त्रियाँ ज़रीदार साड़ियाँ पहनती हैं।

ज़रीब *स्त्री. (फ़ा.)* पुराने जमाने में जमीन नापने के काम आने वाली जंजीर।

जरूर *क्रि. वि. (अर.)* अवश्य, निश्चय ही।

जरूरत *स्त्री. (अर.)* आवश्यक होने का भाव (जिसके बिना काम चलाना कठिन हो) **पर्या.** आवश्यकता।

जरूरतमंद *वि. (अर.+फा.)* 1. जिसे किसी चीज की जरूरत या आवश्यकता हो। 2. जरूरत वाला, आवश्यकता वाला, निर्धन, अकिंचन। **उदा.** जरूरतमंद व्यक्ति को ही ये वस्त्र दिये जाएँ।

जर्जर *वि. (तत्.)* जो पुराना हो जाने के कारण बहुत कमजोर हो या किसी काम का न रह गया हो, जीर्ण, पुराना। **जैसे:** जर्जर शरीर। जर्जर भवन, जर्जर रीति-रिवाज।

जल *पुं. (तत्.)* सा.अर्थ पानी; साफ पानी जो पीने के काम आ सके। **रसा.** रंगहीन, गंधहीन, स्वादहीन पारदर्शी द्रव (तरल पदार्थ) जो हाइड्रोजन के दो अणुओं ओर ऑक्सीजन के एक अणु से मिलकर बनता है। यह द्रव पदार्थ वर्षा के रूप में बादलों से पृथ्वी पर बरसता है। इसकी प्रकृति जमकर हिम बन जाने और उबल कर भाप बन जाने की होती है।

जलकूप *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ पानी का कुआँ। भूवि. पृथ्वी के गर्भ से प्राकृतिक दाब के कारण जमीन फोड़कर बाहर निकलने वाली जलराशि। **पर्या.** सोता, चश्मा। **तु.** नलकूप।

जल-चक्र *पुं. (तत्.)* निरंतर चलने वाली वह (अटूट) प्रक्रिया जिसमें पहले समुद्र का पानी भाप (वाष्प) बनकर बादल बनता है, फिर वही बादल

पानी बरसाता है और फिर वही पानी नदियों से होता हुआ समुद्र में जा मिलता है। water cycle

जलचाक *पुं. [तत्.+तद्]* 1. वह पंखयुक्त पहिया जिसके ऊपर वेग से पानी गिरने से विद्‌युत शक्ति उत्पन्न होती है। **दे.** जलविद्‌युत्।

जलडमरूमध्य *पुं. (तत्.)* 1. (भूवि.) समुद्र का वह संकीर्ण भाग जो दो द्‌वीपों को अलग करता है या किसी द्‌वीप को मुख्य भूमि से अलग करता है और जलीय भाग को डमरू की आकृति वाला बना देता है। 2. (भू.) समुद्रों या खाड़ियों आदि को जोड़ने वाली पतली जलधारा। Strair

जलधर *वि. (तत्.)* शा.अर्थ जल को धारण करने वाला। पुं. 1. बादल, 2. समुद्र, 3. कोई भी जलाशय। **पर्या.** जलधि।

जलनिकाय *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ जल का निकाय यानी समूह। जहाँ जल का संग्रह हो या जल का संग्रह किया गया हो। **जैसे:** तालाब, पानी की टंकी आदि।

जलप्रदूषण *पुं.(तत्.)* पदार्थों के मिल जाने से पानी का दूषित हो जाना जो जीवन के लिए हानिकारक है। **दे.** प्रदूषण। water polution

जलप्रपात *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ नदी के पानी का पहाड़ की ऊँचाई से गहरे खड्ड या समतल जमीन पर नीचे गिरना।

जलमंडल *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ जल का घेरा। भू. भू-पृष्ठ पर समुद्रों, झीलों, जलाशयों, नदियों आदि के रूप में प्राप्त समस्त जलराशि। hydrosphere

जलमग्न *वि. (तत्.)* पानी में डूबा हुआ। **उदा.** मूल द्‌वारिका जलमग्न हो गई; जलमग्न टाइटैनिक जहाज की खोज चल रही है।

जलयान *पुं. (तत्.)* जल में चलने वाला सवारी या यान। **जैसे**: नाव, जहाज, स्टीमर आदि।

जलवायविक *वि. (तत्.)* 1. जलवायु संबंधी, 2. जलवायु के अनुसार।

जलवायु *पुं. (तत्.)* क्षेत्र विशेष की पर्यावरण संबंधी स्थितियाँ (गर्मी, सर्दी, वर्षा, तापमान, हवा का दबाव आदि) जिनका प्रभाव वहाँ के जीव जगत् पर पड़ता है। **पर्या.** आवोहवा

जलवाष्प *पुं. (तत्.)* ताप के प्रभाव से जल का भाप में बदला हुआ (परिवर्तित) रूप। water paper

जलविद्‌युत् *स्त्री. (तत्.)* नदी जल या जल प्रपात के वेग से गिरने पर उत्पन्न विद्‌युत-शक्ति। hydro electricity

जलशोधन उपकरण *पुं. (तत्.)* अशुद्‌ध पानी को साफ कर पेय जल के रूप में परिवर्तित करने के लिए उपयोग में लाया जाने वाला यंत्र सा साधन।

जलसा/जल्सा *पुं. (अरं.)* 1. किसी संस्था द्‌वारा आयोजित सार्वजनिक अधिवेशन। **पर्या.** जन सभा। **उदा.** आज रामलीला मैदान में किसानों का बहुत बड़ा जलसा आयोजित हुआ। 2. उत्सव या समारोह। **जैसे:** स्कूल का सालाना जलसा।

जलस्तर *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ पानी का स्तर, पानी की सतह। 1. समुद्र के जल की सामान्य सतह। **उदा.** यदि तापमान में यों ही बढ़ोतरी होती रही तो अंटार्कटिका की बर्फ पिघलती रहेगी और समुद्र का जलस्तर बढ़ जाने के कारण कई द्‌वीप समुद्र के गर्भ में समा जाएँगे। 2. भूमि के गर्भ में जल की सतह। **उदा.** पिछले दो वर्षों से पर्याप्त वर्षा न होने के कारण भूमि के नीचे का जलस्तर काफी नीचे चला गया है।

जलाऊ *वि. (दे.जलाना+आऊ प्रत्य.)* जलाने के काम आने वाली; जलने योग्य। **जैसे:** जलाऊ लकड़ी।

जलापूर्ति *स्त्री. (तत्.)* जल की आपूर्ति करने की व्यवस्था; जहाँ जल उपलब्ध न हो, वहाँ जल पहुँचाने का कार्य। water supply

जलावन लकड़ी *स्त्री. (तद्.)* मुख्यत: खाना पकाते समय जलाकर उपयोग में लाई जाने वाली लकड़ी।

जलाशय *पुं. (तत्.)* भूमि का लंबा-चौड़ा और गहरा स्थान जिसमें वर्षा जल संचित किया जाता है। **पर्या.** झील।

ज़लील *वि. (अर.)* 1. अपमानित, तिरस्कृत, 2. नीच, कमीना। **उदा.** 1. आज उसने मुझे सबके सामने जलील किया। **टि.** इसे नुक्ते सहित

बोलें-लिखें। नुक्ते के बिना 'जलील' शब्द अरबी में 'आदरणीय' का वाचक है।

जलूस/जुलूस *पुं. (अर.)* किसी उत्सव, समारोह या प्रदर्शन के अवसर पर गंतव्य की ओर बढ़ने वाले लोगों का समूह।

जलेबी *स्त्री. (देश.)* 1. मैदे से बनी एक गोलाकार छल्ले के रूप में बनी मिठाई जिसे पहले घी में तलकर चीनी की चाशनी में डाल दिया जाता है। जिससे उसके अंदर मीठा रस भर जाने से वह मीठे स्वाद वाली हो जाती है। 2. गोल आकार का छल्ला, कुंडलिनी।

जलोढ़ *वि./पुं (तत्.)* **भूवि.** जल के बहाव से ले जाई जाकर कहीं संचित (निक्षिप्त) मिट्टी या अव्य पदार्थ। alluvial

जलोढ़ निक्षेप *पुं. (तत्.)* जल के बहाव से लाई गई मिट्टी या अन्य किसी पदार्थ का कहीं जमा हो जाना।

जलोढ़मृदा *स्त्री. (तत्.)* जल के प्रवाह से बह कर ले जाई गई और कहीं संचित मिट्टी। alluvialsoi

जल्लाद *पुं. (अर.)* 1. मृत्युदंड पाए हुए अपराधियों के सरकलम करने वाला या फाँसी पर चढ़ाने वाला पारिश्रमिक भोगी कर्मचारी। ला.अर्थ अत्यंत क्रूर कर्म करने वाला व्यक्ति। **तु.** कसाई।

जवान *वि./पुं. (फा.)* 1. युवावस्था प्राप्त व्यक्ति। **पर्या.** युवा, तरुण, युवक 2. सेना का सिपाही, सैनिक soldier

जवाब *पुं. (अर.)* 1. किसी प्रश्न का उत्तर। **पर्या.** उत्तर। answer **विलो.** सवाल, प्रश्न। 2. पत्र का उत्तर। reply 3. किसी निम्न पदस्थ अधिकारी/कर्मचारी द्वारा नियमानुसार कार्य न करने पर उच्च अधिकारी द्वारा माँगा गया स्पष्टीकरण। explanation 4. नौकरी से अलग करने का कार्य। **उदा.** कल मैनें नौकर को जवाब दे दिया। 5. दो व्यक्तियों का मुकाबला करके किसी एक को अधिक अच्छा घोषित करना। **उदा.** 1. तुम्हारा कोई जवाब नहीं। 2. उसका कोई जवाब नहीं। **मुहा.** जवाब तलब करना-कारण पूछना। 2. टके सा जवाब देना-टरका देना, टाल देना। 3. लाजवाब होना आद्वितीय होना।

जवाबदारी *स्त्री. (अर.)* उत्तर देने की जिम्मेदारी। **पर्या.** जवाबदेही, उत्तरदायित्व, जिम्मेदारी।

जवाबदेह *वि. (अर.)* (व्यक्ति) जिस पर काम के ठीक तरह से पूरा होने और न होने पर उसका ठीक कारण बताने की पूरी जिम्मेदारी हो। **पर्या.** उत्तरदायी, जिम्मेदार।

जवाहरात *पुं. (अर.)* रत्नों की राशि या समूह; आभूषण।

जश्न *पुं. (फा.)* वह उत्सव जो विविध भोज्य पदार्थों और नृत्य-वाद्य संगीत सहित मनाया जाए, समारोह, जलसा। **उदा.** लोकसभा के लिए जीतकर आए सदस्य के सम्मान में बड़ा जश्न मनाया गया।

जस्ता *पुं. (तद्.)* एक कठोर, भंगुर, नीलाभ रासायनिक तत्व (धातु) जिसे ताँवे में मिलाकर मिश्रातु पीतल बनाया जाता है। **पर्या.** यशद zinch

ज़हन *पुं. (अर.)* **दे.** जेहन।

जहन्नुम *पुं. (तत्.)* 1. नरक, दोजख। 2. ला.अर्थ बहुत ही कष्ट व दु:खपूर्ण स्थान।

ज़हर *पुं. (फ़ा.)* पदार्थ जिसे खाकर या पीकर मौत हो जाए। **पर्या.** विष, गरल poison **मुहा.** 1. जहर उगलना-बहुत कड़वी-कड़वी बातें कहना। 2. जहर की घूँट पीकर रह जाना-बहुत अधिक क्रोध आने पर भी चुप रह जाना; अप्रिय बात सुनकर भी किसी कारणवश कुछ न कहना।

जहाँपनाह पुं. *(फ़ा.)* शा.अर्थ जहान (सारी दुनिया) को पनाह (शरण) देने वाला। सा.अर्थ बादशाहों के लिए प्रयुक्त संबोधन।

ज़हीन *वि.(अर.*) तीक्ष्ण बुद्धिवाला, बुद्धिमान, समझदार। **उदा.** आपका बेटा बहुत ज़हीन है।

जाँघ *स्त्री. (तद्.)* कमर और घुटने के बीच का मांसल अंग। **उदा.** भीम ने दुर्योधन की जांघ में गदा मारी थी।

जाँच पड़ताल *स्त्री. (देश.)* किसी घटना के बारे में तथ्यों का पता लगाने की कार्रवाई। **पर्या.** तहकीकात, तफतीश, छानबीन।

जागना *(स.क्रि.) (तद्.)* 1. सोकर उठना, निद्रा त्यागना। 2. सजग या सावधान होना। **जैसे:** समाज के जागने पर ही भ्रष्टाचार दूर होगा। 3. उदित होना। **जैसे:** तुम्हारा विकास देखकर लगता है कि तुम्हारा भाग्य जाग गया है। **विलो.** सोना।

जागरण *पुं. (तत्.)* 1. रात्रि में भी जागते रहना, न सोने की अवस्था। 2. धर्म इष्टदेव, इष्टदेवी की पूजा के निमित्त रात में परिवार या जनसमूह द्वारा गीत, भजन आदि गाते-बजाते हुए रात्रि व्यतीत करना। **जैसे:** देवी जागरण (जगराता)। ला.अर्थ पुरानी पड़ गई परंपराओं और रूढ़ियों को त्यागकर समयानुकूल नया मार्ग अपना लेने की स्थिति।

जागरूक *वि. (तत्.)* शा.अर्थ. जागता हुआ, जागरणशील, निद्राशून्य। विकसित **अर्थ.** सदैव कर्म विशेष के प्रसंग में सर्वथा सावधान अर्थात् सतर्क रहने वाला। **पर्या.** खबरदार, सतर्क, सावधान। vigilant

जागरूकता *स्त्री. (तत्.)* 1. जागरूक होने का भाव। 2. अपने कर्तव्य के प्रति बरती गई विशेष सावधानी।

जागीर *स्त्री. (फा.)* (मध्य युग में) राजाओं द्वारा व्यक्ति विशेष को उसकी विशिष्ट सेवाओं के लिए प्रदान की गई भूमि या प्रदेश जिसकी प्रशासनिक और वित्तीय व्यवस्था का अधिकार उस व्यक्ति और उसके वंशजों को प्राप्त रहते थे।

जागीरदार *पुं. (फ़ा.)* जागीर प्राप्त व्यक्ति (और उसके वंशज)। **दे.** जागीर।

जाग्रत *वि. (तत्.)* जगता हुआ, जगा हुआ। ला.अर्थ-सावधान।

जाग्रत ज्वालामुखी *पुं. (तत्.)* भूवि. ज्वालामुखी जिससे वर्तमान मे भी लावा निकल रहा है। **दे.** ज्वालामुखी। **तु.** सुप्त ज्वालामुखी।

जागृति *स्त्रीं. (तत्.)* 1. जाग्रत होने या रहने की अवस्था या भाव। **दे.** जागरण ला.अर्थ

जाजम/जाज़िम *स्त्री. (तुर्की.)* फर्श पर बिछाने की छपी हुई चादर।

जातक *पुं. (तत्.)* 1. नवजात शिशु। 2. वे बौद्ध ग्रंथ जिनमें महात्मा बुद्ध के पूर्वजन्मों की कथाएँ? संगृहीत हैं।

जातक कथा *स्त्री. (तत्.)* महात्मा बुद्ध के पूर्वजन्म से संबंधित कहानी।

जात-पाँत *स्त्री. (तद्.)* जातियों और उपजातियों से संबंधित वर्गीकरण। **उदा.** 1. जात-पाँत के चक्कर में इंसानियत को नहीं भूलना चाहिए। 2. जात-पाँत पूछै नहि कोई, हरि को भजे सो हरि का होई।

जाति 1. **जीव.** जीवधारियों में वर्गीकरण की निम्नतम इकाई (जिसका स्थान वंश के बाद आता है)। इसमें ऐसे जीव सम्मिलित हैं जो संरचनात्मक तथा प्रकार्यात्मक functional दृष्टि से लगभग समान होते हैं और प्राकृतिक अवस्था में केवल आपस में ही प्रजनन करते हैं। **जैसे:** मनुष्य जाति, पशु जाति, पुरूष जाति, स्त्री जाति। 2. **समा.** हिंदुओं में प्रचलित समाज-स्तर पर वह वर्ग-विभाजन जो पहले कर्मानुसार निश्चित हुआ था पर कालांतर में जन्म के आधार पर माना जाने लगा। Caste

जातीय *वि. (तत्.)* 1. जाति संबंधी, जातिगत। **उदा.** जातीय भेदभाव उचित नहीं है। 2. सारी जाति समाज या राष्ट्र का national **टि.** बांग्ला भाषा में यही अर्थ प्रचलित है। **जैसे:** सर्वजातिय उत्कर्ष राष्ट्रीय भावना है।

जादुई *वि.(फ़ा.)* जादू संबंधी, जादू जैसा लगने वाला, जादू के करतब से उत्पन्न।

जादू *पुं. (फ़ा.)* खासकर हाथ की सफाई और चतुराई का खेल जो दर्शकों को सच जैसा लगे या नज़र आए। ला.अर्थ किसी व्यक्ति का वह गुण या व्यवहार जो दूसरे को (भले ही कुछ समय के

लिए ही) मोह ले। **मुहा.** जादू चढ़ना- मोह लिया जाना, प्रभावित होना। जादू उतरना- मोह/प्रभाव समाप्त हो जाना।

जादूगर *पुं. (फ़ा.)* जादू के खेल दिखलाने वाला, जादू के खेल को व्यवसाय या वृत्ति के रूप में अपनाने वाला व्यक्ति magician **दे.** जादू।

जान *स्त्री. (तद्.)* 1. जो बात बुद्धि द्वारा ग्रहण की जाए। **पर्या.** ज्ञान, जानकारी, परिचय। 2. जिस बात की कल्पना मन में की जाए। **पर्या.** ख्याल, अनुमान।

जानकार *वि. (तद्.)* 1. किसी विषय या व्यक्ति आदि के बारे में मूलभूत जानकारी (ज्ञान) रखने वाला। **पर्या.** ज्ञात। **जैसे:** 1. इतिहास का जानकार-इतिहास का ज्ञाता। 2. वह मेरा जानकार है (यानी मैं उसे जानता हूँ?)।

जानकारी स्त्री. *(देश.)* 'जानकार' का भाववाचक रूप। **पर्या.** 1. ज्ञान। 2. परिचय। **दे.** जानकार।

जान-बूझकर *क्रि.वि (देश.)* 1. सोच-समझकर। 2. अच्छी तरह से जानते और समझते हुए। **उदा.** 1. वह जानबूझकर यहाँ नहीं आया। 2. मैंने जानबूझकर यह बात कही।

जानवर *पुं. (फ़ा.)* 1. मनुष्य को छोडकर सभी चल प्राणी; पशु, जंतु animal **उदा.** बाघ, चीता, मृग आदि जंगली जानवर हैं। 2. ला.अर्थ 1. पशुओं के समान आचरण करने वाला व्यक्ति, हैवान। 2. मूर्ख व्यक्ति **जैसे:** वह व्यक्ति व्यवहार से तो पूरा जानवर है।

जानी *वि. (फ़ा.)* प्राणों का, जान से संबंध रखने वाला। **जैसे:** जानी दुश्मन- (जान लेने वाला दुश्मन)। जानी दोस्त- (परम मित्र)।

ज़ाम *पुं. (फ़ा.)* 1. शराब पीने का प्याला, कटोरा। **उदा.** वहाँ तो जाम से जाम टकरा रहे थे। 2. रूका हुआ। **उदा.** इंजन जाम हो गया। 3. मार्ग-अवरोध। **उदा.** मायापुरी चौराहे पर घंटों यातायात जाम रहता है। *(तद्.)* पहर, प्रहर। **जैसे:** दिन रात में आठ पहर होते हैं। पहला पहर, दूसरा पहर, तीसरा पहर, चौथा पहर।

जायका *पुं. (अर.)* खाने-पीने की चीजों का स्वाद। taste

जायकेदार *वि. (अर.)* अच्छे स्वाद वाला, स्वादिष्ट tasty विलो. बेजायका।

जायज *वि. (अर.)* 1. उचित, मुनासिब, 2. वैध, विधि सम्मत।

जायजा *पुं. (अर.<जाइज:)* जाँच-पड़ताल।

जायदाद *स्त्री. (फ़ा.)* भूमि, मकान, धन, सामान आदि अचल और चल संपत्ति जिस पर किसी का अधिकार हो। **उदा.** उसके दादा जी बहुत बड़ी जायदाद के मालिक हैं।

जाया *स्त्री. (तत्.)* 1. विवाहिता स्त्री, पत्नी। 2. *वि. (तद्.)* जो उत्पन्न हुआ हो, पैदा हुआ। 3. *वि./क्रि.वि.* नष्ट, बरबाद। **जैसे:** तुम कुसंगति में टी.वी देखकर अपना वक्त जाया न करो।

जारी *वि. (अर.)* 1. चलता हुआ, प्रचलित। **उदा.** दस रुपए का नया सिक्का जारी किया गया है। 2. बहता हुआ, प्रवाहित। **उदा.** घाव से खून जारी है। 3. लागू, चालू, चल रहा। **उदा.** यह कानून सालों से जारी है। current in force

जाल *पुं. (तत्.)* 1. सन, सूत की रस्सी या धागों से बुना हुआ या तारों का जालीदार पट। 2. जो मछलियों, पक्षियों आदि को पकड़ने के काम आता है। *(अर.)* 3. किसी को ठगने या फँसा लेने की तरकीब या चालाकीपूर्ण युक्ति।

जाली *स्त्री. (अर.)* 1. लकड़ी, पत्थर तथा धातु की चादर पर छेद काटकर बनाई गई कलाकृति। 2. बेल-बूटों से कढ़ा वस्त्र; कसीदाकारी। 3. आम या अन्य फलों की गुठली में रेशों का कठोर भाग जिसे सरलता से काटा न जा सके। *वि.* जो असली न हो। **पर्या.** नकली, झूठा (दस्तावेज या अन्य पत्र आदि)। **विलो.** असली।

जालीदार *वि. (अर.)* 1. जालीवाला; जाली जैसी रचना वाला। 2. (वह वस्तु) जिसमें जाली पड़ गई हो। **दे.** जाली।

जासूस *पुं. (अर.)* गुप्त रूप से किसी अपराध, रहस्य आदि का पता लगाने वाला। **पर्या.** गुप्तचर, भेदिया।

जासूसी *स्त्री. (अर.)* जासूस का काम या भाव गुप्चरी। **वि.** जासूसी से संबंधित। **उदा.** 1. चंद्रकांता संतति जासूसी उपन्यास है। 2. लोगबाग जासूसी उपन्यास बड़े चाव से पढ़ते हैं।

ज़ाहिर *वि. (अर.)* ज्ञात, प्रकट, स्पष्ट। **उदा.** यह बात जग जाहिर हो गई।

जाहिल *वि. (अर.)* 1. मूर्ख, अज्ञानी, नादान, नासमझ; असभ्य, उद्दंड। 2. अनपढ़, निरक्षर। **उदा.** वह जाहिल इन्सान है उससे बचना।

जिंदा *वि. (फा.)* 1. जिसमें जीवन हो, सजीव; जीवित, जो मरा न हो। 2. प्रफुल्ल। **जैसे:** ज़िंदा-दिल इंसान। जिदांबाद-जीवित रहे, अमर रहे का नारा। **विलो.** मुर्दाबाद।

ज़िक्र *पुं. (अर.)* उल्लेख. चर्चा- प्रसंग वश किसी व्यक्ति या वस्तु का जिक्र करना।

जिगर *पुं. (फ़ा.)* 1. शरीर का एक आवश्यक आंतरिक अंग यकृत liver **उदा.** अधिक शराब पीने से जिगर खराब हो जाता है। 2. कलेजा, दिल। **जैसे:** जिगर का टुकड़ा; जिगर थाम कर बैठना।

जिगरी *वि.(फ़ा..)* 1. यकृत/जिगर से संबंधित । 2. घनिष्ठ, अंतरंग। **जैसे:** जिगरी दोस्त।

जिजीवषा *स्त्री. (तत्.)* जीवित रहने (यानी न मरने की) अपार इच्छा।

जिज्ञासा *स्त्री. (तत्.)* अज्ञात तथ्य को जानने और समझने की प्रबल इच्छा।

जिज्ञासु *वि. (तत्.)* अज्ञात तथ्य को जानने और समझने की प्रबल इच्छा रखने वाला।

जितेंद्रिय वि. *(तत्.)* वह व्यक्ति जिसने अपनी इंद्रियों को वश में कर लिया हो।

ज़िद/जिद्द *स्त्री. (अर.)* अपनी बात मनवाने के लिए अड़े रहने की स्थिति; किसी बात के लिए अनुचित रूप से अड़ना। **पर्या.** हठ, दुराग्रह।

जिदांदिली *स्त्री. (फ़ा.)* कठिनाई के दिनों में भी प्रसन्न व उत्साहपूर्ण रहने की प्रवृत्ति।

ज़िदादिल *वि. (फ़ा.)* 1. हर स्थिति में सदा प्रसन्न और उत्साहपूर्ण रहने वाला। 2. उल्लासपूर्ण व मनोरंजक बातें करने वाला। हँसमुख, विनोदी। **उदा.** आपका साथी तो सचमुच जिंदादिल इंसान है। **विलो.** मुर्दादिल।

जिद्दी *वि. (अर.)* (वह व्यक्ति) जो जिद करे। **पर्या.** हठी, दुराग्रही, अड़ियल।

जिम्मेदार वि. *(अ.+फा.)* जिम्मेदारी महसूस करने वाला। **दे.** जिम्मेदारी।

जिम्मेदारी *स्त्री. (अर.+फ़ा.)* किसी कार्य का जिम्मा (भार) सँभालने का भाव। **पर्या.** दायित्व, कार्यभार।

जिरह *पुं. (अ.)* किसी के कथन सत्यता, असत्यता की जाँच करने के लिए उससे की जाने वाली बहस। *स्त्री. (फ़ा.)* लोहे की कड़ियों से बना हुआ कवच। **जैसे:** जिरह बख्तर।

जिराफ़ *पुं. (अर.)* अफ्रीका के जंगलों में पाया जाने वाला वह जानवर जिसके शरीर पर धारियाँ होती हैं, ऊँट से भी लंबी गर्दन होती है तथा अगली टाँगें पिछली टाँगों से अधिक लंबी होती हैं।

जिला *पुं. (अर.)* प्रशासनिक कार्यों के लिए राज्य/प्रदेश/प्रांत की एक सीमांकित इकाई। **पर्या.** जनपद। district

ज़िलाधिकारी/ज़िलाधीश पुं. *(अर.+तत्.)* जिले का सर्वोच्य प्रशासनिक अधिकारी। collector

जिल्द *स्त्री. (अर.)* शा.अर्थ खाल, चमड़ा। 1. पुस्तक की चमड़े से (और अब रेक्सिन से भी) मढ़ी दफ्ती जो पुस्तक को जल्दी फटने से बचाती है। binding 2. ग्रंथमाला का दफ्ती गढा खंड जिसकी स्वतंत्र इकाई के रूप में गिनती होती है। **पर्या.** खंड। volum **जैसे:** जिल्द।

जिस्म *पुं. (अर.)* शरीर, देह।

जिहाद/जेहाद *पुं. (अर.)* अनीति आदि के या धर्म रक्षा के लिए किसी वर्ग या समूह द्वारा किया जाने वाला युद्ध। **पर्या.** धर्मयुद्ध। crusad।

जिहादी/जेहादी *वि. (अर.)* जिहाद संबंधी। जिहाद छेड़ने वाला।

जिह्वा *स्त्री. (तत्.)* मुख कोटर में स्थित वह मांसल इंद्रिय जो खाद्य और पेय पदार्थों को निगलने, उनका स्वाद चखने के काम के साथ- साथ भाषा की ध्वनियों के उच्चारण में सहयोग करती है।

जी *अव्यय (तद्.)* पर्या. जीभ। नाम या पद के साथ जोडक़र बोला या लिखा जाने वाला आदरसूचक शब्द। **जैसे**: 1. प्रधानाचार्य जी, 2. गाँधी जी, पिता जी। *पुं. (तद्.)* 1. मन, दिल। **उदा.** जी में आए सो करो। **उदा.** आज मेरा जी किसी काम में नहीं लग रहा है। **मुहा.** 1. जी अच्छा होना/अच्छा न होना-तबीयत ठीक/खराब होना। 2. जी चाहना-इच्छा होना। 3. जी काँपना-डरना। 4. जी का जंजाल-परेशानी, झंझट। 5. जी

का बोझ हलका होना-परेशानी हो जाने पर खुश होना।

जीत *स्त्री. (तद्.)* 1. जीतने की क्रिया या भाव। 2. युद्ध, संघर्ष, प्रतियोगिता आदि में प्राप्त सफलता। **पर्या.** जय, विजय। **उदा.** 1. पाकिस्तान के साथ हुए युद्ध में हर बार भारत की जीत हुई थी। 2. वाद-विवाद प्रतियोगिता में हमारे विद्यालय की जीत। **विलो.** हार।

जीन *पुं. (अ.)* जीव-आनुवंशिकता की सूचक कणात्मक इकाई जिसका सामान्यत: स्थान गुणसूत्र के निश्चित बिंदु पर होता है। यह डी.एन.ए. की लड़ी का वह अंश है जो एक एन्जाइम का संश्लेषण करता है। **पर्या.** वंशाणु। **दे.** आनुवंशिकता।

जीभ *स्त्री. (तद्.)* 1. मुँह में स्थित वह ज्ञानेंद्रिय जो रस (मीठा, खट्टा, नमकीन आदि स्वाद) का ज्ञान कराती है तथा कर्मेंद्रिय के रूप में शब्द का उच्चारण करने में सहायक है। **पर्या.** जिह्वा, जबान, रसना। 2. जीभ के आकार की कोई वस्तु। **जैसे:** जूते की जीभ। **मुहा.** जीभ चलना-1. बहुत बोलना, 2. चटोरा होना। जीभ पकड़ना-बोलने न देना।

जीर्णोद्धार *पुं . (तत्.)* **पारि.** अर्थ-पुराने और टूटे-फूटे भवनों, कुओं, देवालयों तालाबों आदि की मरम्मत या सुधार का कार्य।

जीवंत *वि. (तत्.)* जीवित; जीवनी शक्ति से युक्त जीवन की ऊर्जा से भरपूर सजीव।

जीवंत प्रसारण *पुं. (तत्.)* किसी घटना विशेष का उसी समय टीवी के माध्यम से ज्यों-का-त्यों किया जा रहा प्रसारण। **पर्या.** सजीव प्रसारण live telecast

जीवंतता *स्त्री. (तत्.)* जीवित होने अर्थात् जीवनीशक्ति से युक्त होने का भाव।

जीव *पुं. (तत्.)* 1. प्राणियों का वह चेतन तत्व जिसके कारण वे जीवित रहते हैं। sole 2. जिसमें जीवन हो वह प्राणी/वनस्पति। creature

जीव-जंतु *पुं. (तत्.)* किसी क्षेत्र या युग विशेष के समस्त जंतु (पशु-पक्षी, कीड़े-मकोड़े आदि)।

जीवट *पुं. (देश.)* साहस, हिम्मत, बहादुरी। **उदा.** उसके जीवट की तारीफ करनी होगी कि उसने अकेले तीन हमलावरों का सामना किया और उन्हें मार भगाया।

जीवद्रव्य *पुं. (तत्.)* कोशिका का जीवित पदार्थ protoplasm जिसमें केंद्रक, कोशिका-द्रव्य आदि शामिल हैं।

जीवन *पुं. (तत्.)* 1. जीवित रहने या होने का भाव। 2. जन्म से मृत्यु तक का समय। 3. जीवधारियों की समस्त क्रियाओं का सामूहिक नाम। **विलो.** मरण।

जीवनकाल *पुं. (तत्.)* जन्म से मृत्यु तक का समय। **दे.** जीवन, आयु, उम्र।

जीवनचक्र *पुं.(तत्.)* प्राणी. किसी भी जीव की प्रारंभ से लेकर अंत तक के विकास की उत्तरोत्तर अवस्थाएँ। life cycle

जीवनचर्या *स्त्री. (तत्.)* 1. जीवन के प्रतिदिन के कार्यक्रम, आचरण, रहन-सहन आदि।

जीवन-नौका *स्त्री. (तत्.)* वह छोटी नौका जो बड़े जहाजों पर इसलिए रखी जाती है कि जब जहाज डूबने लगे तब लोग उस पर सवार होकर अपनी जान की रक्षा कर सकें। life boat **ला.** प्रयोग एक नौका के समान जीवन। **उदा.** मेरी जीवन नौका मँझधार में फँसी हुई है।

जीवनपर्यंत *क्रि. वि. (तत्.)* 1. संपूर्ण जीवन। 2. जीवित रहने तक। 3. जब तक जीवन रहेगा तब तक **पर्या.** मृत्युपर्यंत। **प्रयो.** मैं इस उपकार के लिए तुम्हारा जीवनपर्यंत कृतज्ञ रहूँगा।

जीवनमुक्त *वि. (तत्.)* **दर्श.** वह जिसे आध्यात्मिक साधना के कारण जीवन और मृत्यु का ज्ञान हो गया हो और जो बिना किसी आसक्ति के जीवन-यापन कर रहा हो।

जीवनवृत्त *पुं. (तत्.)* 1. जीवन का वृत्त यानी विवरण। 2. जिन्दगी भर का संक्षिप्त लिखित विवरण। biodata **तु.** जीवनी। 3. किसी व्यक्ति के जन्म से मृत्यु तक की मुख्य-मुख्य घटनाओं, कार्यों आदि का समय-क्रम से सूत्रात्मक वर्णन। **उदा.** नौकरी के आवेदन के साथ जीवनवृत्त भी देना पड़ता है।

जीवन-संगिनी *स्त्री. (तत्.)* शा.अर्थ जीवन में साथ निभाने वाली महिला; पत्नी, सहधर्मिणी।

जीवनी *स्त्री* 1. व्यक्ति विशेष की जीवन संबंधी घटनाओं का कालक्रमिक विवरण। 2. किसी

व्यक्ति विशेष की जीवन संबंधी घटनाओं का किसी अन्य व्यक्ति द्वारा लिखा हुआ क्रमिक विवरण। **पर्या.** जीवन-चरित/जीवन चरित्र biography 3. वि. (तत्.) जीवन बनाए रखने वाली। **जैसे:** जीवनी शक्ति।

जीवविज्ञान *पुं. (तत्.)* विज्ञान की वह शाखा जिसका संबंध जीवधारियों के अध्ययन से है। biology **टि.** इसकी एक शाखा को वनस्पति विज्ञान Botony और मनुष्य जंतु पशु-पक्षी आदि प्राणियों से संबंधित दूसरी शाखा को प्राणि विज्ञान या जंतु विज्ञान Zoology कहते हैं।

जीवाणु *पुं. (तत्.)* कोशिकीय सूक्ष्मजीवों का एक विशाल वर्ग। इन केंद्रकहीन और पर्णहरित जीवों में जनन क्रिया द्वारा होती है। केंद्रक के स्थान पर क्रोमेटिन पदार्थ व्याप्त रहता है। Bacteria **टि.** अंग्रेजी का बैक्टीरिया शब्द बैक्टीरियम (Bacterium) का बहुवचन है। इन जीवाणुओं का वर्गीकरण आकृति के अनुसार किया जाता है। **जैसे:** (क) दंडाणु - दंड (rod) जैसा। (ख) गोलाणु (कॉकस) - बिंदु जैसा। (ग) सर्पिलाणु - लहरदार जैसा, आदि।

जीवाश्म *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ पत्थर रूप में परिवर्तित यानी बदल गया जीव। भू.वि. (अश्म) चट्टानों आदि में युगों तक दबे पुरातन जीवों (पादपों, जंतुओं) के शरीर के पत्थर जैसे कई रूप परिवर्तित अंश अथवा उनके चिह्न जो पुरातन जीवों की कहानी बताते हैं। **पर्या.** जीवावशेष fossil

जीवाश्मी ईंधन *पुं. (तत्.)* जीवों के मृत अवशेषों से लाखों वर्षों के परिवर्तन के बाद प्राप्त होने वाला ईंधन। **उदा.** कोयला, पेट्रोलियम (पदार्थ)

जीविका *स्त्री. (तत्.)* वह काम जो जीवन निर्वाह के लिए किया जाए। **पर्या.** रोजी, वृत्ति, पेशा।

जीविकोपार्जन *पुं. (तत्.)* 1. जीवन की अनिवार्य आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अर्थ (धन) अर्जित करने का कार्य। 2. जीविका-निर्वाह हेतु धन-अर्जन।

जुआ *पुं. (तद्.<द्युत)* 1. रुपये, वस्तु आदि की बाजी (दाँव) लगाकर खेला जाने वाला खेल जिसमें हारे हुए की लगाई हुई धनराशि, वस्तुएँ आदि विजयी पक्ष की संपत्ति बन जाती है। **पर्या.** द्युत क्रीड़ा। **उदा.** पांडव दुर्योधन से जुएँ में सब कुछ हार गए थे। 2. गाड़ी या हल खींचते समय बैलों के कंधों पर रखा जाने वाला लकड़ी का बना आयताकार उपकरण।

जुएब/जुर्राब *स्त्री. (तुर्की.)* घुटनों से नीचे तक पैरों में पहना जाने वाला मोजा।

जुकाम *पुं. (अर.)* सरदी-गरमी के योग से होने वाला एक संक्रमणशील रोग जिसमें नाक बहती है और छींके आती हैं। **पर्या.** प्रतिश्याय common cold

जुगनू/जुगनूँ *पुं. (देश.)* एक बरसाती कीड़ा, जिसके रात में उड़ने पर उसकी दुम से रोशनी चमकती है। **पर्या.** खद्योत।

जुगाड़ *पुं. (तद्.<युक्ति)* किसी भी प्रकार से (येनकेन प्रकारेण) कार्य सिद्ध करने का प्रयत्न। **पर्या.** जुगत, जोड़-तोड़।

जुगाली *स्त्री. (तद्.<उद्गली)* द्विखुरीय (दो खुर वाले) स्तनपायी पशुओं द्वारा निगले गए रेशे वाले पदार्थ (घास/तृण) को थोड़ा-थोड़ा करके गले से निकाल मुँह में लेकर फिर से धीरे-धीरे चबाने की क्रिया। **ला.** प्रयोग-पुरानी बातों को याद कर उनका बार-बार कथन करना।

जुगुप्सा *स्त्री. (तत्.)* गंदगी देखकर मन में पैदा होने वाला घृणा का भाव। **टि.** काव्य में बीभत्स रस का स्थायी भाव। घृणा; अरुचि

जुझारू *वि. (तद्.)* मूल अर्थ परोपकार के लिए युद्ध करके वीरगति को प्राप्त होने वाला, जिसकी आगे चलकर पूजा की जाती थी। आधु.अर्थ जी-जान से लड़ने वाला अनुपम वीर/ योद्धा/बहादुर। 2. *वि. (देश.)* पूरे उत्साह से युद्ध या संघर्ष करने वाला।

जुटना *अ.क्रि. (देश.)* 1. दो वस्तुओं का एक साथ चिपक जाना। **पर्या.** जुड़ना। 2. एकत्र होना, इकट्ठा होना। **जैसे:** रविवार के दिन उद्योग/ मेले में लोग सुबह से ही जुटने लगे। 3. मन लगाकर कार्य करने में लग जाना। **उदा.** परीक्षा निकट है। पढ़ाई में जुट जाओ।

जुड़वाँ *वि. (देश.)* शा.अर्थ जुड़े हुए जैसे जुड़वाँ केला। **आयु.** एक ही माता के गर्भ से कुछ क्षणों

के अंतराल से जन्मे दो शिशु। **जैसे:** जुड़वाँ बच्चे, जुड़वाँ भाई, जुड़वाँ भाई-बहिन, जुड़वाँ बहिनें।

जुड़ाव *पुं. (देश.)* 1. जुड़ने का भाव या क्रिया; लगाव, संपर्क।

जुताई *स्त्री. (देश.)* 1. फसल उगाने से पहले खेत की मिट्टी को हल या ट्रैक्टर चलाकर/उलटने-पलटने एवं पोला करने का काम। 2. उक्त कार्य के लिए दी जाने वाली मजदूरी।

जुर्म *पुं. (अर.)* 1. कोई भी कार्य जो कानून की दृष्टि से दंडनीय माना जाए, अपराध। **उदा.** रिश्वत देना-लेना कानूनन जुर्म है।

जुर्रत *स्त्री. (अर.)* जो काम करना अपेक्षित नहीं हो उसे ढीठ बनकर करने का प्रयत्न करना। **पर्या.** दुस्साहस; धृष्टता। **उदा.** तेरी यह जुर्रत की मेरी बात को टाल जाए।

जुल्म *पुं. (अर.)* अपनी सत्ता, शक्ति, अहंकार या दबंगई के कारण अनावश्यक रूप से किसी व्यक्ति या वर्ग को सताना। **पर्या.** अत्याचार। **उदा.** अंग्रेजों ने स्वतंत्रता सेनानियों पर कई तरह के जुल्म किए।

जुस्तजू *स्त्री. (फ़ा.)* किसी की अत्यंत चाह भरी बड़ी उत्सुकता से की गई खोज, तलाश। **उदा.** कब से तेरी जुस्तजू है।

जुहार *स्त्री. (तद्.)* 1. उत्तर भारत के अधिकांश भागों में क्षत्रियों में प्रचलित एक प्रकार का विशेष अभिवादन या अभिवादन के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला शब्द विशेष। **टि.** अधिकांश क्षेत्रों में दशहरे के पर्वोत्सव पर क्षत्रिय लोग परस्पर जुहार या जोहार शब्द का प्रयोग करते हैं।

जुही/जूही *स्त्री. (तद्.)* वह पुष्पीय लता जिसके पत्ते लघु व गोलाकार तथा फूल पाँच पंखुड़ियों से युक्त छोटे, सफेद या पीले व तीव्र सुगंध वाले होते हैं। **उदा.** जूही रात को फूलती है।

जूँ *स्त्री. (तद्.<यूका)* सिर के केशों में पसीने या गंदगी से उत्पन्न हो जाने वाला अत्यंत छोटा कीट। **उदा.** शैंपू से बाल धोने पर जुएँ मर जाती हैं। **लो.** कानों पर जूँ न रेंगना-किसी की बात का कोई असर न होना।

जूझना *अ.क्रि. (तद्.)* 1. शारीरिक शक्ति का प्रयोग करते हुए लड़ना। 2. लड़ते हुए मर जाना। 3. (ला.) किसी समस्या/विपत्ति से शारीरिक/मानसिक रूप से संघर्ष करना। **उदा.** वह अकेले ही सभी समस्याओं से जूझ रहा है।

जूट *पुं. (तत्.)* 1. उलझे हुए घने तथा लंबे बालों की लटों से बँधा हुआ जूड़ा जो साधुओं के सिर पर देखा जा सकता है। **पर्या.** जटाजूट । 2. एक प्रसिद्ध उष्णकटिबंधीय पौधा जिसके रेशे से रस्सी, बोरी, टाट आदि बनते हैं।

जूठन *स्त्री. (तद्.)* घर पर अथवा प्रीतिभोज आदि में व्यक्ति या व्यक्तियों के द्वारा खाने-पीने से बची हुई वस्तु। 2. उच्छिष्ट (भोजन)। **ला.** 3. जिसमें कोई नवीनता न हो अर्थात् जिसका पहले प्रयोग किया जा चुका हो। **जैसे:** यह कविता तो महाकवि निराला की जूठन मात्र है।

जूड़ा *पुं. (देश.)* 1. एक प्रकार का केश विन्यास जिसमें महिलाएँ सिर के बालों को कंघी से सँवारकर, रस्सी की तरह लपेटकर और गोलाकृति में बाँध लेती हैं। **उदा.** जूड़ा बाँधने के कई आकार-प्रकार हैं।

जूतम-पैजार/ *[हि.जूता+फा.पैजार] स्त्री.* 1. परस्पर लड़ाई का वह प्रकार जिसमें लोग जूतों से मारपीट करें।

जून *पुं. (तद्.)* 1. समय, बेला, वक्त। **उदा.** कभी-कभी गरीबों को दो जून की रोटी भी नसीब नहीं होती। 2. *पुं.(अं.)* वर्ष का छठा महीना। 3. वि. (तद्.) बहुत पुराना, जीर्ण।

जूल *पुं. (अं.)* भौ. ऊर्जा तथा कार्य का मात्रक, प्रतीक। यह एक न्यूटन बल द्वारा किसी बिंदु को एक मीटर विस्थापित करने के कार्य के बराबर होता है; साथ ही 4.2 कैलोरी के तुल्य होता है।

जेठ *पुं. (तद्.<ज्येष्ठ)* 1. भारतीय मासों में तीसरा मास जो वैशाख के बाद तथा आषाढ़ मास से पहले आता है। यह घोर गर्मी वाला माह है। **उदा.** जेठ में तेज धूप के साथ-साथ लू भी चलती है। *वि./पुं.* पति का बड़ा भाई जैसे धृतराष्ट्र कुंती के जेठ थे।

जेबरा क्रॉसिंग *पुं. (अं.)* शहरों में चौराहों पर पैदल यात्रियों द्वारा सड़क पार करने के प्रयोजनार्थ काली-सफेद धारियों से रेखांकित स्थल ताकि पैदल यात्री वहाँ से सुरक्षित सड़क पार कर सकें।

जेबरा *पुं. (अफ्री.)* अफ्रीका में पाया जाने वाला घोड़े की जाति का जंगली जानवर जिसके शरीर पर काले व सफेद रंग की धारियाँ होती हैं। **उदा.** जेबरा अफ्रीका के जंगलों में पाया जाता है।

जेल *पुं. (अं.)* वह स्थान जहाँ दंडित अपराधियों को सजा के तौर पर निश्चित समय के लिए बंद रखा जाता हैं। **पर्या.** जेलखाना, कैदखाना, कारागार, बंदीग्रह। **जैसे:** दिल्ली में 'तिहाड़ जेल।

जेलयात्रा *स्त्री. (तत्.)* शा.अर्थ जेल (कारागार) की यात्रा। सा.अर्थ सामाजिक राष्ट्रीय आदि आंदोलनों के निमित्त जेल की यात्रा करना। **उदा.** स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान राष्ट्रभक्तों ने कई बार जेल यात्राएँ कीं। **तुल.** कैद।

जेवर *पुं. (फ़ा.)* शरीर की शोभा बढ़ाने के लिए धारण किया जाने वाला गहना, आभूषण। **बहु.** जेवरात

जेहन *पुं. (अर.)* 1. बुद्धि, समझ, 2. स्मरण शक्ति। **उदा.** यह बात मेरे जेहन में ही नहीं आई, नहीं तो तुम्हारे कहने से पहले ही मैं यह काम कर देता।

जैव *वि. (तत्.)* जीवधारियों का या उनसे संबंधित। **पर्या.** जैविक। **जैसे:** जैव विकास। **जैसे:** जैव संसाधन (पेड़-पौधे, जीव-जंतु)।

जैव-निम्नीकरणीय *वि. (तत्.)* सूक्ष्म जीवों द्वारा निर्विषी उपापचयजों metabolites में टूट जाने वाले (पदार्थ) अथवा अजैविक जैव रासायनिक पारस्परिक क्रियाओं से प्रेरित होने वाले (पदार्थ)।

जैवमंडल *पुं. (तत्.)* पृथ्वी जल तथा वायुमंडल का वह क्षेत्र जहाँ जीवों का निवास संभव है। biosphee वि. (तत्.) जीव से संबंधित **पर्या.** जवै जैविकी से संबंधित।

जैव विकास *पुं. (तत्.)* जीवधारियों के क्रमिक उद्भव की संकल्पना, जिसके अनुसार माना जाता है कि आरंभ में सरलतम जीवों का उद्भव हुआ और कालांतर में उन्हीं से जटिल जीवों की उत्पत्ति होती गई। Organic evolution

जैविक अवशिष्ट *पुं. (तत्.)* पेड़-पौधों या जंतुओं का अवशिष्ट। **दे.** अवशिष्टि

जैविक कृषि *स्त्री. (तत्.)* जिस कृषि कर्म में (रासायनिक खादों के स्थान पर) जैविक खाद और प्राकृतिक पीडक़नाशी का उपयोग किया जाता है। (बायो-अग्रिकल्चर)

जैसे-तैसे *क्रि.वि. (तद्.)* किसी न किसी प्रकार से। **प्रयो.** समय की कमी से उसने जैसे-तैसे सभी प्रश्नों के उत्तर दे ही दिए।

जोखिम *स्त्री. (तद्.)* 1. संकट या विपत्ति की संभावना वाली स्थिति। 2. काम करने में होने वाले कष्ट तथा काम से होने वाली हानि या खतरा। **उदा.** 1. मैं इस काम को करने का जोखिम नहीं उठा सकता। (रिस्क) 2. उसकी जान जोखिम में है।

जोट *पुं. (तद्.)* दो वस्तुओं का समूह; जोड़ा।

जोटी *स्त्री. (तद्.)* 1. एक ही तरह की दो वस्तुएँ। 2. दो वस्तुओं का समूह।

जोड़ा *पुं. (तद्.<युतक)* एक ही तरह की दो वस्तुएँ। **जैसे**-जूतों का जोड़ा pair, जुराबों या दस्तानों का जोड़ा इत्यादि। कुर्ते-पाजामे का जोड़ा। 2. एक ही उपयोग के लिए अलग-अलग प्रकार की वस्तुओं का जोड़ा। 3. पति-पत्नी या नर-मादा का जोड़ा। 4. साथ-साथ काम करने वाले या बराबरी वाले दो का समूह। **जैसे:** बैलों का जोड़ा।

जोत *स्त्री. (देश.)* 1. किसान के कब्जे वाला वह भूखंड जिस पर वह खेती (जोतने-बोने) का कार्य करता है। 2. चमड़े की रस्सी या पट्टी जिसका एक सिरा पशुओं के गले तथा दूसरा खींची जाने वाली गाड़ी में बँधा हो 3. वह रस्सी जिसमें तराजू के पलड़े बँधे रहते हैं। स्त्री. (तद्.<ज्योति) देवता के सामने जलाया जाने वाला दीपक या किसी अन्य प्रकार का प्रकाश।

जोर *पुं. (फ़ा.)* 1. बल, शक्ति, ताकत। **उदा.** इस तरवत को जरा जोर लगाकर उठाओ। 2. वश, नियंत्रण, काबू। **उदा.** मेरा तो अपने पुत्र पर ही जोर नही है। 3. वृद्धि, प्रबलता, उत्कर्ष। **उदा.** इस गाँव में शिक्षा का विकास जोरों पर है। 4. तनाव/हानिकारक प्रभाव। **उदा.** टीवी ज्यादा न देखा करो इससे आँखों पर ज्यादा जोर पड़ता है। 5. जल्दी-जल्दी होना/बढ़ना। **उदा.** अब वर्षा जोरो पर है।

ज़ोरदार *वि. (फ़ा.)* मात्रा और वेग में तुलनात्मक अधिकता। **उदा.** आज ज़ोरदार बारिश हुई।

जोरू *स्त्री. (देश.)* पत्नी, बीवी। **लोको.** जोरू का गुलाम-वह आदमी जो हर काम बीवी/पत्नी से पूछकर करता है यानी कोई भी निर्णय स्वतंत्र रूप से नहीं लेता।

जोहड़/जौहड़ *पुं. (देश.)* 1. छोटा तालाब। 2. वह गड्ढा जिसमें बरसात का जल भर जाता है।

जोहना *स.क्रि(तद्.)* 1. देखने या ताकने की क्रिया; हाथ से टटोलकर ढूँढ़ने की क्रिया। 2. प्रतीक्षा करना। **जैसे:** बाट जोहना-रास्ता देखना, प्रतीक्षा करना।

जौहर *पुं. (अर.)* 1. रत्न, बहुमूल्य पत्थर। **उदा.** जौहर की पहचान तो जौहरी ही करता है। 2. युद्ध आदि की परिस्थिति में आत्मकौशल या शक्ति प्रकट करना। **उदा.** कारगिल की लड़ाई में हमारे सैनिकों ने अपना जौहर दिखाया। 3. राजस्थान की एक प्रथा जिसके अनुसार राजपूत स्त्रियाँ शत्रु पक्ष की विजय निश्चित होने पर अपनी मर्यादा की रक्षा के लिए सामूहिक रूप से चिता में कूदकर प्राण त्याग देती थीं।

जौहरी *पुं. (अर.)* रत्नों की जाँच करने वाला; रत्नों का व्यापारी। **वि.** किसी भी व्यक्ति या वस्तु के गुण-दोषों को पहचानने वाला। **पर्या.** पारखी।

ज्यादती *स्त्री. (अर.)* 1. बहुत ज्यादा होने का भाव अधिकता। 2. अत्याचार, जुल्म। **जैसे:** तुमने उसके साथ ज्यादती की है। 3. जबरदस्ती।

ज्यादा *वि. (फ़ा.)* अधिक, बहुत। **विलो.** कम

ज्यादातर *वि. (फ़ा.)* 1. और अधिक। 2. और ज्यादा। 3. ज्यादा से भी ज्यादा। 4. अधिकतर। क्रि.वि. 1. प्राय: 2. बहुधा 3. अक्सर/अकसर।

ज्यामिति *[ज्या=रेखा+मिति=मापन/यथार्थ ज्ञान] स्त्री. (तत्.)* गणित की वह शाखा जिसमें पिंडों की नाप, रेखा, कोण, तल आदि के संबंध, गुणधर्म और माप संबंधी नियमों का अध्ययन किया है। **पर्या.** रेखागणित, geomatry

ज्येष्ठ *वि. (तत्.)* मूल अर्थ. सबसे बड़ा। सा.अर्थ उम्र या पद में बड़ा senior पुं. (तत्.) 1. भारतीय पंचांगानुसार बारह महीनों में तीसरा महीना, जेठ 2. पति का बड़ा भाई, जेठ

ज्येष्ठाधिकार *पुं. (तत्.)* संतानों में सबसे बड़ा होने के कारण मिलने वाला अधिकार। **दे.** ज्येष्ठ।

ज्यों *क्रि.वि. (तद्.<यथा)* 1. जिस प्रकार, जिस तरह, **जैसे:** ज्यों-त्यों-जिस किसी प्रकार से, ज्यों का त्यों-जैसा है ठीक उसी प्रकार। 2. जिस समय, जिस क्षण। ज्यों-ज्यों-जैसे-जैसे, जिस क्रम में। 3. मानो, जैसे। **उदा.** इतना प्रकाश हो गया ज्यों दिन निकल आया हो।

ज्योति *स्त्री. (तत्.)* प्रकाश दीपक की लौ से उत्पन्न प्रकाश। 2. सूर्य/चंद्र की ज्योति। 3. देखने की शक्ति। **जैसे:** आँखों की ज्योति vision *स्त्री. (तद्.)* 1. देवता के सामने जलाया जाने वाला दीपक या किसी अन्य प्रकार का प्रकाश। 2. दीपक की लौ उत्पन्न प्रकाश 3. सूर्य, चंद्र की ज्योति 4. देखने की शक्ति। **जैसे**: आँखों की ज्योति।

ज्योतिर्विद **[ज्योतिस्+विद्=जानकार]** *वि. (तत्.)* ज्योतिष शास्त्र को जानने वाला; पुं. ज्योतिषी।

ज्योतिष *पुं. (तत्.)* वह विद्या जिसमें ग्रहों, नक्षत्रों की स्थिति, गति दूरी आदि का अध्ययन किया जाता है। यह दो प्रकार का है- गणित ज्योतिष astronomy तथा फलित ज्योतिष astrology **उदा.** ज्योतिष को वेद का नेत्र कहा जाता है। **पर्या.** खगोलशास्त्र।

ज्योतिषी *पुं.* ज्योतिष शास्त्र का ज्ञाता, दैवेज्ञ, खगोलशास्त्री।

ज्वलंत *वि. (तत्.)* शा.अर्थ 1. जलता या चमकत हुआ, प्रकाशमान। वि.अर्थ 2. स्वत: स्पष्ट (जिसे स्पष्ट करने की आवश्यकता न हो) **जैसे:** ज्वलंत उदाहरण (**उदा.** महाराणा प्रताप का सारा जीवन वीरता का ज्वलंत उदाहरण था)

ज्वलनशील *वि. (तत्.)* जो (आसानी से) जल सके, जलने योग्य। **उदा.** पेट्रोल अत्यंत ज्वलनशील पदार्थ है।

ज्वार-भाटा *पुं. (देश.)* भू.वि. चंद्रमा के गुरुत्वाकर्षण के कारण समुद्र के जल का ऊपर उठना (ज्वार) और फिर ऊपर से नीचे उतरना tide।

ज्वारीय ऊर्जा *स्त्री. (तत्.)* ज्वार से उत्पन्न ऊर्जा। **टि.** समुद्र के सँकरे मुँहाने में बाँध के निर्माण से इस ऊर्जा का विदोहन किया जाता है। इसका उपयोग बाँध में स्थापित 'टरबाइन' को घुमाने के लिए होता है।

ज्वारीय प्रोत्कर्ष *पुं. (तत्.)* चक्रवाती पवनों के वेग से सागर में बहुत ऊँची उठी ज्वारीय तरंगें। जिनके कारण तटीय क्षेत्रों में भयानक तबाही मच जाती है।

ज्वाला *स्त्री. (तत्.)* 1. आग की लपट या लौ। **पर्या.** अग्निशिखा flame 2. विष या ताप के प्रभाव से शरीर में महसूस की जाने वाली गरमी।

ज्वालामुखी *पुं. (तत्.)* भूपर्पटी का विवर जिसमें से तप्त शैल तथा अन्य पदार्थ बाहर निकलते हैं और बाहर निकले पदार्थों के ठंडे पड़ गए संचय से शंकुवत् पहाड़ी-सी बन जाती है। volcano

ज्ञ

ज्ञात *वि. (तत्.)* जिसके बारे में सब कुछ मालूम हो; जाना हुआ। **पर्या.** विदित। **विलो.** अज्ञात।

ज्ञान *पुं. (तत्.)* वस्तुओं को देखने या उनके बारे में समझने, सुनने आदि से उत्पन्न होने वाली मन की धारणा; बोध, जानकारी। knowledge

ज्ञान-विस्फोट *पुं. (तत्.)* (आधुनिक युग की) वह स्थिति जिसमें संचार-साधनों के वैश्विक प्रसार के फलस्वरूप हर बात की जानकारी क्षण-भर में सारे संसार में फैल जाती है।

ज्ञानी *वि. (तत्.)* 1. जिसे ज्ञान हो, ज्ञानवान। 2. जिसने आत्मज्ञान या ब्रह्मज्ञान प्राप्त कर लिया है। **विलो.** अज्ञानी।

ज्ञानेंद्रिय *स्त्री. (तत्.)* 1. बाह्य पदार्थों का बोध कराने वाली इंद्रिय। पाँच ज्ञानेंद्रियाँ-आँख, नाक, कान, जिह्वा, (रसना) और त्वचा।

ज्ञानार्जन *पुं.* गहन अध्ययन के फलस्वरूप संबंधित विषय की पूरी जानकारी अर्जित (प्राप्त) करने की प्रक्रिया।

झ

झपटना *अ.क्रि. (देश.)* 1. तेजी से आगे बढ़ना 2. कुछ छीनने या आक्रमण करने के भाव से आगे बढ़ना **उदा.** बिल्ली चूहे पर झपटी।

झपट्टा *पुं. (तद्.)* 1. झपटने की क्रिया या भाव 2. आक्रमण करके किसी वस्तु को किसी के हाथ से जबदस्ती छीनने की क्रिया। **मुहा.** झपट्टा मारना- झटका देकर किसी वस्तु को ले लेना। *पुं. (देश.)* 1. अचानक झपटने की क्षणिक क्रिया। 2. शत्रु को अवसर न देते हुए अचानक तेजी से आक्रमण या छीनने की क्रिया। **उदा.** चील ने झपट्टा मारा और चुहिया को ले उड़ी।

झब्बा *पुं. (देश.)* छोटे बच्चों का ढीला-ढाला फ्रॉकनुमा पहनावा। **पर्या.** झबला।

झमेला *पुं. (देश.)* 1. ऐसी समस्या, जिसके कई पहलू हों और जिसे सुलझाना कठिन कार्य लगे। पर्या. झंझट, बखेड़ा 2. झगड़ा, टंटा।

झरना *अ.क्रि. (तद्.<क्षरण)* 1. दे. झड़ना 2. पानी का बूँद-बूँद कर लगातार गिरना। पुं. (तद्.<झरण प्रा.<क्षरण) 1. पहाड़ की ऊँचाई से गिरने वाली पानी की प्राकृतिक या कृत्रिम धारा 2. लगातार गिरने वाला पानी का प्रवाह, सोता, चश्मा 3. अनाज छानने की बड़ी छलनी। 4. रसोईघर में प्रयुक्त बड़ा पोना।

झरोखा *पुं. (तद्.)* सूर्य की किरणों (धूप) के कमरे में प्रवेश करने का स्थान; जालीदार खिड़की। पर्या. गवाक्ष, वातायन

झलक *स्त्री. (तद्.)* 1. किसी भी आकृति का आभास या प्रतिबिंब मात्र 2. क्षण्मात्र किसी वस्तु के दिखलाई पड़ने की अवस्था। 3. चमक, द्युति। मुहा. झलक दिखलाना

झलकना *अ.क्रि (तद्.)* किसी माध्यम (**जैसे:** जल, बादल या वस्त्रावरण) से होकर किसी दृश्यमान वस्तु का दिखाई पड़ना, चमकना। 2. कुछ-कुछ दिखने का आभास होना, क्षणमात्र के लिए दिखना।

झल्लाना *अ.क्रि (तद्. झल < ज्वाल)* खीझकर या क्रोधित होकर बोलना, क्रोध या गुस्सा करना।

झाँकना *अ.क्रि (देश.)* 1. किसी आड़ के पीछे रहकर चुपके से/गुप्त रूप से देखना। 2. रहस्य जानने के लिए कुछ झुककर अंदर की ओर देखना।

झाँकी *स्त्री. (देश.)* 1. किसी देवमूर्ति का स्वरूप जिसका भली-भाँति शृंगार किया गया हो। 2. किसी विशेष विषय-वस्तु को ध्यान में रखकर प्रदर्शनार्थ सजाकर प्रस्तुत की गई सचल या अचल आकृति। **जैसे:** छब्बीस जनवरी की झाँकियाँ। 3. किसी विशेष कार्यक्रम का परिचय देने के लिए प्रस्तुत निदर्शन। **जैसे:** वार्षिकोत्सव की चित्रात्मक झाँकी।

झाँसा *पुं. (तद्.<अध्यास)* 1. बड़ी चतुराई (या कपट) भरी बातों में बहकाकर दिया गया धोखा। **उदा.** मैं उसके झाँसे में आ गया इससे मुझे काफी नुकसान उठाना पड़ा। 2. किसी को चातुर्य भरी बातों से बहा कर फिर अपने वादे से मुकर जाना।

झाड़ *पुं. (तद्.<झाट)* 1. पादप का एक प्रकार जो वृक्ष से आकार में छोटा होता है यानी जिसका काष्ठिल तना पतला होता है और टहनियाँ जमीन के आसपास से ही फूटने लगती हैं। shrub *स्त्री.* झाड़ी। 2. छाड़ के आकार की तरह फैला छत से लटकाया जाने वाला दीपाधार, झाडफ़ानूस। 2. *स्त्री.(<झाड़ना)* 1. झाड़ने की क्रिया या भाव। **उदा.** सफाई कर्मचारी ने सारे खिडक़ी दरवाजे झाड़ दिये। 2. मंत्र से रोग, भूत-प्रेतादि उतारने का काम। तांत्रिक की झाड़ से बच्चे का बुखार ठीक हो गया। 3. डाँट-फटकार। **उदा.** आज अधिकारी ने विलंब से आने वाले कर्मचारियों को झाड़ पिलाई/लगाई।

झाड़-झंखाड़ *पुं. (देश.)* 1. काँटेदार पेड़ों या झाड़ियों का समूह। 2. व्यर्थ के पेड़-पौधे। 3. टूटी-फूटी और रद्दी वस्तुओं का समूह।

झाड़न *पुं. (तद्.)* 1. धूल-मिट्टी साफ़ करने के काम आने वाला कपड़ा, झाड़ू या बुरुश। 2. सफाई करने के बाद इकट्ठी हुई धूल मिट्टी।

झाड़ना *स.कि. (तद्.)* 1. किसी वस्तु पर पड़ी हुई धूल इत्यादि झटके से हटाना। **जैसे:** कपड़े झाड़ना। 2. अपने आपको वास्तविक योग्यता से अधिक प्रदर्शित करना। **जैसे:** बातें झाड़ना। 3. किसी को खरी-खोटी सुनाना ताकि उसका अहंकार झड़ जाए। **जैसे:** मैंने उसे खूब झाड़ पिलाई। 4. किसी से धन आदि ऐंठना। **जैसे:** उसने मुझसे बातों-बातों में ही सौ रुपए झाड़ लिए। 5. प्रेत बाधा इत्यादि दूर करने के लिए मंत्रों का प्रयोग करना।

झाड़ी *स्त्री.* (तद्.) 1. छोटे झाड या पौधे 2. छोटे-छोटे पौधों का समूह जो घने रूप में उगते हैं। **पर्या.** क्षुप

झाड़ीभूमि *स्त्री. (तद्.)* वह भूक्षेत्र जहाँ कँटीली झाड़ियों का आधिक्य (की अधिकता) हो।

झाड़ू *पुं. (देश.< झाड़ना)* लंबी सीकों या रेशों आदि का बना हुआ उपकरण जिससे ज़मीन, फर्श, दीवार आदि झाड़ते हैं **पर्या.** कूँचा, बुहारी।

झाबर *पुं. (देश.)* 1. वह ज़मीन जो कीचड़ से युक्त या दलदली होती है। 2. खादर। 3. बड़ा टोकरा, खाँचा, झाबा। **टि.** ग्रामीण प्रयोग।

झामर *पुं. (देश.)* स्त्रियों के पैरों में पहनने का पायल की तरह का चाँदी का एक आभूषण।

झालर *स्त्री. (तद्.<झल्लरी)* 1. लंबी लड़ी 2. किसी चादर। **जैसे:** साड़ी, परदे, चौखट आदि के किनारे पर शोभा बढ़ाने के लिए लगाई गई लटकने वाली कलात्मक और रंग बिरंगी पट्टी। frill

झिझक *स्त्री. (देश. < झझक(ना))* शर्म या भय आदि के कारण होने वाला संकोच या हिचकिचाहट। **मुहा.** झिझक खुलना - एक बार कुछ कर गुजरने (**जैसे:** पानी में कूदना, तैरना, हिंदीतर भाषियों द्वारा सरकारी काम में हिंदी का प्रयोग करने आदि) के बाद दुबारा-तिबारा वैसा ही काम करने में भय या संकोच का दूर हो जाना।

झिड़की *(स्त्री.) (देश.)* 1. झिड़कने की क्रिया या भाव। 2. क्रोधपूर्वक कही हुई अपमानजनक कड़वी बात। **मुहा.** झिड़ेकी खाना - झिड़की सुनना। **उदा.** कार्य में लापरवाही की वजह से उसे साहब की झिड़की खानी पड़ी।

झिलमिलाना *अ.क्रि. (अनु.)* आधार के हिलने के कारण उससे प्रतिबिंबित प्रकाश का रह-रहकर चमकना। लौ का झिलमिलाना; तारों का झिलमिलाना।

झींगुर *पुं. (देश.-अनुरण.)* एक छोटा बरसाती कीड़ा, जो झाड़ पर बैठकर झीं-झीं की ध्वनि करता है। **पर्या.** झिल्ली।

झील *स्त्री. (तद्.)* आकार में बड़ा प्राकृतिक जलाशय जिसमें मुख्यत: वर्षा और नदी-नालों का जल संचित होता रहता है। **पर्या.** तालाब, सरोवर।

झुंड *पुं. (तद्.)* मनुष्यों, पशुओं आदि का समूह। **टि.** एकवचन में प्रयोग होता है। हिंदी भाषा में अलग-अलग विषयों, प्राणियों, वस्तुओं पर आधारित अनेक समूहवाचक शब्द हैं। **जैसे:** टोली, जत्था, बेड़ा, रेवड़, गुच्छा, वृंद आदि।

झुँझलाना *अ.क्रि (देश.)* किसी कार्य के बिगड़ जाने के कारण मूलत: स्वयं पर क्रोधित होना परंतु प्रत्यक्ष में दूसरों पर क्रोध उतारना। **पर्या.** खीझना, चिड़चिड़ाना।

झुकना *अ.क्रि (देश.)* 1. किसी वस्तु की लंबवत स्थिति का किसी दिशा में थोड़ा आगे दिखाई पड़ना। **जैसे:** मीनार दाहिनी ओर कुछ झुक गई है। bend 2. किसी के प्रति आदर से नतमस्तक होना। 3. मन की प्रवृत्ति, लगाव। 4. पक्षपात का भाव। 5. हीन भावना से ग्रस्त होकर समर्पण करना।

झुकाव *पुं. (देश.)* 1. झुकने की स्थिति का सूचक। 2. झुकने का परिमाण (अंशों में) **दे.** झुकना।

झुग्गी *स्त्री. (देश.)* **दे.** झोंपड़ी।

झुटपुटा *पुं. (देश.)* सायंकाल का वह समय जब कुछ-कुछ अँधेरा हो तथा कुछ-कुछ उजाला हो और ऐसी स्थिति में स्पष्ट दिखाई न दे। twilight **टि.** उपर्युक्त स्थिति सूर्योदय से पहले (तड़के) भी होती है। किंतु भाषा में इस स्थिति के लिए 'झुटपटे' का प्रयोग होता नहीं सुना गया।

झुठलाना *स.क्रि. (देश.)* सच्चे को झूठा बताना सच्चाई को मानने से इनकार करना।

झुनझुनी *स्त्री. (देश.)* रक्त वाहिकाओं में रक्त का प्रवाह रुक-सा जाने के कारण हाथ-पैरों में अनुभव की जाने वाली सनसनी; हाथ-पैर सो जाना।

झुरमुट *पुं. (तद्. < सं झुंट = झाड़ियाँ + मुष्ट = घासपात)* पास-पास उगे और एक-दूसरे से सटे छोटे आकार के पादपों (झाड़ियों का समूह)

झुर्री *स्त्री. (देश.)* वृद्धावस्था या अन्य कारणों से शरीर की त्वचा पर दिखाई पड़ने वाली सिकुड़न। **पर्या.** शिकन **टि.** इस शब्द का प्राय: बहुवचन (झुर्रियाँ) में ही प्रयोग होता है।

झुलसना *अ.क्रि. (तद्.<ज्वलन) (स.क्रि. झुलसाना)* आग के ताप या तेज़ धूप के प्रभाव से त्वचा का हल्का-सा काला पड़ जाना। **उदा.** 1. खाना पकाते समय उसका हाथ झुलस गया। 2. बाहर झुलसा देने वाली धूप है।

झूठ *पुं. (तद्.<जुष्ट)* किसी सही या यथार्थ बात की विपरीत स्थिति का सूचक भाव। **पर्या.** असत्य (कथन)। विलो. सच, सचाई।

झूठन *स्त्री. (देश.)* 1. भोजन करने के बाद शेष बचा रह गया या छोड़ दिया गया पदार्थ। **पर्या.**

उच्छिष्ट 2. ला.अर्थ (साहित्य) जिसमें कथन तक की मौलिकता या नवीनता न हो और साफ़ तौर पर दूसरे की पुनरावृत्ति लगे।

झूठमूठ *(क्रि.वि.) [हि. झूठ + अनुक. मूठ]* बिना किसी वास्तविक आधार के झूठ जैसी। **उदा.** मैंने तो तुम्हें झूठमूठ ही कहा था कि कल स्कूल में छुट्टी है।

झूठा *वि. (तद्.)* 1. जो सच न हो। 2. (व्यक्ति) जो सच न बोले। 2. (पुं.) झूठन।

झूम खेती/कृषि *स्त्री. (देश.)* परंपरागत कृषि का एक प्रकार जिसमें स्थान बदलकर या उपज बदल-बदल कर खेती की जाती है।

झूमना *अ.क्रि. (देश. < झंप)* 1. बार-बार किसी दिशा में आगे-पीछे या ऊपर-नीचे हिलना। **जैसे:** तेज हवा के प्रभाव से फसल झूमने लगती है। 2. नशे या मस्ती में अथवा मानसिक विकृति के कारण शरीर का संतुलन खो देना और इस कारण बार-बार हिलना। **उदा.** शराबी झूमते हुए जा रहा था।

झूमर *पुं. (देश.)* 1. स्त्रियों के सिर में माथे में धारण करने का एक गहना। झुमका। 2. एक प्रकार का नृत्य जिसमें ग्रामीण स्त्रियाँ एक दल के रूप में झूमती हुई नृत्य करती हैं। 3. उक्त नृत्य पर आधारित गेय गीत।

झूल *स्त्री. (देश. < झूला)* शा.अर्थ झूले की तरह लटकने की स्थिति; झूलती हुई वस्तु। रंग-बिरंगा अथवा अलंकृत वस्त्र जो प्राय: शोभा के लिए घोड़ों, बैलों हाथियों की पीठ पर डाला जाता है और जो दाएँ-बाएँ लटकता रहता है।

झूलना *अ.क्रि (तद्. < दोलन)* 1. किसी लटकती वस्तु का एक दिशा से दूसरी दिशा में हिलना डुलना। 2. किसी लटकती वस्तु के सहारे से एक दिशा से दूसरी दिशा के दो छोरों तक बार-बार जाना-आना; पेंग भरना। **जैसे:** झूला-झूलना। 3. ला.अर्थ विचारों में अस्थिरता का होना और सही निर्णय पर न पहुँच पाना।

झूला *पुं. (देश. < झूलना)* वह साधन जिस पर बैठकर झूलते हैं। **पर्या.** हिंडोला। **दे.** झूलना।

झेंपना *अ.क्रि. (देश.)* लज्जित होना, शरमाना।

झेलना *स.क्रि. (तद्.<क्ष्वेलन)* 1. सहना, बरदाश्त करना। 2. किसी भार को अपने ऊपर लेना।

झोंकना *स.क्रि. (देश.)* 1. जलाने के लिए किसी वस्तु को आग में बलपूर्वक डालना या फेंकना। 2. किसी खतरे के कार्य में स्वयं को या किसी अन्य को डाल देना। **मुहा.** भाड़ झोंकना व्यर्थ के कार्य करना।

झोंका *पुं. (देश.)* एक तरह का धक्का या झटका जो हिला दे। **उदा.** वर्षा का एक झोंका आया और सबको गीला कर गया।

झोंपड़पट्टी *स्त्री. (देश.)* बहुत ही गरीब और मजदूर वर्ग के लोगों के रहने के लिए पास-पास बनी झोंपड़ियों की प्राय: (अस्वास्थ्य कर) गंदी बस्ती। **पर्या.** गंदी बस्ती slum

झोंपड़ी *स्त्री. (देश.)* कच्ची मिट्टी की छोटी दीवारों वाला घास-फूस का छोटा-सा आवास। **पर्या.** कुटी, कुटिया, पर्णशाला। (पुं.) झोपड़ा (i) कुछ बड़ी झोंपड़ी; (ii) विनम्रता सूचक या अवहेलना के अर्थ में किसी भी आवास के लिए प्रयुक्त शब्द। **जैसे:** मैंने भी जनकपुरी में एक झोंपड़ी/झोंपड़ा बना ली/लिया है। **विलो.** महल।

झोला *पुं. (देश.)* कपड़े, टाट इत्यादि से बना थैला जो हाथ में या कंधे पर लटकाया जाता है तथा आवश्यक सामान इसमें रखकर इधर-उधर ले जाया जाता है। (स्त्री. झोली - छोटे आकार का झोला) पदबंध झोला छाप झॉक्टर-कम ज्ञान रखने वाले और अपने आपको डॉक्टर कहने वाले लोग (जो कंधे पर दवाइयों का झोला टाँगकर चिकित्सा करते घूमते हैं)।

ट

टंकार *स्त्री. (तत्.)* धनुष की चढ़ी हुई डोरी को खींचकर छोड़ने से उत्पन्न हुई ध्वनि। ला.अर्थ चुनौती।

टकराना *अ.क्रि. (देश.)* 1. वेग गति से आती हुई दो वस्तुओं का ज़ोर से भिड़ना, टक्कर खाना। **जैसे:** गाड़ियों का टकराना। collide, collision 2. मेल न खाना। **जैसे:** हितों का टकराना। एक वस्तु को दूसरी वस्तु से भिड़ाना। टक्कर मारना।

टकराव *पुं. (देश.)* टकराने की स्थिति, टक्कर खाने का भाव। **दे.** टकराना।

टकराहट *स्त्री. (देश.)* शा.अर्थ टकराने से उत्पन्न होने वाली आवाज़। एकाधिक व्यक्तियों के बीच शारीरिक टक्कर अथवा वैचारिक मतभेद का सूचक शब्द।

टटोलना *स.क्रि. [तद्. < त्वक् + तोलन]* 1. अँधेरे में या अंधा होने की स्थिति में किसी चीज़ को जानने-पहचानने के लिए उसे अंगुलियों से छूना या दबाना। 2. ढूँढने के लिए इधर-उधर हाथ फैलाना। 3. किसी के मन की बात जानने के लिए प्रयत्न करना।

टपकना *अ.क्रि. [अनु. टप टप.]* 1. किसी भी द्रव पदार्थ का बूँद-बूँद कर गिरना। **जैसे:** कपड़ों से/बालों से पानी टपकना। 2. पकने की सहजता से टूट कर गिरना। **जैसे:** आम टपकना। **मुहा.** टपक पड़ना - किसी का अकस्मात् आ जाना।

टरबाइन/टर्बाइन *स्त्री. (अं.)* पारि.अर्थ मशीन या यंत्र जिसमें पहिया पानी, भाप, गैस आदि की शक्ति से घूमने लगता है।

टर्मिनल *पुं. (अं.)* 1. वह स्थान जहाँ बसों और रेलगाडियों का इकतरफा फेरा समाप्त हो जाता है। नियत समय के बाद वहीं से उलटा फेरा फिर शुरू होता है। (बस/रेल) terminal 2. हवाई अड्डे का वह भवन जहाँ इकट्ठा होकर यात्री हवाई जहाज़ में चढ़ने के लिए सुरक्षा जाँच के बाद हवाई पट्टी पर पहुँचते हैं और आने वाले जहाज़ से उतरकर अपना सामान जुटाते हैं। air terminal

टलना *अ.क्रि. (देश.)* किसी काम के लिए निर्धारित समय का आगे बढ़ा दिया जाना। **जैसे:** परीक्षा एक सप्ताह के लिए टल गई है। **पर्या.** स्थगित होना।

टस *स्त्री. (अनु.)* किसी भारी चीज को खिसकाने पर सुनाई पड़ने वाला शब्द। **मुहा.** टस से मस नहीं होना = अपने स्थान से थोड़ा-सा भी न हिलना; अपनी बात पर अड़े रहना।

टहनी *स्त्री. (देश.)* पादप (पेड़ और झाड़ दोनों) की मुख्य शाखा (डाल) से विकसित पतले आकार का अपेक्षाकृत मुलायम और लचीला प्ररोह (जिस पर पत्तियाँ निकलती हैं।) twig

टहलना *अ.क्रि. (देश.)* प्रात:काल वायु सेवन अथवा शाम को भोजन पचाने के निमित्त खुले स्थान में धीरे-धीरे चलना। strall

टहलुआ/वा *पुं. (देश.)* मालिक की सेवा-टहल करने वाला व्यक्ति। **पर्या.** चाकर, सेवक, दास।

टाँकना *स.क्रि. [तद्.]* 1. सुई-डोरे द्वारा सिलाई करके किसी छोटी चीज को बड़ी चीज के साथ जोड़ना या लगाना। **जैसे:** में बटन टाँकना। 2. सिल और चक्की के पाट में टाँकी से छोटे-छोटे गड्ढे करके उन्हें खुरदुरा करना। 3. कोई बात याद रखने के लिए लिख लेना; जमा-खर्च आदि में चढ़ाना।

टाइपराइटर *पुं. (अं.)* किसी विषय वस्तु, लेख, पत्र, प्रारूप आदि को हिंदी, अंग्रेजी आदि भाषा में टाइप करने की मशीन, टंकण यंत्र, टंकित्र। **जैसे:** पहले प्रत्येक कार्यालय में 'टाइपराइटर' की आवश्यकता होती थी, अब उनका स्थान कंप्यूटरों ने ले लिया है। typewriter

टाइफाइड *पुं. (अं.)* जीवाणु साल्मोनेला टाइफोसा के संक्रमण से होने वाला रोग। पुराने जमाने में यह घात रोग था। अब एन्टिबायोटिक (प्रतिजीवी) दवाओं से इसका उपचार संभव है। इसके लक्षण है: ज्वर, सिरदर्द, खाँसी तथा कई अन्य विकार। **पर्या.** आंत्र ज्वर, मोती झरा।

टाट *पुं. [तद्. < तंतु]* 1. सन का बना हुआ मोटा कपड़ा जिसकी बोरियाँ आदि बनती हैं। 2. महाजन की गद्दी जिस पर टाट बिछा रहता है। **मुहा.** टाट उलटना-यह घोषित करना कि अब

हमारे पास कुछ नहीं है; अपने-आप को दिवालिया घोषित करना।

टायर *पुं. (अं.)* मोटर गाड़ी, मोटर साइकिल, स्कूटर, साइकिल आदि वाहनों के पहिए की फ्रेम पर लगा रबड़ का बना बाहरी आवरण जिसके अंदर रखे ट्यूब में हवा भरे जाने के बाद वह सडक़ में मृदु संस्पर्श कर वाहन को सुविधापूर्वक आगे धकेलने में मदद पहुँचाता है।

टालना *स.क्रि. (देश.)* 1. बताए गए काम को पूरा करने के बजाय कोई-न-कोई बहाना कर उससे बचने का प्रयत्न करना। **उदा.** 1. तुमने मेरी बात को टाल कर अच्छा नहीं किया। 2. काम को स्थगित करना। **उदा.** कर्मचारियों की हड़ताल की वजह से परीक्षा एक सप्ताह के लिए टाल दी गई। **पर्या.** स्थगित करना।

टाल-मटोल *स्त्री. (तत्. यल + अनु.)* 1. किसी काम को न करने के लिए टालते रहने की क्रिया/भाव। 2. बहाना, बहाने बाजी। **जैसे:** कार्यालय का कर्मचारी किसी काम को करने के लिए कई दिन से टाल-मटोल कर रहा है।

टिकट *पुं. (अं.)* 1. रेल, बस, थियेटर आदि में प्रवेश पाने के लिए महसूल या कर के रूप में दी गई धनराशि और उसके बदले में प्राप्त प्रवेश-पत्र। **जैसे:** रेल का टिकट, बस-टिकट, सिनेमा का टिकट आदि। 2. *पुं.* डाक भेजने या धनराशि की प्राप्ति-रसीद के लिए चिपकाई जाने वाली मूल्य सूचक पर्ची। **जैसे:** डाक टिकट, राजस्व टिकट।

टिकट घर *पुं. (अं.+तद्.)* वह अधिकृत स्थान जहाँ बिक्री के लिए टिकट उपलब्ध हो। **पर्या.** टिकट खिडक़ी booking office

टिकना *अ.क्रि. (तद्.<स्थितकति)* 1. किसी स्थान पर कुछ समय के लिए रुकना या ठहरना। 2. स्थायी रूप से स्थित रहना, 3. युद्ध में डटे रहना। 3. अपनी बात पर दृढ़ रहना।

टिकाऊ *वि. [देश.]* सामान्य से अधिक दिनों लंबे समय तक टिकने वाला। **जैसे:** टिकाऊ कपड़ा।

टिकाऊपन *पुं. (देश.)* किसी वस्तु की लंबे समय तक उपयोग में आने की स्थिति का सूचक भाव।

टिकाना *स.क्रि. (देश.)* 1. किसी को कुछ समय के लिए टिकने या वास करने के लिए स्थान देना। **उदा.** चिंता मत करो। तुम्हारे मित्र को मैं अपने यहाँ टिका लूँगा। **पर्या.** ठहरना। 2. सहारा देना। **उदा.** सीढ़ी को दीवार के साथ टिका दो।

टिकिया *स्त्री. (तद्.)* छोटे आकार वाली कोई भी गोल या चपटी वस्तु। **जैसे:** की टिकिया; दवा की गोली।

टिटनिस *स्त्री. (अं.)* शरीर के घाव में विषाणुओं के प्रवेश से होने वाला रोग। यह प्राय: जंग लगे लोहे द्वारा रक्त को स्पर्श के कारण होता है। इसमें चेहरे और गर्दन की माँसपेशियाँ कठोर होकर ऐंठ जाती हैं और अंत में पीठ धनुष के समान टेढ़ी हो जाती है। **पर्या.** धनुर्वात, धनुस्तम्य। **उदा.** इस रोग में टिटनेस का टीका लगवाना आवश्यक है।

टिफिन *पुं. (अं.)* 1. दोपहर में खाने के लिए घर से ले जाया गया भोजन, 2. जलपान, नाश्ता। **उदा.** कर्मचारी या श्रमिक अपना टिफिन ले जाते हैं। **तुल.** lunch breakfast

टिप्पण *पुं. (तत्.)* **दे.** टिप्पणी।

टिप्पणी *स्त्री. (तत्.)* 1. विचाराधीन विषय, घटना आदि के बारे में अपने विचार के साथ लिखा गया सटीक संक्षिप्त विवरण। 2. किसी कहानी, उपन्यास, पुस्तक आदि के बारे में लिखा गया समीक्षात्मक संक्षिप्त विवरण। comments 3. किसी व्यक्ति के कार्य आदि के संदर्भ में संक्षिप्त अभिमत। remark 4. किसी विषय पर दी गई अतिरिक्त जानकारी या संदर्भ। (जो पृष्ठ के नीचे या लेख के अंत में दिए जाते हैं)। footnote **टि.** बुनकरों के पास धन का अभाव होने के कारण खरीददारों से संपर्क न होने के कारण वे व्यापारियों से मजबूरी में कच्चा माल लेते हैं और सस्ते में बुना हुआ कपड़ा व्यापारी को देते हैं।

टिप्पस *स्त्री. (देश.)* किसी से अपना काम बनाने या कराने की विशेष युक्ति। तरकीब, जुगत, जुगाड़। **उदा.** वह टिप्पस से अपना काम करवा लेता है। **मुहा.** टिप्पस भिड़ाना/लगाना - अपना कार्य सिद्ध करवाने की युक्ति निकालना या उचित अवसर खोजना।

टिमटिमाना *अ.क्रि [तद्.]* शा.अर्थ धीरे-धीरे प्रकाश देना। 1. दीपक का क्षीण प्रकाश के साथ जलना अर्थात् थोड़ा प्रकाश देना। 2. दीपक की लौ या तारों का कभी थोड़ा तेज़ और कभी बिल्कुल मंद

हो जाना। **उदा.** अँधेरी रात में तारे टिमटिमाते हुए बड़े सुंदर लगते हैं।

टिमटिमाहट [टिमटिम+आहट] *पुं. (देश.)* दीपक के टिमटिम जलने का अथवा तारों के जलते-बुझते से दिखाई देने का भाव। **दे.** टिमटिमाना।

टीका *पुं. (तत्.)* 1. माथे पर रोली, चंदन, केसर आदि का बनाया गया चिह्न। 2. विवाह पूर्व की एक रस्म जिसमें कन्या पक्ष वाले वर के मस्तक पर तिलक लगाकर विवाह स्थिर करते हैं। 3. महिलाओं की माँग में पहना जाने वाला गहना जो देखने में तिलक जैसा लगता है। 4. सूत्र रचित कथन अथवा पद्य रचना की विस्तार में की गई गद्यात्मक व्याख्या। 5. **आयुं.** रोग की रोकथाम हेतु प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए स्वस्थ व्यक्ति के शरीर में सुई लगाकर पहुँचाई गई दवा। inoculation

टीकाकरण *पुं. (देश.+तत्.)* 1. प्रतिरक्षा या रोग क्षमता immunity उत्पन्न करने के लिए शरीर में रोगाणु अथवा वैक्सीन के अंश को प्रवेश करने/कराने यानी टीका लगाने/लगवाने की क्रिया। Vaccination, insulation 2. (बोलचाल में) इंजेक्शन लगाने/सुई लगवाने की क्रिया; injection

टुंड्रा *पुं.* (लैपभाषा) यूरोप, एशिया और उत्तरी अमेरिका के उत्तर में फैला हुआ विशाल, लगभग सपाट और पादप विहिन आर्कटिक वृत्तवाला क्षेत्र जिसकी धरती सदा से जमी बरफ से ढकी रहती है।

टुकड़ी *स्त्री. (देश.)* 1. किसी चीज़ का वह छोटा-सा हिस्सा जो मूल वस्तु से कट कर अलग हो गया हो या कर दिया गया हो। 2. **सैवि.** किसी कार्य विशेष की पूर्ति के लिए अपने मुख्यालय से हटाकर अन्यत्र भेजा गया सैनिकों का एक समूह या इकाई। detachment

टुकुर-टुकुर *क्रि.वि. (देश.)* **जैसे:** टुकुर-टुकुर देखना - ललचाई हुई/हसरत भरी नज़र से देखना। टकटकी लगाकर देखना।

टूरिंग थियेटर *पुं. (अं.)* चलता-फिरता-सिनेमा। चलती-फिरती नाटकमंडली।

टेक *स्त्री. (देश.)* 1. व्यक्ति या वस्तु गिर न पड़े, इसके लिए दिया गया सहारा। **जैसे:** छप्पर के लिए यूनी की टेक। 2. गति की पहली पंक्ति जो बार-बार गाई जाती है। 3. प्रतिज्ञा, दृढ़ संकल्प, जिसका निर्वाह किया जाता है। **मुहा.** टेक निभाना - संकल्प पूरा करना। माथा टेकना - इष्ट देव के चरणों में या मंदिर की चौखट पर मस्तक छूना। घुटने टेकना - हार मान लेना।

टेक्सटाइल *पुं. (अं.)* बुना हुआ कपड़ा, वस्त्र। **जैसे**: टेक्सटाइल इंडस्ट्री - वस्त्रोद्योग।

टेढ़ी-मेढ़ी *वि. (देश.)* जो सीधी रेखा में न हो, थोड़ा बहुत घुमावदार या तिरछापन लिए। मेढा अनुकरण मूलक युग्म शब्द। ऐसी वस्तु जिसमें घुमाव हो, मोड़ हो। **जैसे:** टेढ़ा-मेढ़ा रास्ता; पुरानी दिल्ली की टेढ़ी-मेढ़ी गलियाँ।

टेफ़लॉन *पुं. (अं.)* एक रसायन जिसका लेप खाना पकाने के बर्तनों पर करने से ऊपर चिकनाई नहीं जमती।

टेरीलीन *पुं. (अं.)* कृत्रिम, रेशे से बना वस्त्र।

टेलीफिल्म *स्त्री. (अं.)* लगभग 60 मिनट की समस्या मूलक-फिल्म।

टेलीफ़ोन *पुं. (अं.)* विद्युत् प्रणाली से संचालित वह उपकरण जिसमें उचित क्रमांक स्थापित कर व्यक्ति किसी भी स्थान पर बैठे व्यक्ति से (जिसके पास भी टेलीफोन उपकरण हो) बातें कर सकता है तथा संदेश दे और प्राप्त कर सकता है। **पर्या.** दूरभाष, दूरवाणी। (Telephone)

टेलीविज़न *पुं. (अं.)* 1. दूर की वस्तु को देखने का यंत्र। 2. वह यंत्र जिस पर सुदूरवर्ती एवं दूर घटित होने वाले दृश्यों को देखा जा सकता है। 'दूरदर्शन'।

टेवा *पुं. (तद्.<टिप्पण)* जन्म के बाद बालक/बालिका की ज्योतिषी द्वारा बनायी जाने वाली काम चलाऊ जन्मपत्री। **टि.** ज्योतिषी प्राय: प्रारंम्भिक जन्मकुंडली बनाते हैं जिसमें मुख्य रूप से गंडमूल, मंगली होना इत्यादि बातों पर विचार किया जाता है। विवाह के समय विचार की दृष्टि से इसे बताया जाता है। उसे ही टेवा कहते हैं।

टैंकर *पुं. (अं.<टैंक)* समुद्र, वायु या भूमि पर चलने वाला वाहन जो तरल पदार्थों (जैसे जल, दूध, तेल आदि।) को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाता है। **उदा.** हमारी कॉलोनी में पानी टैंकरों से पहुँचाया जाता है।

टैक्नोलोजी *स्त्री. (दे.)* प्रौद्योगिकी

टैडपोल *पुं. (अं.)* उभयचर जीवों, विशेषकर मेंढक, भेक (टोड) के जलीय जीवन काल के डिंमक। **पर्या.** बेंगची, छुछमाछी, छुछमछली।

टोकन *पुं. (अं.)* सा.अर्थ. चिह्न, प्रतीक, संकेत, प्रमाण आदि। **वाणि.** धातु या प्लास्टिक निर्मित वह चौकोर या गोल टुकड़ा जिसे चैक भुनाते समय रोकड़िए को सौंपकर नकद राशि प्राप्त की जाती है।

टोकना *स.क्रि. (तद्.<स्तोकन=कम करना)* 1. किसी के कुछ करने या कहने को बीच में रोकने का प्रयास करना। 2. बोलते या कुछ करते समय बीच में रोककर पूछताछ करना। **उदा.** जब कोई बड़ा आदमी बोल रहा हो तो उसे बीच-बीच में टोकना अच्छा नहीं माना जाता। रोक-टोक = रोकना और टोकना।

टोप *पुं. (तद्.<स्तूप)*/ 1. अंग्रेज़ी पहनावे वाली हैट 2. शिरस्त्राण helmet

टोपा *पुं. (तद्.<स्तूपक)* बड़े आकार की टोपी, विशेष रूप से 'कनटोप'।

टोपी *स्त्री. (तद्. < स्तूपिका)* 1. सिर ढकने के लिए पहना जाने वाला किश्तनुमा या गोलाकार सिला हुआ पहनावा। **जैसे:** गाँधी टोपी। 2. किसी बोतल आदि का ढक्कन camp ला.अर्थ इज्जत, मान, सम्मान। **उदा.** किसी की टोपी उछालना ठीक नहीं है। **तुंल.** टोपा - बड़ी टोपी, हेलमेट - कठोर टोपी जो सिर को आघात से बचाती है। **मुहा.** टोपी उछालना - इज्जत जाना, टोपी उछालना, इज्जत उतारना। टोपी सलामत रहना - इज्जत बनी रहना, टोपी पहनना - किसी को मूर्ख बनाना।

टोला *पुं. (देश.)* शा.अर्थ समूह। सा.अर्थ किसी गाँव या कस्बे की वह बस्ती विशेष या इकाई जहाँ एक ही समुदाय के लोग अधिक संख्या में रहते हों। **जैसे:** टोला अहीरन (अहीरों की बस्ती)। **पर्या.** पाड़ा, मोहल्ला।

टोली *स्त्री. (देश.)* एक जैसे लोगों/व्यक्तियों का विशेष समूह, दल, झुंड। **जैसे:** भक्तों की टोली, संतों की टोली, छात्रों की टोली आदि।

टोह *स्त्री. (देश.)* खोज, ढूँढ। **दे.** टोहना।

टोहना *स.क्रि. (देश.)* टोहने टटोलने की क्रिया। अंधेरे में छिपी वसतु का पता लगाना। छिपी हुई बात का पता लगाने की जानकारी पाना-मिलना।

ट्रक *पुं. (अं.)* 1. भारी माल ढोने की चार, छह या आठ पहियों की पेट्रोल, डीजल आदि से चलने वाली बड़ी गाड़ी। 2. भारवाहक ठेला। **उदा.** ट्रकों से दूर दूर तक के प्रदेशों में माल पहुँचाया जाता है।

ट्राफ़ी *स्त्री. (अं.)* 1. किसी विशेष प्रतियोगिता में विषय प्राप्त करने या किसी प्रकार का कौशल प्रदर्शन करने पर दिया जाने स्मृति चिह्न सहित विजय पुरस्कार। **जैसे:** रणजी ट्राफी। 2. विजय की निशानी। Trophy

ट्रैकिंग *पुं. (अं.)* अभियान के रूप में की जाने वाली प्राय: सामूहिक दुर्गम यात्रा।

ट्रैकिया *स्त्री. (अं.)* **दे.** श्वास नली।

ट्रैक्टर *पुं. (अं.)* खेतों को जोतने, फसल काटने, ढोने आदि खेती के काम आने वाला एक विशेष प्रकार का इंजन युक्त। मशीनरी वाला वाहन या गाड़ी। tractor

ठ

ठंड *स्त्री.(देश.)* शरीर के तापक्रम से बाहरी वातावरण के तापक्रम के कम होने की स्थिति। **पर्या.** शीत, सरदी, जाड़ा। **उदा.** ठंड के दिनों में हम गरम कपड़े पहनते हैं। **विलो.** गरमी।

ठंडक *स्त्री. (देश.)* हलकी ठंड। **उदा.** वर्षा के बाद आज मौसम में ठंडक है। ला.अर्थ संतोष, तृप्ति। **मुहा.** कलेजे में ठंडक पड़ना = शांति प्राप्त होना। **विलोम** जलन, ताप, गरमी।

ठंडा *वि. (देश.)* 1. जिसमें ठंड हो, जिसकी गरमी समाप्त हो गई है। **पर्या.** शीतल **जैसे:** ठंडा पानी, चाय ठंडी हो गई। 2. जिसके स्वभाव में क्रोध, आवेश आदि न हो। **पर्या.** धीर, शांत। **जैसे:** क्रोध में न आओ। ठंडे मन से विचार करो। **विलो.** गरम। **मुहा.** ठंडी साँस लेना, भरना - (साँस के माध्यम से) दु:ख का भाव प्रकट करना। ठंडा करना - क्रोध शांत करना, तसल्ली देना। ठंडा होना - मर जाना। ठंडे बस्ते में डालना = लंबे समय के लिए टालना।

ठकुरसुहाती *वि./स्त्री. (देश.)* व्यु.अर्थ (बात) जो ठाकुर (मालिक) को सुहाए (अच्छी लगे) सा. अर्थ मालिक के आगे-पीछे रहना हमेशा उनके मनोनुकूल बातें बोलते रहना। **पर्या.** खुशामद, लल्लो-चप्पो, हाँ-में-हाँ मिलाना।

ठग *पुं. (तद्. < स्थग)* लोगों को ठगने वाला, किसी का लूट लेने वाला। **पर्या.** वंचक।

ठगना *स.क्रि. (तद्.)* धोखे से दूसरे व्यक्ति को लूट लेना।

ठगी *स्त्री.* ठगने की क्रिया; ठगने का दुष्कृत्य, धोखा देकर पैसा लेना।

ठट्‌ठा *पुं. (तद्. < अट्टाहास)* 1. किसी का मज़ाक उड़ाना। **पर्या.** परिहास, ठिठोली। 2. हँसी-मज़ाक की बातें करना। **पर्या.** दिल्लगी, मज़ाक, हँसी। **उदा.** कुछ लोग बैठे आपस में ठट्‌ठा कर रहे थे।

ठठरी *स्त्री. (देश.)* 1. हड्डियों का ढाँचा sketton **उदा.** लंबी बीमारी के बाद उसका शरीर ठठरी भर रह गया है। 2. शव ले जाने के लिए बाँस का बना सीढ़ीनुमा ढाँचा। **पर्या.** अरथी। 3. किसी खुले स्थान को ढँकने के लिए बाँस के ढाँचे पर फूस आदि बिछाकर बनाया गया छाजन। **पर्या.** छान।

ठठेरा *पुं. (देश.)* धातु के बरतन गढ़ने वाला। **पर्या.** कसेरा। स्त्री. ठठेरिन।

ठप्प/ठप *वि. पुं. (अनु.)* चलते-चलते किसी कार्य का कुछ समय के लिए रूक जाना। **उदा.** हड़ताल के कारण आज काम ठप रहा है। बिजली चले जाने से मशीनें ठप हो गई।

ठप्पा *पुं. (अनु.)* 1. धातु, लकड़ी, रबड़ आदि का वह टुकड़ा, जिस पर कुछ अक्षर, बेलबूटे आदि खुदे हों, और जिसे किसी कागज़, कपड़े आदि पर रखकर दबाने से आकृति दिखने लगे। **पर्या.** छापा, रूपदा ब्लॉक। 2. मुहर, मुद्रा।

ठसाठस *क्रि.वि. (तद्.)* 1. हँस-हँस कर भरा हुआ, कसकर भरा हुआ। **पर्या.** खचाखच। 2. (ऐसी भीड़) जिसे देखकर लगे जैसे किसी ने ठूँस कर भर दिया हो। छुट्टी का दिन होने के कारण आज बस ठसाठस भरी हुई थी।

ठहरना *अक्रि. (तद्.)* 1. चलते-चलते स्थिर हो जाना, रूक जाना। **उदा.** 1. इस स्टेशन पर डाकगाड़ी ठहरती है या नहीं? 2. कहीं डेरा डालना, टिकना। **उदा.** मैं धर्मशाला में ठहरा हूँ। 3. रुकावट के कारण पानी या किसी द्रव पदार्थ का स्थिर हो जाना। **उदा.** नाली का पानी ठहर गया है। 4. पक्का हो जाना। **उदा.** रिश्ता ठहरना। engagement (प्रेरणा.क्रि ठहराना)

ठहराव *पुं (तद्.)* 1. ठहरने का भाव। **पर्या.** स्थिरता। 2. समझौता agreement

ठहाकेदार [ठहाका + दार] *वि.* ठहाकों से युक्त।

ठहाकेदार *वि.* [ठहाका + दार] तेज़ आवाज़ वाली; तेज़ आवाज़ वाली हँसी की तरह।

ठाँव *पुं. (तद्.>स्थान)* 1. स्थान, जगह। 2. निवास स्थान, घर। 3. ठहरने/टिकने का निश्चित स्थान, ठिकाना।

ठाँव-ठाँव *क्रि.वि. (अनु.)* स्थान-स्थान पर।

ठाकुर द्‌वारा *पुं. (तद्.<ठक्कुर द्‌वार)* मू.अर्थ भगवान के पास पहुँचने का माध्यम (दरवाज़ा)। सा.अर्थ मंदिर, देवस्थान, मठ।

ठाकुर *पुं. (तद्.<ठक्कुर)* 1. देवता, देवमूर्ति, ईश्वर, स्वामी। **जैसे:** ठाकुर जी की पूजा। 2. क्षत्रियों की उपाधि, जमींदार, मालिक। **जैसे:** ठाकुर तेज पाल सिंह। 3. नाइयों की उपाधि। **जैसे:** कर्पूरी ठाकुर। 4. बंगाल प्रदेश की एक जमींदार जाति **जैसे:** रवींद्र नाथ ठाकुर। स्त्री. ठकुराइन।

ठाठ *पुं. (तद्.<स्थातृ)* व्यु.अर्थ स्थित होने का भाव। 1. वैभव, श्रृंगार, सजावट। 2. मौज **उदा.** बड़े ठाठ के दिख रहे हो। क्या बात है?

ठाठ-बाट *पुं. (देश.)* 1. सजावट, सज-धज। 2. दिखावा, आडंबर, तडक़-भडक़। **उदा.** राजसी ठाठ-बाट।

ठाढ़े ठाड़ा *वि. (तद्.)* 1. खड़ा हुआ, 2. असरदार, 3. नामज़द, 4. पूर्ण, पूरा या भरा पूरा।

ठानना *स.क्रि. (तद्. < अनुष्ठान)* 1. किसी कार्य को तत्परता से करने का दृढ़ निश्चय करना। **जैसे:** उसने तो पढ़ने की ठान ली है। 2. आरंभ करना। 3. निश्चित या पक्का करना। आर-पार का निर्णय लेना। **जैसे:** अब ठान ही लिया है तो संघर्ष करेंगे।

ठिंगना *वि. (स्त्री.)* (स्त्री. ठिंगनी) छोटे कद वाला, नाटा।

ठिकाना *पुं. (देश.)* 1. टिकने/ठहरने स्थान या जगह। 2. (मध्यकाल में) राजा की ओर से सरदारों को मिली जागीर। **मुहा.** 1. ठिकाने आना। **जैसे:** अब दिमाग ठिकाने आ गया जो बेसमझी की बातें करता था वह अब समझदारी से काम करने लगा। 2. ठिकाने लगाना उसने खाने-पीने की सारी चीज़ें ठिकाने लगा दीं खा-पीकर समाप्त कर दीं; उसने पिताजी की सारी कमाई ठिकाने लगा दी = बेकार कर दी; अपव्यय में समाप्त कर दी। ठिकाना न होना **मुहा.** 1. अत्यधिक होने की स्थिति। **जैसे:** मेरी खुशी का ठिकाना न रहा। 2. अस्थिर होने की भावना, ठीक करने की भावना। **जैसे:** मेरा मन ठिकाने नहीं है। उनका दिमाग ठिकाने लगा दो।

ठिठकना *अ.क्रि. (तद्. < स्थिरीकरण)* कोई काम करते-करते या चलते-चलते अचानक स्थिर हो जाना, अवाक् रह जाना, स्तंभित हो जाना।

ठिठियाना *अ.क्रि. (तद्.)* चलते-चलते अचानक रूक जाना।

ठिठोली *स्त्री. (देश.)* हँसी-मज़ाक, दिल्लगी, ठट्ठा।

ठीक *वि. (तद्. < ठिक्क < ठियक्क < स्थितक)* जैसा उचित हो, **पर्या.** प्रामाणिक, यथार्थ, उपयुक्त। **उदा.** 1. आपकी बात ठीक निकली। 2. आपकी जवाब ठीक निकला।

ठीक-ठाक *वि. (तद्.+अनु.)* 1. सही, उचित। **उदा.** सब ठीक-ठाक है। 2. भला-चंगा **उदा.** ठीक-ठाक हूँ।

ठुकराना *स.क्रि. (नामधातु < ठोकर)* 1. पैर के पंजे से आघात करना; ठोकर मारना। 2. तुच्छ समझकर त्याग देना। **उदा.** ऐसी नौकरी को ठुकरा देना ही ठीक है। 3. स्पष्ट नकार देना। **उदा.** उसने मेरी अर्जी ठुकरा दी।

ठूँठ *पुं. (तद्. < स्थूणा = खंभा)* निर्जीव खंभे की तरह खड़ा सूखा वृक्ष जिसका तना मात्र शेष रह गया हो।

ठूँसना *स.क्रि. (देश.)* 1. धारिता से जितना समा सके उससे अधिक बलपूर्वक भरना/घुसेड़ना। **उदा.** (ii) अलमारी में कपड़ें ठूँसकर भरे हुए हैं (ii) वह खा नहीं रहा, ठूँस रहा है।

ठेका *पुं. (तद्.<स्थितक)* 1. ऐसा समझौता जिसके अनुसार निश्चित मात्रा में धन लेकर उसके एवज़ में कोई निश्चित कार्य नियमानुसार संपन्न करना होता है। contract 2. संगीत में एक निश्चित कालावधि के बाद दी जाने वाली ताल। 3. देशी शराब की बिक्री किए जाने वाली दुकान के लिए प्रयुक्त बोलचाल का शब्द। **जैसे:** शराब का ठेका।

ठेकेदार [ठेका + दार] *वि. (देश.)* (व्यक्ति या संस्था) जो किसी कार्य को पूरा करने का ठेका स्वीकार करे। **दे.** ठेका।

ठेला *पुं. (देश.)* वह छोटी गाड़ी जिसमें भरा समान एक स्थान से दूसरे स्थान तक ठेलकर पहुँचाया जाता है। (ट्रॉली) troly, cart

ठोंकना/ठोकना *स.क्रि. (देश.-अनु. < ठक-ठक)* 1. पत्थर, हथौड़ी आदि से चोट मार-मारकर किसी नुकीली वस्तु को ज़मीन, दीवार आदि में घुसेड़ना। **जैसे:** दीवार में कील ठोंकना। 2. (ग्राम्य प्रयोग) मार-पिटाई करना। **मुहा.** ठोंकना-बजाना -

अच्छी तरह जाँचना-परखना। पीठ ठोंकना - शाबाशी देना।

ठोकर *स्त्री. (देश.)* 1. आघात जो चलते समय किसी उभरी वस्तु (पत्थर आदि) से लगता है। 2. वह पत्थर या कंकड़ आदि जिससे आघात लग जाए। 3. पैर या जूते की नोक आदि से लगाई गई चोट। 4. किसी विपत्ति आदि के कारण लगने वाला धक्का। **मुहा.** ठोकरें खाना - दर-दर भटकना, दु:ख सहना, धोखे में आना। ठोकर मारना- 1. धोखे में आना। चोट पहुँचाना। 2. उपलब्ध सुविधा का उपयोग करने से इनकार कर देना। नामधातु/ठुकराना

ठोढ़ी *स्त्री. (तद्.<स्थपुटी)* मनुष्य के चेहरे पर निचले ओठ के नीचे का, बाहर की ओर निकला भाग। **पर्या.** ठुड्डी, चिबुक।

ठोस *वि. (देश.)* 1. जो अंदर से खोखला या पोला न हो। 2. भौ. पदार्थ के solid (ठोस, द्रव, गैस) तीन रूपों में से एक।

ठौर *पुं. (तद्. < स्थावर)* 1. स्थान, जगह, ठाँव।

ठौर-ठौर *क्रि.वि. (तत्.)* 1. 'जगह-जगह', 'स्थान-स्थान पर'। **उदा.** ठौर-ठौर घूमने से क्या मिलेगा, अपने विद्यालय में ही मन लगाकर पढ़ाई करो।

ड

डंक *पुं. (तद्.)* कीटपतं आदि के शरीर का वह काँटेनुमा भाग जिसमें एक प्रकार का विष या विषैला पदार्थ होता है और जिसका प्रयोग वे आत्मरक्षा के लिए या आक्रमण के लिए करते हैं तथा जिससे शत्रु के शरीर में विष प्रवेश कर जाता है। **जैसे:** बिच्छू, मधुमक्खी आदि का डंक। Sting

डंगर *पुं. (देश.)* पालतू पशु, चौपाया। ला.अर्थ. **वि.** मूर्ख, गंवार।

डंठल *पुं. (तत्.)* 1. शाकीय पादप का मुख्य तना। 2. पेड़ की डाली का वह हिस्सा जिस पर पत्तियाँ आती हैं और फूल खिलते हैं। stalk

डंडा *पुं. (तद्.>दंड)* 1. लकड़ी या बांस का लंबा टुकड़ा जो सीधा हो। 2. सहारे के योग्य सीधी छड़ी। **पर्या** सोंटा, लाठी, पतला छोटा डंडा।

डंडी *स्त्री. (तद्.)* 1. लकड़ी का छोटा टुकड़ा जो गिल्लीडंडा- खेल में प्रयुक्त होता है।

डँसना *स.क्रि.(तद्.)* दंश (किसी विषैले जंतु द्वारा दांतों से काटकर या डंक चुभाकर विष प्रविष्ट करना; काटना।

डकार *स्त्री. (देश.)* 1. पेट की वायु का मुख द्वार से होकर विशेष आवाज़ के साथ बाहर निकलने का कार्यव्यापार- जो तृप्ति का सूचक होता है। 2. 'ड' वर्ण या उसका उच्चरित रूप।

डकारना *अ.क्रि (देश.)* 1. डकार लेना। **दे.** डकार। 2. ला. अर्थ. का माल-मत्ता या रूपया पैसा हड़प जाना हजम/ कर जाना और उसे हर हालत में न लौटाना।

डकैत *पुं.* **दे.** डाकू'।

डकैत *वि(.देश).* डाका डालने वाला। **पर्या.** श.दे. डाका'।

डकैती [डकैत+ई] *स्त्री(.देश).* डाका डालने का कार्य-व्यापार, क्रिया। **दे.** डाका।

डग *पुं.* (*तद्.*) चलते समय दोनों पैरों के बीच की दूरी; पैर को एक स्थान से उठाकर अगले स्थान पर रखने के बीच की दूरी। step

डगमगाना *अ.क्रि (देश.)* कभी इस ओर और कभी उस ओर झुकते हुए चलना यानी स्थिर गति से चलने का अभाव दिखाई पड़ना, लड़खड़ाना, विचलित होना।

डगमाहट (डगमग+आहट) *स्त्री.* डगमगाकर चलने की क्रिया या भाव। **दे.** डगमगाना।

डगर *स्त्री.* शाडग अर्थ भरने रखने/ का स्थान। सा.अर्थ पंथ, चलने का रास्ता।

डटना *अ. (देश.)* 1. किसी स्थान पर स्थित होकर जम जाना। **उदा.** तुम- हफ्ते भर से यहाँ डटे हुए हो, जाने का नाम ही नहीं लेते। 2. किसी कार्य में पूरे मनोयोग से अविचलित रहते हुए लग

जाना। **उदा.** डटकर पढ़ाई करो, सफलता तुम्हारे चरण चूमेगी।

डपटना *स.क्रि. (तद्.<दर्प)* कठोर स्वर में बोलना; छोटों से गलती हो जाने पर बड़ों द्वारा उन्हें डांट देना या झिड़कना। **पर्या** डाँटना, घुड़कना।

डफ/डफली *स्त्री. (तद्.)* चमड़ा मढ़ा हुआ एक छोटा ताल वाद्य जिसे हाथ से थाप मारकर बजाया जाता है। **पर्या** ढपली **लो.** अपनी-ढपली डफली अपना रागहर= व्यक्ति का अपना अलग मत होना।

डबडबाना *अ.क्रि. (अनु.)* अश्रुपूर्ण होना, आँखों का आँसुओं से इतना भर जाना कि लगे अब बहने लगेंगी। **उदा.** आँखें- डबडबा आई।

डमरू *पुं. (तत्.)* बीच में पतला और दोनों सिरों पर अपेक्षाकृत मोटाई वाला एक बाजा जिसके दोनों सिरों पर चमड़ा मढ़ा होता है और बीच में दो गाँठ दार रस्सियाँ लटकी होती है। इस बाजे को हाथ से हिलाने पर चमड़े पर रस्सियों की गांठ से आघात होने पर डम-डम की ध्वनि निकलती है।

डर *पुं. (तद्.)* 1. मन की बेचैनी का वह भाव जिसमें अनिष्ट या हानि की आशंका होती है। मनोभावी.; संकट की आशंका से उत्पन्न अप्रिय संवेग। 2. अनिष्ट की कल्पना करके सहम जाने की स्थिति। **पर्या.** भीति।

डरना *अ.क्रि.(तद्.<दरण)* किसी भावी अनिष्ट या हानि की आशंका से प्रकट होने वाली मन की बेचैनी।

डरपोक *वि. (देश.)* डरने के स्वभाव वाला। **पर्या.** भीरू, कायर। **विलो.** निडर निर्भय।

डरावना *वि. (देश.)* डर उत्पन्न करने वाला, जिसे देखकर या सुनकर डर लगे। **पर्या.** भयावह भयानक।

डला *पुं. (स्त्री.* डली) 1. किसी ठोस पदार्थ का छोटा टुकड़ा या भाग। **उदा.** मिट्टी का डला, 2. गुड़ की डली।

डलिया [डला+इया] *स्त्री. (देश.)* बाँस की पतली खपच्चियों (और अब प्लास्टिक की बनी पट्टियों से बुनी छोटे आकार की तश्तरीनुमा टोकरी।

डाँगर दे. डंगर।

डाँट *स्त्री.* (तद्.<दांति-संयमित करना) छोटों से कोई त्रुटि या भूल हो जाने पर बड़ों द्वारा गुस्सें में कही गई कठोर बातें या शब्द। **पर्या.** डपट डांट-डपट, फटकार। डाँट खाना ऐसे कठोर शब्द सुन लेना।

डाँटना *स.क्रि. (तद्.)* डाँट लगाना, कठोर शब्द कहना, डराना। **पर्या.** फटकारना *दे.* डाँट।

डाँवाडोल *वि. (तद्.)* 1. स्थिर, स्थिति में न रहकर इधर-उधर हिलते-डुलते रहने वाला। **उदा**. ऊँची-ऊँची लहरों के कारण जहाज़ डांवाडोल होने लगा। 2. अस्थिर चित्त वाला व्यक्ति जो किसी निर्णय पर न पहुँच सके; असंतुलन स्थिति से ग्रस्त।

डाक *स्त्री. (देश.)* पुकारने की ध्वनि। सा.अर्थ किसी व्यक्ति द्वारा (उचित शुल्क देकर भेजी गई वह सामग्री (चिट्ठी, पार्सल, मनी आर्डर, तार आदि) सरकारी विभाग द्वारा पाने वाले के घर के पते पर पहुँचाई जाती है। **उदा.** आज की डाक आ गई क्या?

डाकखर्च *पुं. (देश.)* 1. वह शुल्क जो किसी वस्तु को डाक द्वारा भेजनेमंगाने/ पर लगे। 2. किसी पत्र, पार्सल आदि पर चिपकाए टिकटों का समग्र मूल्य। **पर्या.** काव्यय डाक महसूल। postage

डाकखाना/डाकघर *पुं. (देश.+तद्.)* डाक इकट्ठी करके यथास्थान भेजने की व्यवस्था करने वाला सरकारी कार्यालय। post office **टि.** आजकल डाकघरों में अन्य अनेक क्रियाकलाप भी प्रारंभ हो गए हैं, जिनमें धन जमा करने संबंधी योजनाएँ विशेष रूप से सम्मिलित हैं।

डाकगाड़ी *स्त्री. (देश.)* (सवारियों के अलावा) डाक ले जाने वाली तथा तेज़ गतिवाली रेलगाड़ी जो छोटे स्टेशनों पर नहीं रूकती। mail train

डाकना *स.क्रि. (देश.)* कूद कर पार करना, लांघना, फांदना।

डाक बंगला *[डाक-देश.+बंगला-अग्रे.] पुं.* सरकार द्वारा बनवाया हआ वह भव्य आवास स्थल जिसमें प्राय: सरकारी दौरे पर जाने वाले अधिकारी ठहरते हैं।

डाका *पुं. (देश.)* मूल अर्थ डाक लगाकर (आवाज देकर या सूचना भेजकर माल असबाब या धन लूटने की क्रिया डाका डालना।

डाक सेवा *स्त्री. (डाक-देश.+सेवा तत्.)* डाकघर संबंधी सेवाएँ। postel services

डाकाजनी *स्त्री.(देश.)* डाका डालने का कुकृत्य।

डाकिया *पुं. (देश.)* डाक पत्र आदि बांटने वाला डाकघर का कर्मचारी। **पर्या.** डाकिया चिट्ठीरसा। postman

डाकू *पुं. (वि.)* डाक, डाका डालने वाला। **पर्या.** डकैत। **दे.** डाका।

डॉक्टर *पुं. (अं.)* वह व्यक्ति जो एलोपैथिक, होम्योपैथिक आदि विदेशी पद्धतियों से चिकित्सा क्षेत्र में विधिवत् योग्यता प्राप्त तथा बीमार लोगों की चिकित्सा करता हो। चिकित्सक 2. विश्वविद्यालय की एक विशेष उच्च उपाधि जो किसी विशिष्ट विषय पर शोधकार्य संपन्न करने पर या किसी विशिष्ट व्यक्ति को सम्मानार्थ दी जाती है। पर्या. विद्या वारिधि, विद्या वाचस्पति, पी.एच.डी. आदि। 3. किसी विषय का बहुत बड़ा विद्वान या पंडित। **टि.** इसे संक्षिप्त रूप में Dr. या डॉ. लिखा जाता है। नाम के आगे इसका प्रयोग किया जाता है। **जैसे:** डॉ. राधाकृष्ण

ड्रिप तंत्र *पुं. (अं.)* फलदार पौधों, बगीचों एवं वृक्षों को पानी देने का एक प्रमुख आधुनिक एवं सर्वोत्तम तरीका। बूँद-बूँद कर पौधों की जड़ों में पानी का गिरना, जल का बिल्कुल व्यर्थ न जाना इस विधि की विशेषता है। Drip-System **तु.** छिडक़ाव तंत्र।

डामर *पुं. (मलय भाषा.)* मूल अर्थएक- वृक्ष विशेष- का गोंद जो वस्तुओं पर चिकना चमकदार लेप चढ़ाने के काम आता है। सापेट्रोलियम- से प्राप्त हाइड्रोकार्बन से युक्त एक रासायनिक पदार्थ जिसकी परत सडक़ों पर बिछाई जाती है ताकि वाहन सुविधापूर्वक एवं तीव्र गति से चल सके। **पर्या.** कोलतार अलकतरा।

डायनोसौर *पुं. (अं.)* सा.अर्थ छिपकली की जाति का एक विलुप्त विशालकाय कशेरूकी प्राणी सरीसृप जो मध्यजीवी महाकल्प आज से लगभग 24 करोड़ 80 लाख वर्ष से 6 करोड़ 50 लाख वर्ष पूर्व(में विद्यमान था। अज्ञात प्राकृतिक कारणों से यह पूरी प्रजाति नष्ट यानी विलुप्त हो गई। आज भी कहीं-कहीं उनके अस्थि अवशेष- मिल जाते हैं। इनकी एक प्रजाति विशिष्ट शारीरिक संरचना के कारण उड़ भी सकती थी।

डाल/डाली *स्त्री. (देश.)* पेड़ के तने से फूटने वाली शाखा जिस पर पत्ते एवं अन्य कल्ले फूटते हैं, शाखा, डाली।

डॉलफिन *स्त्री.* (अं.) एक जलवासी स्तनी प्राणी जो मछली की आकृति का होता है और इसका मुख (थूथन) पक्षियों की चोंच जैसा होता है। **टि.** नदियों में पाई जाने वाली डॉलफिन और महासागरोंकी डॉलफिन में कुछ भिन्नता होती है। डॉल्फिन मनुष्यों के निकट भी आ जाती है।

डाली *स्त्री. (देश.)* 1. वृक्ष के तने से निकला अंग विशेष (शाखा) जिसकी पतली टहनियों पर पत्तियाँ, फूल और फल लगते हैं। (ब्रांच), डलिया, चंगेरी। 2. फल फूल और मेवे जो डलिया में सजाकर किसी को भेंट स्वरूप भेजे जाते हैं।

डिंब *पुं. (तत्.)* अंडाणु जीवजंतुओं- में स्त्री जाति का वह जीवाणु जो पुरूष जाति के बीच के संभोग से नए जीव का रूप धारण करता है। अंडाकीड़े- का बच्चा।

डिंबवाहिनी *स्त्री. (तत्.)* डिंब को वहन करने वाली नलिका *दे.* डिंब।

डिंबाशय (डिब+आशय) *पुं.* **दे.** अंडाशय।

डिंभ (क) *पुं. (तत्.)* प्राणिनिषेचित अंड के परिवर्धन में आरंभ की स्वतंत्र जीवनयापन करने

में समर्थ भ्रुणावस्था (जो वयस्क से भिन्न स्वभाव वाली होती है। **उदा.** तितली की इल्ली, अथवा मेंढक का टेडपोल। *तु.* कोशित। Larva

डिज़ाइन *स्त्री. (अं.)* 1. रेखाओं और रंगों से बनी कोई कल्पित आकृति जिसके अनुसार वास्तविक आकृति तैयार की जाती है। 2. किसी भी नई वस्तु को बनाने से पहले उसकी रूपरेखा।

डिबिया *पुं. (देश.)* छोटा डिब्बा। **दे.** डिब्बा।

डिब्बा *पुं. (फा.)* एक ढक्कनदार पात्र जो प्राय: गोल आकार का और टिन, प्लास्टिक आदि का बना होता है।

डिब्बाबंद *वि. (फा.)* जो (सामग्री डिब्बे में बंद हो; जो बंद डिब्बे में उपलब्ध हो। **उदा.** डिब्बाबंद बंगाली रसगुल्ले।

डींग *स्त्री (तद्.)* खूब बढ़ा-चढ़ा कर कही हुई बात; अपनी प्रशंसा में बढ़ा-बढ़ा कर सुनाई जाने वाली कहानियाँ। **पर्या.** शेखी **मुहा**. डींग- हांकना शेखी मारना/ बघारना।

डीजल *पुं. (अं.)* पेट्रोलियम का वह भारी अंश तेल जो विशेषतया डीजल इंजन वाले ट्रक, ट्रेक्टर, बसें या रेलगाड़ी आदि चलाने के काम आता है। इसका नामकरण जर्मन इंजीनियर रूडोल्फ डीज़ल के नाम पर किया गया है। Diesel

डील-डौल *पुं.(देश.)* शरीर का आकार प्रकार, देह का गठन।

डीलर *पुं. (अं.)* 1. खुदरा व्यापारी के लिए प्रयुक्त अंग्रेजी शब्द। **जैसे:** कार-डील। 2. दो पक्षों के बीच सौदा पटाने वाला मध्यस्थ। **जैसे:** प्रोपर्टी-डीलर।

डुगडुगी *स्त्री. (देश.अनु.)* चमड़ा मंढ़ा हुआ ढपलीनुमा एक वाद्य जिसे हाथ हिलाकर डोरी बँधे लकड़ी के टुकड़े से बजाया जाता है। पुराने जमाने में किसी राजकीय घोषणा को सुनाने से पहले जनसाधारण- का ध्यान आकर्षित करने के लिए इसको बजाया जाता था। **पर्या.** डौंडी

डुबकी *स्त्री. (देश.)* पानी के अंदर शरीर को पूरी तरह डुबाकर फिर बाहर निकलने की क्रिया। **पर्या.** गोता **उदा.** मैंने नर्मदा में तीन डुबकियाँ लगाईं।

डूबना *अ.क्रि. (अनु.)* 1. पानी या किसी तरल पदार्थ में समा जाना; डुबकी लगाना। 2. किसी विषय साहित्य, संगीत, कला आदि में लीन हो जाना। 3. सूर्य, चंद्र, तारों का अस्त होना या न दिखाई देना। 4. नष्ट हो जाना। **जैसे:** मेरा सब कुछ डूब गया। **मुहा.** (i) चुल्लू भर पानी में डूब जाना अत्यंत लज्जित होना। (ii) जी डूबना-हृदय-गति बंद होने जैसा आभास। (iii) नाम डूबना प्रतिष्ठा खोना।

डेंगू *पुं. (अं.)* विषाणु जन्य एक रोग जो इंसानों के महामारी की तरह फैलता है। इसका वाहक है- एडीज़ जाति का मच्छर। यह पेशियों तथा जोड़ों में दर्द पैदा करता है। Dengue

डेढ़ *वि. (तद्.)* एक और आधा। **मुहा.** डेढ़-चावल की खिचड़ी अलग पकाना-सबसे अलग रहते हुए अपना कार्य करना।

डेल्टा *पुं. (अं.<यु.)* नदी के मुहाने पर कई धाराओं में बंटा जलोढ़ भूमि का त्रिभुजवत् दिखाई पड़ते वाला भूभाग। **टि.** 'यूनानी' (ग्रीक) भाषा की वर्णमाला में चौथे अक्षर डेल्टा (L) के समान आकार का होने के कारण यूनानी लोगों ने इस प्रकार के भूभाग का नाम डेल्टा रख दिया।

डैक्सट्रोस *पुं. (अं.)* **दे.** ग्लूकोस।

डैना *पुं. (तद्.)* पक्षी के उड़ने में सहायक मुख्य साधन। **पर्या.** पंख पक्ष।

डोंगा *पुं. (तद.<द्रोण.)* 1. बड़ी नाव जिसमें अधिक लोग यात्रा कर सकें। 2. बड़ा कटोरानुमा पात्र (प्राय: ढक्कन से युक्त)

डोर *स्त्री. (प्रा.)* पतला धागा। **पर्या.** डोरा धागा, तागा। **जैसे:** पतंग-उड़ाने की डोर।

डोरी *स्त्री. (प्रा.)* कुछ मोटा धागा या पतली रस्सी जिससे कुछ बाँधा जा सके। **पर्या** रस्सी, रज्जु।

डोली *स्त्री. (देश.)* 1. एक प्रकार का वाहन जिसमें बैठे व्यक्ति को कहार (मजदूरों की एक विशेष जाति) कंधे पर ढोकर ले जाते हैं। **पर्या.** पालकी 2. वह पालकी जिसमें बैठकर नई दुल्हन ससुराल जाती है। 3. नववधू की विदाई की रस्म।

ड्यूटी *स्त्री.(अं.)* 1. जिस कार्य के लिए नियुक्त किया गया हो, उस कार्य में प्रवृत्त नौकरी। **जैसे:** वह- प्रात: आठ बजे अपनी ड्यूटी में जाता है। 2. कर्त्तव्य, फर्ज। **जैसे:** दुखी इंसान की मदद करना सबकी ड्यूटी है। 3. सेवाकार्य, यह नर्स इस समय ड्यूटी में नहीं है। 4. शुल्क, चुंगी। **जैसे:** सरकार कई चीजों के उपयोग क्रय करने में ड्यूटी लगाती है। Duty

ड्योढ़ी *स्त्री.(तद्.>देहलि, देहली)* विस्तृत अर्थ, प्राचीन संदर्भ में हवेली और गढ़ी। आधुनिक संदर्भ में कोठी और सामूहिक आवासन समितियों group housing societies के प्रवेश द्वार (फाटक) और उस पर बने ड्योढ़ीदार (चौकीदार) स्वागतकक्ष की कोठरी और ढकी पौढ़ी का वाचक नाम। (वॉचमैन का कमरा/स्वागतकक्ष संकुचित **अर्थ.** देहली दहलीज, पौढ़ी (पौरी)

ड्यौढ़ीदार *पुं. (*ड्यौढ़ी (प्रवेशद्वार) पर नियुक्त रक्षक, रखवाला। watch man

ड्रग *स्त्री.(अं.)* 1. कोई भी औषधीय पदार्थ, 2. कोई भी तीव्र नशीला पदार्थ जो बीड़ी सिगरेट के रूप में पीकर, सुई लगाकर या अन्य तरीकों से शरीर में पहुँचकर चेतना को विभ्रमिक और या/उदीप्त कर देता है। **जैसे:** हैरोइन, ब्राउनशूगर आदि। drug

ड्राइवर *पुं.(अग्रे.)* 1. रेल, बस, ट्रक, कार आदि वाहनों को चलाने वाला चालक, परिचालक, वाहक। **जैसे:** रेल का ड्राइवर, बस ड्राइवर, ट्रक ड्राइवर। 2. पेंच इत्यादि को घुमाने वाला उपकरण। **जैसे:** स्क्रू ड्राइवर। 3. कंम्प्यूटर में सूचना इत्यादि को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने वाला उपकरण पैन ड्राइवर।

ढ

ढँकना *स.क्रि. (देश.)* किसी वस्तु को आवरण डालकर ओट में कर देना या छिपाना। **पर्या.** ढाँकना। *पुं.* खुले पात्र को ढाक देने वाला हिस्सा जो उस पात्र का ही एक भाग होता है। **पर्या.** ढक्कन।

ढँकना/ढकना ढाँकना/ढांपना *स.क्रि. (देश.)* ऊपर कोई वस्तु रखना। **उदा.** 1. दूध की पतीली को ढक कर रख दो। 2. मुंह ढक कर सोने से ताज़ी हवा नहीं मिलती।

ढँढोरा/ढिंढोरा *पुं. (अनु.)* 1. घोषणा करते समय बजाया जाने वाला ढोल। 2. ढोल बजाकर की जाने वाली घोषणा। **मुहा**. ढंढोरा पीटना-न कहने योग्य बात को सब जगह कहते फिरना। (व्यंग्य)। **उदा.** हर बात का ढंढोरा पीटना ठीक नहीं।

ढकेलना *स.क्रि. (हिं.*<धक्का) धक्का देकर आगे बढ़ाया या गिराना। **पर्या.** ठेलना।

ढकोसला *पुं. [तद्.*<ढक्का कौशल] 1. आडंबर, झूठा प्रदर्शन। 2. वास्तविकता से दूर, बनावटी रूप, झूठा व्यवहार। **उदा.** धर्म के नाम पर आजकल ढकोसला अधिक किया जाता है।

ढपोर शंख *वि./पुं. (तद्.*) डींग मारने वाला व्यक्ति जो कहे बहुत, पर करे कुछ भी नहीं।

ढरकना/ढलकना *पुं.(देश.*) 1. किसी द्रव पदार्थ का नीचे की ओर बह जाना। **जैसे:** आँसू ढरकना। 2. लुढ़कना। 3. ढीला पड़ जाना। **जैसे**: कपड़ा ढरक गया है। (प्रेरणा. ढरकाना/ढलकाना)

ढरकाना/ढलकाना *स.क्रि.(देश.)* ढलकने/ढरकने में प्रवृत्त करना। ढलकाना, लुढ़काना; किसी द्रव पदार्थ को बहाना, किसी गोल पदार्थ को नीचे की ओर लुढ़काना।

ढर्रा *पुं. (देश.)* काम करने की बँधी-बँधाई शैली। **उदा**. दुनिया बदल गई किंतु तुम्हारी काम करने का वही पुराना ढर्रा है।

ढलना *अ.क्रि.(*देश.) 1. किसी द्रव पदार्थ का नीचे की ओर आना, बहना। 2. बीत जाना, उतार पर होना। **उदा**. जवानी ढल गई, दिन ढल गया। 3. आकर बदलना। **उदा**. गरम लोहा साँचे में ढलकर चादर बन गया; चाशनी में पका खोया बरफी में ढल गया। 4. किसी के अनुरूप व्यवहार करना। उदाहरण-बहू जल्दी ही अपने ससुराल के आचार-व्यवहार के अनुरूप ढल जाती है।

ढलवाँ *वि. (देश.)* 1. ऐसा स्थान जिसमें ढाल या नीचे की ओर उतार हो। **उदा**. ढलवाँ सडक़ पर

साइकिल ने बिना पैडल मारे ही रफ्तार पकड़ ली। 2. जो साँचे में ढालकर बनाया गया हो। **उदा.** कुतुब मीनार के पास ढलवाँ लोहे से बने लौह स्तंभ पर कभी जंग नहीं लगती।

ढलान *स्त्री. (देश.)* 1. ऐसा स्थान जहाँ ऊपर से नीचे की ओर उतार हो। **उदा**. आगे गहरी ढलान है, गाड़ी सावधानी से चलाना। 2. उतार पर होना। **जैसे:** उम्र की ढलान।

ढहना *अ.क्रि. (तद्.ध्वसंन)* गिर पड़ना, ध्वस्त हो जाना, नष्ट हो जाना। **उदा**. अधिक वर्षा होने से पुराना मकान ढह गया।

ढहाना *स.क्रि. (देश.)* **उदा.** नगर निगम के दस्ते ने अवैध दुकानों को ढहा दिया।

ढाँचा *पुं. (देश.)* किसी भी रचना या बनावट का आधारभूत रूप। **उदा.** मकान का इंटों वाला ढाँचा खड़ा करने में तो समय नहीं लगता पर उसे संवारने/सज़ाने में काफी समय और पैसा खर्च होता है। गठन, बनावट।

ढाँढ़स *पुं. (देश.)* किसी शोकग्रस्त व्यक्ति को हिम्मत न हारने की शिक्षा देने के लिए उसके हितैषी द्वारा कहा गया शब्द या वाक्य। **पर्या.** सांत्वना**,** साहस, हिम्मत, आश्वासन। **मुहा**. ढांढ़स बँधाना=सांत्वना देना।

ढाँणी *स्त्री. (देश.)* गाँव से कुछ दूरी पर बनी हुई कच्चे मकानों की बस्ती; अस्थायी आवास। जयपुर में 'चोखी ढाँणी' बहुत प्रसिद्ध जगह है।

ढाबा *पुं.(देश.)* 1. नगर के बाहर या सडक़ के किनारे बने साधारण और अस्थाई भोजनालय। **उदा**. बस जहाँ रूकी वहाँ हमने पंजाबी ढाबे में खाना खा लिया।

ढालना/ऊँडेलना *स.क्रि. (देश.)* 1. इच्छित रूप देने के लिए साँचे में पिघले पदार्थ को डालना। 2. बिछाना, सजाना। **जैसे**: चारपाई ढालना। 3. गरम लोहे को ढालकर रेल की पटरियाँ और पहिए बनाए जाते हैं। 4. ला.प्रयोग शराब ढालना-शराब पीना।

ढिठाई *स्त्री. (तद्.)* समझाने-बुझाने पर भी अपने अनुचित व्यवहार में परिवर्तन न करने की मानसिकता। **पर्या.** धृष्टता **दे.** ढीठ।

ढिलाई *स्त्री. (देश.)* ढीला होने का भाव; शिथिलता या सुस्ती का भाव। **उदा**. अनुशासन में ढिलाई बरतना अच्छी बात नहीं।

ढीठ *वि. (तद्.)* (व्यक्ति) जो अपने अनुचित व्यवहार पर अड़ा रहे यानी समझाने-बुझाने पर भी अपने को न बदले। **पर्या.** धृष्ट। **उदा**. उसे समझाने-बुझाने का कोई फायदा नहीं है, वह बहुत ढीठ है, आपकी बात नहीं मानेगा।

ढील *स्त्री. (हिं.ढीलना)* तना हुआ न होने की स्थिति; किसी प्रकार की छूट। **जैसे:** उपस्थिति में ढील नहीं दी जानी चाहिए, इससे अनुशासन भंग होता है।

ढूँढना *स.क्रि. (देश.)* किसी छिपी हुई या खोई हुई वस्तु का पता लगाना। **पर्या.** खोजना**,** तलाश करना। **उदा.** तुमने पुस्तक खो दी है, उसे ढूँढ कर लाओ।

ढेंकली, ढेंकी *स्त्री. (देश.)* सिँचाई के लिए कुएँ से पानी निकालने का उपकरण।

ढेर *पुं.(तत्.)* किसी निर्जीव वस्तु का (गणतीय या अगणतीय) समूह। **पर्या.** राशि। **जैसे**: पुस्तकों का ढेर; रेत का ढेर। (लोगों का ढेर नहीं) **मुहा**. (i) ढेर का ढेर=बहुत सारा। (ii) ढेर हो जाना=मर जाना।

ढेला *पुं. (तद्..)* 1. मिट्टी की नमी से ठोस हुई डली। 2. ईंट, पत्थर का छोटा टुकड़ा। **उदा.** बच्चे आम/जामुन के पेड़ पर ढेले फेंक कर आम/जामुन तोड़ने की कोशिश कर रहे हैं।

ढोटा *पुं. (देश.)* पुत्र, बेटा, लडक़ा, बालक। **जैसे:** नंद का ढोटा।

ढोना *स.क्रि. (तद्.)* 1. सिर, कंधे या पीठ पर बोझ लादकर ले जाना। **उदा.** 1. टट्टू बोझा ढोले वाला पशु है। 2. कुली सिर पर बोझा ढोता है। ला. प्रयोग कष्ट के दिनों को बिताना। **उदा.** वह सारी जिंदगी कष्ट का जीवन ढोता रहा।

ढोर *पुं. (देश.)* 1. चौपाया। **जैसे:** गाय, भैंस, बकरी, बैल आदि पशु। 2. पालतू पशु जिन्हें जंगल में चरने के लिए छोड़ा जाता है।

त

तंग *वि.(फ़ा.)* जिसकी चौड़ाई या खुलापन अपेक्षाकृत कम हो। **पर्या.** संकुचित, संकरा। **जैसे**: 1. तंग मोहरी वाला पाजामा। 2. मेरा हाथ तंग है। **विलो.** खुला। 2. परेशान, दु:खी। **उदा.** मैं अपने लडक़े से तंग हूँ। 3. *(पुं.)* घोड़ों की जीन कसने का तस्मा। 4. जिसमें उदारता का अभाव हो। **जैसे**: तंग दिल वाला आदमी।

तंगी *स्त्री.(फा.)* 1. आर्थिक कमी या संकट की स्थिति। **जैसे**: तंगी की हालत। 2. कमी, आवश्यकता से कम वाली स्थिति। **उदा.** गरमियों में बिजली की तंगी बनी रहती है।

तंडुल *पुं. (तंड़=पीटना, प्रहार करना)* कूटने, छड़ने और पिछोडने के बाद प्राप्त अन्न (विशेषत: चावल), छिलके से रहित। (निस्तुष: तंडुल: प्रोक्त:) चावल।

तंतु *पुं.(तत्.)* सा.अर्थ ताँत, बारीक तार, रेशा, धागा। 1. कात कर निकाला गया धागा जो वस्त्र उद्योग में काम आता है। यार्न 2. (भौ.) बिजली के बल्ब और रेडियो के वाल्व में लगा कार्बन, टंगस्टन या किसी अन्य धातु का बारीक तार जो विद्युत धारा के गुजरने से ताप दीप्त हो जाता है। filament

तंत्र *पुं.(तत्.)* 1. अंगों, अवयवों, ग्रंथियों आदि का समूह जो किसी विशेष जैव क्रिया के संपादन के लिए तालमेल से कार्य करता है। सिस्टम **जैसे**: पाचन तंत्र। 2. प्राचीन काल में विज्ञान सूचक शब्द, **जैसे**: शल्य तंत्र। साइंस 3. शासन की प्रणाली विशेष। **जैसे**: प्रजातंत्र, लोकतंत्र। 4. दर्श. गृहयाचार वाली उपासना पद्धति, जादू-टोना। occulet science

तंत्रिका तंत्र *पुं.(तत्.)* तंत्रिकाओं का जाल जो मस्तिष्क से प्रवाहित समस्त आवेगों-संवेगों को शरीर के संबंधित भागों में पहुँचाकर समस्त जैव क्रियाओं का नियंत्रण करता है। nervous system

तंत्रीवाद्य/तंतु वाद्य [तंत्री= तार+वाद्य=बाजा] *पुं. (तत्.)* ऐसे वाद्य यंत्र जो उसमें लगे हुए तारों को छेड़ने से स्वर उत्पन्न करते हैं। **जैसे**: सितार, इकतारा, तानपूरा, गिटार, वायलिन इत्यादि।

तंदरूस्त *[तद+दुरूस्त] वि.(फा.)* जिसका शरीर ठीक हो, स्वस्थ शरीर वाला। **पर्या.** स्वस्थ, निरोग।

तंदुल *पुं.(तद्>*तंडुल) **दे.** तंडुल। चावल।

तंदूर *पुं.(फा.* तनूर) उत्तर-पश्चिम भारत में प्रचलित एक तरह का ऊँचा और गोलाकार चूल्हा या भट्ठी जिसमें कोयलों की आग जलाकर उसके अंदर रोटियाँ सेंकी या पकाई जाती हैं। **उदा.** विवाह आदि के शुभ अवसर पर लोगों के द्वारा तंदूर में पकी रोटियाँ अधिक पसंद की जाती हैं।

तंदूरी *वि.* तंदूर से पका हुआ। **जैसे**: तंदूरी रोटी का स्वाद ही कुछ अलग होता है।

तंद्रा *स्त्री.(तत्.)* नींद आने के प्रारंभ की स्थिति। **पर्या.** ऊँघ। **तु.** निद्रा।

तंद्रालस *पुं.(तत्.)* [तंद्रा+आलस्य] तंद्रा के कारण होने वाला आलस्य, वह शिथिलता जो हलकी नींद के कारण आती है।

तंबू *पुं.(देश.)* मोटे कपड़े, मोमजामे को बाँसों, रस्सियों आदि की सहायता से तानकर खड़ा किया गया अस्थायी आश्रय स्थल, जिसे आवश्यकतापूर्ति के बाद उखाड़ कर अन्यत्र ले जाया जा सकता है। **पर्या.** शामियाना, डेरा, खेमा। tent

तकनीक *स्त्री.* अंग्रेजी शब्द 'टेक्नीक' का अनुकूलित रूप। किसी कार्य के करने की वैज्ञानिक पद्धति या प्रक्रिया। technique

तकनीकी *(वि.)* [तकनीक+ई प्रत्यय] तकनीक से संबंधित। *(पुं.)* व्यावहारिक उपयोग के लिए किसी विषय-विशेष से संबंधित संचित ज्ञान का अनुप्रयोग सिखाने वाला विज्ञान। **पर्या.** प्रौद्योगिकी। technology

तकनीकीविद् *पुं.* **दे.** तकनीशियन

तकनीशियन *वि.(*अंग्रेजी का अनुकूलित रूप) कर्मी जो किसी विशिष्ट (प्राय: मशीनों से संबंधित कार्य करने के लिए प्रशिक्षित हो)। टेक्नीशियन **पर्या.** तकनीकीविद्।

तकरार *स्त्री. (अर.*<तक्रार) किसी बात को लेकर दो पक्षों के बीच गरमागरम बहस जो हाथापाई में

बदलने की संभावना रखता हो। **पर्या.** शाब्दिक झगड़ा, हुज्जत, विवाद।

तक़रीबन *क्रि.वि. (अर.)* करीब-करीब, प्रायः, लगभग। **उदा.** वहाँ तकरीबन हज़ार लोग जमा हुए।

तकला *पुं. (तद्.<तुर्क)* जनसामान्य द्वारा प्रयोग किया जा सकने वाला, सूत कातने का छोटा उपकरण।

तकली *स्त्री. (तद्.<तर्कु)* बुनकरों का सूत कातने का यंत्र। spindle

तकलीफ़ *स्त्री.(अर.)* 1. (औपचारिक रूप से प्रकट) कथन जो किसी को कुछ करने के लिए कहा जाए। **उदा.** कुछ समय के लिए बाहर जा रहा हूँ, मेरे घर का ध्यान रखिए। तकलीफ़ के लिए माफ़ी चाहता हूँ। trouble 2. रोग, मुसीबत। **जैसे**: घुटने की तकलीफ़। 3. आर्थिक कठिनाई, तंगी। **उदा.** आजकल वह तकलीफ़ की जिंदगी बसर कर रहा है। 4. कमी। **उदा.** हमारी बस्ती/कालोनी में पानी की तकलीफ है। dearth

तकाज़ा *पुं.(अर.<तकाज़ी)* 1. उधार दिए धन को लौटाने के लिए या सौंपे हुए कार्य को पूरा करने के लिए बार-बार कहना या याद दिलाना। 2. आवश्यकता, जरूरत। **उदा.** इन्सानियत/दोस्ती वक्त का तकाज़ा है कि.......।

तक्षण *पुं.(तत्.)* 1. लकड़ी को काट-छाँटकर उपयोगी बनाने का काम। 2. बढ़ईगिरी, कारीगरी। 3. पत्थर से मूर्तियाँ, नक्काशी आदि का काम।

तक्षणी [तक्षण+ई] *स्त्री. (तत्.)* बढ़ईयों द्वारा प्रयुक्त 'रंदा' नाम का औज़ार; छेनी।

तक्षशिला/तक्षिला *स्त्री.* (नाम) एक प्राचीन स्थान का नाम जो अब पाकिस्तान में है। यह एक प्राचीन विश्वविद्यालय के कारण प्रसिद्ध है। संस्कृत-व्याकरण के प्रसदि्ध विद्वान महर्षि पाणिनी और नीति शास्त्र के प्रणेता चाणक्य इसी विश्वविद्यालय के आचार्य थे।

तख्त *पुं.(फ़ा.)* 1. कुर्सीनुमा चौकी जिस पर बादशाह या राजा बैठते थे। **पर्या.** सिंहासन, राजपीठ, न्यायपीठ। 2. तख्तों से बनी बड़ी चौकी। **मुहा.** तख्ता (तख्त) पलटना-राजगद्दी से बेदखल करना, सत्तापीठ से एक को हटाकर दूसरे को बिठाना।

तख्ता *पुं.(फ़ा.)* लकड़ी के फट्टों से बनी अधिक लंबी तथा कम चौड़ी मजबूत चौकी। **तु.** तख्त।

तख्ती *स्त्री.(फ़ा.<तख़्त)* 1. छोटा तख्ता। 2. लकड़ी की छोटी पटिया जिस पर छोटे बच्चों को लिखना सिखाते हैं।

तख्ते-ताऊस (तख्त+ए+ताऊस=मोर) *पुं.(फार.)* शा.अर्थ मोर का सिंहासन। वि.अर्थ मुगल सल्तनत के काल में शाहजहाँ द्वारा बनवाया हुआ वह प्रसिद्ध रत्नजटित सिंहासन जिस पर मोर की आकृति बनी थी।

तजना *स.क्रि.(तद्.<त्यजन)* 1. छोड़ देना, 2. त्यागना।

तट *पुं.(तत्.)* 1. नदी, तालाब, झील, समुद्र आदि का किनारा। **पर्या.** तीर। 2. समुद्र के किनारे के आसपास की भूमि। coast

तटबंध *पुं.(तत्.)* नदी का पानी किनारे को तोडक़र खेतों-गांवों में न घुस जाए, इस उद्देश्य से बनाया गया बाँध या पक्की दीवार; किनारे पर बनाया गया बाँध।

तटवर्ती *वि.(तत्.)* तट पर स्थित, नदी किनारे स्थित। **जैसे**: तटवर्ती वृक्ष, तटवर्ती गांव आदि।

तटस्थ *वि.(तत्)* [तट+स्थ] शा.अर्थ तट पर स्थित या तट पर बैठा हुआ। सा.अर्थ दो पक्षों के विवाद में किसी भी पक्ष का समर्थन या विरोध न करने वाला; परस्पर विरोधी पक्षों में हस्तक्षेप न कर उनके बीच शांति का इच्छुक तीसरा पक्ष। **पर्या.** निरपेक्ष; उदासीन। neutral

तटीय [तट+ईय] *वि. (तत्.)* तट से संबंधित; तट के आसपास की। कोस्टल

तड़पना *अ.क्रि. (देश.)* 1. कष्ट के कारण मानसिक और/या शारीरिक दोनों तरह से छटपटाना। **उदा.** गर्मी में वह प्यास के मारे तड़पता रहा किंतु उसे कहीं पानी नहीं दिखाई दिया। 2. किसी के विरह में दुखी होना। 'मन तरपत हरि दर्शन को आज'।

तड़ित *स्त्री. (तत्.)* सा.अर्थ बादलों के टकराने के कारण दिखाई पड़ने वाला प्रकाश, बिजली। भौ. बादलों में एकत्रित उच्च वोल्टता के कारण बादलों के बीच या बादल से पृथ्वी तक मीलों लंबा और क्षणिक दमक के रूप में दिखाई पड़ने वाला अपार विद्युत-विसर्जन जो भंयकर ध्वनि

और तीव्र प्रकाश उत्पन्न करता है। **पर्या.** बिजली lighting

तड़ित चालक *पुं. (तत्.)* भवनों को हानि न पहुँचे इस उद्द्देश्य से धातु की नोकदार पट्टिका वाली युक्ति जो बिजली को ग्रहण कर भूमि में विसर्जित कर देती है। इसका एक सिरा भवन के ऊपर और दूसरा ज़मीन के अंदर होता है। **पर्या.** तड़ित रक्षक। lighting conductor

तड़ित विद्युत *स्त्री.(तत्.)* बादलों की टकराहट से पैदा हुआ प्रकाश। **दे.** तड़ित (भौ.)

ततैया *स्त्री.(देश./तद्.*<तिक्तिका) एक बड़े आकार का पीली और काली धारियों वाला कीट जिसका बीच का (कमर का) भाग बहुत पतला होता है, और जो जगह-जगह छत्ते बना लेता है। इसकी पूँछ वाले भाग में डंक होता है जिसमें हल्का विष होता है। **पर्या.** बर्र wasp

तत्काल *क्रि.वि.(तत्.)* उसी समय, फौरन, तुरंत।

तत्कालीन *वि.(तत्)* उस समय का; उन दिनों का।

तत्त्व/तत्व *पुं.(तत्.) [तत्+त्व]* 1. रासा पदार्थ जिसे रासायनिक या भौतिक विधियों द्वारा सूक्ष्मतर अवयवों में विभाजित नहीं किया जा सकता। **जैसे**: ऑक्सीजन। **तु.** यौगिक, मिश्रण। ऐलीमेन्ट 2. भौ. पृथ्वी, तेज़, जल, वायु और आकाश-ये पाँचों भूत। ऐलिमेन्ट 3. दर्श. जगत् का मूल कारण। सांख्य में 25 तत्व माने गए हैं। मेटर 4. मुख्य और महत्वपूर्ण बात, गुण या अंश; सार वस्तु या भाग। substance

तत्पर *वि.(तत्.)* जो किसी काम को करने के लिए तैयार हो, तैयार, उद्युत। **उदा.** यह काम मुझे सौंप दीजिए, मैं इसे करने को तत्पर हूँ।

तत्परता *स्त्री.(तत्.)* तत्पर(तैयार) होने का गुण। **पर्या.** मुस्तैदी।

तत्वज्ञान [तत्+त्व+ज्ञान] *पुं.(तत्.)* शा.अर्थ **तत्**=(वह=ब्रह्म) के अस्तित्व का ज्ञान। सा.अर्थ 1. किसी बात का शास्त्रीय ज्ञान, 2. दर्शनशास्त्र। philosophy

तथाकथित *वि.(तत्.)* जैसा कहा गया है, जैसा कहा जा रहा है (यानी जो अभी तक सिद्ध या प्रमाणित नहीं हुआ है या होना बाकी है)। so-called

तथ्य *पुं.(तत्.)* 1. किसी घटना के क्रमवार मूल बिंदु; 2. किसी घटना की वास्तविकता। **पर्या.** यथार्थता, वास्तविकता, सच्चाई। fact substance ड्रुथ। **उदा.** 1. तथ्य यह है कि...... 2. इनकी बात में कोई तथ्य नहीं है।

तथ्यत: *क्रि.वि.(तत्.)* तथ्य के रूप में, वास्तव में (यानी जो मात्र काल्पनिक रूप में नहीं है) **पर्या.** वस्तुत:।

तदनंतर *क्रि.वि.(तत्.)* [तत्+अनंतर] इसके/उसके बाद, यानी पूर्वकथित घटना के घटित होने के बाद अगले क्रम में घटने वाला। **पर्या.** तत्पश्चात। **उदा**. वह एक घंटे तक दौडता रहा। तदंतर वह थककर बैठ गया।

तदर्थ [तत्+अर्थ] *अव्य.* शा.अर्थ उसके लिए। सा.अर्थ किसी विशेष प्रयोजन अथवा अवधि के लिए। **जैसे**: तदर्थ समिति, तदर्थ नियुक्ति। adhoc

तदनुसार *क्रि.वि.* [तत्+अनुसार] *(तत्.)* इसके/उसके अनुसार। **उदा.** प्रधानाध्यापक ने उसे आगे बोलने से रोका, तदनुसार वह चुप हो गया।

तनख्वाह *स्त्री. (फा.)* किसी संस्था में नियुक्त कर्मचारी को उसके काम के एवज में मिलने वाला सामान्यत: मासिक नियत पारिश्रमिक। **पर्या.** वेतन, pay, salary

तनना *अ.क्रि. (तत्*<तनन) किसी वस्तु का पूर्व स्थिति की तुलना में खिंचकर फैलना/फैल जाना। **जैसे**: भौंहे तुनना, भौंहों का तुनना; तंबू तनना आदि।

तनाव *पुं.(तद्.)* सा.अर्थ खिंचे रहने (यानी ढीला न होने) का भाव या स्थिति। **जैसे**: रस्सी या पेशी का तनाव। **पर्या.** खिंचाव। 1. भौ. वह बल जो तार, डोरी या छड़ में भार लटकाने से उसके प्रत्येक बिंदु पर लगता है। टैंशन 2. मनो. मन की उथल-पुथल वाली दशा। 3. समा. जब किसी कारण से चिंतन और व्यवहार दोनों में सहजता दिखाई नहीं पड़ती। दो वर्गों के सामाजिक व्यवहार में विश्वास की कमी के फलस्वरूप असहजता की स्थिति जिसकी वजह से लड़ाई-झगड़ा पनपता है।

तनिक *वि. (तत्.)* छोटा सा, थोड़ा। **उदा.** मुझे यह सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि तुम मेरा यह

तनिक-सा काम नहीं कर सकते। *क्रि.वि.* चाँदनी-चौक से तनिक आगे बढ़ोगे तो तुम्हें पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन दिखाई पड़ जाएगा।

तन्मय [तत्+मय] *वि.(तत्.)* किसी कार्य या किसी विचार में इस प्रकार लीन हो जाना कि आसपास की किसी बात पर ध्यान न जाए। **पर्या.** तल्लीन, दत्तचित्त। **उदा.** तन्मय होकर पढ़ो तो कविता जल्दी याद हो जाएगी।

तन्मयता [तन्मय+ता] *स्त्री.(तत्.)* भाव-प्रत्यय तन्मय होने की स्थिति, तल्लीन/मग्न होने की दशा।

तन्य *वि. (तत्.)* जो ताना या खींचा जा सके। **उदा.** सोना तन्य धातु है, उसे पीटकर/खींचकर तार में बदला जा सकता है।

तन्यता *[तन्य+ता] स्त्री.(तत्.)* भाव-प्रत्यय। शा.अर्थ तन्य होने का भाव। 2. रसा. (स्वर्ण, रजत, ताम्र आदि कुछ धातुओं का) वह गुणधर्म जिसके फलस्वरूप बिना टूटे उनके महीन से महीन तार खींचे जा सकते हैं।

तन्वी [तनु+ई] *वि.(तत्.)* 1. पतले और कोमल अंगों वाली। 2. कोमल अंगों वाली स्त्री। **जैसे**: तन्वी शकुंतला को देखकर दुष्यंत मोहित हो गया।

तपना *अ.क्रि. (देश.)* 1. अधिक गर्मी के कारण खूब गरम हो जाना। **उदा.** सोना तप कर कुंदन बन जाता है। 2. धूप में अधिक तपने से शरीर काला पड़ जाता है।

तपस्या *स्त्री.(तत्.)* अपने मन और इंद्रियों पर नियंत्रण पाने के लिए या किसी देवता इत्यादि को प्रसन्न करने के लिए किया जाने वाला वह धार्मिक कृत्य जिसमें शरीर को अनेक प्रकार से कष्ट दिया जाता है। **उदा.** शिवजी को पति रूप में पाने के लिए पार्वती ने घोर तपस्या की। **पर्या.** तप। ला.अर्थ घोर परिश्रम, लंबी कठिन साधना। **उदा.** स्वतंत्रता सेनानियों की वर्षों की तपस्या काम आई और हमारा देश आज़ाद हुआ।

तपस्वी *वि./पुं.(तत्.)* तपस्या करने वाला। (स्त्री. तपस्विनी।)

तपाक से *क्रि.वि.(फा.)* तुरत, ...छूटते ही। 1. पहले प्रश्न सुनो और उस पर विचार करो। तपाक से उत्तर देना ठीक नहीं। 2. अध्यापक के मुख से प्रश्न निकला नहीं कि उसने तपाक से उत्तर दे दिया।

तपेदिक *पुं.(फा.)* एक संक्रामक रोग जिसमें खाँसी और बुखार बहुत दिनों तक बना रहता है और परिणामस्वरूप फेफड़े सड़ जाते हैं। **पर्या.** क्षय रोग।

तफ़तीश/तफ़्तीश *स्त्री.(अर.)* 1. किसी विवाद के तथ्यों या कारणों का पता लगाने के लिए पुलिस या अन्य अधिकृत कर्मचारी द्वारा की जाने वाली जाँच पड़ताल, छान बीन। 2. खोज, तलाश। **उदा.** पुलिस वहाँ होने वाली चोरी की तफ़्तीश कर रही है।

तबका *पुं.(अर.)* किसी वर्ग के लोगों का समूह। **जैसे**: गरीब तबका, अमीर तबका; मेहनतकश तबका आदि।

तबलची *पुं. (अर.)* (हीनता सूचक शब्द) तबला बजाने वाला। **जैसे**: ए तबलची यह ढपढप बंद कर। **पर्या.** तबलावादक। (आदर सूचक शब्द)

तबला *पुं. (अर.)* एक अवनद्ध (मंढ़ा हुआ) वाद्य; ताल देकर बजाया जाने वाला चमढ़ा मंढ़ा वाद्य यंत्र (बाजा)

तबलावादक *पुं. [अर.+तत्.]* तबला बजाने वाला, कलाकार।

तबाह *वि. (फा.)* पूरी तरह से नष्ट। **पर्या.** बरबाद, नष्ट। **उदा**. सुनामी ने अंडमान-निकोबार द्वीप समूह के कई हिस्सों को तबाह कर दिया।

तबाही *स्त्री.(पह./फा.*<तबाही) तबाह होने/पूरी तरह से नष्ट होने का भाव। **पर्या.** बरबादी, नाश। **दे.** तबाह। **उदा.** पिछले दिनों भूकंप ने जापान में तबाही मचा दी।

तबीयत *स्त्री.(अर. तबीअत)* 1. चित्त, मानसिक स्वास्थ्य। मूड 2. मन की मौज, रूचि। 3. शारीरिक स्वास्थ्य की स्थिति। condition **मुहा.** तबीयत आना=मन आना। तबीयत फडक़ना =अत्यंत प्रसन्न होना।

तमतमाना *अ.क्रि.(तत्.) (*<ताम्रन) शा.अर्थ तांबे की तरह लाल होना। सा.अर्थ क्रोधवश या धूप में खड़े होने के कारण मुंह/चेहरे का लाल हो जाना, बुखार।

तमतमाहट *स्त्री.(तत्.)* तमतमाने की स्थिति का सूचक भाव; क्रोधावेश आदि में दिखाई पड़ने वाली लाली।

तमन्ना *स्त्री. (अर.)* इच्छा, आकांक्षा, लालसा, कामना। **उदा.** मेरी दिली तमन्ना है कि...........

तमाम *वि.(अर.)* 1. समस्त, सारा, पूरा, सब-के-सब। **जैसे**: तमामलोग, तमाम बातें, तमाम मुल्क, तमाम रिश्तेदार आदि। 2. तमाम होना/तमाम करना=समाप्त, ख़त्म, नष्ट होना/करना। **जैसे**: काम तमाम हो गया=पूरा हो गया, मर गया। काम तमाम कर दिया=मार डाला।

तय *वि. (अर.)* 1. जिसका फैसला या निपटारा हो चुका हो। **पर्या.** निर्णीत। **उदा.** मामला तय हो चुका है। 2. जो पूरा हो चुका हो। **उदा.** रास्ता तय करना। 3. ठहराया या पक्का किया हुआ। **पर्या.** निश्चित। **उदा.** किराया तय करना।

तरंग *स्त्री. (तत्.)* 1. पानी में उठने वाली लहर, हिलोर। 2. गाते समय वाणी में होने वाला उतार चढ़ाव। **जैसे**: तान की तरंग। 3. मन की मौज; मन में उठने वाली उमंग। **जैसे**: मन में तरंग उठना।

तरंगिता *वि. (तत्.)* जिसमें तरंग या लहर उठ रही हो।

तर *वि. (फ़ा.)* भीगा हुआ, नम, आर्द्र, गीला। **जैसे**: पानी में तर कपड़े, पसीने में तर शरीर, तर (नम) हवा; तर माल आदि।

तरकश *पुं. [फ़ा*<तर्कश<तीर+कोश] कंधे और पीठ पर बाँधा जाने वाला वह चोंगा जिसमें बाण रखे जाते हैं। **पर्या.** तूणीर, भाथा। quiver

तरकारी *स्त्री. (फ़ा.)* 1. पत्तियाँ, डंठल, फूल, फल आदि जिन्हें पकाकर रोटी-चावल आदि के साथ खाते हैं। **पर्या.** सब्ज़ी, भाजी। 2. पकी हुई रसेदार सब्जी।

तरकीब *स्त्री. (अर.)* किसी कार्य को करने की सुविचारित योजना या ढंग। **पर्या.** उपाय, युक्ति; ढंग, तरीका। **उदा.** कोई तरकीब बताओ कि मेरा काम बन जाए।

तरक्की *स्त्री. (अर.)* 1. उन्नति, उत्थान, प्रगति। **उदा.** हमारे देश ने बहुत तरक्की की है, हमारे देश में बहुत तरक्की हुई है। progress 2. पद में उन्नति। **उदा.** संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षा पास कर लेने पर ही मेरे भाई को तरक्की मिली। promotion

तरबतर *वि. (फ़ा.)* पूरी तरह गीला, बिल्कुल भीगा हुआ। **जैसे**: रास्ते में इतनी बारिश हुई की मैं तरबतर होकर स्कूल पहुँचा।

तरस *पुं. (तद्.)* किसी को कष्ट में देखकर मन में पैदा होने वाली करुणा और सहायता करने की भावना। **पर्या.** दया, रहम। **उदा**. उसकी कंगाली की हालत में बच्चों को तड़पता देख किसी को भी उन पर तरस आ जाएगा। **मुहा.** (पर) तरस आना-मन में दया उत्पन्न होना। (पर) तरस खाना-सहायता की भावना उत्पन्न होना।

तराशना *स.क्रि. (फा.)* फल, पत्थर, लकड़ी आदि कठोर वस्तुओं को चाकू, छूरी, छेनी आदि से छील/काट कर मनचाहा रूप देना। **जैसे**: 1. फल तराशना। 2. शिल्पी ने पत्थर के टुकड़े को तराश-तराश कर सुंदर मूर्ति तैयार कर दी।

तरीका *पुं. (अर.)* 1. किसी कार्य व्यवहार आदि को करने का सही ढंग। **पर्या.** विधि, पद्धति, रीति। **उदा.** काम करते समय आप यदि ठीक तरीके से बैठेंगे तो पीठ में दर्द नहीं होगा। 2. किसी समस्या को सुलझाने का उपाय। **पर्या.** उपाय, तदबीर। **उदा.** इस समस्या को सुलझाने का कोई सरल तरीका सुझाइए।

तरुण *वि./पुं. (तत्.)* युवा, जवान। (पुं.) युवक।

तरुणाई *स्त्री (तत्.)* यौवन, जवानी।

तरुणावस्था *[तरूण+अवस्था] पुं. (तत्.)* बाल्यावस्था से लेकर प्रौढ़ावस्था के बीच की अवस्था।

तरुणी *स्त्री. (तत्.)* युवती, जवान स्त्री।

तरुवर *पुं. (तत्.)* बड़ा पेड़, हरा-भरा पेड़, श्रेष्ठ पेड़, वृक्ष।

तरोताज़ा [तर+ओ (और)+ताज़ा] *वि.(फा.)* 1. हरा-भरा, बिल्कुल ताज़ा। **उदा.** बाज़ार से तरोताजा सब्जी खरीद कर लाना। 2. थकान से रहित। **उदा.** भाग-दौड़ करने के बाद थोड़ी देर विश्राम कर लिया तो शरीर के साथ मन भी तरोताज़ा हो गया।

तर्क *पुं.(तत्.)* 1. किसी कथन या पक्ष के समर्थन अथवा विरोध के लिए दिया गया कारण। **पर्या.**

दलील। argument **जैसे:** धूम्रपान स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है, तर्क से सिद्ध कीजिए। 2. सोचने-विचारने और तदनुसार निष्कर्ष पर पहुँचने की शक्ति। **पर्या.** तर्कशक्ति। **उदा.** उसने अपनी तर्कशक्ति से सबको प्रभावित किया। reasoning

तर्क-वितर्क *पुं. (तत्.)* अपने कथन को सिद्ध करने के लिए दिए गए कारण, साथ ही दूसरे के कथन के खंडन के लिए प्रस्तुत अपने जवाबी कारण।

तर्कसंगत *वि. (तत्.)* जो तर्क के आधार पर उचित लगे, युक्ति-युक्त। logical

तर्क-सिद्ध *वि. (तत्.)* तर्क द्वारा सिद्ध, तर्कपूर्ण, तर्कयुक्त।

तर्जनी *स्त्री. (तद्.)* अँगूठे के बगल वाली हाथ की उंगली। index finger

तल *पुं. (तत्.)* 1. किसी नदी, तालाब इत्यादि का नीचे का स्थलीय भाग। **पर्या**. पेंदा। 2. समुद्र का ऊपरी जल स्तर, जिसे आधार मानकर भूमि या पर्वतों की ऊँचाई नापी जाती है। लेवल 3. किसी वस्तु का ऊपर या नीचे का भाग। **जैसे**: करतल, पदतल।

तलवा *पुं. (तद्.)* पैर का नीचे का भाग जो चलते समय भूमि को छूता है। **तुल.** हथेली। **मुहा.** तलवे चाटना=खुशामद करना।

तलहटी *स्त्री. (देश.)* किसी पहाड़ के नीचे का समतल भाग। **पर्या**. तराई, उपत्यका।

तलाक़ *पुं. (अर.)* पति-पत्नी के विवाह संबंध की कानून या सामाजिक रीति से परिसमाप्ति, विवाह-विच्छेद। लाक्ष. किसी वस्तु को सदा के लिए छोड़ देना। **जैसे**: उसने सुरापान को तलाक दे दिया।

तलाश *स्त्री. (तुर्की)* 1. खोई हुई वस्तु, व्यक्ति आदि का पता लगाने का प्रयत्न। **उदा.** मेरी पुस्तक रास्ते में खो गई, बहुत तलाश करने पर भी नहीं मिली। 2. जीवनयापन या आवश्यकतापूर्ति के लिए साधन खोजना। **जैसे**: नौकरी की तलाश।

तलाशना *स.क्रि. (तुर्की)* अब तक अज्ञात या खोई हुई वस्तु अथवा छिपाई गई वस्तु को ढूँढना। **पर्या.** खोजना, ढूँढना।

तलाशी *स्त्री. (तुर्की)* गुम हुई या छिपाई गई चीज़ को खोजने की कार्यवाही। **उदा.** पुलिस ने चोर के घर की तलाशी ली।

तल्ख़ *वि.(फा.)* कड़वा, कटु, कठोर (स्वभाव में), रुखा। **विलो.** मृदु, मधुर। **उदा.** उसकी तल्ख़भरी बातें सुनकर मैं भौचक्का रह गया।

तल्ख़ी *स्त्री. (फार.)* तल्ख होने का भाव। **पर्या.** कटुता, कड़वापन, कठोरता।

तवा *पुं. (तद्.*<तापक) लोहे का गोलाकार पात्र जिस पर रोटी सेंकी जाती है।

तवायफ़ *स्त्री. (अर.)* लोगों का मनोरंजन करने के लिए गाने-नाचने वाली वेश्या, वारांगना। **टि.** मूलत: यह शब्द बहुवचन है।

तवारीख़ *स्त्री. (अर.)* इतिहास। **उदा.** तवारीख़ के पन्नों में गाँधीजी का नाम सुनहरे अक्षरों में लिखा जाएगा।

तशरीफ़ *स्त्री. (अर.)* आदरार्थक प्रयोग **मुहा.** तशरीफ़ रखिए-बैठिए, बिराजिए, लाना, ले जाना। तशरीफ़ लाइए-आइए, पधारिए।

तसला *पुं. (देश.)* चौड़े कटोरे के आकार का एक बड़ा बर्तन जिसकी तली भी थोड़ी उठी हुई होती है यानी समतल नहीं होती। **टि.** प्राय: राजमिस्त्री (मकान बनाने वाले) मसाला रखने के लिए इसका इस्तेमाल करते हैं।

तसल्ली *स्त्री. (अर.)* 1. शांति, धैर्य, धीरज। **उदा.** तसल्ली से काम करो, हड़बड़ाहट की जरूरत नहीं है। 2. सांत्वना, ढांढ़स, दिलासा। **उदा.** दु:ख की घड़ी में हमने उसे तसल्ली दी, तब जाकर उसने रोना बंद किया।

तसवीर *स्त्री. (अर.)* चित्र, प्रतिकृति। 1. कलाकार की कूंची (कलम) से तैयार किया चित्र। painting 2. कैमरे से खींचा गया चित्र। photo

तसव्वुर *पुं. (अर.)* ध्यान। 1. किसी के रूप, गुण, स्मृति आदि को ध्यान में प्रत्यक्ष करने की क्रिया। 2. कल्पना, चिंतन। **जैसे**: तुम्हारा तसव्वुर होते ही उसे आनंद की अनुभूति होती है।

तस्कर *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ चोर। तक.अर्थ निषिद्ध वस्तुओं को चोरी-छिपे देश में लाने अथवा यहाँ

से बाहर (विदेश) भेजने के अवैध धंधे में लगा व्यक्ति या व्यक्तियों का समूह। smulggler

तस्करी *स्त्री. (*तद्.) सा.अर्थ चोरी का काम। तक.अर्थ-निषिद् ध वस्तुओं को चोरी-छिपे देश में लाने या यहाँ से बाहर (विदेश) भेजने का अवैध धंधा। smulggling

तह *स्त्री. (फा.)* किसी फैली हुई वस्तु को कई बार समान भागों में मोड़कर एक-दूसरे पर करीने से सजाना या समेटना। **पर्या.** परत लगाना। **उदा.** चादर को तह करके या लगाकर एक तरफ रख दो। 2. नीचे का विस्तार, तली, पैंदा। bottom **मुहा.** तह तक पहुँचना-मूल तक पहुँचना यानी असली कारण जानना रहस्य खोलना, गहराई में पैठना।

तहत *पुं. (अर.)* अधीनता, अधिकार, इख्तियार। के तहत-अधिकार में। under

तहस-नहसवि. (तहस+नहस=दुर्भाग्य) *(देश.) (अर.)* पूरी तरह से नष्ट। **पर्या.** बरबाद, तबाह, नष्ट। **टि.** 'तह से नष्ट कर देना' भी इसका व्युत्पत्तिपरक अर्थ मानना अनुचित नहीं होगा।

ताँगा *पुं. (देश.)* बड़े-बड़े पहियों वाली एक सवारीगाड़ी जिसे घोड़ा खींचता है। इसमें बीच में एक फट्टा लगा होता है। **पर्या.** घोड़ागाड़ी। जिसके आगे-पीछे (दोनों ओर) सवारियाँ बैठती हैं, इसका प्रचलन प्राय: कस्बों में है/था। **तु.** इक्का, टमटम।

तांत्रिक *पुं. (तत्.)* तंत्रविद् या का जानकार; तंत्र के प्रयोग करने वाला। *वि.(तत्.)* तंत्रविद्या से संबंधित। **जैसे**: तांत्रिक साधना।

ताउम्र *क्रि.वि. (फा.)* जब तक जीवित रहे तब तक, उम्र भर, जीवनपर्यंत।

ताक *स्त्री. (देश.)* 1. ताकने (देखने) का भाव। 2. अवसर की प्रतीक्षा। **जैसे**: चोर इसी ताक में था कि कब आपकी आँख लगे और वह आपका सामान लेकर रफूचक्कर हो जाए। **मुहा.** ताक में रहना-अवसर की प्रतीक्षा करना। ताक लगाना-मौका देखना। ताक-झांक करना-छिप-छिप कर देखना।

ताकना *अ.क्रि. (देश.)* 1. अवसर की प्रतीक्षा करना। 2. अंदर से बाहर की ओर झांकना। **उदा.** वह खिड़की से मुझे ताकता रहा।

ताकीद *स्त्री. (अर.)* ज़ोर देकर कही हुई बात जिसमें चेतावनी या धमकी का पुट भी हो। **पर्या.** चेतावनी, आदेश।

ताज *पुं. (अर.)* 1. राजा को पहनाया जाने वाला मुकुट, पगड़ी या टोपी जो राजा होने की पहचान है। 2. ताजमहल नामक प्रसिद्ध इमारत का संक्षित नाम।

ताज़गी *स्त्री. (फा.)* ताज़ा होने का भाव; नयापन; स्फूर्ति। **विलो.** बासीपन, थकावट, शिथिलता, ढीलापन।

ताजपोशी *स्त्री. (अर.+फा.)* ताप पहनाने की रस्म अदायगी, सिंहासनारूढ़ होने का उत्सव। **पर्या.** राज्याभिषेक, राजतिलक।

ताज़ा *वि.(फा.)* हरा-भरा, पौधे से तुरंत तोड़ा हुआ (फूल), तुरंत बना हुआ (खाना, मक्खन आदि), स्फूर्ति-युक्त। **विलो.** बासी, थका हुआ, शिथिल।

ताज्जुब *पुं.[अ.*<तअज्जुब] आश्चर्य, अचंभा।

ताड़पत्र *पुं.(तद्.*<तालपत्र) ताड़वृक्ष का पत्ता। **टि.** ताड़ के पत्ते की लगभग ढाई-तीन इंच चौड़ी पट्टियाँ जिन पर लोहे की कलम से खुरचकर ग्रंथ का लेखन किया जाता था। ये पत्ते समय के प्रभाव से बहुत कम प्रभावित होते थे अत: ग्रंथ अधिक समय तक बने रहते थे। (आज भी राष्ट्रीय संग्रहालय से ताड़पत्र के ग्रंथ देखे जा सकते हैं।)

तात्कालिक [तत्काल+इक] *वि. (तत्.)* तत्काल से संबंधित, केवल उसी समय काम आने वाला। **उदा**. यह योजना तात्कालिक लाभ तो देती है पर आगे चलकर हानिकारक भी हो सकती है।

तात्पर्य *पुं. (तत्.)* मुख्य अर्थ, आशय, अभिप्राय, मंशा। **उदा.** मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि.........।

तादात्म्य *पुं.(तत्.)* एक वस्तु का दूसरी वस्तु में पूरी तरह मिल जाना। **पर्या.** एकरूपता। **उदा.** दोनों के विचारों में पूर्ण तादात्म्य होना चाहिए तभी अच्छी मित्रता निभती है।

तान *पुं. (तत्.)* तानने की क्रिया का भाव। *स्त्री.* (भाव) संगीत में स्वर का विस्तार, किसी राग या रागिनी को स्पष्ट करने के लिए स्वरों को लंबा करके गाना। **उदा.** ज्यों ही गायक ने तान छेड़ी कि श्रोतावर्ग मुग्ध होकर सुनने लगे। 2. कवि

कुछ ऐसी तान सुनाओं जिससे उथल-पुथल मच जाए।

ताना-बाना *पुं. (तद्.)* ताना और बाना। सा.अर्थ वस्त्र बुनते समय लंबे सूत को ताना और चौड़ाई में बुने जाने वाले सूत को बाना कहते हैं। ला.अर्थ किसी कार्य की मूलभूत प्रक्रिया, किसी घटना के कारणभूत मूल तत्व। **उदा.** मुंबई आक्रमण का ताना-बाना पाकिस्तान में बुना गया था-ऐसा विश्वास किया जा रहा है।

तानाशाह *पुं.* (*तद्. फा.*) 1. अधिकारों का मनमाने ढंग से प्रयोग करने वाला शासक। 2. वह शासक जिसने समस्त राज्यसत्ता को अपने हाथों में केंद्रित कर लिया हो तथा अपने कार्यों के लिए जनता के प्रति उत्तरदायी न रहे। dictator

तानाशाही *स्त्री. (तद्.+फा.)* ऐसी शासन-प्रणाली जिसमें राज्य की सत्ता एक ही व्यक्ति (अथवा एक छोटे वर्ग) के हाथों में केंद्रित हो जाए तथा शासक अपने कार्यों के लिए जनता के प्रति उत्तरदायी न रहे। dictatorship

ताप *पुं.(तत्.)* सा.अर्थ 1. उष्णता, गरमी। (जिसका अनुभव जलन के रूप में होता है। 2. ज्वर, बुखार। ला.अर्थ दु:ख, मानसिक व्यथा (मनस्ताप), कष्ट, बैचेनी। भौ. वस्तु के गरम या ठंडे होने का गुणधर्म। इसके मापन का सामान्य मात्रक सेल्सियस (C) है।

तापक्रम *पुं.(तत्.)* शरीर, धातु या वायुमंडल की उष्णता का कम या अधिक होना। इसकी माप फारेनहीट या सेल्सियस (C) होती है। **पर्या.** तापमान। temperatoure

तापमान *पुं.(तत्.)* थरमामीटर द्वारा नापी गई उष्णता की मात्रा। **टि.** निश्चित तापमान इस प्रकार है- पानी का जमने का तापमान=0 डि.से.। पानी उबलने का तापमान=100 डि.से.। मानव शरीर का सामान्य तापमान=98.4 डि.से.। **दे.** तापक्रम। temperature

तापमापी *वि./पुं. (तत्)* शा.अर्थ ताप की मात्रा का मापन करने वाला। **भौ.** ताप मापने का एक विशेष उपकरण जो अशांकित कांच की नली का बना होता है। इस नली में पारद (पारा) या ऐल्कोहॉल भरा रहता है जो गर्म होने पर फैलता है और ताप की मात्रा बताता है। thermometer

तापीय ऊर्जा *स्त्री. (तत्.)* उष्णता या गर्मी से प्राप्त होने वाली ऊर्जा।

ताबड़तोड़ *क्रि.वि. (देश.-अनु.)* लगातार, निरंतर, बिना रूके, एक-के बाद एक। **उदा.** ज्यों ही उसने ताबड़-तोड़ मुक्के बरसाने शुरू किए त्यों ही वह धराशायी हो गया और फिर उठ नहीं पाया।

ताम्रपाषण-युग *पुं.(तत्.)* इतिहास का वह प्रारंभिक काल जब आदिम मानव ने ताँबे और पत्थर के औज़ारों का उपयोग शुरू किया।

तार *पुं.(देश.)* 1. धागे की तरह की पतली, लंबी वस्तु जो तपाई हुई धातु को पीटकर या खींचकर बनाई जाती है। wire 2. तंतु के माध्यम से विद्युत की सहायता लेकर शीघ्र समाचार भेजने की व्यवस्था। telegraph 3. विद्युत अथवा रेडियो संकेतों द्वारा भेजा गया संदेश जो ग्रहीता कार्यालय से लिखित रूप में प्राप्तकर्ता को घर पर अथवा उसके कार्यालय में सौंपा जाता है; तार की विधि से भेजी गई खबर। telegrame 4. ऊँचे स्वर से गाए जाने वाले सप्तक। (सरगम) 5. ताँता, निरंतरता का भाव। **जैसे**: लगातार वषा। 6. संपर्क। **जैसे**: आतंकवाद के तार पाकिस्तान से जुड़े हैं। **मुहा.** तार-तार करना-इस तरह से नष्ट कर देना कि फिर जोड़ा न जा सके धज्जियाँ उड़ाना, तार-तार होना=(कपड़ा) बुरी तरह फटना।

तारक *वि. (तत्.)* तारने वाला, तारणहार। (ईश्वर, नाव आदि) *(पुं.)* 1. तारा, नक्षत्र, 2. आँख की पुतली। 3. मुद्र. छपाई में लगाया जाने वाला तारे जैसा चिह्न (*)। **उदा.** कामिल बुल्के के कोश में स्त्रीलिंग सूचक संज्ञाओं पर तारक चिह्न * लगाए गए हैं।

तारा *पुं. (तत्.)* 1. आकाश में चमकने वाला ज्योर्तिपिंड, नक्षत्र। 2. आँख की पुतली। **मुहा.** तारे गिरना-नींद न आना, तारे तोड़ना-कोई असंभव काम करना, दिन में तारे दीखना-परेशान हो जाना। तारों की छाँह में-बड़ी सुबह, तडक़े।

तारामंडल *पुं. (तत्.)* 1. आकाश में एक निश्चित आकार में दिखाई पड़ने वाला तारों का समूह, तारा-पुंज। **जैसे:** वृश्चिक, सिंह, कन्या, तुला आदि। constellation 2. विशेष रूप से निर्मित वह गुबंदनुमा भवन जिसमें कृत्रिम प्रकाश की सहायता से उसकी अंदरूनी छत पर तारों और

ग्रहों की गति का आभास करवाकर सामान्य जनता के खगोलीय ज्ञान में वृद्धि की जाती है। planetarium

तारीख *स्त्री. (फा.)* 1. महीने का कोई दिन। **जैसे**: जनवरी की पहली तारीख। **पर्या**. दिनांक। 2. स्मरण रखने योग्य भूतकाल या भविष्य का कोई दिन। **जैसे**: मुकद्दमे की तारीख, परीक्षा की तारीख।

तार्किक [तर्क=तर्कशास्त्र+इक (प्रत्यय)] *पुं. (तत्.)* 1. तर्कशास्त्र या न्याय वैशेषिक दर्शनों का विद्वान्; दर्शनशास्त्र में पारंगत, विशेषज्ञ। **पर्या.** नैयायिक। 2. उचित तर्क करने वाला (व्यक्ति) लॉजीशियन *(वि.)* तर्क की दृष्टि से उचित। **जैसे**: आपका कथन तार्किक महत्व रखता है। लॉजिकल

तालपत्र ताड़ के वृक्ष का पत्ता। **टि.** ताड़ के पत्ते में कई पट्टियाँ होती हैं तथा यह पत्ता कुछ कठोर तथा टिकाऊ भी होता है। इसलिए प्राचीन काल में इसकी पट्टियों का उपयोग लिखने के लिए किया जाता था। लोहे की नुकीली कलम से खुरचकर उसमें स्याही भर दी जाती थी। इस प्रकार पांडुलिपियाँ तैयार होती थीं। इस प्रकार की पुस्तकें संग्रहालयों में देखी जा सकती हैं।

तालमेल *पुं.* व्यु.अर्थ संगीत में ताल के अनुसार स्वर मिलाना। harmony ला.अर्थ सामंजस्य यानी परिस्थिति के अनुसार काम करने का भाव; उपयुक्त या ठीक मेल। **उदा.** पति-पत्नी में तालमेल हो तो गृहस्थी की गाड़ी अच्छी चलती है।

तालिका *स्त्री.(तत्.)* 1. ताली, चाबी, कुंजी। key 2. ताली (हाथ से बजाई जाने वाली) clap 3. वस्तुओं आदि की ब्यौरेबार सूची, नामावली, फेहरिस्त। table, inventory

ताल्लुक *पुं. (अर.*<तअल्लुक) (ताल्लुकात बहु.) संबंध, लगाव। **उदा.** बस! आज से तुम्हारे हमारे ताल्लुकात समाप्त।

ताल्लुका *पुं.(अर.*<तअल्लुक) प्रशासनिक दृष्टि से गठित कुछ गाँवों/कस्बों की सामूहिक इकाई। **पर्या.** उपजिला, तहसील। sub district

ताव *पुं.(तद्.*<ताप) 1. किसी वस्तु को गरम करने के लिए दिया जाने वाला ताप। 2. बुखार के लिए प्रयुक्त बोलीगत प्रयोग। **पर्या**. ज्वर। 3. अधिकार मिश्रित क्रोध का आवेश। 4. शेखी या ऐंठ का भाव। 5. उतावलापन। **मुहा.** ताव खाना=गरम हो जाना, क्रोधित होना। मूँछों पर ताव देना=शेखी दिखाना। ताव दिलाना=क्रोध दिलाना।

तिकोना *वि. (तद्.)* तीन कोनों वाला, त्रिभुजाकार (त्रिकोणाकार), त्रिभुज।

तितर-बितर *वि. (अनु.)* अ.क्रि. तितर-बितर होना। स.क्रि. तितर-बितर होना।; बिखरी जाना; बिखेर देना। 1. ज्योंही पुलिस पहुँची त्योंही भीड़ बिखर गई। 2. पुलिस ने भीड़ को तितर-बितर कर दिया।

तिनका *पुं. (तद्.*<तृण) सूखी घास का टुकड़ा, तृण। **मुहा.** तिनके का सहारा=नाम मात्र का सहारा। दाँतों में (मुंह में) तिनका दबाना=दीनता दिखलाना। तिनके को पहाड़ की ओट=छोटी चीज़ को बड़ा महत्व देना।

तिरछा *वि. (तद्.*<तिरश्चीन) 1. जो सीधा न होकर कुछ कोण बनाकर हो। 2. टेढ़ा, वक्र।

तिरछापन *पुं.* टेढ़ा होने (सीधा या सपाट न होने की स्थिति)।

तिरना *(अ.क्रि.*<तरण) 1. तरल पदार्थ की सतह पर किसी वस्तु को आगे की ओर बढ़ने की क्रिया। **उदा.** दूध के कटोरे में चींटी तिर रही है, उसे निकाल दो। 2. पार होना, 3. भव-बंधन से पार होना, सांसारिक आवागमन से मुक्त होना। **उदा.** ईश्वर-स्मरण से न जाने कितने पापी तिर गए।

तिरपाल *पुं. (अं.*<टरपोलिन का अनुकूलित रूप) रासायनिक लेप से युक्त मोटा कपड़ा जो धूप, वर्षा आदि से बचाने के लिए और छाया करने के लिए प्रयोग किया जाता है।

तिरस्कार *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ किसी को दूर रखने का भाव। सा.अर्थ अनादर, निरादर, अपमान, अवहेलना। **उदा.** दीन-दुखियों का तिरस्कार मत करो, उनकी सहायता करो।

तिरस्कृत *वि. (तत्.)* जिसका अनादर या अपमान किया गया हो, जिसकी अवहेलना की गई हो। **पर्या**. अनाहृत, अपमानित। **उदा.** तिरस्कृत व्यक्ति कहीं सम्मान नहीं पाता।

तिरिया *स्त्री. (तद्.*<त्रिया) 1. स्त्री, नारी, औरत, 2. पत्नी।

तिरिया-चरित्र *पुं. (तद्.)* स्त्रियों का कभी-कभी होने वाला रहस्यमन आचरण। **जैसे**: तिरिया-चरित्र को कोई नही जान सकता।

तिर्याकबद्ध [तिर्यक=तिरछा+बद्ध] *वि. (तत्)* तिरछा बनाया हुआ, तिरछा बाँधा हुआ, चौडाई में बनाया हुआ। (तिर्यक=तिरछा, आड़ा)

तिलमिलाना *अ.क्रि. (देश.*<तलमलाना अनुदया.) 1. क्रोध में आपा खो देना। **उदा.** अपने गुरूजनों की अकारण आलोचना सुनकर मैं तिलमिला उठा। 2. अचानक कष्ट या पीड़ा से अत्यधिक विकल होना। **उदा.** पलंग से टकरा जाने पर चोट लगते ही मैं तिलमिला गया।

तिलमिलाहट *(स्त्री.)* तिलमिला जाने की स्थिति। **दे.** तिलमिलाना।

तिलहन *पुं.(देश.)* फसल जिसके दानों को पेर कर तेल निकाला जा सके। **जैसे**: तिल, सरसों, मूँगफल आदि। 2. इन फसलों के दाने। **तुल.** दलहन-दानों वाली फसल या बीज।

तीक्ष्ण *वि.(तत्.)* सा.अर्थ 1. तेज़ नोक या तीखी धार वाला। ला.अर्थ 2. तीखा (स्वाद या गंध में), कुशाग्र (बुद्धि)

तीक्ष्णता *स्त्री. (तत्.)* तीक्ष्ण होने का गुण, तेज़ नोक या धार वाला अथवा स्वाद और गंध में तीखा होने की स्थिति।

तीन-चौथाई *वि.(तद्.)* किसी वस्तु के चार समान भागों में से तीन भाग। तीन बटा चार, 3/4। three-fourth

तीर्थ *पुं.(तत्.)* 1. पवित्र स्थान, जिसकी यात्रा विभिन्न धर्मावलंबी अपने-अपने मत के अनुसार करते हैं। **जैसे:** काशी, प्रयाग, अमृतसर, मक्का आदि; स्नान करने का पवित्र घाट।

तीर्थयात्रा *स्त्री.(तत्.)* पवित्र माने जाने वाले धार्मिक स्थानों पर मतानुयायियों का आना-जाना। **पर्या.** तीर्थटिक।

तीर्थयात्री [तीर्थ+यात्री] *पुं.(तत्.)* तीर्थ-स्थानों की यात्रा करने वाले आस्थावान लोग।

तीर्थाटन [तीर्थ+अटन=घूमना/यात्रा] *पुं.(तत्.)* **दे.** तीर्थयात्रा।

तीली *स्त्री. (तद्.*<तीरिका) 1. लकड़ी या धातु का सींक या तिनके की आकृति का सीधा टुकड़ा। **जैसे**: माचिस की तीली; पहिए की तीली। 2. बुनने की सलाई या क्रोशिया।

तीव्र *वि.(तत्.)* तेज़, तीक्ष्ण। **जैसे**: तीक्ष्ण वेदना; वेगयुक्त। **जैसे**: तीव्र गति; ऊँचा (स्वर)। **जैसे**: तीव्र स्वर। **विलो.** हल्का, मंद।

तीव्रता *स्त्री.(तत्.)* तीव्र होने का भाव, स्थिति या गुण। **दे.** तीव्र।

तुंगता (तुंग=ऊँचा+ता) *स्त्री.(तत्.)* निश्चित बिंदु से किसी वस्तु की ऊँचाई।

तुंगतामापी *पुं.(तत्.)* निश्चित बिंदु (समुद्रतल या भूस्तर) से किसी वस्तु **जैसे**: पर्वत शिखर या वायुयान) की ऊँचाई नापने वाला यंत्र। altimeter

तुनकमिज़ाज *वि. (फ़ा.)* जो छोटी-छोटी या साधारण बातों पर जल्दी झल्ला उठे, चिड़चिड़ा।

तुनकमिज़ाजी *स्त्री.* छोटी-छोटी और साधारण बातों पर जल्दी झल्ला उठने का स्वभाव।

तुमुल *वि.(तत्.)* अत्यंत कोलाहल से युक्त। **पर्या.** घोर।

तुमुलध्वनि *स्त्री.(तत्.)* बड़े ज़ोर की आवाज़, चीख-पुकार और शस्त्रास्त्र चलने या युद्ध-वाद्यों की आवाज़। **टि.** प्राय: युद्ध के संदर्भ में प्रयोग होता है।

तुमुलनाद *पुं.(तत्)* 1. **दे.** तुमुल ध्वनि। 2. जोर से की गई भयंकर आवाज़।

तुरतबुद्धि *वि. [तद्.* < त्वरित + तत] शा.अर्थ (व्यक्ति) जिसकी बुद्धि तीव्र गति से काम करती हो सा.अर्थ किसी की भी बात पर अपनी ओर से चटपट और अनोखी टिप्पणी करने वाला (व्यक्ति) **पर्या.** प्रत्युत्पन्नमति, हाज़िरजवाब।

तुरूष्क *पुं.(तत्.)* 1. तुर्क जाति के लोग; तुर्किस्तान का निवासी, तुर्किस्तान। 2. धूप में डाला जाने वाला, एक गंधद्रव्य, लोबान (इसका धुँआ गंधयुक्त होता है।)

तुर्रा *पुं.(अर. तुर्र:)* 1. मुर्गे, मोर आदि की कलंगी। टोपी/पगड़ी पर लगाया हुआ सुनहले या रूपहले तारों का गुच्छा या झालर, फूलों का गुच्छा, मोतियों की लड़ियाँ या पक्षी का पर आदि। तुर्रा यह कि......(i) इस पर भी। (ii) इतना होने पर भी। (iii) यह भी है कि..., विचार करने वाली बात।

तुलना *स्त्री.(तत्.)* 1. दो या अधिक वस्तुओं की गुणवत्ता आदि की मात्रा कम-अधिक होने का विचार। **पर्या**. मिलान। 2. गुणों आदि की दृष्टि से समानता। **पर्या**. सादृश्य, उपमा। *अ.क्रि.(तत्<*तुलन) 1. तराजू पर तौला जाना। 2. संतुलन बना कर रखना। 3. किसी कार्य को हठपूर्वक करने के लिए उद्यत होना। **उदा.** वह तो पैसे वापिस लेने के लिए तुल गया था।

तुलनात्मक [तुलना+आत्मक] *वि.(तत्.)* तुलना से युक्त (वह लेख, स्वरूप आदि) जिसमें तुलना की गई हो। **जैसे**: सूर और तुलसी का तुलनात्मक अध्ययन।

तूणीर *पुं.(तत्.)* तीर रखने का पात्र। **दे.** तरकश।

तूफ़ान *पुं.(अर.)* 1. समुद्र तल पर चलने वाली तेज़ और भयानक आँधी। 2. वह तेज़ आँधी जिसमें धूल उड़ने के बाद पानी भी बरसें 3. विपत्ति, आफ़त। ला.अर्थ हल्ला-गुल्ला, लड़ाई-झगड़ा।

तूफ़ान-मेल *(स्त्री.) तूफ़ान (अर.)+मेल (अं.)* शा.अर्थ तूफ़ान की गति से चलने वाली गाड़ी। ला.अर्थ बहुते तेज़ गति से कार्य करने वाला (व्यक्ति, मशीन आदि।)

तृतीय/तृतीयक *वि.(तत्.)* तीसरा या तीसरी, तीसरे क्रम का/की।

तृप्ति *स्त्री.(तत्.)* तृप्त या संतुष्ट होने का भाव; भोजन या अन्य किसी भी पदार्थ से जी मर जाने तथा तब और अधिक न लेने का भाव।

तेज *पुं.(तत्.<*तेजस्) 1. दीप्ति, चमक, प्रकाश, कांति। 2. पराक्रम, वीरता। 3. प्रखरता। 4. प्रभाव, रौब, प्रताप।

तेज़ *वि.(फ़ा.)* 1. तीखी धार से युक्त। **जैसे**: तेज़ चाकू। 2. गति वाला। **जैसे**: दौड़ने में तेज़। 3. स्वाद में तीखा। **जैसे**: तेज़ मिर्च। 4. बुद्धिमान। 5. उच्च स्वर में। **जैसे**: तेज़ आवाज़।

तेजड़िया *पुं.(फ़ा.)* (वाणि.) वह सट्टेबाज जो विभिन्न वस्तुओं या शेयरों की खरीद इस आशा से करता है कि भाव चढ़ जायें। **विलो.** मन्दड़िया।

तेजस्विता *स्त्री.(तत्.)* तेजस्वी होने का भाव।

तेजस्वी *वि.(तत्.)* तेज से युक्त। **पर्या**. प्रतापी, प्रखर, चमकदार।

तेज़ी *स्त्री. (फ़ा.)* 1. तेज़ होने का भाव धार, तीव्रता 2. महंगाई। **विलो.** मंदी। 3. चालाकी, होशियारी। **जैसे**: ज़्यादा तेज़ी मत दिखाओ। 4. जोश, उत्साह, हिम्मत। **जैसे**: वह तुरंत तेज़ी से उठा। 5. शीघ्रता। **जैसे**: तेज़ी से जाना। 6. बेचैनी, आतुरता। **जैसे**: कृपया जाने दें, मुझे बहुत तेज़ी है।

तेल *पुं.(तद्.<*तैल) मूलअर् तिलों से निकलने वाला स्निग्ध रस। विक.अर्थ 1. किसी भी वानस्पतिक पदार्थ से निकाला जाने वाला स्निग्ध रस। **जैसे**: मूँगफली, सरसों का तेल। 2. ज़मीन से निकलने वाला पदार्थ, मिट्टी का तेल। **मुहा.** तेल निकालना=शोषण करना। **भौ.** जल में अविलेय, अमिश्रणीय, ज्वलनशील द्रव पदार्थ जिसके मुख्य घटक कार्बन और हाइड्रोजन होते हैं। ये सामान्य बीजों, फलों, जंतुओं, खनिजों आदि से निकाले जाते हैं और चिकने होते हैं।

तेलीय *वि.(तद्.<*तैलीय) तेल से युक्त, वह (पदार्थ) जिसमें तेल पाया जाता है।

तेवर *पुं.(देश)* 1. भौंह/भौंहे। **पर्या**. भृकुटि। 2. क्रोध को सूचित करने वाली भौंहों की मुद्रा, क्रोध भरी दृष्टि, तिरछी नज़र। **पर्या.** भृकुटि भंग, भृकुटि भंगिमा। **मुहा.** तेवर चढ़ना=क्रोध से भौंहे तन जाना। तेवर चढ़ाना=क्रोध करना। तेवर बदलना=व्यवहार में क्रोध या उदासीनता दिखलाना।

तैनात *वि.(अर.<*तअय्युनात) किसी काम पर लगाया हुआ या मुकर्रर, नियुक्ति किया हुआ।

तैनाती *स्त्री.(अर.)* तैनात करने की क्रिया; नियुक्ति।

तैरना *अ.क्रि. (<*तरण) पानी की सतह पर आगे बढ़ना। **उदा.** कल मैं तरणताल में दो घंटे तक तैरता रहा।

तैराक *पुं.* पानी पर तैरने वाला व्यक्ति।

तैराकी [तैराक+ई] *स्त्री. (देश.)* तैरने की कला।

तोंद *स्त्री. [तद्.*<तुंद] आगे की ओर निकला या उभरा हुआ पेट।

तो *क्रि.वि. (तर.<*तद) उस दशा में, तब। **जैसे**: जब वह खेत जाएगा तो तुम्हें भी जाना होगा।

तो, निपात *(तद्<*तु.) शब्द-विशेष पर बल देने के लिए प्रयोग। **जैसे**: मैं पढ़ने के लिए विद्यालय अवश्य जाऊँगा। मैं तो पढ़ने के लिए विद्यालय अवश्य जाऊँगा। मैं पढ़ने के लिए तो विद्यालय

अवश्य जाऊँगा। मैं पढ़ने के लिए विद्‌यालय तो अवश्य जाऊँगा।

तोप *स्त्री.(तुर्की)* पहिएदार गाड़ी पर चढ़ा एक प्रसिद्‌ध आयुध जो आकार में काफी बड़ा होता है। इसमें गोला भरकर शत्रुओं पर दागा जाता है। आजकल कई कि.मी. दूर तक भार करने वाली तोपें बनने लगी हैं। cannon, gun

तोपखाना *[तुर्की+फा.] पुं.* युद्‌ध के दौरान स्थल सेना द्‌वारा प्रयुक्त पहिएदार तोपों का बेड़ा। artilary

तोहफ़ा *पुं.(अर.)* भेंट, सौगात।

तौर *पुं.(अर.)* 1. प्रकार, तरह। **जैसे**: आम तौर से/पर......। 2. विधि, तरीका। **जैसे**: अचार खास तौर से बनाया गया है।

तौर-तरीका *पुं.(अर.)* व्यवहार का ढंग, बोलने-पहनने का ढंग, परंपरागत व्यवहार, चाल-ढाल, चाल-चलन। **उदा.** हर समाज के तौर-तरीके प्राय: एक-दूसरे से भिन्न होते हैं।

त्यौहार *पुं. [तद्.*<तिथि+वार] सामाजिक, धार्मिक अथवा अन्य प्रकार का कोई भी उत्सव मनाने का दिन। **पर्या**. पर्व। festival

त्वचा *स्त्री.(तत्.)* सा.अर्थ चमड़ा, चर्म, छिलका, छाल। **दर्श**. पाँच ज्ञानेंद्रियों में से एक जो स्पर्श से ज्ञान का अनुभव कराती है। गरम-ठंडा, मुलायम-कठोर, खुरदरा-नुकीला आदि का ज्ञान इससे होता है। **आयु.** (प्राणियों के) शरीर का वह प्राकृतिक रक्षा कवच यानी आवरण जो भीतरी तथा बाहरी सभी अंगों की रक्षा करता है।

त्र

त्रस्त *वि.(तत्.)* 1. डरा हुआ, भयभीत। 2. पीड़ित, परेशान।

त्रास *पुं.(तत्.)* सुरक्षा की चिंता का भाव, भय; भय के कारण होने वाला मनस्ताप, कष्ट।

त्रासद *वि.(तत्.)* कष्ट देने वाला। **पर्या.** कष्टप्रद, करूण, दुखद।

त्रासदी *स्त्री.* (अंग्रेजी के tragedy शब्द का अनुकूलित हिंदी रूपातंरण) ऐसी कथा जिसका अंत दुखद हो। **पर्या**. शोकांतिका।

त्रिकोण *पुं.(तत्.)* ज्या. तीन भुजाओं और तीन कोणों वाली बंद आकृति। **पर्या.** त्रिभुज।

त्रिपक्षीय *वि.(तत्.)* 1. जिसके तीन पक्ष हों। 2. तीन पक्षों (देशों, दलों आदि) के बीच होने वाली (वार्ता, संधि, समझौता आदि)

त्रिभुवन *पुं.(तत्.)* तीन लोकों (स्वर्ग, नरक और पृथ्वी) का समूह।

त्रिवेदी *पुं.(तत्.)* 1. ऋक्, यजुस् और साम इन तीन वेदों का ज्ञाता। 2. ब्राह्मणों के एक कुल का नाम जिसे उससे संबंधित ब्राह्मण अपने नाम के अंत में प्रयोग करते हैं। **जैसे**: तिवारी, त्रिपाठी, देव त्रिवेदी।

त्रुटि *स्त्री.(तत्.)* 1. कार्य में होने वाली गलती या रह गई कमी। **जैसे**: एक त्रुटि रह गई है। 2. भूल, चूक।

थ

थकना *अ.क्रि.(तद्.*<स्थगन) 1. काम करते-करते इतना शिथिल हो जाना कि आगे काम न किया जा सके। **पर्या.** श्लथ होना, क्लांत होना। 2. आयु बढ़ने के कारण शारीरिक शक्ति का स्वत: ही शिथिल हो जाना।

थकान *स्त्री.(तद्*<स्थगन) थक जाने की स्थिति का सूचक भाव; काम करते-करते रूकने की इच्छा। **पर्या**. थकावट।

थका-मांदा *[तद्.+मांदा-फा.] वि.* (थका+मांदा) थका और माँदा=अस्वस्थ, बीमार; इतना थका हुआ कि अब काम न कर सके; थकने के कारण अस्वस्थ जैसा, शिथिल। **पर्या.** क्लांत।

थन *पुं.(तद्.*<स्तन) पशुओं का दूध देने वाला लटका हुआ मांसल अंग।

थपेड़ा *पुं. (देश.*<थप-थप ध्वनि) थप्पड़; धक्का, आघात। **जैसे**: लहरों के थपेड़े, लू के थपेड़े, वर्षा के थपेड़े आदि।

थमना *अ.क्रि. (तद्.*<स्तब्ध) बहती/चलती स्थिति से स्थिर स्थिति में आना; रूकना। **उदा.** हवा थम गई है।, ब्रेक लगाते ही गाड़ी थम जाती है। **टि.** रूकने के लिए 'थमना' को प्राय: ग्राम्य प्रयोग माना जाता है।

थमाना *स.क्रि.* किसी के हाथ में कोई चीज़ देना या पकड़ाना। **जैसे**: पुस्तक थमाना।

थरथर *क्रि.वि. (अनुरण.)* काँपने की स्थिति या भाव के साथ क्रोध या भय की अवस्था में अथवा अत्यधिक ठंड में शरीर के काँपने की स्थिति के साथ। **टि.** इस शब्द का प्रयोग काँपना क्रिया के साथ ही होता है।

थाना *पुं.(तद्.*<स्थानक) शा.अर्थ बैठने का स्थान। सा.अर्थ पुलिस अधिकारी के बैठने का स्थान। police station

थामना *स.क्रि. (तद्*<स्तंभन) 1. चलती या गिरती हुई वस्तु को रोकना या पकड़ना। 2. सहारा देना। 3. कोई कार्य अपने जिम्मे लेना। **मुहा.** बागडोर थामना=नेतृत्व स्वीकार करना।

थार *पुं.(व्यक्तिवाचक नाम)* पश्चिमोत्तर भारत और पाकिस्तान के दक्षिण-पूर्व भाग में लगभग एक लाख वर्गमील (लगभग ढाई लाख वर्ग कि.मी.) के क्षेत्र में फैला विशाल रेगिस्तान।

थिगली *स्त्री.(देश.*<टिकली) कपड़े या चमड़े में हुए छिद्र को ढकने के लिए ऊपर से लगाया गया। (चिपकाकर या सिलकर) कोई टुकड़ा। **पर्या.** पैबंद**,** चकती। **मुहा.** आसमान/बादल में थिगली लगाना=कठिन कार्य करना या व्यर्थ परिश्रम करना।

थियेटर/थिएटर *पुं.(अं.)* 1. वह स्थान या भवन जहाँ फिल्में, नाटक आदि दिखाए जाएँ। **पर्या.** रंगशाला, नाट्यगृह, सिनेमा हॉल। 2. नाटकों का लेखन और उनका प्रदर्शन/प्रस्तुतीकरण। 3. वह बड़ा कक्ष जहाँ कोई विशिष्ट कार्य संपन्न किया जाए। **जैसे**: operation theatre (O.T)

थिरकना *अ.क्रि. (देश.)* 1. स्थिर गति से (लगातार) अंगों को चलाना। 2. नृत्य करते समय बार-बार अंग हिलाना। 3. एक ही स्थान पर खड़े-खड़े या बैठे हुए बार-बार अंग हिलाना। (**टि.** इस क्रिया में मन का उत्साहित होना आवश्यक है।)

थुलथुला *वि. (देश.)* वह (शरीर या कोई अंग विशेषकर पेट) जिसकी मांसपेशियाँ कसी हुई न हों या भार के कारण हिलती हुई सी हों।

थैला *पुं. (देश.)* कपड़े, टाट, कागज़ या पोलिथीन इत्यादि का तीन ओर से चिपकाकर या सीकर और एक ओर का भाग खुला रखकर बनाया गया पात्र जिसमें रखकर वस्तुएँ एक स्थान से दूसरे स्थान पर लाई/ले जाई जाती हैं। **पर्या.** झोला।

थोक खरीद *[तद्.+फा.] स्त्री.* किसी वस्तु की इकट्ठी (अधिक संख्या में) खरीद। bulk purchage

थोक *पुं.(तद्.*<स्तोमक=समूह) जिसकी मात्रा या संख्या अधिक हो। *वि.(तद्.)* ऐसा (व्यापार) जो वस्तुओं की अधिक मात्रा के अनुसार होता हो। **पर्या**. खुदरा। **विलो.** फुटकर whole sale

थोक विक्रेता *पुं. [तद्.+तत्.]* किसी वस्तु को (फुटकर मात्रा में न बेचकर) एक साथ अधिक मात्रा में बेचने वाला व्यापारी। whole saler

थोथा *वि.(देश.)* सारहीन, रसहीन, खोखला। **लो.** थोथा चना बाजै घना=कम जानकारी वाला ज्यादा बोलता है। **तुल.** अधजल गगरी छलकत जाय।

थोपना *सक.(तद्.*<स्थापना) 1. बलपूर्वक किसी को कोई उत्तरदायित्व देना या उस पर भार लादना। **जैसे**: जिम्मेदारी थोपना।

थोरियम एक रेडियो सक्रिय धात्विक तत्व जिसका प्रतीक TR है। **टि.** स्कैंडिनेविया के विद्युत-देवता थोर के नाम से इस तत्व का नामकरण किया गया है।

थ्रेशिंग *पुं. (अ.)* **दे.** गाहना। Threshing

द

दंग वि. *[फार.]* 1. किसी आकस्मिक या अद्‌भुत को देखकर या बात सुनकर स्तब्ध रह जाता (दंग रह जाना)। 2. आश्चर्यचकित, विस्मित। 2. गणेशजी की मूर्ति को दूध पीता देखकर हम दंग रह गए।

दंगई *वि. [फ़ा. दंगा]* 1. दंगा करने वाला, उपद्रवी, झगड़ालू। 2. प्रचंड, उग्र। 3. हिंसक प्रवृत्ति वाला वह व्यक्ति जो सामूहिक हिंसा के लिए प्रोत्साहित करता हो। **उदा.** पुलिस ने आज एक दंगई को हिरासत में ले लिया।

दंगाई/दंगई *वि.पु.* दंगा करने वालों का झुंड।

दंगल *पुं (फ़ा.)* 1. पहलवानों की कुश्ती-प्रतियोगिता। 2. अखाड़ा, मल्लयुद्‌ध का स्थान।

उदा. कल होने वाले दंगल में भारत के कई नामी पहलवानों की कुश्तियाँ होंगी।

दंगा *पुं. (फ़ा.दंगल)* 1. बहुत से लोगों द्वारा किसी विवादित विषय को लेकर मचाया गया उत्पाद या तोडफ़ोड़, मारपीट, हिंसा, आदि में बदल जाए। निकटतम **पर्या.** उपद्रव करना।

दंडनीति *स्त्री. (तत्.)* 1. अपराधियों, राष्ट्रद्रोहियों या शत्रुओं को दंड विधान के द्वारा नियंत्रित करने की शासकीय नीति व्यवस्था। 2. प्राचीन भारत में शासन, न्याय व्यवस्था व राजनीति विषयक विद्या। इसका अंतर्भाव अर्थशास्त्र के अंतर्गत होता था। **उदा.** राजा द्वारा दंडनीति के पालन से ही राज्य में शांति व स्थिरता रहती है। 3. राजधर्म के चार साधनों में से एक साम, दाम, दंड और भेद ये चार साधन माने गए हैं।

दंडनीय *वि. (तत्)* 1. (वह व्यक्ति या अपराधी) जो दंड देने के योग्य हो। 2. (वह कार्य) जो शासन की दृष्टि से अनुचित हो और उसे करने पर दंड मिले। **जैसे:** दहेज-उत्पीड़न एक दंडनीय अपराध है।

दंड *पु. (तत्.)* 1. लकड़ी बाँस आदि का छोटा या बड़ा डंडा, लाठी, सोंटा। **जैसे:** बूढ़े का डंडा, धवज दड, संन्यासी का दंड आदि। 2. किसी अनुचित कार्य का अपराध के बदले में दी जानेवाली सजा (पिटाई, शारीरिक दंड, जुर्माना, आर्थिक दंड)।

दंड बैठक *पुं. (दंड तत् बैठक तद् > विष्टत्.)* हाथ-पैरों का एक प्रकार का शारीरिक व्यायाम जिसमें व्यक्ति एक निश्चित संख्या में बार-बार बैठता और खड़ा होता है। **जैसे**: वह व्यक्ति प्रतिदिन सुबह सौ दंडबैठक लगाता है।

दंडवत *[दंड+वत्] पुं. (तत्.)* 1. दंड (डंडे) की तरह सीधे जमीन पर लेटकर प्रणाम करने की मुद्रा। साष्टांग प्रणाम। (तद् > दंडौत)। 2. प्रणाम।

दंड विधान *पुं. (तत्.)* दंड की व्यवस्था, अपराध और दंड के विषय में बनाया गया कानून, दंड विधि। law

दंड विधि *स्त्री. (तत्.)* न्यायशास्त्र की वह शाखा जो सिविल विधि के अंतर्गत आने वाले अपराधों से संबंधित है।

दंडसंहिता *स्त्री. (तत्.)* विभिन्न प्रकार के अपराधों की परिभाषा देने वाली उन अपराधों के लिए देय दंडों का विवरण देने वाली नियमों की प्रकाशित पुस्तक। (**जैसे:** भारतीय दंड संहिता penal code

दंडित *(वि.) (तत्.)* (व्यक्ति) जिसे दंड दिया गया हो।

दंतकथा *स्त्री. (तत्.)* सा.अर्थ. दाँतों (मुख से) कहीं गई कथा। परंपरा से सुनी गई कथा (जिसका प्रामाणिक स्रोत भी हो सकता है और नहीं भी) पर्या. किवदंती legend

दंत सूत्र *पुं. (तत्.)* स्तनधारी प्राणियों में ऊपरी और निचले जबड़ों के दाँतों की संख्या बताने की विधि की दृष्टि से बांटे गए दाँतों की कुल संख्या का पता चल सके। कृंतक, रद्नक, अग्रचर्वणक और चर्बणक दाँतों को इसी क्रम में रखते हुए मानव में दोनों जबड़ों के एक तरफ के दाँतों का विन्यास इस प्रकार लिखा जाता है: dental formula

दंतुरित तटरेखा *स्त्री. (तत्.)* दाँत की आकृति के समान टेढ़ी-मेढ़ी लंबी तट रेखा।

दंपती *पुं. (सं.<दंपति)* पति-पत्नी का जोड़ा। **उदा.** नवदंपत्ति को भावी जीवन की बहुत-बहुत शुभकामनाएँ। **टि.** संस्कृत व्याकरण के अनुसार (द्विवचन होने के कारण 'दंपती' शब्द रूप सही है, न कि 'दंपति' या 'दंपत्ति'।

दंभ *पुं. (तत्.)* 1. मानव के (अनुचित माने जाने वाले कार्य या उद्‌गार) जिनसे उसका मिथ्या अभिमान प्रकट होता हो; घमंड। **उदा.** कई लोग अपने कुल की बातें दंभपूर्वक करते हैं।

दंभी वि. घमंड़ी। घमंड करने वाला मिथ्या अभिमान प्रकट करने वाला।

दकियानूसी *वि.* 1. वह व्यक्ति जो अब झूठे पड़ गए परंपरागत विचारों या आचरण पर ही डटा रहे, उनमें परिवर्तन करना स्वीकार न करें। 2. नवीनता का विरोधी तथा घोर रूढ़िवादी। **उदा.** आधुनिक युग में घूघँट की प्रथा दकियानूसी विचारों से चिपटे रहना ही माना जाएगा।

दक्ष *वि. (तत्.)* (वह व्यक्ति कम-से-कम समय में योग्यतापूर्वक काम करने का गुण हो।

दक्षता *[दक्ष+ता] स्त्री. (तत्.)* कम-से-कम समय में और प्रयत्न सहित योग्यतापूर्वक सौंपा गया काम करने का गुण। efficiancy

दक्षिण अयनांत *पुं. (तत्.)* **खगो**. सूर्य की परिक्रमा करते समय पृथ्वी की वह स्थिति जब सूर्य की किरणें दक्षिण पर सीधी पड़े। सामान्यत: 22 दिंसबर को यह स्थिति होती है। मकर संक्रांति winter salistic

दक्षिण गोलार्ध *पुं. (तत्.)* पृथ्वी के गोले का निचला आधा भाग यानी विषुवत रेखा से दो भागों में विभाजित पृथ्वी का दक्षिणी भाग। **तु.** उत्तरी गोलार्ध।

दक्षिण ध्रुव/दक्षिणी ध्रुव *पुं. (तत्.)* पृथ्वी के अक्ष axis का सबसे दक्षिणी सिरा या छोर या बिंदु। **तु.** उत्तर/उत्तरी ध्रुव।

दक्षिणा *स्त्री. (तत्.)* 1. यज्ञ आदि धार्मिक अनुष्ठान के अंत में, भोजन कराने आदि के बाद या कोई दान देते समय यजमान द्वारा आचार्य, पुरोहितों या ब्राह्मणों आदि को श्रद्धानुसार सम्मानपूर्वक दिया जाने वाला धन। **टि.** प्राचीन काल में राजा द्वारा गायें, स्वर्ण मुहरें आदि भी दक्षिणा के रूप में दिये जाते थे। 3. दक्षिण दिशा।

दक्षिणा-पक्ष *पुं. (तत्.)* भारत के दक्षिण दिशा की ओर के भाग का प्राचीन नाम (प्राय: मध्यप्रदेश से दक्षिण की ओर का भाग)

दक्षिणायन *[दक्षिण+अयन] पुं. (तत्.)* अर्थ दक्षिण दिशा की ओर जाना। सा.अर्थ अर्थ-खगो. महीनों का वह काल जब सूर्य क्रमश: दक्षिण की ओर जाता हुआ दीखता है अर्थात् सूर्योदय तथा सूर्यास्त का स्थान प्रतिदिन दक्षिण की ओर खिसकता हुआ दीखता है। (प्राय: 21 जून से 22 दिसंबर के बीच का कल) **तुल.** उत्तरायण-वर्ष के शेष छह महीने का काल।

दक्षिणावर्त *[दक्षिण+आवर्त]* वि. *(तत्.)* 1. जो घूमते समय बाएँ से दाएँ जाए हो। 2. घड़ी की सुइयों के समान बाएँ से दाएँ की ओर बढ़ने वाला। **विलो.** वामावर्त।

दखलंदाज़ *वि.* दूसरे के काम में अनुचित हस्तक्षेप करने वाला। कुछ लोग इतने दखलंदाज होते हैं कि हर वक्त दूसरे के काम में दखलंदाजी करने में इन्हें मज़ा आता है।

दखलंदाजी *स्त्री. (अर.)* अनुचित हस्तक्षेप करने का कार्य। **उदा.** किसी दूसरे के काम में दखलंदाजी अच्छी नहीं मानी जाती।

दखल *पुं. (अर.)* 1. स्थयी या अस्थायी रूप से (कब्जा) **उदा.** ध्यान न देने पर पड़ोस वाले दूसरे खेत की जमीन पर दखल कर लेते हैं। 2. (अनुचित) हस्तक्षेप **उदा.** जब कोई बोल रहा हो तो उसकी बात में बार-बार दखल देना अच्छा नहीं माना जाता। 3. अच्छी जानकारी। **उदा.** विज्ञान के विषयों में मेरा दखल नहीं है।

दग़ा *स्त्री.* 1. ऐसा व्यवहार या आचरण जिसमें दूसरे पक्ष के साथ कपट या घात करके अपना स्वार्थ सिद्ध किया जाए विश्वासघात **उदा.** तुमने मेरे साथ दग़ा करके अच्छा नहीं किया।

दग़ाबाज *वि./पु.* दग़ा करने वाला (व्यक्ति); दग़ा करने का शौकीन। **उदा.** वह तो बहुत दग़ाबाज है, विश्वास मत करना।

दग़ाबाजी *(स्त्री.)* दे. दग़ा

दग्ध *वि. (तत्.)* जला हुआ, जलाया हुआ।

दड़बा *पुं.* पक्षियों को (विशेष रूप से मुर्गियों और कबूतरों को) समूह में रखने के लिए बनाया गया खानेदार पिंजरा। **तु.** घोंसला। सा.अर्थ कोई भी अपेक्षाकृत छोटा और अव्यवस्थित कमरा जिसमें सभी निवासी अपनी संख्या के अनुपात में सुविधापूर्वक न समा सके; ठसाठस भरा हुआ घर। **उदा.** तुम्हारा यह कमरा है या दड़बा?

दत्तक *वि. (तत्.)* वह (लडक़ा या लडक़ी) अपनी औरस संतान न होने पर भी अपने उत्तराधिकारी के रूप में शास्त्र विधि के अनुसार गोद लिया गया हो; गोद लिया हुआ लडक़ा, गोद ली हुई लडक़ी। **उदा.** आजकल कई निस्संतान दंपती अनाथालय से भी किसी बच्चे को लाकर विधिवत् अपना दत्तक पुत्र/पुत्री बनाते हैं।

दत्तचित्त *विं. (तत्.)* सा.अर्थ मन (चित्त) देकर; दत्तवित्त होकर = मन लगाकर कार्य विशेष में पूरा मन लगाए हो; मनोयोग पूर्वक। **उदा.** दत्तचित्त होकर पढ़ाई करो। सफलता अवश्य मिलेगी।

दनदनाना *अ.क्रि. (अनु.)* 1. दनदन शब्द करना। 2. फटाफट कोई कार्य करना। (दनदनाती 'दन'

= गतिसूचक) **उदा.** राजधानी एक्सप्रेस छोटे स्टेशनों से दनदनाती हुई निकल जाती है।

दनादन *क्रि.वि. (अनु.)* (दन-दन की आवाज के साथ) एक के बाद एक कई निरंतर। **उदा.** 1. पुलिस भीड़ पर दनादन गोलियाँ बरसाती रहीं। 2. वह बिना रुके दनादन काम करता रहा।

दफन *पुं. (अर.>दफ़्न)* भूमि में गाड़ा हुआ शव आदि। **जैसे**: शाहजहाँ ताजमहल में ही दफ़न है। दफ़न न करना स.क्रि. जमीन में गाड़ना।

दफ़नाना *स. क्रि. (अर.)* सा.अर्थ दफन करना, ज़मीन में गाड़ना (विशेषकर शव को)। (लड़ाई-झगड़े की बात) समझना यानी मन या स्मृति से निकाल देना।

दफ़ा स्त्री. *(फ़ा.)* 1. कानून की धारा (नियम) जिसके अंतर्गत किसी अपराध के संबंध में अभियोग चलाया जाता है और दंड को निश्चित किया जाता है। section 2. बार, मर्तबा **उदा.** तुम्हें कई दफ़ा कहा है, वहाँ मत जाओ।

दफ़ा होना *अ.क्रि.* तिरस्कार की भावना के साथ सामने से किसी स्थान से हट जाने को कहना। **उदा.** यहाँ से फौरन दफ़ा हो जाओ।

दबंग *वि. (<दबाना)* (व्यक्ति) जो किसी से दबता नहीं (उलटे दबाता है), डरता नहीं (उलटे डराता है), हार मानता नहीं, हौसला खोता नहीं और बाधाओं के बावजूद लक्ष्य की प्राप्ति की आशा (उम्मीद) छोड़ता नहीं।

दबदबा *पुं. (अर. < दबदब:)* 1. भयमिश्रित अति आदर की भावना। **पर्या.** रोब 2. अपने अधीन कार्यरत व्यक्तियों पर भयमिश्रित नियंत्रण या प्रभाव की स्थिति।

दबाना *(तद्.<दमन)* 1. किसी वस्तु को बलपूर्वक नीचे की ओर धकेलना। 2. किसी वस्तु पर इतना भार रखना कि वह हिल-डुल न सके। 3. किसी आंदोलन या विद्रोह आदि का दमन करना। 4. किसी वस्तु को ज़मीन में गाड़ना। 5. किसी वस्तु को अन्य वस्तुओं के नीचे रखकर छिपाना। 6. किसी मामले झगड़ या घटना आदि को शांत करना। (आगे बढ़ने व देना)।

दबाव *पुं. (<दबाना)* दबाने का भाव। **उदा.** उस पर इतना दबाव डाला गया कि उसने अन्ततोगत्वा चोरी करने का अपराध स्वीकार कर लिया।

दबैल *(वि.<दबना)* 1. जो किसी के प्रभाव से, उपकारों से या आतंक आदि के दबा हुआ हो। **उदा.** इतना दबैल नहीं हूँ कि तुम्हारी हर बात मानता रहूँ। 2. दबने या डरने के स्वभाव वाला। **उदा.** मैं वह दबैल किस्म का आदमी हूँ। जैसा कहो, कर देगा।

दबोचना *स.क्रि.* (देश.) 1. अचानक झपटकर किसी को पकड़ लेना, धर दबाना। **जैसे**: पुलिस ने भागते हुए चोर को धर-दबोचा।

दम *पुं. (फ़ा.)* 1. साँस, श्वास। 2. जान, जीवन शक्ति, **दे.** दमदार। 2. झाँसा, छल कपट, धोखा। **जैसे:** दम देना = धोखा देना; बहकाना।

दमक *(स्त्री.)* चमक, दीप्ति, कांति

दमकना *(अ.क्रि.)* (*देश.*) किसी वस्तु पदार्थ आदि का अपनी आभा को चमकाना। **उदा.** हार में जड़े नग दमक रहे हैं।

दमकल *स्त्री.* (*देश.*) 1. वह गाड़ी और यंत्र जिससे जल की बौछार फेंक कर भवन कारखाने आदि में लगी आग को बुझाया जाता है। अग्निशमन यंत्र। **उदा.** हमारे नगर में आग बुझाने के कई दमकल केन्द्र है।

दमकल केंद्र *पुं.* वह आगार जहाँ आग बुझाने वाली गाड़ियाँ और कर्मी रहते हैं तथा कहीं से आग लगने की सूचना मिलते ही उसे बुझाने के लिए रवाना कर दिए जाते हैं। fire station

दमकल दल *पुं. (तत्.)* आग बुझाने वाली गाड़ियों के साथ आने वाला प्रशिक्षित व्यक्तियों का समूह/दस्ता fire brigade

दमघोंटू *वि. [हिं. दम + घोंटना]* दम घोंटने वाला श्वास क्रिया को रोकने वाला। **जैसे**: दम घोंटू वातावरण।

दमड़ी *दे. [द्रम्म + हि. प्रत्यय]* 1. पुराने जमाने का सबसे छोटा सिक्का जो एक पैसे का आठवाँ भाग होता था। (एक रुपये में 64 पैसे तथा एक पैसे में 8 दमड़ियाँ) **लो.** चमड़ी जाए पर दमड़ी न जाए = ऐसा सामान जिसे लोग पैसे के पीछे जान देने को तैयार हैं।

दमदार *वि. (फ़ा.)* जिसमें इतना दम हो कि वह किसी कार्य को बड़े उत्साह व प्रसन्नता से सहज रूप में कर सके। **पुं.** जानदार। **उदा.** वह बहुत

दमदार व्यक्ति है जिसने अकले डाकुओं का सामना किया।

दमन *पुं. (तत्.)* बलपूर्वक दबा देने का कृत्य।

दमनकारी *वि. (तत्.)* 1. दमन करने वाला/वाली; विरोधा, उपद्रव, दंगा आदि को बलपूर्वक/दबाव डालकर समाप्त कर देने वाला/वाली। **जैसे:** दमनकारी शक्तियाँ। 2. तानाशाह शासक, जो अपनी महत्वाकांक्षा पूरी करने के लिए शांति की स्थिति में भी विरोध न हो इस उद्देश्य से बल-प्रयोग करता है।

दमा *पुं. (फ़ा.)* रोग जिसमें सांस लेने में बहुत कठिनाई होती है। परिणामस्वरूप सांस फूलने लगती है। **पर्या.** श्वास रोग। अस्थमा

दयनीय *विं. (तत् < दया)* दया करने दिखाने योग्य। **जैसे:** दयनीय स्थिति, दयनीय परिस्थितियाँ।

दया *स्त्री. (तत्.)* किसी पीड़ित (व्यक्ति, पशु-पक्षी आदि) की दशा देखकर उसके प्रति जगी सहानुभूति और समवेदना की भावना। **पर्या.** करुणा, अनुकंपा, रहम।

दया-दृष्टि *स्त्री. (तत्.)* दया बनाए रखने की दृष्टि यानी अभिवृत्ति। **उदा.** आपकी सदा मुझ पर दया-दृष्टि बनी रहे, यही कामना है।

दयापात्र *[दया + पात्र (योग्य)] (तत्.)* 1. वह व्यक्ति जो किसी विषम परिस्थिति में फंसा हुआ हो और दया करने के योग्य हो। 2. सहानुभूतिपूर्वक सहायता के योग्य। **उदा.** तुम्हारी सज्जनता व विपन्नता देखते हुए वास्तव में सबके दयापात्र हो। **जैसे**: मैं वहाँ किसी का दयापात्र बनकर नहीं जीना चाहता।

दयार्द्र *[दया + आर्द्र] वि. (तत्.)* सा.अर्थ दया से भीगा हुआ। सा.अर्थ कोमल हृदय। जिसका मन दया से जल्दी पिघल जाता हो।

दयालु *[दया + आलु] वि. (तत्.)* 1. दया करने वाला। 2. जिसके हृदय में दया का भाव हो। **दे.** दया

दर[1] (*तद्. देरी)* गुफा, कंदरा, गड्ढा, चीरने फाड़ने की क्रिया

दर[2] *पुं. (फा.)* दरवाजा, दवार, फाटक **उदा.** तेरे दर पे आया हूँ। **मुहा**. दर-दर की ठोकरें खाना। **उदा.** सौ रुपए की दर से। प्रत्यय (अ.) में, पर **उदा.** दर-असल = असल में, वास्तव में, हकीकत में, दर किनार = किनारे पर, अलग (बात) **उदा.** इनात तो किनार, उसे शाबासी तक नहीं मिली।

दर[3] *स्त्री. (देश.)* किसी वस्तु को खरीदने/बेचने का भाव। **जैसे**: प्रति चार घंटे के लिए यहाँ पाँच सौ रुपये की दर से देने होंगे।

दरकिनार *क्रि.वि. [फ़ा.]* जिसे छोड़ दिया गया हो, बिल्कुल अलग, एक किनारे, दूर। **उदा.** मदद करना तो दरकिनार, वह मुझ से सीधे मुँह बात भी नहीं करता।

दरखास्त/दरख्वास्त *स्त्री. (फा. < दरख्वास्त)* प्रार्थना (पत्र), आवेदन (पत्र), निवेदन अर्ज़, अर्ज़ी। 1. आपसे दरख्वास्त है कि मेरे घर पधारे। (प्रार्थना, निवेदन, अर्ज़)। 2. मैंने दो दिन की छुट्टी की दरख्वास्त भेज दी है। (प्रार्थना-पत्र, आवेदन, अर्ज़ी)

दरख्त *पुं. (फा.)* **दे.** वृक्ष, पेड़।

दरगाह *(स्त्री.)* (फ़ा.) 1. किसी सिद्धपुरुष का समाधि-स्थान (मकबरा)/मजार जहाँ भक्तगण जियारत/दर्शन करने जाएँ। **उदा.** दिल्ली में निजामुद्दीन औलिया सूफी संत की दरगाह है।

दर-ब-दर *क्रि. वि. (फा.)* 1. एक दरवाजे से दूसरे दरवाज़े, 2. घर-घर, 3. गली-गली। **जैसे**: वह बेरोजगार होने के कारण दर-ब-दर भटक रहा है।

दरबान *पुं. (फा.)* 1. बाहरी दरवाज़े (गेट) पर खड़े होकर घर, महल, कारखाने, कार्यालय आदि की रक्षा करने वाला कर्मचारी; द्वारपाल। gate keeper

दरबार *पुं. (फा.)* (प्राचीन संदर्भ में) 1. सभाभवन जहाँ राजा या बादशाह अपने सरदारों, मंत्रियों आदि के साथ बैठते और राजकार्य निबटाते थे। **पर्या.** राजसभा। 2. बादशाह की कचहरी/न्यायशाला। रॉयल कोर्ट 3. भारत की प्राचीन रियासतों के राजाओं/शासकों के लिए प्रयुक्त नाम। हिज़ हाइनेस **आधु.** संदर्भ में-जनता द्वारा चुने हुए प्रतिनिधियों/सत्ताधारियों की ओर से अपने चुनाव क्षेत्र की समस्याओं को सुनने के लिए निर्धारित दिन और समय पर आयोजित जनसभा। **पर्या.** जनता दरबार।

दरमियान/दरम्यान *पुं. (फा.)* बीच, मध्य **उदा.** दोस्तों के दरमियान कोई बात छिपाई न जाए तो अच्छा।

दरमियाना/दरमियानी *वि. (फ़ा.)* बीच का, न बड़ा और न छोटा; मँझला। **उदा.** मुझे दर मियानी किस्म का टीवी चाहिए। **अव्य.** उल्लिखित दो तारीखों/कार्यों आदि के बीच में, (इस) अवधि में मई से जुलाई के दरमियान आपने कहाँ-कहाँ की सैर की?

दरज़ी/दर्जी *पुं. (फ़ा.)* व्यवसाय के तौर पर कपड़े सीने वाला।

दरवेश *पुं. (फ़ा.)* 1. अपना घरबार त्याग कर साधुवेश या भिक्षुक वेश में भिक्षा याचना कर जीवन निर्गह करते हुए ईश्वर की अराधना में संलग्न व्यक्ति साधु, फकीर, भिक्षुक। 2. मुसलमान त्यागी भिक्षुओं का एक संप्रदाय।

दराँती *स्त्री. (तद्. < दृणाति)* हँसिया और आरी के मिले-जुले आकार का एक उपकरण जो घास, वनस्पति, फसल, सब्ज़ी आदि काटने के काम आता है।

दराज़ *वि. (फ़ा.)* लंबा, विस्तृत **जैसे**: दूर-दराज़ का क्षेत्र। *स्त्री.* मेज़ के दोनों तरफ़ या एक तरफ़ लगा वह खाना या बक्स जिसमें कागज़, पैंसिल आदि रखा जाता है।

दरार *स्त्री. (<दर)* लकीर जैसा लंबा छिद्र जो ज़मीन, दीवार, लकड़ी आदि फटने के कारण बन जाता है। **पर्या.** दरज

दरिद्र *वि. (तत्.)* **पर्या.** कंगाल, अति निर्धन, जिसके पास जीवन यापन के लिए न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति संबंधी सामग्री बहुत ही कम यानी नगण्य हो।

दरियाई *वि. (फ़ा.)* 1. नदी संबंधी 2. पानी में रहने वाला। **जैसे:** दरियाई थोड़ा/दरियाई हाथी।

दरियाई घोड़ा *पुं. (देश.)* अफ्रीका में पाया जाने वाला, चौड़े जबड़ों वाला (गैंडे जैसा) भारी-भरकम जानवर जो जलाशयों में और आसपास की भूमि में विचरण करता है। **पर्या.** दरियाई हाथी hippopotamous **उदा.** दिल्ली के चिड़ियाघर में हमने दरियाई घोड़ा देखा।

दरियादिल *वि./पुं. (फ़ा.)* सा.अर्थ/शा.अर्थ दरिया (नदी, सागर) **जैसे:** दिलवाला। (वह व्यक्ति) जिसका दिल विशाल हो, खुले दिल वाला, उदार हृदय।

दरियादिली *स्त्री. (फ़ा.)* उदारता से खर्च करने या दान देने की भावना और सामर्थ्य। **उदा.** उसकी दरियादिली चारों और फैली हुई है।

दरी *स्त्री. (देश.)* 1. मोटे सूत का बुना हुआ एक आयताकार बिछौना जिसे चारपाई या फर्श पर बैठने या सोने के लिए बिछाते हैं। **उदा.** गर्मी में हम फर्श पर दरी बिछाकर सोते हैं। 2. *स्त्री. (तद्.)* कंदरा, गुफ़ा।

दर्ज *वि. (अर.)* रजिस्टर, सूची आदि में लिखा हुआ/चढ़ाया हुआ। **पर्या.** प्रविष्ट entered, recorded

दर्ज करना *स.क्रि.* रजिस्टर, सूची आदि में लिखना/चढ़ाना।

दर्जन *(वि.) (अं.<डजन)* गिनती में बारह का समूह। **जैसे:** एक दर्जन केले, एक दर्जन कापियाँ।

दर्जा *पुं. (अर.दरजः)* 1. छोटे-बड़े या विशिष्टता क्रम से नियत स्थान, श्रेणी, वर्ग। **जैसे**: 1. वातानुकूलित पहला दर्जा (प्रथम श्रेणी), दूसरा दर्जा (द्वितीय श्रेणी) आदि। 2. स्तर **जैसे:** 1. यहाँ ऊँचे दर्जे के लोग रहते हैं। 2. आप अव्वल दर्जे के इंसान है। 3. पद, ओहदा **जैसे**: उनका दर्जा बढ़ा दिया गया है। अब वह कमिश्नर हो गए हैं।

दर्द *पुं. (फा.)* शारीरिक या मानसिक कष्ट या पीड़ा जिसका अनुभव हो या किया जाए। **पर्या.** पीड़ा, कष्ट, तकलीफ़।

दर्दनाम [दर्द + नाक अरबी प्रत्यय] *वि.* शा.अर्थ दर्द (पीड़ा) से नाक (भरा हुआ)। सा.अर्थ जिसमें बहुत दर्द हो; जो दर्द पैदा करने वाला हो; जिसे देख, सुन या पढक़र मन को कष्ट हो।

दर्प *पुं. (तत्.)* दूसरों की तुलना में अपनी बाह्य भौतिक वस्तुओं (जमीन-जायदाद आदि) की विशेषता को लेकर अभिव्यक्त घमंड। **तु.** अहंकार।

दर्पण *पुं. (तत्.)* सा.अर्थ आकृति देखने का शीशा, आईना। **भौ.** (i) प्रकाश का परावर्तन करने वाली सतह; (ii) विलोपित शीशा जो सामने वाली किसी भी वस्तु के रूप को प्रतिबिंबित करे। **तु.** शीशा।

दर्रा *पुं. (फा.)* दो ऊँची पर्वतमालाओं के बीच होकर आर-पार जाने वाला तंग रास्ता **जैसे:** खैबर दर्रा।

दर्शक *वि./पुं. (तत्.)* 1. देखने वाला **जैसे:** नाटक के दर्शक। 2. दिखाने वाला **जैसे:** मार्गदर्शक।

दर्शकदीर्घा *स्त्री. (तत्.)* नियमित सदस्यों के लिए निर्धारित स्थानों को छोडक़र सदन में निर्दिष्ट वह स्थान जहाँ बैठकर गैर सदस्य, अतिथि आदि सदन की कार्यवाही देख सकें। **पर्या.** दर्शकदीर्घा। visiters gallery **उदा.** हमने संसद की कार्यवाही अध्यापकों के साथ दर्शकदीर्घा में बैठकर देखी।

दर्शक वीथी *स्त्री. (तत्.)* **दे.** दर्शक दीर्घा।

दर्शन *पुं. (तत्.)* 1. प्रत्यक्ष देखने का भाव। **जैसे:** दर्शन करना, दर्शन देना, दर्शन सुलभ/दुर्लभ होना आदि। 2. वह शास्त्र जिसमें इस संसार की उत्पत्ति, लय आदि का कारण जानने की इच्छा से तरह-तरह के विचार प्रकट किए जाते हैं।

दर्शन (शास्त्र) *पुं. (तत्.)* वह दया या शास्त्र जिसमें आत्मा, परमात्मा, प्रकृति, जीवन के अंतिम लक्ष्य मोक्ष आदि philosphy तत्वों का तर्कसंगत विवेचन या निरूपण होता है। **जैसे:** भारतीय दर्शन (शास्त्र), वेदांतदर्शन (शास्त्र, जैनदर्शन (शास्त्र) आदि।

दर्शनार्थी *[दर्शन + अर्थी] वि/पु. (तत्.)* शा.अर्थ दर्शन के लिए, दर्शन के प्रयोजन से (आए हुए) श्रद्धालु लोगों का वह समूह जो किसी देव/देवी आदि के दर्शनों के लिए इक्ट्ठे होते हैं। **उदा.** काशी विश्वनाथ के दर्शन हेतु प्रतिदिन हजारों दर्शनार्थी आते हैं।

दर्शनीय *वि.(तत्.)* देखने योग्य। **जैसे:** दर्शनीय स्थल; सुंदर, मनोहर।

दर्शाना *(स.क्रि.<दर्शन)* व्यु.अर्थ दिखाना, ला.अर्थ कोई बात समझा देना (उदाहरण सहित)

दल *पुं. (तत्.)* सा.अर्थ समूह, झूड, गिरोह। 1. **राज.** राजनीतिक उद्देश्य की पूर्ति के लिए समान विचारधारा के लोगों/सदस्यों का संगठन जो चुनाव लड़ता है। 2. सैन्य-सिपाहियों की टुकड़ी। 3. जीव-पुष्प की रंगीन पत्तियाँ जो बाह्य पत्तियों के भीतर होती है। petal **जैसे**: तुलसी दल, कमल दल। **पर्या.** पंखुड़ी।

दलबंदी *[तत् + देश.] स्त्री.* समान हित या स्वार्थ को ध्यान में रखते हुए लोगों द्वारा अपने-अपने समूह बना लेने की स्थिति।

दलबदल *[तत् + देश.] पुं.* स्वार्थवश एक दल को छोडक़र दूसरे दल में मिल जाने वाली उसकी सदस्यता स्वीकार कर लेने का कृत्य।

दलबदलू *वि./पुं. [तत्+देश.]* स्वार्थवश एक दल को छोडक़र दूसरे दल में मिल जाने वाला (व्यक्ति)।

दल-बल *पुं. (तत्.)* अर्थ-समूह और शक्ति। 1. समर्थक जनसमूह, लाव-लश्कर। 2. सगे संबंधी, नौकर आदि। **उदा.** वह दल-बल सहित विरोधियों पर टूट पड़ा।

दलहन *पुं. (तद्. (दालिधान्य)* वह अन्न जिसे दलकर (यानी दाल बनाकर) उपयोग में लाया जाता है। **जैसे**: अरहर, मूँग, उड़द, मसूर, चना आदि।

दलाल *पुं. (अर. < दल्लास)* 1. वह अधिकृत व्यक्ति जो लोगों को सौदा खरीदने या बेचने में सहायता करता है और इसके बदले में दोनों पक्षों से या किसी एक पक्ष से पारिश्रमिक स्वरूप दलाली प्राप्त करता है। agent, broker, middleman **पर्या.** आदत। वह अनधिकृत व्यक्ति जो सार्वजनिक सेवाओं के लिए ग्राहकों से अनुचित रूप से पैसा लेकर चोर रास्ते से जल्दी काम करवाने को उकसाता है।

दलाली *स्त्री.* आदत का काम, दलाल का काम। **दे**. दलाल

दलित *वि. (तत्.)* सा.अर्थ दला हुआ; रौंदा गया; कुचला गया, दबाया हुआ। समाज. (भारतीय संदर्भ में) सदियों से उपेक्षित, शोषित और अधिकार वंचित जाति-आदि से व्यवस्था का शिकार (व्यक्ति, वर्ग या समाज) जिसके उद्धार के लिए अब कई उपाए किए जा रहे हैं।

दलिया *पुं. (<दलना)* दलकर बनाया हुआ। गेहूँ, बाजरा आदि का (i) मोटा दला हुआ रूप तथा (ii) उसका पकाया हुआ भोज्य पदार्थ।

दलील *स्त्री. (अर.)* अपने कथन को पुष्ट करने के लिए दिया गया सोदाहरण तर्क। arguement

दवा/दवाई *स्त्री. (अर.)* 1. रोग भगाने की या रोग दूर करने की औषधि। 2. रोग या तकलीफ को दूर करने का नुस्खा या इलाज। 3. ला.अर्थ किसी संकट या विपत्ति को दूर करने का उपाय, तरीका, ढंग आदि। **जैसे**: यह ज्वर की दवा है।

जैसे: तुम्हारी मुसीबत दूर करने की मेरे पास कोई दवा नहीं है।

दवाखाना *[दवा + खाना] [फ़ा. दवाखाना] पुं.* वह स्थान या भवन जहाँ दवाई देकर रोगी का उपचार किया जाता है। औषधालय, चिकित्सालय। **जैसे**: यूनानी दवाखाना।

दवा-दारू *[अरबी दवा + फा. दारू] (स्त्री.)* रोगी का रोग दूर करने के लिए उपयुक्त औषधि द्वारा उपचार, चिकित्सा। **जैसे**: डाक्टर वृद्धजनों को भी दवादारू करके ठीक कर देते हैं।

दशक *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ दस का समाहार (एकत्रित रूप)। सा.अर्थ दस वर्षों का काल, दशाब्दी decade

दशम *(वि.) (तत्.)* 1. गिनती में क्रम से दस के स्थान पर होने वाला, दसवाँ। **उदा.** गीता के दशम अध्याय में विभूतियों का वर्णन है।

दशमी *वि./स्त्री.* आज दशमी तिथि है।

दशावतार [दश + अवतार] *पुं. (तत्.)* पुराणों में वर्णित भगवान विष्णु के दस अवतार जो हो चुके-मत्स्य, कूर्म, वराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, राम, कृष्ण, बुद्ध और (भावी दसवाँ) कल्कि।

दस्त *पुं. (फ़ा.)* 1. हाथ **दे.** दस्तकार 2. एक हाथ की माप 3. पतला शौच (एक बीमारी)

दस्तक *स्त्री. (फ़ा.)* (हाथ से) खटखटाने की क्रिया का भाव। **विशेष** 'दस्तक' के साथ 'देना' क्रिया लगाई जाती है। **उदा.** किसी ने दरवाज़े पर दस्तक दी है। जाकर देखो।

दस्तकार *पुं. (फ़ा.)* हाथ से काम करने वाला यानी आधुनिक मशीनों का न्यूनतम उपयोग कर मुख्यत: हाथ से ही कलात्मक वस्तुओं का निर्माण करने वाला कारीगर। **पर्या.** हस्तशिल्पी।

दस्तकारी [दस्तकार + ई] *स्त्री. (फ़ा.)* दस्तकार द्वारा निर्मित कला; हाथ की कारीगरी, शिल्प। handicraft, artisanship

दस्तख़त [दस्त = हाथ + खत = अक्षर] *पुं. (फ़ा.)* शा.अर्थ हाथ के (लिखे) अक्षर। सा.अर्थ किसी लिखित सामग्री के नीचे लेखक द्वारा अपनी विशिष्ट शैली में प्रस्तुत नाम। जो अभ्यासवश सर्वत्र समरूप रहते हैं और जिसकी कोई अन्य व्यक्ति प्राय: नकल नहीं कर सकता। **पर्या.** हस्ताक्षर। **टि.** 'दस्तख़त' और 'हस्ताक्षर' दोनों का बहुवचन में प्रयोग होता है। **जैसे**: मेरे दस्तखत (न कि मेरा दस्तखत), पिताजी के हस्ताक्षर (न कि पिताजी का हस्ताक्षर)

दस्ता *पुं. (फा.)* 1. किसी वस्तु, औज़ार, हथियार आदि का वह हिस्सा जो हाथ में पकड़ा जाता है। **जैसे:** चाकू, छुरी आदि की मूठ, बेंत। 2. सैनिकों या सिपाहियों आदि का छोटा दल। **उदा.** सैनिकों का एक दस्ता उपद्रव क्षेत्र में तैनात है। 3. 24 पन्नों का एक समूह, या गड्डी। **उदा.** मुझे एक दस्ता कागज़ दीजिए।

दस्ताना (बहु. दस्ताने) *पुं. (फ़ा.)* हाथ की अंगुलियों और हथेली में पहनने का कपड़े, चमड़े, रबर आदि का बना आवरण।

दस्तावेज़ *पुं. (फ़ा.)* 1. वे कागज़ पत्र जो भविष्य में काम आने की दृष्टि से लिखे जाते हैं। **जैसे:** ऐतिहासिक दस्तावेज़; लेनदेन संबंधी दस्तावेज़। document, deed 2. वे कागज़ात जो मूलत: सामान्य व्यवहार के रूप में लिखे गए पर बाद में वे बहुमूल्य समझे गए। **जैसे**: महापुरुषों के पत्र इत्यादि। document

दस्ती *स्त्री. (फ़ा.)* छोटा दस्ता, छोटी मूठ। 1. हाथ में रहने वाला **जैसे:** रूमाल, हाथों-हाथ पहुँचाया जाने वाली दस्ती चिट्ठी।

दस्तूर *पुं. (फ़ा.)* 1. रिवाज़, प्रथा, रस्म। **उदा.** हमारे यहाँ दस्तूर है कि अतिथि को भूखा नहीं जाने देते। 2. नियम, कायदा, विधि, विधान। **उदा.** विद्यालय का दस्तूर है कि सभी छात्र यूनिफॉर्म में आएँ। (बदस्तूर = प्रथा के अनुसार, कायदे के अनुसार।)

दस्यु *पुं. (तत्.)* हिंसात्मक उपायों अथवा लूटपाट द्वारा अपनी जीविका चलाने वाला व्यक्ति अथवा व्यक्तियों का समूह। **उदा.** वाल्मीकि अपने प्रारंभिक जीवन में दस्यु थे।

दहकना *अ.क्रि. (तत्. < दहन)* इस प्रकार जलना कि आँच में तेज़ी दिखाई पड़े।

दहन *पुं. (तत्.)* जलने की क्रिया या भाव, दाह। **जैसे:** लंका-दहन। **रसा.** किसी पदार्थ का ऑक्सीजन के संयोग से जलना जिसके

परिणामस्वरूप प्रकाश और ऊष्मा उत्पन्न हों। combustion

दहलन *पुं. (तद्. < दलधान्य)* अनाज का वह प्रकार जिसे ढलने पर उकी दो समान परत अलग हो जाती है। **जैसे:** चना, मूँग, मसूर आदि।

दहलना *अ.क्रि. (तद्.)* डर के कारण काँप उठना, भयभीत होना। **उदा.** अँधेरे में शेर की आवाज़ सुन कर उसका दिल दहल गया।

दहलीज़ *स्त्री. (फ़ा.)* दरवाज़े की चौखट में लगी नीचे वाली लकड़ी या पत्थर की पट्टी जो ज़मीन के साथ सटी होती है और जिसे लाँघ कर घर के अंदर या बाहर जाते हैं। **पर्या.** देहली।

दहशत *स्त्री. (फ़ा.)* किसी भावी संकट की संभावना से उत्पन्न डर; किसी भयंकर परिणाम की आशंका का भय/आतंक। **उदा.** कॉलोनी में बम फटा और आतंकी हमलावरों की दहशत फैल गई।

दहाड़ *स्त्री. (देश.)* शेर (के गरजने) की आवाज।

दहाड़ना *अ.क्रि. (देश.)* शेर का गरजना। ला.अर्थ बहुत जोर से चिल्लाकर, बोलना या रोना।

दहेज *पुं. (<अर. जहेज)* वह विशेष धन जो आभूषण, वस्त्र, संपत्ति उपहार आदि के अलावा कन्यापक्ष की ओर से विवाह में वधू को या कहे प्रकारांतर से वर पक्ष की माँग पूरी करने के लिए दिया जाता है। dowry **उदा.** अब दहेज प्रथा ने शान और लालच का रूप धारण कर लिया है।

दांपत्य *पुं. (तत्.)* दंपती यानि पति-पत्नी का विवाह से जुड़ा संबंध, वैवाहिक जीवन। **जैसे:** दांपत्य जीवन।

दाँत *पुं. (तद्.)* 1. जीवों के मुख के अंदर की ओर ऊपर और नीचे के मसूढ़ों के ऊपर किनारे-किनारे निकली हुई कठोर व श्वेत लघु आकार की वे हड्डियाँ जिनसे वे किसी वस्तु को खाते या काटते, चबाते हैं। **पर्या.** दशन, रद, दंत। **मुहा.** 1. दाँत काटी रोटी होना=अत्यंत घनिष्ठ मित्रता होना। 2. दाँत खट्टे करना=लड़ाई में दुश्मन को करारी मात देना। 3. दाँत पीसना=मन ही मन बहुत क्रोध करना। 4. दाँतों तले ऊँगली दबाना=बहुत चकित होना, दंग रह जाना। 2. किसी तेज औजार में कंधी इत्यादि में दाँतों की तरह का भाग। **जैसे:** आरी के दाँत, कंधी के दाँत। दांपत्य जीवन = वैवाहिक जीवन।

दाँव *पुं. (तद्. (द्रव्य)* 1. वह द्रव्य या धन जो खिलाड़ी द्वारा जुएँ में लगाया जाता है। **उदा.** युधिष्ठिर ने तो जुएँ में अंततः द्रौपदी को भी दाँव पर लगा दिया था। 2. कोई कार्य करने या खेल खेलने का वह अग्रसर या पारी जो क्रम से सभी को मिलती है।

दाँव-पेच *पुं. (देश.)* 1. खेलकूद, कश्ती आदि की प्रतियोगिताओं में दूसरे पक्षर को हराने के लिए अपनाई जाने वाली युक्तियाँ। 2. कपटपूर्ण युक्ति। **उदा.** कुश्ती में प्रतिद्वंद्वी को हराने के लिए ताकत ही नहीं अवसरोचित दाँव-पेंच भी जरूरी होते हैं।

दाई *स्त्री. (तद्. धात्री)* 1. प्रसूति कर्म में सहायक अथवा प्रसूता स्त्री की देख-रेख करने के लिए प्रशिक्षित महिला जिसने इस कार्य को व्यवसाय के रूप में अपना रखा हो। midwife 2. दूसरे के बच्चे को अपना दूध पिलाने या उसकी देख-रेख करने वाली स्त्री। **पर्या.** धाय, धात्री। **जैसे:** इतिहास प्रसिद्ध पन्ना धाय (दाई)

दाऊ *पुं. (देश.)* 1. बड़ा भाई। 2. कृष्ण के बड़े भाई बलराम (बलदाऊ) **उदा.** मैया मोहि दाऊ बहुत खिझायौ। (सूरसागर)

दाख *स्त्री. (तद्. द्राक्षा)* सूखे, अंगूर का मेवा। **पर्या.** किशमिश।

दाखिला *पुं. (फ़ा.)* किसी शिक्षा संस्थान, अस्पताल के अंतरंग कक्ष आदि में प्रवेश। **पर्या.** प्रवेश। एडमिशन **तुल.** नामांकन, पंजीयन।

दाग[1] *पुं. (तद्. दाह दहन)* बोलीगत प्रयोग-शव को अग्नि देने का काम।

दाग[2] *पुं. (फ़ा.)* 1. धब्बा, चित्ती **उदा.** फलों में दाग लगे हैं। 2. निशान, चिह्न **उदा.** उसके हाथ पर जन्म से ही विशेष दाग है। 3. ऐव, दोष **उदा.** मेरे लडक़े में कोई दाग नहीं है।

दागदार *[दाग+दार] वि. (फा. दागदार)* 1. जिस पर दाग या धब्बा लगा हो, **जैसे:** ये सेब दागदार हैं। 2. कलंकित, दोषयुक्त। 2. राजनीति में कई नेता दागदार भी होते हैं। **जैसे**: यह व्यक्ति चरित्र की दृष्टि से दागदार है। 2. जिसे दाग दिया गया हो, जलने के निशान से युक्त। यह पशु दागदार है।

दागना *[दाग+ना] स.क्रि. (दाग दाह)* 1. शरीर के किसी अंग या किसी वस्तु के तल को गर्म लोहे से छूकर चिह्नित करना। 2. गोली/गोला/तोप चलाना। **जैसे:** राष्ट्रपति के सम्मान में 21 तोपें दागकर सलामी दी गई।

दाढ़ *स्त्री. (तद्.<दंष्ट्र)* 1. मुख के अंदर ऊपर और नीचे दोनों ओर मोटे और चोड़े आठ दाँत जो भोजन चबाने का काम करते हैं। 2. इन दाँतों के नीचे का मसूढ़ का भाग। **जैसे:** मेरी दाढ़ में हल्का-सा दर्द है।

दाता *वि. (तत्.)* 1. दान करने वाला (व्यक्ति)। **पर्या.** दानी, दानकर्ता। **उदा.** समाज में **दाता** तो कोई ही होता है। **विलो.** कृपण। 2. देने वाला। **जैसे:** विद्यादाता, ऋण दाता।

दातुन/दातौन *स्त्री.* 1. नीम, बबूल आदि की पतली, छोटी, नरम टहनी जिसके एक सिरे को दाढ़ों से कुचलकर और ब्रुश-सा बनाकर दाँत साफ़ करते हैं। 2. दाँत साफ़ करने/माँजने की क्रिया। ग्राम्य प्रयोग-दातुन/दातौन।

दाद[1] *पुं. (तद्.<दद्रु)* फफूँद के संक्रमण से उत्पन्न चर्मरोग जिसमें गाढ़े छल्लेदार चकत्ते उभर आते हैं और खुजली महसूस होती है। **उदा.** दाद एक भयानक चर्मरोग है। ring worm

दाद[2] *स्त्री. (फ़ा.)* किसी के कथन, कार्य, रचना आदि की निष्पक्ष खुली तारीफ। **उदा.** जब अपने शेर पढ़े तो श्रोताओं की ओर से उसे बहुत सारी दाद मिली। 2. तुमने अपनी जान पर खेलकर डूबते बच्चे को बचाया। हम तुम्हारे साहस की दाद देते हैं।

दादन व्यवस्था *स्त्री. (तत्.)* कपड़ा बेचने वाले व्यापारियों द्वारा बुनकरों को कच्चा माल (सूत, रेशम) देने और बुनकरों से तैयार माल लेकर बाजार में बेचने की व्यवस्था।

दादा *पुं. (तद्.<तात)* 1. पिताजी के पिताजी, **पर्या.** पितामह। 2. (क्षेत्र विशेष में) बड़े भाई (दादा भाई) 3. आदरसूचक शब्द (बंगाल में)। 4. (क्षेत्र विशेष में) लोगों पर अपना रोब जताने वाला व्यक्ति।

दादागिरी *[दादा+गिरी फ़ा. प्रत्यय] स्त्री. (तद्>तात+फा.)* ला.अर्थ किसी बदमाश या गुंडे द्वारा समाज में लोगों को डराधमकाकर या मारपीटकर अपनी बात मनमाने का भाव गुंडागर्दी। **जैसे:** कुछ लोग दादागिरी करके दुकानदारों से पैसे ऐंठते हैं। gungstrism

दान[1] *पुं. (तत्.)* व्यु.अर्थ देने की क्रिया या भाव। सा.अर्थ वह धर्मार्थ कृत्य जिसमें परोपकार के लिए और श्रद्धापूर्वक किसी व्यक्ति या संस्था को धन आदि दिया जाता है। **पर्या.** खैरात। **उदा.** उसमें विद्यालय निर्माण के लिए अपनी जमीन दान कर दी।

दान[2] *(फ़ा.)* फारसी का एक प्रत्यय जो कुछ शब्दों के साथ जुड़कर 1. आधान या पात्र का अथवा 2. जानने वाले का अर्थ सूचित करता है। **जैसे:** 1. नमकदान, पानदान, (-का पात्र) 2. कद्रदान (-को जानने वाला)

दान-पात्र *[दान+पात्र] पुं. (तत्.)* एक ताला लगा/सीलबंद पात्र जिसमें एक लंबा छिद्र बना होता है तथा लोग बाग दान देने योग्य राशि उसमें डालते हैं।

दान-पुण्य *[दान+पुण्य] पुं. (तत्.)* 1. दान आदि ऐसे अच्छे कार्य करना जिनसे करने वाले का पुण्य मिले। **जैसे**: अन्नदान, वस्त्रदान, रक्तदान आदि। 2. परहित के कार्य **उदा**. मनुष्य को अपनी सामर्थ्य के अनुसार दान-पुण्य करना चाहिए।

दानवीर *वि. (तत्.)* बहुत बड़ा दानी, दान देने में उदारता दिखाने वाला। **उदा**. कुंती पुत्र कर्ण शूरवीर ही नहीं दानवीर भी थे।

दाना *पुं. (फ़ा.)* 1. अनाज का बीज या कण। **मुहा.** दाने-दाने को तरसना=दरिद्र होना। दाना-पानी उठ जाना=आजीविका समाप्त हो जाना। 2. फल या छोटा बीज **जैसे:** पोस्ते का दाना। 3. कोई छोटी गोल वस्तु **जैसे:** घुँघरू, मोती या अनार के दाने। 4. शरीर पर निकले उभार **जैसे:** चेहरे के दाने (मुँहासे या चेचक के दाने।) 5. संख्या का भाव देने वाला शब्द **जैसे**: माला के कुछ दाने खरीदने हैं। चार दाने तौल दो (आम के)।

दाब *पुं. (दबना)* सा.अर्थ. दबने का प्रभाव। **भौ.** किसी प्रति इकाई पृष्ठ क्षेत्र पर लंबवत् लगने वाला बल। इसका मात्रक पास्कल है। pressure

दाम *पुं. (फ़ा.)* विभिन्न उत्पादों का खुदरा मूल्य; कीमत। **जैसे:** इस टी.वी. का दाम क्या है? 2. *पुं.*

(तत्.) 1. रस्सी, डोरी। **जैसे:** दामोदर (दाम+उदर) 2. चार नीतियों (साम, दाम, दंड, भेद) में से एक जिसमें शत्रु को धन आदि देकर वश में किया जाता है।

दामन *पुं. (फ़ा.)* सा.अर्थ वस्त्र का किनारा। **मुहा.** दामन छुड़ाना=पीछा छुड़ाना, मुक्त होना 2. दामन फैलाना = सहायता के लिए याचना करना; भीख माँगना।

दामाद *पुं. (तद्. (जमाता/जामात्; फ़ा.)* बेटी का पति। **पर्या.** जवाँई, जमाई।

दामिनी *स्त्री. (तत्.)* आकाश में चमकने वाली, विद् युत बिजली। **उदा.** 'दामिनि दमक रहन घन माँही।'

दायर करना *स.क्रि. [अर.+हिंदी]* **उदा.** अदालत में सुनवाई के लिए प्रस्तुत/पेश करना। **उदा.** पुलिस ने यातायात के नियम तोड़ने वाले के खिलाफ अदालत में मुकदमा दायर कर दिया हैं

दायरा *[अर. + दादूर:] पुं.* एक निश्चित सीमा वाला क्षेत्र। **पर्या.** घेरा, मंडल, क्षेत्र।

दायाँ *वि. (देश.)* (शरीर का) दाहिना (भाग या अंग)। **जैसे:** दायाँ हाथ, दायाँ कान। अव्यय के रूप में प्रयोग किसी क्षेत्र या स्थान की स्थिति का परिचयात्मक संकेत। **जैसे:** यहाँ से दायें विद्यालय और बाएँ बाग है। **विलो.** बायाँ। स्त्री- दायीं (दायीं आँख)

दायित्व *पुं. (तत्.)* 1. सौंपे गए काम को ठीक तरह से पूरा करने की जिम्मेदारी। obligation 2. किसी अन्य के प्रति देनदारी। liability

दायित्व बोध *पुं. (तत्.)* दायित्व या जिम्मेदारी समझने का सूचक भाव।

दारु *स्त्री. (फ़ा.)* 1. औषध, दवा (मद्य निर्मित पेय का दवा के रूप में उपयोग-विशेष रूप से आसव के रूप में। **जैसे:** दक्षासव। 2. मदिरा, शराब। **उदा.** दारु पीना स्वास्थ्य के लिए हितकर नहीं है।

दारुण *वि. (तत्.)* जो अत्यंत भयं का या पीड़ा कारक हो, **जैसे:** दारुण दृश्य; दारुण व्यथा। **उदा.** जाको विधि दारुण दु:ख दीन्हा। ताकी मति पहले हरि लीन्हा।।

दार्शनिक *[दर्शन+इक] पुं.वि. (तत्.) पुं.* दर्शनशास्त्र का ज्ञाता या विद्वान। **उदा.** दार्शनिक का चिंतन बहुत ही गूढ़ या तात्विक होता है। *वि.* दर्शनशास्त्र से संबंधित दार्शनिकों की तरह। **उदा.** 1. यह दार्शनिक ग्रंथ है। 2. भाषण दार्शनिक विचारों से भरा था। कुछ समझ में नहीं आया।

दार्शनिक *[सं. दर्शन+इक] पुं. (तत्.)* दर्शन शास्त्र का जानकार, दर्शनशास्त्र का ज्ञाता। **वि.** दर्शनशास्त्र संबंधी।

दाल *स्त्री. (तद्.)* अरहर, मूँग, उदड़, चना आदि को दलने पर हुए उसके दो भागों का समूह जिसे पकाकर चावल या रोटी के साथ खाते हैं। **मुहा.** दाल-रोटी चलना=निर्वाह होना। दाल गलना=योजना सफल होना। दाल न गलना=योजना सफल न होना। दाल में काला=कोई-न-कोई रहस्य या दोष।

दाला *पुं. (फ़ा.)* कमरे के बाहर का गलियारेनुमा खुला भाग जिसके ऊपर छत होती है। **पर्या.** बरामदा।

दाव *पुं. (तत्.)* 1. वन, उपवन। **जैसे:** मृगदाव=वह उपवन जहाँ मृग पाले गए हों। 2. आग विशेषकर जंगलों में लगने वाली)।

दावत *स्त्री. (अर. (दअवत)* किसी विशेष अवसर पर भोजन (खाने-पीने) का प्रबंध भी। **पर्या.** भोज। **उदा.** पुत्रोत्सव के उपलक्ष्य में हमारे यहाँ दावत है। आप अवश्य पधारिए।

दावा *पुं. (अर.)* किसी वस्तु पर जताया गया अपना अधिकार/हक। **उदा.** तालाब के पास की जमीन पर हमारा दावा बनता है। क्लेम 2. न्यायालय में प्रस्तुत अभियोग। सूट 3. दृढ़तापूर्वक कुछ कहना। **उदा.** मैं दावे के साथ कहता हूँ कि यह काम होकर रहेगा।

दावानल *[दाव+अनल] पुं. (तत्.)* वन में लगी भयंकर आग को बाँसों आदि की रगड़ के कारण पैदा होती है और फैल जाती है। **पर्या.** दावाग्नि। **टि.** अग्नियाँ तीन प्रकार की बतलाई गई हैं- दावानल (जंगल की आग), बड़वानल (समुद्र में लगने वाली आग), जठरानल (पेट की आग) जो भोजन पकाती है, पाचनशक्ति।

दावेदार *[अर.दावा+फा.दार] वि./पुं.* 1. किसी वस्तु, संपत्ति आदि पर अपना दावा करने वाला। अपना अधिकार/हक जताने वाला। 2. विधि न्यायालय में वाद प्रस्तुत करने वाला, मुद्दई।

दास *पुं. (तत्.)* 1. खरीदा हुआ नौकर **पर्या.** गुलाम स्लेव एक उपाधि। 2. वह जो किसी की सेवा में अपने आपको समर्पित कर दे। नौकर भृत्य।

दासता *[दास+ता प्रत्यय] स्त्री. (तत्.)* 1. दास होने की अवस्था/भाव। 2. दासत्व, गुलामी। **उदा.** भारतवर्ष सैकड़ों वर्षों की दासता के बाद स्वतंत्र हुआ।

दास-प्रथा *स्त्री. (तत्.)* 1. प्राचीनकाल में प्रचलित वह प्रथा जिसमें अमीर लोग श्रमजीवी लोगों को दास बनाकर रखते थे; अथवा गुलामों को खरीदते और बेचते थे। **उदा.** आधुनिक युग में दास-प्रथा का प्रचलन समाप्त हो गया है।

दाह *पुं. (तत्.)* 1. जलाने की क्रिया या भाव। 2. शव का अत्येष्टि संस्कार। **उदा.** उनका दाह संस्कार विधिवत् संपन्न हो गया। 3. ताप, जलन। 4. ईर्ष्या के कारण मन में होने वाली जलन। **पर्या.** डाह।

दाहक *वि. (तत्.)* जलाने वाला। **उदा.** सिल्वर नाइट्रेट दाहक पदार्थ है।

दाहिना *वि. (तद्. <दक्षिण)* पूर्व की ओर मुँह करके खड़े होने पर दक्षिण दिशा की ओर का शारीरिक अंग, दक्षिण। **विलो.** बायाँ।

दाह्य *वि. (तत्.)* जलाने योग्य, जलने वाला।

दिक् *स्त्री. (तत्.)* दिशा। **जैसे:** दिक्सूचक यंत्र।

दिक्कत *स्त्री. (अर.)* दिक् (परेशानी) का भाव; जिसके कारण आसानी न बनी रहे। **पर्या.** मुश्किल, तकलीफ, कठिनाई।

दिक्सूचक यंत्र *पुं. (तत्.)* दिशा का ज्ञान कराने वाला उपकरण जिसमें एक चुंबक होता है और सुई की नोक उत्तर दिशा की ओर संकेत करती है। **पर्या.** कुतुबनुमा compass

दिखावट *[दिख+आवट] स्त्री. (देश.)* दिखने/दिखाने का भाव; तडक़-भडक़, आडंबर।

दिखावटी *वि. (देश.)* शा.अर्थ मात्र दिखाने के लिए; देखने में। सा.अर्थ जो केवल रूप रंग-आकार, आदि की दृष्टि से देखने में अच्छा लगे या दिखाने के लिए हो, परन्तु वास्तविकता से दूर हो। **पर्या.** बनावटी, नकली। **उदा.** ये फूल दिखावटी अर्थात् कागज के हैं, असली नहीं।

दिग्गज *[दिक्+गज] पुं. (तत्.)* शा.अर्थ दिशाओं के हाथी, पुराण। धरती को सँभालने के लिए दिशा विशेष में स्थित हाथी या गज। **टि.** धरती की आठ दिशाओं के लिए आठ दिग्गजों की स्थिति मानी गई है। ला.अर्थ अपने विषय का सर्वोच्य या पारंगत व्यक्ति। **जैसे:** दिग्गज पंडित, दिग्गज नेता।

दिग्दर्शन *पुं. [दिक्(दिशा)+दर्शन](तत्.)* 1. दिशा दिखाने का भाव। मार्गदर्शन, दिशा-निर्देश। 2. किसी होने वाले कार्य के बारे में यह बताना कि 'कहाँ क्या हो रहा है?'। 3. वह जो किसी विषय में उदाहरणस्वरूप उपस्थित किया जाए। नमूना। **जैसे:** हमें आपके दिग्दर्शन की आवश्यकता है।

दिग्भ्रम [दिक्+भ्रम] *पुं. (तत्.)* दिशा संबंधी भ्रम, दिशा भूल जाना। **उदा.** मार्ग में चलते-चलते दिग्भ्रम होने से मैं समय से पहुँच न सका। *ला.* वास्तविक लक्ष्य से भटकाव। **जैसे**: जीवन पथ अनेक हैं-दिग्भ्रम होना स्वाभाविक है।

दिन *पुं. (तत्.)* सीमित अर्थ 1. सूर्य निकलने से सूरज के अस्त होने तक का काल या समय। **विलो.** रात। 2. विस्तृत अर्थ. चौबीस घंटों का समय। **उदा.** जनवरी 31 दिनों का महीना है।

दिनकर *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ. दिन को बनाने वाला, सूर्य। **दे.** सूर्य।

दिनचर्या *[दिन + चर्या] स्त्री. (तत्.)* सुनिश्चित क्रम से किए जाने वाले प्रतिदिन के कार्यों का विवरण। daily, routine

दिन-दहाड़े *क्रि.वि. (देश.)* 1. दिन के समय, उजाले में। 2. सबके सामने, खुले में। **उदा.** आज डाकुओं ने दिन-दहाड़े बैंक में लूटपाट की।

दिन-ब-दिन *क्रि.वि. [तत्.+फ़ा.+तत्.]* क्रमश: प्रतिदिन (उन्नति या अवनति के क्रम में)। **उदा**. हमारा देश दिन-ब-दिन विकास कर रहा है।

दिमाग़ *पुं. (अर.)* 1. खोपड़ी में सुरक्षित वह अंग जो तंत्रिका का केंद्र है और समस्त शारीरिक और मानसिक क्रियाओं का नियंत्रक है। **पर्या.** मस्तिष्क, भेजा। brain 2. मानसिक शक्ति, बुद्धि। **उदा.** कठिन परिस्थिति में हमें दिमाग़ से काम लेना चाहिए। **मुहा.** 1. दिमाग़ का (सातवें) आसमान पर चढ़ना=बहुत अभिमान होना। 2. दिमाग़ खाना या चाटना=व्यर्थ ही बहुत अधिक बोलकर किसी को परेशान करना। 3. दिमाग़ में

भूसा भरा होना=मूर्ख होना। 4. दिमाग़ लड़ाना=आवश्यकता से अधिक सोचना-विचारना।

दिया सलाई *स्त्री. (देश.)* 1. चीड़ आदि वृक्षों की कोमल लकड़ी से बनायी गई तीलियाँ। इनके एक सिरे पर रासायनिक पदार्थ फासफोरस लगा होता है जिसे किसी विशिष्ट तल पर रगडक़र अग्नि उत्पन्न की जाती है। 2. उक्त तीलियाँ रखने की डिब्बी। **पर्या.** माचिस। **मुहा.** दियासलाई लगाना=आग लगाना।

दिया/दीया *पुं. (तत्.दीप)* मिट्टी या धातु का बना छोटा दीपक जिसमें तेल-बाती डालकर रोशनी के लिए उसे जलाया जाता है। **पर्या.** दीया बुझना=जीवन का अंत हो जाना, किसी के शासन का अंत हो जाना।

दिल *पुं. (फ़ा.)* 1. शरीर का वह अंश जो पूरे शरीर को शुद्ध रक्त की आपूर्ति करता है। 2. मन, चित्त। **उदा.** मुझे क्या पता तुम्हारे दिल में क्या है। 3. साहस, हिम्मत। **जैसे:** दिल वाला आदमी=हिम्मत वाला आदमी। **मुहा.** दिल कड़ा करना=हिम्मत जुटाना। दिल गवाही देना=भावनात्मक सहमति। दिल मिल जाना=विचार एवं भावनाएँ एक जैसी होना। दिल में फरक आना=विचार बदल जाना। दिल का दौरा=हृदय की बीमारी।

दिलचस्प *वि. (फ़ा.)* शा.अर्थ दिल से चिपकने वाला। मन (दिल) को अच्छा लगने वाला। **पर्या.** मनोरंजक, मनोरम। **उदा**. आपने जो कहानी सुनाई वह बड़ी दिलचस्प है।

दिलचस्पी *[दिलचस्प+ई] स्त्री. (फ़ा.)* मन (दिलों को अच्छा लगने की स्थिति)। **दे.** दिलचस्प। **उदा.** मैं आपकी कहानी को पूरे समय बड़ी दिलचस्पी से सुनता रहा।

दिल-जला *[फा. दिल+हि.जलना] वि.* शा.अर्थ दिल का जला हुआ। सा.अर्थ 1. जिसे बहुत ही मानसिक कष्ट पहुँचा हो; अतिदुःखी। **उदा.** दिलजला वह बेचारा क्या करे।

दिलासा *पुं. (फ़ा.)* 1. किसी विषम परिस्थिति के कारण दुःखी या परेशान इंसान को सांत्वना देना या ढाढ़स बँधाना। **पर्या.** ढाढ़स, तसल्ली, आश्वासन। **उदा.** हमें दुःखी व्यक्तियों को दिलासा देना चाहिए।

दिलेर *वि. (फ़ा.)* 1. जिसमें वीरता एवं साहसपूर्ण कार्य करने की क्षमता हो। **पर्या.** बहादुर, निडर, निर्भीक, साहसी। **उदा.** वह इतना दिलेर है कि उसने अकेले ही डाकुओं का सामना किया।

दिलेरी *स्त्री.* बहादुरी, निर्भयता, साहस, दानशीलता।

दिलोजान *[दिल+ओ+जान] स्त्री. (फ़ा.)* शा.अर्थ दिल और जान यानी मन और प्राण (काव्यात्मक शब्दावली)। **उदा.** मैं तुम्हें दिलोजान से चाहता हूँ।

दिवंगत *वि. (तत्.)* जो स्वर्ग चला गया हो यानी स्वर्गीय, मृत। **उदा.** शोकसभा में दिवंगत आत्मा की शांति के लिए दो मिनट का मौन रखा गया।

दिवा *पुं. (तत्.)* दिन, दिवस। *क्रि.वि.* दिन में /दिन के समय। **उदा.** उनका यहाँ दिवा कार्यक्रम है। **विलो**. रात्रि।

दिवाकर *पुं. (तत्.)* अँधेरा मिटाकर दिन का उदय करने वाला अर्थात् सूरत। **पर्या.** सूर्य।

दिवाला *पुं. (देश.=जलाना)* किसी व्यक्ति या संस्था की वह दयनीय आर्थिक स्थिति जिसके कारण वह यथा समय ऋण चुकाने की यानी देनदारी की क्षमता खो चुका हो। **मुहा** 1. दिवाला निकलना=बहुत घाटा होना; किसी चीज़ या गुण का बिल्कुल न रह जाना। **जैसे:** बुद्धि का दिवाला निकलना।

दिवालिया *[हि. दिवाला+इया-प्रत्य.] वि. (देश.)* जिसका दिवाला निकल चुका हो; जिसके पास ऋण वापस करने के लिए कुछ भी न बचा हो।

दिव्य *वि. (तत्.)* 1. स्वर्ग या आकाश से संबंधित। **यथा.** दिव्य लोक से आई हुई अप्सरा। 2. दैवी, अलौकिक। **यथा.** दैवी गुण, दैवी शक्ति, दिव्य सौंदर्य।

दिव्य दृष्टि [दिव्य+दृष्टि] *स्त्री. (तत्.)* वह अलौकिक दृष्टि जिससे भूत, वर्तमान तथा भविष्यत् कालिक सभी घटनाओं को देखा या जाना सके। **पर्या.** ज्ञान-दृष्टि। **जैसे:** संजय ने दिव्यदृष्टि के सहारे ही धृतराष्ट्र को महाभारत के युद्ध का सारा हाल सुनाया था।

दिव्यास्त्र *[दिव्य+अस्त्र]पुं. (तत्.)* देवताओं द्वारा प्रदत्त अस्त्र; दिव्य (मंत्र की) शक्ति से चलाया जाने वाला अस्त्र। **उदा.** महाभारत युद्ध से पहले अर्जुन दिव्यास्त्रों की खोज में निकला।

दिशानिर्देश *[दिशा+निर्देश] पुं. (तत्.)* दिशा वाली कार्य करने की पद्धति बतलाने का भाव; कठिनाइयों में रास्ता दिखलाने का भाव। **पर्या.** मार्गदर्शन।

दिसि *स्त्री. (तद्.)* दिशा में या दिशाओं में (कविता में प्रयोग)। **जैसे:** चहुँ दिसि=चारों दिशाओं में। पूरब दिसि=पूर्व दिशा में।

दिहाड़ी *स्त्री. (देश.)* 1. दिन, दिवस। 2. दिनभर का कार्य। 3. दिनभर के कार्य की मज़दूरी।

दीक्षा *स्त्री. (तत्.)* किसी धार्मिक गुरू का शिष्य बनते समय या किसी संप्रदाय में दीक्षित होते समय कान में (गोपनीय ढंग से) फूँका जाने वाला मंत्र और उसकी शिक्षा; धर्म गुरू द्वारा मंत्र का उपदेश।

दीदा *पुं. (फ़ा.)* देखने की इँद्रिय। 2. दृष्टि, नजर। 3. आँख, नेत्र। **मुहा.** 1. दीदा लगना=दिल लगना (किसी कर्म में)। 2. दीदा फाड़कर देखना=एकटक देखना। 3. दीदे मटकाना=हावभाव से आँखें मटकाना।

दीदी *स्त्री. (देश.)* 1. बड़ी बहन। 2. उम्र में थोड़ी बड़ी महिलाओं के लिए आदरपूर्ण संबोधन। **उदा.** मेरी दीदी का विवाहोत्सव आज संपन्न होगा। **पुं.** दादा (बड़ा भाई)।

दीन *वि./पुं. (तत्.)* 1. गरीब, निर्धन; दु:खी, दुर्दशा को प्राप्त, करूण; विनम्र, विनीत। **उदा.** देखि सुदामा की दीन दसा, करूणा करके करूणानिधि रोये। **पर्या.** (अर.) धर्म, मजहब, मत, संप्रदाय। **मुहा.** दीन दुनिया=परलोक और इहलोक।

दीन-ए-इलाही *पुं.[दीन* (धर्म)+इलाही (ईश्वर)] *(अर.)* ईश्वरीय धर्म, जो मुगल सम्राट अशोक द्वारा धार्मिक समन्वय के रूप में प्रवर्तित किया गया था और जो बाद में चल न सका।

दीनदयाल *[दीन+गरीब+दयाल=दया करने वाला] वि. (तत्.) पुं.* गरीबों पर दया करने वाला, दीनों का सहायक। जो दीनों (गरीबों) पर दया करता हो यानि ईश्वर, परमेश्वर।

दीन-दसा *स्त्री. (तद्.) (दीन-दशा)* 1. दीनतापूर्ण अर्थात् गरीबी की अवस्था या स्थिति, गरीबी की हालत; विपन्नावस्था, दारिद्रय, दरिद्रता; दुर्दशा।

दीन-दुनिया *[अरबी-दीन+हि.दुनिया] स्त्री.* 1. लोक और परलोक (वस्तुत: परलोक और लोक)। 2. धर्म और संसार। 3. संसार के सारे काम, चिंताएँ आदि। **उदा.** तुम दीन-दुनिया की बातें छोड़ अपनी बात करो। **मुहा.** दीन-दुनिया दोनों से जाना=लोक-परलोक दोनों बिगड़ना।

दीन-हीन *वि. (तत्.)* जो बहुत ही दयनीय दशा में हो; बहुत ही गरीब, दरिद्र।

दीपशिखा *स्त्री. (तत्.)* जलते हुए दीपक की ऊपर उठती हुई लौ। **उदा.** मेरी कामना है कि तुम सदा दीपशिखा सी दीप्तिमान रहो।

दीपावली *[दीप+अवली=पंक्ति] स्त्री. (तत्.)* शा.अर्थ दीपकों की पंक्ति या माला। एक प्रमुख भारतीय पर्व जिसमें लोग कार्तिक मास की अमावस्या को सायंकाल घर में दीपकों को एक पंक्ति में रखकर जलाते हैं तथा रात को लक्ष्मी पूजन कर मिष्ठान वितरण करते हैं। **पर्या.** दीवाली, दीपमालिका, दीपोत्सव। **उदा.** दीपावली हर्षोल्लास का प्रिय पर्व है।

दीप्ति *स्त्री. (तत्.)* 1. चमक, कांति, प्रकाश, उजाला। 2. शोभा।

दीमक *स्त्री. (फ़ा.)* चींटी की तरह के सफेद कीड़ों का समूह जो दीवार, लकड़ी, कागज आदि को नुकसान पहुँचाता है।

दीर्घ *वि. (तत्.)* 1. बड़ा, विशाल। **जैसे:** दीर्घ वृत्त, दीर्घ जीवन। 2. लंबा, 3. विस्तृत, 4. गुरु, 5. ऊँचा, उच्च। 6. गहरा। **जैसे:** दीर्घ श्वास। **मुहा.** दीर्घ मात्रा-'आ', 'ई', उ आदि। **विलो.** 'ह्रस्व'। **टि.** **'अ'** ह्रस्व है तो 'आ' दीर्घ। ह्रस्व स्वर-'अ', 'इ', उ। दीर्घ स्वर-'आ', 'ई', 'ऊ', 'ए', 'ऐ', 'ओ', 'औ'।

दीर्घजीवी *वि. (तत्.)* लंबे समय तक जीवित रहने वाला। **पर्या.** चिरायु, चिरंजीवी। **जैसे:** दीर्घजीना भव (आशीर्वाद)

दीर्घवृत्ताकार *[दीर्घ+वृत्त+आकार] वि. (तत्.)* फैले वृत्त के आकार वाला, अंडाकृति वाला। **उदा.** पृथ्वी दीर्घवृत्ताकार मार्ग से सूर्य की परिक्रमा करती है।

दीर्घायु *[दीर्घ+आयु (आयुस्] वि. (तत्.)* 1. लंबी आयु पाने वाला जो बहुत दिनों तक जीवित रहे, चिरंजीवी। **उदा.** वत्स! तुम दीर्घायु हो।

दीवान *पुं. (फ़ा.)* 1. वह स्थान जहाँ बादशाह का दरबार लगता हो, राजसभा। **जैसे:** मुगल काल में, दीवान-आम-आम जनता के लिए लगने वाला

दरबार। दीवान-ए-खास-खास लोगों के लिए लगने वाला दरबार। 2. राजा का मंत्री, वजीर। 3. एक प्रकार का तख्त जिसमें सामान रखने के साथ-साथ बैठा-लेटा भी जा सकता है। 4. (उर्दू के) कवि की कविताओं का संग्रह; स्वनाओं का संग्रह। **जैसे:** दीवाने गालिब।

दीवानगी *स्त्री. (फ़ा.)* 1. वृद्धि की विक्षिप्तावस्था, पागलपन, दीवानापन, उन्मत्ता। 2. किसी कार्य या विचार में अत्यधिक तन्यमता की स्थिति। **जैसे:** उसकी व्यापार के प्रति दीवानगी देखने लायक है।

दीवाना *पुं. (फ़ा. दीवान:)* 1. किसी कार्य के प्रति अत्यधिक आतुरता वाला व्यक्ति। **जैसे**: देशभक्ति के दीवाने। 2. पागल। 3. प्रेमी, आशिक।

दीवानी *स्त्री.* मीरा श्रीकृष्ण की दीवानी थी।

दीवानी *स्त्री. (फ़ा.)* 1. वह न्यायालय जिसमें रुपए-पैसे के लेन-देन तथा संपत्ति के मुकद्मों की सुनवाई हो। **जैसे:** दीवानी अदालत (सिविल कोर्ट) **तु.** फौजदारी अदालत criminal court 2. दीवान का पद। **वि.** प्रेम में पागल। **जैसे:** प्रेमदीवानी मीरा।

दीवाली *स्त्री. (तद्. (दीपावली)* व्यु.अर्थ दीपों की पंक्ति। प्रचलित अर्थ-कार्तिक मास की अमावस्या को पड़ने वाला त्योहार जिसमें दीए जलाए जाते हैं, पटाखे, लक्ष्मी-पूजन किया जाता है आदि-आदि। **टि.** इसी दिन व्यापारी बही खाते का पूजन करके उसकी शुरुआत करते हैं।

दीशांत समारोह *पुं. (तत्.)* 1. विश्वविद्यालयों में आयोजित वह समारोह जिसमें सफल परीक्षार्थियों (स्नातक, स्नातकोत्तर, एमफिल, पीएचडी, डीफिल आदि) को कुलपति/उपकुलपति द्वारा उपाधि, प्रमाण पत्र प्रदान किए जाते हैं।

दुआ *स्त्री. (अर.)* ईश्वर से किसी अच्छे काम के लिए की गई याचना कोई चीज माँगना। **उदा.** आपकी दुआ से मैं इंजीनियर बन गया।

दुआ-सलाम *पुं. (अर.)* लोगों के मिलने पर परस्पर एक-दूसरे के प्रति ईश्वर से शुभकामना या प्रार्थना करते हुए प्रणाम या बंदगी करना। **उदा.** उन्होंने दुआ-सलाम के पश्चात् अपनी कार्ययोजना पर बात की।

दुकेला *वि. (देश.)* जिसके साथ कोई और हो यानि दो। 'अकेला' के अनुकरण पर बना शब्द प्रयोग। **उदा.** उस रास्ते से अकेले-दुकेले नहीं जाना चाहिए।

दु:ख/दुख *पुं. (तत्.)* व्यु-अर्थ दु:=बुरा+ख, आकाश/वातावरण=बुरा यानी न भाने वाला परिवेश/वातावरण। शरीर और इंद्रियों की प्रतिकूलता की स्थिति में न में होने वाली हलचल; मन को न सुहाने वाली प्रतिकूल परिस्थिति। **विलो**. सुख। *(तद्. (दु:ख)* 1. मन का वह भाव जो अत्यंत अप्रिय व कष्टदायक घटना के अनुभव से उत्पन्न होता है। 2. संकट, आपत्ति। 3. पीड़ा, दर्द, खेद, रंज। **मुहा.** दुख बाँटना=दूसरें के दुख में सहभागी होना। **विलो.** *सुख।*

दुखद/दु:खद *[दुख/दु:ख+द=देने वाला] वि. (तत्.)* दुख देने वाला, जिससे दुख या कष्ट मिले। **पर्या.** दु:खदायी।

दुखदायी/दुखदायक/दुखकर *वि. (तत्.)* **दे.** दुखद/दु:खद।

दुखना *अ.क्रि. नामधातु(तत्.)* शरीर के किसी अंग में दर्द होना या पीड़ा होना। **जैसे**: उनका सिर दुख रहा है। लाक्ष. दु:ख होना। **जैसे**: उसके विश्वासघात से मेरा मन दुख रहा है।

दु:खड़ा *पुं. (देश.) [दु:ख+ड़ा]* 1. किसी के आपबीती अथवा दु:ख या कष्ट का वर्णन। 2. दु:खभरी कहानी। **जैसे:** उसका दु:खड़ा सुनकर हमने उसे सांत्वना दी।

दु:खद/दुखद *वि.* दु:ख देने वाला। **पर्या.** दु:खदायी, **दे.** दु:ख।

दु:सह *वि. (तत्.)* जिसे सहना बहुत कठिन हो, जो सहनशक्ति के बाहर हो। **पर्या.** असह्य।

दुग्ध *पुं. (तत्.)* 1. दूध (किसी पशु का) 2. वनस्पतियों से निकलने वाला दूधनुमा तरल/गाढ़ा पदार्थ।

दुतकारना *स.क्रि. (देश.)* 1. 'दुत', 'दुत' कहते हुए किसी को घृणा पूर्वक या उपेक्षा, तिरस्कार आदि के भाव से अपने पास से दूर हटाना, भगाना। **पर्या.** तिरस्कार करना, अपमानित करना। **उदा.** उसने भीख माँगने वाले को दुतकारते हुए भगा दिया।

दुतरफा *वि. (फ़ा. दुतर्फ)* जो दोनों तरफ हो, दोनों तरफ का। वादी और प्रतिवादी दोनों पक्षों की ओर का/से। 2. जो दोनों दिशाओं में स्थित हो। **जैसे:** 1. इस विवाद का दुतरफा समाधान हो गया। 2. इस गाँव के दुतरफा जलाशय है।

दुधमुँहा/दूधमुँहा *[दूध+मुँह] वि.* शा.अर्थ दूध के मुँह वाला यानी जो अभी तक (माँ का) दूध पीता हो। जिसके दूध के दाँत (जन्म वाले) न टूटे हों; जो माता के दूध पर निर्भर रहता हो; बहुत छोटा बच्चा शिशु।

दुधार *वि. (तद्.<दोग्धृ/दुग्धवती)* **दे.** दुधार। 2. द्विधार दो धार वाला (स्त्री. दुधारी) **जैसे:** दुधारी तलवार।

दुधारु *वि. स्त्री.* 1. दूध देने वाली। 2. जो (गाय, भैंस आदि) अधिक दूध देती हो। **उदा.** उनकी गाय बहुत दुधारु है।

दुनियाँ/दुनिया *स्त्री. (अनु.)* **पर्या.** हमारी पृथ्वी और उस पर पाया जाने वाला समस्त प्राणी जगत् संसार, आलम; मृत्यलोक।

दुनिया *स्त्री. (अर.)* 1. पृथ्वी पर बसने वाले सारे प्राणी विशेषकर मानव जाति। 2. सभी देशों के लिए प्रयुक्त सामूहिक नाम। **पर्या.** संसार। सा. अर्थ संसार में रहने वाले, सभी लोग। **उदा.** क्या करें! अब सारी दुनिया ही बदल गई है। कोई किसी का नहीं।

दुनियादार *वि. (अर.+फ़ा.)* 1. सांसारिक प्रपंच में फँसा हुआ व्यक्ति। 2. व्यवहार कुशल।

दुनियादारी *स्त्री. (फ़ा.)* 1. सांसरिक प्रपंच में लिप्त होने की अवस्था/स्थिति; गृहस्थी का जंजाल। 2. अपना काम निकालने में व्यवहार कुशलता। **उदा.** 1. कई लोग वृदधावस्था में दुनियादारी छोडक़र ईश्वर का भजन करने में ही अपना समय बिताने लगते हैं। 2. जो व्यक्ति दुनियादारी में बहुत कुशल होता है, उसकी सफलता सुनिश्चित है।

दुपट्टा *पुं. (तद्.<द् विपट्टा)* बिना सिला हुआ वस्त्र जो महिलाओं द्वारा सिर पर ओढ़ा जाता है या दो या अधिक तह करके कंधों पर आगे से पीठ की ओर डाला जाता है। **तु.** अंगवस्त्र।

दुबकना/दबकना *अ.क्रि. (देश.)* भय, संकोच या लज्जा के कारण अंग सिकोड़ कर छिप जाना ताकि ढूँढ़ने वाले को सुविधापूर्वक दिखाई न पड़े। **उदा.** कुत्ते को देखते ही बिल्ली दुबक गई; माँ के हाथ में डंडा देखकर बच्चा खंभे के पीछे दुबक गया।

दुभाषिया *पुं. (तद्.<द्विभाषिन्)* शा.अर्थ दो भाषाओं का जानकर व्यक्ति; दो भाषाएँ बोलने वाला व्यक्ति। 2. दो अलग-अलग भाषा-भाषी के बीच मध्यस्थ का काम करने वाला वह व्यक्ति जो एक-दूसरे का भाषा का मौखिक अनुवाद कर सके। inter preter

दुम *स्त्री. (फ़ा)* 1. पशु-पक्षियों का पीछे की ओर निकला लंबा सिरा। **पर्या.** पूँछ, पुच्छ। **मुहा.** दुम दबाना-डर जाना, दुम हिलाना-खुशामद करना। लोको. कुत्ते की दुम टेढ़ी की टेढ़ी=अपना स्वभाव न छोड़ने वाला; कभी न सुधरने वाला। 2. ला.अर्थ दुम की तरह पीछे लगा रहने वाला, पिछलग्गू। **उदा.** वह साहब की दुम बना फिरता है। कहा. हाथी निकल गया, दुम रह गई=थोड़ा ही काम शेष बचा है।

दुमट मृदा/दोमट मृदा *स्त्री. [देश.+तत्.]* 1. दो प्रकार की मिट्टियों से मिश्रित मिट्टी। 2. कृषि. चिकनापन लिए ऐसी मिट् टी जिसमें मृत्तिका गाद तथा बालू का मिश्रण क्रमश: बढ़ता गया हो। (लोम सॉयल) **टि.** चिकनेपन और उपयुक्त मिश्रण के कारण ऐसी मिट्टी खेती के लिए अधिक उर्वर होती है।

दुरभिसंधि *[दुर्+अभि+संधि] स्त्री. (तत्.)* बुरे उद् देश्य को लेकर दो या अधिक व्यक्तियों के बीच हुआ गुप्त करार या समझौता। **पर्या.** दुस्संधि।

दुरवस्था *(दुर्=बुरी+अवस्था) स्त्री. (तत्.)* शा.अर्थ बुरा हाल। सा.अर्थ किन्हीं कारणों से व्यक्ति, गृह, परिवार, संस्था आदि की होने वाली बुरी हालत, दुर्दशा; दु:ख, कष्ट आदि की असहनीय स्थिति, दशा। **उदा.** 1. उनकी पारिवारिक दुरवस्था देख मन खिन्न हो जाता है। 2. इस संस्था की आर्थिक दुरवस्था देखी नही जाती।

दुराग्रह *[दुर्+आग्रह] पुं. (तत्.)* किसी की गई (अनुचित) बात को पूरी करने-कराने के लिए बार-बार हठ/जिद। **उदा.** काम में सुधार किए बिना

तुम अधिक पारिश्रमिक पाने का दुराग्रह क्यों कर रहे हो?

दुराग्रही *वि.* दुराग्रह करने वाला, जिद्‍दी। **दे.** दुराग्रह।

दुराचरण *[दुर्+आचरण] पुं. (तत्.)* 1. ऐसा आचारण जो मर्यादित एवं अशिष्ट हो; निदंनीय आचरण; अनैतिक बुरा चाल-चलन। **उदा.** *दुराचरण* से संसार में कोई भी प्रतिष्ठित नहीं होता। **विलो.** सदाचरण।

दुरात्मा *[दुर्+आत्मा] वि. (तत्.)* दुष्ट आत्मा वाला जिसकी आत्मा अशुद्‍ध न हो यानी नीच प्रकृति का।

दुराव *पुं. (देश.)* 1. दूर रहने या रखने का भाव। **उदा.** हमसे कैसा दुराव? यहाँ बैठो। 2. किसी से कोई बात छिपाने का भाव (दुराव-छिपाव)।

दुरुपयोग *[दुर्+उपयोग] पुं. (तत्.)* शा.अर्थ बुरा उपयोग। सा.अर्थ किसी वस्तु व्यक्ति या संगठन आदि का अनुचित ढंग से किया जाने वाला उपयोग। **उदा.** आप अपने धन का दुरुपयोग कर स्वयं को नष्ट कर रहे हो। **विलो.** सदुपयोग।

दुरुस्त *वि. (फ़ा.)* 1. ठीक स्थिति में जिसमें कोई खराबी न हो। **जैसे**: तंदुरुस्त (तन+दुरुस्त)। **उदा.** 1. साइकिल खराब पड़ी है। इसे दुरुस्त करवा लो। 2. उचित आपने जो कहा दुरुस्त कहा।

दुर्गंध *[दुर्+गंध] स्त्री. (तत्.)* बुरी गंध, बदबू। **विलो.** सुगंध।

दुर्ग *पुं. (तत्.)* किसी पहाड़ या पहाड़ी अथवा अन्य सुरक्षित स्थान पर बनवाया गया विशाल और मजबूत आवासीय स्थल जिसमें राजा व उसके सैनिक आदि रहते थे। **पर्या.** गढ़, कोट, किला। **उदा.** भारत में अनेक ऐतिहासिक दुर्ग हैं।

दुर्गति [दुर्+गति] *स्त्री. (तत्.)* बुरी गति, बरा हाल, दुर्दशा। **उदा.** उसकी दुर्गति मुझसे देखी नही जाती। **विलो.** सद्‍गति।

दुर्गम *[दुर्+गम] वि. (तत्.)* 1. जहाँ जाना या पहुँचना कठिन हो। 2. जिसे समझना कठिन हो। **पर्या.** दुर्बोध। **जैसे:** नैषधीय चरित एक दुर्गम काव्य है। **विलो.** सुगम।

दुर्बोध *[दुर्+बोध] (वि.)* ऐसी बात या तथ्य जो जल्दी समझ में न आए। 2. गूढ़ **उदा.** प्रकृति का रहस्य दुर्गेधा है। **विलो.** सुबोध।

दुर्घटना *[दुः+घटना] स्त्री. (तत्.)* ऐसी कोई अकस्मात घटी घटना जिसमें दुःख या शोक उत्पन्न हो; अशुभ घटना। **पर्या**. वारदात accident

दुर्घटनाग्रस्त *वि. (तत्.)* दुर्घटना में फँसा हुआ! घायल। (क्षेत्र, वाहन आदि)। **जैसे:** कल एक विमान दुर्घटनाग्रस्त होकर बस्ती के बीचोंबीच गिर पड़ा।

दुर्जेय [दुर्+जेय] *वि. (तत्.)* जिसको जीतना कठिन हो; जो कठिनाई से जीता जा सके।

दुर्दशा *[दुर्+दशा] स्त्री. (तत्.)* बुरी परिस्थिति, ऐसी दशा जो सुखद न हो। **उदा.** दुर्घटनाग्रस्त रेलयात्रियों की दुर्दशा मुझसे देखी नहीं जा जाती।

दुर्दिन *[दुर्+दिन] पुं. (तत्.)* शा.अर्थ बुरा/दिन, दुःख और कष्ट के दिन। ऐसा दिन जिसमें घने काले बादलों से व्याप्त आकाश हो, तथा तेज मूसलाधार वर्षा हो रही हो, जिससे उस स्थान से बाहर निकलना संभव न हो। अच्छे समय में दुर्दिन की बातें कभी नहीं भूलनी चाहिए।

दुर्बल *[दुः+बल] वि. (तत्.)* सा.अर्थ 1. जिसमें बल या शक्ति कम हो। **पर्या.** कमजोर, बलहीन। 2. पतले और कृश शरीर वाला। **पर्या.** क्षीणकाय **विलो.** सबल, ताकवर; बलिष्ठ।

दुर्बलता *स्त्री. (तत्.)* 1. कमजोरी, बलहीनता, कृशता का सूचक भाव। 2. चारित्रिक दोष। ला. अर्थ जिसे छोड़ पाना कठिन हो। **जैसे**: चाय शर्मा जी की दुर्बलता है।

दुर्भाग्य *[दुर्+भाज्य] पुं. (तत्.)* 1. भाग्यवशात् होने वाली अशुभ या बुरी घटनाएँ। 2. बुरा भाग्य, खोटी किस्मत। **पर्या.** मंदभाग्य, दुर्देव। **उदा.** एक के बाद दुर्घटनाएं घटित हो रही हैं। **उदा.** लगता है दुर्भाग्य मेरा पीछा नहीं छोड़ेगा।

दुर्भाग्यवश *क्रि.वि. (तत्.)* दुर्भाग्य से, किस्मत खराब होने के कारण; ऐसा नहीं होना चाहिए था परंतु **उदा.** मैंने बहुत परिश्रम किया था। दुर्भाग्यवश मैं फेल हो गया।

दुर्लभ *[दुः+लभ] वि. (तत्.)* 1. जिसे आसानी से प्राप्त न किया जा सके। **जैसे**: आजकल आपके दर्शन दुर्लभ हो गए है। 2. जो कहीं-कहीं एवं कभी-कभी मिलता या प्राप्त होता है। **उदा.** प्लेटिनम बहुत दुर्लभ वस्तु है।

दुर्वचन *[दुर्+वचन] पुं. (तत्.)* सुनने में बुरा लगने वाला वचन कटु वचन। अपशब्द, गाली। **जैसे:** शिशुपाल के दुर्वचन सुनकर श्रीकृष्ण ने सुदर्शन चक्र से उसका सिर अलग कर दिया। **विलो.** सदवचन, आर्शीवाद।

दुर्व्यवहार *पुं. (तत्.)* 1. बुरा लगने वाला व्यवहार, बुरा सलूक। 2. अनुचित आचरण, दुराचार। **जैसे:** उसका अपने साथी के साथ दुर्व्यवहार देखकर मन खिन्न हो गया। **विलो.** सद्व्यवहार।

दुलार *पुं. (देश.)* 1. छोटे बच्चों को प्रसन्न करने के लिए माँ का अन्य स्वजन के द्वारा की जाने वाली प्रेमपूर्ण चेष्टाएँ। 2. लाड़-प्यार। **उदा.** माँ अपने बच्चे को बड़े दुलार से पालती है।

दुल्हन *स्त्री. (तत्.)* अभी-अभी ब्याह कर आई या लाई गई स्त्री। **पर्या.** नववधु।

दुविधा *स्त्री. (तद्. दुविविधा)* सम्मुख आई दो बातों में से किसे चुना जाए या किस पर मन स्थिर किया जाए। यह निश्चित कर पाने की स्थिति या भाव। **पर्या.** अनिश्चय, संशय असमंजस dilema uncertainity, fix

दुविधाग्रस्त *विं. (तत्.)* दुविधा में फँसा हुआ। **दे.** दुविधा।

दुश्चरित्र *[दुस दुः + चरित्र]* जिसका चरित्र अच्छा न हो (बुरे आचरण/बुरे चाल-चलन वाला/बदचलन **वि.** सच्चरित्र **उदा.** दुश्चरित्र व्यक्ति की संगति से दूर रहें।

दुश्मन *पुं. (फ़ा.)* 1. वह व्यक्ति जो आपके प्रति शत्रुता की भावना पाले रखता है ओर अवसर पाते ही चोट करता है। 2. वह व्यक्ति या देश जो आपसे लड़ रहा हो। **पर्या.** शत्रु-वैरी **विलो.** दोस्त।

दुश्मनी *स्त्री. (< दुश्मन)* 1. दुश्मन होने या बने रहने की स्थिति। **पर्या.** शत्रुता, वैर। **विलो.** दोस्ती।

दुष्कर *[दुः+कर] वि. (तत्.)* जिसे पूरा करना कठिन हो। **विलो.** सुकर।

दुष्कर्म *(पुं.) (तत्) [दुस् + कर्म]* 1. वह कर्म जो अनैतिक व अनुचित हो; 2. बुरा काम, पापकर्म। **उदा.** निर्बल को सताना, चोरी व्यभिचार, विश्वासघात आदि दुष्कर्म हैं। **वि.** सुकर्म।

दुष्चक्र *[दुः + चक्र] पुं. (तत्.)* ऐसी विषम स्थिति जिसमें कारण और कार्य परस्पर अपनी भूमिका बदलते रहते हैं और यह क्रम चलता ही रहता है। **जैसे**: दुर्बलता और बीमारी का दुष्चक्र। दुर्बलता बीमारी को जन्म देती है और बीमारी मनुष्य को दुर्बल बना देती है। vicious circle

दुष्परिणाम *[दुस/दुः + परिणाम] (पुं.) (तत्.)* सा.अर्थ 1. किसी गलत आदत या अनुचित लोभादि प्रवृत्ति के कारण बाद में जिसका प्रतिफल खराब परिणाम के रूप में प्राप्त हो। 1. शा.अर्थ बुरा परिणाम, बुरा फल **उदा.** उसे नौकरी से हटाया गया उसको रिश्वत लेने का ही दुष्परिणाम था।

दुस्साहस/दुःसाहस *(पुं.) (तत्.)* 1. असंभव काम करने के लिए किया गया साहस। 2. ऐसा साहस जिसका फल कुछ न निकलता हो; अनुचित साहस **वि.** दुस्साहसी/दुःसाहसी दुस्साहस करने वाला। **दे.** दुस्साहस।

दुहना *स.क्रि. (तद्. दोहन)* व्यु.अर्थ दूध निकालना। सा.अर्थ आवश्यकता से अधिक दूध निकालना यानी अधिक धन वसूलना अथवा अनुचित लाभ उठाना। **पर्या.** लाभ उठाना।

दुहराना/दोहराना *स.क्रि.(तत्.)* अर्थ-किसी काम को बार-बार कहना। **पर्या.** पुनरावृत्ति करना।

दुहाई **I.** *स्त्री. (तद् < द् वि + आह् वान)* 1. चिल्ला-चिल्लाकर दी जाने वाली सूचना। **पर्या.** मुनादी, घोषणा। 2. अपनी रक्षा या सहायता के लिए सामर्थ्यवान से करुण स्वर में की गई करुण पुकार। **पर्या.** गुहार शपथ, कसम, सौंगध **मुहा.** दुहाई देना = किसी की कसम खाकर शरण माँगना। 'दुहाई हो' = मुझे शरण मिले। 2. *[दुह + आई] स्त्री. (दुहना)* 1. गाय-भैस आदि के दुहने की क्रिया। 2. दुहने की मजदूरी।

दूजा *विं. (तद्. < द्वितीय)* 1. क्रम संख्या के अनुसार पहले के बाद वाला, दूसरा। 2. उल्लिख्ति से भिन्न, **उदा.** कारी कामरी चढ़ै न दूजौ रंग। **मुहा.** एक दूजे के लिए = पहला दूसरे के लिए और दूसरा पहले के लिए।

दूध *पुं. [तद्.+दुग्ध]* 1. सफेद रंग का तरल पदार्थ जो माताएँ (मादा पशु और स्त्रियाँ दोनों) अपने शिशुओं को पोषण हेतु पिलाती है। **पर्या.** स्नत्य। 2. पेड़ो से रिसने वाला पदार्थ। **पर्या.** दुग्ध। 3. सफ़ेदी के लिए प्रसिद्ध उपमान।

जैसे: दूध जैसी चादर = सफेद चादर। **मुहा.** दूध का दूध पानी का पानी होना = सच्चाई सामने आ जाना। दूध की मक्खी = तुच्छ या अनपयोगी व्यक्ति। दूध के दाँत = शिशुओं के प्रारंभिक दांत। छाती का दूध याद आना = पराजित होना। **लो.** दूधों नहाओ पूतो फलो = सुखी व समृद्ध रहो।

दूधिया *वि. [दूध + इया-प्रत्य.]* 1. दूध के रंग का सफ़ेद। 2. दूध बेचने वाला ग्वाला।

दूभर *वि. (तद्. <दुर्भर)* सामान्य सुखदायी जीवन को दु:खदायी बना देने की स्थिति। **पर्या.** कठिन, दुष्कर; असह्य; भारी, बोझिल **उदा.** आजकल की महँगाई ने हमारा जीवन दुभर कर दिया है।

दूर *क्रि. वि. (तत्.)* स्थान, काल, संबंध इत्यादि की दृष्टि से बहुत अंतर पर **विलो.** पास, निकट **मुहा.** दूर करना = अपने पास से हटाना, दूर रहना/भागना = बचना, दूर की बात = समझदारी वाली बात, दूर की कौड़ी = प्राय: दुर्लभ लगने वाली बात, दूर-दूर = बहुत दूर।

दूरदराज *[दूर + दराज़* = लंबा, विस्तृत*] (वि.)* 1. बहुत दूर का दूर वाला। 2. जो क्षेत्र यातायात की दृष्टि से सहज सुलभ न हों। **उदा.** सरकार दूरदराज़ के क्षेत्रों में भी नल और विदुयत की सुविधाएं देने की कोशिश कर रही है। **विलो.** नज़दीक।

दूरदर्शक यंत्र *पुं. (तत्.)* खगो. एक प्रकाशिक उपकरण जिससे दूर स्थित वस्तु नज़दीक तथा बड़े आकार में दिखाई देती है। Telescope दूरदर्शी

दूरबीन *स्त्री. (फ़ा.)* उपकरण जिसमें लगे दो आवर्धक लैन्सों की सहायता से दूर की वस्तु भी नज़दीक और स्पष्ट दिखाई देती है। binocular, telescipe

दूरमुद्रक *पुं. (तत्.)* उपकरण जो एक स्थान से दूसरे स्थान तक टंकित सूचना तीव्र गति से भेजने के काम आता है। teleprinter

दूरसंचार *पुं. (तत्.)* इलैक्ट्रॉनिक उपकरणों की सहायता से दूरस्थ स्थानों के बीच संकेतों और संदेशों का आदान-प्रदान करने की प्रौद्योगिकी। **जैसे:** टेलीफोन, रेडियो, दूरदर्शन आदि। telcommunication

दूषण *(पुं.)* 1. गंदा करने, बिगाड़ने, दूषित करने आदि की क्रिया का भाव। 2. **पर्या.** दोष, अवगुण, ऐब, दुर्गुण, बुराई। **उदा.** प्रदूषण से हमें बचना चाहिए। **विलो.** भूषण

दूषित *वि. (तत्.)* दोषयुक्त, जिसमें दोष हो; बुरा, खराब। **उदा.** जहाँ तक संभव हो दूषित वातावरण से बचें।

दूषित *वि.* 1. गंदा किया हुआ, बिगड़ा हुआ; मिलावट किया हुआ। **जैसे**: दूषित जल; दूषित चरित्र

दूहो *(पुं. बहु.) (< दोहा)* राजस्थानी और गुजराती भाषाओं में 'दोहा' का पर्याय। **जैसे:** ढोला मारू का दूहा। **दे.** दोहा

दृढ़ *(वि.) (तत्.)* 1. जो विचलित न हो, जो डिगे नहीं। **जैसे:** दृढ़ स्नेह, दृढ़ निश्चय। 2. जो अच्छी तरह बँधा या नित्य हुआ। **जैसे:** दृढ़ प्रतिज्ञा, दृढ़ प्रमाण।

दृढ़व्रती *पुं. (तत्.)* दृढ़ निश्चय या संकल्प वाला। 1. किसी काम को करने, न करने के बारे में मन में ठान लिया गया पक्का विचार। **उदा.** मैंने दृढ़ निश्चय कर लिया है कि सूर्योदय से पहले उठा करूँगा।

दृश्य *वि. (तत्.)* अर्थ दिखने योग्य। सा.अर्थ देखने योग्य, दर्शनीय। जो मानव आँखों से देखा जा सके। **जैसे:** दृश्य काव्य, दृश्य-श्रव्य साधन। 1. वह = घटना या वस्तु जो दिखलाई पड़ती है। (व्यू) 2. कोई भी देखने योग्य प्राकृतिक नज़ारा सीनरी। 3. नाटक का एक उपभाग जो मंच पर हो रहे अभिनय के एक ही स्थान पर घटित होने का सूचक हो। scene

दृष्टांत *पुं. (तत्.)* 1. किसी कथन, तथ्य नियम, कानून आदि को समझने/ स्पष्ट करने/पुष्टि करने आदि के लिए दिया गया उदाहरण। 2. एक सादृश्यमूलक अर्थालंकार। **जैसे:** स्वामी विवेकानन्द के रोचक शिक्षाप्रद दृष्टान्त है।

दृष्टि *स्त्री. (तत्.)* 1. वह शक्ति देखने की शक्ति जिससे मनुष्य या अन्य प्राणी देखते हैं। sight 2. आँख की सीध में किसी वस्तु की स्थिति, नज़र, विवाह। 3. विचार की पद्धति **जैसे:** गाँधीजी की दृष्टि में अंहिसा सबसे बड़ा शस्त्र है। 4. उद्देश्य/अभिप्राय **जैसे**: आशाभरी दृष्टि,

दृष्टिपात। **उदा.** कृपादृष्टि, आशाभरी दृष्टि, दृष्टिपात।

दृष्टिकोण *पुं. (तत्.)* 1. देखने या विचार करने का पहलू (ऐंगल आफ विजन) **उदा.** इस बात का विचार भारत के दृष्टिकोण से भी करें। 2. एक विशिष्ट विचार से स्थापित मत view point **उदा.** मेरे दृष्टिकोण से की नियुक्ति बिल्कुल अनुचित है।

दृष्टिपटल *पुं. (तत्.)* अक्षिगोलक (आँख के गोले का पिछला परदानुमा भाग जिस पर देखी जाने वाली आकृति का प्रतिबिंब बनता है। ratina

दृष्टिभ्रम *पुं. (तत्.)* देखने वाले की आँख में भ्रम उत्पन्न कर देने वाला दृश्य। **जैसे:** मृगतृष्णा optical illusion पससनेपवद

दृष्टिहीन *वि. (तत्.)* दोनों आँखों को देखने की शक्ति चली गई हो। **पर्या.** अंधा।

देखभाल *[देख + भाल] स्त्री. [<देखना + भालना]* सौंपे गए काम के बारे में इस बात को रखा गया ध्यान कि वह ठीक तरह से हो, इसमें कोई खराबी न आए आदि-आदि। **उदा.** पति-पत्नी दोनों काम पर जाते हैं इसलिए उन्होंने बच्चें की देखभाल के लिए आया रख ली है। **पर्या.** देखरेख, निगरानी।

देखादेखी *क्रि.वि. (देश.)* 1. एक दूसरे को देख-देखकर। 2. दूसरों को कुछ करते हुए देखकर स्वयं भी उसी का अनुकरण करते हुए कोई कार्य करना। **जैसे**: खाना-पीना, वेशभूषा, बोलचाल, व्यवहार, सेवाकार्य आदि। **उदा.** सबकी देखादेखी उसने भी अपना जन्मदिन वैसे ही मनाया। **दे.** दृश्य निश्चय। देवव्रत दृढ़व्रती थे तभी तो उन्होंने अपनी भीष्म प्रतिज्ञा को आजीवन निर्वाह किया।

देन *स्त्री.* देने का कृत्य। **जैसे**: भगवान की देन, लेन-देन। किसी की दी हुई या किसी से प्राप्त वस्तु। **उदा.** आजादी महात्मा गांधी की देन है।

देनदार *वि. पुं. [हि.+का प्रत्यय]* वह व्यक्ति जिसके जिम्मे कुछ देय शेष हो। जो व्यक्ति का कर्जदार हो। **पर्या.** ऋणी, कर्ज़दार। **उदा.** वह आपके 500 रुपये का देनदार है।

देनदारी *स्त्री.* देनदार होने की अवस्था। **पर्या.** देयता।

देव *पुं. (तत्.)* अग्नि, वायु, वरुण एवं इन्द्र आदि देवताओं में से कोई भी। **पर्या.** देवता।

देवता *पुं. (तत्.)* स्वर्ग में रहने वाला अमर प्राणी। **पर्या.** सुर।

देवदूत *पुं.* ईश्वर का दूत है; ईश्वर का संदेश लेकर संसार में फैलाने वाला विशिष्ट दूत, **पर्या.** पैगम्बर प्रोफेट फरिश्ता।

देवर *पुं.* पति का छोटा भाई। **उदा.** लक्ष्मण सीता के देवर थे।

देवरानी *स्त्री.* देवर की स्त्री। **उदा.** उर्मिला सीता की देवरानी थी।

देवर्षि *[देव+ऋषि] पुं. तत्.* 1. ऋषियों में देवताओं के समान। 2. देवलोक में भी विचरण करने वाले ऋषि। **जैसे:** देवर्षि नारद।

देश *पुं.* एक शासन पद्धति के अधीन अनेक प्रांतों तथा नगरों वाला निश्चित भू-भाग। **पर्या.** 1. क्षेत्र, स्थान, जगह। 2. राष्ट्र, मुल्क।

देशज *[देश+ज पैदा हुआ] वि. (तत्.)* सा.अर्थ देश में पैदा हुआ। वो शब्द जो तत्सम, तद्भव अथवा विदेशी न होकर अपने स्थानीय परिवेश में पैदा हुआ तो; जिसकी व्युत्पत्ति अज्ञात हो। **तु.** तत्सम, तद्भव, विदेशी।

देशत्याग *पुं. (तत्.)* अपने देश को छोड़ देना।

देशद्रोह *पुं. (तत्.)* अपने देश के प्रति अपरिहार्य निष्ठा न रखते हुए शत्रु पक्ष से मिलकर राष्ट्रीय हितों को हानि पहुँचाने का अपराध।

देशद्रोही *वि./पु. (तत्.)* देशद्रोह का अपराधी; अपने देश के प्रति अपरिहार्य निष्ठा न रखते हुए शत्रुपक्ष से मिलकर राष्ट्रीय हितों को हानि पहुँचाने में सक्रिय अपराधी (व्यक्ति)

देशभक्त *वि. पुं.* अपने देश के प्रति पूर्ण समर्पण की भावना रखने वाला (व्यक्ति)।

देशभक्ति *स्त्री. (तत्.)* अपने देश के प्रति पूर्ण समर्पण की भावना। patriatism

देशी/देसी वि. *(तद्, < देशीय)* 1. स्थनीय (लोकल) **जैसे**: देशी घी। 2. अपने देश का, स्वेदशी नेशनल

देह *स्त्री. (तत्.)* मनुष्य या पशु की बाह्य भौतिक संरचना। **पर्या.** शरीर, तन, बदन।

देहांत *[देह+अंत] पुं. (तत्.)* पांच भैतिक शरीर का अंत; जीवन का अंत यानी मृत्यु। **पर्या.** देहावसान।

देहात *पुं. (तत्.)* (देह = गावं का बहुवचन) खेतिहरों की छोटी-छोटी बस्तियों वाला क्षेत्र; ग्रामीण क्षेत्र।

देहाती *वि. (फ़ा.)* 1. गाँव से संबंध रखने वाला; गाँव का। पुं. गाँव में रहने वाला व्यक्ति, ग्रामीण, ग्रामवासी।

देहात्मवाद *[देह + आत्म + वाद] पुं. (तत्.)* जीवन दर्शन का वह सिद्धांत जिसमें देह या शरीर कोटी आत्मा माना जाता है। इसमें भौतिक बातों की ही प्रधानता होती है, आध्यात्मिक मूल्यों का कोई महत्त्व नहीं होता। **जैसे:** चार्वाक सिद्धांत।

देहावसान *[देह + अवसान = समाप्ति] पुं.* देह (शरीर) की समाप्ति; पांच भौतिक शरीर का अंत यानी मृत्यु। **पर्या.** देहांत।

दैत्य *पुं.* (तत्.) व्यु.अर्थ दिति की संतान (यानी कश्यप ऋषि और दिति के पुत्र जो पुराणों के अनुसार लंबे-चौड़े आकार वाले और बहुत ही शक्तिशाली थे। **उदा.** दैत्यों के गुरु शुक्राचार्य थे।

दैनंदिन *वि. (तत्.)* प्रतिदिन होने वाला, नित्य का। **उदा.** अपने दैनंदिन कार्यों का संक्षेप में परिचय दीजिए।

दैनंदिनी *स्त्री. (तत्.)* वर्ष, तिथि, दिन, वार आदि से युक्त वह छोटी पुस्तिका जिसमें प्रतिदिन के कार्यों, घटनाओं तथा विचारों आदि का ब्यौरा लिखा जाता है। **पर्या.** दैनिकी। डायरी; रोजनामचा। **उदा.** कई लोग नियमित रूप से दैनंदिनी लिखते हैं और कई नहीं लिखते।

दैनिक *[दिन + इक] वि. (तत्.)* 1. दिन संबंधी। 2. प्रतिदिन होने वाला या किया जाने वाला, दिनभर का। **उदा.** अपने दैनिक जीवन का संक्षिप्त विवरण लिखिए। 3. प्रतिदिन प्रकाशित होने वाला। **जैसे:** दैनिक समाचार-पत्र/अखबार।

दैनिकी *स्त्री. (तत्.)* प्रतिदिन के कार्यों का लेखा जोखा रखने वाली पुस्तिका, डायरी; **पर्या.** दैनंदिनी।

दैन्य *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ दीनता का भाव, दीनता। 1. निर्धनता, गरीबी **उदा.** सुदामा की दैन्य स्थिति देखकर कृष्ण विचलित हो गए। 2. नम्रता **उदा.** 'सेवक ने दैन्यभाव से स्वामी से कहा'।

दैविक *[देव + इक] वि. (तत्.)* 1. देवताओं से संबंधित। 2. प्राकृतिक कारणों से संबंधित। **जैसे:** आँधी, बाढ़, भूंकप आदि। 3. दैव (भाग्य) से संबंधित।

दैवी *[दैव+ई]* 1. देवता-संबंधी। 2. (i) देवता-कृत; (ii) भाग्यवशात्। **जैसे:** दैवी आपदा।

दैहिक *[देह + इक] वि. (तत्.)* 1. देह से संबंधित, शारीरिक। **जैसे**: दैहिक ताप। 2. देह से उत्पन्न।

दो-आब *पुं. (तत्.)* भूमि का वह भाग जो दो नदियों के बीच में फैला हो, अर्थात् दोनों नदियों के पानी में सींचा जाता हो। **उदा.** गंगा-यमुना के बीच का भू-भाग दो-आब के नाम से प्रसिद्ध है।

दोना *पुं. [तद्. < द्रोण.]* ढाक महुए आदि वृक्षों के पक्षों को सीकों से जोड़कर बनाया गया कटोरे जैसा पात्र। **उदा.** जन्माष्टमी के अवसर पर दोनों में भर-भर कर प्रसाद वितरित किया गया।

दोपहर *पुं. (तत्. < दवि-पहर)* प्रात: काल से दो पहर (अर्थात् तीन-तीन घंटों के दो पहर) यानी छह घंटों की अवधि। बीत जाने के आसपास का समय; सूरज के आकाश के मध्य में यानि सिर पर पहुँचने का समय (12 बजे) **पर्या.** दुपहर, मध्याह्न।

दोयम *वि. (फ़ा.)* 1. जो क्रम की दृष्टि से दूसरा हो। द्‌वितीय 2. जो महल की दृष्टि से द्‌वितीय श्रेणी का हो। **जैसे:** नगर में यह दोयम दर्जे का विद्‌यालय है।

दोलन *पुं. (तत्.)* झूलना या झुलाना। सा.अर्थ झूलते रहने की अवस्था का भाव, स्थिर न रहने का भाव। भौ. गति का आवर्ती परिवर्तन यानी एक स्थिति में आंरभ होकर पुन: उसी स्थिति में पहुँचने के बीच की समस्त स्थितियों का अनुक्रम।

दोष *पुं. (तत्.)* 1. खराबी **उदा.** मशीन में दोष आ गया है। fault, defact 2. कमी, अशुद्‌धि, त्रुटि **उदा.** तुम्हारे लेखन में कई व्याकरणिक दोष है। 3. अपराध, कसूर **उदा.** मेरा दोष यही है कि मैंने घटना देखी है। 4. लांछन, कलंक उदा. यह दोष मुझ पर क्यों लगाया गया? 5. शरीर के वात,

पित्त, कफ में अपना दोष स्वीकार करता है guilt माने गए हैं।

दोषारोपण *[दोष + आरोपण] पुं. (तत्.)* दोष लगाना/मँढना; किसी के विषय में यह कहना कि उसने अमुक अपराध किया है।

दोषी[1] *वि.पुं. (तत्.)* 1. जिसने कोई अनुचित कार्य किया हो। 2. जिस पर कोई दोषारोपण किया गया हो। **जैसे:** तुम अपना कार्य समय पर पूरा न करने के दोषी हो। **विलो.** निर्दोष

दोषी[2] *वि. (तत्.)* अपराध का कसूर करने वाला, कसूरवार

दोस्ती *स्त्री. (फ़ा.)* दोस्त होने का भाव, मित्रता। **उदा.** तुम्हारे साथ दोस्ती से मेरे पिता जी अत्यंत प्रसन्न हैं। **मुहा.** दोस्ती गाँठना = किसी से मित्रतापूर्ण गहरे संबंध बनाना।

दोहन *पुं. (तत्.)* व्यु.अर्थ गाय-भैंस आदि को दुहने (दूध निकालने) की क्रिया का भाव। सा.अर्थ 1. धरती के गर्भ से खनिज आदि निकालना। 2. उपलब्ध संसाधनों का समुचित उपयोग करना और उनसे लाभ उठाना। 3. (बुरे अर्थ में) अपने स्वार्थ सिद्धि के लिए किसी का अनुचित उपयोग करते हुए लाभ उठाना, शोषण करना।

दोहरा *[हि. दो + हरा - प्रत्यय] वि. (तत्.)* (स्त्री. दोहरी) 1. दो परतों या तहों वाला। 2. जो दो-दो बार किया जाता हो। **जैसे**: दोहरी सिलाई। 3. दुगुना **जैसे**: दोहरा काम। 4. मोटा, स्थूल, **जैसे:** दोहरा शरीर।

दोहरा बोझ *पुं.* दो गुना वज़न, दो गुना भार। **टि.** यह शब्द प्राय: कामकाजी महिलाओं के लिए प्रयुक्त होता है। महिलाओं को एक साथ घर और बाहर (खेत, ऑफिस आदि) का काम करना पड़ता है। इस प्रकार उन्हें दोहरा बोझ उठाना पड़ता है।

दोहा *पुं. (तद्. < दोधक) (संस्कृत का वार्षिक छंद)* शा.अर्थ 1. दोहना अर्थात् दोष या ऐब निकालना। 2. (पाठक के चित्त का दोहन करने वाला। दो पंक्तियों में निबदध चार चरणों वाला मात्रिक छंद जिसके पहले और तीसरे चरण (दोनों विषम चरण) में 13-13 मात्राएँ तथा दूसरे और चौथे चरण में 11-11 मात्राएँ (कुल 48 मात्राएँ) होती हैं एवं दूसरा और चौथा चरण तुकांत वाला होता है। **उदा.** करत-करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान। रसरी आवत-जात ते, सिल पर परत निसान।। **टि.** दोहे के चारों चरणों को पलट कर लिखने से 'सोरठा' बन जाता है।

दौड़-धूप *स्त्री. [देश.]* शा.अर्थ दौड़ना और धूप खाना यानी धूप की परवाह न करते हुए दौड़ते रहना। अर्थ. सिद्धि के लिए लगातार भाग-दौड़ करते रहने का प्रयत्न (चाहे उसमें सफलता मिले या न मिले) **पर्या.** दौड़ भाग। **उदा.** मुझे अपने बच्चे को अच्छे स्कूल में प्रवेश कराने के लिए बहुत दौड़ धूप करनी पड़ी।

दौड़ना *अ.क्रि. (तद्.<धोरण)* 1. तेजी से और कुछ उछलते हुए से (जिसें उत्साह का भाव अधिक हो) चलना। 2. उतावलेपन में इधर-उधर आना-जाना। **जैसे**: दौड़-भाग करना। 3. फैलना, व्याप्त होना। **उदा.** शरीर में बिजली।

दौर *पुं. (अ.)* 1. चक्कर, फेरा। **जैसे**: आतंकवाद विषय पर भारत और पाकिस्तान के बीच बैठक के कई दौर हो चुके हैं। 2. बारी-पारी। **जैसे**: अगले दौर में।

दौरा *पुं. (अर.)* चक्कर, भ्रमण; गश्त। शिक्षा उपनिदेशक ने अपने इलाके के स्कूलों का दौरा किया। tour 2. समय-समय पर प्रकट होने वाला रोग का आक्रमण। **पर्या.** आवर्तन। उसे मिर्गी का दौरा पड़ता है। fit

दौर-दौरा *पुं. (फ़ा.)* 1 प्रचलित संदर्भ में किसी विशेष धारा का अत्यधिक प्रभाव का प्रभुत्व। **जैसे:** आजकल संगीत में पाश्चात्य संगीत का दौर-दौरा चल रहा है। 2. अधिक प्रचलन।

दौरान *(फ़ा.)* (के दौरान) (किसी क्रिया के) चलते हुए ही, इस बीच। **उदा.** यात्रा के दौरान अपने कौन-कौन से स्थान देखे उनका संक्षेप में विवरण लिखिए।

दौलत *स्त्री.* 1. धन-सम्पत्ति, मूल्यवान वस्तु। **जैसे:** विद्या हमारी सबसे बड़ी दौलत है।

दौलतखाना *पुं.* 1. [अर.फा.] धन रखने का स्थान। ला.अर्थ. 2. किसी के निवास स्थान के लिए सम्मानसूचक शब्द। **टि.** पराए का 'दौलतखाना' और अपना 'गरीबखाना' कही शिष्ट प्रयोग है। **उदा.** आपका दौलतखाना देखकर मन खुश हुआ। कभी हमारे गरीबखाने पर भी पधारिए।

दौलतमंद *वि.* 1. धन सम्पन्नता से युक्त, धनी। **पर्या.** धनवान, अमीर, रईस। **उदा.** जब दौलतमंद लोग केवल अपने वैभव का प्रदर्शन करते हैं तो मुझे अच्छा नहीं लगता। उन्हें चाहिए कि वे गरीबों की भी मदद करें।

द्युति *स्त्री. (तत्.)* आँखों को अच्छी लगने वाली प्रकाश की चमक। **पर्या.** चमक, दीप्ति, दमक, आभा, कांति, छवि, शोभा।

द्योतक *(वि.) (तत.)* 1. जो प्रकाश करने वाला हो प्रकाशक। चन्द्रमा रात्रि का द्योतक है। 2. व्यक्ति या प्रकट करने वाला-सूचक। **जैसे**: कार रखना धनी होने का द्योतक है।

द्रव *वि.* बहने वाला; रसा. ठोस और गैस के बीच की पदार्थ की अवस्था। **टि.** द्रव का अपना कोई निश्चित आकार नहीं होता। वह जिस पात्र में रखा जाता है, उसी का आकार ग्रहण कर लेता है किंतु उसके आयतन में अंतर नहीं आया। **जैसे:** जल, तेल, दूध आदि। liquid

द्रवचलित *वि. (तत्.)* द्रव से चालित यानी द्रव के दान से चलने वाला/वाली (मशीन, प्रेस, चौक आदि) hydrolic

द्रवित मैग्मा *[तत्.+अं.]* 1. पृथ्वी की पर्पटी के नीचे स्थित ज्वलनशील और तरल पदार्थ जो लावे के रूप में बाहर निकलता है। 2. ज्वालामुखी का बहता हुआ लावा।

द्रव्य *पुं. (तत्.)* 1. भौ. भौतिक विश्व का (न कि 'या 'आत्मा' का) घटक पदार्थ। matter 2. धन-दौलत (का पर्याय)। money, wealth

द्रव्यमान *पुं. (तत्.)* 1. वस्तु के जड़त्व का भौतिक माप। 2. किसी वस्तु में द्रव्य की मात्रा जो उसके जड़त्व की समानुपाती होती है। मास

द्रष्टा *पुं. (तत्.)* 1. भौतिक विश्व का (न कि 'मन' या 'आत्मा' का) घटक पदार्थ matter। 2. धन दौलत (का पर्याय) मनी, वेल्थ

द्राक्षाकृषि *स्त्री. (तत्.)* वाणिज्यिक स्वर पर अंगूरों की खेती। **दे.** कृषि।

द्रुत *विं. (तत्.)* 1. तेज, शीघ्रगामी। **जैसे:** द्रुत गति **विलो.** मंद्। 2. संगीत में ताल के अनुसार लय का एक प्रकार।

द्रुपद *पुं. (तत्.)* महाभारत की एक पात्र द्रौपदी के पिता जो पांचाल नरेश थे।

द्रोणिका *स्त्री. (तत्.)* दो पहाड़ियों या दो ऊँची लहरों के बीच का गर्तनुमा संकरा स्थान। **पर्या.** द्रोणी (द्रैव)

द्रोणिका भ्रंश *पुं. (तत्.)* भूपृष्ठ का वह अंश जिसके दोनों तरफ भ्रंश हों और जो समीपवर्ती स्थलों के नीचे स्थित हो। **दे.** अंश।

द्रोह *पुं. (तत्.)* 1. किसी अधिकारी, सत्ता, संस्था आदि के विरुद्ध किया जाने वाला हानिप्रद कर्ण या प्रतिहिंसात्मक आंदोलन/उपद्रव आदि। **जैसे:** राजद्रोह, राष्ट्रद्रोह। **उदा.** राष्ट्रद्रोह ऐसा अपराध जिसके लिए मौत की सजा दी जा सकती है।

द्रौपदी *स्त्री. (तत्.)* द्रुपद की पुत्री, दुप्रद तनया।

द्वंद्व *पुं. (तत्.)* सा.अर्थ दो का समूह, जोड़ा, युगल। 2. दो के बीच होने वाला युद्ध। 3. मन की वह अवस्था जब निर्णय लेना कठिन हो। **जैसे:** जाऊंगा नहीं जाऊँ, खाऊँगा नहीं खाऊँ-मन की इस स्थिति को द् वंदव कहते हैं। 4. समास का एक भेद जिसमें 'और' का लोप करके समाप्त किया जाता है। **जैसे:** भेड़-बकरी।

द्वारपाल *पुं. (तत्.)* द्वार का रक्षक; कोई अनधिकृत व्यक्ति प्रवेश न कर ले। इसका धयान रखने के लिए नियुक्त सिपाही, पहरेदार आदि।

द्वार *पुं. (तत्.)* 1. चारों ओर से घिरे हुए स्थान या मकान में अंदर जाने और बाहर निकलने का रास्ता। **पर्या.** दरवाज़ा।

द्वारा (पु.) *(तद्. < तत्.)* किसी भवन या कक्ष आदि में प्रवेश-निर्गम के लिए लगा द्वार या दरवाजा। **जैसे**: गुरुद्वारा, ठाकुर द्वारा आदि।

द्विज *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ दो बार जन्म लेने वाला, दुजन्मा। 1. हिंदुओं की प्राचीन चतुर्वर्णी व्यवस्था के अनुसार पहले वाले तीन वर्णो (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य) में से कोई भी **टि.** पहला जन्म माता के गर्भ से और दूसराजन्य यज्ञोपवीत संस्कार के बाद माना जाता था। इसलिए इन्हें द्वि कह गया है। 2. सामान्यत: ब्राह्मण।

द्वितीयक *वि. (तत्.)* जिसका स्थान पहले वाले के पश्चात् हो; दूसरे स्थान का; जो एक के बाद होता हो। secondary **जैसे:** द्वितीयक साक्ष्य; द्वितीयक सैल। **विलो.** प्राथमिक

द्वित्व *पुं. (तत्.)* सा.अर्थ दो होने का भाव,दोहरा पल। **व्या.** शब्दोच्चारण करते समय या लेखन में

किसी व्यंजन का एक ही परिवेश में दो बार आना। **जैसे**: पक्का में 'क्क' चित्त में 'त्त', चुन्नी में 'न्न' आदि।

द्विभाषी *वि./पुं. (तत्.)* 1. दो भाषाएँ जानने वाला और बोलने वाला। **जैसे:** मेरा मित्र द्विभाषी है। **पर्या.** दुभाषिया **उदा.** विदेश मंत्रियों की बात द्विभाषी के माध्यम से हो रही है। 2. दो भाषाओं से संबंधित। **जैसे**: द्विभाषी कोश (अंग्रेजी-हिंदी कोश)। 3. दो भाषाओं पर समान अधिकार रखने वाली (व्यक्ति या समाज) bilingual

द्विशाख/द्विशाखा *वि. (तत्.)* दो शाखाओं वाला।

द्वीपय *पुं. (तत्.)* वह स्थलीय भाग जो चारों ओर से पानी से घिरा हो। **जैसे**: श्रीलंका, द्वीप। **तुल.** प्रायद्वीप, महाद्वीप।

द्वेष *पु. (तत्.)* 1. विरोध या वैर की वह मानसिक वृत्ति जिसमें किसी व्यक्ति को हानि पहुँचाने का अपमानित करने का भाव हो। 2. शत्रुता, घृणा। **उदा.** किसी की उन्नति देख उससे द्वेष करना अच्छा नहीं माना जाता।

ध

धंधा *पुं.(देश.)* 1. जीविका उपार्जन के लिए किया जाने वाला कार्य। (काम-धंधा, रोजगार, पेशा) 2. व्यवसाय या कारोबार (उद्योग-धंधा)

धँसना *अ.कि.(तद्.)* (i) अपने लिए जगह बनाते हुए अंदर घुसना। **उदा.** रेत में पैर धँसना। (ii) दबाव पड़ने पर नुकीला होने के कारण अंदर घुसना। **उदा.** काँटा धँसना। (iii) नींव के आस पास की जमीन पोली हो जाने के कारण किसी भवन का ज़मीन में घुसते जाना। **उदा.** हवेली धँसती जा रही है।

धँसान [धँस+आन] *स्त्री. (देश.)* 1. धँसने की क्रिया, भाव या ढंग। 2. वह जगह जिस पर कोई चीज धँसे। 3. ऊपर से नीचे की ओर जाने वाला मार्ग अर्थात ऊँचे स्थान से नीचे स्थान की ओर जाने का रास्ता। **उदा.** पथिक! सावधान, आगे धँसान है। **पर्या.** ढलान। **विलो.** चढ़ान।

धक *स्त्री.(अनु.)* भय, अप्रिय घटना आदि के कारण हृदय के सामान्य गति से अधिक तेजी से धडक़ने की स्पष्ट सुनाई पड़ने वाली ध्वनि। **मुहा.** 1. धक-धक करना=मित्र की आकस्मिक मृत्यु का समाचार सुन मेरा दिल धक-धक करने लगा। 2. धक से रह जाना=दिल के धडक़ने की ध्वनि का स्तब्ध-सा हो जाना। **उदा.** मित्र की दुर्घटना में मृत्यु का समाचार सुन मेरा दिल धक से रह गया।

धकधकी *स्त्री.(अनुर.)* हृदय के धकधक करने की क्रिया। **उदा.** मुझे धकधकी लगी है कि मेरा बेटा साक्षात्कार में सफलता प्राप्त करेगा या नहीं।

धकापेल *स्त्री.*(<धक्का+पेलना) शा.अर्थ धक्का देकर आगे बढ़ाना, धकेलना।, भीड़ में आदमियों का एक-दूसरे को धकेलने की स्थिति, धक्कमधक्का। **जैसे**: श्रीनाथजी के दर्शन के लिए भक्तगणों में धकापेल मचती है।

धकियाना *स.क्रि. (देश.)* धक्का देना। **दे.** धकेलना।

धकेलना *स.क्रि. (देश.)* (धका-धक्का-धकेलना) 1. बलपूर्वक दबाव देकर किसी व्यक्ति या वस्तु को आगे की ओर सरकाना, खिसकाना या बढ़ाना। **पर्या.** ढकेलना।

धक्का *पुं.(देश.*<अनु.धम) 1. एक वस्तु का दूसरी वस्तु के साथ वेग से टकराना, टक्कर। 2. धकेलने की क्रिया या भाव। 3. ला.अर्थ अकस्मात, उपस्थिति विपत्ति, हानि इत्यादि से मन पर पहुँची चोट।

धक्का-मुक्की *स्त्री.(देश.)* भीड़ में एक दूसरे को धक्के देने और मुक्के मारने की सतत् क्रिया। **उदा.** मेलों में या उत्सवों में लोग प्राय: धक्का-मुक्की करते हुए आगे बढ़ते हैं।

धज्जी *स्त्री.(देश.)* धातु, लकड़ी, कपड़े, कागज़ आदि में से काटकर निकली हुई पतली लंबी पट्टी। चिथड़ा। **मुहा.** धज्जियाँ उड़ाना=1. चिथड़े-चिथड़े करना। 2. उग्र खंडन करना। 3. अपमानित करना। **उदा.** आज के भाषण में वक्ता ने प्रतिपक्षी के तर्कों की धज्जियाँ उड़ा दीं।

धड़[1] *पुं.(देश.)* 1. शरीर का सिर से नीचे का भाग। **उदा.** उसने एक ही झटके में सिर को धड़ से अलग कर दिया।

धड़[2] *क्रि.वि.* जोर से गिरने का शब्द। **उदा.** धड़की आवाज़ सुनकर हमें लगा कि छत पर कोई गिर पड़ा है। **मुहा.** धड़ से=तत्काल, तुरंत, झटपट। गिरते ही वह धड़ से उठ बैठा।

धड़कन (धडक़ना-धडक़न) *स्त्री.(देश.)* दुर्बलता या किसी आशंका के कारण हृदय की गति का सामान्यस से अधिक तेज हो जाने की क्रिया या तेजी से दिल का स्पन्दन। **उदा.** बुरी खबर सुनते ही उसका दिल धडक़ने लग गया।

धड़कना *अ.क्रि.(देश.)* हृदय का धकधक करना। **दे.** धक।

धड़ल्ला *पुं.(देश./अनुर.)* धड़ों की आवाज़, धमाका। *क्रि.वि.* धड़ल्ले से-बिना डरे या झिझके और तेज़ी से; बेधडक़। **उदा.** 1. उसने साक्षात्कार में सभी प्रश्नों के उत्तर धड़ल्ले से दिए। 2. पुस्तक धडल्ले से बिक रही है; फिल्म धड़ल्ले से चल रही है।

धड़ाका *पुं.(देश.)* किसी चीज़ के ज़ोर से पटकने, गिरने या टूटने आदि से होने वाली 'धड़' की आवाज़। कोई ऐसा कार्य जिससे अचानक हलचल हो जाए, धमाका।

धड़ाधड़ *क्रि.वि.(अनु.)* 1. लगातार 'धड़धड़' की ध्वनि करते हुए। 2. जल्दी-जल्दी और लगातार। **उदा.** 1. वह सभा में धड़ाधड़ संस्कृत बोल रहा था। 2. पुलिस ने धड़ाधड़ चोर को कई थप्पड़ जड़ दिए।

धड़ाम *पुं.(देश.)* 1. किसी के तेज़ी से ऊपर से नीचे गिरने की शब्द। 2. धमाका। **उदा.** बालक छत से धड़ाम से नीचे गिर पड़ा।

धत्/धत *विस्मयादि.(अव्यय) (अनु.)* 1. तिरस्कार या उपेक्षापूर्वक हटाने अथवा दुतकारने के भाव का द्योतक/सूचक शब्द। **जैसे:** (परिहास में किसी छोटे बालक से) तू लडक़ी है ना? बालक-धत्। 2. किसी को तुच्छ या बुरा सूचित करने का शब्द। **जैसे**: धत् तेरे की।

धधकना *(अ.क्रि.) (*<हि.धधक) लगी आग का ऊँची लपटों के साथ जलना। **उदा.** कल दुकान में लगी आग से सारा सामान धधक-धधक कर जल गया।

धन *(तत्.) पुं.* 1. सुख-साधन के लिए काम आने वाला रूपया-पैसा, जमीन-जायदाद रूपी चल और अचल संपत्ति जिसे बेचा-खरीदा जा सके। **पर्या.** दौलत (मनी, वैल्थ) ला.अर्थ जिसे व्यक्ति का मन मूल्यवान स्वीकार करे। **जैसे**: विद्याधन, मानधन, पुत्रधन आदि। 2. **गणि.** जोड़ का चिह्न (+) plus। **पर्या.** ऋण(-) minus

धन-धान्य (धन=संपत्ति और धान्य=अन्न) *पुं.(तत्.)* पर्याप्त मात्रा में धन-संपत्ति और अन्नराशि जो संपन्नता का सूचक है।

धनाढ्य *वि./पुं. (तत्.)* (धन+आढ़य=विपुल) जो धन-धान्य से बहुत ज्यादा संपन्न हो। **पर्या.** धनवान**,** अमीर। **उदा.** (वि.) इस बस्ती में धनाढ्य लोगों की भरमार है। (पुं.) धनाढ्यों को निर्धनों से उदारता का व्यवहार करना चाहिए।

धनावेश [धन+आवेश] *पुं. (तत्.)* विद्युत या इलैक्ट्रान का धनात्मक (+) आवेश positive charge **विलो.** ऋणावेश।

धनी [धन+ई] *वि.पुं.(तत्.)* 1. धनवान; स्वामी। **उदा**. धनी व्यक्तियों को चाहिए कि वे अपने धन का उपयोग समाज के हित में भी करें। 2. कुशल, सिद्धहस्त। **जैसे**: कलम का धनी, विद्या का धनी। 3. दृढ़, पक्का। **जैसे**-बात का धनी (बात का पक्का)

धनुर्धर (धनु:>धनुर्+धर) *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ धनुष को धारण करने वाला। सा.अर्थ धनुषविद्या में निपुण या धनुष चलाने में कुशल व्यक्ति। **जैसे**: राम, परशुराम, अर्जुन, एकलव्य आदि।

धनुर्विद्या *स्त्री.(तत्.) [धनुस्+विद्या]* धनुष का उपयोग करने की कला, बाण या तीर चलाने की विद्या। **पर्या.** बाण-विद्या, तीरंदाजी। **उदा.** अर्जुन धनुर्विद्या में अत्यंत कुशल थे।

धन्नासेठ *पुं.* [धन्ना+सेठ] 1. धन्ना नाम का एक बहुत बड़ा धनी व्यक्ति। 2. धनवान, बहुत संपत्तिशाली। 3. परिहास व व्यंग्य में प्रयोग किये जाने वाला, **मुहा.** धन्ना सेठ। **उदा.** (i) तुम्हारे जैसे धन्नासेठ मैंने बहुत देखे हैं। (ii) वह अपने आपको 'धन्नासेठ' मानता है पर दान कुछ नहीं करता।

धन्य *वि.(तत्.)* साधुवाद, प्रशंसा, स्तुति या पुरस्कार (आर्थिक सहायता) के योग्य; भाग्यशाली। **उदा.** धन्य है वे लोग जिन्होंने देश

के लिए अपना जीवन बलिदान कर दिया। **विलो.** धिक्कार।

धन्यवाद *पुं.(तत्.)* व्यु.अर्थ 'धन्य-धन्य' कहना। सा.अर्थ किसी के अनुकूल कार्य के प्रति शब्दों में या लिखित रूप में कृतज्ञता प्रकट करना, साधुवाद देना और प्रशंसा करना। thnaks giving

धन्वंतरि *पुं.(सं.(तत्.)* 1. आयुर्वेद के सबसे बड़े ज्ञाता आचार्य, 2. देवताओं के वैद्य, वैद्यों में श्रेष्ठ। **टि.** प्रसिद्ध है कि धन्वंतरि समुद्र मंथन के समय अमृतकुंभ हाथ में लिए समुद्र से निकले थे। अतः आयुर्वेद विद्या का इन्हें आदि आचार्य माना जाता है।

धप्प से *अव्य. (देश.-अनु.)* धप् आवाज़ के साथ।

धब्बा *पुं.(देश.)* 1. किसी वस्तु पर बना/लगा भद्दा चिह्न, निशान, दाग। 2. कलंक या लांछन, दोष, जो यश या कीर्ति को नष्ट कर देता है। **मुहा.** नाम में धब्बा लगाना=किसी वस्तु पर लगा दाग तो छूट सकता है पर जीवन पर लगा भ्रष्टाचार का धब्बा कभी नहीं मिटता।

धमकना *अ.क्रि. (देश)* धमक>धमकना। 1. धम जैसी आवाज़ करते हुए गिरना। 2. धमाका करना। **मुहा.** आ धमकना=बिना बुलाए, बिना किसी सूचना के अचानक आ पहुँचना। **जैसे**: मित्र के जन्मदिन में वह बिना बुलाए आ धमका।

धमकाना *स.क्रि. (देश.-अनु.)* किसी को अपने कहे अनुसार काम करने को बाध्य करने के लिए भयभीत करना या डराना।

धमकी *स्त्री. (देश.)* 1. मनोनुकूल कार्य होता न देख प्रतिपक्षी को दंड देने या हानि पहुँचाने का डर दिखाने के उद्देश्य से कहे गए या लिखे गए शब्द। **जैसे**: धमकी देना=किसी कार्य को करवाने के लिए अनुचित भय दिखाना। **उदा**. कुछ लोग धमकी देकर अपना कार्य करवाना चाहते हैं।

धमनी *स्त्री. (तद्.)* हृदय से शुद् ध (ऑक्सीजनयुक्त) रक्त को पूरे शरीर में पहुँचाने वाला नलिकाकार अवयव। artery **तु.** शिरा (वेन)

धमाका *पुं. (अनु.*<धम्, धम) सा.अर्थ 1. भारी वस्तु के गिरने की आवाज़; 2. बम, तोप आदि के छूटने की विस्फोटक आवाज़। **उदा.** आतंकवादियों ने बाज़ार में बल का धमाका किया। ला.प्रयोग-बहुत ही रहस्यात्मक तथ्य का सहसा प्रकाशन। **उदा.** विकिलीक्स प्रतिदिन कई धमाके करता जा रहा है।

धमाल/धमार *स्त्री. (देश.)* प्रसन्नता व मस्ती के साथ होने वाली बच्चों की उछल-कूद। धमाचौकड़ी। **उदा.** बच्चों ने तो यहाँ बहुत ही धमाल मचा रखी है। 2. **पुं.** लोकगीत जो फागुन मास में होली के दौरान गाया जाता है।

धरणी *स्त्री. (तत्.)* व्यु.अर्थ सभी चर+अचर को धारण करने वाली। सा.अर्थ पृथ्वी, धरती, धरा। **जैसे:** धरणीपति (राजा), धरणीधर (शेषनाग, पर्वत), धरणीपुत्र (मंगल)।

धरना *(तद्.) स.क्रि.* 1. कोई वस्तु किसी आधार पर रखना। **जैसे**: पुस्तक मेज़ पर धर दो। 2. ला.अर्थ पकड़ लेना, पकडक़र बंद करना। **जैसे**: पुलिस ने चोरों को जल्दी ही धर लिया। (धर पकड़)। *पुं.* अपनी माँगें पूरी कराने के उद्देश्य से इस तरह जमकर बैठ जाना कि उठाए न उठे, धरना देना। strike

धर-पकड़ *स्त्री.(तद्. पकड़ना)* 1. (असामाजिक तत्वों को) धरने या पकड़ने की क्रिया या भाव। 2. बंदी बनाना, गिरफ्तारी करना। **मुहा.** धर-पकड़ होना=शांति भंग की संभावना होने पर या कोई विशेष अपराधिक घटना होने पर अपराधियों/असामाजिक तत्वों की गिरफ्तारी या खोज होना।

धरातल *पुं.(तत्.)* (धरा=पृथ्वी) पृथ्वी का तल, पृथ्वी की सतह।

धराशायी *वि.(तत्.)* व्यु.अर्थ पृथ्वी पर सोने वाला या सोया हुआ। 1. ज़मीदोज़, पृथ्वी पर गिरा हुआ। **उदा.** भूकंप के प्रभाव से कई भवन धराशायी हो गए। 2. ला.अर्थ पराजित हुआ। **जैसे**: पिछले चुनाव में अच्छे-अच्छे नेता धराशायी हो गए।

धरोहर *स्त्री.(तद्*<धृतावहार) 1. किसी व्यक्ति के पास रखी हुई वह संपत्ति, जिसकी रक्षा का भार देने वाले ने उसे सौंप रखा हो। **पर्या.** अमानत। (प्लेज) 2. पूर्वजों द्वारा प्राप्त वह संपत्ति जिसे बेचा न जा सकता हो तथा जिसे उसी रूप में अगली पीढ़ी को सौंपना हो। **पर्या.** थाती, विरासत। heritage

धर्म *पुं.(तत्.)* 1. सा.अर्थ किसी भी व्यक्ति या सामाजिक वर्ग की उपासना-पद्धति। **जैसे**: हिंदू धर्म, मुस्लिम धर्म, ईसाई धर्म आदि। religion विशेष अर्थ-1. समाज के मान्य नैतिक कर्त्तव्यों में से कोई भी। **जैसे**: माता-पिता की सेवा करना संतान का धर्म है। 2. प्राकृतिक शक्तियों का स्वभाव या सहज गुण। **जैसे**: अग्नि का धर्म जलाना, सूर्य का धर्म प्रकाश फैलाना और जल का धर्म शीतलता प्रदान करना है।

धर्म-कर्म *पुं.(तत्.)* धर्मग्रंथों में बताए गए मनुष्यों के लिए धार्मिक आचरण व कर्तव्य। **उदा.** मनुष्य का कर्त्तव्य है कि वह धर्म-कर्म से कभी विमुख न हो।

धर्मग्रंथ [धर्म+ग्रंथ] *पुं. (तत्.)* 1. वह ग्रंथ या पुस्तक जिसमें धर्म विशेष विषयक शिक्षाएँ तथा आचार-विचार के नियम लिखे हों। 2. वह ग्रंथ जिसे किसी धर्मविशेष का आधारग्रंथ मानते हुए किसी भी प्रकार की तत्संबंधी शंका के निवारण के लिए प्रामाणिक माना जाता है।

धर्मनिरपेक्ष *वि. (तत्.)* 1. जो किसी भी धर्म के नियमों या सिद्धांतों से बँधा न हो। 2. जो सभी धार्मिक रीति-नियमों के प्रति समानभाव रखता हो। सेक्यूलर। **टि.** 'सेक्यूलर' के लिए सही पारिभाषिक पर्याय 'पंथ निरपेक्ष' है, जबकि धर्मनिरपेक्ष व्यापक रूप से प्रचलन में है।

धर्मनिरपेक्षता [धर्म+निरपेक्षता] *स्त्री. (तत्.)* मूल अर्थ-राज्य संचालन में धर्म का हस्तक्षेप न हो। **दे.** धर्म। (सेक्यूलर) आधु.अर्थ उपासना-पद् धति का विचार न करते हुए सभी लोगों के साथ समान व्यवहार करने का भाव। **पर्या.** सर्वधर्मसमभाव। विशेष-(1) यहाँ धर्म का अर्थ उपासना-पद्धति religion ही माना गया है। (2) इसके लिए संविधान सम्मत पर्याय 'पंथनिरपेक्षता' है क्योंकि भारतीय संदर्भ में 'धर्म' तो सर्वोत्कृष्ट आचरण का आधार माना जाता रहा है जो वस्तुत: रिलिजन का पर्याय नहीं है।

धर्मपरायण *वि.(तत्.)* (भाव. धर्मपरायणता) 1. सदा धर्म के अनुसार आचरण करने वाला (व्यक्ति) 2. धर्मकार्य में दृढ़ता के साथ लगा हुआ।

धर्मपरायण *वि.(तत्.)* अपने धर्म में आस्था रखने वाला और उसी के अनुरूप आचरण करने वाला। **विलो.** धर्म भ्रष्ट, धर्मविमुख।

धर्मभीरू [धर्म+भीरू=डरने वाला] *वि.(तत्.)* धर्म (के दंड) से डरने वाला; बुरे कामों से बचने वाला (यह सोचकर कि इससे पाप लगेगा और उसका दंड भोगना पड़ेगा।)

धर्म-भ्रष्ट [धर्म+भ्रष्ट] *वि.(तत्.)* 1. जो अपने धर्म या कर्त्तव्य से गिर गया हो; धर्मच्युत। 2. जिसने अपना धर्म या संप्रदाय छोड़ दिया हो। **उदा.** धर्मभ्रष्ट का जीवन ही व्यर्थ है। **विलो.** धर्मपरायण।

धर्मयुद्ध *पुं.(तत्.)* 1. वह युद्ध जो धर्म के नियमों के अनुसार हो यानी जिसमें किसी अधर्म या अन्याय का सहारा न लिया जाए। (जस्टवार) 2. धर्म की रक्षा के लिए लड़ा जाने वाला युद् ध। crusade

धर्मसंकट *पुं.(तत्.)* दो विकल्पों में से किसी एक को स्वीकारने या चुनने की दुविधा वाली स्थिति। **पर्या.** पशोपेश। **उदा.** मेरा चयन दो पदों के लिए हो गया है अब मैं धर्मसंकट में हूँ कि रेलवे की नौकरी स्वीकार करूँ या बैक की।

धर्मांध [धर्म+अंध] (भाव. धर्मांधता) *वि.(तत्.)* **सा.अर्थ-**जो धार्मिक कट्टरता की वजह से अंधा जैसा होकर उचित-अनुचित का विचार न करे; 2. धर्म के प्रति संकुचित दृष्टिकोण वाला। fanatic

धर्मात्मा [धर्म+आत्मा] *वि.(तत्.)* धर्म के अनुसार आचरण करने वाला, धर्मशील प्रकृति वाला (व्यक्ति) **उदा.** युधिष्ठिर धर्मात्मा नरेश थे। **विलो.** पापात्मा।

धर्मोपदेश [धर्म+उपदेश] *पुं.(तत्.)* शा.अर्थ धर्म का उपदेश। 1. धार्मिक दृष्टि से क्या-क्या करना चाहिए और क्या-क्या नहीं, इसका उपदेश। 2. धर्मोचार्यों द्वरा दिए जाने वाले उपदेश। **पर्या.** प्रवचन।

धवल *वि.(तत्.)* 1. श्वेत, उज़ला। **जैसे**: धवल हिमशिखर। 2. निर्मल, स्वच्छ। **जैसे:** धवल वस्त्र।

धाँधली *स्त्री.(देश.)* 1. किसी कार्य में मनमर्जी के अनुसार बरती गई अनियमितता; स्वेच्छाचारिता।

उदा. यहाँ सारा काम नियमानुसार होता है। तुम्हारी धाँधली नहीं चलेगी।

धाँय *स्त्री.(अनु.)* तोप, बंदूक चलने की भयंकर आवाज़। बल आदि के धमाके की आवाज़। **जैसे**: सहसा धाँय सुनाई दी।

धाँय-धाँय *क्रि.वि.* आवाज़ के साथ और ऊँची लपटों के साथ। **जैसे**: पूरा गांव धाँय-धाँय जल रहा था।

धाक *स्त्री.(सं.)* किसी व्यक्ति का ऐसा प्रभाव जो दूसरे व्यक्तियें को उसके विचारों के अनुकूल कार्य करने को बाध्य कर दे। **पर्या.** रोब, दबदबा। **मुहा.** धाक जमना/जमाना=रोब या दबदबा होना/दिखाना।

धागा *पुं.(देश.)* 1. कपास, ऊन अथवा किसी भी रेशेदार पदार्थ का महीन तार, तागा। threrad 2. रेशा fibre

धातु *स्त्री.(तत्.)* 1. **भौ.** सोना-चाँदी**,** लोहा, तांबा आदि अपारदर्शक खनिज पदार्थ जिससे आभूषण, बर्तन, हथियार आदि बनाए जाते हैं। (मेटल) 2. **आयु.** वे सात धातु जिनसे शरीर बना हुआ माना जाता है। 3. **पुं. (तत्.)** व्या.क्रिया का मूल रूप। जैसे-'कर'>करना, किया, करेगा, जा जाना, गया, जाएगा आदि।

धातु-मंजूषा *स्त्री.(तत्.)* 1. धातु (सोने-चांदी-तांबा आदि) से बनी पेटिका या डिब्बा। 2. सोने-चांदी आदि खनिज धातुओं की खदान। 3. खनिज धातुओं का संग्रह/कोष।

धात्विक *पुं.(तत..)* विलो. अधात्विक। 1. धातु से संबंधित। 2. धातु का विश्लेषण।

धात्विकी *(स्त्री.)* विज्ञान की वह शाखा जिसमें धातुओं के रासायनिक तत्वों का अध्ययन किया जाता है।

धानी *स्त्री.(तत्.)* शा.अर्थ स्थान; पात्र। **जैसे**: राजधानी। **प्राणि.** कई जीवधारियों में कोशिकाद्रव्य के अंदर झिल्ली से घिरा अवकाश अथवा अंगक जिसमें तरल या भोजन आदि के कण हो सकते हैं। vascicule आयोग, रसधानी। **टि.** प्रोटोजोआ प्राणियों में यह विशेष रूप से देखने में आती है। **उदा.** खाद्य धानी,संकुचनशील धानी आदि। अधिकृत **पर्या.** रसधानी।

धान्य *पुं.(तत्.)* खेतों में बोया जाने वाला अन्न, अनाज। **जैसे**: धान, गेहूँ, मटर, जौ, उड़द आदि।

धाम *पुं.(तत्.)* 1. रहने या वास करने का स्थान। **पर्या**. घर, गृह। 2. वह लोक या जगह जहाँ देवताओं का वास माना जाता है। **जैसे**: चारधाम की यात्रा, वैद्यनाथ धाम। आदि।

धाय *स्त्री.(तद्*<धानी) 1. छोटे बच्चे की देखभाल हेतु रखी गई स्त्री, दाई, धात्री। 2. अस्पतालों में प्रसूतिगृह में नवजात बच्चों की देख-रेख करने वाली दाई nurse

धार *स्त्री.(तत्.)* 1. (i) किसी हथियार (**जैसे:** तलवार) या औज़ार (**जैसे**: चाकू, पत्ती आदि) के फलक का तीखा किनारा; (ii) तीखापन। 2. वर्षा जल, दूध आदि के बहने/गिरने पर दिखाई पड़ने वाला सतत् प्रवाह।

धारक/धारी *वि./पुं.* धारण करने वाला। **जैसे**: पद धारक/धारी, जीवधारी।

धारण करना *स.क्रि.* 1. पहनना, **जैसे**: वस्त्र धारण करना। 2. ग्रहण या अंगीकार करना। **जैसे**: पद धारण करना।

धारणा *स्त्री.(तत्.)* 1. धारण करने की क्रिया या शक्ति। 2. मस्तिष्क में स्थायी रूप से बना हुआ कोई विचार। दृढ़ निश्चय belief 2. योग के आठ अंगों में से एक जो मन को स्थान विशेष में एकाग्र करने से संबंधित है।

धारा *स्त्री.(तत्.)* 1. जल या किसी अन्य द्रव का प्रवाह। stream 2. बिजली (विद्युत) का प्रचाह। current 3. किसी अधिनियम का संख्यांकित उपबंध। section

धाराप्रवाह *वि.(तत्.)* तेज धारा की तरह जो बीच में बिना रूके चलता रहे। **जैसे**: धाराप्रवाह भाषण आदि।

धार्मिक *वि.(तत्.)* 1. धर्म के अनुसार कार्य करने वाला। धर्मात्मा। (यहाँ धर्म का अर्थ उपासना-पद्धति ही है।) 2. धर्म-कार्य से संबंधित। **जैसे**: धार्मिक कार्यक्रम।

धावा *पुं.(तद्.*<धावन) जीतने, लूटने आदि के लिए बहुत से लोगों का किसी पर एक साथ हमला/आक्रमण करना।, हमला, आक्रमण। **मुहा.** धावा बोलना=हमला करना।

धिक्कार *पुं.(तत्.)* व्यु.अर्थ 'धिक्' (तिरस्कार) सूचक शब्द। 1. किसी को बुरा-भाव कहने या तिरस्कार करने का भाव। 2. घृणापूर्वक किसी को कहे जाने वाले अपशब्द।

धिक्कारना *स.क्रि.(तद्.)* किसी के बुरे कर्मों के कारण या अनुचित व्यवहार के कारण उसे फटकारना, झिडक़ना।

धींगामुश्ती *स्त्री. [तद्<दृढ़ाग+मुष्टि]* शा.अर्थ मजबूत कद-काठी के व्यक्ति (दबंग) द्वारा अपने बाहुबल का दुरुपयोग; जोर ज़बरदस्ती। सा.अर्थ उपद्रव, ऊधम।

धीमा *वि.(तद्<*मध्यम) 1. धीमी गति वाला, धीरे चलने वाला। **जैसे**: वह वाहन धीमा चल रहा है। 2. जिसमें तीव्रता न हो, **जैसे**: धीमा प्रकाश। **पर्या.** मंद।

धीर *वि.(तत्.)* जो विपरीत परिस्थितियों में भी विचलित न हो, यानी शांत और गंभीर बना रहे, धैर्यशाली।

धीरज *पुं.(तद्.<*धैर्य) न घबराने या विचलित न होने का भाव या विचलित न होने का भाव, धीरता, चित्त का स्थिर-भाव, गंभीरता।

धीरता *(स्त्री.)* धीर बने रहने का गुण, अवस्था या भाव। **विलो.** अधीर।

धुंध *स्त्री.(तद्.<*धूमांध) हवा में मिली हुई धूल या वाष्पकणों से होने वाला अंधकार। **उदा.** सर्दियों में आकाश में धुंध छा जाती है।

धुँधलका *पुं. (देश.)* [धुँध+ला+का प्रत्यय] (धुँधला+का) 1. धुँधलापन, 2. कुछ-कुछ अंधकार युक्त वातावरण; हल्के अंधेरे जैसा कालखंड। 3. आँधी में उड़ती धूल के आकाश में छा जाने से व्याप्त अँधेरापन जिससे साफ दिखाई न दे।

धुँधला *वि. (तद्.)* धुँध जैसा, धुँध से युक्त; अस्पष्ट। **दे.** धुँध।

धुँधलापन *पुं.(देश.)* 1. कुहासे आदि के कारण खराब मौसम में साफ दिखाई न देने का भाव। 2. आँख की बीमारी के कारण चीजें धुँधली/अस्पष्ट दिखाई देने का भाव। 3. वायुमंडल की निचली परतों में जलकणों का समूह इकट्ठा होने से पारदर्शिता कम होने की स्थिति। **जैसे**: धुँध के कारण धुँधलापन होने से हमें स्पष्ट दिखाई नहीं देता।

धुँधुआना *अ.क्रि. (देश.)* केवल धुँआ देना, लौ के साथ जलना नहीं। **उदा.** गली लकड़ियाँ धुँधुवाती अधिक जलती कम हैं।

धुत्त *वि.(अनु.)* (शराब आदि के) नशे में डूबा हुआ, नशे से चूर। **उदा.** कुछ लोग अधिक शराब पीकर नशे में धुत्त हो जाते हैं।

धुन *स्त्री.(देश.)* 1. (i) सोच-विचार किए बिना अधिक किसी काम में लगातार लगे रहने की प्रवृत्ति या दशा। **पर्या.** लगन, एकाग्रता। **मुहा.** धुन का पक्का=ईमानदारी से एकाग्रचित्त। (ii) मन की मौज, मन की वह स्थिति जब और कुछ नहीं सूझता। 2. *स्त्री.(तद्<*ध्वनि) किसी गीत को गाने का विशिष्ट ढंग। **पर्या.** तर्ज।

धुन[1] *स्त्री. (देश.)* (एकचित्त होकर) 1. किसी भी परिस्थिति में निरंतर कार्य करने की प्रवृत्ति या दशा/लगन। 2. मन की तरंग, मौज। **मुहा.** धुन का पक्का=प्रारम्भ किए गए कार्य को विषम परिस्थिति में भी पूरा करने की लगन रखने वाला।

धुन[2] *स्त्री.(तद्<*ध्वनि) किसी गीत को विशिष्ट स्वरक्रम से गाये या बजाए जाने का ढंग, किसी गाने की विशेष तर्ज़; लय।

धुनकी *स्त्री.(देश.)* रूई धुनने का एक उपकरण जिसमें लगी हुई तांत को लकड़ी के हथौड़े से ठोंक-ठोक कर रूई धुनी जाती है। **दे.** धुनना।

धुनना *स.क्रि.(तद्<*ध्वनन) 1. रजाई-गद्दे में भरने हेतु धुनकी की सहायता से रूई में से बिनौले अलग करके उसे तार-तार कर देना। 2. ला.अर्थ पिटाई करना।

धुनाई *स्त्री.(धुनना)* 1. रूई को रोएँदार बनाने की प्रक्रिया जिसमें उसे कमान **जैसे:** उपकरण के तार से झटके के साथ या हिलाते हैं ताकि वह तार-तार होकर फूल जाए। **उदा.** रजाई की भराई से पहले रूई की धुनाई की जाती है। 2. ला.अर्थ खूब पिटाई। **उदा.** चोर को पकडक़र लोगों ने उसकी खुब धुनाई की।

धुनियाँ *पुं.(देश.)* रूई धुननें का व्यवसाय करने वाला। **दे.** धुनना।

धुरंधर *वि.(तत्.)* व्यु.अर्थ (i) जुआ ढोने वाला; (ii) भार उठाने वाला, भारवाहक। विक.अर्थ किसी विषय का श्रेष्ठ विद्वान। **उदा.** महामहोपाध्याय

गौरी शंकर हीराचंद ओझा इतिहास के धुरंधर विद्वान थे।

धुरा *पुं.(तद्<धुर)* लोहदंड जो गाड़ी को आधार प्रदान करता है और पहियों से जुड़ा रहता है। axle

धुरी *स्त्री.(तत्.)* वह डंडी जिसके चारों ओर कोई गोल वस्तु घुमती है। **दे.** धुरा। 2. (i) लोहे की कील जो किसी गोलवस्तु (**जैसे:** लट्टू) के नीचे गड़ी होती है और उसके घूमने को आधार प्रदान करती है। (ii) पृथ्वी की धूरी, लट्टू की धूरी। 3. पृथ्वी के उ. ध्रुव और द. ध्रुवों को जोड़ने वाली काल्पनिक रेखा। axle

धुलना *अ.क्रि. (तद्)* 1. पानी आदि के द्वारा स्वच्छ किया जाना (न कि स्वच्छ करना), धोया जाना। 2. पानी से दाग आदि का दूर होना; रंग बह जाना।

धूनी *स्त्री.(तद्.धूनक)* 1. गुग्गुल आदि गंधद्रव्य या सरसों, घी, गुड़ आदि के जलाने से निकला हुआ धुँआ। **मुहा.** धूनी देना=किसी अमंगल, रोग, दृष्टिदोष की शांति के लिए धूनी देना। 2. साधुओं के तापने की आग, हवन कुंड की आग। **जैसे**: धूनी जगाना या धूनी रमाना।

धूप *पुं.(तत्.)* 1. (i) ऐसा गंधद्रव्य जिसके अग्नि में डालने से सुंगन्धित धुँआ निकलता है। (ii) मिश्रित गंधद्रव्यों से बनी वटी जिसके जलाने से सुगन्धित धुआँ निकलता है। (**जैसे**: धूपबत्ती, अगरबत्ती) 2. सूर्य की किरणों से प्रकट ऊर्जा का दृश्यमान और अनुभूत प्रभाव। **पर्या.** सूर्यातापं, घाम।

धूपछाँह [धूप+छाँह] *पुं.* सूर्य के प्रकाश (धूप) की सीधी पहुँच से किसी बीच की बाधा के आ जाने पर कहीं दिखाई पड़ने वाली धूप तो कहीं अवरोध की वजह से छाया दिखाई पड़ने की स्थिति। ला.अर्थ श्वेत-श्याम रंग का कपड़ा।

धूपछाँही [धूप+छाह+ई] *वि.(तद्.)* धूप-छाँह (श्वेत-श्याम या कहीं गहरे कहीं हलके) रंगवाला

धूपदान [धूप+दान<धूप+आधान=रखने का पात्र] *पु.(तद्.)* वह पात्र जिसमें रखकर धूपबत्ती अथवा अन्य सुगंधित द्रव्य जलाए जाते हैं।

धूम *पुं.(तत्.)* 1. **दे.** धुआँ। 2. *स्त्री.(देशज)* (i) जनता के बीच फैली उत्साह और उमंग की लहर। (ii) जनता के बीच फैली आक्रोश की लहर। ख्याति, ठाट-बाट, हलचल।

धूमकेतु *पुं.(तत्.)* [धूम=धुआँ+केतु=ध्वज पूँछ] शा.अर्थ धूएँ की जैसी पूँछ वाला। आकाशीय पिंड जो लंबवलयाकार (अंडाकार) मार्ग से सूर्य की परिक्रमा करते हैं। एक लंबी और मोटी गैसमय पूँछ इसकी विशेषता है। **पर्या.** पुच्छल तारा=पूंछ वाला तारा। lodge star

धूमधाम [धूम+धाम] *स्त्री. (दूसरा पद अनु.)* किसी कार्यक्रम शानदार ढंग से / ठाठ-बाट के साथ मनाना। **उदा.** भारत में स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस, दीपावली आदि पर्व बड़े धूमधाम से मनाए जाते हैं।

धूमिल *वि.(तत्.)* 1. धुएँ के रंग का; धूँधला। 2. अस्पष्ट, फीका। **उदा.** चित्र का रंग धूमिल हो गया है।

धूर्त *वि.(तत्.)* कपट या चालबाज़ी से काम निकालने वाला; बहुत चालाक; दुष्ट, नीच। **उदा.** तुम इस धूर्त व्यक्ति से बच कर रहना।

धूर्तता *(स्त्री.)* धूर्त होने की अवस्था, भाव या अवगुण।

धूल *स्त्री.(तद्.<धूलि)* मिट्टी का बहुत बारीक चूरा। **पर्या.** रज़, गर्द। **मुहा**. धूल डालना=उपेक्षा करना। पैर की धूल होना=किसी की तुलना में अत्यंत तुच्छ होना।

धूल-धूसरित *वि.(तत्.)* धूल से सना हुआ होने के कारण फीका पड़ा, मटमैला।

धूसर *वि.(तत्.)* 1. भूरे रंग का, मटमैला।

धृष्ट वि.(तत्.) जो बड़ों के सामने भी नि:संकोच तुच्छ व्यवहार करे। **पर्या.** ढीठ, निर्लज्ज, अशिष्ट। **उदा.** अधिक लाड़ प्यार में पलने वाले कुछ बच्चे धृष्ट हो जाते हैं। **पर्या.** गुस्ताख। **विलो.** विनीत।

धृष्टता [धृष्ट+ता=भाववाचक प्रत्यय] *स्त्री.(तत्.)* 1. गलत काम करके भी अपराधबोध न होने का भाव। 2. अमर्यादित आचरण, उद्दंडता, उद्दंपन। 3. ढीठपन। **उदा**. मित्र के साथ विश्वासघात करने की तुमने जो धृष्टता की है, वह क्षम्य नहीं है।

धैर्य *पुं.(तत्.)* संकट या कठिनाई के समय भी मन-वचन से निर्विकार रहना/स्थिर रहना;

अस्थिर। चित्त न होना, चित्त में किसी प्रकार का उतावलापन न होने का भाव। धीरज, सब्र।

धोखा *पुं.(तद्.<*धुक्षक) 1. भ्रम में डालने वाला व्यवहार। **पर्या.** भ्रम, छल, दगा। 2. विक.अर्थ चिड़ियों को डराने के लिए खेत में बांस की डंडियों पर कपड़ा लपेटकर बनाया गया मानव का पूतला, बिजुखा।

धोखाधड़ी *स्त्री.(देश.)* पहले विश्वास पैदा कर बाद में धोखा देने का काम। froud **उदा.** कुछ लोग धोखाधड़ी कर अपार संपत्ति जोड़ लेते हैं।

धोखेबाज़ *वि.(तद्.+फ़ा.)* धोखा देने वाला; भ्रम या भ्रांति में रखने वाला; विश्वास दिलाकर छल करने वाला। **दे.** धोखा।

धोती *स्त्री.(तद्.<*धटी/धौत) 1. (एक भारतीय परिधान) कमर से घुटने के नीचे तक का भाग ढकने के लिए कमर में लपेटकर पहना जाने वाला बिना सिला कपड़ा। 2. स्त्रियों के पहनने का बिना सिला लंबा कपड़ा जिसे कमर से लपेटकर पूरा शरीर ढका जाता है। **पर्या.** साड़ी। **मुहा.** धोती ढीली होना=हिम्मत छूट जाना।

धौंकना *सं.क्रि.(सं.>*धमन) आग को सुलगाने के लिए पंखे, धौंकनी/फूंकनी आदि से लगातार हवा का झोंका पहुँचाना। **उदा.** लुहार धौंकनी से भट्ठी को धौंकता है। **दे.** धौंकनी।

धौंकनी *स्त्री.(देश.<धौंकना -क्रिया)* 1. बांस या लोहे, पीतल आदि धातु की बनी हुई आग सुलगाने की नली। **टि.** इसका प्रयोग प्राय: सुनार गहने बनाने के लिए करते हैं। 2. ऐसा कोई भी उपकरण जिससे आग या अंगारों को भभकाने/धौंकने का काम किया जाए।

धौंस *स्त्री. (तद्.<*दंश) आक्रामक ढंग से अपना रौब दिखाकर अथवा धमकी देकर किसी को प्रभावित करने की कला। **उदा.** जब देखो तब वह धौंस दिखाकर मुझसे अपना काम करवा लेता है।

ध्यान (तत्.) मन को एकाग्रकर किसी का चिंतन करने या किसी में लीन होने की स्थिति। **प्रयो.** ध्यान करना=मन में चिंतन करना। ध्यान जमाना=एकाग्र चित्त होना। ध्यान जाना। ध्यान दिलाना= याद दिलाना। ध्यान देना=सावधानी बरतना। ध्यान बँटना=चित्त कभी किसी और कभी किसी की ओर आकृष्ट होना। ध्यान रखना=1. स्मरण करना। **उदा.** ध्यान रहे कि ऐसी गलती फिर कभी न हो। 2. किसी भी देखभाल करना। **उदा.** माँ-बच्चे का पूरा ध्यान रखती है। ध्यान से उतरना=कुछ समय के लिए भूल जाना।

ध्यानपूर्वक क्रि.वि.(तत्.) ध्यान देते हुए, पूर्ण तल्लीन होकर, मन लगाकर, चित्तवृत्ति एकाग्र करते हुए। **उदा.** आज कक्षा में जो कुछ पढ़ाया गया उसे मैंने ध्यानपूर्वक सुना और बाद में उस पर साथियों से चर्चा भी की।

ध्येय *(तत्.)* मूल अर्थ. वि. ध्यान करने योग्य, जिसका ध्यान किया जा सके। आधु.अर्थ पुं. वह जिसे ध्यान में रखकर कोई काम किया जाए। **पर्या.** उद्‌देश्य**,** लक्ष्य। **जैसे**: मेरा ध्येय इंजीनियर बनना है।

ध्रुव *वि.(तत्.)* 1. सदा एक ही स्थान पर या एक ही अवस्था में रहने वाला; स्थिर, अचल। 2. निश्चित, पक्का, असंदिग्ध। **उदा.** यह ध्रुव सत्य है कि पृथ्वी गोल है। *पुं.* 1. पृथ्वी की धुरी के दो विपरीत बिंदुओं में से कोई एक। उत्तरी ध्रुव और दक्षिणी ध्रुव। 2. ध्रुवतारा, 3. पुराण-उत्तानपाद और सुनीति का पुत्र जो भगवान विष्णु का परम भक्त था।

ध्रुवीकृत *वि.(तत्.)* 1. पर्याप्त साम्य वाले विभिन्न मतावलंबियों के एकीकृत एवं संक्षिप्त विचार। **जैसे**: सभी वैज्ञानिकों के किसी विषय पर ध्रुवीकृत विचार। 2. किसी लक्ष्य की प्राप्ति हेतु समान विचारधारा वाले राजनैतिक दलों के द्‌वारा निश्चित वैचारिक एकता। 3. स्थिरीकृत, एकीकृत।

ध्वंसावशेष [ध्वंस+अवशेष] *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ किसी भी भवन नगर आदि के ध्वंस हो जाने के बाद शेष बचे अंश जो पुरातात्विक महत्व के माने जाते हैं।

ध्वजारोहण *[ध्वज=झंडा+आरोहण=चढ़ाना] पुं.(तत्.)* 1. किसी विशेष अवसर पर झंडे को दंडु की ऊँचाई तक चढ़ाकर फहराना। **उदा**. 15 अगस्त को राष्ट्रीय ध्वजारोहण समारोह में हमने भाग लिया। **पर्या.** ध्वजोत्तोलन।

ध्वजोत्तोलन [ध्वज+उत्तोलन=ऊपर उठाना] *पुं. (तत्.)* ध्वज को ऊपर उठाना या चढ़ाना। *दे.* ध्वजारोहण।

ध्वनि *(तत्.) स्त्री.* सा.अर्थ वह आवाज़ जो कानों में सुनाई पड़े, सुनाई देने वाली आवाज़। **भौ.** किसी प्रकार की टकराहट या विक्षोम से हवा में उत्पन्न कंपन जो कानों से सुना जा सके। sound **भाषा.** भाषा का वह भौतिक और मूर्त पक्ष जिसे वक्ता मुख से उच्चरित करना है और श्रोता अपनी ज्ञानेंद्रिय (कान) से सुन और समझ सकता है। speech sound **काव्यशास्त्र**-किसी कथन के साधारण अर्थ वाच्यार्थ को छोडक़र उसमें निहित गूढार्थ।

ध्वस्त *वि.(तत्.)*(i) जिसका ध्वंस हो चुका है; पूरी तरह बरबाद हो चुका। **उदा.** बादल फटने से लेह में अनेक घर ध्वस्त हो गए।

ध्वानिक *वि.(तत्.)* 1. ध्वनि-संबंधी। 2. ध्वानिकी संबंधी।

न

नाहक बिना वजह, अकारण।

निंदक *वि. (तत्.)* निंदा करने वाला। निंदनीय *वि. (तत्.)* निंदा करने योग्य।

निंदा *स्त्री. (तत्.)* 1. किसी के वास्तविक दोषों का किया गया उल्लेख अथवा ईर्ष्यावश की गई बुराई। **पर्या.** अपकीर्ति, बदनामी censure **विलो.** प्रशंसा।

नींद *स्त्री. (तद्. < निद्रा)* प्राणियों की वह अवस्था जब उनकी आँखें बंद हो जाती है, सामान्य चेतना क्रियाएँ कुछ काल के लिए रुक जाती हैं और शरीर व मस्तिष्क विश्राम करते हैं तथा समाप्ति के बाद ताज़गी का अनुभव होता है। **पर्या.** निद्रा। **मुहा.** नींद उचटना/खुलना/टूटना = नींद की समाप्ति। नींद उड़ना/हराम होना = चिंता या अन्य किसी कारण नींद न लगना।

नींव *(स्त्री.) (तद्. < नेमि)* 1. भवन आदि बनाते समय उसका वह मूल भाग जो जमीन खोदकर तथा उसे रोड़ी सीमेंट, ईंट, लोहा आदि से भरकर मजबूत बनाया जाता है जिससे उस पर उठने वाली दीवारें मजबूती से खड़ी रहें। 2. किसी वस्तु या कार्य का मजबूत आधार वाला मूल भाग। **मुहा.** नींव का पत्थर मजबूत आधार, मूल आधार। **उदा.** श्री गोपाल कृष्ण तो इस अनाथ संस्था के नींव के पत्थर हैं। foundation stone

नीचता *(स्त्री.) (तत्.)* नीच *(वि.) (तत्.)* जो गुण, कर्म आदि की दृष्टि से निकृष्ट या ऊधम हो। 1. नीच होने की अवस्था या भाव। नीचपन, नीचपना। 2. आचरण की वह स्थिति जो ऊधम या तुच्छ हो। **उदा.** नीच स्वभाव वाला व्यक्ति अपनी नीचता दिखाए बिना नहीं रहता।

नीति *स्त्री. (तत्.)* 1. किसी कार्य को चलाने के आधारभूत सिद्धांत। **जैसे:** शिक्षा नीति, राजभाषा नीति। 2. संस्था या सरकार की कार्य पद्धति के सिद्धांत। **जैसे:** राजनीति, सरकार की नीति। 3. आचरण के लिए समाज द्वारा स्वीकृत नियम, नीतिशास्त्र के नियम।

नीतिकुशल *वि. (तत्.)* शा.अर्थ नीति का जानकार और उसके अनुसार आचरण करने वाला। विक. अर्थ चतुर, व्यवहार कुशल।

नीतिज्ञ *वि/पुं. (तत्.)* नीति का अच्छा जानकार और उसके अनुसार आचरण करने वाला।

नीति-रीति [नीति + रीति] *स्त्री. (तत्.)* आधारभूत सिद्धांत और तदनुसार कार्य/ व्यवहार। **जैसे:** सरकारी नीति-रीति।

नीयत *स्त्री. (अर.)* मन में पैदा हुए तात्कालिक भाव के अनुसार कार्य करने की इच्छा। **पर्या.** इरादा, मंशा। **उदा.** 1. वह नीयत का साफ़ है। तुम्हें धोखा नहीं देगा। 2. उसकी नीयत बिगड़ गई लगती है। तभी उसने तुम्हें धोखा दिया। **मुहा.** नीयत डोलना/बिगड़ना = इरादा बुरा हो जाना। नीयत न भरना = संतुष्ट नहीं होता। नीयत भर जाना = संतुष्ट हो जाता।

नीर *पुं. (तत्.)* (पेय) जल, पानी। **जैसे:** नीर-क्षीर विवेक = दूध का दूध और पानी का पानी; सही और गलत का विवेकपूर्ण हल।

नीर-क्षीर-विवेक *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ मिले हुए पानी और दूध को अलग-अलग करने का ज्ञान/सामर्थ्य। **जैसे:** हंस का नीर-क्षीर विवेक। ला.अर्थ अच्छाई और बुराई में अंतर करने की क्षमता।

नीरव [निर्+रव] *(वि.) (तत्.)* जिसमें किसी प्रकार की ध्वनि/शब्द न हो, नि:शब्द, मौन, चुप। **उदा.** नीरव स्थान में पत्ते के खडक़ने की आवाज़ भी सुनाई पड़ जाती है।

नीरवता *(स्त्री.)* नि:शब्दता, सन्नाटा, खामोशी। हिंसक घटना के बाद बस्ती में भय के कारण नीरवता छा गई।

नीरस [निर् + रस] *(वि.)* 1. जिसमें रस न हो, रसहीन, सूखा, शुष्क। **जैसे:** नीरस फल, नीरस तरु। 2. जिसमें रोचकता न हो। **जैसे:** नीरस जीवन, नीरस नाटक।

नीरोग [निर् + रोग] *(तत्.)* जिसे कोई रोग या बीमारी न हो; जो बीमारी के बाद अब स्वस्थ हो गया है। स्वस्थ, तन्दुरुस्त। **उदा.** संतुलित आहार लेने से लोग नीरोग रहते हैं। **विलो.** रोगी।

नीरोगी *वि.* [निर् + रोगी] *(तत्.)* 1. जिसे किसी प्रकार का रोग न हो। 2. पूर्णतया स्वस्थ। **उदा.** वही सुखी जिसकी नीरोगी काया।

नील *पुं.* *(तत्.)* *वि.* नीले रंग का। **जैसे:** नील कमल। *पुं.* 1. बैंगनी नीला रंग जो इंडिगोफेरा नामक पौधे से निकाला जाता है। indigo **जैसे:** (चंपारण में होने वाली) नील की खेती। 2. राम की सेना का एक वानर जिसने अपने भाई नल के साथ समुद्र में पुल बाँधा था। 3. भारतीय गणना पद्धति में वह संख्या जो एक लाख करोड़ (दस बिलियन) के बराबर होती है यानी 1,00,00,00,00,00,000

नीलकंठ *वि.* *(तत्.)* जिसका कंठ नीले रंग का हो, नीले गले वाला। *(पुं.)* 1. चिड़िया जिसका कंठ हल्का नीला, पंख फ़िरोजी तथा गहरे नीले और पैर बादामी रंग के होते हैं। **उदा.** नीलकंठ पक्षी का दर्शन शुभ माना जाता है। 2. गहरे नीले कंठ वाला मयूर, मोर। 3. शिव, महादेव (विष पीने के कारण शंकर जी का गला नीला पड़ गया था) (पौराणिक आख्यान)।

नीलम *पुं.* *(तत्.)* नीले रंग का एक मूल्यवान पारदर्शी रत्न/पत्थर। नीलमणि (सफ़ीर)। **उदा.** कुछ लोग नीलम को अँगूठी में जड़वा कर धारण करते हैं।

नीलामी *(स्त्री.)* **उदा.** सरकार के भूमि-आवास विभाग द्वारा भूखंडों व दुकानों की नीलामी की जाएगी।

नीलाभ [नील + आभ] *वि.* *(तत्.)* नीली आभा वाला, जिसमें कुछ नीलेपन की झलक हो, हल्का नीला।

नीलाम *पुं.* *(पुर्त.)* वस्तुओं के बेचने का वह ढंग जिसमें सबसे अधिक दाम बोलने वाले को माल बेचा जाता है। auction

नीलामी *स्त्री.* *(पुर्त.)* नीलाम करने की प्रक्रिया ओर तदनुसार संपन्न कार्य। **दे.** नीलाम।

नीलिमा *(स्त्री.)* *(तत्.)* नीलापन। **उदा.** स्वच्छ आकाश की नीलिमा आँखों को बहुत सुंदर लगती है।

नुकसान *पुं.* *(अर.)* आर्थिक या अन्य किसी भी प्रकार की हानि। loss **उदा.** उसे व्यापार में इस साल बहुत नुकसान हुआ।

नुकसानदेह [नुकसान + देह = देने वाला] *वि.* *(अर.+फ़ा.)* नुकसान पहुँचाने वाला, नुकसान देने वाला, हानिकारक।

नुक्कड़ *पुं.* *(हिं. < नोक)* गली का रास्ते का मोड़, गली का कोना। **जैसे:** नुक्कड़ नाटक।

नुक़्ता *पुं.* *(अर. नुक्त.)* 1. बिंदु, बिंदी। 2. अक्षरों पर नीचे लगाई जाने वाली बिंदी। **जैसे:** क़ ग़, ज़, ड़, ढ़, फ़ में लगे नुक्ते वर्णों के उच्चारण में विशेषता लाते हैं।

नुमाइश *स्त्री.* *(फार.)* 1. कलात्मक और निर्मित वस्तुओं का सार्वजनिक प्रदर्शन जो उनकी बिक्री बढ़ाने में मददगार होता है। **उदा.** इन दिनों, मोटर गाड़ियों की नुमाइश लगी हुई है। **पर्या.** प्रदर्शनी। **उदा.** अपनी कीमती वस्तुओं की नुमाइश करके अपना वैभव प्रदर्शित कर रहे हो, यह ठीक नहीं है। 2. दिखावा, तडक़-भडक़।

नुसखा/नुस्ख़ा *पुं.* *(अर.)* वह पर्ची जिस पर वैद्य, हकीम, डाक्टर रोगी का निदान कर उसके रोग के उपचार हेतु औषधि तथा उसके लेने की विधि लिखते हैं।

नूतनता [नूतन + ता] *स्त्री.* *(तत्.)* 1. नूतन नीचे की अवस्था या भाव। 2. नवीनता, नयापन। **उदा.** पत्रिका के इस अंक में नूतनता दिखाई देती है।

नूपुर *पुं.* *(तत्.)* टाँग और पैर के टखने के जोड़ पर पहना जाने वाला जेवर, पैर का आभूषण। **पर्या.** पाजेब, पैंजनी; घुँघरू।

नृत्य *पुं.* *(तत्.)* संगीत एवं वाद् य की लय पर पदचाप, अंगसंचालन, मुद्रा प्रदर्शन एवं भावभंगिमाएँ प्रस्तुत करने की कलात्मक विधि। **पर्या.** नाच, नर्तन।

नृत्यांगना [नृत्य + अंगना = स्त्री] *स्त्री.* *(तत्.)* नृत्यकला में निपुण नारी, नृत्य करने वाली (नाचने वाली) महिला। **पर्या.** नर्तकी।

नृशंस *वि.* *(तत्.)* व्यु.अर्थ मनुष्यों पर अत्याचार करने वाला। सा.अर्थ क्रूर, निर्दय, अत्याचारी।

नेक *वि.* *(फा.)* जो व्यवहार में भला हो। **जैसे:** नेक व्यक्ति की सभी सराहना करते हैं।

नेकनाम *वि.(फा.)* जिसका अच्छा नाम हो; यशस्वी, कीर्तिमान। **विलो.** बदनाम।

नेकनामी *(स्त्री.)* प्रसिद्धि, कीर्ति, यश। **उदा.** उनकी नेकनामी से सभी परिचित हैं। **विलो.** बदनामी।

नेकनियती *(स्त्री.)* ईमानदार **उदा.** हमें उसकी नेकनियती पर कोई संदेह नहीं है। **विलो.** बदनीयती।

नेकनीयत *वि. [फा नेक+अर.नीयत]* अच्छी नियत वाला, ईमानदार। **उदा.** वह नेकनीयत इंसान है। **विलो.** बदनीयत।

नेकी *स्त्री. (फा.)* सा.अर्थ भलाई (का काम), सज्जनता। **उदा.** नेकी कर, कुएँ में डाल। **विलो.** बदी।

नेटवर्क *पुं.अं.* (कंप्यू.) सा.अर्थ तैयार जाली। जाल के स्वरूप में एकत्र जानकारियों का समूह, जिसमें सूचनाएँ, आँकड़े इत्यादि संग्रहीत होते हैं। इनका उपयोग कंप्यूटर के माध्यम से कोई भी कर सकता है। जालक्रम, संजाल।

नेता *पुं. (तत्.)* किसी उद् देश्यपूर्ति के लिए जन-समूह का मार्गदर्शन करने वाला व्यक्ति। **पर्या.** 1. सरदार, अगुवा leader

नेतृत्व *पुं. (तत्.)* 1. किसी उद् देश्यपूर्ति के लिए जनसमूह का मार्गदर्शन करने से संबंधित कार्य। 2. नेता का कार्य। **दे.** 'नेता'।

नेत्र *पुं. (तत्.)* सा.अर्थ आँख, अक्षि, चक्षु। **प्राणि.** देखने की इंद्रिय। कशेरुकी (रीढ़ वाले) प्राणियों में यह सामान्यत: करोटि के खोखल में स्थित नेत्र गोलक के रूप में होती है।

नेत्रहीन *वि. (तत्.)* नेत्रज्योति से हीन; अंधा blind

नेत्रोद [नेत्र + उद (क)] शा.अर्थ आँख का पानी यानी तरल पदार्थ। **जीव.** कशेरुकियों की आँख के अग्र भाग (अग्र-कक्षिका) में लेन्स और श्वेत मंडल cornea के बीच का तरल। aqueous humour

नेफा *पुं. (फ़ा.)* पायजामा, लहँगा आदि को कमर पर कसने के लिए नाड़ा/डोरी डालने हेतु ऊपरी किनारे को दोहराकर बनाया गया सिला हुआ मार्ग।

नेम *(पुं.) (बोलीगत प्रयोग तद्. < नियम)* 1. नियम, क़ायदा। **उदा.** प्रेम में नेम कहाँ हे ऊधो!। 2. नित्य नियम **जैसे:** शौच, स्नान, संध्यावंदन, पूजापाठ आदि दैनिक कार्य।

नेवला *(पुं.) (तद्. < नकुल)* 1. स्तनपायी व मांसाहारी जंतु जो भूरे रंग का रोयेंदार लंबी पूँछ वाला व लगभग गिलहरी जैसे आकार का होता है तथा जो साँप को मार डालता है। **पर्या.** नकुल। **उदा.** नेवला जंगल या वीरान स्थान में बिल में रहने वाला बहुत ही फुर्तीला जंतु है।

नैतिक [नीति+इक] *वि. (तत्.)* नीति से संबंधित। **दे.** नीति।

नैनन पुं. (तत्.<*नयन)* 1. मनुष्यों और पशुओं की वह ज्ञानेंद्रिय जो किसी वस्तु को देखते हैं। 2. देखने की शक्ति। **पर्या.** आँख, नेत्र, चक्षु।

नैप्थेलीन *पुं. (अं.)* **रसा.** कोलतार के आसवन से प्राप्त ठोस, श्वेत, गंधयुक्त एवं ज्वलनशील हाइड्रोकार्बन। इसकी तीखी गंध से कीड़े भाग जाते हैं।

नैराश्य *पुं. (तत्.)* [निराशा + य] निराश होने का भाव; आशा का अभाव, नाउम्मीदी। **दे.** निराशा।

नैसर्गिक [निसर्ग+इक] *वि. (तत्.)* 1. प्रकृति संबंधी या प्राकृतिक 2. स्वाभाविक। **उदा.** कश्मीर की नैसर्गिक शोभा वर्णनातीत है।

नोक *स्त्री. (फ़ा.)* किसी लंबी वस्तु के क्रमश: पतला होते हुए भाग का अंतिम सिरा जो बिंदुवत् होता है और चुभ सकता है। **जैसे:** सुठ की नोक, तलवार की नोक आदि।

नोक-झोंक *स्त्री. [फ़ा.नोक+हि.झोंक]* दो या अधिक लोगों के बीच आपस में होने वाली वह कहा-सुनी, शाब्दिक झड़प या लड़ाई जिसमें एक-दूसरे के प्रति व्यंग्य बाण छोड़े जाते हैं और आक्षेप भरी बातें अधिक होती हैं; तू-तू-मैं-मैं। **उदा.** आज सुबह मेरे दो पड़ोसियों के बीच कूड़ा फेंकने को लेकर बहुत देर तक नोक-झोंक चलती रही।

नोचना *स.क्रि. (देश.)* 1. किसी भी जमी या लगी हुई चीज को झटके से अपनी ओर खींचकर अलग करना। **जैसे:** फूल नोचना। **उदा.** गीध, कौए आदि शव के माँस को नोच-नोच कर खाते हैं। **उदा.** आपसी लड़ाई में बच्चों ने एक-दूसरे का मुँह नोच लिया।

नोट *पुं. (अं.)* 1. किसी देश की काग़ज़ी मुद्रा। **जैसे:** सौ रुपए के ये पाँच नोट हैं। 2. कार्यालयी पत्र व्यवहार में संदर्भगत लिखी गई कोई टिप्पणी। 3. स्मरणार्थ लिखा गया संक्षिप्त विवरण। **जैसे:** उसने उनके व्याख्यान की प्रमुख-बातें नोट कर ली है। 4. किसी ग्रंथ पर लिखी गई आलोचनात्मक टिप्पणी।

नौकर *पुं. (फा.)* वेतन के बदले में काम करने वाला। **पर्या.** सेवक, खिदमतगार, कर्मचारी। **जैसे:**

सरकारी नौकर, घरेलू नौकर आदि। (स्त्री.- नौकरानी) **विलो.** मालिक।

नौकरी [नौकर + ई] *स्त्री. (फ़ा.)* 1. नौकर का कार्य **पर्या.** सेवा, टहल। 2. वह सेवा कार्य जिसके बदले वेतन मिलता है।

नौका *स्त्री. (तत्.)* जलपरिवहन, जलक्रीड़ा आदि के काम आने वाला वह उपकरण जो जहाज़ से छोटा होता है। नाव, किश्ती।

नौपरिवहन *पुं. (तत्.)* नदी, समुद्र आदि में यातायात के रूप में प्रयुक्त किए जाने वाले नौका, जहाज़ आदि। navigation **उदा.** आजकल नौवहन सुविधाओं के बढ़ जाने से समुद्री यातायात सुगम हो गया है।

नौवहन *पुं. (तत्.)* **दे.** नौपरिवहन।

नौबत *स्त्री. (अर.)* 1. मंदिरों या राजमहलों में बजने वाले ऐश्वर्य या मंगल सूचक वाद्य विशेष शहनाई। 2. पारी, अवसर। **जैसे**: उसे राशन मिलने की अभी नौबत नहीं आई है। ला.अर्थ 3. दशा, हालत (बुरे अर्थ में) **जैसे:** अभी नौबत नहीं आई कि मैं लाठी लेकर चलूँ। **मुहा.** 1. नौबत आना - दशा बिगड़ जाना। 2. नौबत बजना - उत्सव मनाया जाना।

नौसिखिया *पुं. [तद्. < नव + सीखना]* जिसने हाल ही में कोई काम सीखा हो, सीखना प्रारंभ किया हो या सीख रहा हो, किंतु अभी तक उसमें निपुणता या कुशलता प्राप्त न की हो या नहीं आई हो। **पर्या.** नवशिक्षित, नवशिक्षु। **उदा.** तुम अभी नौसिखिया कार चालक हो। सावधानी से कार चलाना।

न्याय *पुं. (तत्.)* 1. उचित या अनुचित होने का निर्धारण। fairness 2. पूर्व निर्धारित विधि (कानून के अनुसार) किसी के दोषी/अपराधी होने या निर्दोष/अपराधी न होने संबंधी निर्णय। justice 3. छह भारतीय आस्तिक दर्शनों में से एक जिसमें तर्क और प्रमाणों के आधार पर ज्ञान प्राप्ति पर बल दिया गया है।

न्यायपालिका *स्त्री. (तत्.) विधि.* राज्य के तीन अंगों में से एक जिसका कर्तव्य संविधान की रक्षा, नागरिक अधिकारों की सुरक्षा और न्याय करना है। judiciary **तु.** विधायिका एवं कार्यपालिका।

न्यायप्रियता *स्त्री. (तत्.)* 1. न्याय प्रिय होने का भाव। 2. व्यक्ति का वह स्वभाव जिसमें सदा न्याय करने का गुण रहता है अथवा जिसे अन्याय सहन नहीं होता। **दे.** न्याय।

न्यायमूर्ति *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ न्याय का साक्षात् शरीरधारी रूप। विधि न्यायाधीशों के लिए संबोधन में प्रयुक्त आदरवाची शब्द।

न्यायसंगत *वि. (तत्.)* न्याय की दृष्टि से उचित। **पर्या.** न्यायोचित।

न्यायाधीश *पुं. (तत्.)* मुकदमों पर कानून के अनुसार विचारपूर्वक निर्णय देने वाला, न्यायपालिका का प्राधिकारी। **पर्या.** जज। **तु.** न्यायमूर्ति।

न्यायालय [न्याय + आलय] *पुं. (तत्.)* न्यायाधीश का कार्यालय जहाँ मुकदमों की सुनवाई और निर्णय होते हैं। **पर्या.** कचहरी, अदालत, कोर्ट court of justice

न्यायोचित [न्याय + उचित] *वि. (तत्.)* न्याय के अनुसार संगत या ठीक। **पर्या.** न्यायसंगत। **उदा.** आपकी माँगें न्यायोचित्त हैं। इन पर अगली बैठक में विचार किया जाएगा।

न्यारा *(वि.) (तद्. < निर्निकट)* उद्धति, मेल, गुण आदि में दूसरे से भिन्न, पृथक्, अलग। **उदा.** तुम्हारा पढ़ाने का तरीका सबसे न्यारा है। 2. सबसे न्यारा हिंदुस्तान।

न्यून *वि. (तत्.)* कम, थोड़ा। **विलो.** अधिक।

न्यूनकोण *पुं. (तत्.)* **ज्या.** 90° (नब्बे अंश) से कम वाला कोण। acute angle

न्यूनतम [न्यून + तम (अतिशय कोटि सूचक प्रत्यय] *वि. (तत्.)* कम से कम (मिनिमम) **उदा.** पहले परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए सौ में से न्यूनतम तैंतीस अंक अपेक्षित थे।

न्यूनतम मज़दूरी *स्त्री. [तत्. + फा.]* कम-से-कम मज़दूरी यानी जिससे कम मज़दूरी देना कानूनन जुर्म माना जाता है। **उदा.** सरकार ने अकुशल/कुशल श्रमिकों के लिए न्यूनतम मज़दूरी की दरें घोषित कर दी है।

न्योता *पुं. (देश.)* किसी मांगलिक कार्य या उत्सव में सम्मिलित होने के लिए इष्ट संबंधियों, मित्रों आदि को भेजा गया बुलावा;

न्योतना *स.क्रि. (देश.)* बुलाना, आमंत्रित/ निमंत्रित करना।

प

पंक्ति *स्त्री. (तत्.)* 1. खिंची हुई सीधी रेखा। 2. एक जैसी वस्तुओं, व्यक्तियों या जीवों का आगे-पीछे या अगल-बगल में एक सीध में रखना या खड़े होना। **पर्या.** कतार। **उदा.** सैनिकों/छात्रों ने पंक्तिबद्ध होकर परेड की।

पंख *पुं. (तद्.*<पक्ष) सा.अर्थ पक्षियों के वे अंग जिनकी सहायता से उड़ते हैं। **पर्या.** डैना, पर। **प्राणि.** (i) पक्षियों, चमगादड़ आदि की उड़ने में सहायक कर्मेंद्रिय जो रूपांतरित अग्रपाद होते हैं। (ii) कीटों में उड़ने के अंग जो त्वचा उद्वर्ध होते हैं। **पर्या.** पक्ष wings **मुहा.** 1. पंख लगना=गति बढ़ जाना। 2. पंख काटना=किसी के रास्ते में रूकावट डालना। 3. पंख जमना= (i) स्वच्छंद हो जाना, बुरी आदत लगना। (ii) विनाश नजदीक होना।

पंखा *पुं. (तद्.)* 1. ताड़, खजूर के पत्तों या बाँस आदि से बनाया गया वह विशेष उपकरण जो हवा के लिए हाथ से डुलाया जाता है। बेना/बेनवा। **पर्या.** व्यजन। 2. विद्युत चालित वह विशेष उपकरण जो हवा के लिए प्रयुक्त होता है। fan **जैसे:** हमारे पुस्तकालय में दो पंखे छत में लगे हैं तथा एक टेबलफैन नीचे रखा हुआ है। **तु.** पंखड़ी।

पंगु *वि.(तत्.)* जो पैरों से न चल सकता हो, लंगड़ा। **उदा.** (i) ईश्वर की कृपा से 'पंगु चढ़इ गिरिवर गहन। (ii) पंगु विकलांग श्रेणी में आते हैं।

पंचतंत्र *पुं.(तत्.)* विष्णु शर्मा रचित संस्कृत की एक प्रसिद्ध नीति-कथाविषयक पुस्तक जिसके पाँच भाग (तंत्र) हैं 1. सुहृदभेद, 2. मित्रलाभ, 3. काकोलूकीय, 4. लब्धप्रणाश और 5. अपरीक्षित कारक।

पंचतत्व/पंचभूत *पुं.(तत्.)* भारतीय दर्शन के अनुसार संपूर्ण सृष्टि की रचना करने वाले पाँच तत्व हैं। ये पाँच तत्व हैं-आकाश, वायु, तेज, जल और पृथ्वी। **उदा.** छिति-जल-पावक-गगन-समीरा। पंच-तत्व यह बना सरीरा।।

पंचनामा *पुं.(देश.)* किसी स्थिति या घटना के बारे में तैयार किया गया वह दस्तावेज जिस पर सनद के रूप में पाँच व्यक्तियों के हस्ताक्षर होते हैं। **उदा.** आयकर विभाग का छापा पड़ने पर जो माल बरामद हुआ उसका पंचनामा तैयार कर लिया गया।

पंचमी *स्त्री. (तत्.)* अमावस या पूनम के बाद की पाँचवी तिथि। **जैसे:** बसंत पंचमी।

पंचांग [पंच+अंग] *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ पाँच अंग हैं जिसके। ऐसा प्रकाशन जिसमें या तो (i) भारतीय पद्धति के अनुसार चंद्रमास वाली गणना के अनुसार प्रतिवर्ष विक्रमी संवत् संबंधी वार, तिथि, नक्षत्र, योग और करण (ये पाँच अंग-पंचांग) व्योरेवार दिए रहते हैं या फिर; (ii) ईसवी (खिटीय) कलेंडर के अनुसार जिसमें हर वर्ष के दिनों, सप्ताहों एवं महीनों का विवरण मिलता है। अल्पनाक, calendar

पंचामृत [पंच+अमृत] *पुं (तत्.)* पाँच द्रव्यों-गाय के दूध, दही, घी शहद और चीनी को मिलाकर देवस्नान के लिए बनाया गया वह पदार्थ जो पवित्र मानकर प्रसाद के रूप में ग्रहण किया जाता है। **उदा.** श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के पुण्य अवसर पर मैंने पंचामृत का प्रसाद लेकर व्रत तोड़ा।

पंचायत *स्त्री. (तद्.)* किसी विवाद को समाप्त करने के लिए चुने हुए (पाँच) लोगों का दल।

पंचायती राज *पुं. (तद्.)* **प्रशा.** भारत में प्रचलित गाँव और जिला स्तर पर स्थानीय स्वशासन की व्यवस्था। **टि.** यह व्यवस्था भारत में स्वशासन की प्राचीन परंपरा का ही विकसित रूप है। इस नई व्यवस्था में ग्राम स्तर पर ग्राम पंचायत, खंड स्तर पर पंचायत समिति तथा जिला स्तर पर जिला परिषद होती है।

पंछी *पुं. (तद्.)* पक्षी, चिड़िया। **उदा.** तुलसी पंछिन के पिए घटै न सरि को नीर।

पंजा *पुं.(फ़ा.)* 1. पाँचों अंगुलियों से युक्त हाथ का अग्रिम भाग, तलवा या हथेली। 2. पक्षियों के पैर का वह निचला भाग जिसके सहारे पक्षी खड़े होते, तैरते या बैठते हैं। 3. जूते का अगला भाग जिसमें पैरों की उंगलियाँ ढकी रहती हैं। 4. कुत्ते, बिल्ली, शेर, भालू आदि के नाखून जो शस्त्र का

काम करते हैं। 5. पाँच का समूह। **जैसे:** शेर के पंजे का निशान है।

पंजिका *स्त्री. (तत्.)* किसी भी प्रकार का विवरण, हिसाब-किताब आदि लिखने की पुस्तिका। **पर्या.** पंजी, बही, रजिस्टर। **जैसे:** उपस्थिति पंजिका, आय-व्यय विवरण पंजिका आदि। **तु.** संचिका।

पंजी (पंजिका) *स्त्री.(तत्.)* **प्रशा.** 1. व्यवहारों, घटनाओं, नामों आदि को दर्ज करने के लिए रखी गई पुस्तक/पुस्तिका या रजिस्टर। 2. प्राय: काम में आने वाले विशेष आंकड़ों के संग्रहण की युक्ति। register

पंजीकरण *पुं. (तत्.)* 1. पंजी (डायरी/रजिस्टर) में नाम या अन्य कोई भी संबंधित सूचना दर्ज करने की क्रिया। **जैसे**: मतदाता सूची में नाम का पंजीकरण अथवा डाक पंजीकरण आदि। Registration

पंजीकृत *वि. (तत्.)* शा.अर्थ पंजी में (रजिस्टर में) चढ़ाया हुआ। registerd

पंडाल *पुं. (तद्.)* शादी-ब्याह, सभा, अधिवेशन आदि के लिए छोलदारी tent से बना और सजा-सजाया बड़ा मंडल।

पंडित *वि. (तत्.)* 1. वह जो किसी विषय का पूर्ण ज्ञाता हो। **पर्या.** विद्वान। 2. शास्त्र के तात्पर्य का ज्ञाता। **पर्या.** शास्त्रज्ञ। 3. ब्राह्मण या विद् वान के नाम के पूर्व प्रयुक्त आदरसूचक शब्द। **जैसे:** पंडित मदनमोहन मालवीय। **विलो.** मूर्ख।

पंथ *पुं.(तत्.)* 1. मार्ग, रास्ता। 2. उपासना की पद्धति, संप्रदाय। **उदा.** ग्यान का पंथ, कृपान की धारा।

पंथनिरपेक्ष *वि.(तत्.)* 1. जो धार्मिक पंथों के प्रति तटस्थ हो 2. जो सभी धार्मिक पंथों के प्रति समान भाव रखे। secular

पंथनिरपेक्षता *स्त्री.(तत्.)* सभी धर्मों के प्रति समान भाव रखने, बरतने की यानी किसी पंथ (धर्म) विशेष से न जुड़ने की स्थिति। secularism

पंसारी *पुं.(तद्.* < पण्यशाली) खाद्य सामग्री संबंधी फुटकर वस्तुओं (**जैसे**: गेहूँ, मक्का, चावल, बाजरा, दालें आदि को छोडक़र) चीनी, मसाले, सूखे मेवे, जड़ी-बुटियाँ आदि की बिक्री करने वाला व्यापारी। grocer

पकड़ *स्त्री.(तद्.)* 1. पकड़ने का ढंग। **जैसे**: मजबूत पकड़, ढीली पकड़। 2. ग्रहण शक्ति ग्रहण-कौशल। **उदा.** गणित में उसकी पकड़ बहुत अच्छी है। 3. किसी के दोष निकालना। **उदा.** आपने उसकी गलती पकड़ ली।

पकड़ना *स.क्रि. (तद्.*<प्रग्रहण) 1. किसी वस्तु को हाथ/अंगुलियों से दृढ़तापूर्वक ग्रहण करना ताकि वह छूट न पाए। 2. थामना, धरना, ग्रहण करना। **जैसे**: माँ ने नालीपार करने में बालक का हाथ पकड़ लिया, थैला पकड़ना। 3. कैद करना-पुलिस ने चोर को पकड़ लिया। 4. कमी को पहचानना/समझना **जैसे:** उसने मेरे लेख की त्रुटि पकड़ी ली। 5. गाड़ी में चढ़ना-कमल ने भागकर बस/गाड़ी पकड़ ली। **विलो.** छोड़ना।

पकना *अ.कि.(तद्.*) 1. फलों इत्यादि का पूर्ण (परिपक्व) अवस्था में आना। 2. आग की सहायता से अन्न, सब्जी आदि का खाने योग्य बन जाना। 3. बालों का सफेद होना। 4. फोड़े, फुंसी आदि में मवाद हो जाना। **मुहा.** कान पकना-किसी बात को सुन-सुन कर ऊब जाना।

पकवान *पुं.(तद्.*) घी या तेल में तले या पकाये गए पदार्थ। **जैसे**: कचौड़ी, समोसा, जलेबी आदि। **उदा.** किसी शुभ पर्व, जन्मदिन या अतिथि सत्कार के लिए विविध पकवान बनाए जाते हैं।

पक्का *वि.(तद्.*) जो घी या तेल में पकाया गया हो। जैसे-पक्का भोजन। *दे.* पकवान। **विलो.** कच्चा (**जैसे:** रोटी, खिचड़ी, दाल, चावल आदि कच्चा भोजन कहलाता है।)

पक्का गाना *पुं.(तद्.)* बोलचाल में शास्त्रीय संगीत का पर्याय। **दे.** शास्त्रीय गान'।

पक्ष *पुं.(तत्.)* 1. (i) दो परस्पर विरोधी विचारों में से प्रस्तुत मूल विचार का समर्थन करने वाला समूह; (ii) वह मूल विचार भी side, party **विलो.** विपक्ष, प्रतिपक्ष। 2. पक्षी का पंख। wing 3. भारतीय चंद्रमास के दो भागों में से कोई भी भाग कृष्ण या शुक्ल पक्ष। 4. **व्या.** क्रिया-व्यापार के घटित होने की रीति का निर्देश करने वाली व्याकरणिक कोटि। **जैसे**: सूर्य पूर्व से निकलता है। (नित्यपक्ष), वह घर पहुँच गया। (पूर्णपक्ष), लड़का दौड़ रहा है। (सातत्य पक्ष) aspect

पक्षकार *पुं.(तत्.)* किसी विधिक विषय, लेन-देन, संविदा आदि में एक पक्ष बनने वाला व्यक्ति या व्यक्ति-समूह। party

पक्षधर *वि.(तत्.)* वह व्यक्ति जो किसी का पक्ष ले; या किसी पक्ष विशेष का समर्थन करे।

पक्षपात *पुं.(तत्.)* 1. दो या अधिक पक्षों में से किसी एक के प्रति झुकाव। biash 2. निष्पक्षता और न्याय भावना का अभाव। partiality **उदा.** किसी भी प्रतियोगिता में निर्णायक को पक्षपात नहीं करना चाहिए।

पक्षपातपूर्ण *वि.(तत्.)* पक्षपात से भरा हुआ। कोई भी पक्षपातपूर्ण निर्णय कष्टप्रद होता है।

पक्षपात रहित *वि.(तत्.)* किसी एक पक्ष के प्रति झुकाव न रखते हुए सभी पक्षों के प्रति समान न्यायभावना प्रदर्शित करने वाला व्यक्ति, निर्णय, साक्ष्य आदि।

पक्षपाती *वि.(तत्.)* पक्षपात करने वाला। **जैसे**: अंपायर को पक्षपाती नहीं होना चाहिए।

पक्षी *पुं. (तत्.)* सा.अर्थ पंखों वाला जीव। **पर्या.** चिड़िया, परिंदा। **प्राणि.** नियततापी कशेरूकी जिसका शरीर परों/पंखों से ढका रहता है, फेफड़ों से सांस लेता है तथ अंडे देता है। bird

पक्षीवृंद [पक्षी+वृंद] *पुं.(तत्.)* पक्षियों का दल, झुंड या समूह। **जैसे**: प्रातः उद्यान में पक्षीवृंद कलरव कर रहे थे।

पखेरू *पुं.(तद्*<पक्षालु) दे. पक्षी।

पग *पु. (तद्.*<पद) बोलियों में प्रयुक्त शब्द। **दे.** पाँव, पैर, डग। (**उदा.** पग घुंघरू बांध मीरा नाची रै)

पगडंडी *स्त्री. (तद्.)* मनुष्यों या पशुओं के पैदल चलने से जंगल, खेत या मैदान में बन जाने वाला लकीर-सा कच्चा रास्ता।

पगड़ी *स्त्री.(तद्.*<पटक) 1. सिर पर लपेटकर बाँधी जाने वाली लंबी कपड़े की पट्टी; इस तरह से बंधा वस्त्र। **पर्या.** पाग, साफ़ा। **मुहा.** पगड़ी उछालना/उतरना-अपमानित होना। पगड़ी बँधना-सिर पर जिम्मेदारी आना; सम्मान मिलना। पगड़ी पैरों में रखना-दया की भीख मांगना। 2. वह अवैध धन जो मकान मालिक महत्वपूर्ण स्थानों पर स्थित मकान या दुकान किराए पर देते समय अलग से लेता है।

पगा *पुं.(देश.)* **दे.** पगड़ी। **उदा.** सीस पगा न झग्गा तन में।

पगार *पुं.(पुर्त.)* वेतन। **उदा.** मुझे अभी तक गत महीने का पगार नहीं मिला।

पगुराना *अ.क्रि.(देश.)* जुगाली करना। **लोको.** भैंस के आगे बीन बजाए, भैंस खड़ी पगुराय।

पग्गड़ *स्त्री. (देश)* भारी-भरकम पगड़ी (अवमानना सूचित करने के लिए प्रयुक्त 'पगड़ी' सूचक शब्द) **दे.** पगड़ी'।

पचड़ा *पुं. (तद्.*) बिना मतलब की समस्या। **पर्या.** झंझट या बखेड़ा, झमेला। **उदा.** तुम दूसरों के पचड़े में क्यों पड़ते हो, अपना काम देखो, घर जाओ।

पचना *अ.क्रि. (तत्.*) 1. खाई हुई वस्तु का हजम हो जाना। **जैसे**: खाना पचना। 2. किसी धन-संपत्ति को अपने अधिकार में लेकर नहीं लौटाना। **उदा.** छोटा भाई पिता की सारी संपत्ति पचा गया, बड़े के हाथ कुछ भी नहीं आया। 3. किसी बात को छिपाकर रखना। **उदा.** वह अपने अपमान की बात सारी की सारी पचा गया किसी से कुछ नहीं बताया।

पचीस/पच्चीस *वि.(तद्.)* बीस से पाँच अधिक, 24 की संख्या। **जैसे:** तालाब में पचीस/पच्चीस बत्तखें तैर रही हैं।

पचीसी *स्त्री.(तद्.)* 1. एक ही प्रकार की पच्चीस वस्तुओं का समूह। **जैसे**: बेताल-पचीसी (25 कहानियों का संग्रह) 2. **आयु** के प्रारंभिक 25 वर्ष जब व्यक्ति अधिक समझदार नहीं होता। **मुहा.** गदहपच्चीसी (गधापचीसी)-नासमझ उम्र। **जैसे**: उसकी तो अभी गधापचीसी की उम्र है।

पछताना *अ.क्रि.(तद्.*<पश्चात्ताप) कोई अनुचित काम कर लेने के बाद यह सोचना कि यदि वैसा न किया जाता तो अच्छा होता; उसके लिए दुखी होना, पश्चाताप करना।

पछतावा *पुं.(तद्.)* किसी अनुचित कार्य को कर लेने के बाद उसके बारे में पछताने का भाव। *दे.* पछताना। **पर्या.** पश्चात्ताप।

पछाड़ना *स.क्रि.(तद्.)* 1. ज़मीन पर पटकना या चित्त गिराना, परास्त करना, हराना। **उदा.** भारत केसरी सतपाल ने बड़े-बड़े पहलवानों को पछाड़ दिया। 2. धोने के लिए वस्त्रों को पत्थर आदि पर बार-बार ज़ोर से पटकना। **उदा.** धोबी कपड़ों को धोने के लिए पत्थर पर पछाड़ता है। **मुहा.** पछाड़ खाना=अत्यंत दुखी होकर बेचैनी के साथ शरीर का धरती पर गिरना। **उदा.** नवविवाहिता अपने पति की दुर्घटना में मृत्यु की खबर सुनकर पछाड़ खाकर गिर पड़ी।

पछुवा/पछुआ *वि./स्त्री.* *(तद्.*<पश्चवात/पश्चवायु) पश्चिम दिशा से चलने वाली हवा।

पट *पुं.(तद्.*<पट्ट) 1. राज सिंहासन **जैसे:** पटरानी। 2. रेशमी कपड़ां **उदा.** पट पाँखड़े परहिं विधि नाना। 3. फैला हुआ श्वेत वस्त्र, परदा। **जैसे**: चित्रपट, रजतपट आदि। 4. दरवाजे का पल्ला। **उदा.** मंदिर के पट खुल गए, दर्शन कर लो। 5. *वि.* भूमि पर पेट के बल लेटा; औंधा। **विलो.** चित।

पटकथा *स्त्री.(तत्.)* शा.अर्थ पर्दे पर प्रस्तुत की जाने के लिए तैयार की गई कथा। सा.अर्थ सिनेमा, नाटक, धारावाहिक आदि के लिए लिखी गई मूल कहानी का रूपांतरित पाठ। script

पटकना *स.क्रि. (तद्.)* 1. किसी व्यक्ति या वस्तु को उठाकर ज़ोर से पृथ्वी पर गिराना, **दे** मारना। **जैसे**: अखबार पटकना, शत्रु को पटकना। 2. कुश्ती में प्रतिद् वंद् वी को पृथ्वी पर गिराकर पछाड़ना, पराजित करना।

पटना *अ.क्रि.(तद्.)* 1. गड्ढे आदि का भरकर समतल हो जाना। 2. किसी वस्तु का किसी जगह में बहुत अधिक इकट्ठा हो जाना। **जैसे:** गोदामों में अनाज पटा पड़ा है। 3. दीवारों में छत पड़ना। **जैसे:** आज विद्यालय की छत पट गई है। 4. विचार या स्वभावगत मेल होना। **जैसे**: उन दोनों भाईयों की खूब पटती है। 5. ऋण चुकता हो जाना। **जैसे**: उसका बैंक का सारा कर्ज पट गया।

पटरा *पुं.(तद्.*<पटल) 1. काठ का लंबा और चौरस चीरा हुआ टुकड़ा, तख्ता। 2. खेत की मिट्टी बराबर करने का पाटा। 3. बैठने के लिए बना काठ का आसन। 4. विवाह मंडल में वर-वधू के लिए बनाया जाने वाला आसन। **उदा.** परंपरावादी लोग आज भी पटरे पर बैठकर भोजन करते हैं।

पटरी *स्त्री.(तद्.)* 1. लकड़ी की छोटी तख्ती। 2. सडक़ या नहर के दोनों ओर थोड़ा ऊँचा और कम चौड़ा मार्ग जो पदयात्रियों के लिए होता है। **उदा.** वाहन दुर्घटना से बचने के लिए पटरी पर चलना चाहिए। 3. लोहे की पटरी जिस पर रेलगाड़ी चलती है। रेल 4. छोटे बच्चों का लिखना सिखाने की तख्ती। **मुहा.** पटरी बैठना-मन मिलना।

पटवारी *पुं. (तत्.)* खेती की ज़मीन और उस पर लगने वाली माल गुजारी का हिसाब-किताब रखने वाला, सरकारी कर्मचारी।

पटसन *पुं. (तद्.)* 1. एक प्रसिद्ध रेशेदार पौधा जिसे गलाकर निकाले गए रेशे से सुतली, रस्सी, बोरे, टाट आदि बनाए जाते हैं। 2. पौधे के रेसे। jute

पटाना *स.क्रि. (तद्.)* 1. किसी दूसरे से पाटने का काम कराना। **जैसे**: गड्ढे को मज़दूर से पटाना अर्थात गड्ढे को मिट्टी, पत्थर आदि से पूरा भराना। 2. किसी के द्वारा छप्पर या छत तैयार करवाना। 3. उधार चुकाना। **उदा.** उसने मेरा सारा ऋण पटा दिया। 4. बातचीत द्वारा सौदा तय करना। **उदा.** क्या आपने प्लाट का सौदा पटा लिया? 5. किसी को अपने ऊपर प्रसन्न या अपने अनुकूल करना। **उदा.** उसने एक व्यक्ति को गवाही देने के लिए पटा लिया है।

पटिया *स्त्री.(तद्.*पोट्टिका) शा.अर्थ (पत्थर, लकड़ी, खेत आदि की) कम चौड़ी पर अधिक लंबी समतल पट्टी, चारपाई चारों पायों में ऊपर की ओर कसी जाने वाली लकड़ी की लंबी पट्टी जिसमें रस्सी डालकर बीच का जाल बनाया जाता है। **पर्या.** पाटी, पट्टी।

पट्टिकाणु [पट्टीका + अणु] *पुं.(तत्.)* पट्रिकाणु **प्राणि.** स्तनियो में छोटी रंगहीन रूधिर कणिका। रूचि के स्कंदन (थक्का बनाने) में इसका महत्वपूर्ण योगदान होता है। Platelet **पर्या.** रूधिर पट्टिकाणु।

पटु *वि.(तत्.)* किसी कार्य में कुशल, निपुण, प्रवीण, चतुर। **उदा.** वह लोक व्यवहार का निर्वाह करने में पटु है।

पटुता *(स्त्री.)* *(तत्.)* पटु होने का भाव, कुशलता, निपुणता, चातुर्य।

पट्टाकर्ता *पुं.(तद्.)* व्यक्ति जो अचल संपत्ति का अधिकार हस्तांतरण पत्र पर हस्ताक्षर करे।

पट्टाधारी *पुं. (तद्.)* व्यक्ति या पक्ष जिसके नाम पट्टा दिया गया हो। **पर्या.** पट्टेदार। **दे.** पट्टा।

पट्टी *पुं. (तद्.* < पट्ट) 1. पालतू कुत्ते, बिल्ली आदि के गले में बाँधी जाने वाली चमड़े की चौड़ी पट्टी। 2. कमर में बाँधा जाने वाला बेल्ट। 3. **प्रशा.** संपत्ति (जमीन-जायदाद) के उपयोग का अधिकारपत्र। lease

पट्ट *पुं.(तत्.)* 1. काठ या धातु का वह बड़ा टुकड़ा या प्लेट जिस पर नाम, सूचनाएँ आदि लिखी जाती हैं। **जैसे**: नामपट्ट, सूचनापट्ट आदि। 2. तांबे आदि धातु की वह पट्टी जिस पर राजाज्ञा या दान आदि की सनद उकेरी जाती थी, पत्र। 3. लकड़ी, सीमेंट आदि से बना चपटा सा चौरस भाग **जैसे:** श्यामपट्ट। 4. पगड़ी, दुपट्टा आदि धारण करने योग्य वस्त्र। 5. पीढ़ा, पटरा। (बैठने के उपयोग का)

पट्टी *स्त्री.(तद्.)* 1. लकड़ी, पत्थर, लोहा आदि का तैयार किया गया पतला, समतल आयताकार छोटा तख्ता। 2. लकड़ी की पटिया जिस पर बच्चे चॉक से लिखते हैं। **मुहा.** बेईमानी की पट्टी पढ़ाना-पाठ पढ़ाना। ला.अर्थ हानिकारक, सीख या सलाह।

पट्टेदार *पुं.* **दे.** पट्टाधारी'।

पट्ठा *पुं.(तद्.<पुष्ट)* 1. शरीर से हृष्ट-पुष्ट व जवान मनुष्य; पहलवान, कुश्तीबाज़। **उदा.** (व्यंग्य में) 1. ये दोनों खा-खाकर पट्ठे हो रहे हैं किंतु किसी काम के नहीं। (गाली) उल्लू का पट्ठा=महामूर्ख व्यक्ति।

पठार *पुं.(देश.)* लगभग समतल पृष्ठ वाला वह विस्तृत भूखंड जो आसपास की भूमि से ऊँचा उठा हुआ हो और जिसका कम-से-कम एक तरह का हिस्सा ढालू दिखाई दे। plateau, table land

पड़ताल *स्त्री. (तद्.)* सा.अर्थ किसी के लिए काम को दूसरे द्वारा बारीकी से जाँचना। (**जैसे:** पटवारी) **कृषि.** निचले स्तर के कर्मचारी द्वारा तैयार किए गए लेखों को उससे ऊँचे पद वाले कर्मचारी (**जैसे**: निरीक्षक) द्वारा जाँचना और यह प्रमाणित करना कि उसमें अब किसी तरह की गलती नहीं रही है। **पर्या.** निरीक्षण inspection

पड़ाव *पुं. (तद्.)* 1. सेना, यात्रीदल, बरात आदि का आगे बढ़ते हुए विश्राम के लिए कुछ समय तक या रातभर मार्ग मे कहीं ठहरना, इसी तरह सेना, यात्रियों आदि के ठहरने का स्थान। **उदा.** आपका कल रात्रि में पड़ाव कहाँ होगा?

पड़िया *स्त्री. (तद्.)* भैंस का मादा बच्चा।

पड़ोस *पुं.(तद्.)* 1. घर, ग्राम, जनपद, देश आदि के आसपास का क्षेत्र, स्थान। 2. किसी के निवास स्थान की समीपवर्ती वह स्थिति जिसमें अन्य लोगों का निवास हो। **जैसे**: हमारा पड़ोस बहुत अच्छा है। neighbour-hood

पड़ोसी *पुं./वि. (तद्.)* 1. पास में रहने वाला, **जैसे:** श्री अरविंद जी हमारे पड़ोसी हैं। 2. पाकिस्तान हमारा पड़ोसी देश है।

पढ़ना स.क्रि.(तद्.<पठन) 1. लिखे हुए को बाँचना, 2. शिक्षा प्राप्त करना अर्थात विधिवत् अध्ययन करना।

पढ़ना-लिखना *स.क्रि. (तद्.)* 1. शिक्षण के वे दो आरंभिक कौशल जिनसे उच्चरित भाषा को सुवाच्य वर्णों के माध्यम से कागज़ पर प्रस्तुत करना और फिर उसे मूल भाषा-भाषी के अनुरूप ही अपनी वाणी से दोहराना (इसे क्रमानुसार लिखना-पढ़ना) कहा जा सकता है। 2. आरंभिक शिक्षा से ऊँचे स्तर की शिक्षा प्राप्त करना।

पढ़ाई *स्त्री.(तद्.)* [पढ़ना+आई प्रत्यय] 1. पढ़ने का काम, भाव या ढंग। 2. शिक्षा प्राप्त करने के लिए किया जाने वाला कार्य, अध्ययन, पठन। learning, teaching **जैसे**: 1. वह पढ़ाई के लिए विदेश गया है। 2. उसका पढ़ाई में मन नहीं लगता।

पढ़ा-लिखा *वि.(तद्.)* 1. जिसने पढ़ना-लिखना सीख लिया हो। 2.औपचारिक (उच्च) शिक्षा प्राप्त व्यक्ति, शिक्षित, साक्षर। educated **विलो.** अनपढ़।

पतंग *पुं.(तत्.)* 1. उड़ने वाला पक्षी, चिड़िया। 2. उड़ने वाले कीड़े **जैसे**: फतिंगा, भुनगा, टिड्डी। 3. सूर्य।

पतंग *स्त्री.(तत्.)* कागज से बना एक प्रसिद्ध चौकोर खिलौना या मनोरंजक वस्तु जिसे बच्चे तथा बड़े भी डोरी में बाँधकर आकाश में उड़ाते हैं। **पर्या.** गुड्डी। **जैसे:** 15 अगस्त को बच्चे सारा दिन पतंग उड़ाते हैं।

पतंगा *पुं.(तद्.*<पतंग या पतंगम) एक प्रकार का उड़ने वाला अल्पजीवी कीट (कीड़ा) फतिंगा जो जलती रोशनी की ओर आकृष्ट होने पर जलकर मर जाता है। **प्राणि.** lepidoptera के असंख्य कीटों में से कोई भी पंख युक्त कीट जो तितलियों से भिन्न होता है।

पतझड़ [पत=पत्ता+झड़=झड़ना] *पुं.(तद्.)* शा.अर्थ पत्तों का झड़ना, **भू.** वह मौसम जब पेड़ के पत्ते पक जाने या सूख जाने के बाद अपनी डाल से टूटकर धरती पर गिर जाते हैं। **पर्या.** शिशिर। the fall शिशिर का मौसम।

पतन *पुं.(तत्.)* 1. ऊपर से टूटकर, लुढककर या अन्य प्रकार से नीचे गिरने की क्रिया या भाव। **जैसे**: वृक्ष से फलों का पतन। 2. उच्च वैभव/उच्च पद/कुल आदि के स्तर से गिरकर बहुत निचले स्तर पर आना, अवनति, अधोगति। down fall **पर्या.** उत्थान।

पतला *वि. (तद्.)* 1. जो कम घेरे वाला हो यानी मोटा न हो। कृश। **जैसे**: पतला पेड़। 2. कम चौड़ा, संकरा। **जैसे:** पतला रास्ता। 3. बारीक। जैसे-पतला धागा। 4. जो गाढ़ा द्रव न हो। **जैसे**: पतला दूध।

पतवार *स्त्री.(देश.)* 1. नाव या जहाज के पिछले हिस्से पर बँधा वह तिकोना उपकरण जिसकी सहायता से नाव इधर-उधर घूमाई जाती है। radar 2. ला.अर्थ. विपत्ति दूर करने का साधन। **उदा.** कर्ज़ से मुक्ति कराने में आप ही पतवार बनें।

पताका *स्त्री.(तत्.)* 1. कपड़े या कागज़ का बना पूर्व निश्चित आकार वाला झंडा जो डंडे या रस्सी में बाँधा या लगाया जाता है। **पर्या.** झंडा, ध्वज, झंडी। **उदा.** (i) देवालय में पताका फहरा रही है। (ii) चुनाव को जीत कर उसने अपनी विजय पताका लहराई है।

पतिंगा *पुं. (तद्.*<पतंग) वे पंखदार कीड़े जो बरसात के मौसम में जलती हुई बत्ती या दीपक के चारों ओर उड़ते हैं। **दे.** पतंगा'।

पति *पुं. (तत्.)* 1. किसी वस्तु, स्थान, देश आदि का मालिक अथवा सर्वोच्च अधिकारी। **जैसे:** गृहपति, भूमिपति, राष्ट्रपति। 2. किसी विवाहित नारी का स्वामी या भरतार। **पर्या.** शौहर, खाविंद, स्वामी।

पतित *वि.(तत्.)* 1. ऊपर से नीचे गिरा हुआ। **जैसे:** पर्वतपतित शिला खंड। 2. जो नैतिक दृष्टि से आचरण से गिरा हुआ हो। **पर्या.** अधम, नीच। **उदा.** 1. वह धन के संबंध में इतना पतित है कि गरीबों को भी नहीं छोड़ता। 2. पतितपावन- पतितों को भी पावन-पवित्र करने वाला (ईश्वर)

पतियाना *स.क्रि.(तद्.*>सं. प्रत्यायन) 1. किसी के कथन को ठीक मानकर उस पर पूरी तरह विश्वास कर लेना। 2. किसी व्यक्ति को विश्वसनीय मानना। **टि.** ग्रामीण प्रयोग।

पतीला *पुं.(देश.)* तांबे, पीतल स्टेनलैसस्टील आदि चौड़े मुंह वाला गोल बर्तन। **उदा.** तांबे के पतीले में जल और स्टील के पतीले में दूध भरा है।

पतीली *स्त्री. (देश.)* छोटा पतीला।

पतोहू *स्त्री.(तद्.*>पुत्रवधू) बेटे की पत्नी, पुत्रवधू। **जैसे**: उत्तरा अर्जुन की पतोहू थी।

पत्तन *पुं.(तत्.)* बंदरगाह के आसपास की बस्ती। port town **टि.** 'पतन' और पत्तन के उच्चारण में सार्थक भेद बनाए रखना आवश्यक है।

पत्तल *स्त्री.(तद्.)* पहले पलाश और सागवान और अब कागज़, प्लास्टिक आदि के पन्नों को मशीन से दबाकर बनी थाली की आकृति वाली रचना जो सार्वजनिक भोजों में खाद्य पदार्थ परोसने के काम आती है।

पत्ती *स्त्री. (तद्.)* 1. छोटा पत्ता, पंखुड़ी। **जैसे:** पेड़ की पत्तियाँ। 2. हिस्सा, भाग। **जैसे**: ताश का पत्ता। 3. लोहे/फौलाद का बना धारदार और पतला उपकरण। **जैसे**: दाढ़ी बनाने की पत्ती।

पत्थर *पुं.(तद्.)* दबाव के कारण चूने, बालू आदि ठोस होने से बना भारी व कड़ा भूद्रव्य जो प्राय: खानों से या पर्वतों को काटकर निकाला जाता है। **पर्या.** शिला, चट्टान। मुहा. (i) पत्थर की लकीर=पक्का निर्णय, विचार या कथन, जिसे बदलवा पाना अत्यंत कठिन हो। **उदा.** मैंने जो कह दिया उसे पत्थर की लकीर समझो। (ii) पत्थर दिल (वि.)=दयाहीन। **उदा.** वह पत्थरदिल इंसान है।

पत्नी *स्त्री.(तत्.)* वह स्त्री जिससे पुरूष का विधिपूर्वक विवाह संपन्न हुआ हो। अर्धांगिनी। **पर्या.** सहधर्मिणी, अर्धांगिनी, भार्या, बीवी, जोरू।

पत्र *पुं.(तत्.)* 1. वृक्ष का पत्ता leaf **पर्या.** पर्ण। 2. कागज़ का पन्ना जिस पर संदेश या समाचार लिखकर भेजा जाए। **पर्या.** चिट्ठी, खत letter 3. समाचार-पत्र की संक्षिप्ति। **पर्या.** अखबार। news paper 4. छपी या लिखी सामग्री का पन्ना।

पत्रकार *पुं.(तत्.)* 1. समाचार-पत्र, पत्रिका, दूरदर्शन, रेडियो, न्यूज चैनल इत्यादि के लिए समाचार या लेख आदि भेजने वाला व्यक्ति। journlist

पत्रकारिता *स्त्री.(तत्.)* 1. जनसंपर्क माध्यमों (पत्र-पत्रिकाओं, रेडियो, दूरदर्शन आदि) के लिए समाचार, लेख, फ़ीचर आदि लिखने तथा संपादित करने की कला। 2. पत्रकारों के व्यवसाय से संबंधित विद्याशाखा। 3. पत्रकारों का व्यवसाय। jourialism

पत्रवाहक *पुं.(तत्.)* शा.अर्थ पत्र ले जाने वाला। सा.अर्थ डाक विभाग का वह कर्मचारी जो डाकघर से पत्रों को ले जाकर पत्र पाने वाले के घर या दफ्तर पर उसे सौंपता है। **पर्या.** डाकिया, post man **उदा.** आज पत्रवाहक द्वारा मेरा प्रमाणपत्र प्राप्त हुआ।

पत्रा *पुं.(तत्.)* पंचांग (तिथि, वार, नक्षत्र, करण और योग सूचक वर्षभर के विवरण वाली पुस्तिका) के लिए प्रयुक्त ग्रामीण प्रयोग।

पत्राचार *पुं.(तत्.)* दो व्यक्तियों, कार्यालयों अथवा पक्षों के बीच परस्पर पत्रों या चिट्ठियों के माध्यम से विचारों का आदान-प्रदान; पत्र-व्यवहार। correspondence

पत्रिका *स्त्री.(तत्.)* 1. सामान्यत: दैनिक समाचार पत्रों को छोड़कर मध्यम आकार वाले नियमित आवधिक प्रकाशन (जो विविध विषयों से संबंधित हो सकते हैं) periodical journal **उदा.** 1. आपके घर कौन-कौन सी पत्रिकाएँ आती हैं 2. संदेश, निमंत्रण, शुभसमाचार आदि पहुँचाने वाला पत्र विशेष। **उदा.** क्या आपको रमेश की निमंत्रण पत्रिका मिल गई?

पत्री *स्त्री.(तत्.)* सामान्यत: पत्रिका का पर्याय। **जैसे:** जन्मपत्री। **दे.** पत्रिका'।

पथ *पुं.(तत्.)* रास्ता, मार्ग (**जैसे**: राजपथ, जनपथ)। **उदा.** मातृभूमि पर शीश चढ़ाने जिस पथ जाएँ वीर अनेक।

पथभ्रष्ट *वि.(तत्.)* 1. जो सुनिश्चित रास्ते से भटक गया हो। 2. जो नैतिकता के रास्ते से विमुख हो गया हो। **जैसे**: पथभ्रष्ट लोग अपने कुल को कलंकित करते हैं।

पथराना *अ.क्रि. (तद्.)* 1. (किसी वस्तु का) सूखकर पत्थर जैसा कठोर/कड़ा हो जाना। 2. पत्थर की तरह जड़, निर्जीव या स्थिर स्तब्ध हो जाना। **उदा.** तुम्हारी प्रतीक्षा करते-करते मेरी आँखे पथरा गई।

पथराव *पुं.(तद्.)* किसी बात का विरोध करते हुए किसी व्यक्ति या समूह पर बार-बार पत्थर आदि फेंकने की क्रिया या भाव। **उदा.** कश्मीर में पिछले दिनों लोगों ने पथराव कर अपना असंतोष जाहिर करना शुरू कर दिया।

पथरीला *स्त्री.* पथरीली। **वि.** पत्थर मिला हुआ, पत्थरों से युक्त। **जैसे**: पथरीला रास्ता, पथरीली धरती।

पथिक *पुं.(तत्.)* पथ पर चलने वाला, रास्ते चलने वाला यात्री। **पर्या.** बटोही, राहगीर, मुसाफिर। **उदा.** कोई पथिक वृक्ष के नीचे विश्राम कर रहा है।

पथ्य *वि.(तत्.)* (वे भोज्य पदार्थ) जो रोग विशेष में हानिकारक नहीं होते; रोगी को दिया जाने वाला विशेष भोजन; स्वास्थ्य की दृष्टि से उपयुक्त आहार। **विलो.** कुपथ्य, अपथ्य।

पद *पुं.(तत्.)* 1. चरण, पाँव, पैर। फुट। 2. वाक्य में प्रयुक्त विभक्तियुक्त शब्द। 3. कार्यालय में काम करने वाले कर्मचारी/अधिकारी की नियत स्थिति का परिचायक स्थान। post 4. काव्यमय गेय रचना। **जैसे**: सूरदास या मीरा के पद। 5. छंदशास्त्र के अनुसार श्लोक की पंक्ति।

पदक *पुं.(तत्.)* 1. किसी व्यक्ति के विशेष प्रसंशनीय कार्य करने पर उसे किसी संस्था या सरकार व्दारा दिया जाने वाला सोने, चांदी, आदि धातु का कलात्मक रूप से बना हुआ गोल टिक्की के आकार वाला पुरस्कार, तमगा। **जैसे:** स्वर्णपदक, रजतपदक, कांस्यपदक आदि। medal 2. किसी देवता के चरण-चिह्नों से अंकित एक छोटा सा धातु खंड जिसे गले में आभूषण की तरह पहना जाता है।

पदक्रम *पुं.(तत्.)* 1. **प्रशा.** समान ओहदे वाले कर्मचारियों का वर्ग। grade 2. **व्या.** वाक्य में प्रयुक्त पदों के अनुक्रम को प्रकार्य और अर्थ की दृष्टि से देखना। **उदा.** 1. राम घर जाता है। कर्ता का एकवचन+कर्म का एकवचन+अकर्मक जाना क्रिया का वर्तमान कालिक एकवचन रूप। 2. राम ने फल खाए। कर्ता एकवचन+कर्म बहुवचन+सकर्मक क्रिया 'खना' का भूतकालिए बहुवचन रूप। (वर्ड आर्डर)

पदचाप [पद+चाप=आहट] *स्त्री.(तत्+देश.)* पैरों की आहट।

पदचिह्न *पुं.(तत्.)* 1. धरती पर पड़ने वाला पैर का चिह्न या निशान, पैर की छाप। **उदा.** सीता मार्ग में राम के पदचिह्नों को देखकर उनसे अलग अपना पैर रखती थीं। 2. ला.अर्थ महापुरूषों द्वारा बताए गए आदर्श सिद्धांत, रीति-नीति आदि। **उदा.** हमें महात्मा गांधी के पद-चिह्नों पर चलकर देश को समृद्य बनाना चाहिए।

पदच्छेद *पुं.(तत्.)* 1. किसी वाक्य या वाक्यांश के पदों को अलग अलग करना। 2. संधियुक्त व समासयुक्त पदों को विभक्त करना। **जैसे**: 1. हिमालय (कर्ता, व्यक्तिवाचक संज्ञा) पर्वतों (संज्ञा का संबंधकारक विभक्ति) का राजा (संज्ञा) है (क्रिया, वर्तमान कालिक एकवचन)। संधि- हिम+आलय। 2. यह महापुरूष है। (समास) (महान पुरूष)

पदच्युत *वि.(तत्.)* अपने पद से हटाया गया, नौकरी से निकाला गया। **पर्या.** बरखास्त। dismissed

पदच्युति *स्त्री.(तत्.)* अपने पद से हटाया जाना, नौकरी से निकाला जाना। **पर्या.** बरखास्तगी dismissal

पदत्याग *पुं.(तत्.)* पद का त्याग करना, उचित इच्छा से अपना पद या राजगद् दी छोड़ देना। relinguishment abdication

पद-परिचय *पुं.(तत्.)* वाक्य में प्रयुक्त पदों का व्याकरणिक दृष्टि से परिचय अर्थात लिंग, वचन, कारक आदि के रूप में उनकी जानकारी देना। **जैसे**: गंगा (व्य.सं.कर्ता,एकव.स्त्री.) हिमालय (व्य.सं.अपादान का पुं.,एकवचन) से निकलती (क्रिया, निकलना अ.क्रि.एकव.) है।

पदबंध *पुं.(तत्.) व्या.* एक से अधिक पदों का समूह जो परस्पर मिलकर वाक्य में वही काम करे जो एकल पद करता हो। **जैसे**: लडक़ा, अच्छा लडक़ा, बहुत अच्छा लडक़ा, सामने के घर में रहने वाला लडक़ा आदि-आदि। **जैसे**: संज्ञा परबंध, सर्वनाम पदबंध, विशेषण-पदबंध, क्रियापदबंध आदि। **उदा.** वास्तुकला की दृष्टि से ख्याति प्राप्त ताजमहल आगरा में है। (संज्ञापदबंध) phrase

पदवी *स्त्री.(तत्.)* 1. किसी मान्य संस्था या शासन आदि की ओर से दी जाने वाली विशिष्ट योग्यता या सम्मानसूचक उपाधि। **पर्या.** ख़िताब। **जैसे**: भारतरत्न, महा-महोपाध्याय आदि। 2. राजकीय सैन्य सेवाओं आदि में सम्मानस्वरूप दिया जाने वाला कोई ऊँचा पद या दरजा rank

पदार्थ *पुं.(तत्.)* 1. पद या शब्द का वाच्य अर्थ। **जैसे**: निर्मल-मलरहित, शुद्ध, स्वच्छ। 2. वह वस्तु जिसका किसी शब्द से ज्ञान किया जा सके। 3. वस्तु जिसमें गुणधर्म, लक्षण आदि विद्यमान होते हैं तथा जिसकी विशिष्ट रासायनिक प्रकृति होती है। mater **तु.** द्रव्य। **जैसे**: खाद्य पदार्थ गेहूँ चना आदि, पेय पदार्थ नशीले पदार्थ आदि।

पदार्पण *पुं.(तत्.)* शा.अर्थ पैरों का देना यानी रखना। सा.अर्थ श्रेष्ठ पुरूषों का आगमन। **उदा.** हमारे विद्यालय में मुख्यमंत्री का पदार्पण हुआ।

पदोन्नत [पद+उन्नत] *पुं.(तत्.)* वह (कर्मचारी) जिसे नियमानुसार या योग्यतानुसार ऊँचे पद पर भेज दिया गया हो। **जैसे**: इस वर्ष शिक्षाविभाग के पंद्रह सौ प्राथमिक शिक्षकों को पदोन्नत किया जाएगा। promoted **विलो.** पदावनत।

पदोन्नति [पद+उन्नति] *स्त्री.(तत्.)* 1. किसी अधिकारी या कर्मचारी के पद में विभागीय परीक्षण या नियमानुसार होने वाली तरक्की, 2. वर्तमानपद से वरिष्ठताक्रम से ऊँचे पद पर होने वाली या की जाने वाली प्रक्रिया। **जैसे**: उसके भाई की ए.एस.आई से एस.आई. पर पदोन्नति हो गई है।

पद्मा *पुं. (तत्.)* कमल का फूल या पौधा भी। **उदा.** भगवान विष्णु के एक हाथ में पद्य है।

पद्धति *स्त्री.(तत्.)* व्यु.अर्थ पैरों के चलने से बने निशान (का क्रम)। सा.अर्थ 1. रास्ता, मार्ग, राह। 2. समाज द्वारा स्वीकृति प्राप्त परंपरा, रिवाज़। practise, custom 3. किसी कार्य के संपन्न होने की रीति, प्रणाली, विधि। system method

पददलित *वि.(तत्.)* शा.अर्थ पैरों से कुचला हुआ। सा.अर्थ (भारतीय संदर्भ में) समाज का वह वर्ग जिसका उच्च वर्ग के व्यक्ति शताब्दियो से शोषण करते चले आ रहे थे और जिन्हें स्वतंत्रता के बाद अपना विकास करने की कुछ सुविधाएँ शासन द्वारा प्राप्त हुई।

पद्मा *स्त्री.* लक्ष्मी।

पद्माकर [पदम+आकर] *पुं.(तत्.)* वह तालाब या जलाशय जिसमें लाल कमल पैदा हेते हैं।

पद्य *पुं.(तत्.)* 1. गाने योग्य काव्य। **जैसे**: कामायनी पद्यात्मक महाकाव्य है। चित्रलेखा गद्यात्मक उपन्यास है। (वृंदावन वर्मा) 2. चरणबद्ध/छन्दोबद्ध काव्य। काव्य के दो प्रमुख भेद हैं गद्य और पद्य। पद्य रचना छंदों के नियमानुसार ही होती है।

पधारना *अ.क.क्रि* किसी सम्मानीय व्यक्ति के आगमन (और गमन) की सूचक क्रिया। **पर्या.** आना। या आश्रम या संस्था में आना। **जैसे**: श्रीमान जी पधारिए, आपका स्वागत है।

पनघट *पुं. (देश.)* नदी, कुआँ, सरोवर आदि का वह स्थान जहाँ से स्त्रियाँ परंपरा से कलश आदि में पानी भरकर ले जाती हैं। **जैसे**: गाँवों में सरकारी नल लगने से पहले स्त्रियाँ पनघट से ही पानी भरकर लाती थीं।

पनडुब्बी *स्त्री. (तद्.)* शा.अर्थ पानी में डूबी हुई। सैन्य 1. समुद्र की जल-सतह से नीचे चलने वाली युद्ध पोतिका। submarine 2. नदी, तालाब के किनारे रहने वाली चिड़िया की एक जाति जो पानी में गोता लगाकर मछलियाँ पकड़ती हैं।

पनपना *अ.क्रि.(देश.)* 1. पेड़-पौधों का समुचित विकास होना। 2. व्यक्ति के स्वास्थ्य में उत्तरोत्तर सुधार होना। 3. व्यापार-धंधे का चमकना।

पनही *स्त्री.(तद्.* बोलियों में प्रयुक्त शब्द<उपानह) पैर में पहनने का जूता। **उदा.** आवत जात पनहियाँ टूटी।

पनाह *स्त्री.(फ़ा.)* रक्षा, सहारा, आश्रय; शत्रु से बचाव, जान की रक्षा।

पनीर *पुं.(फ़ा.)* फटे हुए दूध को निचोड़ कर तरल पदार्थ को अलग कर देने के बाद बचा ठोस-सा भाग, छैना।

पन्नी *स्त्री.(देश.)* 1. धातु को कूट कर बनाई गई पतली चादर। सा.अर्थ 2. अब प्लास्टिक या पोलिथिन की चमकीली थैली या चमकीला कागज़ भी।

परंतु *अ.(तत्.)* लेकिन, किंतु, परंतु, तोभी, पर, अपितु।

परंपरा [परंपर+आ] *स्त्री.(तत्.)* व्यु.अर्थ बहुत सी घटनाओं आदि का निश्चित, अविच्छिन्न क्रम अटूट सिलसिला। सा.अर्थ किसी घटना या विचार आदि का वंश, गुरूओं, समाज आदि में पहले से चली आ रही प्रथा के अनुसार होना। **पर्या.** रीति, प्रथा। tradition

परंपरागत *वि.(तत्.)* (i) परंपरा से चलता आ रहा/प्राप्त, (ii) परंपरा के अनुसार किया जाने वाला या होने वाला; पूर्वजों से प्राप्त प्रथा आदि **दे.** परंपरा।

पर[1] **वि.** *(तत्.)* अन्य, दूसरा (जो अपना न हो)। **जैसे**: परदेश-परासा देश, विदेश; परलोक-पृथ्वी से इतर) दूसरा या अन्य लोक। 2. उपसर्ग (तद्.) परदादा (प्रपिता), परपोता (प्रपौत्र) 3. प्रत्यय, जैसे-स्वार्थपर, तत्पर। 4. परसर्ग (विभक्ति प्रत्यय) घर पर, सौ रूपए महीने पर at, on 5.

पुनरूक्ति के मध्य निरंतरता का सूचक। **उदा.** वह वार पर वार करता रहा पर मेरा कुछ नहीं बिगड़ा। 6. *अ,* किंतु, परंतु, लेकिन.......पर मेरा कुछ नहीं बिगड़ा। 7. *पुं.* पंख **जैसे:** पक्षी के पर होते हैं। **मुहा.** 1. पर कतरना-शक्तिहीन करना। 2. पर निकलना-अधिक होशियारी दिखाना। 3. बेपर के उड़ना-आधारहीन बातें बनाना।

पर[2] **अ.** (तद्.<परम) किंतु, परंतु, लेकिन। **जैसे**: वह विद्यालय गया तो था पर अभी तक आया नहीं।

पर[3] *पुं.(फ़ा.)* 1. पक्षी या कीट आदि के दोनों ओर के पंख जो उसे उड़ने में सहायता करते हैं। **जैसे**: कोयल के पर, चिड़िया के पर, कबूतर के पर। 2. डैना, पक्ष, पंख। 3. पंखों के छोटे छोटे भाग जो पत्ती के आकार के परंतु बालों **जैसे:** पदार्थ के बने होते हैं। **मुहा.** (i) पर कतरना-शक्तिहीन कर देना। (ii) पर निकलना-अधिक शरारती हो जाना।

परकाज [पर+काज] *पुं.(तद्.)* दूसरे का कार्य, ऐसा काम जो अपना न हो।

परकोटा *पुं. (तद्.)* किले आदि की सुरक्षा के लिए चारों ओर फैली दीवार। **पर्या.** चार दीवारी। **दे.** प्राचीर।

परख *स्त्री.(तद्.)* गुण-दोष की दृष्टि से किसी वस्तु या कार्य की अच्छी तरह से की गई जाँच।

परखनली *स्त्री. (तद्.)* एक वैज्ञानिक उपकरण। शीशे की नलीनुमा बरतन जिसमें डालकर पदार्थों का परीक्षण किया जाता है। test tube **दे.** परख।

परखनली शिशु *पुं.* परखनली में निषेचन के पश्चात स्त्री के गर्भ में स्थापित भ्रूण के परिपक्व होकर जन्म लेने वाला शिशु। test tube baby **दे.** परखनली।

परखना *स.क्रि. (तद्.*<परीक्षण) किसी वस्तु या व्यक्ति को गुण-दोष की दृष्टि से पूरी तरह जानना-समझना, जाँच करना; अच्छे और बुरे की पहचान करना। **उदा.** 1. सुनार सोने को आग में तपाकर उसकी शुद्धता को परखता है। 2. किसी व्यक्ति को मित्र बनाने से पूर्व उसे अच्छी तरह से परख लेना चाहिए।

परचम/पर्चम *पुं.(फ़ा.)* 1. झंडे का कपड़े वाला भाग, फ़रैरा, पताका। 2. अलक, बाल। **मुहा.** परचम लहराना-सब तरफ किसी के यश, गुण, उद्यम आदि की ख्याति होना। **जैसे:** क्रिकेट में भारतीय खिलाड़ी 'सचिन' का परचम विश्व भर में लहरा रहा है।

परचून *पुं. (तद्.)* चावल, आटा, मसाला आदि घरेलू खाद्य पदार्थ। *वि.* मंडी में आढ़तियों से खरीदकर फुटकर रूप में ग्राहकों को बेचने वाला। दुकानदार

परछाईं *स्त्री.(तद्.*<प्रतिच्छाया) 1. किसी व्यक्ति, वस्तु की धूप या प्रकाश के प्रभाव से बनने वाली छायामय आकृति। प्रतिच्छाया। 2. जल या दर्पण आदि में दिखाई पड़ने वाला किसी वस्तु आदि का प्रतिबिंब। **उदा.** राम को रूप निहारति जानकि। कंगन के नग की परछाई। **मुहा.** किसी की परछाई से डरना=किसी के समीप जाने तक से डरना। बहुत अधिक डरना।

परजीविता *स्त्री.(तत्.)* जीव. वह अवस्था जब जीव दूसरे जीव से भोजन यानी पोषण प्राप्त करता है और अपने जीवन का कुछ कालांश उसी के (दूसरे के) देह में निवास करके व्यतीत करता है। parasitism

परजीवी *वि./पु. (तत्.)* दूसरे के सहारे जीने वाला, दूसरे जीव से पोषण प्राप्त करने वाला (जीव)। **जैसे**: अमरबेल, मलेरियार, परजीवी आदि। parasite

परतंत्र *वि.(तत्.)* जो दूसरे की नियंत्रण व्यवस्था में हो, जो दूसरे के अधीन हो। **पर्या.** पराधीन, परवश; गुलाम। **उदा.** भारत सैंकड़ों वर्षों तक परतंत्र रहा। **विलो.** स्वतंत्र।

परतंत्रता *स्त्री. (तत्.)* परतंत्र होने का भाव या स्थिति। **पर्या.** पराधीनता, गुलामी।

परत *स्त्री.(तद्.*<परिवर्त) 1. किसी वस्तु पर अन्य वस्तु का फैलाव। **उदा.** शीशे पर धूल की परत चढ़ी हुई है। **पर्या.** तह। layer 2. एक ही वस्तु के एक हिस्से पर उसी वस्तु के अन्य हिस्से का चढ़ा हुआ होना। उदा. धोती की परत कर दो। fold

परताप/प्रताप *पुं.(तत्.) (तद्.*<प्रताप) **दे.** प्रताप। व्यक्ति में निहित वीरता, शक्ति आदि गुणों का वह तेज़ जो दूसरों की आँखों को चौंधिया दे यानी प्रभावित एवं आतंकित कर दे। 2. दबदबा, इकबाल।

परदा *पुं.(फ़ा.)* 1. आड़ या ओट करने के लिए प्रयुक्त कपड़ा या चिक। **उदा.** मैंने कमरे के सारे परदे बदल दिए। 2. ओट, आड़, छिपाव, घूँघट। **उदा.** कई जगह अब भी स्त्रियों में परदा-प्रथा चल रही है। 3. वह सफेद कपड़ा जिस पर परछाई डालकर चित्र दिखाए जाते हैं। **जैसे**: सिनेमा का परदा। 4. आँख, कान की झिल्ली। **जैसे**: आँख का परदा, कान का परदा। **मुहा.** 1. परदा डालना=किसी बात को स्पष्ट न होने देना, छिपाना। 2. परदा उठाना/परदाफाश करना-छिपी हुई बात को उजागर करना, भेद खोलना। 3. नारियों की बाहर न आने की जीवन शैली 'परदा'।

परदा प्रथा *स्त्री. [फा.+प्रथा]* समाज के कुछ वर्गों में आज भी प्रचलित यह रिवाज (प्रथा) जिसके अनुसार स्त्रियाँ परपुरूषों के सामने आने पर साड़ी, चुन्नी से मुँह ढक लेती हैं या बुरका पहनकर घर से बाहर निकलती हैं; कपड़े से मुख ढकने की प्रथा, घूंघट की प्रथा, बूरका प्रथा।

परदादा/पड़दादा *पुं. (देश.)* पिताजी के पिताजी के पिताजी; पिताजी के दादाजी के पिताजी। great grand father

परदेशी *वि.(तत्.)* 1. दूसरे देश का, दूसरे देश से संबंधित। 2. विदेशी (कोई वस्तु आदि) *पुं.* दूसरे देश का रहने वाला व्यक्ति, प्रवासी। **उदा.** हमारे देश में बहुत से परदेशी भ्रमण के लिए आते हैं।

परनाला *पुं.(तद्.)* वह बड़ी नाली जिसमें बस्ती या नगर का गंदा पानी बहता है, पनाला।

परनाली *स्त्री. (तद्.)* **दे.** परनाला'

परपुरूष *पुं.(तत्.)* स्त्रियों के लिए अपने पति के अतिरिक्त अन्य कोई पुरूष जो कामवासना की दृष्टि से त्याज्य है। **उदा.** स्त्री को स्वप्न में भी परपुरूष का चिंतन नहीं करना चाहिए।

परपोता *पुं. (तद्.)* पोते का लडक़ा, पुत्र के पुत्र का बेटा। अर्थात पिता-पुत्र-पुत्र (पौत्र)-पुत्र (प्रपौत्र) **जैसे**: अर्जुन का प्रपौत्र जनमेजय। (अर्जुन-अभिमन्यू(पुत्र)-परीक्षित(पौत्र)-जनमेजय(प्रपौत्र) *स्त्री.-परपोती* (प्रपौत्री) **विलो.** परदादा (प्रपितामह)

परपोषक *वि./पुं. (तत्.)* दूसरों का पोषण करने वाला (जीव); वह जीव जिससे परजीवी अपना पोषण प्राप्त करते हैं। **जैसे**: मच्छर जो मलेरिया परजीवी को अपने शरीर में पालता-पोसता है। host **तु.** परजीवी। **पर्या.** परपोषी।

परपोषी *वि./पुं.* ऐसे जीव जो अकार्बनिक पदार्थों से अपना भोजन नहीं बना सकते और स्वपोषी जीवों या कार्बनिक पदार्थों से अपना पोषण प्राप्त करते हैं। Hetrotroph विषमपोषी।

परब्रह्म *पुं.(तत्.)* निर्गुण एवं निराकार ब्रह्म ईश्वर।

परभक्षी *वि./पुं.(तत्.)* शा.अर्थ दूसरे को खाने वाला। **प्राणि.** आजीवन अकेले रहने वाले वे मुक्त जीव जो अपने शिकार को मारकर खाते हैं। इनका आकार प्राय: अपने शिकार से बड़ा होता है। **उदा.** मकड़ी, चील, बाज आदि। कृषि. पादप पीडक़ पर आक्रमण करके उन्हें नष्ट करने वाला (कीट) Predator

परम *वि.(तत्.)* जिससे आगे या अधिक या श्रेष्ठ और कुछ न हो; सर्वोत्कृष्ट। **जैसे**: 1. आत्मा=परमात्मा, परम+ईश्वर=परमेश्वर। **उदा.** मेरा परम सौभाग्य है जो आप यहाँ पधारे।

परमाणु [परम+अणु] *पुं. (तत्.)* भौ.वि. तत्व का लघुतम अणु जिसके भीतर प्रोटोनों और न्यूट्रोनों से बना एक धन-आवेशित नाभिक होता है और उस नाभि के चारों ओर इलैक्ट्रान अत्यंत तीव्र गति से परिक्रमा करते रहते हैं। atom **तु.** अणु।

परमाणु ऊर्जा *स्त्री.(तत्.)* भौ.वि. परमाणुओं के नाभिकों की पुर्नव्यवस्था से उत्पन्न होने वाली उर्जा जो नाभिकीय विखंडन या संलयन के प्रक्रम से मुक्त होती है। **पर्या.** नाभिकीय ऊर्जा।

परमाणु बम *पुं. (तत्.+अं.)* नाभिकीय विखंडन के परिणामस्वरूप उन्मोचित ऊर्जा से शक्ति प्राप्त करने वाला बम जो अत्यंत संहारक होता है। **पर्या.** अणु बम, नाभिकीय बम। **तु.** हाइड्रोजन बम

परमाणुवाद *पुं.(तत्.)* वैशेषिक दर्शन का सिद्धांत जिसमें माना गया है कि संसार के सभी पदार्थ परमाणुओं के संयोग से या घनीभूत होने से बने हैं। atomism

परमात्मा [परम+आत्मा] *पुं (तत्.)* भारतीय दर्शन के अनुसार संपूर्ण सृष्टि का नियमन करने वाली सत्ता। **पर्या.** भगवान, परमेश्वर।

परमिट *पुं.(अं.)* 1. कोई विशेष कार्य करने या पर्याप्त मात्रा में किसी वस्तु चीनी, सीमेंट आदि

प्राप्त के लिए सरकार की ओर से मिलने वाला लिखित आज्ञापत्र या अनुज्ञापत्र। 2. वाहनों को एक राज्य से दूसरे राज्य में आने जाने के लिए सरकारी मुहर से युक्त स्वीकृत पत्र। **उदा.** बिना सरकारी परमिट मिले कोई विशेष व्यापार या उद्योग नहीं किया जा सकता।

परलोक *पुं.(तत्.)* 1. इस लोक (पृथ्वीलोक)से पृथक लोक। 2. मृत्युलोक को छोड़कर अन्य लोक। 3. मृत्यु के पश्चात प्राप्त होने वाला लोक।

परवरिश *स्त्री.(फा.)* छोटे बच्चों या किसी निर्धन, बेसहारा व्यक्ति का पालन-पोषण। **जैसे**: उसने एक अनाथ बच्चे की परवरिश कर उसे डॉक्टर बना दिया।

परवर्ती *वि.(तत्.)* कालक्रम की दृष्टि से बाद में घटित होने वाला, बाद वाला। **उदा.** आधुनिक हिंदी साहित्य के परवर्ती काव्य में छंदोमुक्त रचनाओं की प्रधानता देखने को मिलती है।

परवश *वि.(तत्.)* जो दूसरे के वश में हो, परतंत्र पराधीन। **विलो.** आत्मवश।

परवशता *स्त्री.(तत्.)* दूसरे के अधीन जीवन जीने की स्थिति या भाव। **जैसे**: हमें परवशता से नहीं आत्मनिर्भरता के साथ जीवन जीना चाहिए।

परवाना *पुं.(फ़ा.)* 1. आदेश पत्र, लिखित आदेश। 2. फतिंगा जो दीपक की लौ के प्रेम में अपने प्राण तक दे देता है। 3. अपने प्रेमी या प्रेमिका पर अत्यंत मुग्ध व्यक्ति। **जैसे**: सलीम अनारकली का परवाना था। 4. ला.अर्थ अपने प्रिय व्यक्ति, सिद्धांत, राष्ट्र के लिए अपना बलिदान करने वाला या उसके लिए सदा तैयार रहने वाला व्यक्ति। **जैसे**: सभी क्रांतिकारी देश की आजादी के परवाने थे।

परवाह *स्त्री.(फा.)* चिंता, फिक्र।

परसर्ग *पुं.(तत्.)* व्या. हिंदी में 'ने', को, से, का, की, के, में, पर प्रमुख परसर्ग हैं। जैसे: बालक ने उसकी पुस्तक में पाठ पढ़ा। post position (हिंदी में) संज्ञा के बाद लगकर (और सर्वनाम के साथ मिलकर) कारकीय संबंध प्रकट करने वाली व्याकरणिक इकाई।

परसाल [पर+साल] *अ. [पर-तत्+फार.]* पिछले साल या अगले साल। **पर्या.** पारसाल (बोली में) *स्त्री.(तद्.*<प्रशाला) बड़ा कमरा या कोठरी।

परसों *क्रि.वि.(तद्.)* बीते हुए कल से पहले वाला दिन या कल आने वाले कल के बाद आने वाला दिन। **जैसे**: तुम यहाँ कब आये? परसों। अब तुम जाओगे कब? परसों।

परस्पर *अ.(तत्.)* एक दूसरे के बीच में; एक दूसरे के साथ; आपस में। **उदा.** परस्पर प्रेम रखना चाहिए।

परस्पर *क्रि.वि.(तत्.)* एक दूसरे के साथ, आपस में। **जैसे**: परस्पर विरोधी विचार, परस्पर आदान-प्रदान।

परहित *पुं.(तत्.)* दूसरे का हित, भलाई या कल्याण। **उदा.** परहित सरिस धर्म नहिं भाई-तुलसीदास **पर्या.** परमार्थ, परोपकार।

परहेज़ *पुं.(फा.)* सा.अर्थ दूर रखना या रहना; संयम बरतना। 1. खाने-पीने आदि का संयम। **उदा.** बीमारी के बाद परहेज़ की वजह से मैं खिचड़ी खाता हूँ। 2. दोषों या बुराईयों से दूर रहना। **उदा.** दूसरों की निंदा करने वालों से मुझे परहेज़ है।

पराकाष्ठा *स्त्री. (तत्.)* चरम सीमा, अंतिम सीमा, आखिरी हद। **जैसे**: मेरे धैर्य की पराकाष्ठा की परीक्षा मत लो। climax

पराक्रम [परा+क्रम] *पुं.(तत्.)* व्यु.अर्थ आगे की ओर या विरूद्ध दिशा में चलना। सा.अर्थ 1. वीरता, उत्साह। 2. उद्योग, पुरूषार्थ।

पराक्रमी *स्त्री. (तत्.)* पराक्रम वाला, पराक्रम से युक्त, जो पराक्रम दिखाए। **पर्या.** वीर।

पराग *पुं. (तत्.)* पुष्प के केसरों पर जमे हुए असंख्य रजकण। **पर्या.** पुष्परज।

परागकण *पुं./बहु. (तत्.)* पराग के असंख्य कणों का पुंज। **दे.** पराग'।

परागकोश *पुं. (तत्.)* पुंकेसर के सिरे पर का फूला हुआ भाग जो परागकणों को धारण करता है। anther

परागण *पुं. (तत्.)* परागकणों का पुमंग के परागकोश से जायांग के वर्तिकाग्र तक

स्थानांतरण जो कीट, वायु या जल के माध्यम से होता है। pollination

पराजय *पुं.(तत्.)* लड़ने वाले दो व्यक्तियों या दलों में से किसी एक व्यक्ति या दल की हार। **पर्या.** हार, शिकस्त। **विलो.** जीत, जय।

पराजय *स्त्री.(तत्.)* प्रतियोगिता में, युद् ध में अथवा परिस्थितियों से मिलने वाली हार। **पर्या.** हार, शिकस्त। **विलो.** जय, विजय।

पराजित [परा+जित] *वि.(तत्.)* जिसे जीत लिया गया हो; हराया हुआ, हारा हुआ। **विलो.** विजयी। **दे.** पराजय।

परात *स्त्री.(देश.)* थाली के आकार का पीतल, स्टील आदि का चौड़ी किनारी वाला बड़ा बरतन, बड़ी और ऊँची किनारी वाली थाली। **तु.** थाल-थाल की किनारी अपेक्षाकृत कम चौड़ी होती है।

पराधीनता [पर+अधीन+ता] *स्त्री.(तत्.)* दूसरे के अधीन होने का भाव। **पर्या.** परतंत्रता, गुलामी। **विलो.** स्वाधीनता=स्वयं के अधीन होने का भाव।

पराबैंगनी *वि.(तत्.+देश.)* दृश्य स्पेक्ट्रम (वर्णक्रम) के बैंगनी वर्ण या उसकी पट्टी से परे का। **भौ.** विद्युत-चुंबकीय विकिरण का या उसके लिए प्रयुक्त शब्द। दृश्य स्पेक्ट्रम (वर्णक्रम) में इसका तरंग दैर्ध्य Wavelength बैंगनी अत्यं की अपेक्षा छोटी होती है। Ultraviolet

पराबैंगनी किरणें *स्त्री. बहु.* **भौ.** लघु तरंग वाली विद्युत-चुंबकीय किरणें। Ultavioletwaves

पराबैंगनी विकिरण *पुं.* **भौ.** विकिरण जो दृश्य स्पेक्ट्रम (वर्णक्रम) में दिखाई पड़ने वाले बैंगनी प्रकाश के परे होता है। Ultraviolet radiation

परामर्श *पुं.(तत्.)* किसी विषय के संबंध में होने वाली चर्चा, सलाह, मंत्रणा। consulation

परायण [परम+अयन] *वि.(तत्.)* समास के उत्तर पद के रूप में सर्वथालीन; को ही सर्वस्व या सर्वोच्च लक्ष्य अथवा प्राप्तव्य मानने वाला। **जैसे**: कर्त्तव्यपरायण, स्वार्थपरायण, धर्मपरायण।

पराया *वि.(तद्.*<पर) जो अपना न हो; दूसरे का। **विलो.** अपना।

परावर्तक पृष्ठ *पुं.(तत्.)* वह पृष्ठ (तल) जिस पर टकराकर प्रकाश और ध्वनि तरंगें लौट आती है। **दे.** परावर्तन'।

परावर्तन [परा+वर्तन] *पुं.(तत्.)* भौ.वि. ध्वनि या प्रकाश की तरंगों का किसी पृष्ठ से टकराकर वापस आना/लौट आना। **टि.** इन्हीं अभिक्रियाओं से हम दर्पण में अपना प्रतिबिंब देखते हैं या प्रतिध्वनि सुनते हैं।

परावर्तन कोण *पुं.(तत्.)* भौ.वि परावर्तित किरण तथा अभिलंब के बीच का कोण। **दे.** अभिलंब, परावर्तित।

परावर्तित *वि.(तत्.)* किसी सतह से टकराकर लौटी हुई (ध्वनि/प्रकाश की तरंगे) **दे.** परावर्तन'।

परास्त *वि.(तत्.)* हारा हुआ। **पर्या.** पराजित। **विलो.** विजित, विजेता।

परिंदा *पुं.(फा.)* पर (पंख) वाला पक्षी, चिड़िया। **उदा.** परिंदे आकाश में उड़ते हैं। **मुहा.** परिंदा न फटकना=कठोर नियंत्रण। स्वतंत्रता दिवस समारोह के अवसर पर लाल किले के आसपास सुरक्षा व्यवस्था इतनी कड़ी थी कि कोई परिंदा भी वहां नहीं फटक सकता था।

परिकलन *पुं.(तत.)* 1. सही जोड़, बाकी, गुणा भाग आदि करने की प्रक्रिया; ऐसी बड़ी गणना जो लगभग ठीक हो। **उदा.** सूर्य और पृथ्वी के बीच की दूरी का सही परिकलन किया जा चुका है। **पर्या.** आकलन।

परिकलित्र *पुं.(तत्.)* गणितीय परिकलन करने वाली इलैक्ट्रानिक मशीन। calculator **दे.** परिकलन। **तु.** अभिकलित्र।

परिकल्पना *स्त्री.(तत्.)* 1. जिस वस्तु या बात के होने की संभावना हो। उसकी कल्पना पहले ही कर लेने का भाव। 2. किसी अप्रमाणिक किंतु संभावित बात को मान लेना। hypothesis 3. कुछ विशिष्ट आधारों को लेकर किसी बात को स्वीकार कर लेना। presumption 4. केवल तर्क के आधार पर किसी बात की कल्पना करना। 5. रचनात्मक विचार। **जैसे**: संत की परिकल्पना के अनुसार यहाँ एक अनाथाश्रम बनाया जा रहा है।

परिक्रमण *पुं.(तत्.)* किसी कण अथवा पिंड का किसी बाह् य केंद्र या अक्ष के चारों ओर एक ही परिधि में घूमते रहना। **जैसे**: पृथ्वी का सूर्य के चारों ओर परिक्रमण। revolution **टि.** पृथ्वी अपने अक्ष पर घूमती हुई लगभग 1,00,000 किलोमीटर प्रतिघंटा की गति से सूर्य की परिक्रमण करती है। इसे एक परिक्रमा पूरी कनने में लगभग 365 दिन और 6 घंटे लगते हैं। पृथ्वी की इस वार्षिक गति को परिक्रमण कहते हैं। **तु.** घूर्णन। रिवोलुशन

परिक्रमण काव *पुं.(तत्.)* किसी ग्रह का सूर्य की परिक्रमा पूरी करने में लगने वाला समय। **उदा.**

पृथ्वी का परिक्रमण काल लगभग 365 दिन और 6 घंटे हैं। **दे.** परिक्रमण। **तु.** परिक्रमा।

परिक्रमा *स्त्री.(तत्.)* सा.अर्थ किसी के चारों ओर चक्कर लगाना। **जैसे**: मंदिर में परिक्रमा करना; गोवर्धन क्षेत्र की परिक्रमा। **वि.अर्थ** किसी ग्रह द्‌वारा सूर्य का चक्कर लगाना; किसी उपग्रह द्‌वारा ग्रह का चक्कर लगाना; धूमकेतु द्‌वारा किसी सूर्य का चक्कर लगाना। **पर्या.** परिक्रमण।

परिग्रह *पुं.(तत्.)* 1. किसी से किसी वस्तु, धन, संपत्ति आदि को दान के रूप में ग्रहण करना। प्रतिग्रह। 2. आदरपूर्वक स्वीकार करना। 3. धन-संपत्ति आदि इकट्ठी करना। 4. गृहस्थी बसाना। **विलो.** अपरिग्रह (किसी भी वस्तु का अधिक संग्रह न करना) (दर्शन) पाँच यमों में से एक (पाँचवाँ) (अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह)

परिघटना *स्त्री.(तत्.)* कोई ऐसा तथ्य या स्थिति जिसका अस्तित्व हो अथवा घटित होता दिखाई पड़े। विशेष घटना। phenomenon

परिचय *पुं.(तत्.)* अच्छी तरह जानना, पूरी जानकारी, जान-पहचान।

परिचय-पत्र *पुं.(तत्.)* किसी अभिकरण द्‌वारा जारी किया गया नाम, पता, चित्र आदि लगा कार्ड जिससे आवश्यकता पड़ने पर उसके धारक की सही पहचान की जा सके। **पर्या.** पहचानपत्र। Identity card, I card

परिचर *पुं.(तत्.)* दूसरों की सेवा या देखभाल करने वाला व्यक्ति, सेवक, सेवा सहायक। **उदा.** अस्वस्थ पिता की देखरेख के लिए हमने एक परिचर रखा हुआ है।

परिचर्या *स्त्री.(तत्.)* दूसरों की सेवा, देखभाल, टहल-चाकरी आदि का कार्य।

परिचारक *वि.(तत्.)* परिचर्या करने वाला। *पुं.* 1. सेवक, सेवा-सहायक, 2. रोगी की सेवा करने वाला। **पर्या.** परिचर। **उदा.** इस गहन कक्ष के परिचारक बहुत ही कर्तव्यनिष्ठ हैं।

परिचारिका *स्त्री.(तत्.)* 1. परिचर्या करने वाली, महिला; सेविका, महिला सेवा-सहायक। 2. यात्रियों की सहायता, देखभाल करने वाली महिला। **जैसे**: विमान परिचारिका air hosters

परिचित *वि.(तत्.)* जिससे परिचय हो, जिसे हम ठीक से पहचानते हों। **जैसे:** पूर्व परिचित व्यक्ति। **दे.** परिचय'।

परिच्छेद *पुं. (तत्.)* किसी पुस्तक के अध्याय का वह भाग जिसमें एक विषय की चर्चा या वर्णन हो। **जैसे:** परिच्छेद 1, परिच्छेद 4, 2. अध्याय का विभाजित संख्यांकित अंश। section **जैसे**: 102

परिच्छेदिका *स्त्री. (तत्.)* लघु आकार वाला विभाजित खंड या कटा हुआ अंग, 1. किसी ठोस वस्तु का लघु आकार वाला वह विभाजित खंड जो उसके गुणों की जाँच करने में सहायता करे। section, profile

परिजन *पुं.(तत्.)* (बहु. में प्रयुक्त) 1. परिवार के सदस्यों को छोड़कर भरण-पोषण के लिए आश्रित अन्य लोग। **जैसे:** नौकर-चाकर आदि। 2. राजा आदि के साथ चलने वाले लोग। मंत्री, अनुचर आदि। **तु.** परिवार।

परिणत [परि+णत] *वि.(तत्.)* मू.अर्थ बहुत अधिक झुका हुआ; पूर्ण वृद्‌धि को प्राप्त। विक. अर्थ के रूप में बदला या ढला हुआ। (में) परिवर्तित, रूपांतरित। **उदा.** पारस पत्थर से छूकर लोहा स्वर्ण के रूप में परिणत हो जाता है, ऐसी मान्यता है।

परिणति *स्त्री.(तत्.)* परिवर्तन, रूपांतरण, परिणाम। **उदा.** आपके निरंतर परिश्रम की परिणति यह हुई कि हमारी कक्षा का परिणाम शत-प्रतिशत रहा।

परिणय [परि+नय] *पुं.(तत्.)* शा.अर्थ (अग्नि के चारों ओर) परिक्रमा करके या पूरी तरह से ले जाना। धार्मिक और सामाजिक कृत्य जिसमें वर-कन्या जीवन पर्यंत एक साथ रहकर सांसारिक जीवन बिताने की रस्म अदा करते हैं। **पर्या.** विवाह।

परिणाम *पुं.(तत्.)* 1. किसी कार्य के अंत में प्राप्त होने वाला फल। **जैसे:** परीक्षा-परिणाम। **पर्या.** नतीजा, फल। result 2. किसी बात का अन्य वस्तुओं या बातों पर पड़ने वाला प्रभाव। **पर्या.** प्रभाव **जैसे**: धूप के परिणामस्वरूप फसल का सूख जाना। effect 3. किसी बात के बाद या होते समय भी अन्य क्रियात्मक अच्छे या बुरे प्रभाव। **उदा.** इसका परिणाम तुम्हें भुगतना ही पड़ेगा। consequences 4. सभी बातों को मिलाकर निकाला गया निर्णय। **उदा.** सभी बातों का

परिणाम यह हुआ कि अंततः वह फेल ही माना गया। conclusion 6. परिवर्तित रूप **जैसे**: दही, दूध का ही एक परिणाम है।

परिणामस्वरूप *व्य.तत्.* **दे.** परिणाम'।

परितारिका *स्त्री.(तत्.)* प्राणि/आयु. आँख की पुतली के चारों ओर का रंगीन भाग जो पुतली के खुलने-बंद होने का नियंत्रण करता है। iris of eye

परित्याग [परि+त्याग] *पुं.(तत्.)* किसी वस्तु का उपयोग, उपभोग आदि पूरी तरह से छोड़ देना; पूर्ण त्याग। **उदा.** 1. उसने सभी मादक पदार्थों के सेवन का परित्याग कर दिया है। 2. महात्मा बुद्ध सब कुछ परित्याग कर तप के लिए वन में चले गए।

परिदर्शी *वि.(तत्.)* अच्छी तरह से, चारों ओर से, सभी पहलुओं से देखने वाला। **पर्या.** सम्यक् दर्शी।

परिधान *पुं.(तत्.)* 1. शरीर पर पहनने के वस्त्र, कपड़े, पहनावा। **जैसे:** नीला परिधान। 2. किसी वर्ग या समूह के लिए निर्धारित की गई पोशाक, गणवेश। **जैसे:** छात्रों के परिधान, रेलवे कर्मियों के परिधान। **जैसे:** वर-परिधान।

परिधि *स्त्री.(तत्.)* 1. कोई क्षेत्र विशेष जो सीमाओं से घिरा हो। **उदा.** चिकित्सालय की परिधि में शोर करना मना है। ज्या. वृत्त बनाने वाली वह रेखा जो वृत्त के केंद्र से समान दूरी पर होती है। circumference

परिनिष्ठित (परि+निष्ठा+इत) *वि.(तत्.)* शुद्ध, मिलावट रहित; मानक। **उदा.** इस प्रश्न का उत्तर परिनिष्ठित हिंदी में दीजिए।

परिपक्व *वि.(तत्.)* अच्छी तरह पका हुआ, जो कच्चा न हो; जिसका पूरा विकास हो चुका हो; प्रौढ़। **जैसे:** परिपक्व अवस्था। mature **उदा.** तुम्हारी मियादी जमा परिपक्व हो गई है। इसे भुना लो।

परिपक्वता [परिपक्व+ता] *स्त्री.(तत्.)* परिपक्व होने का भाव। **दे.** परिपक्व।

परिपत्र *पुं.(तत्.)* शा.अर्थ चारों ओर भेजा जाने वाला पत्र, सबके लिए जारी पत्र। **प्रशा.** पत्र जो किसी व्यक्ति विशेष की जानकारी के लिए न होकर संस्था के सभी विभाग में सभी लोगों को सूचनार्थ भेजा जाए। **पर्या.** गश्ती चिट्ठी। circular **उदा.** आज के परिपत्र से सूचना मिली है कि अगली बीस तारीख को पर्यावरण दिवस मनाया जाएगा।

परिपथ *पुं.(तत्.)* **वि.इंजी.** अनेक विद्युत चालक अवयवों को जोड़कर बनाया गया बिजली (विद्युत) की धारा के गुज़रने का मार्ग या पथ। **खेल.** (मोटर दौड़) प्रतियोगिता के लिए दौड़-मार्ग; प्रतियोगिता श्रृंखला जिसमें अलग-अलग स्थानों पर प्रतियोगिताएँ अथवा दौड़ें आयोजित होती हैं। circuit

परिपालक *वि.(तत्.)* किसी का अच्छी तरह से पालन करने वाला। **जैसे**: राजा प्रजा का परिपालक है।

परिपूर्ण *वि.(तत्.)* 1. हर प्रकार से पूर्ण, पूरी तरह भरा हुआ, यानी जिसमें कोई कमी न हो। **उदा.** इस संसार में कोई व्यक्ति ऐसा नहीं है जो परिपूर्ण हो। परिपूर्ण तो केवल ईश्वर है। 2. पूरी तरह से भरा हुआ; लबालब। **जैसे:** परिपूर्ण घट।

परिपूर्ण संख्या *स्त्री.(तत्.)* **गणि.** संख्या जो अपने सभी गुणन खंडों के योग के बराबर होती है। **जैसे:** 28 एक परिपूर्ण संख्या है क्योंकि 1+2+4+7+14=28 perfect number

परिप्रश्न *पुं.(तत्.)* सीखी हुई बात को अधिक स्पष्ट रूप से समझने के लिए जिज्ञासा पूर्वक पूछे गए विविध प्रकार के प्रश्न। 2. पूछताछ। **जैसे:** गीता के अनुसार परिप्रश्न और सेवा ज्ञानप्राप्ति के साधन हैं। enquiry

परिप्रेक्ष्य *पुं.(तत्.)* 1. किसी मामले से संबंधित सभी बातों या अंगों को ध्यान में रखते हुए उसके बारे में व्यक्ति विशेष का समग्र रूप से निर्मित विचार। **उदा.** अन्ना हजारे के भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन को आप किस परिप्रेक्ष्य में देखते हैं?

परिबद्ध *वि.(तत्.)* (i) चारों ओर से यानी अच्छी तरह से बँधा हुआ; (ii) जिसे रोक कर रखा गया हो; जब्त impounded

परिभाषा *स्त्री.(तत्.)* शा.अर्थ चारों ओर से भाषा में बाँधना। सा.अर्थ सटीक शब्दों में प्रस्तुत ऐसा संक्षिप्त परिचय जिससे उसके स्वरूप, गुण, वैशिष्ट्य आदि की पूरी जानकारी प्राप्त हो सके।

definition **उदा.** संज्ञा शब्द की सोदाहरण परिभाषा लिखो।

परिभाषित [परिभाषा+इत.] *वि.(तत्.)* जिसकी परिभाषा दी गई हो या दी जा चुकी हो। defined

परिमल *पुं.(तत्.)* उत्तम गंध, सुगंध, सुवास। **उदा.** चंदन के परिमल से सुवासित है यह मंडप।

परिमाप *पुं.(तत्.)* 1. वृत्त की पूरी लंबाई। 2. बहुभूज की समस्त भुजाओं की लंबाइयों का योगफल। perimeter

परिमार्जन *पुं.(तत्.)* शा.अर्थ पूरी तरह से सफाई करना। सा.अर्थ **1.** किसी पात्र को अच्छी तरह से मांज कर, धोकर साफ करना। 2. त्रुटियाँ, दोष आदि दूर करके ठीक करना। **उदा.** यह लेख त्रुटियों के परिमार्जन के बिना मुद्रण के योग्य नहीं है।

परिमार्जित *वि. (तत्.)* साफ-सुथरा, त्रुटि रहित। **जैसे:** परिमार्जित भाषा।

परिमेय संख्या *स्त्री.(तत्.)* **गणि.** दो पूर्ण संख्याओं के भागफल के रूप में व्यक्त की जाने वाली संख्या। **जैसे**: 1/2, 3/5 rational number **तु.** अपरिमेय संख्या।

परियोजना *स्त्री.(तत्.)* 1. ऐसा कार्य जिसे पूरा करने में विपुल धनराशि, पर्याप्त समय और बड़ी संख्या में कुशल और अर्धकुशल कार्यकर्ताओं की आवश्यकता पड़े। **जैसे:** जलविद्युत परियोजना। 2. विद्यार्थी को नियमित अध्ययन के पूरक कार्य के रूप में सौंपा गया वह विषय जिसे वह परिश्रमपूर्वक अपने खाली समय में बारीकी से पूरा करता है। **जैसे:** बिजली का सर्किट (परिपथ) बनाने की परियोजना। project

परिरक्षक *वि./पुं. (तत्.)* शा.अर्थ हर तरह से/पूरी तरह से रक्षा करने वाला। तक वह पदार्थ प्रक्रिया या तरीका जो किसी वस्तु को हानि, क्षति, खराबी आदि से लंबे समय तक बनाए/बचाए रखने में मदद करे। **जैसे**: अचार के लिए तेल, सिरका, नमक आदि preservative **पर्या.** परिरक्षी।

परिरक्षण *पुं.(तत्.)* सा.अर्थ पूरी तरह से, रक्षा करने, बचाए या बनाए रखने का भाव अथवा प्रक्रम। **तक.** समय तक इस्तेमाल के योग्य बनाए रखने या न बिगड़ने देने की वैज्ञानिक विधि। **जैसे:** 1. फलों, सब्जियों का परिरक्षण। 2. ऐतिहासिक महत्व के भवनों अथवा कलाकृतियों का परिरक्षण। preservation

परिरक्षित *(तत्.)* अच्छी तरह से बचाकर रखी गई या देखभाल की गई वस्तु। **जैसे:** परिरक्षित वन संपदा, परिरक्षित ऐतिहासिक इमारतें (भवन) और कलाकृतियाँ आदि। preservation

परिरक्षी *वि./पुं. (तत्)* **दे.** परिरक्षक'।

परिलक्षित *वि.(तत्.)* अच्छी तरह से देखा हुआ, ध्यान में आया हुआ। **उदा.** तुम्हारे गहन अध्ययन से ऐसा परिलक्षित होता है कि तुम अवश्य ही प्रथम श्रेणी प्राप्त करोगे।

परिलब्धियाँ *स्त्री.बहु.(तत्.)* **प्रशा.** कर्मचारी को मिलने वाले वेतन और विविध प्रकार के भत्तों का कुल योग। emoluments **तु.** वेतन, भत्ता।

परिवर्तन क्षम *वि. (तत्.)* जिसमें परिवर्तन किया जा सके। **उदा.** चाँदी परिवर्तन क्षम धातु है। इससे गहने गढ़े जा सकते हैं।

परिवर्तन सारणी *स्त्री.(तत्.)* विभिन्न प्रणालियों के भार-माप आदि की इकाईयों के तुलनात्मक मान को प्रदर्शित करने वाली तालिका। **जैसे**: मीटर और गज, मील और किलोमीटर, सेर और किलोग्राम आदि की इकाइयों का तुलनात्मक मान बताने वाली तालिकाएँ। conversion table

परिवर्तनशील *वि.(तत्.)* परिवर्तन या बदलाव होते रहना जिसका स्वभाव हो। **उदा.** मौसम परिवर्तनशील है, कभी गरमी, कभी वर्षा तथा कभी सर्दी। ever changing

परिवर्धन *पुं.(तत्.)* सा.अर्थ आवश्यकतानुसार किसी वस्तु के आकार, संख्या, गुण आदि में की गई या हुई बढ़ोतरी। **तर्क.** 1. जीव-निषेचित अंड से वयस्क अवस्था प्राप्त होने तक के समस्त परिवर्तनों का क्रम। **जैसे:** निषेचित अंड से टैडपोल होकर मेंढक़ बन जाना। development 2. **विधि.** किसी नियम-विनियम का संशोधन कर उसमें कुछ नए प्रावधान जोड़ना। addition 3. किसी भवन में कुछ कमरे आदि जोड़ कर उसका विस्तार करना। extension 4. पूर्व प्रकाशित ग्रंथ के कलेवर में वृद्धि कर उसका पुनप्रकाशन करना। enlargement

परिवर्धित *वि. (तत्.)* पहले की तुलना में, बढ़ाया हुआ। **जैसे:** कोश का परिवर्धित संस्करण, परिवर्धित मूल्य।

परिवहन *पुं.(तत्.)* वस्तुओं, मनुष्यों या पशुओं आदि को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने-लाने की सुनियोजित व्यवस्था। **उदा.** दिल्ली की परिवहन व्यवस्था के लिए बसें, मेट्रो, रेल तथा रिंग रेलवे की सुविधा उपलब्ध है। **तु.** यातायात। transport

परिवार कल्याण *पुं.(तत्.)* व्यक्ति के परिवार के हित साधन को ध्यान में रखते हुए सरकार द्‌वारा चलाई जा रही योजना विशेष जिसमें बच्चों की संख्या सीमित रखने के साथ-साथ महिलाओं के स्वास्थ्य, पोषाहार, प्रसवपूर्व और प्रसवोत्तर देखभाल, शिशुओं के स्वास्थ्य आदि पर विशेष ध्यान दिया जाता है। **टि.** अब 'परिवार नियोजन' के स्थान पर 'परिवार कल्याण' शब्द का प्रयोग होने लगा है। family welfare

परिवार नियोजन *पुं. (तत्.)* परिवार संबंधी नियोजन अर्थात परिवार में बच्चों की संख्या सीमित रखने के उपायों के साथ-साथ जच्चा-बच्चा की देखभाल तथा उनके पोषाहार संबंधी सुविधाओं की जानकारी दी जाती है। family planning **दे.** परिवार कल्याण की टिप्पणी।

परिवार *पुं.(तत्.)* 1. वंश-परंपरा से जुड़े हुए लोगों का समूह; भले ही एक साथ रहते हों या अलग-अलग। **पर्या.** कुटुंब, खानदान 2. एक ही व्यवसाय, पेशे से जुड़े लोग। **जैसे:** अध्यापक परिवार, छात्र परिवार। **प्रशा.** पति-पत्नी और अवयस्क/अविवाहित संतान तथा आश्रित माता-पिता। family

परिवेश *पुं.(तत्.)* किसी भी प्राणी (मनुष्य, पशु-पक्षी, पादप आदि) के आस-पास की प्राकृतिक, सामाजिक आदि परिस्थितियाँ जिनसे वह प्रभावित होता है। **पर्या.** वातावरण। **उदा.** झोपड़ पट्टी और गंदी बस्तियों का परिवेश अस्वास्थ्यकर होता है। **टि.** पहले इसके लिए 'वातावरण' शब्द का प्रयोग होता था। enviornment surrounding

परिवेष्टन *पुं.(तत्.)* चारों तरफ से घेरना या घेर लेना; ढक लेना, आवृत्त करना।

परिवेष्टित *वि.(तत्.)* चारों ओर से घिरा हुआ, ढका हुआ या आवृत। **जैसे:** स्वर्ण जटित लाल वस्त्रों से परिवेष्टित वधू।

परिशिष्ट *वि. (तत्.)* बचा हुआ, शेष। **जैसे:** परिशिष्ट सामग्री=शेष बचा सामान। **पुं.** पुस्तक के अंत में दी गई या जोड़ी गई अतिरिक्त उपयोगी सामग्री। appendix **उदा.** हमारी पुस्तक के परिशिष्ट में लेखक की अन्य कृतियों का भी संक्षिप्त परिचय दिया गया है।

परिशोधन *पुं.(तत्.)* किसी लिखित सामग्री या वेतनमान आदि की गलतियों को सुधारने के लिए किया गया परिवर्तन; सुधार। rectification

परिश्रम *पुं.(तत्.)* ऐसा शारीरिक और मानसिक काम (श्रम) जिसे करते-करते थकावट आने लगे। **पर्या.** मेहनत। **उदा**. परिश्रम का फल मीठा होता है।

परिश्रमी *वि.(तत्.)* परिश्रम करने वाला (व्यक्ति) **दे.** परिश्रम। **उदा.** मेरा मित्र बहुत परिश्रमी है।

परिषद *स्त्री.(तत्.)* निर्वाचित, नियुक्त या नामित सदस्यों का समूह जो निर्धारित समय पर एकत्र होकर सौंपे गए कार्य पर विचार-विमर्श करके किसी निष्कर्ष पर पहुँचते हैं। **जैसे:** छात्र परिषद, नगर परिषद, सुरक्षा परिषद आदि। council

परिष्करण *पुं.(तत्.)* 1. स्वच्छ या शुद्‌ध करना। 2. दोष या त्रुटियाँ दूर करके ठीक करना।

परिष्करिणी *स्त्री.(तत्.) (<परिष्कार)* खनिज, तेल, पेट्रोलियम आदि को शुद्‌ध कर पेट्रोल अलग करने का कारखाना। refinery

परिष्कार *पुं.(तत्.)* स्वच्छ और सुंदर बनाने की क्रिया या भाव, संस्कार, शुद्‌धीकरण, सजावट। **उदा.** हमें अपनी भाषा का परिष्कार करते रहना चाहिए।

परिष्कृत *वि.(तत्.)* जिसका परिष्कार किया गया हो, पूरी तरह से साफ किया हुआ, शुद्‌ध किया हुआ। **दे.** परिष्कार।

परिसंचरण *पुं.(तत्.*) शा.अर्थ. तरफ भेजने या भेजे जाने की व्यवस्था। **जीव.** रक्त का हृदय से धमनियों, कोशिकाओं और शिराओं में होते हुए चक्रीय (वृत्ताकार) रूप से लगातार बहते रहने की व्यवस्था। Circulation

परिसर *पुं.(तत्)* 1. किसी संस्था के भवनों, उपभवनों, खाली मैदानों का समस्त क्षेत्र या आहाता। campus **जैसे.** विश्वविद्यालय परिसर, विद्यालय परिसर।

परिस्थिति [परि+स्थिति] *स्त्री.(तत्)* 1. चारों ओर की स्थिति/अवस्था। 2. चारों ओर होने वाली घटनाएँ जो मनुष्य या वातावरण पर प्रभाव डालती हैं। 3. किसी व्यक्ति की देश, काल, परिवेश आदि से संबंधित स्थिति। **जैसे:** इंदिरा गांधी के समय भी राजनैतिक परिस्थिति आज से भिन्न थी। 4. दशा, हालत। **जैसे:** बाढ़ उतरने के बाद गाँव की परिस्थिति कैसी है?

परिस्थितिकी *स्त्री.(तत्.)* **जीव.** जीवविज्ञान की एक शाखा जिसमें जीवों के पारस्परिक संबंधों तथा उनके आसपास के पर्यावरण के बीच संबंधों का अध्ययन किया जाता है। **पर्या.** परिस्थिति विज्ञान। Ecology

परिस्थितिविज्ञान *पुं.(तत्.)* **दे.** पास्थितिकी'।

परिस्थितिविज्ञानी *पुं. (तत्.)* **दे.** पारिस्थितिकविद्।

परिहार *पुं.(तत्.)* सा.अर्थ दूर करना, अलग करना, हटाना। **जैसे:** दोष परिहार। तक. **अर्थ.** दंड, ऋण आदि का अंशत: कम किया जाना अथवा पूर्णत: समाप्त कर देना। remission

परीक्षण *पुं.(तत्.)* 1. परीक्षा लेने या करने (परखने) की क्रिया। **पर्या.** जाँच, परख। **जैसे:** रक्त परीक्षण, मासिक या साप्ताहिक परीक्षण। **टि.** 'परीक्षा' और 'परीक्षण' का भेद द्रष्टव्य है।

परीक्षित *वि.(तत्.)* (परीक्षा+इत) जिसकी परीक्षा की जा चुकी हो; जिसकी जाँच हो चुकी हो। **उदा.** यह दवा मेरी परीक्षित है। इसे तुम बेधड़क होकर ले सकते हो।

परीक्ष्य *वि.(तत्.)* जिसकी परीक्षा/जाँच होनी अभी शेष है; जिसकी जाँच अभी चल रही है। **उदा.** घोटाले का यह मामला परीक्ष्य है अभी इसके बारे में किसी निर्णय पर पहुँचना ठीक नहीं होगा।

परे *क्रि.वि. (तद्.*<पर) दूर, अलग, आगे, दूसरी तरफ, दूर हट कर। **उदा.** इस पुस्तक को परे रख दो, फिर बात करो। यह बात तुम्हारी समझ से परे है।

परेड़ *स्त्री.(अं.)* 1. सैनिकों का स्फूर्तिमय अनुशासनबद्ध विशेषगतियुक्त प्रदर्शन, कवायद, संचलन। 2. विद्यालयीय बच्चों द्वारा मैदान में की जाने वाली विशेष कवायद। **जैसे**: 1. गणतंत्र दिवस के अवसर पर सैनिकों की परेड़ निकलती है। 2. स्कूल के मैदान में छात्र परेड करते हैं।

परेशान *वि.(फा.)* दु:खी, चिंतित, बेचैन। **उदा.** आंध्र प्रदेश में कई किसानों ने गरीबी से परेशान होकर आत्महत्या कर ली।

परेशानी *स्त्री.(फा.)* दु:ख, चिंता, बेचैनी। **उदा.**- तुम्हारी परेशानी का कारण क्या है? मुझे बताओ। शायद मैं तुम्हारी कुछ मदद कर सकूँ।

परोक्ष *वि.(तत्.)* जो आँखों के आगे न हो, छिपा हुआ, अप्रत्यक्ष। **जैसे**: परोक्षकर, परोक्ष निर्वाचन। **पर्या.** अप्रत्यक्ष। **विलो.** प्रत्यक्ष।

परोपकार [पर+उपकार] *पुं.(तत्.)* 1. दूसरे की भलाई करने का काम। **पर्या.** परहित। **उदा.** परोपकार करना सबसे बड़ा धर्म है।

परोपकारी *(वि.) (तत्.)* 1. परोपकार (दूसरे का भला) करने वाला। **उदा.** वह बहुत ही परोपकारी व्यक्ति है।

परोसना *स.क्रि.(तद्.*<परिवेषण) 1. खिलाने के लिए थाली या पत्तल में भोजन की सामग्री लगाना। 2. खाते समय खाने वाले की थाली या पत्तल में खाद्य सामग्री ला-लाकर आदरपूर्वक रखना। **उदा.** सभी बारातियों को खाना परोसा गया।

पर्णकुटी *स्त्री.(तत्.)* पत्तों की यानी घास-फूस से बनी कुटिया। **उदा.** राम, सीता और लक्ष्मण पर्णकुटी बनाकर वन में रहने लगे।

पर्णपाती *वि.(तत्.)* पौधे जिनकी पत्तियाँ ऋतु विशेष में झड़ जाती हैं। **पर्या.** पतझड़ी। **जैसे:** पर्णपाती वन। deciduous **विलो.** सदाबहार।

पर्णहरित *पुं.(तत्.)* वन पादप कोशिकाओं में पाया जाने वाला हरा वर्णक जिसकी सहायता से हरे पौधे अपना भोजन स्वयं बनाते हैं। यह चार वर्णकों का मिश्रित रूप है। chlorophyll

पर्णिका *स्त्री.(तत्.)* **दे.** पन्नी।

पर्दानशीन [पर्दा+नशीन] *वि./स्त्री.(फा.)* परदे में रहने वाली (स्त्री.) जो पराए मरदों के सामने बाहर नहीं आती।

पर्दाफ़ाश [परदा+फाश] *पुं.(फ़ा.)* पर्दाफाश होना/करना। व्यु.अर्थ परदा खुल जाना। ला.अर्थ छिपी या छिपाई हुई बातों का सामने आ जाना। भेद खुल जाना। **जैसे:** आजकल पर्दाफाश पत्रकारिता का बहुत प्रचलन है।

पर्पटी *स्त्री.(तत्.)* सा.अर्थ पपड़ी। भू.वि. **दे.** भू-पर्पटी। Earth crust **कृषि.** मृदापृष्ठ की शुष्क परत जो अपने ठीक नीचे वाली मृदा की तुलना में अधिक सख्त (ठोस), कठोर और भंगुर होती है। crust

पर्यंत [परि+अंत] *पुं. (तत्.)* व्यु.अर्थ अंतिम सीमा, परिधि। हिंदी में समस्त पद का उत्तर पद। अ. तक (फैला हुआ) **जैसे:** जीवन पर्यंत=जीवित रहने तक। **उदा.** हस्तिनापुर के राजा शांतनु के पुत्र देवव्रत जीवन पर्यंत ब्रह्मचारी रहने की कठोर प्रतिज्ञा कर 'भीष्म' कहलाए।

पर्यटक *पुं. (तत्.)* दर्शनीय स्थलों का भ्रमण करने वाला व्यक्ति या समूह। **उदा.** भारत में प्रतिवर्ष लाखों विदेशी पर्यटक आते हैं।

पर्यटन [परि+अटन] *पुं.(तत्.)* सा.अर्थ देश या विदेश के महत्वपूर्ण दर्शनीय स्थलों का ज्ञानवर्धन और मनोरंजन के लिए भ्रमण। **पर्या.** देशाटन। 2. **उदा.** ग्रीष्मावकाश में हम दक्षिण भारत का पर्यटन करेंगे।

पर्यनुकूलन [परि+अनुकूलन] *पुं.(तत्.)* किसी भी नई परिस्थिति या नए जलवायु में अपने को उसके तदनुरूप बनाए रखने का कार्य। acelimatization

पर्यवसान [परि+अवसान] *पुं.(तत्.)* 1. किसी कार्य की पूरी तरह समाप्ति, अंत। **जैसे:** समारोह का पर्यवसान, दिन का पर्यवसान। 2. निर्धारण।

पर्याप्त *वि.(तत्.)* जितना आवश्यक हो उतना, जितना चाहिए उतना, जरूरत के मुताबिक, काफ़ी, यथेष्ट। **उदा.** 1. सर्दी बिताने के लिए उसके पास पर्याप्त गरम कपड़े हैं। 2. किसी पर दोषारोपण करने से पहले पर्याप्त सबूत जुटा लेना चाहिए। syfficient

पर्याय *पुं.(तत्.)* किसी शब्द के समान अर्थ का सूचक दूसरा शब्द। **जैसे**: 'कमल' का 'पंकज', 'जलज' आदि। **पर्या.** समानार्थक शब्द, समानार्थी।

पर्यायवाची *वि.(तत्.)* पर्याय (समान अर्थ) बतलाने वाला। समानार्थक (शब्द)। **विलो.** विपरीतार्थक synonym

पर्यावरण [परि+आवरण] *पुं.(तत्.)* 1. पृथ्वी के चारों तरफ फैला वह घेरा जो प्राणियों व वनस्पतियों के अस्तित्व की रक्षा में सहायक होता है। **टि.** पर्यावरण प्राणियों का रक्षा कवच है। 2. बाहरी और भीतरी सभी दशाओं का (तापमान, प्रकाश, भूमि, हवा, पानी, पौधे, प्राणियों का) समुच्चय जो जीवों के अस्तित्व, वृद्धि, परिवर्धन, सक्रियता आदि पर प्रभाव डालता है। **उदा.** आज के मशीनी युग में पर्यावरण की रक्षा पर सबसे अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।

पर्यावरण हितैषी *वि.(तत्.)* पर्यावरण का हित (भला) चाहने वाला। enviornment friend **उदा.** आजकल पर्यावरण-हितैषी उत्पादन योजनाओं पर अधिक बल देने की आवश्यकता है। **दे.** पर्यावरण'।

पर्यावास [परि+आवास] *पुं.(तत्.)* प्राकृतिक आवास। habitat **उदा**. आजकल चिड़ियाघर में पशु-पक्षियों के लिए पर्यावास जैसी सुविधाएँ जुटाने पर बल दिया जाता है।

पर्व *पुं.(तत्.)* 1. कोई धार्मिक उत्सव या त्योहार। **जैसे**: दीपावली पर्व, संक्रांति पर्व। 2. दो संधिस्थलों के बीच का भाग। बोलचाल में पोर। **जैसे**: उंगलियों के पारे, गन्ने के पोर। 3. विशाल ग्रंथ के विभाग या खंड। **उदा.** महाभारत में अठारह पर्व हैं।

पर्वत *पुं.(तत्.)* 1. प्राकृतिक रूप से शैलों/शिलाओं, मिट्टी आदि से बना ऊँचा भूखंड। **जैसे:** हिमालय पर्वत माला, अरावली पर्वत माला। 2. ला.अर्थ (पहाड़ जैसा) ऊँचा ढेर। **उदा.** तुमने यह क्या पुस्तकों का पर्वत बना रखा है? इन्हें व्यवस्थित रखो।

पर्वतमाला *पुं.(तत्.)* एक सीध में बहुत देर तक चलने वाली पर्वतों की श्रृंखला या पंक्ति। **उदा.** हिमालय भारतवर्ष की सबसे बड़ी पर्वतमाला है। Range

पर्वतारोहण [पर्वत+आरोहण] *पुं.(तत्.)* पहाड़/पत्थरों पर चढ़ने का खेल या अभियान। **उदा**. हम एक

सप्ताह बाद पर्वतारोहण के अभ्यास के लिए जाएँगे।

पर्वतारोही [पर्वत+आरोही] *वि./पुं. (तत्.)* पर्वत पर चढ़ने वाला; पर्वतारोहण के अभियान में भाग लेने वाला सदस्य।

पलंग *पुं. [तद्.*<पर्यक] सुसज्जित शयनासन, (सोने के काम आने वाली बड़ी चारपाई)।

पल *पुं.(तत्.)* 1. समय गणना की प्राचीन सूक्ष्म अवधि या माप जो 24 सेकंड के बराबर होती है। अर्थात् 60 पल 24 मिनट के बराबर होते हैं। 60 पल की एक घटी होती है। ढाई घटी का एक घंटा होता है। 2. एक पुरानी तौल या मान (चार कर्ष-एक पल) 3. थोड़ी देर, क्षण भर। **मुहा.** पल-भर में - क्षण भर में, तत्काल, शीघ्र। **जैसे:** पलभर में क्या से क्या हो गया।

पलक *स्त्री.(तत्.)* **प्राणि**. आँख के ऊपर की चल त्वचा वाला पट जिसकी सहायता से आँख को खोला और बंद किया जा सकता है। पलक आँख की सुरक्षा भी करती है। eye lid **मुहा**. (i) पलक झपकना-नींद की पहली अवस्था जिसमें आँख की पलकें बंद हो जाती हैं। (ii) पलकें बिछाना/पलक पाँवड़े बिछाना-किसी की प्रतीक्षा में उसके स्वागत सत्कार की पूरी तैयारी करना। **टि.** किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति के आगमन पर लाल रेशमी गलीचे की पट्टी बिछाने का रिवाज है। इस मुहावरे का अभिप्राय यह है कि स्वागतातुर व्यक्ति ने उस लाल पट्टी के स्थान पर अपनी पलकें बिछा रखी हैं।

पलटन *स्त्री.(अं.<प्लैटून)* सैन्य-पुलिस, सैनिकों आदि की टुकड़ी। ला.अर्थ झुंड, समूह। **उदा.** पुराने ज़माने में घर में बच्चों की पलटन खड़ी कर दी जाती थी। अब एक या दो बच्चों तक ही परिवार को सीमित रखा जाता है।

पलटना *अ.क्रि.(देश.)* उलट जाना, एकदम, बदल जाना, मुकरना। **उदा.** वह अपनी बात से पलट गया। उलटना (पृष्ठ आदि), वस्तु बदलना। **उदा.** धूप में सूख रहे कपड़ों को पलट दो, जल्दी सूख जाएँगे।

पलटा *पुं.(तद्.*>प्रलोठन) 1. पलटने या गिर जाने की क्रिया या भाव। **जैसे:** बस पलटा खाकर गिर पड़ी। 2. किसी बात या स्थिति से मुकरने का भाव। **जैसे:** उसका इरादा पलटा देखकर वह सोचने लगा। 3. विपरीत दशा में होने वाला परिवर्तन। **जैसे:** उसके भाग्य ने पलटा खाया। 4. सब्जी आदि पलटने का रसोईघर का उपकरण।

पलभर *क्रि.वि. (तत्.+देश.)* बहुत थोड़े समय के लिए। (लगभग पलक झपकने जितना) **उदा.** पलभर के लिए ठहर जाओ, मैं भी साथ चलता हूँ। **पर्या.** क्षणभर।

पलस्तर *पुं.(अं.*<प्लास्टर) 1. **इंजी.** दीवारों पर लेप के लिए प्रयुक्त पदार्थ जो सीमेंट, चूने, रेत, रंग आदि का मिश्रण होता है। 2. **आयु.** टूटी हड्डी को प्राकृतिक रूप से जुड़ने में सहायता देने के लिए बाँधी गई लेपित पट्टी। plaster **उदा.** उसके पैर पर पलस्तर चढ़ा है, इसलिए वह चल नहीं सकता।

पलायन [परा+अयन] *पुं.(तत्.)* 'र' के स्थान पर 'ध' व्यु.अर्थ विपरीत दिशा में जाना। सा.अर्थ युद्ध से अथवा प्रतिकूल परिस्थितियों से घबराकर/डरकर उनसे मुख मोड़ लेना या वहाँ से भाग जाना। **उदा.** छात्रों में पलायनवृत्ति बढ़ जाने पर वे बीच में पढ़ाई-लिखाई छोड़ देते हैं।

पलाश *पुं.(तत्.)* 1. ढाक का पौधा जिसमें नवपल्लव ग्रीष्म के आरंभ में निकलते हैं तथा फूल लाल रंग के होते हैं। **पर्या.** टेसू। **उदा.** पलाश के पत्ते 'पत्तल' बनाने के काम आते हैं।

पलीता *पुं.(फा.)* 1. वह बत्ती जिससे तोप में आग लगाई जाती है। 2. पटाखे में लगी बत्ती जिसे सुलगाने पर पटाखा चलता है/बजता है। ला.अर्थ पलीता लगाना अपनी बातों या कार्यों से किसी के मध्य झगड़ा शुरू करना, बढ़ाना या भड़काना।

पल्लव *पुं.(तत्.)* 1. नया और कोमल पत्ता। 2. दक्षिण भारत का एक प्राचीन राजवंश (जिसकी राजधानी तमिलनाडु के कांचीपुरम में थी।)

पल्लवन *पुं.(तत्.)* नए-नए पत्ते निकलना; ला.अर्थ विकसित होना/करना। **उदा.** समरथ को नहीं दोस गुसाईं' उक्ति का पल्लवन करते हुए लघु निबंध लिखिए।

पल्लवित [पल्लव+इत] *वि.(तत्.)* नई कोंपलों से युक्त, अंकुरित, विकसित, फला-फूला। **दे.** पल्लवन।

पल्ला[1] *पुं.(तद्.<पटल)* 1. पहनी हुई साड़ी, धोती आदि का एक छोर, दामन, आँचल। **जैसे:** बच्चे माँ का पल्ला पकड़ते हैं। **मुहा**. (i) पल्ला छूटना-पीछा छूटना, परेशानी दूर होना। (ii) पल्ला झाड़ना-इनकार करना, सहयोग न करना। मेरे द्वारा मदद माँगने पर उसने पल्ला झाड़ दिया। (iii) पल्ले पड़ना-अनिच्छा से प्राप्त होना, मजबूरी, खराब चीज का मिलना। **जैसे:** यह खराब गाड़ी तो मेरे ही पल्ले पड़ी। (iv) पल्ले बाँधना-अपने या अन्य किसी को जिम्मेवारी देना। (v) पल्ले मढ़ना-ज़बरदस्ती उत्तरदायित्व देना।

पल्ला[2] *पुं. (फा. पल्लः)* 1. तराजू का एक पक्ष या पलड़ा। 2. दो परस्पर विरोधी दलों से एक पाला। **मुहा.** पल्ला भारी होना-पक्ष का मजबूर होना। **जैसे**: यहाँ स्थानीय चुनाव में एक निर्दलीय का पल्ला भारी है। पल्ला/पाला बदलना-पक्ष बदलना, रुख बदलना।

पल्लू *पुं.(देश.)* कपड़े का छोर (विशेष रूप से महिलाओं की साड़ी का छोर जिससे वे अपना सिर ढकती हैं।) **उदा.** नवविवाहिता ने पल्लू से सिर ढककर अपने सास-ससुर के चरण-स्पर्श किए।

पल्सपोलियो *पुं.(अं.)* पोलियो नामक रोग की रोकथाम के लिए सरकार द्वारा चलाया गया एक अभियान जिसके अंतर्गत पाँच वर्ष तक के बालक-बालिकाओं को समय-समय पर पोलियो का टीका लगाया जाता है। यह टीका औषधि की बूँदों के रूप में बच्चों को पिलाया जाता है।

पवन *पुं. (तत्.)* प्राकृतिक रूप से गतिशील वायु। Wind

पवन-ऊर्जा *स्त्री.(तत्.)* हवा की सहायता से प्राप्त ऊर्जा। wind energy **टि.** तीव्र गति से चलती हवाएँ पवन-चक्की को घुमाती हैं, जो बिजली पैदा करने के लिए जनरेटर से जुड़ी होती हैं।

पवन वेगमापी *वि./पुं. (तत्)* प्राकृतिक रूप से बहने वाली हवा के वेग का मापन करने वाला उपकरण। Anemometer

पशुता *स्त्री.(तत्.)* पशु के गुणों और लक्षणों को प्रकट करने वाला भाव। **पर्या.** पशुत्व। **उदा.** उसने तुम्हारे साथ पशुता का जो व्यवहार किया वह मुझे अच्छा नहीं लगा।

पशुत्व *पुं.(तत्.)* **दे.** 'पशुता'।

पशुधन [पशु+धन] *पुं.(तत्.)* आर्थिक उत्पादन के रूप में उपयोगी पशु (संरक्षण व पालन की दृष्टि से) 1. पशुरूपी धन। 2. ढोर, मवेशी। **उदा**. कुछ लोगों की जीविका का साधन पशुधन ही होता है।

पशुपालक [पशु+पालक] *पुं.(तत्.)* 1. पशुओं को पालकर आजीविका चलाने वाला। 2. पशुओं को पालने वाला। **दे.** 'पशु पालन'।

पशुपालन [पशु+पालन] *पुं.(तत्.)* पशुओं को पालने, उनकी देखभाल करने तथा उनकी अभिवृद्धि के लिए आवश्यक परिस्थितियों का निर्माण करने की विद्या और व्यवसाय दोनों ही। animal hasbandary, cattle breeding

पशुवत् *क्रि.वि.(तत्.)* 1. जानवरों की तरह (अशिष्टता के संदर्भ में) पशु के समान, पशुओं जैसा। **जैसे**: पशुवत् मत खाओ। 2. शिकारी पशुओं जैसा निर्दय व्यवहार। **जैसे**: वह अपने नौकरों के साथ पशुवत् व्यवहार करता था।

पश्च *वि.(तत्.)* 1. पीछे का, पिछला। 2. जिसका उच्चारण जीभ के पिछले भाग से होता है। **जैसे:** पश्चस्वर। (उ, ऊ, ओ, अर)

पश्चगति *स्त्री.(तत्.)* पीछे की ओर जाने की स्थिति, अवस्था अथवा भाव।

पश्चगामी *वि.(तत्.)* पीछे की ओर जाने या देखने वाला। **उदा.** व्यक्ति को चाहिए कि वह पश्चगामी होने के बजाय अग्रगामी बने।

पश्चात् *अव्य.(तत्.)* व्यु.अर्थ पश्च-पीछे, पीठ। **तु.** पश्चिम। पश्चात्-पीछे से। सा.अर्थ बाद में, अनंतर, अंत में।

पश्चाताप [पश्चात्+ताप] *पुं.(तत्.)* व्यु.अर्थ बाद में होने वाला कष्ट। सा.अर्थ कोई अनुचित कार्य करके बाद में उसके लिए पहले मन-ही-मन दुःखी होना, फिर उसके निवारण के लिए कोई उपचार करना। **पर्या.** पछतावा। **उदा.** उसने गुस्से में छोटे भाई को पीट तो दिया पर बाद में उसे इस बात पर पश्चाताप हुआ। तब उसने भाई को पुचकारा और उससे माफी माँगी।

पश्मीना *पुं.(फ़ा.)* कश्मीरी (लद्दाखी) और तिब्बती भेड़ों से प्राप्त उत्तम किस्म की ऊन और उससे

बना कपड़ा। **उदा.** मेरी माताजी ने एक पश्मीना शॉल पसंद की, पर बहुत महँगी होने से उन्होंने उसे नहीं खरीदा।

पसंद *स्त्री.(फा.)* 1. मन को अच्छा लगने का भाव, रूचि। **उदा**. अपनी-अपनी पंसद बताओ। 2. *वि.(फा.)* समस्त पद में उत्तरपद के रूप में प्रयुक्त होने पर। **जैसे**: मनपसंद-मन को पसंद आने वाला/वाली। **उदा.** तुम्हारी मनपसंद मिठाई कौन सी है? **पर्या.** पसंदीदा। **विलो.** नापसंद।

पसंदीदा *वि.(फा.)* पसंद किया हुआ, मन को अच्छा लगने वाला, रूचिकर। **उदा.** तुम्हारी पसंदीदा मिठाई कौन सी है? **पर्या.** मनपसंद।

पसली *स्त्री. [तद्*<पर्शुका] रीढ़ की हड्डी से जुड़ी और छाती को आगे से घेरने वाली घुमावदार हड्डियों के बारह जोड़ों में से कोई भी हड्डी। rib बहु. पसलियाँ ribs

पसारना *स.क्रि.(तद्*<प्रसारण) फैलाना, दायरा बढ़ाना। **जैसे:** 1. बिस्तर पर पैर पसारना। 2. किसी के आगे हाथ पसारना। **उदा.** वह तो हमारी ज़मीन की ओर अपने पैर पसार रहा है।

पसीजना *अ.क्रि.(देश.)* 1. अधिक ताप या गर्मी के कारण ठोस वस्तु का द्रव में बदलने लगना। **पर्या.**पिघलना। **उदा.** पत्थर से पानी पसीजना। 2. किसी का दु:ख देखकर मन में दया का भाव उत्पन्न होना। **उदा.** उसकी गरीबी देखकर मेरा दिल पसीज गया।

पसोपेश *पुं.(फा.)* किसी कार्य के करने से मन में उत्पन्न हुई दुविधा या असमंजस की स्थिति। **उदा.** मैं इसी पसोपेश में हूँ कि नौकरी करूँ या व्यापार।

पस्त *वि.(फा.)* मूल अर्थ. लघु, छोटा; अधम, नीच। हिंदी में अर्थ थका हुआ, शिथिल, हतोत्साहित। **टि.** हिंदी में यह अर्थ 'पस्तहिम्मत' या 'पस्तहौसला' से विकसित हुआ जान पड़ता है। अ.क्रि. पस्त होना-पूरी तरह से थक जना, शिथिल हो जाना।

पहचान *स्त्री. (तद्*<प्रत्यभिज्ञान/देश.) 1. पहले देखी, सुनी या जानी हुई वस्तु या व्यक्ति को पुन: देखने पर उसे उसी रूप में जानने-समझने का भाव। **जैसे:** किसी ने गैंडे का चित्र देखा है। चिड़ियाघर में उसे देखकर यह जान लेना कि यह गैंडा ही है जिसका चित्र मैंने देखा था। 2. परख। **उदा.** मुझे अच्छे फलों की पहचान नहीं है। 3. परिचय। **उदा.** मेरी उसकी जान-पहचान पुरानी है। 4. कोई विशिष्ट चिह्न, निशान या गुण आदि जिससे वस्तु आदि का ज्ञान हो। **उदा.** सूँड ही हाथी की पहचान है।

पहचान-चिह्न *पुं.(तद्.+तत्.)* व्यक्ति के जन्म-चिह्न या शरीर पर लगी चोट आदि का स्थायी निशान जिससे उसकी शिनाख्त (पहचान) हो सके। identification mark

पहचानपत्र *पुं.(तद्+तत्.)* संबंधित संस्था द्वारा जारी किया गया पहचान कार्ड जिस पर व्यक्ति का चित्र (फोटो) और जन्मतारीख के साथ-साथ अन्य मोटी-मोटी जानकारियाँ भी दी गई होती हैं। **पर्या.** अभिज्ञान पत्र। identification mark

पहनना *स.क्रि. (तद्*:>परिधान) किसी वस्त्र या आभूषण आदि को शरीर में धारण करना। **जैसे**: (i) कुर्ता-धोती पहनना। (ii) किसी स्त्री का साड़ी पहनना या गले में हार पहनना।

पहनाना *स.क्रि. (प्रेर.*<पहनना) माँ शिशु को उसके कपड़े पहनाती है।

पहनावा *पुं (तद्.)* 1. शरीर में पहनने के मुख्य वस्त्र। पोशाक dress 2. विशेष स्थान या समाज में सामान्य रूप से अथवा परंपरा के अनुसार पहने जाने वाले कपड़े। **जैसे**: राजस्थान व बंगाल के लोगों का पहनावा भिन्न प्रकार का है। **टि.** कई बार पहनावा भी पहचान का साधन बन जाता है।

पहर *पुं. (तद्.*<प्रहर) 1. पूरे दिन-रात (24 घंटे) का आठवाँ भाग (पूरे दिन रात में आठ पहर) होते हैं, तीन घंटे का समय। **जैसे**: दोपहर, चौथा पहर। **पर्या.** याम (आठहु याम यही झक तेरे)

पहरा *पुं.* (*तद्.*>प्रहर) 1. रक्षा, रखवाली, उचित ढंग से देखरेख। जैसे-बड़े अधिकारियों या कार्यालयों आदि में हर समय पहरा रहता है। 2. रक्षकों का समूह। **जैसे**: पुलिस ने उसके घर पहरा बिठा दिया है। 3. चौकसी, चौकी। 4. चौकीदार की गश्त या फेरा।

पहरेदार *पुं. (तद्.पहरा+फा. दार)* पहरा देने वाला, नियत कालिक नौकरीपेशा व्यक्ति जो किसी

स्थान विशेष की सुरक्षा के लिए तैनात किया जाता है। **पर्या.** चौकीदार**,** रखवाल Guard

पहरेदारी *स्त्री. (तद्.पहरा+फा.दारी)* 1. पहरा देने का कार्य, 2. पहरा देने के लिए दिया गया पारिश्रमिक। **दे.** पहरा, 'पहरेदार'।

पहल *स्त्री.(*.फा) (पहल करना अ.क्रि.) किसी काम को आगे बढक़र शुरू करना ताकि दूसरे भी उससे जुड़ने के लिए प्रेरित हों। **उदा.** अगर आप पहल न करते तो यह काम शुरू ही न होता।

पहलू *पुं.(फा.)* 1. शरीर का दायाँ या बायाँ भाग, करवट। **उदा.** वह पहलू बदलकर सो गया। 2. किसी विषय के कई पक्षों में से कोई भी पक्ष, दृष्टिकोण। **उदा.** चुनाव में उम्मीदवार को वोट देने से पहले मैं सभी पहलुओं पर विचार कर लेता हूँ।

पहाड़ *पुं. (तद्.पाषाण)* भूमि का ऊँचा ऊपर से नुकीला तथा ऊबड़-खाबड़ चट्टानों, वृक्षों आदि से युक्त प्राकृतिक भाग, पर्वत। **जैसे**: विंध्या पर्वत, अरावली पर्वत। **मुहा.** 1. पहाड़ टूट पड़ना-अचानक भारी विपत्ति आ पड़ना। 2. पहाड़ उठाना-भारी काम की जिम्मेवारी अपने ऊपर लेना।

पहाड़ा *पुं.* [*तद्.*<प्रस्तार] किसी संख्या की गुणन-सूची। table **उदा.** आठ का पहाड़ा याद करो।

पहाड़ी *स्त्री.* (पहाड़+ई प्रत्य.) 1. पहाड़ संबंधी, 2. छोटा पहाड़। **वि.** पहाड़ का निवासी।

पहुँच *स्त्री.(*तद्.) 1. पैठ, दखल। **उदा.** उसकी पहुँच बड़े-बड़ों तक है। **देश.** रसीद प्राप्त होने की सूचना। **उदा.** मेरे पत्र की पहुँच शीघ्र भेजना।

पहुँचना *अ.क्रि. (तद्.)* 1. किसी व्यक्ति, वस्तु या विचार का एक स्थान या बिंदु से चलकर शुरू होकर दूसरे स्थान या बिंदु पर ठहरना या स्थिर होना। **उदा.** 1. तुम दिल्ली कब पहुँचे? 2. बताओ, तुम किस निर्णय पर पहुँचे। 2. किसी ऊँचे पद को प्राप्त करना। **उदा.** उसने अपनी नौकरी लिपिक के पद से शुरू की और निदेशक तक पहुँच गया। 3. भेजी हुई सामग्री पाने वाले को प्राप्त होना। **उदा.** जब मेरा पत्र तुम तक पहुँच जाए तब मुझे खबर करना।

पहुँचा *पुं.(तद्.)* 1. हथेली और कुहनी के बीच का हथेली से लगा भाग। मणिबंध, कलाई। उँगली पकड़कर पहुँचा पकड़ना-किसी को अपने अनुकूल समझकर अपनी स्वार्थसिद्धि के लिए उसे और अधिक प्रयोग करना। *अ.क्रि.* पहुँचना क्रिया का भूतकालिक रूप।

पहेली *स्त्री.(तद्.)* वह मनोरंजक काव्य-विधा जिसमें किसी कथन को गूढ़ प्रश्न के रूप में प्रस्तुत कर श्रोता से उसका उत्तर पूछा जाता है और श्रोता को उसका उत्तर बूझने में काफी बौद्धिक श्रम करना पड़ता है। **जैसे:** "एक थाल मोती से भरा/सबके सिर पर औंधा धरा/चारों ओर वह थाली फिरे/मोती उससे एक न गिरे/बताओ क्या? (उत्तर-आसमान) **मुहा.** पहेलियाँ बुझाना-इस रूप में बात कहना जो सामान्य रूप से जल्दी समझ में न आए।

पाँख *पुं.* (*तद्.*<पंख) पक्षियों, कीड़ों आदि का वह अंश जिसकी सहायता से उड़ते हैं। **पर्या.** पंख**,** पर, डैना।

पांडित्य *पुं.(तत्.)* 1. पंडित होने का गुण। **पर्या.** विद्वत्ता। **उदा.** उनके पांडित्य से सभी प्रभावित हैं। 2. पौरोहित्य कर्म। **पर्या.** पंडिताई।

पांडु रोग *पुं.(तत्.)* पांडु *वि.* पीलापन लिए हुए सफेद रंग का। पांडु रोग, रोग जिसमें रक्त के दूषित हो जाने से त्वचा का रंग पीतवर्णी (पीला सा) हो जाता है। **पर्या.** पीलिया। Jaundice, Icterus

पांडुलिपि *स्त्री.(तत्.)* व्यु.अर्थ किसी ग्रंथ की हस्तलिखित पहली प्रति या उसकी प्राथमिक प्रतिलिपि जो समय के कारण हलकी पीली (पांडु) या फीकी पड़ गई हो। सा.अर्थ प्रकाश के लिए प्रस्तुत किसी ग्रंथ की हस्तलिखित या टंकित प्रति। manuscript

पाँत *स्त्री.(तद्*<पाँति पंक्ति) 1. पंक्ति, रेखा, क़तार। **जैसे:** साधू पाँत में बैठकर भोजन करते हैं। 2. परंपरा। **उदा.** जाति-पाँत पूछे नहि कोई। हरि को भजै सो हरि का होई।। 2. समूह। **उदा.** हंसों की नहिं पाँत।

पाँव *पुं.* (*तद्.*<पाद) टाँक का टखने से नीचे का सपाट हिस्सा जिसकी सहायता से प्राणी धरती पर खड़े होते और चलते हैं। **पर्या.** पैर**,** चरण। foot

पाँवड़ा *पुं. (देश.)* पैरों के नीचे का आसन। सा.अर्थ वह लंबी पट्टी जो किसी अति महत्वपूर्ण व्यक्ति या पूज्य आगंतुक के मार्ग में बिछाई जाती है। red carpet **जैसे:** पलक पाँवड़े बिछाना।

पाक कला *स्त्री.(तत्.)* विविध प्रकार के पौष्टिक एवं स्वादिष्ट भोजन बनाने की कला। **उदा.** वह पाककला में अत्यंत निपुण हैं।

पाक[1] *पुं.(तत्.)* पकना, पकाना। **जैसे:** पाककला, पाकशास्त्र।

पाक[2] *वि.(फ़ा.)* पवित्र, शुद् ध; निर्दोष। 1. **उदा.** उसका चरित्र बहुत पाक है।; पाकिस्तान। 2. वह इस मामले में पूरी तरह पाक है।

पाखंड *पुं.(तत्.)* वास्तविकता से दूर, दिखावे-भर के लिए किया जाने वाला व्यवहार। **पर्या.** आडंबर, ढोंग, छद्म। **उदा.** कुछ लोग सहायता का पाखंड रचकर दूसरों को दबाते हैं।

पाखंडी *वि./पुं. (तद्.)* पाखंड करने वाला, दिखावा करने वाला (व्यक्ति)

पाखी *पुं.* (तद्<पक्षी) बोलियों में प्रयुक्त शब्द जिसके पंख हों, जो उड़ सके। **पर्या.** पक्षी**,** चिड़िया।

पागल *वि./पुं. (तत्.)* 1. मानसिक दृष्टि से अस्वस्थ (व्यक्ति)। ला.अर्थ क्रोध आदि में दिमागी संतुलन खो देने वाला (व्यक्ति), विक्षिप्त, सनकी। 2. मूर्ख, नासमझ।

पागलखाना *पुं.(तत्.+फा.)* वह आवासीय केंद्र जहाँ पागलों को रखा जाता है और उनका इलाज भी किया जाता है। **पर्या.** मानसिक चिकित्सालय।

पाचक ग्रंथि *स्त्री.(तत्.)* प्राणियों में भोजन को पचाने वाला एन्जाइम-युक्त स्राव उत्पन्न करने वाली ग्रंथियाँ। **जैसे:** लार-ग्रंथियाँ, जठर ग्रंथियाँ, अग्न्याशय आदि। Digestive gland

पाचक रस *पुं.(तत्.)* प्राणियों में पाचक ग्रंथियों से उत्पन्न होने वाला एन्जाइम युक्त स्राव जो भोजन को पचाने में योगदान करता है। लार, जठर तथा अग्न्याशय रस। **दे.** पाचक-ग्रंथि। digestive juice

पाचक *वि.(तत्.)* 1. पचाने वाला, 2. पकाने वाला। **जैसे:** पाचक रस; पाचक औषधि। *पुं.* 1. खाना बनाने वाला; रसोइया।

पाचन *पुं.(तत्.)* सा.अर्थ पकाने या पचाने का भाव। **आयु.** ग्रहण किए हुए आहार का पाचनतंत्र के अंगों द्वारा शरीर की कोशिकाओं में अवशोषण के योग्य बनाए जाने की क्रिया। digestion **पर्या.** हाज़मा।

पाचन ग्रंथि *स्त्री.(तत्.)* भोजन को पचाने वाले एन्ज़ाइम-युक्त स्राव उत्पन्न करने वाली ग्रंथियाँ। **जैसे:** लार या लाल ग्रंथियाँ, जठर ग्रंथियाँ, अग्न्याशय आदि। digestive fland (s) **दे.** पाचन'।

पाचन तंत्र *पुं.(तत्.)* मुँह से मलाशय तक फैला हुआ शरीर के अंदर के नलिकाओं, ग्रंथियों आदि का समूह जो भोजन को पचाने में तालमेल से काम करता है। **पर्या.** आहारतंत्र। digestive system

पाचन पथ *पुं.(तत्)* digestive track **दे.** आहार नाल।

पाजी *वि.(फा.)* 1. दुष्ट, चालाक, बदमाश, धूर्त। 2. नीच, स्वभाव का अधम।

पाजीपन *पुं. (फा.)* पाजी होने का भाव, दुष्टता, शरारत।

पाट *पुं.(तद्.*<पट) 1. जूट का बना फावड़ा। **जैसे:** रोम पाट पर अनगिनत जाटी। 2. जल का विस्तार (कपड़े की तरह का)। **जैसे:** नदी का पाट। 2. चक्की के ऊपर-नीचे के दो गोल पत्थर में से प्रत्येक (पाट) **उदा.** दो पाटन के बीच में साबुत बचा न कोय। (कबीर) 4. राजसिंहासन, गद्दी। **उदा.** इस संसार में बड़े-बड़ों का राजपाट गया, समय किसी का एक-सा नहीं रहता।

पाटना *प्रे.क्रि.* (तद्.<पाटन) 1. किसी गड्ढे नींव आदि को मिट्टी, पत्थर आदि से इतना भरना कि वह समतल हो जाए। 2. कमरे की दीवारों के ऊपर छत बनाना। **उदा.** उनके घर की छत पाट दी गयी। 3. ला.अर्थ (i) किसी स्थान में किसी वस्तु का बड़ा ढेर लगा देना। **जैसे**: इस समय कश्मीरी शलों व सेबों से बाजार पाट दिया गया है। (ii) चुकाना, **जैसे:** उसने अपना पुराना ऋण पाट दिया। **दे.** पटना।

पाटल *पुं.(तत्.)* **दे.** 'गुलाब'।

पाटा *स्त्री.(तद्.*<पट्ट) 1. बैठने का लकड़ी से बना पीढ़ा, आसन। **जैसे:** विवाह के समय वर और कन्या 'पाटा' पर बैठते हैं। 2. वह आयताकार

लकड़ी जिसकी सहायता से किसान जुते खेत की मिट्‌टी को समतल करता है। 3. राज मिस्त्री का वह उपकरण जिससे समतल पलस्तर किया जाता है। 4. पत्थर का वह टुकड़ा या लकड़ी का तख्ता जिस पर धोबी कपड़े धोता है।

पाठ *पुं.(तत्.)* पढ़ने से संबंधित काम। **जैसे:** काव्यपाठ। recition 1. पुस्तक का एक संख्याकित खंड lesson 2. धार्मिक ग्रंथ का नियमित पठन। 3. मूल विवेच्य विषय text 4. मूल का भाषांतरित रूप। **जैसे:** हिंदी पाठ version

पाठक *पुं.(तत्.)* पढ़ने वाला; पाठ करने वाला। **दे.** पाठ'।

पाठशाला *स्त्री. (तत्.)* बहुत से छात्रों के (विशेष रूप से प्राथमिक स्तर के बालकों के) साथ-साथ पढ़ने का स्थान या भवन। school **तु.** विद्‌यालय, महाविद्‌यालय।

पाठी *वि.(तत्.)* पढ़ने वाला (समस्तपद के उत्तर पद के रूप में); पाठ करने वाला। **जैसे**: 1. वेदपाठी-वेदपाठ करने वाला। 2. सहपाठी=साथ पढ़ने वाला।

पाठ्‌य पुस्तक *स्त्री.(तत्.)* वह विषयवार पुस्तक जो विद्‌यालय में छात्रों/विद्यार्थियों को नियमित रूप से पढ़ाई जाती है। text book

पाड़ा *पुं. (तद्<*पाटक) 1. नगर या गाँव का मुहल्ला, टोला। **जैसे**: जाटपाड़ा, धोबीपाड़ा आदि। 2. खेती की सीमा रेखा/हद। 3. *पुं.(देश.)* भैंस का नर बच्चा, पड़रा। *स्त्री.* पड़िया।

पात *पुं.(तत्.)* 1. पौधे की शाखा पर उगा हुआ हरा, चपटा, चौड़ा पतला भाग, (जिसका कार्य प्रकाश संश्लेषण और वाष्पोत्सर्जन है।) **पर्या.** पत्र**,** पर्ण, पत्ता।

पातक *पुं.(तत्.)* शा.अर्थ गिरा देने वाला या पतन का कारण बनने वाला कार्य। **पर्या.**पाप**,** गुनाह। **विलो.**पुण्य।

पातकी *वि./पुं.(तत्.)* पतन के मार्ग पर चलने वाला; पातक का दोषी। **पर्या.** पापी**,** पापाचारी, गुनहगार।

पाताल *पुं.(तत्.)* पृथ्वी के नीचे के सात लोकों में से सबसे नीचे का लोक (अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल, महातल, पाताल) **मुहा.** पाताल में होना-बहुत नीचे या गहराई में होना। **उदा.** यह कुआँ तो पातालतोड़ है।

पाती *वि. (तत्.)* जो गिरता/गिरती हो, गिरने वाला/वाली; गिराने वाला। *स्त्री.(पत्र)* 1. चिटठी, पत्री। 2. पत्ता, 3. मर्यादा, लज्जा, प्रतिष्ठा।

पात्र *पुं.(तत्.)* 1. बरतन जिसमें कुछ रखा जा सके। **जैसे**: जलपात्र। 2. योग्य, उपयुक्त (व्यक्ति)। **उदा.** वे सम्मान के पात्र हैं। 3. अभिनय करने वाला/वाली। **उदा.** इस नाटक में कुल छह पात्र हैं। actor 4. किसी कहानी-उपन्यास आदि में वर्णित व्यक्ति। charector

पात्रे निषेचन *पुं.(तत्.)* शा.अर्थ पात्र में निषेचन। **जीव.आयु.** निषेचन की क्रिया का मादा शरीर के अंदर न होकर किसी भी पात्र (**जैसे:** टेस्ट ट्‌यूब आदि) में कराया जाना। invitro fertilization **दे.** निषेचन', 'आंतरिक' एवं 'बाह्‌य निषेचन'।

पात्रेनिषेचन *पुं. (तत्.)* अंडाणु और शुक्राणु को गर्भाशय से बाहर किसी उपयुक्त माध्यम में कुछ समय तक रखकर कृत्रिम निषेचन करने का कार्य। invitro fertilization (IVF)

पाथेय *पुं.(तत्.)* यात्रा के दौरान यानी मार्ग (पथ) में साथ रखा जाने वाला भोज्य पदार्थ, मार्ग का भोजन। **उदा.** लंबी यात्रा करते समय सदा अपना पाथेय लेकर चलना चाहिए।

पाद[1] *पुं.(तत्.)* 1. पैर, चरण, पाँव। **जैसे:** विष्णुपाद, सतीपाद। 2. किसी ग्रंथ या किसी भी वस्तु का चतुर्थांश। **जैसे**: अष्टाध्यायी का पहला पाद। 3. पुराने समय में प्रचलित एक पैर की माप जो लगभग बारह अंगुल की होती थी। (लगभग 22 सेमी.) 4. श्लोक/पद्‌य का चौथाई भाग। श्लोक या पद्‌य में चार पाद होते हैं।

पाद[2] *पुं.(तद्.*<पर्द) 1. गुदा मार्ग से निकलने वाली पेट की बदबूदार हवा gas, अपानवायु, अधोवायु। **टि.** जब अधिक आवाज करती हुई यह अपानवायु निकलती है तो इसे 'पादना' या 'पाद निकालना' कहा जाता है जिसे सामाजिक रूप से अशिष्टता माना जाता है।

पादप *पुं.(तत्.)* शा.अर्थ पाद-पैरों से (यानी अपनी जड़ों से) +प-पीने वाला। **वन.**वह सजीव प्राणी (वस्तु) जो अपनी जड़ों से जल और पोषक तत्व ग्रहण करता है तथा अपनी पत्तियों में ही

प्रकाश-संश्लेषण द्वारा भोजन तैयार करता है। plant **टि.** पादप शब्द ही समस्त वनस्पति (पेड़-पौधे, लताएँ, जड़ी-बूटियों) का सूचक है।

पादप अवशिष्ट *वि./पुं.(तत्.)* पेड़-पौधों का बचा हुआ अनुपयोगी भाग। **दे.** अवशिष्ट'। plant residue

पादप जगत् *पुं.(तत्.)* वह जगत (समूह) जिसमें सभी प्रकार के पादप/पौधे सम्मिलित हैं। **पर्या.** वनस्पति जगत्। plant kindgom flora **तु.** प्राणिजगत/जंतुजगत।

पादप-पोषक *वि.(तत्.)* वनस्पति (पौधों) को पुष्ट करने वाले तत्व/पदार्थ। **जैसे**: जल, रासायनिक खाद, धूप आदि।

पादपालय (पादप+आलय) *पुं.(तत्.)* शा.अर्थ पादपों (पेड़-पौधों आदि) का घर/कक्ष/भवन। *दे.* हर्बेरियम।

पादरी *पुं.(पुर्त.*<पैद्रे) ईसाईयों का धर्मगुरू या पुरोहित जो ईसाईयों के संस्कार और अनुष्ठान आदि संपन्न कराता है। जो हर चर्च में नियुक्त होता है। **टि.** इनका सर्वोच्च धर्मगुरू 'पोप' कहलाता है।

पादाभ [पादप+आभ] (मध्यम पद लोप से निर्मित शब्द) *पुं.(तत्.)* एक कोशिक जीव जैसे अमीबा के मुख्य शरीर से बाहर की ओर उभरने वाला भाग, जो भोजन लेते समय बन जाता है तथा बाद में पूर्ववत् अवस्था में आ जाता है; एक प्रकार का प्रवर्ध।

पान[1] *पुं.(तत्.)* 1. किसी द्रव पदार्थ के पीने की क्रिया या भाव। **जैसे:** दुग्धपान। 2. पीने का तल पदार्थ, पेय द्रव्य। **जैसे**: पान इत्यादि की व्यवस्था भरपूर है।

पान[2] *पुं.(तद्.*<पर्ण) 1. पत्ता, 2. एक विशेष लता का पत्ता जिस पर कत्था, चूना लगाकर तथा उसमें सौंफ, सुपाड़ी, लौंग, इलाइची इत्यादि डालकर खाई जाती है। **पर्या.** नारावल्ली, तांबूल। 3. उक्त प्रकार से लगा हुआ पान का बीड़ा जिसे लौंग आदि से बंद कर तथा उस पर चाँदी/सोने का वर्क लिपटाया गया हो। **पर्या.** गिलौरी, बीड़ा। **टि.** यह शिष्टाचार की भेंट का प्रतीक माना जाता है। **उदा.** आदर सहित पान कर दीन्हो। (सूरसागर 10/829)

पानी *पुं.(तद्.*<पानीय) 1. वर्षा, नदी या पृथ्वी के अंदर से निकलने वाला द्रव जो पीने, नहाने, स्वच्छता आदि के काम आता है। 2. जीभ, आँख, घाव आदि से रिसने वाला तरल पदार्थ। ला.अर्थ (i) चमक, कांति, आभा। (ii) मान, प्रतिष्ठा। (iii) हथियारों की धार। 3. हाथ-करहुँ प्रनाम जोरि जुग पानी। (पाणि) **मुहा.** (i) पानी देना-सींचना (ii). तर्पण करना, पितरों को जल चढ़ाना। पानी में आग लगाना-असंभव को संभव करने का प्रयत्न करना।, शांत स्थिति में अशांति उत्पन्न करना। मुँह में पानी आना-किसी वस्तु का लोभ (लालच) होना। पानी उतरना/मरना-(i) कांतिहीन होना। (ii) सम्मान/प्रतिष्ठा खो देना। पानी उतारना-अपमानित/बेइज्जत करना। पानी माँगना-हार मान लेना। पानी तक न माँगना-तत्काल मृत्यु हो जाना। पानी-पानी होना/करना-लज्जित होना/करना। पानी पी-पीकर कोसना-लंबें समय तक (बीच-बीच में रूककर) कोसते रहना। पानी भरना-(अन्य के मूल्यवान कामों की तुलना में) निम्नसार में काम करना।

पाप *पुं.(तत्.)* 1. (लोक मान्यता के अनुसार) वे बुरे कर्म जिनका परिणाम बाद में भुगतना पड़े। **पर्या.** पातक। 2. ऐसे कर्मों का फल। **मुहा.** पाप उदय होना-पिछले जन्म के पापों का मिलना। पाप कटना-पाप का नाश होना, कोई झंझट समाप्त होना। **विलो.** पुण्य।

पाबंद *वि.(फा.)* नियम, समय आदि का पालन करने वाला। **जैसे:** समय का पाबंद।

पाबंदी *स्त्री.(फा.)* 1. नियम बद्‌धता की स्थिति। **जैसे**: समय की पाबंदी। 2. रूकावट, प्रतिबंध। **उदा.** गांधी जयंती के दिन शराब पीने पर पाबंदी होती है।

पायदान *पुं.(फ़ा.*>पाएदान) 1. बस, रेल आदि वाहनों में लगा तख्ता जिस पर यात्री पैर रखकर चढ़ते हैं। **जैसे**: कृपया पायदान पर यात्रा न करें। 2. घरों में प्रयुक्त पाँव साफ करने का कपड़ा या चौकोर कालीन जैसा टुकड़ा।

पायल *स्त्री. (तद्.*पादपाल) स्त्रियों के पैर में पहनने का चाँदी का एक आभूषण जिसमें छोटे घुंघरू

लगे होते हैं, पायजेब। **जैसे:** पायल की झंकार बहुत मीठी होती है।

पाया *पुं.(तद्.* पाद) 1. पलंग, चौकी, चारपाई आदि के किनारों पर लगे/जुड़े पैरों जैसे कलात्मक डंडे जिनके सहारे वह ढाँचा जमीन पर टिका रहता है।

पारंगत (पारम/गत) *वि.(तत्.)* व्यु.अर्थ पार गया हुआ। सा.अर्थ (व्यक्ति) जिसने किसी शास्त्र का गहन अध्ययन कर लिया हो, विद्वान।

पारंपरिक [परंपरा+इक] *वि.(तत्.)* परपंरा से चला आया हुआ। **दे.** परंपरा'।

पार *पुं.(तत्.)* किसी दृष्ट (दिखाई पड़ने वाली वस्तु) **जैसे:** नदी, तालाब, झील, समुद्र, भूमि, सीमा आदि का द्रष्टा (देखने वाला) किनारा। **जैसे:** नदी पार, सीमापार। **मुहा.** 1. पार उतरना-दूसरी ओर जाना। ला.अर्थ किसी कार्य का पूरी तरह संपन्न होना। 2. पार लगाना-दूसरी ओर पहुँचाना। ला.अर्थ कार्य समाप्त करने में मदद करना; उद्धार करना। 3. पार पाना-किसी को परास्त करना। ला.अर्थ परिश्रमपूर्वक काम पूरा करके सफल होना।

पारखी *वि.(तद्.)* परख या पहचान करने वाला, परखने की योग्यता रखने वाला। **जैसे:** रत्नों का पारखी।

पारगमन *पुं.(तत्.)* पार जाने का कार्य, पार जाना। **परि.** गंतव्य तक पहुँचने के लिए बीच के किसी स्थान को पार करना। transit **भौ.** ऊर्जा का किसी माध्यम में प्रवेश कर दूसरी ओर निकल आना। transmission

पारगम्यता *स्त्री.(तत्)* जिसमें से किसी तरल, गैस आदि पदार्थ के छनकर निकलने की क्षमता हो। permeability, permeable

पारण [पार+न] *पुं.(तत्.)* किसी प्रस्ताव या विधेयक के प्रारूप का संस्था के सदस्यों द्वारा चर्चा के बाद स्वीकृत कर लेने की प्रक्रिया। passing

पारदर्शक *वि. (तत्.)* **भौ.** (वह पदार्थ) जिसके बीच में होने पर भी आर-पार की वस्तुएँ स्पष्ट देखी जा सकती है। **जैसे**: काँच transparent

पारदर्शी *वि.(तत्.)* शा.अर्थ पार की वस्तु दिखलाने वाला। तक.अर्थ फिल्म का वह टुकड़ा जिस पर अंकित चित्र या लिखित अंश को प्रकाश के माध्यम से पर्दे पर प्रक्षेपित किए जाने पर बड़े आकार में देखा या पढ़ा जा सकता है। transparency

पारपत्र *पुं.(तत्.)* शा.अर्थ पार करने/पार जाने का पत्र, देश की सीमा को पार करने का अनुमति पत्र। **राज.** केंद्र सरकार द्वारा अपने देश के नागरिकों को मांगने पर जारी किया जाने वाला पहचान-पत्र जो उसे विदेश यात्रा पर जाने और वहाँ से लौटने की अनुमति प्रदान करता है। passport

पारस *पुं. (तद्*<स्पर्श) वह काला पत्थर जिसके बारे में माना जाता है कि उसके स्पर्श मात्र से लोहा सोना बन जाता है।, पारसमणि philosphers stone **उदा.** पारस परिस कुधातु सुहाई। (तुलसी-रामचरित मानस)

पारसी *वि.(देश.)* 1. मूलत: फारस से निकले और पीढ़ियों पूर्व भारत में आकर बसे निवासी, जो पारसी धर्म को मानते हैं तथा अग्निपूजा में विश्वास रखते हैं; महात्मा जरथुस्र के अनुयायी। 2. पारस देश से संबंधित।

पारावार [पार+अवार] *पुं.(तत्.)* इधर का किनारा और उधर का भी, दोनों किनारे, दोनों तट (पास का और दूर का भी)। **उदा.**-ईश्वर की महिमा का पारावार नहीं।

पारिजात *पुं.(तत्.)* पुराणानुसार समुद्र मंथन से प्राप्त चौदह रत्नों में वृक्ष रूप एक रत्न जो इंद्र के स्वामित्व में आया और नंदन वन में रोपा गया।

पारितंत्र *पुं.(तत्.)* परितंत्र से संबंधित सारी वस्तुएँ और स्थितियाँ। **जीव.** किसी क्षेत्र या स्थान विशेष के जीवों और उसके भौतिक पर्यावरण की मिली-जुली इकाई।

पारित [पारण+इत] *वि.(तत्.)* **विधि.**वह प्रस्ताव या विधेयक जो विधिपूर्वक किसी संस्था द्वारा स्वीकृत कर लिया गया हो। passed

पारितोषिक [परितोष+इक] *पुं.(तत्.)* 1. किसी को उसके उल्लेखनीय कार्य, गुण आदि के लिए प्रसन्नतापूर्वक दिया जाने वाला इनाम। **पर्या.**पुरस्कार prize, reward। **उदा.** आज विद्यालय में मंडलीयस्तर की अंत्याक्षरी

प्रतियोगिता के विजयी छात्रों को पारितोषिक रूप में नकद पुरस्कार और पुस्तकें दी गई।

पारिश्रमिक [परिश्रम+इक] *पुं.(तत्.)* मुख्यत: शारीरिक और गौणत: बौद्धिक परिश्रम के काम के बदले में मिलने वाला धन। (जो फुटकर काम के लिए हो सकता है और नियमित काम के लिए भी) **पर्या.** मजदूरी, मेहनताना। wages, remuneration **तु.** वेतन, मानदेय।

पारिस्थितिकी [परिस्थिति+इक+ई] *स्त्री.(तत्.)* जीव विज्ञान की शाखा जिसमें जीव की अपने परिवेश के सजीव और निर्जीव घटकों के साथ होने वाली अन्योन्य (परस्पर) क्रिया का अध्ययन किया जाता है। **पर्या.** परिस्थिति विज्ञान। ecology

पारिस्थितिकीविद् *पुं.(तत्.)* पारिस्थितिकी का विशेषज्ञ/विद्वान। ecologist **दे.** पारिस्थितिका'।

पार्टी-चिह्न *पुं. (अं.तत्.)* किसी भी राजनीतिक दल का वह दृश्य प्रतीक (जो चित्र के रूप में होता है।) जिसे देखकर अनपढ़ लोग भी जिस दल के उम्मीदवार को वोट देना है उसे पहचान सकें। **जैसे:** हाथ का पंजा (कांग्रेस), कमल (भाजपा), हाथी(बसपा) इत्यादि।

पार्श्व *पुं.(तत्.)* किसी स्थूल वस्तु का दिखाई पड़ने वाला कोई भी किनारा, बगल, पास की जगह। **जैसे**: पार्श्वभाग, पार्श्वचित्र; पार्श्वगायक।

पार्श्वगायक (गायिका) *पुं./स्त्री.(तत्.)* फिल्म में नायक/नायिका के दृश्य-श्रव्य गाने को पर्दे के पीछे से गाने वाला/वाली; नायक/नायिका आदि को गला उधार देने वाला/वाली गायक/गायिका। playback singer

पार्श्विक *वि.(पुं.)* शा.अर्थ किनारे वाला। **व्या.** प्रयत्न के आधार पर वर्गीकृत वह व्यंजन जिसके उच्चारण में जिह्वा का मध्य भाग तो हवा को रोकता है लेकिन हवा जीभ के दोनों पार्श्वभागों से बराबर निकलती है। **उदा.** ल/व्यंजन। lateral consonant

पार्षद *पुं.(तत्.)* शा.अर्थ परिषद् का सदस्य। **तक.अर्थ-**नगरपालिका या नगर निगम का निर्वाचित सदस्य। councier **दे.** परिषद्'।

पाल *पुं.(देश.)* 1. नाव के मस्तूल के सहारे तना वह गाढ़ा कपड़ा जो हवा के बहने की दिशा में नाव को खेता है। **जैसे:** पालदार नौका। 2. ट्रक या गाड़ी में भरे माल को ढकने का कपड़ा। **उदा.** बरसात होने के कारण घर के आंगन में पाल बांध दिया गया है। 3. फलों को पकाने की पारंपरिक प्रक्रिया जिसमें कच्चे फलों को पत्तों या घास से ढककर रखा जाता है। **जैसे:** आम को पाल में लगाना। 4. (प्रत्यय) पालन करने वाला, नियंत्रण या रक्षा करने वाला। **जैसे:** राज्यपाल, डाकपाल, लेखापाल, द्वार पाल आदि।

पालकी *स्त्री. (तद्.*<पल्यंक) लकड़ी का बना वाहन जिसमें रानियों, नव-वधुओं, यात्रियों आदि के लिए बैठने का स्थान होता है और जिसे कहार कंधे पर उठाकर एक जगह से दूसरी जगह ले जाते हैं। **पर्या.** डोली, शिविका।

पालतू *वि.* (*तद्.*<पालित) पाला जाने वाला, पाला गया। घरेलू उपयोग में लाने के लिए (या शोभा के लिए भी) पाले जाने वाले (पशु या पक्षी)

पालथी *स्त्री.* (*तद्.*<पर्यस्ति) बैठने का एक प्रकार जिसमें दोनों पैरों को घुटने से मोड़कर दाँए और बाँए पंजों को क्रमश: बाईं और दाईं जाँघ के नीचे दबे रखते हैं यानी पालथी मारना। **उदा.** 'योग' पर भाषण सुनने हेतु सभी छात्र मैदान में पालथी मारकर बैठे हुए थे।

पालन-पोषण *पुं.(तत्.)* 1. किसी को (नहला-धुलाकर, खिलाना-पिलाना आदि के रूप में) पालना-पोसना, भरण-पोषण। 2. लालन-पालन। **जैसे:** उसने एक अनाथ बच्चे का पालन-पोषण कर उसे शिक्षित बना दिया।

पालना *पुं. (तद्.*<*पल्यंक)* 1. (चल न सकने वाले) शिशुओं को झुलाकर सुलाने के काम आने वाला लटकता छोटे आकार का पलंगनुमा उपकरण। 2. *स.क्रि.* (तत्.<पालन) दैनिक मूल आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए अपने या पराए मनुष्य अथवा पशु को जीवित रहने में सहायता करना, भरण-पोषण करना, आश्रय में लेना।

पाला *पुं. (तद्.*<प्रालेय) बादलों में रहने वाले जल-कण जो अत्यधिक सरदी के कारण पेड़-पौधों, फसलों पर पतली तह के रूप में फैल जाते हैं और उन्हें हानि पहुँचाते हैं। **मुहा.** पाला पड़ना-नष्ट हो जाना। मेरी आशाओं पर पाला पड़ गया। **पर्या.** तुषारापात (तुषार=पाला-पात) 2. व्यवहार सूचक संबंध, बरताव **उदा.** अभी तक तुम्हारा

उससे पाला नहीं पड़ा है, पड़ेगा तब समझोगे। *पुं. (देश.)* दो प्रतियोगी पक्षों के खेल में किसी का भी खेल-क्षेत्र; पक्ष। **जैसे**: कबड्डी का पाला।

पालि *स्त्री.(तत्.)* 1. एक प्राचीन भाषा जो संस्कृत और प्राकृत के बीच की मानी जाती है तथा जिसमें अधिकतर बौद्ध ग्रंथ लिखे गए हैं। **पर्या.** पाली भाषा। 2. **आयु.** किसी अंग का लंबा गोल-सा प्रवर्ध। **जैसे:** कर्णपालि lobe

पाली/पारी *स्त्री.* (*तद्.*<पालि) 1. प्राचीन काल की एक भारतीय भाषा जो संस्कृत से निकली थी। गौतमबुद्ध के उपदेश इसी भाषा में हैं। **दे.** पालि। 2. *स्त्री. [देश.*<पारी] कारखानों, कार्यालयों आदि में काम करने की कुछ घंटों की अवधि। shift 3. पारी-क्रिकेट के खेल का एक भाग। innings

पाव *पुं.(देश.)* एक प्रकार का खाद्य पदार्थ जिसे ओवन में पकाया जाता है। **पर्या.** पावरोटी। (ब्रेड)

पाव *वि./पुं.* [*तद्*<पाद] 1. किसी वस्तु का चौथाई भाग। 2. एक सेर का एक चौथाई भाग। (नाप) 3. एक किलो का चौथाई भाग 250 ग्राम। **जैसे:** वह बालक पाव भर दूध रोज पीता है।

पावक *(तत्.) पुं.* अग्नि, **उदा.** काह न पावक जारि सक (तुलसी-रामचरितमानस) (अग्नि किसको नहीं जला सकती) **वि.** पवित्र करने वाला। **जैसे**: जल जो संध्यावंदन से पहले स्थानपावक के रूप में यत्र-तत्र छिडका जाता है।

पावन *वि.(तत्.)* पवित्र करने वाला; पवित्र, शुद्ध। **उदा.** 1. अब उनका पावन-चरित्र सुनिए। 2. पावन जल, पावनपर्व। **विलो.** अपावन।

पावभाजी *स्त्री. (देश.)* वह खाद्य पदार्थ जिसमें सब्जी के साथ खाने के लिए पावरोटी मिलती है।

पाश *पुं.(तत्.)* बाँधने के काम आने वाली रस्सी, जंजीर या बेड़ी, जाल आदि। **पर्या.** फॉस। **जैसे**: बाहुपाश, स्नेहपाश, मायापाश आदि।

पाशविकता [पाश्विक+ता] *स्त्री.(तत्.)* (हिसंक), पशुओं जैसा व्यवहार।

पाश्चात्य *वि.(तत्.)* पश्चिम दिशा से संबंधित; पश्चिमी देशों से संबंधित (यूरोप आदि देशों का) **जैसे:** पाश्चात्य संस्कृति, पाश्चात्य सभ्यता। **विलो.** पौर्वात्य**,** पौरस्त्य (अव्याकरणिक प्रयोग जो प्रचलन में है।)

पाश्विक (पाशव<पशु+इक) *वि.(तत्.)* पशुओं/जानवरों जैसा, हिंसक। ला.अर्थ. निर्मम।

पाषाणयुग *पुं.(तत्) वह* प्रागैतिहासिक काल जब आदि मानव पत्थरों से निर्मित औजारों का उपयोग करता था। (स्टोन एज) **उदा.** पुरातत्त्वविद् मानव सभ्यता के विकास में पाषाणयुगीन संस्कृति की चर्चा करते हैं।

पाषाणहृदय *वि.(तत्.)* पत्थर की तरह कठोर हृदय वाला। **पर्या.** पत्थरदिल**,** निर्दयी, कठोर, क्रूर। **उदा.** वह पाषाण हृदय व्यक्ति है, उसे किसी की दैन्य दशा पर तरस नहीं आता। **विलो.** कोमल हृदय।

पास *पुं.(अं.)* 1. कहीं जाने की लिखित अनुमति, जैसे-किसी रेलयात्रा के लिए पास। 2. किसी विशेष कार्यक्रम में प्रवेश के लिए अधिकार पत्र या आज्ञापत्र।

पास होना *अ.क्रि. [अं.+तद्.]* 1. लेखा कार्यालय में वेतन, अवकाश, मेडिकल आदि बिलों का पारित या स्वीकृत होना। या संसद, विधानसभा आदि में कोई राजनैतिक या सामाजिक कानून पारित होना। 2. किसी कक्षा में उत्तीर्ण होना। **जैसे:** वह शास्त्री पास है। 3. किसी वस्तु, व्यक्ति, वाहन आदि का समीप से निकल जाना। **जैसे:** उस स्टेशन से कालका मेल पास हो गई। Pass

पास[1] क्रि.वि. *(तद्.*<पार्श्व) 1. नजदीक, निकट, समीप। **जैसे:** बालक माँ के पास गया। 2. अधिकार/कब्जे में। **जैसे**: उसके पास पचास बीघा खेत हैं।

पास[2] *क्रि.वि.* (*तद्.*<पार्श्व) 1. निकट, नज़दीक। **जैसे:** मेरे पास आओ। 2. अधिकार में। **जैसे:** वह पुस्तक मेरे पास है। *पुं.* 1. निकटता, **जैसे:** पास के मकान में जाओ ओर.......। 2. अधिकार, **जैसे:** अपने पास की पुस्तक दे रहा हूँ।

पास[3] *पुं. (तद्.*<पाश) पाश, बंधन, जाल, फंदा आदि। **जैसे:** नागपाश, मोहपाश। **टि.** बोलियों में प्रयुक्त शब्द।

पास[4] *पुं.(अं.)* 1. कहीं जाने की अनुमति पत्र। 2. रेल आदि का वह अधिकारपत्र या आज्ञा-पत्र जिसे दिखाकर बेरोक-टोक यात्रा की जा सकती है। **जैसे:** रेलपास, बसपास। *वि.* 1. पारित-संसद में

वह विधेयक पास हो गया। 2. उत्तीर्ण-वह एम.ए. पास युवक है।

पासा *पुं. (तद्.*<पाशक) चौसर आदि खेलों में फेंका जाने वाला लकड़ी, हाथीदांत, प्लास्टिक आदि का टुकड़ा जिस पर एक से छह बिंदियाँ बनी होती हैं। dice **मुहा.** 1. पासा पलटना-भाग्य का पलटना। 2. पासा-सीधा पड़ना-भाग्य खुलना, जीत जाना। 3. पासा उलटा पड़ना-भाग्य उलट जाना, हार जाना। 4. पासा फेंकना-भाग्य की परीक्षा करना।

पास्तेरीकरण *पुं.* (*संक* पास्तर+करण) **रसा.**-लुई पास्तेर द्वारा विकसित दूध आदि भोज्य पदार्थों को रोगाणू रहित करने की विधि। pasteurization

पाहुना *पुं.* (*देश.*) घर में आने वाला मेहमान या अतिथि, जिसका स्वागत अपेक्षित होता है। **उदा.** हमारे घर पाहुने पधारे।

पाहुनी *स्त्री. (देश.)* 1. अतिथि स्त्री। 2. मेहमानदारी, अतिथि सत्कार।

पिंजड़ा/पिंजरा *पुं. (तद्.*<पंजर) सा.अर्थ धातु, बाँस की तीली आदि का बना हुआ ऐसा छोटा/बड़ा कटघरा जिसमें पशु-पक्षी पाले जाते हैं। ला.अर्थ ऐसा स्थान जहाँ से बाहर निकलना कठिन हो।

पिंजरबद्ध [पिंजर+बद्ध] *वि.(तत्.)* पिंजरे में बंधा हुआ या बंद। **दे.** पिंजड़ा, पिंजरा।

पिंड *पुं.(तत्.)* 1. किसी ठोस वस्तु का प्राय: गोलाकार खंड या टुकड़ा। **जैसे**: गुड़, धातु या मिट्टी का पिंड। 2. **धर्म.** जौ के आटे, भात आदि का वह गोलाकार खंड जो श्राद्ध के समय पित्तरों को चढ़ाया जाता है। **मुहा.** (i) पिंड देना-श्राद्ध करना। (ii) पिंड छुडाना-परेशान करने वाले से किसी तरह बचना।

पिंडज *वि./पुं. (तत्.)* पिंड के रूप में जन्मने वाला प्राणी **दे. पर्या.**जरायुज।

पिउ[1] *पुं.(अनु.)* पपीहे के बोलने का मधुर शब्द। **जैसे:** पिऊ-पिऊ पपीहा बोले।

पिउ[2] *पुं. (तद्.*<प्रिय) पति, **जैसे:** पिउ बसत परदेश। **टि.** सामान्यत: कविता में प्रयुक्त शब्द।

पिकनिक *पुं.(अं.)* 1. लोगों का मनोरंजन व मौज मस्ती के लिए घर से बाहर किसी सुंदर स्थान, नदी तट, समुद्रतट या जंगल में जाना तथा वहाँ मनचाहा भोजन तथा अन्य पदार्थों का आनंद लेना। 2. मौजमस्ती का कार्यक्रम (संगीत/खेलकूद आदि) **उदा.** आज हमारी कक्षा के छात्र पिकनिक मनाने गए हैं। Picnic

पिघलना *अ.क्रि. (तद्*<विगलन) सा.अर्थ ताप पाकर किसी ठोस पदार्थ का द्रव रूप में परिवर्तित होना। **जैसे:** घी या मोम का पिघलना। ला.अर्थ दया या करूणावश मन का द्रवित होना। **उदा:** संत बहुत जल्दी पिघल जाते हैं।

पिघलाना *स.क्रि.* सा.अर्थ ताप देकर किसी ठोस पदार्थ को तरल बनाना। ला.अर्थ दया से मन गीला करना।

पिचकारी *स्त्री.(देश.)* पिस्टन और चंतु/तुंड से युक्त अथवा सुई लगी शीशे या प्लास्टिक की गोलाकार नलिकावाला उपकरण जो किसी द्रव पदार्थ (जैसे दवा) को पहले दूसरे पात्र से अपने अंदर खींचकर और फिर बाहर या रोगी की शिराओं में पहुँचाता है। syringe

पिछड़ापन [पिछड़ा+पन] *पुं. (तद्.)* किसी व्यक्ति अथवा समूह की सामाजिक, आर्थिक अथवा शैक्षिक आदि क्षेत्रों में उन्नत वर्ग की तुलना में पीछे रह जाने की स्थिति। back wardness

पिछलग्गू *वि. (देश.)* शा.अर्थ पीछे लगा हुआ। सा.अर्थ अपनी विवेक बुद्धि का उपयोग किए बिना किसी का अनुसरण करने वाला (व्यक्ति) **पर्या.** अंधाभक्त।

पिछला *वि.* (<पीछे) 1. जो पीछे की ओर हो; 2. जो पुराना या बीते समय का हो। **पर्या.** पश्चाद्वर्ती। **विलो.** अगला; आगे की, आगे होने वाली। *(स्त्री.* पिछली)

पिछाड़ी *स्त्री.(तद्.)* पीछे का भाग। **विलो.** अगाड़ी।

पिटारी *स्त्री. (तद्.*<पिटक) पिटारा का स्त्री रूप लकड़ी, बाँस आदि की बनी छोटी टोकरी जिसमें ढक्कन लगा होता है।

पिता *पुं. (तत्.)* जन्म देने वाला (नर)। **पर्या.** जनक, बाप। **विलो.** माता।

पितामह *पुं.(तत्.)* 1. पिता के पिता, दादाजी। 2. ब्रह्मा, भीष्म आदि के लिए प्रयुक्त संबोधन।

पितामही *स्त्री.(तत्.)* पिता की माता, दादी।

पितृ *पुं.(तत्.)* समास में प्रयोग करने हेतु 'पिता' शब्द का रूप। **जैसे**: पितृधन=पिता का धन।

पितृभक्त *वि.(तत्.)* पिता की सेवा करने तथा उनकी सभी बातों को आज्ञा के रूप में स्वीकार करने वाला।

पितृभक्ति *स्त्री.(तत्.)* पुत्र द्वारा पिता की सेवा करने तथा उनकी सभी बातों को आज्ञा के रूप में स्वीकार करने की स्थिति।

पित्त *पुं.(तत्.)* यकृत से निकलने वाला पीले-हरे रंग का गाढ़ा क्षारीय द्रव जो पित्तवाहिनी से पित्ताशय तथा ग्रहणी में पहुँचता है और पाचन में सहायक होता है। bile

पित्ताशय [पित्त+आशय] *पुं.(तत्.)* शा.अर्थ पित्त के संचय का स्थान; पित्त की थैली। **आयु.** यकृत के दाएं खंड की निचली सतह पर स्थित नाशपाती के आकार की एक थैली जो यकृत से आने वाले पित्त (बाइल) को तब तक थामे रहती है जब तक कि वह सिस्टिक नली द्वारा इयूज्निम में नहीं पहुँच जाता। gall-bladder

पिनकोड *पुं.(अं.)* अंग्रेजी पदबंध 'पोस्टल इंडेक्स नंबर' की आद्यक्षरी संक्षिप्ति का उच्चरित रूप PIN **टि.** देश के संपूर्ण क्षेत्र को एक निश्चित भौगोलिक आधार पर विभाजित कर प्रत्येक भाग को आबंटित एक विशिष्ट क्रमांक। पिन में छह अंक होते हैं जिसमें पहला अंक देश के बडे भाग को सूचित करता है, अगले दो अंक उसी भाग के एक छोटे भाग को तथा शेष तीन अंक उस छोटे भाग के भी छोटे टुकड़ों के लिए प्रयुक्त होते हैं। इसीलिए प्राय: पिनकोड के अंकों को तीन-तीन के समूह में लिखा जाता है। पिनकोड के कारण पत्र पहुँचाने में सुविधा होती है।

पिया *पुं. (*तद्.) नारी का प्रिय यानी स्वामी या पति। **पर्या.** पति, प्रियतम।

पिलना *अ.क्रि.(तत्.)* तत्परता के साथ किसी कार्य में जोश के साथ जुट जाना। **उदा.** पिल पड़ना।

पिसना *अ.क्रि.[तद्<*पेषण] 1. पीसा जाना, चूर्ण या चटनी बन जाना। 2. कुचला जाना। 3. कष्ट में पड़ना। **मुहा.** दो पाटों के बीच पिसना-दो के झगड़े में तीसरे को कष्ट पहुँचना।

पिस्तौल *स्त्री.(अं.)* गोली दागने का वह छोटा उपकरण जिसे सुविधापूर्वक पास में रखकर या लेकर जाया जा सकता है। तमंचा। **तु.** revolver।

पी.वी.सी. *(अं.*) पॉलिविनाइल क्लोराइड का आद्यक्षरी संक्षिप्त नाम। **रसा.** विनाइल क्लोराइड का एक दृढ़ पारदर्शी ठोस बहुलक (पॉलिमर) जिसका उपयोग अनेक प्रकार के उत्पादों जैसे पाइप बनाने, फ़र्श तैयार करने, आदि में किया जाता है। PVC

पीठ *स्त्री. (तद्.*<पृष्ठ) 1. आयु. छाती और पेट के पीछे की ओर दिखने वाला शरीर का अंग। (कंधे से कमर तक का चौड़ा भाग) **मुहा.** पीठ ठोकना-शाबाशी देना, सराहना करना। पीठ दिखाना/फेरना/करना (i) मुँह फेर लेना, आनाकानी करना। (ii) हार मान लेना, भाग जाना। पीठ लगाना=आराम करना। 2. शिक्षा विधि (i) आसन, पवित्र स्थान। chair **जैसे:** व्यासपीठ, राजपीठ, पीठासीन, अधिकारी। (ii) आसन (बैंच) **जैसे:** न्यायपीठ।

पीड़क/(पीडक) *वि./पुं.(तत्.)* शा.अर्थ पीड़ा पहुँचाने वाला। **रसा.** ऐसे जीव जो पादन, प्राणी या अन्य मानवीय संसाधनों की गुणवत्ता या मूल्य में कमी लाते हैं। Pest

पीड़कनाशी/पीडकनाशी *वि./पुं.(तत्.)* वह रासायनिक पदार्थ जो पीड़कों को मारता है। Pesticide

पीड़ा *स्त्री. (तत्.*<पीड़ा) शारीरिक अथवा मानसिक कष्ट/दर्द/वेदना/तकलीफ; रोग, व्याधि, बीमारी। **उदा.** (1) मेरे शरीर में बहुत पीड़ा हो रही है। (2) अपनी पीड़ा का निदान तो कराइए कि कौन-सी बीमारी है।

पीत *वि.(तत्.)* पीला, पीले रंग का।

पीतक *पुं.(तत्.)* अंडे के मध्य भाग में पाया जाने वाला पीला हिस्सा जिसमें प्रोटीन और वसा कणिकाएँ होती हैं। Yolk

पीतल *पुं.* (*तद्.*<पित्तल) ताँबे और जस्ते के मेल से बनी पीले रंग की एक मिश्रधातु जिससे बरतन, मूर्तियाँ आदि बनाए जाते हैं। brass

पीयूष ग्रंथि *स्त्री.(तत्.)* प्राणि.-मस्तिष्क के मूल (बेस) में स्थित अंत:स्रावी ग्रंथि जो वृद् धि और विकास (ग्रोथ और विकास) को नियंत्रित करती है। pituitary gland

पीलिया *[पील*<पीला+इया] *पुं.(तद्.)* **प्राणि./आयु.** त्वचा, आँखों, श्लेष्मा-कलाओं तथा मूत्र का पीले

रंग का हो जाना जो रुधिर में पित्तघटक (बिलुरूबिन वर्णक) की मात्रा अधिक हो जाने से होता है। यह अनेक रोगों का लक्षण है। **पर्या.** कामला, पांडुरोग/icterus, jaundice

पुंगी *पुं.* [*तद्.*(<पूंगी] 1. सुपारी। 2. अनुरणनात्मक शब्द जिससे पूं-पूं जैसी आवाज़ निकलती है और जिसे प्राय: पेड़ के दो पत्तों या दो ठीकरियों को मिलाकर बाजा बनाते है जो छोटे ग्रामीण बच्चे बजाते हैं। पु. (तत्.) एक पौराणिक शासक (प्रजापति) जिनकी पुत्री सती का शिवाजी से विवाह हुआ था।

पुआल *पुं.(तद्.*<पलाल) चावल, कोदों आदि के डंठल, जिसमें से दाने अलग कर दिए गए हों। **टि.** पुआल झोंपड़ी के छाने और जानवरों को खिलाने के काम आता है।

पुकार *स्त्री.* (*हि.*<पुकारना) 1. किसी का नाम लेकर ऊँची तेज़ आवाज़ में उसे बुलाने का भाव। 2. सहायता के लिए दीन स्वर में लगाई गई आवाज़। 3. अदालत में पेश होने के लिए चपरासी द्वारा ऊँची आवाज़ में वादी/प्रतिवादी को बुलाना।

पुच्छलतारा *पुं.* शा.अर्थ पूँछवाला तारा। **दे.** धूमकेतु।

पुजारी [पूजा+आरी प्रत्यय**]** *पुं.(तद्.)* शा.अर्थ *वि.* पूजा करने वाला; *पुं.* मंदिरों में देवमूर्तियों की पूजाविधि संपन्न करने वाला व्यक्ति। ला.अर्थ किसी विशेष वस्तु को जीवन का लक्ष्य बनाकर उसे प्राप्त करते रहने वाला व्यक्ति। **जैसे:** लक्ष्मी का पुजारी, रूप का पुजारी।

पुण्य *पुं.(तत्.)* 1. धार्मिक दृष्टि से शुभ फल देने वाला कार्य। 2. ऐसे शुभ कार्य का फल। 3. परोपकार आदि कार्य। *वि.(तत्.)* पवित्र, शुभ।

पुतला *पुं.* (*तद्.*पुत्तल) लकड़ी, घास, कपड़े, मिट्टी आदि से बनी किसी भी प्राणी की आकृति। **मुहा.** पुतला जलाना-किसी के प्रति घृणा प्रकट करने तथा उसे अपमानित करने के लिए उसका पुतला बनाकर जलाना।

पुतली *स्त्री.* (*तद्.*<पुत्तलिका) 1. मुख्यत: काठ से (और मिट्टी अथवा धातु से भी) गढ़ी गई कोई भी प्रतिमूर्ति। 2. **प्राणि.** आँख का गोल छिद्र जिससे होकर प्रकाश गुजरता है। Pupil

पुताई *स्त्री. [हिं. पोतना+आई-प्रत्य.]* 1. दीवार पर चमक लाने के लिए चूने रंग या चिकनी मिट्टी की परत चढ़ाने की क्रिया। **तु.** लिपाई 2. इस कार्य के लिए चुकाई जाने वाली मज़दूरी।

पुत्रेष्टि यज्ञ [पुत्रेष्टि=पुत्र+इष्टि] *पुं.(तत्.)* पुत्र प्राप्ति की इच्छा रख कर किया जाने वाला यज्ञ विशेष। **उदा.** महाराजा दशरथ ने संतान प्राप्ति की इच्छा से पुत्रेष्टि यज्ञ किया।

पुन: *अ.(तत्.)* फिर से, दूसरी बार, दोबारा। (पुन:-पुन: - बार-बार)

पुन:चक्रण/पुनश्चक्रण *पुं.(तत्.)* उपयोग या घरेलू कामकाज में बेकार हो गए पदार्थों को (जैसे कागज़, कूड़े, कांच के टुकड़ों आदि को) संसाधित कर फिर से किसी-न-किसी रूप में उपयोगी बना लेने की पद्धति। recycling

पुनरवलोकन [पुन<पुन:+अवलोकन] *पुं.(तत्.)* फिर से देखना। **पर्या.** पुनरीक्षण। **टि.** पुनरावलोकन अशुद्ध रूप है।

पुनराकलन [पुन<पुन:+आकलन] *पुं.(तत्.)* फिर से आकलन करना, पुन: गिनना, फिर से जाँचना।

पुनरागमन (पुन<पुन:+आगमन) *पुं.(तत्.)* 1. फिर से आना, दोबारा आना।, 2. पुन: जन्म ले लेना।

पुनरावृत्ति *[पुन<*पुन:+आवृत्ति] *स्त्री.(तत्.)* 1. कही हुई बात को दोहराना या फिर से कहना। 2. किए हुए कार्य को फिर करना; दोबारा पढ़ना।

पुनरीक्षण (पुनद्<पुन:+ईक्षण) *पुं.(तत्.)* फिर से देखना, देखे हुए या किए हुए काम फिर से देखना या जाँचना।

पुनरूक्ति [पुन<पुन:+उक्ति] *स्त्री.(तत्.)* एक बार कही हुई बात को पुन: कहना; दोबारा कही हुई बात। repetition

पुनरूद्‌भवन *पुं.(तत्.)* **दे.** पुनर्जनन'।

पुनर्गठन [पुनद्<पुन:+गठन] *पुं.(तत्)* दोबारा किया जाने वाला गठन। *दे.* गठन। reorganisation

पुनर्जनन *पुं.(तत्.)* शा.अर्थ फिर से पैदा होना (या बढ़ना) **वन.** *किसी* जीव (प्राणी या पादप) द्वारा अपने नष्ट अथवा चोटग्रस्त ऊतकों तथा अंगों का पुनर्निर्माण। **पर्या.** पुनरूद्‌भवन। regeneration

पुनर्जागरण [पुनर<पुन:+जागरण] *पुं.(तत्.)* शा.अर्थ फिर से जगना/जगाना। **इति.** यूरोप के इतिहास में 14वीं शताब्दी से 16वीं शताब्दी तक का

समय जब कला, विद्या, उद्योग आदि में क्रांति आई थी। **पर्या.** पुनरूत्थान, नवजागरण renaissance **टि.** इस युग के पश्चात आधुनिक युग का प्रारंभ माना जाता है।

पुनर्निधारण [पुनद्<पुन:+निर्धारण] *पुं.(तत्.)* फिर से निर्धारित करना, फिर से तय करना, पुन: निश्चित करना। **जैसे:** वर का पुनर्निधारण।

पुनर्भाव [पुनर्<पुन:+भाव] *पुं.(तत्.)* दुबारा होने का भाव। **पर्या.** पुनर्जन्म।

पुनर्लेखन [पुनद्<पुन:+लेखन] *पुं.(तत्.)* शा.अर्थ दोबारा किया जाने वाला लेखन। सा.अर्थ त्रुटियों को सुधारकर किया गया फिर से लेखन। **तु.** नकल।

पुनर्वनरोपण [पुनर्<पुन:+वन+रोपण] *पुं.(तत्.)* काटे गए जंगल के स्थान पर नए वृक्ष लगाने की क्रिया।

पुनर्वास [पुन<पुन:+वास] *पुं.(तत्.)* शा.अर्थ फिर से बसाना। सा.अर्थ (1) एक स्थान से उजड़े हुए जन-समुदाय को अन्यत्र बसने के लिए आवश्यक सुविधा प्रदान करना। (2) **आयु.** शारीरिक अंगों की कार्यक्षमता के शिथिल हो जाने पर प्रशिक्षण देकर और/अथवा उपचार कर उन्हें फिर से कार्यक्षम बनाने की पद्धति ताकि रोगी पुन: स्वस्थ होकर सामान्य जीवन जा सके। rehabilitation **पर्या.** पुनर्स्थापन।

पुनर्विचार [पुनर<पुन:+विचार] *पुं.(तत्.)* किसी बात पर फिर से विचार करना।

पुनर्विवाह [पुनद्<पुन:+विवाह] *पुं.(तत्.)* शा.अर्थ फिर से किया गया विवाह। सा. अर्थ-पति की मृत्यु के बाद पत्नी द्वारा और पत्नी की मृत्यु के बाद पति द्वारा फिर से किया गया विवाह।

पुनर्स्थापन [पुनर्<पुन:+स्थापन] *पुं.(तत्.)* शा.अर्थ फिर से स्थापित करना। जो जनसमुदाय या शरीर का अंग विस्थापित हो गया हो उसे पुन: (अन्यत्र वहीं) बसाना या बिठाना। reinstate **दे.** पुनर्वास।

पुनर्स्थापित *[पुनर्*<पुन:+स्थापित] *वि.(तत्.)* दुबारा स्थापित किया हुआ। **दे.** पुनर्स्थापन'।

पुरज़ा/पुर्ज़ा 1. टुकड़ा, खंड। 2. कागज़ का फाड़ा हुआ छोटा टुकड़ा जिस पर कुछ लिखा जाए। (स्लिप) 3. किसी मशीन आदि का कोई हिस्सा। 4. रोगी के उपचार के लिए चिकित्सक द्वारा लिखा गया निदान, औषधि (दवा) परहेज आदि का विवरण prescription **मुहा.** चलता पुरज़ा=चालाक आदमी। पुरज़ा-पुरज़ा उड़ना=पूरी तरह से नष्ट हो जाना।

पुरवा *पुं.[तद्*<पूर्वपुरूष] 1. बाप, दादा आदि पिछली पीढ़ी का/के व्यक्ति। **टि.** सामान्य रूप से बहुवचन में ही प्रयुक्त-पुरखे। **मुहा.** पुरखे तर जाना-पुरखों (पूर्वपुरूषों) को मृत्यु के पश्चात उत्तम लोकों की (न कि नरक की) प्राप्ति होना।

पुरवा/पुरवाई/पुरवैया/पुरवइया *स्त्री.(तद्.)* पूर्व से आने वाली हवा (जो वर्षा लाने की सूचक है।) पुरवा।

पुरस्कार [पुरस् <पुर:=आगे, सामने+कार=करना) पुं.(तत्.] व्यु.अर्थ आगे करना; सामने रखना। सा.अर्थ किसी के अच्छे कार्य को देखकर उसे प्रोत्साहन हेतु दी गई आर्थिक या अन्य प्रकार की सहायता। प्रतियोगिता आदि में विजेता को सम्मानार्थ दिया जाने वाला पारितोषिक या इनाम।

पुरस्कृत *[पुरस्*<पुर:+कृत] *वि.(तत्.)* व्यु.अर्थ जिसे आगे या सामने किया गया हो। सा.अर्थ (वह व्यक्ति) जिसे प्रतियोगिता आदि में उत्कृष्टतासूचक प्रशस्तिपत्र या सम्मानचिह्न से अलंकृत किया गया हो। **दे.** पुरस्कार'।

पुराकथा *स्त्री.(तत्.)* प्राचीन कथा या पुरानी कहानी, अति प्राचीन काल यानी प्रागैतिहासिक काल से संबंधित किसी घटना का विवरण। **जैसे:** राजा हरिश्चंद्र की कथा, सत्यवान-सावित्री की कथा।

पुराण *पुं.(तत्.)* भारत के प्राचीन धर्मग्रंथ जिसमें कथाओं के माध्यम से सदाचार की बातें बताई गई हैं तथा प्राचीन भारतीय इतिहास की कथाएँ वर्णित हैं। व्यु.अर्थ वि. पुराना, प्राचीनकाल से संबंधित। **टि.** मुख्य पुराण 18 हैं जिन्हें महर्षि वेदव्यास द्वारा रचित, संगृहीत या संपादित माना गया है।

पुराणगाथा (एँ) *स्त्री.(तत्.)* पुराणों में वर्णित कथाएँ **दे.** पुराणद्ध।

पुरातत्व [पुरा=प्राचीन+तत्व=वास्तविक स्थिति] *पुं.(तत्.)* वह शास्त्र जिसमें प्राचीन इतिहास का

अध्ययन करने के लिए प्राचीन अवशेषों की लिपियों, अभिलेखों, भवनों, सिक्कों आदि की खोज की जाती है और उन्हीं के आधार पर तत्कालीन इतिहास संबंधी निष्कर्ष निकाले जाते हैं। archeology

पुरातत्वविद्/पुरातत्ववेत्ता *पुं.(तत्.)* पुरातत्व का जानकार; प्राचीन अवशेषों का अध्ययनकर तत्कालीन इतिहास संबंधी निष्कर्ष निकालने वाला विशेषज्ञ। archeoligist

पुरास्थल [पुरा=प्राचीन+स्थल=(रहने का) स्थान] *पुं.(तत्.)* अति प्राचीनकाल के वे आवासीय स्थल जिनमें पुरामानव प्राकृतिक आपदाओं से बचने के लिए निवास करता था/करते थे। गुफाओं, कंदराओं वाले स्थल। **जैसे:** मध्य प्रदेश में भीमबेटका।

पुरोहित *पुं.(तत्.)* वह विशेषज्ञ (मुख्यतः हिंदू ब्राह्मण) जिसकी देखरेख में विवाह आदि संस्कार तथा यज्ञ आदि धार्मिक कृत्य किए जाते हैं। priest **तु.** यजमान।

पुरोहिताई *स्त्री.(तत्.)* पुरोहित का कार्य। **पर्या.** पौरोहित्य। **दे.** पुरोहित।

पुल *पुं.(फा.)* किसी नदी, सडक़ या रेलमार्ग के ऊपर व्यक्तियों, वाहनों आदि के आवागमन के लिए बनाई गई स्थायी या अस्थायी संरचना। **पर्या.** सेतु।

पुलक *पुं.(तत्.)* (शरीर के) रोंगटे खड़े होने की स्थिति। **पर्या.** रोमांच। **टि.** हिंदी में 'पुलक' शब्द (संज्ञा) का विरल प्रयोग देखा गया है। इसके विशेष रूप का खूब प्रयोग होता है; जबकि इन दोनों के पर्यायों (रोमांच और रोमांचित) का प्रयोग होता है।

पुलकित [पुलक+इत] *वि.(तत्.) स्त्री.* हर्ष, विस्मय आदि के कारण जिसके रोंगटे खड़े हो गए हों। **पर्या.** रोमांचित।

पुलाव *पुं. (फा.)* मूल अर्थ गोश्त और चावल से बना खाद्य पदार्थ। मूल उच्चारण 'पलाव' है पर उर्दू में इसे 'पुलाव' कहा जाने लगा। सा.अर्थ विशेष प्रकार से पकाए गए चावल जिसमें चावलों को पहले चिकनाई में भून लिया जाता है तथा उसमें मटर, मसाले आदि भी मिलाए जाते हैं।

पुलिन *पुं.(तत्.)* 1. (i) नदी का किनारा, नदी तट; (ii) नदी का पानी हटने के बाद की रेतीली जमीन Bank 2. समुद्र के किनारे वाली रेतीली ज़मीन। beach

पुलिया *स्त्री. (देश.)* (i) छोटा पुल; (ii) नालों, रेलवे लाईनों आदि को पार करने के लिए बनाया गया छोटे आकार का पुल। culvert bridge

पुलिस *स्त्री.(अं.)* किसी नगर, राज्य आदि का राजकीय बल जिसका मुख्य कार्य समाज में शांति तथा राजकीय व्यवस्था को बनाए रखना है तथा कानून-नियमों के उल्लंघन कर्ताओं को पकड़कर न्यायालय के समक्ष सजा हेतु प्रस्तुत करना भी इसमे शामिल है। police

पुली[1] *स्त्री.(अं.)* रस्सी, जंजीर, पेटी (बेल्ट) आदि से युक्त पहिया जो किसी अक्ष पर घूमकर भार उठाने, घर्षण की दिशा बदलने के लिए प्रयुक्त होता है। **पर्या.** घिरनी।

पुली[2] *स्त्री.(अं.)* (पुली) (घिरनी) वह पहिया जिस पर रस्सी रखकर पानी आदि ऊपर खींचते हैं।

पुल्टिस *स्त्री.(अं.)* अलसी, नीम की पत्ती, अजवाइन गुड़ आदि से बने एक प्रकार के गर्म प्रलेप से युक्त कपड़े की पट्टी जो किसी प्रकार के फोड़े को पकाने या फोड़ने के लिए बाँधी जाती है। poultice

पुश्त *स्त्री.(फा.)* 1. पीठ, पिछला भाग।, **जैसे:** किताब की पुश्तबंदी। 2. वंश परंपरा से कोई स्थान। **जैसे:** पिता, चाचा आदि पिछली पुश्त के हैं और दादा-दादी आदि उनसे भी पिछली पुश्त के हैं। (पुश्त-दर-पुश्त-एक पीढ़ी से दूसरी/तीसरी तक का सिलसिला, **पर्या.** पीढ़ी।

पुश्तैनी *वि.(फा.पुश्त)* 1. पुश्त (पीढ़ी) से संबंधित, जो (कई) पीढियों से बराबर चला आ रहा हो। **उदा.** मैं पुश्तैनी मकान में रहता हूँ।

पुष्प *पुं.(तत्.)* नव पादप का वह भाग जो विकसित होकर बीज या फल प्रदान करें। **पर्या.** फूल, कुसुम आदि।

पुष्पण [पुष्प+न] *पुं.(तत्.)* पुष्पित होना या फूल लगना। **दे.** पुष्प'।

पुष्पित *वि.(तत्.)* (i) खिला हुआ; (ii) फूलों से युक्त।

पुस्तक *स्त्री.(तत्.)* व्यु.अर्थ हाथ की लिखी पोथी। सा.अर्थ पोथी, ग्रंथ, किताब। book

पुस्तकालय (पुस्तक+आलय) *पुं. (तत्.)* व्यु.अर्थ पुस्तकों का घर (यानी रखने का स्थान)। सा.अर्थ वह कमरा या भवन जहाँ विभिन्न विषयों की पुस्तकें संगृहीत हों। library

पूजन *पुं.(तत्.)* 1. देवी-देवताओं की पूजा करने का कार्य। **पर्या.** अर्चना, पूजा। 2. आदर, सम्मान। 3. ला.अर्थ पीटने का कार्य; दंड, सजा।

पूजना *स.क्रि.(तत्.*<पूजन) 1. इष्ट-पूर्ति के लिए किसी देवी-देवता की पुष्प, फल आदि से पूजा करना।

पूजनीय/पूज्य *वि.(तत्.)* पूजा के योग्य। **पर्या.** आदरणीय, सम्माननीय। **जैसे**: पूज्य/पूजनीय पिताजी। **टि.** 'पूज्यनीय' अशुद्ध है। **दे.** पूजा।

पूजा *स्त्री.(तत्.)* 1. पत्र, पुष्प, धूप, दीप आदि के द्वारा देवता विशेष को प्रसन्न करने के लिए किया जाने वाला धार्मिक कार्य। **पर्या.** अर्चना, पूजन। 2. ला.अर्थ पिटाई। **उदा.**-चोरी करने पर माँ ने बच्चे की जमकर पूजा की।

पूनम *स्त्री. (तद्*<पूर्णिमा) **दे.** पूर्णिमा।

पूरक *वि.(तत्.)* 1. मुख्य अंश की पूर्ति करने वाला अंश या अंग। complimentary 2. **योग.** प्राणायाम का पहला चरण जिसमें एक नथुना बंद कर दूसरे से श्वास को भीतर खींचते हैं। (अन्य चरण में कुंभक और रेचक) 3. पत्र-वह छोटा समाचार जो आवश्यकता पड़ने पर समाचार-पत्र के रिक्त खांचे की पूर्ति करता है। 4. **व्या.** अस्तित्वसूचक वाक्यों में विधेय के स्थान पर आने वाला संज्ञा या विशेषण शब्द। **उदा.** वह छात्र है, वह बीमार है। complement

पूरक-प्रश्न *पुं.(तत्.)* विधायिका में मंत्री द्वारा किसी तारांकित प्रश्न का उत्तर दिए जाने के बाद उसी विषय से संबंधित अतिरिक्त जानकारी प्राप्त करने के लिए मूल प्रश्नकर्ता अथवा किसी अन्य सदस्य द्वारा पूछा गया प्रश्न। supplementary question **तु.** तारांकित प्रश्न।

पूरण *पुं.(तत्.)* 1. पूरा करने या भरने का भाव। 2. समाप्ति का भाव। 3. 'पूर्ण' का बोलियों में उच्चारण।

पूर्णकालिक *(तत्.) वि. (पूर्ण+काल+इक)* पूरे समय के लिए होने वाला। full time **जैसे**: पूर्णकालिक कर्मचारी।

पूर्णतया *अव्यय(तत्.)* पूर्णता के साथ; पूरी तरह से; पूर्ण रूप से।

पूर्णमासी *स्त्री.(तत्.)* महीने के शुक्ल पक्ष की अंतिम तिथि जब पूरा चाँद दिखाई पड़ता है। **पर्या.** पूर्णिमा, पूनो (बोलीगत प्रयोग)। *दे.* पूर्णिमा।

पूर्णिमा *स्त्री.(तत्.)* सा.अर्थ चंद्रमास की वह रात्रि जब पृथ्वी तल से सोलह कलाओं से युक्त (पूर्ण प्रकाशित) चाँद के दर्शन होते हैं। **खगो.** जिस समय चंद्र सूर्य के साथ वियुति की स्थिति में हो उस समय की चंद्र की कला (प्रावस्था)। **टि .**इस समय चंद्र का पूर्णत: दीप्त अर्धभाग पृथ्वी की ओर होता है इसलिए वह हमें पूरा-का-पूरा प्रकाशित रूप में दिखाई पड़ता है। यानी चंद्रमास का वह दिन जब पूर्णचंद्र कलाओं से युक्त होता है। full moon **पर्या.** पूनम। **विलो.** अमावस्या।

पूर्ति *स्त्री.(तत्.)* 1. (रिक्त स्थान को) पूरा करना। 2. आवश्यकता के अनुसार बाज़ार में सामान उपलब्ध कराना। supply

पूर्वग्रह/पूर्वाग्रह (पूर्व+ग्रह) *पुं.* किसी व्यक्ति की वह धारणा (प्राय: अनुचित) जो बद्धमूल हो चुकी है और जिसे बदलना लगभग असंभव हो। **पर्या.** पूर्वाग्रह prejudice, bias

पूर्वज *वि./पुं.(तत्.)* शा.अर्थ पूर्व=पहले+ज = पैदा हुआ अर्थात जो पहले पैदा हुआ हो। सा.अर्थ वंश परंपरा में पिता, दादा, परदादा आदि पुरानी पीढ़ी के लोग। **पर्या.** पुरखे। **(पुं.बहु.)** ancestors, forefathers

पूर्ववत् *अव्य.(तत्) पूर्व+वत्* पहले जैसा।

पूर्ववर्ती *वि.(तत्.)* (वर्तमान से) पहले का, पहले वाला; क्रम; जो पहले घटित हो चुका हो। **जैसे:** पूर्ववर्ती प्रधानमंत्री।

पूर्वाभ्यास *[सं.पूर्व+अभ्यास] पुं.(तत्.)* 1. किसी कार्य को अंतिम रूप से सफलतापूर्वक प्रस्तुत करने से पूर्व किया गया अभ्यास। तमीमंतेंस

पूर्वार्ध *(पूर्व+अर्ध) पुं.(तत्.)* पहले का आधा भाग। **तु.** उत्तरार्ध।

पृथक *वि.(तत्.)* अलग, भिन्न। **जैसे**: पृथक् मार्ग।

पृथक्करण (पृथक्+करण) *पुं.(तत्.)* अलग करना; जो पहले एक हो उसमें से किसी हिस्से को अलग करने की क्रिया अथवा भाव। **उदा.** तेलंगाना के पृथक्करण की मांग ज़ोर पकड़ती जा रही है।

पृथ्वी/पृथिवी *स्त्री.(तत्.)* 1. सौरमंडल का वह ग्रह जिस पर हम रहते हैं। earth 2. मिट्टी, पत्थर

आदि का बना वह ऊपरी ठोस भाग जिस पर हम चलते फिरते हैं। **पर्या.** ज़मीन, धरा, अवनि। 3. दुनिया। **उदा.** इस पृथ्वी पर ऐसा कौन है.....। 4. (दर्शन) पाँच तत्वों में से एक तत्व या महाभूत जिसका गुण गंध है।

पृष्ठ *पुं.(तत्.)* 1. पीठ back 2. किसी वस्तु का ऊपरी तल। surface 3. पुस्तक के पन्ने का एक ओर का तल। page

पृष्ठभूमि [पृष्ठ+भूमि] *स्त्री.(तत्.)* शा.अर्थ पीछे की भूमि। 1. पीछे का वह भाग जो दीखता नहीं या जिस ओर सहसा ध्यान नहीं जाता। **पर्या.** पृष्ठभाग। 2. किसी घटना की आधारभूत बातें। 3. किसी चित्र या वस्तु के पीछे के वे दृश्य जिनके कारण चित्र या वस्तु की शोभा बढ़ जाती है। back ground

पेंच, पेच *पुं.(फ़ा.)* 1. घुमाव, फिराव, लपेट। 2. उलझन, झंझट। 3. चालबाजी, धूर्तता। 4. चूड़ीदार कील जो घुमाकर कसी जाती है। (स्क्रू) 5. पतंग उडाते समय पतंगों का फँसना। 6. कुश्ती की एक चाल।

पेंट *पुं.(अं.)* Paint 1. तेल और केमिकल आदि मिलाया हुआ रंग। 2. रंग विशेषकर गीला जो दीवार, दरवाजे, कपड़े आदि पर ब्रश की सहायता से लगाया जाता है।

पेंतरा/पैंतरा *पुं. [तद्<*पादान्तर] 1. कुश्ती में अथवा तलवार आदि के चलाने में प्रतिद्वन्द्वी की पैर रखने या संचालन की मुद्रा। **जैसे:** ठीक पैंतरे में वार करना। 2. चालाकी वाली चाल। जैसे-वह अपने स्वार्थवश जल्दी ही नया पैंतरा चलेगा। **मुहा.** पैंतरा बदलना=नयी चाल चलना।

पेंशन *स्त्री.(अं.)* पूर्व निश्चित समय तक की गई सरकारी सेवा से अवकाश प्राप्ति के पश्चात भरण-पोषण के लिए प्रतिमास मिलने वाला वेतन का अंश। pension

पेंसिल *पुं.(अं.)* एक पतली लकड़ी के टुकड़े के अंदर स्थित काले या अन्य रंग के सिक्के वाली लेखनी जो लिखने पर रेखा खींचने या कोई आकार बनाने में काम आती है। इसे रबड़ से मिटाया भी जा सकता है। **जैसे**: इसे पहले पेंसिल से लिखो, बाद में स्याही से लिखना। **वि.** यह एक तरह की सूखी कलम है जिससे बिना स्याही के लिखा जाता है।

पेचीदा *वि.(फ़ा.<*पेचीद:) जिसमें पेच हो, जो सरल न हो; कठिन, मुश्किल। complicated *दे.* पेंच/पेच (1 और 2)

पेटी *स्त्री.(तद्* पेटिका) 1. छोटा संदूक, बक्सा। 2. कमरबंद, बेल्ट।

पेट्रोल *पुं.(अं.)* पेट्रोलियम से प्राप्त एक प्रसिद्ध खनिज तरल पदार्थ जो ऊर्जा का प्रमुख साधन है तथा जो ईंधन के रूप में कार आदि वाहनों में भी प्रयुक्त होता है। *स्त्री. (अं.)* गश्त 1. पुलिस द्वारा नगर रक्षणार्थ भ्रमण करना। 2. शत्रु की गति विधि पर नजर रखना; चौकसी करना। patrol

पेट्रोलियम *पुं.(अं.)* पृथ्वी के नीचे की चट्टानों से मिलने वाला प्राकृतिक ज्वलनशील खनिज (तेल)। इससे पेट्रोल, मिट्टी का तेल आदि अलग किए जाते हैं।

पेट्रोलियम परिष्करणी *स्त्री.(अं.+तत्)* वह स्थान जहाँ खनिज के रूप में प्राप्त पेट्रोलियम का परिशोधन किया जाता है अर्थात् जहाँ पेट्रोल, मिट्टी का तेल एवं अन्य उत्पाद अलग किए जाते हैं। petroleum refinery

पेड़ *पुं.(तद्<*पिंड) **दे.** वृक्ष।

पेड़-पौधे *पुं.बहु. (तद्.)* किसी क्षेत्र या युग की समस्त वनस्पति का समूह और उनका विवरण तथा उनकी सूची आदि। **पर्या.** वनस्पति जात। flora

पेनिसिलिन *पुं.(अं.)* पेनीसीलियय नामक फफूंद से (कृत्रिम रूप) से तैयार की गई एक दवा जो जीवाणुओं से उत्पन्न रोगों को रोकने के काम आती है।

पेनीसीलियम *पुं.(अं.)* एक फफूंद, जिससे कृत्रिम रूप से पेनिसिलिन नामक दवा बनती है और जो जीवाणु से उत्पन्न रोगों को रोकने के काम आती है।

पेय *वि.(तत्.)* पीने योग्य, पीने लायक। पेय पदार्थ, पेय जल। *पुं.* पीने की तरल वस्तु **जैसे:** शरबत, ठंडई, दूध, चाय आदि।

पेरना *(तद्<पीड़न) स.क्रि.* कोल्हू या मशीन में कोई वस्तु डालकर इस तरह दबाना कि उससे तरल पदार्थ निकल आए। **जैसे**: गन्ना पेरना।

पेराफिन मोम *पुं. (अं.)* कोलतार, लकड़ी आदि के आसवन से प्राप्त श्वेत, पारदर्शी क्रिस्टलीय पदार्थ जो ठोस पैराफिनों का मिश्रण होता है। paraffin wax

पेश करना *स.क्रि.(फ़ा.)* प्रस्तुत करना, उपस्थित करना, दिखलाना।

पेशकश *पुं. (फ़ा.)* **दे.** प्रस्तुति।

पेशा *पुं.(फ़ा.*<पेश:) 1. उद्यम, व्यवसाय। 2. आजीविका का साधन, पारंपरिक रूप से किया जाने वाला जीवनयापन का ढंग। **जैसे:** डाक्टरी पेशा।

पेशी *स्त्री.(तत्.)* 1. **प्राणि.** संकुचनशील कोशिकाओं अथवा तंतुओं का बनी एक प्रकार का ऊतक जो संकुचित होकर शरीर के किसी अंग अथवा भाग में गति उत्पन्न करता है। muscle 2. *स्त्री. (फ़ा.)* (i) **विधि** न्यायालय में मुकदमें के पक्ष-विपक्ष में प्रस्तुत वादी और प्रतिवादी दोनों ही पक्षों के तर्क-वितर्क या जिरह की सुनवाई। hearing; (ii) अधीनस्थ कर्मचारी द्वारा अधिकारी के सामने उपस्थित होना। presentation

पेशीय बल *पुं.(तत्.)* मांसपेशियों से संबंधित बल; पेशियों से लगाया गया बल।

पेशेवर *वि.(फ़ा.*<पेश:वर) 1. जो किसी विशेष पेशे (व्यवसाय, कार्य) को अपनी आजीविका का साधन बना ले। **जैसे:** पेशेवर खिलाड़ी। **विलो.** शौकिया। **दे.** पेशा।

पैंतरा *पुं. [तद्*<पदान्तर] 1. युद्ध में पैर जमाकर खड़े होने की मुद्रा या पदविन्यास का ढंग। 2. चालाकी से भरी हुई चाल या युक्ति। **मुहा.** पैंतरा बदलना=1. पहले वाला पक्ष छोडक़र दूसरे पक्ष की ओर चले जाना। 2. नीति में परिवर्तन कर लेना। 3. नया तरीका अपनाना।

पैंतरेबाज़ *वि.* चालबाज़।

पैंरीं *स्त्री. (देश.)* 1. फसल के कटे हुए गेहूँ, चना, मसूर आदि के पौधे या डंठलयुक्त फलियों जिन्हें बैल आदि के पैरों से दाँय कराके अनाज के दाने अलग किये जाते हैं। 2. दाँय, दँवरी। **उदा.** पाँवरि तजहू देहू पग पैंरी। (जायसी-पद्मावत 26/2) **टि.** ग्रामीण प्रयोग।

पैगंबर *पुं.(फ़ा.)* 1. ईश्वर का दूत, देवदूत। 2. वह पूज्य व्यक्ति जो ईश्वर का संदेश मनुष्यों तक पहुँचाता है। **जैसे:** मुहम्मद साहब। **जैसे:** ईसाई धर्माचार्य ईसा मसीह, 2. मुसलमानों के धर्माचार्य मुहम्मद साहब।

पैगाम *पुं.(फ़ा.*<पैग़ाम) किसी व्यक्ति के द्वारा कहलाया हुआ मुख्यत: मौखिक संदेश। **उदा.** तुम्हें मालिक ने कानपुर जाने का पैग़ाम भेजा है। message

पैठ *स्त्री. [तद्*<प्रविष्टि] 1. अंदर तक घुसने/पहुँचने का भाव। **उदा**. इतिहास में शर्माजी की अच्छी पैठ है। 2. पैठ कर, घुसकर। **उदा.** जिन खोजा तिन पाइयाँ गहरे पानी पैठ।

पैठना *अ.क्रि. (तद्.)* 1. अंदर जाना, घुसना। **दे.** पैठ।

पैतृक *वि.(तत्.)* 1. पिता से संबंधित, पिता से उत्तराधिकार में प्राप्त। 2. पिता, उनके पिता (दादा) उनके भी पिता (परदादा) इस प्रकार परंपरा से चली आई हुई कोई वस्तु या बात। **जैसे:** पैतृक संपत्ति। **पर्या.** खानदानी, पुश्तैनी।

पैदल *वि. (तद्)* 1. पाँव-पाँव चलकर कहीं जाने वाले। **जैसे:** पैदल यात्री। 2. *पुं.* 1. वह सैनिक जो बिना सवारी लड़े। foot soldier 2. शतरंज के खेल में 'प्यादा' नाम का अगली पंक्ति का मोहरा जो अपनी सीध में एक घर चलता है। (पान)

पैदल सैना *स्त्री.* स्थल सेना का वह अंग जिसके सैनिक युद्ध क्षेत्र में पैदल आगे बढक़र लड़ते हैं। infentry

पैदावार *स्त्री.(फ़ा.)* खेत में पैदा की जाने वाली कोई भी वस्तु। **पर्या.** उपज, फसल। **उदा.** इस वर्ष देश में गेहूँ की पैदावार अच्छी हुई है।

पैना *वि.(तद्*<पैण) किसी हथियार (जैसे भाला) या औज़ार (जैसे सुई) के सिरे का नुकीला (नोकदार) होना। **तु.** धारदार।

पैनापन *वि.* पैना (नुकीला) होने का भाव या स्थिति। **तु.** धार।

पैमाइश *स्त्री. (फ़ा.)* सा.अर्थ नापने या मापने की क्रिया या भाव। **पर्या.** नाप-जोख। कृषि-

खेतों/ज़मीनों आदि का क्षेत्रफल जानने के लिए की जाने वाली आधिकारिक नाप। servey

पैमाना *पुं.(फा.)* 1. वह साधन जिससे किसी चीज़ को नापा-तोला जाए। 2. शराब पीने का प्याला। **टि.** लंबाई या दूरी नापी जाती है। (मीटर), ठोस वस्तुएँ तौली जाती हैं। (ग्राम), तरल पदार्थ मापे जाते हैं। (लीटर)।

पैर *पुं.[तद्<*पद] शरीर का वह अंग जिसके सहारे प्राणी खड़े होते या चलते हैं। **पर्या.** पद, पग, पांव, पाद, चरण। **मुहा.** पैर उखड़ना=लड़ाई में साहस खो देना। पैर जमाना=दृढ़ होना। पैर छूना/पकड़ना, पैरों पर पड़ना/गिरना=शरणागत होना। पैर छूना=आदर व्यक्त करना, प्रणाम करना। पैर पसारना/फैलाना=अधिक प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करना। फूँक-फूँक कर पैर रखना=संभलकर काम करना। धरती पर पैर न रखना=अहंकार प्रकट करना। पैर सो जाना=रक्तसंचार रूक जाने के कारण पैर का सुन्न हो जाना।

पैराफिन *पुं. (अं.)* मीथेन वर्ग का संतृप्त हाइड्रोकार्बन जो, गैस, द्रव या ठोस हो सकता है। **दे.** पैराफिन मोम।

पैराशूट *पुं. (अं.)* हवारोधी कपड़े का बड़ा थैला जो खुलने और उसमें हवा भर जाने पर बड़े छाते का रूप ले लेता है। आकाश से ज़मीन पर सुरक्षित उतरने के लिए इसका उपयोग किया जाता है। हिंदी पर्या.हवाई छतरी।

पैरोडी *स्त्री. (अं.)* (**काव्य.**) किसी साहित्यिक रचना की उपहासात्मक अनुकृति, कृति। parody

पैविलियन *पुं.(अं.)* (किसी खेल के मैदान में बनी) दर्शक-दीर्घा जहाँ शेष खिलाड़ी और दर्शक बैठकर खेल का आनंद लेते हैं। pavillion

पैसा *पुं.(सं.*<पादांश/फा. पैस:) 1. भारत में 1669 (लगभग) तक प्रचलित ताँबे का एक प्रसिद्ध सिक्का जो एक आने का चौथा भाग तथा रूपये का चौसठवाँ भाग होता था। (या तीन पाई का सिक्का) **टि .** पहले एक आने में बारह पाई होती थी। एक पाई का भी सिक्का होता था) 2. आजकल नये प्रचलित सिक्कों में एक रूपये का सौवाँ भाग। 3. **लाक्ष.** धन। **उदा.** आज जिसके पास पैसा है उसी की समाज में इज्जत है।

पॉलिऐस्टर *पुं.(अं.)* ऐल्कोहॉलों के संघनन से बनाया गया संश्लेषित रेजिन जिसके कृत्रिम धागे बनाए जाते हैं (इसके कपड़े आदि बनते हैं।)

पॉलिथीन *पुं.(अं.)* **रसा.** (i) एक चीमड़ हल्का प्लास्टिक।; (ii) कठोर, पारभासी, श्वेत मोती जैसा पदार्थ जिससे थैले, बोतलें, खिलौने आदि बनाए जाते हैं। (ii) एथिलीन का तापसुघ्हाटय thermoplastic बहुलक polymer जिसका प्रयोग सामान की पैकिंग करने या उसे विद्युतरोधी व ऊष्मारोधी बनाने में होता है। polythene

पॉलिश *स्त्री.(अं.)* 1. वह लेप या रोगन जो किसी वस्तु या नाखून आदि को चमकाने के लिए उस पर लगाया जाता है। **जैसे**: जूते की पॉलिश, फर्नीचर की पॉलिश, नेलपॉलिश। 2. इस प्रकार के लेप से आई हुई चमक। polish

पॉश्चरीकरण (पाश्चुरीकरण/पास्तेरीकरण) रसा.रोग उत्पन्न करने वाले जीवाणुओं को नष्ट करने के उद्देश्य से किसी तरल पदार्थ को जैसे, दूध को उसके रासायनिक संघटन में परिवर्तन लाए बिना साधारण तापमान पर तथा एक निश्चित समय तक गर्म करना। (सामान्यत: $60^{0}C$ पर तीस मिनट तक) **टि.** इस विधि का विकास लुई पास्तेर नामक रसायनविज्ञानी ने किया था। इस कारण इसे पास्तेरीकरण, पॉश्चरीकरण, पाश्चुरीकरण आदि कहा जाता है। pasteurization

पोंगल *पुं. (तमिल)* मकर संक्रांति के अवसर पर (14 जनवरी के आसपास) तमिलनाडु में मनाया जाने वाला प्रसिद्ध त्योहार और उस अवसर पर तैयार खिचड़ीनुमा व्यंजन।

पोंगा *वि. (तद्<*पुंगव) शा.अर्थ जो अंदर से बिल्कुल खोखला हो। ला.अर्थ 1. जिसे कुछ न आता हो, वज्र मूर्ख, बिल्कुल नासमझ।

पोंगापंथी *स्त्री.(तद्)* 1. अत्यंत मूर्खतापूर्ण कृत्य, 2. रूढिवादिता।

पोंगापन *पुं.(तद्)* अत्यंत मूर्खता, बिल्कुल नासमझी। **दे.** पोंगा।

पोखर/पोखरा *पुं.(तद्.*>पुष्कर) 1. प्राकृतिक रूप से बना छोटा तालाब। 2. ज़मीन में बड़ा गड्ढा खोदकर बनाया हुआ जलाशय। (स्त्री. पोखरी)

पोखरी [पोखर+ई] *स्त्री.(तद्<पुष्कर)* बहुत छोटा तालाब, तलैया जिसमें बरसात का पानी बहकर भर जाता है।

पोटली *स्त्री.(तद्.<पोटलिका)* छोटी गठरी, कपड़े के टुकड़े में लपेटकर बाँधी गई वस्तु जो बाहर से दिखे नहीं और सुरक्षित भी रहे। **जैसे:** सुदामा की पोटली।

पोत *पुं.(तत्.)* 1. पानी का जहाज़, बड़ी नाव। 2. पशु-पक्षियों का बच्चा। 3. कपड़े की बनावट। (पतला-मोटा) **उदा**. कपड़ा महीन पोत का है।

पोतना *स.क्रि. (तद्<सं. पोतन)* लेप करना, 1. गाढ़े तरल पदार्थ को किसी तरह लगाना कि वह उस पर चिपक जाए; चुपड़ना। **जैसे**: दीवार पर चूना पोतना।

पोता *पुं.(<पौत्र)* 1. बेटे का बेटा, पौत्र। **तु.** पोती। 2. गाढ़े तरल पदार्थ को पोतने का कपड़ा या कुर्त्ता। (हिं.-पोतना)

पोताश्रय [पोत+आश्रय] *पुं.(तत्.)* 1. प्राकृतिक रूप से बना अथवा कृत्रिम रूप से निर्मित पोत (जहाज़) के रूकने का स्थान, बंदरगाह। 2. समुद्र के किनारे का वह स्थान जहाँ जहाज़ को रूकने तथा सामान चढ़ाने-उतारने का काम होता है। harbour

पोती *स्त्री. (तद्<पौत्री)* बेटे की बेटी। *तु.* पोता।

पोर *पुं. (तद्<पर्व)* 1. ईख, बाँस आदि की गाँठों के बीच का हिस्सा। 2. उंगली की गाँठ या जोड़ जहाँ से वह मुड़ती है। 3. उंगली में दो गांठों के बीच का भाग। **उदा.** उंगलियों में तीन-तीन पोर होते हैं जबकि अंगूठे में दो ही पोर होते हैं।

पोला *वि. (देश.)* 1. जो भीतर से खोखला हो, जिसके अंदर कुछ न हो, केवल वायु या शून्य हो। **उदा.** पोली नाली, पोला पाइप। 2. ज़मीन का वह भाग जिसमें थोड़ा अंदर की ओर हवा हो या शून्य हो। पोली ज़मीन। **पर्या.** खोखला। **विलो.** ठोस। **मुहा.** 1. ढोल में पोल होना=ऊपर पूरा दिखावा होना, परंतु अंदर कुछ न होना। 2. पोल खुल जाना=कमज़ोरी का पता चल जाना।

पोलियो *पुं.(अं.)* सा.अर्थ छोटे बच्चों को होने वाला एक रोग जिसमें हाथ-पैरों की नसें कमजोर हो जाती हैं तथा हाथ-पैर पतले या टेढ़े-मेढ़े हो जाते हैं। **आयु.** तंत्रिकातंत्र में विषाणु संक्रमण से उत्पन्न रोग जो लसिकातंत्र, रूधिर तथा तंत्रिका तंत्र में फैल जाता है। गले और आँतों में मंद संक्रमण से आरंभ होकर बाद में यह रोग मंद पक्षाघात उत्पन्न कर देता है। अब इसकी वैक्सीन उपलब्ध है।

पोलियो ड्रॉप *स्त्री./पुं. (अं.)* पोलियो की बीमारी से बचने के लिए बच्चों को पिलाई जाने वाली दवा की बूँदे। **दे.** पोलियो।

पोश *पुं. (फा.)* 1. जिससे कोई वस्तु ढकी जाए। जैसे-मेजपोश, तख्तपोश, पलंगपोश। 2. पहनने की चीज़, कपड़ा।

पोशाक *स्त्री. (फ़ा.)* सा.अर्थ पहनने के कपड़े। 1. गर्मी-सर्दी से बचने और नंगेपन को ढकने के लिए शरीर पर पहने जाने वाले सलीकेदार कपड़े। **पर्या.** वस्त्र, परिधान, पहनावा, लिबास। dress 2. किसी विशेष वर्ग के व्यक्ति समूह के लिए अवसर विशेष पर पहने जाने वाले एक ही प्रकार के वस्त्र। **जैसे:** विद्यालयों में पहने जाने वाले छात्र-छात्राओं के वस्त्र, सैनिकों की वेशभूषा, देशवार क्रिकेट के खिलाडियों के वस्त्र आदि। **पर्या.** गणवेश uniform

पोशीदा *वि.(फा.)* छिपा हुआ, ढका हुआ, गुप्त।

पोषक *वि.(तत्)* पोषण करने वाला (तत्व) **दे.** पोषण। nutritive

पोषण *पुं.(तत्)* जीवों द्वारा भोजन को अंतर्ग्रहण, पाचक तथा स्वांगीकरण (स्व+अंगीकरण) की प्रक्रिया। nutrition

पोष्य *वि.(तत्.)* पोषण करने योग्य; पाले जाने योग्य। **दे.** पोषण।

पोस्टर *पुं.(अं.)* सर्वसाधारण को सूचना पहुँचाने के लिए बड़े-बड़े अक्षरों में लिखकर या छपवाकर दीवारों पर चिपकाने के लिए बनाया गया विज्ञापन का प्रसिद्ध साधन।

पोस्टेज *पं.(अं.)* डाक विभाग में डाक के पत्र, पार्सल, धनादेश आदि भेजे जाने का खर्च। **पर्या.** डाकव्यय, डाक-महसूल।

पौध (पोद) *स्त्री. (तत्.)* बीज से निकला हुआ नवजात पौधा जो या तो अपने मूल स्थान पर ही बढ़ता रहता है या कहीं और जगह रोपा जाकर विकसित होता है। sapling, seedling

पौधघर/पौधा-घर *पुं.(तत्.+तद्.)* शीशे, प्लास्टिक अथवा पॉलिथीन से बनी घर जैसी संरचना जिसमें नियंत्रित तापमान पर पौधे उगाए जाते हैं। green house **तु.** पौधशाला।

पौधशाला *स्त्री.(तत्.)* वह स्थान जहाँ तरह-तरह के पौधे बिक्री हेतु या अन्यत्र रोपने के लिए उगाए जाते हैं। *तु.* पौधघर। nursery

पौधा *पुं.(तत्.)* सा.अर्थ वृक्ष या पेड़ के उगते समय का प्रारंभिक रूप; नया और छोटा पेड़। *तु.* पादप, वनस्पति, पेड़।

पौधाघर-प्रभाव *पुं.* कार्बनडाइ ऑक्साइड आदि गैसों द्वारा हमारी पृथ्वी के वायुमंडल पर दुष्प्रभाव, जिसके कारण विकिरणकारी गैसें भूपृष्ठ से बाहर नहीं जा पाती और सूर्य से आने वाला हानिकारक विकिरण पृथ्वी के वायुमंडल को दुष्प्रभावित करता है। green house effect

पौराणिक [पुराण+ईक] *वि. (तत्.)* (i) पुराणों से संबंधित। **जैसे**: पुराणिक काल। (ii) पुराणों में बताया हुआ। **जैसे**: पौराणिक कथा। **दे.** पुराण।

पौरूष हार्मोन *पुं. (तत् +अं.)* वे हार्मोन जो लडकों में वयस्कों के लक्षण उत्पन्न करते हैं। जैसे-चेहरे पर बाल आना आदि।

पौष्टिक (पुष्ट+इक) *वि. (तत्.)* पोषण प्रदान करने वाला। **दे.** पोषण।

प्यारा *वि. [तद्<प्रिय]* 1. प्रिय लगने वाला। **पर्या.** प्रिय, प्रेमपात्र। 2. मासूम-सा दिखने वाला।

प्यूपा *(अं.)* कीटों के परिवर्धन के दौरान लारवा तथा वयस्क के बीच की अवस्था जिसमें चलने-फिरने और पोषण की क्रियाएँ नहीं होती हैं। इसमें लारवा के अंगों का पुनर्गठन होकर वयस्क अंगों का परिवर्धन होता है। **जैसे:** रेशम का कोया, तितली का क्राइसेलिस। **पर्या.** कोशित। **तु.** लारवा/लार्वा। pupa

प्यूबिक *वि. (अं.)* जघन-संबंधी, उदर के निम्न भाग वाले क्षेत्र से संबंधित। जघनास्थि 1. जघन की अस्थि या हड्डी; दो हड्डियों में से कोई एक जो तीसरी हड्डी के साथ मिलकर श्रोणि के अधर भाग के दोनों ओर चाप के आकार की रचना का निर्माण करती है। pubic

प्रकटन अवधि *स्त्री. (तत्.)* **आयु.** संक्रमण होने और रोग के प्रथम लक्षण दिखाई देने के बीच का समय। incubation period

प्रकरण *पुं. (तत्.)* 1. किसी पुस्तक का एक भाग जिसमें किसी एक विषय का वर्णन हो। chapter 2. प्रसंग, विषय (जिसके बारे में कुछ कहा जाए या लिखा जाए) topic

प्रकांड *वि. (तत्.) (प्र=विशेष रूप से +कांड=मूल से शाखा तक फैला वृक्ष का तना; विस्तृत)* जिसे विषय के प्रत्येक पक्ष का गहन और विस्तृत ज्ञान हो। **जैसे:** प्रकांड पंडित।

प्रकार *पुं. (तत्.)* एक ही तरह की वस्तुओं अथवा प्राणियों का वर्ग जिसे अन्य वस्तुओं आदि से अलग पहचाना जा सके। **पर्या.** किस्म, रीति, ढंग। **जैसे:** हमारे देश में कई प्रकार की भाषाएँ बोली जाती हैं।

प्रकार्य *पुं. (तत्.)* विशेष प्रकार का विशिष्ट कार्य। function

प्रकाश *पुं. (तत्.)* 1. वह शक्ति या तत्व जिसके कारण हम वस्तुओं को देख पाते हैं। **भौ.** वह प्राकृतिक कारक (विद्युत चुंबकीय विकिरण) जो आँख के दृष्टिपटल पर पडक़र वस्तुओं को दृश्यमान बनाता है। light 2. आलोक, ज्योति, रोशनी। 3. सूर्य की किरणें, धूप।

प्रकाश उत्सर्जक डायोड *(एल ई डी LED) पुं. (तत्.+तत्.+अं.)* एक छोटा विद्युत उपकरण जो दुर्बल विद्युत धारा होने पर भी प्रकाश दे सकता है। इसे बैटरी के धन/ऋण टर्मिनलों से जोड़ा जाता है। आजकल ट्रैफिक सिग्नल लाइट में प्रकाश के लिए इसका प्रयोग किया जा रहा है। यह अनेक रंगों में उपलब्ध है। LED

प्रकाश वर्ष *पुं. (तत्.)* आकाशीय दूरी का एक मानक। एक सौर वर्ष में सूर्य का प्रकाश जितनी दूरी तय करता है, उस दूरी के प्रकाश वर्ष कहते हैं, (प्रकाश एक सेकेंड में लगभग तीन लाख छियासी हजार कि.मी. की दूरी तय करता है। light year **टि.** हमारे सूर्य के अतिरिक्त निकटतम तारा (एल्फा सेंटॉरी) पृथ्वी से लगभग 4.3 प्रकाश वर्ष दूर है। (लगभग 4×10^{13} किलो मीटर)

प्रकाश स्तंभ *पुं. (तत्.)* 1. रोशनी का खंभा, बिजली का खंभा (इलैक्ट्रिक पोल)। 2. समुद्र तट पर स्थापित प्रकाश-मीनार जो नाविकों, जहाजों का मार्ग-प्रदर्शन करने के साथ-साथ उन्हें संभावित खतरों से चेतावनी देने के काम आती है। **पर्या.** दीपस्तंभ, प्रकाशगृह, आकाशदीप light house

प्रकाशन *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ रोशनी डालना, प्रकाशित करने का कार्य। तक.अर्थ वे पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाएँ आदि जिन्हें बेचने बाँटने के लिए छपवा लिया जाता है; इस तरह छपी सामग्री। publication

प्रकाश-पिंड *पुं. (तत्.)* वह आकाशीय पिंड (गोला) जो प्रकाश उत्सर्जित करता है। तारा, सूर्य (जो एक तारा ही है।)। star

प्रकाशपुंज *पुं. (तत्.)* प्रकाश की लगभग समांतर किरणों का समूह। beam of light

प्रकाश-संश्लेषण *पुं. (तत्.)* **वन.** हरे पौधों द्वारा वायुमंडल की कार्बन डाइऑक्साइड और जल से कार्बोहाइड्रेट का निर्माण। इस प्रक्रिया में हरा वर्णक पर्णहरित उत्प्रेरक का काम करता है। photo=synthesis

प्रकाशित *[प्रकाश+इत] वि. (तत्.)* 1. प्रकाश से युक्त; प्रकाश में लाया हुआ/लाई हुई; प्रकट किया हुआ/हुई। 2. मुद्रित, छपी हुई (सामग्री) **विलो.** अप्रकाशित।

प्रकीर्ण *वि. (तत्.)* जो सघन न हो, बिखरा हुआ/बिखरी हुई; फैला हुआ/फैली हुई। **जैसे:** प्रकीर्ण बस्ती।

प्रकीर्णन *पुं. (तत्.)* सा.अर्थ बिखरना, फैलना, बिखराव। **भौ.** प्रक्रम जिसमें आने वाले विकिरण की दिशा अथवा ऊर्जा में बिखराव आ जाता है। **जैसे:** प्रकाश और ध्वनि तरंगों में।

प्रकृति *स्त्री. (तत्.)* 1. किसी व्यक्ति या वस्तु का मूल स्वभाव। **पर्या.** मिजाज, स्वभाव। 2. वह मूल शक्ति जिससे संपूर्ण जीव-जगत उत्पन्न हुआ है। 3. वह जो हमें चारों ओर पेड़-पौधे, नदी आदि के रूप में दिखाई पड़ता है। nature

प्रकोप *पुं. (तत्.)* 1. वह अधिक कोप या क्रोध। **जैसे:** प्रकृति का प्रकोप (भूकंप या सुनामी के समय) 2. बीमारी को बढ़ाने वाली शक्ति। **उदा.** आजकल शहर में डैंगू का प्रकोप फैला हुआ है।

प्रक्रम *पुं. (तत्.)* एक के बाद एक संक्रियाओं का क्रम जिससे किसी कार्य विशेष का संपादन होता है। process **तु.** प्रक्रिया।

प्रक्रिया *स्त्री. (तत्.)* किसी कार्य को संपादित करने का तरीका। procedure **पर्या.** क्रियाविधि। **तु.** प्रक्रम।

प्रक्षेपण [प्रक्षेप+न] *पुं. (तत्.)* एक स्थान से दूर फेंकना या दागना। projection **उदा.** भारत ने अंतरिक्ष में उपग्रह का प्रक्षेपण किया।

प्रक्षेपास्त्र [प्रक्षेप+अस्त्र] *पुं. (तत्.)* **सैन्य.** ऐसा संहारक अस्त्र (हथियार) जो शत्रुपक्ष पर बहुत दूर से निशाना साधता है। missile

प्रखर [प्र+खर=तीखा, तेज़ धार वाला] *वि. (तत्.)* बहुत ही तीक्ष्ण। **उदा.** प्रखर धूप, प्रखर ताप, प्रखर गर्मी, प्रखर वृद्धि

प्रख्यात *वि. (तत्.)* प्रसिद्ध, मशहूर, विख्यात। **जैसे:** प्रख्यात व्यक्ति, प्रख्यात कवि।

प्रगति *स्त्री. (तत्.)* तेजी से आगे बढ़ना। **उदा.** हमारा देश विज्ञान के क्षेत्र में निरंतर प्रगति कर रहा है।

प्रगतिशील [प्रगति+शील] *वि. (तत्.)* 1. निरंतर आगे की ओर बढ़ने वाला, उन्नतिशील। 2. पुराने शिथिल या रूढ़ विचारों को छोडक़र नए विचारों व नई व्यवस्थाओं को अपनाने वाला। **उदा.** 1. आर्थिक दृष्टि से मेरा परिवार निरंतर प्रगतिशील बना हुआ है। 2. मेरा मित्र प्रगतिशील विचारों का है।

प्रगतिशीलता *स्त्री. (तत्.)* रूढ़ विचारों को छोडक़र निरंतर नए विचारों को अपनाते रहने का भाव।

प्रगलन *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ बलपूर्वक गलाना। **रसा.** अयस्क में कुछ रसायन मिलाकर और उच्च ताप पर पिघलाकर धातु को शुद्ध करने की प्रक्रिया।

प्रचंड *वि. (तत्.)* 1. बहुत तीव्र या तेज़, प्रखर, गतिशील-प्रचंड ताप, प्रचंड वेग। 2. भयंकर, भयानक, भीषण- सुनामी की प्रचंड लहरें। 3. असह्य - प्रचंड गर्मी।

प्रचलन *पुं. (तत्.)* 1. वस्तु, प्रथा, रिवाज आदि के जारी रहने का भाव या क्रिया। **उदा.** 1.

आजकल चव्वनी, अठन्नी का प्रचलन नहीं है, पहले था। 2. अब घूँघट प्रथा का प्रचलन कम होता जा रहा है। 2. व्यवहार, चलन या प्रयोग में आना। **उदा.** आजकल चूड़ीदार पाजामे का प्रचलन हो गया है।

प्रचलित *वि. (तत्.)* प्रचलन में आया हुआ। **दे.** प्रचलन।

प्रचार *पुं. (तत्.)* किसी सूचना, विचार, वस्तु, भाषा आदि को जनता में अधिक-से-अधिक फैलाने का निरंतर प्रयास। **उदा.** हिंदी के प्रचार के लिए देश में कई गैर-सरकारी संगठन स्थापित हैं।

प्रचारक *वि. (तत्.)* प्रचार करने वाला। **जैसे:** धर्म-प्रचारक, हिंदी प्रचारक। **उदा.** गैर-सरकारी हिंदी संगठनों में कई प्रचारक कार्यरत हैं। **दे.** प्रचार।

प्रचारित *वि. (तत्.)* 1. जिसका प्रचार किया गया हो। **उदा.** नव प्रकाशित पुस्तक को प्रचरित करने के लिए एक विचार गोष्ठी आयोजित की गई। । 2. वे नियम, सिद्धांत, योजना आदि जिनकी घोषणा दी गई हो, घोषित। **उदा.** मेट्रों के तीसरे चरण की योजना को प्रचारित कर दिया गया।

प्रचालक *पुं. (तत्.)* किसी यंत्र के समुचित संचालन में लगा व्यक्ति/कर्मचारी। **जैसे:** टेलीफ़ोन प्रचालक। operator

प्रचालन *पुं. (तत्.)* चलाने की क्रिया, संचालन। किसी अभियान, यंत्र अथवा कार्य के सफल संचालन के लिए आवश्यक सभी क्रियाएँ। operation

प्रचुर *वि. (तत्.)* मात्रा में बहुत अधिक। **उदा.** बंगाल में मछली प्रचुर मात्रा में खाई जाती है।

प्रचुरता *स्त्री. (तत्.)* मात्रा में बहुत अधिक होने का भाव, अधिकता। **दे.** प्रचुर।

प्रच्छन्न *वि. (तत्.)* ढका या लपेटा हुआ, छिपा हुआ, गुप्त। **जैसे:** वस्त्रों से प्रच्छन्नचित। **उदा.** 1. कुछ विचारकों ने आदि शंकर को प्रच्छन्न बौद्ध कहा है। 2. विद्या प्रच्छन्न धन है।

प्रजनन *पुं. (तत्.)* संतान उत्पन्न करना, संतानोत्पत्ति। reproduction **उदा.** सभी प्राणियों में वंशवृद्धि प्रजनन क्रिया से होती है।

प्रजातंत्र *[प्रजा+तंत्र] पुं. तत्.* किसी देश की वह शासन-व्यवस्था जिसमें जनता द्वारा चुने हुए प्रतिनिधि विधि-निर्माण करते हैं और तदनुसार उन्हीं में से बनी कार्यपालिका देश का शासन चलाती है। **पर्या.** लोकतंत्र democracy

प्रजातंत्रीय *वि. (तत्.)* प्रजातंत्र से संबंधित, प्रजातंत्रवाली।

प्रजाति *स्त्री. (तत्.)* मनुष्यों, पशु-पक्षियों, पौधों का वह समुदाय जिसमें समान आनुवंशिक अभिलक्षण पाए जाते हो। इन अभिलक्षणों को बदला नहीं जा सकता। **पर्या.** नस्ल। **जैसे:** मंगोल प्रजाति, नीग्रोप्रजाति; स्तनपायी प्रजाति, सरीसृप प्रजाति। race

प्रज्ञाचक्षु [प्रज्ञा+चक्षु] *वि./पुं. (तत्)* शा.अर्थ बुद्धि (प्रज्ञा) ही जिसके लिए आँखों (चक्षुओं) का काम करे। *विक. अर्थ.* नेत्रहीन, अंधा। **उदा.** सूरदास प्रज्ञाचक्षु (अंधे) थे।

प्रज्वलित *[प्र+ज्वलित] वि. (तत्.)* (विशेष रूप से), जलता हुआ, जला हुआ। **उदा.** दीपावली की शाम प्रज्वलित दीपों से जगमगा उठी।

प्रणय *पुं. (तत्)* पति-पत्नी या प्रेमी-प्रेमिका के मध्य आपसी प्रेम। **उदा.** राधाकृष्ण उत्कृष्टतम प्रणय के प्रतीक हैं।

प्रणयन *पुं. (तत्.)* किसी साहित्यिक कृति की रचना। **उदा.** इस वर्ष मैंने जिन कविताओं का प्रणयन किया, वे अब पुस्तकाकार रूप में प्रकाशित हो गई हैं।

प्रणाम *पुं. (तत्.)* 1. पूज्य जनों, विद् वानों, गुरुजनों, बड़ों आदि को हाथ जोडक़र व सिर झुकाकर किया जाने वाला अभिवादन, नमन, वंदन। 2. बड़ों का सम्मान करने के लिए नमस्कार। **जैसे: 1.** रामचन्द्र ने ऋषि विश्वामित्र को दंडवत् प्रणाम किया। 2. परीक्षा से पूर्व हम गुरुजनों को प्रणाम करते हैं।

प्रणाली *स्त्री. (तत्)* 1. पानी निकलने का छोटा मार्ग। 2. दो बड़े जलाशयों को मिलाने वाला जलमार्ग। (चैनेल) 3. किसी काम को आरंभ से अंत तक करने का पद्धति, ढंग, तरीका , विधि। 4. कोई सूचना आदि अन्यत्र भेजने का साधन। channel

प्रताड़ना *स्त्री. (तत्.)* 1. बुरी तरह से डाँटना-डपटना, फटकारना, झिड़कना। reprimeand

प्रताड़ित *वि. (तत्.)* जिसकी प्रताड़ना हुई हो, जिसे भला-बुरा कहा गया हो या फटकारा गया हो। **उदा.** पत्नी रत्नावली से प्रताड़ित होकर तुलसी ने गृहस्थ जीवन त्याग दिया और रामभक्ति में जीवन समर्पित कर दिया।

प्रताप *पुं. (तत्.)* महिमा, वीरता, गौरव, तेज, पौरूष, प्रभुत्व, यश, पुण्य आदि का मिला जुला गुण। **उदा.** पूर्वजों के पुण्य-प्रताप से ही मैं भीषण दुर्घटना के बावजूद बच गया।

प्रति *उपसर्ग (तत्.)* विभिन्न शब्दों के साथ जुड़कर निम्नलिखित अर्थ देने वाला उपसर्ग। 1. विपरीतता **जैसे:** प्रतिक्रिया। 2. विरोध **जैसे:** प्रतिबल। 3. बदला **जैसे:** प्रत्युपकार। 4. पुन: पुन: होना **जैसे:** प्रतिदिन। 5. समानता प्रतिद्वंद्वी, प्रतिनिधि। 6. सामने होना, प्रत्यक्ष। 7. खंडन प्रतिवाद। 8. मुकाबला, प्रतिभट। 9. अधीन होना प्रति समाहर्ता आदि। *अव्यय (तत्.)* 1. ओर - **जैसे:** घर के प्रति 2. विरूद्ध **जैसे:** देश के प्रति द्रोह 3. साथ **जैसे:** बच्चे के प्रति स्नेह 4. विषय में **जैसे:** पढाई के प्रति लगाव। *स्त्री. (तत्.)* पुस्तक, समाचार-पत्र पत्रिका आदि की एक इकाई। **जैसे:** पुस्तक की प्रति। copy

प्रतिअम्ल *पुं. (तत्.)* **रसा.** अम्लों को उदासीन करने अथवा अम्लता को समाप्त करने के लिए प्रयुक्त पदार्थ। **जैसे:** सोडियम बाइकार्बोनेट। anti-acid

प्रतिकार *पुं. (तत्.) (प्रति+कार)* 1. किसी कार्य का प्रभाव रोकने या दबाने आदि के लिए किया जाने वाला कार्य, रोकथाम। **उदा.** सरकार ने बाबा रामदेव के आंदोलन का सख्ती से प्रतिकार किया। 2. प्रतिशोध, बदला। **उदा.** उसने अपने साथ हुए अपमान का प्रतिकार उसे दंड दिलवा कर लिया।

प्रतिकूल *वि. (तत्.)* विपरीत परिणाम देने वाला। **उदा.** प्रतिकूल परिस्थितियों में भी धैर्य नहीं खोना चाहिए। **विलो.** अनुकूल।

प्रतिकूलता *स्त्री. (तत्.)* विपरीत होने का भाव; प्रतिकूल होने की स्थिति। **विलो.** अनुकूलता।

प्रतिकूल प्रभाव *पुं. (तत्.)* चाहें तो अच्छा पर परिणाम प्रतिकूल निकले। **उदा.** ऐलोपेथी की दवाएँ हमारे एक रोग को तो ठीक कर देती हैं पर प्रतिकू प्रभाव वाली होने के कारण दूसरे रोग को पैदा भी कर सकती हैं। adverse effect

प्रतिकृति *स्त्री. (तत्.)* 1. किसी व्यक्ति या वस्तु की हूबहू प्रतिमा। **उदा.** यह लडक़ा अपने पिता की प्रतिकृति है। मूल आकृति की हूबहू नकल। **जैसे:** छायाचित्र, इलैक्ट्रास्टेट प्रति।

प्रतिक्रिया *स्त्री. (तत्.)* किसी क्रिया के विरोध में (या परिणामस्वरूप) होने वाली दूसरी क्रिया। **जैसे:** गेंद के पटकने पर गेंद के उछलने की क्रिया। reaction **तु.** अनुक्रिया (तकनीकी अर्थ में| **रसा.**

प्रतिग्रह *पुं. (तत्.)* 1. दान में दी गई किसी भी वस्तु, धन आदि को स्वीकार करना। 2. ब्राह्मण के द्वारा लिया जाने वाला वह दान जो उसे विधिपूर्वक दिया जाए। 3. पाणिग्रह, विवाह। **उदा.** कुलीन व श्रेष्ठ ब्राह्मण किसी का प्रतिग्रह स्वीकार नहीं करता।

प्रतिजीवी औषधियाँ *स्त्री. (तत्.)* सूक्ष्मजीवों से बनी दवाएँ (जो जीवाणु और कवकों के संक्रमण से होने वाले रोगों के नियंत्रण में लाभकारी सिद्ध चुकी हैं)। **जैसे:** पेनिसिलिन। antibiotic drugs

प्रतिजीवी/प्रतिजैविक द्रव्य *पुं. (तत्.)* **रसा.** सूक्ष्मजीवों द्वारा उत्पन्न रासायनिक पदार्थ जो औषधि के रूप में प्रयुक्त होकर जीवाणु और कवकों के संक्रमण से होने वाले रोगों के नियंत्रण में लाभकारी सिद्ध हुई हैं। **उदा.** पेनिसिलिन। antibiotic

प्रतिज्ञा *स्त्री. (तत्.)* किसी कार्य को संपन्न करने या न करने का संकल्प। **पर्या.** प्रण, निश्चय।

प्रतिदर्श *पुं. (तत्.)* **गणि.** वस्तुओं या आँकड़ों के समूह में से उठाई गई कोई इकाई जिसका विश्लेषण-परीक्षण कर उस समूह (या वर्ग) की सामान्य प्रवृत्तियों या गुणधर्मों की जानकारी प्राप्त की जा सकती है। **पर्या.** नमूना। sample

प्रतिदान *पुं. (तत्.)* किसी अच्छे काम के बदले में किया गया अच्छा काम; किसी दी हुई वस्तु के

बदले में प्राप्त दूसरी वस्तु। (repayment; return gift)

प्रतिदीप्त नलिका *स्त्री. (तत्.)* ऊर्जा अवशोषण के परिणामस्वरूप विद्‌युत-चुंबकीय विकिरण के उत्सर्जन से युक्त प्रकाश नलिका। **पर्या.** ट्यूब-लाइट। florescent tube

प्रतिदीप्ति *स्त्री. (तत्.)* ऊर्जा अवशोषण के परिणामस्वरूप किसी पदार्थ विशेष से विद्युत चुंबकीय विकिरण का उत्सर्जन। **जैसे:** ट्यूबलाइट में florescence

प्रतिद्वंद्व *पुं. (तत्.)* सामान्यत: दो बराबर के तुल्य बलशाली व्यक्तियों या विचारधाराओं में परस्पर लड़ाई, टक्कर, विरोध आदि। rivalry, antagonism, centest

प्रतिद्वंद्वी *वि. पुं. (तत्.)* सामान्यत: दो बराबर के (तुल्य) बल वाले व्यक्तियों या भिन्न-भिन्न विचारधाराओं में विश्वास रखने वाले समूहों के बीच सक्रिय टक्कर। **पर्या.** विरोधी, प्रतिपक्षी, प्रतियोगी। rival, antagonist, centestant

प्रतिद्वन्द्वी *वि. पुं. (तत्.)* 1. जो किसी का सक्रिय रूप से विरोध करे, विरोधी; शत्रु। **उदा.** महाभारत युद्‌ध में कर्ण अर्जुन को अपना **प्रतिद्‌वंद्‌वी** मानता था। rival, antagonist। 2. किसी प्रतियोगिता में दूसरे से मुकाबला करने वाला, **उदा.** कुश्ती प्रतियोगिता में अनेक पहलवान प्रतिद्‌वंद्‌वी हैं।

प्रतिधारी *वि. (तत्.)* (दीवार) भूमि को खिसकने से रोकने वाला, किनारे की मिट्‌टी को गिरने से रोकने वाला।

प्रतिध्वनि *स्त्री. (तत्.)* किसी ध्वनि के किसी तल पर टकराने के फलस्वरूप उत्पन्न किसी उसी से मिलती-जुलती ध्वनि जो कुछ विलंब से सुनाई देती है। **पर्या.** गूँज। echo

प्रतिनिधि *पुं. (तत्.)* 1. किसी की ओर से कोई काम करने के लिए नियुक्त अथवा निर्वाचित व्यक्ति। **जैसे:** वकील**,** अभिकर्ता (एजेन्ट), संसद्-सदस्य आदि। 2. किसी रचनाकार के समग्र साहित्य से चुनी हुई कुछ रचनाएँ जो स्वयं उसे या संपादक को पसंद हों और जिन्हें पढ़कर पाठक वर्ग को उस रचनाकार की रचनात्मक प्रतिभा की जानकारी मिल जाए। **जैसे:** कमलेश्वर की प्रतिनिधि कहानियाँ। representative

प्रतिनिधि मंडल *पुं. (तत्.)* किसी सभा, सम्मेलन, आयोजन आदि में भाग लेने के लिए संबंधित विषय-विशेषज्ञों का मनोनीत दल जिसका नेतृत्व कोई नामित सदस्य करता है। delegation

प्रतिनिधित्व *पुं. (तत्.)* प्रतिनिधि होने या बनने का भाव। **दे.** प्रतिनिधि।

प्रतिपर्ण *पुं. (तत्.)* किसी रसीद, चालान, चैक आदि का वह भाग जो उसे जारी करने वाला रिकार्ड के लिए अपने पास रखता है। **पर्या.** अधपन्ना। **जैसे:** बैंक के खाते में धन जमा करने के लिए भरी पर्ची का प्रतिपर्ण/अधपन्ना। counter file

प्रतिपादन *पुं. (तत्.)* 1. पहले स्वयं अच्छी तरह समझकर फिर दूसरों के सामने किसी विषय का विवेचन करना। **उदा.** शिक्षक ने कक्षा में अलंकारों के महत्‍त्व का प्रतिपादन किया। 2. किसी विषय का प्रमाणपूर्वक कथन, निरुपण। **उदा.** आज एक वैज्ञानिक ने खगोलीय तत्‍त्वों का सप्रमाण प्रतिपादन किया।

प्रतिपादित *वि. (तत्.)* जिसका प्रतिपादन किया हो; अच्छी तरह समझाया हुआ, **उदा.** 'पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करती है' यह सिद्‌धांत आर्यभट्ट द्‌वारा प्रतिपादित है।

प्रतिपाद्‌य *वि. (तत्.)* जिसका प्रतिपादन किया जाना हो; प्रतिपादन के योग्य। **उदा.** निराला की कविता का **प्रतिपाद्‌य** विषय सामाजिक चेतना जगाना है।

प्रतिपूर्ती *स्त्री. (तत्.)* शा.अर्थ पुन: प्राप्त करना, किसी के बदले में की गई पूर्ति; सा.अर्थ किसी प्रयोजन के लिए व्यय किए गए धन की संस्था द्‌वारा नियमानुसार वापसी या भरपाई। reimbursement

प्रतिबंध *पुं. (तत्.)* 1. किसी काम में खड़ी की गई रुकावट, बाधा, अवरोध आदि। **जैसे:** स्कूलों के पास हार्न (भोपू) बजाने पर प्रतिबंध है। restriction। 2. किसी काम या बात के लिए लगाई गई शर्त। condition

प्रतिबंधित *[प्रतिबंध+इत] वि. (तत्.)* जिस पर प्रतिबंध लगा हो। **जैसे:** प्रतिबंधित दवाएँ, प्रतिबंधित क्षेत्र।

प्रतिबद्‌ध *वि. (तत्.)* जिसने कोई कार्य पूरा करने का प्रण किया हो। **जैसे:** भ्रष्टाचार

मिटाने के लिए प्रतिबद्ध, सच बोलने के लिए प्रतिबद्ध आदि।

प्रतिबिंब 1. किसी वस्तु की हूबहू प्रतिमा जो प्रकाश के परावर्तन के कारण दिखलाई देती है। reflection **उदा.** दर्पण में/जल में हम अपना प्रतिबिंब देख सकते हैं।

प्रतिभा *स्त्री. (तत्.)* बुद् धि की वह शक्ति जिससे कोई व्यक्ति किसी विषय को शीघ्रता से समझ लेता है, उसे स्मरण रखता है, उस पर विचारपूर्वक शीघ्र निर्णय ले सकता है तथा अवसर आने पर शीघ्र उसका उपयोग कर सकता है। talent

प्रतिभा पलायन *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ प्रतिभा (प्रतिभाशाली व्यक्ति) का कहीं और चला जाना। अन्यत्र-चले जाना। सा.अर्थ अपने देश में उच्च तकनीकी शिक्षा प्राप्त कर रोजगार के बेहतर अवसर तलाशने और धनार्जन को ही प्रमुखता देने वाले शिक्षित व्यक्ति जो बड़ी संख्या में विदेश चले जाते हैं। brain-drain

प्रतिभू *पुं. (तत्.)* व्यक्ति जो दूसरे व्यक्ति की जमानत देता है। **पर्या.** जामिन surety

प्रतिभूति *स्त्री. (तत्.)* जमानत देने का काम। **पर्या.** जमानत। secuirty

प्रतिमा *स्त्री. (तत्.)* 1. मिट्टी, पत्थर धातु आदि से बनी आकृति। **पर्या.** मूर्ति। 2. ला.अर्थ करुणा की साक्षात् प्रतिमा हो तुम। 3. समानता का भाव (समास में) **दे.** अप्रतिम।

प्रतिमान *पुं. (तत्.)* व्यु.अर्थ समान मान वाली दूसरी वस्तु। सा.अर्थ उदाहरण के रूप में कोई वस्तु या व्यक्ति। **पर्या.** आदर्श। (मॉडल)। 2. वह पद्धति या प्रकार जिसके अनुसार सभी कार्य किए जाते हैं। pattern

प्रतिमूर्ति *स्त्री. (तत्.)* 1. मिट्टी,पत्थर, धातु आदि से निर्मित आकृति। **पर्या.** मूर्ति। 2. किसी का दूसरों में दिखाई पड़ने वाला यथावत् स्वरूप। **जैसे:** करुणा की प्रतिमूर्ति। 3. **पर्या.** प्रतिमा, अनुकृति।

प्रतियोग *पुं. (तत्.)* किसी के प्रभाव को कम या नष्ट करने की क्रिया। 1. विरोध, विपरीत क्रिया। 2. परस्पर विरोधी वस्तुओं का अंतर्संबध।

प्रतियोगिता *(प्रतियोगी+ता) स्त्री. (तत्.)* शा.अर्थ प्रतियोगी होने का भाव। सा.अर्थ वह आयोजन जिसमें एकाधिक प्रतियोगियों में से प्रत्येक अपनी श्रेष्ठता का प्रदर्शन करने का प्रयत्न करे। **पर्या.** प्रतिस्पर्धा, प्रतिद्वंद् विताता, होड, मुकाबला competition **दे.** प्रतियोगी।

प्रतियोगी *(प्रतियोग+ई) वि. (तत्.)* 1. प्रतियोगिता में भाग लेने वाला व्यक्ति या दल। competitor, participant 2. बराबर शक्तिवाला विरोधी या शत्रु। **पर्या.** प्रतिद्वंद्वी।

प्रतिरक्षण/प्रतिरक्षा *स्त्री. (तत्.)* सा.अर्थ **1.** बचाव, संरक्षण, हिफाजत। protection safeguard 2. रोगों आदि से बचाव precaution। **पारि.** अर्थ किसी विरोधी के आक्रमण से सुरक्षा या बचाव। **उदा.** भारत सरकार का प्रतिरक्षा मंत्रालय (अब रक्षा मंत्रालय) defence ministry

प्रतिरक्षी *वि. (तत्.)* 1. प्रतिरक्षा करने वाला। 2. रोगों आदि से बचाव करने वाला। **दे.** प्रतिरक्षा।

प्रतिरक्षीकरण *पुं. (तत्.)* **आयु.** रोग का पूर्ण प्रतिरोध। immunization

प्रतिरूप *पुं. (तत्.)* किसी अन्य जैसा रूप, व्यवहार, चाल ढाल, पहनावा आदि। **उदा.** आप मेरे लिए साक्षात् ईश्वर के प्रतिरूप हैं।

प्रतिरूपण *[प्रतिरूप+न] पुं. (तत्.)* 1. अभिनय के लिए किसी पात्र का रूप धारण करना। personation 2. **विधि.** धोखा देने की नीयत से किसी अन्य व्यक्ति के समान वस्त्र धारण करना, अन्तरण करना अथवा उसके नाम या पद को अपना नाम या पद बताना। impersonation

प्रतिरोध *पुं. (तत्.)* सा.अर्थ विरोध; रुकावट, बाधा। तक.अर्थ **1.** किसी प्रकार के आक्रमण को रोकने के लिए किया जाने वाला कार्य। 2. **भौ.** गतिमान वस्तु के वेग को घटाने की प्रवृत्ति, विशेषकर विद्युत प्रवाह को सीमित करने की पदार्थ की क्रिया जिसके कारण विद् युत शक्ति का ताप शक्ति में रूपातंरित हो जाता है। resistance

प्रतिरोधक *वि. (तत्.)* सा.अर्थ प्रतिरोध से संबंधित; 2. प्रतिरोधित करने वाला; बचाव करने वाला। **पुं.** मिश्रधातु के तार की कुंडली जो विद्युत-धारा को सीमित करने के लिए परिपथ में लगाई जाती है। **पर्या.** प्रतिरोधी। resistant

प्रतिरोधी *(तत्.)* सा.अर्थ **वि.** प्रतिरोध से संबंधित; 2. प्रतिरोध करने वाला। तक.अर्थ **पुं. आयु.** पदार्थ जो रोगकारक अणु जीवों की वृद् धि को रोक दे (आवश्यक नहीं कि यह पदार्थ अणुजीवों का नाश कर ही दे।) **जैसे:** कार्बोलिक अम्ल antiseptic

प्रतिरोपण *पुं. (तत्.)* 1. कृषि पाद को एक स्थान से उखाडक़र दूसरी जगह रोपना या लगाना। **जैसे:** धान का प्रतिरोपण। 2. बाग-पौधे की एक टहनी को तराश कर दूसरे पौधे के तराशे गए स्थान पर जोड़ना ताकि उस पौधे की नस्ल में सुधार हो जाए। **जैसे:** गुलाब के पौधे में प्रतिरोपण। 3. **आयु.** शल्य चिकित्सा द्वारा किसी जीवित व्यक्ति या शव के विच्छेदित अंग को किसी रोगी के शरीर में रोपना/लगाना। **जैसे:** यकृत (लीवर) या नेत्रगोलक का प्रत्यारोपण। transplantation

प्रतिलिपि *स्त्री. (तत्.)* हस्तलिखित, कार्बन पेपर, टापइराइटर अथवा इलैक्ट्रॉनिक उपकरण द्‌वारा किसी लेख, पुस्तक आदि की ज्यों की त्यों नकल। **पर्या.** अनुलिपि। duplicate copy

प्रतिवाद *पुं. (तत्.)* किसी अन्य के मत, विचार या दावे का खंडन करते हुए अपना मत या विचार प्रस्तुत। विलो. वाद

प्रतिवादी *वि./पुं. (तत्.)* **सा.अर्थ** प्रतिवाद करने वाला (व्यक्ति) **विधि.** वादी के दावे को स्वीकार न करते हुए उसके कथन का विरोध करते हुए अपना पक्ष प्रस्तुत करने वाला पक्षकार। contestant, defendant

प्रतिवेदन *पुं. (तत्.)* 1. किसी घटना का प्रस्तुत वृत्तांत। 2. किसी विचाराधीन विषय पर विशेषज्ञों की विस्तृत राय। 3. किसी भाषण, चर्चा, वाद-विवाद आदि का प्रकाशनार्थ तैयार किया गया विवरण। report

प्रतिशत *क्रि.वि. (तत्.)* **गणि.** हर सौ या सैकड़े के हिसाब से; प्रति सौ पर। **पुं.** सौवाँ भाग। **पर्या.** फीसदी। percent

प्रतिशतता *[प्रतिशत+ता] स्त्री. (तत्.)* सौ को आधारभूत संख्या मानकर गणना करने या किसी राशि का अंश ज्ञात करने का सूचक भाव (इसका प्रतीक % है)। percentage

प्रतिशब्द *पुं. (तत्.)* किसी शब्द के सामान्य अर्थ को ही सूचित करने वाला दूसरा शब्द। **पर्या.** पर्याय। equivalent, synonym

प्रतिशोध *पुं. (तत्.)* बदला लेने के विचार से किया जाने वाला कार्य। **पर्या.** बदला प्रतिकार। जीतने के लिए खेलना तो ठीक है किंतु प्रतिशोध की भावना से खेलना अच्छा नहीं माना जाता।

प्रतिश्याय *पुं. (तत्.)* **दे.** इंफ्लुएंजा। नजला, जुकाम का विकराल रूप।

प्रतिषेध *पुं. (तत्.)* सा.अर्थ मनाही, रोक, प्रतिबंध, निषेध। **विधि.** किसी कार्य के सामान्य जन-जीवन के लिए अनुचित मानते हुए उस पर लगाई गई कानूनी रोक। **पर्या.** प्रतिबंध। **जैसे:** सार्वजनिक स्थलों पर धूम्रपान और पॉलीथीन की थैलियों पर लगा प्रतिबंध।

प्रतिष्ठा *स्त्री. (तत्.) [प्रति+स्था]* 1. समाज में प्राप्त य प्रदत्त गौरवमय स्थान। **पर्या.** मान-मर्यादा, सम्मान, गौरव। **उदा.** यह मेरी प्रतिष्ठा का प्रश्न बन गया है। अब मैं इस काम को करके छोड़ूँगा। 2. किसी को श्रेष्ठ आसन पर बिठाना। **जैसे:** देवमूर्ति की प्रतिष्ठा। प्राण-प्रतिष्ठा।

प्रतिष्ठित *वि. (तत्.) (प्रतिष्ठा+इत, प्रति+स्थित)* व्यु.अर्थ किसी स्थान विशेष से अन्यत्र स्थित। सा.अर्थ **1.** स्थान विशेष पर स्थापित। **उदा.** मंदिर में शिवलिंग प्रतिष्ठित किया गया। 2. प्रतिष्ठा प्राप्त। **पर्या.** सम्मानित। **उदा.** डॉ. कलाम एक प्रतिष्ठित वैज्ञानिक हैं। **दे.** प्रतिष्ठा।

प्रतिस्पर्धा *स्त्री. (तत्.)* 1. एक-दूसरे से आगे निकल/बढ़ जाने की होड़। **पर्या.** प्रतियोगिता। 2. दो या दो से अधिक के बीच स्वस्थ मुकाबला जिसका परिणाम किसी की जीत और किसी की हार के रूप में सामने आता है। 3. **पारि.** एक ही जाति या विभिन्न जातियों के प्राणियों के बीच अनिवार्य आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए संघर्ष।

प्रतिस्पर्धी *[प्रतिस्पर्धा+ई] वि./पुं. (तत्.)* प्रतिस्पर्धा करने वाला खिलाड़ी, होड़ में लगा व्यक्ति; संघर्षरत प्राणी। **दे.** प्रतिस्पर्धा।

प्रतिहस्ताक्षर *पुं. (तत्.)* 1. किसी महत्त्वपूर्ण प्रलेख पर एक व्यक्ति के हस्ताक्षर के अलावा एक और व्यक्ति के हस्ताक्षर; 2. पहले से हो रहे

हस्ताक्षर की पुष्टि स्वरूप दूसरे व्यक्ति (वरिष्ठ अधिकारी) द्वारा किए गए हस्ताक्षर। counter-signature

प्रतिहस्ताक्षरित *(प्रतिहस्ताक्षर+इत) वि. (तत्.)* प्रतिहस्ताक्षर युक्त। **दे.** प्रतिहस्ताक्षर।

प्रतिहारी *पुं. (तत्.)* (प्राचीन काल में) राजाओं के महल में नियुक्त दरबान, द्वारपाल। chamber lain

प्रतिहिंसा *स्त्री. (तत्.)* हिंसा के विरोध में हिंसा; बैर का बदला बैरसे।

प्रतीक (चिह्न) *पुं. (तत्.)* दूसरों से भिन्नता दिखाने के लिए प्रयुक्त स्पष्ट पहचान चिह्न symbol इसके रूप हो सकते हैं-संप्रतीक emblem, शुभंकर maseot, गुंफाक्षर (मोनोग्राम) आदि। **पर्या.** 1. चिह्न, लक्षण, निशान। 2. किसी के स्थल पर प्रयुक्त होने वाली वस्तु जैसे पूजा के समय मूर्ति के स्थान पर सुपारी या अक्षत का प्रयोग। 3. किसी समाज सिद्धांत या तत्व का प्रतिनिधि। **उदा.** अंधकार अज्ञान का प्रतीक है; शेर शक्ति का प्रतीक है; कुतुबमीनार दिल्ली का प्रतीक है।

प्रतीकात्मक *[प्रतीक+आत्मक] वि. (तत्.)* 1. केवल प्रतीक के रूप में प्रयुक्त। **उदा.** साहित्य में प्रतीकात्मक प्रयोगों का बाहुल्य होता है।

प्रतीक्षा *स्त्री. (तत्.)* किसी काम के पूरा होने या किसी के आने की उत्सुकता के साथ राह देखने का भाव। **पर्या.** इंतजार, प्रत्याशा।

प्रतीक्षालय *[प्रतीक्षा+आलय] पुं. (तत्.)* वह कमरा या हॉल जहाँ भेंटकर्ता या यात्री नियत कार्य हेतु थोड़े समय के लिए प्रतीक्षा (इंतजार) करते हैं। **जैसे:** रेलवे प्रतीक्षालय। waiting room

प्रतीक्षासूची *स्त्री. (तत्.)* नौकरी, बस/रेल/हवाई यात्रा, उपभोग की वस्तु के लिए उपलब्ध रिक्तियों की पूर्ति हेतु बनी क्रमवार आरक्षण सूची में जुड़े कुछ अतिरिक्त नाम जिन्हें स्थान खाली रह जाने की स्थिति में समायोजित किया जा सके। **जैसे:** रेलवे टिकटों की आरक्षण-सूची के लिए बनी प्रतीक्षासूची। waiting list

प्रतीत होना *अक्रि.* लगना-ज्ञात, विदित, जाना हुआ। गहराई में न जाकर ऊपर-ऊपर से दिखना, लगना। **उदा.** ऐसा प्रतीत होता है कि वह अब नहीं आएगा।

प्रत्यंचा *स्त्री. (तत्.)* धनुष की डोरी। **पर्या.** धनुर्ज्या।

प्रत्यक्ष *वि. (तत्.)* व्यु.अर्थ जो आँखों के सामने हो और साफ-साफ दिखाई दे। सा.अर्थ जिसका ज्ञान इंद्रियों से हो यानी जिसके लिए अन्य प्रमाण की आवश्यकता न हो। ('प्रत्यक्षं कि प्रमाणम्') सा.पर्या. स्पष्ट, सरल। **जैसे:** प्रत्यक्ष उदाहरण, प्रत्यक्ष कथन; प्रत्यक्ष कर। **विलो.** अप्रत्यक्ष, परोक्ष।

प्रत्यक्षदर्शी *वि. (तत्.)* जिसने कोई घटना अपनी आँखों से देखी हो। **पर्या.** चश्मदीद गवाह (आइ-विटनेस) **उदा.** अदालती सुनवाई में प्रत्यक्षदर्शी की गवाही को महत्त्व दिया जाता है। **दे.** प्रत्यक्ष।

प्रत्यर्पण *[प्रति+अर्पण] पुं. (तत्.)* अंत:विधि किसी देश के अपराधी के किसी अन्य देश में जा छिपने पर उस अपराधी को संधि की शर्तों के अनुसार उसी देश को, जहाँ उसने अपराध किया हो, लौटा देने की प्रक्रिया। extradition

प्रत्याक्रमण *[प्रति+आक्रमण] पुं. (तत्.)* आक्रमण की प्रतिक्रिया स्वरूप किया गया आक्रमण। counter-attack

प्रत्यारोप *[प्रति+आरोप] पुं. (तत्.)* जिस पर आरोप लगा हो, उसके द्वारा आरोपकर्ता पर किया गया जवाबी आरोप। (काउंटर चार्ज) **उदा.** लड़ाई-झगड़ों में दोनों पक्षों ने एक-दूसरे पर आरोपों-प्रत्यारोपों की झड़ी लगा दी। counter charge

प्रत्याशा *[प्रति+आशा] स्त्री. (तत्.)* पहले से लगाया गया अनुमान, पहले से की गई आशा या उम्मीद। **उदा.** मेरी प्रत्याशा के अनुसार ही चुनाव का परिणाम निकला-इसकी मुझे खुशी है। anticipation

प्रत्याशित *[आशा+इत] वि. (तत्.)* 1. जो किसी अनुकूल परिणाम, फल, प्राप्ति, सहयोग आदि की आशा से युक्त हो। 2. आशा के अनुरूप। अपेक्षित। **जैसे:** उसके परिश्रम को देखते हुए यही परिणाम प्रत्याशित था।

प्रत्याशी *[प्रति+आशा प्रत्याशा+ई] पुं. (तत्.)* व्यक्ति जो वह पाने की आशा लगाए हो, जिसकी उसने माँग की है या जिसके लिए उसने आवेदन किया है। **पर्या.** अभ्यर्थी, उम्मीद्वार candidate

प्रत्यास्थता *स्त्री. (तत्.)* लचीला। खींचकर छोड़ देने पर पूर्व स्थिति में आने वाला। **भौ.** बाह्य बल के लगने पर विकृत हुए पिंड से विकार उत्पन्न करने वाले कारकों (बल) के हटाए जाने पर ठोस का वापस अपनी पूर्वस्थिति पा लेने का गुणधर्म। elasticity

प्रत्युत्तर *[प्रति+उत्तर] पुं. (तत्.)* उत्तर के रूप में प्राप्त पत्र का दिया गया या दिया जाने वाला पुन: उत्तर। rejoinder

प्रत्यूष *पुं. (तत्.)* प्रात:काल, तडक़ा, प्रभात, अल-सुबह।

प्रत्येक *वि. (तत्.) [प्रति+एक]* एक-एक। दो या अधिक के समूह में से हर-एक। **उदा.** परमात्मा का वास प्रत्येक व्यक्ति में है अर्थात् हर व्यक्ति में है।

प्रथम कुलिक *वि./पुं. (तत्.)* (गुप्त साम्राज्य की स्थानीय प्रशासनिक व्यवस्था के प्रसंग में प्रयुक्त शब्द जो) नगर के सबसे प्रसिद्ध परिवार का मुखिया।

प्रथम नाम *पुं. (तत्.)* व्यक्ति का मुख्य नाम जिसे प्राय: कुलनाम से पहले रखने की प्रथा है। **जैसे:** रविप्रकाश मलहोत्रा में 'रविप्रकाश'।

प्रथम *वि. (तत्.)* 1. गिनती में सबसे पहले आने वाला, पहला। 2. सर्वश्रेष्ठ, सबसे अच्छा।

प्रथमोपचार *[प्रथम+उपचार] पुं. (तत्.)* **दे.** प्राथमिक उपचार। first aid

प्रथा *स्त्री. (तत्.)* हर समाज में बहुत समय से चली आ रही परंपरा। **पर्या.** रीति-रिवाज। custom, practice

प्रदक्षिण-पथ *पुं. (तत्.)* प्रदक्षिणा का मार्ग। **उदा.** सूर्य के चारों ओर घूमने वाली पृथ्वी का प्रदक्षिणा पथ। **दे.** प्रदक्षिणा पथ गोलाकार न होकर अंडाकार होता है।

प्रदक्षिणा *स्त्री. (तत्.)* किसी मूर्ति, केन्द्र आदि के चारों ओर इस प्रकार घूमना कि वह मूर्ति, केंद्र आदि घूमने वाले के दाहिने हाथ की ओर रहे; घड़ी की सुइयों की दिशा में परिक्रमा करना। **उदा.** कुछ उपग्रह अपने ग्रह की वामावर्त परिक्रमा करते हैं तो कुछ दक्षिणावर्त। **तु.** परिक्रमा=दक्षिणावर्त या वामावर्त (दाहिनी या बाईं किसी भी ओर से) गोल-गोल घूमना।

प्रदर्शक *वि./पुं. (तत्.)* 1. किसी कला, कौशल मार्ग आदि का प्रदर्शन करने वाला व्यक्ति। demonstrator

प्रदर्शन *पुं. (तत्.)* 1. दिखलाना। **जैसे:** किसी कला का प्रदर्शन। 2. असंतोष प्रकट करने के लिए लोकतंत्रात्मक विधि के अनुसार सामूहिक नारेबाजी। demonstration

प्रदर्शनकारी *[प्रदर्शन+कारी] वि./पुं. (तत्.)* प्रदर्शन करने वाला व्यक्ति या समूह। **दे.** प्रदर्शन।

प्रदर्शनी *[प्रदर्शन+ई] स्त्री. (तत्.)* किसी कला, कौशल या उत्पाद आदि को प्रदर्शित करने के लिए किया गया सार्वजनिक आयोजन। exhibition **दे.** प्रदर्शन।

प्रदान *पुं. (तत्.)* 1. किसी को कुछ देना। **विलो.** आदान।

प्रदीप्त पिंड *पुं. (तत्.)* **खगो.** प्रकाश उत्सर्जित करने वाले आकाशीय पिंड; वे आकाशीय पिंड जिनमें अपना प्रकाश हो। **पर्या.** तारा। (तारा)

प्रदीप्ति वृत्त *पुं. (तत्.)* **भू.** भूमंडल पर दिन-रात को विभाजित करने वाला वृत्त। **टि.** पृथ्वी अपने अक्ष पर एक चक्कर पूरा करने में लगभग 24 घंटे लगाती है। पृथ्वी के जिस भाग पर सूर्य की रोशनी पड़ती है, वहाँ दिन होता है और शेष भाग में रात होती है।

प्रदूषक *वि./पुं. (तत्.)* जल, मृदा या वायुमंडल में विसर्जित हानिकारक रसायन या अपशिष्ट पदार्थ जो पर्यावरण को दूषित करते हैं। pollutor

प्रदूषण *पुं. (तत्.)* विविध प्रकार के मानवीय कार्यकलापों, उपोत्पादों के परिणामस्वरूप पर्यावरण में होने वाला बुरा या घातक प्रभाव। **जैसे**: वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण आदि pollution

प्रदूषणकारी *वि. (तत्.)* प्रदूषण उत्पन्न करने वाले (तत्व)। **दे.** प्रदूषण।

प्रदेश *पुं. (तत्.)* 1. किसी देश का वह प्रशासनिक अथवा भौगोलिक बड़ा भाग जो भाषा, रहन-सहन, शासन-पद्धति आदि में से किसी या किन्हीं कारणों की दृष्टि से औरों से भिन्न और स्वतंत्र माना जाता हो।

प्रधान *वि. (तत्.)* समूह में पद, प्रतिष्ठा, वय आदि-आदि में पहला समूह का मुख्य। principal पुं. *(तत्)* 1. मुखिया, सरदार।

प्रधानता *[प्रधान+ता] स्त्री. (तत्.)* प्रधान होने का भाव; प्रमुखता। **दे.** प्रधान।

प्रधार *स्त्री. (तत्.)* किसी स्रोत से निकल रहे तरल की धारा। jet

प्रपंच *पुं. (तत्.)* 1. विश्व और उसमें व्याप्त माया, जाल/जंजाल। **उदा.** मेरी माताजी सारे दिन गृहस्थी के प्रपंच में उलझी रहती हैं। 2. छल-कपट।

प्रपत्र *पुं. (तत्.)* 1. वह छपा हुआ कागज जिसमें पंक्ति के आरंभ में विषय के शीर्षक दिए होते हैं और उनके आगे स्थान खाली छोड़ा हुआ होता है जिनमें आवेदक संगत ब्यौरा भरकर आगे की कार्रवाई के लिए प्रस्तुत करता है। (फॉर्म) 2. कोई भी औपचारिक प्रलेख। **जैसे:** चैक**,** विनिमय-पत्र, संविदा आदि। instrument

प्रपात *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ 1. ऊपर से नीचे तेजी से पतन या गिरना। **भू.** 2. पहाड़ से निकलने वाली जल की वह धारा जो बहुत ऊँचाई से नीचे गिरती है। **पर्या.** झरना, जलप्रपात। **उदा.** भारत का सबसे बड़ा जलप्रपात कर्नाटक में भद्रावती का 'जोगफॉल' है। waterfall

प्रपितामह *पुं. (तत्.)* पिताजी के दादाजी या दादाजी के पिताजी, परदादा। great grand father

प्रपितामही *स्त्री. (तत्.)* पिताजी के दादीजी, दादीजी के माताजी, परदादी। great grand mother

प्रपौत्र *पुं. (तत्.)* पोते का पुत्र, बेटे का पौत्र great grand son

प्रपौत्री *स्त्री. (तत्.)* पोते की पुत्री, बेटे का पौत्री great grand daughter

प्रफुल्ल *वि. (तत्.)* 1. पूरी तरह खिला हुआ, पूर्ण विकसित। **जैसे:** प्रफुल्ल गुलाब, प्रफुल्ल कमल। 2. प्रसन्नता से युक्त, मुस्कराता हुआ। **जैसे:** 1. वह प्रफुल्ल मन से मुझसे मिला। 2. उस उत्सव में वह प्रफुल्ल वदन सबका स्वागत कर रहा था।

प्रफुल्लित *वि. (तत्.)* 1. खिला हुआ, विकसित। **जैसे:** प्रफुल्लित कमल। 2. प्रसन्न। **जैसे:** प्रफुल्लित बदन/चेहरा।

प्रबंध *पुं. (तत्.)* व्यु.अर्थ अच्छी तरह से बँधा हुआ। सा.अर्थ शोधकार्य के रूप में विश्वविद्यालय या उच्च शिक्षण संस्था की डिग्री प्राप्त करने के लिए प्रस्तुत कई भागों में बँटा विस्तृत ग्रंथाकार मौलिक निबंध। (थीसिस) 2. किसी भी कार्य को पूरा करने के लिए अपनाई गई समुचित व्यवस्था। **पर्या.** व्यवस्था। 3. काव्य का एक प्रकार जिसमें किसी उदात्तचरित को नायक/नायिका बनाकर उसके जीवन से संबंधित घटनाओं का सरस, कलात्मक और सुगठित चित्रण किया जाता है। **उदा.** रामचरित मानस हिंदी का एक सर्वोत्कृष्ट प्रबंध काव्य है।

प्रबंधक *पुं. (तत्.)* 1. प्रबंध करने वाला, प्रबंधकर्ता manager, सुविचारित व्यवस्था इंतजाम करने वाला organiser। **दे.** प्रबंधन।

प्रबंधन *[प्रबंध+अन] पुं. (तत्.)* उपलब्ध संसाधनों का इष्टतम उपयोग सुनिश्चित करने की समन्वित व्यवस्था। management

प्रबल *वि. (तत्.)* 1. अपेक्षाकृत अधिक बलवान। **जैसे:** प्रबल शत्रु। 2. उग्र, तेज, प्रचंड; भारी। **उदा.** प्रबल तूफान, प्रबल वर्षा; प्रबल समर्थक आदि।

प्रबलता *स्त्री. (तत्.)* प्रबल होने का गुणधर्म, स्थिति या भाव। **पर्या.** प्राबल्य।

प्रबुद्ध *वि. (तत्.)* व्यु. अर्थ जागा हुआ, होश में आया हुआ। enlightened सा.अर्थ बुद्धिमान, ज्ञानी, समझदार। **जैसे:** प्रबुद्ध साहित्यकार।

प्रभा *स्त्री. (तत्.)* 1. चमक, आभा, दीप्ति। **जैसे:** विद्युत्प्रभ। 2. प्रकाश, जगमगाहट; चौंध **जैसे:** सूर्य प्रभा। 3. रश्मि, किरण। **जैसे:** चंद्र की प्रभा मन को आनंदित करने वाली होती है। 4. तेज। **जैसे**: उसका मुख अलौकिक प्रभा से युक्त है।

प्रभाज *पुं. (तत्.)* ऐसी वास्तविक संख्या जो पूर्ण न हो, भिन्न। **जैसे:** 107, 3/4**,** 5/10 आदि।

प्रभात *पुं. (तत्.)* पूर्व में निकले सूर्य प्रकाश का सभी दिशाओं में फैलना प्रारंभ होने का काल। **पर्या.** प्रात:काल, सबेरा, तडका, भोर। **उदा.** हमने हरिद्वार में प्रभात में पहला गंगास्नान किया।

प्रभात फेरी *स्त्री. (तत्.+फेरना)* सूर्योदय से पूर्व लोगों का दल बनाकर गीत/भजन गाते हुए अथवा नारे लगाते हुए बस्ती में घूमने का कार्य।

प्रभाती *स्त्री. [प्रभात+ई]* प्रात:काल गाया जाने वाला गीत।

प्रभार *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ विशेष भार। तक.अर्थ **1.** (प्रशा.) किसी पद का कार्यभार। (चार्ज) 2. सेवा प्रदान करने के बदले उगाहा गया शुल्क। charge

प्रभारी *वि./पुं. (तत्.)* जिस पर किसी पद का कार्य भार हो; जिसे सौंपा गया दायित्व निभाना हो। incharge

प्रभाव *पुं. (तत्.)* 1. किसी वस्तु या क्रिया का होने वाला परिणाम या फल। **पर्या.** असर, परिणाम। affect 2. शक्ति, आतंक, सम्मान, अधिकार आदि का अन्यों पर पड़ने वाला परिणाम जिससे उनके जीवन, कार्यों आदि में बदलाव आ जाता है। influence

प्रभावशाली *वि. (तत्.)* 1. जिसका दूसरों पर वाणी, गुण आदि की दृष्टि से बहुत प्रभाव पड़ता हो। प्रभाववाला, असरदार। **जैसे:** वह इतना प्रभावशाली है कि वह मंत्रियों से भी अपना काम करवा लेता है। 2. तेजस्वी; अद्‌भुत। 3. उत्तम परिणाम देने वाला, असरदार। **जैसे:** यह दवा अत्यंत प्रभावशाली है।

प्रभावित *वि. (तत्.)* प्रभाव के अधीन, जिस पर प्रभाव पड़ा हो।

प्रभावी *वि. (तत्.)* प्रभाव डालने वाला, जिसका दूसरे पर प्रभाव पड़ा हो। influential, dominant

प्रभु *पुं. (तत्.)* 1. स्वामी, अधिपति; संपूर्ण सत्ता संपन्न। 2. ईश्वर, परमात्मा।

प्रभुता *स्त्री. (तत्.)* 1. संपूर्ण सत्ता संपन्न यानी स्वामी होने का भाव, स्वामित्व। 2. सामर्थ्य, शक्ति, शासन।

प्रभुसत्ता *स्त्री. (तत्.)* **राज.** राज्य की सर्वोपरि शक्ति (जिस पर किसी का अंकुश नहीं होता) sovereignty

प्रमाण *पुं. (तत्.)* 1. वह कथन या तत्त्व जिससे कोई बात सिद्ध होती है। **पर्या.** सबूत। evidence2. वह कथन जिसे सभी स्वीकार करें।

प्रमाण-पत्र *पुं. (तत्.)* किसी प्राधिकारी, संस्था आदि द्वारा जारी वह लिखित सूचना कि उसमें उल्लिखित व्यक्ति और उससे संबंधित बातें हस्ताक्षरकर्ता की जानकारी के अनुसार तथ्यत: सही हैं। 2. कोई परीक्षा उत्तीर्ण करने पर व्यक्ति को दिया जाने वाला योग्यता-पत्र। certificate

प्रमुख *वि. (तत्.)* 1. पहला, आगे का। 2. प्रधान, मुख्य। **जैसे:** प्रमुख वक्ता। **पुं.** संस्था का शीर्षस्थ अधिकारी। **जैसे:** शासन प्रमुख। head of government, राज्य प्रमुख head of state, नगर प्रमुख (मेयर)

प्रमुखता *स्त्री. (तत्.)* प्रमुख होने की अवस्था/भाव। **पर्या.-** प्रधानता, मुख्यता। **उदा.** 1. इस विद्यालय में विज्ञान के अध्ययन की प्रमुखता है। 2. चुनाव के लिए खड़े उम्मीदवार ने हमारे क्षेत्र की बिजली की समस्या पर प्रमुखता से ध्यान देने का आश्वासन दिया।

प्रमेय *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ प्रमाणित किए जाने या मापे जाने योग्य। तक.अर्थ. **गणि.** 1. वह व्यापक कथन (या नियम) जो सिद्‌ध किया जा चुका हो और सूत्र या प्रतीक के रूप में प्रयुक्त हो। **जैसे:** पाइथागोरस प्रमेय। 2. **ज्या.** कोई साध्य जिसे सिद्‌ध करना अभिप्रेत हो। theorem

प्रमोचन *पुं. (तत्.)* **जीव.** प्राणी द्‌वारा अपने जीवन काल में पक्व देह खंडों का परित्याग। **जैसे:** अधिकतर फीता कृमियों में।

प्रयत्न *पुं. (तत्.)* 1. किसी कार्य को पूरा करने के लिए किया गया शारीरिक और मानसिक श्रम। **पर्या.** प्रयास चेष्टा, कोशिश। effort, attempt। 2. **व्या.** (उच्चारण प्रयत्न का संक्षिप्त रूप) वर्णों के उच्चारण के समय मुख विवर, जिह्वा आदि की विभिन्न स्थितियाँ। manner of articulation

प्रयाण [प्र+यान] *पुं. (तत्.)* 1. एक स्थान से दूसरे स्थान को जाना। **पर्या.** प्रस्थान, यात्रा, गमन। 2. युद्‌ध के लिए प्रस्थान करना। **पर्या.** कूच, चढाई। **जैसे:** प्रयाणगीत (मार्च) 3. मृत्यु। **जैसे:** महाप्रयाण।

प्रयास *पुं. (तत्.)* किसी कठिन कार्य को शुरू करके उसे अंतिम परिणाम तक पहुँचाने का प्रयत्न; (भले ही उसमें सफलता मिले या न मिले)। प्रयत्नपूर्वक किया गया कार्य। **पर्या.** प्रयत्न। **उदा.** उनका यह प्रयास सराहनीय है।

प्रयुक्त *वि. (तत्.)* 1. जिसका प्रयोग हो चुका या किया जा चुका हो; अथवा प्रयोग होता हो। 2. जो काम में लाया जाता या लाया गया हो।

प्रयोक्ता *वि. /पुं.(तत्.)* प्रयोग (उपयोग) करने वाला, प्रयोगकर्ता। कार के प्रयोक्ताओं को चाहिए कि वे गाड़ी गतिसीमा को ध्यान में रखते हुए चलाएँ।

प्रयोग *पुं. (तत्.)* 1. किसी वस्तु को कार्य में लाए जाने का भाव। **पर्या.** व्यवहार, इस्तेमाल use **उदा.** असभ्य भाषा का प्रयोग वर्जित है। 2. बल, अधिकार आदि का व्यवहार। exercise **उदा.** प्रधानाध्यापक ने अपने अधिकारों का प्रयोग करते हुए नकल करते छात्र को परीक्षा से निष्कासित कर दिया। 3. परीक्षा, जाँच आदि के लिए क्रियात्मक रूप देना या प्रत्यक्ष करके दिखाना। experiment

प्रयोगशाला *स्त्री. (तत्.)* विज्ञान संबंधी प्रयोग करने के लिए संपूर्ण सुविधाओं से युक्त कमरा या भवन। laboratory **उदा.** रसायन (शास्त्र) का व्यावहारिक अध्ययन करने के लिए हमारे विद्यालय में प्रयोगशाला बनी हुई है।

प्रयोगात्मक [प्रयोग+आत्मक] *वि. (तत्.)* 1. प्रयोग संबंधी। 2. व्यावहारिक। **उदा.** खबर है कि आज वैज्ञानिक कुछ नवनिर्मित औषधियों का प्रयोगात्मक परीक्षण करेंगें।

प्रयोजन *पुं. (तत्.)* किसी काम को करने का उद्देश्य। **पर्या.** अभिप्राय, मतलब। purpose **उदा.** आपके यहाँ पधारने/आने का क्या प्रयोजन है?

प्रयोज्यता *स्त्री. (तत्.)* प्रयोग अथवा उपयोग किए जाने की योग्यता।

प्रलय *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ. विशेष रूप से लय हो जाना, समाप्त या नष्ट हो जाना। सा.अर्थ. वह (समय) जब संपूर्ण सृष्टि अपने कारण रूप, प्रकृति में विलीन हो जाती है यानी जल में डूब जाती है। **उदा.** हर प्रलय के बाद पुन: नई सृष्टि होती है।

प्रलाप *पुं. (तत्.)* उन्मत्तावस्था, शोक की स्थिति आदि में बेलगाम और बेसिर पैर की कही गई बातें। **पर्या.** बकवास। **उदा.** पुत्र की दुर्घटना में मृत्यु हो जाने पर उसकी माँ का प्रलाप सुनकर सबका मन द्रवित हो गया।

प्रलोभन *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ विशेष रूप से लालच देना या लुभाना। सा.अर्थ लालच दिखाकर किसी को अनुचित कार्य करने के लिए उकसाने की वृत्ति। allurement, temptation

प्रवक्ता *पुं. (तत्.)* 1. राजनीतिक दल अथवा किसी भी संस्था के नीतिगत निर्णय को सार्वजनिक कर सकने के लिए अधिकृत व्यक्ति। spokesperson 2. किसी विश्वविद्यालय के त्रिस्तरीय अध्यापक वर्ग में से कनिष्ठ वर्ग का शिक्षक। lecturer **तु.** अधिवक्ता।

प्रवचन *पुं. (तत्.)* मुख्यत: किसी धार्मिक विषय पर श्रोताओं के सम्मुख पीठासीन व्यक्ति का नीतिपरक और उपदेशात्मक व्याख्यान। **उदा.** शारदीय नवरात्र के अवसर पर बिड़ला मंदिर में होने वाले। श्रीमद्भगवत् विषयक प्रवचन का मैं नियमित श्रोता हूँ।

प्रवर समिति *स्त्री. (तत्.)* **विधि.** संसद् में विधिवत् चर्चा आरंभ होने से पहले किसी विधेयक पर विस्तापूर्वक विचार कर लेने के लिए लोकसभा के अध्यक्ष द्वारा नियुक्त सांसदों की समिति select committee

प्रवर्तक *वि./पुं. (तत्.)* सा.अर्थ कोई नया काम शुरू करने वाला व्यक्ति। **जैसे:** आर्य समाज के प्रवर्तक स्वामी दयानंद सरस्वती, अद्वैत दर्शन के प्रवर्तक आदि शंकराचार्य। propounder **भौ.** बिजली की मोटर, ट्यूब लाइट आदि के प्रवाह को आरंभ कर अभीष्ट तीव्रता तक पहुँचाने का काम करने वाला उपकरण। starter **वाणि.** किसी उद्यम विशेष की कल्पना कर तत्संबंधी कंपनी की स्थापना के लिए आवश्यक धनराशि जुटाने, कंपनी के पंजीकरण की औपचारिकताएँ पूरी करने वाला व्यवसायी। promotor

प्रवर्तन *पुं. (तत्.)* 1. किसी कार्य का आरंभ, शुरू करना; लागू करना, लागू होना। 2. **विधि.** किसी विधि, व्यवस्था, प्रक्रिया आदि का अधिकारपूर्वक लागू किया जाना enforcement **उदा.** दहेज प्रथा कानून के प्रवर्तन के लिए सरकार ने ठोस प्रस्ताव रखे।

प्रवर्ध *पुं. (तत्.)* **जीव.** बाहर की ओर निकला हुआ भाग। outgrowth

प्रवर्धक *वि. पुं. (तत्.)* सा.अर्थ नि. (आवाज) बढ़ाने वाला। **भौ.** तंरग के लक्षण में बिना परिवर्तन किए किसी सिगनल (जैसे रेडियों सिगनल) की प्रबलता में वृद्धि करने वाला उपकरण। amplifier

प्रवर्धन *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ विशेष रूप से बढ़ाने की क्रिया या भाव। **भौ.** किसी सिगनल का सामर्थ्य।

जैसे: धारा, वोल्टता आदि को बढ़ाने का प्रक्रम। amplification

प्रवाचक *पुं. (तत्.)* प्रवचन करने वाला; शास्त्रीय कथनों की व्याख्या करने वाला।

प्रवास *पुं. (तत्.)* 1. अपना देश छोडक़र (स्थायी/अस्थायी रूप में) अन्य देश में जा बसना। 2. **प्राणि.** प्रतिवर्ष ऋतु परिवर्तन के साथ ही मुख्यत: पक्षियों और मछलियों का अपने शीत प्रदेश से सामूहिक रूप में उष्ण प्रदेश में गमन और वहाँ प्रजनन, कालयापन के बाद मौसम के अनुकूल हो जाने पर अपने मूल स्थान पर लौट आना। 3. **शिक्षा.** एक शिक्षण संस्था से मुक्त होकर दूसरी शिक्षण संस्था में प्रवेश लेना। migration

प्रवासी पक्षी *पुं. (तत्.)* पक्षियों का वह समूह जो नियमित रूप से अपने देश से शीतकाल शुरू होने से पहले ही उड़कर किसी सुदूर देश में चले आते हैं और वहाँ प्रजनन आदि से निबट कर ग्रीष्मकाल शुरू होने के साथ ही अपने देश लौट जाते हैं। migratory birds

प्रवाह *पुं. (तत्.)* 1. जल का (तेज) बहाव। flow 2. किसी कार्य का लगातार होना। 3. बहते हुए पानी में कोई वस्तु बहाना। **जैसे:** अस्थियों का या देव प्रतिमाओं का प्रवाह। immersion

प्रवाहित *वि. (तत्.)* बहाया हुआ। **दे.** प्रवाह।

प्रविधि *स्त्री. (तत्.)* कुशलतापूर्वक कार्य करने की विधि, तकनीक। technique

प्रविशेषण *पुं. (तत्.)* **व्या.** विशेषण का विशेषण। **जैसे:** बहुत बड़ा, बहु प्रचलित।

प्रविष्ट *वि. (तत्.)* 1. भवन आदि में जिसका प्रवेश हो गया हो, अंदर गया हुआ। 2. जिसे किसी संस्था विद्यालय आदि में पढ़ाई के लिए दाखिला मिल गया हो। **जैसे:** इस वर्ष इस विद्यालय में दो सौ छात्रों को प्रविष्ट किया गया है। 3. दर्ज/पंजीकृत-उपस्थिति रजिस्टर में सभी छात्रों के नाम प्रविष्ट कर लिए गए हैं।

प्रवीण *वि. (तत्.)* व्यु.अर्थ वीणा वादन में दक्ष। सा.अर्थ अच्छा जानकार, किसी कार्य में होशियार, कुशल, निपुण आदि। efficient

प्रवृत्त *वि. (तत्.)* 1. आरंभ हुआ, आरंभ किया हुआ; लागू हुआ, लागू किया गया; लगा हुआ। **जैसे:** प्रवृत्त नियमावली; अध्ययन में प्रवृत्त।

प्रवृत्ति *स्त्री. (तत्.)* मन का किसी विषय आदि के प्रति झुकाव, सांसारिक वस्तुओं, कार्यों आदि के प्रति, लगाव। **विलोम.** निवृत्ति।

प्रवेधन *पुं. (तत्.)* कूँआ खोदने, पेट्रोलियम, गैस आदि खनिज पदार्थों को बाहर निकालने के लिए मशीनों की सहायता से गहरी खुदाई करने का काम। drilling

प्रवेशपत्र *पुं. (तत्.)* किसी स्थान, संस्थान में अथवा परीक्षा आदि के लिए प्रवेश करने के लिए दिया गया अनुमति-पत्र। admission card

प्रशंसक *वि. (तत्.)* प्रशंसा करने वाला। **दे.** प्रशंसा।

प्रशंसनीय *वि. (तत्.)* प्रशंसा के योग्य। **दे.** प्रशंसा।

प्रशंसा *स्त्री. (तत्.)* किसी वस्तु व्यक्ति या कार्य इत्यादि के गुणों या अच्छाइयों का आदरपूर्वक कथन। **पर्या.** बड़ाई, तारीफ। **विलो.** निंदा।

प्रशस्त *वि. (तत्.)* 1. जिसकी प्रशंसा या तारीफ की गई हो। प्रशंसित, 2. विकसित अर्थ लंबा-चौड़ा और साफ-सुथरा। broad **जैसे:** प्रशस्त पथ।

प्रशस्ति *स्त्री. (तत्.)* सा.अर्थ की गई प्रशंसा, या तारीफ स्तुति, गुणगान आदि। तक.अर्थ 1. राजाओं की प्रशंसा में ग्रंथों, ताम्रपत्रों, शिलालेखों आदि में लिखे हुए लेख, श्लोक आदि।, विरुदावलि। eulogy **जैसे:** राजप्रशस्ति महाकाव्य। 2. पराक्रम, अदम्य साहस, विशिष्ट सेवा अथवा संबंधित क्षेत्र में असाधारण योग्यता या योगदान के लिए सैनिक, खिलाड़ी, अध्यापक आदि की उपलब्धियों का औपचारिक अवसर विशेष पर पढ़ा जाना। **जैसे:** 26 जनवरी के अवसर पर सैनिकों तथा सेवानिवृत्ति के अवसर पर अध्यापकों की प्रशस्ति। citation

प्रशस्ति-पत्र *पुं. (तत्.)* वह आलेख जिसमें किसी व्यक्ति के असाधारण गुणों या कार्यों का प्रशंसात्मक वर्णन किया जाता है। **टि.** सम्मान व्यक्त करने के लिए प्रशस्ति-पत्र दिए जाते हैं। **दे.** प्रशस्ति।

प्रशस्य *वि. (तत्.)* जो प्रशंसा के काबिल हो। प्रशंसनीय, प्रशंसा-योग्य, स्तुत्य।

प्रशांत महासागर *पुं. (तत्.)* पैसेफिक ओशन के लिए प्रयुक्त हिंदी पर्याय जो मौटे तौर पर एशिया तथा आस्ट्रेलिया के पूर्वी तटों से लेकर उत्तरी और दक्षिणी अमेरिका के पश्चिमी तटों तक फैला सबसे बड़ा महासागर है। pacific ocean

प्रशालक *पुं. (तत्.)* व्यक्ति जो अयस्क/धातु को गलाकर अलग-अलग आकार में इस्पात आदि तैयार करने का काम करता है।

प्रशासन *पुं. (तत्.)* 1. किसी राष्ट्र, राज्य, नगर, संस्था आदि के मूल उद्देश्यों को पूरा करने के लिए विहित विधि (नियमों) के अधीन तत्संबंधी कर्त्तव्यों व अधिकारों की सुरक्षा के साथ-साथ उन्हें कार्यरूप में परिणित करने की क्रिया-विधि और व्यवस्था। administration 2. किसी देश की कार्यपालिका **जैसे:** अमेरिका में ओबामा प्रशासन।

प्रशासनिक *(प्रशासन+इक) वि. (तत्.)* प्रशासन से संबंधित। **जैसे:** प्रशासनिक शब्दावली। **दे.** प्रशासन।

प्रशिक्षक *वि./पुं. (तत्.)* किसी व्यावहारिक या प्रायोगिक शिक्षा पद्धति से या नियमित रूप से दी जाने वाली शिक्षा। 1. किसी व्यवसाय, कला-कौशल आदि की क्रियात्मक शिक्षा देने वाला विशेषज्ञ। trainer खेल की सही तकनीक सिखाने और उसका अभ्यास कराने वाला विशेषज्ञ। coach **तु.** शिक्षक।

प्रशिक्षण *पुं. (तत्.)* किसी व्यवसाय, कला-कौशल आदि की क्रियात्मक शिक्षा। training

प्रशिक्षणार्थी *[प्रशिक्षण+अर्थी] वि./पुं. (तत्.)* प्रशिक्षण प्राप्त करने वाला व्यक्ति। trainer **तु.** शिक्षण।

प्रशिक्षित *वि. (तत्.)* जिसे प्रशिक्षण मिल चुका हो। **दे.** प्रशिक्षण। trained

प्रशिक्षु *वि. (तत्.)* जो प्रशिक्षण लेना चाहता हो जिसने प्रशिक्षण लेना शुरू ही किया है। apprentice

प्रशीतन *पुं. (तत्.)* प्रौद्योगिकी का प्रयोग करते हुए वस्तुओं को परिवेश की तुलना में ठंडा करने, ठंडा बनाए रखने की प्रविधि (ताकि वे बिगड़े नहीं)। refrigeration

प्रशीतित्र *[प्रशीतित (प्रशीतन+यंत्र=मध्यम वर्णलोप के बाद] पुं. (तत्.)* भोज्य वस्तुओं को प्रशीतित (ठंडा) कर अधिक काल तक सुरक्षित रखने के लिए निर्मित मशीन युक्त अलमारी। फ्रिज refrigerator

प्रश्नकाल *पुं. (तत्.)* संसद तथा विधानमंडलों की प्रत्येक बैठक का पहला घंटा जब सदस्य मंत्रियों से उनके विभागों से संबंधित प्रशन पूछते हैं तथा मंत्रिगण उनका उत्तर देते हैं। question hour

प्रश्नमंच *पुं. (तत्.)* प्रतियोगिता का एक प्रकार जिसमें एक स्थान पर एकत्रित प्रतियोगियों से प्रश्न पूछे जाते हैं और प्रतियोगी को उनके उत्तर निर्धारित समय में तत्काल देने होते हैं। quiz competition **उदा.** आज विद्यालय में खेल से संबंधित प्रश्नमंच प्रतियोगिता का आयोजन हुआ।

प्रश्नवाचक *वि. (तत्.)* प्रश्न का संकेत करने वाला। interrogative **उदा.** प्रश्नवाचक चिह्न (?) प्रश्नवाचक चेहरा आदि।

प्रश्रय *पुं. (तत्.)* अच्छी प्रकार से दिया गया सहारा; आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए प्राप्त समर्थन। patronage

प्रश्वास *पुं. (तत्.)* बाहर की ओर छोड़ा गया श्वास। **विलो.** श्वास।

प्रसंग *पुं. (तत्.)* 1. उपयुक्त संयोग, अवसर, मौका। 2. प्रकरण, अध्याय, कथा का संबंधित अंश। 3. विषय का स्वरूप और परंपरा। context

प्रसंगानुकूल *[प्रसंग+अनुकूल] वि. (तत्.)* 1. परिस्थिति और संदर्भ के अनुसार जो उचित हो। 2. विवेच्य विषय के अनुरूप। **उदा.** इस ऐतिहासिक विषय की उन्होंने प्रसंगानुकूल विवेचना की। 2. छात्र किसी पद्य के संदर्भ में प्रसंगानुकूल व्याख्या लिखते हैं।

प्रसन्न *वि. (तत्.)* 1. खुश, हर्षित। **दे.** प्रसन्नता। **उदा.** मैं बहुत प्रसन्न हूँ कि आप हमारे घर पधारे।

प्रसन्नता *[प्रसन्न+ता] स्त्री. (तत्.)* अनुकूल परिस्थितियों के परिणामस्वरूप मन में पैदा हुई सुख और संतोष की भावना जो शारीरिक चेष्टाओं के माध्यम से भी प्रकट होती है। **पर्या.** खुशी, हर्ष। **उदा.** समारोह में आपकी उपस्थिति से हमें प्रसन्नता है।

प्रसव *पुं. (तत्.)* तक.अर्थ आयु. गर्भस्थ शिशु का कलाओं (झिल्लियों) समेत माता के गर्भ से बाहर

निकल आना। delivery **जैसे:** प्रसव पीड़ा, (लेबरपेन),प्रसवावकाश (प्रसव+अवकाश=maternity leave) सा.अर्थ मनुष्य पशु-पक्षी, वनस्पति आदि द्वारा संतान उत्पन्न करने की क्रिया या भाव; संतान का पैदा होना।

प्रसविनी *वि. (तत्.)* प्रसव करने वाली, संतान पैदा करने वाली। **उदा.** मेवाड़ वीर-प्रसविनी=वीरों को जन्म देने वाली भूमि है।

प्रसाद *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ प्रसन्नता। सा.अर्थ 1. अनुग्रह, कृपा। 2. वह खाद्य पदार्थ (फल, अन्न, मिठाई आदि) जो किसी देवता को अर्पित करने के बाद सबको देय होता है या बाँटा जाता है। 3. देवता को चढ़ाई जाने वाली वस्तु **जैसे:** मंगलवार को लोग श्री हनुमान जी पर बूँदी या लड्डू का प्रसाद चढ़ाते हैं। 4. भाषा का एक गुण। **मुहा.** प्रसाद पाना = भोजन करना।

प्रसाधक *वि. (तत्.)* व्युं.अर्थ प्रसाधन करने वाला। सा.अर्थ 1. साज श्रृंगार करने वाला। 2. कार्य को व्यवस्थित रूप में करने वाला।

प्रसाधन *पुं. (तत्.)* 1. शौचादि से निवृत होने, हाथ-पैर धोन, वस्त्र-केश आदि सजाने का कार्य श्रृंगार, सजावट का काम। 2. उपर्युक्त कार्यों के लिए नियत कक्ष। toilet **उदा.** रेलवे स्टेशन, हवाई अड्डे पर प्रसाधन कक्ष की सुविधा उपलब्ध है।

प्रसार *पुं. (तत्.)* किसी वस्तु, विचार आदि का अपने मूल स्थान से सभी दिशाओं में हुआ या किया गया फैलाव, क्षेत्र विस्तार। **उदा.** भारत के संविधान के अनुसार हिंदी की प्रसार वृद्धि का दायित्व संघ सरकार का है।

प्रसारण *पुं. (तत्.)* सा.अर्थ फैलाना, विस्तार करना; तक.अर्थ 1. तार या रेडियो संकेतों के जरिए संदेश भेजना। **पर्या.** संचारण। (ट्रांसमिशन) 2. (1) विद्युत चुंबकीय तरंगों की सहायता से रेडियो कार्यक्रमों को श्रोताओं तक पहुँचाना; (2) रेडियो, दूरदर्शन द्वार श्रव्य-दृश्य कार्यक्रमों का संचारण। bradcasting

प्रसिद्धि *स्त्री. (तत्.)* 1. प्रसिद्धि होने की अवस्था या भाव। 2. ख्याति, शोहरत, 3. प्रतिष्ठा।

प्रसिद्ध *वि. (तत्.)* अपने गुणों के कारण जिसका नाम अधिकाधिक लोगों तक पहुँच गया हो। **पर्या.** विख्यात, मशहूर। **जैसे:** डॉ. त्रेहन हृदयविशेषज्ञ के रूप में देश-विदेश में बहुत प्रसिद्ध है।

प्रसुप्ति *स्त्री. (तत्.)* सा.अर्थ-सोने, नींद लेने या शरीर की बाह्य क्रियाशीलता के थम जाने की स्थिति। तक.अर्थ-जीव/कृषि-पशुओं, कीटों और पादपों में तथा प्राकृतिक घटनाओं में भी शरीर-क्रियात्मक सक्रियता की किसी कालावधि विशेष में विरामावस्था या कहें निष्क्रियता पर उस अवधि के बाद पुन: सक्रिय होने/हो सकने की पूरी संभावना। **जैसे:** शीतकाल में मेंढक की प्रसुप्ति, ज्वालामुखी की प्रसुप्ति (ज्वालामुखी की प्रसुप्तावस्था) आदि-आदि। dormancy hybernation

प्रसूति विज्ञान *पुं. (तत्.)* आयुविज्ञान की शाखा विशेष जिसमें गर्भावस्था, प्रसव और प्रसवोत्तर काल में माता की देखभाल संबंधी बातों का अध्ययन किया जाता है। obstetrics

प्रस्तर-खंड *पुं. (तत्.)* पत्थर का टुकड़ा या हिस्सा।

प्रस्ताव *पुं. (तत्.)* 1. किसी कार्य को करने के लिए अन्य लोगों के समक्ष प्रस्तुत विचार, योजना, सुझाव इत्यादि। proposal 2. वह बात जो सभा, सम्मेलन आदि में विचार और स्वीकृति के लिए रखी जाए। resolution, motion 3. विवाद की स्थिति में उसे निपटाने के लिए लेन-देन संबंधी सुझाव। offer 4. निबंध आदि।

प्रस्तावक *वि./पुं. (तत्.)* किसी प्रस्ताव/योजना आदि का विचारार्थ/स्वीकृति के लिए प्रस्तुत करने वाला सदस्य। (मूवर) 2. (चुनाव के लिए) किसी का नाम सुझाने वाला। proposer

प्रस्तावना *स्त्री. (तत्.)* 1. किसी विषय का विस्तृत/विवेचन करने से पूर्व संक्षेप में प्रस्तुत किया जाने वाला तत्संबंधी लेखकीय वक्तव्य। विशेषज्ञ की सम्मति। 2. किसी ग्रंथ आदि की भूमिका। **पर्या.** प्राक्कथन, उपोद्धात, आमुख, दो शब्द। **उदा.** इस ग्रंथ की प्रस्तावना पांडित्यपूर्ण है।

प्रस्तुत *वि. (तत्.)* 1. जो उपयोग हेतु तैयार है। **उदा.** भोजन प्रस्तुत है। मैं चलने के लिए प्रस्तुत हूँ। 2. विचार, कविता, कहानी आदि जिसे दूसरों को सुनाया जाए। **उदा.** एक कविता प्रस्तुत कर रहा हूँ। 3. उपस्थित; दिया जाना। **उदा.** प्रस्तुत शब्द की व्याख्या कीजिए; पुस्तक प्रस्तुत है।

प्रस्तुति *स्त्री. (तत्.)* 1. पेश करने या सामने रखने की क्रिया, भाव या ढंग। **उदा.** व्याख्यान के रूप में विचारों की प्रस्तुति पूर्णतः तर्कसंगत थी। 2. पेश किया जाने वाला कार्यक्रम। 3. नाटक, फिल्म आदि में किया गया अभिनय। 4. किसी वस्तु के प्रदर्शन का तरीका।

प्रस्तुतिकरण [प्रस्तुति+करण] पुं. *(तत्.)* प्रस्तुत किया जाना, पेश किया जाना। **दे.** प्रस्तुति।

प्रस्थान *पुं. (तत्.)* एक स्थान से दूसरे स्थान को रवानगी (चलना), गमन। **उदा.** अज़मेर शताब्दी का नई दिल्ली स्टेशन से प्रस्थान सुबह 6.00 बजे है। departure महाप्रस्थान *पुं. (तत्.)* मृत्यु, मौत; स्वर्ग के लिए रवानगी।

प्रस्थान बिंदु *पुं. (तत्.)* वह बिंदु या स्थान जहाँ से प्रस्थान की क्रिया प्रारंभ होती है। point of departure

प्रस्थापक *वि./पुं. (तत्.)* शा.अर्थ. प्रस्थापन/प्रस्थापना करने वाला। **विधि.** विधायिका में किसी विधेयक को पारित करने के लिए प्रस्थापित करने वाल (सदस्य)। proposer

प्रस्थापन/प्रस्थापना *पुं./स्त्री. (तत्.)* 1. **विधि** विधायिका में विधेयक को विचारार्थ प्रस्थापित करना या रखना। 2. **इंजी** कल-पुर्जों, यंत्रों आदि हो यथास्थान ठीक-ठीक लगाने की क्रिया। installation

प्रस्फुटन *पुं. (तत्.)* 1. फूटना; अंकुरित होना, पल्लवित / पुष्पित होना; कली का पुष्प के रूप में विकसित होना, खिलना। 2. किसी छिपी बात का सामने आना।

प्रहरी *पुं. (तत्.)* किसी भवन, संस्था आदि के प्रवेश द्वार पर नियुक्त अथवा निगरानी करने वाला। **पर्या.** पहरेदार, चौकीदार। **उदा.** 1. कार्यालय के प्रवेश द्वार पर खड़े प्रहरी ने मुझे रोक लिया क्योंकि मैंने प्रवेश-पत्र नहीं बनवाया था। 2. हमारे मोहल्ले में प्रहरी रातभर पहरा देता है।

प्रहार *पुं. (तत्.)* किसी शस्त्र या लकड़ी, लोहे आदि की मोटी वस्तु से किसी व्यक्ति, वस्तु या स्थान पर चोट पहुँचाने की क्रिया। **पर्या.** आघात**,** वार।

प्रांत *पुं.(तत्.)* किसी देश की सीमांकित एक बड़ी शासकीय या भौगोलिक इकाई। **जैसे**: बिहार प्रांत, पंजाब प्रांत, महाराष्ट्र आदि। **पर्या.** सूबा। **पर्या.** प्रदेश, राज्य, सूबा।

प्रांतीय *वि.(तत्.)* प्रांत से संबंधित। जैसे-सांय 7.00 बजे रेडियो पर प्रांतीय समाचार सुनाए जाते हैं।

प्रांतीयता *स्त्री.(तत्.)* वह मनोभाव जिसमें लोग राष्ट्रीय हितों की अपेक्षा अपने प्रदेश के (प्रीतीय) हितों पर ज्यादा जोर देते हैं; संकीर्ण प्रंतीय भावना। **उदा.** हमें प्रांतीयता नहीं अपितु राष्ट्रीयता की भावना से कार्य करना चाहिए।

प्राइवेट *वि.(अं.)* निजी, व्यक्तिगत; जो सार्वजनिक न हो। विलोम-पब्लिक, सार्वजनिक। **उदा.** प्राइवेट पार्किंग, प्राइवेट सेक्रेटरी, प्राइवेट कंपनी।

प्राकृत *वि.(तत्.*<प्रकृति) 1. प्रकृति से प्राप्त या उत्पन्न; प्रकृति से संबंधित। 2. एक प्राचीन भारतीय आर्यभाषा का नाम। संस्कृत (सुधरी हुई) से भिन्न दिखाने वाली, मौलिक रूप में प्रयुक्त होने वाली भाषा (बोलचाल की भाषा) मानते हुए इसे यह नाम दिया गया। आधुनिक भारतीय भाषाओं का जन्म इसी प्राकृत के विविध रूपों से हुआ माना जाता है।

प्राकृतिक *वि.(तत्.)* (प्रकृति+इक) 1. प्रकृति से संबंधित, प्रकृति प्रदत्त। (**जैसे:** प्राकृतिक चिकित्सा, प्राकृतिक जीवन, प्राकृतिक सुषमा) 2. स्वाभाविक, सहज। natural

प्राकृतिक आपदा *स्त्री.(तत्.)* जन-धन की अपार हानि करने वाली प्राकृतिक घटनाएँ। **पर्या.** प्राकृतिक विपत्ति। **जैसे**: सूखा, बाढ़, भूकंप, तूफान, सुनामी आदि प्राकृतिक आपदाएँ हैं जिन पर मनुष्य का वश नहीं चलता। **तु.** प्राकृतिक परिघटना। natural calamity

प्राकृतिक उपग्रह *पुं.(तत्.)* **खगो**. पृथ्वी या अन्य ग्रहों के चारों ओर परिक्रमा करने वाला आकाशीय पिंड, **जैसे**: पृथ्वी की परिक्रमा करने वाला चाँद। natural satellites

प्राकृतिक परिघटना *स्त्री. (तत्.)* प्रकृति में होने वाली बड़ी-बड़ी घटनाएँ। जैसे-तारे टूटना, भूकंप, ज्वालामुखी फटना आदि। **टि.** यह आवश्यक नहीं है कि ये परिघटनाएँ जन-धन की हानि करने वाली ही हों। natural phenomena **तु.** प्राकृतिक आपदा।

प्राकृतिक वृद्धिदर *स्त्री.(तत्)* किसी देश के जन्मदर और मृत्युदर के बीच का अन्तर।

प्राकृतिक संख्याएँ *स्त्रीबहु. (तत्.)* **गणि.** घनपूर्ण संख्याएँ (जैसे-1, 2, 3, 4...)

प्राकृतिक संसाधन *पुं.(तत्.)* प्राणियों के जीवन को बनाए रखने वाले प्रकृति से विरासत में मिले आधारभूत साधन। **जैसे**: सौर ऊर्जा, वायु, जल, भूमि, वनस्पति आदि-आदि। natural resources

प्राचार्य *पुं.(तत्.)* (प्र+आचार्य) किसी महाविद्यालय college के प्रशासनिक प्रधान।

प्राचीन *वि.(तत्.)* जो वर्तमान काल से संबंधित न होकर भूतकाल से संबंधित हो, पुराने जमाने का, पुराना, पुरातन। **विलो.** अर्वाचीन, आधुनिक। **जैसे**: प्राचीन भारत, प्राचीन इतिहास, प्राचीन साहित्य।

प्राचीर *स्त्री.(तत्.)* किले, नगर आदि की सुरक्षा के लिए उसके चारों ओर बनाई गई दीवार। **पर्या.** चहारदीवारी, परकोटा।

प्राणघातक *वि.(तत्.)* शा.अर्थ जो प्राण के लिए घातक हो। सा.अर्थ ऐसी चोट या आघात या वस्तु या रोग जिससे मृत्यु हो जाने की संभावना हो। **जैसे:** प्राणघातक हमला fatal

प्राणदंड *पुं.(तत्.)* **दे.** मृत्युदंड।

प्राणनाथ *पुं.(तत्.)* 1. प्राणों के स्वामी, ईश्वर। 2. (प्राचीन प्रयोग) स्त्री का पति के लिए संबोधन, प्रियतम, स्वामी। **उदा.** प्राणनाथ! तुम युद्ध में विजय प्राप्त करो।

प्राणनाश *पुं.(तत्.)* प्राणों का नाश, मृत्यु।

प्राण-पखेरू *[तत्+तद्<पक्षालु]* *पुं.बहु.* शा.अर्थ प्राण रूपी पक्षी। सा.अर्थ शरीर के अंदर की जीवन-वायु जो जीव को जीवित रखती है। **उदा.** उसके प्राण-पखेरू उड़ गए=उसकी मृत्यु हो गई।

प्राणांत [प्राण+अंत] *पुं.(तत्.)* प्राण/प्राणों का अंत, जीवन का अंत, मृत्यु।

प्राणायाम [प्राण+आयाम] *पुं.(तत्.)* शा.अर्थ प्राण (श्वास-प्रश्वास) का विस्तार। **योग**-1. योग के आठ अंगों (यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि) में से एक। 2. योग के अनुसार श्वास और प्रश्वास (प्राण) को नियंत्रित और नियमित रूप से खींचने और बाहर निकालने की प्रक्रिया। **उदा.** हम प्राणायाम करके अनेक बीमारियों से मुक्ति पा सकते हैं।

प्राणिजात *पुं.(तत्.)* किसी विशेष क्षेत्र में पाए जाने वाले सभी जीव जंतु। fawna **तु.** वनस्पति जात।

प्राथमिक [प्रथम+इक] *वि.(तत्.)* 1. काल के धरातल पर अथवा क्रम में सबसे पहले का/की। **जैसे**: प्राथमिक चिकित्सा, प्राथमिक शिक्षा, प्राथमिक विद्यालय (जो पाँच वर्ष और दस वर्ष की उम्र वाले बच्चों को कक्षा 1 से 5 तक की शिक्षा देते हैं) 2. महत्व की दृष्टि से मुख्य। **जैसे:** प्राथमिक आवश्यकताएँ (रोटी, कपड़ा, मकान)

प्राथमिक उपचार *पुं.(तत्.)* (आयु.) आवश्यक चिकित्सा से पहले दुर्घटनाग्रस्त अथवा सहसा बीमार हुए व्यक्ति को तात्कालिक राहत देने के लिए किए गए उपाय। **पर्या.** प्रथमोपचार first-aid

प्राथमिकता *स्त्री.(तत्.)* प्राथमिक होने का भाव; अन्य लोगों या वस्तुओं की तुलना में जिसे पहला अवसर मिले या दिया जाए। **उदा.** दस विद्यार्थियों में से किसे प्राथमिकता दे यह महत्वपूर्ण प्रश्न है।

प्रादुर्भाव [प्रादुर+भाव] *पुं.(तत्.)* नए रूप में प्रकट होना, अस्तित्व में आना; जन्म लेना। **उदा.** 1. हिमालय से गंगा का प्रादुर्भाव हुआ। 2. देवकी के गर्भ से कृष्ण का प्रादुर्भाव हुआ।

प्रादेशिक [प्रदेश+इक प्रत्यय] *वि.(तत्.)* 1. प्रदेश संबंधी या किसी प्रदेश का। **जैसे:** (i) भारत का प्रादेशिक विकास। (ii) भारत की प्रादेशिक भाषाएँ। 2. क्षेत्रीय, इलाकाई। **जैसे**: प्रादेशिक सेना या प्रादेशिक विश्वविद्यालय।

प्रादेशिकता *स्त्री.(तत्.)* 1. प्रादेशिक होने का भाव। 2. क्षेत्रीयता, 3. राष्ट्रीयता से भिन्न संकुचित भावना।

प्राधिकरण [प्र+अधिकरण] *पुं.(तत्.)* वह संगठन जिसे कोई विशेष प्रकृति का कार्य-संपादन हेतु शक्तियाँ प्रत्यायोजित की गई हो। **जैसे:** दिल्ली विकास प्राधिकरण (डी.डी.ए.), जयपुर विकास प्राधिकरण (जे.डी.ए.) आदि। authority

प्राधिकार [प्र+अधिकार] *पुं.(तत्.)* किसी व्यक्ति, वर्ग या संस्था के कर्तव्य विशेष के प्रसंग में प्रत्यायोजित अधिकार; निर्दिष्ट कार्य निष्पादित करने का विशेष अधिकार। authority

प्राधिकारपत्र *पुं.(तत्.)* काम को पूरा करने हेतु किसी व्यक्ति विशेष को प्राधिकृत करने के लिए जारी किया गया पत्र। authority letter **दे.** प्राधिकार।

प्राधिकारी *[प्राधिकार+ई] पुं.(तत्.)* व्यक्ति जिसे औपचारिक आदेश देने की शक्ति या निर्दिष्ट कार्य संपन्न करने का विशेष अधिकार प्राप्त हो। authority

प्राधिकृत *वि.(तत्.)* (व्यक्ति) जिसे किसी काम को पूरा करने का प्राधिकार सौंपा गया हो या मिला हो। authorized

प्राध्यापक [प्र.+अध्यापक] *पुं.(तत्.)* विश्वविद्यालय के त्रिस्तरीय शिक्षक वर्ग मे नीचे से पहले वर्ग का शिक्षक) **पर्या.** प्रवक्ता lecturer, assistant professor

प्राप्त्याशा [प्राप्ति+आशा] *स्त्री.(तत्.)* 1. कुछ प्राप्त होने की आशा। 2. (नाटयशा) नाट्य कथावस्तु के विकास क्रम में तृतीय अवस्था जिसमें फल प्राप्ति की या विफलता की दिशाएँ स्पष्ट दिखने लगती है अर्थात् दर्शक अपनी ओर से अनुमान लगाने लगता है।

प्रामाणिक [प्रमाण+इक] *वि.(तत्.)* जो प्रमाणों से सिद्ध हो; जो प्रमाण माना जाता हो; जिसकी सच्चाई में संदेह न हो। **पर्या.** विश्वसनीय। **जैसे:** प्रामाणिक कथन; प्रामाणिक वस्तु। authentic

प्राय: *अव्य.(तत्.)* 1. एकाधिक अवसरों पर। 2. लगभग, करीब-करीब, तकरीबन। **पर्या.** अधिकतर**,** ज्यादातर, अक्सर।

प्रायद्वीप [प्राय:+द्वीप] *पुं.(तत्.)* व्यु.अर्थ लगभग द्वीप जैसा। सा.अर्थ **भू.** ऐसा स्थलीय भाग जो तीन ओर से जल से घिरा हो। **जैसे:** भारत का दक्षिणी पठार। *तु.* महाद्वीप, उपमहाद्वीप।

प्रायश्चित *पुं.(तत्.)* किसी पापकर्म की दोषनिवृत्ति के लिए शास्त्रोक्त विधि से किया जाने वाला कोई धार्मिक कृत्य **जैसे:** यज्ञ, दान, सेवा आदि। **उदा.** उसकी गाड़ी के नीचे एक पिल्ला दबकर मर गया तो उसने प्रायश्चितस्वरूप गोशाला में एक हज़ार रूपए दान किए।

प्रायोगिक [प्रयोग+इक] *वि.(तत्.)* 1. प्रयोग संबंधी, प्रयोग का। 2. नित्य व्यवहार में लाया जाने वाला, उपयोगी। **जैसे**: प्रायोगिक पात्र। 3. किसी तथ्य को सिद्ध या प्रमाणित करने के लिए किया जाने वाला (परीक्षण कार्य)। **जैसे**: विज्ञान के विभिन्न प्रायोगिक कार्य। experimental

प्रायोजक *वि./पु.* 1. किसी नियत कार्य (बैठक, संगोष्ठी, सभा, खेल आदि) की सामान्य व्यवस्था को छोडक़र केवल वित्तीय भार उठाने वाला (व्यक्ति या संगठन)। 2. किसी रेडियो या टी.वी. कार्यक्रम के दौरान बीच-बीच में अपनी कंपनी का विज्ञापन करने की सुविधा के लिए समय खरीदने वाला प्रतिष्ठान। sponsor **तु.** आयोजक।

प्रारंभ *पुं.(तत्.)* (प्र.+आरंभ) 1. किसी काम की शुरूआत। **विलो.** अंत/समाप्ति। 2. शुरू-शुरू का भाग। **जैसे**: कविता का प्रारंभ अच्छा है।

प्रारब्ध *पुं.(तत्.)* 1. संचित कार्य का वह भाग जिसका भोग इस जन्म में आरंभ हो चुका हो। **पर्या.** भाग्य। 2. वह अदृश्य शक्ति जिसके बारे में यह माना जाता है कि वह हमारे भूत, वर्तमान और भविष्य को नियंत्रित करती है यानी जो कुछ हुआ था, हो रहा है, और आगे होगा वह सब उसकी इच्छा का परिणाम है। destiny, fate **उदा.** प्रारब्ध में लिखा होगा तो हम लाखों-करोड़ों के मालिक बन जाएंगे।

प्रारूप *पुं.(तत्.) [प्र+आरूप]* किसी दस्तावेज का पहले बनाया गया कच्चा रूप जो सक्षम व्यक्ति द्वारा अनुमोदित, संशोधित होकर अंतिम रूप ग्रहण करता है। **जैसे:** पत्र का प्रारूप। **पर्या.** मसौदा draft

प्रारूपिक [प्ररूप+इक] *वि.(तत्.)* किसी वस्तु, रचना आदि के वे अभिलक्षण जो औरों से उसकी भिन्नता के सूचक हों। typical

प्रार्थना *स्त्री.(तत्.)* 1. किसी से कुछ करने के लिए या देने के लिए किया गया विनम्रतापूर्वक कथन। **पर्या.** याचना, निवेदन। **उदा.** आप से प्रार्थना है कि मुझे दो दिन का अवकाश प्रदान करें। 2. ईश्वर या देवी-देवता आदि को संबोधित करते हुए अपने या किसी अन्य के कल्याण के लिए या

सभी के कल्याण के लिए की जाने वाली विनम्रता/भक्तिपूर्ण गद्यात्मक/पद्यात्मक स्तुति। **जैसे**: हे प्रभो! सबका कल्याण कर अथवा हे प्रभो! आनंददाता ज्ञान हमको दीजिए। आदि।

प्रार्थनापत्र *पुं.(तत्.)* किसी से कुछ चाहने या देने के लिए लिखित रूप में प्रस्तुत विनम्रतापूर्वक निवेदन। **जैसे**: छुट्टी का प्रार्थनापत्र। पर्याय-आवेदन application

प्रार्थी *वि.(तत्.)* 1. प्रार्थना करने वाला। 2. प्रार्थना-पत्र के अंत में हस्ताक्षर करने के स्थान से ठीक ऊपर का आदरसूचक अधोलेख। **जैसे**: प्रार्थी (हस्ताक्षर) (व्यक्ति का नाम)

प्रावधान [प्र+अवधान=रखना] *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ विशेष रूप से रखना या व्यवस्था करना। 1. किसी कार्य के लिए समुचित धन आदि की पहले से की गई व्यवस्था। 2. कानूनी दृष्टि से कोई शर्त या व्यवस्था जो किसी विशेष उद् देश्य से बनाई गई हो। provision

प्रासंगिक *वि.(तत्.)* 1. जिसका प्रसंग हो, प्रसंगगत, प्रसंग-संबंधी। **दे.** प्रसंग।

प्रासाद *पुं.(तत्.)* विशाल भवन, राजभवन, राजा का महल, आलीशान इमारत।

प्रिय *वि.(तत्.)* 1. जिसके प्रति हृदय में प्रेम की भावना हो। 2. मन को अच्छा लगने वाला, चित्ताकर्षक/मनभावन। 3. संबोधन के रूप में प्रयुक्त शब्द। **पुं.** 1. प्रिय लगने वाला व्यक्ति। 2. पति, प्रेमी। **स्त्री.** प्रिया। **विलो.** अप्रिय।

प्रियतम *वि.(तत्.)* [प्रिय+तम प्रत्यय] जो सबसे अधिक प्रिय हो। **जैसे**: परमप्रिय मेरे तो प्रियतम तुम्हीं हो। **पुं.** 1. पति, 2. प्रेमी। **स्त्री.** प्रियतमा।

प्रीति *स्त्री.(तत्.)* समान स्तर के व्यक्तियों का परस्पर स्नेहभाव। **पर्या.** प्रेम। **जैसे**: (i) प्रीतिविवाह; (ii) बिनु भय होइ न प्रीति। 2. संतोष, आनंद। **जैसे**: प्रीतिभोज।

प्रीतिभोज *पुं.(तत्.)* किसी उत्सव के अवसर पर अपने मन का आनंद प्रकट करने के निमित्त स्नेहीजनों को निमंत्रित कर आयोजित सामूहिक भोजन। **उदा.** मेरे भाई के विवाहोत्सव के एक दिन बाद प्रीतिभोज का आयोजन है, आप अवश्य पधारें। banquet

प्रूफ संशोधक *वि./पुं. (अं.+तत्)* मुद्रण-सामग्री की अंतिम छपाई से पहले मूल सामग्री (पांडुलिपि) से मिलानकर वर्तनीसंबंधी रह गई गलतियों को सुधारने वाला व्यक्ति और उसका पद। proof-reader

प्रूफ संशोधन *पुं.(अं.+तत्)* **मुद्र.** मुद्रण-सामग्री की अंतिम छपाई से पहले वर्तनी संबंधी रह गई गलतियों में किया जाने वाला/किया गया सुधार। proof-reading

प्रेक्षक *वि./पुं. (तत्.)* शा.अर्थ प्रेक्षण करने वाला। 1. फिल्म, नाटक, सर्कस, जादू, खेल-प्रतियोगिता आदि मनोरंजक कार्यक्रमों का दर्शक समूह। spectator 2. सभा सम्मेलन, चुनाव प्रक्रिया आदि की कार्यवाई को दूर से देखने/नजर रखने के लिए नियुक्त अधिकृत और निष्पक्ष व्यक्ति/अधिकारी। observer

प्रेक्षण *पुं.(तत्.)* देखना, देखने की क्रिया।

प्रेत *पुं.(तत्.)* मृत व्यक्ति की आत्मा का सूक्ष्म शरीर के साथ एक विशेष योनि में भटकता हुआ रूप। **उदा**. कहते हैं कि जो मायामोहग्रस्त होकर मरते हैं वे प्रेतयोनि को प्राप्त होते हैं। (स्त्री. प्रेतनी) **पर्या.** प्रेतात्मा।

प्रेतलेखक *पुं.(तत्.)* (प्रेत-लेखक) प्रेत=मृत व्यक्ति की आत्मा या प्रेतों (भूतों/भूत जीवात्माओं) की रोमांचकारी काल्पनिक कथाओं या कहानियों को लिखने वाला। **जैसे**: प्रेतलेखक प्रेतात्माओं की बड़ी ही समसनीखेज व भयावह कथाएँ लिखते हैं। जो कभी-कभी फिल्मों के रूप में भी प्रदर्शित होती हैं।

प्रेम *पुं.(तत्.)* 1. किसी व्यक्ति, वस्तु, विषय, देव, प्रकृति आदि के प्रति मन में उत्पन्न होने वाला विशेष आकर्षण युक्त कोमल भाव। **पर्या.** प्यार, प्रीति। **जैसे**: भाई से प्रेम, मित्र से प्रेम, प्रकृति-प्रेम, राष्ट्र-प्रेम, संगीत-प्रेम। **तुल.** स्नेह, आदर, श्रद्धा। 2. स्त्री-पुरूष का परस्पर कामवासना से युक्त राग, मुहब्बत। **जैसे**: दुष्यन्त-शकुंतला का प्रेम। 3. सांसारिक विषयों के प्रति लगाव, आसक्ति। **जैसे**: धनप्रेम, पुत्रप्रेम।

प्रेमकथा *स्त्री.(तत्.)* ऐसी कहानी जिसका केंद्रीय बिंदु प्रेम होता है। ऐसी कहानियों में प्राय: रूपवर्णन, आकर्षण, प्रेमप्रसंग, विरह एवं

पुनर्मिलन इत्यादि की घटनाओं का सरस वर्णन होता है। दर्शन, सिद्धांत, विचारों आदि को प्रमुखता नहीं दी जाती।

प्रेयसी *स्त्री.[तत्.* (प्रेयस्=प्रिय, अतिशय, प्रिय+ई स्त्री. प्रत्यय] अतिशय प्रिय, प्रेमिका, प्रियतमा।

प्रेरक *वि.(तत्.)* किसी काम के लिए प्रेरणा देने वाला या प्रेरित करने वाला। **दे.** प्रेरणा।

प्रेरणा *स्त्री.(तत्.)* 1. कुछ करने के लिए मन में उठने वाला भाव जिसे अंत:करण की आवाज़ भी माना जा सकता है। 2. किसी महापुरूष, अनुभवी व्यक्ति, वयोवृद्ध आदि द्वारा कुछ करने के लिए दिया गया आह्वान अथवा प्रोत्साहन। inspiration

प्रेरित *वि.(तत्.)* किसी कार्य में प्रवृत्त किया या लगाया हुआ।

प्रेषक *वि./पुं.(तत्.)* 1. (पत्र) भेजने वाला। sender 2. (डाक) रवाना करने वाला। dispatcher 2. रूपया-पैसा भेजने वाला remitter

प्रेषण *पुं.(तत्.)* [प्रेष+न] सा.अर्थ 1. भेजना, रवाना करना। dispatch, remittance **भौ. 2.** संकेतों, चित्रों आदि को रेडियो तरंगों, तार, प्रकाश किरण आदि के माध्यम से एक स्थान से दूसरे स्थान को भेजने का प्रक्रम। transmission

प्रेषिती *पुं.* [प्रेषित+ई] *(तत्.)* तार, पत्र, मनीआर्डर आदि से भेजे गए रूपय-पैसे को पाने वाला, प्राप्तकर्ता। remittee

प्रेषित्र *पु.(तत्.)* उपकरण जो दृश्य-श्रव्य सामग्री को मॉडुलित रेडियो तरंगों में बदलकर उनको प्रसारित करता है। transmitter

प्रेष्य *वि.(तत्.)* (वस्तु, सामग्री) जिसे भेजा जाना है।

प्रेस *पुं.(अं.)* 1. किसी को आधिकारिक तरीके से प्रभावित करने का कार्य, दबाव। 2. दबाव डालने वाला उपकरण। 3. कपड़ों पर इस्त्री करने का उपकरण। **उदा.** आजकल लोग घरों बिजली के प्रेस का प्रयोग करते हैं। 4. लेखन सामग्री की छपाई की मशीन, मुद्रणयंत्र। 5. मुद्रणालय, छापाखाना, प्रकाशन संस्थान।

प्रोकेरियोट्स *पुं.(अं.)* (जीवविज्ञान+पादपविज्ञान) 1. जीवों का वह वर्ग जिसकी कोशिकाओं में कोई केंद्रक या कलाओं से परिबद्ध अंगक नहीं होते। 2. प्राक्केंद्रिकी। Prokcaryotes

प्रोटीन *पुं.(अं.)* एमीनों अम्लों के बने और पेप्टाइड बंधों से जुड़े पदार्थ जो दूध, मांस आदि में प्रचुरता से पाए जाते हैं। यह जैव पदार्थ का मुख रचक है। Protein

प्रोटोजोआ *पुं.(अं.)* एक कोशिका वाले सभी प्राणियों का संघ जिसमें अमीबा, पैरामीशियम, मलेरिया परजीवी आदि प्राणी आते हैं। अलैंगिक विधि द्वारा जनन और अंग या ऊतक का न होना इनके विशिष्ट लक्षण हैं। protozoa

प्रोत्कर्ष [प्र+उत्कर्ष] *पुं.(तत्.)* बहुत अधिक ऊपर उठना; विशेष उछाल, बहुत ऊपर चढ़ना।

प्रोत्साहन *पुं.* [प्र+उत्साहन] *(तत्.)* किसी काम को करने के लिए दिया गया बढ़ावा, उत्साह।, वृद्धि के लिए दी गई सहायता। ऐन्करेजमेन्ट **जैसे**: प्रोत्साहन पुरस्कार। encouragement

प्रोत्साहित [प्रोत्साह-इत] जिसे प्रोत्साहन दिया गया या मिला हो।

प्रोफेसर *पुं.(अं.)* 1. वह विशेष अध्यापक जो विश्वविद्यालय, महाविद्यालय/ कॉलेज आदि उच्च संस्था में पढ़ाता है या शैक्षिक गतिविधियों का विशेषज्ञ होता है। 2. किसी विषय का विशिष्ट विद्वान या विभागाध्यक्ष/ प्राध्यापक। professor

प्रौढ़ *वि.(स्त्री.* प्रौढ़ा) जिसकी आयु अधिक हो गई हो, परिपक्व, मैच्योर। **जैसे**: प्रौढ़ व्यक्ति। पुं. *दे.* वयस्क adult **जैसे**: प्रौढ़ शिक्षा।

प्रौढ़ता *स्त्री.(तत्.)* प्रौढ़ अथवा परिपक्व हो जाने की स्थिति का सूचक भाव। maturity, adulthood

प्रौद्योगिक [प्र+उद्योग+इक] प्रौद्योग से संबंधित, प्रौद्योग विषयक। technologica

प्रौद्योगिकी *स्त्री.* [प्रौद्योगिक+ई] 1. पदार्थ, शक्ति और औज़ार के उत्पादन के लिए अनुप्रयोग; 2. अनुप्रयुक्त विज्ञानों का व्यावहारिक पक्ष। 3. व्यावहारिक उपयोग के लिए किसी विषय विशेष से संबंधित संचित ज्ञान का अनुप्रयोग सिखाने वाला विज्ञान। टैक्नोलॉजी **पर्या.** तकनीकी। technology

प्लग *पुं.(अंग्रे.)* **इंजी.**धातु का लंबा पतला डाक जिसे बिजली आपूर्ति वाले छिद्र में

बिठाकर/डालकर प्रवाहित बिजली से संपर्क साधा जाता है। plug

प्लव *अ.क्रि. (तत्.)* तैरना।

प्लवक [प्लव+क] *वि. (तत्.)* तैरने वाला। **पुं.** जीव जल में तैरते रहने वाले जीवों का समूह। प्लैंक्टन

प्लवन [प्लव+न] *पुं. (तत्.)* तैरने का कार्य।

प्लाज़्मा झिल्ली *स्त्री.(अंग्रे.+देश.)* लिपिड तथा प्रोटीनयुक्त वरणात्मक पारगम्य झिल्ली जो कोशिका द्रव्य को इसके बाहरी परिवेश से पृथक करती है। plasma membrane

प्लाज़्मा *पुं.(अं.)* रूधिर, लसीका का (या दुग्ध का भी) रंगहीन तरल अंश जिसमें कणिकाएँ तैरती रहती हैं। इसमें लवण, प्रोटीन, हॉरमोन, प्रतिविष आदि निलंबित होते हैं। **पर्या.** जीव-द्रव्य।

प्लावन *पुं.(तत्.)* बहना; बाढ़ आ जाना; डूब जाना, जलमय हो जाना। **जैसे**: जल-प्लावन।

प्लास्टिक *वि.(अं.)* (वि.) सुघट्य। (सं) प्लास्टिक। *पुं.* विभिन्न संश्लेषित बहुलक-पदार्थों में से कोई एक जिसे इच्छानुसार कोई भी रूप, आकार दिया जा सकता है। plastic

प्लैस्टिड *पुं.(अं.)* पत्ती की कोशिकाओं के द्रव्य में छितरी हुई छोटी-छोटी रंगीन संरचनाएँ। **टि**. हरे रंग के प्लैस्टिड को क्लोरोप्लास्ट या हरितवलक कहते हैं।

फ

फंतासी *स्त्री. (अंग्रेजी शब्द 'फैंटेसी' का हिंदी में अनुकूलित रूप)* मनोरंजन पर काल्पनिक रचना। **जैसे:** पंचतंत्र की कथाएँ।

फंदा *पुं. (तद्(बंध/अर. फंद)* 1. किसी को बाँधने या फँसाने के लिए बनाया गया सरकने वाली गाँठ वाला रस्सी आदि का घेरा; **जैसे:** फाँसी का फंदा। पशु-पक्षियों को पकड़ने के लिए बनाया गया जाल, फाँस।

फँसना *अ.क्रि. (हिं.फाँस)* बंधन में पड़ जाना; उलझना। **जैसे:** काँटों में फँसना दलदल में फँसना; चंगुल में फँसना आदि।

फक *वि. (अर. फक)* जिसकी रंगत बिगड़ गई हो। **पर्या.** विवर्ण, निष्प्रभ, निस्तेज। **उदा.** पुलिस को देखते ही उसका चेहरा फक हो गया।

फकत *वि. (अर.)* केवल, सिर्फ। **उदा.** सब सूरते लंगूर, फकत दुम की कसर है।

फकीर *पुं. (अर.)* 1. मुलसमान साधु जो भीख माँगकर गुजर-बसर करता है। 2. **ला.प्रयोग** व्यक्ति जिसकी आय का साधन बहुत सीमित हो फिर भी खर्च करने में कोताही न बरते; बहुत ही गरीब व्यक्ति।

फक्कड़ *वि. (देश(फाका)* 1. निर्धनता की स्थिति के बावजूद भी मस्त रहने वाला मनमानी। 2. चिंता रहति प्रकृति वाला। care-free 2. प्रकृति वाला।

फगुआ *पुं. (देश फाग(फाल्गुन)* 1. फाल्गुन मास में होने वाला राग-रंग, होली का त्यौहार, होली, फाग। 2. होली के अवसर पर गाए जाने वाले गीत।

फजीहत *स्त्री. (अर.)* अपमान, बदनामी, बेइज्जती; दुर्दशा, दुर्गति की मिलीजुली भावना का सूचक शब्द। **उदा.** तुम अपनी फजीहत करवाने पर क्यों तुले हो? **मुहा.** थुक्का फजीहत = दो पक्षों के बीच की ऐसी कहा-सुनी जिसे देख और सुनकर लोगबाग दोनों पक्षों की थू-थू करें और उनकी बदनामी खूब फैल जाए।

फजूल खर्च/फिजूल/फुजूल *वि. (फार.)* बहुत अधिक खर्च करने वाला; अनावश्यक खर्च करने वाला, अपव्ययी।

फजूलखर्ची *स्त्री. (फ़ार.)* अनावश्यक खर्च करने की आदत या स्वभाव।

फटकना *स.क्रि. (फटे की आवाज.)* सूप आदि से अनुरणन कर 'फट'-'फट' की ध्वनि करते हुए दानों और भूसे या कूड़े को अलग करने की सफाई की क्रिया।

फटकार *स्त्री.* 1. किसी वस्तु (**जैसे:** कपड़े, कोड़े आदि) को हाथ झटककर तेजी से इस तरह हिलाना कि उससे 'फट' जैसी आवाज निकले। **जैसे: 1.** धोबी कपड़े फटकारता है। 2. थोड़ा

फटकारना। 2. किसी को लज्जित करने के लिए क्रोध में कही गई बात, झिडकी, भर्त्सना।

फटकारना *स.क्रि. (तत्.)* 1. **दे.** फटकार 2. किसी को लज्जित करने के लिए क्रोध में भला-बुरा कहना, किसी को डॉटना। **दे.** फटकार 1 3. झटका देकर छितराना या खुला रखना, चुटिया। **जैसे:** बाल फटकारना।

फटना *अ.क्रि. (तद्. (स्फटन)* किसी वस्तु के सपाट तल में दरार पड़ जाना। विदीर्ण होना। **उदा.** उसका कुर्ता फट गया; धरती फट गई और सीताजी उसमें समा गई; दूध फट गया; बादल फट गए, दिल फट गया।

फटिक *पुं. (तद्. स्फटिक)* संग-मरमर; सफेद पारदर्शी पत्थर। फिटकिरी **दे.** स्फटिक।

फटीचर *वि. (देश.)* फटे-पुराने कपड़े पहने हुए, दीन-हीन हालत वाला। **उदा.** फटीचर हालत में कहाँ घूमते फिर रहे हो।

फड़कना *अ.क्रि. (देश.)* अनुरणन। रुक-रुक कर कंपित होना, चलायमान होना। **जैसे-**आँख का फडक़ना; भुजाओं का फडक़ना।

फड़फ़ड़ाना *अ.क्रि. ('फड़-फड़'अनुरण.)* 1. फड़-फड़ शब्द करना या होना। 2. पंखों को इस प्रकार हिलाना कि 'फड़-फड़' की ध्वनि सुनाई पड़े। 3. छटपटाना-किसी समस्या से बच निकलने के लिए बेचैन होना।

फण/फन *पुं. (तत्.)* साँप का फन।

फतवा *पुं. (अर.)* (खासकर इस्लामी मजहब में) किसी धार्मिक या सामाजिक विषय पर धार्मिक न्यायकर्ता (मौलवी) द्वारा जारी की गई निर्णयात्मक व्यवस्था।

फतह *स्त्री. (अर.)* विजय, जीत; सफलता। **जैसे:** किले को फतह करना। फतह का डंका-जीत की खुशी।

फन *पुं. (तद्. फण)* 1. साँप का सिर जब वह फैल जाता है। 2. *अर.* (फन) (1) गुण, विद्या, कौशल, हुनर। **जैसे: 1.** फनकार = कलाकार। 2. हरफन मौला = हर काम करने में होशियार।

फफकना *अ.क्रि. (अनु.)* मुख से रुक-रुक विस्फोटक ध्वनि निकालते हुए रोना। **उदा.** अग्निकांड में सब कुछ स्वाहा हो जाने पर वह महिला फफक-फफक कर रो रही थी।

फफूँद/फफूँदी *स्त्री. (देश)* 1. लकड़ी, फल आदि पर बरसात या सीलन के कारण जमने वाली सफेद काई जैसा पदार्थ। **टि.** ये अति सूक्ष्म जीव होते हैं। **पर्या.** कवकवृद्धि।

फबती *स्त्री. (अर.) (फबना)* 1. ऐसी कोई चुटकी या व्यंग्योक्ति जो व्यक्ति विशेष पर ठीक-ठीक आरोपित लगे। **मुहा.** फबती कसना = व्यंग्यपूर्ण बात करना।

फबना *अ.क्रि. (अर.)* सुंदर लगना, मन को सुहावना लगना। **उदा.** तुम पर यह नया सूट खूब फब रहा है।

फरजी/फर्जी *वि. (फा.)* शा.अर्थ फर्ज किया हुआ, माना हुआ। सा.अर्थ बनावटी, नकली; काल्पनिक। *पुं.* शतरंज का मोहरा, जिसे वजीर कहते हैं।

फरमाइश *स्त्री. (फ़ा.)* (किसी चीज को लाने या बनवाने के लिए विशेष रूप से प्रयुक्त) आज्ञासूचक शब्द। demand

फरमान *पुं. (फा.)* 1. राजा या सरकार का आदेश। 2. वह कागज-पत्र आदि जिस पर उक्त आदेश लिखा गया हो। **पर्या.** राजाज्ञा, राज्यादेश।

फरमाना *क्रि. (फा. (फरमान)* आज्ञा देना, कहना। **टि.** छोटा व्यक्ति बड़े व्यक्ति को आदरपूर्वक प्राय: कहता है-(1) फरमाइए। 2. आप क्या फरमा रहे थे?

फरार *वि. (फ़ा.)* 1. किये गये किसी अपराध के दंड के भय से जो भाग गया हो, या ऐसे स्थान पर छिप गया हो जिससे उसका पता ही न चल सके। **जैसे:** फरार अपराधी। 2. सजा प्राप्त या जेल में बंद वह या वे कैदी जो उस सजा से बचने के लिए पुलिस के संरक्षण से किसी तरह भाग निकले हों। **जैसे:** तिहाड़ जेल से दो कैदी फरार हो गए।

फरियाद *स्त्री. (फ़ा.)* 1. अपने साथ हुए अन्याय, अत्याचार आदि के निवारण के लिए की गई सहायता सूचक प्रार्थना। 2. शिकायत।

फरियादी *वि./पुं. (फ़ा.)* 1. फरियाद करने वाला; प्रार्थी। 2. शिकायतकर्ता।

फरिश्ता *पुं. (फा.)* 1. (मुसलमानों के विश्वासानुसार) ईश्वर का दूत। **पर्या.** देवदूत। जो

उनकी आज्ञा के अनुसार काम करता हो, **जैसे:** मौत का फरिश्ता। 2. लोक का कल्याण करने वाला महापुरुष।

फरेब *पुं. (फ़ा.)* किसी विषय में किया गया कपटपूर्ण कार्य। **पर्या.** चाल, धोखा, कपट, छल।

फरेबी *वि. (फ़ा.)* छल-कपट करने वाला, धोखेबाज, कपटी। **उदा.** फरेबी लोगों से दूर रहना चाहिए।

फरोख्त *स्त्री. (अर.)* किसी वस्तु को बाजार में बेचे जाने की क्रिया जिससे सामान्य स्थिति में मुनाफा हो। **पर्या.** बिक्री। **विलो.** खरीद।

फर्क/फरक *पुं. (अर.)* 1. भेद, अंतर। **उदा.** मनुष्य और पशु में फरक है। 2. अलगाव। **उदा.** घोड़े और गधे में फरक करना कठिन नहीं है।

फर्ज *पुं. (अर.)* 1. कर्त्तव्य, जिम्मेदारी, कर्म duty **उदा.** मैंने अपना फर्ज अदा किया है। **विलो.** हक। 2. (वास्तविकता न होने के बावजूद) मान लिजिए। **जैसे:** फर्ज कीजिए आप प्रधानमंत्री हैं। तो आप देश के लिए पहला काम क्या करना चाहेंगे?

फर्जी *वि. (फ़ा.)* 1. नकली, कृत्रिम, जाली। **जैसे:** जाँच में बहुत से फर्जी राशनकार्ड पकड़े गए। 2. माना हुआ कल्पित। *पुं.* शतरंज के खेल में 'वजीर' नामक मोहरा।

फर्नीचर *पुं. (अं.)* घर का साजो-सामान। **जैसे:** मेज, कुर्सी, खाने की मेज, अलमारी आदि-आदि।

फर्राटा *पुं. (देश. अनुर.)* फर-फर की ध्वनि करते हुए तेजी से दौड़ने की क्रिया या भाव। **जैसे:** फर्राटा दौड़, धारावत् प्रवाह। **उदा.** वह **फर्राटे** से संस्कृत बोलता हैं।

फर्लांग *पुं. (अं.)* ब्रिटिश माप-तौल के अनुसार 220 गज (लगभग 200 मीटर) की लंबाई। **टि.** आठ फर्लांग = एक मील।

फर्श/फर्शी *पुं. /स्त्री. (अर.)* 1. किसी कमरे का नीचे वाला समतल भाग जिस पर वहाँ रहने वाले लोग खड़े होते हैं और घर का सामान रखते हैं। floor 2. उपर्युक्त समतल भाग पर बिछाया गया कालीन, दरी आदि।

फल *पुं. (तत्.)* 1. **वन** वृक्ष की टहनी पर लगने वाली वह गूदेदार वस्तु जिसे प्राय: खाया जाता है। fruit 2. अच्छा या बुरा परिणाम, नतीजा। result 3. चाकू, छुरी, तलवार आदि का लंबाई में धारदार भाग जो काटने का काम करता है। blade

फलक *पुं. (तत्.)* लकड़ी धातु, पत्थर या गत्ते की लंबी-चौड़ी पट्टी, पटल जो मढ़ने के काम आती है।

फलदार *[फल+दार = वाला] वि.* 1. (वृक्ष) जिस पर फल लगते हैं या लगे हैं। **जैसे:** फलदार वृक्ष।

फलना *अ.क्रि. (तद्.(फलन)* 1. फलयुक्त होना या फल देना। 2. इच्छापूर्ति होना। 3. शुभ परिणाम होना।

फलना-फूलना *अ.क्रि. (तद्.)* निरंतर विकास या उन्नति होते रहना। **उदा.** पढ़ा-लिखा होने के कारण वह परिवार खूब फल-फूल रहा है।)

फलसफा *पुं. (अर.)* 'फिलोसोफी' का अरबी पर्याय।

फलस्वरूप *[फल+स्वरूप] अव्य. (तत्.)* किसी कार्य के फल परिणाम के रूप में। **उदा.** उसने चोरी की, फलस्वरूप जेल जाना पड़ा। **पर्या.** परिणामस्वरूप।

फलाँ/फलाना *वि. (अरं-फलाँ)* अमुक, फलाँ। **जैसे:** मेरा मित्र कहता है कि फलाना आदमी विश्वसनीय नहीं है। 2. इस उत्सव में फलाँ-फलाँ नेता आएँगे।

फलाँग *स्त्री. (तद्. (प्रलंघन)* एक जगह से उछलकर दूसरी जगह उतरने तक की दूरी। **पर्या.** छलाँग।

फलाँगना *अक्रि. (तद्. (प्रलंघन)* एक जगह से उछलकर आगे कुछ दूरी पर उतरने की क्रिया। **तुल.** लाँघना = लंबाई के साथ ऊँचाई भी पार करना।

फलाहार *[फल+आहार] पुं. (तत्.)* 1. फलों का आहार अर्थात् केवल फल या कंद मूल आदि का भोजन यानी जिसमें अन्न से बना खाद्य पदार्थ वर्जित हो। **उदा.** एकादशी के दिन लोग फलाहार लेते हैं।

फली *स्त्री. (तद्. (प्रा. फालि (सं. फलिन्)* पादपों (पेड़-पौधों और लताओं) पर लगने वाला दानों (बीजों) से युक्त स्फुटनशील फल जो एक ही स्त्री केसर से परिवर्धित होता है और परिपक्व हो जाने पर दोनों ही सीवनों पर लंबाई दो बराबर

भागों में फट जाता है। **उदा.** मटर की फली। legume, pod

फलीता *पुं.* **दे.** 'पलीता'।

फलीदार *वि. [तद्.+फा.]* (पादप) जिस पर फलियाँ लगती हों या लगी हों। फली वाला; फली युक्त।

फलोद्‌यान *पुं. [फल+उद्‌यान] (तत्.)* 1. ऐसा बगीचा जिसमें फलदार वृक्ष अधिक हों। 2. फलों के उत्पादन के लिए लगाया गया उद्‌यान। 3. फलों का बाग।

फव्वारा/फौवारा/फुहारा *पुं. (अर.)* 1. वह उपकरण, जिससे दबाव के कारण पानी ऊपर उछाला जाता है और वह चारों ओर बिखर कर नीचे गिरता है। 2. इस प्रकार उछाले हुए पानी की धार या छींटे। फाउंटेन **पर्या.** फुहार। **जैसे:** फव्वारा सिंचाई।

फसल *स्त्री. (अर.)* 1. खेती से होने वाली पैदावार, उपज। **उदा.** इस बार गेहूँ की फसल अच्छी हुई है, पर आम की फसल बिगड़ गई। 2. खेत में खड़े पौधे जिनसे भविष्य में उपज मिलेगी। **उदा.** तुम्हारे खेत में कौन-सी फसल खड़ी है?

फसल चक्रण *पुं. (अर.+तत्.)* शा.अर्थ एक फसल के बाद दूसरी और दूसरी के बाद तीसरी फसल उगाने का उचित क्रम।

फसाद *पुं. (अर.)* शांति-भंग की स्थिति उपद्रव/दंगा, सार्वजनिक स्थल पर आपसी लड़ाई झगड़े से पैदा हुई स्थिति। **उदा.** आज बाजार में पुलिस के आने से फसाद होते-होते बचा।

फसादी *वि.* दंगा भड़काने वाला (समूह), उपद्रवी।

फहराना *स.क्रि. (तद्. प्रसारण)* किसी कपड़े को एक ओर से हाथ में पकडक़र शेष भाग को हवा की अनुकूल दिशा में लहराना/उड़ाना या उड़ने देना। **जैसे:** झंडा फहराना।

फाँकना *स.क्रि. (देश.)* दाने या चूर्ण को हथेली में रखकर सीधे मुख में इस तरह से डालना कि वह वस्तु होठों पर न लगे/ न चिपके। **मुहा.** धूल फाँकना = इस तरह से मारे-मारे फिरना या भटकना कि सारा शरीर धूल-मिट्टी से सन जाए और काम भी इच्छानुकूल पूरा न हो।

फाँदना *अक्रि. (तद्. (प्रा. फंद (तत्. स्पंद)* एक स्थान से उछलकर किसी बाधा की ऊँचाई को पार करते हुए दूसरी ओर उतरना। **टि.** फाँदने में 'ऊँचाई' को पार करने का महत्व है; न कि उसकी चौड़ाई बताने का (जो कि छलाँग में अपेक्षित है)। **जैसे:** दीवार लाँघना।

फाँस *स्त्री. (तद्. पाश)* 1. रस्सी का बना सरकती गाँठ वाला फंदा जिसमें पक्षियों, पशुओं को फँसाया जाता है। **पर्या.** फंदा। 2. बाँस आदि का पतला/बारीक नुकीला टुकड़ा जो शरीर में चुभ जाए। 3. मन में चुभने वाली बात। **उदा.** तुम्हारे मन में कौन-सी फाँस अटकी पड़ी है?

फाँसी *स्त्री. (तद् (पाश.)* मृत्युदंड के कार्यान्वयन का एक तरीका जिसमें सिद्धदोष व्यक्ति के गले में फंदा डालकर उसको मृत्युपर्यंत लटका रहने दिया जाता है।

फाका *पुं. (अर.)* 1. निराहार रहने/कुछ न खाने की कष्टप्रद स्थिति।

फाकाकशी *स्त्री. [अर.+फा.]* **दे.** फाका।

फाकामस्त *वि. [अर.+फा.]* जीवन-निर्वाह के साधनों के नितांत अभाव में भी मस्त रहने वाला; गरीबी की हालत में भी खुश रहने वाला।

फाकामस्ती *स्त्री. (फा.)* व्यु.अर्थ फाका करने (यानी खाने को कुछ न मिलने) के बावजूद मस्त रहने 'फाकेमस्त' रहने का स्वभाव यानी परवाह न करने की स्थिति। **दे.** फाकेमस्त।

फाख्ता *स्त्री. (अर.)* 1. एक छोटी चिड़िया, पंडुक। **मुहा.** फाख्ता उड़ाना = गुलछर्रे उड़ाना, मौज करना।

फाग *पुं. (हि. फागुन)* 1. होली के त्योहार के अवसर पर गाया जाने वाला गीत। 2. फाल्गुन मास में मनाया जाने वाला रंगों का त्योहार।

फाड़ना *स.क्रि. (तद्. (स्फाटना)* 1. किसी पूर्ण वस्तु के दो या अधिक (असमान) टुकड़े करना, चीरना। **जैसे: 1.** कागज/कपड़ा/लकड़ी आदि फाड़ना। 2. दूध में खटाई का अंश डाल कर उसके जलीय एवं ठोस भाग को अलग-अलग करना। 2. (मुँह या आँख को) सामान्य स्थिति से अधिक खोलना। **उदा.** तुम आँखें फाड़-फाड़ कर मुझे क्यों देख रहे हो? मुँह फाड़कर इस तरह न बैठो, नहीं तो मक्खियाँ मुँह में घुस जाएंगीं।

फानूस *पुं. (फार.)* 1. छत से लटकते डंडे के चारों ओर लगे हुए शीशे के गिलास आदि (जो झाड़ की तरह लगते हैं और) जिसमें मोमबत्तियाँ,

बल्ब आदि जलाए जाते हैं। **पर्या.** झाड़ फानूस। chandelier

फायदा *पुं. (अर.)* लाभ, नफा।

फायदेमंद *वि. (अर.+फा.)* लाभदायक, हितकर; उपयोगी।

फारम *पुं. (अं.)* 1. किसी अभिलेख का वह छपा हुआ नमूना जिसमें आवश्यक जानकारी देने के लिए रिक्त स्थान बने होते हैं और आवेदक उनकी पूर्ति करके उसे विचारार्थ प्रस्तुत करता है। **पर्या.** प्रपत्र। 2. फार्म खेती, पशु-पालन आदि के लिए जमीन का बड़ा टुकड़ा, भाग।

फाल *पुं. (तद्.)* लोहे की एक मजबूत तिकोनी पत्ती जो हल के मुख्य भाग से जुड़ी होती है। यह पत्ती मिट्टी को उलटने-पलटने का कार्य करती है।

फावड़ा *पुं. (देश.)* मोटी और सख्त लोहे की चद्दर का बना चौड़े आकार का और लकड़ी का हत्था लगा मिट्टी खोदने तथा खोदी हुई मिट्टी को उठाने के काम आने वाला एक उपयोगी उपकरण। **उदा.** फावड़ा किसानों व श्रमिकों के लिए एक अत्यंत उपयोगी उपकरण है। spade

फासला *पुं. (अर.)* दो दत्त बिंदुओं/स्थानों के बीच की दूरी।

फासीवादी *वि./पुं. (अं.+तत्.)* 1. मूल अर्थ में इटली में शासन (1922-43) करने वाले राजनीतिक दल का कोई भी सदस्य। 2. विस्तृत अर्थ में तत्काली इटली की शासन प्रणाली में विश्वास करने वाला कोई भी व्यक्ति या उसका समर्थक यानी चरम दक्षिण पंथी और उग्र राष्ट्रवादी विचारधारा का पोषक कोई राजनीतिक दल या व्यक्ति विशेष। fascist

फाहा *पुं. (देश.)* 1. तेल, इत्र, मरहम आदि में डुबोया हुआ या भिगोया हुआ रुई या कपड़े का टुकड़ा। 2. घावों की सफाई करने के लिए तीली के ऊपर लिपटा रुई या गॉज का टुकड़ा।

फिकर/फिक्र *स्त्री. (अर.)* 1. चिंता, सोच। **उदा.** (1) आप **फिकर** (फिक्र) न करे, मैं मुंबई पहुँच जाऊँगा। (2) माँ बच्चे की **फिक्र** नहीं करेगी तो कौन करेगा? 2. परवाह। **उदा.** किसी को मेरी फिक्र नहीं है।

फिकरा *पुं. (अर)* 1. वाक्य। 2. लाक्ष. व्यंग्योक्ति, कटाक्ष, फबती/फब्ती। **मुहा.** फिकरा कसना=व्यंग्य में कुछ कहना। **जैसे:** किसी लडक़ी को देखकर, वाह अनारकली/जानेमन आदि कहना।

फिकरेबाज *वि.(अर.)* व्यंग्यपूर्ण बातें करने वाला; फबतियाँ कसने वाला।

फ़िक़ा *पुं. (अर.)* 1. समुदाय, दल, जमात। 2. पंथ, संप्रदाय, जाति।

फिजूल दे. फजूल।

फिटकरी/फिटकिरी *स्त्री. (तद्. (स्फटिका)* एक मिश्र खनिज पदार्थ जो सफेद रंग का होता है और दवा, रँगाई आदि के काम में आता है। एलम

फितूर *पुं. (अर. (फुतूर)* 1. मन या दिमाग में रहने वाला कोई दोष या पूर्वाग्रह। **जैसे:** उसके दिमाग में ऐसा फितूर बैठा है कि वह किसी की बात मानता ही नहीं। 2. दूसरों को तंग करने की करतूत या शरारत। 3. उत्पात, उपद्रव। **मुहा.** फतूर खड़ा करना = कोई अडंगा उत्पन्न करना।

फिदा *वि. (अर.)* पूरी तरह आसक्त, मुग्ध। **उदा** (**1**) वह तुम पर ऐसा फिदा है कि उसे कोई दूसरा व्यक्ति अच्छा ही नहीं लगता। (2) देश पर फिदा लोग अपनी जान भी न्यौछावर कर देते हैं।

फिरंगी *वि./पुं. (हिं-फिरंग (फ्रांक)* ***वि.*** फिरंग देश में उत्पन्न, फिरंग देश में रहने वाला। ला.प्रयो. यूरोप के गौरवर्ण के उन लोगों के लिए प्रयुक्त (अपमानसूचक) शब्द जिन्होंने भारत पर (क्रूरतापूर्ण) शासन किया।

फिर *(तद्.) अर्थ.* किसी अन्य समय 1. पुन: दोबारा, दुबारा **जैसे:** फिर आना again 2. बाद में, अनंतर **जैसे:** फिर कभी मिलेंगे। 3. बारंबार (फिर-फिर) **प्रयोग** 1. फिर कभी some other time 2. फिर तो and then, at this 3. फिर-फिर time and again once again 4. फिर भी, yet, still time and again 5. फिर से once again

फ़िरक़ा परस्त *वि. (अर.+फा.)* सांप्रदायिक, जातिगत भेदभाव में विश्वास रखने वाला।

फ़िरक़ापरस्ती *स्त्री. (अर.+फा.)* सांप्रदायिकता, जातिवाद, दलबंदी। **उदा.** हमें देश हित में फ़िरक़ा परस्ती से बचना चाहिए।

फिरकी *स्त्री./वि. (देश. फिर कना)* घूमने वाला लकड़ी, प्लास्टिक आदि का एक गोल छोटा खिलौना। **पर्या.** चकई, फिरहरी **वि.** घूमने वाली **जैसे:** क्रिकेट में फिरकी गेंद करना spin bowlling

फिरना *अ.क्रि. (देश.[परिभ्रमण)* 1. घूमना, चक्कर खाना, चारों ओर चक्कर लगाना। 2. पीछे की ओर लौटकर आना या किसी ओर मुड़ जाना। 3. अपनी बात से मुकर जाना। **मुहा.** सिर फिरना=बुद्धि भ्रष्ट हो जाना, दिमाग खराब होना।

फिलटर *पुं. (अं.)* तरल पदार्थ या गैस को छानने वाला उपकरण जिसके माध्यम से उपयोगी स्वच्छ पदार्थ तो पार चला जाता है और अनुपयोगी पदार्थ ऊपर रह जाता है। छन्नी।

फिलहाल/फिलवक्त *वि.क्रि. (अव्य.)* अभी, इस समय

फ़िल्म *स्त्री. (अं.)* 1. कैमरे में लगाई जाने वाली प्रकाश-संवेदी रसायन-लेपित प्लास्टिक की पतली और नरम पट्टी जो फ़ोटो खींचने और चल-चित्र बनाने के काम आती है। 2. सिनेमा या टेलिविज़न के पर्दे पर प्रक्षेपित कथात्मक चित्रमाला जो वेग से चलाए जाने पर सजीव आकार ग्रहण कर लेती है।

फ़िल्मकार *पुं. (अं.+तत्.)* फ़िल्म/चलचित्र बनाने वाला, फ़िल्म/चलचित्र निर्माता film-producer

फ़िल्म-समारोह *पुं. (अं.+तत्.)* मेलेनुमा ऐसा आयोजन जिसमें, देश-विदेश में बनी फ़िल्मों का प्रदर्शन किया जाता है और प्रतियोगिता में उच्च श्रेणी प्राप्त करने वाली फ़िल्मों को पुरस्कृत किया जाता है।

फिसड्डी *वि. (अर.)* (सदा) पीछे रह जाने वाला; सुस्त, काहिल

फिसल पट्टी *स्त्री. (देश.)* शा.अर्थ फिसलने के लिए (बनी) पट्टी। **खेल.** छोटे बच्चों के खेल का एक साधन जो प्राय: विद्यालयों एव उद्यानों में उपलब्ध होता है। उसमें एक ओर से चढ़ने के लिए सीढ़ियाँ होती हैं, और दूसरी ओर ढालदार लोहे की चादर लगी होती है, जिसपर बच्चे फिसल कर मनोरंजन करते हैं।

फिसलना *स्त्री. (देश.)* 1. गीले या चिकने तल पर चलते समय पैर आगे-पीछे सरक जाने के कारण संतुलन खोना। 2. लोभ आदि के कारण मन का असंतुलित हो जाना।

फिस्स *(देश.अनु.)* गुब्बारे से धीरे-धीरे हवा निकलते समय सुनाई पड़ने वाली आवाज़।

फिस्स होना *अ.क्रि.* सा.अर्थ हवा निकल जाना। *ला.अर्थ-* निरर्थक या व्यर्थ सिद्ध होना, बेकार जाना। **मुहा.** टाँय-टाँय फिस्स होना=बहुत बातें होने के बावजूद कुछ भी परिणाम न निकलना।

फीका *वि. (तद्.)* 1. (वह पदार्थ) जिसमें आवश्यक नमक या यथेष्ट स्वाद, रंग आदि न हो। **उदा.** फीका दूध, फीकी सब्ज़ी, फीका रंग आदि। 2. कांतिहीन। **उदा.** धूप पड़ने से दरवाज़े का रंग फीका पड़ गया है। **विलो.** चटकदार **मुहा.** चेहरे का रंग फीका पड़ जाना=उदास हो जाना, प्रसन्नता का भाव समाप्त हो जाना।

फ़ीता *पुं. (फार.)(पुर्त.)* 1. धागे आदि की बुनी गोलाकार या बहुत कम चौड़ी पट्टी जो चीज़ों को बाँधने के काम आती है। **जैसे:** जूता बाँधने का फ़ीता 2. एक पतली पट्टी जिस पर इंचों या सेन्टी मीटरों के निशान लगे होते हैं किसी वस्तु को नापने के काम आती है।

फुंकार *स्त्री. (तद्.[फूत्कार)* फूँकने से होने वाली ध्वनि, फूँ फूँ की ध्वनि विशेष, फूत्कार फुफकार **जैसे:** साँप की फुंकार

फुंसी *स्त्री. (तद्.]पनसिका)* रक्त विकार के कारण त्वचा पर उभरा मवाद युक्त छोटा दाना। (बहु. फुंसियाँ)

फुँदना *पुं. (देश.)* किसी डोरी या झालर के सिरे पर बनाया गया फूल के आकार का गुच्छा। **पर्या.** झब्बा।

फुँदनेदार *वि. (देश.)* फुँदनों से युक्त **पर्या.-** झब्बेदार **दे.** फुँदना

फुकनी *स्त्री. (देश.)* शा.अर्थ फूँक मारने का उपकरण। **गृह** लोहे, बाँस आदि की पोली नली जिसमें फूँक मार कर आग को सुलगाने के लिए हवा देते हैं।

फुट *पुं. (अं.)* 12 इंच की लंम्बाई **विशेष-** 12 इंच=1 फुट, 3 फीट=1 गज़ 220 गज़=1 फर्लांग=200 मीटर, 8 फर्लांग=1 मील, 5 फर्लांग= 1 किलोमीटर (वर्तमान माप) **टि.** बहुवचन-फ़ीट (हिंदी वाक्यों में प्रयुक्त होने पर

इस बहुवचन रूप का प्रयोग न होकर एकाधिक संख्याओं के लिए एकवचन 'फुट' का ही प्रयोग प्रचलित है। **जैसे:** दस फुट कपड़ा (न कि दस फ़ीट कपड़ा)

फुदकना *अ.क्रि. (अनु.)* बहुत कम लंबाई और उँचाई पर हलके से उछल-उछलकर आगे बढ़ने की क्रिया। **जैसे:** चिड़ियों का फुदकना।

फुनगी *स्त्री. (देश.)* वृक्ष या शाखा का सिरा; शाखा के अंत की कोमल पत्तियाँ 1. पतली डाली (शाखा) या दूब का अंतिम सिरा। 2. अंतिम सिरे पर पनपी छोटी-सी कोमल पत्ती (नवांकुर)

फुफकारना *अ.क्रि. (अनु./तद्.[फूत्कार)* मूल अर्थ. क्रोधित सर्प के मुख से फू-फू जैसी आवाज़ का निकलना। फूत्कार करना। सा.अर्थ क्रोधावेश में व्यक्ति की साँस फूल जाने पर (सर्प जैसी ही) आवाज़ निकलना; गुस्से में ज़ोर-ज़ोर से बोलना।

फुफेरा *वि. (देश.)* [फूफा+एरा-प्रत्य.] फूफा या फूफी (बुआ) के नाते से **जैसे:** फुफेरा भाई (स्त्री. फुफेरी बहिन)

फुर/फुर्र *स्त्री. (अनुर.)* 1. छोटी चिड़िया के उड़ने पर पंखों से होने वाली ध्वनि। **उदा.** पास में जाते ही चिड़िया फुर/फुर्र से (तेजी से) उड़ गई। 2. जल्दी/शीध्रता से गायब होना। **उदा.** मेरे देखते ही देखते चोर फुर्र हो गया।

फुरती/फुर्ती *स्त्री. (तद्.]स्फूर्ति)* तेज़ी, चुस्ती, शीध्रता। **उदा.** तुमने इस काम को निपटाने में बहुत फुरती/फुर्ती दिखाई।

फुरतीला/फुर्तीला *वि. (तद्.[स्फूर्तिमान)* तेज, चुस्त, स्फूर्तिमान

फुरसत (फुर्सत)स्त्री. *(अर.)* काम न रहने के कारण अवकाश का समय, खाली या फालतू समय **उदा.** आजकल मुझे फुरसत है, आप मेरे यहाँ आ जाएँ। **मुहा.** फुरसत पाना= 1. छुटकारा पाना 2. खाली समय मिलना।

फुलका *पुं. (देश.)* 1. पतली और फूली हुई रोटी, चपाती। 2. फूल की तरह हलका, फूल के समान। **जैसे:** हलका-फुलका

फुलझरी/फुलझड़ी *स्त्री. [हिं.+फूल+झड़ना] देश.* आतिश बाज़ी का एक प्रकार जिसमें रोगन लगी पतली डंडी को जलाने पर फूल जैसी चिनगारियाँ झड़ने (गिरने) लगती हैं।

फुलवारी/फुलवाड़ी *स्त्री. [हिं.+फूल+वाड़ी=काटिका]* देशज फूलों के पौधों से युक्त छोटा बगीचा **पर्या.** पुष्पवाटिका

फुलेल *पुं. [फूल+तेल] (देश.)* ऐसा तेल जिसमें फूलों की सुगंध आती हो। **पर्या.** इत्र, अतर। **उदा.** करि फुलेल को आचमन, मीठो कहत सराहि। रे गंधी मतिमंद तू, अतर दिखावत काहि।।

फुसफुसाना *स.क्रि. (अनुर.)* 1. बहुत ही धीमे स्वर में दूसरे के काम में कुछ कहना ताकि तीसरा कोई सुन न सके। 2. कानाफूसी करना। **उदा.** तुम दोनों आपस में क्या फुसफुसा रहे हो?

फुसफुसाहट *स्त्री.* फुसफुसाने की क्रिया या भाव। कक्षा में पास बैठे दो छात्रों की फुसफुसाहट सुनकर अध्यापिका ने उन्हें पढ़ाई में ध्यान लगाने के लिए (आगाह किया) कहा।

फुसलाना *स.क्रि. (देश.)* मीठी, मधुर बात कह कर या लालच दे कर किसी को कुछ करने के लिए तैयार करना; भुलावा देना; बहकाना **जैसे:** (रूठे) बच्चे को फुसलाना।

फुहार *स्त्री. (देश.)* आकाश से या किसी पानी छिडक़ने के यंत्र से गिरने वाली पानी की बहुत बारीक बूँदों का सिलसिला (की धारा)। हल्की वारिस।

फूँकना *सक्रि. (फूँक)* 1. होंठों को थोड़ा खोल कर मुँह से हवा निकालना। 2. शंख, बाँसुरी आदि को फूँक कर बजाना। 3. किसी के कान में गोपनीय ढंग से अपनी बात कहना। 4. फूँक कर चूल्हे आदि में आग प्रज्वलित करना। ला.अर्थ अपनी संपत्ति को नष्ट कर देना। **मुहा.** फूँक-फूँक कर पाँव रखना= किसी काम को करते समय बहुत सावधानी बरतना। कान फँकना-किसी को मँत्र देना या शिष्य बनाना।

फूट *स्त्री. (तद्.[स्फुटन)* 1. परस्पर विरोध की स्थिति; विचारों का न मिलना। **जैसे:** उनके दल में फूट पड़ गई या आपस में फूट पड़ने के कारण ही हम हार गए। **विलो.** एका, एकता **मुहा.** 1. फूट के बीज बोना/फूट डालना=आपस में वैमनस्य पैदा करना। 2. फूट पड़ना= विचारों में मतभेद के फलस्वरूप विरोध की स्थिति पैदा हो जाना।

फूफा *पुं. (देश.)* नाते रिश्तेदारी में बुआ के पति या कहें पिता के बहनोई। (स्त्री. फूफी=बुआ, पिता की बहिन)

फूल *पुं. तद् (स.फुल्ल)* 1. खिली हुई कली **पर्या.** पुष्प, कुसुम, सुमन आदि। **आयु.** ऋतुमती स्त्री का रज। **वन.** पादप का वह अंग जिससे बीज और फल विकसित होता है और आरंभ में जिसकी पंखुड़ियाँ चमकीली और प्राय: रंगीन होती हैं। 2. कान में पहनने का एक गहना जो पुष्प से मिलता-जुलता लगता है। 3. शवदाह के पश्चात् बची हुई हड्डियों के टुकड़े, जिन्हें चुनकर गंगा; जल में प्रवाहित कर देने की प्रथा हिंदुओं में प्रचलित है।

फूलझाड़ू *पुं. [तद्+देश.]* सरकंड़े, कांस आदि की सींकों से बना झाड़ू जिससे महीन धूल बुहारी जाती है।

फूलदान *पुं. (तद्+फा.)* शा.अर्थ फूल संग्रह करने का बर्तन। सा.अर्थ फूल और पत्तियों को करीने से सजाकर रखने का मिट्टी, शीशे या धातु का बना पात्र। flower-vase

फूलना *अक्रि. (तद्.[फुल्ल)* 1. पेड़-पौधों में फूल आना, पुष्पित होना, कली का खिलना। 2. मोटा/स्थूलकाय होना। 3. अपनी उपलब्धि पर अति प्रसन्न होना। **मुहा.** 1. फूल कर कुप्पा होना=दे. अर्थ होना। 2. फूलना-फलना=धन एवं परिवार में वृद्धि होना। 3. फूले न समाना=खुशी से पागल होना।

फूस *पुं.* छप्पर बाँधने या ईंधन के काम आने वाले सूखे डंठल। ला.अर्थ निरर्थक वस्तु

फूहड़ *वि. (फार.)* 1. जिसे ठीक ढंग से काम करना न आता हो। **पर्या.** बेढंगा। 2. गंदी और अश्लील हरकतें करने वाला। **जैसे:** फूहड़ गाली

फूहड़पन *पुं. (फार.)* फूहड़ होने का भाव या स्थिति। **दे.** फूहड़

फेंकना *स.क्रि. तद् (संप्रेषण)* 1. हाथ को झटका देकर किसी वस्तु को अपने से दूर डालना। **जैसे:** पत्थर फेंकना। 2. अनुपयोगी समझकर किसी चीज़ को कूडेदान में गिरा देना। **जैसे:** केले के छिलके फेंक दो।

फेंटना *स.क्रि. (देश.)* 1. हाथ, उँगली या किसी उपकरण से गाढ़ी वस्तु को बार-बार मथना ताकि वह अच्छी तरह से मिलकर एकाकार हो जाए। 2. ताश के पत्तों को दोनों हाथों से इतनी तेज़ी से उलट-पलट कर मिलाना कि प्रतिपक्षी यह न भाँप सके कि कौन-सा पत्ता कहाँ होगा। **जैसे:** पहले ताश के पत्तों को अच्छी तरह से फेंट लो और फिर बाँटो।

फेन *पुं. (तत्.)* बुलबलों का समूह। **दे.** झाग

फेफड़ा *पुं. (तद्[फुफुस)* वक्षत्वचा (छाती की चमड़ी) के नीचे पसलियों से सुरक्षित और जोड़े में स्थित अंगों में से कोई एक जिससे रीढ़ वाले अधिकतर प्राणी साँस लेते हैं। lungs

फेर *पुं. ([फिरना)* 1. चक्कर; उलझन **उदा.** मैं तुम्हारी बातों के फेर में आ गया। 2. विपत्तिसूचक परिवर्तन। **उदा.** भाग्य का फेर देखो कि वह राजा से रंक बन गया।

फेरना *स.क्रि. देश.* 1. किसी गोलाकार वस्तु को इस तरह से घुमाना कि चक्र पूरा होने पर वही स्थान फिर से आ जाए। **जैसे:** माला फेरना। 2. लौटाना **उदा.** उसने दहेज का सामान फेर दिया- यह अच्छा किया। 3. उलटना-पलटना **जैसे:** तवे पर रोटी को फेरना। 4. किसी वस्तु को विपरीत दिशा में करना। **जैसे:** मुँह फेरना। **मुहा.** पानी फेरना=नष्ट कर देना।

फेरबदल *पुं. द्विरुक्ति* (फेरना+बदलना) वर्तमान स्थिति में किया गया परिवर्तन। **जैसे:** मंत्रिमंडल में इस बार काफी फेर बदल होने वाला है।

फेरा *पुं.देश.(हि.[फेरना)* 1. चारों ओर घूमने का भाव, परिक्रमा। **जैसे:** विवाह के अवसर पर अग्नि के सात फेरे लिए जाते हैं। 2. बार-बार आना-जाना, गश्त। **जैसे:** पुलिस या चौकीदार का फेरा।

फेरी *स्त्री.हि. (फेरा)* **दे.** फेरा

फेरीदार *पुं. (हि.फेरी+फा.दार)* वह व्यक्ति जो चारों ओर घूम फिर कर सामान बेचता है या किसी महाजन या दुकानदार की तरफ से घूम-घूम कर कर्जदारों से धन वसूलने का काम करता है।

फेरीलगाना *अ.क्रि.* सब ओर घूम फिर कर सामान बेचना या और कोई काम करना।

फेरीवाला *पुं. (देश.)* घूम-फिर कर चीजों बेचने वाला।

फेल *वि. (अं.)* 1. जो किसी अभीष्ट कार्य या योजना को पूरा करने में सफल न हुआ हो,

असफल। **जैसे:** उसकी स्कूल बनाने की योजना फेल हो गई। 2. जो परीक्षा, साक्षात्कार आदि अनुत्तीर्ण हो। 3. यांत्रिक गड़बड़ी के कारण किसी कार्य का न होना। **जैसे:** छपाई मशीन फेल हो जाने से आज पत्रिका नहीं छप सकी।

फेहरिस्त *स्त्री. (अर.)* (1) सूची पत्र; (2) सूची।

फैंतासी *स्त्री. (अं. (फैन्टेसी)* 1. स्वच्छंद कल्पना। ऐसी कल्पना जिसका कोई आधार नहीं है। 2. (काव्य.) जो कविता, कहानी, नाटक आदि यथार्थ पात्रों या यथार्थ दृश्य योजना पर आधारित न होकर स्वच्छंद कल्पना से युक्त होते हैं। **जैसे:** कवि की इस कविता में फैंतासी के प्रयोग से सौंदर्य बढ़ गया है। 2. कालिदास ने मेघ को दूत बनाकर संस्कृत काव्य में फैंतासी का प्रयोग किया है। fantasy

फैंसी *वि. (अं.)* सामान्य से हटकर सुंदर या भड़क़दार लगने वाली। **जैसे:** फैंसी ड्रैस। (Fancy)

फैक्ट्री/फैक्टरी *स्त्री. (अंग्रे.)* वह भवन या परिसक जहाँ यंत्रों की सहायता से उपयोगी वस्तुओं का विपुल मात्रा में निर्माण किया जाता है। **पर्या.** कारखाना, निर्माणशाला-निर्माणी (**जैसे**: आयुध निर्माणी)

फैन *पुं. (अं.)* 1. वह प्रेमी या शौकीन व्यक्ति जो किसी प्रसिद्ध गुणी कलाकार, संगीतकार, खिलाड़ी अथवा किसी खेल आदि के प्रति हार्दिक प्रेम या अभिरुचि रखता है। **जैसे: 1.** ये सब अमिताभ बच्चन के फैन हैं। 2. वह क्रिकेट फैन है। 2. शौकीन। 3. हाथ से डुलाने का पंखा या बिजली से चलने वाला पंखा।

फैलना *अ.क्रि. (तद् (प्रसरण)* वर्ततान स्थिति की तुलना में **1.** अधिक जगह घेरना। **जैसे:** बीमारी फैलाना। 2. आकार में विस्तार होना, **जैसे:** शरीर का फैलना। 3. चारों तरफ बिखर जाना, **जैसे:** घर में कूड़ा फैलना। 4. कार्य क्षेत्र की सीमा बढ़ना, **जैसे:** विदेशों में व्यापार फैलना। **पर्या.** पसरना।

फैलाना *सक्रि. (प्रेरणार्थक (फैलना)* 1. विस्तार करना। 2. इधर-उधर बिखेर देना। 3. प्रचार करना। **पर्या.** पसारना।

फैलाव *पुं. (हि. फैलाना)* फैले हुए होने की अवस्था या भाव। **पर्या.** विस्तार, प्रसार। **उदा.** वर्षा से युमना नदी के जल का फैलाव बहुत बढ़ जाता है।

फैशन *पुं. (अं.)* समाज में जो स्थायी न रहकर समय-समय पर बदलता रहता है। बनाव-श्रृंगार, रहन-सहन, खान-पान का वह सामयिक ढंग आदि। fashion

फैसला *पुं. (अर.)* किसी वाद-विवाद इत्यादि में निर्णायक द्वारा दिया गया निर्णय। **पर्या.** निर्णय, निबटारा।

फॉल *स्त्री. (अं.)* साड़ी के निचले किनारे पर लगभग आधे हिस्से से सिली हुई चार इंची चौड़ी सूती पट्टी जो उसे ठीक से लटकने में और मजबूती के लिए सहायक होती है। Fall.

फोकट *वि. (देश.)* 1. जिसमें कुछ भी रस या सार न बचा हो। **पर्या.** निस्सार। 2. जो मुफ्त में मिला हो; जिसे पाने में खुद को परिश्रम न करना पड़ा हो। **जैसे:** फोकट का माल।

फोकस *पुं. (अं.)* **भौ.** बिंदु जिस पर किरणें परावर्तन या अपवर्तन के बाद अभिसरण करती हैं या इससे आती हुई प्रतीत होती हैं। focus

फोकसिंग *पुं. (अं.)* लक्षित वस्तु का कैमरे से चित्र उतारने के ठीक पहले दूरी निश्चित करने की प्रक्रिया ताकि प्रतिबिंब स्पष्ट दिखाई पड़े। focussing

फोटक *वि. (तद्.) (स्फोटक)* व्यर्थ का या कष्टकर (कोई कार्य)। **उदा.** करद्वि ते फोटक पचि मरहिं (तुलसी रा.च.मा.) दोहा 268 **टि.** ग्राम्य प्रयोग।

फोटोग्राफी *स्त्री. (अं.)* सा.अर्थ फोटो खींचने, छाया चित्र बनाने का कार्य। **भौ.** तसवीर (फोटो) खींचने की वह कला या विज्ञान जिसमें प्रकाश संवेदनशील पदार्थ से लेपित फिल्म या प्लेट पर उद्भासित वस्तु का प्रतिबिंब लिया जाता है फिर इस चित्र निगेटिव को पुन: उद्‌भासित कर पेपर पर तसवीर उतारी जाती है। **पर्या.** छाया चित्रण, छायांकन।

फोटोस्टेट *स्त्री. (अं.)* 1. विशेष कागज पर फोटो प्रतिलिपि तैयार करने की मशीन। 2. इस मशीन से तैयार वह प्रतिलिपि जिसमें मूल का यथावत् चित्रण हो जाता है।

फोड़ना *स.क्रि. (तद्. (प्रा. फोड़न(स्फोटन)* 1. किसी इकाई पर प्रहार कर उसके एकाधिक टुकड़े करना, **उदा.** उसने घड़ा फोड़ दिया। 2. लालच के बल पर दूसरे पक्ष से कुछ व्यक्तियों को अपने दल में मिला लेना। **उदा.** अमुक पार्टी ने अमुक पार्टी के आठ सदस्यों को फोड़कर विधान सभा में अपना बहुमत सिद्‌ध कर दिया। 3. व्यर्थ में समय और मेहनत नष्ट करना, **उदा.** उस बेवकूफ को समझाने में तुम अपना सिर क्यों फोड़ रहे हो।

फोड़ा *पुं. (तद्. (स्फोट)* **आयु.** प्राणियों के शरीर में जैविक संक्रमण हो जाने या चोट के कारण बना घाव जिसमें मवाद भी पड़ गया हो **पर्या.** व्रण

फ़ोबिया *पुं. (अं.) (चिकि.)* एक मनोविकार जिसके होने पर मन में किसी वस्तु आदि के प्रति एक अज्ञात भय बैठ जाता है और रोगी उस वस्तु के पास आते ही व्याकुल हो जाता है। phobia

फ़ौज *स्त्री. (अर.)* 1. **दे.** सेना 2. ला.अर्थ आवश्यकता से अधिक लोगों का समूह। **उदा.** दो-तीन छात्र आकर अपनी समस्याएँ रखते। छात्रों की फ़ौज लाने की ज़रूरत नहीं थी।

फौज़दार *पुं. (अर.+फा.) (प्राचीन प्रयोग)* स्थल सेना में कनिष्ठ अधिकारी का पदनाम।

फौजदारी न्यायालय *पुं.* वह अदालत या न्यायालय जिसमें लड़ाई-झगड़े, मारपीट, कत्ल आदि के मुकदमें सुने जाते हैं और अपराधियों को दंडित किया जाता है। क्रिमिनल कोर्ट

फौज़दारी *स्त्री. (अर.+फा.)* 1. फ़ौजदार का पद और उससे संबंधित कार्य। 2. लड़ाई-झगड़ा, मारपीट, कत्ल आदि का गैरकानूनी काम। **जैसे:** फौजदारी कानून।

फ़ौजी *वि.* फ़ौज से संबंधित, सेना का। **पुं** सैनिक (छोटे-बड़े के भेदभाव से रहित सामान्यत: तीनों अंगों और विशेषत: स्थल सेना के वर्दीधारी कर्मचारी/अधिकारी के लिए प्रयुक्त शब्द)।

फ़ौरन *वि.क्रि. (अर.)* तुरंत, अविलंब, चटपट, तत्क्षण

फ़ौरी *वि. (अर.)* 1. तुरंत करने योग्य, फ़ौरन होने योग्य 2. अत्यावश्यक अर्जेन्ट **उदा.** यह कार्य फ़ौरी है। **पर्या.** फौरन, त्वरित

फ़ौलाद *पुं. (अर.)* लोहे और कार्बन के मिश्रण से बनी कड़ी और बढिया धातु। **पर्या.** इस्पात steel

फ़ौलादी *वि. [अर.+ई प्रत्यय]* 1. फ़ौलाद से बना, फौलाद का। 2. ला.अर्थ बहुत ही मज़बूत। **जैसे:** फौलादी दिलवाला।

फौवारा/फ़व्वारा *पुं. (अर.)* 1. वह शोभाप्रद जलयंत्र जिससे पानी को हवा में ऊपर की ओर तेजी से उछाला जाता है और जल की धाराएँ घने रूप में चारों ओर फैलती और नीचे गिरती हैं। 2. फूलों की क्यारियों में पानी छिडक़कने का डिब्बानुमा यंत्र **उदा.** उद्यानों में सुंदरता बढ़ाने के लिए 'फौवारे/फव्वारे' लगाए जाते हैं। **उदा.** वृंदावन गार्डन में बिजली की रोशनी में जगमगाते फौवारे देखने के लिए हजारों लोग इकट्ठा होते हैं। 2. पौधों को फौवारे से पानी देना ठीक रहता है ताकि उनकी जड़ें खराब न हों।

फ्यूज *पुं. (अं.)* **वि.इजी.** धातु के पतले तार के टुकड़े से बनी एक सुरक्षात्मक युक्ति जिसे विद्युत् परिपथ में इस उद्देश्य से लगा दिया जाता है कि यदि नियत स्तर से अधिक विद्युत्-धारा प्रवाहित होने लगे तो वह तार का टुकड़ा पिघलकर टूट जाए और इस तरह विद्युत परिपथ के भंग हो जाने के परिणामस्वरूप आग लगने जैसी दुर्घटना से बचा जा सके।

फ्रस्ट्रेशन *पुं. (अं.)* 1. बार-बार प्रयत्न करने पर भी किसी लक्ष्य की प्राप्ति न होने से उत्पन्न निराशाजन्य भावना। 2. विफलता की हताशा 3. मानसिक कुंठा **उदा.** आजकल अनेक युवक जीवन में असफल होने से फ्रस्टेशन का शिकार हो रहे हैं। frustration

फ्रिज *पुं. (अं.)* घर, अस्पताल, दवाइयों की दूकान आदि में बहुधा प्रयुक्त और विद्युत्-शक्ति से चलने वाला एक महत्वपूर्ण उपकरण जो उसमें रखे सामान को निम्न ताप पर ठंडा रखता है और इस तरह उसे खराब होने से बचाता है। **पर्या.** प्रशीतक्। refrigrator

फ्लश *पुं. (अं.)* शौचालय साफ़ करने की एक यांत्रिक व्यवस्था जिसमें काफ़ी मात्रा में पानी को एक झटके से बहाकर मल को मुख्य सीवर में प्रवाहित कर दिया जाता है। flush

फ़्लू *पुं. (*अं.) शब्द इंफ्लूएंज़ुआ का संक्षिप्त रूप) **आयु.** एक संचारी रोग जो विषाणु के संक्रमण से फैलता है। इसके सामान्य लक्षण हैं-जुकाम और बुखार।

फ़्लैश *पुं. (अं.)* 1. प्राकृतिक रूप से किसी यांत्रिक प्रक्रिया द्वारा उत्पन्न क्षणिक प्रकाश। दीप्ति, कौंध, आभा। 2. कैमरे में लगा तेज रोशनी वाला बल्ब जो रात्रि में या कम प्रकाश में भी छायाचित्र/फोटो खींचने में सहायक होता है।

ब

बंकिम *वि.(तत्.)* जो सीधी रेखा में न होकर कहीं से मुड़ा हो। **पर्या.** टेढ़ा, वक्र।

बंग *पुं.(तत्.)* 1. रांगा (एक धातु, यशद (टिन) 2. बंगाल प्रांत ("....द्राविड, उत्कल बंग।" राष्ट्रगान)

बंगाल की खाड़ी *स्त्री.* श्रीलंका द्वीप से मलय प्राय द्वीप तक की पड़ी रेखा से उत्तर में गंगा और ब्रह्मपुत्र के मुहानों तक भारत की पूर्वी तट रेखा और म्यांमार की पश्चिमी तट रेखा के बीच त्रिकोणीय आकार में पसरा समुद्री जलक्षेत्र। bay of Bangal

बंजर *वि.(तद्<*बंध्य प्रा. बंझ) पैदावार/खेती के लिए अनुपयुक्त भूमि, ऊसर भूमि। **उदा.** बंजरभूमि में घास तक पैदा नहीं होती।

बंटवारा *पुं.(देश.<*बंटन) किसी चल या अचल संपत्ति का समान या असमान भागों में विभाजन की क्रिया या भाव। **पर्या.** विभाजन। partition उदा. अंग्रेजों ने हमारे देश को छोड़ते-छोड़ते इसका बंटवारा दो देशों में (भारत और पाकिस्तान) कर दिया।

बंद *पुं.(फ़ा.<*सं. बंध) 1. वह वस्तु जिससे कुछ बांधा जाए, **जैसे:** कमरपेटी, लोहे की पत्ती या फीता आदि। 2. रूकावट, रोक। **उदा.** बंद की वजह से आज दुकानें नहीं खुलेंगी। 3. शरीर का कोई संधिस्थल। **उदा.** ठंडी हवा से शरीर के सारे बंद खुल रहे हैं। (वि.) (i) जो खुला न हो=आज विद्यालय बंद है, बंद रास्ता। (ii) पकड़ा हुआ/कैद=जेल में बंद अपराधी। (iii) जिसका आना जाना बंद हो। **जैसे**: पटरी उखड़ जाने से आज कई रेलगाड़ियाँ बंद कर दी गई हैं।

बंदगाँ *पुं.(फ़ार.)* दिल्ली के आरंभिक सुलतानों (विशेषकर इल्तुतमिश) द्वारा सैनिक सेवा के लिए खरीदे गए वे गुलाम जिन्हें प्रशासक, सूबेदार आदि के रूप में नियुक्त किया जाता था।

बंदगी *स्त्री.(फ़ार.)* 1. पूजा, उपासना, इबादत। **जैसे**: खुदा की बंदगी। 2. दासता, गुलामी।

बंदगोभी *स्त्री.(फ़ार.बंद+हि.गोभी)* एक सब्जी, पत्ता गोभी, करमकल्ला। **उदा.** बंदगोभी के पत्तों को सलाद के रूप में भी प्रयोग करते हैं। cabbage

बंदनवार *स्त्री.(तद्<*वंदनमाला) फूलों, पत्तों या अन्य शोभा की वस्तुओं को माला के आकार में गूँथकर दरवाज़ों के ऊपर बाहर की ओर लगाई जाने वाली झालर। **टि.** उत्सवों, मंगल अवसरों पर बंदनवार लगाने की परिपाटी है। इससे यह सूचना मिलती है कि यहाँ मंगलकार्य हो रहा है। festoon

बंदर *पुं.(तद्<*वानर) कुछ-कुछ मनुष्य जैसी शक्ल, सूरत और आदतों वाला एक पूँछदार, स्तनपायी पशु जो प्राय: पेड़ों या घर की छतों पर रहता है। कपि, वानर।

बंदरगाह *पुं. (अर. + फ़ा.)* (बंदर = समुद्रतट + गाह = स्थान) (i) समुद्र के किनारे का वह क्षेत्र जहाँ जहाज़ (जलपोत) आकर ठहरते हैं और यात्रियों तथा माल को चढ़ाते-उतारते हैं; (ii) इसी क्षेत्र में बस गया नगर भी। **पर्या.** पत्तन, पोताश्रय। port

बंदरिया *(स्त्री.)* मादा बंदर। **मुहा.** बंदर-भभकी या बंदर घुड़की=डराने के लिए धमकी। **जैसे**: वह तुम्हारी बंदरभभकी से डरने वाला नहीं।

बंदा *पुं.(फ़ा.)* 1. दास, सेवक। **उदा.** मालिक, हम सब तेरे बंदे हैं। 2. मनुष्य, इंसान। **जैसे**: खुदा का बंदा। **उदा.** इस काम में छह बंदे लगे हुए हैं।

बंदा-परवर *पुं.(फ़ा.)* लोगों की रक्षा करने वाली शक्ति, ईश्वर।

बंदिश *स्त्री.(फ़ा.)* शा.अर्थ बाँधने या बाँधे जाने की क्रिया या भाव। **पर्या.** बंधन। सा.अर्थ किसी कार्य को करने की मनाही, निषेध या अनिवार्यता। **पर्या.** रूकावट, प्रतिबंध, मनाही। restriction **संगी.** गीत, कविता आदि में शब्दों को मात्रा, तुक आदि की दृष्टि से बाँधना। **पर्या.** पेशबंदी।

बंदी[1] *पुं.* 1. वह व्यक्ति जिसे किसी अपराध में सीखचों के पीछे बंद कर दिया गया हो, कैदी, कारावासी। 2. अपने आश्रयदाताओं की काव्यमय स्तुति करने वाला समुदाय। जैसे: बंदीजन bard

बंदी[2] *पुं.(तद्.<*वंदिन्) 1. राजाओं की शौर्यगाथाओं का वर्णन करने वाला। **पर्या.** चारण, भाट। **जैसे**: बंदीजन। 2. पकड़े गए अपराधी। **पर्या.** कैदी,

कारावासी। 3. युद्ध में पकड़े गए शत्रुपक्ष के सैनिक, युद्धबंदी। (i) बंद होने या किए जाने की क्रिया या भाव का सूचक शब्द (समस्त पद उत्तरार्ध में प्रयुक्त) **जैसे**: तालाबंदी, नसबंदी। (ii) व्यवस्था में बाँधने का भाव। जैसे-चकबंदी, मेड़बंदी।

बंदी[3] *स्त्री.(फा.)* 1. घेरने या रूकावट डालने की क्रिया या भाव। **जैसे**: नाकेबंदी, किलाबंदी। 2. निर्माण या संगठन बनाने की स्थिति। **जैसे**: गुटबंदी, दलबंदी। 3. कामबंद रखने की स्थिति। **जैसे**: हमारे यहाँ सोमवार की बंदी होती है।

बंदीखाना *पुं.(फा.)* कैदियों को रखने की जगह। **पर्या.** कैदखाना, कारावास।

बंदीगृह *पुं.* कैदियों को बंद रखने के लिए बना कई कोठरियों वाला आवास। **पर्या.** जेलखाना, कारागार, कारागृह।

बंदोबस्त *पुं.(फा.)* 1. प्रबंध, व्यवस्था। **उदा.** शादी के काम का सारा बंदोबस्त हो चुका है। 2. वह सरकारी प्रबंध जिसमें खेतों की माप, उन पर लगने वाली मालगुज़ारी, लगान आदि की वसूली इत्यादि सम्मिलित है। **उदा.** इस साल हुए बंदोबस्त में हमारे खेतों का लगान बढ़ गया है।

बंधक *पुं.(तत्.)* ऋण लेते समय ऋणदाता के पास संपत्ति, जेवर आदि का अस्थायी रूप से रखा जाना। पर्याय रेहन। mortgage

बंधक बनाना *स.क्रि.* गैरकानूनी ढंग से रूपया उगाहने या अन्य माँग मनवाने की नीयत से किसी व्यक्ति को अगवा करना और उसे तब तक न छोड़ना जब तक माँगी गई रकम न मिल जाए या किसी तरह की अन्य माँग पूरी कर दी जाए।

बंधक रखना दे. बंधक।

बंधन *पुं.(तत्.)* 1. (i) बाँधने या बँधने की क्रिया या भाव। (ii) जातिप्रथा के बंधन, पारिवारिक बंधन, रूकावट, प्रतिबंध। **उदा.** आपके आने-जाने पर कोई बंधन नहीं है। 2. जिससे कुछ बाँधा जाए, वह रस्सी आदि। **उदा.** गाय का बंधन खोल दो, उसे चरने जाना है।

बंधा *पुं.(तद्.)* 1. खेत या नहर आदि में निकलते हुए पानी को रोकने के लिए मिट्टी डालकर उस स्थान को भरना। 2. वह लघु जलाशय जहाँ पानी को रोककर इकट्ठा किया गया हो। बाँध। उदाहरण-किसान लोग खेत से बहते हुए पानी को रोकने के लिए बंधा लगाते हैं।

बंधु-बांधव [बंधु+बांधव] *पुं.बहु.(तत्.)* व्यु.अर्थ बंधु=भाई+बांधव=नाते-रिश्ते से जुड़े लोग, नातेदार, रिश्तेदार। परिवार में रक्तसबंध में जुड़े सभी परिजन, स्वजन, निकट संबंधी, नातेदार, रिश्तेदार।

बँधुआ *वि.(देश.<*बंधन) शा.अर्थ जो बंधन (जंजीर, रस्सी आदि) में बंधा हुआ हो। **जैसे**: बंधुआ कुत्ता। सा.अर्थ जिसे बलपूर्वक किसी कार्य को करने के लिए बाध्य किया जाता हो। **जैसे:** बँधुआ मज़दूर।

बकना *अ.क्रि.(तद्< वल्क्/वक्त)* 1. लंबे समय तक और बिना रूके निरर्थक बातें बोलते रहना; बकवास करना। **उदा.** वह बकता रहा और मैं सुनता रहा। 2. अशिष्ट ढंग से बोलते रहना। ऊटपटांग बोलना। **उदा.** वह बड़ी देर से बक रहा है।

बकवाद *स्त्री.* [बक<बकना+वाद=कथन] *(देश.-अनुर.)* व्यर्थ की बातें, ऊल-जलूल बातें, तर्कहीन बातें।

बकवास *स्त्री. दे.* बकवाद। **टि.** द का स में परिवर्तन। **उदा.** बहुत बकवास कर चुके, अब चुप भी हो जाओ।

बकाया *वि.(अर. बकाय)* बचा हुआ, शेष, अवशिष्ट। **पुं.** 1. वह धन जो किसी के जिम्मे बाकी रह गया हो, अवशेष। **जैसे:** अभी 6 मास का महंगाई भत्ता बकाया है। arrears 2. **शेष ऋण**। balance 3. व्यय से शेष धनराशि।

बख़्त *पुं.(देशज*<वक्त-अर.) समय, काल। **टि.** ग्राम्य प्रयोग।

बखान *पुं.(तद्*<व्याख्यान) 1. विस्तृत, वर्णन, व्याख्यान। **उदा.** उसके गुणों का जितना बखन किया जाए उतना ही कम है।

बखिया *पुं.(फा.<*बख़्य:) कपड़े की मजबूत खड़ी सिलाई जिसमें पास-पास टांके डाले गए हों और जिसे उधेड़ना सरल न हो। **मुहा.** बखिया उधेड़ना=किसी का कोई गुप्त रहस्य खोल देना, भंडाफोड़ करना। **उदा.** तुम नहीं मानोगे तो वह तुम्हारी बखिया उधेड़ देगा।

बख़ूबी *क्रि.वि.(फ़ार.) [ब+सहित+ख़ूबी]* ख़ूबी के साथ; अच्छी तरह से। **उदा**. उसने सौंपा गया काम बख़ूबी पूरा किया।

बखेड़ा *पुं.(बखेरना)* 1. व्यर्थ का झंझट, उलझन भरा काम, विवाद। **उदा.** उसने अपने मित्र के साथ इस तरह का बखेड़ा खड़ा कर दिया कि सुलझाते नहीं बनता। **मुहा.** बखेड़ा खड़ा करना=झगड़ा खड़ा करना। बखेड़ा मोल लेना=यह जानते हुए भी झंझट पैदा करना कि उसे सुलझाना मुश्किल होगा।

बगल *स्त्री.(फा.)* 1. बाहुमूल के नीचे का गड्ढा या खाली जगह। **पर्या.** काँख। 2. निकट का स्थान। **उदा.** मेरे घर के बगल में ही डिस्पेंसरी है। **मुहा.** 1. बगले झांकना=निरूत्तर होकर इधर-उधर देखना। 2. बगल में दबाना या धर लेना, कब्जा करना। 3. बगल में मुंह छिपाना, लज्जित होना। **उदा.** सामने आकर बात करो, बगल में मुँह छिपाए क्यों घूम रहे हो?

बगला/बगुला *पुं.(तद्.*<बक) लंबी टांगों वाला, लंबी गरदन वाला और लंबी चोंच वाला एक सफ़ेद या सलेटी रंग का पक्षी जो किसी जलाशय के किनारे चुपचाप खड़ा रहकर मछली देखते ही तेज़ी से उसका शिकार करता है। heron

बगावत *स्त्री.(अर.)* 1. बागी होने का भाव। 2. राजसत्ता के विरूद्ध किया गया विद्रोह। **उदा.** झांसी की रानी लक्ष्मीबाई ने अंग्रेजों के विरूद्ध बगावत का झंडा खड़ा किया। mutiny

बगिया *स्त्री.(देश.*<बाग़-फ़ा.) छोटे आकार का उद्यान। **पर्या.** बगीचा। **उदा.** मेरे घर की बगिया में इन दिनों रंग-बिरंगे फूल खिले हुए हैं।

बगीचा *पुं.(फा.)* बाग, छोटा बाग। **उदा.** हम सुबह-सुबह पड़ोस के बगीचे में सैर करते हैं।

बगुला भगत *पुं.* पाखंडी, ढोंगी या कपटी व्यक्ति। **उदा.** वह तो बगुला भगत है, उस पर कदापि विश्वास मत करना।

बगैर *अव्यय(अर.)* बिना। **उदा.** बच्चों के बगैर घर सूना लगता है।

बचकाना *वि.(*<बच्चा) शा.अर्थ बच्चों जैसा। **सा.अर्थ**-नासमझी भरा या परिपक्वता रहित व्यवहार। **उदा.** तुम्हारी बचकानी आदतें ठीक नहीं है।

बचत *स्त्री.(हिं. बचना/बचाना)* सा.अर्थ धन, समय या किसी अन्य वस्तु के उपयोग के बाद जो सहज में बच जाए या जिसे जानबूझकर बचाया जाए। **जैसे**: समय की बचत, धन की बचत, अनाज की बचत आदि। **अर्थ.** भविष्य में सार्थक उपयोग के लिए नियमित आय में से एक बारगी या थोड़ा-थोड़ा कर धन बचाते रहने की क्रिया; इस तरह बचाई गई राशि। saving

बचतखाना *पुं.(दे.+अर.*<खत) बैंक या डाकघर में ग्राहक द्वारा खोला गया वह खाता जिसमें वह अपनी आय में से बचाई गई धन-राशि को जमा करवाता है और उस पर उसे नियत दर पर ब्याज मिलता है। saving account

बचत योजना *स्त्री.(हि.+तत्.)* सरकार या किसी भी अन्य वित्तीय संस्था द्वारा जारी वह योजना जो ग्राहकों को अपनी आय में से बचत करने और उसे उसमें जमा कराने अथवा कराते रहने के लिए प्रोत्साहित करती है। saving scheme

बचना *क्रि.(तद्.)* 1. नियत राशि में से कुछ राशि भी खर्च हो जाने के बाद शेष राशि का बचे रह जाना यानी अभी तक उसका खर्च नहीं होना। **उदा.** सौ रूपयों में से अभी मेरे पास सोलह रू. बचे हुए हैं। 2. पकड़ में न आना। **जैसे**: चोर बचकर निकल गया। (यानी फिलहाल नहीं पकड़ा गया) 3. दुर्घटना होने पर भी सुरक्षित रहना। **उदा.** हवाई दुर्घटना होने पर आठ व्यक्ति बाल-बाल बच गए।

बचपन *पुं.(देश.)* (बच<बच्चा+पन) 1. बाल्यावस्था का भाव। **पर्या.** लडक़पन। 2. सामान्यत: पाँच वर्ष से तेरह-चौदह वर्ष तक की आयु का काल। **पर्या.** बाल्यावस्था। **तु.** शैशवावस्था, युवावस्था आदि। उदारहरण-1. मेरा बचपन इलाहाबाद मे बीता। 2. बचपन के दिन भुला न देना....(गीत)

बचपना *पुं.(*<बचपन) शा.अर्थ बचपन में किया जाने वाला स्वाभाविक व्यवहार। सा.अर्थ अधिक उम्र के व्यक्ति का बच्चे की तरह नासमझी भरा काम या व्यवहार। **उदा.** इतना बड़ा हो गया फिर भी इसका बचपना नहीं गया।

बचाना *प्रेरणा*>बचना *(देश.)* 1. किसी प्रयोग की जाने वाली वस्तु में से कुछ अंश भविष्य के लिए सुरक्षित रखना। **जैसे**: मासिक वेतन में से कुछ

धन बचाये रखना। 2. रक्षा करना। **जैसे**: भूकंप पीड़ितों को बचाने की क्रिया। 3. किसी मुसीबत, कलह, रोग आदि से अप्रभावित या सुरक्षित रखना या दूर रखना। **जैसे**: (i) बच्चे को कुसंगति से बचाना। (ii) बच्चे को दुर्व्यसन से बचाना।

बचावकक्ष *पुं. (तत्.)* वह पक्ष जो अपने ऊपर लगाए गए आरोपों के तर्कपूर्ण जवाब देता है कि उस पर लगे आरोप मिथ्या है यानी वह दोषी नहीं है। **विलो.** अभियोजन पक्ष।

बछड़ा *पुं.* [बछड़ा] *(तद्.*<वत्स) गाय का बच्चा। (स्त्री.-बछिया) तुल-पाड़ा - भैंस का बच्चा। बछेड़ा - घोड़े का बच्चा। पिल्ला - कुत्ते का बच्चा। मेमना - बकरी का बच्चा। चूज़ा- मुर्गी का बच्चा।

बजट *पुं.(अं.)* सरकार, संस्था, परिवार आदि के आय-व्यय का मासिक या अवधि विशेष के लिए अनुमानित ब्योरा, विवरण। **जैसे**: देश के वार्षिक बजट में आय-व्यय का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया जाता है। **टि.** आय से व्यय अधिक होने पर सरकारी बजट को 'घाटे का बजट' कहते हैं।

बजरी *स्त्री.(तद्*<वज्री) पत्थरों को तोडक़र या पीसकर बनाए गए छोटे आकार वाले छोटे-छोटे गोलाकार टुकड़े। **उदा.** बजरी सडक़ बनाने या भवन आदि की नींव भरने में काम आती है।

बजाज़ *पुं.(अर.*<बज्ज़ाज़) कपड़े का व्यापारी, वस्त्र विक्रेता। **उदा.** इस बजाज की दुकान पर कपड़े ठीक भाव पर मिलते है।

बज़ाना *स.क्रि. (तद्.*<वादन) 1. चोट करके किसी वस्तु से ध्वनि/आवाज उत्पन्न करना। **जैसे:** थाली बजाना, घड़ियाल बजाना। 2. किसी वाद्ययंत्र से संगीत की ध्वनि उत्पन्न करना। **जैसे:** तबला बजाना, सारंगी बजाना आदि। **मुहा.** 1. गाल बजाना=ऊँची-ऊँची बातें करना, गप्पे हांकना। 2. ठोकना बजाना=किसी वस्तु के गुण-दोषों अच्छी तरह से का विचार करना। *स.क्रि.(फा. बजाना)* अपने से बड़ों के आदेश का पालन करना। **जैसे**: अपने मालिक का हुक्म बजाना।

बजाय/बजाए *अव्य.(फा.)* के स्थान पर, को। **उदा.** राम के बजाय मोहन को भेज दें।

बटालियन *स्त्री. (अं.)* सा.अर्थ फौज, सेना की टुकड़ी, पलटन। वि.अर्थ सैन्य सेना की एक बड़ी टुकड़ी जिसमें पाँच सौ से अधिक सैनिक होते हैं और जिसके नायक को कर्नल कहा जाता है। **तु.** पलटन-वह टुकड़ी जिसमें 10-12 सैनिक होते हैं। इसका नायक 'कमांडर' कहलाता है। platoon

बटुआ *पुं.(तद्.*<वर्तुल) 1. एक काँसे या पीतल की धातु से बना विशेष प्रकार का बड़ा बर्तन जो नीचे से चौड़ा गोलाकार और ऊपर से कुछ संकरा होता है। **पर्या.** बटला, देगचा। **टि.** पहले संयुक्त परिवार में बटुआ में ही चावल, दाल आदि पकाए जाते हैं। 2. कपड़े/चमड़े आदि से बनी कई खाने वाली छोटी थैली जिसमें लोग रूपए, पैसे या सामान आदि रखते हैं। purse **उदा.** आजकल प्राय: सभी संभ्रांत लोग आवश्यक धनराशि बटुए में ही रखकर चलते हैं।

बटेर *स्त्री.(तद्.*<वर्तक) तीतर की तरह की छोटे पंखों वाली पालतू चिड़िया जो ज्यादातर झाडियों में रहती है तथा अधिक उड़ नहीं पाती। **मुहा.** आधा तीतर आधा बटेर=किसी भी वस्तु का पूर्ण रूप से न होना, अर्थात् आधा-अधूरा होना।

बटोरना *स.क्रि.(तद्*<वर्तुलन) बिखरी हुई वस्तुओं को वर्तुलाकार (गोल आकार के ढेर में) इकट्ठा करना; अपने पास संगृहीत करना। **उदा.** उसने काफी धन बटोर लिया है।

बटोही *पुं.(*<बाट=रास्ता+<आरोही) रास्ता चलने वाला। **पर्या.** रही, पथिक। **उदा.** राघव लोचन राम चले तजि बाप को राज बटोहि की नाई।

बट्टा *पुं.(देश.)* 1. वह अंडाकार पत्थर जिससे सिल पर मसाला, चटनी आदि पीसे जाते हैं। लोढ़ा। 2. बेचते समय किसी दोषयुक्त वस्तु की कीमत में की जाने वाली आंशिक कमी। **जैसे**: कुछ पिचके बर्तनों पर बीस रूपये बट्टा मिला। 3. **वाणि.** ऋणराशि में से अग्रिम रूप से काट ली गई ब्याज की राशि जिसे घटाकर ही भुगतानकर्ता अदायगी करता है। 3. कलंक, दोष, दाग। **जैसे**: इज्जत में बट्टा लगना।

बड़प्पन *पुं. (तद्*>वट/बृहत) 1. बड़े होने की स्थिति/गुण/भाव। 2. गौरव, महत्ता, बड़ाई, 3. बड़ाई का कार्य। **जैसे**: आपने मुझ जैसे सामान्य व्यक्ति की भी इस विपत्ति से रक्षा की, यह आपका बड़प्पन है।

बड़बडाना *अ.क्रि. (*<बड़बड़, अनु.) 1. अस्पष्ट स्वर में धीरे-धीरे कुछ न कुछ बोलते रहना। **उदा.** वह सोते-सोते बड़बड़ाता रहता है। 2. बकवास करना। **उदा.** तुम कम से बड़बड़ाते जा रहे हो, चुप होने का नाम ही नहीं लेते।

बड़ा *पुं.(तद्*>वट) 1. उड़द की दाल की पीठी से बनी गोलाकार टिकिया जो तलकर खाई जाती है या तली हुई टिकिया को दही में डुबोकर कुछ देर बाद खाया जाता है। 2. *वि.(*<सं.वर्धन) जो आकर-प्रकार की दृष्टि से अथवा संपन्नता, अवस्था आदि में अपने आकार में वर्ग के अन्यों की अपेक्षा अधिक बढ़चढ़कर हो। जैसे-(i) बड़ा वृक्ष, बड़ी मछली, बड़ा तालाब। (ii) संपन्नता में- वे बड़े आदमी हैं, हम उनकी बराबरी नहीं कर सकते। (iii) पद की दृष्टि से (पुं.) बड़ा बाबू, बड़ा साहब। (iv) योग्यता की दृष्टि से, बड़ा, विद्वान। (v) उम्र में बड़ा, बड़ा भाई।

बड़ाई *स्त्री.(*<बड़ा) 1. बड़ा होने का भाव। 2. बड़प्पन, 3. प्रशंसा। **उदा.** (i) उनकी यही बड़ाई है कि वे सभी को अपने यहाँ शरण देते हैं। (ii) आपकी बड़ाई सुनकर मैं आपसे कुछ सहायता पाने हेतु आपके पास आया हूँ। **विलो.** छोटाई।

बड़ी आँत *स्त्री.(तद्.)* **दे.** बृहदांभ'।

बड़ी/बरी *स्त्री.(तद्*<वटी) उड़द या मूँग की दाल की मसालेदार पीठी से तैयार की जाने वाली गोल टिकिया। **उदा.** घी तेल में पकाई हुई बड़ी बरी खाने में बहुत स्वादिष्ट होती है।

बढ़ई *पुं.(तद्*<वर्धकि) लकड़ी को काट-छीलकर सामान बनाने वाला कारीगर, जिसका व्यवसाय लकड़ी से सामान बनाना हो। carpenter

बढ़ना *स.क्रि.(तद्*<वर्धन) 1. आकार, क्षेत्र, सीमा आदि का पहले से अधिक हो जाना। **जैसे**: बालक का शरीर बढ़ना आदि। 2. संख्या/माखा आदि में पहले से अधिक वृद्धि होना। **जैसे**: (i) दैनिक मज़दूरी दो सौ से बढक़र ढाई सौ रूपए हो गई। (ii) यमुना में पानी बढ़ रहा है। **विलो.** घटना।

बढ़ाना-चढ़ाना *स.क्रि. (देश.)* किसी बात को वस्तु के गुण, मूल्य आदि को वास्तविकता से बहुत अधिक बताना। **जैसे**: सब्जी वाले सब्जियों के दाम बढ़ा-चढ़ाकर बताते हैं।

बढ़िया *वि.(*<बढ़ना) 1. उत्तम, 2. अच्छे किस्म का। **जैसे:** (i) मेरे छात्रावास में निवास-भोजन आदि की बढ़िया व्यवस्था है। (ii) यहाँ बढ़िया चावल का उत्पादन होता है। **विलो.** घटिया।

बढ़ोतरी *स्त्री.[हि.*>बाढ़+उत्तर] 1. उन्नति, तरक्की, लाभ, यश, संख्या आदि में उत्तरोत्तर वृद्धि, बढ़त। **उदा.** (i) भगवान तुम्हारी कमाई में बढ़ोतरी करे। (ii) भारत की जनसंख्या में बहुत बढ़ोतरी हुई है।

बतंगड़ *पुं.(*<बात) साधारण सी बात को बढ़चढकर विकृत और विराकल रूप धारण कर लेना। **उदा.** तुमने छोटी सी बात का इतना बतंगड़ बना दिया कि वे दोनों आपस में झगड़ पड़े।

बतलाना *स.क्रि.(तद्*>वाद) 1. किसी व्यक्ति, वस्तु आदि के बारे में बताना, जानकारी देना। 2. ज्ञान कराया, 3. निर्देश करना।

बतौर *क्रि.वि.(अर.)* 1. रीति से, 2. जैसा, सदृश, समान।

बत्तख *स्त्री.(अर.-बत)* हंस की जाति का एक छोटी टांगों वाला तथा झिल्लीदार पंजों वाला जलपक्षी जिसका रंग सफ़ेद, होता है तथा चोंच आगे से चौड़ी और भोथरापन लिए होती है। यह प्राणी पानी में तैरता रहता है, पर जमीन पर भी चल लेता है, किंतु लंबी दूरी तक उड़ नहीं पाता। **उदा.** -तालाब में बत्तखें झुंड बनाकर धीरे-धीरे तैरती हैं।

बत्ती *स्त्री.(तद्*<वर्ति) 1. रूई या सूत से बनी हुई पतली लंबी बाती जिसे तेल या घी के दीपक में डालकर जलाते हैं। 2. किसी गंध द्रव्य, अगर, मोम आदि से बनी हुई लंबी वस्तु या उनसे बनाई जाने वाली बत्ती। **जैसे**: धूपबत्ती, अगरबत्ती, मोमबत्ती आदि। 3. **लाक्ष.** दिया, दीपक। **जैसे**: शाम हो गई है, बत्ती जला दो।

बदइंतजामी *स्त्री.(फ़ा.)* ऐसी व्यवस्था जो सलीके से न की गई हो। **पर्या.** दुर्व्यवस्था, कुप्रबंध। **उदा.** वार्षिकोत्सव में बदइंतजामी देखकर मन बहुत दुखी हुआ।

बदकिस्मत *वि.(फ़ा.+अर.)* जिसकी किस्मत अच्छी न हो, बुरी तकदीर वाला। **पर्या.** भाग्यहीन, हतभाग्य। **उदा.** वह बड़ा बदकिस्मत है कि पढ़ाई

में अव्वल रहते हुए भी दुर्घटना की वजह से परीक्षा न दे सका।

बदकिस्मती *(स्त्री.)* बदकिस्मत (भाग्यहीन) होने की स्थिति का सूचक भाव। **उदा.** इसे उसकी बदकिस्मती ही कही जाएगी कि वह दुर्घटना की वजह से परीक्षा न दे सका।

बदगुमान *वि.(फ़ा.)* जो किसी के बारे में बुरी धारणा रखे।

बदचलन *वि.(फ़ा.*+तत्.) कुमार्ग पर चलने वाला, जिसका चाल-चलन अच्छा न हो। **पर्या.** दुश्चरित्र, व्याभिचारी।

बदचलनी *(स्त्री.)* बदचलन होने की स्थिति का सूचक भाव।

बदज़बान *वि.(फ़ा.)* 1. किसी के भी बारे में अनुचित या गंदी बातें कहने वाला। 2. कठोर एवं असभ्य शब्द बोलने वाला। 3. गाली गलौच करने वाला। **उदा.** उस बदज़बान के मुँह मत लगना।

बदज़बानी *(स्त्री.)* 1. बदज़बान होने का दुर्गुण, 2. गाली गलौच, दुष्टतापूर्ण शब्द, कठोर बातें।

बदज़ात *वि.(फ़ा.+अर.)* नीच, कमीना, दुष्ट।

बदतमीज़ *वि. (फा.+ अर.)* 1. खराब तमीज़ वाला, जिसे उचित व्यवहार की समझ न हो, शिष्टाचार रहित। **पर्या.** असभ्य, अशिष्ट, उद्दंड। **उदा.** इस बदतमीज को कोइ्र नहीं समझा सकता।

बदतमीज़ी *(स्त्री.)* अशिष्टता, असभ्यता।

बदतर *वि.(फ़ा.)* बुरे से बुरा, बहुत खराब। उदाहरण- बीमारी से उसकी जो बदतर हालत बना रखी है, वह देखी नहीं जाती।

बददिमाग *वि.(फ़ा.+अर.)* ज़रा-ज़रा सी बात पर बुरा मान जाने वाला या आपा खो देने वाला; अहंकारी, अभिमानी।

बददुआ *स्त्री.(फ़ा.+अर.)* किसी की अनिष्ट की कामना से कहा हुआ शब्द या वाक्य, शाप, अनिष्टकारी वचन। **उदा.** जीवन में किसी गरीब की बददुआ मत लेना।

बदन *पुं.(अर.)* शरीर, देह, जिस्म। **जैसे**: बदन टूटना। *पुं.(तद्.*<बदन) चेहरा, मुख। **उदा.** ज्यों-ज्यों सुरासा बदन बढ़ावा.....।

बदनसीब *वि.(फ़ा.+अर.)* जिसका भाग्य अत्यंत खराब हो। **पर्या.** अभागा, बदकिस्मत। **उदा.** उस बदनसीब को अभी तक नौकरी नहीं मिली।

बदनसीबी *(स्त्री.)* बदकिस्मती। **उदा.** वह परिवार अभी भी बदनसीबी में जी रहा है।

बदनाम *वि.(फ़ा.)* जिसकी पहले प्रतिष्ठा रही हो पर अब जिसकी प्रतिष्ठा मिट्टी में मिल गई हो, जिसकी अब निंदा की जाती हो। **पर्या.** कुख्यात। **मुहा.** बद अच्छा बदनाम बुरा-बुरा काम कर लेना उतना बुरा नहीं माना जाता जितना उसके कर लेने के बाद हुई बदनामी। **पर्या.** कुख्याति। बदनाम होने की स्थिति का सूचक भाव।

बदबू *स्त्री. (फ़ा.)* प्रदूषित गंध सड़ी-गली या विकृत वस्तुओं से निकलने वाली दुर्गंध, सड़नयुक्त बुरी गंध। **जैसे**: पास के गंदे नाले से बहुत बदबू आती है।

बदमिज़ाज़ *वि.(फ़ा.+अर.)* बुरे स्वभाव वाला; चिड़चिड़े स्वभाव वाला, चिड़चिड़ा। **विलो.** खुशमिज़ाज।

बदमिज़ाजी *(स्त्री.)* दुष्ट स्वभाव शीलता, चिड़चिड़ाहट। **विलो.** खुशमिज़ाजी।

बदरंग *वि.(फ़ा.)* 1. जिसका रंग उड़ गया हो, फीका पड़ गया हो या खराब हो गया हो। 2. (ताश) तुरूप के पत्ते का अभाव (जिसकी वजह से विपक्षी की चाल को काटा न जा सके।)

बदलना *अ.क्रि. (देश.<बदल-अर.)* 1. परिवर्तित हो जाना, स्वरूप में परिवर्तन हो जाना। 2. एक के स्थान पर दूसरे को (व्यक्त या वस्तु आदि को रख देना। 3. एक ही व्यक्ति का स्थान आदि नया कर देना। *स.क्रि.(देश.)* 1. रूप परिवर्तित कर देना। 2. व्यक्ति या स्थान परिवर्तित कर देना। 3. एक चीज़ देकर दूसरी लेना।

बदला *पुं.(बदलना)* 1. बदलने की क्रिया या भाव। **उदा.** उसने पड़ोसी को गेहूँ के बदले चावल दिए। 2. **जैसे:** के साथ तैसा व्यवहार, प्रतिशोध। बुराई का बदला बुराई से चुकाना ठीक नहीं होता।

बदलाव *पुं.(अर.*<बदलना) एक स्थान या स्थिति से अन्य स्थान/स्थिति में हुआ या होने वाला परिवर्तन, परिवर्तन, बदली। **उदा.** पिछले एक दशक से देश की आर्थिक स्थिति में बहुत बदलाव दिखाई पड़ रहा है।

बदली *स्त्री.(तद्*<वारिदल) 1. छाए हुए बादल। **उदा.** आसमान में बदली छाई हुई है, शायद बारिश हो। *पुं.* बादल। 2. स्त्री.(<बदलना) तबादला, transfer

एक व्यक्ति के स्थान पर दूसरे को भेजा जाना। **पर्या.** तबादला, स्थानांतरण। transfer **उदा.** मेरे भाई की बदली दिल्ली से लखनऊ हो गई है।

बदसूरत *वि. (फ़ा.)* जिसकी शक्ल या चेहरा-मोहरा खराब हो। **पर्या.** कुरूप। **विलो.** खूबसूरत।

बदस्तूर *क्रि.वि. (फ़ा.)* दस्तूर (परंपरा/रिवाज़) के अनुसार, जैसा पहले रहा हो, वैसे ही। **उदा.** वर्षों पूर्व प्रारंभ हुआ नाट्योत्सव यहाँ बदस्तूर जारी है।

बदहवास *वि.(फ़ा.+अर.)* जिसका होश-हवास बुरी अवस्था में पहुँच गया हो यानी खो गया हो; अक्ल मारी जाने के कारण जो बोखला गया हो; हतबुद्धि, उद्विग्न।

बदहवासी *स्त्री.(फ़ा.+अर.)* अक्ल मारी जाने की स्थिति। **पर्या.** बौखलाहट, उद्विग्नता।

बदा *वि.(<बदना)* भाग्य में लिखा हुआ। **उदा.** यदि भाग्य में बदा होगा तो लॉटरी हमारे नाम खुलेगी। *स्त्री.(<वदि)* चाद्र मास का कृष्णमास, बहुत दिवस। **उदा.** श्रीकृष्णजन्माष्टमी भादो बदीअष्टमी को मनाई जाती है। *स्त्री.(फा.)* अपकार, बुराई, अहित। **उदा.** कुछ लोग बदी के बदले भी नेकी करते हैं। **विलो.** नेकी।

बदौलत *अव्य.(फा.ब+अर. दौलत)* कृपा से। **उदा.** आपकी बदौलत ही मैं यहाँ तक पहुँचा हूँ।

बधाई *स्त्री.(तद्<वर्धन)* शा.अर्थ बढ़ने का भाव। **पर्या.** वृद्धि, बढ़त। सा.अर्थ मंगल प्रसंग पर शुभकामना के शब्द। **उदा.** शर्माजी के घर बेटा पैदा हुआ है, इन्हें बधाई तो दे दो। congratulation

बनमानुष *पुं.(तत्.)* वन में रहने वाला मनुष्य की आकृति से मिलता-जुलता बिना पूँछ का बंदर प्रजाति का प्राणी जो दो पैरों से चल लेता है। **जैसे**: गोरिल्ला, चिंपैंजी।

बनमाली *वि./पुं.(तत्.)* 1. वनमाला धारण करने वाले वसुदेव पुत्र श्रीकृष्ण। 2. वन का रक्षक (उपवन में फूल उगाने और उनकी रक्षा करने वाला) माली। **उदा.** 'मुझे तोड़ लेना वनमाली उस पथ पर देना तुम फेंक मातृभूमि पर शीश चढ़ाने जिस पथ जाएँ वीर अनेक'।

बनवैया *वि.(देश.)* 1. किसी वस्तु का निर्माण करने वाला, बनाने वाला, निर्माता। **जैसे**: इस संसार का बनवैया तो ईश्वर है। 2. बनवाने वाला।

बनाना *स.क्रि.(देश.) प्रेर.*>बनना 1. किसी वस्तु को कोई नया रूप देना। **जैसे**: सोने से आभूषण बनाना। 2. एक चीज से दूसरी चीज तैयार करना। **जैसे**: आटे से रोटी बनाना। 3. कोई नई रचना बनाना या निर्माण करना। **जैसे**: चित्र बनाना, भवन बनाना। **मुहा.** मूर्ख बनाना-उपहास करना, लाभ उठाना। बना-बनाया-पहले से तैयार। बनावटी-कृत्रिम, नकली, झूठ।

बनावटी *वि. (देश.)* जिसमें बनावट हो, कृत्रिम, नकली। *दे.* बनावट।

बनिस्बत *अव्य. (फ़ा.)* की तुलना में, अपेक्षाकृत। **उदा**. मैं मिठाई की बनिस्बत नमकीन पदार्थ अधिक पसंद करता हूँ।

बनैला *वि./पुं.* जंगली, वन्य, वन का। **जैसे**: वनैल सुअर (जंगली सुअर)

बपौती *स्त्री.(<बाप)* शा.अर्थ बाप की संपत्ति। सा.अर्थ पिता की संपत्ति (पैतृक संपत्ति) जो पुत्र को उत्तराधिकारी के रूप में प्राप्त होती है। **प्रयो.** मेरी यहाँ बपौती नहीं है जिसकी मैं ही देखभाल करूँ।

बबुआ *पुं.(देश.*>बाबू) 1. पुत्र, बालक, बच्चों के लिए बड़ों के द्वारा प्रयुक्त किया जाने वाला प्यार भरा संबोधन। **प्रयो.** ऐ बबुआ! तनिक पानी लै आऊ। 2. कार्यालय में क्लर्क के लिए उपेक्षापूर्ण संबोधन। **प्रयो.** ई बबुआ कभी काम करके नहीं देता। **टि.** ग्रामीण प्रयोग।

बबूल *पुं.(तद्<बब्बूल)* गोंद उत्सर्जित करने वाला एक वृक्ष जिसके कांटे सफेद और पतले तथा फूल गोल और पीले रंग के होते हैं एवं इसमें लंबी पतली फलियाँ लगती हैं। **प्रयो.** बबूल की दातून दांतों के लिए बहुत उपयोगी होती है।

बयाँ/बयान *पुं.(अर.)* 1. बातचीत, वार्तालाप। 2. चर्चा, ज़िक्र, 3. वर्णन, विवरण। **जैसे**: बयान करना। **प्रयो.** उस दुर्घटना के समय आपने जो कुछ देखा था, उसे बयान कीजिए। 4. किसी मुकदमे आदि में दोनों पक्षों का कथन। **जैसे**: बयान देना, बयान दर्ज करवाना। **प्रयो.** मैंने अदालत में अपना बयान दे दिया है/दर्ज करवा दिया है।

बयाना *पुं. [अर.* बै=बिक्री+फा. अना(प्रत्यय)] किसी चीज़ को खरीदने से पहले अथवा किसी काम को

शुरू करने से पहले बात पक्की करने हेतु उसके मूल्य या पारिश्रमिक का वह अंश जो विक्रेता अथवा कारीगर को पहले ही दे दिया जाता है। **पर्या.** अग्रिम, पेशगी। earnest money

बरकरार *वि.(फ़ा.+अर.)* स्थिर, दृढ़ या अचल रहने का भाव। **पर्या.** कायम। **प्रया.** मैंने जो वादा किया था, उस पर आज भी बरकरार (कायम) हूँ।

बरख़ास्त *(फ़ा.)* (बरख़्वास्त) 1. जिसे किसी अनुचित व्यवहार या अयोग्यता आदि के कारण नौकरी से हटा दिया गया हो। निष्कासित। **प्रयो.** रिश्वत लेकर काम करने वाले उस कर्मचारी को विभाग ने बरख़ास्त कर दिया। **पर्या.** पदच्युत, विसर्जित। **प्रयो.** आज कैप्टेन ने बहुत देर से परेड़ बरख़ास्त की।

बरगलाना *स.क्रि.(देश.)* किसी को अपनी बनावटी बातों से भ्रमित करना या फुसलाना। **प्रयो.** 1. तुम बच्चों को क्यों बरगला रहे हो, इन्हें खिलौने लाकर दो। 2. मैं तुम्हारे बरगलाने में नहीं आने वाला।

बरतन/बर्तन *पुं.* (<बरतना <वर्तन) शा.अर्थ जो बरतने के काम में आए। सा.अर्थ मिट्‌टी, धातु आदि का बना पात्र जो खासकर खाने-पकाने की चीजें रखने या पकाने के काम आए। **पर्या.** भांड, पात्र।

बरतना *अ.क्रि.(तद्* < सं. वर्तन) परस्पर व्यवहार करना। **प्रयो.** सास को अपनी बहू के साथ ठीक से बरतना नहीं आए तो कलह बढ़ती है। 2. काम में लेना, उपयोग करके देखना। **प्रयो.** इस साबुन को बरत के देखो, तुम्हें पसंद आएगा।

बरताव/बर्ताव *पुं.(देश.*<वर्तन) उठने, बैठने, चलने, बात करने इत्यादि का तरीका। **पर्या.** व्यवहार, सलूक। **उदा.** पता नहीं क्यों पिछले दिनों मेरे साथ उसका बरताव ठीक नहीं रहा।

बरबस *क्रि.वि.(तद्*<बल+वश) 1. बलपूर्वक, जबर्दस्ती। **उदा.** वह बरबस मेरा हाथ पकडक़र घर ले गया।

बरबाद *वि.(फ़ा.)* 1. पूरी तरह से नष्ट हुआ। **पर्या.** तबाह। **उदा.** वर्षा न होने से किसानों की सारी फसल बरबाद हो गई। वह बरबाद घूमता रहता है।

बरसात *स्त्री.(तद्* <बरसना<वर्षा) 1. समुद्र से उठी भाप को आसमान में संघनित होकर बादलों से धरती पर बूँदों या धाराओं के रूप में गिरना, वह मौसम या ऋतु जब यह क्रिया घटती है। **पर्या.** वर्षा; वर्षाऋतु। 2. ला.अर्थ-किसी वस्तु का अधिक मात्रा में एक साथ या लगातार गिरना या प्राप्त होना। **जैसे**: फूलों की बरसात, धन की बरसात।

बरसाती [<बरसात] *वि. बरसात* का, बरसात में होने वाला जैसे बरसाती मेंढक। स्त्री. 1. मोमजामे आदि से बना हुआ वह ऊपरी पहनावा जो बरसात में भीगने से बचाता है। raincoat 2. मकान की छत पर बना हुआ ऊपर से ढका कमरा जहाँ बरसात से बचने के लिए सामान आदि रखा जाता है। 3. कोठियों और भवनों के प्रवेशद्‌वार पर बना वह ऊपर से ढका स्थल जहाँ मोटरगाड़ी में से सवारियाँ उतरती-चढ़ती हैं। poarch

बरात/बारात *स्त्री.(तद्.*<वरयात्रा) विवाह के अवसर पर वरपक्ष के लोगों का समूह जो जुलूस बनाकर विवाह स्थल या मंडप तक पहुँचता है।

बराबरी *स्त्री. (फ़ा.)* 1. किसी वस्तु, व्यक्ति आदि के गुण-पद आदि की दृष्टि से दूसरे के समान बराबर होने की स्थिति, क्रिया या भाव। 2. समता, समानता, हारजीत का निर्णय न होना equality **जैसे**: उस दिन कबड्‌डी प्रतियोगिता में दोनों पक्षों की बराबरी रही। 2. बड़ों से समानता करने की घृष्टता। **जैसे**: (i) वह क्रिकेट में सचिन तेंदूलकर की बराबरी करना चाहता है। (ii) तुम संपन्नता में उसकी बराबरी नहीं कर सकते। **जैसे**: बड़ों की बराबरी मत करो। 4. मुकाबला करने की भावना।

बरामद *वि.(फ़ा.)* 1. बाहर आया हुआ, सबके सामने प्रकट हुआ, प्राप्त। **उदा.** वहाँ खुदाई में तांबें और सोने के सिक्के बरामद हुए हैं। 2. खोजकर या ढूंढकर लाया गया खोया हुआ माल। **उदा.** पुलिस ने चोर का सारा माल बरामद कर लिया।

बरामदगी *स्त्री.(फ़ा.)* 1. प्रकट या प्राप्त होने का भाव। 2. खोए माल की पुन: प्राप्ति।

बरामदा/वरांडा *पुं.(फ़ा.)* 1. मकानों या घरों में आगे या कुछ बाहर निकला हुआ बिना द्‌वार का

छायादार परंतु खुला हवादार छज्जा। 2. दालान, ओसारा।

बरी *वि.(फ़ा.)* किसी बंधन या दंड से छुटकारा पाया हुआ, मुक्त। **उदा.** न्यायाधीश ने उसे सभी दोषों से बरी कर दिया।

बर्खास्तगी *स्त्री.(फ़ा.)* 1. निष्कासन, नौकरी से हटाने की स्थिति, 2. विसर्जन या समाप्ति।

बर्तन (बरतन) *पुं.(तद्.)* मिट्टी या धातु का पात्र जो विशेष रूप से खाने-पीने की वस्तुएँ रखने के काम आता है। **पर्या.** भांडा, भांड।

बर्दाश्त/बरदाश्त *स्त्री.(फ़ा.)* 1. किसी बात या व्यवहार को सहन करने की शक्ति। **पर्या.** सहनशक्ति, सहनशीलता। **उदा.** अब बात बर्दाश्त से बाहर हो गई है। 2. सहन। **उदा.** बर्दाश्त करना ही होगा।

बर्फ़/बरफ़ *स्त्री.(फ़ा.)* **रसा.** पानी का ठोस रूप जो प्राकृतिक या कृत्रिम रूप से तापक्रम 0^{0}से. से नीचे हो जाने पर बन जाता है। gce, snow **तुल.** ओला-वायुमंडल में तापक्रम अत्यंत कम हो जाने के कारण एवं पानी के ठोस रूप धारण कर लेने के कारण वर्षा के रूप में जमीन पर गिरने वाले बर्फ के टुकड़े।

बर्फबारी *स्त्री.(फ़ा.)* 1. आसमान से लगातार भारी मात्रा में बर्फ गिरना, 2. पाला पड़ना। जिससे कुछ समय के लिए जन-जीवन अस्त-व्यस्त हो जाए।

बर्फानी *वि.(फ़ा.)* 1. बर्फ से संबंध रखने वाला/वाली वस्तु, बर्फ जैसा/जैसी ठंडी (चीज), बर्फ से ढका/ढकी। **पर्या.** बर्फीली। **जैसे**: बर्फानी मौसम, बर्फानी पहाड़ियाँ।

बर्फी *स्त्री.(फ़ा..)* खोए (मावा) का चीनी से तैयार की जाने वाली एक मिठाई जो जमाने के बाद थपिया या माचिस के आकार के सदृश टुकड़ों में होती है। **जैसे**: खुशी के अवसर पर लोग मित्रों एवं संबंधियों को प्राय: बर्फी ही सप्रेम भेंट करते हैं।

बर्फीला *वि.(फ़ा.)* बर्फ जैसा ठंडा अथवा बर्फ से ढका। *स्त्री.* बर्फीली।

बर्फीली *वि.(फ़ा.)* बर्फ से ढकी हुई। **जैसे:** बर्फीली पहाडियाँ।

बर्बर *वि.(तत्.)* असभ्य, क्रूर, या हिंसक (व्यक्ति)

बर्बरता *स्त्री.(तत्.)* (व्यक्ति का) असभ्य, क्रूर अथवा हिसंक व्यवहार, कर्म आदि। **जैसे**: बर्बरतापूर्ण व्यवहार।

बर्र/बर्रै *पुं.(तद्*<वरट) मधुमक्खी की ही प्रजाति का लाल या पीले रंग का उड़नेवाला कीड़ा जो वैसा ही छोटा छत्ता बनाता है पर उसमें मधु इकट्ठा नहीं करता, केवल अंडे देने के लिए उसका उपयोग करता है। मधुमक्खी की ही तरह डंक भी मारता है। **पर्या.** ततैया।

बल *पुं.(तत्.)* 1. वह शक्ति जो दूसरे व्यक्ति या वस्तु को दबाती, पकड़ कर रखती, फेंकती या चलाती है। **पर्या.** ताकत। strength, power, might 2. भार उठाने, खींचने या धकेलने की शक्ति। **भौ.** वह प्रभाव जो विरामावस्था को गति में परिवर्तित करता है। फोर्स 3. सेना, फौज। **जैसे**: सैन्यबल, सीमा सुरक्षा बल। 4. आश्रय, सहारा। **जैसे**: पीठ के बल लेटना, मुँह के बल गिरना। *पुं.(तद्*<वलय) 1. घुमाव, टेढ़ापन। 2. कपड़े की सिकुड़न, चमड़े की (माथे पर) सिकुड़न, झुर्रियाँ। **उदा.** वृद्धावस्था के कारण उसके चेहरे की चमड़ी में बल पड़ गए हैं। 3. लचक, झुकाव। **मुहा.** बल खाना=लचक कर, लहरा कर, या घुमाव लेते हुए चलना। माथे पर बल पड़ना-क्रोधित होना या चिंता में पड़ना।

बलग़म *पुं.(अर.*<बलाम) खाँसने पर नाक और मुंह से निकलने वाला फेंफड़ों में जमा कफ। **पर्या.** श्लेष्मा। **उदा.** जुकाम होने पर नाक से बलग़म ज्यादा निकलता है।

बलवा *पुं.(अर. बल्वा)* भीड़ जनित हिंसक उपद्रव। **पर्या.**-दंगा, फसाद। **प्रयो.** बलवे को नियंत्रित करने में भारी संख्या में पुलिसबल लगा हुआ है। 2. सत्ता के प्रति विद्रोह, बगावत। **प्रयो.** सरकार बलवो को दबाने का भरसक प्रयत्न कर रही है।

बलवाई *वि./पुं.* बलवा करने वाला (जन समूह)। **प्रयो.** शासन ने बलवाईयों को देखते ही गोली मारने का आदेश पुलिस को दिया है।

बलवान *वि.(तद्*<बलवान) बल से युक्त। **दे.** बलशाली।

बलशाली *वि.(तत्.)* बलवाला; बलयुक्त; बली; ताकतवाला। **उदा.** भीम बहुत बलशाली था।

बला *स्त्री.(अर.)* 1. अचानक उपस्थित हुआ संकट, विपत्ति। 2. (प्रेत) बाधा, कष्ट। **उदा.** हे प्रभु! इस आयी हुई बला को समाप्त कर दो। **मुहा.** 1. बला टलना, किसी झंझट या मुसीबत से छुटकारा मिलना। 2. बला मोल लेना, जानबूझकर विपत्ति में फँसना।

बलात् *अव्य.(तत्.)* बलपूर्वक, जबरदस्ती।

बलात् अपहरण *पुं.* बलपूर्वक हरण करना, छीन कर ले जाना। kidnapping, abduction

बलात्कार *पुं.(तत्.)* बलपूर्वक यानी ज़ोर-जबर्दस्ती से किया या करवाया जाने वाला काम। 2. किसी स्त्री की इच्छा के विरूद्‍ध बलपूर्वक किया जाने वाला यौनाचार या संभोग। **पर्या.** बलात्संग**,** यौन-दुष्कर्म। rape

बलात्कारी *वि.* महिला के साथ जबर्दस्ती यौन-दुष्कर्म करने वाला। rapist

बलि *पुं.(तत्.)* 1. किसी देवी या देवता को अर्पित किया जाने वाला नैवेद्‍या भोग। 2. किसी देवी/देवता को प्रसन्न करने के लिए उसकी मूर्ति आदि के सामने किसी पशु का वध। 3. देश के लिए प्राण-न्यौछावर करना। **उदा.** अनेक क्रांतिकारियों ने देश की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों की बलि दे दी।

बलिदान *पुं.(तत्.)* 1. उत्तम उद्‍देश्य के लिए प्राण देना। **जैसे:** देश के स्वतंत्रता के लिए भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव के बलिदान की कथा सुनकर हर भारतवसी का मस्तक उनके प्रति श्रद्‍धा में झुक जाता है। 2. देवी या देवता को प्रसन्न करने के लिए किसी पशु या अन्य वस्तु को काटकर चढ़ाना। **पर्या.** कुरबानी/कुर्बानी।

बलुई *वि.* [बालु] *(देश.)* जिसमें बालू की मात्रा अधिक हो। **जैसे**: बलुई मिट्‍टी (मृत्तिका) sandy clay, रेतीला/रेतीली।

बल्ला *पुं.(तद्<फलक*) 1. लंबा और कुछ मोटा शहतीर, जो छत आदि को आधार देने के लिए प्राय: लगाया जाता है, बड़ी और मोटी बल्ली। 2. काष्ठनिर्मित खेल का एक उपकरण जिससे क्रिकेट, बेसबॉल, टेबल टेनिस आदि में गेंद पर प्रहार किया जाता है। **मुहा.** बल्लियों उछलना-बहुत अधिक खुश होना (जिसके परिणामस्वरूप शरीर में उछलने जैसी हरकत बढ़ जाती है।)

बवंडर *पुं.(देश.<*वायुमंडल) 1. बहुत तेज़ आँधी, तूफान। 2. चक्र की तरह घूमती और ऊपर की ओर उठती हवा जिसमें धूल के गुबार घूमते हुए दिखते हैं। **पर्या.** चक्रवात। **मुहा.** बवंडर खड़ा करना-शांति स्थिति में तूफान-से हालात पैदा कर देना।

बवाल *पुं.(अर.)* 1. अचानक उपस्थित ऐसी समस्या जिसका निराकरण व्यक्ति के वश से बाहर हो। **उदा.** यह कैसा बवाल आ गया। 2. झंझट, परेशानी, जंजाल। **उदा.** तुम परदेश में किसी बवाल में मत पड़ना। 3. उपद्रव, **उदा.** तुम सब ने यहाँ क्यों बवाल मचा रखा है।

बस *स्त्री.(अं.)* मोटर चालि लंबी गाड़ी जो प्राय: किराए पर यात्रियों को पूर्व निर्धारित गंतव्य तक ले जाती है। *अव्य. (फ़ा.)* अब और अधिक नहीं (चाहिए), इतना भर काफी है; अलम्। **उदा.** मेरा पेट भर गया, बस अब और कुछ नहीं चाहिए। *पुं. (तद्<*वश) सामर्थ्य। **मुहा.** बस चलना-सामर्थ्य शक्ति में होना। मेरा बच चला हो तुम्हारी तरक्की हो जाएगी।

बसना *अ.क्रि.(तद्<*वसन) 1. व्यक्ति को अपने जीवनयापन के लिए कहीं स्थायी निवास करना। **जैसे**: मनुष्य ग्राम, नगर, झोपड़ी, महल आदि में बसते हैं। 2. आबाद होना। **जैसे:** पाकिस्तान से उजड़े लोग भारत में बस गए। 3. कुछ समय के लिए ठहरना। **जैसे:** वे यात्रा करते हुए काशी में दो दिन बसे। 4. ला.अर्थ मन में रहना/प्रतिष्ठित होना। सदा ध्यान में रहना। **उदा.** 'राम लखन सीता सहित हृदय बसहूँ सूरभुप। हनुमान चालीसा।

बसर *पुं.(फार.)* जीवन की आवश्यकताएँ पूरी करते हुए जीवन बिताने का भाव। **पर्या.** निर्वाह**,** गुज़र-बसर। **उदा.** भयानक महंगाई के कारण गरीबों का किसी तरह गुज़र-बसर हो जाता है।

बसाना *स;क्रि..* 1. स्थान एवं अन्य सुविधाएँ देकर बसने को प्रेरित करना; 2. बसने का प्रबंध करना। **मुहा.** -घर बसाना-विवाह करना।

बसेरा *पुं.(देश.<*वास) ठहरने या विश्राम करने का स्थान या ठिकाना। **जैसे:** पक्षियों का बसेरा। 2. अस्थायी आवास। **जैसे:** रैन बसेरा।

बस्ता *वि.(फा.)* शा.अर्थ बँधा हुआ। **जैसे:** दस्तबस्ता: (हाथ बांधे हुए)। *(पुं.)* 2. पुस्तकें, बही, कागज आदि के बाँधने का चौकोर वस्त्र। 3. विद्यार्थियों के उपयोग में आने वाला विशेष प्रकार का एक थैला जिसमें भरकर पुस्तकें आदि ले जाई जाती हैं। **जैसे:** प्राथमिक छात्रों के बस्ते भारी नहीं होने चाहिए। 4. फाईलों का बँधा रूप **जैसे:** वकील का बस्ता, लेखपाल का बस्ता।

बस्ती *स्त्री.(तद्*<वसति) 1. वह स्थान जहाँ कुछ/कई लोग घर बना कर पास-पास रहते हों; बसे हुए मकानों का झुंड (समूह) habitation शा.अर्थ. आबादी **उदा.** जंगल खत्म हो जाने पर आपको भीलों की बस्ती मिलेगी। 2. बाहर से आकर लोगों ने बसाया नया आवासीय परिसर। colony

बहकना *अ.क्रि. (देश.)* किसी के कहने पर या गलत संगति के कारण गलत बात को मानना या अनुचित आचरण करना। भुलावे में आना **उदा.** वह कुसंगति के कारण बहक गया है।

बहकाना *स.क्रि. (<बहकना)* प्रेरणार्थक प्रयोग। 1. किसी को अपने स्वार्थवश सही रास्ते से गलत मार्ग में प्रवृत्त करना। **उदा.** कल वह मुझे बहकाकर विद्यालय के बजाय सिनेमाघर ले गया। 2. (बच्चों को) बहलाना।

बहना *अ.क्रि.* 1. किसी द्रव या तरल पदार्थ का धारा के रूप में ऊपरी धरातल से नीचे की ओर बहना। 2. हवा का चलना **उदा.** हवा मंद-मंद बह रही है। 3. प्रवाहित होना। **उदा.** नदी बहती है।

बहनोई *पुं.(तद्*<भगिनी पति) बहन/बहिन का पति, जीजाजी।

बहरहाल *क्रि.वि.(फ़ा.+अर.)* फिर भी, तो भी, खैर, अस्तु।

बहलाना *स.क्रि. (फा. बहाल/हि. बहलना)* 1. चिंतित या दु:खी व्यक्ति का मन विशेष प्रकार की प्रासंगिक बातें कर दूसरी ओर ले जाना। 2. मनोरंजन या चित्त प्रसन्न करने की बातें करना। 3. बातों में लगाकर या कोई प्रिय वस्तु देकर किसी के ध्यान या हठ को भुलावा देने का प्रयत्न करना। बहकाना। **उदा.** माँ ने रोते हुए बालक को कुछ मीठा या मनपसंद खाद्य या वस्तु पदार्थ देकर बहलाया।

बहस *स्त्री.(अर.)* दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच चल रही ऐसी जोश या क्रोध भरी बातचीत जिसमें हर व्यक्ति अपने कथन की पुष्टि में या दूसरे की बात का खंडन करने में अपने-अपने तर्क प्रस्तुत करता है। वाद-विवाद।

बहादुर *वि.(फ़ा.*<बहादुर<तुर्की बहादर) जो निर्भय होकर युद्ध करे। **पर्या.** वीर, पराक्रमी, शूर।

बहादुरी *स्त्री.(फ़ा.)* वीर होने का भाव। **पर्या.** वीरता, शौर्य, पराक्रम। **उदा.** झांसी की रानी लक्ष्मीबाई की बहादुरी पर हमें गर्व है।

बहाना *स.क्रि. (बहना का प्रेर. रूप*) 1. किसी द्रव पदार्थ को बहने देना। **जैसे**: खून की नदी बहाना, आँसू बहाना। 2. किसी वस्तु को बहती धारा में डाल देना। **जैसे:** फूल बहाना। 3. व्यर्थ में व्यय करना, लुटाना। **जैसे:** पानी की तरह पैसा। *पुं.(फा.)* 4. काम न करने के लिए या आत्मरक्षा के लिए झूठ बोलना। 5. तुच्छ या झूठा कारण। **उदा.** बीमारी तो बस बहाना है, वास्तव में वह आना ही नहीं चाहता।

बहार *स्त्री.(फ़ा.)* 1. वसंत ऋतु। **उदा.** बहार का मौसम आ गया है, इसलिए चारों ओर फूल खिले दिखाई पड़ते हैं। 2. आनंद, मज़ा, लुत्फ़। **उदा.** लॉटरी क्या निकली, उसके जीवन में बहार आ गई।

बहाल *वि.(फ़ा.+अर.)* पहले वाली हालत में आया हुआ, पूर्ववत। **पर्या.** पुन:स्थापित। **उदा.** वह नौकरी से निकाला जा चुका था, पर अब बहाल हो गया है।

बहाली *स्त्री.(फ़ा.+अर.)* पहले वाली स्थिति में आ जाना। **पर्या.** पुन:स्थापना।

बहाव *पुं.(*<बहना+आव प्रत्यय) द्रव की वह गति जो ऊँचाई से नीचे की ओर बढ़ती है। **पर्या.** प्रवाह। **उदा.** पहाड़ी इलाके में नदी का बहाव तेज़ होता है, पर मैदानी इलाके में वह धीमा पड़ जाता है।

बहि:क्षेपण *पुं.(तत्.)* शा.अर्थ बाहर की ओर फेंकने की क्रिया। **आयु.** पाचन-तंत्र से बिना पचे हुए तथा अनुपयुक्त पदार्थों का बाहर निकल जाना। **तु.** अंतर्ग्रहण।

बहिरंग रोगी *पुं.(तत्.)* **आयु. रोगी** जिसे चिकित्सक अपने परामर्श कक्ष में ही देखकर उपचार के लिए

नुस्ख़ा लिख दे। (यानी जिसे अस्पताल में भर्ती करने की आवश्यकता न पड़े) outdoor patient **तु.** अंतरंग रोगी।

बहिरंग *वि.(तत्.)* बाहर का, बाहरी। outdooar) *तु.* अंतरंग।

बहिर्गमन *पुं.(तत्.) (बहिःगमन)* शा.अर्थ बाहर जाना या निकलना। **राज.** किसी सभा, समाज या सदन की बैठक में चल रही बहस के दौरान दूसरों से अपने विचारों की स्वीकृति न मिलने की स्थिति में रुष्ट होकर अपना विरोध जताते हुए सभाभवन आदि से बाहर निकल जाने की स्थिति। walk out **तु.** बहिष्कार।

बहिष्करण बाहर करना। **दे.** 'बहिष्कार'।

बहिष्कार *पुं.(तत्.)* 1. किसी व्यक्ति को अपने समाज से बाहर कर देना और उससे सभी संपर्क समाप्त कर देना। **पर्या.** निष्कासन। **जैसे**: जाति से बहिष्कार/बहिष्करण। 2. किसी विचार, मत, निर्णय या कार्यवाही आदि का विरोध करते हुए उससे स्वयं को अलग कर देना। boycott **तु.** बहिर्गमन।

बहिष्कृत *वि.* बाहर किया हुआ। *दे.* बहिष्कार।

बहीखाता *पुं.(देश.)* व्यापारियों की वह पंजिका या पुस्तिका जिसमें लेन-देन, क्रय-विक्रय आदि से संबंधित सब प्रकार के लेखे या हिसाब लिखे जाते हैं। लेखा-बही। account book

बहु *वि.(तत्.)* एकाधिक, ज्यादा, अनेक। **जैसे:** बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय। अथवा-'बहु-विवाह' प्रथा अर्थात् एक से अधिक विवाह करने का रिवाज़।

बहुकोशिक *वि.(तत्.)* एक से अधिक कोशिकाओं वाले जीवों के लिए प्रयोग में आने वाला शब्द। प्रोटोजोआ संघ (फाइलम) को छोडक़र शेष सभी प्राणी इसी कोटि में आते हैं। **तु.** एककोशिक। multicellular

बहुतायत *स्त्री.(*<बहुत<बहु) अधिक मात्रा या संख्या में होने का भाव। **पर्या.** अधिकता, प्रचुरता। **उदा.** इस विद्यालय में अध्यापकों की तुलना में अध्यापिकाओं की बहुतायत है।

बहुदलीय *वि.(तत्.)* बहुत से दलों से मिलकर बना/बनी। **जैसे**: बहुदलीय सरकार।

बहुधा *क्रि.वि.(तत्.)* 1. अनेक बार, कई बार, बार-बार। 2. प्रायः, अकसर।

बहुपक्षीय *वि.(तत्.)* कई पक्षों से संबंधित; दो या दो अधिक पक्षों के बीच होने वाला या हुआ। **जैसे**: बहुपक्षीय समझौता, बहुपक्षीय करार।

बहुप्रचलित *वि.(तत्.)* 1. जो समयानुसार बहुत अधिक प्रचलन में हो। 2. अत्यंत प्रसिद्ध। **जैसे**: 1. बहुप्रचलित कोई फैशन। 2. बहुप्रचलित कोई नाटक।

बहुभाषी *वि.(तत्.)* 1. एकाधिक भाषाओं में संप्रेषण क्षमता रखने वाला (व्यक्ति)। 2. (वह समाज) जिसमें एकाधिक भाषाएँ बोली और समझी जा रही हों। **टि.** पर यह आवश्यक नहीं कि हर व्यक्ति उन सभी भाषाओं को जाने ही।

बहुभुज *वि.(तत्.)* 1. **ज्या.** अनेक कोणों और अनेक भुजाओं (प्राय: चार से अधिक) वाली (समतलीय बंद आकृति) polygen

बहुमत *पुं.(तत्.)* किसी वर्ग या समूह के अधिकतर यानी कम से कम आधे से अधिक लोगो के विचारों में एकता। **उदा.** 1. लोकतंत्र में जो दल बहुमत में होता है वह शासन करता है। majority **विलो.** अल्पमत।

बहुमुखी *वि.(तत्.)* शा.अर्थ जिसके बहुत से मुख हों। सा.अर्थ 1. अनेक विषयों का (ज्ञाता) जैसे-बहुमुखी प्रतिभा वाला व्यक्ति। 2. एक ही केंद्र से अनेक दिशाओं में जाने वाला। **जैसे**: नई दिल्ली में राजीव चौक वाला बहुमुखी मार्ग।

बहुमूर्तिदर्शी *पुं (तत्.)* एक-दूसरे से किसी कोण पर रखे दर्पणों द्वारा अनेक प्रतिबिंबों के बनने की विधि। kaleisdoscope

बहुमूल्य *वि.(तत्.)* 1. जिसका मूल्य सामान्य से कहीं अधिक हो, अधिक मूल्य का। castly 2. कीमत और दुर्लभ दोनों ही। **जैसे**: सोना, platinum जैसी बहुमूल्य वस्तुएँ।

बहुरंगा/बहुरंगी *वि.(तत्.)* 1. अनेक रंगों वाला/से युक्त। **उदा.** शीशमहल बहुरंगी शीशों से जगमगा रहा था। 2. विविध रूपों, गुणों, विशेषताओं से युक्त। **उदा.** भारतीय संस्कृति बहुरंगी है।

बहुरना *अ.क्रि.(देश.)* (जाने के बाद) वापस आना, लौटना। **उदा.** तुम्हारे अच्छे दिन पुन: बहुरेंगे। **टि.** ग्रामीण प्रयोग।

बहुराष्ट्रीय कंपनी *स्त्री.(तत्+अं.)* वह बड़ी कंपनी जिसका व्यवसाय दो या उससे अधिक देशों में फैला हो। multinational company

बहुरि *क्रि.वि.(देश.)* (1.) वापस लौटकर। **उदा.** हनुमत बहुरि राम पहिं आये। (ii) फिर, दुबारा। **उदा.** औषधि के प्रभाव से वह बहुरि जी उठ्यौ। **टि.** ग्रामीण प्रयोग।

बहुरि-बहुरि *(क्रि.वि.)* बार-बार। वत्स!बहुरि-बहुरि कहियो राम को संदेश। **टि.** ग्रामीण या काव्य में प्रयोग।

बहुरिया *स्त्री.(तद्>*वधूटिका) 1. नई ब्याही बहू, नववधू। **उदा.** बहुरिया को सब सगुन देहिं। 2. पुत्रवधू। **टि.** ग्रामीण अचंल का प्रयोग।

बहुरूपिया *पुं. (तद)* 1. वह व्यक्ति जो बार-बार अपना रूप बदलकर हमारे सामने आता है। 2. वह कलाकार जो विविध स्वांग धारण कर हमारा मनोरंजन करता है। 3. भाषा, वेश या अपना व्यवहार बदलने में माहिर।

बहुल *वि.(तत्.)* तुलनात्मक दृष्टि से मात्रा में अधिक/कहीं ज्यादा। **उदा.** चाँदनी चौक नई दिल्ली की तुलना में जनबहुल क्षेत्र है।

बहुलक् *पुं.(तत्.)* 1. कृष्णपक्ष 2. अग्नि 3. आकाश।

बहुलता *स्त्री. (तत्.)* तुलनात्मक दृष्टि से बहुत या अधिक होने का भाव। अधिकता, प्रचुरता, बहुतायत। उदा. हमारे देश में भाषाओं, धर्मों, रीति-रिवाजों आदि की बहुलता है।

बहुसंख्यक *वि.(तत्)* 1. तुलनात्मक दृष्टि से संख्या में दूसरों से कहीं अधिक। **उदा.** भारत में हिंदू अन्य धर्मावलंबियों की तुलना में बहुसंख्यक है। 2. शा.अर्थ. संख्या में बहुत/अधिक

बहू *स्त्री.(तद्<*वधू) 1. नवविवाहिता स्त्री, दुलहिन। 2. पत्नी। 3. अगली पीढ़ी के व्यक्ति (पुत्र, भतीजा, आदि) की पत्नी।

बहेलिया *पुं.(देश.)* वह व्यक्ति जो चिडियों कों पकड़कर बेचने से या उनका शिकार कर अपनी जीविका कमाता है। **पर्या.** चिड़ीमार, व्याध। **प्रयो.** बहेलिए ने जाल फैलाकर कबूतरों को पकड़ा।

बाँग *स्त्री.(फ़ा.)* 1. तेज़ और कर्कश ध्वनि, ऊँची आवाज़। **जैसे**: मुर्गे की बांग। 2. अजान

बाँचना *स.क्रि.* लिखे हुए को बोलकर सुनाना या पढ़ना। **प्रयो.** सुरेश मेरा लिखा हुआ निबंध बाँच रहा है।

बाँझ *स्त्री.(तद्<*वंध्या) वह स्त्री या मादा पशु जिसके किसी शारीरिक दोष के कारण बच्चे नहीं होते। **पर्या.** वंध्या। **उदा.** 'बांझ कि जान प्रसव कइ पीड़ा।' (तुलसी-रामचरित मानस)

बाँझपन *(पुं.)* बाँझ होने की अवस्था।

बाँटना *स.क्रि.(तद् बण्टन)* 1. किसी वस्तु, पदार्थ या संपत्ति, अधिकार आदि को अनेक भागों में विभाजित करना। अपनी संपत्ति को पुत्र-पुत्री आदि में बाँटना।, वितरण करना। **जैसे**: प्रसाद बाँटना।

बाँदी *स्त्री.(फ़ा. बंदा)* परिचारिका, दासी। **प्रयो.** पुराने जमाने में राजमहलों में रानियों की सेवा में कई बाँदियाँ तैनात रहती थीं।

बाँदी *स्त्री.(हि. बन्दा)* दासी, परिचारिका। **उदा.** पहले राजमहल में अनेक बाँदियाँ होती थीं।

बाँध *पुं.(तद्.)* जिससे बाँधा जाए, बहते पानी को रोकने के लिए बनाई गई कच्ची या पक्की मेंड या दीवार। Dam **जैसे**: भाखाडा बाँध।

बाँधना *स.क्रि.(तद्.<*बंधन) 1. फैली या बिखरी वस्तुओं को एकत्रित करके कसने या जकड़ने के लिए रस्सी, कपड़ा इत्यादि लपेटकर गाँठ लगाना। 2. किसी अपराधी को रस्सी, हथकड़ी आदि के माध्यम से काबू में करना। 3. नियमों, उपनियमों आदि द्वारा नियंत्रित करना। 4. पुस्तक आदि की जिल्द बनाना। 5. विचारों का स्थिरिकरण 6. पशु आदि को रस्सी या जंजीर से बाँधना **जैसे:** मनसूबा बाँधना, खूँटे पर अटकना

बाँस *पुं.(तद्.<*वंश) 1. घास की प्रजाति की एक लंबी, गांठदार, प्रसिद्ध वनस्पति। इसे चीरकर इसके पतले हिस्सों से टोकरे, पंखे, सूप इत्यादि उपकरण बनाए जाते हैं। 2. लगभग- सवा तीन गज के बराबर की भूमि या दूरी की माप

बाँसुरी *पुं.(तद्.<*वंश) पहले बाँस का बना सातछिद्रों से युक्त एक सुषिर वाद्य यंत्र जो मुंह से फूँककर बजाया जाता है। **पर्या.** मुरली, वंशी, वेणु आदि। **जैसे**: बांसुरी वादक हरिप्रसाद चौरसिया।

बाँह *स्त्री.(तद्<*बाहु) 1. कंधों से दोनों ओर लटका हुआ शरीर का भाग, भुजा। 2. कमीज़ आदि का

इसी आकृति वाला भाग। **मुहा.** 1. बाँह चढ़ाना=कुछ करने के लिए या लड़ने के लिए तैयार हो जाना। 2. बाँह पकड़ना=सहारा देना/अपनाना, विवाह करना।

बाकायदा *क्रि.वि.(फ़ा.)* (बाकाइद) कायदे से, विधिपूर्वक/नियम पूर्वक। **उदा.** उसने अपने कार्यक्रम में बाकायदा मुझे पत्र लिखकर बुलाया है। **टि.** फा. उपसर्ग बा=साथ, सहित और बे=बिना के प्रयोग में सावधानी अपेक्षित है। **जैसे**: बाकायदा-नियम से और बेकायदा-नियम विरूद्ध।

बाखबर *वि.(फ़ा.) [फा.बा+अर.खबर]* शा.अर्थ खबरों के साथ। सा.अर्थ 1. किसी बात से सचेत रहने वाला।, सावधान, सतर्क, होशियार। 2. जानकार, वाकिफ। 3. जिसे हर बात की खबर हो। जैसे-वह पड़ोस में होने वाली हर समस्या से बाखबर है।

बाखरि *स्त्री.(देश.) (हि. बखरी)* साधारण रूप से बना हुआ वह घर जिसमें यथासंभव पशुओं के लिए भी स्थान होता है। **पर्या.** मकान**,** घर, बखरिया। **टि.** ग्रामीण प्रयोग, काव्य में प्रयुक्त।

बागडोर *स्त्री. (तद्.*<वल्गा+दोर) व्यु.अर्थ **बाग = लगाम + डोर=रस्सी। टि.** घोड़े के मुंह में लगी लोहे की कड़ी बाग कहलाती है और उसमें बँधी रस्सी डोर। सा.अर्थ किसी कार्य को कुशलतापूर्वक चलाने/पूरा करने की जिम्मेदारी। **उदा.** अकबर की मृत्यु के बाद शासन की बागडोर जहाँगीर के हाथ आई।

बागबान/बागवान *पुं.(फ़ा.)* (प्र.) बाग (वाटिका) लगाने और उसकी देखभाल करने वाला। **पर्या.** उद्यानपाल**,** माली।

बागवत *स्त्री.(अर.)* बागी होने की स्थिति या अवस्था। **पर्या.** राजद्रोह। **उदा.** सन 1857 की बगावत में मंगल पांडे और रानी लक्ष्मीबाई का योगदान अविस्मरणीय है।

बागवानी/बागवानी *स्त्री.(फा.)* बगीचे में फल-फूल के पौधे, घास, झाड़ी इत्यादि लगाने और उनकी देखभाल करने की विद्या या शास्त्र। **पर्या.** उद्यानकृषि। gardening

बागा *पुं.(देश.)* बोलियों में प्रयुक्त शब्द। अंगरखे की तरह का एक पुराना पहनावा, जो घुटने तक लंबा होता था और जिसमें बाँधने के बंध लगे होते थे। **पर्या.** जामा।

बागान *पुं.(फ़ा.)* 1. बागों का समूह, बाग का बहुवचन। **जैसे**: चाय बागान।

बागी *क्रि./पुं. (अर.)* व्यक्ति या समूह जो राजसत्ता के विरूद्ध विद्रोह (बगावत) करे। **पर्या.** विद्रोही**,** राजद्रोही। **जैसे**: 1857 की बागी फौजी टुकड़ी।

बाज *पुं.(अर.)* बहुत तेज़ उड़ने वाला और लंबी नुकीली चोंच वाला एक प्रसिद्ध शिकारी पक्षी। **पर्या.** श्येन। **उदा.** 'चिड़ियों से मैं बाज़ लडाऊँ'। (गुरु गोविंद सिंह) 2. *वि.*(फा.) (i) वंचित, रहित। **मुहा.** बाज आना=जान-बूझकर वंचित रहना या दूर रहना। बाज न आना=छोड़ न पाना। **उदा.** लगता है, तुम मुझे मूर्ख बनाने से बाज़ न आओगे। (ii) कोई-कोई। **उदा.** बाज़ लोग ऐसे होते हैं जो देश के लिए मर मिटना जानते हैं। **प्रत्य.** *(फा.)* 3. वाला, व्यसनी, शौकीन। **जैसे**: बहानेबाज़, पतंगबाज, नशेबाज़।

बाज़ार *पुं.(फ़ा.)* 1. वह स्थान जहाँ प्रयोग आने वाली विविध वस्तुएँ खरीदी जा सकें।, मंडी। **मुहा.** बाजार गर्म होना=किसी वस्तु या काम की अधिकता होना। बाजार गिरना=भाव कम होना, मंदी होना। बाजार लगाना/तमाम वस्तुओं को इधर-उधर फैलाकर रखना। 2. निश्चित साप्ताहिक दिन पर लगने वाली दुकानें, हाट, पैठ।

बाजारवाद *पुं. (फ़ा. तत्)* वह आर्थिक सिद्धांत जिसके अनुसार कोई भी लेखन, वस्तु निर्माण आदि का कार्य व्यक्ति के हित को ध्यान में रखकर केवल बाजार की दृष्टि से ज्यादा से ज्यादा लाभ कमाने के लिए किया जाता है।

बाज़ारू *वि.(फ़ा. बाज़ार)* 1. जो बाज़ार से संबंधित हो, बाज़ार का। 2. जो उत्तम प्रकार का न हो, साधारण, घटिया। **प्रयो.** यहाँ बाज़ारू भाषा में बात मत करो।

बाज़ी *स्त्री. (फ़ा.)* ऐसी शर्त या खेल जिसमें हार-जीत या धन इत्यादि दांव पर लगा हो। **उदा.** 'हो जाए एक ताश की बाज़ी'। **मुहा.** प्राणों की बाज़ी=प्राण रहें या जाएं, परवाह नहीं है इस प्रकार की भावना।

बाजीगर *पुं.(फ़ा.बाज़ीग़र)* 1. वह व्यक्ति जो जनता के सामने अपनी कलाबाजियाँ दिखाता है। **पर्या.** नट। **तु.** जादूगर।

बाजीगरी *स्त्री.(फ़ा.)* बाजीगर का व्यवसाय या खेल-तमाशा।

बाज़ू *पुं.(फा.)* 1. बाँह, भुजा। **प्रयो.** देखें तुम्हारी बाजुओं में कितनी ताकत है। 2. पक्ष, भाग, दिशा। **उदा.** हमारे विद्यालय के दाहिनी बाजू में अस्पताल है।

बाट *पुं.(तद्. वर्त्मन)* मार्ग, रास्ता। **उदा.** प्राण जाहिं केहि बाट (तुलसी, रामचरितमानस) **मुहा.** बाट जोहना=किसी की प्रतीक्षा करना।

बाटी *स्त्री.(तद्*<वटी) 1. कंडों/उपलों की आग पर सेंककर बनायी जाने वाली एक प्रकार की छोटी, मोटी और गोल रोटी। राजस्थान, मालवा आदि क्षेत्रों में प्रसिद्ध दाल-बाटी एक विशेष पकवान। 2. पूर्वी उत्तर प्रदेश में आटे की लोई में सत्तू भरकर बनायी जाने वाली विशेष रोटी जिसे मकुनी भी कहते हैं। बिहार में इसे लिट्ठी कहते हैं जिसे 'चोखे' के साथ खाया जाता है।

बाड़ *स्त्री.(देश.)* खेत, बाग, पशुघर आदि जानवरों से रक्षा के लिए तार, बांस, थूहर आदि से बना घेरा। **प्रयो.** सब्जी वाले खेतों एवं फल वाले बागों की रक्षा बाड़ लगाकर ही की जाती है।

बाड़ा *पुं.(तद्.*<वाट् प्रा. वाड) चारों ओर से घिरा हुआ कोई भूखंड (जो प्राय: पशुपालन आदि के लिए तथा उनकी सुरक्षा के लिए चारों ओर से घेरा जाता है।)

बाड़ी *स्त्री.(तद्*<वाटी>वाटिका) 1. साग-सब्जी या फूल के पौधे उगाने के लिए बनाई गई क्यारियों का समूह। 2. गृह, घर, मंदिर आदि का सूचक बांग्ला से गृहीत शब्द। **जैसे**: कालीबाड़ी।

बाढ़ *स्त्री.(तद्*<वृद्धि) 1. बढ़ने का भाव, वृद्धि, अधिकता। 2. नदी या जलाशय में पानी की आमद बढ़ जाने पर उसका किनारा तोड़/लांघकर जल के चारों ओर फैल जाने और जन-धन, पेड़-पौधों आदि की हानि हो जाने की स्थिति। **उदा.** अधिक वर्षा होने की वजह से यमुना में बाढ़ आई हुई है। 3. किसी भी बात की अधिकता, भरमार। **उदा.** आजकल फैशन के वस्त्रों की बाढ़-सी आ गई है।

बाण *पुं.(तत्.)* युद्ध या आखेट इत्यादि में प्रयुक्त एक अस्त्र, जो सरकंडे की सींक पर नोंकदार लोहे का टुकड़ा लगाकर बनाया जाता है तथा धनुष की सहायता से चलाया जाता है। **पर्या.** तीर, शर।

बातूनी *वि.(*<*बात)* बहुत बातें करने वाला। **पर्या.** बकवादी, वाचाल। **उदा.** वह बहुत बातूनी है, उस पर विश्वास मत करना।

बादल *पुं.(तद्*<वारिद) सूर्य के ताप से समुद्र के पानी का भाप बनकर आसमान में तैरता वह संघनित रूप जो फिर पानी की बूँदे या धार बनकर पृथ्वी पर बरसता है। **पर्या.** मेघ, घन, पर्जन्य।

बादामी *वि.(फ़ा.)* (बादाम+ई) 1. बादाम के आकार वाला। **जैसे**: बादामी आँखें। 2. बादाम के (छिल्के के) रंगवाला। **प्रयो.** बादामी रंग की गाड़ी, बादामी कागज।

बाधक *वि.(तत्.)* जो बाधा या रूकावट उत्पन्न करे। **उदा.** आप उसकी उन्नति में बाधक मत बनें।

बाधा *स्त्री. (तत्)* किसी काम में पैदा हुइ या पैदा की गई रूकावट। **पर्या.** अड़चन, रोक, विघ्न, व्यवधान।

बाध्य *वि.(तत्.)* जो किसी दबाव के कारण कुछ करने या सहने के लिए मज़बूर हो। **पर्या.** विवश, बेबस, लाचार।

बाध्यता *स्त्री.(तत्)* बाध्य होने का भाव। ऐसा दबाव जिसके कारण कुछ करने या सहने के लिए लाचार/मजबूर हो। **पर्या.** लाचारी, विवशता, बेबसी।

बानगी *स्त्री.(तद्.*<वर्णिका) किसी भी वस्तु या काम का वह अंश जो उसके संपूर्ण स्वरूप को व्यक्त करने में समर्थ हो। **पर्या.** नमूना। **उदा.** गेहूँ की बानगी लेते आना, पहले उसे देखकर फिर खरीदने की सोचेंगे।

बाना *पुं.(*<*बनाना)* पोशाक, वेशभूषा। **उदा.** प्रत्येक प्रांत के लोगों का बाना अलग-अलग है। *पुं.(तद् वयन)* कपड़ा बुनते समय चौड़ाई के बल में लगा हुआ धागा। *तु.* ताना।

बानी *स्त्री.(तद्.*<वाणी) 1. मुंह से निकलने वाली सार्थक ध्वनि। 2. सरस्वती (वाणी की अधिष्ठात्री), 3. साधु-महात्माओं के उपदेश। **जैसे**: कबीर की बानी, गुरु नानक की बानी।

बाबा *पुं.(फ़ा.)* 1. पिता का पिता, दादा, पितामह। 2. (लाक्ष.) वृद्ध पुरुषों को आदर देने के लिए संबोधन। 3. साधू-संन्यासियों का सम्मानपूर्वक संबोधन। **जैसे**: इस समय कई बाबा भिक्षा के लिए आए हुए हैं। 4. (यूरोपीय भाषा से आगत) छोटा बच्चा।

बाबोदाना *पुं.* *(फा.)* 1. जल और अन्न या अन्न-जल 2. जीविका, रोज़ी **जैसे:** जब तक यहाँ का आबोदाना रहेगा, तब तक रहेंगे। **मुहा.** आबोदाना उठ जाना = किसी स्थान विशेष में जीविका का साधन न रह जाना।

बामशक्कत *क्रि.वि.(फा.)* परिश्रमपूर्वक। **उदा.** मुजरिम को दो साल की सज़ा बामशक्कत सुनाई गई।

बायलर *पुं.(अं.)* पहले रेलगाड़ी में भाप के एंजिन के लिए पानी रखने के लिए लोहे का बड़ा पीपा होता था जो बायलर कहलाता था। ईंधन जलाकर या अब बिजली का उपयोगकर पानी गरम करने वाला कोई भी उपकरण।

बायाँ *वि.(तद्*<वाम) पूर्व की ओर मुँह करके खड़े होने पर उत्तर दिशा की ओर का अंग। (स्त्री-बाइंऱ्) दाहिने का उल्टा। **जैसे**: बायाँ हाथ।

बायोगैस *स्त्री. (अं.)* जैविक द्रव्यों के सड़ने पर रासायनिक प्रक्रिया से उत्पन्न गैस, जो मुख्यत: मीथेन और कार्बन-डाईऑक्साइड का मिश्रण होता है। इसका उपयोग मुख्यत: जलाने में होता है।

बारंबार *क्रि.वि.(तद्*<वारंबार) बार-बार, पुन:-पुन:।

बारंबारता *स्त्री.(तद्*<वारंवारता) बार-बार घटित होने का भाव या प्रक्रम। frequency

बार *पुं.(तद्.*<वार, द्वार) 1. द्वार, दरवाज़ा, आश्रय स्थान। **जैसे**: घर-बार। *स्त्री.(तद्*<वार) दफा, मर्तबा। **जैसे**: हरबार, बार-बार। 3. *(अं.)* वह स्थान जहाँ बैठकर शराब पी जा सके। 4. न्यायालय के अहाते में वकीलों के बैठने का स्थान। विशेष-'बालक' या 'बालों' के लिए हिंदी की बोलियों में प्रयुक्त शब्द।

बारकोड *पुं.(अं.)* (कंप्यूटर भाषा) 1. किसी भी विभाग के द्वारा या प्रकाशन विभाग के कंप्यूटर द्वारा विविध रेखाओं के माध्यम से किसी कार्ड, फार्म या पुस्तक आदि में अंकित किया गया वह चिह्न जो उसका पूर्ण परिचय दे सकता है। 2. कंप्यूटरीकृत, परिचायत्मक विशेष रेखायुक्त चिह्न।

बारिश *स्त्री.(फ़ा.)* **दे.** वर्षा', बरसात।

बारीक *वि.(फा.)* 1. महीन, पतला। **उदा.** बारीक पिसाई; बारीक कपड़ा। fine 2. सूक्ष्म, जो जल्दी समझ में न आ। **उदा.** 'कूदना' और 'फांदना' क्रियाओं में अर्थ संबंध बारीक अंतर विचारणीय है।

बारीकी *स्त्री.(फा.)* बारीक होने का भाव, पतलापन, सूक्ष्मता। *दे.* बारीक़।

बाल अपराध *पुं.(तत्.)* समा. 10 वर्ष से 18 वर्ष तक की आयु वाले युवा वर्ग द्वारा समाज स्वीकृत नियमों को तोड़ने वाला अपराध। ऐसे अपराधियों को सज़ा न देकर उनके लिए सुधारात्मक उपाय किए जाते हैं। child delinquency

बाल-केंद्रित *वि.(तत्.)* (ऐसा कार्यक्रम जिसमें मुख्यत: बालकों को ध्यान में रखा गया हो।

बालटी *स्त्री.(अं.*<बकेट) पानी इत्यादि द्रव्य पदार्थ रखने के लिए या भरने के लिए धातु, प्लास्टिक आदि का डोलचीनुमा पात्र। Bucket

बाललीला *स्त्री.(तत्.)* 1. बचपन की लीला। **प्रयो.** कृष्ण की बाललीलाओं का मंचन किया गया। 2. बच्चों का खेल। **प्रयो.** यह काम मेरे लिए तो बाललीला के समान है।

बालवाड़ी *स्त्री.(तद्.*<बालवाटी) शा.अर्थ बच्चों के लिए बनाया गया उद्यान अथवा गृह। सा.अर्थ (शिशुओं) बच्चों के विद्यालयपूर्व शिक्षण के लिए स्थापित संस्था। **पर्या.** बालवाटिका kindergarden

बालविवाह *पुं.(तत्.)* (i) कम उम्र के लडके-लडकियों के विवाह की (दोषपूर्ण) प्रथा; (ii) इक्कीस वर्ष से कम आयु के लडकों तथा अठारह वर्ष से कम आयु वाली लडकियों का विवाह सरकार ने गैरकानूनी घोषित कर दिया है। child marriage

बाला *स्त्री.(तत्.)* 1. लड़की जो लगभग तेरह वर्ष से सोलह-सत्रह वर्ष तक की आयु वाली हो, किशोरी, 2. कन्या, 3. स्त्री। **उदा.** चाह नहीं मैं सुर बाला के गहनों में गूंथा जाऊँ। (बाल का स्त्रीलिंग)

बालिग *पुं.(अर.)* जो किशोरावस्था पार कर चुका हो अर्थात अठारह साल का हो चुका हो। **पर्या.** वयस्क। **उदा.** बालिग लोगों को ही मतदान करने का अधिकार मिला हुआ है। **विलो.** adult

बालिश्त *पुं.(फ़ा.)* एक नाप जो लगभग नौ इंच या 23 सेमी. के बराबर होती है। **टि.** हथेली को फैलाने पर अँगूठे की नोक से कनिष्ठिका (छोटी उंगली) के छोर तक की दूरी। **पर्या.** बित्ता।

बाली *स्त्री.(तद्<बल्ली)* 1. कान में पहनने का प्रसिद्ध आभूषण। 2. गेहूँ-जौ की बाल (जिसमें दाने होते हैं)

बालू *स्त्री.(तद्.<बालुका)* नदी में निरंतर जलप्रवाह के कारण पत्थरों के अपरदन (टूटने) से बने बारीक कणों का संग्रह जो नदी या समुद्र के किनारे अथवा रेगिस्तान में पाए जाते हैं। **पर्या.** रेत, सिकता।

बालूटिब्बा *पुं.(देश.)* **भू.** रेगिस्तान में वायु के प्रवाह (आँधी) के कारण एकत्रित रेत जो अस्थायी टीले का रूप ले लेती है। आँधी के कारण रेत के टिब्बे उड़-उड़ कर स्थान बदलते भी रहते हैं। sand dune

बावजूद *क्रि.वि.(फ़ा.<बावुजूद)* (के) होते हुए भी, यद्यपि।

बावड़ी *स्त्री. (देश.<वापी)* ऐसा कुआँ जिस तक पहुँचने के लिए सीढ़ियाँ बनी हों। **प्रयो.** दिल्ली में आज भी पुराने ज़माने की कई बावडियाँ मिलती हैं।

बावरची ख़ाना *पुं. (फ़ा.)* वह कक्ष या कमरा जहाँ खाना पकाया जाता है, रसोई घर।

बावरची *पुं.(फ़ा.)* खाना पकाने वाला, रसोइया।

बावरा/बावला *वि.(तद्<वातुल)* जिसका दिमाग वायु-प्रकोप के कारण विकृत हो गया हो, पागल।

बावलापन *पुं.(तद्.)* पागलपन।

बावली *स्त्री.(तद्.<वापी)* कुआँ जिस तक पहुँचने के लिए सीढ़ियाँ बनी हों। **दे.** 'बावड़ी'। 2. 'बावला' का स्त्रीलिंग रूप वातरोग से ग्रस्त कोई स्त्री, पगली।

बावेला *पुं. (फ़ा.)* किसी अनुचित बात पर एकाधिक लोगों द्वारा किया गया हंगामा। **प्रयो.** पंक्ति तोडक़र आए व्यक्ति को रेल-टिकट देने पर दूसरे लोगों ने बावेला मचा दिया।

बाशिंदा *पुं.(फ़ा.)* किसी उल्लिखित स्थान का रहने वाला। **पर्या.** निवासी। यहाँ के बाशिंदे बड़ी धार्मिक प्रवृत्ति के हैं।

बासी *वि.(तद्>वासर)* 1. एक दिन पहले का या अधिक समय का पका हुआ भोजन। **प्रयो.** बासी अन्न मत खाओ। 2. जो नया न हो, पुराना। **प्रयो.** यह तो बासी समाचार है, ताज़ा नहीं है। 3. जो सूखा या कुम्हलाया हो। **प्रयो.** बासी फल, बासी फूल। **उदा.** प्रकृति के यौवन का शृंगार करेंगे कभी न बासी फूल।

बाहुबल *पुं.(तत्.)* शा.अर्थ 1. बाहुओं (भुजाओं) की शक्ति, शारीरिक शक्ति। 2. पराक्रम, वीरता। **उदा.** रावण ने अपने बाहुबल से इंद्र को जीत लिया था।

बाहुबली *(वि.) (तत्.)* 1. अत्यधिक पराक्रमी। **जैसे:** बाहुबली भीम। *(पुं.)* राज. (आधुनिक प्रयोग) 2. व्यक्ति जो अपनी शारीरिक बल का दुरूपयोग करते हुए दूसरों से उनकी इच्छा के विरूद्ध काम करवाते हैं। **उदा.** कई बाहुबली चुनाव के समय अपनी इच्छानुसार लोगों को मतदान के लिए बाध्य कर देते हैं।

बाहुल्य *पुं.(तत्.)* बहुल का भाव (अधिकता) बहुतायत। **उदा.** इस संस्थान में विदेशी छात्रों का बाहुल्य है।

बाह्य कर्ण *पुं.(तत्.) दे.* कर्ण।

बाह्य *वि.(तत्.)* बाहरी। **विलो.** आंतरिक।

बिंदास *वि./पुं. (मरा.)* वह (पुरूष या स्त्री) जो मौजमस्ती और खुलेपन निश्चित, यानी सभी प्रकार की वर्जनाओं से रहित जीवन जिए।

बिंदी *स्त्री. (तद्.<बिन्दु)* 1. शून्य, 2. अनुस्वार का चिह्न (.) **जैसे**: हंस में अनुस्वार का चिह्न है। 3. स्त्रियों के माथे पर सिंदूर या कुमकुम से लगाई जाने वाली छोटी-सी गोल टिकिया, टिकुली। **दे.** बिंदु।

बिंदु *पुं.(तद्)* 1. पानी या किसी तरह पदार्थ का कण। 2. छोटा गोलाकार चिह्न, बिंदी। 2. अनुस्वार का चिह्न या अनुस्वार। 4. किसी चीज का बहुत छोटा अंश, टुकड़ा। 5. किसी विषय का महत्वपूर्ण अंश। **जैसे:** विचारणीय बिंदु। 6.(लाक्ष.) किसी बड़ी सत्ता के समक्ष या तुलना में अपनी या अन्य की अत्यल्पता। **जैसे:**

राष्ट्रकवि दिनकर के कवित्व की तुलना में तो वह सागर के एक बिंदु की तरह हैं।

बिंब *पुं.(तत्.)* 1. छाया, प्रतिच्छाया। **पर्या.** प्रतिबिंब। 2. कल्पना से मन में उठने वाली आकृति या भाव। 3. सूर्य-चंद्र की गोलाकृति/मंडल 4. दर्पण में पड़ने वाला अक्स।

बिकना *अ.क्रि.(तद्*<विक्रय) 1. किसी वस्तु को कुछ धन के बदले में दूसरे के हाथ में जाना, बेचा जाना। **जैसे**: गेहूँ का बिकना, फलों का बिकना। 2. ला.अर्थ किसी के हाथ बिकना, किसी का दास हो जाना।

बिकाऊ *वि.(देश.*<विक्रय) बिकने के योग्य, जो बिकने के लिए उपलब्ध हो; जो खूब बिकता हो। **जैसे**: बिकाऊ माल।

बिक्री *स्त्री.(तद्.*<विक्रय) बेचने की क्रिया या भाव।, विक्रय। उदाहरण-सर्दी के मौसम में ऊनी वस्त्रों की बिक्री बढ़ जाती है। **विलो.** खरीद।

बिखरना *अ.क्रि.(तद्.* विकीर्णन) जो पहले समूह में हो उसका फैल जाना, तितर-बितर हो जाना। **पर्या.** छितराना। **उदा.** 1. डिब्बा गिर जाने से चाय (की पत्ती) बिखर गई। 2. सभा समाप्त होने पर सभी लोग धीरे-धीरे बिखर गए।

बिखेरना *स.क्रि.(तद्.*<विकीर्णन) (बिखरना का प्रेर.) समूह में उपलब्ध वस्तु को चारों ओर फैलाना, छितरा देना। **विलोम.** समेटना।

बिगड़ना *अ.क्रि.(तद्. बिगाड़*<विकार) 1. आकार, गुण, स्वरूप आदि में विकृति (खराबी) आ जाना जिसके फलस्वरूप उसकी उपयोगिता, क्रियाशीलता अथवा महत्व अपेक्षाकृत कम हो जाए। **उदा.** मेरी घड़ी बिगड़ गई है, उसे ठीक कराने जा रहा हूँ। 2. (परिस्थिति) प्रतिकूल हो जाना। 3. गलत रास्ते पर जाना, पथ भ्रष्ट होना। **प्रयो.** लडक़ा बहुत बिगड़ गया है। 5. क्रुद्ध होना।

बिगड़ा *वि.(*<बिगड़ना) जो दोषयुक्त हो, जिसमें विकार आ जाए। **पर्या.** खराब। **प्रयो.** (i) यहाँ का माहौल बिगड़ा हुआ है। (ii) बिगड़े बच्चों को काबू करना आसान नहीं है। (iii) इस बिगड़ी घड़ी को सुधरवा लो।

बिचकना *अ.क्रि.(देश.)* खतरे की आशंका भापकर चौकन्ना हो जाना। **उदा.** माँ के हाथ में छड़ी देकर बच्चा बिचक गया। (वि.) चौंकने वाला

बिच्छू *पुं.(तद्*<वृश्चिक) 1. छह पैरों वाला एक छोटा विषैला जंतु जिसकी ऊपर की ओर मुड़ी हुई डंक वाली पूँछ ऊपर उठी होती है तथा उसका दंश बहुत ही कष्टप्रद होता है। **उदा.** बिच्छु के डंक मारने से बहुत जलन एवं पीड़ा होती है। 2. एक तरह की घास।

बिछाना *स.क्रि.(तद्*>विस्तरण) 1. (जमीन आदि पर) किसी वस्तु को दूर तक फैलाना। जैसे-फर्श पर दरी बिछाना, चारपाई/बिस्तर पर चादर बिछाना। 2. बिखेरना, किसी के स्वागत में मार्ग में फूल बिछाना। 3. ला.अर्थ किसी को मारते मारते जमीन पर लिटा देना।

बिछावन *पुं.(देश.*<विस्तारण) गद्दा, दरी, चादर, चटाई या कोई कपड़ा इत्यादि जो सोने, बैठने आदि के लिए बिछाया जाए।

बिछुड़ना *अ.क्रि.(तद्.*<विच्छेदन) 1. अपने किसी साथी, संबंधी या प्रियजन से जाने-अनजाने अलग हो जाना जो पीड़ादायक होता है। **उदा.** भीड़ भरे मेले में बच्चा अपने माँ-बाप से बिछुड़ गया।

बिछोह *पुं.(तद्.*<बिछड़ना<विच्छेदन) बिछड़ने या अलग होने का भाव। **पर्या.** वियोग**,** जुदाई।

बिछौना *पुं.(<बिछाना)* भूमि, चारपाई, तख्त आदि पर बैठने, लेटने के लिए बिछाया जाने वाला वस्त्र, गद्दा आदि। **पर्या.** बिस्तर**,** बिछावन। *तु.* आसन। **प्रयो.** तुम्हारा बिछौना आंगन में लगा दिया है।

बिजलीघर *पुं.(देश.)* वह स्थान या कार्यालय जहाँ विद्युत-उत्पादन किया जाता है या मुख्य बिजलीघर से आने वाली विद्युतधारा को घरों, कारखानों आदि में वितरण की व्यवस्था की जाती है।

बिटुमेन *पुं. (अं.)* **रसा.** ठोस और अर्ध-ठोस हाइड्रोकार्बन का प्राकृतिक मिश्रण जो पेट्रोलियम से निकलता है। इसका उपयोग सडक़ तथा छत बनाने में किया जाता है। 2. भूरे रंग का पेन्ट जिसे एस्फाल्ट तथा शुष्कन तेल drying oil को मिलाकर तैयार किया जाता है। इसका उपयोग

कलाकार द्वारा चित्र बनाने में किया जाता है। Bitumen

बिठाना/बैठाना *(बैठना का प्रेर.) (देश.<*उपवेशन) 1. किसी को बैठने की प्रेरणा देना। **पर्या.** बैठाना। **प्रयो.** (i) मैं पाँच मिनट में आता हूँ, तब तक मेहमान को बिठाना। (ii) मैं उन्हें गाड़ी में बिठाकर आ रहा हूँ। 2. यथास्थान स्थापित करना। **प्रयो.** मेरी हड्डी खिसक गई थी, डॉक्टर ने उसे बिठा/बैठा दिया है।

बिडाल *पुं.(तत्.)* नर बिल्ली, मार्जार।

बिताना *स.क्रि.(तद्.* व्यत्ययन) (समय को) व्यतीत करना, (समय) गुजारना, काटना। **जैसे**: 1. वह आश्रम में अपना समय आनंद से बिता रहा है। 2. वह बेचारा तो मुसीबत में जैसे-तैसे अपना वक्त बिता रहा है।

बिना *अव्य.(तत्.)* बगैर, जैसे-बिना बुलाए, बिना कारण, बिना मतलब। **उदा.** वह बिना कहे चला गया है। *स्त्री.(अर.)* कारण, आधार। **उदा.** आप किस बिना पर मुझसे इतनी बहस करते जा रहे हैं।

बिफरना *अ.क्रि.(तद्.<*बिस्फालन) दूसरे की बात को अनुचित या मनोनुकूल न मानते हुए उसके प्रति क्रोध प्रदर्शित करना; भड़कना या नाराज़ होना। **उदा.** मित्र की कटु व्यंग्योक्ति पर वह बुरी तरह बिफर गया।

बियाबान *पुं.(फ़ा.)* 1. जंगल, वन। 2. सुनसान या उजाड़ स्थान, निर्जन स्थान। **प्रयो.** वहाँ तो बियाबान-सा लगता है।

बियाबान *वि.(फा.)* सुनसान, एकांत, उजाड़, जहाँ बस्ती न हो। **जैसे**: बियाबान जंगल, बियाबान खंडहर।

बिरयानी *स्त्री.(फ़ा.)* मूल अर्थ। एक प्रकार का पुलाव जिसमें गोश्त डाला जाता है। सा.अर्थ एक प्रकार का हैदराबादी पुलाव जिसमें चावल, सब्जी आदि की अलग-अलग सतहें बनाकर उसे सजाया जाता है।

बिरादरी *स्त्री.(फ़ा. बरादरी)* 1. सभी स्वजनों/बंधुओं का समूह। **जैसे**: राजपूत बिरादरी, नाई बिरादरी आदि। 2. किसी एक ही धर्म, जाति/उपजाति अथवा समान व्यवसाय वाले लोगों का समूह। **जैसे**: अध्यापक बिरादरी, सरकारी कर्मचारी बिरादरी।

बिलकुल/बिल्कुल *क्रि.वि. अर.(अं.)* पूरी तरह से, नितांत, सर्वक्ष। **उदा.** मुझे तो वह बिलकुल पागल लगता है।

बिलखना *अ.क्रि.(तद्<*विलपन) व्यु.अर्थ किसी प्रिय के वियोग में बैचेनी भरा रोना जिसमें कभी स्वर की गति तीव्र हो जाती है, तो कभी मंद, विलाप करना।

बिलटी *स्त्री.(अं.बिलेट)* रेल से भेजे जाने वाले माल की वह रसीद जिसे दिखलाने पर पाने वाले को वह माल मिलता है।

बिलबिलाना *अ.क्रि.(देश.अनु.)* 1. छोटे कीड़ों का पास-पास लगभग एक ही स्थान पर टेढे-मेढ़े और ऊपर-नीचे होते हुए हिलना-डुलना, रेंगना। (रिगल, रिगलिंग) 2. मन में ही दुखी होना।

बिलांस *पुं.(देश.)* लगभग नौ इंच की नाप। प्राय: इसे हथेली फैलाकर नापा जाता है। कनिष्ठा के अग्रभाग से अंगूठे के अग्रभाग तक का फैलाव। **पर्या.** बित्ता।

बिलोकना *स.क्रि. (तद्.<*बिलोकन) देखना, ध्यान से देखना। **उदा.** इनहिं बिलोकत अति अनुरागा....(रामचरित मानस)

बिल्कोर/बिल्लौर *पुं.(अर.)* सा.अर्थ एक प्रकार की मणि या सफेद पत्थर जो पारदर्शक होता है। **भौ.** सिलिका निर्माण एक कठोर पारदर्शी खनिज। **पर्या.** स्फटिक। crystal

बिवाई *(तद्<*विपादिका) *स्त्री.* एडियों की चमड़ी के फटने का रोग जो कष्टदायक होता है।

बिस्तर *पुं.(फ़ा.)* सोने के लिए तैयार किया गया गद्दे, तकिए और चादर आदि से युक्त स्थान; इन सारी वस्तुओं का सामूहिक नाम भी।, **पर्या.** बिछौना।

बिस्तरबंद *पुं.(फ़ा.)* कैनवास/चमड़े आदि का बना लंबा थैला जिसमें यात्रा के समय बिस्तर (गद्दा/तकिया/चादर आदि) डाल, लपेट या पेटी से बाँधकर ले जाते हैं। **प्रयो.** मैनें पर्वतीय यात्रा के लिए अपना बिस्तरबंद तैयार कर लिया है।

बिस्मिल्लाह *(अर.)* 1. कुरान की एक आयत, जिसका अर्थ है-"मैं ईश्वर के नाम से आरंभ करता हूँ जो बड़ा दयालु और महा कृपालु है।"

इसका प्रयोग किसी कार्य का आरंभ करते समय किया जाता है। 2. किसी कार्य का शुभारंभ।

बिहू *पुं.(तद्.*<विषु) 1. असम प्रदेश में मनाया जाने वाला वर्षा के आरंभ का उत्सव। यह उत्सव पंद्रह अप्रैल को मनाया जाता है। 2. इसी अवसर पर किया जाने वाला लोकनृत्य। **तु.** बैसाखी (पंजाबी), चेटी चंड (सिंध), गुढ़ी पाड़वा (महाराष्ट्र), उगादी (कर्नाटक)।

बी.ए. *पुं.(अं.)* Bachelor of Arts संक्षिप्ति 1. त्रिवर्षीय किसी विश्वविद्‌यालय/महाविद्‌यालय का मानविकी या कला विषय का डिग्री पाठ्यक्रम/स्नातक परीक्षा/तत्संबंधी उपाधि। 2. कला-स्नातक। bechelor of arts

बीकर *पुं.(अं.)* शीशे का बेलनाकार बर्तन जिसका उपयोग विज्ञान की प्रयोगशालाओं में किया जाता है।

बीच-बचाव *पुं.(देश.)* दो व्यक्तियों या पक्षों के बीच चल रहे झगड़े को समाप्त करने के उद्देश्य से किसी तीसरे व्यक्ति/पक्ष द्‌वारा बीच में पड़कर दोनों पक्षों में सुलह कराने का प्रयत्न।

बीज *पुं.(तत्.)* 1. फूल वाले पौधों या अनाज के डंठलों से प्राप्त वे छोटे, कठोर दाने अथवा फलों की वे गुठलियाँ जिनके मिट्‌टी में दबने और खाद-पानी मिलने के फलस्वरूप वैसे ही नए पौधे उग आते हैं। 2. **वन.** बीजांड के निषेचन के फलस्वरूप भ्रूण, उसके आवरण तथा प्राय: भ्रणपोष की बनी संरचना जो अंकुरण के पश्चात नए पौधों को जन्म देती है। ला.अर्थ मूल कारण (या आरंभिक बात) जो आगे चलकर (बहुत) बड़ा रूप धारण कर लेती है।

बीजक *पुं.(तत्.)* 1. माल बेचने वाले (विक्रेता) द्‌वारा खरीदने वाले (क्रेता) को भेजी जाने वाली सूची जिसमें माल और भुगतान संबंधी देय राशि का समस्त विवरण दिया गया हो। 2. पुराने जमाने में गाड़ी गई संपत्ति के साथ नत्थी सूची और/या उस खजाने तक पहुँचने का कूट नक्शा। invoice

बीजगणित *पुं.(तत्.)* गणितशास्त्र की वह शाखा, जिसमें कुछ निश्चित संख्याओं के स्थान पर बीज या अक्षरों का प्रयोग किया जाता है और गणितीय संकल्पनाओं को समीकरण के रूप में व्यक्त किया जाता है। algebra

बीड़ा *पुं.(देश.) (सं. वीटक)* 1. कत्था-चूना-सुपारी के टुकड़े डालकर तिकोना मोडक़र लिपटा हुआ पान। **प्रयो.** कुछ लोग भोजन के बाद पान का बीड़ा खाते हैं। 2. किसी अत्यंत कठिन कार्य को करने का सार्वजनिक संकल्प। **मुहा.** बीड़ा उठाना=किसी दु:साध्य कार्य को सिद्ध करने का सार्वजनिक संकल्प। **उदा.** महात्मा गांधी ने देश को स्वतंत्र कराने का बीड़ा उठाया।

बीन *स्त्री.(तद्.*<वीणा) सँपेरों द्‌वारा बजाया जाने वाला प्रसिद्‌ध वाद्‌य जो अपनी विशिष्ट ध्वनि के कारण अलग से पहचाना जाता है।

बीनना *स.क्रि. (तद्.*<विनयन) 1. किसी सामग्री में से मिश्रित अपपदार्थ के दानों को हाथ में उठाकर अलग करना। **प्रयो**. चावलों से पत्थर के कणों को बीनना। 2. बहुत सी बिखरी चीजों को हाथ से उठाकर इकट्‌ठा करना। **जैसे**. महुआ बीनना।

बीभत्स *वि.(तत्.)* 1. जिसे देखने पर मन में घृणा हो। **उदा.** बम फटने के बाद वहाँ का दृश्य बड़ा ही बीभत्स था। **टि.** काव्य के नौ रसों में से एक जिसका स्थायीभाव जुगुप्सा है।

बीमा *पुं.(फ़ा.बीम=भय)* ऐसी आर्थिक व्यवस्था जिसमें अपने जीवन, मकान, मशीनरी आदि की सुरक्षा के लिए नियमित समय तक अनुमत है, राशि को संबंधित कंपनी में किस्तों के रूप में जमा करवाते रहना पड़ता है ताकि बीच में यदि उस वस्तु में किसी प्रकार की क्षति हो जाए या बीमाधारी की मृत्यु हो जाए तो उसकी क्षतिपूर्ति करना उस कंपनी की बाध्यता होती है। insurance **जैसे:** जीवन बीमा, मोटर बीमा, मकान बीमा आदि।

बीमा अभिकर्ता *पुं.(फ़ा. बीमा+तत्. अभिकर्ता)* वह व्यावसायिक मध्यस्थ जिसके माध्यम से बीमा करवाने वाले व्यक्ति (बीमाधारी) और बीमा करने वाली कंपनी के बीच एक करार होता है और जिसे उसकी सेवा के लिए नियमानुसार कमीशन मिलता है। incuracne agent

बीमाकर्ता *पुं.* बीमा करने वाली कंपनी। **दे.** बीमा।

बीमाधारी *वि./पुं.* व्यक्ति जिसके नाम पर बीमा किया गया हो। **दे.** बीमा।

बीहड़ *वि.(तद्.*<विकट या भीषण) ऊँचा-नीचा या ऊबड़खाबड़ निर्जन प्रदेश। **जैसे:** बीहड़ जंगल। *पुं.* राजस्थान, मध्यप्रदेश और उत्तर प्रदेश में बहने वाली चंबल नदी के किनारों पर स्थित मिट्टी के ऊँचे-नीचे ढूहों से युक्त विस्तृत क्षेत्र जो 'भिंड-मुरैना के बीहड़' के नाम से प्रसिद्ध है।

बुआ *स्त्री.(देश.)* पिता की बहिन, फूफी।

बुआई *स्त्री.* बोने की क्रिया जुताई के बाद तैयार खेतों में बीज छिडक़ कर बोने का काम और या इसके लिए दी गई मजदूरी। sowing

बुखार *पुं.(अर.)* किसी रोग के कारण शरीर का तापमान सामान्य (37^{0} से. या 98.4^{0} से) से अधिक हो जाने की स्थिति। **पर्या.** ज्वर, ताप। (फ़ीवर)

बुज़दिल *वि.(फा.)* शा.अर्थ जिसका दिल बकरी की तरह (कमज़ोर) हो। सा.अर्थ कायर, डरपोक। **उदा.** तुम बुज़दिल इंसान मत बनो।

बुज़दिली *स्त्री(फ़ा)* कायरता, डरपोकपन।

बुज़ुर्ग *वि(फा.)* प्रौढ़ावस्था को पार कर गया व्यक्ति (स्त्री और पुरूष दोनों ही) **पर्या.** वृद्ध, बूढ़ा।

बुझना *अ.क्रि.(देश.)* 1. जलती हुई आग या रोशनी का बंद हो जाना या अपने आप ठंडा हो जाना। **जैसे**: दीपक का बुझना, आग का बुझना आदि। 2. ताप का शांत होना। **जैसे**: प्यास बुझना। 3. **लाक्ष.** मानसिक आवेग, उत्साह आदि का समाप्त हो जाना। **जैसे**: दिल का बुझना।

बुदबुदाना *अ.क्रि.(देश.-अनुर.)* 1. 'बुद्-बुद्' जैसी ध्वनि निकलना। 2. अस्पष्ट ध्वनि में धीरे-धीरे बोलना। (**जैसे:** स्वत: से ही बोल रहे हों।)

बुदबुदाहट *स्त्री.* 1. 'बुद्-बुद्' की ध्वनि। 2. अस्पष्ट ध्वनि में बोलने का भाव।

बुद्धिमानी *स्त्री. (बुद्धिमान + ई)* सोच-समझकर काम करने की स्थिति।

बुद्धिजीवी *वि. (तत्.)* (बुद्धि+जीवी) जिसकी आजीविका बुद्धि के बल पर ही चलती हो। **जैसे:** लेखक, प्राध्यापक, वकील, चिकित्सक आदि।

बुद्धिमान *वि. (तत्.)* (बुद्धि+मान) सा.अर्थ (व्यक्ति) जो अपना काम सोच-समझकर करता हो। शा.अर्थ बुद्धि वाला। **पर्या.** अक्लमंद, समझदार।

बुद्धू *वि.(तद्*<बुद्धू) 1. जो किसी बात या अभिप्राय को ठीक से न समझता हो। जैसे-तुम इतनी सी भी बात नहीं समझे, बुद्धु हो। **पर्या.** मूर्ख, नासमझ।

बुनकर *वि./पुं. (हि.*<बुनना) व्यवसाय के रूप में कपड़ा बुनने वाला व्यक्ति। **पर्या.** जुलाहा (वीवर)

बुनकरी *स्त्री.(देश.)* बुनकर का पेशा और उसकी कला। *दे. बुनकर।*

बुनावट *स्त्री.(*<बुनना) 1. बुनाई का ढंग texture 2. बुनी गई वस्तु को देखकर या छूकर उसके बारे में मन में बनी अच्छी-बुरी की धारणा।

बुनियाद *स्त्री.(फ़ा.*<बुन्याद) किसी भवन का भूमि में दबा वह हिस्सा या आधार जो उस भवन का सारा भार झेलता है। **पर्या.** नींव। foundation **मुहा.** बुनियाद डालना/रखना=शुरू करना। **उदा.** सभा भवन की बुनियाद प्राचार्य/प्रधानाध्यापक ने डाली/रखी।

बुनियादी *वि.(फ़ा.)* 1. बुनियाद से संबंधित, मूलगत। 2. आरंभिक, शुरूआती। **जैसे**: बुनियादी शिक्षा basic education

बुरकना *स.क्रि.(अनु.)* किसी महीनचूर्ण को उंगलियों से उठाकर किसी चीज़ पर थोड़ा-थोड़ा फैलाना या बिखेरना। **उदा.** कटे खीरे पर चुटकी भर नमक बुरक दो।

बुरा-भला *पुं.(देश.)* 1. हानि-लाभ। **उदा.** अपना बुरा-भला खुद सोच लो। 2. गाली-गलौच। **उदा.** उन्होंने बहुत बुरा-भला कहा, पर मैं चुप रहा।

बुर्ज *स्त्री.(अर.)* किले की दीवार पर या मीनार इत्यादि का वह बैठने योग्य ऊँचा स्थान जिसके ऊपर मंडप के आकार की गोल छत भी होती है। किले की बुर्जों पर तोपें भी लगाई जाती थीं।

बुर्जुआ *वि./पुं. (फ़ा)* मूल अर्थ मध्यम आय वर्ग से संबंधित। (लोग, समाज) विशेष(मार्क्सवादी संदर्भ

में) पूँजीपति वर्ग। **पर्या.** शोषक। **वि.** सर्वहारा (वर्ग), शोषित (वर्ग)

बुलंद *वि.(फ़ा.* <बलंद) सामान्य से अधिक ऊँचा/ऊँची, उच्च। **जैसे:** फतहपुर सीकरी का बुलंद दरवाजा, बुलंद आवाज़।

बुलंदी *स्त्री.* ऊँचाई। **उदा.** आजकल उसके सितारे बुलंदी पर हैं।

बुलबुल *स्त्री.(फ़ा.* बुल्बुल) सुरीली आवाज़ में बोलने वाली एक प्रसिद्ध काली छोटी चिडिया। इसके सिर पर कलंगी जैसे नुकीले त्रिभुजाकार बाल होते हैं तथा पीछे पूंछ के नीचे की ओर लाल रंग का छोटा गोलाकार पंख होता है। ला.अर्थ मधुरगायिका।

बुलबुला *पुं.(तद्.*<बुदबुद) 1. तरल पदार्थ के कणों में गैस भर जाने से बना छोटा सा गुब्बारा जो जल्दी ही अपनी पूर्वावस्था में आ जाता है। **जैसे:** पानी का बुलबुला। **पर्या.** बुदबुदा। 2. लाक्ष. क्षणभंगुर वस्तु। **उदा.** मानक जीवन पानी का बुलबुला है। 'पानी केरा बुदबुदा अस मानुसु की जात'।

बुलवाना *स.क्रि. (बुलाना की प्रेर. क्रिया)* 1. किसी को बोलने के लिए प्रवृत्त करना। **उदा.** अध्यापक ने मुझसे संस्कृत में आत्मपरिचय के पाँच वाक्य बुलवाए। 2. किसी को अपने समीप या किसी कार्यक्रम में भाग लेने के लिए सादर बुलावा भेजना। **उदा.** संयोजक ने संगीत कार्यक्रम में एक प्रसिद्ध तबलावादक को बुलवाया है।

बुलावा *पुं.(*<बुलाना) 1. बुलाने की क्रिया या भाव। **पर्या.**-निमंत्रण। **प्रयो.** मुझे एक कार्यक्रम में जाने का बुलावा आया है। **उदा.** 'चलो बुलावा आया है, माता ने बुलाया है'।

बूँद *स्त्री.(तद्.*<बिंदु) पानी या अन्य किसी भी तरल पदार्थ का वह सबसे छोटा अंश जो गिरते समय हवा में गोलाकार हो जाता है। **पर्या.** बिंदु, कतरा। **जैसे:** पानी की बूँदें।

बूँदाबाँदी *स्त्री.(*<बूँद बूँद) बूँद-बूँद कर हुई हल्की वर्षा, हल्की बूँदों की बरसात। **उदा.** वर्षा तो समाप्त हो गई किंतु अभी बूँदाबांदी जारी है।

बूचड़खाना *पुं.(अं.)* (<बूचर(अं.)=कसाई+फा.) वह स्थान जहाँ कसाई गोश्त के लिए जानवरों को काटते हैं। **पर्या.** कसाईखाना। **उदा.** बूचड़खाने के आस-पास गीध, कौए आदि मंडराते रहते हैं।

बूझना *स.क्रि. (तद्.*<बुध) 1. समझना, जानना। **उदा.** उसने जानबूझ कर झूठ बोला। 2. पहेली का उत्तर निकालना। **जैसे.** बूझो तो जानें। **उदा.** तुम पहेली का उत्तर बूझो।

बूट *पुं.(अं.)* जूता जोड़ी का एक प्रकार जो दोनों पैरों और टखनों को ढककर चलते समय पैदल चलने वाले व्यक्ति को सुरक्षा और सुविधा प्रदान करता है।

बूटा *पुं.(तद्.*<विटप) चने का हरा पौधा या हरे ताजे चने के दाने।

बूता *पुं.(देश.)* काम करने का सामर्थ्य, शक्ति। **प्रयो.** यह काम उसके बूते से बाहर (का) है। **मुहा.** अपने बल-बूते पर=स्वयं की शक्ति के आधार पर।

बूता *पुं.(देश.)* किसी काम को करने की शक्ति, सामर्थ्य। **उदा.** (i) उसका बूता नहीं है कि इसे इंजीनियर बना सके। (ii) तुम्हारे बूते की बात नहीं है उसे समझाना।

बूम *पुं.(अं.)* 1. बाजार में किसी वस्तु की बिक्री का अत्यधिक प्रचलन, गूँज, धूम, तेजी। 2. गरम बाजारी, 3. शोर, धड़ाका। **उदा.** आजकल बाजार में कारों की बूम का दौर चल रहा है।

बृहत् *वि.(तत्.)* जो लंबाई, चौड़ाई, ऊँचाई, भार आदि में बहुत बड़ा हो, दीर्घाकार, विशाल।

बृहत्तर *वि.(तत्.)* तुलना करते समय, अधिक बड़ा, अपेक्षाकृत बड़ा। **जैसे**: बृहत्तर दिल्ली।

बृहदांत्र *स्त्री.(तत्)* बड़ी आँत। **प्राणि.** कशेरूकियों में छोटी आंत और गुदा के बीच स्थित आहार-नाल का भाग, जो छोटी आंत की अपेक्षा अधिक चौड़ा किंतु लंबाई में छोटा होता है। large intestive

बेअदब *वि.(फ़ा.+अर.)* अदब (सभ्यता, तमीज़) के बिना, जिसमें अदब न हो। **पर्या.** असभ्य, अशिष्ट। **प्रयो.** वह बेअदब इंसान है।

बेअदबी *(स्त्री.)* असभ्यता, अशिष्टता।

बेइंतिहा *वि. (फ़ा.)* जिसकी कोई सीमा न हो, बिना सीमा के, सीमा रहित। **पर्या.** असीम। **जैसे**: वह मुझे बेइंतिहा प्यार करता है।

बेइज्जत *वि.(फ़ा.+अर.)* 1. जिसकी इज्जत खराब कर दी गई हो, अपमानित, तिरस्कृत। **प्रयो.**

किसी को तुच्छ स्वार्थ के लिए बेइज्जत करना शिष्टता नहीं है। 2. जिसकी प्रतिष्ठा ही न हो, प्रतिष्ठाहीन, निंदित।

बेइज्जती *(स्त्री.)* (फ़ा.+अर.) बेइज़्ज़त होने या किए जाने का भाव। अपमान, तिरस्कार। 2. निंदा, रूसवाई।

बेईमान *वि.(फा.+अर.)* 1. जो ईमान या धर्म के अनुरूप आचरण न करे। **पर्या.** अधर्मी। 2. छल-कपट भरा आचरण करने वाला। (डिसऑनेस्ट) **विलोम**-ईमानदार।

बेईमानी *स्त्री.(फ़ा.+अर.)* ईमान या धर्म के अनुसार आचरण न करने की स्थिति का सूचक भाव।

बेकद्र *वि.(फ़ा.+अर.)* 1. बिना कद्र (आदर) के जिसकी कद्र न हो; बेइज़्ज़त, अपमानित। **प्रयो.** समाज में बेकद्र इंसान की दयनीय स्थिति होती है।

बेकद्री *(स्त्री.)* कद्र न होने की स्थिति या भाव, बेइज़्ज़ती; अपमान। **प्रयो.** उनके घर में बहू की बेकद्री देखकर मुझे दु:ख होता है।

बेकरार *(वि.) (फ़ा.)* जिसके मन में शांति या चैन न हो; व्याकुल, बेचैन, उद्‌विग्न। **प्रयो.** वह तुमसे मिलने को बेकरार है।

बेकरारी *(स्त्री.)* व्याकुलता, बेचैनी, उद्‌विग्नता।

बेकरी *स्त्री.(अं.)* 1. वह स्थान जहाँ बेकिंग (आंच से पकाना) का कार्य होता है। 2. जहाँ डबलरोटी, बिस्कुट आदि बनाने का कारख़ाना और बेचने की दूकान हो।

बेकसूर *वि.(फ़ा.)* जिसने कोई गलती या अपराध न किया हो, निर्दोष, निरपराध। **जैसे**: उस बेकसूर को इस विवाद में क्यों फंसाया गया?

बेकाबू *वि.(फ़ा.)* जो काबू में न आ सके, जिस पर किसी का वश न हो। **पर्या.** अनियंत्रित। **प्रयो.** कुंभ के अवसर पर पहले स्नान करने के लिए भीड़ बेकाबू होने लगी।

बेकार *वि.(फ़ा.)* 1. जो कोई काम न करता हो। **पर्या.** निकम्मा, निठल्ला। (यूजलैस) 2. निरर्थक, व्यर्थ। **उदा.** वह इधर-उधर बेकार ही भटकता रहता है। 3. जिसके पास जीविकोपार्जन का कोई साधन न हो। **उदा.** वह आजकल बेकार है। unemployed

बेकारी *स्त्री.(फ़ा.)* 1. जीवन की वह अवस्था जिसमें जीविकानिर्वाह के लिए मनुष्य के पास कोई काम-धंधा न हो, बेरोजगारी। **जैसे:** शिक्षा का विकास होने पर आज बेकारी की समस्या अधिक है। unemployment 2. बेकार होने का भाव, फजूल, व्यर्थ। 3. कोई काम न करने का भाव।

बेखटक/बेखटके *क्रि.वि.(फ़ा. प्रत्यय+हि.*<खटकना) (बे+खटका) बिना-खटक, निस्संकोच, बिना भय के। **प्रयो.** शिकायत करने के लिए वह बेखटके प्राचार्य के कमरे में घुस गया।

बेखबर *वि. (फ़ा. बे+अर.)* जिसे कोई खबर न हो। **पर्या.** अनजान, अनभिज्ञ। **उदा.** कल रात में भूकंप आया पर हम बेखबर सोते रहे। 2. बेपरवाह, वह अपनी जिम्मेदारी से बेखबर है।

बेख़ौफ *वि.(फ़ा.)* बिना डर के, निडर, निडरतापूर्वक। **उदा.** वह बेखौफ जंगल में घूमता रहा।

बेग़म *वि.(फ़ा.+अर.)* चिंता रहित, जिसे कोई चिंता न हो। **पर्या.** निश्चित।

बेगम *स्त्री.(तुर्की)* 1. किसी बादशाह की पत्नी। **पर्या.**-रानी। **जैसे**: शाहजहां की बेगम ताजमहल। 2. कुलीन या संपन्न घर की महिला। (आदरसूचक संबोधन) **जैसे**: बेगम साहिबा! पधारिए।

बेगाना *वि.(फ़ा.)* 1. जो अपना नहीं है, गैर, पराया; अपरिचित। **प्रयो.** तुम तो अपने (स्वजन) हो, फिर बेगाने जैसा व्यवहार क्यों कर रहे हो? **विलो.** अपना, स्वजन।

बेगार *स्त्री.(फ़ा.)* 1. किसी से जबरदस्ती और बिना मज़दूरी दिए करवाया गया काम। 2. वह काम जो दिल लगाकर न किया जाए। **मुहा.** बेगार टालना-कार्य न करना। कहावत-बैठे से बेगार भली-कुछ न कुछ करते ही रहना चाहिए। कुछ भी न करने से तो अच्छा है थोड़ा-बहुत काम, चाहे वह मुफ्त ही हो या नाममात्र हो, करते रहना चाहिए।

बेगारी *स्त्री.(फ़ा.)* बेगार में काम करने का सूचक भाव। *दे.* बेगार।

बेगुनाह *वि.(फ़ा.)* जिसने कोई गुनाह यानी अपराध न किया हो। **पर्या.** बेकसूर, निरपराध।

बेगुनाही *स्त्री.(फ़ा.)* **प्रयो.** आखिरकार उसने अपनी बेगुनाही साबित कर ही दी।

बेघर *वि.(फ़ा+तद्.<*गृह) जिसके पास रहने के लिए घर न हो; घर से (अपने देश से) निकल गया या निकाल दिया गया। **प्रयो.** 1. आगजनी में कई लोग बेघर हो गए। 2. भारत विभाजन के परिणामस्वरूप कई लोग बेघर हो गए।

बेचारा *वि.(फ़ा.)* (i) जिसके लिए कोई अन्य चारा यानी रास्ता न बचा हो; (ii) जिसका वश न चले। **पर्या.** असहाय, निस्सहाय।

बेचैन *वि. (फ़ा.)* जिसे चैन या मन की शांति प्राप्त न हो। **पर्या.** व्याकुल।

बेचैनी *स्त्री. (फ़ा.)* मानसिक अशांति की स्थिति, व्याकुलता।

बेज़ान *वि. (फ़ा.)* 1. जिसमें प्राण न हो, प्राणहीन, चेतनाशून्य, मृत, मुर्दा। **प्रयो**. वह घायल होकर बेजान-सा पड़ा था। 2. दुर्बल, कमज़ोर। **प्रयो.** वह काम तुम्हारे जैसे बेजान आदमी के बस का नहीं है। **विलो.** जानदार।

बेजुबान *वि. (फ़ा.)* बिना जिह्वा के यानी जो बोल न सकता हो। **पर्या.** गूंगा, मूक। ला.अर्थ जो अपनी आलोचना/निंदा सुनकर भी चुप रहने वाला हो, निरीह। **उदा.** वह तो बेचारा बेजुबान है।

बेजोड़ *वि. (फ़ा.+जोड़<*युग्म) जिसकी जोड़ (बराबरी का) कोई न हो। **पर्या.** अतुल्य, अद्वितीय। **उदा.** उसने बेजोड़ काम कर दिखाया। (यानी जिसे अब तक कोई और न कर सका।)

बेझिझक *क्रि.वि.(देश.)* बिना झिझक के। **पर्या.** निस्संकोच, बेहिचक।

बेटी *स्त्री.(<*बटु=बालक) पति-पत्नी से जन्मी (या गोद ली हुई भी) मादा संतान। **पर्या.** पुत्री। पुं. बेटा।

बेड़ी *स्त्री.(तद्.<*वलय) लोहे के कड़े या जंजीर जिससे अपराधियों के पैरों को जकड़ दिया जाता है ताकि वे भाग न सकें। **तु.** हथकड़ी। ला.अर्थ किसी प्रकार का बंधन। **उदा.** क्या करूँ! परिवार की बेड़ी जो पड़ी है।

बेडौल *वि.(फ़ा.+देश.)* जिसके अंगों की बनावट या आकार-प्रकार में परस्पर संतुलन न हो। **पर्या.** कुरूप। **उदा.** उसका शरीर तो बहुत ही बेडौल है। **विलो.** सुडौल।

बेढंगा *वि.(फ़ा.बे+हिं.ढंग)* शा.अर्थ जिसका ढंग ठीक न हो, खराब ढंग का। सा.अर्थ 1. जो व्यवस्थित न लगे, अव्यवस्थित, जो ठीक क्रम से न रखा गया हो या सजाया न गया हो, क्रमरहित। 2. कुरूप, भद्दा। **उदा.** कुछ लोगों के काम बेढंगे, बातें बेंढंगी तथा चाल बेढंगी होती है।

बेढब *वि.* बिना ढब (ढंग) का। **पर्या.** बेढंगा, भद्दा, अव्यवस्थित। **उदा.** तुम्हारा काम पूरी तरह से बेढब है।

बेत *स्त्री. (तद्<*वेत्र) जलीय (पानी में उगने वाला) घास जाति का और बांस की तरह का एक पादप (पौधा) जिसमें लचीलेपन का अद्भुत गुण होता है। इसका तना सूखने पर कठोर हो जाता है, पर गीला होते ही पुन: लचीला हो जाता है। **टि.** बेंत की बारीक पट्टियों से कुर्सी आदि बुनी जाती है।

बेतकल्लुफ *वि.(फ़ा.+अर.)* 1. तकल्लुफ यानी दिखावा न करने वाला, किसी बनावट को यानी सीधा साधा, सहज व्यवहार करने वाला। 2. अपने मन की बात साफ-साफ कहने वाला। **उदा.** मैंने बेतकल्लुफ होकर उच्च अधिकारी से बातें की। *क्रि.वि.* बिना तकल्लुफ, बेधडक़, निस्संकोच।

बेतकल्लुफी *(स्त्री.)* तकल्लुफ न करने का भाव।

बेतरतीब *वि.(फ़ा.+अर.)* 1. जो बिना किसी तरतीब अर्थात क्रम के हो, क्रमरहित; उल्टा-सीधा, अस्त-व्यस्त, अव्यवस्थित। **प्रयो.** तुमने अलमारी में बेतरतीब ढंग से पुस्तकें रखी हुई हैं।

बेतहाशा *अव्यय(फ़ा.+अर.)* 1. बहुत तेज़ी से। **उदा.** महंगाई बेतहाशा बढ़ती जा रही है। 2. घबराकर और बिना सोचे-समझे, अंधाधुंध। **जैसे**: देख लिए जाने पर चोर बेतहाशा भाग खड़ा हुआ।

बेताब *वि.(फ़ा.)* किसी काम को करने के लिए बेचैन। मन को वश में रखने की शक्ति। **पर्या.** बेचैन, व्यग्र, अधीर, बेसब्र, व्याकुल।

बेताबी *स्त्री.(फ़ा.)* काम को करने के लिए बेचैनी की स्थिति। **पर्या.** बेचैनी, अधीरता, बेसब्री, व्याकुलता।

बेतुका *वि.(फ़ा.+तुक-देश.)* जिसमें कोई तुक या सामंजस्य न हो। **पर्या.** बेमेल। **उदा.** तुम जब भी बोलते हो बेतुका ही बोलते हो।

बेदख़ल *वि.(फ़ा.+अर.)* जिसका कब्ज़ा हटा दिया गया हो।

बेदख़ली *स्त्री. (फ़ा.)* (बे+दखल<दख्ल=पहुँच, अधिकार, कब्जा+ई प्रत्यय) बेदखल करने की क्रिया, संपत्ति से किसी का अधिकार हटाने का कार्य।

बेनकाब *वि. (फ़ा.)* 1. जो बिना नकाब के हो; जिसका चेहरा ढका न हो। **मुहा.** बेनकाब करना=रहस्या या भेद को प्रकट करना, असली रूप दिखाना। **प्रयो.** पुलिस ने बैंक में हेराफेरी करने वाले को बेनकाब कर दिया।

बेपता *वि. (फा.+देश.)* 1. जिसका कोई पता न हो। **प्रयो.** उनके बेपता होने से उन्हें सूचना देना संभव नहीं है। 2. जिस व्यक्ति, वस्तु, स्थान आदि का कोई परिचय उपलब्ध न हो जिससे उसकी खोज हो सके या उस तक पहुँचा जा सके। **प्रयो.** सूनामी आने पर कितने ही लोग बेपता हो गए।

बेपरदा/बेपर्दा *वि.(फा.*<बिना) 1. परदे के बना, 2. आवरण से रहित, बिना ढका; नंगा, जो स्पष्ट दिखे। **पर्या.** अनावृत।

बेपरवाह *वि.(फ़ा.*<बेपर्वा) जो किसी बात की परवाह न करता हो; लापरवाह; निश्चिंत, बेफिक्र।

बेपर्दगी *(स्त्री.)* पर्दे के बिना होने की स्थिति; नंगापन। **दे.** बेपरदा/'बेपर्दा'।

बेफिक्र *वि.(फ़ा.+अर. फ़िक्र)* जिसे कोई फिक्र न हो, निश्चिंत। **उदा.** गृहस्थ जीवन की सारी जिम्मेदारियों से निपटने के बाद वह बेफिक्र है। **पर्या.** बेपरवाह।

बेफिक्री *(स्त्री.)* निश्चिंतता।

बेबस *वि.(फ़ा.तद्)* (बे+बस<वश) 1. जिसके वश की बात न हो, **पर्या.** विवश, लाचार, मज़बूर। **उदा.** कल ही लौट जाना था पर दुर्घटना हो गई और मुझे यहाँ रूकना पड़ा, क्या करूँ, बेबस था?

बेबसी *स्त्री.* मजबूरी क्या करूँ? बेबसी थी इसलिए यहाँ रूकना पड़ा।

बेमन *वि.(फ़ा.+तत्)* जिसका मन किसी काम में स्थिर न हो; काम करते हुए जो कुछ और सोच रहा हो, अनमना, एकाग्रता के बिना। *(क्रि.वि.)* **जैसे**: वह बेमन बैठा हुआ है।

बेमिसाल *वि.(फ़ा.+अरबी)* जिसका कोई अन्य **उदा.** न हो; अनुपम, बेजोड़। **प्रयो.** तुलसी का 'रामचरित मानस' बेमिसाल काव्यग्रंथ है।

बेमुरव्वत *वि. [फ़ा.+अर.]* 1. जो मुरव्वत न करे, शील-संकोच से रहित, लिहाज न करने वाला। **प्रयो.** वह बड़ा बेमुरव्वत है, किसी का कार्य करने वाला नहीं। **विलो.** मुरव्वत।

बेमौके *क्रि.वि. (फ़ा.*<बेमौका) उचित अवसर देखे बिना; अनुपयुक्त, यानी गलत समय पर। **उदा.** तुम वहाँ बेमौके ही अपनी बात कहने लगे।

बेमौसम *वि. (फा.बेमौसिम)* जिसका मौसम न हो पर घटित हो जाए; बिना मौसम के। **उदा.** बेमौसम वर्षा ने सबको चकित कर दिया।

बेरहम *वि.(फा.)* जो दयारहित हो, निर्दय, निष्ठुर। **प्रयो.** वह बड़ा बेरहम इंसान है, किसी पर दया नहीं करता।

बेरहमी *(स्त्री.)* निर्दयता। **प्रयो.** उसने उसे बेरहमी से पीटा।

बेलबूटे *पुं.(बहुवचन)* (हि. बेल+बूटा) शा.अर्थ लताएँ और पेड़-पौधे। सा.अर्थ कपड़े पर काढ़े गए और दीवारों पर बनाए गए लताओं और पौधों आदि के चित्र। **प्रयो.** कई महिलाएँ कपड़ों, वस्त्रों पर बेलबूटे काढ़ने के व्यवसाय में लगी हुई हैं।

बेला *स्त्री.(दे.*<तद्<विचकिल) 1. चमेली की तरह का सफेद और सुगंधित फूलों वाला एक छोटा पौधा और उसके फूल दोनों ही। **जैसे**: बेला फूले आधा रात। **पर्या.** मोगरा, मोतिया।

बेवक्त *क्रि.वि.(फ़ा.+अर.)* 1. बिना उचित समय के। **पर्या.** असमय, कुसमय। 2. बिना उचित अवसर के। **पर्या.** अनवसर, बेमौके। 3. बिना ऋतु के। **पर्या.** बेमौसम।

बेवफ़ा *वि.(फ़ा.+अर.फ़ा)* जो वफादार न हो, निष्ठा रहित, जो एहसान मानने वाला न हो, कृतघ्न। **उदा.** वह तो बहुत बेवफ़ा निकला।

बेवफ़ाई *(स्त्री.)* कृतघ्नता, दगाबाज़ी। **प्रयो.** सेवक ने अपने स्वामी के साथ बेवफ़ाई की।

बेशक (*फ़ा.) क्रि.वि.* 1. बिना किसी शक, संदेह या शंका के। **पर्या.** निस्संदेह, जरूर, अवश्य। **उदा.** आप बेशक न आएँ, आपका काम हो जाएगा।

बेशकीमती *वि.(फा.+अर.)* जिसका मूल्य बहुत हो। **पर्या.** बहुमूल्य, मूल्यवान। **उदा.** अपना बेशकीमती सामान घर में न छोड़ें, लॉकर में रखें।

बेशरमी *स्त्री.(अर.+फा.)* शरम न होने का भाव, निर्लज्जता, बेहयाई। **प्रयो.** कल उसने सब के सामने जो बेशरमी दिखाई वह अत्यंत निदंनीय है।

बेशुमार *वि. (फ़ा.+अर.)* जिसकी गिनती न की जा सके, असंख्य, अगणित। **उदा.** जनसभा में बेशुमार लोग उपस्थित थे।

बेसब्र *वि.* जिसे धैर्य न हो। **पर्या.** अधीर। दे. बेसब्री।

बेसब्री *स्त्री. (फ़ा.+अर.)* (बे+सब्र+ई) संतोष अथवा धैर्य न होने या रखने का भाव। **पर्या. 1.** असंतोष, 2. अधीरता, उतावलापन, आतुरता। **प्रयो.** मैं बड़ी बेसब्री से आपका इंतजार करता रहा। पर आप नहीं आए, इसका खेद है।

बेसिन *पुं. (अं.)* 1. भूपृष्ठ पर बना गर्तीय क्षेत्र जिसमें पानी इकट्ठा हो सके, **जैसे**: महासागरों का क्षेत्र, नदियों का क्षेत्र, झील-तालाब आदि के गड्ढे। 2. कृषि-पानी इकट्ठा करने हेतु कूएँ की जगत पर बनाया गया कुंड, जहाँ से पानी नालियों (धोरों) में बहकर खेतों में पहुँचता है। 3. घरों या भोजनालयों में हाथ धोने इत्यादि के लिए लगा गहराई वाला पात्र। **पर्या.** wash basin

बेसुध *वि.(फ़ा.+तद्)* जिसे सुध या होश न हो। **पर्या.** बेहोश, अचेतन, मूर्छित। **उदा.** चलती गाड़ी से गिरकर वह बेसुध हो गया।

बेसुर/बेसुरा *वि.(फा.)* जो सही स्वर में गाया गया या उच्चरित न हो। बेढंगा गाने वाला। **उदा.** उसने बेसुरा गाना गया; उसकी आवाज़ बहुत बेसुरी है।

बेस्वाद *फ़ा.+तत्* किसी खाद्य पदार्थ के मुख में रखने पर खाने वाले को यह लगे कि उसके तैयार होने में कुछ कमी रह गई या कि वह वस्तु उसकी रूचि के अनुकूल नहीं बनी है। **पर्या.** निस्वाद, फीका। **प्रयो.** विद्यार्थियों की अक्सर यह शिकायत रहती है कि छात्रावास में बना भोजन प्राय: बेस्वाद होता है।

बेहतर *वि.(फा.)* तुलनात्मक दृष्टि से अधिक अच्छा, अपेक्षाकृत अच्छा, बढक़र। **प्रयो.** 1. यह कमीज़ पहले देखी कमीज़ से बेहतर है। 2. बेहतर होगा कि बारिश होने से पहले आप घर पहुँच जाएं।

बेहतरी *स्त्री.* भलाई, अच्छाई। **प्रयो.** भारी बारिश होने वाली है बेहतरी इसी में है कि आप जल्दी घर पहुँच जाएँ।

बेहतरीन *वि.(फ़ा.)* सबसे अच्छा, श्रेष्ठ, उत्तम। **उदा.** इतनी कमीज़ देखीं, पर मुझे तो यह कमीज़ बेहतरीन लगी।

बेहद *वि.(फ़ा.)* जिसकी हद (सीमा) न हो। **पर्या.** असीम, अपार, बहुत अधिक। **प्रयो.** आपसे दो साल बाद मिलने की मुझे बेहद खुशी है।

बेहया *वि.(फ़ा.+अर.)* जिसे सामाजिक रूप से अकर्म/कुकर्म करने में कोई लज्जा महसूस न हो, निर्लज्ज, बेशर्म। **प्रयो**. वह इतना बेहया है कि अपने से बड़ों से भी असभ्य तरीके से बात करता है।

बेहयाई *स्त्री.(फ़ा.+अर.)* निर्लज्जता, बेशर्मी।

बेहाल *वि.(फा.+अर.)* 1. जिसकी हालत (दशा) अच्छी न हो। 2. बेचैन, परेशान, व्याकुल। **उदा.** जून की गरमी में पैदल चलकर आने से मैं बेहाल हो गया।

बेहाली *(स्त्री.)* हालत या दशा अच्छी न होने की स्थिति। **प्रयो.** मेरी बेहाली के बारे में न पूछें तो अच्छा होगा।

बेहिसाब *वि. (फ़ा.+अर.)* 1. जिसका हिसाब-किताब ठीक से न रखा गया हो। 2. बहुत अधिक, इतना जिसका हिसाब न लगाया जा सके। **पर्या.** बेहद, अगणित। **प्रयो.** आजकल मध्यवर्ग के लोग भी शादी-विवाह में बेहिसाब खर्च करने लगे हैं।

बेहूदगी *स्त्री.(फ़ा.)* अशिष्टता, असभ्यता। **प्रयो.** उसने सबके सामने मुझसे बेहूदगी से बात की।

बेहूदा *वि.(फ़ा.)* जो शिष्टता या सभ्यता के मानक पर खरी न उतरे, अशिष्ट, असभ्य। **जैसे:** बेहूदा मज़ाक। **प्रयो.** आपकी बेहूदा हरकतें मुझे पसंद नहीं हैं।

बेहोश *वि.(फ़ा.)* जिसे होश या चेतना न हो। **पर्या.** अचेतन, मूर्छित, बेसुध। **प्रयो.** दोपहर की गरमी में उसको पीने को पानी नहीं मिला, जिससे वह बेहोश हो गया।

बेहोशी *स्त्री.(फ़ा.)* शरीर की चेतना-हीन स्थिति, मूर्छित होने की स्थिति। **पर्या.** मूर्छा। **प्रयो.** बेहोशी की हालत में भी वह बड़बड़ाता रहा।

बैंक *पुं.(अं.)* 1. वह सार्वजनिक उपक्रम या प्रतिष्ठान जहाँ जमा राशियाँ स्वीकार करने और मांग पर धनराशि प्रदान करने तथा व्यापार-

शिक्षा, भवन निर्माण आदि हेतु ऋण प्रदान करने की समुचित व्यवस्था होती है।, अधिकोष। 2. रक्त या नेत्र आदि शारीरिक अंगों के संग्रह का स्थान, जहाँ ये अंग दान आदि द्वारा जमा किए जा सकते हैं। तथा जहाँ से चिकित्सीय आवश्यकताओं के लिए इन्हें प्राप्त किया जा सकता है। **जैसे:** ब्लकबैंक, नेत्र बैंक आदि। 3. नदी का किनारा।

बैकुंठ *पुं.* *(तत्.)* 1. भगवान विष्णु का दिव्य धाम, विष्णु लोक। 2. स्वर्ग, कुंठा (निराशा) से रहित स्थान। **जैसे:** पौराणिक मान्यता के अनुसार पुण्यात्मा लोग मृत्यु के पश्चात् बैकुण्ठधाम को जाते हैं।

बैकेलाइट *पुं.(अं.)* **रसा.** रसायनशास्त्री एल.एल.बैकलैंड के नाम पर रखा गया एक कठोर प्लास्टिक जैसा पदार्थ जिसका उपयोग विद्युत-उपकरणों में किया जाता है।

बैटरी *स्त्री.(अं.)* 1. वह पात्र या डिब्बी जिसमें प्रयुक्त पदार्थों की रासायनिक ऊर्जा को विद्युत प्रवाह में परिवर्तित किया जाता है तथा जो रेडियो, विद्युत उपकरणों व कार आदि के चलाने में उपयोगी होती है। 2. बिजली की बत्ती या दो तीन सेलों से जलने वाली टार्च, जिसे प्रकाश के लिए हाथ में पकड़कर इधर-उधर ले जा सकते हैं। battery

बैठक *स्त्री.(देश.)* 1. वह स्थान जहाँ गांव के लोग विचार-विमर्श के लिए बैठते हों। **पर्या.** चौपाल। 2. घर में बैठकर विश्राम करने का प्रमुख स्थान अथवा मेहमानों से मिलने के लिए बिना कमरा। drawing-room 3. किसी विषय पर चर्चा के लिए लोगां के मिलकर बैठने की क्रिया। meeting 4. व्यायाम का एक प्रकार-दंडबैठक।

बैरंग *वि.(*<वियरिंग का उच्चरित रूप) ऐसी चिट्ठी अथवा पारसल आदि जिसका महसूल भेजने वाले ने न चुकाया हो और जिसे डाकघर में विरूपति (बदरंग) कर दिया जाता है ताकि वह यह याद रहे कि पाने वाले से दंड सहित महसूल वसूल करना है। **मुहा.** बैरंग लौटना-बिना काम बने लौटना, विफल होकर लौटना।

बैर *पुं.(तद्*<बैर) शत्रुता का भाव, दुश्मनी, **प्रयो.** पुराने राजा-महाराजाओं में आपसी बैर होने की वजह से वे अक्सर लड़ते रहते थे।

बैरक *स्त्री.(अं.)* सैनिक छावनियों में एक लंबाई में बने हुए अस्थायी कमरों का समूह, जिनमें फौज के सिपाही रहते हैं। **उदा.** केंद्रीय सचिवालय के आस-पास द्वितीय महायुद्ध के काल की कई बैर कें हैं जिनमें आज सरकार के दफ़्तर चल रहे हैं।

बैरा *पुं.(अं.*>बेअरर) भोजनालय या होटल का कर्मचारी जो ग्राहकों को भोजन परोस कर देता है या पहुँचाता है।

बैरी/वैरी *वि./पुं.* *(तद्*<वैरिन) दुश्मनी रखने वाला। **पर्या.** शत्रु, दुश्मन।

बैसाखी *स्त्री.(तद्*<द्विशाखी) 1. दो शाखाओं वाला डंडा जिसके सहारे से लंगड़े चलते हैं। 2. *स्त्री.(तद्.*<वैशाखी) वैशाख के महीने में पड़ने वाली सूर्य की संक्रांति। मेष संक्रांति, उक्त अवसर पर मनाया जाने वाला त्यौहार, वर्ष के प्रारंभ का त्योहार।

बोझ *पुं.* *(देश.)* 1. भारी होने का भाव। **पर्या.** भार, वजन। 2. कठिन और अनिच्छा से मिलने वाला कार्य। **प्रयो.** आपने उसे यह काम सौंप तो दिया है पर वह इसे अपने लिए बोझ ही समझता है। **मुहा.** बोझ उठाना-उत्तरदायित्व लेना। बोझ उतरना-मुक्त होना।

बोझा *पुं.* *(देश.)* ढोया जाने वाला या लदा हुआ भारी सामान।

बोध *पुं.* *(तत्.)* प्रत्यक्ष ज्ञान, अनुभूति, ध्यान, जानकारी। **प्रयो.** घर पहुँचने के बाद मुझे बोध हुआ कि मैं अपना छाता तो स्कूल में ही भूल आया हूँ।

बोधकथा *स्त्री.* *(तत्.)* (बोध-कथा) 1. वह कथा जो बालकों या शिक्षार्थियों को ज्ञान-विज्ञान से संबंधित विविध बातों या विषयों का सहज रीति से बोध कराने के लिए लिखी जाती है तथा जिसकी प्रस्तुति सरल, मनोरंजक एवं सुबोधगम्य होती है। विशेष रूप से अच्छी पत्रिकाओं में ऐसी कथाएँ होती है। 2. ऐसी कथा जो आचार व्यवहार आदि का व्यावहारिक संदेश देती है।

बोधगम्य *वि.(तत्.)* सरलता से समझ में आ जाने वाला। **प्रयो.** उसने अंग्रेजी में जो व्याख्यान दिया वह हमारे लिए बोधगम्य था।

बोधगम्यता *स्त्री.(तत्.)* सरलता से समझ में आ जाने की स्थिति का सूचक भाव।

बोधन *पुं.(तत्.)* जो लिखा हुआ हो उसे पढ़ने के साथ-साथ ही उसके अर्थ को भी समझ लेने की योग्यता। comprehension

बोधप्रश्न *पुं.(तत्.)* जो लिखा हुआ हो उसे पढ़ने के बाद अध्यापक द्वारा पूछा गया प्रश्न जो यह बताए कि विद्यार्थी ने उसे कितना समझा है।

बोना *स.क्रि.(तद् वपन)* 1. नई उपज प्राप्त करने के लिए मृदा (धरती की ऊपरी मिट्टी) में बीज डालना ताकि अनूकूल मौसम में खाद-पानी की सहायता से वह पल्लवित होकर वांछित फल दे सके। **प्रयो.** किसान ने खेत में गेहूँ बोया है। 2. ऐसा काम करना जिसका फल कालांतर में प्रकट हो। **प्रयो.** जैसा बोओगे वैसा काटोगे। 3. ला.अर्थ किसी काम का आरंभ करना।

बोरा *पुं.(देश.)* सन या टाट का बड़ा थैला जिसमें लगभग एक क्विंटल अनाज, दालें, चीनी इत्यादि भरे जाते हैं।

बोरियत *स्त्री.(अं.*<बोर) उकताहट, मन न लगने यानी उकता जाने की स्थिति। **प्रयो.** तुमने जो काम मुझे सौंपा वह बोरियत भरा है।

बोरी 1. छोटे आकार वाला बोरा। 2. 'बोरा' का ही पर्यायावाची शब्द जिसका प्रयोग स्त्रीलिंग में होता है।

बौखलाना *अ.क्रि.(देश.)* 1. अधिक गुस्से में आकर आत्मनियंत्रण अथवा मानसिक संतुलन खो देना और परिणामस्वरूप अभद्र व्यवहार करने लगना। **प्रयो.** जब उसके साथी ने उस पर चोरी का झूठा इल्जाम लगाया तो वह इतना बौखला उठा कि उसने उससे हाथापाई शुरू कर दी।

बौखलाहट *(स्त्री.)* बौखलाने की अवस्था या भाव। **उदा.** उसने बौखलाहट में उसे कई अपशब्द कहे।

ब्याज *पुं.(तत्.)* उधार दिए गए धन पर (मूलधन के) लौटाये जाने तक मिलने वाला नियत दर पर अतिरिक्त धन। **पर्या.** सूद। **जैसे:** उसने दो प्रतिशत ब्याज की दर से ऋण लिया। अथवा बैंक में जमा धन राशि पर मिलने वाला अतिरिक्त धन। **प्रयो.** बैंक में एक से दो साल तक की सावधि जमा योजना पर 9% वार्षिक ब्याज मिलता है।

ब्याहता *वि. [स्त्री.) तद्*<विवाहिता] जिस (स्त्री) का विवाह हो गया हो; विवाहित।

ब्योरेवार *वि.(तद्.)* हर बात का उल्लेख करते हुए, विस्तारपूर्वक। **उदा.** कृपया खर्च का ब्यौरेवार विवरण प्रस्तुत करें।

ब्रह्म *पुं. (तत्.)* 1. ईश्वर, परमात्मा। **जैसे:** ब्रह्म सत्य है, जगत् मिथ्या है। 2. वेद-ब्रह्मवेत्ता 3. ओम्=ओम् इस एकाक्षर नाम का ब्रह्म है। 4. ब्राह्मण।

ब्रह्मांड *पुं. (तत्.)* (ब्रह्म+अंड) **खगो.** संपूर्ण, सुव्यवस्थित, खगोल (अंडाकार दिक्) Cosmos, Universe

ब्रैल पद्धति *स्त्री. (अं.+तत्.)* शिक्षा दृष्टिहीनों के लिए अक्षरों को लिखने या मुद्रण की एक प्रणाली जिसमें अक्षरों को तरह-तरह के उभरे हुए बिंदुओं से प्रकट किया जाता है। दृष्टिहीन व्यक्ति अपनी अंगुलियों से स्पर्श कर इन्हें पढ़ते हैं। इस पद्धति का नामक रण इसके खोजकर्ता लूईस ब्रैल फ्रांसिसी शिक्षक (1809-52) पर हुआ है।

भ

भंग *पुं. (तत्.)* 1. टूटने, मुड़ने या विभक्त होने की क्रिया या भाव। **जैसे:** धनुषभंग 2. विघ्न, बाधा, रूकावट। **जैसे:** रंग में भंग होना। 3. ध्वंस, विनाश, समाप्ति **जैसे:** सभा भंग कर दी गई। *स्त्री. (तत्.)* 4. एक पौधा जिसकी पत्तियाँ नशीली होती हैं। भाँग, विजया।

भंगिमा *स्त्री. (तत्.)* 1. शरीर के अंगों (विशेषकर चेहरे और आँखों) की मुद्रा जो मन के किसी भाव को प्रकट करती हो। 2. टेढ़ापन या कुटिलता।

भंडाफोड़ *वि./पुं.* शा.अर्थ भाँडा (पात्र) फूटना (फोड़ना) लाक्ष. गुप्त रहस्यों या बुरी चालों को सब के सामने प्रकट करने वाला कार्य (कृत्य) (क्रि. भंडाफोड़ करना)=रहस्य खोलना।

भंडार *पुं. (तत्.[भांडार[भांडागार)* 1. कोश/कोष, खजाना **उदा.** पुस्तकालय ज्ञान का भंडार है। 2.

अनाज रखने का कोठा। 3. सामान रखने का कमरा।

भंडार-गृह *पुं. (तत्.)* 1. रसद या सामान रखने का कमरा। **दे.-** भंडार

भंडारण *पुं. (तत्.)* किसी वस्तु को संग्रहीत और सुरक्षित रखने की विधि। **जैसे:** खाद्य पदार्थों, फसल-उत्पाद आदि को नमी, कीट, चूहों एवं सूक्ष्म-जीवों से बचाने के लिए जूट के बोरों, धातु के बड़े-बड़े पात्रों या भंडारगृहों/गोदामों में रखना।

भंडारस्थल *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ भंडार का स्थान **दे.** 'भंडार-गृह'।

भंडारी पुं. *(तद्.[भांडागारिन्)* 1. भंडार की व्यवस्था एवं देखरेख करने वाला कर्मचारी/अधिकारी। store keeper

भँवर *(भ्रमर) पुं. (तद्.)* 1. भौंरा, (स्त्री. भौंरी) 2. पानी के बहाव में वह स्थान जहाँ पानी तेज गति से चक्कर खाता हुआ दिखाई पड़ता है। 3. राजस्थान में उस लडक़े के लिए संबोधन जिसके पितामह जीवित हों 'भँवर'। (पौत्र) **मुहा.** भँवर जाल में फँसना = संसारचक्र में फँसना।

भ *स्त्री. (देश.)* किसी वस्तु की अधिकता, बहुतायत, प्रचुरता, विपुलता। शा.अर्थ (पूरी तरह से) भर जाने की स्थिति से भी अधिक मात्रा में होने की स्थिति। **उदा.** उसकी अलमारी में साडियों की भरमार है।

भक्त *वि. (तत्.)* मूल.अर्थ 1. कई भागों में बँटा हुआ। 2. ईश्वर की भक्ति करने वाला। **जैसे:** भक्त प्रह्लाद 3. (विकसित अर्थ) किसी के प्रति/पूर्ण श्रद्धा और निष्ठा रखने वाला व्यक्ति। **जैसे:** देशभक्त**,** गाँधीभक्त।

भक्तवत्सल *वि. (तत्.)* अपने भक्तों पर कृपा करने या पूर्ण स्नेह रखने वाला

भक्तिभाव पुं. *(तत्.)* पूज्य, देवी-देवता या ईश्वर के प्रति प्रकट होने वाला विशेष प्रकार का प्रेम भाव। **प्रयो.** मीराबाई के पदों में कृष्ण के प्रति अनुपम भक्तिभाव प्रकट होता है।

भक्षक *वि. (तत्.)* 1. खाने वाला 2. ला.अर्थ अपने स्वार्थ के लिए किसी का पूर्णरूप से अहित करने वाला। **प्रयो.** जब रक्षक ही भक्षक बन जाए तो उसके बारे में क्या कहा जाए।

भक्षण *पुं. (तत्.)* 1. दाँतों से तोड़कर/काटकर खाने की क्रिया या भाव। 2. आहार, भोजन **जैसे:** तिल-भक्षण, फल-भक्षण।

भक्षण *पुं. (तत्.)* खाने की क्रिया या भाव। **जैसे:** मांस-भक्षण

भगदड़ *स्त्री. (देश.)* संकट की स्थिति में लोगों का घबराकर सोचे-विचारे बिना इधर-उधर भागना-दौड़ना। **प्रयो.** आग लगते ही पंडाल में भगदड़ मच गई।

भगवा *वि. (देश.)* गेरूए रंग का **प्रयो.** साधु-संयासी भगवा वस्त्र धारण करते हैं।

भगिनी *स्त्री. (तत्.)* बहन, बहिन।

भगीरथ *पुं. (तत्.)* 1. अयोध्या के वे प्रसिद्ध सूर्यवंशी राजा जिन्होंने उग्र तपस्या करके 'स्वर्ग' से गंगा नदी को पृथ्वी पर अवतरित किया। **मुहा.** भगीरथ प्रयत्न-ऐसा कार्य जो लगभग असंभव या अत्यंत कठिन (दुष्कर) प्रतीत हो पर जिसे पूरा कर लिया जाए।

भगोड़ा *पुं. (देश.)* 1. जो किसी डर के कारण अपना कर्तव्य या नौकरी छोडक़र दूसरी जगह चला गया हो। कायर, डरपोक 2. जो कानून या न्यायिक दंड पाने के भय से कहीं भाग गया हो। फरार। **प्रयो:** चोर के अदालत में हाजिर न होने से न्यायाधीश ने उसे भगोड़ा घोषित कर दिया।

भगोना *पुं. (देश.)* धातु का बना चौड़े मुँह वाला और आकार में अपेक्षाकृत बड़ा और ऊँचा पात्र जो पानी या अन्य खाद्य पदार्थों, **जैसे:** दूध, चावल, आलू इत्यादि उबालने के काम आता है।

भगोने-डोंगे *पुं./बहु. (देश.)* रसोईघर में काम आने वाले वे बरतन जिनमें साग-सब्जी पकाई और परोसी जाती है।

भग्न *वि. (तत्.)* टूटा हुआ, खंडित **जैसे:** पुरातात्विक भग्नावशेष (भग्न-अवशेष=टूटे-फूटे बचे हुए टुकड़े)

भग्नावशेष *पुं.बहु. (तत्.)* भवनों, मूर्तियों आदि के शेष बचे और खुदाई से मिले वे ऐतिहासिक

अध्ययन की दृष्टि से महत्वपूर्ण टुकड़े या खंडित अंश जो उस स्थान के इतिहास का लेखा-जोखा तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

भजन *पुं. (तत्.)* भगवान् या इष्टदेव का बार-बार नाम लेना। 2. ऐसा पद्य जिसमें किसी इष्ट देव का गुणगान किया गया हो और उनसे कुछ माँगा गया हो। 3. संगीत के साथ उच्च स्वर से उक्त पद्यों का गायन। **तुल.** कीर्तन-उच्च स्वर में आराध्य की कीर्ति का वर्णन।

भट *पुं. (तत्.)* 1. वेतन भोगी सैनिक 2. योद्धा 3. मल्ल, पहलवान

भटकना *अ.क्रि.* 1. उद्देश्य स्पष्ट हो फिर भी यदि सही मार्ग की जानकारी न हो तो उसकी प्राप्ति के लिए इधर-उधर मारे-मारे फिरने की असफल क्रिया। **प्रयो.** मेले में बच्चे के खो जाने पर उसे ढूँढने के लिए उसके माता-पिता दिनभर भटकते रहे।

भटकाना 1. (*प्रेर.क्रि. भटकना) (तद्.(भ्रष्ट-अटन)* 1. किसी को भटकने में प्रवृत्त करना 2. भ्रम में डालना **जैसे:** उसने गणित के एक प्रश्न में मुझे भटका दिया। 3. गुमराह करना, जानबूझकर गलत रास्ता बतलाना।

भटकाव *पुं. (तत्.)* 1. मार्ग भूल जाने पर इधर-उधर मार्ग खोजने की स्थिति। 2. जीवन के लक्ष्य से दूर रहते हुए जीवन बिताने का भाव। 3. अशांत मन से एकाग्र न होते हुए भ्रमित होना 4. सत्य के मार्ग से च्युत होने का भाव। **उदा.** हम मन के भटकाव से अपने लक्ष्य तक नहीं पहुँच सकते। एकाग्रता आवश्यक है।

भट्ठी *स्त्री.* 1. ईंट, मिट्टी, लोहे से निर्मित वह बड़ा चूल्हा जिस पर कारीगर अनेक प्रकार की वस्तुएँ पकाते हैं। **प्रयो:** हलबाई भट्ठी पर मिठाईयाँ बनाता है। 2. देशी शराब बनाने का स्थान। furnace

भट्ठा *पुं. (तद्.)* 1. मिट्टी के बर्तन, ईंट आदि पकाने के लिए की गई विशेष संरचना, आँवा, पजावा। 2. ईंटें बनाने व पकाने का स्थान।

भडक़ *स्त्री. (अनु.)* भडक़ने का भाव; ऊपरी चमक-दमक **दे.** 'भडक़ना'।

भड़कना *अ.क्रि. (देश./अनु.)* 1. नया ईंधन डालने पर एकाएक तेज़ी से जलना **उदा.** आग भडक़ना 2. क्रोध का उग्र रूप धारण कर लेना, क्रोध भड़कना **प्रयो.** गाली सुनकर उसका क्रोध और अधिक भड़क गया। किसान के हाथ में लाठी देखकर बैल भड़क उठा।

भड़काना *स.क्रि.* आग अथवा क्रोध के भडक़ने में निमित्त बनना। **उदा.** उग्रवादी तत्व अपने अनुयायियों को सरकार के विरूद्ध भडक़ाते रहते हैं। धृतराष्ट्र "यह देवकीनंदन तो अर्जुन को युद्ध करने के लिए भडका रहा है।"

भड़कीला *वि. (देश.)* 1. भड़काने वाला, उत्तेजित करने वाला 2. चमकदार, चमक-दमक वाला **पर्या.** भड़कदार, भड़काऊ **उदा.** आजकल लडक़े-लडक़ियों में भड़कीले कपड़े पहनने का चलन है।

भड़भूँजा *पुं.* [भाड़+भूँजना] *(देश.)* भाड़ में अन्न भूँजने का व्यवसाय करने वाला व्यक्ति या जाति भूरजी। **जैसे:** यह भड़भूँजा सत्तू के लिए चने अच्छी तरह भूँजता है। **टि.** भाड़ में रेत गरम कर उसकी सहायता से अनाज भूनने का कार्य कुछ जातियाँ परंपरागत रूप से करती हैं। इन्हें भडभूँजा कहते हैं।

भद्द *स्त्री. (देश.)* बेइज्जत या अपमानित होने का भाव, बेइज्जती, बदनामी। **मुहा.** भद्द पिटना- बेइज्जती होना। सबके सामने झूठ की पोल खुलते ही उसकी बहुत भद्द पिटी।

भद्दा *वि. (तद्.)* 1. जो देखने में अच्छा न लगे। कुरूप, असुंदर **जैसे:** उसका चेहरा झुलसने पर बहुत भद्दा हो गया है। 2. बुरा, अश्लील **प्रयो:** सबके सामने वह भद्दे मज़ाक करता था।

भद्दापन *वि. (देश.)* अशिष्टता, बिना रंग का।

भद्र *वि. (तत्.)* अन्यों से सभ्यता, शिष्टता का व्यवहार करने वाला। **उदा.** भद्र पुरूष।

भद्रता *स्त्री. (तत्.)* शिष्टतापूर्ण व्यवहार की स्थिति।

भनक *स्त्री. [तद्.[भणन]* मंद ध्वनि अर्थात् गुपचुप बातचीत सुनकर किसी कृत्य के बारे में अनुमानित जानकारी, आभास। 1. उड़ती हुई खबर जिसकी प्रामाणिकता निश्चित न हो, आभास होना, भनक लगना, भनक पड़ना। 2. धीमा शब्द, 2. भन+क (अनुकरणात्मक शब्द [भन भन=भौंरे की आवाज़) जिस प्रकार लगातार भन-भन ध्वनि सुनकर आसपास भ्रमर कीट होने

का आभास हो जाता है उसी प्रकार उड़ती खबरें सुनकर किसी कृत्य की भनक पड़ जाती है।

भनभनाहट *स्त्री. (तद्.)* भनभनाने की क्रिया, भाव या ध्वनि

भभकना *अ.क्रि. (देश.)* 1. ज्वाला का (आग का) अचानक तेज़ हो जाना। **पर्या.** भड़कना **प्रयो.** दीपक भभक कर बुझ गया। ला.अर्थ अकस्मात् अत्यधिक क्रोध करना। **प्रयो.** गाली सुनकर वह भभक उठा।

भभकी *स्त्री.*(*अनु.*) केवल डराने के लिए ऐसी आवाज़ निकालना कि लगे **जैसे:** बंदर या गीदड़ काटना चाहता है और सुनने वाला कुछ क्षण के लिए डर जाए। **मुहा.** बंदर भभकी, गीदड़ भभकी। झूठी धमकी।

भयंकर *वि. (तत्.)* 1. जिसे देखकर या सुनकर डर लगे, डरावना, भयानक। **उदा.** भयंकर आकृति, भयंकर सर्दी, भयंकर घटना।

भय *पुं. (तत्.)* विपत्ति या अनिष्ट की आशंका से मन में उठने वाला वह भाव जिससे प्राणी चिंतित और व्याकुल हो जाता है। **पर्या.** डर, खौफ **मुहा. भय** खाना=डरना

भयभीत *वि. (तत्.)* भीत=डरा हुआ, भय के कारण डरा हुआ। भय ग्रस्त

भयमुक्त *वि. (तत्.)* जिसका भय समाप्त हो चुका हो; जो अब भयभीत न हो यानी पहले था पर अब नहीं है। **उदा.** मैं भयमुक्त जीवन जीना चाहता हूँ। **तु.** निर्भय/बिना भय के, भयरहित।

भयाक्रांत *वि. (तत्.)* जो किसी कारण से बहुत डरा हुआ हो, भयभीत।

भयातुर *वि. (तत्.)* डर की वजह से व्याकुल, भय से घबराया हुआ। **पर्या.** भयाकुल, भयभीत, भयग्रस्त, भयाक्रांत, भयान्वित, भयार्त

भयानक *वि. (तत्.)* जो देखते ही देखने वाले के मन में भय पैदा कर दे। **पर्या.** डरावना, भयंकर, भयावना। **पुं.** नवरसों में से एक रस 'भयानक' जिसका स्थायी भाव 'भय' होता है।

भयावह *वि. (तत्.)* भय उत्पन्न करने वाला, डरावना, भयावना **जैसे:** भयावह दृश्य, भयावह स्थिति।

भरण-पोषण *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ (पेट) भरना और (शरीर का) पोषण करना। 1. व्यक्ति (और उसके परिवार) के जीवन-निर्वाह की व्यवस्था 2. जो अपना पालन-पोषण स्वयं न कर सके उसके लिए अभिभावक द्वारा की गई व्यवस्था। maintenance

भरता *पुं. (देश.)* 1. बैंगन, आलू आदि को आग पर भूनकर बनाया जाने वाला एक विशेष प्रकार का सालन, सब्जी। **जैसे:** बैंगन का भरता बहुत स्वादिष्ट होता है। 2. (ला.) वह जो दबने आदि से बिलकुल बेकार हो गया हो। **प्रयो:** लड्डू वजन में दबकर भरता हो गए।

भरती/भर्ती *स्त्री. (देश.[भरण)* 1. भरने का भाव, खाली स्थान को भरना। **जैसे:** भरती का माल। 2. सेना, पुलिस आदि की नौकरी पर लिया जाना। recruitment 3. पढ़ाई के लिए विद्यालय में प्रवेश admittion

भरनी *स्त्री. (देश.)* 1. भरने या भरे जाने की क्रिया या भाव। **जैसे:** खेतों में पानी की भरनी, बीज की भरनी। 2. कर्मफल का भोग। **उदा.** जैसी करनी वैसी भरनी। 3. जुलाहे का वह उपकरण जिसके द्वारा सूत एक ओर से दूसरी ओर ले जाया जाता है और इस प्रकार कपड़ा बुनता जाता है। 4. जमीन समतल करने का कृषि यंत्र।

भरपाई *स्त्री. (देश.)* 1. ऋण या देनदारी की राशि को पूरा-पूरा चुकता कर देने का भाव, देयता का भुगतान। 2. इस प्रकार के चुकारे के प्रमाणस्वरूप दी जाने वाली रसीद। **मुहा.** भरपाना-संतुष्ट हो जाना।

भरपूर *वि. (तद्.)* 1. पूरी तरह से भरा हुआ। 2. जितना चाहिए उतना या उससे अधिक। **उदा.** भरपूर (मात्रा में) भोजन उपलब्ध है। *क्रि.वि.* पूरी तरह से। **प्रयो.** पुत्र ने पिता की वृद्धावस्था में भरपूर सेवा की।

भरमार *स्त्री. (देश.)* शा.अर्थ. पूरी तरह से भर जाने की स्थिति से भी अधिक मात्रा में होने की स्थिति किसी वस्तु की अधिकता, बहुतायत, प्रचुरता, विपुलता। **उदा.** उसकी अलमारी में साड़ियों की भरमार है।

भरवाँ *वि. (देश.)* मसाले आदि भरकर बना हुआ। **जैसे:** भरवाँ मिर्च, भरवाँ टमाटर, भरवाँ करैला।

भरसक *अव्य. (तद्.)* शा.अर्थ 1. भर सके (यानी हो सके) जितना। 2. पूरी शक्ति अर्थात् जितना

शक्ति हो उतना; यथाशक्ति, सामर्थ्य के अनुसार। **जैसे:** भरसक प्रयास।

भराई *स्त्री. (देश.)* 1. किसी गहरे या खाली स्थान में मिट्टी आदि भरने या भराने की क्रिया का भाव। **प्रयो.** प्लॉट में मिट्टी की भराई। रजाई की भराई। 2. खेतों में गेहूँ। धान आदि में पानी लगाने की प्रक्रिया। **प्रयो.** धान के खेत में पानी की भराई हो रही है। 3. भरने की मजदूरी।

भरोसा *पुं. (तद्.)* 1. किसी कार्य के हो जाने की उम्मीद। (1) विश्वास, (2) अवलंब, (3) आश्रय, सहारा। 2. किसी व्यक्ति के बारे में यह विश्वास कि वह सौंपे गए कार्य को पूरा करने में समर्थ है और उसे अवश्य ही पूरा कर देगा।

भरोसेमंद *वि. (देश.फ़ा.)* जिस पर भरोसा किया जा सके। भरोसे के लायक, विश्वसनीय।

भर्ता *पुं. (तत्.)* 1. भरण-पोषण करने वाला। 2. स्वामी, मालिक, 3. पति।

भर्त्सना *स्त्री. (तत्.)* दूसरे व्यक्ति की गलती अथवा अनुचित व्यवहार से क्रुद्ध और दुःखी होकर पहले व्यक्ति द्वारा उसे कटु शब्दों में कोसने, डाँटने-डपटने, लज्जित करने या धमकी देने का भाव या क्रिया। **पर्या.** निंदा, लानत।

भर्राना *अ.क्रि. (अनु.)* 1. 'भर्र-भर्र' की आवाज होना। 2. किसी कारणवश स्वर का अस्वाभिक रूप से भारी हो जाना।

भला *वि. (तद्. भल्ल प्रा. भद्र)* अच्छा; शिष्ट, सदाचारी, निर्दोष; **प्रयो.** शर्माजी भले आदमी हैं। **विलो.** बुरा। *पुं.* शुभ कल्याण, अच्छाई, भलाई। **जैसे:** भगवान सबका भला करे। **विलो.** बुरा। **अव्य.** अस्तु, खैर। **प्रयो:** भला, मैं वहाँ क्यों जाऊँ?

भलाई *[भला+ई] स्त्री. (तद्.)* 1. भला, (अच्छा, शुभ) होने का भाव, नेकी। 2. लाभ; उपकार। **विलो.** बुराई।

भला-बुरा *पुं. (देश.)* 1. अनुकूलता-प्रतिकूलता, लाभ-हानि, हित-अहित। **प्रयो.** भला-बुरा विचारकर ही कोई काम करें। 2. खरा-खोटा। **जैसे:** उसने उसे बहु: भला-बुरा कहा।

भलीभाँति *अव्य. (देश.)* अच्छे प्रकार से, जिस प्रकार होना चाहिए ठीक उसी प्रकार, नियमानुसार, पूरी तरह से।

भले *पुं. (तद्.)* 1. भला का बहुवचन। **अव्य.** 1. खूब, अच्छा। **प्रयो.** गुप्ता जी भले आ गए, महफिल जम गई। 2. चाहे, **प्रयो.** भले ही भगवान् आ जाएँ, मैं नहीं मानूँगा।

भवजाल *[भव+जाल] पुं. (तत्.)* 1. संसार का मोह-माया रूपी जाल जिसमें व्यक्ति सारा जीवन फँसा रहता है। 2. संसार रूपी प्रपंच, संसार का झंझट। **प्रयो:** हम भवजाल में पड़कर परमार्थ चिंतन नहीं कर पाते।

भवदीय *सर्व. (तत्.)* 'आपका' (प्राय: पत्र के अंत में लेखक के हस्ताक्षर से पहले लिखा जाने वाला आदर व आत्मीयता सूचक शब्द) *स्त्री.* भवदीया। ('युवर्स फेथफुल' के लिए स्थिर किया गया मानक पर्याय)

भवन *पुं. (तत्.)* 1. ईंट-चूना/सीमेंट, पत्थर आदि से बनी विस्तृत निर्मिति और विशाल (बनावट) जिसमें लोग रहते या कार्य करते हैं। इमारत (बिल्डिंग) राजभवन; कृषिभवन, विज्ञान भवन।

भवशूल/भक्शूल *पुं. (तत्.)* 1. संसार में होने वाले विविध प्रकार के कष्ट। 2. संसार में बार-बार होने वाली जन्म एवं मरण की पीड़ा। **उदा.** "बिनु हरि भजन भक्शूल काटे नहि कटें"।

भवसागर *पुं. (तत्.)* संसार रूपी समुद्र। **प्रयो.** सत्कर्मों एवं हरि स्मरण से लोग भवसागर को पार कर जाते हैं।

भवानी *स्त्री. (तत्.)* भव अर्थात् शिव की भार्या, पत्नी, पार्वती, दुर्गा।

भवितव्यता *स्त्री. (तत्.)* 1. जो घटना भविष्य में अवश्य ही होने वाली हो। होनी। **प्रयो.** तुलसी जस भवितव्यता तैसी मिलइ सहाय। 2. किस्मत।

भविष्य *पुं. (तत्.)* आने वाला काय (समय) *तु.* भू - बीता हुआ काल। वर्तमान - वह काल जो चल रहा है।

भविष्यकथन *पुं. (तत्.)* व्यक्ति के भावी जीवन में क्या होने वाला है-इसके बारे में (ज्योतिषी द्वारा) पहले ही कह देना या कही हुई बात। **पर्या.** भविष्यवाणी।

भविष्यनिधि *स्त्री. (तत्.)* वेतनभोगी कर्मचारियों के वेतन में से प्रतिमास काटी जाने वाली वह राशि जो सेवा काल पूरा हो जाने पर उसे ब्याज

सहित लौटाई जाती है ताकि उसका भविष्य सुरक्षित रह सके। provident fund

भविष्यवाणी *स्त्री. (तत्.)* भविष्य में घटित होने वाली घटना की पहले से ही सूचना देने वाला कथन। **पर्या.** भविष्य कथन।

भव्य *वि. (तत्.)* 1. देखने में विशाल और सुंदर-भव्य भवन। 2. शानदार-भव्य समारोह।

भव्यता *स्त्री. (तत्.)* 1. भव्य होने की अवस्था/भाव। 2. सौंदर्यपूर्ण दिव्यता, शान, गरिमा। 3. उत्कृष्टता, विशालता; चकाचौंध। **प्रयो.** उस विवाहोत्सव की भव्यता दर्शनीय थी।

भस्म *स्त्री. (तत्.)* 1. किसी वस्तु के पूरी तरह जल जाने के बाद बची हुई राख। 2. वैद्यक में धातुओं की विशेष क्रियाओं द्वारा फूँककर तैयार की गई राख जो विभिन्न दवाओं में काम आती है। **जैसे:** स्वर्ण भस्म, मुक्ता, भस्म, पारद भस्म। (*स.क्रि.* भस्म होना-पूरी तरह जलकर राख होना।)

भांड *पुं. (तत्.)* मृत्तिका (मिट्टी), धातु आदि से बना पात्र या बरतन जिसमें जल या किसी अन्य मात्रात्मक वस्तु का संग्रह किया जाता है।

भांडा *पुं. (तद्.<भाण्ड)* बर्तन, आज भांडे माँजने वाली नहीं आई। **मुहा.** भांडा फूटना = किसी का राज/रहस्य खुलना। **प्रयो.** अपने आपको पुलिस-अधिकारी कहने वाले का आज भांडा फूट गया।

भाँग *स्त्री.* **दे.** 'भंग'।

भाँजा/भानजा *पुं. (तद्.<भागिनेय)* संबंध की दृष्टि से बहन का पुत्र, भागिनेय। **जैसे:** अभिमन्यु श्रीकृष्ण का भांजा था। स्त्री. भाँजी/आनज़ी बहिन की बेटी। भागिनेयी।

भाँड़-भाँड़ *पुं.* (*तद्.*) वेश-भूषा बदल-बदलकर हास्यपूर्ण अभिनय करके जीविका चलाने वाला व्यक्ति। बहुरूपिया। ला.अर्थ वह व्यक्ति जिसके पेट में कोई बात न पचती हो और जो बात सुन लेने पर उस बात को सबके सामने कहता-फिरता हो।

भाँति *स्त्री.* तरह, प्रकार; रीति, ढंग। **उदा.** भाँति-भाँति की वस्तुएँ।

भाँपना *स.क्रि. (देश.)* 1. किसी के भावों, विचारों को उसकी शारीरिक चेष्टाओं, कथनों, क्रियाओं आदि से बिना बताए समझ लेना। ताड़ना। 2. परिस्थितियों आदि के आधार पर होने वाली घटनाओं का अनुमान कर लेना। **प्रयो.** उस व्यक्ति की हरकतों को देखकर मैंने भाँप लिया था कि वह चोर है।

भाईचारा *पुं. (तद्.)* दो व्यक्तियों या परिवारों के बीच (भाइयों/बंधु-बांधवों जैसा) आत्मीयता पूर्ण संबंध; सगा भाई न हो फिर भी भाई के समान ही प्रकट अपनत्व। **प्रयो.** लोगों के बीच जितना भाई-चारा बढ़ेगा उतना ही सामाजिक सामरस्य स्थापित होगा।

भाई-भतीजावाद *पुं. (देश.)* राजनैतिक, सामाजिक या सरकारी स्तर पर व्याप्त वह अनैतिक प्रवृत्ति जिसमें लोग गुण, योग्यता आदि न देखते हुए अपने परिचितों या पारिवारिक/संबंधी जनों को अवसर देते हैं। **प्रयो.** आजकल देश में सर्वत्र प्रत्येक स्तर पर भाई-भतीजावाद का ही बोलबाला है।

भाई-भतीजावाद *पुं. (देश.)* सत्तासीन लोगों द्वारा अपने नाते-रिश्तेदारों और मित्रों-परिचितों को उनकी अयोग्यता के बावजूद ऊँचें पदों पर स्थापित करने, ठेके या रियासतें देने की अनुचित प्रथा। nepotism

भाग *पुं. (तत्.)* किसी संपूर्ण वस्तु का अलग किया गया या किया जा सकने वाला खंड **उदा.** पुस्तक का पहला भाग, दूसरा भाग। *स.क्रि.* भाग लेना 1. भागीदारी वाला-हिस्सा लेना **जैसे:** नृत्य में भाग लेना 2. गणित की वह क्रिया जिसमें कोई राशि या संख्या कई टुकड़ों में बाँटी जाती है। division (तद्.) 3. भाग्य, किस्मत-उसके भाग में क्या लिखा है, कौन जाने? भाग खुलना, भाग चमकना, भाग जागना, भाग फूटना

भाग-दौड़ *स्त्री. (देश.)* किसी काम के लिए किया जाने वाला वह प्रयत्न जो एक ही जगह बैठकर संभव न हो और जिसे पूरा करते समय इधर-उधर काफी भागना-दौड़ना पड़े। **पर्या.** दौड़-धूप।

भागना *अ.क्रि. [तद्.[व्रजन)]* 1. संकट या भय से बचने के लिए दौड़कर निकल जाना या पलायन करना। 2. कर्तव्यपालन से विमुख होकर चले जाना या कर्तव्य से बचना। **उदा.** काम से भागो मत। **मुहा.** सिर पर पैर रखकर भागना-बहुत तेज़ी से भागना।

भागफल *पुं. (तत्.)* किसी एक राशि या संख्या को एक दूसरी राशि या संख्या से भाग देने पर प्राप्त होने वाला फल। **प्रयो.** 21 को 7 से भाग देने पर भागफल 3 प्राप्त होता है। quotient

भागीदार *पुं./वि. (देश.)* भाग/हिस्से का अधिकारी, हिस्सेदार। partner **प्रयो.** इस ज़मीन के चार भागीदार हैं।

भागीदारी *स्त्री. (तत्.+फा.)* 1. किसी कार्य में किया जाने वाला सहयोग। 2. किसी व्यवसाय में हिस्सेदारी। parternership

भाग्य *पुं. (तत्.)* वह दैवी विधान जो पूर्वकर्मों के आधार पर भविष्य में प्राप्त होने वाले फलों का निर्णय करता है। **पर्या.** किस्मत, तकदीर, नसीब। **मुहा.** भाग्य चमकना-अच्छा होना। भाग्य फूटना-खराब होना।

भाजक *वि. (तत्.)* शा.अर्थ बाँटने वाल, विभाग करने वाला। वह संख्या या राशि जिससे किसी अन्य (भाज्य) संख्या या राशि को भाग दिया जाता है। divsion

भाज्य *पुं. (तत्.)* जिसके हिस्से किए जा सकें। **गणि.** वह संख्या जिसको (भाजक संख्या से) भाग देना है। dividend

भाट *पुं. (तद्.)* वंशवृत्त लिखने वाली एक जाति विशेष या इस जाति का व्यक्ति।

भाटक *(तत्.)* भाड़ा, किराया।

भाटा *पुं. (देश.)* समुद्र में आये ज्वार का क्रमश: कम होते जाना, समुद्र में लहरों का उतार। **टि.** सूर्य और चंद्र के गुरुत्वाकर्षण के कारण समुद्र का पानी चढ़ता और उतरता रहता है। पानी के चढ़ने को 'ज्वार' और उतरने को 'भाटा' कहते हैं।

भाड़ *पुं. (तद्. भ्राष्ट्र)* सा.अ. विशेष प्रकार की भट्ठी जिसके नीचे आग जलाई जाती है और ऊपर मिट्टी या लोहे के कड़ाह में पड़ी गरम बालू पर कोई अन्न डालकर भूँजा जाता है। ला.अ. वह स्थान जहाँ हर चीज़ जलकर खाक हो जाती है। **प्रयो.** भाड़ में जाय यह नौकरी। **मुहा.** भाड़ झोंकना=बेकार समय नष्ट करना, झख मारना।

भाड़ा *पुं. [तद्.]भाटक)]* किसी दूसरे के स्थान पर रहने, व्यापार करने या आवागमन आदि के लिए दिया जाने वाला किराया। **प्रयो.** रेल का भाड़ा, ट्रक का भाड़ा, मकान का भाड़ा आदि। **मुहा.** भाड़े का टट्टू-जो धन लेकर कोई भी उचित या अनुचित कार्य करने को तैयार हो जाए।

भान *पुं. (तत्.)* 1. किसी घटना या बात का पहले से ही होने वाला आभास। प्रतीति। **जैसे:** मुझे तो आपके मित्र के गिरफ्तार होने का भान पहले ही हो गया था। 2. प्रकाश, दीप्ति

भानजी *स्त्री.*। भाँजा/ भानजा दे; भांजी/भानजी।

भाना *स.क्रि. (तद्.<भावन)* 1. मन को अच्छा लगना; पसंद आना। **प्रयो.** मुझे मीठा भाता है/कम भाता है। 2. शोभा देना। **उदा.** उसके शरीर पर हरे रंग की साड़ी भाती है।

भानु *पुं. (तत्.)* **दे.** 'सूर्य'।

भाप *स्त्री. (तद्.<वाष्प)* 1. पानी के उबलने पर उसमें से निकलने वाले सूक्ष्म कणों का गैसीय पुंज जो (धुएँ-सा) उड़ता दिखाई देता है और जिसका उपयोग शक्ति के रूप में भी हो सकता है। **जैसे:** भापचालित इंजन steam 2. भौ. घन या द्रव पदार्थों की वह अवस्था जो अत्यधिक ताप से अन्य रासायनिक क्रियाओं के फलस्वरूप गैसीय कणों के रूप में दिखलाई देती है। वाष्प vapour

भार *पुं. (तत्.)* 1. (भौ.) किसी पदार्थ का वह गुरूत्व जिसे तौल के द्‌वारा जाना जाए। **पर्या.** तौल, वजन weight 2. बोझ, जो एक स्थान से दूसरे स्थान तक किसी साधन से ले जाया जाए। load, burden 3. किसी कार्य को करने का दायित्व charge 4. बंधक या क़र्ज में रहने का भाव। encumbrance **मुहा.** भार उठाना-उत्तरदायित्व लेना। भार उतरना-उत्तरदायित्व से मुक्त होना।

भारत *पुं. (तत्.)* 1. हमारा प्रसिद्‌ध देश जिसका नाम राजा भरत के नाम पर पड़ा है। हिमालय से हिंद महासागर तक फैला भू प्रदेश। 2. 'महाभारत' ग्रंथ का पहले का नाम। ऐसी मान्यता है कि पहले 'जय', बाद में 'भारत' और अंत में 'महाभारत' नाम से यह ग्रंथ प्रसिद्‌ध हुआ। 3. (संबोधन के रूप में) हे भरतवंशोद्‌भव।

भारत रत्न *पुं. (तत्.)* 1. भारत का रत्न 2. कोई विशेष गुण या योग्यता वाला भारत का व्यक्ति।

3. भारत सरकार द्वारा दी जाने वाली एक सर्वोच्च नागरिक उपाधि जो अत्यंत उच्च कोटि के विद्वानों, रचनाकारों, समाजसेवियों आदि को सम्मान के रूप में प्रदान की जाती है। **जैसे:** **'भारत-रत्न'** से विभूषित लता मंगेशकर, जवाहर लाल नेहरू आदि।

भारतीय *वि. (तत्.)* 1. भारत देश से संबंधित 2. भारत का निवासी, भारत का नागरिक

भारवाही *पुं. (तत्.)* बोझ या भार ढोने वाला। **जैसे:** टट्टू, कुली (भारिक)

भारिक *पुं. (तत्.)* रेलवे स्टेशन, बड़े बस अड्डे आदि पर नियत शुल्क लेकर यात्रियों (मुसाफिरों) का सामान उठाकर यथास्थान रखने वाला कर्मचारी। **पर्या.** कुली।

भारी *वि. [तद्.[भारिक)]* 1. जिसमें अधिक बोझ हो, वज़नी, बोझिल, विशाल **जैसे:** भारी भीड़ 2. जो साधने या सहने के योग्य न हो, असह्य, दूभर, कठिन, विकट। **जैसे:** भारी विपत्ति, भारी कठिनाई, भारी भूल 3. जो कानों को मधुर न लगे, कर्णकटु। **जैसे:** भारी आवाज़

भारीपन *पुं. (देश.)* 1. वजनी (भार युक्त, बोझयुक्त) होने की स्थिति/भाव। 2. गुरुत्व, वजन।

भाल *पुं. (तत्.)* भौहों के ऊपर वाला सिर का वह सामने का भाग जहाँ बाल नहीं उगते। **पर्या.** ललाट। forehead

भाला *पुं. [तद्.[भल्ल]* एक पारंपरिक शस्त्र जो एक लंबे डंडे के आगे तीरनुमा लोहखंड जोड़कर /गढ़कर बनाया जाता है। **पर्या.** बरछा, शूल।

भाव *पुं. (तत्.)* 1. किसी वस्तु के अस्तित्व में आने, रहने या होने की अवस्था। existance 2. मन में उत्पन्न होने वाला कोई विचार, ख्याल idea 3. मतलब, तात्पर्य या अभिप्राय। **उदा.** कहने का भाव यह है कि (इन्टेन्ट) 4. किसी वस्तु का गुणात्मक तत्व जो उसकी मूल प्रकृति या विशेषता का सूचक होता है 5. किसी चीज़ की बिक्री आदि का प्रचलित या निश्चित किया गया मूल्य। rate

भावना *स्त्री. (तत्.)* किसी के प्रति मन में उठने वाले (अच्छे या बुरे) विचार या संवेग। **जैसे:** राष्ट्रीय भावना। सद्‌भावना= अच्छे विचार; दुर्भावना-बुरे विचार

भावनात्मक *वि. (तत्.)* भावना संबंधी, भावनाओं से युक्त। **दे.** 'भावना'

भावपूर्ण *वि. (तत्.)* भावनाओं (स्नेह, प्रेम, श्रद्‌धा आदि) से भरा हुआ।

भावभीना *वि./पुं.* भावना से युक्त या समाया/भरा हुआ अथवा भीगा हुआ, भावना प्रधान। **जैसे:** भावभीना स्वागत।

भावभीनी *वि.स्त्री.* भावना से युक्त या भरी हुई विदाई।

भावमुद्रा *स्त्री. (तत्.)* शरीर या किसी अंग की वह हरकत जिससे कोई विशेष भावना अभिव्यक्त होती हो।

भावविभोर *वि. (तत्.+तद्.)* जो भावों (भावनाओं) में लीन/मस्त हो गया हो। भावविह्वल, भावाभिभूत **प्रयो.** उनका अत्यधिक प्रेम देख मैं भावविभोर हो गया

भावशबलता *स्त्री. (तत्.)* (भाव-शबलता (मिश्रण) (काव्य.) 1. अभिव्यक्ति का वह प्रकार जिसमें एक ही पद या शब्द या पंक्ति से एक के बाद एक विविध भाव प्रकट होते हों। 2. अनेक प्रकार के भावों का मिश्रण

भावानुवाद *पुं. (तत्.)* स्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा में ऐसा अनुवाद जो शब्दश: न होकर भावों को ध्यान में रखते हुए किया गया हो।

भावार्थ *पुं. (तत्.)* ऐसा विवरण या विवेचन जिससे मूल कथन का आशय (भाव) स्पष्ट हो जाए।

भावी *स्त्री. (तत्.)* भाग्य, तकदीर **वि.** भविष्य में आने, होने या घटने वाली। **जैसे:** भावी पीढ़ियाँ।

भावुक *वि. (तत्.)* भावना प्रधान (व्यक्ति) जो बहुत जल्दी भावों, विशेषत: कोमल-करूण भावों के अधीन हो जाता हो।

भावुकता *स्त्री. (तत्.)* 1. भावुक होने की क्रिया, अवस्था या भाव, भावना में बह जाने का भाव, सहृदयता 2. वह मानसिक अवस्था जिसमें मनुष्य की वृत्ति कोमलभावों से युक्त होती है। **जैसे:** **दे.** 'भावुक' उसने भावुकतावश उस दुखिया को बहुत-सा धन दे दिया।

भाषा विज्ञान *पुं. (तत्.)* वह विद्या शाखा या शास्त्र जिसमें सैद्धांतिक स्तर पर भाषा की

संरचना, प्रकार्य, अर्थ आदि का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है। linguistics **पर्या.** भाषाशास्त्र।

भाषाविद् *पुं. (तत्.)* 1. विविध भाषाओं का जानकार यानी एकाधिक भाषाओं पर स्वभाष-भाषी जैसा अधिकार रखने वाला व्यक्ति। 2. भाषाविज्ञान के सिद्धांतों का ज्ञाता। linguist **तु.** दुभाषिया

भाषावैज्ञानिक *पुं. (तत्.)* भाषाओं तथा उनके बोले जाने वाले शब्दों की उत्पत्ति, विकास, संरचना आदि से संबंधित तथ्यात्मक ज्ञान का अधिकृत विद्वान। **उदा.** भाषा के रहस्यों को भाषावैज्ञानिक ही बता सकते हैं। lingcuisitc

भिक्षा *स्त्री. (तत्.)* 1. माँगने पर मिलने वाली चीज़। **पर्या.** भीख 2. गरीबों, साधु-संतों, संन्यासियों आदि को जीवन-यापन/भरण-पोषण के लिए गृहस्थों की ओर से दिया जाने वाला/मिलने वाला अन्न-धन आदि। alms **तु.** दान।

भिक्षाटन *पुं. (तत्.)* भिक्षाप्राप्ति के लिए घर-घर जाना।

भिक्षापात्र *पुं. (तत्.)* भिक्षा/भीख माँगने का बर्तन/कटोरा आदि।

भिक्षु/भिक्षुक *पुं. (तत्.)* 1. भीख माँगने वाला व्यक्ति (बैगर) 2. संन्यासी, बौद्ध संन्यासी monk, mendieant (स्त्री. भिक्षुणी)

भिख *स्त्री. (तद्.)* (भीख का समास में=प्रयुक्त रूप) 1. दीनतापूर्वक माँगने पर ही मिलने वाला अनाज, पैसा या अन्य कोई वस्तु। **पर्या.-** खैरात **तु.** दान।

भिखमंगा *वि. [देश.[भिक्षा]* भीख माँगने वाला, भिक्षुक, मँगता।

भिगोना *स.क्रि. [तद्.[अभ्यंजन]* किसी पदार्थ को द्रव में डुबोकर तर करना, गीला करना। 'भीगना' का प्रेरणा. रूप **मुहा.** भिगो-भिगोकर मारना=बुरी तरह से पीटना। **टि.** कोड़े/रस्सी को यदि पानी में भिगोकर पीटा जाए तो चोट अधिक गहरी होती है।

भिडंत *स्त्री. (देश.)* 1. टकराने की क्रिया या भाव, 2. टक्कर, मुठभेड़, लड़ाई। **जैसे:** कल प्रात: 8 बजे कानपुर के पास दो मालगाडियों में भिड़ंत हो गई।

भित्ति चित्र *पुं. (तत्.)* दीवार पर बनाए गए चित्र। wallpainting, fresco

भिनकना *अ.क्रि. (देश.अनुरण.)* 1. भिन-भिन करना यानी मक्खियों के उड़-उड़ कर बैठने की क्रिया। **पर्या.** भिनभिनाना (टू बज़) ला.अर्थ (मन में) घृणा उत्पन्न करना-होना; घृणा प्रकट करना।

भिनभिनाना *अ.क्रि. (अनु.)* भिन-भिन जैसी ध्वनि करना।

भिनसार/भिनुसार *पुं. (देश.)* सूर्य उदय का या उसके कुछ पहले का काल, प्रात:काल, सवेरा **जैसे:** कृषक मिनसार से ही काम में जुट जाते हैं।

भिन्न *वि. (तत्.)* व्यु.अर्थ टूटा हुआ सा.अर्थ 1. अलग, पृथक, जुदा (क) अलग व्यक्ति (अदर) (ख) अलग प्रकार का different (ग) अलग वर्ग का distinct 2. स्त्री. **गणि.** एक राशि से दूसरी राशि के भागफल को सूचित करने के लिए प्रयुक्त संकेत या संख्या जिसमें भाज्य राशि एक रेखा के ऊपर तथा भाजक राशि उसके नीचे लिखी जाती है। **उदा.** 1/2, 3/5, x/y आदि fraction

भिन्नता *स्त्री. (तत्.)* भिन्न होने का भाव **पर्या.** अलगाव, पार्थक्य।

भिश्ती *पुं. [बिहिश्ती] (फ़ा.)* मशक में भरकर पानी ढोने वाला व्यक्ति। **पर्या.** माशकी, सक्का

भिषक् *पुं. (तत्.)* भेषज (दवा) देने वाला व्यक्ति, चिकित्सक, वैद्य **प्रयो.** उत्तम भिषक वही है जो रोग की सही पहचान करके भेषज देता है।

भींचना *स.क्रि. (देश.)* किसी वस्तु या व्यक्ति को कसकर खींचना या दबाना। **जैसे:** उसने अपने मित्र का गला भींचकर दबा लिया। **मुहा.** दाँत भींचना=क्रोधित होना। मुट्ठी भींचना-क्रोधित होना या जोश में आना

भीख *स्त्री. (तद्.=तत्.-भिक्षा)* दीनतापूर्वक माँगने पर ही मिलने वाला अनाज या अन्य कोई वस्तु। **पर्या.** खैरात **तु.** दान।

भीगना *अ.क्रि. (तद्.) भीजना) अभ्यजन)* पानी या अन्य किसी तरल पदार्थ से तर होना, आर्द्र होना, गीला होना। **प्रयो.** वह वर्षा से पूरी तरह भीग गया।

भीड़ *स्त्री. (देश.)* एक स्थान पर एक साथ बहुत सारे व्यक्तियों का अव्यवस्थित रूप से इकट्ठा

होना, व्यवस्थाहीन जनसमूह। **मुहा.** भीड़ करना-बहुत सारी चीजें इकट्ठा कर लेना। भीड़ छँटना-भीड़ का तितर बितर होकर कम हो जाना।

भीड़-भड़क्का *पुं. (देश.अनु.)* लोगों का समूह जो उपलब्ध, स्थान की कमी के कारण, ठुसा पड़ा हो और हर व्यक्ति अपने लिए जगह बनाने हेतु एक-दूसरे से भिड़ रहा हो यानी धक्का-मुक्की कर रहा हो।

भीड़-भाड़ *स्त्री. (देश.)* एक ही स्थान पर बहुत से लोगों का जमाव, जनसमूह, भीड़। **पर्या.** भीड़ भड़क्का। **जैसे** बेटा! इस भीड़-भाड़ में खो मत जाना।

भीड़शाही *स्त्री. (देश.+फ़ा.)* लोकतंत्र का वह बिगड़ा रूप जिसमें भीड़ मनोवृत्ति को महत्व दिया जाता है और तदनुसार अधकचरे सार्वजनिक निर्णय लिए जाते हैं। mobocracy

भीना *वि. (देश.)* भरा हुआ या युक्त। **जैसे:** भावभीना, रसभीना **टि.** प्राय: समासयुक्त पदों में उत्तर पद् के रूप में प्रयुक्त

भीनी *वि. (देश.)* 1. बहुत मंद या हल्की। **प्रयो.** अगरबत्ती से गुलाब की भीनी सुगंध फैल गई है। 2. ओत-प्रोत **प्रयो.** भाव भीनी कविता सुनकर दिल भर आया।

भीरु *वि. (तत्.)* 1. भयभीत रहने वाला; 2. जिसमें साहस न हो। **पर्या.** डरपोक, कायर **विलो.** साहसी, बहादुर।

भीरुता *स्त्री. (तत्.)* 1. भीरु या डरपोक होने का गुण (अवगुण), कायरता। 2. भय से ग्रस्त होने का भाव **जैसे:** युद् ध भीरुता से नहीं वीरता से जीते जाते हैं। **विलो.** वीरता

भीषण *वि. (तत्.)* 1. भय उत्पन्न करने वाला। **पर्या.** भयानक, भयंकर, डरावना। 2. मन और शक्ति को कष्ट देने वाला। **पर्या.** दारुण, विकट, घोर **जैसे:** भीषण गर्मी, भीषण यातना।

भीष्म-प्रतिज्ञा *स्त्री. (तत्.)* ऐसी भीषण प्रतिज्ञा जिसका पालन अत्यंत कठिन हो। **टि.** महाभारत की कथा के अनुसार भीष्म (देवव्रत) ने अपने पिता की प्रसन्नता के लिए आजीवन ब्रह्मचारी रहने की कठोर प्रतिज्ञा की थी। इसीलिए उनका नाम 'भीष्म' पड़ा और इस प्रकार की भीषण प्रतिज्ञा को 'भीष्म प्रतिज्ञा' कहा जाने लगा।

भुइँ *स्त्री. (तद्.<भूमि)* पृथ्वी, पृथ्वीतल, भूमि।

भुक्खड़ *(अड़) वि. (देश.)* जो सदैव भूखा ही हो; जिसे हमेशा भूख लगी रहती हो। **पर्या.** पेटू, खाऊ, कंगाल।

भुक्तभोगी *वि. (तत्.)* 1. जो किसी कार्य का अनुभव कर चुका हो। 2. जिसने किसी व्यक्ति या वस्तु के संपर्क में रहकर दु:ख झेला हो। **प्रयो.** मैं तो उनकी संगति का भुक्तभोगी हूँ, तुम उनसे बचकर रहना।

भुखमरी *स्त्री. (देश.)* शा.अर्थ भूख के कारण मरने की स्थिति। **समाज.** सामाजिक विषमता या प्राकृतिक आपदा के कारण उत्पन्न ऐसी स्थिति जिसमें समाज के अधिकतर लोगों को पेट भर भोजन न मिल सके।

भुगतना *स.क्रि. (तद्.)>भुक्ति)* 1. स्वयं के या दूसरों के कर्मों का अप्रिय फल/परिणाम आदि भोगना। 2. अनिच्छित दायित्व को किसी मजबूरी में निभाना। **प्रयो.** उसे अब यहाँ सगाई का खर्च भी भुगतना पड़ेगा।

भुगतान *पुं. (देश.<भोग)* शा.अर्थ भुगतने या भोगने का भाव 2. साहूकार से लिए गए ऋण या सामान के मूल्य आदि की अदायगी। paymnet

भुतहा *वि. (तत्.+हिंदी)* ऐसा (घर, वृक्ष या कोई स्थान) जिसके विषय में सामान्य लोगों की धारणा यह हो कि यहाँ भूत-प्रेतों का निवास है। **जैसे:** भुतहा महल, भुतही कोठी।

भुनगा *पुं. (देश.)* 1. एक प्रकार का बहुत छोटा और उड़ने वाला कीट जो प्राय: फूलों और फलों में रहता है। **जैसे:** गूलर के फलों के अंदर बहुत भुनगे होते हैं। 2. वर्षा के दिनों में उड़ने वाला बहुत छोटे आकार का कीड़ा। **प्रयो.** बरसात में तो शाम से ही भुनगे व पतंगे उड़ने लगते हैं। 3. ला.अर्थ अत्यंत क्षुद्र प्राणी।

भुनाना *(प्रेर.) (तद्.>भूर्ज)* 1. भूनने का काम किसी अन्य से कराना। **जैसे:** वह भड़भूँजे से चना भुना रहा है। 2. अधिक मूल्य के सिक्कों, नोट आदि को छोटे सिक्कों या नोटों में बदलवाना। **प्रयो.** 1. वह सौ का नोट भुना रहा है। 2. हम बैंक में जाकर अपना चेक भुनाते हैं।

भुरकस/भुरकुस *पुं. (हिं. भुरकना)* 1. किसी वस्तु को बुरी तरह कुचलने, कूटने या टूटने से प्राप्त

स्थिति चकनाचूर होने की स्थिति। **प्रयो.** शीशा टूटकर भुरकस हो गया।

भुरता/भरता *पुं. (देशं)* बैंगन, आलू इत्यादि को भूनकर और कुचलकर बनाया गया तरकारीनुमा, खाद्य पदार्थ।

भुरभुरा *वि. (देश-अनु.)* हल्का आघात लगने पर, थोड़ा सा बल लगने से या थोड़ी ऊँचाई से गिर जाने से भी चूर-चूर हो जाने वाला। crisp

भुलक्कड़ *पुं/वि. (देश)* 1. प्राय: किसी बात को या किसी कार्य को भूल जाने के स्वभाव वाला। विस्मरणशील। 2. बहुत जल्दी भूल जाने वाला। **प्रयो.** उस भुलक्कड़ का कोई भरोसा नहीं है कि कल वह आपका सामान लाएगा ही।

भुवन *पुं. (तत्.)* 1. संसार, जगत् **प्रयो.** इस भुवन में कौन अमर है। 2. लोक-पुराणों के अनुसार स्वर्ग आदि चौदह लोक। 3. स्वर्ग, पृथ्वी, पाताल इन तीन भुवनों में प्रत्येक। (इन तीनों को त्रिभुवन कहते हैं।)

भुहँ *स्त्री. (तद्.(भूमि)* पृथ्वी, पृथ्वीतल, भूमि।

भूंगा *पुं. (देश.)* गुजरात के कच्छ क्षेत्र में बसने वाले आदिवासियों का घर। बबूल की लकड़ी, घास, गोबर और मिट्टी से बना गोल आकार का यह घर अंदर से ठंडा रहता है। इसमें छोटी-छोटी खिड़कियाँ भी बनाई जाती हैं जिनसे हवा अंदर आती है।

भू भू-गोलक को उत्तरी गोलार्ध और दक्षिणी गोलार्ध नामक दो समान भागों में विभाजित करने वाली वह (कल्पित) रेखा जिसे 0º से व्यक्त किया जाता है। **पर्या.** विषुवत् रेखा।

भू-अभिलेख *पुं. (तत्.)* ग्राम-नगर आदि में भू-संपत्ति के संदर्भ में भूमि की सीमा, माप उसके स्वामित्व आदि का सरकारी लेखा-पत्र। land record **प्रयो.** हमारे पास गाँव की जमीन का ठीक-ठीक ब्यौरा है जो **भू.** अभिलेख प्रमाणपत्र में दर्ज है।

भूकंप *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ पृथ्वी का काँपना। भू-पृथ्वी के अंदर की स्थल मंडलीय प्लेटों के स्थान बदलने के कारण पृथ्वी के ऊपरी तल पर महसूस होने वाला कंपन, जिसके अधिक तीव्र होने पर जन-धन की भारी क्षति होने की संभावना होती है। **पर्या.** भूचाल। **दे.** स्थलमंडलीय प्लेट।

भूकंपमापी *पुं. (तत्.)* भूकंप का मापन करने वाला उपकरण। **दे.** भूकंप लेखी।

भूकंपरोधी *वि. (तत्.)* ऐसे उपकरण या उपाय जो भूकंप के कारण होने वाली क्षति को रोक सकें या उसके कुप्रभाव को कम कर सकें।

भूकंपलेखी *पुं. (तत्.)* वह उपकरण जो भूकंप के कारण पृथ्वी में उत्पन्न होने वाली तरंगों की गति का चित्र प्रस्तुत करे। इसकी माप का पैमाना रिक्टर है। seismograph **पर्या.** भूकंपमापी।

भूख हड़ताल *स्त्री. (तद्.)* शा.अर्थ भूखे रहने के रूप में काम-काज की दूकान पर ताला डालना। सा.अर्थ मालिक/सत्ता प्रतिष्ठान/सरकार द्वारा किसी माँग को न माने जाने पर माँगकर्ता द्वारा अंतिम हथियार के रूप में अपनाया जाने वाला वह रास्ता जिसमें वह जब तक उसकी माँग न मान ली जाए तब तक अन्न-जल का त्याग करने का निश्चय करता है और तदनुसार किसी सार्वजनिक स्थल पर बैठकर अपना वचन निभाता है। **पर्या.** अनशन। **तु.** उपवास, व्रत।

भूगोल *पुं. (तत्.)* व्यु.अर्थ पृथ्वी का गोला। सा. अर्थ सामाजिक विज्ञानों की वह शाखा जिसमें पृथ्वी के प्राकृतिक, राजनैतिक या सामाजिक दृष्टि से किए गए विभागों तथा उनसे संबंधित बातों का अध्ययन किया जाता है।

भूगोलक *पुं. (तत्.)* गोलाकार पृथ्वी का कृत्रिम प्रतिरूप जिस पर महाद्वीपों, महासागरों, विभिन्न देशों के नक्शे एवं अक्षांश और देशांतर रेखाएँ आदि बने होते हैं तथा जिसकी सहायता से कक्षा में विद्यार्थियों को भूगोल संबंधी जानकारियों सुविधापूर्वक दी जा सकती है। globe

भूगोलवेत्ता *पुं. (तत्.)* भूगोल शास्त्र का जानकार। **दे.** भूगोल।

भूचाल *पुं. (तद्.)* शा.अर्थ पृथ्वी का चलना (यानी काँपना या हिलना।) **भू.** प्राकृतिक कारणों से पृथ्वी के आंतरिक भाग में होने वाली उथल-पुथल से पृथ्वी की सतह का अचानक हिल उठना। **पर्या.** भूकंप। earthquake

भूत *पुं. (तत्.)* व्यु.अर्थ जो हो गया हो। 1. वे मूल तत्व जो सर्वप्रथम उत्पन्न हो चुके हों और जिनसे सृष्टि की रचना हुई है। तत्व **जैसे:** पंच महाभूत-धरती, जल, अग्नि, आकाश और वायु।

टि. ऐसी मान्यता है कि सर्वप्रथम आकाश उत्पन्न हुआ, आकाश से वायु, वायु से अग्नि, अग्नि से जल और जल से पृथ्वी तत्त्व पैदा हुआ। 2. प्राणी, जीव। **जैसे:** भूतनाथ (प्राणियों के स्वामी), भूतदया। 3. पौराणिक मान्यता के अनुसार वह जो मुक्ति न होने से प्रेतयोनि को प्राप्त होता है और छाया रूप से कष्टदायक एवं अमांगलिक कार्य करता है। प्रेत, पिशाच, शैतान। **जैसे:** भूत-बाधा से ग्रस्त लोग।

भूत *वि. (तत्.)* 1. जो हो चुका हो। **जैसे:** भूतपूर्व। 2. बीता हुआ (समय) **जैसे:** भूतकाल। **मुहा.** भूत उतारना-किसी की अकड़ या घमंड नष्ट करना। भूत सवार होना-किसी प्रकार की धुन/लगन/पागलपन या आवेश होना।

भूत-पिशाच *पुं. (तत्.)* प्रेतयोनि की भयावह एवं कल्पित उग्ररूप धारण करने वाली आत्माएँ जो निर्दोष प्राणियों को सताती है। **उदा.** 'भूतपिशाच निकट नहिं आवें, महावीर जब नाम सुनावे।' (हनुमान चालीसा)

भूतापीय ऊर्जा *स्त्री. (तत्.)* पृथ्वी के आंतरिक ताप से उत्पन्न ऊर्जा। **टि.** पृथ्वी के आंतरिक ताप के कारण पृथ्वी पर कहीं-कहीं गरम जल की धाराएँ सोतों या झरनों के रूप में प्राप्त होती हैं जिनका प्रयोग खाना पकाने, नहाने या ऊष्मा प्राप्त करने के लिए किया जाता है।

भूनना *स.क्रि. (तद्. भूँजना/भर्जन)* 1. किसी अन्न, सब्जी या औषधि इत्यादि को आग में या अंगारों पर सेंककर पकाना। **जैसे:** होला भूनना, मक्की का भुट्टा भुनना। कच्चे चने के पौधों को आग में डालकर पकाना, आलू, बैंगन भूनना आदि। 2. गरम बालू/रेत में चने, ज्वार, मक्का आदि में सेंककर पकाना। **प्रयो.** भड़भूँजा भाड़ में चने भूनता है।

भूना *वि. (तद्.)* भुना हुआ। **जैसे:** भुना बैंगन, भुने चने आदि। **दे.** भूनना। **मुहा.** जला-भुना = अत्यधिक क्रुद्ध।

भूप *पुं. (तत्.)* धरती की रक्षा और पालन-पोषण करने वाला। राजा **पर्या.** भूपाल, भूपति। **प्रयो.** सीता स्वयंवर में परशुराम के आते ही सभी कपटी भूप भयभीत हो गए।

भूपर्पटी *स्त्री. (तत्.)* सा.अर्थ पृथ्वी की पपड़ी। शा.अर्थ पृथ्वी की संरचनात्मक तीन परतों में से सतह को छोड़कर सबसे ऊपर वाला ठोस भाग जिसकी मोटाई 30 से 50 किमी के बीच आँकी गई है। विशेष-तीनों परतों में से यह सबसे पतली परत है। crust **तु.** क्रोड, प्रावार।

भूभाग *(भू+भाग) पुं. (तत्.)* अपने नैसर्गिक गुणों वाला विस्तृत भू-क्षेत्र।

भूमंडल *पुं. (तत्.)* एक खगोलीय पिंड के रूप में हमारी गोलाकार पृथ्वी जिस पर महाद्वीप, महासागर स्थित हैं तथा जिस पर जीवन उपलब्ध है। **पर्या.** पृथ्वी globe

भूमंडलीकरण *पुं. (तत्.)* पूरे भूमंडल या संसार में किसी वस्तु, विचार आदि को फैलाने और प्रभावित करने की प्रक्रिया। globlization

भूमंडलीय तापन *पुं. (तत्.)* विद्युत संयंत्रों तथा मोटरों, गाड़ियों आदि द्वारा कार्बन डाइऑक्साइड आदि पदार्थों के उत्सर्जन के परिणामस्वरूप उत्पन्न ताप का संपूर्ण भूमंडल पर व्याप्त हो जाना और पृथ्वी के तापमान में वृद्धि हो जाना। global warming

भूमध्यसागर *पुं. (तत्.)* दक्षिणी यूरोप, उत्तरी अफ्रीका और पूर्वोत्तर एशिया से घिरा हुआ समुद्र जिसकी लंबाई लगभग 3850 कि.मी. और क्षेत्रफल लगभग 30 लाख वर्ग कि.मी. है। mediterranian-sea **टि.** स्थल भागों से घिरा होने के कारण 'भूमध्य सागर' कहा जाता है।

भूमिका *स्त्री. (तत्.)* 1. विषय की पूर्व-सूचना; ग्रंथ आदि की प्रस्तावना। **पर्या.** आमुख introduction 2. नाटक, फिल्मों या अन्य किसी भी क्षेत्र में किसी चरित्र विशेष की हू-ब-हू प्रस्तुति। **पर्या.** किरदार। role

भूमिगत *वि. (तत्.)* व्यु.अर्थ पृथ्वी के अंदर गया हुआ-न दिखाई देने वाला-छिपा हुआ। **प्रयो.** वृक्ष की जड़ें भूमिगत होती हैं। आधु.अर्थ सत्ता की पकड़ से बचने के लिए किसी गुप्त स्थान पर छिपा हुआ। **प्रयो.** ब्रिटिश सरकार से बचने के लिए क्रांतिकारी अकसर भूमिगत हो जाते थे।

भूर-विलास *पुं. (तत्.)* भौंहों का मोहक संचालन, भौंहों को नचाना, भौंहें हिलाकर किसी का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करना।

भूरा *वि. (तद्. बभ्रुर)* कुछ-कुछ मिट्टी के रंग का, मटमैला, खाकी। **जैसे:** भूरा बंदर, भूरी गाय।

भूराजस्व *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ भूमि से प्राप्त राजस्व। 1. भूमि से होने वाली सरकारी आय। 2. कृषि योग्य भूमि पर दिया जाने वाला कर। **पर्या.** लगान।

भूरि *वि. (तत्.)* बहुत अधिक, प्रचुर मात्रा में, पुनः-पुनः। **जैसे:** सभा में अतिथि की भूरि-भूरि प्रशंसा की गई।

भूल *स्त्री. (देश.)* 1. स्मरण न रहने की अवस्था या भाव। **जैसे:** उस सभा में आपको न बुलाने की भूल हो गयी। 2. अज्ञान या भ्रमवश होने वाली कोई गलती। **प्रयो.** उसने भूल से दाल में नमक की जगह 'चीनी' डाल दी। 3. जल्दबाजी या असावधानी से होने वाली गलती या अपराध। **प्रयो.** वह जल्दबाजी में भूल से अंग्रेजी की जगह गणित की पुस्तक ले आया।

भूल-चूक *स्त्री. (देश.)* विस्मरण, भ्रम या गलती से होने वाला कार्य। **जैसे:** 1. आपकी सेवा में कोई भूल-चूक हुई हो तो क्षमा करना। **मुहा.** भूल-चूक लेनी-देनी - यदि भूल हुई हो तो लेकर या देकर ठीक हो सकती है।

भूलभुलैया *स्त्री. (देश.)* 1. किसी लंबे चौड़े भवन की ऐसी रचना कि अंदर घुसने पर व्यक्ति बाहर निकलने का रास्ता भूल जाए और बार-बार एक ही स्थान पर पहुँचता रहे। **जैसे:** भूलभुलैया में फँसना। 2. इसी प्रकार की रेखाकृति या पेड़-पौधों आदि की रचना। labyrinth

भूला-बिसरा *वि. (भूला+बिसरा) (देश.+तद्.)* वह व्यक्ति, घटना इत्यादि जो भुला दिया गया हो या जिसकी याद कभी-कभी ही आती हो। **प्रयो.** बचपन की भूली-बिसरी यादें तो बहुत हैं।

भूला-भटका *वि. (देश.)* 1. जो रास्ता भूलकर इधर-उधर भटक रहा हो, **जैसे:** भूला-भटका मुसाफिर। 2. ला.अर्थ जीवन के सही लक्ष्य से विमुख या मार्गभ्रष्ट। **प्रयो.** भूले भटके लोग भी कभी-कभी उचित मार्गदर्शन से जीवन को सुखमय बना लेते हैं।

भूले-भटके *क्रि.वि. (देश.)* भूलकर या भटककर, अरे महानुभाव! भूल-भटक कर कभी यहाँ आकर हमें भी अपना दर्शन देते रहें।

भूसंपत्ति *स्त्री. (तत्.)* भूमि के रूप में प्राप्त वंशानुगत या खरीदी गई संपत्ति। land property

भूसंपदा *स्त्री. (तत्.)* भूमि के रूप में संपत्ति। land estate

भूसंपर्कण *पुं. (तत्.)* दुर्घटना से बचने के लिए विद्युत धारा को भूमि से जोड़ना। earthing

भूसा *पुं. (देश.)* गेहूँ, जौ, आदि के छिलके या उनके डंठलों के बारीक टुकड़े जिन्हें पशुओं को चारे के रूप में खिलाया जाता है।

भूसी *स्त्री. (देश.) (भूसा)* बारीक भूसा। **उदा.** ईसबगोल की भूसी (बारीक छिलके)।

भूस्खलन *पुं. (तत्.)* पर्वतीय प्रदेशों में जमीन का धँस जाना या खिसक जाना। landslide

भूस्पंद *पुं. (तत्.)* पृथ्वी के अंदर होने वाला हलका कंपन। इसे छोटा भूकंप कह सकते हैं।

भूस्वामी *पुं. (तत्.)* भूमि का मालिक, जिसके पास भूमि के स्वामित्व का अधिकार हो। land lard

भेंगा *पुं./वि. (देश.)* (वह व्यक्ति) जिसकी दोनों आँखों की पुतलियाँ अलग-अलग दिशाओं में या टेढ़ी तिरछी दीखती हैं। **प्रयो.** भेंगा होने के कारण उसका विवाह नही हो पा रहा है।

भेंट *स्त्री. (हि.)* 1. मुलाकात। **प्रयो.** आज मैंने स्वास्थ्य अधिकारी से भेंट कर नगर की स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं पर बात की। 2. किसी के सम्मान में या किसी खुशी के अवसर पर किसी को सहर्ष व सप्रेम दिया जाने वाला उपहार। **प्रयो.** मुख्य अतिथि को शाल एवं एक कलात्मक मूर्ति भेंट की गई। gift, present 3. मंदिर इत्यादि को वस्तु आदि के रूप में दिया जाने वाला दान। **जैसे:** उसने मंदिर में पंखा भेंट किया। 4. देवी-देवताओं की स्तुति के भजन।

भेंटवार्ता *स्त्री. (तत्.)* शा.अर्थ किसी से भेंटकर उससे बातचीत करना। **पत्र.** किसी/किन्हीं विशिष्ट व्यक्ति/व्यक्तियों से की गई ऐसी बातचीत जिसे बाद में जनसंचार माध्यमों से सर्वसामान्य तक पहुँचाने का प्रयत्न किया जाता है। **पर्या.** साक्षात्कार interview

भेंड़ *स्त्री. (तद्. भेड)* बकरी की तरह का एक छोटा चौपाया पशु जिसके शरीर पर ऊनी बाल होते हैं, तथा उसके गाढ़े दूध का भी लोग प्रयोग करते हैं। मेष, गड़र। **प्रयो.** इस भेड़पालक के पास बहुत

भेड़ें है। **मुहा.** 1. भेंड़चाल। बिना कोई विचार किये सभी व्यक्तियों का एक के पीछे चल पड़ना, अंधानुकरण की प्रवृत्ति, 2. भेड़िया धँसान-अत्यधिक घनी भीड़।

भेजना *स.क्रि. (तद्.)* 1. किसी को किसी विशेष उद्देश्य से कहीं जाने के लिए प्रेरित करना। **जैसे:** पिताजी उसे गाँव भेज रहे हैं। 2. किसी वस्तु को एक स्थान से दूसरे स्थान को रवाना करना, प्रेषण। **जैसे:** मैंने यहाँ से एक घड़ी डाक द्वारा मित्र के लिए भेजी है।

भेजा *पुं. (देश.)* शरीर का वह महत्वपूर्ण अंग जिसमें हम वैचारिक चिंतन करते हैं, मस्तिष्क, दिमाग। **उदा.** इस प्रश्न को हल करने में अब मेरा भेजा काम नहीं कर रहा। **मुहा.** भेजा चाटना/खाना-बहुत देर तक व्यर्थ की बातें करके दिमाग/मस्तिष्क थका देना। **उदा.** तुम कब से मेरा भेजा चाट रहे हो, मैंने कह दिया कि आज तुम्हारा काम नहीं हो पाएगा। *स.क्रि.* भेजना क्रिया का भूतकालिक रूप।

भेड़ *स्त्री. (तद्.)* बिना सींग वाला चौपाया जो ऊन के लिए पाला जाता है। **मुहा.** भेड़-चाल

भेड़-चाल *स्त्री. (तद्.)* भेड़ों की तरह व्यवहार करना। **टि.** भेड़ की दो विशेषताएँ हैं-1. एक भेड़ जिधर जाती है अन्य भेड़ें भी उसी दिशा में चल पड़ती हैं। 2. भेड़ सदैव आगे जा रही दो भेड़ों के बीच घुसने का प्रयत्न करती है।

भेड़िया *पुं. (तद्.)* कुत्ते की जाति का एक जंगली खूँखार जानवर जो बस्तियों से छोटे बच्चे, भेड़, बकरी आदि को उठाकर ले जाता है। **उदा. भेड़िया** खूँखार जानवर होता है। 2. लाक्ष. धूर्त तथा लालची व्यक्ति जो हिंसा भी कर सकता है।

भेड़िया-धँसान *(तद्.)* भेड़यों की तरह घुसकर भीड़ करना, भेड़चाल, अंधानुकरण।

भेद *पुं. (तत्.)* 1. दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच मनमुटाव पैदा कर देना। **जैसे:** मित्र-भेद अंतर **जैसे:** भेद बुद्धि। **उदा.** बेटा-बेटी के बीच भेद करना अब पुरानी बात हो गई है। 2. छिपी हुई बात, रहस्य। **उदा.** वह अपना भेद किसी पर भी प्रकट नहीं करता। secret, mystery **मुहा.** भेद खुलना-छिपी हुई बात का सामने आ जाना, रहस्य प्रकट हो जाना। 3. प्रकार **जैसे:** संज्ञा के तीन भेद हैं।

भेदक *वि. (तत्.)* भेद करने वाला, भेद दिखाने वाला।

भेदन *पुं. (तत्.)* 1. छेदने की क्रिया 2. खुल जाना, सामने आ जाना। **जैसे:** रहस्य भेदन।

भेदना *स.क्रि. (तद्.)* 1. छेद करना 2. छेद करके अंदर घुस जाना। **उदा.** अभिमन्यु चक्रव्यूह को भेद कर (का भेदन कर) कौरव-योद्धाओं से भिड़ गया।

भेदबुद्धि *स्त्री. (तत्.)* समान स्थिति अथवा स्तर की वस्तुओं एवं व्यक्तियों में भेदभाव पैदा कर देने वाली बुद्धि या कुशलता।

भेदभाव *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ अंतर (बनाए रखने) का भाव। 1. समान वस्तुओं तथा व्यक्तियों में अंतर करने और उसे बनाए रखने का अनुचित विचार 2. एक ही समूह में से कुछ लोगों के साथ कुछ व्यवहार तो अन्य के साथ कुछ और व्यवहार। discrimination

भेदात्मक *वि. (तत्.)* जो भेद पर आधारित हो, भेदभाव-युक्त, भेदभाव से पूर्ण, भेदभाव-भरा।

भेदिया *पुं.* भेद अर्थात् छिपी हुई बात को खोज निकालने वाला। **पर्या.** जासूस, गुप्तचर spy

भेरी *स्त्री. (तत्.)* एक प्रकार का ताल वाद्य, बड़ा ढोल, नगाड़ा। **जैसे:** युद्ध की सूचना के लिए भेरी बज रही है, रणभेरी।

भेषज *पुं. (तत्.)* ओषधि, दवा। drug

भेषजी *स्त्री. (तत्.)* स्थान जहाँ औषधियाँ बनाई जाती हैं और दवा विक्रेताओं/औषधालयों को आपूर्ति की जाती है। **पर्या.** औषध निर्माणी, औषध निर्माणशाला। pharmacy

भेस *पुं. (तद्.<वेश)* दूसरों को दिखाने के लिए या अन्य किसी विशिष्ट उद्देश्य **जैसे**: धोखा देना आदि का अनुकरण करते हुए उसी जैसी पहनी हुई वेशभूषा। **उदा.** रावण ने साधु का भेस धारण कर सीता का हरण किया था।

भैंस *स्त्री.* गोजातीय एक मादा दुधारू पशु जिसका दूध गाय के दूध से अधिक गाढ़ा और चिकना होता है।

भैया/भाई *पुं. (तत्.<भ्रातृ)* 1. एक ही वंश के माता-पिताओं की संतानों के परस्पर संबंधों को व्यक्त करने वाला नरपुरुष (पुत्र)। **पर्या.** भ्राता, सहोदर 2. चाचा/मामा/फूफा/मौसा का लड़का, भाई (चचेरा, ममेरा, फुफेरा, मौसेरा) 3. लगभग समान

उम्र के अपरिचित व्यक्ति के लिए आदरसूचक संबोधन शब्द-भैया।

भोंकना *स.क्रि. (देश.)* 1. किसी अपेक्षाकृत मुलायम वस्तु में कोई कठोर और नोंकदार वस्तु बलपूर्वक प्रविष्ट करना। 2. किसी नुकीले शस्त्र से आक्रमण कर उससे शरीर को भेदना। **जैसे:** उसने डाकू के पेट में भाला भोंक दिया।

भोंडा *वि. (देश.)* 1. जो देखने में या महसूस करने में अप्रिय, भद्दा या बेढंगा हो, कुरूप, बदसूरत। 2. अशिष्ट, असभ्य। **जैसे:** भोंडा स्वरूप, भोंडा व्यवहार।

भोंडापन *पु. (देश.)* भद्दापन, अशिष्टता।

भोंतरा/भोंथरा *वि. (देश.)* जिसकी धार तेज न हो, कुंठित धार वाला (अस्त्र-शस्त्र)। **जैसे:** भोंतरा खड्ग, चाकू आदि।

भोंदू *वि. (देश.)* जो बहुत सरल तथा कम अकल (बुद्धि) वाला हो, बुद्धू, मूर्ख। **जैसे:** उसे भोंदू समझकर वे लोग अपने साथ यात्रा में नहीं ले गए।

भोंदूपन *पुं. (देश.)* भोंदू होने की अवस्था या भाव, अत्यंत सीधापन, मूर्खता। **जैसे:** इतना सब देखकर भी तुम्हारा भोंदूपन अभी नहीं गया।

भोंपू *पुं. (देश.)* 1. फूँककर बजाया जाने वाला एक प्रकार का बाजा। 2. गुब्बारे जैसे रबड़ से बना वह विशेष बाजा जिसके दबाने पर भों-भों की आवाज आती है तथा जो प्राय: राहगीरों को चेतावनी के लिए होता है। **अर्थ.** 3. पिछलग्गू, चमचा। **जैसे:** वह तो श्यामदास का भोंपू है, उसी की बातें करता रहता है।

भोग-विलास *पुं. (तत्.)* सुखपूर्वक अच्छी-अच्छी चीजों का उपभोग करना। **जैसे:** भोगविलास का जीवन।

भोज *पुं. (तद्.<भूर्ज)* एक वृक्ष जिसकी कागज जैसी छाल पर पहले लिखा जाता था, तंत्र-मंत्र के लिए भी उसका प्रयोग होता है। **जैसे:** भोजपत्र पर लिखा विशेष मंत्र।

भोज *पुं. (तद्.)* किसी अवसर पर सामूहिक रूप से कराया जाने वाला भोजन, दावत, जेवनार। **जैसे:** आज उनके यहाँ पुत्र जन्मोत्सव पर बहुत बड़े भोज का आयोजन किया गया।

भोजन *पुं. (तद्.)* वह खाद् य पदार्थ/सामग्री जो प्राणियों के जीवित रहने का मुख्य आधार है। **पर्या.** आहार। **उदा.** वन्य जीव सिंह का भोजन है।

भोजपत्र *पुं. (तद्.<भूर्जपत्र)* भूर्ज वृक्ष की छाल जिसका प्रयोग प्राचीनकाल में कागज की तरह किया जाता था।

भोर *स्त्री. (देश.)* 1. सूर्योदय से कुछ पहले का समय जब प्रकाश की हलकी आभा दिखलाई देती है। **टि.** इसे ही ब्रह्म-मुहूर्त कहा जाता था।

भोला *वि. (देश.)* जो निष्कपट एवं सरल चित्त हो, सीधा-साधा **जैसे:** बच्चे बड़े भोले होते हैं।

भोलानाथ *पुं. (देश.+तत्.)* 1. महादेव, शिव **जैसे:** भोलानाथ तो औढरदानी है। 2. **उदा.** तुम व्यवहार में तो सचमुच भोलानाथ हो।

भोलापन *पुं.(देश.)* सरलता, निश्छलता। **जैसे:** उसमें अभी भी भोलापन झलकता है।

भोला-भाला *(देश.)* (अत्यंत सीधा (व्यक्ति) **जैसे:** वह धूर्त गाँव के भोले-भाले लोगों को ठगता है।

भौंकना/भूँकना *अ.क्रि. (देश.)* 1. कुत्ते का भूँ-भूँ या भौं-भौं का जोर से शब्द करना, कुत्ते की आवाज **जैसे:** किसी भिखारी को देखकर कुत्ते भौंक रहे हैं। 2. **(ला.)** ऊँची आवाज में कार्य की बातें बोलते जाना। **जैसे:** अब बहुत हो गया, भौंकना बंद करो।

भौंचक *वि. (देश.)* आश्चर्यचकित, भौंचक्का।

भौंह *स्त्री. (तद्.<भ्रू)* आँख की ऊपर वाली हड्डी पर उगे हुए बाल/रोएँ जो दूर से काले और वक्र रेखा से दिखते हैं **जैसे:** भौंहों से आँखों की शोभा होती है। **मुहा.** 1. भौंहें तानना-क्रोध प्रकट करना। 2. भौंहें नचाना-भौंहें चलाकर चंचलता दिखाना। इशारा करना 3. भौंहें सिकोड़ना-अनिच्छा प्रकट करना।

भौगोलिक *[भूगोल+इक] वि.(तत्.)* भूगोल से संबंधित। **दे.** 'भूगोल- **जैसे:** भारत की भौगोलिक परिस्थितियों ने ही यहाँ की विशिष्ट संस्कृति को जन्म दिया है।

भौतिक *वि. (तत्.)* पंचभूतों से संबंध रखने वाला, पंचभूतों से बना हुआ, पार्थिव physical material

भौतिक विज्ञान *पुं. (तत्.)* विज्ञान की वह शाखा जिसमें भौतिक पदार्थों के गुणधर्म और अन्यान्य क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है। physics

भौतिकवाद *पुं. (तत्.)* यह विचारधारा कि ईश्वर, ब्रह्म इत्यादि शब्द निरर्थक हैं तथा शारीरिक सुख ही सर्वोपरि है और संसार में उपलब्ध समस्त पदार्थ केवल हमारे उपभोग के लिए ही हैं। **विलो.** अध्यात्मवाद materialism

भौतिकशास्त्र *पुं. (तत्.)* **दे.** 'भौतिकविज्ञान'।

भौतिकी *स्त्री. (तत्.)* **दे.** भौतिक विज्ञान।

भौम जल *पुं. (तत्.)* पृथ्वी के अंदर स्थित जल (कुएँ आदि का) ground water **तु.** वर्षा जल, नदी जल आदि।

भौरा *पुं. (तद्.<भ्रमर)* काले रंग का पंखदार कीड़ा जो फूलों से रस ग्रहण करता है। **पर्या.** मधुप, भ्रमर, मधुकर।

भ्रमण *पुं. (तत्.)* 1. घूमना, फिरना, टहलना आदि। **उदा.** मैं प्रात:काल ठीक पाँच बजे उपवन में भ्रमण के लिए निकल पड़ता हूँ। 2. यात्रा करना, **पर्या.** यात्रा, सफ़र **जैसे:** विश्व भ्रमण।

भ्रंश *पुं. (तत्.)* सा.अर्थ टूटने, गिरने या बिगड़ने का भाव। **जैसे:** अपभ्रंश **भूवि.** भूगर्भीय शक्तियों द्वारा भूपर्पटी के स्तरों का फट जाना (विभंजन) अथवा हलकी दरार पड़ना (विदरण) जिसके फलस्वरूप भूकंप आने की संभावना बढ़ जाती है। fault

भ्रंश क्षेत्र *पुं. (तत्.)* वह भूभाग जिसमें भूगर्भिक शक्तियों के कारण भूपर्पटी के स्तरों के फटने या उनमें दरार आने की आशंका रहती है। fault area

भ्रंशोत्थ *[भ्रंश+उत्थ] वि. (तत्.)* किसी बड़े पर्वत से टूटकर गिरा हुआ और ऊर्ध्वाधर स्थिति में खड़ा (भूखंड या छोटा पर्वत)।

भ्रमर *पुं. (तत्.)* **दे.** 'भौरा'।

भ्रमित *[भ्रम+इत] वि. (तत्.)* 1. भ्रम में पड़ा हुआ। **उदा.** सुदामा द्वारका की भव्यता देखकर भ्रमित हो गया। 2. घूमता हुआ या चक्कर खाता हुआ। **उदा.** मेरा सिर भ्रमित हो रहा है।

भ्रष्ट *वि. (तत्.)* 1. जो अपने (सही) रास्ते से विचलित हो गया है, गिरा हुआ, पतित 2. चोरी-छुपे रुपया/धन लेकर नियम विरूद्‌ध कार्य करने वाला, घूसखोर 3. अनैतिक कार्य करने वाला।

भ्रष्टाचार *[भ्रष्ट+आचार] पुं. (तत्.)* 1. अनैतिक या नियम विरूद्ध आचरण 2. घूसखोरी। **दे.** 'भ्रष्ट'।

भ्रांत *वि. (तत्.)* 1. जिसे भ्रम हुआ हो या जिसे भ्रम में डाला गया हो। **जैसे:** प्रश्न पूछने पर उसने भ्रांत उत्तर दिया। 2. घबराया हुआ, परेशान। **जैसे:** वह भ्रांत मन से बोला। 3. जो मार्ग में भटका हुआ हो।

भ्रांति *स्त्री. (तत्.)* भ्रांत होने की स्थिति 1. भ्रम, धोखा illusion **उदा.** रात में रस्सी भी सर्प की भ्रांति करती है। 2. किसी व्यक्ति के मन-मस्तिष्क में दूसरे के बारे में घर कर गई गलत धारणा, गलतफहमी **उदा.** मेरे बारे में जो भ्रांतियाँ आपके मन में थीं वे शायद अब दूर हो गई होंगी।

भ्रामक *वि. (तत्.)* भ्रम उत्पन्न करने वाला, धोखे में डालने वाला।

भ्रू *स्त्री. (तत्.)* आँख के ठीक ऊपर और ललाट के निचले भाग में बालों वाला चापाकार उभार। **पर्या.** भौंह। eye-brow

भ्रूण *पुं. (तत्.)* **प्राणि.** निषेचन के बाद परिवर्धनशील आरंभिक अवस्था जो पूर्ण परिवर्धन के उपरांत नवजीव को जन्म देती है। embryo

म

मंगल *पुं. (तत्.)* 1. शुभ, भलाई, कल्याण। 2. सौर जगत का एक ग्रह जो पौराणिक मान्यता के अनुसार पृथ्वी का पुत्र माना जाता है। **पर्या.** भौम। 3. मंगलवार का दिन। *वि.* कल्याणकारी, शुभलक्षण-युक्त। **विलो.** अमंगल।

मंगलकलश/मंगलघट *पुं. (तत्.)* शुभ अवसरों पर पूजा के लिए रखा गया पानी से भरा पवित्र घड़ा।

मंगलगीत *पुं. (तत्.)* शादी-ब्याह आदि शुभ अवसरों पर पारंपरिक रूप से गाए जाने वाले गीत। **तु.** भजन।

मंगलमय *वि. (तत्.)* जिससे सभी प्रकार का मंगल अर्थात् कल्याण हो, कल्याण से युक्त, शुभप्रद, कल्याणमय। **उदा.** आप दोनों का दांपत्य जीवन मंगलमय हो।

मंगलसूत्र *पुं. (तत्.)* 1. विवाहिता स्त्रियों के द्वारा अपने सुहाग के लिए गले में पहने जाने वाला आभूषण जिसे एक विशेष सौभाग्य का सूचक माना जाता है। **उदा.** नववधू के मंगलसूत्र की सभी स्त्रियाँ प्रशंसा कर रही थीं। 2. किसी विशेष पूजा आदि के अवसर पर पुरोहित द्वारा यजमान की कलाई पर बाँधा जाने वाला लाल धागा।

मंगलाचरण *पुं. (तत्.)* 1. किसी कार्य के प्रारंभ में मंगल कामना और अनिष्ट निवारण के लिए की जाने वाली देव स्तुति। 2. पुस्तक के प्रारंभ में लिखा गया देव स्तुति-परक पद।

मंगली *वि. (तत्.)* 1. (वह लड़का या लड़की) जिसकी कुंडली में मंगलदोष हो अर्थात् 1,4,7,8,12 में मंगल स्थित हो। 2. विवाह के लिए एक प्रकार का दोष। **पर्या.** मंगलीक। **जैसे:** इस मंगली लड़की से विवाह कैसे हो सकता है?

मंगोल *पुं. (विदेशी)* एक जाति जिसका मूलस्थान रूस और चीन के मध्य स्थित मंगोलिया नामक देश है। इस जाति के लोगों का रंग हलका पीला, नाक चिपटी और चेहरा चौड़ा होता है।

मंच *पुं. (तत्.)* 1. खाट, मचान, खटिया। 2. सभा को संबोधित करने के लिए बना ऊँचा स्थान। 3. नाटक आदि खेलने के लिए बना ऊँचा स्थान, रंगमंच। stage

मंजन *पुं. (तद्.)* दाँत आदि साफ करने का (औषधीय) चूर्ण।

मंजरी *स्त्री. (तत्.)* 1. नए उगे हुए कोमल कोंपल। 2. फूलों का ऐसा गुच्छा जिसमें एक ही डंडी पर चारों ओर (लंबाई में) छोटे-छोटे फूल खिलते हैं। **जैसे:** तुलसी या आम के पौधों में मंजरी लगती है।

मंजिल *स्त्री. (अर.)* 1. चलकर पहुँचने वाला नियत स्थान। **पर्या.** गंतव्य। destination 2. भवन की ऊँचाई के अनुसार बने तल और उनकी संख्या। **जैसे:** छठी मंजिल। story

मंजुल *वि. (तत्.)* 1. दिखाई देने में सुंदर।

मंजुलता *स्त्री.* सुंदर होने का गुण, सुंदरता।

मंजूर *वि. (अर.)* स्वीकृत। **उदा.** उसकी छुट्टी मंजूर हो गई है। **विलो.** नामंजूर।

मंजूरी *स्त्री.* स्वीकृति। **उदा.** मैंने अपनी छुट्टी की अर्जी मंजूरी के लिए भेजी है।

मंजूषा *स्त्री. (तत्.)* 1. गहने, वस्त्र आदि सामान रखने की सुंदर पेटी। **जैसे:** रत्नमंजूषा। 2. छोटा पिटारा या डिब्बा। **जैसे:** पत्रमंजूषा। 3. पक्षियों को पालने के लिए बना पिंजरा।

मंडप *पुं. (तत्.)* 1. मंदिर के ऊपर का भाग जो गोल आकृति का होता है। 2. किसी शुभ एवं विशिष्ट कार्य के लिए छाया हुआ परंतु चारों ओर से खुला स्थान जो गर्मी, वर्षा आदि से बचने के लिए बनाया गया हो। **जैसे:** चँदोवा, शामियाना।

मंडप *पुं. (तत्.)* 1. यज्ञ, विवाह, राजकीय समारोह आदि के लिए विशेष रूप से तैयार किया गया वह खुला स्थान जो ऊपर से तिनकों, टीन की चद्दर या कपड़े से छाया हुआ हो। 2. चँदोवा, तंबू। **जैसे:** 'विवाहमंडप' अत्यंत सुसज्जित है। 2. उद्यान में 'लतामंडप' दर्शनीय है।

मंडल *पुं. (तत्.)* 1. गोल घेरा, चक्कर, परिधि। **उदा.** मुख-मंडल। 2. राज्य का वह भाग जो एक विशेष अधिकारी के अधीन हो। जिला। district 3. कुछ विशेष लोगों का समाज, समूह **जैसे:** मित्रमंडल। 4. ऋग्वेद के अध्यायों का विभाजन शीर्षक। **टि.** ऋग्वेद के सभी मंत्र दस मंडलों में विभक्त हैं।

मंडलाकार *वि. (तत्.)* मंडल (वृत्त) के आकार वाला, गोल।

मंडली *स्त्री. (तत्.)* 1. एक जैसे स्वभाव या प्रवृत्ति के लोगों का समूह, समाज। **जैसे:** दुष्ट-मंडली। 2. एक ही उद्देश्य या कार्य के लिए एकत्रित लोगों का दल। **जैसे**: भजन-मंडली, मित्र मंडली। **पर्या.** वर्ग, समुदाय।

मंडी *स्त्री. (तद्.)* 1. किसी प्रकार के माल के थोक और फुटकर बिक्री का बड़ा केंद्र/बाजार। **जैसे:** धानमंडी, गन्नामंडी, सब्जीमंडी आदि। 2. बड़ा बाजार। **जैसे:** उसने मंडी से केले और सेब सस्ते खरीदे।

मंतव्य *पुं. (तत्.)* किसी विषय में व्यक्त विचार या मत। **पर्या.** प्रस्ताव, निर्णय।

मंतिख *(मंतिक) पुं. (अ.)* तर्कशास्त्र। सिद्धांतों, मतों के विषय में अनेक प्रकार से तर्कपूर्वक विचार करने वाला शास्त्र। **टि.** दिनकर की रचना- 'पढ़क्कू की सूझ'। शीर्षक-कविता में मतिख शब्द प्रयुक्त होता है। logic

मंत्र *पुं. (तत्.)* 1. गुप्त रखने योग्य बात, सलाह, रहस्य। 2. वेदों के छंदोबद्ध या गद्यात्मक शब्द जिनके उच्चारण के साथ यज्ञादि कार्य किए जाते हैं, वे शब्द जिनसे देवताओं आदि को संतुष्ट किया जाता हो। 4. वे शब्द जिनसे अशुभ शक्तियों को निष्क्रिय किया जाता है। (झाड़-फूँक आदि द्‌वारा)

मंत्रणा *स्त्री. (तत्.)* 1. किसी विषय पर मननपूर्वक परस्पर किया जाने वाला विचार-विमर्श, परामर्श, सलाह। advice 2. विचार-विमर्श द्‌वारा निश्चित किया गया मत। **जैसे:** प्रधानमंत्री ने प्रमुख मंत्रियों के साथ रसाईगैस की समस्या के संबंध में मंत्रणा की।

मंत्रालय *पुं. (तत्.)* 1. किसी मंत्री का कार्यालय/कार्य करने का स्थान 2. मंत्री का विभाग, **जैसे:** गृह मंत्रालय।

मंत्रिपरिषद्/मंत्रीपरिषद् *स्त्री. (तत्.)* 1. किसी राज्य या केंद्र सरकार की नीतियों को निर्धारित करने वाला दल या समूह, जिसके सदस्य मंत्री कहलाते हैं। इनका नेता मुख्यमंत्री/प्रधानमंत्री होता है। मंत्रिपरिषद् विधायिका के प्रति उत्तरदायी होती है। 2. राज्यपाल/राष्ट्रपति को सहायता और सलाह देने के लिए बनाया गया मंत्रियों का दल या समूह। council of ministers

मंत्रिमंडल *पुं. (तत्.)* किसी देश के केंद्र, राज्य, संस्था आदि के मंत्रियों का समूह। cobinet

मंत्री *पुं. (तत्.)* 1. मंत्रिपरिषद् का सदस्य। 2. किसी मंत्रालय का प्रधान या मुखिया। 3. राजा, राष्ट्रपति, राज्याध्यक्ष आदि को परामर्श देने वाला। minister 4. गोपनीय बातों पर सलाह देने वाला। 5. किसी संस्था के कार्यों को संचालित या नियंत्रित करने वाला अधिकारी secretary **पर्या.** सचिव (4, 5 के लिए)।

मंत्रीगण *पुं. (तत्.)* मंत्रियों का समूह, मंत्रिमंडल।

मंत्रोच्चार *पुं. (तत्.)* मंत्रों का उच्चारण। किसी पूजा-पाठ, धार्मिक समारोह आदि में मंत्रों का उच्च स्वर में पाठ या गायन।

मंत्रोच्चारण *[मंत्र+उच्चारण] पुं. (तत्.)* वेदमंत्रों को सही ढंग से शुद्‌ध उच्चारणपूर्वक बोलना। **उदा.** आज एक पवित्र कार्यक्रम में विद्‌वानों के मुख से मंत्रोच्चारण सुनकर मन बहुत प्रसन्न हुआ।

मंथन *पुं. (तत्.)* 1. दही से मक्खन निकालने की विशेष क्रिया। मथना, बिलोना। **जैसे:** 1. गोपियाँ दही-मंथन के समय बाल कृष्ण को बुलाकर मक्खन खिलाती थीं। 2. मथने जैसी क्रिया। **जैसे:** अग्निमंथन-मथकर लकड़ियों से अग्नि उत्पन्न करना, समुद्रमंथन। 2. ला.अर्थ. किसी विषय पर गंभीर चिंतन-मनन। **जैसे:** गीता के ज्ञानयोग पर मेरा मंथन चल रहा है। 3. ला.अर्थ किसी ग्रंथ का गहराई से अध्ययन। **जैसे:** उन्होंने 'गोदान' उपन्यास का पूरा मंथन किया है।

मंथर *वि. (तत्.)* जिसकी गति धीमी या मंद हो, धीमा, मंद, सुस्त। **जैसे:** कछुआ मंथर गति से चलता है।

मंथरा *स्त्री. (तत्.)* 1. रामायण में दशरथ की रानी कैकेयी की प्रमुख दासी। 2. ला.अर्थ *स्त्री.* ऐसी दुष्ट स्त्री जो किसी भी घर में गृह-कलह कर देने में निपुण होती है।

मंद *वि. (तत्.)* 1. जिसमें तीव्रता या स्फूर्ति न हो, धीमा, सुस्त। **जैसे:** वह मंदस्वर में बोला। 2. जड़बुद्‌धि, मूर्ख। **जैसे:** 'अहह मंद में अवसर चूका।' (तुलसी-रामचरितमानस) 3. कमजोर, दुर्बल। **जैसे:** मंदाग्नि दोष। *विलो.* तीव्र। **टि.** **'मंद'** फारसी का एक प्रत्यय भी है जिसका अर्थ है 'वाला'। **जैसे:** अक्लमंद, जरूरतमंद, सेहतमंद।

मंदगति *वि. (तत्.)* शा.अर्थ जिसकी बुद्‌धि तेजी से न चले। सा.अर्थ जिसकी मति (बुद्‌धि) मंद या अल्प हो, अल्पबुद्‌धि, नासमझ। **जैसे:** अधिकारी के समक्ष वह मंदमति अपनी बात ठीक से कह नहीं पाया। **पर्या.** मंदबुद्‌धि।

मंदबुद्‌धि *वि. (तत्.)* जिसकी बुद्‌धि मंद या कम हो, मोटी अक्ल वाला। **पर्या.** अल्प बुद्‌धि, मूर्ख।

मंदा *वि. (तत्.)* कम कीमत का, जिसका दाम कम हो गया हो, **पर्या.** सस्ता स्त्री-मंदी। *पुं.* (अर्थ) वह काल जब कीमतें कम हो गई हों। **उदा.** आजकल सोने में मंदी चल रही है। depression

मंदिर *पुं. (तत्.)* 1. देवस्थान, देवालय, पूजा का स्थान। 2. कोई भी पवित्र या शुभकार्य का स्थान। **उदा.** विद्यामंदिर अर्थात् विद्यालय। 3. रहने का स्थान, घर।

मंदी *स्त्री. (तद्.)* अर्थ. 1. बाजार की वह अवस्था जिसमें कीमतों में लगातार गिरावट जारी हो। 2. बाजार की वह स्थिति जिसमें लोगों की क्रयशक्ति कम होने से बिक्री कम होती हो। **उदा.** आजकल मंदी के कारण लोगों को रोजगार भी कम मिल रहा है। **विलो.** तेजी।

मंद्र *वि. (तत्.)* 1. गहरा, गंभीर, मधुर (विशेष रूप से स्वर या ध्वनि का विशेषण) 2. (संगीत) स्वरों के तीन सप्तकों में से पहला सप्तक। अन्य सप्तक हैं-मध्य और तार। base tone

मंद्रतर *वि. (तत्.)* तुलनात्मक दृष्टि से अधिक मंद्र। **दे.** 'मंद्र'।

मंशा *स्त्री. (अर.)* मन में उत्पन्न किसी वस्तु-उद्देश्य-पूर्ति की कामना। 1. उद्देश्य। 2. अभिप्राय, आशय, इरादा। 3. इच्छा, मनोकामना, मनोरथ। **जैसे:** ऐसा करने के पीछे उनकी मंशा क्या है, हमें पता नहीं।

मंसूबा *पुं. (अ.)* 1. मन की इच्छा, महत्वाकांक्षा, संकल्प। **उदा.** मंसूबा करने मात्र से काम नहीं चलेगा। 2. काम करने की योजना, युक्ति, तजबीज, कोई कार्य करते समय सोची गई युक्ति।

मँगनी *स्त्री. (देश.)* 1. किसी के द्वारा कोई वस्तु मांगने पर कुछ समय के लिए उसे वह वस्तु देना। **जैसे:** बड़ी सीढ़ी मंगनी दे दीजिए। 2. किसी वस्तु को किसी से स्वयं माँगकर कुछ समय के लिए लाना। **जैसे:** यह बड़ा थाल मँगनी का है, हमारा नहीं। 3. विवाह का एक परंपरागत कार्यक्रम जिसमें लड़के और लड़की का संबंध निश्चित किया जाता है। **जैसे:** वह अपने मित्र की मँगनी के कार्यक्रम में सम्मिलित हुआ।

मँगेतर *पुं. (देश.)* 1. वह व्यक्ति जिसके साथ किसी कन्या का विवाह-संबंध पक्का हुआ हो। 2. वह व्यक्ति जिसकी किसी कन्या से मँगनी हुई हो। **दे.** 'मँगनी'।

मँझधार *स्त्री. (तद्.)* शा.अ. नदी के बीच की धारा, प्रवाह के बीच की धारा। ला.अ. किसी काम को करते समय बीच की दुविधा की स्थिति जब कार्य पूरा न हो पाया हो और उसे छोड़ा भी न जा सकता हो।

मँझला *वि. (तद्.)* जो बीच का हो, **जैसे:** उसके तीन पुत्रों में से मँझला चिकित्सक है। **पर्या.** मध्यम, मझोला।

मँडराना *अ.क्रि. (देशज)* किसी वस्तु, व्यक्ति या स्थान के चारों ओर घूमते या उड़ते रहना, आसपास में रहना।

मकड़ी *(तद्.<मर्कटी) स्त्री.* आठ पैरों वाला एक छोटा कीड़ा जो अपने मुख में से निकलने वाले लसीले पदार्थ से जाला बुनता है और उसमें चिपक कर फँसने वाले मक्खी आदि कीटों का आहार कर लेता है या उनका रस चूस लेता है।

मकबरा *पुं. (अर.)* 1. वह कब्र जिस पर इमारत या गुंबद बना हो। **जैसे:** ताजमहल मूलत: मकबरा है। 2. भवन या गुंबद जिसके नीचे किसी की कब्र बनी हो। **जैसे:** हुमायूँ का मकबरा**,** ताजमहल आदि।

मकरंद *पुं. (तत्.)* फूल का केसर, पराग, फूल का रस।

मकर *पुं. (तत्.)* 1. मगर या घड़ियाल नामक जलजंतु। 2. बारह राशियों में से दसवीं राशि।

मकरसंक्राति *स्त्री. (तत्.)* 1. सूर्य का धनुराशि से मकर राशि में प्रवेश करना जिससे उत्तरायण का प्रारंभ माना जाता है। 2. उक्त अवसर पर या तिथि को मनाया जाने वाला उत्सव। **टि.** मकर संक्रांति का पर्व प्रत्येक वर्ष प्राय: 14 जनवरी को मनाया जाता है। **दे.** संक्रांति।

मकसद *पुं. (अर.मक़्सिद)* 1. (किसी के जीवन का) उ**द्दे**श्य या इच्छा। **जैसे:** आपके जीवन का मकसद क्या है? शिक्षक बनना या चिकित्सक बनना। 2. अभिप्राय, आशय, मतलब। **जैसे:** वहाँ जाने से आपका मकसद पूरा नहीं होगा।

मकान *पुं. (अर.)* आवास या रहने का स्थान। **पर्या.** घर, गृह, आलय, भवन।

मक्का *पुं. (अर.)* अरब प्रदेश की धार्मिक राजधानी। हज़रत मुहम्मद का जन्मस्थान।

मुसलमान हज के लिए यहीं एकत्र होते हैं। यहीं 'काबा' नामक प्रसिद्ध तीर्थस्थान है। *(देश.)* एक मोटा अनाज, मकई, भुट्ठे के दाने। maize

मक्कार *वि. (अर.)* धूर्त, छली, चालाक।

मक्कारी *स्त्री. (अर.)* धूर्तता, छल, धोखा, चालाकी।

मक्खन *पुं. (देश.)* दूध या दही मथने के बाद निकला हुआ सार तत्व, जिसको गर्म करके घी बनाया जाता है, नवनीत।

मक्खी *स्त्री. (तद्.<मक्षिका)* 1. एक उड़ने वाला कीट जो प्राय: मीठी वस्तुओं और गंदी जगहों पर पाया जाता है 2. मधुमक्खी **मुहा.** 1. जीती मक्खी निगलता-जानते हुए अपना अहित करना 2. मक्खी की तरह निकाल फेंकना-किसी को अपने से अलग कर देना 3. मक्खी मारना-बिना काम के समय बिताना 4. मक्खी पर मक्खी मारना-बिना विचार किए हूबहू प्रतिलिपि बनाना 5. नाक पर मक्खी न बैठने देना-अभिमानपूर्वक रहना, आक्षेप सहन न करना।

मक्खीचूस *पुं. (देश.)* बहुत बड़ा कंजूस, व्यर्थ वस्तुओं से भी लाभ उठाने की बात सोचने वाला।

मखमल *स्त्री. (अर.)* एक रेशम जैसा मोटा कपड़ा जिसकी ऊपरी सतह बहुत नरम और रोएँदार होती है।

मखमली *वि. (फा.)* 1. मखमल से बना हुआ। 2. मखमल **जैसा**। **उदा.** मखमली घास।

मखौल *पुं. (देश.)* हँसी, मज़ाक, उपहास, खिल्ली, दिल्लगी। **उदा.** किसी की कुरूपता का मखौल नहीं उड़ाना चाहिए।

मग *पुं. (तद्.)* रास्ता, पथ। **उदा.** चल पड़े जिधर दो डग मग में चल पड़े कोटि पग उसी ओर।

मगज़ *पुं. (अर.)* 1. मस्तिष्क 2. दिमाग। **उदा.** इतनी देर से बहस करके मेरा मगज क्यों खा रहे हो? **मुहा.** 1. मगज़-मारना/मगज़पच्ची करना-किसी कठिन सवाल या समस्या में बड़ी देर से उलझे रहना। 2. मगज़ चाटना/खाना- बहुत बोलकर परेशान करना। 3. गिरी, मींगी **जैसे:** मगज़ के लड्डू

मगध *पुं. (तत्.)* दक्षिणी बिहार का प्राचीन नाम। वर्तमान समय में पटना और राजगृह के आस-पास का क्षेत्र। मगध राज्य के प्राचीन राजाओं में जरासंध, चंद्रगुप्त मौर्य, अशोक आदि का नाम प्रसिद्ध है।

मगन *वि. (तद्.<मग्न)* बहुत प्रसन्न, खुश, आनंदित, डूबा हुआ। **दे.** 'मग्न'।

मगर *अ. (फा.)* परंतु, लेकिन। **जैसे:** तुम मेहनत तो करते हो मगर तुम्हें अपने भाई के समान अंक नहीं प्राप्त होते। *पुं. (तद्.<मकर)* एक जलचर सरीसृप प्राणी मगरमच्छ या घड़ियाल। इसका मुख्य भोजन मछलियाँ हैं। **मुहा.** 1. जल में रहकर मगर से बैर-अधिक शक्तिशाली लोगों के साथ रहकर भी उनसे दुश्मनी रखना। 2. मगरमच्छ के आँसू बहना-दिखावटी शोक या सहानुभूति दिखाना।

मगरमच्छ *पुं. (तद्.)* सरीसृप जाति का जीव जो पानी में और जमीन पर दोनों स्थानों में रह सकता है। मछली इसका मुख्य आहार है परंतु बड़े आकार वाले प्राणियों को भी यह खा जाता है। प्राय: नदियों, झीलों में पाया जाता है। **पर्या.** मगर, घड़ियाल।

मग़रूर *वि. (अर.-मग़ूर)* शा.अ. गरूर (घमंड) के साथ/वाला सा.अ. जिसे अपने गुण, शक्ति, कला आदि पर आवश्यकता से अधिक घमंड हो। **पर्या.** अभिमानी, घमंडी **जैसे:** वह अधिक धन पाकर मग़रूर हो गया है।

मचना *अ.क्रि. (अनु.)* 1. शोर आदि का शुरू होना। 2. किसी चीज की व्यापकता होना। छा जाना। **उदा.** देखो! कक्षा में शोर मच रहा है। 2. दिल्ली में डकैतों का आतंक मचा हुआ है।

मचलना *अ.क्रि. (देश.)* कोई वस्तु प्राप्त करने के लिए बाल भाव से हठ करना, (विशेष रूप से बालकों या स्त्रियों के लिए प्रयुक्त)।

मचान *पुं. (तद्.<मंच)* बाँसों, लट्ठों या पेड़ों आदि के सहारे बनाया हुआ ऊँचा बैठने लायक स्थान या मंच जिस पर बैठकर खेत की रखवाली की जा सकती है या हिंसक पशुओं का शिकार किया जा सकता है।

मचाना *स.क्रि.(देश.)* शोर/कोलाहल, आदि को चारों और फैलाना। **जैसे:** कक्षा में बच्चे शोर मचा रहे हैं।

मचिया *स्त्री. (तद्.<मंच)* 1. चारपाई की तरह सुतली आदि से बुनी हुई चार पायों वाली बैठने की छोटी चौकी। 2. छोटी चारपाई। **जैसे:** घर में मचिया पर बैठी कुछ औरतें कपड़ों में कढ़ाई कर रही हैं।

मच्छर *पुं. (तद्.<मशक)* हवा में उड़ने वाला अनेक प्रकार के रोगाणुओं का वाहक एक कीट। इनमें से

कुछ के काटने से डेंगू, मलेरिया, फाइलेरिया आदि रोग होते हैं।

मच्छरदानी *स्त्री. (देश.)* मच्छरों से बचने के लिए चारपाई पर लगाया जाने वाला जालीदार आवरण।

मछली *(तद्.मच्छ<मत्स्य)* एक जल जीव जिसकी छोटी-बड़ी अनेक प्रजातियाँ होती हैं। ये अनेक रंगों एवं आकारों की होती हैं। **पर्या.** मीन, मत्स्य।

मछुआ/मछुवा *पुं. (देश.)* मछली पकड़ने और बेचने का व्यवसाय करने वाला। *स्त्री.* मछुआरिन।

मछुआरा *पुं. (देश.)* **दे.** 'मछुआ'।

मजदूर *पुं. (फा.)* शारीरिक श्रम से दूसरों का काम करके धन कमाने वाला व्यक्ति।

मजदूरी *स्त्री. (फा.)* 1. मजदूर का काम या भाव। 2. मजदूर का पारिश्रमिक। wages

मजबूत *वि. (अर.)* 1. पक्का, टिकाऊ, दृढ़, पुष्ट, बलशाली। 2. पक्के दिलवाला।

मजमा *पुं. (अर.)* बहुत से लोगों का एक जगह बेतरतीब इकट्ठा होना, जमावड़ा, जमघट। **उदा.** मदारी के कौतुक को देखने के लिए लोगों का मजमा लग गया।

मजमून *पुं. (अर.)* निबंध, लेखा, वार्तालाप आदि का विषय। **उदा.** हम तो लिफाफा देखकर ही मजमून भाँप जाते हैं।

मजहब *पुं. (अर.)* धर्म, संप्रदाय, पंथ, मत। **जैसे:** इस्लाम**,** जैन, बौद्ध आदि मजहब।

मजहबी *वि.(अर.)* 1. धर्म या संप्रदाय से संबंधित। 2. मजहब का कट्टरता से पालन करने वाला। **उदा.** मजहबी झगड़े राष्ट्रहित में नहीं हैं।

मजा *पुं. (फा.)* 1. इंद्रियों से मिलने वाला आनंद और सुख। **उदा.** आम खाकर मजा आ गया। 2. यह फिल्म देखकर मजा आ गया। **मुहा.** मजा चखाना-दंड देना या परेशान करना।

मजाक *पुं. (अर.)* 1. मनोरंजन हेतु हँसने हँसाने की बातें, हँसी, दिल्लगी, उपहास। 2. हँसी खेल, सरल काम। **जैसे:** तैरकर समुद्र पार करना मजाक नहीं है। **मुहा.** 1. मजाक उड़ाना-किसी की हँसी उड़ाना, उपहास करना। **जैसे:** हमें व्यर्थ में किसी का मजाक नहीं उड़ाना चाहिए। 2. मजाक समझना-किसी बात को सत्य न समझकर हँसी में लेना। उसके हिंदी में 95% प्रतिशत अंक पाने की बात को मैंने मजाक समझा था।

मजाकिया *वि.(अर.)* हास-परिहास से संबंधित बातें करने वाला, मजाक करने के स्वभाव वाला।

मजार *पुं. (अर.)* मुस्लिम संतों, फकीरों की कब्र, जिस पर फूल, चादर आदि चढ़ाई जाती है या मन्नत माँगी जाती है। **तु.** मकबरा।

मजाल *स्त्री. (अर.)* शक्ति, सामर्थ्य, साहस आदि का भाव। **टि.** प्राय: प्रश्नवाचक या नकारात्मक अर्थ में ही प्रयोग होता है। **जैसे:** उसकी क्या मजाल?

मजिस्ट्रेट *पुं. (अं.)* 1. छोटे आपराधिक मुकद् मे सुनने और दंडविधान करने वाला राजकीय अधिकारी। 2. दंडाधिकारी, जो विधि के अनुसार प्रशासन चलाने वाला अधिकारी भी होता है। **जैसे:** जिला मजिस्ट्रेट district magistrate

मजीरा *पुं. (तद्.<मंजीर)* काँसे, पीतल आदि की कटोरीनुमा जोड़ी जो होली और अन्य धार्मिक अवसरों पर गीत या भजन के साथ ताल देने के लिए बजाई जाती है।

मजेदार *वि. (फा.)* इंद्रियों को सुख देने वाला। **पर्या.** स्वादिष्ट, बढ़िया, लजीज, दिलचस्प, मनोरंजक, आंनददायक।

मज्जा *स्त्री. (तत्.)* अस्थि (हड्डी) के खोखले भाग में पाए जाने वाले मृदु ऊतक। प्राय: ये ऊतक गाढ़े द्रव के रूप में होते हैं। bone marrow

मझधार/मँझधार *स्त्री. (तद्.)* 1. (नदी आदि की) धारा के बीच का स्थान। **जैसे:** नाव अब मझधार से पार हो रही है। 2. लाक्ष. किसी काम या बात के पूरा होने से पूर्व की दुविधात्मक स्थिति। **जैसे:** मैं विदेश पढ़ने जाऊँ या यहीं पढ़ूँ? अभी तो मैं मझधार में हूँ। **मुहा.** मझधार में पड़ना-विपत्ति में फँसना।

मझला *वि.* **दे.** 'मँझला'।

मझौला *वि. (तद्.)* **दे.** 'मँझला'।

मटका *पुं. (तद्.<मार्तिक)* मिट्टी का बड़ा घड़ा जो प्राय: नीचे की तरफ से भी गोल होता है। **स्त्री.** मटकी-छोटा मटका।

मटकाना *स.क्रि. (देश.)* आँख, हाथ, कमर आदि किसी अंग को नखरे या हाव-भाव के साथ

हिलाना। **जैसे:** भौंहें मटकाना, कूल्हे मटकाना आदि।

मटमैला *वि. (देश.)* 1. मिट्टी के रंग का, खाकी 2. मिट्टी आदि के कारण मैला, गँदला। **विलो.** साफ़ सुथरा।

मटर *पुं. (देश.)* एक प्रसिद्ध पौधा जिसकी फलियों में गोल दाने होते हैं और जिनकी तरकारी या दाल बनती है। peas

मटरगश्त *पुं. (तद्.+फ़ा.)* 1. धीरे-धीरे निश्चित होकर घूमने-फिरने वाला आदमी, बिना काम के टहलने वाला व्यक्ति, घूमने वाला व्यक्ति। **जैसे:** वह सड़क पर ऐसे घूम रहा है **जैसे:** वह कोई मटरगश्त हो। *वि.* घूमने-फिरने वाला, बिना काम के टहलने वाला।

मटरगश्ती *स्त्री. (तद्.+फ़ा.)* आनन्दपूर्वक (मित्रों के साथ) मौजमस्ती करना। **जैसे:** वह अपने साथियों के साथ कहीं मटरगश्ती कर रहा होगा। *(दे.)* 1. मौजमस्ती के साथ घूमने, सैरसपाटा करने की क्रिया। **उदा.** कुछ बालक पढ़ने की जगह साल भर मटरगश्ती किया करते हैं।

मट्ठा *पुं. (तद्.(मंथन)* पानी मिलाकर मथा हुआ दही, जिसमें से मक्खन निकाल लिया गया हो, मथकर मक्खन निकाल लेने के बाद बचा हुआ तरल पदार्थ। **पर्या.** छाछ।

मट्ठी/मठरी *स्त्री. (दे.)* आटे या मैदे की बनी और घी/तेल में तली हुई खाने योग्य मीठी या नमकीन टिकिया।

मठ *पुं. (तत्.)* 1. साधुओं का आवास-स्थल। 2. बौद्ध भिक्षुओं के रहने का स्थान, बौद्धविहार 3. धार्मिक स्थान जहाँ शिक्षा का आदान-प्रदान होता है और नित्य धार्मिक अनुष्ठान, प्रवचन इत्यादि होते हैं। **जैसे:** आदि शंकराचार्य द्वारा स्थापित चार मठ। श्रृंगेरीमठ, बेलूरमठ आदि।

मठाधीश *पुं. (तत्.)* सा.अ. मठ या स्वामी या मुखिया। आधु.अर्थ ऐसा व्यक्ति जो अपने स्वामित्व या अधिकारों को छोड़ना न चाहे। (मुहावरे के रूप में) **पर्या.** सत्ताधीश।

मड़ैया *स्त्री. (तद्.)* 1. तृण, काठ, बाँस आदि से बनी झोंपड़ी, कुटिया 2. गरीब लोगों या साधु-संतों के रहने की जगह। **जैसे:** कुछ किसान या मजदूर सब्जी, फल, फूल वाले खेतों की रक्षा के लिए मड़ैया बनाकर रहते हैं।

मढ़ना *सक.क्रि. (तद्.<मंडन)* 1. सुरक्षा या सौंदर्य वद्धि के लिए किसी वस्तु पर दूसरी वस्तु लगाना, जड़ना चिपकाना या लपेटना आदि। **जैसे:** हम तस्वीर पर फ्रेम मढ़ते हैं। 2. किसी की इच्छा के बिना उस पर किसी काम को करने की जिम्मेदारी आग्रहपूर्वक सौंपना। **जैसे:** पानी भरने का काम बालक के सिर मढ़ना। 3. लाक्ष.अर्थ. किसी निर्दोष पर कोई दोष या आरोप लगाना। **जैसे:** उसने रूपयों की चोरी का सारा दोष मेरे भाई पर मढ़ दिया।

मणि *स्त्री. (तत्.)* सा.अ. स्वयंप्रकाशित (अँधेरे में भी प्रकाशित हो सकने वाला) रत्न **जैसे:** नागमणि शा.अ. बहुमूल्य और चमकदार (पारदर्शी) खनिज पत्थर **पर्या.** रत्न ला.अ. किसी वर्ग का श्रेष्ठ व्यक्ति **जैसे:** शिरोमणि विद्वान।

मत *क्रि.वि. (तद्.<मा)* कोई कार्य न करने के लिए प्राय: पद या आयु में छोटों के लिए प्रयुक्त निषेधवाचक शब्द। **जैसे:** ऐसा मत करो। don't

मत *पुं. (तत्.)* 1. किसी व्यक्ति का किसी विषय में माँगा गया और/या व्यक्त निजी विचार। **पर्या.** सम्मति, विचार, राय opinion, view 2. पंथ, संप्रदाय, मजहब विशेष की स्थापित मान्यताएँ और विश्वास sect, reed **जैसे:** कबीर-मत, संतमत, बौद्ध-मत 3. निर्वाचन के समय उम्मीदवार को दिया जाने वाला समर्थन। vote

मतगणना *स्त्री. (तत्.)* मतों (वोटों) की गिनती । चुनाव के पश्चात् मतों की गिनती, यह जानने के लिए कि किस प्रत्याशी को कितने मत प्राप्त हुए हैं।

मतदाता *पुं. (तत्.)* मतदान करने वाला, वोट डालने वाला। voter

मतदान *पुं. (तत्.)* किसी पद के लिए किसी विशेष उम्मीदवार को चुनने के लिए अपनी स्वीकृति दिए जाने की वैधानिक प्रक्रिया। voting

मतपत्र *पुं. (तत्.)* वह पत्रक जिस पर किसी पद के लिए उम्मीदवार के निर्धारित चुनाव-चिह्न पर निशान लगाकर मतदाता उसके पक्ष में अपना मत देता है। ballot paper **टि.** अब यह प्रक्रिया

समाप्त प्राय: है। इसके लिए बड़े चुनावों में मशीन पर बटन दबाकर मतदान होता है।

मतपेटी *स्त्री. (तत्.)* वह पेटी या डिब्बा जिसमें मतदाता अपना मतपत्र डालता है। ballot box **टि.** बड़े चुनावों में अब ई.वी.एम. मशीनों से ही यह कार्य हो जाता है।

मतभेद *पुं. (तत्.)* किसी विषय पर लोगों के बीच पाई जाने वाली विचारों, धारणाओं आदि की भिन्नता। **उदा.** मतभेद की वजह से हम लोग किसी निर्णय पर नहीं पहुँच सके। **विलो.** मतैक्य।

मतलब *पुं. (अर.)* 1. अर्थ, तात्पर्य, अभिप्राय, आशय **उदा.** (i) 'पंकज' का मतलब कमल है। (ii) आपके कथन का मतलब मैं समझ नहीं पाया। 2. अपना हित, स्वार्थ। **उदा.** तुम हमेशा अपने मतलब की बात करते हो। 3. उद्देश्य, विचार- तुम्हारा यहाँ आने का मतलब क्या है? 4. संबंधित, वास्ता। **उदा.** हमारा तुमसे कोई मतलब नहीं है।

मतलबी *वि. (अर.)* केवल अपना स्वार्थ सिद्ध करने का अभिलाषी (व्यक्ति)। **दे.** मतलब।

मतवाला *वि. (देश.)* 1. जो अहंकार के कारण लापरवाह और मस्त हो। **जैसे:** वह लाटरी में धन पाकर मतवाला हो गया है। 2. नशे में चूर। 3. हर्ष और उन्माद से पागल, दीवाना। **जैसे:** वह अच्छी नौकरी पाने की खुशी में मतवाला हो गया है।

मतवाला *वि. (देश.<मद)* 1. शराब आदि के नशे में मस्त, नशे के कारण सोचने-समझने की क्षमता से हीन 2. धन, सत्ता, ज्ञान, यौवन आदि के अहंकार के कारण विवेकहीन।

मतांधता *[मत+अंधता] स्त्री. (तत्.)* 1. अपने मत के विरोध में अच्छा-बुरा कुछ भी न देख पाने का भाव। 2. अपने विचारों का समर्थन इस सीमा तक करना कि दूसरे विचारों की ओर देखने (सोचने) की भी इच्छा न हो। अपने मत, संप्रदाय, धर्म इत्यादि का अंधा अर्थात् अविवेकपूर्ण समर्थन तथा अनुगमन।

मताधिकार [मत+अधिकार] पुं. *(तत्.) राज.* चुनाव में अपनी इच्छानुसार मत देने का अधिकार। right of voting *पुं. (तत्.)* (मत+अधिकार) 1. किसी भी सामान्य निर्वाचन में मत देने का अधिकार। 2. राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर किसी विषय पर मत देने का अधिकार। **जैसे**: भारत में 18 वर्ष या उससे ऊपर की आयु का कोई भी व्यक्ति चुनाव में अपने मताधिकार का प्रयोग कर सकता है।

मतानुयायी *[मत+अनुयायी] वि. (तत्.)* 1. किसी विशिष्ट धर्म, संप्रदाय आदि को मानने वाला 2. राजनीतिक दल या विचारधारा को स्वीकार करने वाला। **पर्या.** मतावलंबी।

मति *स्त्री. (तत्.)* 1. बुद्धि 2. विचार, समझ 3. मन। **उदा.** 'जहाँ सुमति तँह संपति नाना। जहाँ कुमति तँह विपति निदाना'। तुलसी.रामचरित. मानस। **मुहा.** मति मारी जाना-बुद्धि भ्रष्ट होना।

मतिमंद *वि. (तत्.)* 1. कम बुद्धि वाला; बुद्धिहीन 2. मूर्ख, बेवकूफ, जड़, नासमझ, बुद्धू।

मतैक्य *[मत+ऐक्य] पुं. (तत्.)* किसी विषय पर सभी या अधिकतर लोगों के बीच विचारों की एकता। **पर्या.** सर्वसम्मति, ऐकमत्य। **उदा.** हम सभी का प्रस्तुत योजना पर मतैक्य है। **विलो.** मतभेद।

मत्त *वि. (तत्.)* 1. जो किसी मद से मतवाला हो, मस्त। **जैसे:** मत्त हाथी। 2. नशे में धुत्त। **जैसे:** वह शराब के नशे में मत्त है। 3. पागल 4. ला.अर्थ अहंकारी। **जैसे:** वह धन और पद पाकर मत्त हो गया है।

मत्स्य *पुं. (तत्.)* 1. मछली, विष्णु का पहला अवतार (मत्स्यावतार) 2. महाभारतकालीन विराट देश का नाम। अज्ञातवास के समय पांडव यहीं रहे थे।

मत्स्यन *पुं. (तत्.)* 1. मछली पकड़ने का कार्य, खेल, शौक या व्यापार fishing 2. व्यापारिक दृष्टि से मछलियों का पालन (फिशरी)। fishery

मत्स्यपालन *पुं. (तत्.)* विशेष रूप से निर्मित तालाबों और पोखरों में वाणिज्यिक स्तर पर मछलियों को पालने की मानवीय गतिविधि जिसके परिणामस्वरूप उत्पादित मछलियाँ खाद्य पदार्थ के रूप में उपयोग में आती हैं। pisciculture **दे.** कृषि।

मथना *(तद्.<मंथन) स.क्रि.* 1. दूध, दही आदि तरल पदार्थों को मथनी या अन्य किसी यंत्र से

बिलोना। 2. गहराई से छानबीन करना, किसी विषय या मामले पर गहराई से विचार करना।

मद *पुं. (तत्.)* 1. किसी मादक पदार्थ के सेवन से होने वाली विकृत मानसिक अवस्था, नशा 2. धन, बल, सत्ता आदि का ऐसा अहंकार या घमंड जिसमें उचित-अनुचित का ज्ञान न रहे। **जैसे:** धन का मद, सत्ता का मद। 3. मलवाले हाथी की कनपटी से बहने वाला गंधयुक्त तरल पदार्थ। **जैसे:** मदमस्त हाथी की कनपटी से मद बह रहा है। *पुं. (अर.)* वाणि. खाता बही या कोई खाता या उसका शीर्षक पेटा। **जैसे:** मेरी इस धनराशि को किस मद में समायोजित करेंगे?

मदद *स्त्री. (अर.)* सहायता, (आर्थिक या शारीरिक रूप से) की गई सहायता। **तु.** सहयोग-साथ-साथ काम करना।

मददगार *वि. (अर.+फा.)* सहायक, मदद करने वाला।

मदन *पुं. (तत्.)* 1. काम, कामदेव, प्रेम, कामुकता 2. वसंतकाल।

मदनोत्सव *[मदन+उत्सव] पुं. (तत्.)* वसंत ऋतु में मनाया जाने वाला उत्सव। **पर्या.** वसंतोत्सव।

मदमत्त *वि. (तत्.)* नशे में मतवाला, नशे में चूर। **पर्या.** मदमस्त, मदमाता, मत्त (पागल जैसा)। **उदा.** वह तो धन के नशे में मदमत्त हो रहा है।

मदरसा *पुं. (अर.<मद्रिस:)* 1. इस्लामी शिक्षा पद्धति का विद्यालय। 2. उर्दू, अरबी, फारसी आदि भाषाएँ पढ़ाने की एक धार्मिक संस्था।

मदहोश *वि. (फ़ा.)* मद यानी नशे में अपना होश खो देने वाला। **उदा.** कुछ लोग शराब पीकर मदहोश हो जाते हैं।

मदांध *[मद+अंध] वि. (तत्.)* शा.अर्थ मद में अंधा। जो अपनी जवानी, धन, शक्ति, सत्ता, मस्ती आदि के गर्व से विवेकहीन हो गया हो। **पर्या.** मदोन्मत्त, मदमत्त।

मदांधता *स्त्री.(तत्.)* धन आदि के नशे में अंधा जैसा होने की स्थिति या भाव।

मदारी *पुं. (अर.)* 1. बंदर, भालू आदि का खेल दिखाकर अपनी जीविका चलाने वाला। 2. जादू आदि का खेल दिखाने वाला बाजीगर। **पर्या.** कलंदर।

मदिरा *स्त्री. (तत्.)* 1. एक नशीला पेय पदार्थ। **पर्या.** शराब, मद्य 2. एक वर्णिक छंद।

मदिरालय *[मदिरा+आलय] पुं. (तत्.)* वह स्थान जहाँ शराब मिलती है और लोग बैठकर पीते हैं। **पर्या.** शराबघर, शराब की दुकान, मधुशाला।

मद्धिम *वि. (तद्.<मध्यम)* 1. मंद, धीमा। **उदा.** मद्धिम आँच में पकी दाल स्वादिष्ट होती है। 2. तेल की कमी से दीपक की लौ मद्धिम हो गई। 3. उसकी काम करने की गति मद्धिम है।

मद्य *पुं. (तत्.)* मदिरा, शराब। **उदा.** मद् यपान स्वास्थ्य के लिए हितकर नहीं है।

मधु *वि. (तत्.)* 1. जिसका स्वाद मधुर या मीठा हो। **जैसे:** मधुपेय। 2. प्रिय। **जैसे:** मधुवाणी, मधुरूप। **पुं.** 1. मधुमक्खियों से प्राप्त शहद। 2. पुष्परस, मकरंद। **जैसे:** भ्रमर पुष्पों का मधु पी रहे हैं। 3. वसंत ऋतु। 4. चैत्र मास का पुराणोक्त नाम। **उदा.** नवमी भौमवार मधुमासा (तुलसी रास च.मा.)।

मधुकर *पुं. (तत्.)* **दे.** 'भौंरा'।

मधुप *पुं. (तत्.)* **दे.** 'भौंरा'।

मधुमक्खी *स्त्री. (तद्.<मधुमक्षिका)* एक छोटा कीट जो फूलों का रस चूसकर शहद का छत्ता बना कर उसमें शहद एकत्र करता है। **टि.** इसके डंक से दर्द होता है और शरीर का काटा हुआ हिस्सा सूज जाता है।

मधुमेह *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ मधु का मेह यानी शर्करा (मीठेपन) का प्रवाह (बहना)। आयु. अग्न्याशय में विद्यमान लैंगहैंस द्वीप कोशिकाओं द्वारा इंसुलिन नामक हार्मोन के पर्याप्त मात्रा में उत्पन्न न होने अथवा उसका ठीक प्रकार से उपयोग न होने से उत्पन्न कार्बोहाइड्रेट (शर्करा) चयापचय carbohydrate metabolis रोग। रक्त में सामान्य से अधिक

ग्लूकोस का होना, मूत्र में शर्करा का पाया जाना, पेशाब बहुत आना (बहुमूत्रता), प्यास अधिक लगना (अतिपिपासी), भूख अधिक लगना (अतिक्षुधा) आदि इस रोग के विशिष्ट लक्षण हैं। diabetes

मधुर *वि. (तत्.)* 1. जिसका स्वाद मधु (शहद) जैसा अर्थात् मीठा हो, मीठा, जो शहद की तरह जीभ में देर तक चिपक कर स्वाद देता रहे। 2. मन को प्रसन्न करने वाला। **जैसे:** मधुर दृश्य। 3. सुंदर, कोमल, मोहक **जैसे:** शिशु की मधुर मुसकान।

मधुशाला *स्त्री. (तत्.)* 1. शराब बनाने और बेचने का स्थान, मयखाना/ मैखाना।

मध्य *वि./पुं. (तत्.)* बीच का (भाग), केंद्रीय (भाग) (प्राय: समास के रूप में प्रयुक्त) **उदा.** मध्य प्रदेश, मध्यकाल, मध्याह् न, मध्यरात्रि आदि भूमध्य, भ्रूमध्य आदि। काल में। **जैसे:** परीक्षा के मध्य शांति रखें।

मध्यकर्ण *पुं. (तत्.)* **दे.** 'कर्ण'।

मध्यकाल *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ बीच का समय। ***इति.*** भारतीय इतिहास में सातवीं शताब्दी से लगभग सोलहवीं-सत्रहवीं शताब्दी तक का काल। साहित्य हिंदी साहित्य के इतिहास में भक्तिकाल और रीतिकाल के लिए प्रयुक्त काल-खंड का नाम।

मध्यपाषाण युग *पुं. (तत्.)* (नृवंश./इति.) पुरापाषाण युग और नवपाषाण युग के बीच का काल। **टि.** वैज्ञानिकों के अनुसार इसी काल में पहले पालतू पशु के रूप में कुत्ते को अपनाया गया तथा मानव ने धनुष-बाण का प्रयोग प्रारंभ किया। मिट्टी के बर्तनों का प्रयोग भी इसी काल में प्रारंभ हुआ। mesolithic age

मध्यमंडल *पुं. (तत्.)* भूगो. पृथ्वी की वायुमंडलीय चार परतों-क्षोभ मंडल, समताप मंडल, मध्य मंडल तथा बाह्य मंडल में से तीसरा। इसका विस्तार पृथ्वी की सतह से लगभग 400 कि.मी. से 1000 कि.मी. की ऊँचाई तक है।

मध्यम मार्ग *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ बीच का मार्ग/रास्ता। दर्श. महात्मा गौतम बुद्ध द्वारा प्रवर्तित मत या सिद्धांत, जिसमें किसी भी चरम स्थिति से बचने के लिए कहा गया है।

मध्य-युग *पुं. (तत्.)* इति. मध्यकालीन युग, मध्यकाल का समय। **दे.** मध्यकाल।

मध्यरात्रि *स्त्री. (तत्.)* रात में बारह बजे के आसपास का समय। midnight **पर्या.** अर्धरात्रि, आधीरात। **उदा.** श्री कृष्ण का जन्म मध्यरात्रि में हुआ था।

मध्यवर्ग *पुं. (तत्.)* अर्थ. समाज का वह वर्ग जो न अधिक गरीब है और न ही अधिक धनवान। इस वर्ग के लोग छोटी-मोटी नौकरी और सामान्य व्यापार करके जीवन का निर्वाह करते हैं। middle class

मध्यवर्ती *वि. (तत्.)* 1. जो मध्य में हो, बीच का **उदा.** दो नदियों का मध्यवर्ती भूभाग। 2. तटस्थ- जो दोनों पक्षों द्वारा मान्य हो।

मध्यस्थ *पुं. (तत्.)* 1. वह जो बीच में पड़कर विवाद को सुलझा दे। mediator 2. वह जो दो पक्षों के बीच तालमेल बिठाने का काम करे और इस कार्य से लाभ भी उठाए। **जैसे:** किसान और सामान्य मनुष्य के बीच में व्यापारी। दलाल middle man दो या अधिक पक्षों द्वारा मान्य वह (व्यक्ति या देश) जो विवादों को सुलझाने या समझौता कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

मध्यस्थता *स्त्री. (तत्.)* 1. मध्यस्थ होने का भाव, अवस्था या स्थिति 2. मध्यस्थ का कार्य। **तु.** तटस्थता। mediation

मध्याह्न *पुं. (तत्.)* दिन का वह समय तब सूर्य आकाश में सिर के ऊपर होता है। दोपहर का समय, सामान्य रूप से ग्यारह बजे से दो बजे के बीच का समय।

मन *पुं. (तद्.<मनस्)* शा.अर्थ जीवित प्राणियों में अनुभव, इच्छा, ज्ञान, संकल्प आदि का अनुभव करने वाली शक्ति, अंत:करण, चित्त, हृदय। दर्श. भारतीय चिंतन के अनुसार चार अंत:करणों में से एक जो संकल्प-विकल्प की शक्ति के रूप में माना जाता है। नई-नई कल्पनाएँ करना, खोज

करना इत्यादि इसके कार्य हैं। **टि.** अन्य तीन अंतःकरण बुद्‌धि, चित्त और अहंकार हैं। **मुहा. मन मैला करना-**मन में दुर्भावना आना। **मन टूटना-**उत्साह नष्ट/भंग हो जाना। **मन से उतरना-**मन में अनादर भाव आना। 2. स्वतंत्रता-पूर्व की मापतौल के अनुसार चालीस सेर (लगभग 37 किलोग्राम) की तौल/माप 3. उक्त तौल का बाट।

मनका *पुं. (तद्.<मणिकः)* माला का दाना! **उदा.** कर का मनका डारि कै मन का मनका फेर- कबीर!

मनगढंत *वि. (देश.)* मन में गढ़ा हुआ, कपोलकल्पित, मन की कल्पना मात्र, अप्रामाणिक।

मनचला *वि./पुं. (तद्.)* शा.अर्थ चंचल मन वाला सा.अर्थ रसिक स्वभाव वाला **टि.** सामान्य रूप से इसे दोष माना जाता है।

मनचाहा *वि. (तद्.)* मन में चाहा हुआ। **पर्या.** मनोनुकूल, इच्छित।

मनन *पुं. (तत्.)* 1. किसी विषय पर बार-बार गहराई से किया जाने वाला तर्कपूर्ण अध्ययन या विचार। 2. ऐसा दार्शनिक चिंतन जिसका तर्कसंगत अनुभव या ज्ञान हो। **जैसे:** मनन करने से ही उपनिषदों की भाषा समझी जा सकती है।

मनपसंद *वि. (तद्.+फा.पसंद)* मन को रुचिकर/अच्छा लगने वाला।

मन-बहलाव *पुं. (तद्.)* शा.अर्थ मन को बहलाना, मन को प्रसन्न करने की क्रिया या भाव, मनोरंजन।

मनभावन *वि. (तत्.+तद्.)* मन को अच्छा लगने वाला, मनोहर, सुंदर, सुखद। **जैसे:** वह राधा-कृष्ण की मूर्ति बहुत ही मनभावन है।

मनमाना *वि. (देश.)* उचित-अनुचित, जो मन को भावे, अनुशासन का विचार किए बिना स्वयं की इच्छानुसार किया जाने वाला, रोक-टोक स्वीकार न करते हुए किया जाने वाला, स्वेच्छाचारपूर्वक (स्वेच्छ), जो मन में आए जो भी चाहे। **उदा.** यथेच्छ, जितना जी चाहे।

मनमानापन *पुं. (देश.)* इच्छानुसार, स्वेच्छाचार पूर्वक कार्य करने का भाव, निरंकुश होने का भाव।

मनमानी *(देश.) स्त्री.* 1. जो अपने मन को अच्छा लगे वह करनी। 2. स्वेच्छाचारिता (दूसरे की इच्छा को महत्व न देना)। **उदा.** अब यहाँ पर तुम्हारी मनमानी नहीं चलेगी।

मनमाफिक *[मन+माफिक़मुआफिक़]* *क्रि.वि. (तत्.+अर.)* 1. जो सब प्रकार से मन के अनुकूल हो, मनोनुकूल **जैसे:** आज उसे कई दिनों बाद मनमाफिक भोजन मिला। 2. मनपसंद **जैसे:** न्यायाधीश ने उसके मनमाफिक निर्णय दिया।

मनमुटाव *पुं. (देश.)* शा.अ. मन मोटा होने का भाव सा.अ. तुच्छ स्वार्थ, ईर्ष्या, द्वेष आदि के कारण किसी के प्रति मन में होने वाला वैमनस्य, मनोमालिन्य, शत्रुता आदि का भाव; किसी से मन का न मिलना। **जैसे:** वे दोनों पहले अच्छे मित्र थे किंतु पता नहीं किस बात पर उन दोनों में मनमुटाव हो गया है।

मनमोहक *पुं. (तद्.)* मन को मोहने वाला, प्रिय, आकर्षक।

मनमौज *स्त्री. (तत्.+अर.)* 1. मन की मस्ती, प्रसन्नता, मन की लहर 2. स्वयं के आनंद के लिए इच्छानुसार किया जाने वाला कोई काम या खेल आदि।

मनमौजी *वि. (तत्.+अर.)* बिना किसी सोच-विचार के या बिना किसी के कहे अपने मन की तरंग या इच्छा के अनुसार ही काम करने वाला। स्वेच्छाचारी।

मनसब *पुं. (अर.)* शा.अर्थ पद, ओहदा, अधिकार, कर्तव्य, सेवा। (मुगलकालीन) सेना का एक उँचे पद वाला ओहदा जिसे कुछ विशेष अधिकार उपलब्ध थे।

मनसबदार *पुं. (अर.+फा.)* 1. उच्च पदस्थ अधिकारी, ओहदेदार 2. पीढ़ी दर पीढ़ी वज़ीफा पाने वला (व्यक्ति)।

मनसूबा *पुं. (अर.मन्सूब)* 1. युक्ति, ढंग 2. इरादा, विचार। **जैसे:** मित्र ने अपने जीवन में कई मनसूबे बाँधे किंतु एक में भी सफलता नहीं मिली।

मनस्ताप [मनस्+ताप] *पुं. (तत्.)* 1. किसी कारण से मन को होने वाली तकलीफ। मानसिक कष्ट **जैसे:** उनके अशिष्ट व्यवहार से मित्र को बहुत

मनस्ताप हुआ। 2. पश्चात्ताप **जैसे:** झूठी गवाही देने का उन्हें मनस्ताप था।

मनहूस *वि. (अर.)* 1. अशुभ, अभागा। **वि.** 2. कुरूप **जैसे:** मनहूस शक्ल 3. सदा दु:खी और उदास

मनहूसियत/मनहूसी *स्त्री. (अर.)* मनहूस होने का भाव, दु:ख, उदासी।

मनाना *स.क्रि.(देश.)* 1. रूठे हुए को प्रसन्न करना 2. किसी व्यक्ति को अपनी बात मनवाने/मानने के लिए राजी करना। 3. किसी कामना की पूर्ति के लिए आराध्य से प्रार्थना करना। जन्मदिन/त्यौहार इत्यादि मनाना।

मनाही *स्त्री. (अर.)* निषेधाज्ञा, मना करने का भाव, रोक। **जैसे:** जुलूस निकालने की मनाही है।

मनीषा *स्त्री. (तत्.)* 1. मन की इच्छा, कामना या चाह। 2. बुद्धि, प्रज्ञा 3. सोच-विचार। wisdom

मनीषी *वि./पुं. (तत्.)* विचारशील/मननशील विद्वान wiseman

मनुआ/मनषा दे. 'मन'।

मनुष्य *पुं. (तत्.)* स्तनपायी प्राणी जो अपने बुद्धि बल के कारण सब प्राणियों में श्रेष्ठ माना जाता है। **पर्या.** मानव, आदमी, इंसान।

मनुष्यता *स्त्री. (तत्.)* 1. मनुष्य होने का भाव। 2. मानवोचित गुण, शील, दया, करुणा आदि। 3. शिष्टता, अच्छे सभ्य नागरिक का गुण। humanity

मनुहार *स्त्री. (देश.)* 1. किसी रूठे हुए व्यक्ति को मनाने की क्रिया या भाव। **पर्या.** मनावन, खुशामद 2. किसी से कुछ माँगने या प्रार्थना करने का भाव। **पर्या.** प्रार्थना, विनय।

मनोकामना [मन:+कामना] *पुं. (तत्.)* 1. मन में उठने वाली इच्छा 2. मन में छिपी हुई अव्यक्त इच्छा, अभिलाषा। **जैसे:** ईश्वर तुम्हारी मनोकामना पूरी करे।

मनोकामना *[मन:+कामना] स्त्री.(तत्.)* मन की इच्छा।

मनोदशा *[मन:+दशा] स्त्री. (तत्.)* 1. मन की दशा 2. मन की स्थिति।

मनोनीत *[मन:+नीत] वि. (तत्.)* 1. मन के अनुकूल, पंसद किया हुआ, जो किसी पद पर नियुक्त होने के लिए विशेषाधिकार से चुना गया हो। designated चुना हुआ, नामांकित, नामज़द।

मनोबल *[मन:+बल] वि.(तत्.)* मन का बल। आत्मा का बल। morale

मनोयोग [मन:+योग] *पुं. (तत्.)* मन को किसी कार्य में अच्छी तरह लगाने कि क्रिया या भाव, एकाग्र करने का भाव, मन की एकाग्रता। **जैसे:** मनोयोगपूर्वक पढ़ने से पाठ जल्दी याद होता है।

मनोरंजक *वि. (तत्.)* मन को अच्छा लगने वाला (कार्य या पदार्थ), दिल बहलाने वाला। **जैसे:** उसने सभा में एक मनोरंजक कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

मनोरंजन *[मन:, मनस्+रंजन] पुं. (तत्.)* मन को प्रसन्न करने की क्रिया या भाव, मन-बहलाव

मनोरथ *[मन:,मनस्+रथ] पुं. (तत्.)* अभिलाषा, इच्छा, मन की कामना, भविष्य के विषय में ऊँची कल्पना।

मनोरम *[मन:+रम] वि. (तत्.)* मन को अच्छा लगने वाला, जिसमें मन रम जाए, सुंदर **उदा.** हिमालय की बर्फीली चोटियों का दृश्य अत्यंत मनोरम होता है।

मनोरोग [मन:, मनस्+रोग] *पुं. (तत्.)* मानसिक बीमारी, मन से संबंधित रोग **जैसे:** पागलपन, मिरगी (अवसादग्रस्तता होना) आदि।

मनोविज्ञान (मन:+विज्ञान) *पुं. (तत्.)* वह शास्त्र जिसमें मन, चित्त एवं बुद्धि के समस्त क्रियाकलापों तथा उनसे संबंधित कार्यों या कमियों, रोगों आदि का अध्ययन किया जाता है। psychology

मनोवेग *पुं. (तत्.)* 1. मन की चंचल प्रवृत्ति 2. परिस्थितिवश मन की विभिन्न प्रवृत्तियाँ **जैसे:** भय, क्रोध आदि की स्थिति। mood

मनोहर *[मन:+हर] वि. (तत्.)* 1. मन को हरने (चुराने) वाला, जो मन को अच्छा लगे। 2. देखने में सुंदर। **पर्या.** चित्ताकर्षक।

मनोहारी *वि. (तत्.)* **दे.** 'मनोहर'।

मनौती *स्त्री.* **दे.** 'मन्नत'।

मनौती *स्त्री. (देश.)* **दे.** 'मन्नत'। किसी रूठे व्यक्ति को मनाना। **पर्या.** मनुहार, मनौवल।

मन्नत *स्त्री. (देश. < मानना)* अपनी इच्छा पूर्ति के लिए अपने इष्टदेव से उसे सानुरोध माँगना

और उसकी पूर्ति हो जाने पर संकल्पनानुसार देय वस्तु को इष्टदेव को समर्पित करना।

मन्नत *स्त्री. (देश.)* किसी अभीष्ट कामना की पूर्ति के लिए स्वीकार की गई किसी इष्ट देवता आदि की पूजा। **पर्या.** मानता, मनौती। **मुहा.** मन्नत मानना-मनोकामना की पूर्ति के लिए पूजा, व्रत, सेवा आदि करने का संकल्प करना। **जैसे:** अकबर ने पुत्र-प्राप्ति की मन्नत के लिए पैदल फतेहपुर सीकरी की यात्रा की थी।

मन्वंतर *पुं. (तत्.)* भारतीय काल-गणना में 71 महायुगों (चतुर्युगों) का काल। एक महायुग 43 लाख 20 हजार वर्षों का माना जाता है। इसमें चारों युगों (सत्ययुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग) का काल सम्मिलित है। **टि.** 71 महायुग=एक मन्वंतर, 14 मन्वंतर=एक कल्प=ब्रह्मा का एक दिन। इस समय छठा श्वेत वाराह कल्प, सातवाँ वैवस्वत मन्वंतर और 28 वें कलियुग का पहला चरण चल रहा है।

ममता *स्त्री. (तत्.)* 1. 'मेरा' होने का भाव, मेरापन, किसी के प्रति अपना जैसा होने का भाव, स्नेह, आत्मीयता, ममत्व। 2. माँ का अपनी संतान के प्रति सहज स्नेह, प्रेम। **जैसे:** माता की ममता में सहज उदारतापूर्ण स्नेहभाव होता है। 3. सांसारिक मोह या लोभ। **जैसे:** ममता से मनुष्य का यश नष्ट होता है। **उदा.** 'ममता केहि कर जस न नसावा' (तुलसी-रा.च.मा. 6/61/1)।

ममत्व *पुं. (तत्.)* **दे.** 'ममता'।

मयंद *पुं. (तद्.<.मृगेन्द्र)* वन में रहने वाला मृगराज/सिंह। **जैसे:** उस वन में मैंने दहाड़ते हुए मयंद को देखा। **टि.** प्राय: काव्य में प्रयुक्त शब्द।

मयूर *पुं. (तत्.)* मोर (पक्षी)।

मरकट *पुं. (तद्.<मर्कट)* बंदर, वानर, मर्कट।

मरकत *पुं. (तत्.)* नौ प्रकार के रत्नों में से एक जो हरे रंग का कीमती चमकदार पत्थर या रत्न होता है। **पर्या.** पन्ना।

मरकती *वि. (तद्.)* मरकत मणि के रंग वाला **दे.** 'मरकत'।

मरघिल्ला *पुं. (देश.)* मरणासन्न जैसा, जिसे देखकर ऐसा लगे कि अब मरने ही वाला है। (ग्रामीण प्रयोग) दुबला-पतला, रोगी-सा, मरियल।

मरज/मर्ज *पुं. (अर.)* रोग, बीमारी, व्याधि।

मरज़ी/मर्जी *स्त्री. (अर.)* 1. मन के अनुकूल इच्छा, रूचि। **जैसे:** आपकी मरज़ी के अनुसार उसने विवाह किया है। 2. कृपा। **जैसे:** आपकी मरज़ी से ही मैं यहाँ तक पहुँचा हूँ। 3. आज्ञा, स्वीकृति। **जैसे:** आपकी मरज़ी हो तो मैं उद्यान से फूल ले आऊँ। 4. प्रसन्नता **जैसे:** जैसी आपकी मरज़ी।

मरण *पुं. (तत्.)* शरीर से प्राणवायु का निकल जाना, प्राणांत हो जाने का भाव। **पर्या.** मृत्यु, मौत।

मरणासन्न *[मरण+आसन्न] वि. (तत्.)* जो मरने के करीब हो, जो मरने वाला हो, जिसकी मृत्यु समीप/करीब हो।

मरद/मर्द *पुं. (फा.)* 1. पुरुष, नर, मनुष्य। 2. पुरूषार्थी, वीर, साहसी व्यक्ति 3. पति, स्वामी, भर्ता। **उदा.** क्या आप इस औरत के मरद को पहचानते हैं। **स्त्री./विलो.** औरत।

मरना *अ.क्रि. (तद्.<मरण)* शरीर में से प्राण वायु का निकलना, जान निकलना, शरीरांत हो जाना, मर जाना। **मुहा.** (i) मर मिटना-मेहनत करते-करते या युद्ध करते हुए बलिदान होना। दुर्दशा को या मृत्यु को प्राप्त करना। (ii) मरने तक की फ़ुरसत न होना, काम में बहुत अधिक व्यस्त होना।

मरमर *पुं. (फा.)* एक प्रकार का चिकना और चमकीला पत्थर जो मकराना (राजस्थान) से प्राप्त होता है। **पर्या.** संगमरमर/संगेमरमर। **उदा.** आगरा का ताजमहल संगमरमर से बना हुआ है।

मरम्मत *स्त्री. (अर.)* 1. टूटी-फूटी वस्तु के दोष दूर करके उसे उपयोगी बना देना। **जैसे:** मकान की मरम्मत। 2. किसी की पिटाई करना/होना।

मरहट/मरघट *पुं. (देश.)* शव जलाने का स्थान, श्मशान। **उदा.** कबीर मरि मरहर गया, किनहूँ न बूझी सार। (कबीर साखी-81-3)

मरहम *पुं. (अर.)* एक गाढ़ा, चिकना औषधियुक्त लेप जो चोट, घाव आदि पर लगाया जाता है। ointment

मरहम-पट्टी *स्त्री. (अर.)* किसी चोट या घाव को साफ करके उस पर दवा लगाकर कपड़े या अन्य प्रकार की पट्टी बाँधने की क्रिया।

मरियल *वि. (देश.)* 1. मरे हुए समान 2. दुर्बल-बहुत ही दुबला-पतला आदमी। **पर्या.** मृतप्राय:।

मरीज *पुं. (अर.)* रोगी, बीमार, रोगग्रस्त। जिसे कोई रोग हुआ हो।

मरुत् *पुं. (तत्.)* 1. एक वैदिक देवता। 2. वायु का अधिष्ठाता देवता, वायुदेव। **टि.** हिंदू शास्त्रों में 57 मरुत् माने गये हैं-मरुत् गण। **'चले** पवन उनचास' (तुलसी. रा.च. मानस)।

मरुद्यान *पुं. (तत्.)* रेगिस्तान में पाया जाने वाला हरा-भरा स्थान, रेगिस्तान का वह नीचा स्थान, जहाँ जल सतह पर आ जाता है और परिणामस्वरूप उद्यान बन जाते हैं। **जैसे:** सहारा का मरुद्यान।

मरुस्थल *पुं. (तत्.)* भौगोलिक दृष्टि से वह निर्जल भू-भाग जो पूर्णतया रेतीला होता है तथा बहुत कम वर्षा होने के कारण वनस्पति नाममात्र को कहीं-कहीं दिखाई देती है। **पर्या.** रेगिस्तान, मरुदेश, मरुभूमि। **जैसे:** मरुस्थल में यातायात का एकमात्र साधन ऊँट ही है।

मरुस्थलीकरण *पुं. (तत्.)* वह प्रक्रिया जिसके कारण ज़मीन के अंदर का पानी समाप्त हो जाए या इतना नीचे चला जाए कि प्रयोग न किया जा सके। परिणामस्वरूप उस स्थान की वनस्पति नष्ट हो जाती है और वह ज़मीन मरुभूमि में परिवर्तित हो जाती है और कृषि के योग्य नहीं रह पाती। exsiccation

मरोड़ *स्त्री. (देश.)* 1. मरोड़ने की क्रिया या भाव, ऐंठन। 2. पेट में होने वाली ऐंठन या कष्ट, अजीर्णता के कारण होने वाले रोग का एक लक्षण।

मरोड़ना *स.क्रि (देश.)* **पर्या.** ऐंठना, उमेठना (कान, किस वस्तु के एक सिरे को स्थिर रखते हुए दूसरे सिरे को गोलाकार घुमाने की क्रिया।

मर्कट *पुं. (तत्.)* बंदर, बानर, कपि।

मर्ज़ी *स्त्री. (अर.)* **दे.** 'मरजी'।

मर्तबा *पुं. (अर.)* पद, दरजा, श्रेणी। **उदा.** उसका मर्तबा काफ़ी ऊँचा है। अव्य. बार, दफ़ा। **उदा.** मैंने ऐसा नज़ारा (दृश्य) पहली मर्तबा देखा है।

मर्तबान *पुं. (फ़ा.)* चीनी मिट्टी (पोर्सिलेन) का बना हुआ बर्तन, जिसमें अचार, मुरब्बा आदि रखा जाता है। **पर्या.** इमरतबान।

मर्द *(पुं.) (फा.)* 1. (लिंग आधारित) नर, पुरुष। 2. वीर और साहसी पुरुष। 3. पति। **उदा.** नदी में डूबते बालक को बचाकर उसने मर्द का काम किया है। **विलो.** नामर्द, नपुंसक।

मर्दन *(पुं.) (तत्.)* 1. रगड़ कर मलने की क्रिया या भाव। **जैसे:** तेल आदि चिकने पदार्थ या दवा को शरीर पर मलना। 1. मालिश, 2. मसलना, 3. कुचलना, रौंदना। **जैसे:** मान-मर्दन।

मर्दानगी *(स्त्री.) (फा.)* 1. वीरता या साहसपूर्ण आचरण। 2. पौरुष। 3. साहस, हिम्मत। **उदा.** हमने उस लुटेरे को पकड़ने में तुम्हारी मर्दानगी देखी।

मर्दाना *(वि.) (फा.)* 1. पुरुष संबंधी, पुरुषों का। **जैसे:** मर्दाना अस्पताल। 2. पुरुषों के समान। **जैसे:** उस स्त्री ने मर्दाना वस्त्र पहने हैं। 3. वीरों जैसा, साहसपूर्ण। **जैसे:** मर्दाना काम करना। **विलो.** जनाना।

मर्म *(पुं.) (तत्.)* 1. रहस्य, भेद। **उदा.** तेरा मर्म कोई नहीं जान सकता। 2. तत्व। 3. शरीर का वह कोमल भाग/अंग जहाँ चोट लगने पर बहुत पीड़ा हो या मृत्यु हो जाए। 4. हृदय।

मर्मज्ञ *वि. (तत्.)* किसी बात का मर्म (गूढ़ रहस्य) जानने वाला, सूक्ष्म बातों का जानकार, तत्वज्ञ।

मर्मर *(अं.)* अस्पष्ट सुनाई देने वाली ध्वनि, फुसफुसाहट (पूर्ण)। murmer

मर्मस्थल *पुं. (तत्.)* शरीर के वे कोमल अंग जिन पर चोट लगने से सबसे अधिक कष्ट या हानि होती है। **जैसे:** नाक, हृदय, अंडकोश आदि।

मर्मस्पर्शी *वि. (तत्.)* हृदय/मर्म को स्पर्श करने वाला, मन को छूने वाली (बात.) संवेदना जगाने वाला (भाव)।

मर्यादा *स्त्री. (तत्.)* 1. सीमा, हद, प्रतिष्ठा। 2. समाज में प्रचलित नियम एवं व्यवहार जिनका उल्लंघन वांछित नहीं होता।

मल *पुं. (तत्.)* शरीर से निकलने वाला मैल। **जैसे:** मूत्र, पसीना, पाखाना, कफ आदि। मैल, गंदगी, विष्ठा।

मलद्वार *पुं.(तत्.)* शा.अर्थ मल के बाहर निकलने का रास्ता, पाँच कर्मेंद्रियों में से एक। **दे.** 'गुदा'।

मलना *सं.क्रि. (तद्.<मर्दन)* 1. मालिश करना। **जैसे:** शरीर में तेल मलना। 2. हाथ की सहायता से रगड़ना। **जैसे:** कपड़े पर साबुन मलना।

मलबा *पुं. (देश.)* गिरे या तोड़े गए भवनों की अनुपयोगी टूटी ईंटें, मिट्टी, मसाला आदि का ढेर जो भराव के ही योग्य होता है।

मलमल *स्त्री. (तद्.)* एक प्रकार का बहुत बढ़िया सूती वस्त्र जो बहुत कोमल, चिकना, बारीक और सफ़ेद रंग का होता है। **जैसे:** ढाका की मलमल। **पर्या.** मस्लिन। muslin

मलमास *पुं. (तत्.)* भारतीय काल गणना में लगभग तीन वर्ष के बाद आने वाला अमावस्या से अमावस्या तक का महीना जिसमें सूर्य की संक्रांति नहीं होती। इसकी गणना 12 मासों में नहीं होती। अत: वर्ष तेरह महीने का हो जाता है। **पर्या.** अधिक मास, पुरुषोत्तम मास, लौंद का महीना। **टि.** 1. सूर्य और चंद्रमा की गतियों में तालमेल बैठाने के लिए भारतीय ज्योतिषशास्त्र में यह व्यवस्था की गई है। 2. इस मास में विवाह आदि सामाजिक शुभ कार्य वर्जित माने जाते हैं पर ईश्वर-आराधना के लिए इसे उत्तम माना गया है।

मलमूत्र *(पुं.) (तत्.)* शरीर के अंदर से बाहर फेंके जाने वाले अपशिष्ट।

मलहम *पुं. (अर.)* घाव पर लगाने का लेप। **दे.** 'मरहम'।

मलाई *स्त्री. (देश.)* 1. दूध-दही आदि पर जमने वाली ऊपरी परत जिसमें वसा की मात्रा 20 प्रतिशत से अधिक होती है। 2. सार, तत्व। **टि.** दूध की मलाई को गर्म करने पर प्राप्त द्रव पदार्थ घी कहा जाता है। 3. मलने (सहलाते हुए रगड़ने) का भाव। 4. मलने के बदले दी जाने वाली मज़दूरी।

मलाल *पुं. (अर.)* 1. किसी कार्य को सही समय पर या सही ढंग से न करने का दु:ख, पछतावा। **पर्या.** पश्चात्ताप। 2. दु:ख, रंज, अफ़सोस। **जैसे:** मुझे विदेश जाने का अवसर मिलने पर भी वहाँ न जाने का आज भी मलाल है।

मलाशय [मल + आशय] *पुं.* शा.अर्थ. मल का स्थान। **प्राणि.** बड़ी आँत का अंतिम फूला हुआ अंग जिसमें मल इकट्ठा होता है और गुदा द्वार से बाहर निकलता है। retal, rectum

मलिन/मलीन *वि. (तत्.)* 1. मैला, गंदा; जिसमें चमक न हो, श्रीहीन, फीका। **उदा.** मलिन प्रकाश वाला तारा। मलीन चेहरा। 2. विकार-युक्त। **उदा.** मलिन मन वाला। **विलो.** स्वच्छ।

मलेरिया परजीवी *पुं. (अं+तत्.)* प्रोटोजोआ संघ phyllum के स्पोरोज़ोआ वर्ग genes में प्लाज़्मोडियम वंश (जीनस) के रोगाणु का सामान्य नाम। **टि.** वयस्क अवस्था में यह मादा एनोफिलीज़ मच्छर के शरीर में रहता है और मच्छर के काटने पर मानव के रुधिर में पहुँच कर मलेरिया रोग उत्पन्न करता है।

मलेरिया *पुं. (अं.)* एक विशेष प्रकार के (एनोफ्लीज़) मच्छर के काटने से होने वाला ज्वर या बुखार।

मलेरिया-रोधी *वि. (अ.+तत्.)* 1. जो मलेरिया से बचाए। (ऐसी औषधि या उपाय)। 2. जो मलेरिया को रोके।

मल्ल युद्ध *पुं. (तत्.)* कुश्ती। **टि.** प्राचीन काल में मल्ल एक जाति थी। उस जाति के लोग द्वंद्व युद्ध में बहुत निपुण होते थे, इसीलिए कुश्ती लड़ने वाले को 'मल्ल' और द्वंद्व युद्ध को मल्लयुद्ध कहते हैं। wrestling

मल्लाह *पुं. (अर.)* 1. नाविक, केवट, माँझी। 2. एक जाति जो नाव चलाने और मछली मारने का व्यवसाय करती है।

मल्लिका *स्त्री. (तत्.)* 1. बेला की जाति का सफेद रंग के सुगंधित फूलों वाला एक पौधा, मोतिया, मोगरा; उक्त पौधे के फूल। 2. चमेली की बेल या उसका फूल।

मवाद *(पुं.) (अर.)* घाव या फोड़े से निकलने वाला पीले से रंग का गाढ़ा तरल। pus

मवेशी *पुं. (अर.<मवाशी)* घरों में पाले जा सकने वाला तथा कृषि, दुग्ध-उत्पादन, सवारी आदि के काम आने वाला पशु। **टि.** इन पशुओं के पैरों में खुर होते हैं।

मवेशीख़ाना *पुं. (फा.)* 1. पालतू चौपाए रखने का स्थान, घेरा, बाड़ा, पशुशाला। 2. नगरपालिका आदि द्वारा आवारा पशुओं को बंद करने का स्थान। काँजी-हाउस। kine house

मशक *स्त्री. (अर.)* पानी भरने के लिए चमड़े की बड़ी थैली। *(तत्.)* 1. मच्छर 2. शरीर पर का मसा।

मशक्कत *स्त्री. (अर.)* 1. परिश्रम, मेहनत, श्रम। **उदा.** दलदल में फँसी गाड़ी को बाहर निकालने के लिए उन्हें काफ़ी मशक्कत करनी पड़ी। 2. दौड़-धूप। **उदा.** काफ़ी मशक्कत के बाद यह नौकरी मिली है।

मशगूल *वि. (अर.)* 1. जो किसी काम में लगा हुआ हो, संलग्न, लीन। 2. व्यस्त। **जैसे:** वह अतिथियों के स्वागत में मशगूल है। involved

मशगूलियत *स्त्री. (अर.)* 1. व्यस्तता 2. लीनता।

मशविरा/मशवरा *पुं. (अर.)* सलाह, परामर्श, विचार-विमर्श। **उदा.** इस बारे में पिताजी से मशविरा कर लो।

मशहूर *वि. (अर. > मश्हूर)* जिसे अधिकतर लोग जानते-पहचानते हों। **पर्या.** विख्यात, प्रसिद्ध।

मशाल *स्त्री. (अर.)* लंबी लकड़ी जिसमें कपड़ा लपेटकर और उस पर तेल इत्यादि डालकर जलाते हैं और प्रकाश प्राप्त करते हैं।

मशीन *स्त्री. (अं.)* कल-पुरजों से बना यंत्र जिससे काम जल्दी बड़ी मात्रा में और एक जैसा हो। कल, यंत्र।

मसख़रा *पुं. (अर.<मस्ख़र:)* 1. अपनी विशेष हाव-भाव युक्त क्रियाओं या शब्दों आदि से दूसरों को खुश करने वाला, परिहास करने वाला। मज़ाकिया। **जैसे:** सरकस का मसख़रा सबको खूब हँसाता है। 2. दूसरों की नकलें करने वाला। **पर्या.** विदूषक। **जैसे:** हर नाटक में एक मसख़रा होता है। joker, comedian

मसखरापन/मसखरी *पुं. (स्त्री.)* हँसी, मज़ाक, दिल्लगी। **जैसे:** तुम्हारी मसख़री करने की आदत अभी नहीं गई।

मसजिद *स्त्री. (फ़ा.<मस्जिद)* वह भवन जहाँ मुसलमान नमाज़ पढ़ते हैं। **तु.** मंदिर, गुरुद्वारा, गिरजाघर।

मसनद *पुं. (अर.)* शा.अर्थ बड़ा तकिया, वह फर्श या गद्दी जिस पर प्रतिष्ठित लोग बैठें। **उदा.** मसनद बिछा दो। सा.अर्थ बेलनाकार बड़ा तकिया।

मसलन *क्रि.वि. (अर.)* मिसाल (उदाहरण) के तौर पर, उदाहरणार्थ, जैसे।

मसलना *स.क्रि. (देश.)* 1. उँगलियों से दबाते हुए किसी वस्तु को रगड़ना। **पर्या.** मलना। 2. जोर लगाकर दबाना। **मुहा.** मसल देना-नष्ट कर देने की धमकी।

मसविदा/मसौदा *पुं. (अर.)* किसी लेख का प्रारंभिक रूप जिसे काँट-छाँटकर शुद्ध किया जाए। **पर्या.** प्रालेख draft

मसहरी *स्त्री. (तद्.)* मच्छरों से बचाव के लिए पलंग या चारपाई के चारों ओर लगाने का विशेष जालीदार पर्दा, मच्छरदानी।

मसाला *पुं. (अर.)* वह सामग्री, जिसकी सहायता से कोई चीज उपयोगी, स्वादिष्ट, सुग्राह्य और संग्रहणीय बन जाए। **जैसे:** मकान बनाने का मसाला, पान का मसाला, सब्जी बनाने का मसाला, अखबार के लिए मसाला, बर्तन जोड़ने का मसाला, फिल्मी मसाला आदि।

मसालेदार *वि. (अर.+ फा.)* जिसमें मसाला डाला गया हो, चटपटा, मसाले से युक्त। **दे.** 'मसाला'। **जैसे:** मसालेदार सब्ज़ी।

मसीह *पुं. (अर.)* ईसाइयों के धर्मगुरु प्रवर्तक हज़रत ईसा, यीशु। christ

मसीहा *पुं. (अर.)* 1. वह जिसमें रोगियों को नीरोग करने की शक्ति हो, महापुरुष। 2. ईसाई धर्म के प्रवर्तक।

मसूड़ा *पुं. (तद्.)* मुँह के अंदर का जबड़े से लगा मांसल भाग जिसमें दाँत उगे होते हैं, दाँतों से चिपका हुआ ऊपर और नीचे का मांस। gum

मसूरिका *स्त्री. (तत्.)* **दे.** 'चिकनपॉक्स'।

मसोसना *अ.क्रि.* (देश.) (फा.<*अफ़सोस)* 1. किसी बात पर मन ही मन खेद या दु:ख करना, कुढ़ना। 2. पछतावा करना। **उदा.** असावधानी की वजह से चोरी हो जाने पर वह मन मसोसकर रह

गया। *(स.क्रि.)* मरोड़ना, ऐंठना। **उदा.** उसने मेरी गर्दन मसोस दी।

मसौदा *पुं. (अर.<मसविद:)* किसी कार्य, योजना, बातचीत के विषय में प्रारंभिक विचार के बाद प्रस्तावित प्रारूप, जिसमें बाद में आवश्यक सुधार करके अंतिम रूप दिया जा सके। **पर्या.** प्रारूप (ड्राफ्ट), मसविदा। **जैसे:** देश में अनिवार्य शिक्षा लागू करने के कानून का मसौदा तैयार है।

मस्त *वि. (फ़ा.)* शा.अ. बहुत अधिक प्रसन्न। **सा. अ.** मतवाला, बेपरवाह, मत्त या नशे में चूर। निश्चिंत, निस्पृह।

मस्तमौला *वि. (फा.+अ.)* 1. जो अपने कार्यों, विचारों में ही मस्त रहता हो। 2. जो अपनी इच्छानुसार सभी कार्य करता हो, जिसे किसी की परवाह न हो, मनमौजी, प्रसन्नचित्त।

मस्तिष्क *पुं. (तत्.)* 1. दिमाग, मस्तक के अंदर का गूदा। 2. बुद्धि, वह मानसिक शक्ति जिसके माध्यम से मनुष्य चिंतन-मनन करता है और निर्णय लेता है।

मस्ती *स्त्री. (फा.)* 1. मस्त या मतवाला होने की स्थिति या भाव। 2. मतवालापन, लापरवाही, निस्पृहता।

मस्तूल *पुं. (फ़ा.)* बड़ी नाव, जहाज आदि के बीच में ऊर्ध्वाधर गाड़ा हुआ लंबा खंभा या लट्ठा जिसमें झंडा, पाल आदि बाँधा जाता है। mast

मस्लिन *स्त्री. (अं.<मोजिलिंग फ्रांसीसी)* **दे.** 'मलमल'।

मस्सा *(पुं.) (तद्.<मांस)* मानव शरीर पर काले रंग के दाने के रूप में उभरा हुआ मांस पिंड जो दर्दरहित होता है। mole

महँगा *वि. (तद्.<महार्घ)* 1. जिसका मूल्य अपेक्षाकृत अधिक हो। 2. अधिक मूल्य वाला, बहुमूल्य। 3. अधिक श्रम या कठिनाई से प्राप्त होने वाला। **जैसे:** मुझे यह परीक्षा बहुत महँगी पड़ी है। **मुहा.** महँगा पड़ना-बुरे परिणाम वाला। **जैसे**: मेरे काम में दखल देना तुम्हें महँगा पड़ेगा।

महँगाई *स्त्री. (देश.<महँगा)* वस्तुओं की कीमत अपेक्षाकृत बहुत अधिक होने का भाव।

महँगाई भत्ता *पुं. (देश.)* नौकरी करने वालों को बढ़ी हुई महँगाई के फलस्वरूप मिलने वाला अतिरिक्त धन या भत्ता। **दे.** 'महँगाई'।

महंत *पुं. (तद्.)* 1. वह साधु जो अपने मठ या समाज का प्रधान हो। 2. साधु संघ का मुखिया। 3. मठाधीश।

महक *स्त्री. (तद्. < महक्क:)* गंध, सुगंध, वास। **जैसे:** फूलों की महक आ रही है।

महकदार *वि. (देश.)* जिसमें महक हो, महकने वाला, सुगंधित, खुशबूदार। **उदा.** इस वाटिका में अधिकतर महकदार पुष्प खिले हैं।

महकना *अ.क्रि. (देश.)* सुगंध फैलाना। **उदा.** गुलाब के फूलों की गंध से सारी वाटिका महक गई।

महकमा *पुं. (अर.)* 1. प्रशासनिक दृष्टि से व्यवस्था करने वाला कोई एक विभाग। 2. न्यायालय, कचहरी।

महज *क्रि.वि. (अर.)* केवल, सिर्फ, मात्र, **जैसे:** यह तो महज शुरूआत है।

महजर *पुं. (अर.)* किसी प्रयोजन से किसी बड़े अधिकारी को दिया गया प्रार्थनापत्र। petition

महजरनामा *(पुं.)* घोषणापत्र, सूचनापत्र।

महती *(स्त्री.) (तत्.)* 1. महत्व, महिमा, महत्ता। 2. वीणा। 3. सौ तारों वाली वीणा। *वि.* 1. बड़ी 2; श्रेष्ठ 3. महान। **उदा.** आपने हमारे यहाँ पधारकर महती कृपा की।

महत् *वि. (तत्.)* 1. महान्, बड़ा 2. विस्तृत 3. विपुल। **उदा.** यह महत् साक्षरता अभियान है।

महत्व *(महत्+त्व) पुं. तत्.* व्यु.अर्थ महान होने की अवस्था या भाव। सा.अर्थ 1. विशेषता, खासियत। 2. गुरुता, अधिक आवश्यक होने का भाव। **तु.** महत्ता।

महत्वपूर्ण *वि. (तद्.)* महत्व से युक्त, महत्व वाला। **उदा.** यह कार्य अधिक महत्वपूर्ण है। important, significant

महत्वाकांक्षा *स्त्री. (तत्.)* 1. महत्व प्राप्त करने की उत्कट इच्छा 2. अत्यंत कठिनता या परिश्रम से प्राप्त वस्तुओं (**जैसे:** विपुल धन-संपत्ति, उच्च पद-प्रतिष्ठा, सफलता) को आसानी से प्राप्त कर लेने की इच्छा।

महत्वाकांक्षी *वि. (तद्.)* (व्यक्ति) जो महत्तवाकांक्षा पाल रखे। **दे.** महत्वकांक्षा।

महफिल *स्त्री. (अर.)* 1. गोष्ठी, सभा, जलसा 2. ऐसी सभा जिसमें नृत्य, संगीत का मनोरंजक कार्यक्रम हो रहा हो। **जैसे:** आज उस महफिल में

संगीत और नृत्य का समाँ बँधा हुआ था। **मुहा.** महफिल जमना-गोष्ठी/सभा जुड़ना, जलसा होना। **उदा.** कल उसके घर दोस्तों की महफिल जमी हुई थी।

महफ़ूज *वि. (अर.)* जिसकी अच्छी तरह हिफाजत की गई हो, भली-भाँति सुरक्षित **मुहा.** महफूज रखना-सब प्रकार की आपन्तियों आदि से रक्षा करना।

महबूब *पुं. (अर.)* प्रिय, प्रियतम, प्रेमपात्र। महबूबा (स्त्री.) प्रेयसी, प्रेमपात्री।

महराब *स्त्री. (अर.)* **दे.** 'मेहराब'।

महरी *स्त्री. (देश.)* दूसरे के घरों में बर्तन साफ़ करने, सफाई करने का काम करने वाली महिला। **पर्या.** कहारिन।

महरूम *वि. (अर.)* 1. जिसे कोई वस्तु प्राप्त न हुई हो, वंचित। **उदा.** गरीबी के कारण कुछ बच्चे शिक्षा से महरूम रह जाते हैं (**टि.** मरहूम (स्वर्गीय) की याद बनाए रखना आवश्यक है।

महर्षि *[महा+ऋर्षि] पुं.(तत्.)* बहुत बड़े ऋषि, ऋषियों में श्रेष्ठ **जैसे:** महर्षि वसिष्ठ।

महल *पुं. (अर.)* 1. धनाढ्य लोगों या राजाओं के रहने का बहुत बड़ा मकान, प्रासाद, हवेली **जैसे:** राजमहल 2. रानी। **जैसे**: मुमताज महल 3. रानियों के रहने का स्थान **पर्या.** अंत:पुर, रनिवास।

महसूस *वि./स्त्री. (अर.)* वह बात जो ज्ञानेंद्रियों या मन आदि के द्वारा जानी जाए, अनुभूत, ज्ञात, मालूम। **उदा.** आज ठंड महसूस हो रही है।

महाकाव्य *पुं. (तत्.)* बहुत बड़ा काव्य, अनेक सर्गों, कांडों आदि में विभक्त प्रबंध काव्य जिसमें प्राय: किसी महापुरुष का जीवन-चरित वर्णित होता है। **जैसे:** रामचरित मानस, कामायनी **टि.** संस्कृत साहित्य शास्त्र में महाकाव्य में लक्षणों की विस्तृत चर्चा है।

महाक्रांति *स्त्री. (तत्.)* 1. राजनैतिक या सामाजिक रूप में संघर्षपूर्वक किया गया बहुत बड़ा परिवर्तन जो एक लंबी प्रक्रिया के बाद संभव होता है। **जैसे:** नेपाल में राजतंत्र की जगह लोकतंत्र की स्थापना महाक्रांति ही थी। 2. विकास की दृष्टि से बहुत बड़ा परिवर्तन **जैसे:** भारत में औद्योगिक क्रांति 3. सामाजिक परिवर्तन का दौर **जैसे:** स्वामी दयानंद द्वारा आर्य समाज की स्थापना एक महाक्रांति थी।

महाखड्ड *पुं. (तद्.)* भू-कठोर चट्टानों वाली दो पहाड़ियों के बीच नदी के कटाव से बना वह गहरा गड्डा जिसके ऊपर का हिस्सा खड़ी दीवारों जैसा होता है। **जैसे:** जबलपुर के पास भेड़ाघाट का महाखड्ड संकीर्ण चट्टानी नदी-घाटी। gorge **पर्या.** खड्ड-भूमि, गिरिसंकट। ravine रेवाइन।

महाचक्रवात *पुं. (तत्.)* बड़ा चक्रवात **दे.** चक्रवात।

महाजन *पुं. (तत्.)* 1. महापुरुष, 2. धनी व्यक्ति। जो पैसे का लेन-देन करता हो। 3. ऋण देने वाला। reditor

महाजनपद *पुं. (तत्.)* 1. अपेक्षाकृत बड़े क्षेत्र वाला जिला। **जैसे:** छत्तीसगढ़ में बस्तर जिला 2. प्राचीन काल में बड़े राज्यक्षेत्रों के लिए प्रयुक्त शब्द।

महाजनी *स्त्री. (तद्.)* महाजन का व्यवसाय/कर्म, रुपयों का लेन-देन।

महात्मा *पुं./वि. (तद्.<महात्मन्)* श्रेष्ठ विचारों वाला, पवित्र आत्मा वाला संत, योगी, महापुरुष **जैसे:** महात्मा गांधी।

महादंडनायक *पुं. (तत्.)* प्राचीन काल में प्रचलित मुख्य न्याय अधिकारी के लिए प्रयुक्त पद का नाम, उच्च स्तर का दंडनायक।

महादेश *पुं. (तत्.)* **भू.** समुद्र के बीच उठा हुआ चट्टानी भूभाग जो एक बड़ा क्षेत्र घेरता है। **जैसे:** एशिया महादेश **पर्या.** महाद्वीप continent **टि.** बड़ा क्षेत्र होने के कारण सांस्कृतिक, राजनैतिक कारणों से अनेक राज्य या देश उसमें बन जाते हैं **दे.** 'महाद्वीप'।

महाद्वीप *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ बहुत बड़ा द्वीप। **भू.** पृथ्वी का वह बड़ा भाग जो चारों ओर से पानी से घिरा हुआ हो **उदा.** एशिया महाद्वीप, अफ्रीका महाद्वीप। **तु.** प्रायद्वीप **दे.** द्वीप।

महाधमनी *स्त्री. (तत्.)* शरीर की प्रमुख धमनी जो अन्य धमनियों एवं उनकी असंख्य शाखाओं द्वारा रुधिर को हृदय से शरीर के अधिकतर भागों तक ले जाती है। aorto

महान *वि. (तद्.)* बड़ा (महान व्यक्ति), ऊँचा, विशाल, उच्च कोटि का, श्रेष्ठ **उदा.** हमारा देश महान है।

महानगर *पुं. (तत्.)* किसी प्रांत या क्षेत्र का प्रमुख शहर या नगर। **जैसे:** मुबई, दिल्ली, कानपुर, इलाहाबाद, बेंगलुरू आदि। metroploitan town

महानता *स्त्री. (तद्.)* महान होने की स्थिति या भाव।

महानाश *पुं. (तत्.)* बहुत बड़ा विनाश। ऐसी स्थिति जिसमें जन, धन की बड़ी क्षति हुई हो।

महापरिनिर्वाण/महानिर्वाण *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ मृत्यु। **दर्श.** बौद्ध मत के अनुसार वह प्रक्रिया जिसके होने पर साधक बुद्ध या अर्हत् बन जाता है।

महापुरुष *पुं. (तत्.)* 1. महान् व्यक्ति, महिमाशाली पुरुष 2. वह व्यक्ति जिसका आचरण अनुकरणीय हो। **उदा.** महात्मा गाँधी महापुरुष थे।

महापौर *पुं. (तत्.)* नगरपालिका का प्रधान, नगर-प्रमुख। mayor

महाप्रलय *पुं. (तत्.)* 1. वह प्रलय जिसमें सारी सृष्टि का विनाश हो जाता है। 2. भारतीय कालगणना के अनुसार ब्रह्मा की आयु पूर्ण होने पर होने वाला संपूर्ण सृष्टि का विनाश।

महाप्राण *वि. (तत्.)* महान् आत्मा वाला, उदार **उदा.** महाप्राण निराला आधुनिक हिंदी साहित्य के प्रमुख कवियों में से एक हैं। वे व्यंजन जिनके उच्चारण में मुख से अधिक हवा निकलती है (हिंदी वर्ण व्यवस्था के पाँचों वर्गों के दूसरे और चौथे वर्ण महाप्राण स्वन हैं)।

महाबलशाली *वि. (तत्.)* शा.अर्थ श्रेष्ठ बलवान ला.अर्थ बहुत बड़ा योद्धा।

महाबली *वि. (तत्.)* बहुत श्रेष्ठ बलवान, अधिक शक्तिशाली **जैसे:** महाबली, भीम।

महाभारत *पुं. (तत्.)* 1. महर्षि वेदव्यास रचित वह संस्कृत महाकाव्य जिसमें कौरवों एवं पांडवों के युद्ध का वर्णन है तथा विश्व प्रसिद्ध 'श्रीमद्भगवतद्गीता' नामक प्रसिद्ध धार्मिक ग्रंथ भी इसी का अंश है। संपूर्ण महाभारत 18 पर्वों में है। 2. ला.अर्थ बहुत बड़ा युद्ध या विवाद। **जैसे:** उन दोनों के बीच महाभारत छिड़ा हुआ है।

महाभियोग *[महा+अभियोग] पुं. (तत्.)* सदनों में विशिष्ट बहुमत से सहमति के पश्चात् देश के राष्ट्रपति या उच्च/सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश पर चलाया जाने वाला मुकदमा जिसके कारण संबंधित पदधारी पदच्युत हो सकता है। impeachment

महामंडलेश्वर *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ किसी क्षेत्र का बड़ा शासक। वि.अर्थ 1. प्राचीन काल के सैनिक शासकों द्वारा स्वयं को दी हुई उपाधि, 'महासामंत'। 2. किसी विशिष्ट धार्मिक संप्रदाय का सर्वोच्च अधिकारी या महाधिपति।

महामंत्री *पुं. (तत्.)* प्राचीन काल में राज्य या साम्राज्य का प्रधानमंत्री। **पर्या.** महामात्य। **दे.** महामात्य।

महामहिम *वि. (तत्.)* जिसकी महिमा बहुत अधिक हो बहुत महिमा वाला। **टि.** आजकल यह राष्ट्रपति एवं राज्यपाल के लिए प्रयुक्त होता है, **जैसे:** महामहिम राष्ट्रपति, महामहिम राज्यपाल।

महामात्य *पुं. (तत्.)* महामंत्री, किसी राज्य या संस्था का वह मंत्री जो सभी मंत्रियों में प्रमुख हो, प्रधानमंत्री। secretary general, chief minister, prime minister

महामारी *स्त्री. (देश.) स्त्री.* वह संक्रामक भीषण रोग जिससे बड़ी संख्या में लोग मरते रहें। **जैसे**: हैजा, प्लेग, एड्स, स्वाइन फ्लू आदि। epidemic

महायुग *पुं. (तत्.)* 1. भारतीय काल गणना के अनुसार सत्य, त्रेता, द्वापर, कलि इन चारों युगों का समूह। 2. एक महायुग 43,20,000 वर्षों का माना जाता है।

महायुद्ध *पुं. (तत्.)* बहुत बड़ा, भीषण और व्यापक युद्ध जिसमें बहुत से बड़े-बड़े देश या राष्ट्र सम्मिलित हों। **जैसे:** प्रथम और द्वितीय-दोनों विश्व युद्ध 'महायुद्ध' थे।

महारत *स्त्री. (अर.)* योग्यता, कौशल, जानकारी, पहुँच। किसी क्षेत्र में विशेषज्ञ होने का भाव। **उदा.** हड्डियों के ऑपरेशन में डॉक्टर साहब को महारत हासिल है।

महारथी *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ बड़े रथ वाला। **सा.अ.** प्राचीन काल में वह बहुत बड़ा योद्धा जो अकेला हजारों योद्धाओं के साथ युद्ध कर सकता था।

महावत *पुं. (तद्.)* हाथियों की देखरेख और संचालन करने वाला, **पर्या.** पीलवान, हाथीवान।

महावर *पुं. (तद्.<महावर्ण)* लाख से तैयार गहरा चमकदार वह लाल रंग जिसे स्त्रियाँ विशेष रूप से सौभाग्यवती, मांगलिक अवसरों पर अपनी एड़ियों और तलवे के किनारों पर लगाती हैं।

महाविद्यालय *[महा + विद्या +आलय] पुं. (तत्.)* वह विद्यालय जिसमें ऊँची कक्षाओं का शिक्षण होता है। collage

महावीर चक्र *पुं. (तत्.)* अधिक शौर्यपूर्ण कार्य करने के लिए भारत सरकार द्वारा सैनिकों को दिया जाने वाला विशिष्ट पुरस्कार (पदक)

महाशय *पुं. (तत्.)* उच्च विचारों वाला व्यक्ति, सज्जन, ऐसे व्यक्तियों के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला संबोधन।

महासंग्राम *पुं. (तत्.)* बहुत बड़ा युद्ध जिसमें बड़ी संख्या में सैनिक हताहत हों।

महासागरीय बेसिन *(तत्.+ अं.) पुं.* **भूगो.** भूपृष्ठ पर स्थित बहुत बड़े गर्त जिसमें महासागर बन जाते हैं।

महिमा *स्त्री. (तत्.)* 1. बड़ाई, गौरव, महत्त्वपूर्ण होने का भाव, विशिष्टता। 2. आठ सिद्धियों (अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व और वाशित्व) में से एक।

महिला *स्त्री. (तत्.)* 1. भद्र नारी, अच्छे घर की स्त्री। 2. नारी के लिए आदरसूचक शब्द।

महिष *पुं. (तत्.)* भैंसा।

महिषी *स्त्री. (तत्.)* 1. भैंस। 2. रानी (राजा की पटरानी)।

मही *स्त्री. (तत्.)* 1. पृथ्वी। *पुं.* छाछ (मथित, मथा हुआ दही) 2. मट्ठा, छाछ।

महीधर *(मही+धर) पुं. (तत्.)* मही (धरती) को धारण करने वाला पर्वत। **जैसे:** महीधरों के उन्नत शिखर सर्प से सुशोभित हैं।

महीन *वि. (फा.)* बारीक, बहुत पतला, सूक्ष्म; धीमा, कोमल। **जैसे:** महीन स्वर, महीन वस्त्र। **विलो.** मोटा।

महीना *पुं. (तद्.)* 1. भारतीय काल गणना के अनुसार चंद्रमा द्वारा पृथ्वी की परिक्रमा की कालावधि। 2. पृथ्वी द्वारा सूर्य की परिक्रमा की कालावधि अर्थात् वर्ष का बारहवाँ भाग। **पर्या.** मास 3. तीस दिन की अवधि।

महीप *पुं. (तत्.)* अपने राज्य की धरती तथा उसमें रहने वालों की रक्षा करने वाला, राजा। **पर्या.** महीपति, भूपति, भूपाल, भूप।

महुआ *पुं. (तद्.<मधूक)* आम के वृक्ष के आकार का एक वृक्ष, जिसका फूल खाने एवं शराब बनाने के काम आता है। इसके फल से तेल भी निकाला जाता है। इसकी लकड़ी दरवाजे, फर्नीचर आदि बनाने के काम आती है।

महोत्सव *[महा+उत्सव] पुं. (तत्.)* शा.अर्थ बड़ा उत्सव, ऐसा उत्सव जो व्यापक स्तर पर बड़ी साज-सज्जा एवं धूमधाम से मनाया जाता है।

महोदय *पुं. (स्त्री.) (तत्.)* एक आदरसूचक संबोधन जिसका प्रयोग बड़े आदमियों या वरिष्ठ अधिकारियों के लिए किया जाता है। **जैसे:** जिलाधीश महोदय, प्रिय महोदय, अध्यक्ष महोदय आदि।

मिचलाना *अ.क्रि. (देश.)* वमन या उल्टी करने जैसा अहसास मात्र (पर वास्तव में वमन न होना)।

मिचलाहट *स्त्री. (देश.)* मिचली का भाव, उलटी के आने जैसा भाव (अनुभूति)।

मिज़राब *स्त्री. (अर.)* तार से बना एक नुकीला छल्ला जिसे उँगली के अगले भाग में पहनकर उससे सितार बजाया जाता है।

मिज़ाज *पुं. (अर.)* 1. किसी वस्तु या पदार्थ का मौलिक गुण-धर्म, तासीर। 2. स्वभाव, प्रकृति। **जैसे:** वे गरम मिज़ाज के व्यक्ति हैं। 3. मानसिक स्थिति **जैसे:** अभी पिताजी का मिज़ाज ठीक नहीं है। 4. शारीरिक स्वास्थ्य, तबीयत। **जैसे**: कैसे मिज़ाज हैं? 5. दिखावा, नाज़-नखरा, अन्दाज़। 6. (ला.अर्थ) हालात **जैसे:** मौसम का मिज़ाज। **मुहा.** मिज़ाज खराब होना-नाराज़ होना। मिज़ाज न मिलना-घमंड होना। मिज़ाज पूछना-हालचाल पूछना। मिज़ाज आसमान पर होना-बहुत ज्यादा घमंड होना।

मिटना *अ.क्रि. (देश.)* जिसका अस्तित्व हो या रहा हो उसका लुप्त हो जाना, नष्ट हो जाना या न रहना। **उदा.** सारे जहाँ से अच्छा....। यूनान मिस्र रोम मिट गए जहाँ से....।

मिटाना *स.क्रि.* (देश.) **उदा.** बच्चे पेंसिल से लिखे को रबड़ से मिटा देते हैं।

मिट्टी *स्त्री. (तद्. < मृतिका)* सा.अर्थ 1. भूमि के ऊपरी तल का वह भूरा, कोमल, सूखा चूर्ण जैसा पदार्थ जिसमें पेड़-पौधे उगते हैं और जो उड़कर शरीर, कपड़े आदि को मैला कर देते हैं। भू.वि. जैव तथा अजैव प्रक्रमों के फलस्वरूप भू-पृष्ठ पर निर्मित पदार्थ जिसमें वनस्पतियाँ उग सकती हैं। **पर्या.** मृदा soil, माटी, धूल। ला.अर्थ मृत देह, शरीर पंचतत्वों में से पहला जो पृथ्वी तत्व से बना है। **मुहा.** (i) मिट्टी में मिला देना-बरबाद करना। (ii) मिट्टी का माधो-मूर्ख या अयोग्य व्यक्ति। (iv) मिट्टी उठना-शव की अर्थी लाना।

मिठास *(स्त्री.)* (< तद्.< मिष्ट) 1. मीठा होने का भाव, किसी पदार्थ का माधुर्य, मीठापन। **उदा.** दशहरी आम में और आमों की तुलना में मिठास अधिक होती है।

मितली *स्त्री. (देश.)* जी की मिचलाहट वमन/उलटी होने का एहसास मात्र। **दे.** 'मिचलाना'।

मितव्यय *वि. (तत्.)* थोड़ा या अल्प व्यय, पैसा बचाने के उद्देश्य से सोच समझकर कम खर्च करने का भाव। **उदा.** इस वर्ष सरकार ने शिक्षा में मितव्यय किया है। **विलो.** अपव्यय।

मितव्ययी *(वि.) (तत्.)* वह व्यक्ति जो स्वभावतः कम खर्च में काम चलाए। **विलो.** अपव्ययी।

मिताशी *[मित (स्वल्प] + आशी] वि. (तत्.)* अल्प या थोड़ा भोजन करने वाला। **उदा.** विद्यार्थी को मिताशी होना चाहिए। **पर्या.** अल्पाहारी, मिताहारी।

मिति *स्त्री. (तत्.)* 1. किसी वस्तु को नापने-मापने की विधि या क्रिया। 2. परिमाप, मान। मापने की विद्या ज्यामिति, त्रिकोणमिति।

मिती *स्त्री. (तद्.< मिति)* 1. चांद्र वर्ष या सौर वर्ष की तिथि, तारीख। 2. दिन, पंचमी के दिन यज्ञोपवीत संस्कार होगा। **जैसे**: मिती वैशाख कृ. पंचमी रविवार। 3. वह तिथि जब तक ब्याज चुकाना अपेक्षित हो, मितीवार। *क्रि.वि.* तिथियों के अनुसार।

मित्र *पु. (तत्.)* व्यक्ति जिसे आप जानते हों और जो समय पड़ने पर आपकी सहायता करे। **पर्या.** शत्रु।

मित्रता *स्त्री. (तत्.)* दोस्त होने और दोस्ती निभाने का भाव। **पर्या.** दोस्ती। **विलो.** शत्रुता।

मिथक *पुं. (अं.< मिथ.)* वे पुरा कथाएँ (पुराण इत्यादि), घटनाएँ या पात्र जिनको नए संदर्भों में प्रतीकात्मक रूप से तुलना के लिए प्रस्तुत किया जाए। **जैसे**: इस रावण का अट्टहास तो सुनो। अरे! जाह्नवी बह निकलेगी बाधाओं की जंघा फोड़। **पर्या.** कल्पकथा।

मिथकीय वि. (अं.<मिथ) 1. मिथक से युक्त; मिथक से संबंधित। 2. मिथक जैसा। **दे.** मिथक।

मिथुन *पुं. (तत्.)* 1. सभी प्राणियों में नर-नारी का जोड़ा। couple 2. बारह राशियों में से एक, मिथुन राशि। gemini

मिथ्या *वि. (तत्.)* 1. जो वास्तविक न हो, झूठा, काल्पनिक। 2. जिसका उचित आधार ही न हो निराधार। **जैसे:** मिथ्या अहंकार false।

मिन्नत *स्त्री. (अर.)* प्रार्थना, निवेदन, विनती। **उदा.** मैं आपसे मिन्नत करता हूँ कि आप उसे छोड़ दें।

मिमियाना *अ.क्रि. (अनु.)* 1. मे-मे (जैसी ध्वनि) करना। **जैसे**: बकरी या भेड़ की आवाज़। 2. किसी से कुछ चाहने से पहले उसके सामने दबी और खुशामद भरी आवाज़ में गिड़गिड़ाना।

मियाँ *पुं.(फा.)* 1. किसी भी व्यक्ति के लिए प्रयुक्त एक प्रतिष्ठादायक और शिष्ट संबोधन। **उदा.** कहो मियाँ, कैसे हो। 2. पति **उदा.** आजकल तुम्हारे मियाँ क्या कर रहे हैं। **मुहा.** अपने मुँह मियाँ मिट्ठू होना-खुद ही अपनी तारीफ़ करना।

मियाद *स्त्री. (अर.<मीआद)* किसी कार्य को शुरू करने से लेकर पूरा करने तक के लिए नियत समय, अवधि, समयसीमा। **उदा.** इस पुल के निर्माण की मियाद पूरी होने वाली है।

मियादी *वि. (अर.)* मियाद वाला, आवधिक। **उदा.** मियादी बुखार, मियादी जमा।

मियादी बुखार *पुं. (फ़ा.)* **शा. अर्थ** बुखार जो प्रायः एक निश्चित अवधि (दो सप्ताह या उससे अधिक) तक बना रहता है। **दे.** 'टाइफाइड'।

मिरगी/मिर्गी *स्त्री. (देश.)* एक स्नायविक रोग जिसमें सहसा हाथ-पैर ऐंठने लगते हैं और रोगी बेहोश-सा हो जाता है तथा उसके मुँह से झाग निकलता है। **पर्या.** अपस्मार epilepsy। **उदा.** उसे मिरगी का दौरा पड़ता है।

मिर्च *स्त्री. (देश.)* केप्सिकम वर्ग की एक फली जो पहले हरे रंग की और फिर पकने पर लाल रंग की हो जाती है और बहुत तीक्ष्ण (तीखे) स्वाद वाली जिसका सब्जी, मसाले आदि के रूप में उपयोग होता है।

मिर्चा *पुं. (देश.)* बड़े आकार की कम तीखी हरे, लाल रंग की एक फली इस मिर्च का अचार भी बनता है।

मिर्जई/मिरजई *स्त्री. (फ़ा.)* एक कुर्तीनुमा पहनावा जिसमें बटन के स्थान पर बंद लगे होते हैं।

मिल *स्त्री. (अ.)* 1. ऐसा उद्योग या कारखाना जिसमें किसी वस्तु का व्यापक रूप से उत्पादन किया जाता है। **जैसे**: सूती कपड़े की मिल, जूट मिल, चीनी मिल, चावल मिल आदि। 2. अनाज, मसाला आदि पीसने, दाल दलने की चक्की जो भाप बिजली आदि की सहायता से चलती है।

मिलना *क्रि. (तद्.)* 1. दो पदार्थों का मिलकर एक होना, जुड़ना, संयुक्त होना। **जैसे**: दाल में नमक मिलाना। 2. समूह में समा जाना। **जैसे:** प्रयाग में यमुना गंगा में मिल जाती है। 3. लगभग एक जैसा होना। **जैसे:** उसकी मुखमुद्रा विवेकानंद से मिलती है। 4. भेंट-मुलाकात करना स.क्रि. **जैसे:** कल रमेश मिला था। 5. प्राप्त करना/होना **जैसे:** वहाँ तुम्हें क्या मिला?

मिलाप *[मिल+आप] पुं. (तद्.)* 1. मिलने का भाव। 2. मित्रता **जैसे:** कल राम और भरत के मिलाप की लीला संपन्न हुई।

मिलीमीटर *वि. (अं.)* लंबाई की नाप जो एक मीटर के हजारवें भाग के बराबर होती है। 1000 मिमी=1 मीटर। 1 मिमी=.04 इंच लगभग। **टि.** मिलीमीटर को संक्षिप्त रूप में मि.मी या mm लिखते हैं।

मिशन *पुं. (अं.)* 1. किसी महत्वपूर्ण कार्य के लिए कुछ व्यक्तियों को कहीं (विशेष रूप से विदेशों में) भेजा जाना। **पर्या.** राजदूतावास। **जैसे:** वाशिंगटन स्थित भारतीय मिशन। 2. उपयुक्त कार्य के लिए जाने वाले या भेजे जाने वाले लोगों का समूह। **जैसे:** मास्को स्थित भारतीय मिशन। 3. ईसाई धर्म प्रचारकों का समूह या संस्था, ईसाई धर्म प्रचारकों का आवास। 5. समर्पण की भावना से कार्य करने की तत्परता।

मिश्र *वि. (तत्.)* जो दो या दो से अधिक के मिलने से एक हो गया हो। **जैसे:** मिश्र धातु (मिश्रातु) पीतल जो ताँबे और जस्ते के मिश्रण से बना है। *पुं.* 1. प्रतिष्ठित व्यक्ति। 2. ब्राह्मणों की एक उपजाति की उपाधि। 3. नाटक की कथावस्तु के तीन भेदों में से एक।

मिश्रण *पुं. (तत्.)* कुछ वस्तुओं को मिलाने का भाव, मिलावट। mixture अलग-अलग धातुओं को गलाकर और उन्हें मिलाकर मिश्र धातु बनाने का भाव। alloy **जैसे:** 'पीतल' ताँबे और जस्ते का मिश्रण है। ठोस या द्रव औषधियों को मिलाने का भाव। compound

मिश्रधातु/मिश्रातु *स्त्री. (तत्.)* [मिश्रातु=मिश्र + धातु] (मध्य वर्ण लोपी समास से बनी नवनिर्मित शब्द)। **दे.** 'मिश्र'।

मिश्रवाक्य *(पुं.) (तत्.)* ऐसा वाक्य जिसका एक उपवाक्य दूसरे प्रधान उपवाक्य पर आश्रित हो। यह 'जो', 'कि' संयोजकों से जुड़ा होता है। **उदा.** शिक्षक ने कहा कि कल दिल्ली भ्रमण के लिए चलेंगे।'

मिश्रित *वि. (तत्.)* मिला-जुला, मिलावटी, मिश्रण किया हुआ। **जैसे:** नमक मिश्रित पानी। **दे.** 'मिश्रण'।

मिश्रित खेती *स्त्री. (तत्.+तद्.)* कृषि. एक ही फार्म पर खेती एवं पशुपालन का काम साथ-साथ होना। mixed farming **टि.** यह प्रथा मुख्यत: अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, दक्षिण अफ्रीका में प्रचलित है।

मिसरी/मिस्री *(स्त्री.) (अर.<मिस्र)* 1. विशेष प्रकार से जमायी हुई शक्कर जो दानेदार या रवेदार होती है तथा गुण और स्वाद में शक्कर से कुछ भिन्न होती है। 2. मिस्र देश की भाषा।

मिसाइल *पुं. (अं.)* दूर से मार करने वाला प्रक्षेपास्त्र। मिसाइल दागना-लक्ष्य भेदने के लिए मिसाइल चलाना।

मिसाल *स्त्री. (अर.)* 1. उदाहरण, नमूना, नजीर **जैसे:** मिसाल के तौर पर। 2. आदर्श। **उदा.** देश के लिए आत्मबलिदान कर भगत सिंह ने भारतीयों के सामने मिसाल कायम की।

मिसिल *(स्त्री.) (अर.<मिस्ल)* 1. पंजिका 2. कार्यालय में किसी विषय पर आवती और उसके निपटान से संबंधित कार्यवाई का लेखा-जोखा संचित करने वाला आवरण। **पर्या.** फाइल, संचिका।

मिस्सा *वि./पुं. (तद्.<मिश्रित)* गेहूँ और चने आदि अनाजों को एक साथ पीस कर तैयार किया गया आटा।

मिस्सी *स्त्री. (तद्.)* मिश्रित अनाजों/दालों के चूर्ण से बनी कोई वस्तु। **जैसे:** मिस्सी रोटी।

मिहिर *पुं. (तत्.)* 1. सौरमंडल का मुख्य ग्रह सूर्य। **जैसे:** 'मिहिर' ऊर्जा का प्रमुख स्रोत है। **पर्या.** रवि, भानु। 2. बादल, पवन। **टि.** फारसी में भी मिहिर का अर्थ 'सूर्य' ही है।

मीचना *स.क्रि. (देश.)* 1. रोशनी की सीधी चकाचौंध से बचने के लिए या किसी अन्य प्रयोजन से दोनों आँखों को दोनों हथेलियों से हल्का-सा दबाव देकर बंद करना। 2. ला.अर्थ मृत्यु। **उदा.** उसने कम उम्र में ही आँखें मीच लीं।

मीटर *पुं. (अं.)* 1. बिजली, पानी, गैस अथवा किसी की भी गुणवत्ता आदि की मात्रा मापने और उसे रिकार्ड करने वाला यंत्र विशेष, मापयंत्र। meter 2. लंबाई या दूरी की एक माप जो अंतर्राष्ट्रीय मानक के अनुसार लगभग 39.4 इंच के बराबर मानी जाती है। 3. साहि. छंद, काव्य रचना में शब्द संयोजन की एक विधा। meter

मीडिया *पुं. (अं.)* जनसंचार के सार्वजनिक साधन **जैसे:** रेडियो, टेलीविजन, इंटरनेट, समाचार पत्र-पत्रिकाएँ इत्यादि।

मीत *पुं. (तद्.<मित्र) पु.* **दे.** 'मित्र'।

मीन *पुं. (तत्.)* 1. मछली 2. ज्योतिष के अनुसार बारह राशियों में से अंतिम राशि। **टि.** पृथ्वी द्वारा सूर्य की परिक्रमा करते समय परिक्रमा मार्ग को बारह भागों में बाँटा गया है। इस स्थिति में सूर्य और पृथ्वी की सीध में दिखने वाले तारों के समूह को राशि कहते हैं। इस प्रकार भिन्न-भिन्न ग्रह भिन्न-भिन्न राशियों में दिखते हैं।

मीन-मेख *पुं. (तत्.+तद्.< मेष)* किसी कार्य में गुण-दोष निकालने का भाव। **पर्या.** नुक्ता-चीनी। **टि.** प्राय: मुहावरे के रूप में प्रयुक्त।

मीन-मेष/मीन-मेख उक्ति *(तत्.)* **दे.** 'मीन-मेख'। **टि.** मीन बारहवीं राशि जबकि मेष पहली राशि है। **जैसे:** वह तो हर काम में **मीन-**मेष निकालता है।

मीनाकारी *(स्त्री.) (फा.)* सोने-चाँदी के आभूषणों पर होने वाला मीना का काम। **उदा.** मुगलबेगमें मीनाकारी वाले आभूषणों की बहुत शौकीन थीं। **तु.** पचीकारी।

मीनार *स्त्री (अर.< मनार)* 1. एक गोलाकार भवन जिसकी ऊँचाई उसके व्यास से बहुत अधिक होती है। ऊपर छतरी नुमा आवरण भी होता है। प्राय: मस्जिद के साथ मीनार अवश्य होती है जिस पर चढ़कर अज़ान दी जाती है। इसमें सीढ़ियाँ अंदर की ओर गोलाकार में होती हैं। tower **2.** घंटाघर**,** जिसमें ऊपर की ओर घड़ी लगी होती है। **3.** दीपस्तंभ। **जैसे**: समुद्र में/के किनारे रास्ता दिखाने के लिए बनाया गया दीपस्तंभ light house 4. कोई लंबा और ऊँचा वास्तु-शिल्प। **जैसे:** कुतुबमीनार, टी.वी. टॉवर। **पर्या.** लाट, धौरहरा।

मील *(पुं.) (अं.)* दूरी का एक माप जो 1.609 किलोमीटर या 1760 गज के बराबर है। mile

मुंड *पुं. (तत्.)* 1. सिर, खोपड़ी, 2. मनुष्य का कटा हुआ सिर। **जैसे:** रुंड-मुंड। **उदा.** महाकाली को मुंडमाला पहने हुए दिखाया जाता है। **तु.** रुंड।

मुंडन *पुं.(तत्.) 1.* उस्तरे से सिर के बाल (चोटी को छोडक़र) पूरी तरह से साफ कर देना। 2. हिंदुओं के सोलह संस्कारों में से एक जिसमें बालक के जन्मजात बाल पहली बार पूरी तरह से उतरवा दिए जाते हैं।

मुंडा *पुं. (देश.)* 1. एक आदिवासी जाति जो बिहार (वर्तमान झारखंड) के छोटा नागपुर, राँची से लेकर उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर तक के जंगली भागों में रहती है। इनकी बोलियाँ खरबार,

संथाली, मुंडारी, कोरबा आदि हैं। 2. बालक, बेटा (पंजाब में बोला जाने वाला शब्द) 3. जूते का एक प्रकार। मुँडे हुए सिर वाला, बिना सींग का (बैल, बकरा आदि)।

मुंडेर *स्त्री. (देश.)* मकान की छत पर चारों ओर एक फुट से कम ऊँची मोटी दीवार जो सामान्यतया दीवारों में पानी जाने से बचाने के लिए बनाई जाती है। **उदा.** मुंडेर पर कौवे बैठे हैं।

मुंशी *पुं. (अर.)* 1. गद्य लेखक 2. किसी कार्यालय का लिपिक, क्लर्क 3. वकील का मुहर्रिर 4. कचहरी के बाहर लोगों के लिए सुलेख में अर्जियाँ लिखने वाला पेशेवर व्यक्ति। काव्य की एक उपाधि।

मुंशीखाना *(अर.+फ़ा)* मुंशियों के लिए (कचहरी के बाहर) बैठने का स्थान।

मुंशीगिरी, मुंशीगीरी *(अ.+फा.)* अर्जियाँ लिखने का काम, मुहर्रिरी।

मुंसिफ *(पुं.) (अ.)* 1. इनसाफ़ या न्याय करने वाला अधिकारी। 2. दीवानी अदालत का एक न्यायकर्ता पदाधिकारी। **टि.** मुंसिफ की अदालत/ कचहरी जो तहसील स्तर पर काम करती है।

मुँगरी *स्त्री. (तद्. <मुद् गर)* 1. काठ की मोंगरी जिससे ठोकने-पीटने का काम लिया जाता है। 2. काठ का छोटा हथौड़ा। 3. कपड़े धोने-पीटने के काम आने वाली लंबी, चपटी और मूठ वाली लकड़ी की फट्टी (बैट के आकार की) *पुं.* मुँगरा (मोंगरा)

मुँगौरी *स्त्री. (तद्.)* मूँग की बनी हुई बरी। **बहु.** मुँगौरियाँ। **पर्या.** मँगौड़ी, मुँगौड़ी। **टि.** मूँग की दाल को भिगोकर, पीसकर और गोल आकार की छोटी-छोटी बरियाँ बनाकर सुखा लिया जाता है। बाद में आवश्यकतानुसार तलकर या सब्जी के रूप में उसे खाया जाता है। या मूँग की दाल भिगो-पीसकर पकौड़े की तरह तलकर भी खाया जाता है।

मुँडेरा *पुं. (दे.)* छत के चारों तरफ की छोटे आकार की दीवार जो गिरने से बचने के लिए खींची जाती है।

मुँदना *अ.क्रि. (तद्.<मुद्रण)* खुली रहने वाली या किसी खुली हुई वस्तु का बंद हो जाना, ढक जाना। **जैसे:** आँखें मुँद गारे। गोरे से छेद मुँद गया।

मुँह *पुं. (तद्.< मुख)* शरीर का वह अंग जिससे जीवित प्राणी भोजन करते हैं और बोलते हैं। उसके अंदर जीभ, मूर्धा, तालू, दाँत, स्वर-तंत्र होते हैं। **मुहा. मुँह मीठा करना-**शुभ अवसर पर मिठाई आदि खाना। **मुँह चिढ़ाना-**किसी का मज़ाक उड़ाना। **मुँह काला करना-**कोई बुरा कार्य करना। **मुँह छुपाना-**लज्जित होना। **मुँह में खून लगना-**बुरे काम का चसका लगना। **मुँह में पानी भर आना-**ललचाना। **मुँह मोड़ना-**(किसी से) विरक्त हो जाना। **मुँह लटकाना-**लज्जित होना उदास/ मायूस/निराश होना।

मुँहकाला *पुं. (देश.)* 1. समाज में घृणित या अमर्यादित आचरण से होने वाली बदनामी। **जैसे:** उसे मुँह काला करके गाँव से निकाल दिया गया। 2. व्यमिचार **जैसे:** उसने नौकरानी के साथ अपना मुँह काला किया।

मुँहछुआई *स्त्री. (देश.)* 1. मुँह छूने का कार्य। 2. (लाक्ष.) किसी अतिथि इत्यादि केवल एक बार औपचारिकता से थोड़े शब्दों में हाल-चाल पूछना या जलपान के लिए कहना, (हृदय से या दिली भावना से नहीं)।

मुँहजबानी *क्रि.वि./वि. (फ़ा.) 1.* जो केवल मुँह से मात्र कह दिया गया हो, मौखिक रूप से। **उदा.** मुझे पूरी कथा मुँहजबानी याद है। 2. ऊपरी, दिखावटी।

मुँह-फट *वि.(देश.)* शा.अर्थ मुँह का फटा, फटे मुँह वाला। ला.अर्थ किसी भी प्रकार की विशेष रूप से अनुचित बात बिना किसी हिचकिचाहट के कह देने वाला। offensively out-spoken

मुँहमाँगा *[मुँह (से)+ माँगा] वि. (तद्.)* मुँह से माँगा हुआ। **पर्या.** मनोवांछित, मनोनुकूल, इच्छित। **उदा.** उसकी मुँहमाँगी मुराद पूरी हुई।

मुआयना/मुआइना *पुं. (अर.* < मुआयन:) 1. किसी विषय या चीज़ को गौर से देखना, निरीक्षण। 2. किसी विद्यालय, कार्यालय, विभाग आदि के कार्यों की जाँच-पड़ताल करना। **जैसे:** कक्षा का मुआयना।

मुआवज़ा *पुं. (अर.)* वह धनराशि जो किसी प्रकार से होने वाली हानि के बदले के रूप में दी जाए

या वसूल की जाए। बदला, हर्जाना, हरजाना, क्षतिपूर्ति। compensation

मुकदमा *पुं.* *(अर.< मुकद्दमः)* दो पक्षकारों के बीच उत्पन्न विवाद जिसे न्यायालय के निर्णय द्वारा सुलझाया जाए। case, litigation, law suit

मुकद्दर *पुं.* *(अ.)* भाग्य, किस्मत, तकदीर। **उदा.** तुम्हारा मुकद्दर अच्छा था जो उस भयंकर दुर्घटना के बाद भी बच गए।

मुकम्मल *वि.* *(अर.)* 1. संपूर्ण, सर्वांग परिपूर्ण; **जैसे**: मकान मुकम्मल तरीके से बन गया। 2. साबुत, अखंड। 3. समाप्त (पूरा हो जाना)। **जैसे**: जलसा मुकम्मल हो गया।

मुकरना *अ.क्रि.* *(देश.)* पहले कोई बात कहकर या काम करके फिर यह कहना कि मैंने ऐसा नहीं कहा था। **पर्या.** नटना।

मुक़र्रर *वि.* *(अर.)* नियुक्त। **उदा.** इस कंपनी में अब दो नए कर्मचारी मुक़र्रर किए गए हैं।

मुकाबला *पुं.* *(अ.)* बराबरी का भाव, लड़ाई, मिलान करके जाँचने का भाव।

मुकाम *पुं.* *(अर.)* 1. ठहरने या खड़े होने की जगह, निवास स्थान, घर, गंतव्य स्थान। 2. परिस्थिति **जैसे**: हम ऐसे मुकाम पर आ पहुँचे हैं जहाँ से वापिस जाना मुश्किल है।

मुकुट *पुं.* *(तत्.)* एक आभूषण जो सिर पर धारण किया जाता है। देवता, राजा आदि मुकुट धारण करते थे। **उदा.** 1. आजकल भी विवाहोत्सव पर वर-कन्या भिन्न रूप में मुकुट धारण करते हैं। 2. विश्व-सुंदरी प्रतियोगिता में विजेता को मुकुट पहनाया जाता है।

मुकुल *पुं.* *(तत्.)* 1. कली, अधखिली या खिलती हुई कली। 2. शरीर 3. आत्मा।

मुकुलन *पुं.* *(तत्.)* कली बनने की प्रक्रिया या भाव।

मुकुलित *वि.* *(तत्.)* 1. जिसमें नई कलियाँ आ गयी हों, कलीयुक्त। 2. अधखिला, अधमुँहा। **जैसे:** मुकलित कमल।

मुक्का *पुं.* *(तद्.<मुष्टिका)* 1. किसी पर आघात या प्रहार करने के लिए हाथ की अंगुलियों की बँधी हुई मुट्ठी। 2. घूँसा। **जैसे:** मुक्केबाज़ी की प्रतियोगिता।

मुक्त *वि.* *(तत्.)* 1. स्वतंत्र किया हुआ, छोड़ा गया, बंधनरहित, खुला हुआ। 2. मोक्ष-प्राप्त। **विलो.** बद्ध।

मुक्तहस्त *वि.* *(तत्.)* 1. खुले हाथों (दान या व्यय करने वाला)। **जैसे:** वह मुक्तहस्त से गरीबों को धन और वस्त्र देता है। 2. उदार। **उदा.** वह मुक्तहस्त व्यक्ति है।

मुक्ति *स्त्री.* *(तत्.)* 1. बंधनरहित होने की स्थिति या भाव relief दायित्व से मुक्त होने का भाव। 2. स्वतंत्रता, आजादी, स्वच्छंदता। independence 3. मोक्ष। salvation

मुक्तिवाहिनी *स्त्री.* *(तत्.)* शा.अर्थ मुक्ति दिलाने वाला। सा.अर्थ स्वतंत्रता-प्राप्ति या समाज-उद्धार के उद्देश्य से गठित सशस्त्र जनसमूह (सेना)।

मुक़्ती *पुं.* *(अर.< मुक़ीत)* खिलजी और तुगलक शासकों के काल के वे सेनानायक जो कानून व्यवस्थाएँ भीसँभालते थे। **पर्या.** इक्तादार, इक्तेदार, इक्तादार। **दे.** 'इक्ता'।

मुख गुहिका *स्त्री.* *(तत्.)* (कशेरुकियों में) मुख के भीतर का गुफानुमा स्थान जहाँ दाँत, जीभ और लार ग्रंथियाँ होती हैं तथा भोजन ग्रहण किया जाता है, लार से सनता है और ग्रास नली में पहुँचाया जाता है। buccal or mouth cavity

मुखड़ा *पुं.* *(तद्.)* चेहरा। **उदा.** दर्पण में अपना मुखड़ा तो देखो। **पत्र.** किसी समाचार के सार या मुख्य अंश को प्रमुखता से व्यक्त करने वाला प्रारंभिक अनुच्छेद जो प्राय: काले या बड़े अक्षरों में योजित होता है। **पर्या.** आमुख inproduction

मुखबि़र *पुं.* *(अर.<मुख़्बिर)* शा.अर्थ विशेष खबर देने वाला। 1. पुलिस को गुप्त रूप से अपराधियों से संबंधित विशेष खबरें देने वाला व्यक्ति, भेदिया, जासूस।

मुखमंडल *पुं.* *(तत्.)* ललाट, आँख, नाक, कान, ओष्ठ आदि मुख के सभी अंगों का सामूहिक

नाम, चेहरा। **उदा.** सुखद समाचार सुनकर उसके मुखमंडल की आभा देखने योग्य थी।

मुखर *वि. (तत्.)* शा.अर्थ अनावश्यक रूप से अधिक बोलने वाला, वाचाल; कटु बोलने वाला। ला.अर्थ. 1. बोलता हुआ सा। **जैसे:** प्रकृति मानो मुखर हो गई। 2. मुख्य, अग्रणी, स्पष्ट एवं सटीक वक्ता। **जैसे:** लोकमान्य तिलक मुखर वक्ता थे।

मुखरता *स्त्री. (तत्.)* 1. मुखर होने का भाव/अवस्था/गुण। 2. वाचलता। **उदा.** बहुत दिनों के बाद आज उसकी वाणी मुखरित हुई।

मुखरित *वि. (तत्.)* शा.अ. ध्वनित, उच्चरित शब्दायमान, जिसमें से कोई ध्वनि निकल रही हो। ला.अर्थ. बोलता हुआ-सा, बोलने वाला। 1. ध्वनियुक्त, ध्वनि करता हुआ, शब्द करता हुआ। **जैसे:** कोकिल मुखरित यह उपवन। 2. स्पष्ट (शब्दों वाला) **जैसे:** यह था उनका मुखरित संदेश।

मुखाग्नि *[मुख+अग्नि] स्त्री. (तत्.)* 1. पुत्र या अन्य संबंधी लोगों के द्वारा चिता पर लिटाए गए शव को सर्वप्रथम दी जाने वाली अग्नि जिससे चिता जलती है। 2. अंत्येष्टि संस्कार की एक प्रथा या रीति। **जैसे:** सनातन मान्यता के अनुसार अंतत्येष्टि में पिता के शव को मुखाग्नि उसका पुत्र ही देता है।

मुख़ातिब *वि. (अर.)* जो सामने से बात करता हो, संबोधन करने वाला, मुखातिब होना। **जैसे:** वह अतिथि से मुख़ातिब होते हुए बोले। *अ.क्रि.* सामने होना, सम्मुख होना सामने होकर बात करना।

मुख़ातिब होना *अ.क्रि. (अर.)* प्रवृत्त होना। (किसी से बातचीत करने के लिए उसकी ओर)

मुखारी *स्त्री. (तद्. > मुख)* 1. किसी वस्तु का ऊपर वाला या सामने वाला भाग जो उसकी पहचान होता है। 2. दाँतों को साफ करने के लिए नीम या बबूल आदि की छोटी हरी टहनी, दातून, दातौन। **जैसे:** गाँवों में अभी भी अधिकतर लोग नीम या बबूल की मुखारी से दाँत साफ करते हैं।

मुखिया *पुं. (तद्.)* 1. किसी भी कार्य का नेतृत्व करने वाला व्यक्ति, प्रमुख, प्रधान, अगुआ। 2. किसी गाँव, पंचायत, दल आदि का सबसे प्रमुख व्यक्ति।

मुखौटा *(पुं.) (तद्.)* 1. मुख का आवरण; भिन्न रूप प्रदर्शित करने के लिए मुख पर लगाई जाने वाली कागज, प्लास्टिक, धातुपत्र आदि की बनी आकृति विशेष। **जैसे:** नाटकों में या रामलीला में प्राय: राक्षस, वानर आदि के मुखौटे लगाए रहते हैं। 2. धातु आदि से निर्मित चेहरे के आकार का वह स्वरूप जो देवी-देवताओं की मूर्तियों के मुख पर लगाया जाता है, चेहरा। 3. (ला.) भावानुकरण द्वारा दूसरों को प्रभावित करने का साधन। **जैसे:** साधु का मुखौटा बना हुआ यह वास्तव में राक्षस ही है।

मुख़्तसर *वि. (अर.)* संक्षिप्त।

मुख़्तार *पुं. (अर.)* 1. किसी व्यक्ति के प्रतिनिधि के रूप में काम करने का कानूनी अधिकार प्राप्त व्यक्ति। 2. अदालत के कार्यों के लिए वकीलों के समकक्ष कार्य कर सकने वाला व्यक्ति।

मुख्तारनामा *पुं. (अर.+फा.)* विधि. मुख़्तार के रूप में काम करने का एक कानूनी अधिकार-पत्र। अभिकर्ता-पत्र। **टि.** अंग्रेजी राज्य के काल में वकालत की मान्य डिग्री न होने पर भी मुख़्तार वकीलों के काम करते थे। **टि.** अंग्रेजी राज्य यह व्यवस्था अब समाप्त हो चुकी है।

मुख्य *वि. (तत्.)* शा.अर्थ मुख के समान उच्च या श्रेष्ठ 1. प्रमुख, प्रधान, श्रेष्ठ, सबसे बड़ा principal 2. अपने विभाग का मुखिया। chief *पु. (तत्.)* मुखिया, अग्रणी।

मुख्यत: *क्रि.वि. (तत्.)* मुख्य रूप से, प्रधानत:, विशेष रूप से, खास तौर पर।

मुगदर/मुग्दर *(पुं.) (तद्.)* भारी मुँगरी का वह जोड़ा जिसका उपयोग पहलवान लोग व्यायाम के लिए करते हैं और अपने दोनों हाथों से उन्हें उठाकर गोलाकार घुमाते हुए भाँजते हैं। इस अभ्यास से हाथ और छाती मजबूत होते हैं।

मुगल *पुं. (तुर्की.<मुग़ुल)* 1. मंगोलिया से आए हुए मुस्लिम आक्रमणकारियों की एक जाति (उस जाति का प्रथम शासक बाबर था। मुगलों ने सोलहवीं शताब्दी से अठारहवीं शताब्दी तक

लगभग दो सौ वर्षों तक भारत पर शासन किया।) 2. उक्त जाति का कोई व्यक्ति।

मुगालता *पुं. (अर.<मुग़ालतः)* वास्तविक स्थिति के भिन्न धारणा। **पर्या.** भ्रम, भ्रांति, धोखा। **उदा.** तुम मुगालते में हो कि "मैं परीक्षा में प्रथम स्थान पाऊँगा।"

मुग्ध *वि. (तत्.)* सा.अ. आसक्त, मोहित। शा. अ. जो अपनी सुध-बुध खो बैठा हो।

मुचलका *पुं. (तुर्की.<मुचल्का)* अभियुक्त की ओर से प्रस्तुत एक शपथपत्र जिसमें वह उपस्थित होने का वचन देता है। **पर्या.** स्वीय बंध पत्र।

मुजरा *पुं. (अर.< मुज़्रा)* 1. बड़ों को किया गया अभिवादन। 2. वेश्या द्वारा किया गया गायन। 3. दी जानी वाली धनराशि में से कुछ काट ली गई राशि।

मुजरिम *पुं. (अर.<मुजिम)* जुर्म करने वाला, अपराधी, दोषी, अभियुक्त।

मुट्ठा *पुं. (देश.)* 1. घास, फूस, गेहूँ, चावल आदि का पूला जो हाथ की मुट्ठी से पकड़ा जा सके। 2. सूत आदि का छोटा बंडल/गुच्छा। 3. कागज़ आदि का बँधा हुआ छोटा पुलिंदा जो हाथ में आ सके।

मुट्ठी *(स्त्री) (तद्.<मुष्टि)* 1. पाँचों अंगुलियों को मिलाकर बँधी हुई हथेली। बँधी हुई हथेली में आने भर के बराबर वस्तु। **जैसे:** एक मुट्ठी भर चावल। 2. पकड़, कब्जा। **उदा.** अब मैच अपनी मुट्ठी में है। *वि.* एक मुट्ठी में आने योग्य (वस्तु)। **उदा.** एक मुट्ठी चावल, एक मुट्ठी की चौड़ाई की माप। **मुहा.** मुट्ठी गरम करना-घूस देना। मुट्ठी में हवा बंद करना-असंभव प्रयत्न करना। मुट्ठी भर-संख्या में थोड़े गिने-चुने। **लोको.** बंद मुट्ठी सवा लाख की-जब तक रहस्य खुलता नहीं उसमें स्थित वस्तु की बहुमूल्यता का अनुमान नहीं लगाया जा सकता।

मुठभेड़ *स्त्री. (देश.<मुट्ठी + भिड़ना)* टक्कर, सामना। **पर्या.** दो व्यक्तियों या समूहों/गुटों में लड़ाई, जो थोड़ी देर की हो।

मुताबिक *(क्रि.वि.) (अर.)* के अनुसार। **जैसे:** मनमुताबिक।

मुताबिक *क्रि.वि. (अर.)* अनुसार। **उदा.** आपकी आज्ञा के मुताबिक कल दिल्ली पहुँच जाऊँगा। *वि.* अनुरूप; योग्य। **उदा.** उसके मुताबिक काम उसे मिल गया है।

मुदिता *स्त्री. (तत्.)* 1. चित्त की वह अवस्था जिसमें दूसरे की प्रसन्नता देखकर स्वयं में भी हर्ष की अनुभूति होती है। 2. आनंद की भावना। **जैसे:** वह तो गुण व स्वभाव से साक्षात मुदिता ही है। 3. (दर्श.) योगदर्शन के अनुसार चार वृत्तियों (मुदिता, मैत्री, करुणा, उपेक्षा) में से एक।

मुद्दा *पुं. (फ़ा.)* 1. अभिप्राय, मतलब 2. मुख्य विषय, मुख्य बिंदु। **तुल.** मामला।

मुद्दात *स्त्री. (अर.)* 1. बहुत अधिक समय आपके मामले की मुद्दात बीत गई है। 2. अवधि, मियाद। **उदा.** आप से मिले मुद्दात हो गई।

मुद्दाई *पुं. (अर.)* अदालत में दावा दायर करने या अभियोग उपस्थित करने वाला, वादी। plaintif **तु.** मुद्दायला।

मुद्दायला/मुद्दालेह *पुं. (अर.< मुद् दाआअलेह)* जिस पर दावा दायर किया गया हो। प्रतिवादी deponent

मुद्दालेह *पुं. (अर.)* जिस पर दावा किया गया हो, प्रतिवादी। deponent

मुद्रक *पुं. (तत्.)* 1. समाचार पत्र, पुस्तक आदि की छपाई का कार्य करने वाला जो छपी हुई वस्तु की सारी बातों के लिए उत्तरदायी होता है। printer

मुद्रांकन *पुं. (तत्.)* 1. मुहर से छापना, छपाई। printing 2. मुद्रा (नोट या सिक्के) छापना या ढालना। printing, minting 3. छपी हुई सामग्री के साथ छापने वाले का नाम-पता छापना imprint

मुद्रा *स्त्री. (तत्.)* 1. किसी के नाम की मुहर, छापा stamp, seal 2. अँगूठी, छल्ला, मुद्रिका। ring 3. रुपए-पैसे आदि, सिक्का। currency 4. अंग विन्यास (अंग की कोई विशेष आकृति)। posture

मुद्रिका *(स्त्री.) (तत्.)* 1. नाम या किसी चिह्न से युक्त सोने आदि धातु से बनी अँगूठी। 2. प्राचीन काल में राजा की वह अँगूठी जो प्रामाणिकता की

मुहर लगाने के काम आती थी। **पर्या.** मुहर, मोहर। *तद्.* मुँदरी।

मुनक्का *पुं. (अर.)* 1. वह मेवा जो बीज वाले काले अंगूरों को सुखाकर बनाया जाता है।

मुनाफा *पुं. (अर.)* लाभ, नफ़ा, क्रय मूल्य से विक्रय मूल्य की अधिकता। **विलो.** नुकसान।

मुनासिब *वि. (अर.)* उचित, योग्य, वाजिब, ठीक, यथेष्ट, काफ़ी।

मुनि *पुं. (तत्.)* मननशील, ऋषि, संन्यासी।

मुनियाँ *स्त्री. (देश.)* 1. गौरैया के आकार की छोटी चिड़िया जिसके गरदन में चित्तियाँ होती हैं। 2. रायमुनी नाम की सुंदर छोटी चिड़िया। लालमुनियाँ-वह छोटी सुंदर चिड़िया जिसकी गरदन में लाली दिखाई देती है।

मुनीम *पुं. (अर.< मुनबी)* व्यवसायी के यहाँ आय-व्यय का हिसाब लिखने वाला कर्मचारी या लिपिक।

मुफ़लिस *वि. (अर.< मुफ़्लिस)* (व्यक्ति) जो धनहीन या अभावग्रस्त हो, दरिद्र, कंगाल।

मुफ़लिसी *(स्त्री.)* दरिद्रता। **उदा.** अकाल पड़ने पर लोगों को मुफ़लिसी का सामना करना पड़ता है।

मुफ़ीद *वि. (अर.)* जो किसी के लिए उपयोगी या लाभकारी हो। **पर्या.** फ़ायदेमंद, हितकर। **जैसे:** यह दवा मेरे लिए मुफ़ीद है।

मुफ्त *वि. (अर.)* जिसके लिए कोई कीमत न चुकानी पड़े। **जैसे:** मुफ्त का माल। **अव्य.** मुफ्त में। 1. बिना कीमत के। 2. बेकार में, बिना मतलब, व्यर्थ, निरुद्देश्य।

मुफ़्तखोर *पुं. (अर.+ फा.)* बिना मेहनत किए बैठे-बैठे दूसरे की कमाई खाने वाला।

मुफ्तखोरी *स्त्री. (अर.+फा)* मुफ़्त में सभी चीजें पाने की आदत। **उदा.** अभी तुम्हारी मुफ्तखोरी की आदत गई नहीं।

मुबारक *वि. (अर.)* 1. शुभ, कल्याणकारी, मंगलमय 2. भाग्यवान, खुशकिस्मत *पुं.* खुशखबरी, सुसमाचार *अव्य.* बधाई, मुबारकबाद *पु. (अर.)* बधाई।

मुबारकबाद *स्त्री. (अर.+फा.)* 1. किसी के यहाँ शुभ बात या काम होने पर अपनी हार्दिक प्रसन्नता व्यक्त करते हुए शुभकामना व्यक्त करना, बधाई congratulation

मुमकिन *वि. (अर.)* संभव, जो हो सकता हो, हो सकने वाला। **विलो.** नामुमकिन।

मुमकिन *वि. (अर.<मुम्किन)* जिसके होने की संभावना हो, जो हो सके, संभव। **उदा.** मुमकिन है कि वे आज यहाँ भी आएँ।

मुरकना *क्रि. (देश.)* 1. किसी दबाव या चोट आदि के कारण किसी अंग का अचानक मुड़ जाना। **जैसे:** कल वापस लौटते समय मेरा पैर मुरक गया।

मुरझाना *अ.क्रि. (तद्.<मूर्च्छन)* शा.अर्थ हरी पत्तियों, फूलों आदि का सूखने लगना, कुम्हलाना। ला.अर्थ उदास या सुस्त होना; कमजोर या शिथिल होना।

मुरब्बा *पुं. (अर.<मुरब्ब:)* 1. चीनी, गुड़ आदि की चाशनी में पकाया हुआ फलों आदि का पाक जो लंबे समय तक संरक्षित रखा जा सके। **जैसे:** आँवले या आम का मुरब्बा। 2. चतुर्भुज आकार वाला जमीन का टुकड़ा। square

मुरली *स्त्री. (तत्.)* 1. बाँस या किसी धातु से बना, छह या सात छिद्रों से युक्त मुख से फूँकते हुए ओठों से बजाया जाने वाला एक सुषिर वाद्य।

मुराद *स्त्री. (अर.)* मन में कुछ पाने की इच्छा, कामना, चाहत। **उदा.** आपके आशीर्वाद से मेरे बेटे की इंजीनियर बनने की मुराद पूरी हो गई।

मुरेठा/मुरैठा *पुं. (देश.)* 1. प्राय: सैनिकों, कृषकों, विद्वानों आदि द्वारा सिर में विशिष्ट घुमावदार शैली में बाँधी जाने वाली एक प्रकार की पगड़ी। 2. सामाजिक रूप से प्रतिष्ठित एवं वयोवृद्ध लोगों द्वारा सिर में बाधा जाने वाला रेशमी साफा। **जैसे:** गाँवों में पहले लोग लंबे अंगोछे से कपड़े का मुरैठा बाँधकर चलते थे।

मुर्दनी *स्त्री. (फा.<मुर्दन=मरना)* शा.अर्थ मरते समय चेहरे पर दिखाई देने वाले मृत्यु के लक्षण। सा.अर्थ कांतिहीनता, घोर उदासी। **मुहा.** मुर्दनी छाना। (i) उदासी छा जाना (ii) शोभाहीन होना (iii) भय-चिंता होना। **उदा.** गृहपति के मरने पर उसके घर में मुर्दनी छा गई।

मुर्दा *वि. (फ़ा.<मुर्दः)* मरा हुआ **पर्या.** मृत, निष्प्राण। ला.अर्थ दुर्बल**,** कमजोर मुरझाया हुआ। **उदा.** मुर्दा कौमें जल्दी पराधीन हो जाती हैं। **पुं.** (फ़ा.) शव मृत शरीर।

मुर्दाघर/मुरदाघर *पुं. (फा.+तद्.)* 1. अस्पताल में वह कमरा जहाँ रोगी की मृत्यु हो जाने पर उसके शव को कुछ समय के लिए सुरक्षित रखा जाता है। 2. शवागार।

मुर्दाघाट *पुं. (फा.+तद्.)* 1. नदी या सरोवर के आसपास वह स्थान जहाँ मुर्दे को जलाया जाता है। 2. श्मशान, मुर्दघाट।

मुलजिम *पुं. (अर.<मुल्ज़म)* 1. वह व्यक्ति जिस पर कोई दोष आरोपित किया गया हो, अभियुक्त। 2. अपराधी, दोषी।

मुलतवी/मुल्तवी *वि. (अर.)* किसी कार्य को कुछ समय के लिए रोक देना, स्थगित। **उदा.** अध्यक्ष ने आज की बैठक मुल्तवी कर दी।

मुलम्मा *पुं. (अर.<मुलम्मः)* 1. किसी वस्तु पर लेपित चाँदी या सोने का पानी (चढ़ाया हुआ) लेपित। **उदा.** आज बाजार में मुलम्मा चढ़े कई तरह के आभूषण बिकते हैं।

मुलाकात *स्त्री. (अर.)* 1. आपस में एक दूसरे से मिलना। 2. व्यक्तियों/प्रतिनिधियों/शिष्टमंडलों की परस्पर भेंट 3. साक्षात्कार।

मुलाज़िम *पुं. (अर.)* किसी संस्था या प्रतिष्ठान में नौकरी या सेवा करने वाला वह व्यक्ति जिसे उसके एवज में नियमित वेतन या पारिश्रमिक मिलता है, कर्मचारी, नौकर, सेवक। **उदा.** सरकार ने अपने मुलाजिमों के लिए अनेक सुविधाओं की घोषणा की।

मुलायम *वि. (अर.)* 1. छूने में नरम, सुकुमार, कोमल। 2. हलका, मंद, धीमा, सुस्त।

मुलुक दे. 'मुल्क' *पुं. (अर.)* 1. देश 2. राज्य, प्रदेश 3. संसार।

मुल्क *पुं. (अर.)* एक ऐसा भूक्षेत्र जिसकी भौगोलिक सीमाएँ सुनिश्चित हों तथा जहाँ के निवासियों की सुख-सुविधाओं के लिए सरकार बनी हुई हो। **उदा.** हमारा मुल्क आज़ाद है। country

मुल्की *पुं. (अर.)* 1. देशवासी 2. अपने ही क्षेत्र का/के रहने वाला/वाले।

मुल्ला *पुं. (अर.)* 1. मुसलमानों का धर्म-गुरु। 2. मस्जिद में नमाज़ के लिए अज़ान देने वाला।

मुवक्किल *पुं. (अर.)* 1. व्यक्ति जो किसी विवाद से संबंधित अपना मुक़दमा वकील के माध्यम से लड़ता है। client शा.अर्थ वकील का आसामी।

मुश्किल *वि. (अर.)* जो कठिनाई से हो सके या कठिनाई से समझ में आए। **उदा.** तुम्हारे लिए कोई काम मुश्किल नहीं है। **पर्या.** कठिन, क्लिष्ट। **विलो.** आसान। *स्त्री.* कठिनाई। **उदा.** नया धंधा शुरू करने में कई मुश्किलें आती हैं। 2. विपत्ति **उदा.** मैं आजकल बड़ी मुश्किल में फँस गया हूँ।

मुसली *स्त्री. (तद्.<*मुशली) एक प्रकार का पौधा जिसके कंद सफेद या काले होते हैं पत्ते एवं ताड़ के पेड़ जैसे और फूल पीले होते हैं। ये औषधि के काम आते हैं।

मुसाफिर *पुं. (अर.)* सफर करने वाला व्यक्ति, यात्री, पथिक, बटोही।

मुसाफिरखाना *पुं. (अर.) यात्रियों* के ठहरने का स्थान। 1. सराय, 2. धर्मशाला। 3. रेलवे स्टेशन पर बना यात्रियों के रुकने के लिए बड़ा-सा कमरा।

मुसीबत *स्त्री. (अर.)* कष्ट, तकलीफ़, दु:ख; संकट, विपत्ति, आफत।

मुस्कराना *अ.क्रि. (देश.) बिना* दाँत दिखाए हँसना। 1. मंद-मंद हँसना, होठों ही होठों में हँसना।

मुस्कराहट *स्त्री.* मुस्कराने की क्रिया। **दे.** मुस्कराना। *तुं.* हँसना।

मुस्तकिल *वि. (अर.)* 1. दृढ़ता से युक्त, पक्का **जैसे:** उसकी बात मुस्तकिल है। 2. जो स्थायी हो। **जैसे:** उसकी नौकरी मुस्तकिल है।

मुस्तैद *वि. (अर.< मुस्तइद् द)* तत्परता से काम करने वाला, कार्य करने हेतु तैयार या तत्पर। **पर्या.** सुस्ती, आलस्य से रहित। चुस्त, तैयार, तत्पर। सन्नद्ध।

मुस्तैदी *स्त्री. (अर.)* मुस्तैद या सन्नद्ध होने का भाव, तत्परता, सन्नद्धता। **दे.** मुस्तैद।

मुहब्बत/मोहब्बत *स्त्री. (अर.< महव्वत)* स्नेह, प्रेम, चाह, आकर्षण, भिन्नता।

मुहर/मोहर *स्त्री. (फा.< मुह्र)* 1. सील, ठप्पा। **दे.** 'मुद्रा'। 2. अशरफ़ी-अरब प्रदेश का एक प्राचीन सोने का सिक्का। 3. मध्यकाल में प्रचलित सोने की मुद्रा, जिस पर तौल आदि की प्रामाणिकता सिद्ध करने के लिए तत्कालीन शासक/शासन का ठप्पा लगा रहता था।

मुहरबंद *वि. (फा.मुहर+बंद)* कोई पत्र या बंडल जिसके आवरण पर लाख चिपका कर मुहर लगी हो ताकि वही व्यक्ति उसे खोल सके जिसके नाम-पते पर उसे भेजा गया हो। **उदा.** यह मुहरबंद लिफाफा तुम्हारे नाम है, तुम्हीं खोलो।

मुहर्रम *पुं. (अर.)* 1. अरबी काल गणना (हिजरी संवत) वर्ष का प्रथम मास। इसी माह में इमाम हुसैन शहीद हुए थे जिसके कारण मुसलमान 90 दिन तक शोक मनाते हैं। 2. शोक, मातम।

मुहल्ला/मोहल्ला *पुं. (अर.<महल्ल:)* किसी बड़े गाँव, कस्बे या शहर की एक छोटी इकाई जिसे किसी-न-किसी वजह से अलग पहचान मिली हुई हो। **उदा.** हमारे मुहल्ले में कई शिक्षक रहते हैं।

मुहाना *पुं. (तद्.<मुँह)* वह स्थान जहाँ नदी समुद्र में मिलती है। **पर्या.** नदी मुख। **जैसे:** गंगा का समुद्र में मिलना=गंगासागर। **टि.** नदी के मुहाने पर कई धाराओं में बँटा जलोढ़ भूमि का त्रिभुज की तरह दिखाई पड़ने वाला भू-भाग (mouth of the river) डेल्टा कहलाता है।

मुहावरा *पुं. (अर.)* भाषा में प्रयोग किया जाने वाला वह चमत्कारपूर्ण वाक्यांश, जिसका अर्थ सरलता से न निकले, बल्कि उसके लिए लक्षणा और व्यंजना का सहारा लेना पड़े। **जैसे:** अफसर के आगे पूँछ हिलाना, आँख का तारा, अंधे की लकड़ी आदि।

मुहिम *स्त्री. (अर.)* 1. युद्ध के लिए की जाने वाली सैनिक कार्यवाही। 2. छेड़ा गया कठिन काम। 3. युद्ध/संग्राम। **जैसे:** शत्रुदल से युद्ध के लिए सेना की मुहिम चल रही है।

मुहूर्त *पुं. (तत्.)* 1. ज्योतिषशास्त्र के अनुसार निकाला हुआ वह दिन और समय जब कोई शुभ कार्य किया जाए। 2. दिन-रात का तीसवाँ भाग। **उदा.** मेरे भाई का विवाह-मुहूर्त 26 जनवरी को निकला है।

मुहैया *वि. (अर.)* उपस्थित; उपलब्ध; तैयार। **उदा.** कृपया आवश्यक सामग्री मुहैया करवाएँ।

मूँग *पुं. (तद्.<मुद्ग)* भोज्य पदार्थों से संबंधित एक प्रसिद्ध अन्न जिसकी दाल बनती है। **टि.** साबुत मूंग छोटे दाने और हरे छिल्के वाला होता है। इससे दाल, खिचड़ी, मुँगोड़ी, हलवा आदि बनते हैं। **मुहा.** छाती पर मूँग दलना-किसी व्यक्ति को बहुत परेशान करना।

मूँगफली *स्त्री. (तद्<भूमिफल)* बादाम जैसे स्वाद वाला एक खाद्य फल जो ज़मीन के अंदर होता है और जिसका तेल तलने आदि के काम आता है।

मूँगा *पुं. (देश.)* 1. लाल, गुलाबी रंग का वह कीमती रत्न या पत्थर जो समुद्र से कोरेल नामक लघुकीटों के अवशेषों से मिलता है। 2. जीव. उष्णकटिबंधीय सागरों में पाया जाने वाला चूना स्रावी एक छोटा अकशेरूकी जीव या इसके कंकालों का पुंज। coral **पर्या.** प्रवाल, विद्रुम।

मूँछ *स्त्री.(तद्.<श्मश्रु)* वयस्क पुरुषों के ऊपर वाले होंठ पर उगने वाले बाल। **टि.** पुरूषों की मूँछे पौरूष का लक्षण मानी जाती है। **मुहा. मूँछ मुड़वाना**-हार मान लेना। **मूँछ का बल**-किसी के घर का बहुत सम्मान योग्य व्यक्ति।

मूँजी *वि.(देश.)* कठिनाई से खर्च करने वाला, कृपण, कंजूस। **दे.** कृपण'।

मूँड़ *पुं. (तद्<मुण्ड)* गले से ऊपर वाला शरीर का पूरा अंग, खोपड़ी, सिर। **मुहा.** मूँड़ मुड़ाना-सिर मुँडवाकर संन्यासी हो जाना।

मूँड़ना *स.क्रि. (तद्.<मुण्डन)* 1. उस्तरे से सिर के बाल साफ़ कर देना। 2. ठगना। **उदा.** उसने मुझे बेवकूफ बनाकर एक हजार रुपये मूंड़ लिए।

मूँदना *स.क्रि. (तद्*<मुद्रण) बंद करना, ढक देना। **जैसे**: 1. तेज रोशनी से बचने के लिए पलकों/आँखों को बंद करना। 2. गड्ढे को मिट्टी से ढक देना। **उदा.** नींद में हमारी पलके मूंद जाती हैं।

मूक *वि. (तत्.)* जो बोल न पाता हो। उदाहरण- भारतीय सिनेमा का सफ़र मूक फिल्मों से शुरू हुआ। **पर्या.** गूँगा। ला.अर्थ विवश लाचार।

मूढ़ *वि. (तद्*.<मुग्ध) जो सोच-विचार की शक्ति से रहित हो, जड़बुद्धि। **जैसे**: मूढ़ मनुष्य।

मूढ़ता *स्त्री. (तद्.)* मूढ़ होने की अवस्था या भाव, अज्ञानता। **दे.** मूढ़।

मूत *पुं. (तद्*<मूत्र) **दे.** 'मूत्र', 'पेशाब'।

मूरत *(स्त्री.) (तद्.)* **दे.** 'मूर्ति'।

मूर्ख *वि. (तत्.)* जिसमें कम बुद्धि हो, कम बुद्धि वाला, मंदबुद्धि, नासमझ। **पर्या.** मूढ़, बेवकूफ। *पुं.* मूर्ख व्यक्ति। **विलो.** बुद्धिमान।

मूर्खता *स्त्री. (तत्.)* मूर्ख का कार्य, मूर्ख होने का भाव। **पर्या.** नासमझी, मूढ़ता, बेवकूफी।

मूर्च्छा/मूर्छा *स्त्री. (तत्.)* किसी रोग, भय, शोक आदि से उत्पन्न वह शारीरिक अवस्था जिसमें प्राणी चेतनाविहीन/बेहोश हो जाता है। **पर्या.** बेहोशी, अचेतनता।

मूर्च्छित *वि. (तत्.)* जिसे मूर्च्छा आई हो, बेहोश, अचेत।

मूर्तरूप *क्रि.वि. (तत्.)* अपनी कल्पना, विचारों, सिद्धांतों, योजनाओं आदि को इस प्रकार प्रस्तुत या कार्यान्वित करना, जिससे वे साकार होती सी लगें। **उदा.** उसने अपनी कविता में अपने विचारों को मूर्तरूप दिया है।

मूर्ति *स्त्री. (तत्.)* किसी की बाह्याकृति के अनुरूप बनाई गई मिट्टी, पत्थर या धातु की प्रतिमा।

मूल *पुं.(तत्.)* 1. पेड़-पौधों का वह पत्र-पुष्प विहीन भाग जो धरती के नीचे दबा रहता है और भीतर से ही जल तथा पोषक लवण का अवशोषण करता रहता है एवं पेड़-पौधे को धरती पर स्थिर रखने में मदद करता है। **पर्या.** जड़ root 2. असली धन जो किसी व्यावसायिक कार्य में लाभार्जन हेतु लगाया जाता है। **पर्या.** मूलधन, पूँजी। principal, capital

मूलग्रंथिका *स्त्री.(तत्.)* फलीदार (या शिंबीय) और कुछ गैर-फलीदार (या अशिंबीय) पौधों की जड़ों पर बनी गोल उभरी संरचनाएँ जिसमें नाइट्रोजन, स्थिरीकारक जीवाणु होते हैं। **दे.** 'ग्रंथिक'। module = root module

मूलत: *क्रि.वि. (तत्.)* 1. मूल रूप से, प्रारंभिक रूप से, मुख्य रूप से। **जैसे:** वह मूलत: भारतीय है। 2. चौकीदार में 'दार' शब्द मूलत: फारसी का है।

मूलधन *पुं. (तत्.)* ब्याज पर दी गई वह मौलिक धनराशि जिस पर ब्याज की गणना की जाती है। principal amount

मूलभूत *वि. (तत्.)* आधार-स्वरूप, बुनियादी, जो प्रारंभ से ही आवश्यक हो। **उदा.** भोजन, आवास आदि मूलभूत सुविधाएँ उपलब्ध कराना सरकार का प्रथम कर्त्तव्य है।

मूलमंत्र *पुं. (तत्.)* मुख्य साधन, कुंजी। **उदा.** परिश्रम ही सफलता का मूलमंत्र है।

मूलरोम *पुं.बहु. (तत्.)* कोमल जड़ों की बाहरी कोशिकाओं के पतले नलिकादार (उद्वर्ध) बढ़े हुऐ भाग जो मिट्टी से पानी तथा लवणों का अवशोषण करते हैं। (root hair)

मूल्य *पुं. (तत्.)* वस्तु के बदले दिया जाने वाला धन। दाम, कीमत price उपयोगिता। **उदा:** गुंडाराज में विद्वत्ता का कोई मूल्य नहीं होता। value मनुष्य के वे आवश्यक सद्गुण या चारित्रिक गुण जिनके कारण उसका महत्व समझा जाता है और उसके मान-सम्मान में वृद्धि होती है। जीवनमूल्य value मनुष्य में वे आवश्यक सद्गुण या चारित्रिक गुण जिसके कारण उसका महत्व समझा जाता है, उसके मान-सम्मान में वृद्धि होती है। Value

मूल्यन *पुं. (तत्.)* किसी वस्तु की कीमत या मूल्य आंकना या तय करना। **दे.** 'मूल्यांकन' valuation

मूल्यवान *वि. (तत्.)* अधिक मूल्य वाला। **पर्या.** कीमती, बहुमूल्य। **विलो.** सस्ता। **तु.** अमूल्य जिसकी कीमत का अंदाजा लगाना कठिन हो।

मूल्यांकन [मूल्य+अंकन] *पुं. (तत्.)* मूल्य आँकने (निश्चित करने) की क्रिया या भाव, परीक्षण। evaluation **दे.** 'मूल्यन'।

मूल्यांकित [मूल्य+अंकित] *वि.(तत्.)* 1. जिसका मूल्य निर्धारित हो चुका हो, जिसका मूल्यांकन किया जा चुका हो। 2. जिस वस्तु या सामग्री पर मूल्य अंकित हो।

मूस *पुं. (तद्.<मूष/मूषक)* चूहा, एक छोटा स्तनधारी प्राणी जो घर, खेत, जंगल एवं रेगिस्तान सर्वत्र पाया जाता है। यह घर में कपड़े, भोजन-सामग्री एवं खेतों में फ़सल को बहुत हानि पहुँचाता है। उसकी अन्यतम विशेषता उसके दाँतों का निरंतर बढ़ना है, जिसके नियंत्रण के लिए यह स्वभावत: (अकारण) चीजों को कुतरता रहता है। Mouse, rat

मूसल *पुं.(तद्.)* ऊखल में धान, जौ एवं दालों से छिलके अलग करने की प्रक्रिया में कूटने के काम आने वाला लंबा, मोटा लकड़ी का डंडा।

मूसलाधार [मूसल+धार] *वि. (तत्.)* मोटी-मोटी धाराओं जैसी (वर्षा) धाराप्रवाह (वर्षा), धुँआधार।

मृगछाला *स्त्री.(तद्.)* हिरन की खाल। **पर्या.** मृगचर्म। **टि.** हिरन की खाल को पवित्र मानते हैं, इसे प्राचीन काल में ऋषि-मुनि बैठने के लिए आसन के रूप में प्रयोग में लाते थे।

मृगतृष्णा *स्त्री.(तत्.)* रेगिस्तान में सूर्य की तेज किरणों के पड़ने से रेत में लहराता जल दिखने का भ्रम। मृग उसे ही जल समझकर अपनी प्यास बुझाने के लिए व्यर्थ भागता रहता है, पर उसे पानी नसीब नहीं होता। **पर्या.** मृगमरीचिका, मृगतृष्णा, मृगजल। mirage

मृगदाव *पुं. (तत्.)* 1. वह वन जो शिकार करने के योग्य पशुओं से भरा हो अथवा जिस वन में शिकार के योग्य पर्याप्त पशु पाए जाते हों। 2. हिरनों के लिए बना अभयारण्य जहाँ शिकार न

हो सकने के कारण हिरनों की संख्या अधिक हो। deer park

मृगनयनी *वि. (तत्.)* हिरनी के समान सुंदर और चंचल नेत्रों वाली स्त्री। **पर्या.** मृगाक्षी, मृगलोचनी।

मृगशावक *पुं. (तत्.)* हिरन का बच्चा।

मृणमूर्ति [मृत=मिट्टी+मूर्ति] *स्त्री. (तत्.)* मिट्टी की बनी हुई मूर्ति।

मृत *वि. (तत्.)* मरा हुआ। **विलो.** जीवित।

मृतक *पुं. (तत्.)* 1. मृत देह, शव, मुर्दा; जिसकी अभी-अभी मृत्यु हुई हो, जो मर चुका है, मरा हुआ प्राणी। **जैसे:** मृतक का नाम बतलाइए।

मृतजीवी *वि. (तत्.)* 1. मृत अथवा सडे-गले कार्बनिक पदार्थों से पोषण प्राप्त करने वाला पादप। saprophyter 2. सड़े-गले जैव पदार्थों पर जीवित रहने वाला या उनसे पोषण प्राप्त करने वाला प्राणी।

मृतसागर *पुं. (तत्.)* इज़रायल और जॉर्डन देश के मध्य में स्थित नमक का सागर, जिसकी लंबाई लगभग 74 कि.मी. और चौड़ाई लगभग 16 कि.मी है। इसके जल का स्तर समुद्र के जलस्तर से लगभग 390 मीटर नीचे है। **टि.** उसकी विशेषता यह है कि उसमें नमक की मात्रा इतनी अधिक होती है कि उसमें आराम से लेटे मृतक की तरह तैर सकते हैं। इसके एक लीटर पानी में 300 ग्राम नमक मिलता है। इसमें कोई जीव नहीं पाया जाता। dead sea

मृत्यु ***स्त्री. (तत्.)*** 1. जीवन की समाप्ति, प्राण चले जाने का भाव और आत्मा का वियोग। **पर्या.** मरण, मौत। 2. मृत्यु के देवता, यम, काल। **मुहा.** मृत्युशय्या पर होना-मृत्यु का समय निकट होना।

मृत्युदंड *पुं. (तत्.)* अपराधी को न्यायाधिकरण द्वारा दी जाने वाली मौत की सज़ा। फाँसी की सज़ा, वधाज्ञा, सूली पर चढ़ाने की आज्ञा।

मृत्युदर *स्त्री. (तत्.+देश)* देश की कुल जनसंख्या के अनुपात में में एक हजार व्यक्तियों की तुलना में मरने वालों की संख्या। death rate **तु.** जन्मदर।

मृत्युभोज *पुं.(तत्.)* हिंदू परंपरा के अनुसार किसी व्यक्ति की मृत्यु के बाद प्राय: 12 दिन बीत जाने पर दिया जाने वाला सार्वजनिक भोजन।

मृदंग *पुं. (तत्.)* कर्नाटक संगीतशैली का दो मुखों वाला एक(घन) वाद्य यंत्र जो मिट्टी या लकड़ी आदि का बना होता है तथा दोनों मुख चमड़े से मंढ़े हुए और चमढ़े के तस्मों से कसे होते हैं। **उदा.** बाजत ढोल मृदंगा। **पर्या.** पखावज।

मृदा *स्त्री. (तत्.)* सा.अर्थ मिट्टी। **वन.** विच्छेदित शैल, जैव पदार्थ, लवण आदि के मिश्रण से बना हुआ भूपटल का ऊपरी स्तर जिसमें पादप (वनस्पति) उगते हैं। soil

मृदा अपरदन *पुं. (तत्.)* कृषि के योग्य भूमि की परत का बाढ़ अथवा वनों, पेड़ों आदि की कटाई के कारण पानी के प्रवाह के साथ बह जाना। **टि.** इस बहने वाली मिट्टी के साथ विभिन्न प्रकार के तत्व, लवण एवं खनिज आदि भी बह जाते हैं जिससे भूमि की उर्वरता कम हो जाती है। soil erasion

मृदा आवरण *पुं. (तत्.)* भूमि का ऊपरी उपजाऊ भाग या परत।

मृदानी *स्त्री. (तत्)* शिव की पत्नी पार्वती, रुद्राणी।

मृदु/मृदुल *वि. (तत्.)* जो छूने पर कोमल, लगे यानी कठोर व तीखा न हो। **पर्या.** कोमल, मधुर, मुलायम, नर्म/नरम। **विलो.** कठोर।

मृदुलता *स्त्री. (तत्.)* शा.अर्थ मृदु होने का भाव। सा.अर्थ कोमल होने का भाव, कोमलता।

मृद् भांडा (मृत्+भांड) *पुं. (तत्.)* मिट्टी का बरतन/बर्तन (घड़ा इत्यादि)

मेंड़ *स्त्री.* खेत के चारों तरफ सीमा-निर्धारण एवं सिंचाई के समय पानी को बहने से रोकने के लिए बनाई गई मिट्टी की थोड़ी ऊँची सीमा रेखा। Hedge

मेंढक़/मेंढक *पुं.(तद्.<मण्डूक)* वह छोटा जन्तु जो पृथ्वी पर भी रहता है किंतु ज्यादातर पानी में। यह फुदक-फुदक कर चलता है तथा बरसात में टर्र-टर्र की आवाज़ करता है। **प्राणि.** कई पुच्छहीन जल-स्थलचरों (उभयचरों) में से कोई एक जिसकी त्वचा चिकनी होती है और टाँगें कूदने के लिए लंबी विकसित हुई होती हैं। **मुहा.** कुएँ का मेंढक़ (कूप मंडूक)=अत्यंत सीमित ज्ञान वाला व्यक्ति।

मेकअप/मेकप *पुं. (अं.)* 1. महिलाओं या कलाकारों के लिए बनाव-श्रृंगार या रूप-सज्जा के रूप में प्रयुक्त होने वाली वह सामग्री जो उन्हें अधिक आकर्षक व सुंदर बनाती है। **जैसे:** लिपस्टिक, अंगराग, पाउडर, नेत्रराग आदि। **पर्या.** श्रृंगार सामग्री, प्रसाधन। 2. इन साधनों का प्रयोग। cosmetic

मेखला *स्त्री. (तत्.)* 1. किसी शरीर के मध्य भाग (कमर) को चारों तरफ से घेरने वाली डोरी, श्रृंखला। **पर्या.** करधनी। 2. पर्वत का मध्यभाग। **टि.** प्राय: महिलाएँ तथा बच्चे आभूषण के रूप में सोने या चाँदी की करधनी पहनते हैं।

मेघाच्छन्न [मेघ+आच्छन्न] *वि. (तत्.)* बादलों से घिरा हुआ या ढका हुआ।

मेज़बान *पुं. (फा.)* वह व्यक्ति या देश जो अपने यहाँ आगत अतिथियों/मेहमानों का आतिथ्य-सत्कार करे। **उदा.** निर्गुट शिखर सम्मेलन के भारत मेज़बान देश रहा है।

मेज़बानी *स्त्री.* आतिथ्य, मेहमान-नवाज़ी।

मेट्रो *[मेट्रो-पोलिटन* की संक्षिप्ति] *पुं. (अं.)* 1. महानगर। Metro 2. कुछ महानगरों में जमीन के अदर चलने वाली रेलवे पद्धति जैसे पेरिस, दिल्ली, कोलकाता आदि शहरों में। 3. दिल्ली में मेट्रो वह रेलपद्धति है जो जमीन के नीचे तथा ऊपर (खंभों के ऊपर) भी चलती है।

मेडल *पुं. (अं.)* सामान्यत: गोल आकार का सोने, चाँदी, काँस्य आदि धातु का तमगा जो किसी विशेष कार्य करने वाले व्यक्ति को सम्मानित करने के लिए सरकार या संस्था द्वारा दिया जाता है। **पर्या.** पदक**,** तमगा।

मेध *पुं. (तत्.)* 1. किसी विशेष प्रयोजन से वेदी-कुंड आदि से युक्त स्थल पर अग्नि में हवनीय द्रव्यों से किया जाने वाला यज्ञ। **जैसे:** अश्वमेध, नरमेध आदि। 2. वैदिक परंपरा के अनुसार यज्ञ से संबंधित पशु।

मेधा *स्त्री. (तत्.)* 1. बुद्धि को स्थायी रूप से धारण करने की शक्ति। 2. प्राप्त ज्ञान को ठीक तरह से याद रखने की शक्ति। intellect ***तु.*** बुद्धि।

मेधावी *वि. (तत्.)* मेधा से युक्त, मेधावान। intellectnal

मेमना *पुं. (देश.*<मैं-मैं करने वाला) भेड़ या बकरी का बच्चा। *स्त्री.* मादा मेमना।

मेल *पुं. (तत्.)* 1. दो या अधिक वस्तुओं, लोगों आदि के परस्पर मिलने का भाव या अवस्था। **पर्या.** मिलन**,** मिलाप, संयोग। **उदा.** उत्सव में कई लोगों का मेल-मिलाप हो जाता है। अं. 2. पत्र-पार्सल आदि भेजने की प्रक्रिया, डाक। mail 3. रेलगाड़ी जो यात्रियों के साथ-साथ डाक भी ले जाती है। **पर्या.** डाकगाड़ी। mail train

मेला *पुं. (तद्.<मेलक)* किसी तीर्थ स्थान, नदी, प्रसिद्ध देवालय आदि के पास पावन पर्व के अवसर पर किसी निश्चित दिन या निश्चित अवधि में होने वाला असंख्य मनुष्यों का धार्मिक/व्यापारिक दृष्टि से एकत्रीकरण। **जैसे**: गंगा-मेला, कुंभ-मेला, दीवाली मेला, पुस्तक मेला आदि।

मेलामाइन *पुं. (अं.)* एक उत्तम प्रकार का प्लास्टिक जिससे क्रॉकरी आदि के बरतन बनते हैं। Melamine

मेवा *पुं. (फा.<मेव:)* 1. सूखा फल। (बादाम, किशमिश, पिस्ता, काजू आदि) 2. उत्तम खाद्य पदार्थ। **उदा**. करो सेवा, मिले मेवा। (लोकोक्ति)

मेहँदी *स्त्री.* (तद्.) एक झाड़ी, हथेली, पैर के तलवों, बालों आदि को रँगने के लिए इसकी पत्तियों को पीसकर लगाया जाता है। **मुहा.** मेहँदी रचाना-रँगने के लिए मेंहदी का प्रयोग करना। मेहँदी रचना-हथेली, तलवे आदि पर मेहंदी का रंग आना।

मेह *पुं. (तद्.*<मेघ) बादल, बरसने वाला बादल, वर्षा।

मेहनत *स्त्री. (अर.)* कष्टपूर्ण (मुख्यत: शारीरिक) श्रम, कोशिश, उद्योग, परिश्रम।

मेहनतकश *वि. (अर.+फ़ा.)* 1. मेहनत करने वाला, परिश्रम करने वाला। 2. शारीरिक परिश्रम के बल पर रोज़ी-रोटी कमाने वाला। **पर्या.** मज़दूर**,** श्रमिक।

मेहनताना *पुं. (अर.)* मेहनत के बदले दी जाने वाली धनराशि, पारिश्रमिक, मज़दूरी, डॉक्टर-वकील आदि की फ़ीस।

मेहमान *पुं. (फा.)* **दे.** 'अतिथि'।

मेहमानी *स्त्री.* आतिथ्य, 'मेहमानदारी'।

मेहरबान *वि./पुं. (फा.<मेहर)* कृपालु, दयावान। **उदा**. आप तो हम पर मेहरबान हैं।

मेहरबानी *स्त्री. (फा.)* कृपा, दया। **उदा.** आपकी मेहरबानी से ही यह सफल हुआ।

मेहराब *स्त्री. (अर.)* 1. दरवाज़े के ऊपर धनुषाकार बनावट 2. दरवाजे, खिडक़ी आदि के ऊपर चिनाई की वह वक्र रचना जो रिक्त स्थान के ऊपर के भार को वहन करने में समर्थ होती है। arch 3. गोल दरवाज़ा।

मेहरी *स्त्री. (देश.)* 1. स्त्री, नारी, औरत। 2. पत्नी। **उदा.** गरीब की मेहरी सबकी भौजाई। **टि .**ग्रामीण प्रयोग।

मैंग्रोव वन *पुं. (तत्.)* भू. समुद्र या नदी के किनारों पर (विशेषकर नदी-मुहानों पर) पनपने वाले ऐसे वृक्षों का समूह जिनकी जड़ें फैली हुई होती हैं और इस प्रकार वे मिट्टी की रक्षा करती हैं तथा इस प्रक्रिया से स्थलीय सीमा का विस्तार होता रहता है। **टि.** भारत में ऐसे वन पश्चिम बंगाल के सुंदर वन तथा अंडमान, निकोबार के द्वीप समूहों में पाए जाते हैं। ये समुद्र में ज्वार या सुनामी आने पर लहरों की तीव्रता/प्रहार को कम कर देते हैं।

मैच *पुं. (अं.)* 1. बराबर का व्यक्ति जोड़, जोड़ीदार। **जैसे:** विवाह-संबंध में उसका तुम्हारे साथ मैच ठीक रहेगा। 2. जोड़ा, **जैसे:** कुर्ते-पाजामा का मैच सही है। 3. खेल प्रतियोगिता, **जैसे:** आज ऑस्ट्रेलिया और भारत का क्रिकेट मैच है। match

मैडल/मेडल *पुं. (अं.)* 1. किसी धातु का बना वह मण्डलक/चक्र जो बहादुरी के लिए या किसी विशेष उपलब्धि या महत्वपूर्ण घटना के क्षण में पुरस्कार के रूप में दिया जाता है। 2. धातु का बना गोलाकार विशेष स्मृति चिह्न-मूलक पुरस्कार जो गले में विजयी या श्रेष्ठता प्राप्त व्यक्ति को पहनाया जाता है, पदक। medal

मैत्री *स्त्री. (तत्.)* 1. दो या दो से अधिक व्यक्तियों, देशों आदि के बीच समानता, सद् भावना आदि का संबंध। **पर्या.** दोस्ती। 2. घनिष्ठता/मेल-जोल। **उदा.** श्रीराम और सुग्रीव की मैत्री प्रसिद्ध है।

मैदा *पुं. (फा.)* गेहूँ का अत्यंत बारीक पिसा हुआ आटा। इसका पकवान बनाने में प्रयोग होता है।

मैदान *पुं. (फा.)* 1. धरती का वह फैला हुआ क्षेत्र जो लगभग समतल होता है और जहाँ घास पैदा होती है। 2. खेल आदि का खुला स्थान। 3. युद्ध का खुला स्थान। 4. पर्वतीय क्षेत्र के अतिरिक्त प्राय: समतल क्षेत्र। (भूगोल में) **मुहा.** मैदान मारना-जीतना, सफलता प्राप्त कर लेना। मैदान छोड़ना-हार स्वीकार कर लेना।

मैना *स्त्री. (तद्.<*मदना) मधुर स्वर वाली काले रंग की प्रसिद्ध भारतीय चिड़िया। सारिका।

मैया *स्त्री. (देश.)* **दे.** माँ', 'माता', 'माई'।

मैला *वि. (तद्.<*मलिन) जिस पर मैल जमी हो। **पर्या.** मलिन, अस्वच्छ, गंदा। **जैसे**: मैला वस्त्र। *पुं.* 1. विष्ठा, 2. कूड़ा-कर्कट। **उदा.** सिर पर मैला ढोने की प्रथा अब समाप्त हो गई है।

मोक्ष *पुं. (तत्.)* 1. बार-बार जन्म लेने और मरने के बंधनों से छुटकारा, आवागमन से मुक्ति। 2. किसी भी प्रकार के बंधन से छुटकारा। 3. हिंदू धर्म में धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चार पुरुषार्थों में से एक। **विलो.** बंधन।

मोगरा *पुं. (तद्<*मुद् गर) 1. फूल प्रजाति का पौधा जिसके फूल गोल, सुंदर, सफेद तथा सुंगधित होते हैं। **पर्या.** बेला। 2. एक प्राचीन अस्त्र जो लोहे का बना होता था। लौह-मुद्गर।

मोच *स्त्री. (देश.)* शरीर के जोड़ों की नसों में चोट या झटके के कारण सूजन आना या उनका अपना स्थान छोड़ देना और इस कारण दर्द होना। strain

मोची *पुं. (तद्.<*मोचन) वह कारीगर जो चमड़े के जूते बनाता या ठीक करता है। cobbler

मोट *स्त्री. (देश.)* चमड़े से बना चौड़े मुँह वाला विशाल थैला जिसमें कुएँ से पानी भरकर बैलों के द्वारा खींचा जाता है तथा इस प्रकार खेतों की सिंचाई की जाती है। **पर्या.** गठरी, चरसा, पुर।

मोटा *वि./पुं. (तद्.<मुष्ट)* 1. जिसका शरीर स्थूल या मांसल हो। **जैसे**: मोटा आदमी। fait **विलो.** पतला। 2. सबल और संपन्न। **जैसे**: मोटा आदमी-अमीर। 3. साधारण या घटिया। **जैसे:** मोटा अनाज, मोटा कपड़ा। rough, coarse 4. अनुमानित। मोटा अंदाज rough

मोटा-ताज़ा *वि.(तद्.+फा.)* 1. स्थूल या भरे-पूरे शरीरवाला। 2. संपन्न, पैसे वाला। **उदा.** इस कार्य को संपन्न कराने के लिए किसी मोटे-ताजे आदमी की आवश्यकता है।

मोटापा *पुं. (देश.)* 1. शरीर के मोटे होने की स्थिति, स्थूलता।

मोटी *स्त्री. (तद्.)* स्थूल या भरे-पूरे शरीर वाली। **जैसे:** 1. मोटी औरत।

मोड़ *पुं. (देश.)* 1. मुड़ने/मोड़ने की स्थिति। क्रिया या भाव, घुमाव। 2. किसी मार्ग वस्तु आदि का किसी दिशा में घूम जाने या मुड़ जाने की स्थिति। **जैसे:** अशोक विहार जाने के लिए अगले मोड़ से दाहिने जाएँ।

मोतिया *पुं. (देश.)* 1. एक प्रकार का बेला (फूल)। **दे.** बेला'। 2. मोती के समान चमक वाला, मोती जैसा सफेद रंग।

मोतियाबिंद *पुं. (देश.+तद्.)* आँख का एक रोग जिसमें आँख के परदे पर झिली सी आ जाती है जिससे दृष्टि कमजोर या नष्ट हो जाती है। cataract

मोती *पुं.(तद्*<मौक्तिक) समुद्री सीप में पनपने वाला एक बहुमूल्य रत्न जो छोटा, गोल, सफेद तथा चमकदार होता है।

मोतीझरा *वि./पुं. (तद्.)* शा.अर्थ (बुखार) जिसमें (छाती पर) बारीक मोती से दाने झरे हुए दिखाई पड़ते हैं। **दे.** 'टाइफाइड'।

मोद *पुं. (तत्.)* 1. प्रसन्नता, हर्ष। 2. सुंगध।

मोबाइल फोन *पुं. (अं.)* वह छोटा दूरभाष यंत्र जिसे कोई भी व्यक्ति अपने साथ कहीं भी आसानी से ले जा सकता है तथा उससे संदेश ग्रहण कर सकता है या दे सकता है। Mobile

मोबाईल *वि. (अं.)* 1. चल, गतिशील। 2. चलता-फिरता। 3. परिवर्तनशील। **जैसे:** मोबइल होना।

मोम *पुं. (फा.)* 1. वह कोमल, हल्का, चिकना पदार्थ जिससे मधुमक्खियाँ अपना छत्ता बनाती हैं। 2. हल्के पीले या सफेद रंग का एक चिकना, कोमल पदार्थ जो बहुत कम गर्मी में पिघल जाता है। उस मोम से मोमबत्तियाँ बनाई जाती हैं। **उदा.** उसका दिल तो मोम जैसा है।

मोरचा *पुं.* **दे.** 'रस्ट'।

मोरपंख *पुं. (तद्.*<अं.) मोर का पंख।

मोरपंखी *पुं./वि. (देश.)* 1. एक गहरे हरे रंग का बिना फूलों का पौधा जो शोभा के लिए लगाया जाता है। 2. मोर पंख के रंग वाला, गहरा चमकीला नीला। 3. गहरा चमकीला नीला रंग।

मोरी *स्त्री. (देश.*<मोहरी) वह नाली जिसमें से होकर बरसात का पानी अथवा गंदा पानी बहता है। drain सर्व. (*स्त्री. ब्रज.<मम),* मेरी।

मोर्चा/मोरचा *पुं. (फा.*<मोरच) 1. लोहे पर नमी आदि के कारण लगने वाली मैल की भूरी-सी काली परत जिससे लोहा खराब और कमजोर हो जाता है, जंग। **जैसे:** अलमारी में मोर्चा/जंग लग गया है। 2. किले की रक्षा के लिए उसके चारों ओर खोदी जाने वाली खाई। 3. वह स्थान जहाँ से सेना द्वारा आक्रमण या रक्षात्मक युद्ध किया जाता है। **उदा.** सेना ने शत्रु के विरूद्ध मोर्चा संभाल लिया।

मोल *पुं. (तद्.*<मूल्य) किसी वस्तु को पाने के बदले दिया जाने वाला धन। **पर्या.** मूल्य**,** कीमत, दाम। price **मुहा.** मोल-भाव करना-मूल्य कम-अधिक करके भाव निश्चित करना। मोल लेना-खरीदना; अपने सिर पर ले लेना। **जैसे:** मुसीबत मोल लेना। मोल का लिया-खरीदा हुआ। (मोसों कहत मोल को लीन्हों...(सूर)

मोलभाव *पुं. (देश.)* किसी वस्तु को खरीदते-बेचते समय मूल्य कम/अधिक बोलकर सौदा तय करने की प्रक्रिया।

मोह *पुं. (तत्.)* अज्ञान, भ्रम, मूर्च्छा/मूर्छा, बेहोशी। अपनेपन के कारण अच्छे-बुरे की पहचान न कर पाना। भौतिक वस्तुओं, संबंधों आदि में आसक्त।

मोहजाल *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ मोह का जाल/जाला। प्राणियों में व्याप्त सांसारिक लगाव। **उदा.** तुम तो मोहजाल में फँसे पड़े हो, कुछ समाज के लिए भी करो।

मोहताज/मुहताज *वि. (अर.)* 1. जिसे किसी वस्तु की आवश्यकता या अभाव हो, धनहीन, गरीब, निर्धन। 2. कुछ प्राप्त करने के लिए साधन न होने के कारण लाचार या दूसरे पर आश्रित।

मोहना/मोह लेना *स.क्रि. (तत्.)* आकर्षित करना, लुभाना, छलना, बुद्धि को प्रभावित कर अपने अनुसार चलने के लिए विवश कर देना। **मुहा.** मन मोह लेना।

मोहपाश *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ मोह रूपी बंधन, मोह का बंधन। सांसारिक बंधन, सांसारिक आसक्ति। **उदा.** मोहपाश से छूटना सहज नहीं है।

मोह-ममता *स्त्री.(तत्.)* किसी के प्रति अत्यधिक अपनत्व की भावना। **उदा.** वह व्यक्ति मोह-ममता से दूर है।

मोह-माया *स्त्री.(तत्.)* **दे.** 'मायाजाल'।

मोहरा *पुं. (देश.)* 1. किसी पात्र का मुख या खुला भाग। 2. सेना की अगली पंक्ति। 3. (शतरंज के) खेल में कोई गोटी। **उदा.** (i) शतरंज के खेल में

सफेद और काले रंग के 16-16 मोहरें होते हैं। (ii) मुझे तो इस मामले में मोहरा बनाया गया है।

मोहल्ला/मुहल्ला/महल्ला *पुं. (अर.*<महल्लः) गाँव, कस्बे या नगर का एक छोटा आवासीय भाग, जिसमें बहुत से मकान, सड़कें, तथा गलियाँ होती हैं।

मोहित *वि. (तत्.)* मोह में पड़ा हुआ, मुग्ध, आसक्त।

मौका *पुं. (अर.*<मौक़आ) 1. किसी घटना के घटित होने का स्थान। **जैसे:** मौका वारदात। 2. अवसर, समय। **उदा.** मुझे मंच पर बोलने का मौका नहीं मिला।

मौज *स्त्री. (अर.)* 1. वह मानसिक सुखद अनुभूति जो सभी प्रकार की सांसारिक सुविधाओं से प्राप्त हुई मानी जाती है। 2. मन की उमंग, लहर, आनंद, सुख, मज़ा। **उदा.** तुम्हारी लॉटरी खुल गई, अब तो मौज ही मौज है।

मौजूद *वि. (अर.)* 1. उपस्थित। **उदा.** आपके जन्मदिन पर मैं समारोह में मौजूद नहीं हुआ, इसके लिए क्षमा माँगता हूँ। 2. जो वर्तमान में हो। **पर्या.** विद्यमान।

मौजूदगी *स्त्री. (अर.)* उपस्थिति। **उदा.** आपकी मौजूदगी में यह सब कैसे हुआ

मौत *स्त्री. (अर.)* 1. पंचभूतों से निर्मित शरीर की वह अवस्था जब वह चेतनारहित या जीवात्मा से रहित हो जाता है, मृत्यु, मरण। **उदा.**कल एक साथी की दुर्घटना में मौत हो गई। **मुहा.** मौत के घाट उतारना-मार डालना।

मौन *पुं. (तत्.)* 1. वाणी से न बोलना। **पर्या.** चुप्पी। 2. अनुकूलता-प्रतिकूलता, संयोग-वियोग, राग-द्वेष, सुख-दु:ख आदि द्वंद्वों को लेकर मन में हलचल न होना। *वि.* जिसने मौन धारण कर रखा हो, जो चुप हो।

मौलवी *पुं. (अर.)* 1. इस्लामी धर्म का ज्ञाता या विद्वान। 2. शिक्षक, विद् वान। **उदा.** मदरसों में पढ़ाने वाले शिक्षक को मौलवी कहते हैं।

मौलसिरी *स्त्री. (तद्.*<मौलिश्री) एक बड़ा सदाबहार पेड़ जिसमें छोटे सुगंधित फूल लगते हैं। बकुल वृक्ष।

मौला *पुं. (अर.)* जो हमारे जीवन या जीवनवृत्ति का स्वामी हो, स्वामी, मालिक, ईश्वर, परमात्मा। **उदा.** या मेरे मौला! तुमने यह क्या किया?

मौलाना *पुं. (अर.)* 1. बड़ा मौलवी। 2. मुसलमान विद्वानों के लिए 'आचार्य' जैसी उपाधि जो नाम से पहले लिखी जाती है। **जैसे:** मौलाना अबुल कलाम आज़ाद।

मौलिक *वि.(तत्.)* 1. मूल या जड़ से संबंध रखने वाला। जैसे-मौलिक निवास स्थान। 2. मूल तत्व या सिद्धांत से संबंधित तात्विक, अद्वैतवाद। **जैसे:** शंकराचार्य का मौलिक सिद्धांत। 3. जो किसी का अनुवाद या नकल न लगे। **प्रयो.** कामायनी जयशंकर प्रसाद की मौलिक कृति है।

मौसम/मौसिम *पुं.(अर.)* 1. पृथ्वी द्वारा सूर्य की परिक्रमा करते समय सूर्य की किरणें अलग-अलग कोणों से पड़ने के कारण पृथ्वी पर होने वाला जलवायु संबंधी नियमित प्रभाव। ऋतु, **जैसे**: गर्मी, वर्षा, वसंत आदि। season 2. वर्षा, वायु आदि के कारण होने वाला अस्थाई प्रभाव। weather **जैसे**: मौसम खराब हो गया। 3. फ़सल/फलों का काल **जैसे:** आम का मौसम। 4. समय, वक़्त-मौसम बुरा है।

मौसी *स्त्री. (देश.)* माँ की बहन, मासी, बहन तथा भाई की सास। *पुं.* मौसा।

म्यान *स्त्री.(फा.*<मियान) चमड़ा मढ़ा वह आवरण या पेटिका जिसे उपयोग न किए जाने के दौरान तलवार, कटार आदि सुरक्षित रखी जाती हैं तथा केवल मूठ का भाग म्यान से बाहर रहता है।, *अव्यय. (फ़ा.)* बीच में।

म्यूज़ियम *पुं.(अं.)* संग्रहालय, जहाँ कला, पुरातत्व, प्राणिविज्ञान, इतिहास आदि से संबंधित आलेख, चित्र, प्राचीन वस्तुएँ आदि प्रदर्शन के लिए रखी रहती हैं। **पर्या.** अजायबघर।

य

यंत्र *पुं. (तत्.)* 1. वह उपकरण या कल पुर्जों को मिलाकर बनाई गई मशीन जो कोई विशेष कार्य करने या कोई वस्तु, कल पुर्जे आदि बनाने के लिए या शक्ति उत्पन्न करने के लिए हो। शा.अ. मशीन, instrument **उदा.** यह अखबार छापने का यंत्र है 2. (तंत्र) गले या हाथ में बाँधने का ताबीज, पूजा के लिए कागज़ या धातु पर बनाया हुआ कोई रेखाचित्र।

यंत्र-चालित *वि. (तत्.)* 1. वह (कार्य) जो किसी यंत्र की सहायता से किया गया हो। **प्रयो.** यंत्रचालित पद्धति से अध्यापन नहीं हो सकता कि कक्षा में गए, हाजिरी ली, भाषाण दिया और निकल आए।

यंत्रणा *स्त्री. (तत्.)* शिकंजे में कसे होने और उससे छूटने का यत्न करने जैसा शरीर या मन को होने वाला कष्ट। **पर्या.** घोर दु:ख, तीव्र पीड़ा, अपार वेदना।

यकीन *पुं. (अर.)* किसी बात पर किया गया विश्वास, भरोसा, एतबार। **उदा.** मुझे पूरा यकीन है कि इस बार परीक्षा में तुम उच्च स्थान प्राप्त करोगे।

यक़ीनन *वि./अव्य. (अर.)* निस्संदेह, निश्चित ही। **प्रयो.** यक़ीनन इस समय वह उद्यान से आ गया होगा।

यकृत *पुं. (तत्.)* 1. शरीर में उदर भाग में दाहिनी ओर स्थित वह थैली जिसकी क्रियाशीलता से खाया हुआ भोजन पचता है, जिगर, लीवर। 2. तापतिल्ली नामक रोग। **प्रयो.** यकृत हमारे शरीर के पाचन संस्थान का प्रमुख अंग है।

यकृतशोथ *पुं. (तत्.)* यकृत (जिगर) का जीवाणु या विषाणु से संक्रमित होकर सूज जाना। Hepatitis

यक्ष्मा *पुं. (तत्. < यक्ष्मन्)* 1. वह रोग जिसके होने से शरीर बिलकुल सूख जाता है। केवल हड्डियों का ढाँचा दिखाई देता है। 2. क्षय रोग, तपेदिक tuber culosis (T.B.) **उदा.** यक्ष्मा रोग की प्रारंभिक अवस्था में ही चिकित्सक से परामर्श करना आवश्यक है।

यजमान *पुं. (तत्.)* वह गृहस्थ व्यक्ति जो अपने पुरोहित से अपने निमित्त यज्ञ और/या अन्य धार्मिक कृत्य करवाता है, तथा बदले में उसे पारिश्रमिक स्वरूप दान-दक्षिणा आदि देता है। **तु.** पुरोहित।

यजमानी *स्त्री.* (यजमान का कार्य, यजमान-वृत्ति। **दे.** यजमान।

यजुर्वेद *पुं. (तत्.)* चार वेदों में से दूसरा प्रसिद्ध वेद। इसमें यज्ञ-कर्मों के विस्तारपूर्वक विवेचन के साथ यज्ञ विषयक मंत्रों को संगृहीत किया गया है।

यज्ञ *पुं. (तत्.)* 1. पूजा या उपासना की एक पद्धति या कार्य। 2. प्राचीन काल से प्रचलित आर्यों का एक प्रसिद्ध धार्मिक कृत्य या अनुष्ठान जो विशिष्ट रूप से हवन के रूप में होता है। 3. बलिदान से संबंधित धार्मिक कृत्य। **पर्या.** हवन, याग।

यज्ञ मंडप *पुं. (तत्.)* **दे.** 'यज्ञशाता'।

यज्ञशाला *स्त्री. (तत्.)* (ऋषियों के आश्रमों में अब आर्य समाज मंदिरों में भी) वह निश्चित मंडप, जहाँ यज्ञ किए जाते हैं। **पर्या.** यज्ञमंडप।

यति *पुं. (तत्.)* 1. संन्यासी, साधु। यति *स्त्री.* 2. कविता की पंक्ति में वह स्थान जहाँ पढ़ते समय थोड़ा विराम लिया जाता है। **प्रयो.** हमें कवितावाचन में लय, गति और यति पर ध्यान देना चाहिए। **टि.** कविता लेखन में प्राय: इसे अर्धविराम (,) द्वारा सूचित किया जाता है।

यतीम *पुं. /वि. (अर.)* 1. वह कम उम्र वाला व्यक्ति जिसका भरण-पोषण करने वाला कोई न हो। 2. वह बालक जिसके पिता की मृत्यु हो गई हो। शा.अर्थ अनाथ, बेसहारा, बेचारा। **उदा.** कल की दुर्घटना में यह बालक यतीम हो गया।

यतीमख़ाना *पुं. (अर. + फा.)* निराश्रित व्यक्तियों एवं अनाथ बालकों के पालन-पोषण का वह स्थान जो किसी सरकारी या सामाजिक संस्था की देखरेख में संचालित हो। शा.अर्थ अनाथालय। **उदा.** इस यतीमखाने में बच्चों की शिक्षा का उत्तम प्रबंध है।

यत्न *पुं. (तत्.)* किसी भी कार्य को आरंभ से अंत तक पूरा करने का प्रयास या उद् योग। **पर्या.** कोशिश, प्रयत्न।

यत्र-तत्र *अव्य. (तत्.)* 1. यहाँ-वहाँ (सभी जगह); जहाँ-तहाँ (इधर-उधर), जगह-जगह।

यथा *क्रि.वि./अव्य. (तत्.)* 1. जिस प्रकार, जैसे, ज्यों। **यथा** राजा तथा प्रजा। 2. (अव्य.) किसी सिद्धांत के उदाहरण के रूप में प्रयुक्त होने वाला, **जैसे:** यथा नवहिं बुध विद्या पाये। 3. (क्रि.वि.) उचित, निश्चित, निर्धारित। **प्रयो.** (i) सब लोग यथा स्थान बैठ जाएँ। (ii) यथा योग्य सबको प्रणाम कहना। 4. जितना, अनुसार **प्रयो.** (i) यथा संभव मैं कल आऊँगा। (ii) यथाशक्ति काम करूँगा।

यथातथ्य *वि.,क्रिवि. (तत्.)* (यथा+तथ्य) तथ्य के अनुसार, अनुकूल या अनुरुप अर्थात् ज्यों-का-ज्यों, हू-बहू, जैसे-का-तैसा। **उदा.** क्रिकेट के आँखों देखे हाल में यथातथ्य वर्णन अनिवार्य है।

यथार्थ *अव्य. (तत्.)* जो अपने अर्थ या आशय के अनुसार हो 1. ठीक वैसा, जैसा होना चाहिए। 2. उचित, वाजिब। 3. सच्चा, सत्यतापूर्ण।

यथार्थतः *क्रि.वि. (तत्.)* 1. यथार्थ में, वास्तव में सचमुच। 2. पूरी तरह। **प्रयो.** यह बात **यथार्थतः** सत्य है।

यथार्थवाद *(तत्.)* 1. ललित साहित्य या कला की एक विचारधारा जिसके अनुसार लेखक को अपनी कृति में जीवन के यथार्थ रूप का ही अंकन करना चाहिए, आदर्श रूप का नहीं। 2. जो बात या पदार्थ वस्तुतः जिस रूप में दिखे उसे उसी रूप में मानने या ग्रहण करने का सिद्धांत। 3. एक दार्शनिक सिद्धांत जिसके अनुसार भौतिक जगत की स्वतंत्र सत्ता है और हमें सारा ज्ञान भौतिक तत्त्वों से होता है। **विलो.** आदर्शवाद। realism

यथार्थवादी *वि./पुं. (तत्.)* (वह व्यक्ति) जो यथार्थवाद को मानता हो। **दे.** 'यथार्थवाद'।

यथाविधि [यथा+विधि] *अव्य. (तत्.)* शा.अर्थ जैसी विधि है उसके अनुसार 1. विधि या नियमों का उल्लंघन किए बिना। 2. जैसा होना चाहिए, उसी के अनुसार। **पर्या.** नियमानुसार।

यथासंभव *क्रि.वि.(तत्.)* 1. जितना संभव हो सके। यथाशक्य। **प्रयो.** वह भी यथासंभव सहायता देगा। 2. संभावना के अनुसार। **उदा.** यथासंभव सफलता मिलेगी।

यम *पुं. (तत्.)* 1. मृत्यु के देवता, यमलोक के स्वामी, यमराज, धर्मराज। 2. जुड़वाँ बच्चे 3. नियंत्रण, आत्मसंयम। 4. (दर्शन) चित्त को धर्म में स्थिर करने वाले साधन। (अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह् मचर्य, अपरिग्रह-ये पाँच यम हैं) 5. योग के आठ अंगों में सर्वप्रथम 'यम' है।

यमक *पुं. (तत्.)* शब्दालंकार का एक भेद जिसमें एक शब्द के बार-बार प्रयोग में आने पर हर बार उसका अर्थ अलग-अलग निकलता है। "वही शब्द पुनि-पुनि परै, अर्थ और ही और।" **उदा.** 'तीन बेर खाती थी वो तीन बेर खाती है'।

यवन *पुं. (तत्.)* 1. यूनान देश का निवासी। 2. मुसलमान। *स्त्री.* यवनी **उदा.** अंग्रेजों के आने से पहले भारत में यवनों का भी साम्राज्य था। **टि.** प्राचीन काल में दूसरे देशों से आए यूनानियों या इस्लाम मतानुयायियों को 'यवन' कहा जाता था।

यश *पुं. [तत्.< यशस्]* 1. अच्छे गुणों या कार्यों के कारण होने वाली नामबारी। **पर्या.** ख्याति, प्रशंसा, कीर्ति। 2. बड़ाई, महिमा। **उदा.** वह अपने गुरु के यश का वर्णन करते नहीं थकता।

यशस्वी *वि. (तत्.)* जिसे काफ़ी यश प्राप्त हुआ हो। **पर्या.** कीर्तिशाली, ख्यातिनाम। **प्रयो.** धर्मराज युधिष्ठिर इंद्रप्रस्थ के यशस्वी सम्राट् थे।

यह (सर्व./विशे.) *(तद्. >एष)* यह एक संकेतवाची सर्वनाम शब्द है जो किसी समीप स्थित व्यक्ति, वस्तु आदि के लिए प्रयुक्त होता है। **जैसे-**(i) यह पढ़ रहा है। (ii) यह नदी, गंगा है। (विचार की अभिव्यक्ति हेतु) (iii) हमारा कर्तव्य यह है कि 'हम विद्या पढ़ें।' *(वि.)* संज्ञा या सर्वनाम के पूर्व प्रयुक्त होने की स्थिति में 'यह' सार्वनामिक विशेषण होता है। **प्रयो.** (i) यह बालक नाटक देख रहा है। (ii) यह जीवन परमार्थ के लिए है। **टि.** 1. 'यह' में विभक्ति लगने पर 'इस' रूप बन जाता है। **जैसे:** इसने (यहने नहीं), इसको, इस छात्र के लिए। 2. 'यह' के साथ 'ही' लगाने पर 'यही' रूप बनता है।

यहाँ *क्रि.वि. (तत्. < इह)* इस स्थान पर, इधर इस जगह, इस ओर, स्थान पर। **जैसे:** (i) यहाँ ही विंध्याचल पर्वत है। (ii) आज मित्र के यहाँ विवाहोत्सव है। **विलो.** वहाँ **टि.** 'यहाँ' के साथ 'ही' लगाने पर 'यहीं' रूप बनता है।

या खुदा *(पदबंध)* (फ़ा.) हे ईश्वर। **प्रयो.** या खुदा! तुम्हारा ही सहारा है।

या फिर (यो. अव्य.) (देश.) प्रस्तुत दो विकल्पों में से एक को चुनने के लिए प्रयुक्त, या तो, अन्यथा। **जैसे:** या तो मेरे साथ प्रदर्शनी देखने चलें या फिर उनके साथ नाटक देखने जाएँ।

याक *पुं. (ति.< ग्याग)* भारी भरकम बैल की आकृति वाला एक पहाड़ी (मुख्यत: तिब्बती) पशु जो अपने लंबे बालों ऊँचे कंधों, बड़े सींगों और बोझ ढोने की क्षमता के कारण प्रसिद्ध है।

याचक *वि./पुं. (तत्.)* माँगने वाला, भिखारी।

याचना *स्त्री. (तत्.)* माँग, प्रार्थना।

याचिका *स्त्री. (तत्.)* विधि. न्यायालय में प्रस्तुत औपचारिक आवेदन जिसमें आवेदक ने अपने हित में न्यायालय से कुछ माँग की हो। petition

याचिकाकर्ता *पुं. (याचिका+कर्ता) (तत्.)* अर्जी या प्रार्थना-पत्र प्रस्तुत करने वाला। 2. न्यायालय में प्रार्थना-पत्र या petition पेश करने वाला व्यक्ति। याचिका प्रस्तुत करने वाला आवेदक। **दे.** 'याचिका'।

यातना *स्त्री.* अत्यधिक शारीरिक कष्ट या पीड़ा। tarture

यातायात (यात+आयात) *पुं. (तत्.)* 1. एक स्थान से दूसरे स्थान तक आना जाना। 2. एक स्थान से दूसरे स्थान तक व्यक्तियों को ले जाने या सामान ढोने की व्यवस्था। **जैसे:** बस, रेल, हवाई जहाज आदि। transport शा.अर्थ गमनागमन। **उदा.** दिल्ली में **'यातायात'** की व्यवस्था उत्तम है।

यात्रा *स्त्री. (तत्.)* 1. घर से या एक स्थान से दूसरे दूरवर्ती स्थान तक जाने की क्रिया। सफ़र। 2. धार्मिक भावना से तीर्थ या प्रसिद्ध देवस्थान के दर्शन आदि के लिए जाना। तीर्थाटन, तीर्थ यात्रा। 3. यात्रा से संबंधित कोई विशेष उत्सव **जैसे:** 'जगन्नाथ रथ यात्रा'। **उदा.** हमारी कश्मीर की हवाई यात्रा सफल रही।

यात्री *पुं. (तत्.)* यात्रा करने वाला व्यक्ति **जैसे:** तीर्थ यात्री, पदयात्री। **वि.** यात्रा कराने वाला **जैसे:** यात्री विमान।

यात्री गृह *पुं. (तत्.)* वह स्थान जहाँ यात्री या पर्यटक ठहर सकें। विश्राम गृह, धर्मशाला, सराय (लाजिंग हाउस)। अर्थ. यात्री-निवास। **उदा.** देहरादून में अनेक यात्रीगृह हैं।

याद *स्त्री. (फ़ा.)* 1. बीती घटनाओं को ध्यान में पुन: ले आना। **पर्या.** 2. किसी वस्तु को देखने के बाद उससे संबंधित कई बातों को पुन: स्मरण करना। 3. रटने की क्रिया। **उदा.** कविता याद करना। 4. भगवान को, किसी व्यक्ति को या किसी वस्तु आदि का ध्यान करना। **प्रयो.** दु:ख में भगवान याद आ जाता है। **पर्या.** स्मरण।

यादगार *स्त्री. (फ़ा.)* किसी की निशानी अथवा चिह्न। **पर्या.** स्मारक, स्मृति चिह्न। **उदा.** शाहजहाँ ने अपनी बेगम की स्मृति में यादगार रूप में ताजमहल का निर्माण करवाया।

याददाश्त *स्त्री. (फ़ा.)* याद रखने की क्षमता या शक्ति, 1. स्मरण-शक्ति, स्मृति, 2. संस्मृति।

यामिनी *स्त्री. (तत्.)* शा.अ. रात **पर्या.** रात्रि, निशा।

याम्योत्तर रेखा *(याम्य+उत्तर+रेखा) स्त्री. (तत्.)* याम्य दक्षिण (भारतीय शास्त्रों में दक्षिण दिशा का स्वामी यम को माना जाता है।) **भू.** पृथ्वी के तल पर दक्षिण ध्रुव से उत्तर ध्रुव को जोड़ने वाली काल्पनिक अर्धवृत्तात्मक रेखा याम्योत्तर रेखा, याम्योत्तर वृत्त कहलाती है। **पर्या.** देशांतर रेखा meridian line वृत्त।

यायावर *वि. (तत्.)* 1. वह व्यक्ति जो निरंतर भ्रमणशील रहता हो। **पर्या.** घुमक्कड़। 2. जिसका निवास निश्चित न हो, कहीं भी रह-खा-कमा ले। **जैसे:** गाड़िया, लुहार, बंजारे आदि। 3. संन्यासी।

यायावरी *स्त्री. (तत्.)* 1. यायावर जैसा (घुमक्कड़) जीवन। **दे.** 'यायावर'।

यासमीन *स्त्री. (फ़ा.)* 1. चमेली का पौधा। 2. चमेली का सुगंधित फूल जो सुंदर एवं श्वेत या पीले रंग का होता है। **पर्या.** नवमल्लिका, चमेली, मालती।

यीस्ट *पुं. (अं.)* **वन.** ascomycetes कुल का एक कवक जो zymes नामक zymes उत्पन्न करता है। सामान्य भाषा का **पर्या.** खमीर।

युक्ति *स्त्री (तत्.)* किसी समस्या या विषम परिस्थिति से निपटने के लिए निकाला गया उपाय, तरकीब। **उदा.** तुम्हें मैं परीक्षा में उत्तीर्ण होने की युक्ति बताता हूँ। 2. तर्क। **मुहा.** युक्ति लड़ाना-उपाय करना।

युग *पुं. (तत्.)* 1. जोड़ा, दो का समूह। 2. एक बड़ा समय। पीढ़ी। काल विशेष। **जैसे:** प्राचीन युग प्रस्तर, युग, लौह युग आदि। 3. पुराणों के अनुसार युग चार होते हैं- सतयुग, त्रेता युग, द्वापर युग, कलियुग।

युगधर्म *पुं. (तत्.)* 1. किसी युग की वे विशिष्ट बातें या नियम जिनका पालन सभी लोग प्रधान रूप से करते हों और जिसे उस काल में आवश्यक माना जाता है। **जैसे:** सत्ययुग में 'तप' युगधर्म था। 2. समयानुकूल या परिस्थिति के अनुसार कर्तव्य-कर्म।

युग पुरुष *पुं. (तत्.)* किसी काल खंड विशेष का अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रभावशाली व्यक्ति। **जैसे:** महात्मा गाँधी एक युग पुरु थे।

युग प्रवर्तक *वि./पु.* अत्यंत प्रभावशाली वह व्यक्ति जिसे किसी काल विशेष की घटनाओं को शुरू कर उसे अपनी अंतिम परिणति तक पहुँचाने का श्रेय दिया जाए। *(तत्.)* 1. किसी विशेष योगदान, आविष्कार वैचारिक क्रांति से नये युग का प्रारंभ करने वाला। 2. युग प्रेरक। **उदा.** स्वामी. दयानंद एक युगप्रवर्तक महापुरुष थे। epach-maker

युगांतरकारी *वि. (तत्.)* शा.अर्थ जमाने को बदल देने वाला। वि.अ. युग का अर्थात् जीवन के प्रवाह को किसी विशेष योगदान से बदल देने वाला। **जैसे:** 1. computer आज की युगांतरकारी खोज है। 2. 15 अगस्त 1947 को युगांतरकारी घटना ने देश को परतंत्रता से मुक्ति दिलाई।

युग्म *पुं. (तत्.)* दो का जोड़ा।

युग्मक अगुणित गुणसूत्र संख्या वाली परिपक्व प्रजनन कोशिका। यह अपने समान किंतु विपरीत लिंग वाली अन्य कोशिका के साथ संलयित होकर या मिलकर युग्मज gametic बनाती है। **जैसे:** अंडाणु तथा शुक्राणु आदि (gamete)

युग्मज *वि/पुं. (तत्.)* **दे.** युग्मनज।

युग्मन *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ दो वस्तुओं का मिलन। **भौ.** दो दोली परिपथों की व्यवस्था जिसमें एक परिपथ की ऊर्जा दूसरे में स्थानांतरित हो जाती है; साथ ही आवृत्ति में परिवर्तन हो जाता है। **वन.** (i) जनन का एक प्रकार जिसमें समान आकृति वाली दो कोशिकाओं का मिलन होता है; (ii) दो समान अंगों का (जैसे, गुणसूत्रों का) जुड़ना। दो युग्मकों के मिलन से बनी कोशिका जो परिवर्धन के उपरांत नवजीव को जन्म देती है। caupling शा.अर्थ युग्मन के फलस्वरूप उत्पन्न।

युद्ध *पुं. (तत्.)* दो दलों या देशों के बीच एक दूसरे को हराने के लिए शुरू किया गया प्रभावी सशस्त्र संघर्ष। war

युद्ध गान *पुं. (तत्.)* युद्ध शुरू होने से ठीक पहले गाया जाने वाला गाना जिसकी धुन सैनिकों में उत्साह का संचार करती है। was song

युद्ध स्तर *पुं. (तत्.)* युद्ध जैसी तैयारी। **प्रयो.** सुनामी आने पर बाढ़ पीड़ितों की सहायता के लिए युद्ध स्तर पर सहायता भेजी गई।

युद्धध्वनित *वि. (तत्.)* शा.अर्थ. युद्ध से उत्पन्न। सा.अर्थ. युद्ध के उपरांत या युद्ध के परिणाम स्वरूप उत्पन्न स्थिति।

युद्धनाद *पुं. (तत्.)* 1. युद्ध के आरंभ से तत्काल पूर्व दोनों दलों द्वारा किया जाने वाला जयघोष। **पर्या.** युद् धघोष। battle-cry 2. युद्ध के समय होने वाला कोलाहल या शोर।

युद् धपोत *पुं. (तत्.)* अस्त्र शस्त्रों से सज्जित विशाल आकार का समुद्री जहाज़। **पर्या.** जंगी जहाज battle ship

युवक *पुं. (तत्.)* 1. युवावस्था (16-35 आयु तक) से युक्त पुरुष, 2. तरुण व्यक्ति, जवान। **जैसे:** आज का युवक प्रगतिशील विचारों का है। (स्त्री.) युवती। **पर्या.** जवान, युवा।

युवती *स्त्री. (तत्.)* सोलह से पैंतीस वर्ष की आयु की महिला। **पुं.** युवक।

युवराज *पुं. (तत्.)* राजा का वह पुत्र (प्राय: ज्येष्ठ पुत्र) जो सिंहासानासीन राजा की मृत्यु के पश्चात् राज्य का उत्तराधिकारी बने। (**स्त्री.**) युवराज्ञी।

युवा *वि./पुं. (तत्. < युवन्)* 1. सोलह वर्ष से पैंतीस वर्ष की आयु का आदमी, जिसके शरीर में बल, स्फूर्ति अधिक रहती है। 2. पशुओं में उनकी आयु के अनुसार अधिक बल एवं स्फूर्ति की

अवस्था। **पर्या.** जवान, तरुण, युवक। (**स्त्री.**) युवती। **तु.** 1. शिशु (जन्म से चार वर्ष तक) 2. बालक (चार से दस वर्ष तक) 3. किशोर (दस से पंद्रह वर्ष तक) 4. नवयुवक (सोलह से पचीस वर्ष तक) 5. अधेड़ (पैंतीस से साठ वर्ष तक) 6. वृद्ध (साठ वर्ष से ऊपर)

यूकेरियोट्स *पुं. (अं.)* 1. ऐसा जीव जिसकी कोशिकाओं की कलाओं के भीतर सम्मिश्र संरचना नहीं होती। 2. सुकेंद्रिकी। eukaryotes **तुल.** prokaryotes

योग *पुं. (तत्.)* 1. दो या अधिक अंकों या राशियों को जोड़ने की संक्रिया addition 2. दो या दो से अधिक राशियों (समूहों/ढेरों) पदार्थों या तत्त्वों का एक होना। 3. पतंजलि द्वारा प्रतिपादित भारतीय दर्शन जिसमें यम, नियम, आसन आदि अष्टांग साधना द्वारा चित्तवृत्ति के निरोध के उपाय तथा आत्मा व परमात्मा की एकता को बताया गया है। शा.अर्थ मेल, मिलना, सहयोग, जोड़। 4. ज्यो. ग्रह-नक्षत्रों की विशिष्ट स्थिति।

योग-गुरु *पुं./वि. (तत्.)* वह व्यक्ति जो पातंजल योगदर्शन का ज्ञाता, अनुभवी तथा दूसरों को भी योग सिखाने में पूर्णतया कुशल हो। **जैसे:** आजकल योग गुरु बाबा रामदेव योग के प्रचार-प्रसार में संलग्न हैं।

योगदान *पुं. (तत्.)* 1. किसी कार्य में सहयोग देना/लेना/करना। 2. कई लोगों द्वारा किए जाने वाले कार्य में किसी के द्वारा किया गया अपने हिस्से का कार्य। **उदा.** इस कार्य के आयोजन में शर्माजी का योगदान सबसे महत्त्वपूर्ण रहा।

योगसाधना *स्त्री. (तत्.)* पातंजल दर्शन में बताए गए योग के आठों अंगों (यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि) का अनुष्ठान, साधना या अभ्यास। **उदा.** योगसाधना से चित्त की एकाग्रता बढ़ती है।

योगासन *पुं. (तत्.)* 1. शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए निर्दिष्ट आसन। जैसे-पद्यासन, वज्रासन, मयूरासन, शवासन, ताड़ासन आदि। 2. योग-साधना के लिए बैठने वाले व्यक्ति के द्वारा किया जाने वाला आसन या शारीरिक आकृति विशेष। **उदा.** प्रात: योगासन करना तन और मन के लिए अति लाभकारी है।

योगी *पुं. (तत्.)* 1. सुख-दु:ख आदि को एक जैसा मानने वाला व्यक्ति, आत्मज्ञानी। 2. योग साधना करने वाला, साधक। **जैसे:** आज भी अनेक योगी हिमालय में रहते हैं। **विलो.** भोगी।

योग्य *वि. (तत्.)* 1. जिसमें कोई कार्य कर सकने का सामर्थ्य है। able 2. (i) जिसमें कार्य को पूरा कर सकने का अपेक्षित गुण हो; (ii) जिसके प्रति कुछ किया जाना उचित हो। **पर्या.** अधिकारी, पात्र। warthy 3. अपेक्षित, शैक्षिक या अकादमिक योग्यता संपन्न (व्यक्ति)। qualitied 4. किसी कार्यभार को सँभालने की शारीरिक क्षमता रखने वाला। fit 5. उचित, वाजिब **उदा.** मेरे योग्य सेवा बताइए। may I help you

योग्यता *स्त्री. (तत्.)* 1. सौंपे गए कार्य को कर सकने का सामर्थ्य। ability 2. कार्य को अच्छी तरह से करने का गुण। warth 3. शैक्षिक या अकादमिक उपलब्धि। **पर्या.** अर्हता qualification 4. निर्धारित कार्य करने की शारीरिक क्षमता। fitness 5. कार्य करने में प्रदर्शित निपुणता। merit

योजन *पुं. (तत्.)* 1. एक में मिलाने या जोड़ने की क्रिया। 2. दूरी नापने का एक पुराना माप जो चार कोस अर्थात् आठ मील के बराबर होता था। (लगभग 13 कि.मी.) **पर्या.** 1. जोड़ना, मिलाना 2. एकत्रीकरण। **उदा.** नीले या पीले रंग के योजन से हरा रंग बनता है।

योजना *स्त्री. (तत्.)* 1. किसी कार्य या उद्देश्य को सिद्ध करने के लिए तैयार की गई उपायों की सुविचारित रूपरेखा। plant

योजनाबद्ध *वि. (तत्.)* योजनापूर्वक किया गया (कार्य), योजना से बँधा हुआ। नियोजित। 2. रूपरेखा से बद्ध या बँधा हुआ। 2. सुयोजित, planned 3. पूर्व नियोजित। **दे.** योजना।

योद्धा *वि./पुं. (तत्.)* 1. युद्ध करने वाला। 2. युद्ध में कुशल। **उदा.** महाराणा प्रताप विश्व विख्यात योद्धा थे।

यौगिक *वि. (तत्.)* शा.अर्थ 1. किसी से मिला, सटा या लगा हुआ 2. योग से संबंधित। **पुं. भाषा.** दो शब्दों के योग या मेल से बना हुआ नया पद जो स्वतंत्र शब्द के रूप में प्रयुक्त होता है। **जैसे:** पत्रोत्तर। **रसा.** दो या अधिक

रासायनिक तत्वों के मेल से बना पदार्थ जिसके घटक भौतिक विधियों से पृथक् नहीं किए जा सकते। **जैसे:** अमोनिया। compound

यौन रोग *पुं. (तत्.)* स्त्री-पुरुष के संसर्ग से उत्पन्न रोग या पुरुष या स्त्री की जननेंद्रियों से संबंधित रोग। **पर्या.** रतिज रोग। **उदा.** एड्स एक भयंकर यौन रोग है।

यौन शोषण *पुं. (तत्.)* बच्चों अथवा स्त्री जाति के साथ मित्रता की आड़ में या विवाह का झांसा देकर या लोभ और भय दिखाकर किया जाने वाला अनैतिक एवं अनुचित व्यवहार। **प्रयो.** आजकल स्त्रियों के यौन शोषण की घटनाएँ चिंता का विषय है।

यौवन *पुं. (तत्.)* 1. युवा/युवती होने का भाव। 2. किशोरावस्था और प्रौढ़ावस्था के बीच की अवस्था (प्राय: 25 से 40 वर्ष तक की अवस्था) **पर्या.** जवानी, युवावस्था। **उदा.** स्फूर्ति और बल यौवन के गुण है। **मुहा.** यौवन ढलना = जवानी का सौंदर्य कम होना।

यौवनागम *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ यौवन का आना यानी जवानी की शुरुआत। **दे.** यौवनारंभ।

यौवनारंभ *पुं. (तत्.)* सा.अर्थ यौवन का आरंभ यानी बाल्यावस्था समाप्त होकर यौवनावस्था आरंभ होने की वय (उम्र) आयु। जीवन का वह काल जिसमें किसी भी लिंग का व्यक्ति संतानोत्पत्ति के लिए सक्षम हो जाता है। सामान्यत: यह लडकों में 13 से 15 वर्ष तथा लडकियों में 9 से 16 वर्ष की आयु होती है जब उनके द्वितीयक लैंगिक लक्षण विकसित होने आरंभ हो जाते हैं। **पर्या.** यौवनागम, वय:संधि। puberty वय:संधि स्त्री. *(तत्.)* शा.अर्थ दो उम्रों को जोड़ने वाला काल। **दे.** यौवनारंभ।

र

रंक *पुं.(तत्.)* व्यक्ति जिसके पास जीवन-यापन के लिए नाममात्र के साधन उपलब्ध हों।, 1. कंगाल, 2. दीन, 3. दरिद्र। 'आया है जो जाएगा राजा-रंक-फकीर।' विलो. **राजा।**

रंगकर्मी *पुं. (तत्.)* रंगमंच पर नाटक का अभिनय करने वाले कलाकार। **पर्या.** मंचकर्मी।

रंगत *स्त्री.* 1. किसी रंग की झलक, 2. किसी काम में आने वाला मज़ा या आनंद। 3. असर या प्रभाव। **मुहा.** रंगत आना=आनंद आना। 2. रंगत चढ़ना=प्रभाव पड़ना। **प्रयो.** 'आपकी बातों से तो लगता है कि आप पर दार्शनिकों की रंगत चढ़ चुकी है।'

रंग-बिरंगा *वि.* अनेक रंगों से चित्रित, सुंदर।

रंगभूमि *स्त्री. (तत्.)* 1. वह शाला जिसमें नाटक, खेल-तमाशे आदि किए जाएँ तथा जहाँ मंच और दर्शकों के बैठने की व्यवस्था हो। 2. युद्ध क्षेत्र के लिए प्रयुक्त एक पर्याय। **पर्या.** नाट्यशाला। theater

रंगमंच *पुं. (तत्.)* नाटक खेलने के लिए बना मंच। **पर्या.** नाट्यमंच।

रंगमात्र *वि. (तद्<रंजमात्र/रजमात्र)* ज़रा-सा भी, कण मात्र भी, अत्यंत अल्प मात्रा वाला। **पर्या.** लेशमात्र।

रंगरलियाँ/रंगरेलियाँ *स्त्री.(देश.)* 1. आमोद-प्रमोद 2. मौजमस्ती। **मुहा.** रंगरेलियाँ मनाना- विलास क्रीड़ाएँ करना, खुशियाँ मनाना।

रंग-रूप *पुं.(तत्.)* 1. सुंदर मुखाकृति (नाक, आँख, ओष्ठ आदि) तथा सुंदर वर्ण। 2. देखने में सुंदर लगने का गुण। looks, peature **प्रयो.** उसका रंग-रूप अच्छा होने के कारण उसे नाटक में स्थान मिल गया।

रंगारंग *वि. (तत्.) (देश.<रंग+अनुर.)* 1. अनेक रंगों वाला, रंगबिरंगा। 2. विविधताओं से युक्त एवं मनोरंजक। **जैसे**: रंगारंग कार्यक्रम।

रंगीन *वि. (फ़ा.)* 1. रंगा हुआ, रंगदार, 2. विलासप्रिय, शौकीन, 3. विनोदप्रिय, चुलबुला, 4. अलंकरों से युक्त (काव्यरचना)। **प्रयो**. मुस्लिम शासक प्राय: रंगीन मिज़ाज वाले हुआ करते थे।

रंगीला *वि.(देश.)* वह (व्यक्ति) जो कामुक एवं विलासितापूर्ण जीवन जीने की प्रवृत्ति वाला हो। **पर्या.** रंगीन, रसिक। **प्रयो**. शाहजहाँ को रंग शासक कहा जाता है।

रंगोली *स्त्री.(तद्<रंगवल्ली*) सजावट के लिए रंगबिरंगे सूखे चूर्णों से ज़मीन पर या किसी सपाट चबूतरे आदि पर की जाने वाली बेलबूटों से युक्त चित्रकारी। **टि.** यह विधा प्राय: दक्षिण भारत में धार्मिक-सामाजिक अवसरों पर अधिक प्रचलित है। आजकल गीले रंगों, फूलों, पत्तों, अनाज के दानों आदि से भी रंगोली तैयार की जाती है।

रंचमात्र *वि.*(तद्.<रंचमात्र + रजमात्र) ज़रा सा भी, कण मात्र भी, अत्यंत अल्प मात्रा वाला। पर्या. लेशमात्र।

रंज *पुं. (फ़ा.)* 1. तकलीफ, दुख; पीड़ा, दर्द। 2. शाक, ग़म। **उदा.** 1. आपकी बीमारी की खबर सुनकर बड़ा रंज हुआ। 2. उसके परिवार में मृत्यु होने पर हम रंज गम प्रकट करने उसके घर गए।

रंजक *वि.(तत्.)* रंगने वाला (व्यक्ति या पदार्थ)। 1. *पुं.* रंगरेज़, रंगसाज, 2. इंगुर, मेहंदी, महावर आदि।

रंजित *वि.(तत्.)* 1. रंगा हुआ; जिस पर रंग चढ़ा या चढ़ाया जाता हो। **जैसे:** रक्त-रंजित। ला.अर्थ प्रेम में पगा हुआ।

रंजिश *स्त्री.(फा.)* 1. किसी के प्रति मन में रहने वाला वैमनस्य या अप्रसन्नता। 2. शत्रुता जैसा भाव। शा.अर्थ 1. मनमुटाव, 2. नाराज़गी, 3. अनबन। **प्रयो.** आजकल आपका भाई मेरे प्रति रंजिश तो रखता ही है।

रंडी *स्त्री.(तद्<रंडा*) वह स्त्री जो धन लेकर पुरूषों का हर तरह से मनोरंजन करती है। **पर्या.** वेश्या, वारांगना।

रंदा *पुं.(तद्<रदन*) एक औज़ार जिससे बढ़ई लकड़ी की खुरदरी सतह को छीलकर चिकनी और मुलायम बनाता है। रंदा मारना=रंदे का प्रयोग करना। plane

रँगना *स.क्रि. (तद्.)* 1. किसी सफेद कपड़े को रंग में डुबोकर उस पर या किसी भी सपाट पृष्ठभूमि पर रंग पोतकर रंग चढ़ाना। **जैसे:** कपड़ा रँगना। **मुहा.** रंगे हाथ (हाथों) पकड़े जाना=अपराध करते समय ही देख लेना। उदाहरण-कल कार्यालय का एक कर्मचारी रिश्वत लेते रंगे हाथ पकड़ा गया।

रँभाना *अ.क्रि. (तद्.)* गाय या भैंस आदि का शब्द करना या बोलना।

रईस *पुं./वि. (अर.)* 1. अमीर, धनी, मालदार। 2. सरदार, मुखिया। **प्रयो.** रईसों को किस बात की चिंता। भाव. रईसी (स्त्री.) अमीरी, धनसंपन्नता, रईस होने की अवस्था या भाव। wealthy

रकम *स्त्री.(अर.<रक़म*) 1. कोई संख्या या अंक। (नंबर) 2. धन-संपत्ति, रूपया-पैसा wealth 3. धन की राशि amount

रकाबी *स्त्री.(फा.)* पैंदेदार और गोल छोटी थाली सा बर्तन। kplate

रक्त *पुं.(तत्.)* सा.अर्थ नसों में बहने वाला लाल रंग का तरल पदार्थ। तकनीकी अर्थ-धमनियों और शिराओं में संचारित वह लाल रंग का तरल जो शरीर की ऊतकों को oxygen पहुँचाता है और उनसे carbondioxide निकालता है। blood **पर्या.** 1. खून, 2. लहू, 3. रूधिर, 4. शोणित। *वि.* 1. रंगा हुआ, 2. लाल रंग का।

रक्तचाप *पुं.(तत्.)* 1. रक्त का नसों पर पड़ने वाला दबाव। 2. एक प्रकार का रोग जिसमें रक्त का वेग सामान्य से अधिक या कम हो जाता है। **प्रयो.** अधिक चिंतातुर लोगों का रक्तचाप सामान्य नहीं रहता। blood pressure

रक्तदान पुं. (तत्.) शा.अर्थ रक्त या खून का दान। स्वस्थ व्यक्ति द्वारा किसी रोगी के लिए खून देना। blood donation

रक्तपात *पुं. (तत्.)* युद्ध अथवा किसी बड़ी आपसी लड़ाई में अत्यधिक रक्त बहने या बहाए जाने का भाव। **पर्या.** खून-खराबा। **प्रयो.** कलिंग युद्ध में अत्यधिक रक्तपात देखकर अशोक का मन बदल गया।

रक्तबैंक *पुं.(तत्+अं.)* संस्था अथवा रक्त-संग्रह की सुविधा वाला स्थान जहाँ पर द्रव अवस्था में उस रक्त का परिरक्षण किया जाता है जिसे स्वस्थ रक्तदाता अपने रक्त का दान करता है और जहाँ से वह रोगियों को पहुँचाया जाता है। blood bank

रक्तमोक्षण/रक्त-मोक्ष *पुं.(तत्.)* शरीर से रक्त का बाहर निकलना या बहना। (**आयु.**) चिकित्सा की एक विशेष विधि जिसमें शरीर के किसी भी अंग का दूषित रक्त शरीर से बाहर निकाल दिया जाता है। **जैसे**: रक्तमोक्षण की प्रक्रिया या प्रयोग किसी अच्छे वैद्य या चिकित्सक की देखरेख में ही होना चाहिए।

रक्त/रूधिर वर्ग *पुं.(तत्.)* रक्त या खून की श्रेणी यथा 'ए.', 'बी', ओ. आदि। blood group **टि.** कहीं-कहीं इसे 'रक्त समूह' भी कहते हैं।

रक्तवर्धक *वि.(तत्.)* 1. वह (दवा, पदार्थ या खुराक) जो शरीर में खून बढ़ाए। 2. रक्त बढ़ाने वाला। **प्रयो.** आजकल बाजार में अनेक रक्तवर्धक औषधियाँ उपलब्ध हैं।

रक्तवाहिका *स्त्री.(तत्.)* वह धमनी और शिरा जिसमें रक्त (खून) प्रवाहित होता है। blood vessel

रक्तसंबंध *पुं.(तत्.)* एक वंश के लोगों का आपसी संबंध, **जैसे**: परदादा, दादा, पिता, चाचा, पुत्र, पुत्री आदि। **पर्या.** ख़ून का रिश्ता। **टि.** कहीं कहीं मातृपक्ष में भी रक्तसंबंध माना जाता है। (**जैसे:** मामा-भांजे में) blood relation **प्रयो.** गोद लिये पुत्र के साथ रक्तसंबंध नहीं होता।

रक्त/रूधिर समूह *पुं.* **दे.** 'रक्त/रूधिर वर्ग'।

रक्तस्राव *पुं. (तत्.)* शरीर के किसी अंग के कट-फट जाने के कारण खून का बहना या निकलना। **प्रयो.** चोट लगने से सिर से काफी मात्रा में रक्तस्राव हो रहा है।

रक्ताभ *वि. (तत्.)* 1. रक्त की आभा वाला अर्थात् लाल रंग की रंगत या द्युति (चमक) वाला। 2. लाली लिए हुए।

रक्षक *वि. (तत्.)* रक्षा करने वाला; पहरा देने वाला।

रक्षा *स्त्री. (तत्.)* सा.अर्थ बचाने की क्रिया, रखवाली। **सै.वि.** अपने देश या किसी क्षेत्र विशेष को शत्रु पक्ष के आक्रमण से बचाने और उसकी सैन्य संक्रियाओं को विफल करने की व्यवस्था। defence 2. कलाई पर बाँधा जाने वाला सूत या रेशम का धागा। **जैसे**: रक्षाबंधन = रक्षा के लिए बाँधना। **पर्या.** राखी।

रक्षाकवच *पुं.(तत्.)* वह साधन या यंत्र जो किसी कष्ट, विपत्ति, आक्रमण या रोग से बचाव के लिए धारण किया जाता है। शा.अर्थ रक्षा का उपाय। **प्रयो.** सैनिक युद्ध में रक्षाकवच धारण करते हैं। safe guard

रखना *स.क्रि. [तद्.*<रक्षण] 1. किसी वस्तु को संभालकर कहीं स्थापित करना। **जैसे**: तुम्हारा यह कीमती सामान मैं रख रहा हूँ। 2. किसी वस्तु को किसी आधार/वस्तु/स्थान/व्यक्ति आदि पर या किसी वस्तु आदि में धरना या टिकाना। **प्रयो**. यह सामान अलमारी में रख दो। 3. कोई जिम्मेदारी देना या सौंपना। **प्रयो**. उसने अपने जन्मोतसव के प्रबंध की जिम्मेदारी अपने मित्रों पर रख दी। 4. प्रस्तुत करना। **प्रयो**. पानी की समस्या के बारे में उन सभी ने अपने-अपने तर्क रखे। 5. पालन करना। **प्रयो**. घर में कुत्ते रखोगे तो सुरक्षा रहेगी।

रख-रख़ाव *पुं.(तद्)* मूर्त संपत्ति को उपयोग-क्षम बनाए रखने के लिए उसका समुचित उपयोग करते हुए देखभाल करते रहना और आवश्यकतानुसार मरम्मत की भी व्यवस्था करना। हिफाज़त, देखभाल, अनुरक्षण। maintenance

रखवाना *प्रे.क्रि. [दे.*<रखना] रखने का काम किसी अन्य से कराना। **प्रयो.** मैनें नौकर से अलमारी में पुस्तकें रखवाईं।

रखवाला *पुं. [देश.*<हि रखना] रक्षा, देखरेख या रखवाली करने वाला। **पर्या.** 1. रक्षक 2. पहरेदार। **प्रयो.** ईश्वर सबका रखवाला है।

रग *स्त्री. (फा.)* 1. शरीर की रक्तवाहिनी नस, शिरा या नाड़ी। 2. पत्तों में दिखाई देने वाली नसें। **प्रयो.** हमारी रगों में भी महापुरुषों का खून है। **मुहा.** 1. रग पहचानना=1. वास्तविकता जानना, 2. रहस्य जानना। **उदा.** मैं तुम्हारी रग-रग पहचानता हूँ। 2. किसी की दुखती रग पर हाथ रख देना=दुख देने वाली बात का फिर से उल्लेख कर किसी का दु:ख बढ़ाना।

रगड़ खाना *(अ.क्रि.) [तद्.*<घर्षण] 1. किसी वस्तु का किसी दूसरी चीज या स्थान आदि से सटकर अनुपयुक्त ढंग से घर्षित होना। 2. किसी भी टकराहट से घर्षण होना। **उदा.** (i) मोटर का ढीला पहिया धरती से रगड़ खाते हुए चलता है। (ii) बार-बार रगड़ खाने से यह घड़ी खराब हो गई है।

रगड़ना *स.क्रि. [तद्*<रदन] 1. किसी वस्तु के तल पर दूसरी वस्तु को बार-बार दबाकर घिसना। **जैसे**: सिल पर बादाम रगड़ना। पत्थर पर एड़ी रगड़ने से एड़ी साफ हो जाती है। 2. किसी कार्य को बहुत बार परिश्रम से करना। **जैसे**: मैंने इस पाठ को पूरी तरह रगड़ डाला है। 3. किसी से

बहुत परिश्रम लेना। **जैसे**: वह नौकरों को खूब रगड़ता है। शा.अर्थ **1.** घिसना, 2. पीसना, 3. तंग करना। **दे.** 'रगड़ा'।

रगड़ा *पुं. (देश.)* 1. शक्तिपूर्वक मसलने या घिसने की क्रिया या भाव। 2. लगातार किया जाने वाला बहुत परिश्रम। 3. बहुत समय तक चलते रहने वाला विरोध और बैर। **उदा.** (i) वह साल भर रगड़ा लगाता रहा पर परीक्षा में पास नहीं हुआ। (ii) आखिर कब तक यह रगड़ा चलता रहेगा। *स.क्रि.* 'रगड़ना' क्रिया का भूतकालिक रूप।

रगड़ाई *स्त्री. (देश.)* 1. किसी कार्य को खूब मेहनत से करना। **प्रयो.** उसने परीक्षा के लिए गणित की खूब रगड़ाई की है। 2. कठोर दंड देने की क्रिया या भाव। **जैसे**: पुलिस ने चोर की इतनी रगड़ाई की कि वह पुन: चोरी करने का साहस नहीं करेगा।

रचना *स.क्रि. (तद्<*रचन) 1. किसी चीज का निर्माण करना/बनाना। **जैसे**: ब्रह्मा ने संसार की रचना की। 2. साहित्यिक या कलात्मक कृति तैयार करना/लिखना। **उदा.** तुमने बहुत- सी कविताएँ रचीं, अब कलात्मक निबंध रचो। 2. सजावट करना/सजाना। **जैसे**: महिलाओं के हाथों में मेंहदी रच गई।

रचनाकार *पुं. (तत्.)* रचना करने वाला यानी बनाने वाला। **पर्या.** रचयिता, निर्माता।

रचनात्मक *वि. (तत्.)* 1. रचना या निर्माण से संबंधित। **पर्या.** सर्जनात्मक। **जैसे:** रचनात्मक शैली। 2. जिससे किसी नई बात की रचना होती हो। **जैसे**: रचनात्मक विकास।

रचनात्मकता *स्त्री. (तत्.)* रचनात्मक होने का भाव। **दे.** 'रचनात्मक', 'रचना'।

रचित *वि.(तत्.)* 1. रचा या बनाया हुआ, निर्मित। ताजमहल संगमरमर पत्थरों से रचित है। 2. लिखकर तैयार किया गया। **जैसे**: जयशंकर प्रसाद द्‌वारा रचित कामायनी'। 3. सज्जित **उदा.** यह मणि रचित हार किसका है?

रचयिता *वि./पुं. (तत्.)* रचना करने या बनाने वाला। **पर्या.** रचनाकार, निर्माता। **उदा.** गोदान के रचयिता प्रेमचंद हैं।

रज *पुं.(तत्<*रजस्) 1. धूल, गर्द। **जैसे**: गुरूचरणों की रज (धूल)। 2. फूलों का पराग। **जैसे**: कमल-रज, चरण-रज।

रजत *पुं.(तत्.)* सफेद-चमकदार एवं मूल्यवान धातु जिससे आभूषण बनते हैं, शा.अर्थ. 1. चाँदी रूपा 2. मोती का हार 3. सफेद रंग।

रजत जयंती *स्त्री.(तत्.)* किसी व्यक्ति, संस्था आदि या किसी महत्वपूर्ण कार्य के जन्म या आरंभ होने के 25 वर्ष पूरे होने पर मनाई जाने वाली जयंती। पच्चीसवीं वर्षगाँठ। **जैसे**: आज हमारे विद्‌यालय की रजतजयंती मनाई जा रही है। silver jubilee

रजनी *स्त्री.(तत्.)* 1. रात, रात्रि, निशा।

रजवाड़ा *पुं.(तद्) [राज्यवाड़ा]* मध्यकालीन एवं अंगरेजी राज के भारत की देशी रियासतों में से कोई भी; **यथा**; होल्कर, सिंधिया, जोधपुर आदि के तत्कालीन राज्य। **इति.** स्वतंत्रतापूर्व के भारत में वह देशी रियासत जिसका अपना राजा होता था और जो कई मामलों में सीधे बर्तानवी हुकुमत के अधीन न होकर स्वतंत्र सत्ताधारी होता था। **जैसे**: जोधपुर रजवाड़ा आदि।

रजस्वला *वि.(स्त्री.) (तत्.)* 1. वह स्त्री जिसका रज निकलता हो। **पर्या.** ऋतुमती। **प्रयो.** आजकल खान-पान की वजह से 11-12 वर्ष की आयु में लडक़ियाँ रजस्वला हो जाती हैं। 2. मटमैले पानी वाली बरसाती नदी।

रज़ा *स्त्री. (अर.रिज़ा)* 1. इच्छा, मर्जी, 2. अनुमति, 3. स्वीकृति, 4. सहमति। ऊपर वाले की रज़ा से मैं आज खेलने लायक हो गया हूँ।

रजाई *स्त्री. (देश.)* एक प्रकार का ओढ़ना जिसमें रूई भरी होती है और जिसे सर्दियों में ओढ़कर सोते हैं। **पर्या.** लिहाफ, मोटी दुलाई।

रजोदर्शन *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ रज (गर्भाशय से होने वाले रक्तस्राव) का (पहली बार) दिखाई पड़ना/होना। पहली बार मासिक धर्म या ऋतुस्राव के होने का समय जो लड़िकयों में साधारणतया 11 वर्ष से 18 वर्ष तक होता है।

रजोधर्म *पुं. (तत्.)* मानव मादा में युवावस्था में गर्भाशय से होने वाला रक्तस्राव जो लगभग एक मास के अंतराल से होता है। इस द्रव में

अनिषेचित अंड भी बाहर निकल आता है। **पर्या.** ऋतुस्राव, आर्तव।

रजोनिवृत्ति *स्त्री. (तत्.)* **आयु.** स्त्रियों में मासिक धर्म या ऋतुस्राव का रूकना/बंद हो जाना। **टि.** प्राकृतिक रजोनिवृत्ति जीवन के 45 से 50 वर्ष के बीच कभी भी हो सकती है।

रटना *स.क्रि. (तत्.*<रटन) 1. एक ही शब्द या वाक्य को जोर-जोर से बार-बार बोलना। 2. किसी पाठ को बार-बार दुहराना ताकि वह कंठस्थ हो जाए।

रट लगाना *स.क्रि.(हि. रटना)* 1. किसी की स्मृति में उसके नाम, गुण, व्यवहार आदि को बार-बार याद करना। **जैसे**: मीरा दिन-रात कृष्ण की रट लगाती थी। 2. किसी वस्तु की प्राप्ति के लिए बार-बार किसी से कहना। **जैसे**: बालक साइकिल लेने के लिए रट लगाए हुए है।

रण *पुं.(तत्.)* 1. संग्राम, युद् ध। 2. युद् ध क्षेत्र। **प्रयो.** 1. 'कहाँ राम रण हतौं पचारी'। (रामचरितमानस) 2. रण बीच चौंकड़ी भर-भर कर चेतक बन गया निराला था।

रणकौशल *पुं. (तत्.)* युद्‌ध में लड़ने की कुशलता; युद्‌ध की कला।

रणनीति *स्त्री. (तत्.)* 1. युद् ध शुरू करने से पूर्व युद् धकर्ता द्‌वारा शत्रुपक्ष को पराजित करने के उद्‌देश्य से अपनाई जाने वाली योजनाबद् ध तरीके से तैयार की गई नीति। **पर्या.** युद्‌ध की नीति। tacties 2. किसी भी कार्य में सफलता पाने के लिए निर्धारित कार्यनीति।

रणभूमि *स्त्री. (तत्.)* युद् ध का मैदान; वह भूभाग जहाँ पर सक्रिय रूप से युद्‌ध लड़ा जा रहा हो।

रतवाँस *पु.(तद्.)* रात के समय हाथी, घोड़ों को दिए जाने वाला चारा।

रति *स्त्री.(तत्.)* 1. प्रेम, अनुराग।, 2. शोभा, छवि।, 3. जीवों की संभोग क्रिया। **उदा.** उसकी तो हरिचरणों में रति है। **विलो.** विरति।

रतौंधी *स्त्री.* शा.अर्थ रात में अंधा हो जाना। **आयु.** रोग जिसमें रात को दिखाई नहीं देता।

रत्ती *स्त्री. (तत्.*<रक्तिका) 1. तौल की एक इकाई जो एक माशे का आठवाँ भाग होती है। (लगभग एक सेंटीग्राम या एक ग्राम का दसवाँ भाग) या पुराने सुनारों द्‌वारा प्रयुक्त ढाई चावल या आठ जौ या एक घुँघची के बराबर की तौल का मान। 2. गुंजा (घुंघली का दाना) 3. **प्रयो.** आठ रत्ती का एक माशा होता है। मुझे रत्ती भर परवाह नहीं है।

रत्ती *स्त्री. (तद्.*<रति) 1. प्रेम, प्रणय। 2. सौंदर्य, शोभा, छवि।

रत्न *पुं.(तत्.)* बहुमूल्य चमकीले प्रसिद् ध खनिज पत्थर, या समुद्र से प्राप्त चमकीले पदार्थ जिनका प्रयोग आभूषणों में जड़ने या किसी श्रृंगार आदि में किया जाता है। शा.अर्थ मणि, जवाहर। **प्रयो.** वह रत्न जटित मुकुट धारण किए हुए है। ला.अर्थ बहुमूल्य या प्रिय व्यक्ति। **टि**. नवरत्न-हीरा, पन्ना, पुखराज, मूँगा, मोती, माणिक्य, नीलम, लहसुनिया और गोमेद।

रत्नजटित *वि. (तत्.)* हीरे-मोती आदि बहुमूल्य रत्नों से जुड़ा हुआ। **जैसे**: रत्नजटित कंगन/मुकुट आदि।

रत्नाकार *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ रत्नों की खान। सा.अर्थ समुद्र/सागर। **पर्या.** पयोधि, रत्ननिधि।

रथ *पुं.(तत्.)* दो या चार पहियों वाला एक प्राचीन यान/सवारी गाड़ी जिसे दो या अधिक घोड़े खींचा करते थे। ला.अर्थ शरीर। **उदा.** राजा दुष्यंत रथ से ऋषि कण्व के आश्रम गए।

रदनक *वि.(तत्.)* शा.अर्थ. फाड़ने, चीरने वाला।

रदनक दंत *पुं.(बहु.)* स्तनधारी प्राणियों में कृंतक और अग्रचर्वणक के बीच स्थित लंबे, नुकीले दांत। carnivore मांसाहारी पशुओं में ये खासतौर पर बढ़े हुए होते हैं और शिकार एवं मांस को चीरने-फाड़ने का काम करते हैं। मनुष्यों में इनकी संख्या चार (दो ऊपर, दो नीचे) होती हैं। Canine teeth *तु.* कृंतक दंत, चर्वणक दंत।

रद्‌द *वि.(अर.)* जो पहले लागू था, उसकी वैधता को अब, समाप्त कर दिया गया है-ऐसी सूचना। **पर्या.** खारिज, निरस्त। **उदा.** न्यायालय ने उसकी अरज़ी रद्‌द कर दी।

रद्‌दी *वि.अर.* जो किसी काम में न आ सकें, बेकार। **पर्या.** निरूपयोगी। **मुहा.** रद्‌दी के दाम बिकना=बहुत सस्ते में बिकना। **उदा.** मुझे घर रद्‌दी के दाम बेचना पड़ा।

रनिवास *पुं. (तद्.*<राज्ञी) राजमहल में रानियों के रहने का विशेष भाग। **पर्या.** अंतःपुर।

रपट *स्त्री. (देश.)* रपटने की क्रिया या भाव। देखें, 'रपटना'।

रपट *स्त्री.(अं<*रिपोर्ट) किसी घटना की वह सूचना जो थाने में जाकर लिखाई या किसी अधिकारी को दी जाती है। **पर्या.** आख्या, रिपोर्ट। **उदा.** हम थाने में जाकर घर में हुई चोरी की रपट लिखवाते हैं।

रपटना *अ.क्रि. (देश.)* 1. गीली ज़मीन पर या चिकने स्थान पर फिसल कर गिरना और आगे तक सरक जाना। **पर्या.** फिसलना। **प्रयो.** वह चलते हुए गीली जमीन पर रपटकर गिर गया।

रफ़ू *पुं.(अं.)* कटे-फटे कपड़े के छेद की उसी से मिलते-जुलते रंग वाले धागे से हाथ या मशीन द्वारा इस प्रकार सिलाई करना जिससे छेद न दिखाई दे और कपड़ा पूर्ववत् दिखाई दे। **प्रयो.** हम किसी भी कारण से कपड़े में हुए छेद को रफ़ूगर से रफ़ू कराते हैं। *वि.* अदृश्य, **जैसे**: देखते-देखते वह रफ़ू हो गया। darning

रफ़ूचक्कर *वि.(अर.+तद्.)* एकाएक चंपत, गायब या अदृश्य हो जाने वाला। **जैसे**: वह उसका थैला उठाकर रफूचक्कर हो गया। **मुहा**. रफूचक्कर होना=किसी स्थान से देखते-देखते गायब हो जाना।

रफ़्तार *स्त्री.(फ़ा.)* किसी वस्तु की स्थिर स्थिति से आगे बढ़ते रहने की अवस्था जिसे प्राय: मापा जा सकता है। **पर्या.** गति, चाल। **जैसे**: 20 किमी. प्र.घंटे की रफतार।

रफ़्ता-रफ़्ता *क्रि.वि. (फ़ा. रफ़्त:)* शा.अर्थ 1. धीरे-धीरे, अहिस्ता-अहिस्ता। 2. क्रमश:। **उदा.** नाव की गति रफ़्ता-रफ़्ता बढ़ रही थी।

रब *पुं. (अर.)* परमेश्वर, ईश्वर, स्वामी, मालिक। **उदा.** जो होना था सो हुआ, रब की मर्जी।

रबड़ *पुं. (अं.रबर)* वट जाति का एक वृक्ष जिसके दूध को पकाकर और सुखाकर बनाया हुआ एक प्रसिद्ध लचीला पदार्थ जिससे टायर आदि बहुत सी उपयोगी चीजें बनती हैं। **प्रयो.** पेंसिल से लिखा हुआ रबड़ से मिटाया जा सकता है।

रबड़ी *स्त्री.(देश.)* एक प्रसिद्ध मिठाई जो मीठे दूध को औटाकर बनाई जाती है। **प्रयो.** जलेबी को रबड़ी के साथ खाने का आनंद कुछ और है।

रबी *स्त्री. (अर.)शीत* ऋतु में उगाई जाने वाली और वसंत ऋतु में काटी जाने वाली फसलें। **जैसे**: गेहूँ, चना, मटर, सरसों आदि। **तु.** खरीफ़।

रब्बा/रब *पुं. (अर. रब)* 1. स्वामी, पति, मालिक। 2. परमात्मा, ईश्वर, खुदा।

रमज़ान *पुं. (अर.)* मुस्लिम मतानुसार इसलामी कैलेंडर का नौवाँ महीना जिसमें मुसलमान दिन भर (सूर्योदय से सूर्यास्त तक) रोज़ा (व्रत) रखते हैं और रात में तरावीह (विशेष नमाज़ जिसमें कुरान पढ़ी जाती है) पढ़ते हैं। **टि.** रमज़ान के अंत में ईद-उल-फितर (मीठी सेविइयों की ईद) मनाई जाती है।

रमण *पुं.(तत्.)* शा.अ. **1.** विलास, क्रीडा, आमोद-प्रमोद। 2. विचरण, 3. पति। **जैसे:** राधारमण। *वि.* 4. विलास या क्रीडा करने वाला। 5. सुन्दर, 6. प्रिय, 7. मन को सुख देने वाला।

रमणीय *वि.(तत्.)* 1. जो देखने में सुन्दर हो। 2. मन को अच्छा लगने वाला, मनोहर। **प्रयो.**- कश्मीर अत्यंत रमणीय स्थल है।

रमणीयता *स्त्री.* सुंदरता।

रमता *वि.(तद्.)* निश्चिंत घुमने-फिरने वाला। **जैसे**: अपने तो रमते राम हैं। **लोको.** रमता जोगी बहता पानी=नदी के पानी की तरह सदा भ्रमण करने वाला।

रमना *अ.क्रि. (तत्.<*रमण) शा.अ. मन का प्रसन्नता के साथ (किसी विषय में) लीन हो जाना। सा.अ. **1.** मौज-मस्ती के लिए कहीं जाकर ठहरना या रहना। 2. घूमना-फिरना। 3. व्याप्त होना। **प्रयो.** कुछ लोग प्राकृतिक स्थानों में रमण करते-फिरते हैं।

रमा *स्त्री.(तत्.)* 1. लक्ष्मी, 2. धन-संपत्ति।

रमाकांत/रमापति *पुं.* विष्णु।

रमाना 1. मन को लगाना या अनुरक्त करना। **उदा.** तुम्हें खेल के अलावा पढ़ाई में भी मन रमाना चाहिए। 2. शरीर में (भस्म, सिंदूर आदि) लगाना **जैसे:** भस्म रमाना। 3. वश में करके कहीं अनुरक्त करवाना। **जैसे**: उसका मन खेल में रमा दो। **मुहा.** धूनी रमाना=साधु की तरह एकाग्र हो जाना।

रम्य *वि. (तत्.)* 1. सुंदर, मनोहर। 2. रमणीय। **प्रयो.** कन्याकुमारी में विवेकानंद का रम्य स्मारक है।

रवा *पुं. (तत्.)* किसी भी वस्तु का अत्यंत छोटा भाग, दाना, कण।

रवानगी *स्त्री. (फ़ा.)* रवाना होने या चल पड़ने की क्रिया या भाव, प्रस्थान। **दे.** 'रवाना'।

रवाना *वि. (फा.रवान:)* 1. जो अपने स्थान से अन्यत्र स्थान के लिए निकल पड़ा हो, 2. अन्यत्र भेजा हुआ (व्यक्ति अथवा वस्तु इत्यादि) **प्रयो.** सीमा की ओर रवाना हुए सैनिक पहुँच गए।

रवि *पुं. (तत्.)* सूर्य, दिवाकर, आदित्य। रविवार-सप्ताह का प्रथम दिन (ज्योतिष गणना की दृष्टि से) आधुनिक प्रयोग में सप्ताह का आखिरी दिन।

रवैया *पुं. (अर.*<रवीय:) एक व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति से व्यवहार या सुलूक, ढंग, तरीका, रीति।

रश्क *पुं. (फा.)* ईर्ष्या का भाव, ईर्ष्या का वह प्रकार जिसमें किसी को हानि पहुँचाये बिना ही उसके समान बनने की भावना होती है। **जैसे**: उसकी समृद्धि देखकर उसके मित्र को भी वैसा बनने का रश्क है।

रश्मि *स्त्री. (तत्.)* 1. प्रकाश की किरण। **प्रयो.** सूर्य रश्मियों से कमलों की शोभा दर्शनीय थी। 2. घोड़े की लगाम, बागडोर।

रस *पुं.(तत्.)* 1. किसी पदार्थ का सारभाग/सारतत्त्व। तरल पदार्थ, द्रव। 2. जल। 3. पत्तों, फूलों, फलों आदि को काट कर कूटने या किसी यंत्र आदि में मसलने, पीसने आदि से प्राप्त द्रव। **जैसे**: अंगूर का रस, अनार का रस, गन्ने का रस आदि। 4. साहित्य के नौ-रस श्रृंगार, करूण, हास्य, वीर, रौद्र, भयानक, अद्भुत, वीभत्स और शांत रस। 5. आनन्द-परमात्मा 'रस' स्वरूप है।

रसगुल्ला *पुं.(देश.)* छेने से तैयार की जाने वाली गोलाकार एक प्रकार की बंगाली मिठाई। **उदा.** उसके जन्मदिन में बच्चों को रसगुल्ले खिलाए गए।

रसद *स्त्री.(फा.)* खाद्य सामग्री, खाने-पीने का सामान।

रसभरी *स्त्री. (देश.रसभरना)* मकोय नामक एक फल जिसके ऊपर टोपी जैसा आवरण होता है। *वि.स्त्री.* रस से भरी हुई, मधुर। **उदा.** उसकी रसभरी बातें सुनकर श्रोता मुग्ध हो गए।

रसमलाई *स्त्री.(दे.)* एक मिठाई जो औटे हुए दूध में छैने की टिक्कियाँ (रसगुल्ले जैसा पदार्थ) बनाकर डालने से बनती है। **प्रयो.** रसमलाई के दूध में केसर डालने से स्वाद ही कुछ और हो जाता है।

रसांकुर *पुं.(तत्.)* कशेरूकियों की आंत्र में अंगुलि जैसे प्रवर्ध process जिनसे आंत्र की अवशोषण सतह काफी बढ़ जाती है। Villus

रसातल *पुं.(तत्.)* सा.अ. पुराणों के अनुसार पृथ्वी के नीचे के सात लोकों में से एक। ला.अर्थ पतन की दृष्टि से बहुत नीचे का स्थान। **प्रयो**. दुष्कर्मी पुत्र ने अपने कुल की समृद्धि को रसातल में पहुँचा दिया। **टि.** पृथ्वी के नीचे के सात लोक हैं- अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल, महातल और पाताल।

रसायन *पुं.(तत्.)* 1. विज्ञान की वह शाखा जिसमें द्रव्य के संघटन और ऊर्जा परिवर्तन के कारण उस पर होने वाले रूपांतरणों का अध्ययन किया जाता है। Chemistry 2. **आयु.** पुष्टिकर औषधि या खाद्य पदार्थ। Tonic

रसायनज्ञ रसायन विज्ञान शास्त्र का विद्वान/ज्ञाता।

रसायनविज्ञान *पुं.(तत्.)* **दे.** 'रसायन'।

रसायनशास्त्र *पुं.(तत्.)* **दे.** 'रसायन'।

रसाल *पुं.(तत्.)* रस वाले पदार्थ; आम, कटहल, ईख, गेहूँ। (विशेष रूप से आम के लिए ही प्रयुक्त) **वि.** रसीला, मीठा, मधुर, सरस, स्वादपूर्ण।

रसिक *पुं.(तत्.)* 1. सौंदर्य, प्रेम, स्नेह, भक्ति आदि कोमल एवं सुमधुर भावों से भरे हृदयवाला, सहृदय। 2. रस या आनंद लेने वाला। **प्रयो.** आप तो संगीत के अत्यंत रसिक श्रोता हैं। 3. जो सुंदर रहन-सहन के साथ स्त्रियों के प्रति आकर्षित रहता हो।

रसिया *पुं.(तद्.*<रसिक) 1. रसिक, प्रेमी। 2. गाने का एक विशेष प्रकार जो ब्रज में फागुन महीने में गाया जाता है।

रसीद *स्त्री.(फ़ा.)* किसी वस्तु के खरीदने, प्राप्त होने या पहुँचने के प्रमाण के रूप में लिखा हुआ, प्राप्तकर्ता द्वारा, जवाबी दस्तावेज़, पावती। **उदा.** हम किसी वस्तु के खरीदने पर दुकानदार से उसकी रसीद प्राप्त करते हैं।

रसीदी टिकट *स्त्री. (फ़ा.+अं.)* रसीद को कानूनी मान्यता देने हेतु लगाया जानें वाला डाक विभाग का टिकट। **टि.** आजकल इसका पाँच हजार रूपए और अधिक के लेन-देन पर लगाया जाना आवश्यक है। समय-समय पर इसमें संशोधन होता रहता है। revenue stamp

रसीला *वि. (सं+हिं.-रस)* 1. रसभरा, रसयुक्त। 2. स्वादिष्ट, 3. रसिक स्वभाव वाला। **भाव.** रसीलापन। **जैसे:** यह आम बहुत रसीला है, खाकर देखें।

रसूल *पुं.(अर.)* ईशदूत, ईश्वर का अवतार, पैगंबर, नबी।

रसूली *वि. (अर.)* रसूल-संबंधी, रसूल का, रसूल के द्वारा कहा हुआ या किया हुआ।

रसोइया *पुं.(देश.)* रसोई बनाने वाला, वह पुरुष कर्मचारी जो घर या दुकान, रेस्तरां आदि में भोजन बनाता है। cook

रसोईघर *पुं.(देश.)* आवासीय व्यवस्था में वह कक्ष या कमरा जहाँ परिवार के लिए भोजन तैयार किया जाता है। (किचन)

रस्ट *पु. (अं.)* 1. **भौ.** लोहे या इस्पात के ऑक्सीकरण से (विशेषकर नमी के कारण) उसके ऊपर बनी लाल-सी या भूरी-सी परत बन जाना। इस प्रकार की अन्य धातुओं पर भी बन सकती है। **पर्या.** जंग, मोरचा। (rust) 2. **वन**.- यूरेडिनिओमाइसेटीज वर्ग के कवकों द्वारा उत्पन्न एक रोग जिसके कारण पौधों पर जंग (मोरचा) **जैसे**: रंगीन धब्बे बन जाते हैं। **पर्या.**किट्ट, रतुआ। rust

रस्म *स्त्री.(अर.)* प्राचीन काल से चले आ रहे रीति-रिवाज/परंपरा।

रस्मो रिवाज़ *पुं.(अर.)* बहुत दिनों से चले आ रहे संस्कार संबंधित नियम तथा परिपाटी या रीति-रिवाज जो प्रत्येक कुल, धर्म या देश की पहचान बताते हैं। **रस्म**=धार्मिक या पारिवारिक परंपरानुसार विधियाँ। **रिवाज़**=लोक में प्रचलित कार्य करने के विधान। **प्रयो**. आजकल तो रस्मो-रिवाज का पालन सामान्य या मध्यवर्ग के लोगों में ही देखने को मिलता है।

रस्सा *पुं.(तद्.)* सन या मूँज आदि से बनाई गई मोटी लंबी रस्सी।

रस्साकसी/कशी *स्त्री. (देश.*<रसना+कर्षण) 1. खेल जिसमें एक ही रस्से को दो पक्ष अपनी-अपनी ओर विपरीत दिशा में खींचते हैं और जो पक्ष दूसरे पक्ष को गिरा देता या अपनी ओर खींच लेता है वह विजयी घोषित कर दिया जाता है। 2. ऐसी स्थिति जब किसी बात को मनवाने के लिए दोनों पक्ष अपनी-अपनी बात पर अड़े रहते हैं और कोई निर्णय नहीं हो पाता। **पर्या.** खींचतान।

रहट *पुं.(तद्.)* कुएँ या किसी गहरी नाली से पानी निकालकर खेतों में सिंचाई करने हेतु प्रयुक्त गोलाकार पहिएनुमा उपकरण। इसमें ऐसी डोलचियों की माला पड़ी होती है जो पानी नीचे से भरकर ऊपर खेतों की नाली में जाने के लिए उड़ेलती हैं।

रहन-सहन *स्त्री.(तद्.)* समाज में रहने और परस्पर व्यवहार करने का ढंग या तरीका।

रहना *अ.क्रि. (देश.)* 1. किसी स्थान का आश्रय लेकर टिकना, ठहरना। **जैसे**: 1. वृक्ष पर छत्ते का रहना। (ii) वे यहाँ ही रहते हैं। 2. किसी भी दशा/अवस्था में स्थिर होना। **जैसे:** बिना अन्न-जल के व्रत रहना। 3. नौकरी आदि में स्थिर रहना। **उदा.** वे इस विद्यालय में दस वर्ष तक प्राचार्य रहे।

रहनुमा *वि. पुं. (फ़ा.* राहनुमा) सही रास्ता बताने वाला। **पर्या.** पथ-प्रदर्शक, नेता, अगुवा। ला.अर्थ वह व्यक्ति जो जीवन के कल्याण के लिए समाज का पथ-प्रदर्शक या सहायता प्रदान करने वाला हो।

रहनुमाई *स्त्री.* मार्गदर्शन, नेतृत्व, सेनापतित्व।

रहबर *वि.(फा.)* 'रहबर' का छोटा रूप अर्थात 'राह' या मार्ग बताने वाला। 1. पथ-प्रदर्शक, 2. रहनुमा, 3. अगुवा, 4. नेता।

रहम *पुं.(अर.* रह्म) व्यक्ति का वह उदात्त गुण जो व्यवहार में क्षमा, कृपा या दया के रूप में व्यक्त होता है। **पर्या. 1.** करुणा, दया, 2. कृपा,

अनुग्रह। **उदा.** स्वामी को चोरी करने वाले बालक पर रहम आ गया और उसने उसे छोड़ दिया।

रहमत *स्त्री. (अर.)* 1. कृपा, 2. दया। **उदा.** ईश्वर की रहमत से हम उस दुर्घटना में बाल-बाल बच गए।

रहमदिल *वि.(अर.+फ़ा.)* जिसके मन में रहम या दया हो। शा.अ. दयालू, करुणापूर्ण। **उदा.** आप तो बहुत रहमदिल इंसान हैं, सभी गरीबों की मदद करते हैं। देखें-रहम। (मर्सीफुल)

रहमदिली *(स्त्री.)* दयालुता।

रह-रहकर *क्रि.वि. (देश.)* रूक-रूक कर जो लगातार न हो। **जैसे**: उसके पेट में रह-रह कर दर्द होता है।

रहस्य *पुं.(तत्)* व्यु.अर्थ. एकांत की बात। सा.अर्थ छिपाई हुई बात, गुप्त बात। **पर्या**. मर्म, भेद।

रहस्यमय *वि. (तत्.)* जो रहस्य से पूर्ण या रहस्ययुक्त हो अर्थात जिसके कार्य कारण आदि का पता न चले। **उदा.** आरूषि की हत्या बड़े ही रहस्यमय ढंग से हुई, अभी तक उसका रहस्य अज्ञात है। **दे**. 'रहस्य'। mystirious

रहा-सहा *वि.* (**दे.** रहना-सहना) शेष, बाकी बचा हुआ। **प्रयो.** ज्यादातर संपत्ति तो उसने जुए में नष्ट कर दी, रही-सही संपत्ति मुकदमे में चली गई।

राँगा *पुं. (देश.)* सफेद रंग की एक धातु जो कुछ मुलायम होती है। इससे ताँबा और पीतल के बर्तनों पर कलई की जाती है। **पर्या.** वंश धातु, कलई। tin

राँड़ *स्त्री.(तद्.*<रण्डा) 1. जिसका पति गुज़र गया हो। 2. विधवा स्त्री जिसने पुनर्विवाह नहीं किया हो। **पर्या.** विधवा। **टि.** सामान्यतया गाली के रूप में प्रयोग जो दुश्चला स्त्री के अर्थ में प्रयुक्त होता है।

राई *स्त्री.(तद्.*<राजि:) छोटी सरसों का एक प्रकार जिसके दाने लाल और काले होते हैं तथा मसाले के रूप में (छौंक लगाने आदि) इसका प्रयोग होता है। ला.अर्थ. 1. बहुत थोड़ी मात्रा या परिमाण। **मुहा.** (i) नोन-राई उतारना=एक प्रकार का टोना करना। इसमें जिसे नज़र लगी हो उस पर से राई और नमक उतारकर आग में डालते हैं। 2. राई का पर्वत या पहाड़ बनाना या होना=अनावश्यक तूल देना, बहुत छोटी-सी बात को बहुत बड़ा बना देना।

राका *स्त्री.(तत्.)* चाँदनी रात, पूर्णिमा की रात्रि, जब चंद्रमा पूरा चमकता है।

राक्षस *पुं.(तत्.)* 1. पौराणिक गाथाओं के अनुसार शक्तिशाली, विशालकाय तथा भयावह आकृति वाली एक जाति जो मानवजाति के विरूद्ध अत्याचारों एवं क्रूरता के लिए कुख्यात थी। 2. एक विशिष्ट योनि जो दैत्य या दानव की तरह ही थी। 2. ला.अर्थ क्रूर व्यक्ति, अति दुष्ट व्यक्ति। **टि.** कुबेर के कोश के रक्षक होने के कारण, संभवत: इन्हें 'राक्षस' कहा गया।

राख *स्त्री.(तद्.<रक्षा)* 1. काष्ठ आदि के जल जाने पर उसका बचा हुआ वह अंश जो बारीक तथा कुछ काले या भूरे रंग का होता है। **जैसे**: लकड़ी कोयले या उपले की राख। **टि.** राख जब अधिक जलकर बिलकुल सफेद रंग की तथा अत्यंत बारीक पाउडर जैसी हो जाती है तो उसे 'भस्म' कहा जाता है। **मुहा.** (i) राख डालना=ढक देना, किसी वस्तु को दबा देना। (ii) राख में मिला देना=नष्ट कर देना।

राखदान *पुं.(तद्+फ़ा.)* वह पात्र जिसमें हवन आदि की राख डालकर रखी जाती है।

राखदानी *स्त्री.(तद्+फा.)* सिगरेट आदि पीते हुए गुल (राख) गिराने का छोटा-सा पात्र। ashtray

राखी *स्त्री. (तद्* रक्षा/रक्षी) रक्षाबंधन पर्व में दाहिने हाथ की कलाई पर बाँधा जाने वाला सूत्र जो विशेष रूप से बहन द्वारा भाई के हाथ में बाँधा जाता है। **टि.** प्राचीनकाल में पुरोहित यजमान के हाथ में रक्षासूत्र बाँधते थे।

राग *पुं.(तत्.)* 1. सांसारिक पदार्थों का मन पर चढ़ा रंग; प्रिय वस्तु या व्यक्ति आदि अपने पास ही बनी रहे यह मन का भाव। **पर्या.** अनुराग। **विलो.** द्वेष। 2. रंग विशेषकर लाल रंग। **उदा.** अंगराग=शरीर पर लगाने वाला रंग। 3. संगीत में सात स्वरों के उतार-चढ़ाव की विभिन्न योजनाओं से बनी एक व्यवस्था। **मुहा.** अपना राग अलापना=अपने ही मन की या पसंद की बात कहते जाना। दूसरा ही राग अलापना=प्रसंग के अतिरिक्त दूसरी बात बोलते जाना।

रागिनी *स्त्री.(तत्.)* संगीत में किसी राग की पत्नी प्रत्येक राग की प्राय: छह रागिनियाँ मानी गई हैं। **टि.** 'राग' का स्त्रीलिंग रूप है 'रागिनी'

राज *पुं.(तद्<*राज्य) 1. राज्य, शासन **उदा.** अशोक के राज में......government 2. शासन के अधीन आने वाला पूरा क्षेत्र। **उदा.** अशोक का राज बहुत बड़ा था। 3. शासन का काल। *पुं.(तद्<राजन्)* श्रेष्ठ, राजा आदि अर्थों में समस्त पद में प्रयुक्त **जैसे**: काशिराज, प्रयागराज। *पुं.(फ़ा.)* 1. 'राजगीर' का संक्षिप्त रूप। **दे.** राजगीर। रहस्य, भेद। **उदा.** आपकी इस बात में बहुत बड़ा राज छिपा हुआ है।

राजकीय *वि.(तत्.)* राजा या राज्य से संबंधित। **उदा.** राजकीय आज्ञा, राजकीय पद, राजकीय, संपत्ति आदि।

राजकुमार *पुं.(तत्.) (राजपुत्र)* 1. राजा का पुत्र। 2. ला.अर्थ (राजपुत्रों की तरह) लाड़-प्यार से पाला-पोसा गया पुत्र। **स्त्री.** राजकुमारी।

राजकोष *पुं.(तत्.)* राजा का ख़जाना; सरकारी खज़ाना। treasury, exchequer

राजगद्दी *स्त्री.(तद्.+देश)* 1. राजा के बैठने की कुर्सी, राजसिंहासन। thorn 2. राज्य करने का अधिकार।

राजगीर *पुं.(देश.)* चिनाई में कुशल भवन निर्माणकर्ता।

राजगीरी *स्त्री.* चिनाई का कार्य, मकान आदि बनाने का काम या व्यवस्था।

राजचिह्न *पुं.(तत्.)* राजा द्वारा धारण किये जाने वाले वे विशेष चिह्न जिन्हें राजा के अतिरिक्त अन्य कोई धारण करने का अधिकारी नहीं है। राजा के पाँच चिह्न-छत्र, चँवर, सिंहासन, मुकुट, राजदंड।

राजतंत्र *पुं.(तत्.)* वह शासन प्रणाली जिसमें राज्य का समस्त शासन-प्रबंध राजा द्वारा संचालित होता है। monarchy **तुल.** प्रजातंत्र।

राजदंड *पुं.(तत्.)* 1. वह दंड जो राजा के पास उसके नृपत्य या राजत्व के सूचक चिह्न के रूप में रहता है। 2. राजा या राज्य द्वारा अपराधियों या दोषियों आदि को दिया जाने वाला दंड।

राजदूत *पुं.(तत्.)* शा.अर्थ राजा का दूत; **राज.** शासन द्वारा अन्य राज्य में नियुक्त वह उच्चपदस्थ कर्मचारी जो वहाँ अपने देश का प्रतिनिधित्व करता है। ambassador

राजदूतावास *पुं.(तत्.)* (अन्य देश के नियुक्त) राजदूत और उसके कर्मचारियों का कार्यालय (आवास) embassy

राजद्रोह *पुं.(तत्.)* शा.अर्थ (अपने राजा या शासन) शासन के प्रति प्रकट द्रोह। **राज.** स्थापित सत्ता को पलटने के लिए की गई हिंसक कार्यवाई जिसके फलस्वरूप या तो शासक बदल जाए या द्रोह करने वाला स्वयं शासक बन जाए। sedition

राजधर्म *पुं.(तत्.)* 1. सुशासन के लिए शास्त्रों में वर्णित नियम। 2. राजा या शासक के समुचित अधिकार एवं कर्तव्य।

राजधानी *स्त्री.(तत्.)* राज्य का मुख्य नगर जहाँ से शासन का कार्य चलाया जाता है और जहाँ शासक निवास करता है। शासन का केंद्र।

राजनीति (शास्त्र) *स्त्री.(तत्.)* 1. राज्य का शासन चलाने और तदनुसार प्रजा (जनता) का पालन करने की नीति, कला या सिद्धांत; शासनकला। political science 2. (अपमानजनक या अवमूल्यन प्राप्त) लाक्षणिक अर्थ, चालबाजी। politics **तु.** राजनय।

राजनीतिक *वि.(तत्.)* राजनीति संबंधी, राजनीति से संबंधित।

राजनीतिज्ञ *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ राजनीति का जानकार। **राज.** 1. राजनीति (शास्त्र) का पंडित या अच्छा जानकार। 2. (अवमूल्यन प्राप्त अर्थ) राजनीतिक उठापटक में चतुर व्यक्ति। politicion **तु.** राजमर्मज्ञ।

राजपद *पुं.(तत्.)* राजा का पद; राज्य का अधिकार।

राजपाट *पुं.(तद्.)* **दे.** राजगद्दी।

राजपूत *पुं.(तद्.<*राजपुत्र) व्यु.अर्थ राजा का पुत्र। वि.अर्थ राजस्थान की एक क्षत्रिय जाति जो स्वयं को राजाओं का वंशज मानती है। इसी कारण राजस्थान का प्राचीन नाम 'राजपूताना' था।

राजभवन *पुं.(तत्.)* शा.अर्थ राजा का निवास। (आधु.अर्थ) भारत के प्रसंग में प्रत्येक राज्य में नियुक्त राज्यपाल का (भव्य) आवास। government house **तु.** राष्ट्रपति भवन।

राजभाषा *पुं.(तत्.)* शासन की औपचारिक भाषा; शासकीय भाषां **उदा.** हिंदी भारतसंघ की राजभाषा है। officla language

राजमद *पुं.(तत्.)* राज्य का स्वामी बन जाने पर चढ़ने वाला नशा (जिसके फलस्वरूप राजा अच्छे-बुरे कार्यों में भेद नहीं कर पाता तथा प्रजा/अधीनस्थ जनता को तुच्छ समझने लगता है;) उच्चाधिकार का नशा।

राजमर्मज्ञ (मर्म को जानने वाला) *पुं.(तत्.)* राज्य की रीति-नीति का मार्गदर्शन करने वाला दूरदर्शी राजनेता। **उदा.** पंडित नेहरू राजनीतिज्ञ ही नहीं राजमर्मज्ञ भी थे। statesman **तु.** राजनीतिज्ञ।

राजमहल *(राज+महल) पुं.(तद्+अर.)* राजा का निवास-स्थान। **पर्या.** राज-प्रासाद। (रॉयल पेलेस)

राजमाता *स्त्री.(तत्.)* वर्तमान राजा या रानी की जीवित माता (जो पहले अपने (राजा) पति के जीवित रहते रानी/महारानी रही थी) queen mother

राजवैद्य *पुं.(तत्.)* राजा की चिकित्सा करने वाला वैद्य।

राजशाही *स्त्री. (सं.+फ़ा.)* राजा द्वारा सर्वाधिकार संपन्न बनकर राज्य चलाने की पद्धति। **तु.** लोकशाही=जनता द्वारा चलाई गई शासन पद्धति।

राजसी *वि.(देश.)* 1. राजाओं जैसा। 2. राजाओं के योग्य, उनके अनुरूप। 3. राजपरंपरा के अनुसार।

राजसूय एक यज्ञ जो सम्राट पद के अधिकारी राजा करते थे।

राजस्व *पुं.(तत्.)* कर, शुल्क आदि के रूप में राजा या सरकार को होने वाली आय। **उदा.** सरकार राजस्व का उपयोग राष्ट्र एवं जनता के कल्याण के लिए करती है।

राजाज्ञा *स्त्री.(तत्.)* 1. राजा का आदेश; राज्य-शासन का आदेश। 2. आदेश जिसका उल्लंघन अपराध माना जाए।

राज़ी *वि.(अर.<राज़ी)* सहमत, प्रसन्न, संतुष्ट। **उदा.** हमारे पिताजी इस कार्यक्रम में आने को राज़ी हो गए हैं।

राज़ी *स्त्री.(अर.<राज़ी)* 1. सहमति, स्वीकृति, अनुमति। 2. कुशल, क्षेम। सामान्यत: 'राजी-खुशी' प्रयोग होता है।

राज़ी-खुशी *क्रि.वि. (अर.+फा.)* 1. अच्छी तरह, 2. कुशलपूर्वक, सकुशल। **उदा.** हमारे यहाँ उत्सव में पधारे सभी अतिथि राज़ीखुशी विदा हो गए।

राज़ीनामा *पुं.(अर.राज़ी+फा.नामा)* वह लिखित दस्तावेज़ जो विरोधी पक्षों में परस्पर समझौते के रूप में प्रमाण माना जाता है। **पर्या.** संधिपत्र, सुलहनामा, सहमति/स्वीकृतिपत्र। agreement **उदा.** दोनों व्यक्तियों ने आपस में समझौता करके राज़ीनामे पर दस्तखत कर दिये।

राजीव *पुं.(तत्.)* नीलकमल या कमल।

राज़ीवलोचन *वि.* नीलकमल के समान सुंदर नेत्रों वाला।

राज्य *पुं.(तत्.)* 1. (व्यापक संकल्पना) राजा या केंद्रीय सत्ता द्वारा शासित देश। 2. (सीमित संकल्पना) संघ राज्य की कोई इकाई। जैसे-उत्तर प्रदेश, राजस्थान आदि। **पर्या.** प्रांत state 3. 'शासन' का पर्यायवाची शब्द (प्रभुत्वसंपन्न सत्ता) rule

राज्यकाल *पुं.(तत्.)* राजा के सिंहासनारूढ़ होने से लेकर मृत्युपर्यंत अथवा शासक का पद छोड़ने तक की समयावधि।

राज्यपाल *पुं.(तत्.)* भारत के संविधान के अनुसार प्रत्येक राज्य का वह सर्वोच्च पदाधिकारी/ प्राधिकारी जिसकी नियुक्ति राष्ट्रपति करते हैं तथा जो वहाँ राष्ट्रपति का प्रतिनिधि माना जाता है। governor

राज्यसभा *स्त्री.(तत्.)* भारतीय संसद का ऊपरी सदन जिसके (अधिकतम) सदस्यों का निर्वाचन संघ के राज्यों की विधानसभाएँ करती हैं तथा कुछ सदस्य बारह (12) विशिष्ट क्षेत्रों (साहित्य-कला आदि) राष्ट्रपति द्वारा मनोनीत किए जाते हैं। **पर्या**. ऊपरी सदन upper houe

राज्याभिषेक *पुं.(तत्.)* **राज.** राजा के रूप में प्रथम बार राजसिंहासन पर बैठने/बिठाने की औपचारिक प्रक्रिया। **पर्या.** राजतिलक। शा.अर्थ राज्य प्राप्ति के निमित्त की जाने वाली स्नानादि क्रियाएँ, अभिषेक=स्नान। **टि.** भारतीय शास्त्रों के अनुसार किसी को राजा बनाने से पूर्व राज्य की समस्त नदियों का जल एकत्रित कर उस जल से उसे स्नान कराया जाता था और इस प्रकार पवित्र हुए

राजा को पुरोहित तिलक लगाकर सिंहासनारूढ़ करता था।

राडार *पुं.(अं.)* अंग्रेजी शब्द 'radio detection and ranging' की रोमन वर्तनी के अनुसार सभी शब्दों के आद्यक्षरों से बना संक्षिप्त नाम। आकाश (अंतरिक्ष) में वस्तुओं की स्थिति का ज्ञान कराने में सहायक युक्ति जिसमें उच्च आवृत्ति की रेडियो तरंगों का उपयोग होता है। **पर्या.** radar

रात *स्त्री.(तद्/रात्रि)* सूर्यास्त के बाद से सूर्योदय तक का समय/रात्रि। **पर्या.** रजनी, निशा, यामिनी। **मुहा.** 1. रात काटना=किसी की प्रतीक्षा में या परेशानी से किसी प्रकार रात का समय व्यतीत करना। 2. रात-दिन एक करना=बहुत अधिक प्रयत्न या परिश्रम करना।

रात की रानी *स्त्री.(देश.)* एक पौधा जिसके सुगंधित फूल जो शाम ढलने के बाद रात्रि में खिलते हैं। इसे घरों में भी आरोपित किया जा सकता है। queen of the night

रातोंरात *क्रि.वि. (देश.)* रात-रात में ही, उजाला होने से पहले ही। **जैसे**: उसने रातों-रात उस भवन की चारदीवारी बनवा दी।

रात्रि *स्त्री.(तत्.)* पृथ्वी की घूर्णन क्रिया (अपनी कीली पर घूमने) के कारण उसके आधे भाग पर सूर्य की किरणें न पड़ने की स्थिति में होने वाले अंधकार का काल। **टि.** पूरी पृथ्वी पर एक ही समय रात्रि नहीं हो सकती। **पर्या.** रात, निशा।

रान *स्त्री.(फा.)* दोनों पैरों का ऊपर की ओर कमर से लगा मांसल भाग, जाँघ। Thigh

रामकहानी *स्त्री.(देश.)* 1. आपबीती, 2. पूरा या ब्यौरेवार विवरण 3. दु:खड़ा, दु:खकथा। **उदा.** वह तो आज अपनी रामकहानी ही सुनाता रहा।

रामबाण *वि.(तत्.)* वह (औषधि या उपाय) जो तुरंत और निश्चित लाभ करे। **पर्या.** अचूक, अमोघ। **उदा.** तुम्हारे लिए यह दवा रामबाण है।

रामराज्य *पुं.(तत्.)* सा.अर्थ **1.** ऐसा आदर्श राज्य जो सब लोगों के लिए अत्यंत सुखदायक हो और जिसमें किसी को किसी बात का कष्ट न हो। व्यं.अं. 2. अनुशासनविहीनता के अर्थ में प्रयोग, **जैसे**: इस कार्यालय में रामराज्य है चाहे जब आओ चाहे जब चले जाओ, कोई बंधन या शासन नहीं है।

रामसर *पुं.(देश.)* गन्ने की आकृति वाला एक पौधा जिसके पोर बड़े पतले और शुष्क होते हैं। उनके ऊपर एक छिलका होता है जिसे 'मूँज' कहा जाता है। इसे कूटकर एवं बंटकर रस्सियाँ बनायी जाती हैं। **पर्या.** सरपत। **जैसे:** प्राचीन समय में बच्चे आठवीं कक्षा तक रामसर (सरपत) की कलम से ही लिखते थे।

राय *पुं.(तद्.<राजन्)* 1. राजा, 2. सरकार, 3. बंगालियों में एक वंश-उपाधि, **जैसे**: राजा राममनोहर राय। *स्त्री. (फा.)* 4. विचार, मत। **जैसे**: लोकपाल बनाने के संबंध में आपकी क्या राय है। 5. परामर्श, सलाह। **प्रयो.** उसने बुजुर्गों की राय से ही यह काम किया है। **पर्या.** सम्मति।

रायज़ादा *पुं.(हिं. राय+फा. ज़ादा)* राजकुमार, राजपुत्र।

रायता *पुं.(देश.)* एक व्यंजन जो दही में घिसा गाजर, बथुआ, खीरे के टुकड़े, बूंदी, अनानास के टुकड़ो आदि में से कुछ मिलाकर छौंक देकर बनाया जाता है। **उदा.** भोजन के साथ रायता हो तो भोजन रूचिकर हो जाता है।

रार *स्त्री.(देश.)* 1. विवाद, तकरार, झगड़ा। 2. हठ। **मुहा.** रार बढ़ाना-बात बढ़ाना, झगड़ा करना। **प्रयो.** व्यर्थ में रार बढ़ाना अच्छी बात नहीं हैं।

राल *स्त्री.(तत्.)* 1. शाल वृक्ष पर उत्पन्न गोंद। 2. शाल वृक्ष का निर्यास जो सुगंधित धुएँ के लिए जलाया जाता है। **टि.** हवनसामग्री में इसे मिलाया जाता है।

राव *पुं.(तद्.)* राजा, सरदार, राज्य भाटों की उपाधि। **जैसे**: यदुराव।

राशन *पुं.(अं.<रैशन)* 1. खाने-पीने की वस्तुओं या अन्य आवश्यकताओं की सुनिश्चित पूर्ति के लिए सरकार द्वारा नियतमात्रा में वस्तुओं की कमी होने की स्थिति में नियत मूल्य और नियत समय पर उपलब्ध कराने हेतु की गई व्यवस्था। 2. खाने का सामान, रसद। **उदा.** आज उचित दर की दुकान से राशन मिल रहा है।

राशि *स्त्री.(तत्.)* 1. पुंज, ढेर। **जैसे**: खलिहान में अभी अन्नराशि पड़ी है। collection group 2. (गणित) संख्या, बीजगणितीय व्यंजक। 2. क्रान्तिवृत्त में स्थित बारह तारा समूहों में से प्रत्येक, मेष आदि बारह राशियाँ होती हैं। सूर्य

प्रत्येक राशि में लगभग एक महीने तक रहता है।

राष्ट्र *पुं.(तत्.)* 1. प्रभुसत्ता संपन्न देश जिसकी निश्चित भौगोलिक सीमाएँ तो हैं ही, पर जिसके निवासी भावनात्मक और सांस्कृतिक रूप से अवश्य जुड़े हों। 2. राज्य (व्यापक संकल्पना) या देश का पर्याय। nation

राष्ट्र-कवि *पुं.(तत्.)* राष्ट्रीय भावनाओं से ओत-प्रोत काव्य की रचना करने वाले गणयमान्य कवियों में से भी जनता द्वारा (अथवा शासन द्वारा) प्रदत्त सम्मानसूचक आलंकारिक पदवी से युक्त सर्वाधिक मान्य राष्ट्रीय स्तर का कवि। **जैसे**: राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त अथवा दिनकर।

राष्ट्रकुल *पुं.(तत्.)* **राज.** (कुछ) राष्ट्रों (देशों) का कुल। राजते.। **तु.** राष्ट्रमंडल, संयुक्त राष्ट्र। league of nations

राष्ट्रगान *पुं.(तत्.)* महत्वपूर्ण राजकीय समारोहों में राष्ट्र के प्रति श्रद्धा व्यक्त करने के लिए गाया-बजाया जाने वाला गीत। भारत में यह गौरव 'जन-गण-मन.......' को प्राप्त है। National Anthem **तु.** राष्ट्रगीत।

राष्ट्रगीत *पुं.(तत्.)* (राष्ट्रगान के ही समकक्ष) सम्मान के योग्य गाया-बजाया जाने वाला राष्ट्रीय स्तर का गीत। भारत में 'वंदे मातरम्.......' को यह प्रतिष्ठा प्राप्त है। National Song **तु.** राष्ट्रगान।

राष्ट्रध्वज *पुं.(तत्.)* राष्ट्र का झंडा, राष्ट्रीय झंडा। **उदा.** केसरिया, सफेद और हरी-इन तीन पट्टियों से निर्मित तथा सफेद पट्टी में स्थित अशोक चक्र वाला तिरंगा झंडा। भारत गणराज्य का राष्ट्र-ध्वज है। **पर्या.** राष्ट्रीय पताका। National Flag

राष्ट्रपति *पुं.(तत्.)* 1. भारत गणराज्य का वह अप्रत्यक्ष निर्वाचन प्रणाली से पाँच वर्ष की अवधि के लिए निर्वाचित सर्वोच्च पदाधिकारी जिसके पास राष्ट्र के शासन संचालन का संपूर्ण अधिकार होता है। 2. किसी भी गणराज्य का नियतावधि के लिए निर्वाचित राष्ट्राध्यक्ष। President

राष्ट्रपति-शासन *पुं.(तत्.)* भारत के संदर्भ में किसी भी राज्य में वहाँ की विधानसभा में मंत्रिमंडल का दलीय बहुमत न रह पाने अथवा विधान-सभा के भंग कर दिए जाने की स्थिति में राज्यपाल की संस्तुति पर स्थापित नियतकालीन अस्थाई शासन जिसे वहाँ का राज्यपाल राष्ट्रपति के नाम पर कुछ सलाहकारों की मदद से चलाता है। President Rule

राष्ट्र-पिता *पुं.(तत्.)* शा.अर्थ राष्ट्र का पिता। जो पिता की तरह राष्ट्र को संरक्षण प्रदान करने वाला, महापुरुष। भारत के संदर्भ में 'मोहनदास कर्मचंद गाँधी' यानी महात्मा गाँधी।

राष्ट्रभाषा *पुं.(तत्.)* बहुभाषाभाषी राष्ट्र को एकता की कड़ी में जोड़ने के उद्देश्य से देश की बहुसंख्यक जनता द्वारा बोली और समझी जाने वाली परस्पर विचार-संप्रेषण के लिए स्वेच्छा से मान्य भाषा विशेष। **जैसे**: राष्ट्रभाषा हिंदी।

राष्ट्रमंडल *पुं.(तत्.)* शा.अर्थ (कुछ) राष्ट्रों (देशों) का मंडल (समूह)। **राज.** उन स्वतंत्र हुए राष्ट्रों का समूह जो पहले बर्तानवी साम्राज्य के अंग थे किंतु अब भी अपने समान हितों के कारण स्वेच्छा से परस्पर जुड़े हुए हैं। Commonwealth Nations **तु.** राष्ट्र कुल, संयुक्त राष्ट्र।

राष्ट्रमंडल खेल *पुं. (तत्. + तद्.)* ओलंपिक के ही समान प्रसिद् धि प्राप्त राष्ट्रमंडल के देशों के बीच खेल-प्रतियोगिताओं का कार्यक्रम जो हर चार सालों के बाद आयोजित होता है। **उदा.** सन् 2010 में भारत की राजधानी दिल्ली में 10 वें राष्ट्रमंडल खेलों का आयोजन हुआ।

राष्ट्रवाद *पुं.(तत्.)* राष्ट्र के हितों को ही सबसे महत्वपूर्ण मानने की विचारधारा; राष्ट्रप्रेम की उत्कृष्ट भावना। Nationalism

राष्ट्रवादी *वि./पुं.(तत्.)* राष्ट्र को महत्वपूर्ण मानने वाला, राष्ट्रभक्त, राष्ट्र के हितों को ही सबसे महत्वपूर्ण मानने वाला (व्यक्ति); राष्ट्रप्रेम की उत्कटभावना से परिपूर्ण (व्यक्ति)। Nationalist

राष्ट्रीय *वि.(तत्.)* 1. राष्ट्र संबंधी, राष्ट्र का। **जैसे**: राष्ट्रीय विचारधारा; 2. जिस पर राष्ट्र का (देश की सरकार का) आधिपत्य हो। (राष्ट्रीय बैंक)

राष्ट्रीय उद्यान *पुं.(तत्.)* शा.अर्थ राष्ट्रीय स्तर पर बनाया गया उद्यान।, राष्ट्रीय स्तर पर वह संरक्षित वन क्षेत्र जिसमें वन्य प्राणी निर्भय होकर विचरण कर सकें। **पर्या.** अभयारण्य।

राष्ट्रीयकरण *पुं.(तत्.)* देश के शासन द्वारा किसी भी निजी उद् योग को लोकहित में अपने प्रत्यक्ष

नियंत्रण में ले लेने की व्यवस्था। **जैसे**: सन् 76 में बैंकों का राष्ट्रीयकरण कर दिया गया। Nationlisation

राष्ट्रीयता *स्त्री.(तत्.)* 1. राष्ट्रीय होने की मनोवृत्ति भाव या गुण। 2. अपने देश या राष्ट्र के प्रति उत्कट प्रेम की भावना। **उदा.** हम जो भी कार्य करें, राष्ट्रीयता की भावना से करें। Nationality

रास/रास आना *पुं. (फ़ा.)* अनुकूल होना, ठीक होना।

रासायनिक *वि.(तत्.)* रसायन शास्त्र से संबंधित; रसायन विज्ञान का रसायन शास्त्री।

रासायनिक अभिक्रिया *स्त्री.(तत्.)* वह प्रक्रम जिसके परिणामस्वरूप किसी पदार्थ की संरचना में परिवर्तन होकर नया पदार्थ बनता है। इस नए पदार्थ में नाभिक तो पुराने ही रहते हैं परंतु इनका विन्यास, परमाणुओं की संख्या, ऊर्जा इत्यादि बदल जाते हैं। chemical reaction

रास्ता *पुं.(फा. रास्त:)* 1. किसी गंतव्य स्थल तक जाने का मार्ग, पथ। **जैसे**: विद्यालय जाने का रास्ता। 2. युक्ति, उपाय। **जैसे**: अन्न की इस कठिन समस्या से मुक्ति पाने का एक ही रास्ता है, कठोर परिश्रम से अन्न-उत्पादन। **मुहा.** 1. रास्ता कटना=गीत गाते हुए या मनोरंजनपूर्ण बातें करते हुए निर्धारित रास्ते को पूरा करना। 2. रास्ता काटना=किसी की गति में बाधा डालना। 3. बिल्ली का रास्ता काटना=अपशकुन होना। 4. रास्ते पर आना=सुधर जाना। 4. रास्ते में कांटे बोना=किसी को हानि पहुँचाना, विघ्न उत्पन्न करना।

राह *स्त्री.(फा.)* 1. मार्ग, पथ, रास्ता। 2. ढंग, पद्धति। 3. उपाय, तरकीब। **मुहा.** (i) राह देखना=किसी का इंतजार करना। **प्रयो.** मैं कितनी देर से आपकी राह देख रहा हूँ। (ii) राह अलग होना=विचारधारा अलग होना, जीवन में चलने के पृथक सिद्धांत होना। **प्रयो.** आज से हमारी और तुम्हारी राह अलग-अलग होगी।

राहगीर *पुं.(फ़ा.)* रास्ते पर या मार्ग में चलने वाला। **पर्या.** पथिक, बटोही, मुसाफिर।

राहजनी *स्त्री.(फ़ा.)* रास्ते चलते लोगों को लूटने का अपकृत्य (बुरा काम)। **पर्या.** बटमारी।

राहत *स्त्री.(अर.)* 1. मन का वह भाव जिसमें आनंद की अनुभूति हो। **पर्या.** सुख, आनंद, चैन। 2. किसी कार्य को विशेष पद्धति से करने से होने वाली सुगमता। **पर्या.** आसानी। 3. किसी विशेष कारण से मन को प्राप्त होने वाला समाधान। **पर्या.** शांति, सुकून। 4. किसी रोग या दर्द आदि में होने वाली कमी।

राहतकार्य *पुं.(अर.+तत्.)* आपदा प्रबंधन का एक तरीका जिसमें अकालग्रस्त लोगों, बाढ़पीडितों आदि को रोटी, कपड़ा, मकान से अथवा आर्थिक सहायता देकर उनके पुनर्निमाण में जनता एवं सरकार द्वारा सहयोग दिया जाता है। relief

राही *पुं.(फ़ा.)* राह चलने वाला। **पर्या.** यात्री, मुसाफिर, पथिक।

रिक्टर पैमाना *पुं.(अं.फ़ा.)* भूकंप की शक्ति के परिमाण को व्यक्त करने के लिए प्रयुक्त पैमाना। **टि.** 1. जर्मन विद्वान रिक्टर के नाम पर इस पैमाने का नाम रखा गया है। 2. रिक्टर पैमाने पर सात से अधिक परिमाण वाला भूकंप अधिक विनाशकारी माना जाता है।

रिक्टर मापनी *स्त्री.(अं.+तद्.<मापन)* **दे.** रिक्टर पैमाना'।

रिक्त *वि.(तत्.)* 1. खाली, शून्य। **उदा.** (i) शिक्षा विभाग में निदेशक का पद रिक्त है। (ii) यह पात्र रिक्त है, इसमें दूध नहीं है। vacant/vacancy 2. निर्धन।

रिक्तता *स्त्री.(तत्.)* 1. किसी स्थान, पद, पात्र आदि के रिक्त या खाली होने की अवस्था या भाव। 2. शून्यता, खालीपन।

रिक्तिका *स्त्री.(तत्.)* सा.अर्थ रिक्ति, किसी संरचना में खाली स्थान (1. लैकुवा 2. वैकंसी) 1. वनस्पति के कोशिकीय ऊतकों का वायु-अंतराल। 2. हड्डियों के भीतर मौजूद अनेक सूक्ष्म विवर।

रिक्शा *पुं.(जापानी*<जिन-रिकिशा) 1. जापान में प्रचलित दो पहियों की एक छोटी सवारी गाड़ी जिसे मनुष्य दौडक़र खींचता है। **टि.** पहले कोलकाता में भी इस प्रकार के रिक्शे चलते थे। सरकारी आदेश से इन्हें बंद कर दिया गया है। 2. तीन पहियों वाली छोटी सवारी गाड़ी जिसे

मनुष्य साइकिल की तरह चलाता है। **जैसे:** पड़ोस के पाँचों बालक प्रात: रिक्शा से ही स्कूल जाते हैं।

रिझाना *(प्रेर.*>रीझना) (तद्.<रंजन) किसी को अपने सौंदर्य, गुण, व्यवहार, वैभव आदि के द्वारा आकर्षित करते हुए उसे अपने प्रति अनुरक्त करना, मोहित करना।

रिपोर्ट *स्त्री.(अं.)* किसी घटना की जानकारी देने के लिए किसी अन्य को भेजी गई हु-ब-हू अथवा सारस्वरूप मौखिक या लिखित सूचना। किसी संस्था के किसी विशेष काल में किए जाने वाले कार्यक्रमों एवं उपलब्धियों का विवरण। **पर्या.** आख्या, प्रतिवेदन।

रिफ़ाइनरी *(अं.)* **दे.** 'परिष्करिणी'।

रिम-झिम *स्त्री.(अनु.)* 1. वर्षा की छोटी-छोटी बूँदों की फुहार। 2. हल्की वर्षा, बूँदा-बांदी। **जैसे**: आज प्रात: से ही रिम-झिम हो रही है। 2. धीमी वर्षा से उत्पन्न ध्वनि।

रियायत *स्त्री.(अर.)* 1. नियमों में किसी प्रकार की छूट देकर, दयापूर्ण व्यवहार करना, नरमी। **प्रयो.** तुम्हें रियायत पर यह मकान दिया गया है। 2. न्यूनता, कमी। 3. विक्रेता द्वारा ग्राहक के लिए मूल्य में की जाने वाली कमी।

रियायती *वि.* रियायत के साथ। **उदा.** सेल में वस्तुएँ रियायती दामों में मिलती है।

रियासत *स्त्री.(अर.)* सा.अर्थ शासन, हुकूमत। **इति.** मुगलकाल में और बर्तानवी शासन के दौरान भारत के वे वंश-परंपरा से चलते आ रहे राजा-महाराजों के स्वतंत्र राज्य जिन्होंने कई मामलों में केंद्रीय सत्ता की अधीनता स्वीकार कर ली थी। **पर्या.** देशी राज्य। (नेटिव स्टेट)

रिरियाना *अ.क्रि.(अनु.) (देश.)* 1. बच्चे की रीं-रीं जैसी ध्वनि करते रहना, धीरे-धीरे रोते ही रहना। 2. दीनता प्रकट करना, गिड़गिड़ाना। **प्रयो.** तुम दूसरों के आगे क्यों रिरियाते हो? उद्यम करो। 3. ला.अर्थ अस्पष्ट, स्त्री आवाज़ में बोलना।

रिवाज़ *पुं.(फ़ा.)* प्राचीन अथवा दीर्घकाल से चलती आ रही सामाजिक धार्मिक आदि परंपराओं को ज्यों-का-त्यों अथवा थोड़े बहुत सामायिक परिवर्तन के साथ निर्वाह करते रहने की प्रक्रिया। **पर्या.** रीति, प्रथा, चलन। custom

रिश्ता *(फ़ा.*>रिश्त:) *पुं.* 1. दो व्यक्तियों, वस्तुओं आदि के बीच का प्रकट संबध। 2. रक्त संबंध, नाता।

रिश्तेदार *पुं.(फ़ा.)* 1. संबंधी, नातेदार, परिजन। 2. स्वजन, आत्मीयजन।

रिश्तेदारी.*(फा.*>रिश्त:दारी) *स्त्री* 1. रिश्ता, नातेदारी। 2. संबंध। **जैसे**: हमें रिश्तेदारी निभानी आनी चाहिए।

रिश्वत *स्त्री.(अर.)* वह धन या वस्तु आदि जो किसी काम के करने या करवाने के एवज में किसी कार्यालय के कर्मचारी या अधिकारी द्वारा किसी से अनैतिक रूप में लिया जाता है। **पर्या.** घूस, उत्कोच। **उदा.** रिश्वत लेना या देना दंडनीय अपराध है।

रिश्वतखोर *(अर. फ़ा.) वि.* रिश्वत लेने या खाने वाला, घूसखोर। **दे.** रिश्वत'। **उदा.** यह अधिकारी तो बड़ा रिश्वतखोर है।

रिश्वतखोरी *स्त्री.* 1. रिश्वत लेने का भाव। 2. रिश्वत लेने की लत/स्वभाव। **उदा.** रिश्वतखोरी से ही उसने इतनी संपत्ति कमाई है।

रिसना *अ.क्रि (तद्*>ऋष् धातु) किसी समतल में अथवा जुड़ी आकृति में छेद हो जाने अथवा झिरी पड़ जाने के फलस्वरूप उस पर फैले द्रव पदार्थ का बूंद-बूंद कर टपकना या हल्की गति से बाहर निकलना।

रिसाव *पुं.(तद्.)* रिसने की क्रिया या भाव। **दे.** रिसना'।

रिहा *वि.(फ़ा.रहा)* 1. बंधन से छूटा हुआ, मुक्त। 2. कैद या जेल से छूटा हुआ (कैदी)।

रिहा करना *स.क्रि. (फ़ा.)* मुक्त करना, बंधन मुक्त करना। स्वेच्छानुसार कहीं भी जाने की छूट

देना। **उदा.** नक्सलियों ने आज सारे बंधकों को रिहा कर दिया।

रिहाइश *स्त्री.(फा.)* 1. रहने की क्रिया या भाव। 2. निवास स्थान, आवास। **पर्या.** निवास। residence

रिहाइशी *वि.(फा.)* रहने या निवास करने से संबंधित। residential

रिहाई *स्त्री.(फ़ा.)* बंधन से मुक्ति, छुटकारा। **प्रयो.** आज उसकी जमानत पर रिहाई हो जाएगी।

रीझना *अ.क्रि.(तद्<*रंजन) किसी के सौंदर्य, रूप, गुण आदि पर प्रसन्न होकर उस पर अनुरक्त हो जाना या मोहित हो जाना। **उदा.** हम तो 'कौन रूप गुन आगरि जिहिं गुपाल जू रीझैं'। [सूरसागर 10/4064) रिझाना (प्रे.क्रि.) प्रसन्न करना]।

रीडर *पुं./वि.(अं.)* 1. विश्वविद्यालय या महाविद्यालय में शिक्षक का वह विशेष पद जो लेक्चरर या सहायक प्रोफेसर के बाद का तथा प्रोफेसर से पहले का होता है। प्रत्येक विभाग में एक या एक से अधिक रीडर हो सकते हैं। 2. सरकारी आदेश से अब इन्हें भी सहा. प्रोफेसर ही कहा जाता है। 3. प्रवाचक, पाठक। 4. न्यायालयों में न्यायाधीश के समक्ष आवश्यक सामग्री प्रस्तुत करने वाला, पेशकार। Reader

रीढ़ *स्त्री.(तद्<*रीढक) 1. प्राणियों के पीठ के बीच की हड्डियों की वह श्रृंखला जो गर्दन से लेकर कमर तक स्थित होती है। इसी के निचले भाग में पूँछ होती है। (मेरूदंड) ला.अर्थ वह ढाँचा; तत्त्व या अंग जिसके आधार पर कोई चीज मजबूती से खड़ी रह सके। मुख्य आधार। **जैसे**: आज की युवा पीढ़ी हमारे देश की रीढ़ है। spine

रीति *स्त्री.(तत्.)* 1. कोई कार्य करने का ढंग या तरीका। manner 2. कोई कार्य करने का उचित क्रम या विशिष्ट पद्धति (कोर्स) 3. परिवार या समाज में चलती आई परिपाटी। **पर्या.** रिवाज़। **उदा.** रघुकुल रीति सदा चलि आई।

रीति रिवाज़ *पुं.बहु. (तत्.+अर.)* **दे.** परिपाटी', प्रथा।

रुकवाना *(प्रेर.>*रोकना) (हिं. रोकना) आधिकारिक तौर पर किसी कार्य को रोकने हेतु राजकर्मचारियों या अन्य को प्रेरित करना। **जैसे**: मंत्री ने उपयुक्त सामग्री के प्रयोग न होने के कारण उस राजमार्ग के निर्माण कार्य को रुकवा दिया।

रुकावट *स्त्री.(देश.)* 1. रोकने की क्रिया या भाव। 2. किसी कार्य में आने वाला विघ्न, जिसके कारण कार्य रुक जाए। **पर्या.** बाधा, विघ्न, अड़चन। obstruction

रुक्ष/रुक्ष *वि.(तत्.)* जिसमें चिकनाहट न हो; रूखा, कठोर। (ड्राई) **विलो.** स्निग्ध। (वह प्रदेश) जहाँ वर्षा न के बराबर होती हो और जहाँ कंटीली झाड़ियों के अतिरिक्त हरित वनस्पति का अभाव हो। **उदा.** वह व्यक्ति स्वभाव से बहुत रूक्ष है। harsh, rough

रुख़ *पुं.(फा.)* शा.अर्थ **1.** मुखाकृति, चेहरा। 2. कपोल 3. मनोभाव 4. कृपादृष्टि 5. दिशा। सा.अर्थ 1. चेहरे या आकृति से प्रकट होने वाले मन के भाव। 2. किसी विशिष्ट समय पर होने वाली व्यक्ति की विचार सरणि। **उदा.** भाई चुनाव में हवा का रुख़ किस दल की ओर है? **मुहा.** रुख देखकर बात करना=किसी का मनोभाव या परिस्थिति समझकर उसके अनुसार बात करना।

रुख़सत *स्त्री.(अर.)* 1. विदाई, प्रस्थान, 2. वधू की विदाई कार्यक्रम। घर विदा होने वाला। **उदा.** सभी मेहमान चार बजे रौख़सत हुए। **मुहा.** रुख़सत लेना-आज्ञा लेकर जाना।

रुखाई *स्त्री.(देश.)* 1. रुखा होने का भाव, रूक्षता, रूखापन। 2. खुश्की, शुष्कता। 3. व्यवहार में संकोच या शील का अभाव, कठोरता। **उदा.** उसके व्यवहार की रुख़ाई देखकर बहुत दु:ख हुआ।

रुग्णता *स्त्री.* रुग्ण होने की अवस्था या भाव।

रुचना *स.क्रि.(तत्.)* देखने में/मन को अच्छा लगना, पसंद आना, प्रिय एवं रुचिकर लगना।

रुचि *स्त्री.(तत्.)* मन की वह वृत्ति जिसके द्वारा चीजों को उपयुक्त या अनुपयुक्त समझा जाता है। **पर्या.** पसंद, चाह। **जैसे**: गणित में कुछ विद्यार्थियों की रुचि कम होती है।

रुचिकर *वि.(तत्.)* 1. रुचि करने वाला, रुचिकारक। 2. प्रिय लगने वाला, मोहक। **उदा.** आज का कार्यक्रम रुचिकर था। 3. भूख जगाने वाला। 4. स्वाद, रसयुक्त, ग्राह् य। **उदा.** घर का भोजन रुचिकर होता है। **विलो.** अरुचिकर, घृणास्पद।

रुचिपूर्ण *वि.(तत्.)* जिसे करने में रुचि बनी रहे, अच्छा लगने वाला। **पर्या.** रोचक, रुचिकर।

रुचिर *वि.(तत्.)* रुचि के अनुकूल, देखने में सुंदर; मन को अच्छा लगने वाला। **दे.** रुचि।

रुचिरता *स्त्री.(तत्.)* रूचिर, मनोरम या सुंदर होने का भाव। **पर्या.** सुंदरता, मनोरमता, मधुरता।

रुझान *पुं.(अर.*>रूज्हान) 1. मन या हृदय का किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, विचारधारा आदि की ओर आकृष्ट होने का भाव। **पर्या.** आकर्षण, झुकाव। 2. मन की प्रवृत्ति। **पर्या.** रूचि, प्रवृत्ति।

रुढ़ि *स्त्री.(तत्.)* 1. रूढ़ होने का भाव। 2. बहुत दिनों से चली आई हुई प्रथा/रीति या चाल। 3. प्रसिद्धि। 4. समाज में मान्य प्रयोग **जैसे**: शब्द प्रयोग, वेशभूषा आदि। **प्रयो.** प्रत्येक समाज में उपासना की भिन्न-भिन्न रूढियाँ प्रचलित हैं।

रुतबा *पुं.(अर.*<रुत्ब) 1. स्थान, पद, श्रेणी, दर्जा। 2. पदवी, ओहदा। 3. श्रेष्ठता, महत्ता, बड़प्पन। 4. रौब, रईसी।

रुदन *पुं.(तद्*<रोदन) 1. शोक की परिस्थिति में दु:ख व्यक्त करने के लिए रोना। 2. विलाप करना। **उदा.** उसका करुण रुदन सुनकर कठोर हृदय वाला दस्यु भी पिघल गया।

रुद्ध *वि.(तत्.)* रुका या रोका हुआ, रुँधा हुआ।

रुद्र *पुं.(तत्.)* 1. पुराणों में वर्णित गणदेवता जिनकी संख्या ग्यारह मानी गई है। 2. शिव के कई रूपों में से एक रूप जो बहुत ही उग्र भाना जाता है। **टि.** शिव का एक नाम रुद्र भी है। **जैसे**: रुद्र-अभिषेक। *वि.* 1. अत्यंत कष्ट देने वाला, 2. भयानक/भयंकर, उग्र, भीषण। **उदा.** थोड़ी-सी कहासुनी होने पर उसका रुद्र रूप देखकर हम दंग रह गए।

रुधिर *पुं.(तत्.)* सा.अर्थ रक्त, खून, लहू। **प्राणि.** वह तरल संयोजी पदार्थ जो शरीर की प्रत्येक कोशिका तक स्वांगीकृत भोजन तथा ऑक्सीजन पहुँचाता है। Blood

रुधिर कणिका *स्त्री.(तत्.)* रुधिर के तरल भाग यानी प्लाज़्मा में पाई जाने वाली कोशिकाएँ। **जैसे**: रक्ताणु (एरिथ्रोसाइट), श्वेताणु (ल्यूकोसाइट) और बिंबाणु (थ्रॉम्बोसाइट) Blood Corpuscle

रुधिर परिसंचरण *पुं.(तत्.)* शरीर के सारे अंगों, कोशिकाओं तक रुधिर (रक्त/खून) का पहुँचना।

रुधिर प्रवाह *पुं.(तत्.)* **दे.** रुधिर परिसंचरण।

रुधिर प्लाज़्मा *पुं.(तत्+अं.)* रुधिर कणिकाओं को छोडक़र रुधिर का शेष तरल भाग। **दे.** प्लाज़्मा। Blood Plasma

रुधिर वर्ग *पुं.(तत्.)* रक्त या रुधिर के चार प्रमुख प्रकार : ए(A), बी(B), एबी(AB) और ओ (O) जिनका आधार लाल कणिकाओं और प्लाज़्मा में क्रमश: एग्लूटिनोजन और एग्लूटिनिन का होना या न होना है। Blood group

रुधिर वाहिका *स्त्री.(तत्.)* रक्त/खून को शरीर के सभी अंगों, कोशिकाओं तक पहुँचाने वाली नलिका (नसे) **प्राणि.** शिरा, धमनी या कोशिका जो रूधिर/रक्त(खून) को संचरित करती है। blood vessel

रुलाना [रोना का प्रेर.] *सं.क्रि.* (तद् > रोदन) किसी व्यक्ति को रोने के लिए स्थिति में ले आना; ऐसी स्थिति पैदा कर देना ताकि दूसरा व्यक्ति रोने लगे।

रुष्ट *वि.(तत्.)* मनोनुकूल काम न होने पर मध्यस्थ व्यक्ति के प्रति रोष (क्रोध) उत्पन्न हो जाने के कारण उससे मुँह मोड़ लेने या अप्रसन्न हो जाने की प्रकट भावना। **पर्या.** नाराज़ **दे.** रोष।

रुसवा *वि.(फ़ा.)* 1. जिसका अपयश फैला हो, अपयशी, निंदित। 2. कुख्यात।

रुसवाई *स्त्री.* बदनामी, अपयश, लोकनिंदा। **उदा.** उसके कारनामों से उसकी सब तरफ रूसवाई हो रही है।

रुस्तम *पुं.(फ़ा.)* 1. ईरान की पौराणिक गाथाओं का प्रसिद्ध नायक जो पहलवान/योद्धा था। *ला.अर्थ.* 1. बहुत बड़ा बीर। **मुहा.** छिपा रुस्तम=वास्तव में बहुत वीर या गुणी जो अब तक अज्ञात था। **प्रयो.** तुम तो छिपे रुस्तम निकले।

रूँधना *स.क्रि.(तद्*<रोधन) 1. बाहरी सुरक्षा की दृष्टि से किसी स्थान को कंटीले पौधों, तारों आदि से घेरकर बाड़ बनाना। 2. बंद करना, रोकना। **उदा.** क्यारियों को कंटीले पौधों से रूँधा हुआ है।

रूआँसा *वि.(तत्.)* रोने जैसा; जो रो रहा हो-ऐसा दिखाई पड़ने वाला (व्यक्ति) **जैसे**: रूँआसा चेहरा।

रूई *स्त्री.(देश.)* कपास के फूल के प्राकृतिक रेशे जिनसे सूत और बाद में कपड़ा बनता है। cotton

रूईदार *वि.(देश.+फ़ा.)* रूईवाला, जिसमें रूई भरी हो।

रूकना *अ.क्रि. (तद्.>रोधन)* 1. किसी क्रिया, गति, प्रवाह आदि में किसी प्रकार की रुकावट का होना। 2. कुछ समय के लिए कार्य या गति पूरी तरह बंद हो जाना। **जैसे**: उसका काम रुक गया। 3. किसी बाधा के कारण अटकना, अवरूद्ध होना। 4. ठहरना, विश्राम करना। **जैसे**: वे यहाँ थोड़े दिनों के लिए रुकते ही हैं।

रूख़सती *वि.* विदा या रवाना हो जाने वाला।

रूखा *वि.(तद्>रूक्ष)* 1. नीरस, शुष्क, सूखा। **जैसे**: रूखा वृक्ष। 2. जो चिकना या स्निग्ध न हो। **जैसे**: रूखा अन्न। 3. जो व्यवहार में विनम्र, सुशील या संकोची न हो। **जैसे**: उसका रूखा व्यवहार देख सब चकित थे। **मुहा.** रूखा-सूखा= 1. बिना घी/तेल का (भोजन) 2. जैसे-तैसे उपलब्ध सामान्य भोजन। **उदा.** रूखा-सूखा खाई कै ठंडा पानी पीत।

रूखा-सूखा *वि.(देश.)* 1. वह (भोजन) जिसमें चिकनाई न पड़ी हो, मसालों और पौष्टिकता से रहित हो। 2. सादा (भोजन), सामान्य। ला.अर्थ 3. गरीब के घर का (भोजन)। **उदा.** आज अनेक लोग रूखा-सूखा भोजन खाकर जीवन बिताते हैं।

रूग्ण *वि.(तत्.)* वह (व्यक्ति या जीव) जिसे कोई रोग हुआ हो। **पर्या.** रोगयुक्त, रोगी, बीमार। **विलो.** स्वस्थ। **प्रयो.** तुम रूग्ण हो, अपेक्षित दवा ले लो।

रूठना *अ.क्रि. (तद्>रूष्ट)* किसी अनुचित व्यवहार, मनोनुकूल कार्य या इच्छा पूरी न होने से क्रुद्ध एवं अप्रसन्न होकर एक तरफ चुप होकर बैठना उदासीन हो जाना या बात न करना तथा मनाने पर भी जल्दी खुश न होना। **उदा.** मनपसंद चीज़ न मिलने पर प्राय: बच्चे रूठ जाते हैं।

रूढ़ *वि.(तत्.)* 1. (किसी के ऊपर) चढ़ा हुआ, **पर्या.** आरूढ़। 2. **व्या.** रचना (बनावट या व्युत्पत्ति) के अनुसार वर्गीकृत हिंदी के वे शब्द जो लोक-प्रचलन के आधार पर ही किसी विशेष अर्थ को प्रकट करते आ रहे हों यानी जिनका अर्थ प्रकृति प्रत्यय के आधार पर सिद्ध न किया जा सके। **जैसे**: गाड़ी, सेना, पशु, आदमी, शेर आदि। 3. **गणि.** वह संख्या जो 1 के अतिरिक्त किसी अन्य संख्या से पूरी-पूरी विभाजित न होती हो।

रुढ़िग्रस्त *वि.* बिना सोचे-समझे अवांछित रुढ़ियो से जकड़ा हुआ। परंपरागत रुढ़ियो का पालन करने वाला।

रूढ़िबद्ध *वि.(तत्.)* जो रूढ़ि में बँधा हुआ हो। **दे.** रूढ़ि ।

रूढ़िवाद *पुं.(तत्.)* यह मान्यता कि जो रीति-रिवाज, आचरण-पद्धति, विचार या नियमादि पुराने ज़माने से चले आ रहे हैं वे ही ठीक हैं, उनमें नवीन परिवर्तन लाना उचित नहीं होगा। conservatism

रूढ़िवादी *वि.(तत्.)* रूढ़िवाद में विश्वास करने वाला या उसका समर्थक। **दे.** रूढ़िवाद conservative

रूप *पुं.(तत्.)* 1. आँखों से दिखने वाले पदार्थों/व्यक्तियों की आकृति, शक्ल/सूरत। 2. सौंदर्य, खूबसूरती-ऊषा का रूप अवर्णनीय है। 3. वेशभूषा, हावभाव इत्यादि का सम्मिलित स्वरूप। **प्रयो.** वह सीता का रूप धारण करके आईर्। **उदा.** राम को रूप निहारति जानकि कंगन के नग की परछाई।

रूपक *पुं.(तत्.)* 1. किसी रूप की प्रतिकृति, मूर्ति, आकृति। 2. वह काव्य (साहित्य) जिसकी प्रस्तुति अभिनय के रूप में हो, नाटक। दृश्यकाव्य। 3. साहित्य में एक अर्थालंकार जिसमें अति समानता के कारण उपमेय और उपमान में अभेद दिखला दिया जाता है। **जैसे**: मुखचंद्र (मुखरूपी चंद्र) मुख और चंद्र के एक ही होने के वर्णन के कारण रूपक अलंकार है।

रूपरंग *पुं.* शक्ल-वेशभूषा। **उदा.** रूपरंग से तो वह राजकुमारी लगती थी। **टि.** सामान्यत: रंगरूप शब्द प्रयोग किया जात है।

रूपरेखा *स्त्री.(तत्.)* शा.अर्थ किसी रूप (आकृति) की मात्र रेखा से बनाई गई संरचना। **पर्या.** खाका। 1. किसी कार्य का वह संक्षिप्त विवरण जिससे पूरे कार्य का मोटे तौर पर परिचय मिल जाए। outline 2. केवल रेखाओं द्वारा बनाया गया चित्र, जिसमें रंगयोजना की जानी हो। sketch 3. किसी किए जाने वाले कार्य की योजना का (बिंदुओं में) लिखित रूप। plan

रूपवती *वि. स्त्री. (तत्.)* सुंदरी, दर्शनीय, खूबसूरत, प्रियदर्शिनी। **प्रयो.** तुम रूपवान हो और तुम्हारी पत्नी भी रूपवती है।

रूपवान *वि./पुं. (तत्.)* 1. वह (पुरुष) जो देखने मे बहुत सुंदर हो। 2. सुंदर रूप से युक्त, सुंदर, खूबसूरत, दर्शनीय। **विलो.** कुरूप, बदसूरत।

रूपसिंगार *[तत्+तद्.] पुं.* (मुख या शरीर का) सुंदर श्रृंगार। **उदा.** उस विवाहोत्सव में दुल्हन का रूपसिंगार तो अद् भुत था। makeup of the body/face

रूपहला *[तद्*<रौप्य=चाँदी+हला-प्रत्यय] *वि.* 1. चाँदी के रंग जैसा। 2. स्वच्छ सफ़ेद और चमकदार। *तु.* सुनहरा।

रूपातंर/रूपांतरण *पुं.(तत्.)* 1. पूर्व स्वरूप, प्रकृति, गुण अथवा स्थिति में हुआ या होने वाला परिवर्तन। **जैसे**: 1. लकड़ी का जलकर राख हो जाना। 2. 'यह किताब है' (निश्चयार्थक वाक्य) का 'क्या यह किताब है?' (प्रश्नवाचक वाक्य) में परिवर्तन। 2. किसी वस्तु का भिन्न रूप में लाया जाना। **जैसे**: बाँस का भिन्न रूप टोकरी। 3. किसी साहित्यिक रचना, कहानी, कविता, नाटक आदि का भिन्न विधा में रूपातंरण/परिवर्तन। **जैसे**: कहानी का नाट्य रूपांतर। transfarmation

रू-ब-रू/रूबरू *क्रि.वि.(फ़ा.)* आमने-सामने, एक दूसरे के समक्ष। **उदा.** जैसे ही वे दोनों **रूबरू** हुए, दोनों ने एक दूसरे को पहचान लिया।

रूमाल *पुं.(फा.)* हाथ-मुँह पोंछने के लिए कपड़े का चौकोर टुकड़ा।

रूमेन *पुं.(अं.)* जुगाली करने वाले यानी रोमंथी स्तनियों में आमाशय के चार खंडों में से सबसे पहला भाग जहाँ जल्दी-जल्दी खाया गया तथा बिना चबाया गया भोजन कुछ समय के लिए जमा होता है। Rumen

रूलदार *(रूल-अं.+दार-फ़ा.) वि.* सामांतर सीधी रेखाओं से युक्त (कागज़ आदि)।

रूसी *स्त्री.(तद्*>रूक्ष) 1. सिर के चमड़े की परत पर जमा हुआ सूखा मैल जो खुजलाने पर या कंघी करने पर बारीक सफेद छिलकों की तरह छोटे-छोटे कणों में निकलता है। 2. सिर के बालों की एक बीमारी। **प्रयो.** आजकल रूसी के इलाज के लिए बहुत से तेल व शैपू प्रचलित हैं। dandruf 3. 'रूस' देश से संबंधित जैसे रूसी कलाकार। 4. 'रूस' की भाषा। russian

रूह *स्त्री.(अर.)* 1. आत्मा, 2. प्राण। **उदा.** यहाँ किसी की रूह भटकती है ऐसी मान्यता है। 2. फूलों से बनाया जाने वाला 'इत्र' या सारतत्त्व **जैसे.** रूह-ए-अफज़ा (प्राण शक्ति बढ़ाने वाला सारतत्त्व) **मुहा.** रूह काँपना-बहुत अधिक डर जाना। आतंकवादियों के कृत्य देखकर तो मेरी रूह काँप गई।

रेंकना *अ.क्रि. (<सं. रेषण) (अनु.)1.* गधे की आवाज़। ला.अ.-2. बहुत भद्दे ढंग से गाना या बोलना। **जैसे**: क्यों रेंक रहे हो? चुप करके बैठ जाओ।

रेंगना अ.क्रि.(तद्<रिंगण) धीरे-धीरे घिसटते हुए आगे सरकना। **जैसे**: वर्षा के बाद धरती पर केंचुआ रेंग रहा है।

रेखांकित [रेखा+अंकित] *वि.(तत्.)* शा.अर्थ जिस (अंश) पर/के नीचे रेखा डाली गई हो। **जैसे**: रेखांकित शब्दों के अर्थ बताओ।

रेखा *स्त्र.(तत्.)* आकृति जिसमें लंबाई हों किन्तु चौड़ाई (मोटाई) न हो। **पर्या.** लकीर।

रेखीय *वि.(तत्.)* रेखा वाला, रेखा का; रेखा से संबंधित।

रेग *स्त्री.(फ़ा.)* रेत/बालू। **जैसे**: रेगिस्तान।

रेगमाल *पुं.(फ़ा.)* एक मोटा सख्त कागज़ जिसके एक ओर रेत लगी होती है तथा जिसे रगडक़र लोहा, लकड़ी आदि को चिकना किया जाता है।

रेगिस्तान *पुं.(फ़ा.)* 1. वह क्षेत्र जहाँ कम वर्षा, अत्यधिक उच्च या निम्न तापमान तथा विरल वनस्पति होती है। 2. वनस्पति रहित शुष्कप्रदेश जो बाह्य तापमान के आधार पर ठंडा या गर्म हो जाता है। **पर्या.** मरुस्थल। **उदा.** अफ्रीका के बड़े भू-भाग पर फैला 'सहारा रेगिस्तान' विश्व का सबसे बड़ा रेगिस्तान है। **टि.** रेगिस्तान में पृथ्वी का जलस्तर अत्यंत नीचा होने के कारण कृषि की कई फसलों की पैदावार नहीं हो पाती।

रेज़गारी/रेजगी *स्त्री.(फा.*<रेज़) 1. छोटे मूल्य के सिक्के। **प्रयो.** रेज़गारी काफी इकट्ठी हो गई है। 2. अधिक मूल्य के सिक्के या करेंसी नोटों के बदले में दिए जाने वाले छोटे सिक्के। **उदा.** दस रुपए की रेज़गारी देना। **पर्या.** फुटकर, चिल्लर।

रेज़िडेंट *पुं.(अं.)* सा.अर्थ **1.** रहने वाला, निवासी। **इति.** भारतीय रियासतों में ईस्ट इंडिया कंपनी अथवा ब्रिटिश सरकार नियुक्त सर्वोच्च अधिकारी, जो व्यावसायिक कार्यों के अतिरिक्त राजनीति और कूटनीतिक मामलों में भी कंपनी अथवा गवर्नर जनरल का प्रतिनिधित्व करता था। **दे.** रियासत'।

रेजिमेंट *स्त्री.(अं.)* सेना की एक सैनिक इकाई 'एक कर्नल' के अधीन रहते हुए उसके निर्देशन पर कार्य करती है तथा जिसमें दो या दो से अधिक बटालियनें काम करती हैं।

रेटिना *पुं.(अं.)* **दे.** दृष्टिपल।

रेड डाटा पुस्तक वह पुस्तक जिसमें सभी संकटग्रस्त प्रजातियों (जैसे-पौधों, जीव-जंतुओं आदि) का रिकॉर्ड रखा जाता है।

रेणु *स्त्री.(तत्.)* 1. रज, धूल, 2. बालू, रेत, 3. फूल का पराग, 4. बारीक कण, पाउडर, चूर्ण।

रेत *स्त्री.(देश.)* 1. नदी-जल के प्रवाह के कारण पत्थरों के चूर-चूर हो जाने की वजह से बने हुए बारीक कणों का समूह; ऐसा भूभाग। **पर्या.** बालू। 2. रेगिस्तान की पथरीली बारीक मिट्टी जो शुष्कता के कारण या हवा के वेग से बारीक कणों में बदल जाती है और उड़ती हुई स्थान भी बदल देती है।

रेतना *स.क्रि. (देश.)* धातु या लकड़ी को रेती से रगडक़र काटना या ऊपरी सतह को घिसकर चिकना और समतल बनाना। **उदा.** बढ़ई दरवाजे को रेती से रेतकर तैयार कर रहा है। **मुहा.** गला रेतना-मार डालना या मृत्यु-तुल्य कष्ट देना।

रेती *स्त्री.(देश.)* लोहे और रेत से बनी धातु का एक चपटा उपकरण जिसकी सतह खुरदरी होती है तथा जिसे रगड़कर लोहे या लकड़ी की सतह चिकनी की जाती है।

रेफ़री *पुं.(अं.)* 1. खेलों की प्रतियोगिता match में नियुक्त निर्णायक/मध्यस्थ जिसके निर्देश व निर्णय को मानने को दोनों दल बाध्य होते हैं। 2. वह निर्णायक या मध्यस्थ जिसके नियंत्रण या निर्देशन में दो टीमें कोई खेल खेलती हैं। 3. निर्णायक,, पंच। **तुल.** अंपायर। refree

रेयॉन पुं.(अं.) **रसा.** चमकीला और संश्लेषित (यानी कृत्रिम) रेशा जो चिपचिपाहट भरे पदार्थ से तैयार किया जाता है तथा जिसका उपयोग वस्त्र बनाने में किया जाता है।

रेल *स्त्री.(अं.)* 1. लोहे/स्टील की बनी विशेष आकार की वह पटरी जिस पर ट्रेन दौड़ती है या चलती है। 2. रेलगाड़ी=जो लोहे की पटरियों पर भाप/बिजली/डीजल आदि से चलती है।

रेलगाड़ी *स्त्री. (देश.)* लोहे की पटरी पर भाप, डीजल या बिजली आदि की शक्ति से चलने वाला यान। train

रेलना *स.क्रि. (देश.)* 1. पंक्ति में या भीड़ में आगे बढ़ने के लिए पीछे के लोगों द्वारा आगे के लोगों को धक्का दिया जाना। रेला देना, धकेलना, ढकेलना। 2. ठूँस- ठूँस कर भरना।

रेला *पुं.(देश.)* 1. तेजी व बलपूर्वक सामूहिक रूप में आगे बढ़ने का भाव, तेज प्रवाह। **जैसे:** पानी का रेला, मनुष्यों का रेला। 2. समूह भीड़ 3. अधिकता। **उदा.** नेताजी के घर तो मिलने आने वालों का रेला लगा है।

रेलिंग *स्त्री.(अं.)* घर के बरामदे, दालान, छत आदि पर या प्राकृतिक दर्शनीय स्थलों, नावों, पानी के जहाजों आदि पर लोहे के सरियों, जालियों, पाइपों आदि से बनी बाड़।

रेवड़ी *स्त्री.(देश.)* तिल में शक्कर या गुड़ की चाशनी/शीरा मिलाकर बनाई गई टिकियों या छोटी गोलियों के आकार की प्रसिद्ध मिठाई।

रेशम *पुं.(फ़ा.)* रेशम-कीट के कोणों से निकलने तंतु से बना मुलायम, चमकदार रेशा और उससे बना कपड़ा (वस्त्र)।

रेशम उत्पादन *पुं.(फा.+तत्.)* रेशम के कीटों का वाणिज्यिक स्तर पर पालन करने की मानवीय गतिविधि। sericulture **दे.** कृषि।

रेशमी *वि.(फा.)* 1. रेशम से बना (वस्त्र) या बनी (कोई वस्तु)। **जैसे**: रेशमी साड़ी। 2. रेशम जैसा (मुलायम और चमकदार)। **जैसे**: रेशमी जुल्फ़ें।

रेशा *पुं.(फा.)* महीन तंतु जो पौधों, फलों आदि में पाया जाता है। fibre

रैंच *पुं.(अं.*<स्पै.) पशुपालन के लिए बनाया गया पशु फार्म। **टि.** प्राय: बड़े स्तर पर पालतू पशुओं के प्रजनन एवं संवर्धन के लिए बड़े आकार के भूखंड के चारों ओर बाड़ लगाकर वहाँ पशुओं को

पाले जाने की व्यवस्था की जाती है। **पर्या.** पशु फार्म, मेवशी फार्म हैं।

रैक *पुं.(अं.)* लोहे या लकड़ी के फ्रेम से बनी खुली अलमारी जिसमें पुस्तकें, फाइलें, कपड़े, बर्तन या अन्य सामग्री रखने/लटकाने के लिए कई खाने/कालम या खूँटिया आदि होती हैं।

रैन बसेरा *पुं.(तद्.)* बाहर से आए हुए मज़दूरों आदि के लिए (जिनके पास रहने के लिए अपना स्थान नहीं है) रात्रि व्यतीत करने के लिए सरकार द्वारा बनाए गए अस्थाई आश्रय-स्थान।

रोंगटा *पुं.(तद्>*रोम) शरीर पर निकलने वाला बहुत पतला और छोटा बाल, रोम। **पर्या.** रोआँ, रोयाँ। **टि.** प्राय: बहुवचन में प्रयुक्त। **बहु.** रोंगटे। **मुहा.** रोंगटे खड़े होना=किसी भयावह दृश्य को देखकर अत्यंत भयभीत होना। **जैसे**: दो वाहनों की दुर्घटना देखकर सबके रोंगटे खड़े हो गए।

रोआँ/रोयाँ *पुं.* मनुष्यों और पशु-पक्षियों के चर्म (चमड़ा) पर उगे हुए छोटे-छोटे और महीन बाल, रोम, लोम, रोआँ या रोयाँ। **तु.** बाल।

रोक *स्त्री.(तद्.>*रोध) किसी अनुचित या अनपेक्षित व्यवहार या आचरण को आधिकारिक रूप से रोकने की क्रिया। बंद करना, निषेध, रुकावट। **जैसे**: 1. तुम्हें अपनी फ़िज़ूलखर्ची पर रोक लगानी होगी। 2. यहाँ गंगातट पर वस्त्र धोने पर रोक है।

रोकड़ *स्त्री.(देश.)* 1. नकद धन/रकम। cash 2. जमाधन, पूँजी। capital

रोकड़िया *पुं.(देश.)* 1. वह व्यक्ति जो (व्यापारी की) नकद रोकड़ तथा प्रतिदिन के आय-व्यय को लिखता रहता है तथा उसका ठीक-ठीक हिसाब-किताब रखता है। 2. खजाँची। cashier

रोकथाम *स्त्री.(देश.)* किसी अनुचित कार्य, प्रयत्न, प्रवृत्ति या प्रक्रिया आदि को नियंत्रित करने के लिए किया जाने वाला कार्य। **जैसे**: महिलाओं के प्रति अपराधों की रोकथाम।

रोकना *स.क्रि.(तद्>*रोधन) 1. किसी को आगे बढ़ने न देना। 2. किसी की गति, क्रिया या संभावित कार्य को न होने देना, रुकावट डालना। **जैसे**: बात करने से किसी को रोकना। 3. किसी प्राकृतिक या कृत्रिम परिस्थिति आदि को न होने देना। **जैसे**: विभिन्न उपायों से पोलियो को रोकना।

रॉकेट *पुं.(अं.)* द्रुतगामी प्रक्षेप्य पिंड, यान, अस्त्र आदि जो द्रुत दहनी ईंधन द्वारा उत्पन्न गैस से गतिमान (नोदित) होता है।

रोग *पुं.(तत्.)* (प्राणि.) शरीर की वह अस्वस्थ अवस्था जब किसी अंग विशेष या सभी अंगों की क्रियाओं का संतुलन बिगड़ जाता है। **पर्या.** बीमारी, व्याधि, मर्ज़।

रोगकारक/रोगजनक *वि.(तत्.)* बीमारी पैदा करने वाला या बीमारी बढ़ाने में सहायक (सूक्ष्म जीव); (जीव) जो रोग उत्पन्न करने में सक्षम हों **जैसे:** जीवाणु, विषाणु, रोगाणु।

रोग़न *पुं.(फ़ा.)* 1. तेल, घी, चर्बी, ग्रीस आदि चिकने, गाढ़े और चिपचिपे द्रव पदार्थ। 2. वह रासायनिक चिकना लेप जो किसी सतह को चमकदार बनाने के लिए उस पर लगाया जाता है। varnish **उदा.** बादाम रोगन बालों के स्वास्थ्य के लिए उपयुक्त है।

रोगवाहक *वि./पुं.* शा.अर्थ रोग का वहन करने वाला। व्यष्टि जिसमें रोगाणु विशेष आश्रय ग्रहण करे तथा रोग को रोगी से स्वस्थ व्यक्ति तक पहुँचाए। **जैसे:** मलेरिया में मच्छर (मादा ऐनोफिलीज) पादपों के विषाणु रोगों में एफिड। Carrier vector

रोगाणु *पुं.(तत्.)* शा.अर्थ रोग के अणु। दूषित अणु जो भोजन, जल, वायु आदि के माध्यम से शरीर में पहुँचकर रोग उत्पन्न करते हैं। **प्राणि.** अतिसूक्ष्मजीव जैसे कवक, जीवाणु, विषाणु, प्रोटोजोआ आदि जो सामान्यतया रोगकारी होते हैं। microb

रोचक *वि. (तत्.)* जो रुचि पैदा करे; जो रुचि के अनुकूल हो; अच्छा लगने वाला।

रोचकता *स्त्री.(तत्.)* रोचक होने का भाव या गुण। **दे.** रोचक'।

रोज़ *पुं.(फ़ा.)* दिन। **उदा.** एक रोज़ वह आएगा ज़रूर। *क्रि.वि.* प्रतिदिन, नित्य। **उदा.** वह **रोज़** सुबह चार बजे उठ जाता है।

रोज़गार *पुं.(फ़ा.)* जीविका के लिए प्रतिदिन किया जाने वाला काम। **पर्या.** व्यवसाय, धंधा, कारोबार। **उदा.** लकड़ी की रोज़गार।

रोज़गार कार्यालय *पुं. (फ़ा.+तत्.)* वह सरकारी दफ़्तर जो बेराज़गार लोगों से आवेदन प्राप्त कर

उनके लिए उपयुक्त रोज़गार सुलभ करवाने में सहायता करता है। employment office/exchange

रोज़मर्रा *क्रि.वि.(फ़ा+अर.)* नित्य, प्रतिदिन, रोज़ाना। **जैसे**: रोज़मर्रा का काम। routine

रोज़ा *पुं.(फ़ा.)* मुसलमानों द्वारा रमज़ान के महीने में किया जाने वाला उपवास।

रोज़ी *स्त्री.(फ़ा.)* शा.अर्थ जीविका। सा.अर्थ 1. दैनिक आजीविका का साधन। 2. एक दिन की मज़दूरी, वेतन आदि। **प्रयो.** ईश्वर की कृपा से जैसे तैसे रोज़ी चल रही है।

रोजी-रोटी *स्त्री.(फा.+तद्.)* जीविका का साधन।

रोजेदार *वि.(फ़ा.)* रमज़ान के महीने में रोज़ा (उपवास) रखने वाला तथा नमाज़ पढ़ने वाला।

रोधिका *स्त्री.(तत्.)* शा.अर्थ रोकने वाली। **कृ./भू.** खेत इत्यादि से पानी और मृदा को बहने से रोकने के लिए बनाई गई मिट्टी आदि की छोटी मेंड़।

रोना *अ.क्रि.* (तद्>रोदन) बहुत दुखी होकर, आँखों से आँसू बहाना, रुदन करना। **जैसे**: पुत्री के वियोग में माता-पिता रो रहे थे। *पुं.* 1. विलाप, रूदन। 2. कष्ट, दु:ख। **जैसे**: मुझे तो तुम्हारी कहानी पर रोना आता है। *वि.* रोने वाला, रोने जैसा। **मुहा.** 1. रोना-धोना=बहुत विलाप करना। 2. अपना रोना रोना=अपने कष्टों का वर्णन करना। 3. रोना-पीटना=चिल्लाकर रोना, विलाप करना।

रोपण कृषि *स्त्री.(तत्.)* वाणिज्यिक कृषि का एक प्रकार, जिसमें किसी एकल फसल को उगाया जाता है। **जैसे**: भारत में चाय-बागान, पूर्व एशिया में रबड़ की खेती। **टि.** इस प्रकार के उपक्रम में कृषि-उत्पाद के प्रसंस्करण एवं बाज़ारीकरण आदि की निकट व्यवस्था अपेक्षित होती है, अत: यह एक खर्चीला उपक्रम भी है।

रोपना *स.क्रि. (सं.>रोपण)* 1. पौधों आदि को एक स्थान से निकालकर दूसरी जगह लगाना। (जैसे- गमले इत्यादि में) 2. बीज डालना। 3. किसी वस्तु को स्थापित करना। 'नाथ कहऊँ पद रोपि'। (तुलसीदास) **प्रयो** पर्यावरण की सुरक्षा के लिए वृक्षों का रोपना आवश्यक है।

रोपित *वि.(तत्.)* रोपा गया, लगाया हुआ, स्थापित किया हुआ। **दे.** रोपण।

रोब *पुं.(अ.)* अपने शारीरिक/बौद् धिक बल अथवा पद आदि से दूसरों को भयभीत या प्रभावित करने की शक्ति। **पर्या.** धाक, दबदबा। **मुहा.** रोब दिखाना, रोब जमाना। **उदा.** अपना रोब किसी और को दिखाना।

रोबदार *वि.(अर.)* 1. जिसका दूसरों पर दबदबा हो; प्रतापी, धाक रखने वाला। 2. प्रभावशाली। **जैसे**: उस व्यक्ति का चेहरा तो बड़ा ही रोबदार था। impressive **प्रयो.** रोबदार व्यक्ति के आने से छुटभैये शांत हो गए।

रोबीला (रोब+ईला) *वि.(अर.)* जिसमें रोब दिखलाई पड़ता हो, रोब से युक्त। **पर्या.** रोबदार। **दे.** रोब।

रोबोट *पुं.(अं.) वैज्ञानिक* तरीकों से बनाया हुआ एक मानवाकृति यंत्र जो प्राय: मानव की तरह व्यवहार करता है। **पर्या.** यंत्रमानव।

रोमंथी *वि./पुं. (तत्.)* जुगाली करने वाले स्तनियों का सामान्य नाम। **टि.** हड्डियों के आधार पर बने सींग होना और आमाशय में चार कक्ष होना तथा ऊपरी कृंतकों (दांतों) और ऊपर-नीचे रदनकों (दांत) का न होना इनके प्रमुख लक्षण हैं। **उदा.** गाय, भैंस, बकरी, हिरन, ऊँट, जिराफ़ आदि। Ruminants

रोम *पुं.(तत्.)* शरीर की त्वचा पर उगने वाले कोमल बाल।, रोआँ, लोम। **दे.** 'रोंगटा'।

रोमन *पुं./स्त्री. (अं.) वि.* 1. रोम से संबंधित। 2. रोम में निवास करने वाला। *स्त्री.* वह लिपि जिसमें अंग्रेजी, फ्रांसीसी, जर्मन आदि भाषाएँ लिखी जाती हैं।

रोमांच *पुं.(तत्.)* आनंद, भय आदि के कारण शरीर के रोएँ खड़े होना। thrill

रोमांचक *वि.(तत्.)* रोमांच उत्पन्न करने वाला/वाली। **उदा.** रोमांचक उपन्यास, रोमांचक कथा। *दे.* रोमांच। thrilling

रोयाँ *पुं.(तद्>*रोम) **दे.** रोंगटे, रोआँ।

रोली *स्त्री.(<*सं. रोचनी) 1. धार्मिक अनुष्ठानों या उपासना में तिलक के रूप में लगाया जाने वाला प्रसिद् ध लालरंग का चूर्ण। 2. हल्दी-चूने से बना लाल रंग का पाउडर या चूर्ण।

रोशन *वि.(फ़ा.)* 1. प्रकाशयुक्त, दीप्त, चमकीला; उज्ज्वल। 2. जलता हुआ (दीपक)। **उदा.** विनय ने विद्वान बनकर अपने पिता का नाम रोशन कर दिया।

रोशनदान *पुं.(फ़ा.)* शा.अर्थ रोशनी देने वाला। *पुं.* कमरे की दीवार के ऊपरी भाग में छोड़ा गया खिडकीनुमा खाली स्थान जिसमें से प्रकाश और हवा आ सके। **पर्या.** गवाक्ष venthole

रोशनी *स्त्री.(फ़ा.)* 1. किसी ग्रह, नक्षत्र, दीपक आदि से आने वाला प्रकाश, उजाला। **जैसे**: सूर्य की रोशनी, दीपक की रोशनी। 3. ला.अर्थ ज्ञान का प्रकाश। **मुहा.** (किसी विषय पर) रोशनी डालना-सरल भाषा में विषय का स्पष्टीकरण करना।

रोष *पुं.(तत्.)* 1. मन में दबा रहने वाला क्रोध। 2. चिढ़, कुढ़न, बैर; विरोध। **तु.** क्रोध। **प्रयो.** परशुराम ने रोष में लक्ष्मण की ओर देखा।

रोहित *वि.(तत्.)* लाल रंग का। *पुं.* 1. लाल रंग, लोहित। 2. रक्त, खून, 3. कुंकुम, केसर।

रौंदना *स.क्रि.(<मर्दन)* पैरों से कुचलना या दबाना। **उदा.** कुम्हार पहले मिट्टी को अच्छी तरह से रौंदकर फिर घड़े बनाने के काम में लेता है।

रौद्र *वि.(तत्.)* 1. रुद्र संबंधी, रुद्र का। **जैसे**: रौद्र रूप। किसी अन्याय, अपमान या दुर्व्यवहार से उत्पन्न भयंकर क्रोध से युक्त। **प्रयो.** पड़ोसी के दुर्व्यवहार से खिन्न व्यक्ति का रौद्र रूप देखते बनता था। *पुं.* साहित्य में एक रस जिसका स्थायी भाव 'क्रोध' है।

रौनक *स्त्री.(अर.)* 1. चमक, दमक। **जैसे**: मुख की रौनक। 2. शोभा। **प्रयो.** दीवाली पर बाज़ार की रौनक देखते ही बनती है।

ल

लंगर *पुं.(तद्<लांगल)* 1. लोहे का वह बहुत बड़ा वजनदार काँटा जिसे नाव आदि से बाँधकर नदी या समुद्र तट पर गिरा देने से नाव या समुद्री जहाज, स्टीमर आदि एक ही स्थान पर ठहरे रहते हैं। *पुं.(फा.)* 2. किसी स्थान या धामिक स्थान से वितरित किया जाने वाला वह भोजन जो बिना किसी भेदभाव के सभी भक्तों एवं आगंतुकों को प्रदेय हो। 3. बिना किसी शुल्क के पंगत में बैठाकर खिलाने की क्रिया। **जैसे**: इस गुरूद्वारे में तो प्रतिदिन सभी के लिए लंगर चलता रहता है। 4. उक्त कार्य के लिए प्रयुक्त भोजनालय।

लंगूर *पुं.(तद्.<लाड.मूमिलन)* बंदर प्रजाति का एक बड़ा प्राणी जिसका मुख काले रंग का तथा पूँछ लंबी होती है। **पर्या.** कपि, वानर।

लंगोट *पुं.(तद्<लिंगपट)* कमर पर बाँधा जाने वाला पुरुषों का वह पहनावा या वस्त्र जिससे गुप्तांग ढके रहते हैं। इसे प्राय: ब्रह्मचारी, साधु संयासी, पहलवान आदि पहनते हैं।

लंगोटी *स्त्री.(तद्)* छोटा लंगोट। **मुहा.** लंगोटिया यार-बचपन का घनिष्ठ साथी।

लंघवत *अव्य.(तत्.)* लंब जैसा। **दे.** 'लंब'।

लंपट *वि.(तत्.)* शा.अ. स्वच्छंद आचरण करने वाला। **सा.अ.**-स्वेच्छाचारी, व्याभिचारी, कामुक, बदचलन। **प्रयो.** लंपट व्यक्ति समाज को प्रदूषित करते हैं।

लंब *पुं.(तत्.)* किसी सरल रेखा के किसी बिंदु से 90^{o} पर खींची गई रेखा। *वि.(तत्)* लंबा।

लंबा *वि.(तद्<लंब)* 1. लंबाई से युक्त। 2. एक ही दिशा में दूर तक फैला हुआ। 3. जब दो अलग-अलग दिशाओ में (जैसे-पूरब-पश्चिम और उत्तर-दक्षिण में) कोई वस्तु या स्थान फैला हो तो कम लंबाई वाले माप की तुलना में अधिक लंबाई वाला, अधिक लंबा।

लंबाई *स्त्री.(तद्<लंब)* दो बिंदुओं के बीच की रेखीय दूरी। (किसी भी दिशा में) *तुल.* ऊँचाई=दो बिंदुओं के बीच की ऊर्ध्वाकार दूरी। विशेष-लंबाई में सातत्य होता है पर ऊँचाई में सातत्य आवश्यक नहीं है। चौड़ाई-चौकोर वस्तु का कम लंबाई वाला भाग। **टि.** वस्त्र में ताना लंबाई में और बाना चौड़ाई में होता है।

लँगड़ा *वि.(फ़ा.<लंग)* 1. जिसका (मनुष्य, पशु, पक्षी आदि) पैर टूटा हुआ हो या जो ठीक से चल न पाता हो। 2. पोलियो आदि रोग या किसी दोष के कारण लचक के साथ चलने वाला (कोई व्यक्ति आदि) पैरों से अपाहिज। *पुं. (देश.)* उत्तम प्रकार के आम की एक किस्म।

लकड़दादा *पुं. (देश.)* 1. दादा के दादा। पिता के पिता-दादा/पितामह। दादा के पिता-परदादा/ पड़दादा। परदादा के पिता-लकड़दादा/ प्रपितामह। 2. कोई पूर्वज जो प्राय: 100 वर्ष की अवधि से पूर्व के हों।

लकड़बग्घा *पुं.(देश.)* भेड़िए की जाति का एक खूँखार जंगली जानवर जो सामान्य भेड़िए से बड़ा होता है तथा जिसके जबड़े बहुत मज़बूत होते हैं। **जैसे:** लकड़बग्घा गांव से एक सोते हुए बच्चे को उठाकर ले गया। **टि.** इसके आगे के पैर सामान्य भेड़िए से बड़े होते हैं। Hyena

लकड़हारा *पुं.(देश.)* लकड़ियाँ काटकर जीवन-निर्वाह करने वाला व्यक्ति।

लकड़ी *स्त्री.(देश.)* 1. किसी वृक्ष के तने या शाखाओं का ठोस और कठोर भाग जो जलाने या फर्नीचर, खिलौने, उपकरण इत्यादि बनाने के काम आता है। 2. लाठी, छड़ी। 3. ईंधन 4. लंगड़े या अपंग व्यक्ति के चलने का सहारा, बैसाखी। **मुहा.** अंधे की लकड़ी-असर्थ का सहारा। लकड़ी हो जाना-दुर्बल जाना।

लकवा *पुं.(अर.)* एक स्नायुजन्य रोग जिसमें शरीर या उसका कोई अंग संवेदनाहीन हो जाता है। **पर्या.** पक्षाघात। paralysis **मुहा.** लकवा मारना-अचानक निष्क्रिय हो जाना।

लकीर *स्त्री.(तद्<*लेखा) सा.अर्थ **1.** रेखा। 2. रेखा जैसा चिह्न। **उदा.** सांप निकल जाने पर लकीर पीटना। ला.अर्थ प्रथा, रीति, परंपरा। **मुहा.** लकीर कर फकीर-पंरपरावादी, बिना सोचे-समझे रूढि पर चलने वाला।

लक्ष *वि.(तत्.)* एक लाख की संख्या (1,00,000), सौ हजार।

लक्षण *पुं.(तत्.)* 1. निशान, 2. कोई ऐसी विशेषता जो किसी की स्पष्ट पहचान बताए। 3. आचार, विचार, चरित्र आदि के विशेष गुण। **जैसे**: इसके लक्षण तो महापुरुषों जैसे हैं। 4. शारीरिक रोगों के सूचक चिह्न। 5. परिभाषा।

लक्षणा *स्त्री.(तत्.)* **साहि.** शब्द का अर्थ सामान्य रूप से न निकल पाने की स्थिति में, लक्षणों आदि के आधार पर अर्थ का बोध कराने वाली (शब्द की) शक्ति। **जैसे:** मेरा घर मुख्य मार्ग पर है। (यहाँ मार्ग पर घर की संभावना नहीं हो सकती अत: उससे जुड़ा अर्थ प्रकट होता है कि घर मुख्य मार्ग के किनारे है।) **टि**. लक्षणा द्वारा प्रकट अर्थ लक्ष्यार्थ कहलाता है।

लक्षित *वि.(तत्.)* 1. जिसे लक्ष्य बनाया गया हो या जिसे ध्यान में रखा गया हो। निर्दिष्ट, चिह्नित। **जैसे:** अधिकारी ने उसको लक्षित करके यह बात कही। 2. दृष्ट, अनुभूत। 3. लक्षणा शक्ति से ज्ञात होने वाला (अर्थ)।

लक्ष्मण रेखा *स्त्री.(तत्.)* शा.अर्थ वनवास के समय लक्ष्मण के द्वारा कुटी के बाहर खींची गई वह रेखा जिसे लांघकर कुटी के अंदर जाने वाला अन्य व्यक्ति भस्म हो जाता। ला.अर्थ ऐसी सीमा/मर्यादा, आज्ञा आदि जिसका पालन अनिवार्य है, तथा उसका उल्लंघन अक्षम्य है।

लक्ष्मी *स्त्री.(तत्.)* 1. धन, वैभव, संपत्ति की देवी। 2. धन-संपत्ति, दौलत। ला.अर्थ गृहस्वामिनी, पत्नी।

लक्ष्य *पुं.(तत्.)* 1. निशाना, जिस पर तीर या गोली चलाई जाती है। 2. उद्देश्य, जिसके लिए कार्य किया जाता है। अंतिम मंजिल goal *वि.(तत्.)* जिस पर कोई आक्षेप किया जाता है। target

लक्ष्यार्थ *पुं.(तत्)* किसी शब्द या वाक्य का उसके सामान्य अर्थ से भिन्न वह अर्थ जो उसकी लक्षणा शक्ति से प्राप्त होता है। **जैसे**: मेरा घर मुख्य मार्ग पर है। यहाँ लक्ष्यार्थ है-मुख्य मार्ग के किनारे घर है।

लगन *स्त्री.(तद्<*लग्न) 1. मन का किसी व्यक्ति या कार्य की ओर पूरी तरह लगाव। **जैसे**: ऐसी लागी लगन मीरा हो गई मग्न। 2. धुन। **पुं.** शुभ मुहूर्त या समय। **जैसे**: इस वर्ष जून में कोई लगन नहीं है।

लगभग *क्रि.वि.(देश.)* करीब-करीब, अनुमानत:।

लगातार *क्रि.वि.(तद्.)* एक के बाद एक, बिना क्रम टूटे। **पर्या.** निरंतर, बराबर। **उदा.** लगातार काम करना।

लगान *पुं. (देश.)* सरकार को किसानों से मिलने वाला भूमिकर, खेती-बारी की ज़मीन पर लगने वाला कर। शा.अ. भू-राजस्व। **जैसे**: किसान प्रतिवर्ष खेती की जमीन का निर्धारित लगान सरकार को अदा करते हैं। land revenue

लगाना *स.क्रि. (तद्.)* (लगना का प्रेर. रूप) 1. एक वस्तु के तल/पार्श्व पर दूसरी वस्तु का तल रखना, मिलाना या सटाना। **जैसे**: दीवार पर चित्र लगाना। 2. किसी तल पर तरल पदार्थ को लेपना, पोतना या मलना। **जैसे**: माथे पर चंदन लगाना, केशों में तेल लगाना आदि। 3. किसी के साथ रखना, काम करना, शामिल होना। **प्रयो.** उसे मित्र के साथ काम पर लगा दिया है। 4. पेड़-पौधों का रोपना। **प्रयो.** हमने वाटिका में पेड़-पौधे लगा दिए। 5. टाँकना, चिपकाना। **जैसे**: बटन लगाना, टिकट लगाना। 6. व्यवस्थानुसार सजाना। **जैसे**: भोजन की थाली लगाना। **टि.** इसके अतिरिक्त भी 'लगाना' क्रिया के बहुत सारे प्रयोग प्रचलित हैं। **जैसे**: आग लगाना, जुर्माना लगाना, हाजिरी लगाना, चांटा लगाना, कुंडी लगाना, बल्ब लगाना आदि।

लगाम *स्त्री.(फ़ा.)* घोड़े के मुँह में लगाई जाने वाली वह अर्धगोलाकार वस्तु जिसके दोनों ओर रस्से आदि बंधे होते हैं, जो घोड़े पर नियंत्रण रखते हैं। **पर्या.** रास, बाग। **मुहा.** 1. जबान पर लगाम देना-नियंत्रित बात बोलना या बुलवाना। 2. जबान पर लगान न होना-वाणी पर नियंत्रण न होना।

लगाव *पुं.(तद्.)* 1. लगे होने का भाव, संलग्नता। 2. प्यार भरा संबंध, प्रेम, 3. आकर्षण। **उदा.** पुत्र से लगाव, खेल से लगाव, पढ़ाई से लगाव।

लग्न *वि.(तत्.)* 1. लगा हुआ, चिपका हुआ। 2. आसक्त। *पुं.* **ज्यो.** 1. किसी समय विशेष पर पूर्वक्षितिज पर स्थित राशि (नक्षत्र समूह) जैसे- राम का जन्म वृष लग्न में हुआ था। अर्थात उस समय पूर्व क्षितिज पर वृष राशि थी। 3. शुभ मुहूर्त।

लघु *वि.(तत्.)* 1. जो आकार आदि में सामान्य से छोटा या कम हो। **उदा.** 'धरि लघुरूप देखि तै जाई'। 2. हल्का, 3. थोड़ा कम, 4. अल्प, 4. छोटा। **विलो.** दीर्घ, वृहत्। 3. एक मात्रा का वर्ण। (छंद में), **विलो.** गुरू।

लघुचित्र *पुं.(तत्.)* 1. छोटी तस्वीर। 2. थोड़े समय का चलचित्र। cinema

लघुतम *वि.(तत्.)* सबसे छोटा। 22, 11, 17 में से लघुतम संख्या 11 है।

लघुतम/लघुत्तम *वि.(तत्.)* सबसे छोटा। जैसे- लघुतम/लघुत्तम समीपवर्त्य-दो या अधिक संख्याओं को विभाजित करने वाली सबसे छोटी संख्या।

लघुता *स्त्री. (तत्)* शा.अ छोटे होने का भाव। सा.अ हल्कापन, तुच्छता। **पर्या.** लघुत्व। *दे.* लघु।

लचक *स्त्री.(तद्.)* लचकने का भाव। **दे.** लचकना।

लचकदार *वि.(तद्.)* लचक से युक्त। **दे.** लचक।

लचकना *अ.कि.(तद्.*<व्यंचन) 1. भार या दबाव के कारण हवा में ही बीच में से झुकना। दबाव/भार हटते ही पूर्वस्थिति में आ जाना 2. चलते समय बल खाना, झटके से चलना।

लचर *वि. (देश.)* 1. जो टिक न सके, शिथिल, निराधार। 2. क्षीण, दुर्बल, कमज़ोर। **जैसे**: लचर तर्क।

लचीला *वि. (देश.)* 1. जो आसानी या सहजता से झुक या मुड़ सकता हो। लचकदार, नमनीय। flexible

लचीलापन *पु.(देश.)* 1. लचीला होने की दशा या भाव। 2. पदार्थों का मुड़ने, झुकने या लचकने का गुण। **पर्या.** लचक, लचकन।

लच्छा *पुं.(देश.)* 1. गुथे हुए सूत या तारों का गुच्छा। **जैसे**: रेशमी धागों या ऊनी धागों का लच्छा। 2. किसी खाद्य वस्तु के कटे हुए सूत की तरह पतले और लंबे टुकड़े। **जैसे**: आलू के लच्छे। 3. विशेष रूप से चांदी के तारों से बना वह विशेष आभूषण जिसे प्राय: नारीयाँ अपने पैरों पर पहनती हैं। ला.अ. लच्छेदार भाषण-धाराप्रवाह चिकनी-चुपड़ी बातों से युक्त दिया जाने वाला भाषण। **जैसे**: उसने भ्रष्टाचार विषय पर अपना लच्छेदार भाषण दिया।

लच्छेदार वि.(देश.) 1. (ऐसा खाद्य पदार्थ) जिसमें लच्छे बने हों/लच्छों से युक्त। **जैसे**: लच्छादार रबड़ी। 2. जो एक से निकलकर दूसरी और इसी प्रकार निकलती रहने के कारण देर तक चलने वाली और रोचक हो। (ऐसी बातें आदि) चिकनी-चुपड़ी और मजेदार (बातें) **जैसे**: उनका भाषण लच्छेदार ही होता है।

लजाना *अ.क्रि. (नाम धातु) (तद)* किसी अनुचित कार्य करने के बाद लज्जित या शर्मिंदा होना। या उस दोषी व्यक्ति को शर्मिंदा करना। **प्रयो.** चोरी

का राज खुलने पर वह बहुत लजा रहा था। **टि.** लजाना का प्रेर. रूप 'लजाना' ही होता है। **जैसे**: उसकी कोमलता फूलों को भी लजा रही है।

लज़ीज़ *वि.(अर.)* बहुत अच्छे स्वाद वाला, अत्यधिक स्वादिष्ट, मज़ेदार। **उदा.** लज़ीज़ व्यंजन।

लज्जा *स्त्री.(तत्.)* 1. शील-संकोच का भाव, लजा, शर्म। 2. पश्चाताप का भाव। ला.अर्थ मान-मर्यादा, इज्ज़त। **उदा.** हे प्रभु, मेरी लज्जा (लाज) बचा लो। (निर्लज्ज शब्द से अर्थ अधिक स्पष्ट हो जाता है।)

लज्जित *वि.(तत्.)* 1. जो किसी के सामने अपनी कमी, अवगुण के कारण या हीन भावना के कारण लज्जा का अनुभव कर रहा हो। लजाया हुआ, शर्मिंदा। **जैसे**: वह परीक्षा में नकल करते हुए पकड़े जाने पर बहुत लज्जित हुआ।

लट/लटी *स्त्री.(तद्<लटवा)* 1. उलझे हुए बाल। 2. घुँघराले बाल जो चेहरे पर आ जाते हैं। ला.अर्थ-उलझे बालों **जैसे:** अस्त-व्यस्त। **उदा.** 'धोती फटी'सी, लटी दुपटी'।

लटकना *अ.क्रि. (देश.)* 1. ऊपर के आधार पर टिके रहने पर भी नीचे की ओर कुछ दूर तक अधर में रहना। **प्रयो**. आम के वृक्ष से आमों का लटकना। 2. झूलती हुई हालत रहना/झूलना। 3. काम का कुछ समय तक अधूरा पड़ा रहना। **प्रयो.** बिना रिश्वत दिये काम लटक जाता है।

लटका *पुं.(देश.)* 1. स्वरों के उतार-चढ़ाव के साथ बातचीत में दिखाए जाने वाले हावभाव। 2. बनावटी कोमल चेष्टा और बातचीत। बातचीत का ढंग या अंदाज। **जैसे**: तुम्हारे लटकों से वह प्रभावित होने वाले नहीं।

लटजीरा *पुं. (देश.)* 1. एक पौधा जिसमें जीरे की आकृति के फल लगते हैं। **पर्या.** चिचड़ा। 2. उक्त पौधे के फल।

लटी *स्त्री.(देशज)* लट जैसी, उलझी हुई सी। **उदा.** धोती फटी सी, लटी दुपटी।

लट्ठ *पुं. (देश.)* 1. बांस की बड़ी लाठी, डंडा। ला.अर्थ मूर्ख और गंवार **जैसे**: लट्ठ गंवार। **उदा.** उस गाँव के सभी लोग लट्ठ लेकर चलते हैं। **मुहा.** 1. लट्ठ चलना= लाठियों से लड़ाई होना। 2. लट्ठ सा मार देना = उजड्ड भाषा बोलना। कठोर उत्तर देना।

लट्टू *पुं.(तद्<लट्व)* 1. एक प्रकार का छोटा गोल खिलौना जिसमें रस्सी लपेटकर झटके से जमीन पर फेंकने पर वह कील के बल से तेजी से गोल-गोल घूमने या नाचने लगता है। 2. बिजली का बल्ब। **मुहा.** लट्टू होना= किसी पर मोहित या मुग्ध होना। **जैसे**: वह तो तुम्हारा भाषण सुनकर तुम पर लट्टू हो गया है।

लट्ठमार *वि.(देश.)* शा.अर्थ लाठी मारने के समान। सा.अर्थ सख्त, कठोर, रूक्ष, रूखा। blunt उसने तो अधिकारी को लट्ठमार जवाब दिया।

लडक़पन *पुं.(देश.)* 1. बाल्यावस्था, **जैसे:** लडक़पन में सभी बच्चे जिद करते हैं। 2. बचपना, **प्रयो.** इस आयु में भी तुम्हारा लडक़पन नहीं गया। 3. बच्चों जैसी हरकत, बुद्धि की अपरिपक्वता के कारण नासमझी। **जैसे**: क्या तुम लडक़पन वाली बातें कर रहे हो।

लड़खड़ाना *अ.क्रि. (अनु.)* डमगमाना, अस्थिर, गति से इस प्रकार चलना जैसे गिरने वाले हो। **मुहा.** जीभ लड़खड़ाना-धारा प्रवाह न बोल पाना।

लड़खड़ाहट *स्त्री.(अनु.)* लड़खड़ाने का भाव।

लड़ना *अ.क्रि. (तत्)* 1. ऊँची आवाज में एक दूसरे के विरूद् ध अशब्द बोलना; 2. किसी विषय पर विवाद करना। 3. परस्पर आघात करना, युद् ध करना। **जैसे**: वे दोनों परस्पर गाली देते हुए मारपीट करके लड़ रहे थे। 4. टकराना या भिड़ना। **जैसे**: आसाम में दो रेलगाड़ियाँ आपस में लड़ गयीं। **टि.** संस्कृत में लड़ का अर्थ खेलना है। हिंदी तक आते-आते अर्थ में परिवर्तन हो गया है।

लड़ाई *स्त्री.(देश.)* वह क्रिया जिसमें दो दल या पक्ष एक-दूसरे पर गलत शब्दों का प्रयोग करते हुए वाणी से हाथ से, या अस्त्र-शस्त्र से वार करते हैं। 1. संग्राम-युदध, 2. मारपीट, झगड़ा-तकरार, 3. वाद-विवाद, बहस। **जैसे**: आज बच्चों की लड़ाई में कई बच्चे घायल हो गये।

लड़ाकू *वि.(देश.)* शा.अ. लड़ने वाला। सा.अ. 1. योद्धा, सैनिक। 2. झगड़ालू, 3. युद् ध में काम आने वाला, जंगी **जैसे**: लड़ाकू विमान। 4. लड़ने

की प्रवृत्ति वाला। जैसे-वह औरत बहुत ही लड़ाकू है, सबसे लड़ती रहती है।

लड़ाना *स.क्रि. (देश.)* (लड़ना का प्रेर. रूप) 1. आपस में एक दूसरे का युद्‌ध कराना। 2. एक-दूसरे में विवाद या तकरार कराना। **जैसे**: तुम हमारे दोनों पड़ोसियों को मत लड़ाओ। 3. लाड़-प्यार करना। **जैसे:** लाड़ लड़ाना। 4. हल निकालने के लिए प्रयोग करना। **जैसे**: बुद्‌धि लड़ाना।

लड़ी *स्त्री.(हिं.लड़* का स्त्री. अल्पा.) 1. एक प्रकार की वस्तुओं के एक पंक्ति में पिरोए जाने पर बनी माला, कतार, पंक्ति। **जैसे:** फूलों की लड़ी, बल्बों की लड़ी। 2. धागों के गुच्छे का एक धागा। 3. शृंखला, **जैसे**: उसने तो चुटकुलों की लड़ी छोड़ दी।

लड्डू *पुं.(तद्*<लड्डुक) एक गोलाकार मिठाई, **जैसे:** बेसन के लड्डू, खोए के लड्डू, मेवे के लड्डू। **मुहा.** 1. मन में लड्डू फूटना=किसी अनुकूल बात या विशेष उपलब्धि की संभावना से मन में बहुत प्रसन्न होना। 2. दोनों हाथों में लड्डू होना, ऐसा सौभाग्यशाली एवं सुखद अवसर प्राप्त होना जिसमें सब तरफ से फ़ायदा ही फ़ायदा होने वाला हो।

लत *स्त्री.(तद्*<लिप्त) बुरी आदत, व्यसन, कुटेव। जैसे-कुछ लोगों को बचपन से ही धूम्रपान करने की लत होती है।

लता *स्त्री.(तत्.)* भूमि पर या वृक्ष आदि के सहारे फैलनेवाला बिना तने वाला कोमल पतला पौधा। **पर्या.** बेल, वल्लरी। **जैसे**: अंगूर की लता, फूल की लता।

लताड़ *स्त्री.(देश.)* शा.अ. लताड़ने की क्रिया या भाव। सा.अ. तीखी, डॉंट-फटकार। 2. भर्त्सना, झिडकी।

लताड़ना *स.क्रि. (देश.)* शा.अ. पैरों से कुचलना, रौंदना। सा.अ. कठोर शब्दों में डाँटना-फटकारना, झिडक़ना। **जैसे**: झूठी गवाही देने पर न्यायधीश ने उसे खूब लताड़ा।

लतामंडप *पुं.(तत्.)* शा.अ. लताओं का मंडप। **दे.** मंडप। सा.अ. घर के उद्‌यान में बैठने के लिए वह स्थान, जो चारों ओर से घनी लताओं द्‌वारा आवेष्टित हो या घिरा हुआ हो, लतागृह। **पर्या.** लताकुंज, लताभवन।

लतिका *स्त्री. (तत्.)* छोटी लता या बेल। 2. (ला.) लता जैसा आभूषण, जैसे-मोती माला।

लतीफा *पुं. (अर.*<लतीफ़) 1. ऐसी कोई बात जो चमत्कारपूर्ण और हँसी वाली हो।, चुटकुला। 2. हँसी की अनोखी बात।

लतीफेबाज *वि.(अर.+फा.)* बहुत चुटकुले सुनाने वाला, विनोदी। **प्रयो.** बीरबल पक्का लतीफेबाज़ था।

लथपथ *वि. (देश.)* 1. भीगी हुआ, तर। **जैसे**: खून से लथपथ, पसीने से लथपथ। 2. सना हुआ, **जैसे**: कीचड़ से लथपथ।

लदना *अ.क्रि. (देश.)* लादना। 1. भार या बोझ से युक्त होना। 2. किसी वाहन/पशु इत्यादि पर भार रखा जाना। **जैसे**: टैंपो पर सामान लद रहा है। 3. (ला.अर्थ.) व्यतीत हो जाना। बीत जाना। **जैसे**: अब अफसरी के दिन लद गए, काम करो।

लदवाना *प्रे.क्रि.<लादना (देश.)* 1. लादने का काम किसी अन्य से कराना। 2. कोई वजन वाली वस्तु किसी के द्‌वारा किसी ठेला, गधे, ट्रैक्टर आदि पर रखवाना। **जैसे**: वह ट्रक पर सामान लदवा रहा है।

लपकना *अ..क्रि. (देश.)* 1. तेजी/फुर्ती के साथ सहसा आगे बढ़ना। **जैसे:** वह अतिथि से मिलने के लिए लपका। 2. झपटना। **जैसे**: कुत्ते का बिल्ली को पकड़ने के लिए लपकना। 3. बिजली का रूक-रूक कर चमकना। **जैसे**: बादलों से युक्त आकाश में बिजली लपक रही है। **स.क्रि.** किसी वस्तु को ज़मीन पर गिरने से पूर्व हाथों में संभाल लेना। **जैसे**: गेंद लपकना। catch

लपट *स्त्री.(देश.)* 1. आग के ऊपर उठने वाली लौ, शिखा, ज्वाला। 2. गरम हवा का झोंका, लू।

लपलपाना *अ.क्रि.(देश. अनु.लपलप)* साँप आदि जीवों/जानवरों आदि का किसी कारण से अपनी जीभ को लपलप की ध्वनि में बारबार बाहर-अंदर करना। **प्रयो.** साँप जीभ लपलपाते हुए वातावरण में सूँघता है। 2. लंबी पतली वस्तु का तेजी से हिलना। **जैसे**: छड़ी का लपलपाना। 3. हिलाई जाती हुई तलवार का चमकना। **मुहा.** जीभ लपलपाना=किसी चीज़ को खाने की इच्छा होना।

लपेट *स्त्री.(देश.)* 1. लपेटने की क्रिया या भाव। 2. लपेटकर डाला हुआ घुमाव या फेरा। **जैसे**: झंडे

की रस्सी को तीन बार लपेट कर बाँध दो। 3. बल, ऐंठन। 4. उलझन, **प्रयो.** मेरा घर भी आग की लपेट में आ गया।

लपेटना *स.क्रि.(तत्.)* 1. धागे, रस्सी, कपड़े आदि को किसी दूसरी वस्तु के चारों ओर घुमाकर इस प्रकार लगाना कि बीच की वस्तु छिप जाए। **उदा.** डोरी लपेटना, कपड़ा लपेटना, पट्टी लपेटना। 2. किसी चित्र, कपड़े आदि को गोल तह में समेटना। ला.अर्थ. किसी व्यक्ति को अकारण किसी मामले में फँसाना।

लफँगा *वि.(फा.लफंग)* 1. लंपट, दुश्चरित्र। 2. गुंडा, बदमाश, आवारा।

लफड़ा *पुं.(अ.)* व्यु.अर्थ लफ़ लपेटना, तह करना+ड़ा प्रत्यय। सा.अर्थ ऐसा कार्य जिसमें कोई फँस जाए तो बाहर निकलना कठिन हो। **पर्या.** झमेला।

लब *पुं. (फ़ा.)* 1. होंठ, 2. किसी वस्तु का किनारा, **जैसे**: लबे सडक़। (सड़क के किनारे)

लबादा *पुं.(फ़ा.*<लबाद:) सरदी में कुर्ते के ऊपर पहनने का लंबा, ढीला-ढाला वस्त्र, रुईदार चोंगा।

लबालब *वि.(फ़ा.)* पूरी तरह से (ऊपरी किनारे तक) भरा हुआ।

लब्ध *वि. (तत्.)* जो मिल गया हो। **पर्या.** प्राप्त।

लब्धप्रतिष्ठ *वि.(तत्.)* (व्यक्ति) जिसे प्रतिष्ठा मिली हुई हो, यानी अपनी योग्यता के बल पर जिसे अधिकतर लोग आदर देते हों।

लब्धि *स्त्री.(तत्.)* वह वस्तु, योग्यता आदि जो परिश्रम के बल पर हुई हो। **टि.** लब्धि के स्थान पर उपलब्धि शब्द का प्रयोग अधिक होता है। **पर्या.** प्राप्ति, लाभ।

लमहा/लम्हा *पुं.(अ.<लम्ह:)* समय का बहुत छोटा भाग, क्षण, पल।

लय *पुं.(तत्)* शा.अर्थ. किसी वस्तु का दूसरी वस्तु में पूरी तरह समा जाना। 'विलय'। सा.अर्थ **1.** विलीन होना, 2. (किसी पदार्थ का) लोप, नाश, 3. संगीत गाने की धुन, 4. चित्त की एकाग्रता। **प्रयो.** सृष्टि का अंत में प्रकृति में लय हो जाना है।

ललक *स्त्री.(तद्.)* 1. मन का वह भाव जिसमें किसी वस्तु को प्राप्त करने, देखने या सुनने आदि की तीव्र इच्छा होती है। **पर्या.** लालसा, चाह।

ललकार *स्त्री. (देश.)* शा.अर्थ ललकारने की क्रिया या भाव। सा.अर्थ **1.** बहस, प्रतियोगिता या युद्ध आदि के लिए आह्वान या चुनौती। **प्रयो.** उसकी ललकार सुनकर सभी कायर भाग खड़े हुए। 2. किसी के विरूद्ध लड़ने के लिए या किसी पर हमला करने के लिए अन्य लोगों द्वारा उत्साहवर्धन।

ललकारना *स.क्रि. (नाम धातु*<ललकार) 1. विरोधी व्यक्ति को लड़ने की चुनौती देना। 2. किसी व्यक्ति को दूसरे पर आक्रमण के लिए बढ़ावा देना।

ललचाई *वि.स्त्री. (तद्*<लालच<लालसा) लालच से युक्त, लालच से भरी हुई।

ललचाना *स.क्रि. (तद्*<लालच<लालसा) 1. किसी को कोई प्रिय वस्तु दिखाकर उसे पाने के लिए उत्सुक, व्यग्र या अधीर करना। 2. किसी के मन में लालच उत्पन्न करना, लालायित करना।

ललना *स्त्री. (तत्.)* 1. सुंदर स्त्री। 2. स्वेच्छाचारिणी स्त्री।

लला *पुं.* (देश.<ब्रज, अवधि और बोलियों में) 1. प्यारा और दुलारा बच्चा। **पर्या.** लाल। **उदा.** मेरे लाल। 2. नायक या पति।

ललाट *पुं.(तत्.)* 1. भाल, माथा, मस्तक का आगे का भाग। 2. ला.अर्थ. भाग्य या भाग्य के लेख। forehead **उदा.** जो विधि लिखा ललाट हमरे सो वर पावउ....।

ललित *वि.(तत्.)* 1. सुंदर, मनोहर, कोमल। 2. प्रिय, प्यारा। 3. लटका हुआ और हिलता हुआ सा।

लली *स्त्री. (देश.*<ब्रज बोली) 1. पुत्री, बेटी 2. लडक़ी, लाडली, बालिका। 3. लडक़ी, बेटी, नायिका के लिए प्यार भरा संबोधन। **उदा.** 'झुक जड़यो तनिक रघुवीर लली जी अभी छोटी हैं'।

लल्ला/लल्लन *पुं.(देश.*<देश.) **दे.** 'लाल'/'लला'।

लल्ली *स्त्री.(देश.)* **दे.** 'लली'।

लल्लो *स्त्री. (तद्*<ललना) जिह्वा, जीभ, ज़बान।

लल्लो-चप्पो *स्त्री.(देश.)* 1.किसी को प्रसन्न करने के लिए कही जाने वाली चिकनी चुपड़ी बातें।

2. ख़ुशामद, चापलूसी। **प्रयो.** वह तो अपने काम के लिए लल्लो-चप्पो कर रहा है।

लवंग *स्त्री.(तत्.)* एक प्रकार का वनस्पति पदार्थ जिसका प्रयोग औषधि एंव मसाले के रूप में प्रयोग किया जाता है। **पर्या.** लौंग। **टि.** लवंग का वृक्ष होता है जिसका फूल प्रयोग में लिया जाता है।

लवण *पुं.(तत्.)* व्यु.अर्थ काटना। सा.अर्थ नमक, नोन।

लवाज़िम *पुं.(अर.)* (लाज़िम का बहुवचन) आवश्यक वस्तुएँ, किसी कार्य से संबंधित वस्तुएँ, जरूरी सामान।

लशकरी/लश्करी *वि.(फ़ा.)* 1. लशकर (सेना) से संबंधित, **जैसे**: लशकरी भाषा। 2. वह जो लशकर में काम करता हो।

लश्कर *पुं.(फ़ा.)* 1. सैना, फौज। 2. सेना का पड़ाव/छावनी। 3. जहाज पर काम करने वाले सामान्य कर्मचारियों का समूह। **उदा.** सबै कहावै लसकरी, सब लसकर कहैं पाय। (लसकर-सेना, लसकरी-फौजी)।

लश्कर/लशकर *पुं. (फ़ा.)* 1. सेना, फौज। 2. सैनिक छावनी।

लस्सी *स्त्री. (देश.)* 1. गर्मियों का एक विशेष ठंडा पेय जो मथे हुए दही में चीनी या नमक मिलाकर बनाया जाता है। 2. छाछ, मट्ठा। **जैसे**: वह गर्मी में प्रतिदिन लस्सी पीता है।

लहँगा *पुं.(देश.)* स्त्रियों का कमर से नीचे पहनने का एक घेरेदार वस्त्र जो कमर में नाड़े से बाँधा जाता है। किंतु 'घाघरा' से भिन्न होता है। (घाघरा का घेरा काफी बड़ा होता है।) **जैसे**: आजकल उत्सवविशेष में लडकियाँ भी लहँगा पहनती हैं।

लहकना *अ.क्रि. (अनु.)* 1. हवा का झोंके से चलना। 2. हवा के झोंके से (पेड़-पौधों का) हिलना-डुलना। 3. आग का जलना, दहकना या चमकना। 4. हल्की रेखा की आकृति में आकाशीय विद्युत का चमकना। *तुल.* कौधंना। 5. तेजी से लपकना। 6. उत्सुकता से, तेजी से आगे बढ़ना, ललकना।

लहज़ा *पुं. (अर).* 1. बोलने का विशेष ढंग (स्वरों के उतार-चढ़ाव या बलाघात में अंतर लाते हुए) 2. बोलने का ऐसा ढंग जो सुनने वाले को मधुर या कटु लगे।

लहरदार *वि. (तत्.+फ़ा.)* शा.अर्थ लहरों से युक्त, लहरवाला। सा.अर्थ जिसमें लहर जैसी धारियाँ हों। **प्रयो.** उसके केश लहरदार हैं। लहरदार साड़ी।

लहरें *स्त्री.(तत्.)* 1. नदी, समुद्र आदि में वायु, गति आदि के प्रभाव से जल का उठ-उठकर गिरना तथा आगे की ओर बढ़ने की प्रवृत्ति, तरंग, मौज। wave 2. उमंग, जोश। 3. मन की मौज, आनंद, हर्ष आदि का आवेग। 4. लहर की आकृति की चाल या रेखा। 5. किसी रोग में दर्द का इसी प्रकार उठना और शांत हो जाना।

लहलहाना *अ.क्रि. (देश.)* 1. हरी पत्तियों से युक्त या फूल-पत्तों से युक्त होना। 2. हरा-भरा होना। **जैसे**: मंद हवा में खेतों को लहलहाते देखकर मन खुश हुआ। 3. ला.अर्थ. प्रसन्नता से भर जाना या प्रफुल्लित होना।

लहसुन *पुं.(तद्.*<लशुनम्) एक औषधीय पौधा जिसके पत्ते लंबे तथा फूल झुमकेदार सफेद होते है और जड़ में गुच्छेदार सफेद कन्द होता है। उसके दाने मसाले के रूप में तथा दाल-सब्जी छौंकने के काम आते हैं। **उदा.** लहसुन का सेवन वायुविकार एवं हृदयरोग के लिए बहुत उपयोगी है। garlik *पुं. (देश.)* शरीर पर स्थित जन्मजात चिह्न जो मृत्युपर्यंत बना रहता है।

लहसुनिया *पुं. (देश.)* 1. एक रत्न जिस पर लहसुन जैसी धारियाँ होती हैं तथा इसका रंग धूमिल होता है। इसे ज्योतिष में केतुग्रह का रत्न माना गया है। 2. वैदूर्य। cat's eye

लहुलुहान *वि. (देश.लहू*<लोहित+अनु.) 1. चोट लगने के कारण जिसका शरीर खून से तर हो गया हो। 2. खून से लथपथ। **पर्या**. रक्ताक्त।

लहू *पुं.(तद्*<लोह) रक्त, खून (ब्लड)। **मुहा.** लहू का प्यासा-प्राण लेने का इच्छुक, घोर शत्रु। 2. लहू-लुहान *वि.* चोट, आघात आदि के कारण जिसका सारा शरीर खून से भर गया हो।, खून से तर।

लाँघना *अ.क्रि. (तद्.*<लङ्घन) 1. उछलकर पार करना। 2. ऊपर से डाँकना। लंबे कदम रखकर या छलांग लगाकर गड्ढा/नाले आदि को पार करना। **जैसे**: हनुमानजी ने लंका जाने के लिए समुद्र को लाँघा था। 3. ला.अर्थ अनधिकृत रूप

से कोई सीमा/सीमारेखा पार करना। अतिक्रमण। **जैसे:** तुम अपनी सीमा को लाँघ रहे हो, अब चुप रहो तो अच्छा है।

लांछन *पुं.(तत्.)* 1. जीवन में अनुचित आचरण करने का दोष। 2. चिह्न, दाग। 3. दोष, कलंक। **जैसे**: आज तक मुझ पर कामचोरी का कोई लांछन नहीं लगा।

लाइकेन *पुं.(अं.)* शैक/शैवाक (शैवाल तथा कवक से बनी संयुक्त संरचना)। lichen

लाइट *पुं.(अं.)* 1. वह ज्योति या प्रकाश जिसमें वस्तुएँ देखी जा सकती हैं। यह प्रकाश सूर्य, दीपक और अग्नि आदि से प्राप्त होता है। उजाला, रोशनी। 2. बत्ती, जैसे-रोड लाइट। 3. बिजली, **जैसे**: लाइट अभी अभी गई है। *वि.* हल्का।

लाइब्रेरी *स्त्री.(अं.)* **दे.** पुस्तकालय'।

लाइलाज *वि. (अर.)* 1. जिसका कोई इलाज न हो। असाध्य। **जैसे:** लाइलाज बीमारी। 2. जिस समस्या का कोई प्रतिकार या उपाय न रह गया हो। **प्रयो.** यह लाइलाज समस्या है।

लाइसेंस *पुं. (अं.)* 1. विशेष कार्य को करने के लिए सरकार द्वारा दिया जाने वाला अनुज्ञापत्र या अधिकार पत्र।

लाउडस्पीकर *पुं. (अं.)* बिजली की सहायता से चलने वाला यंत्र, जिसकी सहायता से आवाज़ की प्रबलता को बढ़ाकर उसे दूर तक पहुँचाया जा सके। ध्वनिवर्धक (यंत्र) **विलो.** silencer (ध्वनिशामक यंत्र)

लाक्षणिक *वि.(तत्.)* 1. लक्षणों से संबंधित। 2. जिससे लक्षण प्रकट होते हैं। 3. लक्षणों से युक्त, प्रतीकात्मक। 4. **काव्य**. शब्द की लक्षणाशक्ति पर आधारित या उससे संबद्ध अर्थ.। **जैसे:** टोपियाँ जा रही हैं। अर्थात टोपी पहने गाँधीवादी लोग जा रहे हैं। 5. **ज्यो.** हस्तरेखा, शारीरिक लक्षण या व्यवहार का ज्ञाता।

लाक्षा *स्त्री.(तत्.)* लाल रंग का एक प्रसिद्ध रसायन, कीट विशेष द्वारा पीपल, पाकड़, बेर आदि वृक्षों की टहनियों पर स्रवित राल जिससे चूड़ियाँ आदि अनेक उपयोगी वस्तुएँ बनती हैं। **पर्या.** लाख, लाह, सील। sealing box

लाक्षागृह *पुं. (तत्.)* ज्वलनशील पदार्थों जैसे लाख से तैयार किया गया घर/भवन। **जैसे**: दुर्योधन ने पांडवों के लिए वार्णावत में एक सुंदर लाक्षागृह बनवाया था ताकि उसमें आग लगाकर उन्हें भस्म किया जा सके।

लाख *वि.(तद्<लक्ष)* 1. सौ हजार (100,000) की एक संख्या। 2. बहुत अधिक। **उदा.** (i) बिना प्रेम फीको सबै लाखन करहु उपाय। (भारतेन्दु काव्यात्मक) (ii) पितुहित भरत कीन्हि जसि करनी। सो मुख लाख जाइ नहिं बरनी। प्रेम सरोवर **मुहा.** 1. लाख टके की बात-महत्वपूर्ण व सत्य बात। 2. लाखों में खेलना-अत्यधिक धनी होना। *स्त्री. (तद्<*लाक्षा) एक वृक्ष की गोंद जो अत्यंत ज्वलनशील होती है। **टि.** इसका उपयोग पत्र, महत्वपूर्ण दस्तावेज आदि को सीलबंद करने में किया जाता है। इससे महावर, चूड़ियाँ आदि भी बनती हैं। सुनार भी गहने बनाने में इसका उपयोग करते हैं।

लागत *स्त्री.(देश.)* 1. किसी वस्तु के बनाने या उसकी तैयारी में लगने वाला खर्च। **प्रयो.** इस मकान को बनवाने में 5 लाख रू. की लागत आयेगी। 2. बेचने के लिए खरीदी गई या बनाई गई वस्तु पर पूँजी तथा अन्य व्यय मिलाकर कुल खर्च की गई धनराशि। Cost

लागू *वि. (तत्.)* 1. जो कहीं लग सके या प्रयोग किया जा सके। जो कहीं चरितार्थ हो सके। **जैसे**: यह **मुहा.** यहाँ लागू हो सकता है। applicable 2. किसी नियम का व्यवहार में आने का भाव।

लाचार *वि. (फ़ा.)* 1. जिसका किसी कार्य में कुछ वश न चले। विवश, मजबूर, दीन, असहाय। 2. जो शारीरिक या किसी अन्य असमर्थता के कारण कुछ न कर पा रहा हो, असमर्थ, निरुपाय। **मुहा.** लाचार करना-किसी कार्य को करने के लिए विवश या बाध्य कर देना।

लाज *स्त्री.(तत्.)* 1. वह मनोभाव जो व्यक्ति को मान-सम्मान बचाने के लिए अनुचित व्यवहार या कार्य से बचाता है। लज्जा, शर्म। **जैसे**: लाज न आवत आपको दौरे आयहु साथ। 2. सम्मान, प्रतिष्ठा। **मुहा.** प्रतिष्ठा की रक्षा करना। shame *पुं. (अं.)* 'छोटा घर' जो किराये पर निवास के

लिए दिया जाता है। **जैसे**: विद्यार्थी लाज। *पुं. (तत्.)* धान की खील, लावा।

लाजवंती *वि.स्त्री.(तद्.)* 1. लज्जाशीला (स्त्री) **दे.** 'लाज'। 2. छुईमुई नामक पौधा, लजालू। **टि.** इस पौधे को स्पर्श करते ही यह मुरझा जाता है, इसलिए इसे छुईमुई या लाजवंती कहते हैं। थोड़ी देर बाद यह पुन: पहले रूप में आ जाता है।

लाजवाब *वि.(फ़ा.)* 1. उत्तर देने में असमर्थ, निरुत्तर। 2. जिसकी जोड़ का अन्य कोई न हो, बेजोड़, अनुपम। 3. जिसका जवाब न हो, निरुत्तरित।

लाज़िमी *वि. (अरबी)* 1. आवश्यक, अनिवार्य। 2. उचित, मुनासिब।

लाट *पुं. (देश.)* ऊँचा और मोटा खंभा। **जैसे:** अशोक की लाट। 2. मीनार। tower

लाट *पुं.(अं.*<लार्ड) स्वामी, मालिक, अधिकारी। **जैसे**: आप इतने बढ़े लाट साहब हो, जो किसी की नहीं सुनते।

लाठी *स्त्री. (देश.)* बांस, लंबा डंडा। **जैसे**: बूढ़े का सहारा लाठी। **मुहा.** लाठी का ज़ोर-शारीरिक बल, मारने-पीटने की शक्ति। लाठी चलना-लाठी से मारपीट होना।

लाठीचार्ज *पुं. (देश.+अं.)* पुलिस बल द्वारा भीड़ नियंत्रण के लिए लाठी का प्रयोग। **प्रयो.** पुलिस ने मेले में लोगों पर लाठीचार्ज किया)।

लाड़ *पुं.(तद्* <लड़) छोटे बच्चों के साथ किया जाने वाला आत्मीयतायुक्त और स्नेहपूर्ण व्यवहार, दुलार।

लाड-प्यार *पुं.(तद्*<लड्+प्रिय) दुलार और प्रेम। जैसे-उन्होंने अपने बच्चों को बड़े लाड-प्यार से पाला।

लाडला *वि.(देश.)* लाडला, जिससे लाड़ किया जाए, दुलारा। **उदा.** लाडला कन्हैया मेरा मोहन मुरली वाला। **दे.** 'लाड'।

लात *स्त्री. (अर.*<लत) 1. पैर, पाँव leg 2. पैर से किया जाने वाला आघात। kick **मुहा.** लात खाना-अपमान सहना। लात मारना-तुच्छ समझकर त्याग देना। लातों के भूत-पिटाई के योग्य व्यक्ति। लतखोर-मार खाने का आदी।

लादना *स.क्रि.(तद्*<लद्दण प्रा.) 1. किसी आदमी या पालतू जानवर के ऊपर जरूरत से ज्यादा सामान रखना; किसी ऊँची वस्तु पर अधिक मात्रा में वस्तुएँ रखना। **जैसे**: मेज़ पर पुस्तकें लादना। 2. किसी को उसकी इच्छा के विरूद्ध कार्य करने के लिए विवश करना। 3. किसी को ऐसी जिम्मेदारी देना जो उसकी इच्छा के विरूद्ध हो।

लानत *स्त्री.(अर.*<लअनत) किसी के अशोभनीय आचरण पर कही जाने वाली अपमानपूर्ण उक्ति, धिक्कार, फटकार। **प्रयो.** आप बड़ों के साथ कैसा गंदा व्यवहार करते हैं, लानत है आपको।

लाना *स.क्रि. (देश.)* 1. किसी वस्तु या व्यक्ति को कहीं से लेना और लेकर दूसरी जगह आना। **जैसे**: नदी से पानी लाना। 2. सामने ले आना या उपस्थित करना। **जैसे:** पुलिस द्वारा अपराधी को न्यायालय में लाना।

लापता *वि. (तद्.)* जिसका पता न हो; जो खो गया हो। **पर्या.** अज्ञात।

लापरवाह *वि. (अर.+फा.)* शा.अर्थ बिना परवाह के। 1. जिसे किसी बात की चिंता न हो। **पर्या.** निश्चिंत, बेफ़िक्र। 2. असावधान। careless

लिपटना *अ.क्रि. (तद्*<*लिप्)* 1. किसी वस्तु का दूसरी वस्तु से प्रगाढ़ रूप से संलग्न होना, लगना या चिपकना; चिपटना। **जैसे**: मेरे पैर में मिट्टी लिपट गई। 2. किसी वस्तु का चारों ओर से घूमते हुए कसकर लगना। **जैसे**: लताएँ वृक्षों से लिपटती हैं। 3. गले लगना/आलिंगन करना। **जैसे:** पुत्री माँ से लिपट गयी।

लोक *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ दृश्य (दिखने वाला) जगत। सा.अर्थ 1. वह स्थान जिसका बोध प्राणी को हो या जिसकी कभी उसने कल्पना की हो। **जैसे:** इंद्रलोक, परलोक। 2. संसार। **उदा.** सकल लोक सूनौ लागत है। (सूरसागर)। 3. भुवन **जैसे:** स्वर्गलोक, भूलोक, पाताल लोक। 3. जनता, लोग **उदा.** लोकलखि बोलिए। (तुलसी) **जैसे:** लोक-हित।

लोक-चित्र *पुं.* *(तत्.)* लोक में प्रचलित परंपरागत चित्र।

लोकतंत्र *पुं.* *(तत्.)* राज्य की वह प्रणाली जिसमें शासन का अधिकार प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से लोक (जनसामान्य) के हाथ में होता है। जनता का शासन। **पर्या.** जनतंत्र, प्रजातंत्र **तु.** राजतंत्र।

लोक-नाट्य *पुं.* *(तत्.)* नाटकों की जनसामान्य में प्रचलित वह शैली जो नाटकों की शास्त्रीय परंपरा के सिद् धांतों में बँधी नहीं होती। स्थानीय भाषा, परिवेश एवं शैली के अनुसार किया जाने वाला नाटक। **जैसे:** रामलीला, रासलीला, नुक्कड़ नाटक, स्वांग आदि।

लोक-परंपरा *स्त्री.* *(तत्.)* वह प्रथा, रिवाज़ जो जन-साधारण में यथावत् रूप से पीढ़ी दर पीढ़ी चले आ रहे हों।

लोकप्रिय *वि.* *(तत्.)* लोगों में प्रिय, समाज में प्रिय, जिससे सबका लगाव हो। **पर्या.** जनप्रिय। popular

लोकप्रियता *स्त्री.* *(तत्.)* लोकप्रिय होने का भाव। **दे.** लोकप्रिय।

लोकमंगल *पुं.* *(तत्.)* जन कल्याण। लोगों की भलाई की बातें या कार्य।

लोकमत *पुं.* *(तत्.)* 1. किसी विषय पर लोक या जनता की राय या अधिकांश जनता का मत/विचार। **उदा.** कहहुँ लोकमत वेदमत यह सिद्धांत मिचोरी तुलसी। public opinion 2. लोगों द्वारा दिया गया मत (वोट) **जैसे:** विधानसभा या लोकसभा के सदस्य चुने जाते हैं। public voting

लोकमानस *पुं.* *(तत्.)* शा.अर्थ जन-समुदाय का मन, हृदय। सा.अ. जन-साधारण के विचार या भावनाएँ।

लोक-लाज *स्त्री.* *(तद्.)* जन-भावना के प्रतिकूल कार्य करने में होने वाली लज्जा, शर्म। लोकाचार या लोक मर्यादा के उल्लंघन का भय।

लोक संगीत *पुं.* *(तत्.)* जनसामान्य में प्रचलित वह परंपरागत संगीत जिसमें गीत के बोल, वाद्य-यंत्र, गायन शैली आदि स्थानीय ही होती है। प्राय: स्थानीय देवता, पर्व, पारिवारिक उत्सव आदि से संबंधित पारंपरिक संगीत। folk music

लोकसभा *स्त्री.* *(तत्.)* भारतीय संसद का वह सदन जिसके सदस्य प्रत्यक्ष रीति से जनता के मतदान द्वारा निर्वाचित होते हैं **तु.** राज्य सभा।

लोकहित *पुं.* *(तत्.)* लोक-सेवा, लोक कल्याण।

लोकोक्ति *स्त्री.* *(तत्.)* लोक भाषा में अधिकता से प्रयुक्त कोई ऐसा तथ्य पूर्ण वाक्य जिसमें कोई अनुभव या उपदेश आदि की बात बड़े ही सरल रूप में कही गई हो। कहावत, मसल। **जैसे: 1.** होनहार बिरवान के होत चीकने पात। 2. समरथ को नहि दोष गुसाईं। 3. नौ दिन चले अढ़ाई कोस। **दे.** परिशिष्ट

लोकोत्तर *वि.* *(तत्.)* संसार में होने वाली बातों, पदार्थों से श्रेष्ठ, उत्तम अलौकिक; विलक्षण, अद्वितीय।

लोच *स्त्री.* *(देश.)* 1. लचीलापन, लचक। **जैसे: 1.** स्पंज, रबड़ के टुकड़े आदि में लोच होता है। 2. मृदुता। 3. कोमलतापूर्ण सौंदर्य। **जैसे:** उसमें तो आज भी वही आकर्षण, वही लोच है।

लोचन *पुं.* *(तत्.)* शरीर का वह अवयव जो किसी वस्तु को दिखाने का काम करे। **पर्या.** आँख, नेत्र, नयन, चक्षु।

लोचना *अ.क्रि.* *(तत्.)* 1. शोभा देना 2. इच्छा होना 3. ललचना, तरसना (लोचना+प्रेरणार्थक रूप) **स.क्रि.** (तत्.) 1. चमकाना, शोभा बढ़ाना। 2. रुचि उत्पन्न करना 3. ललचाना 4. विचार करना।

लोटना *अ.क्रि.* *(देश.)* 1. पीठ और पेट के बल इधर उधर लुढक़ने की क्रिया। 2. करवटें बदलते रहना। 3. **दे.** लेटना।

लोटनिक गति *स्त्री.* *(तत्.)* लुढ़कने के रूप में होने वाली गति। **जैसे:** पहिए का लुढ़कना या बेलनाकार वस्तु का लुढ़कना। rolling

लोट-पोट *स्त्री.* *(हिं.)* लोटना लोटने या आराम करने की क्रिया। ला.अर्थ. हँसते-हँसते विह्वल हो जाना बहुत अधिक खुश या प्रसन्न होना।

लोटस टैंपल *पुं. (अं.)* 1. कमल के आकार का बना वह पवित्र धार्मिक स्थान जो ईरान के एक संत बहाउल्लाह द्‌वारा चलाए गए बहाई संप्रदाय के अनुयायियों द्‌वारा नई दिल्ली में स्थापित किया गया है और जहाँ दर्शनार्थी शांत मुद्रा में बैठकर साधना कर सकते हैं। 2. कमल मंदिर।

लोटा [लोट+आ] *पुं. (तद्.< लुठ्)* पानी रखने का संकरे मुँह का प्रसिद्‌ध गोल पात्र।लुढ़क सकने के कारण 'लोटा' नाम पड़ा। **टि.** छोटा पत्र लुटिया कहलाता है। अकं. (तद्.) 'लोटना' क्रिया का भूतकाल का रूप।

लोन *पुं.* (*अं.)* ऋण, कर्ज़।

लोन *पुं. (तद्.<लवण)* 1. लंबा, नमक 2. लावण्य, सौंदर्य। **उदा.** मानहुँ लोन जरे पर देई। (तुलसी. रा.च.मा.2/30/5) **वि.** सामान्यत: काव्य में प्रयुक्त।

लोप *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ 1. न दिखने का भाव या स्थिति। 2. अंतर्धान होने का भाव। 3. अभाव, नाश, क्षय।

लोबान/लोहबान *पुं. (अर.)* एक वृक्ष का गोंद जो सुगंधित तथा औषधीय गुणों से युक्त होता है। इसे आग में डालने से कीटनाशक सुगंधित धुआँ उठता है। **टि.** धूप इत्यादि में इसका उपयोग होता है।

लोबिया *पुं. (देश.)* मूँग की तरह का एक प्रकार का बेल जैसा पौधा जिसमें लंबी फलियाँ लगती हैं तथा उसके बीजों को अन्य दालों की तरह नमकीन मसाले के साथ पकाकर खाया जाता है।

लोभ *पुं. (तत्.)* निर्वाह योग्य वस्तुएँ अपने पास होने पर भी उनका और अधिक संग्रह करने की इच्छा।

लोभी *वि.* लोभ करने वाला। **दे.** लोभ।

लोमड़ी *(स्त्री.) (तद्.) (सं.<लोमशा)* 1. कुत्ते की प्रजाति का, नुकीली नाक, गुच्छेदार पूंछ और घने लाल बालों वाला एक प्रसिद्‌ध, स्तनपायी जंगली छोटा पशु। 2. **(ला.)** चलाक स्त्री। **विशे.** बालकथाओं में इस प्राणी को अत्यंत चालाक और धूर्त प्राणी के रूप में वर्णित किया जाता है।

लोरी *स्त्री. (देश.)* एक प्रकार का मधुर गीत जिसे स्त्रियाँ प्राय: अपने बच्चों को सुलाने के लिए गाती हैं।

लोलुप *वि. (तत्.)* 1. लोभी, लालची। 2. किसी वस्तु को जल्दी पाने की अत्यधिक इच्छा वाला, अधीर अत्यंत उत्सुक। **जैसे:** धन-लोलुप, निष्ठान्न लोलुप, सत्ता-लोलुप आदि।

लोहड़ी *स्त्री.* 1. मकर संक्रांति (14 जनवरी) से एक दिन पहले वाले दिन को मनाने का त्योहार, जिसमें रात्रि के प्रारंभ के समय लकड़ी जला कर अग्नि की पूजा करते हैं और लोगों में मक्के के फुल्ले, रेवड़ी, मूंगफली आदि का प्रसाद बाँटते हैं। 2. उक्त त्योहार के समय गाये जाने वाला गीत।

लोहा *पुं. (तद्.<लौह)* काले रंग की प्रसिद्‌ध धातु जिसमें हथियार, बरतन, औजार तथा मशीनों के कलपुर्जे बनाए जाते हैं। **मुहा.** लोहा मानना= आधिपत्य स्वीकार करना। लोहे के चने चबाना= युद्‌ध में बुरी तरह हारना। लोहा लेना= सामना करना।

लोहार *पुं. (तद्.<लौहकार)* लोहे का औज़ार बरतन आदि बनाने वाली एक जाति।

लौटना *अ.क्रि. (देश. उलटना)* 1. कहीं जाकर फिर उसी स्थान पर वापस आना। **जैसे: 1.** मैं कल ही कश्मीर से लौटा हूँ। 2. पीछे की ओर घूमना, मुड़ना। 2. जब मैं पीछे लौटा, तब देखा कि मित्र भागा आ रहा है। वापसी, पलटकर आना। 3. किसी वस्तु का वापस आ जाना। **जैसे:** चिट्‌ठी का लौटना।

लौह *पुं. (तत्.)* काले से रंग की एक धातु, जिसके बर्तन, हथियार, यंत्र आदि बनते हैं। **पर्या.** लोहा।

लौह-कवच *पुं. (तत्.)* लोहे का बना कवच (कवच = आत्म रक्षा के लिए धारण किया हुआ साधन, **जैसे:** लोहे की जाली या आवरण, गवीज, सिद्‌ध मंत्र आदि।) **टि.** प्राचीन एवं मध्य काल में युद्‌ध के समय योद्‌धा लोग इस कवच को धारण करते थे, जिससे शत्रुओं के आक्रमण से बचा जा सके।

लौहतत्त्व *पुं. (तत्.)* एक रासायनिक तत्व जिसका प्रतीक एफ-ई तथा परमाणु क्र. 26 है। यह प्राय: अयस्क रूप में पाया जाता है। हीमोग्लोबीन का यह प्रमुख उपघटक है। **पर्या.** लोहा। iron

लौहस्तंभ *पुं. (तत्.)* लोहे का बना स्तंभ = खंभा। (आयरन पिलर)। **जैसे:** कुतुबमीनार के पास स्थित लौह स्तंभ अति प्राचीन है।

ल्यूकीमिया *पुं. (अं.)* (श्वेतरक्तता/रुधिर कैन्सर) रक्त-उत्पादक अंगों का दुर्दम रोग जिसमें रक्त में श्वेत रक्त कोशिकाएँ एवं उनकी पूर्वगामी कोशिकाओं की संख्या बढ़ जाती है। **पर्या.** श्वेत रक्तता; रुधिर कैन्सर।

व

वंचक *वि. (तत्.)* ठगने वाला, ठग, धोखेबाज। **दे.** वंचना।

वंचना *स्त्री. (तत्.)* छलपूर्वक ठगने या धोखा देने का भाव। **पर्या.** छल, छल-कपट, ठगी, धोखा, धोखबाजी।

वंचित *[वंच + इत] वि.* तत्. जिसे किसी वस्तु, काम या बात से अलग या दूर रखा गया है। deprieved

वंदन *पुं. (तत्.)* 1. प्रणाम, नमस्कार **जैसे:** हम आपको वंदन करते हैं। 2. स्तुति 3. पूजन।

वंदनवार (बंदनवार) *स्त्री. (तत्. < वंदनमाला)* सुन्दर पत्तों, फूलों आदि से निर्मित वह झालर या माला जो मंगल अवसरों पर दरवाजे, मंडप आदि पर बाँधी जाती है। **पर्या.** तोरण।

वंदना *स्त्री. (तत्.)* 1. स्तुति 2. अभिवादन 3. धार्मिक प्रार्थना 4. स्तुतिपरक गीत। **जैसे:** प्रात: विद्यार्थियों द्वारा की जाने वाली विद्यालयी वंदना (प्रार्थना)।

वंदनीय *वि. (तत्.)* जो वंदना करने योग्य हो। **दे.** वंदना। **जैसे:** महात्मा गाँधी हमारे लिए वंदनीय है।

वंश *पुं. (तत्.)* खानदान या कुल; राजा या शासक के पूर्वजों की पीढ़िया। जीन जीव वर्गीकरण की इकाई जिसका स्थान कुल के नीचे और जाति के ऊपर आता है। **उदा.** मानववंश 'होमो'। genes

वंशज *[वंश+ज=पैदा हुआ]* 1. किसी वंश में पैदा होने वाला व्यक्ति, खानदानी। 2. वंश-परंपरा या श्रृंखला का एक हिस्सा। descendent (स्त्री. वंशजा)

वंश परंपरा *स्त्री. (तत्.)* 1. किसी वंश में उत्पन्न पुरुषों की पहले से लेकर आज तक की संतान श्रृंखला या क्रमिक सूची। 2. वंशानुक्रम। **जैसे:** रघु की वंश परंपरा में श्रीराम हुए।

वंशवाद *पुं.* अपने ही वंश के व्यक्तियों को यानी भाई-भतीजों को वरीयता देने की (अनुचित) प्रवृत्ति। **पर्या.** भाई-भतीजावाद। nepotism

वंशवृक्ष *पुं. (तत्.)* वृक्ष (और उसकी शाखा-प्रशाखाओं) के रूप में चित्रित वंशावली जिसमें उस वंश के मूल पुरुष से लेकर बाद की पीढियाँ दर्शाई जाती हैं। pedigree

वंशाणु *[वंश +अणु] पुं. (तत्.)* **दे.** जीन।

वंशानुगत [वंश+अनुगत] *वि. (तत्.)* एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में चलता आया (लक्षण/रोग) आदि। **पर्या.** आनुवंशिक।

वंशावली [वंश+अवली] *स्त्री. (तत्.)* वंश (पुं. तत्.) = परिवार, खानदान। अवली (स्त्री.) तत् = पंक्ति, श्रेणी, झुंड। किसी वंश के लोगों की कालक्रम के अनुसार बनी हुई सूची। genealogy

वकालत *स्त्री. (अर.)* 1. किसी की ओर से तर्कसम्मत अनुकूल बातचीत करना, पैरवी। 2. दूतकर्म 3. अदालत में वकील का काम, वकील का पेशा 3. कानून की पढ़ाई। **जैसे:** मेरे भाई ने **वकालत** की डिग्री ले ली है।

वकील 1. वह विशेषज्ञ जिसने वकालत (कानून) की परीक्षा उत्तीर्ण की हो तथा जो व्यवसाय के तौर पर न्यायालय में किसी पक्ष की ओर से

प्रस्तुत होकर मामले की पैरवी करे। advocate 2. जो किसी एक पक्ष का समर्थन करे।

वक्त *पुं. (अ.<वक़्त)* 1. समय। **उदा.** क्या वक्त हुआ है? 2. मौका, अवसर। 3. फुरसत **उदा.** तुम्हारे यहाँ आने का मुझे वक्त ही नहीं मिला। 4. मृत्यु का समय। **उदा.** हर व्यक्ति को वक्त आने पर जाना ही पड़ता है। **मुहा.** वक्त की मार पड़ना-कष्ट अथवा विपत्ति के दिन आ जाना।

वक्तव्य *पुं. (तत्.)* 1. किसी विषय पर कही गई कोई विशेष बात या किसी के द्वारा विशेष विषय पर की गई कोई चर्चा, कथन, वचन। 2. विशेष रूप से ऐसी बात जो किसी विषय को स्पष्ट करने के लिए कही गई हो। statement **उदा.** पर्यावरण पर आपका वक्तव्य प्रभावशाली था।

वक्ता *वि. (तत्.)* 1. बोलने वाला, वक्तव्य देने वाला 2. भाषण देने वाला 3. कथा कहने वाला, कथावाचक। **विलो.** श्रोता।

वक्तृत्व *पुं. (तत्.)* 1. वक्ता होने की स्थिति/गुण/भाव। 2. उत्तम ढंग से बोलने या भाषा देने की योग्यता या ढंग। 3. भाषण, व्याख्यान। **जैसे:** आज आपके वक्तृत्व से सभी खुश थे।

वक्र *वि. (तत्.)* 1. टेढ़ा, तिरछा अर्थात् जो सीधा न हो। 2. घुँघराला। **उदा.** 1. वक्र चन्द्रमहिं न राहू। **विलो.** ऋजु, सरल। 3. कुछ झुका हुआ, नमित। **(ला.)** क्रूर, धूर्त या कुटिल।

वक्ष *पुं. (तत्. < वक्षस्)* शरीर में कंठ और उदर (पेट) के बीच का भाग। **पर्या.** छाती, सीना। **जैसे-** श्रीकृष्ण के वक्ष स्थल में कौस्तुम मणि सुशोभित है।

वक्षस्थल *पुं. (तत्.)* **दे.** वक्ष।

वगैरह/वग़ैरा *अव्य. (अ. <वगैरा)* समान प्रकार की अन्य वस्तुओं, बातों को प्रकट करने हेतु प्रयुक्त शब्द। **पर्या.** आदि, इत्यादि। **जैसे:** क्या तुमने परीक्षा के लिए पेन, पेंसिल, रबड़ वगैरह सब चीजें खरीद लीं?

वचन *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ. आदमी की सार्थक वाणी या शब्दावली। **पर्या.** शब्द, वाणी, वादा। ला.अर्थ प्रतिज्ञा, वादा। व्याकरण में एक और अनेक के बोधक शब्द, 'एकवचन', 'बहुवचन'।

वचनबद्ध [वचन + बद्ध] *वि. (तत्.)* शा. अर्थ जो वचन से बँधा हुआ हो, सा.अर्थ जिसने वचन दिया हो। जो अपने वचन से मुकरता न हो।

वचनबद्धता [वचनबद्ध + ता भाव. प्रत्य] *स्त्री. (तत्.)* अपने वचन के पालन करने में अडिग रहने का भाव। commitment **दे.** वचनबद्ध। **विलो.** वादा-खिलाफी।

वज़ह *स्त्री. (अर.)* कारण। **उदा.** कौन-सी वज़ह थी कि आप मेरे यहाँ नहीं आए?

वज़ीफा *पुं. (अरबी >वजीफ:)* 1. विद्यार्थी को पढ़ने में सहायता के लिए प्रदान किये जाना वाला धन। छात्रवृत्ति। 2. भरण-पोषण आदि की दृष्टि से दी जाने वाली आर्थिक सहायता। **जैसे:** हमारे विद्यालय में सर्वोत्तम अंक पाने वाले छात्र को भी वज़ीफा मिलता है 3. मुस्लिम मतानुसार कुरान की आयतों का जप।

वज़ू *पुं. (अर.) वुज़ू नमाज* से पहले हाथ-पाँव और मुँह धो लेने की क्रिया।

वज्र *(पुं.) (तत्.)* 1. इन्द्र का प्रधान शस्त्र जो महर्षि दधीचि की हड्डियों से निर्मित माना जाता है। 2. आकाश में बिजली चमकने और बादलों की घोर गर्जना के साथ पृथ्वी पर गिरने वाला वह विद्युत प्रवाह जो बहुत घातक सिद्ध होता है। **जैसे:** आज भारी वर्षा के साथ वज्रपात हुआ। 3. हीरा नामक रत्न। *(वि.)* [समास में प्रयुक्त] बहुत कठोर तीव्र वज्र जैसा। **जैसे-** वज्रमूर्ख, वज्रहृदय, वज्रलेप आदि।

वज्रपात *पुं. (तत्.)* 1. बिजली चमकने के साथ बादलों की बहुत तेज गर्जना के बाद बिजली का पृथ्वी पर गिरना जो बहुत ही भयंकर व घातक होता है। 2. वज्र सा गिरना या भारी विपत्ति। 3. सहसा होने वाला कोई बड़ा अनिष्ट।

वणिक् *पुं. (तत्.)* व्यापार से जीविका कमाने वाला व्यापारी। **पर्या.** वैश्य, बनिया।

वतन *पुं. (अ.)* 1. मूल-स्थान, मूल निवास-स्थान। 2. जन्म-भूमि, मातृभूमि, स्वदेश।

वतन-परस्ती *स्त्री.* 'देशभक्ति'।

वत्स *पुं. (तत्.)* 1. गाय का बच्चा; बछड़ा 2. पुत्र (संतान) 3. उम्र में काफी छोटे के लिए स्नेहसूचक संबोधन शब्द 'वत्स'।

वत्सल *वि. (तत्.)* 1. पुत्र या संतान का अत्यधिक लाड करने वाला। बालकों से पुत्रवत् प्रेम करने वाला।

वत्सलता *स्त्री.* वत्सल होने का भाव या गुण (तत्.)

वत्सला *वि.* 1. स्नेहपूर्ण 2. वह (गौ) जिसे बछड़ा या बछिया प्रिय हो।

वध *पुं. (तत्.)* किसी मनुष्य या पशु को सोचते समझते हुए किसी विशेष उद्देश्य से मार डालना। **जैसे:** कसंवध। **पर्या.** हत्या (हत्या अकारण भी हो सकती है।)

वधू *स्त्री. (तत्.)* 1. वह कन्या जिसका विवाह मंडप में हो रहा हो। 2. नवविवाहिता स्त्री, दुलहिन। 3. पुत्र की पत्नी। **पर्या.** बहू **जैसे:** बहू गणमान्य लोगों ने वधू को आशीर्वाद दिया।

वन *पुं. (तत्.)* आवासीय भूमि (नगर, गांव आदि) से दूर वृक्षों से युक्त विस्तृत भू-भाग या क्षेत्र। 1. **पर्या.** जंगल तु. 2. उपवन।

वन-महोत्सव [वन + महोत्सव (महा + उत्सव] *पुं. (तत्.)* पर्यावरण को शुद्ध रखने के लिए एवं वनों का विस्तार करने के लिए सरकार की ओर से चलाया जाने वाला विशेष रूप से वर्षा-ऋतु में वन और वृक्ष आदि लगाने का विशेष कार्यक्रम।

वनमानुष *पुं. (तद्.)* वानर की एक जाति जो मनुष्य की आकृति वाली होती है, गोरिला।

वन रोपण *पुं.* शा.अर्थ वन का (यानी पेड़ों का) रोपा जाना। (पर्यावरण सुरक्षा के लिए) खुली ज़मीन पर पेड़ लगाकर उसे वन में बदल लेने की व्यापक क्रिया।

वनवास (वन में वास) *पुं. (तत्.)* बस्ती छोडक़र वन (जंगल), में रहना या जीवन-यापन करना। **उदा.** राम को 14 वर्ष का वनवास मिला।

वनवासी *वि. (तत्.)* 'वन का वासी', वन या जंगल में रहने वाला। 2. जिसे वनवास दिया गया हो। 'वनवासी थे राम, राज्य था कानन में भी। सच ही है श्रीमान् भोगते सुख वन में भी।' *पु. (तत्.)* वन या जंगल में रहने वाले लोग या जन (कबीले) **जैसे:** वनवासी जनजातियाँ। 3. मूँगफली आदि का जमाया हुआ तेल एक चिकना घी जैसा पदार्थ/ वनस्पित घी जैसे डालडा आदि।

वनस्पति *स्त्री. (तत्.)* **1.** सा.अर्थ पेड़-पौधे, बेलें या लताएँ आदि। 2. जीवधारियों के दो मुख्य प्रकारों में से वह प्रकार जिसके सदस्य गतिशील नहीं होते और जिनकी कोशिका में उपलब्ध पर्णहरित chalarophil उनके लिए 'भोजन' तैयार करता है।

वनस्पति जगत् सजीव जगत् की दो शाखाओं में से एक जिसके अंतर्गत सभी पेड़-पौधे आते हैं। **पर्या.** पादप जगत् vegetable kingdom flora

वनस्पति-जात (वनस्पति + जात) *वि. (तत्.)* 'वनस्पति यानी वृक्षों एवं लताओं आदि से पैदा होने वाली वस्तुएँ।

वनस्पतिज्ञ वनस्पति विज्ञान का ज्ञाता (जानकार) यानी विशेषज्ञ। **दे.** वनस्पति विज्ञान।

वनस्पति विज्ञान *पुं. (तत्.)* जीव विज्ञान की वह शाखा जिसमें वनस्पति यानी पेड़-पौधों, लताओं आदि का बहुविध (उत्पत्ति स्वरूप, विकास आदि का) अध्ययन किया जाता है। botany *तु.* प्राणिविज्ञान/जंतु विज्ञान।

वनस्पति संग्रहालय *पुं. (तत्. + तत्.)* वह दर्शनीय स्थान जहॉ लगभग सभी प्रकार की वनस्पतियों का संग्रह होता है। यह प्राय: खुले उद्यान के रूप में होता है। harbarium

वनिता *स्त्री. (तत्.)* 1. नारी, स्त्री, तरुणी 2. पत्नी 3. प्रेमिका।

वनोन्मूलन *पुं. (तत्.)* जंगल या वन को अर्थात् वहाँ के पेड़-पौधों को जान बूझकर अथवा गलत नीतियों का अनुसरण करने के फलस्वरूप उजाड़ देने का (अनुचित) कार्य। deforestation.

वन्यजीव *पुं. (तत्.)* वनों में मुक्त विचरण करने वाले प्राणी। **जैसे:** जंगली पशु, पक्षी, सरीसृप आदि।

वफ़ा *स्त्री. (तत्.)* निष्ठा; कर्तव्यपरायणता; स्वामिभक्ति **दे** वफ़ादार **विलो.** बेवफ़ाई।

वफ़ादार [वफ़ा + दार] *वि. (अ.+फ़ा.)* जो वफ़ा या कर्त्तव्य-पालन करने वाला हो। (व्यक्ति या पशु) जो अपने मालिक या मित्र के प्रति कर्तव्य-पालन में निष्ठावान रहे और आपत्ति में भी उसका साथ न छोड़े। **पर्या.** स्वामिभक्त, निष्ठावान, कर्तव्यपरायण। **जैसे:** कुत्ता। **विलो.** बेवफ़ा।

वफ़ादारी *स्त्री.* (अ.+फ़ा.) वफ़ा अ. सा.अर्थ वचन का पालन, निष्ठा, कर्तव्य पालन। 1. वफादार होने की भावना। 2. स्वामिभक्ति, निष्ठा 3. स्वामी या मित्र का तन, मन, धन से साथ देना। 4. कृतज्ञ होने का भाव। **पर्या.** कृतज्ञता, निष्ठा, निर्वाह। **विलो.** बेवफ़ाई, दग़ाबाज़ी, कृतघ्नता।

वमन *पुं. (तत्.)* आमाशय के पदार्थों का मुँह से होकर जबरदस्ती बाहर निकलना यानी उल्टी होना। बाहर निकालने की क्रिया। **जैसे:** विष-वमन। **आयु.** उलटी या कै करना। vomitting

वय *पुं. (तत्.)* 1. बीता हुआ जीवनकाल, अवस्था, उम्र। 2. युवावस्था का आरंभ या उसकी उम्र। **वि.** उम्र जन्म से मृत्यु पर्यन्त किसी भी समय तक के काल को कहते हैं पर वय एक विशेष समय तक के काल को कहते हैं। वय शब्द का स्वतंत्र प्रयोग कम होता है, अधिकतर सामाजिक शब्द ही मिलते हैं।

वयस्क वि. (तत्.) 1. बालिग, 18 साल की उम्र के युवा-युवती। 2. जो निर्धारित वय (उम्र) प्राप्त कर चुका हो, अर्थात् जिसमें अपने घर के व्यापार-धंधों को संभालने की बुद् धि हो (सामान्यत: 18 वर्ष)। 3. पूर्णतया विकसित एवं परिपक्व (व्यक्ति अथवा जीव)।

वयस्क मताधिकार *पुं. (तत्.)* राज. निर्धारित वय प्राप्त कर चुके व्यक्तियों का बिना किसी भेदभाव के मतदान कर सकने का अधिकार और तत्संबंधी व्यवस्था।

वयोवृद् ध [वयस्/वय:+वृद् ध] *वि. (तत्.)* व्यु. अर्थ आयु (वय) में बड़ा (वृद्ध) **विक.** अर्थ सामान्यत: साठ वर्ष से अधिक आयु वाला व्यक्ति। **पर्या.** वरिष्ठ (नागरिक), बूढ़ा senior sitizen

वर *वि. (तत्.)* 1. चुनाव की दृष्टि से श्रेष्ठ उत्तम 2. चुने जाने या पसंद किए जाने के योग्य। **पुं.** 1. कन्या के विवाह के लिए उपयुक्त पात्र, नव विवाहिता स्त्री का पति। 2. स्तुति, सेवा, सुकर्म आदि के फलस्वरूप किसी देवता या महापुरुष द्‌वारा दिया गया आशीर्वचन।

वरक *पुं. (अर.वर्क)* 1. पन्ना (आगे-पीछे के दोनों पृष्ठ) 2. चाँदी या सोने के छोटे से टुकड़े को कूट पीटकर बनाया गया पन्ना जिसे पान, मिठाई आदि पर शोभा के लिए लगाया जाता है। कभी-कभी देव मूर्ति पर भी लगाया जाता है।

वरद *वि. (तत्.)* 1. वर देने वाला। 2. मनोरथ पूर्ण करने वाला। 3. अभीष्ट वस्तु देने वाला।

वरदहस्त *वि. (तत्.)* वर देने की हस्तमुद्रा से युक्त। वर देने वाला। **मुहा.** वरदहस्त होना = कृपालु होना। **जैसा:** मंत्री जी का वरदहस्त होने से उसका कोई कुछ बिगाड़ नहीं सकता।

वरदा *वि. स्त्री.* 1. वर देने वाली, वरदायिनी 2. सरस्वती।

वरदान [वर+दान] *पुं. (तत्.)* वर देना; दिया गया वर। **दे.** 'वर'।

वरन् अन्य *(देश.)* बल्कि, अपितु **जैसे:** विद्‌या से व्यक्ति विद्‌वान ही नहीं होता वरन् धनवान भी होता है।

वरिष्ठ *वि. (तत्.)* 1. जो अपने वर्ग में सबसे बड़ा हो। 2. पद में बड़ा या अन्यों से उच्च या ज्येष्ठ **उदा.** श्री सुयश वरिष्ठ लेक्चरर हैं। 3. वयोवृद्ध। **जैसे:** आज यहाँ वरिष्ठ नागरिकों को सम्मानित किया गया। **विलो.** कनिष्ठ।

वरिष्ठता *स्त्री. (तत्.)* वरिष्ठ होने की अवस्था या भाव। **जैसे:** कर्मचारियों की पदोन्नति वरिष्ठता सूची के अनुसार होगी। **दे.** वरिष्ठ।

वरीयता *स्त्री.* क्रमानुसार, वरिष्ठता।

वरुण *पुं. (तत्.)* 1. जल या पानी का स्वामी-एक वैदिक देवता। 2. सौर परिवार के दूरस्थ ग्रह 'neptune' के लिए प्रयुक्त भारतीय पर्याय।

वर्कशाप *स्त्री. (अं.)* 1. किसी समसामयिक विषय पर आयोजित की जाने वाली विशेष कार्य योजना/कार्यशाला। **जैसे:** आज केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के सी.सी.ई. पाठ्यक्रम से संबंधित एक वर्कशाप का आयोजन किया गया। 2. कारखाना।

वर्ग *पुं. (तत्.)* सा.अर्थ एक ही प्रकार की वस्तुओं अथवा व्यक्तियों का समूह। 1. श्रेणी, 2. दल, 3. विभाग। **1.** गणि (i) समान भुजाओं और समान कोणों वाला चतुर्भुज; (ii) किसी राशि को उसी राशि से गुणा करने पर प्राप्त फल। square **2.** शिक्षा-विद्यालय में पढ़ने वाले छात्रों का विभाजन। **जैसे-** चौथा वर्ग। **पर्या.** दर्ज़ा class 3. व्याकरण एक स्थान से उच्चरित वर्णों का समूह। **जैसे:** कवर्ग, चवर्ग आदि। 4. जीव-जीव वर्गीकरण की इकाई जिसका स्थान संघ group के नीचे और गण order के ऊपर आता है। **उदा.** संधिपादों का कीट वर्ग। class

वर्गीकरण [वर्ग+ई+करण] *पुं. (तत्.)* श्रेणी या वर्गों के अनुसार-वस्तुओं को अलग-अलग बाँटना अथवा विभाजित करना और फिर उन्हें उसी क्रम में लगाना। classification

वर्गीकृत *वि. (तत्.)* वर्णों के अनुसार बँटा हुआ। विभाजित किया हुआ। **जैसे:** वर्गीकृत विज्ञापन पत्र-पत्रिकाओं में वैवाहिक, शैक्षिक, आजीविका संबंधी प्रकाशित विज्ञापन।

वर्चस्व *पुं. (तत्.)* (< वर्चस्) 1. तेज; शक्ति, 2. महत्व, प्रबलता, प्रधानता।

वर्जित *वि. (तत्.)* 1. जिसके संबंध में नियमानुसार या आदेशानुसार मनाही की गई हो, त्याज्य, निषिद्ध। **जैसे:** यहाँ धूम्रपान वर्जित है। 2. त्यागा हुआ या छोड़ा हुआ।

वर्ण *पुं. (तत्.)* 1. वस्तुओं के विभिन्न रंगों के (लाल, पीले, हरे और नीले आदि के) भेदों का वाचक शब्द। 2. वस्तुओं को रँगने वाला पदार्थ अर्थात् रंग। 3. शारीरिक रंग के आधार पर किया जाने वाला विभाजन। **यथा** गौरवर्ण, कृष्ण वर्ण, पीत वर्ण, गोधूम वर्ण आदि। 4. हिन्दुओं में परंपरागत जातिसूचक शब्द। **जैसे**: वर्ण व्यवस्था। जाति-भेद। 5. भाषाओं की वर्णमाला का पारंपरिक लिपिचिह्न अक्षर जो उच्चरित स्वर (ध्वनि) का दृश्य-प्रतीक है। **जैसे-** देवनागरी वर्णमाला के क, च, ट आदि वर्ण; रोमन वर्णमाला के a, b, c आदि; यूनानी वर्णमाला के एल्फा, बीटा, गामा के संकेत चिह्न।

वर्णन *पुं. (तत्.)* 1. कथन 2. किसी बात का कहकर या लिखकर प्रस्तुत लंबा और ब्योरेवार विवरण। description

वर्णनातीत [वर्णन+अतीत] *वि. (तत्.)* जिसका वर्णन न किया जा सके; जो वर्णन से परे हो; जिसका वर्णन किया जाना संभव न हो।

वर्णमाला *स्त्री. (तत्.)* किसी भी भाषा की समस्त स्वर-व्यंजन ध्वनियों के चित्रात्मक लिखित रूपों के समूह को 'वर्णमाला' कहते हैं। **टि.** प्रत्येक भाषा में वर्णों की संख्या भिन्न-भिन्न हैं। **जैसे**: हिन्दी भाषा में 46 वर्ण हैं। अंग्रेजी भाषा में 26 वर्ण हैं। alphabets

वर्णव्यवस्था *स्त्री. (तत्.)* प्राचीन भारत की वह सामाजिक व्यवस्था जिसमें समाज गुण और कर्म के अनुसार ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन चार वर्णों (जातियों) में व्यवस्थित था। प्रत्येक वर्ण के कर्म निर्धारित थे, जिनका पालन प्रत्येक वर्ण के लिए आवश्यक था।

वर्तनी *स्त्री. (तत्.)* उच्चरित शब्द का वर्णमाला क्रम में लिखित रूप। **पर्या.** हिज्जे spelling

वर्तमान *वि. (तत्.)* 1. जो इस समय हो या चल रहा हो। existence 2. उपस्थित, विद्यमान present 3. आधुनिक, आज-कल का। 4. व्याकरण में क्रिया का वह काल जिसमें क्रिया घटित हो रही हो। present indefinite या conntinuous

वर्दी/वरदी *स्त्री. (अ.)* 1. वह समान प्रकार की वेशभूषा या पहनावा जो किसी विद्‌यालय के छात्रों के लिए या किसी विशेष विभाग के कर्मचारियों के लिए नियत हो। uniform **टि.** वर्दी से ही विद्‌यालय या संबंधित विभाग की पहचान हो जाती है।

वर्ना/वरना (अ.) (फा.*वर्नः)* अन्यथा, नहीं तो। **जैसे:** आप मेरा सामान दे दीजिए वरना आपको बहुत परेशानी का सामना करना पड़ेगा।

वर्ष *पुं. (तत्.)* काल गणना में बारह महीनों का या तीन सौ पैंसठ दिनों का समूह। **पर्या.** साल, बरस।

वर्षगाँठ *स्त्री.* [वर्ष+गाँठ(ग्रन्थि] *(तत्.+तद्)* प्रति वर्ष आने वाला जन्मदिन, सालगिरह। **जैसे:** आज मेरे मित्र की वर्षगाँठ धूमधाम से मनाई गई।

वर्षण *पुं. (तत्.)* 1. बरसने की क्रिया या भाव। **उदा.** कृषि हेतु जलवर्षण आवश्यक है। 2. वर्षा होना। पर्याप्त जलवर्षण से खेती अच्छी है। 3. वृष्टि, आकाश से वर्षा के रूप में गिरना। उदा. जलवर्षण, पुष्पवर्षण। **दे.** वर्षा।

वर्षा *स्त्री. (तत्.)* 1. बरसने की क्रिया या भाव। **जैसे:** जल वर्षा, पुष्प वर्षा, बम वर्षा आदि। **पर्या.** वृष्टि। 2. वह ऋतु जिसमें जलवर्षा (पानी की बरसात) होती है, यथा सावन, भादों आदि का समय।

वर्षाऋतु *स्त्री. (तत्.)* छह ऋतुओं में से एक ऋतु जिसका क्रम ग्रीष्म के बाद आता है और जिसमें आसमान से मेघ पानी बरसाते हैं। बरसात, पावस।

वर्षाकाल [वर्षा+काल] *पुं. (तत्.)* 1. बरसात का मौसम, बरसात का समय 2. वर्षा ऋतु। **उदा.** वर्षाकाल में आकाश मेघाच्छन्न हो जाता है।

वलय *पुं. (तत्.)* 1. (गोलाकार) घेरा या मंडल। 2. हाथ में पहनने का कंगन, चूड़ी, छल्ला आदि।

वलित *वि. (तत्.)* 1. जो झुका या मुड़ा हुआ हो। गोलाकार घिरा हुआ; लिपटा हुआ; बल खाया हुआ। 2. भू. पर्वत के तीन प्रकारों में से एक 'वलित पर्वत' जिनकी सतह ऊबड़-खाबड़ तथा शिखर शंक्वाकार (शंकु आकार वाले) होते हैं। **जैसे**: हिमालय, आल्प्स बलित पर्वत हैं। अरावली विश्व की सबसे प्राचीन वलित पर्वत शृंखला है।

वल्कल *पुं. (तत्.)* 1. पेड़ की छाल। 2. पेड़ की वह छाल, जिसे आश्रमवासी तापस एवं तपस्विनी वस्त्र के रूप में पहना करते थे। **उदा.** 1. वल्कलधारी तपस्वी। 2. वल्कलधारिणी शकुन्तला।

वल्द *पुं. (अर.)* (का) पुत्र, बेटा। **जैसे:** विजय वल्द प्रताप सिंह अर्थात् प्रताप सिंह का पुत्र विजय। son of

वल्दियत *स्त्री. (अर.)* 1. माता-पिता के नाम का परिचय। **जैसे:** उस बेचारे की वल्दियत का पता ही नहीं है।

वल्लभी (विश्वविद्यालय) *स्त्री. (तत्.)* गुजरात की एक प्राचीन नगरी जहाँ एक प्राचीन विश्वविद्यालय स्थापित था।

वश *पुं. (तत्.)* 1. किसी को नियंत्रित करने/रखने की शक्ति की सीमा। सामर्थ्य, काबू **जैसे:** उसे रोकना तुम्हारे वश में नहीं है। 2. अधीनत्व, स्वामित्व, कब्जा। **जैसे:** हाथी अंकुश से वंश में किया जाता है। **मुहा.** वशीभूत होना/करना= वंश में आ जाना/कर लेना।

वसंत बहार [वसंत+बहार] *स्त्री. (वसंत+बहार)* वसंत ऋतु की बहार अर्थात् वसंत की शोभा या रौनक। 1. वसंत ऋतु का आनंद 2. वसंत कालीन सुंदर मौसम। 3. संगीत का एक राग। spring

वसन *पुं. (तत्.)* 1. कपड़ा, वस्त्र, परिधान। **उदा.** कटि पर लिपटा था नवल वसन वैसा ही हल्का बुना नील। (जयशंकर प्रसाद कामायनी) 2. रहना, बसना 3. आवरण।

वसा *स्त्री. (तत्.)* **जीव.** लिपिड़ों का मिश्रण जो सामान्य ताप पर ठोस हो जाते हैं। **उदा.** घी, मक्खन आदि। fat

वसा अम्ल *पुं. (तत्.)* **रसा.** कार्बनिक एलिफैटिक अम्ल जिसमें प्राय: सीधी शृंखलाएँ और समसंख्यक कार्बन अणु होते हैं। ये वसाओं और तेलों में पाए जाते हैं। (fatty acid)

वसीयत *स्त्री. (अर.)* मरने के बाद धन-संपत्ति के प्रबंधन के विषय में या वितरण के लिए जीवनकाल में दिया गया अंतिम लिखित निर्देश। **जैसे:** मेरे मित्र की वसीयत के अनुसार उसकी सारी संपत्ति एक ट्रस्ट के नाम कर दी गई है।

वसीयतनामा *पुं. (अर.)* कानून सम्मत वह लेख या पत्र जिसमें वसीयत के समस्त प्रावधान हों। **दे.** वसीयत। will

वसुंधरा *स्त्री. (तत्.)* शा.अर्थ वसुओं (धन, स्वर्ण आदि) को धारण करने वाली। सा.अर्थ पृथ्वी।

पर्या. धरती, वसुधा, वसुमती। सूक्ति वीरभोग्या वसुंधरा।

वसुधा [वसु=मूल्यवान धातुएँ और रत्न+धा-धारण करने वाला/वाली]। *स्त्री. (तत्.)* शा.अर्थ रत्नों को अपने गर्भ धारण करने वाली। पृथ्वी, धरती।

वसूलना *स्त्री. (अर. < वसूल)* स.क्रि. 1. किसी को सौंपी गई वस्तु या धन को वापस लेना। recovery 2. देय कर आदि को नियमानुसार प्राप्त करना। **पर्या.** समाहरण collection

वसूली *स्त्री. (अर.)* 1. लोगों से नियमानुसार अथवा बलपूर्वक प्राप्त की जाने वाली कोई वस्तु धनराशि या अन्य प्राप्ति। collection 2. दूसरे से अपना धन या वस्तु लेने की क्रिया का भाव, उगाही। recovery

वस्तु *स्त्री. (तत्.)* 1. वह जिसका अस्तित्व हो; दिखाई देने वाला वास्तविक पदार्थ। पदार्थ, चीज़। thing, article 2. विवेच्य-विषय **जैसे:** नाटक की कथा-वस्तु, कथानक। content

वस्तुत: *क्रि.वि. (तत्.)* वास्तव में, दरअसल। **जैसे:** वस्तुत: जीवन नश्वर है। in fact, actually

वस्तुनिष्ठ *वि. (तत्.)* जो वस्तु या पदार्थ से (व्यक्ति निरपेक्ष रूप में) संबंधित हो। **पर्या.** वस्तुपरक प्रश्न का **उदा.** इनमें से कौन एक देश का नाम है-भर; भार; भरत; भारत। इस प्रश्न में हल करने वाला कोई भी हो सही उत्तर सदैव एक ही होगा अत: यह वस्तुनिष्ठ प्रश्न है। objective **विलो.** व्यक्तिपरक/निष्ठ subjective

वस्तु-विनिमय *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ वस्तुओं का आदान-प्रदान; वस्तुओं की अदला-बदली। व्यापार की अति प्राचीन व्यवस्था जिसमें मुद्रा का प्रचलन शुरू होने से पहले एक वस्तु के बदले दूसरी वस्तु का लेन-देन होता था। varter

वस्त्र *पुं. (तत्.)* 1. ठंड से बचने के लिए या लज्जा ढँकने के लिए ओढ़ने पहनने आदि के काम आने वाली वस्तु या साधन, परिधान, पोशाक। 2. कपड़ा। **जैसे**: इस दुकान में सूती, रेशमी, खादी तथा ऊनी वस्त्र बने बनाए मिलते हैं।

वस्त्राभूषण [वस्त्र+आभूषण] *पुं.(तत्.)* शरीर में पहनने योग्य सुंदर कपड़े और गहने। **जैसे:** वस्त्राभूषण धारण करके मनुष्य की शोभा बढ़ जाती है।

वहन (करना) *पुं./स.क्रि. (तत्.)* 1. खींचकर, ढोकर, लादकर, उठाकर, एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने की क्रिया का भाव। 2. सँभालना, भार अपने ऊपर लेना, बोझ उठाना। **उदा.** पिताजी की मृत्यु के बाद मेरे बड़े भाई ने परिवार के दायित्वों का भली-भाँति वहन किया।

वहम *पुं. (अर.<वह् म)* 1. मन में होने वाला भ्रममूलक विचार। 2. भ्रम, धोखा 3. शक, संदेह। **जैसे:** तुम्हें वहम है कि तुम किसी रोग से ग्रस्त हो।

वहमी *वि. (अर.)* 1. वहम करने के स्वभाव वाला। 2. शंकालु, शक्की। **दे.** वहम।

वहशी *वि. (अर.>वह् शी)* 1. आदमियों की संगति या मित्रता से दूर रहने वाला, 2. उजड्ड, असभ्य; जंगली, बर्बर।

वहशीपन *पुं. (अर.)* उजड्डपन; पागलों-सा अभद्र व्यवहार, सनक, भय, मानसिक विक्षेप। **उदा.** उसका वहशीपन देखकर सभी को आश्चर्य हुआ।

वांछनीय *वि. (तत्.)* जिसे पाने की इच्छा हो; होने या चाहने की इच्छा करने योग्य। **जैसे:** वांछनीय योग्यता। desirabe **तु.** अनिवार्य योग्यता। **उदा.** कक्षा में शांति बनाए रखना वांछनीय है।

वांछनीयता *स्त्री. (तत्.)* पाने या चाहने की इच्छा रखने की भावना। desirability वांछित *वि. (तत्.)* जिसकी इच्छा की गई हो, इच्छित। **उदा.** पुस्तकों और कापियों को साफ-सुथरी रखना वांछित है। desired

वांछित *वि. (तत्.)* जिसकी इच्छा की गई हो, इच्छित। **उदा.** पुस्तकों और कापियों को साफ-सुथरी रखना वांछित है। desired

वाइरल *वि. (अंग्रे.)* (वाइरल < वाइरस = विषाणु) 1. विषाणु का या उससे सम्बन्धित। 2. ऐसी बीमारी जो विषाणु से पीडित होने पर होती है। **जैसे:** वाइरल fever

वाइरल हिपैटाइटिस *पुं. (अं.)* शा.अर्थ विषाणु द्वारा उत्पन्न यकृत+शोथ। **आयु.** ज्ञात विषाणु, हिपैटाइटिस ए तथा हिपैटाइटिस बी सहित बहुत से विषाणुओं में से किसी एक के द्वारा उत्पन्न सामान्य यकृत शोथ। viral hepatitis **दे.** यकृत शोथ।

वाकई *अ. (अर.>वाकिई)* सचमुच ही वस्तुतः, वास्तव में, इसमें कोई दो राय नहीं (कि)। **उदा.** वाकई आपने हमारी बड़ी मदद की।

वाक़या *पुं. (अर.>वाकिअ:)* 1. घटना, दुर्घटना, 2. वृत्तान्त, हाल; खबर, समाचार। **जैसे**: तुम्हारे साथ जो लूटपाट हुई, वह कब का वाक़या है?

वाकिफ़ *वि. (अर.<वाकिफ़)* जानकार, परिचित, अभिज्ञ। **उदा.** मैं आपके खानदान से पूरी तरह वाकिफ़ हूँ।

वाक् *स्त्री. (तत्.)* 1. मुँह से निकलने वाली सार्थक ध्वनि, वाणी, बोल; वाक्य। 2. बोलने की इद्रिय 3. वाणी की देवी सरस्वती।

वाक्-तंतु *पुं. (तत्.)* गले की वे मांसपेशियाँ जो बोलने में सहायक होती हैं।

वाक्पटु *वि. (तत्.)* बातें करने में या बनाने में कुशल या निपुण। **जैसे:** तुम तो वास्तव में वाकपटु हो।

वाक्य *पुं. (तत्.)* व्याकरण के नियमों के अनुसार क्रम से लगा हुआ कर्ता-क्रिया से युक्त वह सार्थक शब्द समूह जो कथन का पूरा अभिप्राय व्यक्त करता है।

वाक्य विन्यास *पुं. (तत्.)* शब्दों/पदों को यथास्थान रखकर वाक्य का गठन या वाक्य रचना तथा तत्संबंधी अध्ययन।

वागीश [वाक्+ईश] *पुं. (तत्.)* 1. वाक्पटु व्यक्ति, उत्तम वक्ता। 2. बृहस्पति, 3. कवि, 4. ब्रह्मा।

वाग्देवी *[वाक्+देवी] स्त्री. (तत्.)* शा.अ. वाणी की देवी। **सा.अ.** सरस्वती **पर्या.** वागीश्वरी, शारदा।

वाग्यंत्र [वाक्+यंत्र] *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ वाणी उत्पन्न करने वाला यंत्र। फेफड़े से लेकर काकल घोषतंत्रियाँ ग्रसनी (फेरिंग्स, फेरिंजियल केविटी), अलिजिह्वा, मुखविवर (बकल केविटी), नासिका विवर आदि शरीर के अंग जो वाक्-स्वनों के उच्चारण में सहायक है। speech/vocal organs

वाग्युद्ध *पुं. (तत्.)* 1. दो व्यक्तियों या पक्षों में बातचीत के रूप में होने वाली लड़ाई, वाद-विवाद, बहस; गाली-गलौच। 2. ऊँची आवाज़ में कहा-सुनी, **जैसे:** आज कार्यालय में दो कर्मचारियों में परस्पर खूब वाग्युद्ध हुआ।

वाचक *वि. (तत्.)* 1. पढक़र सुनाने वाला, बाँचने वाला। **जैसे:** कथावाचक (भागवत् पुराण का)। 2. सूचक, बोधक, ज्ञान कराने वाला। **जैसे:** व्यक्तिवाचक संज्ञा।

वाचन *पुं. (तत्.)* लिखित अंश को बाँचने या पढ़ने का कौशल, पढ़ना, पाठ करना।

वाचनालय [वाचन + आलय] *पुं. (तत्.)* वह स्थान जहाँ लोगों के पढ़ने के लिए पत्र-पत्रिकाएँ, पुस्तकें आदि रखी रहती हैं। लोग वहाँ बैठकर उन्हें पढ़ सकते हैं। **जैसे:** समुदाय भवन में एक वाचनालय है, जहाँ बैठकर हम समाचार पत्र और पत्रिकाएँ पढ़ते हैं। reading room

वाचाल *वि. (तत्.)* 1. बातें करने में पटु। **उदा.** मूक होंहि वाचाल पंगु चढइँ गिरिवर गहन। 2. बहुत बोलने वाला। बातूनी। 3. व्यर्थ की बातें बोलने वाला। बकवादी। **विलो.** मूक।

वाचिक *वि. (तत्.)* 1. वाणी सम्बन्धी या वाणी से कहा गया। 2. मौखिक, ज़बानी। **जैसे:** लोकगाथाएँ वाचिक परंपरा से ही हम तक पहुँची है। 3. अभिनय का वह प्रकार जिसमें बातचीत के विशेष ढंग का प्रयोग होता है। oral

वाजिब *वि. (अर.)* उचित, मुनासिब। **विलो.** ग़ैरवाजिब।

वाटिका *स्त्री. (तत्.)* 1. फूलों की बगिया, छोटा बाग़, बगीचा। 2. उद् यान। **जैसे:** इस वाटिका में नाना रंग के फूल खिले हुए हैं।

वाणिज्य *पुं. (तत्. > वणिज्)* वणिक् क्रिया (बनिए का काम), व्यापार वृत्ति, व्यापार कर्म, सौदागरी। 1. वस्तुओं को उत्पादन से उपभोक्ता तक पहुँचाने के क्रम में आने वाली समस्त क्रियाएँ। 2. उपर्युक्त समस्त क्रियाओं से संबंधित वैज्ञानिक अध्ययन। commers

वाणिज्यिक *वि. (तत्. वणिज् + इक)* वाणिज्य संबंधी वाणिज्य विषयक। commercial

वाणिज्यिक अनाज कृषि *स्त्री. (वाणि. तत्., अनाज तद् > अन्नद्य कृषि तत्.)* ऐसी कृषि जिसमें फसलें वाणिज्यिक उद्धेश्य से उगाई जाती हैं। **जैसे**: गेहूँ, मक्का इत्यादि। **टि.** वाणिज्यिक अनाज कृषि के प्रमुख क्षेत्र हैं-उत्तर अमेरिका, यूरोप और एशिया के शीतोष्ण घास के मैदान।

वाणिज्यिक कृषि *स्त्री. (तत्.)* निर्वाह कृषि से भिन्न केवल बाज़ार में बेचकर पैसा कमाने के लिए अपनाया गया खेती का प्रकार। इस प्रकार की कृषि के लिए बड़े-बड़े खेतों farm अधिक पूँजी, मशीनों का उपयोग आदि की आवश्यकता होती है। इसमें फसल उत्पादन और पशुपालन दोनों ही सम्मिलित हैं।

वाणी *स्त्री. (तत्.)* मुँह से उच्चरित सार्थक बात। **पर्या.** वाक् (स्पीच)। 1. किसी सिद् ध पुरुष के सारगर्भित वचन। **जैसे:** गुरुवाणी।

वात *पुं. (तत्.)* 1. वायु, हवा **जैसे:** शीततल वात के झोकों से वातावरण नम हो रहा है। 2. *(आयु.)* शरीर में रहने वाले तीन धातुओं में से एक, जिसके कुपित होने से वातजन्य गठिया आदि रोग हो जाते हैं। **टि.** अन्य दो दोष हैं पित्त और कफ।

वातक दे. श्वासनली।

वातानुकूलित [वात + अनुकूलित] *वि. (तत्.)* वात = हवा, वायु। 1. जिसके भीतर की हवा का तापमान अपने शरीर के अनुकूल या समस्थिति में रखा गया हो। 2. ताप नियंत्रित। **जैसे:** वातानुकूलित रेल के डिब्बे, स्थानविशेष या कक्ष आदि। aircondition

वातावरण [वात+आवरण] *पुं. (तत्.)* मूल अर्थ 1. हमारी पृथ्वी को चारों ओर से घेरे रहने वाला वायु का आवरण। **पर्या.** वायुमंडल। **उदा.** हम जिस वातावरण में रह रहे हैं वह बहुत दूषित हो चुका है। 2. किसी भी व्यक्ति, व्यक्ति समूह या समाज के आसपास की सारी परिस्थितियाँ या माहौल जो उसके जीवन को प्रभावित करती है।

वात्याचक्र [वात्या + चक्र] *पुं. (तत्.)* धूल भरी आँधी का चक्राकार उठने वाला पुंज, बवंडर।

वात्सल्य *पुं. (तत्.)* 1. जन्म देने वालों (माता-पिता) का संतान के प्रति होने वाला अपनत्व का भाव। 2. छोटे बच्चों के प्रति होने वाला स्नेहभाव। **जैसे:** सूरदास ने वात्सल्य भाव के पद रचे हैं।

वाद *पुं. (तत्.)* 1. किसी सिद्धांत, पक्ष या तत्व के निर्णय के लिए होने वाला तर्क-वितर्क, शास्त्रार्थ। 2. किसी विषय से संबंधित सिद्धान्तों पर आधारित व्यक्तिगत, संस्थागत या समूहगत विचार-पद् धति। **जैसे:** समाजवाद, गांधीवाद, परमाणुवाद इत्यादि। ism suit । 3. न्यायालय में प्रस्तुत दावा, मुकदमा।

वादक *पुं. (तत्.)* 1. (किसी वाद् य यंत्र को) बजाने वाला। **जैसे:** तबला वादक, सितार वादक आदि। 2. वाद करने वाला, वादी।

वाद-विवाद [वाद+विवाद] *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ वाद और विवाद। 1. किसी विषय के गुण-दोषों का विचार करते हुए निष्कर्ष तक पहुँचने के लिए होने वाला विचार-विमर्श। (डिस्कशन) 2. किसी विषय के पक्ष और विपक्ष में पूर्व निर्धारित समय सीमा में रहते हुए अपने विचारों को तर्कपूर्ण ढंग से प्रस्तुत करने की प्रतियोगिता। debate

वादा ख़िलाफी [वादा+खिलाफ़ी] *(स्त्री.)* (अर.+ फा) 1. वादा करके भूल जाना, 2. वादा तोड़ना, वचनभंग।

वादा/वायदा *पुं. (अर. > वादः)* 1. प्रतिज्ञा, वचन, इकरार। **जैसे:** नेताजी ने विद्यालय खुलवाकर अपना वादा पूरा किया। (प्रॉमिस) 2. किसी कार्य को करने या किसी बात के सत्यासत्य होने की स्वीकृति इकरारनामा undertaking

वादी[1] *वि.(तत्)* 1. न्यायालय में कोई वाद या मुकदमा प्रस्तुत करने वाला। मुद्दई, निवेदक। 2. विचार हेतु एक पक्ष प्रस्तुत करने वाला। **विलो.** प्रतिवादी।

वादी[2] स्त्री.(अर.) 1. घाटी, दो पहाड़ों के बीच का निचला मैदानी भाग जिसमें आबादी बसती है या सिर्फ जंगल होता है। vally 2. नदी तट का मैदान।

वाद्य *वि.(तत्.)* वादन से संबंधित। *पुं. (तत्)* अलग-अलग प्रकार के उपकरण जिनके द्वारा संगीत के स्वर अथवा ताल प्रस्तुत किए जाते हैं। **जैसे:** तबला (ताल वाद्य), सितार (तंतु वाद्य), बांसुरी (सुषिर वाद्य)। **पर्या.** बाजा।

वाद्य यंत्र *पुं.(तत्)* सुन्दर स्वर उत्पन्न करने वाले और ताल देने वाले संगीत के उपकरण। जैसे- तबला, मृदंग, हारमोनियम, ढोलक, वायलिन आदि। musical instrument

वाद्‌य संगीत *पुं.(तत्.)* वह संगीत जिसमें केवल वाद्ययंत्रों को बजाया जाता है और कंठसंगीत नहीं होता। instrumental music

वानप्रस्थ [वन+प्रस्थ<प्रस्थान] *पुं.(तत्.)* आर्यों के चार जीवन-विभागों यानी आश्रमों (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास) में से तीसरा आश्रम जिसमें पचास से पचहत्तर वर्ष की उम्र में वन में जाकर जीवन-यापन करने का विधान होता है। 1. उदासी, संन्यासी। 2. महुए का पेड़।

वानप्रस्थी *पुं.(तत्.)* वन में जीवन-यापन करने वाला व्यक्ति। आधुनिक अर्थ में वह आर्यसमाजी जो गृहस्थाश्रम से संबंध त्यागकर समाज कल्याण के कार्य में लगकर समाज-सेवा और शिक्षण कार्य को अपना लेता है।

वानिकी *स्त्री.(तत्.)* विज्ञान की वह शाखा जिसके अंतर्गत भूमि में वनों को लगाना, जंगली पेड़-पौधों का आरोपण तथा उनके संरक्षण की व्यवस्था की जाती है। **उदा.** मृदा-संरक्षण की दृष्टि से वानिकी महत्त्वपूर्ण है। forestery

वापस *वि.(फा.)* 1. लौटकर पुन: अपने स्थान पर आया हुआ। (व्यक्ति या वस्तु) जैसे हम प्रात: घर से मथुरा जाकर साय वापस घर आ गए। 2. जो (वस्तु, धन आदि) उधार लेने या मांगने के बाद पुन: लौटाया गया हो। जैसे-हमने पुस्तकालय की पुस्तक वापस कर दी।

वापसी *स्त्री.(फ़ा.)* 1. लौटाने या लौटकर आने का भाव। 2. वापस आने या वापस जाने से संबंधित। **जैसे**: वापसी टिकट कब का है? **जैसे:** खरीदी पुस्तक की वापसी।

वाम *वि.(तत्.)* 1. बायाँ। 2. प्रतिकूल, विरूद्‌ध-जब होई विधाता बाम। **विलो.** दक्षिण।

वामन *वि.(तत्.)* जिस व्यक्ति का शारीरिक कद अपेक्षा से बहुत कम हो। **पर्या.** बौना, नाटा, ठिंगना। **पुं.** पुराणों के अनुसार विष्णु का पाँचवा अवतार जिसमें विष्णु ने बटु रूप धारण किया था।

वामपंथ *पुं.(तत्.)* सा.अर्थ बायाँ या उलटा रास्ता। वि.अ.-1. किसी विषय में बहुत उग्र विचारधारा रखने वालों का सिद्‌धांत या वर्ग। 2. तंत्र-साधना की एक पद्‌धति जिसमें पाँच मकारों (मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन) का सेवन होता हैं। यह पद्धति वेदोक्त नहीं है। leftwing **पर्या.** वाममार्ग।

वामपंथी *वि.(तत्)* जो वामपंथ के सिद्‌धांतों से प्रेरित हो या वामपंथ का अनुयायी हो। leftist

वामावर्त [वाम+आवर्त=भंवर, घूमा हुआ] *वि.(तत्.)* 1. घड़ी के विपरीत बायीं ओर को घूमता हुआ। (चक्कर के रूप में) 2. बायीं ओर से घूमकर की जाने वाली (परिक्रमा) 3. वह (शंख) जिसका घुमाव बायीं ओर हो। anti-clock wise

वायरस *पुं.(अं.)* 'विषाणु' का अंग्रेजी पर्याय। 1. अति सूक्ष्म जीवाणु जो मानव शरीर या अन्य प्राकृतिक संरचना को प्रभावित करता है। 2. अनधिकृत और अवांछित दोष जो कम्प्यूटर के कार्य में बाधा पहुँचाकर अपनी प्रतिकृति बना लेता है और एक से दूसरे कम्प्यूटर में चला जाता है। **दे.** विषाणु।

वायलिन *स्त्री.(अं.)* सारंगी के समान एक अंग्रेजी तंतु वाद्‌य।

वायु *स्त्री.(तत्.)* पाँच तत्त्वों में से एक।, हवा।

वायुदाब *पुं. [तत्+तद्.]* वायु के भार द्‌वारा पृथ्वी की सतह पर लगाया गया दाब 'वायुदाब' कहलाता है। **टि.** इसी कारण द्रव पदार्थों का तल समान होता है। air pressuru

वायुमंडल *पुं.(तत्.)* शा.अर्थ वायु का घेरा। भू. पृथ्वी को चारों ओर से घेरे हुए हवा का वह घेरा जो पृथ्वी के गुरूत्व के कारण स्थानबद्‌ध रहता है। यह वायुराशि सूर्य की किरणों के हानिकारक प्रभाव से हमारी रक्षा करती है तथा पृथ्वी के तापमान को रहने योग्य बनाती है। **दे.** वातावरण। atmosphere

वायुमंडलीय दाब *पुं. (तत्.)* पृथ्वी के चारों ओर फैली हुई हवा का दबाव (जिसकी वजह से वह स्थानबद्‌ध रहती है।)

वायुयान *पुं.(तत्.)* आकाश में ऊँचाई पर उड़ने वाला यान, हवाई जहाज। aeroplane

वायुराशि *स्त्री. (तत्.)* वायु की वह घनी चादर जो पृथ्वी को चारों ओर से घेरे हुए है।

वायुरोधी सील *[तत्+अं.] स्त्री.* वायु (हवा) को बाहर निकलने से रोकने वाली सील या रोक।

वारंट *पुं.(अं.)* 1. गिरफ्तारी या घर/कार्यालय आदि की तलाशी हेतु न्यायालय का अधिपत्र। 2. माल, धनराशि, सेवा आदि प्राप्त करने का अनुज्ञापक। 3. सैनिकों को यात्रा हेतु दिया गया आधिकारिक प्रपत्र। warrant

वार *पुं.(तत्.)* 1. चोट, आघात; हमला। **जैसे:** उसने शत्रु सैनिक पर तलवार से वार किया। 2. सप्ताह का दिन **जैसे**: रविवार, सोमवार, मंगलवार आदि। 3. वार, दफ़ा। **जैसे**: वारंवार, त्रिवार। 4. नदी का किनारा, जैसे-वारपार या पारावार।

वार-2 *प्रत्य. (फा.)* 1. क्रम से, **जैसे**: सिलसिलेवार। 2. रखने वाला, **जैसे**: उम्मीदवार। 3. के अनुसार, **जैसे**: महीनेवार, राज्यवार।

वारदात *स्त्री.(अर.)* 1. दुर्घटना, 2. मारपीट, दंगा-फसाद, चोरी इत्यादि। **जैसे**: आजकल चोरी, डकैती, अगवा करना आदि वारदातें बराबर बढ़ती जा रही है। **टि.** 'वरिदात' शब्द अरबी में बहुवचन है (वारिद=घटित होना) परंतु हिंदी में 'वारदात' एकवचन में ही प्रयुक्त होता है।

वारना *स.क्रि.(तद्>*वारण) किसी वस्तु को किसी के सिर के ऊपर से चारों ओर घुमाकर निछावर करना अर्थात किसी को देना या फेंक देना। विशेष-यह क्रिया विवाह आदि हर्ष के अवसरों पर या किसी टोने-टोटके के रूप में की जाती है।

वारान्यारा *पुं. (देश.)* किसी बात या समस्या का पूरी तरह से निपटारा। आर-पार का फैसला। निर्णय, निपटारा। **जैसे:** अब हमें इस समस्या का वारान्यारा करना ही है। **मुहा.** वारे-न्यारे करना/होना=1. बहुत लाभ कमाना, 2. समाप्त करना/होना।

वारिज [वारि=जल+ज=जन्म लेने वाला] जो जल में उत्पन्न हो। *पुं.* 1. कमल, 2. शंख, 3. घोंघा।

वारिस *वि.(अर.)* किसी व्यक्ति की मृत्यु के बाद उसकी संपत्ति का मालिक (स्वामी) बनने वाला व्यक्ति, विरासत पाने वाला। **पर्या.** उत्तराधिकारी।

वारीश [वारि(जल)+ईश] *पुं.(तत्.)* 1. जल का स्वामी, समुद्र। 2. वरुण देवता।

वारीशकन्या *स्त्री.* समुद्रपुत्री, लक्ष्मी देवी।

वार्ता *स्त्री.(तत्.)* 1. बातचीत, 2. समाचार, हाल। किसी विषय का बातचीत के माध्यम से संक्षिप्त विवेचन, छोटा भाषण। **जैसे**: आज दूरदर्शन पर पर्यावरण समस्या पर कुछ विद्वानों की वार्ता प्रसारित हुई।

वार्तालाप *पुं. (तत्.)* (वार्ता+आलाप) शा.अर्थ बातचीत। सा.अर्थ 1. दो या दो से अधिक व्यक्तियों की किसी विषय या समस्या पर बातचीत, संवाद। 2. समझौते की बातचीत। **जैसे:** दोनों देशों को परस्पर वार्तालाप द्वारा ही किसी समस्या का समाधान करना चाहिए।

वार्निश *स्त्री.(अं.)* लकड़ी, लोहे आदि की सतह को चमकदार और मुलायम बनाने के लिए प्रयोग किया जाने वाला घोल जो बरोजा (रेसिन) से बनाया जाता है। ऑयल पेंट में भी इसे मिलाया जाता है। **पर्या.** रोगन। **उदा.** वार्निश करने से फर्नीचर चमकने लगता है।

वार्षिक [वर्ष+इक] *वि.(तत्.)* 1. प्रतिवर्ष होने वाला या एक वर्ष बाद होने वाला। **जैसे**: विद्यालय का वार्षिक उत्सव। 2. जो प्रतिवर्ष के हिसाब से हो। जैसे: सावधिक जमा में वरिष्ठ नागरिकों के लिए 10% वार्षिक ब्याज देय है। 3. वर्ष भर तक चलने वाला। 4. वर्ष में एक बार।

वार्षिक कैलेण्डर [वार्षिक + कैलेण्डर] *पुं. [तत्.+अंग्रे.]* कैलेण्डर=अंग्रेजी तिथिपत्र, सूची। वह पत्र या पत्र समूह जिसमें पूरे एक साल के मास, तिथि, वार तथा अवकाश सूची आदि अंकित होते हैं।

वॉल पेपर *पुं.(अं.)* वह कागज जो दीवारों को सुसज्जित करने के लिए दीवारों पर चिपकाया जाता है तथा उससे फिर दीवारों में सफेदी करने की जरूरत नहीं होती। सामान्यत: यह कागज मजबूत तथा शोभा की दृष्टि से विविध रंग व डिजाइनों का होता है।

वालिद *पुं. (अर.>*वालिद) पिता, बाप।

वालिदा *स्त्री. (अर.)* माता, जननी।

वाशर *पुं. (अं.)* धातु, रबड़, चमड़ा आदि से बना चपटा, गोलाकार छल्ला जो रिसाव को रोकने के लिए नट या ढक्कन के साथ लगाया जाता है। **जैसे**: फुटबाल का वाशर

वाष्प *पुं. (तत्.)* किसी द्रव पदार्थ के गरम होने पर उससे निकलता हुआ गैसीय पदार्थ। **पर्या.** भाप (वेपर)

वाष्पन (वाष्पण) *पुं. (तत्.)* वाष्प (भाप) में परिवर्तित होने की प्रक्रिया। **दे.** वाष्पीकरण/भवन evaporation

वाष्पित *वि. (तत्.)* जिसे भाप देकर गर्म किया गया हो।

वाष्पित्र *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ (i) वाष्प (भाप) में बदलने वाला यंत्र; (ii) भाप छोड़ने वाला यंत्र। **रसा.** एक युक्ति विशेष जिसका उपयोग नम या विलायक पदार्थों को वाष्पित करने के लिए किया जाता है ताकि इसके फलस्वरूप उसे शुष्क उत्पाद में बदला जा सके। **जैसे:** दूध को पाउडर में बदलने वाला यंत्र।

वाष्पीकरण/वाष्पीभवन *पुं. (तत्.)* वह भौतिक प्रक्रिया जिसमें कोई पदार्थ तरल अवस्था से वाष्प अवस्था में परिवर्तित कर दिया/हो जाता है। **जैसे:** पानी को/का भाप में बदलना/बदल जाना। evoporation

वाष्पोत्सर्जन [वाष्प+उत्सर्जन] *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ वाष्प का उत्सर्जन या छोड़ना। (i) वृक्ष या वनस्पति के तने और पत्तियों के रंध्रों से जल-वाष्प का बाहर निकलना। (ii) किसी क्षेत्र विशेष मे किसी खास समय के दौरान वहाँ की वनस्पति से भाप बनकर उसमें जलीय अंश या नमी का कम हो जाना।

वास *स्त्री. (तत्.)* गंध, महक, सुगंध, खुशबू। उदाहरण-जो भी गंधी दे नहीं तो भी वास सुवास। (ला.अर्थ.) भनक, संकेत। **जैसे:** पुलिस को भी वास लग गई है कि...... 1. किसी स्थान पर रहना, निवास। **जैसे**: तीर्थवास, नगरवास, कारावास आदि। 2. स्थान, घर, आवास, निवास। 3. वस्त्र, परिधान।

वासना *स्त्री.(तत्.)* 1. वह संस्कार जो अपने पहले के शुभाशुभ कर्मों के कारण अनजाने में मन पर पड़ा हो, जिससे सुख या दु:ख की उत्पत्ति होती है। 2. लोभ की भावना, अप्राप्त के पाने की इच्छा, कामना। 3. तृष्णा, 4. अज्ञान।

वास्तव *वि.(तत्.)* 1. सत्य, यथार्थ। 2. निश्चित। 3. असल। 4. सचमुच।

वास्तविकता *स्त्री. (तत्.)* 1. वास्तविक या जैसा है वैसा ही होने की स्थिति या भाव, यथार्थता, सच्चाई। fact 2. किसी की वास्तविक वैयक्तिक स्थिति तथा उसकी समस्याएँ reality **जैसे**: यह संस्था बाहर से तो अच्छी दीखती है, पर वास्तविकता तो इसकी और ही है।

वास्ता *पुं. (अर.>वासित:)संबंध,* लगाव, सरोकार। **जैसे:** हमारा तुमसे कोई वास्ता नहीं है। मुहावरा- 1. वास्ता पड़ना=काम पड़ना, जैसे मेरा उस चौकीदार से कभी वास्ता नहीं पड़ा। 2. वास्ता देना=सौंगध खाना, **जैसे**: अल्लाह का वास्ता देकर कहता हूँ कि.......

वास्तु *पुं.(तत्.)* शा.अर्थ (मनुष्यों के बसने के लिए) आवास/मकान/भवन आदि बनाने के योग्य स्थान। 1. रहने योग्य स्थान-गृह, घर, मकान, भवन, इमारत आदि। 2. कोई संरचना जिसे ईंट, चूने आदि से बनाया गया हो। भवन, इमारत, पुल आदि।

वास्तुकर्म/रचना *पुं. (तत्)* गृह, भवन आदि बनाने का कार्य। भवन-निर्माण।

वास्तुकला *स्त्री. (तत्.)* 1. वास्तु या भवन, महल आदि बनाने की कला। **पर्या.** स्थापत्य, वास्तुशिल्प। 2. ललित कलाओं में से एक। architecture

वास्तुकार *पुं.(तत्.)* 1. वास्तुकर्म में प्रवीण या प्रशिक्षित भवन निर्माता।। 2. वास्तु शास्त्र का विशेषज्ञ architect

वास्तुशास्त्र *पुं.(तत्.)* (वास्तु (भवन)+शास्त्र) 1. (ज्यो.) वह शास्त्र जो गृहनिर्माण, दुकान निर्माण आदि से संबंधित आवश्यक सूचनाएँ देता है। **जैसे:** मुख्यद्वार पूजाकक्ष, अध्ययनकक्ष आदि कहाँ किस दिशा में बनाए जाने चाहिए। 2. गृहनिर्माण का शास्त्र।

वास्तुशिल्प [वास्तु+शिल्प] शा.अर्थ गृह, भवन इत्यादि बनाने की कला। वि.अर्थ. भवन निर्माण की वह कला जो भवन, महल, किला, मंदिर आदि के बाह्य एवं आंतरिक संरचना की विविधतापूर्ण विशिष्टता के लिए प्रयुक्त की जाती है।

वाह *पुं. (तत्.)* 1. जल या वायु का बहाव; धारा। 2. खींचने या ढोने वाला, **जैसे:** भारवाह आदि, वाहक। अव्य. (फ़ा.) प्रशंसा, आश्चर्य, निंदा का भाव व्यक्त करने वाला विस्मयादिबोधक शब्द।

वाहक *वि.* वहन करने यानी ले जाने या ढोने वाला। *पुं.* ले जाने या ढोने वाले साधन का चालक। **जैसे:** गाड़ीवान, घुड़सवार, साइकिल

चालक, मोटर/बस/रेल ड्राइवर आदि-आदि। *दे.* वाहन।

वाहन *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ वहन करने वाला, वहनकर्त्ता। कोई पशु या अन्य साधन जिस पर सवारी करके/कहीं जाने का कार्य किया जाए अथवा जिससे सामान आदि ढोने का काम लिया जाए। **पर्या.** सवारी (वेहिकल) **उदा.** घोड़ा, गदहा, रथ, गाड़ी, कार, मोटर साइकिल, साइकिल आदि।

वाहवाह *पुं. (फ़ा.)* बहुत अच्छा, बहुत अच्छा। जैसे- वाह वाह! तुमने क्या गज़ल गायी।

वाहवाही *स्त्री.* [वाहवाह+ई] *(फ़ा.*>वाहवाह) प्रशंसा की उक्ति, लोगों द्वारा की गई प्रशंसा। **पर्या.** साधुवाद। **जैसे**: कविसम्मेलन में कवि नीरज ने खूब वाहवाही लूटी।

वाहित *वि. (तत्.)* 1. ढोया हुआ, वहन किया हुआ। 2. (कृषि.सि.इंजी.) प्रवाहित, बहाया हुआ, सीवर आदि में विसर्जित। **प्रयो.** यमुना नित्य वाहित मल से प्रदूषित हो रही है।

विकट *वि. (तत्.)* 1. भयंकर या डरावनी शक्ल का। **जैसे:** हिम मानव विकट जीव जान पड़ता है। 2. जिसे पार करना कठिन हो, या जहाँ पहुँचना मुश्किल हो। **जैसे**: विकट रास्ता। 3. जिसे सुलझाने में बहुत श्रम करना पड़े या बहुत समय लगे। **जैसे**: मुझे विकट समस्या या स्थिति का सामना करना पड़ा।

विकराल *वि.(तत्.)* जो देखने में बहुत ही डरावना हो। भीषण, भयानक, भयावह। **जैसे:** कुंभकर्ण का विकराल रूप देखकर वानर डर गए।

विकल *वि.(तत्.)* 1. जिसका मन अशांत या दुखी हो, बेचैन, व्याकुल, अधीर। उदाहरण-विकल हो सितैं कपि के मारे। तब जानेसि निसिचर संहारे। 2. अंगहीन, दोषयुक्त, ठीक से काम न करने वाला। (अंग) **जैसे:** विकलांग व्यक्ति।

विकलांग [विकल=कलाहीन/बेकाम+अंग] *वि. (तत्.)* बेकाम हो गए अंग वाला। *पुं.* (व्यक्ति) जिसका कोई अंग बेकाम हो गया हो या अंग-भंग हो गया हो या किसी अंग से रहित या हीन हो या रोग के कारण ठीक से काम न करता हो। आदि। **उदा.** विकलांगों के प्रति सहानुभूति रखना समाज का कर्त्तव्य है। crippled, handicapped आदि।

विकल्प *पुं. (तत्.)* 1. दो या अधिक में से एक का ग्रहण optiom alternative 2. विचार करने का अन्य मार्ग। 3. अनिश्चितता की स्थिति, असमंजस। **उदा.** विकल्प के शिकार मत बनो। **विलो.** संकल्प।

विकसित *वि.(तत्.)* 1. जिसका विकास हो चुका हो या किया गया हो, खिला हुआ। 2. उन्नत। **जैसे**: विकसित वर्ग या देश। **तुल.** विकासशील। **विलो.** अविकसित।

विकार *पुं.(तत्.)* 1. किसी वस्तु, व्यक्ति आदि के सामान्य स्वरूप, गुण, प्रकृति आदि में हुआ परिवर्तन असंतुलन, दोष या गड़बड़ी। **उदा.** पेट में विकार उत्पन्न होने से मेरा मन खिन्न बना रहता है।

विकास *पुं.(तत्.)* सा.अर्थ **1.** किसी विनिर्दिष्ट (बताए गए) समय के उत्तरवर्ती क्रम में किसी सजीव प्राणी/जीव, विचार, भाषा, साहित्य आदि के आकार-प्रकार, विस्तार आदि में हुई बढ़ोतरी। **जैसे:** बालक का युवक के रूप में, अंकुर का पादप रूप में, हिंदी का सार्वदेशिक रूप में हुआ विकास। development, growth, evaluation आदि)। तकनीकी अर्थ-जीव 1. मंद परिवर्तनों का क्रम जो एक जाति को दूसरी जाति में परिवर्तित कर देता है। **जैसे**: 'कपि' **जैसे**: पूर्वजों से 'मानव' जाति का उदय। evaluation 2. आर्थिक दृष्टि से जीवन स्तर में होने वाली उन्नति। इसी मानदंड पर 'विकसित', 'विकासशील' और 'अविकसित' देशों की संकल्पना स्थिर हुई है।

विकासक्रम [विकास+क्रम] *पुं.(तत्.)* विकास का क्रम, आगे बढ़ने का क्रम या अवस्थाएँ, सोपान। **दे.** विकास।

विकासशील *वि. (तत्.)* विकास करता हुआ; विकास के पथ पर अग्रसर। **जैसे**: भारत की

गिनती अब विकासशील देशों में होने लगी है। **दे.** विकास।

विकिरण *पुं.(तत्.)* शा.अर्थ विकीर्ण होने (निकलने/फैलने) का भाव। **भौ. 1.** विद्युत, चुंबकीय तरंगों ध्वनि तरंगों तथा आयनकारी कणों के रूप में ऊर्जा का उत्सर्जन। **उदा.** किरणों के माध्यम से सूर्य के प्रकाश और उसके ताप का पृथ्वी तक पहुँचना। 2. नाभिकीय पदार्थों से घातक किरणों का निकलना। radiation

विकिरित *वि.(तद्.)* 1. बिखेरी हुई, लाई गई। **उदा.** विकिरित ऊष्मा। 2. विकिरण से युक्त। **जैसे**: विकिरित प्रदूषण। **तुल.** विकीर्ण=फैला हुआ, बिखरा हुआ।

विकृत *वि.(तत्.)* वि+कृत व्यु.अर्थ किसी कारण से परिवर्तित। सा.अर्थ **1.** विकारयुक्त, बिगड़ा हुआ। 2. अस्वाभाविक। 3. जो मन या बुद्‌धि से ठीक व्यवहार न करे। विकृत (मानसिकता वाला) व्यक्ति समाज में सम्मान नहीं प्राप्त कर सकता।

विकृति *स्त्री.(तत्.)* **भौ.** बलों द्वारा किसी वस्तु का लंबाई, आयतन अथवा आकृति में घटित परिवर्तन। starin सा.अर्थ 1. विकार ग्रस्तता, बिगाड़। 2. खराबी। 3. मन में होने वाला विकार, क्षोभ या परिवर्तन। 4. काम-वासना। 5. वह रूप जो विकार के बाद मिला हो। deformity, change

विकेंद्रीकरण *पुं.(तत्.)* 1. (समाज) किसी एक व्यक्ति या सत्ताप्रमुख के पास स्थित अधिकार/सत्ता को जनसुविधा या कार्यप्रणाली की सुविधा की दृष्टि से विभिन्न व्यक्तियों या इकाईयों में बांट देना। 2. राज. केंद्र के अधिकारों को राज्य या अन्य छोटी इकाईयों में वितरित करने की प्रक्रिया। decentralization

विक्रम *पुं. (तत्.)* 1. पराक्रम, रणकौशल, शूरता। **जैसे:** अंग्रेजों से युद्‌ध करने में रानी लक्ष्मीबाई का विक्रम प्रशंसनीय था। 2. शक्ति, बल। 3. कदम, पग।

विक्रय *पुं.(तत्)* धन के बदले में किसी को कोई वस्तु देना।, बेचना, बिक्री। **जैसे**: वहाँ पर ऊनी वस्त्रों का विक्रय केंद्र है। sale **विलो.** क्रय।

विक्रेता *पुं.(तत्)* जो विक्रय का कार्य करता हो, बेचने वाला, बिक्री करने वाला। **जैसे:** पुस्तक विक्रेता।

विक्षिप्त [वि+क्षिप्त] *वि. (तत्.)* व्यु.अर्थ **1.** किसी स्थान पर बिखराया या छितराया हुआ। सा.अर्थ **2.** छोड़ा हुआ, त्यागा हुआ। 3. फेंका गया। 4. जिसके मस्तिष्क में किसी प्रकार का विकार हो गया हो, सनकी, पागल, व्यग्र, व्याकुल।

विक्षुब्ध [वि+क्षुब्ध>क्षोभ] *वि. (तत्.)* शा.अर्थ विशेष रूप से क्षुब्ध, जिसें किसी कारणवश क्षोभ उत्पन्न हो गया हो। 1. दु:खी, 2. खिन्न। **जैसे:** विक्षुब्ध मन। agitated विक्षुब्ध सागर trublent

विक्षेप(ण) *पुं. (तत्.)* 1. अपने स्थान से इधर-उधर या दूर फेंका जाना। 2. मन का इधर-उधर भटकना अर्थात उसका संयत न रह पाना।

विक्षेपित *वि.(तत्.)* 1. अपने स्थान से इधर-उधर या दूर फेंका गया। 2. इधर-उधर भटका हुआ मन।

विक्षोभ *पुं.(तत्.)* सा.अर्थ विशेष रूप से पैदा हुई खलबली या व्याकुलता। मन में पैदा हुई उथल-पुथल, घबराहट या व्याकुलता।

विख्यात *वि.(तत्.)* 'विशेष रूप से ख्यात या मशहूर' **पर्या 1.** प्रसिद्‌ध, नामधारी, नामचीन। **विलो.** कुख्यात।

विगत *वि.(तत्)* 1. जो निकल चुका हो, बीता हुआ। **जैसे:** विगत वर्षों में इतनी महँगाई नहीं थी। 2. कुछ ही समय पहले का। **जैसे:** विगत मास में वनोत्सव मनाया गया। 3. निकल गया है जिसमें से (समासयुक्त पद में) विगत गौरव=जिसका गौरव नष्ट हो गया हो।

विघटक *वि./पुं.(तत्.)* विघटन करने वाला कारक (पदार्थ)। Disintegrator **दे.** विघटन।

विघटन [वि=विपरीत+घटन=संयोजन] *पुं.(तत्.)* 1. किसी वस्तु, संस्था या समाज के संयोजक अंगों का इस भांति अलग हो जाना कि वह नष्ट होने लगे। disintegration टूट-फूट हो जाना, बिखरजाना, छिन्न-भिन्न हो जाना। 2. किसी अधिवेशन, सभा का कार्यकाल समाप्त हो जाने पर उसे भंग कर देना। **जैसे**: राष्ट्रपति/राज्यपाप द्वारा लोकसभा/विधानसभा का विघटन कर नए निर्वाचन का आदेश देना।

विघटित [वि+घटित] *वि.(तत्.)* 1. जिसे अलग-अलग विभाजित कर दिया गया हो। **जैसे**: किसी संस्था को कई भागों में विघटित करना। 2. अलग किया गया, वियोजित। 3. छिन्न-भिन्न, नष्ट किया हुआ। **जैसे:** शत्रु द्वारा विघटित सेना। **विलो.** संघटित।

विघ्न *पुं. (तत्)* जिस बात या विषय के बीच में आने से काम में रूकावट आ जाए। **पर्या.** बाधा, अड़चन, कठिनाई।

विचक्षण *वि.(तत्.)* 1. किसी विषय पर पूर्ण अधिकार रखने वाला विद्वान। 2. बुद्धिमान्, 3. दूरदर्शी, 4. कुशल, निपुण।

विचरण *पुं. (तत्.)* 1. चलना-फिरना, 2. भ्रमण करना, पर्यटन, घूमना-फिरना। *वि.(तत्)* पैरों से हीन।

विचरना *अ.क्रि. (तद्.*>विचरण) 1. विचरण करना, इधर-उधर घूमना फिरना, चलना। **जैसे**: मित्र तुम कहाँ विचरते रहते हो, बहुत दिन बाद मिले हो।

विचलन *पुं.(तत्.)* ठीक मार्ग या रास्ता छोड़कर इधर-उधर हो जाना। deviation विचलित होने, पथ-भ्रष्ट होने या भटक जाने की स्थिति।

विचलना *अ.क्रि. (तत्)* 1. अपने स्थान से हटकर इधर-उधर होना। 2. घबराना। 3. अपने कर्त्तव्य, संकल्प, प्रतिज्ञा, सिद्धांत आदि से हटना।

विचलित *वि.(तत्.)* सही सिद्धांत या ठीक मार्ग से हटा हुआ। **जैसे**: प्रकाश की रेखाओं का विचलित होना।

विचार *पुं.(तत्)* 1. मन में पैदा होने वाले भाव, बात या ख्याल, तर्क। 2. तर्कपूर्वक सोची हुई बात, निर्णय, निश्चयात्मक बोध। 3. विचारपूर्वक बनी धारणा। 4. जाँच, परीक्षण। 5. परस्पर विमर्श।

विचारक [विचार+क=करने वाला] *पुं. (तत्.)* किसी विषय पर विचार करने वाला व्यक्ति। **पर्या.** चिंतक।

विचार-गोष्ठी *स्त्री. (तत्.)* किसी विषय विशेष पर विचारों का आदान-प्रदान करने के लिए आयोजित कार्यक्रम। seminar

विचारण [विचार+न] *पुं.(तत्.)* 1. विचार करने की प्रक्रिया, 2. **विधि.** किसी विवाद के बारे में निश्चय पर पहुँचने के लिए न्यायालय द्वारा की गई दोनों पक्षों की सुनवाई। trial

विचारणीय *वि. (तत्.)* 1. (वह विषय या बात) जिस पर विचार करना आवश्यक या उचित हो। 2. जो विचार करने योग्य हो या विचार करने के लिए प्रस्तुत किया गया हो। **जैसे:** स्थानीय पुस्तकालय की व्यवस्था हेतु प्रस्तुत प्रस्ताव विचारणीय है।

विचारधारा *स्त्री.(तत्.)* 1. विचारों का वह क्रम जिसे गहरे चिंतन व मनन के पश्चात उस विषय के विद्वानों के द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। 2. वह निश्चित विचार प्रणाली या विचार पद्धति जो किसी व्यक्ति संस्था, समाज आदि के द्वारा स्वीकृत की जाती है। **जैसे**: गाँधीजी की विचारधारा, बौद्धों की विचारधारा आदि।

विचार-विमर्श *पुं.(तत्.)* सोच-विचार कर तथ्यों या वास्तविकता का पता लगाना; विचारों का मंथन, विचारों का आदान-प्रदान।

विचाराधीन [विचार+अधीन] *वि.(तत्.)* जिसके संबंध में विचार चल रहा हो किंतु अभी निर्णय न हुआ हो। **जैसे**: यह बिल तो अभी संसद में विचाराधीन है।

विचित्र *वि.(तत्.)* 1. रंग-बिरंगा, 2. अनेक प्रकार का, बहुविध।, 3. अजीब, 4. कौतूहलजनक 5. साधारण से अलग।

विचित्रता *स्त्री.(तत्.)* 1. आश्चर्यजनक, विचित्र या विलक्षण होने की अवस्था या भाव। **पर्या.** विलक्षणता, अनोखापन। 2. रंग-बिरंगापन। **जैसे**: भारतीयसंस्कृति की विचित्रता सभी को आकर्षित करती है।

विच्छिन्न *वि.(तत्.)* 1. जिसे काटकर अलग कर दिया गया हो। 2. विभक्त, अलग, 3. छिन्न-भिन्न, समाप्त। **विलो.** अविच्छिन्न।

विच्छेद *पुं.(तत्.)* 1. काटकर या तोडक़र अलग करना या किसी बड़ी चीज़ को तोडक़र टुकड़े-टुकड़े करना या बीच से क्रम टूटना। 2. पृथकता, अलगाव। **जैसे**: सम्बन्ध-विच्छेद। 3. वर्णों या संधियुक्त पदों को अलग-अलग करना। वर्णविच्छेद या संधि-विच्छेद। **विलो.** संधि।

विजय *स्त्री.(तत्.)* द्वंद्व, युद्‌ध या प्रतियोगिता आदि में किसी को हराकर मिली सफलता। **पर्या.** जीत।

विजयी [विजय+ई] *वि. (तत्.)* 1. विजय प्राप्त करने वाला, विजेता। 2. सफलता प्राप्त करने वाला। **विलो.** पराजित।

विजाति *स्त्री. (तत्.)* 1. दूसरी या भिन्न जाति, अन्य जाति। 2. भिन्न वर्ग या किस्म। *वि. (तत्)* 1. भिन्न जाति का। 2. अन्य वर्ग या किस्म का। **पर्या.** विजातीय।

विजातीय *वि. (तत्.)* 1. भिन्न जाति या वर्ग वाला, **जैसे**: विजातीय द्रव्य। 2. अलग किस्म का।

विजेता *वि./पुं. (तत्.)* जीतने वाला या विजयी हुआ व्यक्ति।

विज्ञ *वि.पु.(तत्.)* विषय विशेष की जानकारी या ज्ञान रखने वाला व्यक्ति। **पर्या.** जानकार, विद्‌वान, समझदार (व्यक्ति)

विज्ञान *पुं.(तत्.)* शा.अर्थ विशेष ज्ञान। वि.अ. **1.** किसी विषय का क्रमबद्‌ध एवं तर्कसंगत ज्ञान। 2. किसी विषय, विशेष रूप से जड़ पदार्थों या लौकिक तत्वों, सिद्‌धांतों आदि का वह प्रयोगिक तथ्यपूर्ण विवेचन जो एक स्वतंत्र शास्त्र के रूप में हो। **जैसे**: भौतिक विज्ञान, जीव विज्ञान, खगोल शास्त्र आदि। sciene

विज्ञानवाद [विज्ञान+वाद] *पुं.(तत्.)* (बौद्‌ध) बौद्‌धमतानुयायियों में 'महायान' संप्रदाय का सिद्‌धांत जिसके अनुसार संसार के सभी पदार्थ असत्य हैं फिर भी विज्ञान चित् की दृष्टि से सत्य है।

विज्ञानवादी *वि.* 1. विज्ञानवाद से संबंधित/विज्ञानवाद का। 2. विज्ञानवाद को मानने वाला या अनुयायी।

विज्ञापन *पुं.(तत्.)* 1. किसी बात अथवा तथ्य की विशेष जानकारी देना। 2. ऐसा पत्रक, पट इत्यादि जो किसी विषय की विशेष जानकारी दे। प्रचार माध्यमों से किसी विषय की सशुल्क प्रकाशित की गई विशेष जानकारी। 3. व्यावसायिक प्रचार के साधन। advertisement

विटामिन *पुं.(अं.)* प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, वसा और खनिज अम्लों को छोडक़र अन्य तत्व जो भोजन के आवश्यक घटक होते हैं और शरीर के सुचारू रूप से काम करने में साधन होते हैं। इनकी कमी शारीरिक दोष पैदा करती है। **उदा.** विटामिन 'सी' आँवला में पाया जाता है जिसकी कमी से स्कर्बी रोग हो जाता है।

विडंबना *स्त्री.(तत्.)* 1. किसी की चाल, मुद्राओं आदि की पूरी तरह नकल उतारकर उसे चिढ़ाने या अपमानित करने की क्रिया। 2. छल, 3. हँसी, उपहास। 4. अभीष्ट घटना का असमय होना जिससे वह बुरी लगे। **जैसे**: भाग्य की विडंबना है कि वह दुर्घटना में पंगु हो गया।

वितंडा *स्त्री.(तत्.)* 1. किसी विषय के विवेचन में दूसरों के दोष दिखलाते जाना परंतु अपने मत का उल्लेख तक न करना। 2. (न्याय.) ज़ोर-ज़ोर से केवल अपनी बात कहते जाना और दूसरे की बात बिल्कुल न सुनना; निराधार, दोष दिखलाना तथा अपने समर्थन में हल्के और ओछे तर्क देते रहना। निरर्थक तूतू-मैंमैं।

वितंडावाद *पुं.(तत्.)* निरर्थक युक्ति का सहारा लेकर किया जाने वाला वाद या विवाद।

वितत *वि.(तत्.)* 1. फैला हुआ, विस्तृत, लंबा-चौड़ा (क्षेत्र)। 2. खींचा या ताना हुआ। (धनुष आदि) 3. (संगीत.) चमड़े, डोरी आदि से मँढ़ा हुआ (बाजा) **जैसे**: ढोलक एक वितत वाद्य है। विशेष-ताँत या तार के सहयोग से बजाये जाने वाले वाद् य सितार आदि को तत् वाद्य या तंतु वाद्य कहते हैं। 4. गणितशास्त्र में भिन्न का एक प्रकार- 'विततभिन्न' continued fraction

वितरक *पुं. (तत्.)* वितरण करने वाला, बांटने वाला। **दे.** वितरण।

वितरण *पुं.(तत्.)* सा.अर्थ किसी वस्तु के एकाधिक व्यक्तियों या मदों में बांटने की क्रिया या भाव। distribution

वितरिकाएँ *स्त्री. बहु.(तत्.)* सा.अर्थ बंटी हुई। वि.अर्थ नदियों द्वारा लाए गए अवसाद के जमा हो जाने के कारण मुहाने के पास बनी हुई उपधाराएँ। Distributaries

वितरित [वि+तरित] *वि.(तत्.)* जिसका वितरण किया गया हो अर्थात बांटा हुआ **जैसे:** वितरित-अन्न।

वितल *पुं.(तत्.)* 1. भारतीय पुराणों के अनुसार पृथ्वी के नीचे स्थित सात लोकों में से दूसरा। 2. (भू.वि.) सागर या महासागर में अत्यधिक गहराई पर स्थित निचला तल जहाँ सूर्य का प्रकाश नहीं पहुँच पाता। विशेष-वितल 2200 से 5500 मीटर तक होता है। महासागरों में 2000 मीटर से नीचे स्थित भाग को वितल अम्बुधि कहा जाता है। Abyssal gone

वितान *पुं.(तत्.)* 1. फैलाव, विस्तार; तानने की क्रिया।2. चँदोवा, बड़ा तंबू या खेमा। 3. यज्ञ। शा.अर्थ तृष्णा

वितृष्णा [वि+तृष्णा] *स्त्री.(तत्.)* शा.अर्थ तृष्णा का अभाव, तृष्णा का न होना। सा.अर्थ विरक्ति, उसे सांसारिक वस्तुओं से वितृष्णा हो गई है। 2. अरूचि, घृणा। **विलो.** अनुराग, आसक्ति।

वित्त *पुं.(तत्.)* 1. धन-संपत्ति, 2. राज्य, संस्था आदि की आय और व्यय का विभाग, 3. आर्थिक प्रबंध। **जैसे**: वित्त विभाग/वित्त मंत्रालय। विशेष-आने वाले वर्ष में होने वाली अनुमानित आय के अनुसार होने वाले व्यय का नियमन करने हेतु बजट का निर्माण इसी विभाग द्वारा किया जाता है। finance

वित्तीय *वि.(तत्.)* 1. वित्त संबंधी, अर्थविषयक, आर्थिक 2. वित्त के अनुसार चलने या होने वाला। **जैसे:** वित्तीय वर्ष। (भारत सरकार का वित्तीय वर्ष 1 अप्रैल से 31 मार्च तक का होता है)।

विदर्भ *पुं.(तत्.)* वर्तमान महाराष्ट्र के नागपुर और आसपास के क्षेत्र का पुराना नाम, बरार।

विदा *स्त्री.(अर.)* 1. प्रस्थान, गमन। **जैसे:** विवाह में आये समस्त मेहमान विदा हो गए। 2. किसी स्थान से प्रस्थान करने के लिए आतिथेय, परिवार के वरिष्ठ सदस्य या अन्यों की अनुमति। **जैसे:** दीक्षांत के पश्चात शिष्य ने गुरूजी से विदा मांगी।

विदाई *स्त्री.(अर.)* 1. विदा होने या करने की क्रिया या भाव। 2. विदा के समय मिलने वाला या दिया जाने वाला धन, उपहार आदि। 3. किसी के विदा होने से पूर्व उसके भावी जीवन के प्रति शुभकामना हेतु सामूहिक कार्यक्रम। **जैसे:** विदाई समारोह।

विदारक *वि.(तत्.)* 1. विदीर्ण करने वाला, चीर देने वाला। **जैसे:** हृदयविदारक घटना।

विदित *वि.(तत्)* 1. जाना हुआ, ज्ञात। 2. प्रसिद्ध, विख्यात। **उदा.** धनुही सम त्रिपुरारि धनु, विदित सकल संसार (रामचरित मानस) सर्वविदित (वि.) जो सबको मालूम हो।

विदुषी *स्त्री.(तत्.)* व्यु.अर्थ **1.** वह स्त्री जो किसी विद् या में या विषय में पारंगत हो। सा.अर्थ **2.** विद्या संपन्न स्त्री, पंडिता स्त्री। *पुं.* विद्वान।

विदूषक *पुं.(तत्.)* 1. अपने हावभाव, पहनावा, शारीरिक चेष्टा, बातों आदि से लोगों का मनोरंजन करने वाला। मसखरा। 2. संस्कृत नाटकों में इस प्रकार का एक पात्र जो नायक का अंतरंग मित्र होता है। (आजकल चलचित्रों में भी ऐसा पात्र होता है।) comedian

विदेश [वि=पराया+देश] *पुं.(तत्.)* वह देश जो अपना नहीं है (यानी पराया देश) **विलो.** स्वदेश।

विदेशी *वि.(तत्.)* जो पराए देश/परदेश का हो **जैसे**: विदेशी साबुन; अन्य देश का निवासी **जैसे:** विदेशी अतिथि। **पर्या.** परदेशी/परदेसी।

विदोहन *पुं.(तत्.)* शा.अर्थ दुहने की क्रिया या भाव। 1. प्राकृतिक संसाधनों से अत्यधिक लाभ उठाना। 2. बिना उचित पारिश्रमिक दिए अत्यधिक काम लेना, शोषण।

विद्यमान *वि.(तत्.)* जो अस्तित्व में हो, मौजूद, उपस्थित।

विद्या *स्त्री.(तत्.)* 1. अध्ययन और शिक्षा से प्राप्त होने वाला ज्ञान। 2. वे शास्त्र या विषय जिनमें तत्संबंधी ज्ञान की बातों का विवेचन मिलता है। **जैसे**: रसायन विद् या, संगीत विद्या, तर्क विद्या आदि। 3. भारतीय मान्यता के अनुसार चौदह विद्याएँ मानी गई हैं-चार वेद, छह वेदांग, धर्मशास्त्र, न्याय, मीमांसा और पुराण। 4. दर्शन के अनुसार आत्मज्ञान ही विद्या है अन्य सभी ज्ञानों को अविद् याही कहा गया है। **विलो.** अविद्या।

विद्यार्थी (विद्या+अर्थी) *वि.(तत्.)* शा.अर्थ विद् या चाहने वाला, विद् या का अभिलाषी। (i) य में शिक्षा प्राप्त कर रहा छात्र; (ii) किसी भी विषय का नियमित पाठक। **पर्या.** छात्र, शिक्षार्थी।

विद्यालय [विद्या+आलय] *पुं.(तत्.)* वह भवन जहाँ नियमित रूप से उपस्थित होकर छात्र कक्षाचार शिक्षा अर्जित करते हैं।, पाठशाला (कम उम्र के छात्रों के लिए), विद्यागृह, शिक्षालय, स्कूल।

विद्युत *पुं.(तत्.)* ऊर्जा की एक प्रकार की अभिव्यक्ति जो आविष्ट (आवेशित) कणों के संचालन से पैदा होती है। **पर्या.**बिजली। electricity, lightning

विद्युत-जनित्र *पुं.(तत्.)* 1. बिजली पैदा करने वाला यंत्र या उपकरण। generator

विद्युतदर्शी *पुं.(तत्.)* विद् युत आवेश का पता लगाने वाला उपकरण या यंत्र। electroscope

विद्युत धारा *स्त्री. (तत्.)* विद्युत-उर्जा stap का प्रवाह। current

विद्युत-प्रवाह *पुं.(तत्.)* बिजली की धारा। **जैसे**: विद् युत प्रवाह तारों के माध्यम से होता है। electric current

विद्युत-लेपन *(विद्युल्लेपन) पुं.(तत्.)* किसी पदार्थ पर बिजली की ऊर्जा के द् वारा वांछित धातु को पिघलाकर उसकी परत लगाना या चढ़ाना electroplating

विद्युत विसर्जन *पुं.(तत्.)* शा.अर्थ *बिजली* का छोडा जाना (यानी पैदा होना) आसमान में बादलों में ऋणात्मक एवं धनात्मक आवेशों के मिलने पर पैदा होने वाली चमक (चमकीली धारियाँ) तथा ध्वनि उत्पन्न होने की प्रक्रिया। 2. तड़ित, 2. बिजली कडकना, 3. बिजली गिरना।

विद्युत शक्ति *स्त्री.(तत्.)* बिजली से उत्पन्न शक्ति, जिसका उपयोग कर मशीनें आदि चलाई जाती हैं।

विद्वत्ता *स्त्री.(तत्.)* [विद् वत+ता] 1. विद्वान होने का भाव, 2. पांडित्य, 3. अत्यधिक ज्ञान। **पर्या.** विद्वत्व वैदुष्य

विद्वत्तापूर्ण *वि.(तत्.)* 1. पांडित्य के गुणों से संपन्न। 2. विद्या-विनय से युक्त/ज्ञानसंपन्न।

विद्वान *(विद्वान्) वि.(तत्.)* शा.अर्थ जानने वाला, जानकार। विशिष्ट ज्ञानवान, अत्यधिक शिक्षित। **पर्या.** पंडित। *पुं.(तत्.)* 1. ज्ञानवान व्यक्ति, पंडित।

विद्वेष *पुं.(तत्.)* 1. विद् वेष भाव, शत्रुता, वैर, दुश्मनी। 2. विरोध, 3. घृणा, जलन।

विद्रोह *पुं.(तत्.)* 1. अपनी संस्था, परिवार के प्रति शत्रुतापूर्ण कार्य, द्रोह। 2. दुर्भाग्यवश किया जाने वाला वह भारी उपद्रव जिसका उद्देश्य राज्य को हानि पहुँचाना, उलटना या नष्ट करना हो। **जैसे**: राजद्रोह, देशद्रोह। **पर्या.** बलवा, बगावत। 3.क्रूर शासन को बदलने के लिए सामूहिक/व्यक्तिगत रूप से किया गया द्रोह। **पर्या.** बगावत, गदर।

विद्रोही *वि.(तत्.)* 1. शासन के खिलाफ या किसी अन्याय के विरूद् ध विद्रोह करने वाला। 2. विद्रोहपूर्ण। **जैसे**: वह शासन के खिलाफ विद्रोही स्वर में बोला। 3. विद्रोह से संबंधित। **पुं.** विद्रोह करने वाला व्यक्ति।

विधना *स्त्री.(तत्.)* वह परम शक्ति जो संसार का विधान करती है। होनी, भवितव्यता, ऊद्दष्ट। *पुं. (तत्.)* विधाता, दैव, परमेश्वर।

विधवा [विहीन+धव=प्रति+आ 9 स्त्री प्रत्यय] *स्त्री.(तत्.)* वह स्त्री जिसका पति मर चुका हो; वह महिला जिसका पति जीवित न हो। **पर्या.** बेवा, राँड (अपशब्द के रूप में प्रयुक्त) **विलो.** सधवा।

विधा *स्त्री.(तत्.)* 1. किसी भी कार्य को करने की या क्रिया की रीति। ढंग, तरीका, प्रणाली। 2. किस्म, भेद। 3. उपन्यास, नाटक, कविता आदि साहित्य का कोई प्रकार। **जैसे**: साहित्यक विधाओं के विविध रूप हैं।

विधाता *वि./पुं.(तत्.)* निर्माता, स्रष्टा, रचने वाला, सृष्टिकर्ता (ब्रह्मा; विश्वकर्मा) *स्त्री.* विधात्री।

विधान *पुं. (तत्.)* 1. विधि का निर्माण। legislation 2. *आयु.* स्वास्थ्य में सुधार के लिए बनाई गई सुविचारित योजना जिसमें आहार, औषधि, व्यायाम आदि शामिल होते हैं।

विधान-परिषद् *स्त्री. (तत्.)* राज्यों में द् विसदनी, विधानमंडल में उच्च/ऊपरी सदन। legislative council

विधानमंडल *पुं. (तत्.)* विधियों का निर्माण और उनमें संशोधन आदि करने के लिए संविधान द्वारा प्राधिकृत, अभिकरण। legirlature

विधानसभा *स्त्री. (तत्.)* भारत-संघ के प्रत्येक राज्य में निर्वाचित प्रतिनिधियों की वह सभा जिसे विधान अथवा कानून बनाने का अधिकार प्राप्त है।legislative assembly

विधायिका *स्त्री. (तत्.)* किसी देश के संविधान द्वारा प्राधिकृत विधि निर्माण करने वाला अंग। **जैसे:** भारत गणराज्य के संदर्भ में लोकसभा और राज्यसभा; राज्यों के संदर्भ में विधानसभा, विधानपरिषद। legisleture *तु.* कार्यपालिका, न्यायपालिका।

विधि *स्त्री.(तत्.)* 1. किसी काम को करने का ढंग, तरीका, प्रणाली या रीति। 2. प्राचीन अर्थ शास्त्रम्मत व्यवस्था। 3. आधुनिक अर्थ-वह विधिक व्यवस्था जिसके अनुपालन नागरिक का कर्त्तव्य है और उल्लंघन को रोकना न्यायालय का कर्त्तव्य है। (लॉ) **पर्या.** कानून। 3. भाग्य। **उदा.** विधि की विडंबना 5. सृष्टि का स्वयिता, ब्रह्मा।

विधि-निर्माता *पुं.(तत्.)* नियम, कानून या विधि बनाने वाला। **दे.** विधि।

विधिवत् *क्रि.वि.(तत्.)* 1. विधिपूर्वक या नियमानुसार। 2. जिस ढंग से होना चाहिए, उसी ढंग से। **जैसे**: मैं गीता का विधिवत् पाठ करता हूँ।

विधि-संगत *वि.(तत्.)* 1. विधि के अनुरूप या कानून के अनुसार (कानूनन) 2. न्याय संगत। 2. शास्त्रीय विधियों के विधान के अनुरूप।

विधि-सम्मत *वि.(तत्.)* विधि या नियम के अनुसार; विधित: मान्य, नियमानुकूल, 2. शास्त्रीय विधियों द्‌वारा मान्य। **दे.** विधि संगत।

विधुर *पुं.(तत्.)* 1. वह पुरूष जिसकी पत्नी मर गई हो। 2. दुखी, व्याकुल।

विधेयक *पुं.(तत्.)* संसद, विधानसभा आदि के समक्ष विचारार्थ प्रस्तुत प्रस्ताव का वह प्रारूप (मसौदा/बिल) जो पारित होने के बाद अधिनियम का रूप ले लेता है। bill

विध्वंस *पुं.(तत्.)* पूरी तरह से ध्वस्त कर देने का कुकृत्य, सर्वथा नाश, विनाश, बरबादी।

विनत *वि.(तत्.)* 1. झुका हुआ 2. नम्र, शिष्ट। 2. जिसने किसी के सामने सिर झुका दिया हो, नतमस्तक। **विलो.** उद्‌धत।

विनती *स्त्री.(तद्<*विनति) 1. किसी के समक्ष किया जाने वाला विनयपूर्ण निवेदन, प्रार्थना। 2. ईश्वरीय स्तुति या किसी गुरू, इष्टदेव आदि की स्तुति, नम्र निवेदन। हमारी ईश्वर से विनती है कि तुम शीघ्र स्वस्थ हो जाओ।

विनम्र *[वि+नम्र] वि. तत्.* शा.अर्थ विशेष रूप से नम्र; बहुत झुका हुआ। व्यक्ति के स्वभाव का वह गुण जिसके अनुसार वह दूसरों के प्रति अपने व्यवहार को उग्र नहीं होने देता। **पर्या.** विनीत, विनयशील, नम्र।

विनम्रता [वि+नम्रता] *स्त्री.(तत्.)* विनम्र या विनीत होने का भाव या अवस्था।

विनय *स्त्री.(तत्.)* 1. नम्र होने का यानी अपनी योग्यता को शालीनता से प्रस्तुत करने का भाव। 2. शिष्ट, शालीन और विनम्र आचरण की स्थिति। modesty

विनयपूर्वक *क्रि.वि.(तत्.)* 1. विनय के साथ, विनम्रतापूर्वक, 2. दीनता पूर्वक। **जैसे:** आप से विनयपूर्वक प्रार्थना है कि इस निर्धन बालक को नर्सरी कक्षा में प्रवेश देने की कृपा करें।

विनष्ट *वि.(तत्.)* 1. जो पूरी तरह नष्ट हो चुका हो। ध्वस्त। **जैसे:** प्राचीनकाल में बना यह महल अब विनष्ट हो चुका है। 2. बर्बाद। **जैसे:** दुर्व्यसनों से उसने अपना जीवन विनष्ट कर लिया। 3. मृत=विनष्ट देह।

विना *अव्यय. (तत्.)* 1. अभाव में, न होने पर, बगैर। **जैसे:** विना परिश्रम के उत्तम फल नहीं मिलता। 2. बिना, 3. अतिरिक्त, अलावा। **जैसे:** तुम्हारे बिना यह कार्य कोई नहीं करेगा।

विनायक *पुं.(तत्.)* 1. विशेष गुण संपन्न नायक। 2. गणेश (शिव-पार्वती का पुत्र)

विनाश [वि+नाश] *पुं.(तत्.)* 1. इस तरह का नाश कि उसका वैसा ही पुनर्निर्माण संभव न हो और हो तो भी अत्यंत दुष्कर। 2. अस्तित्व ही न रहना, 3. प्राकृतिक प्रकोप (अतिवृष्टि, बाढ़, सूखा, आग तथा भूकंप आदि) के कारण होने वाली भीषण क्षति। **उदा.** भयानक भूकंप या भीषण बाढ़ के कारण हड़प्पा सभ्यता का विनाश हुआ।

विनाशकारी [विनाश+कारी] *वि.(तत्.)* 1. किसी व्यक्ति, वस्तु, गुण, आदि का विनाश करने वाला। विनाशी, विनाशक। 2. मार डालने वाला। **जैसे:** यह विनाशकारी अस्त्र है।

विनाशी *वि.(तत्.)* 1. नाश करने वाला, विनाशक। 2. नष्ट होने वाला, नश्वर। **जैसे**: यह शरीर तो विनाशी है। 3. बिगाड़ने वाला।

विनिमय *पुं.(तत्.)* 1. एक वस्तु के बदले में दूसरी वस्तु देना। परिवर्तन, अदल-बदल barter 2. वह प्रक्रिया जिसके अनुसार दो पक्षों या देशों का आपसी लेन-देन निश्चित होता है। intercharge 3. एक देश की मुद्रा का दूसरे देश की मुद्रा में परिवर्तन। exchange **जैसे:** विनिमय एक व्यावहारिक आर्थिक सिद्‌धांत है।

विनिर्माण [वि+निर्माण] *पुं.(तत्.)* 1. वस्तुओं को बडे पैमाने पर और गुणवत्ता के साथ बनाने का भाव या क्रिया। manufacture 2. भवन निर्माण, उद्‌योगों के विस्तार आदि के लिए किया गया निर्माणकार्य।

विनीत *वि.(तत्.)* 1. विनय से युक्त, विनम्र, 2. शिष्ट, सुशील।

विनोइंग *स्त्री.(अं.)* ओसाने की क्रिया, ओसाई, फटकना।

विनोद *पुं.(तत्.)* 1. वह बात या क्रिया जिसे सुनकर या देखकर मन खुश होता हो। मनोविनोद, मनोरंजन। 2. हास-परिहास, 3. प्रसन्नता।

विन्यास *पुं.(तत्.)* 1. सही क्रम से रखना, लगाना या स्थापन। 2. रचना, बनावट, रूपरेखा; काव्य सौंदर्य। **जैसे**: उपन्यास का वस्तु विन्यास।

विपक्ष *पुं.(तत्.)* शा.अर्थ विरोधी या अन्य पक्ष; प्रतिद्वंद्वी। **राज.** सत्तासीन राजनीतिक दल की नीतियों और कार्यकलाप से सहमत न होने या विरोध करने वाला अन्य राजनीतिक दल या कई दलों का समूह। **विलो.** पक्ष।

विपक्षी *वि./पुं. (तत्.)* दूसरे पक्ष का विरोधी पक्ष वाला। (व्यक्ति या सदस्य)

विपत्ति *स्त्री.(तत्.)* 1. ऐसी घटना अथवा परिस्थिति जिसके कारण चिंता या हानि की प्रत्यक्ष संभावना बना जाए। **पर्या.** आपदा, विपदा, संकट, आफ़त, मुसीबत। **मुहा.** (i) विपत्ति का पहाड़ टूटना, (ii) विपत्ति झेलना। (iii) विपत्ति में पड़ना। (iv) विपत्ति मोल लेना।

विपदा *स्त्री.(तत्.)* **दे.** विपत्ति। **उदा.** रहिमन विपदा हू भली जो थोरे दिन होई। हित-अनहित या जगत में, जानि परत सब कोई।

विपदाग्रस्त *वि.(तत्.)* (विपदा+ग्रस्त) 1. विपत्ति से ग्रस्त या पीडित। 2. संकट में पड़ा हुआ। **जैसे**: अकालपीड़ित किसी भी क्षेत्र को सरकार विपदाग्रस्त घोषित करती है।

विपरीत *वि.(तत्.)* जैसा होना चाहिए उसका विलोम या उल्टा। उलटा, प्रतिकूल, भिन्न, बेमेल। **विलो.** अनुकूल।

विपुल *वि.(तत्.)* 1. संख्या या परिमाण में बहुत अधिक। **जैसे:** अनाथों की सहायता के लिए विपुल धनराशि दी। 2. विस्तृत, विशाल, घना।

विप्र *पुं.(तत्.)* 1. पढ़ा-लिखा, ब्राह्मण। 2. पुरोहित, 3. मेधावी, विद्वान।

विप्लव *पुं.(तत्.)* स्थापित सत्ता या सरकार के विरूद्ध खुला विद्रोह। *तु.* राजद्रोह, विद्रोह।

विफल *वि.(तत्.)* 1.फल से रहित, बिना फल का। 2. जो अपने लक्ष्य की प्राप्ति में सफल न हुआ हो, असफल। **जैसे:** वह नदी पार करने में विफल रहा। 3. व्यर्थ, निरर्थक। **विलो.** सफल।

विफलता *स्त्री.(तत्)* विफल होने की स्थिति या भाव। असफलता।

विभक्त *वि.(तत्.)* 1. जिसके विभाग किए गए हों, विभाजित, बाँटा हुआ। **जैसे:** यह मंत्रालय दो भागों में विभक्त है, शिक्षा और संस्कृति। 2. अलग किया हुआ। उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश से विभक्त हुआ एक स्वतंत्र प्रांत। 3. जो अलग हो गया हो। बांग्लादेश, पाकिस्तान से विभक्त हो गया।

विभाग *पुं.(तत्.)* शा.अर्थ विभाजन, खंड, अंश। distribution, division सा.अर्थ सुविधा या प्रबंध के लिए कार्य का अलग किया हुआ क्षेत्र, महकमा। department 2. किसी संस्था या संगठन के विभिन्न विभाग। **जैसे:** विश्वविद्यालयों में हिंदी विभाग, अंग्रेजी विभाग आदि। 3. कार्यसंचालन की दृष्टि से कार्य का छोटी इकाई, एकक। section

विभागाध्यक्ष *पुं.(तत्.)* (विभाग+अध्यक्ष) 1. किसी कार्यक्षेत्र या महकमे का अध्यक्ष। 2. किसी विभाग का सर्वोच्च अधिकारी। **जैसे:** विश्वविद्यालय में हिंदी शोधकार्य के लिए हिंदी विभागाध्यक्ष से मिलें। head of the department

विभागीय *वि.(तत्.)* (विभाग+ईय प्रत्यय) जो किसी विभाग से संबंधित हो, विभाग का। जैसे: यह विभागीय मामला है।

विभाजन *पुं.(तत्.)* 1. अलग-अलग वर्गों में बाँटना। जैसे-कार्य का विभाजन अनुभव के आधार पर किया गया है। 2. (धन संपत्ति का) विभाग करना। **जैसे:** पिता ने अपनी संपत्ति का समान विभाजन कर दिया।

विभाजन रेखा *स्त्री.(तत्.)* बाँटने या अलग-अलग करने वाली रेखा। **जैसे:** चीन और भारत के बीच में कल्पित विभाजन रेखा 'मैक मोहन रेखा' कहलाती है।

विभाजित *वि.(तत्.)* अलग-अलग किया हुआ; बँटा हुआ, बाँटा हुआ। **दे.** विभाजन।

विभिन्न *वि.(तत्.)* 1. तोड़ा हुआ, टुकडे किया हुआ, फाड़ा हुआ, छिन्न। 2. मूल से अलग किया हुआ। 3. विविध प्रकार का; विविध बहुत से। **जैसे:** यहाँ विभिन्न भाषा-भाषी रहते हैं।

विभिन्नता *स्त्री.(तत्.)* 1. विभिन्न होने की स्थिति या भाव। 2. अन्तर, भेद। कई प्रकार के होने आदि को व्यक्त करने का सूचक भाव। **जैसे:** भारत में भाषा, धर्म, वेश की विभिन्नता होने पर भी सांस्कृतिक एकता है।

विभूति *स्त्री. (तत्.)* 1. अधिकता। 2. ऐश्वर्य, धन-संपत्ति।, 3. दिव्य शक्ति। 4. असाधारण, विशेष गुणों, शक्तियों, ऐश्वर्य आदि से संपन्न कोई महापुरुष। **जैसे:** इस देश में महात्मा गांधी, जैसी महान विभूति ने जन्म लिया है। 5. यज्ञ की अवशिष्ट राख या भस्म।

विभूषित [वि+भूषित] *वि.(तत्.)* 1. गहनों इत्यादि से सजाया हुआ, सुशोभित। **पर्या.** अलंकृत।

विमर्श *पुं.(तत्.)* किसी विषय, वाद आदि पर तर्कतापूर्ण चिंतन, सोच-विचार अथवा तथ्यपरक परीक्षण। 1. विचार 2. विवेचन, 3. आलोचना, समीक्षा, 4. अध्ययन, परीक्षण, 5. तर्कयुक्त ज्ञान आदि। deliberation **टि.** साहित्यिक जगत में आजकल इस शब्द का व्यापक प्रयोग हो रहा है। **जैसे**: स्त्री विमर्श, दलित विमर्श आदि।

विमाता *स्त्री.(तत्.)* 1. पिता की दूसरी पत्नी, माता की सौत। 2. सौतेली माँ। **जैसे**: राम की विमाता कैकेयी थी। step mother

विमान *पुं. (तत्.)* 1. आकाश मार्ग में उडक़र चलने वाला विशेष यान, वायुयान, हवाई जहाज। **जैसे:** पुष्पक विमान। 2. किसी महात्मा या वयोवृद्ध आदि के शव की फूलमालाओं से सजी हुई अर्थी। 3. देवी-देवताओं की पालकी। 4. रथ।

विमुक्त *वि.(तत्.)* शा.अर्थ छोड़ा हुआ, छुटकारा पाया हुआ। सा.अर्थ 1. जो किसी बंधन, दायित्व या कारागार से मुक्त या स्वतंत्र किया गया हो, 2. जिसे किसी आरोप से मुक्त कर दिया गया हो, बरी। **जैसे**: विमुक्त कैदी। 3. कार्यभार से मुक्त।

विमुक्ति *स्त्री.(तत्.)* 1. कैदी की जेल से रिहाई या सजा से मुक्ति। 2. किसी समस्या, संकट आदि से छुटकारा, मुक्ति। 3. किसी नियम, बंधन या किसी जिम्मेदारी से छुटकारा। 4. मुक्ति, मोक्ष, **जैसे:** विमुक्ति का मार्ग अत्यंत कठिन है।

विमुख *वि.(तत्.)* शा.अर्थ मुँह फेरे हुए, पराङ्मुँख। वि.अर्थ अनिच्छुक, उदासीन। indifferent averse

विमुखता *स्त्री.(तत्.)* मुँह फेर लेने का भाव यानी इच्छा न होने/रखने की अवस्था; उदासीनता। aversion

विमूढ़ *वि.(तत्.)* 1. भ्रम में पड़ा हुआ, मोहग्रस्त। 2. मूर्ख, नासमझ, अज्ञानी। **जैसे:** कृष्ण ने अर्जुन से कहा तुम अपने कर्तव्य को समझो, विमूढ़ मत बनो।

विमोचन *पुं.(तत्.)* शा.अर्थ गाँठ खोलना। किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति के हाथों किसी नव प्रकाशित पुस्तक पर लपेटे गए वस्त्र या पन्नी पर बंधे सूत्र की गाँठ खोलकर उसे उपस्थित जनता के सम्मुख प्रदर्शित करना। इस औपचारिक समारोह के बाद उस पुस्तक की बिक्री प्रारंभ हो जाती है। inaugration **तु.** उद्‍घाटन, लोकार्पण। लोकार्पण (लोक+अर्पण) *पुं.* किसी सार्वजनिक प्रयोजन के लिए निर्मित भवन या सेवा को किसी स्थापति विद्‍ववान अथवा प्रसिद्ध महानुभाव के हाथों शुभारंभ। **जैसे:** मैट्रो रेल सेवा का लोकार्पण। *तु.* उद्‍धाटन, विमोचन।

वियोग *पुं.(तत्.)* 1. किसी से अलग होने या बिछुड़ने की क्रिया, अवस्था या भाव। जैसे-मित्र का वियोग असहय होता है। 2. प्रिय व्यक्ति से मिलन न हो पाने की अवस्था, विरह। जैसे-पति के परदेश चले जाने से पत्नी उसके वियोग से दु:खी है। **विलो.** संयोग। 2. (गणित) घटाने की क्रिया। **विलो.** योग।

विरंजक *पुं.(तत्.) वि.* रंग फीका करने वाला, वह रसायन जो वस्तु के रंग को फीका कर देता है, bleaching powder

विरंजन *पुं.* रसायन का उपयोग कर किसी वस्तु को रंगहीन करने अथवा सूर्य के प्रकाश से किसी वस्तु के मूल रंग के फीका पड़ने की प्रक्रिया। bleaching

विरक्त *वि.(तत्.)* शा.अर्थ लालिमा से रहित; बदरंग। (i) सांसारिक राग या लालसा से मुक्त, माया के मोहबंधन से मुक्त। (ii) जिसकी किसी वस्तु आदि में आसक्ति न रही हो। **विलो.** अनुरक्त।

विरक्ति/विराग *स्त्री.(तत्.)* सांसारिक राग द्‍वेष से मुक्त, मोहबंधन के प्रति उदासीन। वैराग्य, उदासीनता। detechment **विलो.** अनुरक्ति।

विरत *वि.(तत्.)* 1. जिसमें लगाव की भावना समाप्त हो गई हो, दूर रहने वाला, विमुख। **पर्या.** विरक्त, संन्यासी। **विलो.** रत। 2. जो कार्य से अलग हो गया हो या जिसने कार्य छोड़ दिया हो। **पर्या.** निवृत्त। retired

विरल *वि.(तत्.)* 1. जिसके बीच में अंतराल हो; जो सघन न हो; 1. दूर-दूर स्थित, छितराया हुआ। **जैसे:** विरल आबादी वाला क्षेत्र। 2. जो बहुतायत में न मिले; कभी-कभी; नहीं के बराबर। **पर्या.** बिरला, दुर्लभ। **जैसे**: हीरा एक विरल मणि है।

विरला *वि.(तत्*<विरल) जो बहुत कम या केवल कहीं-कहीं मिलता हो, कम मिलने वाला, निराला, दुर्लभ, अनूठा। **उदा.** महात्मा गांधी जैसा व्यक्ति तो कोई विरला ही मिलेगा।

विरह *पुं.(तत्.)* (स्त्री. विरहिणी) किसी से विशेषत: अपने आत्मीय से (पति/पत्नी, पुत्र आदि से) लंबे समय के लिए अलग होने की स्थिति, जिससे दोनों को कष्ट होता हो।, वियोग, जुदाई। sepration form the darling **विलो.** मिलन।

विराजना *अक.क्रि.(तत्.)* 1. शोभित होना, 2. बैठना (दूसरों के लिए आदरसूचक प्रयोग) 2. उपस्थित होना। **जैसे**: महाराज सिंहान पर विराज रहे हैं।

विराजमान *वि.* विराजित, बैठी हुई। **जैसे**: वाक् देवी देवी सरस्वती, हंस पर विराजमान हैं। **दे.** विराजना।

विराट (विराट्) *वि. (तत्.)* 1. बहुत बड़ा, विशाल। जैसे-विराट आयोजन, विराट सभा।

विराम *पुं.(तत्.)* 1. कार्य तथा गति आदि में अल्पकालिक अथवा पूर्णकालिक रूप जानने की स्थिति, ठहराव। (पॉज़, स्टॉप, रेस्ट) 2. वाक्य बोलते समय पदयोजना के अनुसार बीच-बीच में श्वास की गति के अनुसार, क्षणिक, रुकावट। 3. किसी टी.वी. कार्यक्रम के बीच-बीच में कई बार आने वाली रिक्ति जिसकी पूर्ति विज्ञापनों से होती है। commerical brake

विराम-अवस्था *स्त्री.(तत्.)* वह स्थिति जिसमें रुकना पड़े, ठहराव की अवस्था या स्थिति; विश्राम का अवसर।

विरामचिह्न *पुं.(तत्.)* वाक्य लिखते समय या मुद्रण के समय प्रयोग किए जाने वाले वर्णोत्तर चिह्न जो पद, वाक्यांश के अर्थबोध के अनुसार विराम आदि का निर्देश देते हैं; **जैसे:** अर्धविराम, पूर्णविराम, प्रश्न चिह्न आदि। punctuation marks

विरासत *स्त्री. (अर.)* शा.अर्थ वारिस उत्तराधिकारी होने का भाव। सा.अर्थ पैतृक वंश परंपरा से प्राप्त उत्तराधिकार। **पर्या.** दायाधिकार, रिक्थाधिकार। **जैसे**: उसे यह जायदाद विरासत में मिली है। वारिस होने के नाते मृतक की संपत्ति प्राप्त होने का अधिकार। **पर्या.** उत्तराधिकार।

विरासतनामा *पुं.(अर.+फ़ा.)* उत्तराधिकारपत्र।

विरुद्ध *वि.(तत्.)* जो विरोध में हो; जो अनुकूल न हो, प्रतिकूल, खिलाफ़, के विरूद् ध। **उदा.** मेरे विरूद्ध

विरोध *पुं.(तत्.)* 1. अनुकूल न होने का भाव या स्थिति। **पर्या.** प्रतिकूलता। 2. किसी कार्य को न होने देने या पूरे हुए काम को उलटने का प्रयत्न। opposition 3. व्यक्तिगत या सिद् धांतगत शत्रुता का भाव। **पर्या.** वैर, दुश्मनी। hostality

विरोधाभास [विरोध+आभास] *पुं.(तत्.)* विचारों, तर्कों, विचारधाराओं आदि में प्रतीत होने वाला परस्पर विरोध का भाव।

विरोधी *वि.(तत्)* विरोध करने वाला (व्यक्ति); प्रतिपक्ष दल का (सदस्य), प्रतिस्पर्धा या होड़ करने वाला। **जैसे:** दो विरोधी दल आमने सामने है।

विरोधीदल *पुं. (तत्.)* 1. किसी व्यक्ति, विचारधारा राज.दल आदि के विरोध में आवाज़ उठाने वाला (जनसमूह) 2. विधायिका (लोकसभा, विधानसभा, नगर निगम आदि) में सत्तापक्ष के अतिरिक्त मान्यता प्राप्त अन्य दल। opposition party विपक्षी दल।

विलंब *पुं.(तत्.)* नियम या निर्धारित समय के बाद होने वाला (कार्य)। **उदा.** वह अपने कार्यालय विलंब से पहुँचा। अवधि से अधिक समय लेने वाला कार्य। **उदा** बहुत विलंब हो गया है, अब तो निकलो।

विलक्षण *वि.(तत्.)* शा.अर्थ जिसका लक्षण (कारण, स्वरूप आदि) विशिष्ट हो या बताया न जा सके।

सा.अर्थ 1. अद्भुत, विचित्र। 2. असाधारण, अद्वितीय; विशेष विशिष्ट लक्षणों वाला।

विलक्षणता *स्त्री.(तत्.)* विलक्षण होने की भावना। **दे.** विलक्षण।

विलय *पुं.(तत्.)* 1. एक वस्तु का दूसरी वस्तु में मिल जाना, घुल जाना या समा जाना। 2. एक देश, राज्य या दल का पड़ोसी बडे देश/राज्य या बड़े दल में मिलकर एक हो जाना अथवा मिलाकर एक कर दिया जाना। merger, विलयन। *पुं.(तत्.)* 1. विलीन या घुल-मिल जाने की क्रिया या भाव। 2. इस तरह मिलकर एक हो जाना कि दूसरे का अस्तित्व ही न रहे। dissolution

विलाप *पुं.(तत्.)* 1. जोर से चीखकर या रोकर शोक प्रकट करना। 2. रोना, रुदन।

विलायत *पुं.(अरबी)* बहुत दूर का देश या समुद्र पार का कोई दूरस्थ देश। **जैसे**: भारत में इंग्लैंड, अमेरिका, फ्रांस आदि देश विलायत कहे जाते हैं।

विलायती *(वि.)* विलायत का, विलायत से आया हुआ। **जैसे**: विलायती सामान।

विलास *पुं.(तत्.)* 1. ऐश्वर्यपूर्ण भोग, सांसारिक सुखसाधन। 2. ऐश, मौज़ का जीवन, विषयभोग से युक्त जीवन। 3. स्त्री के कामोत्तेजक हाव-भाव। **जैसे:** भूविलास।

विलासी *वि.(तत्.)* 1. सांसारिक सुखों के उपभोग में लगा रहने वाला पुरुष। 2. क्रीड़ाशील, विनोदप्रिय, 3. रसिक, कामी। **उदा.** बिना परिश्रम से प्राप्त धन व्यक्ति को विलासी बना देता है।

विलीन *वि.(तत्.)* 1. जो किसी पदार्थ में घुल-मिल गया हो। **जैसे**: दूध में चीनी विलीन हो जाती है। पानी में नमक विलीन हो जाता है। 2. जो (राज्य या देश) अपनी स्वतंत्र सत्ता खोकर दूसरे में मिल गया हो। 3. छिपा हुआ। **जैसे**: पेड़ों के पीछे विलीन सूर्य को किसी ने नहीं देखा। 4. नष्ट। **जैसे**: पुरानी द्वारका समुद्र में विलीन हो चुकी है।

विलुप्त *वि.(तत्.)* जिसका लोप हो गया हो, जो छिप गया हो, जो खो गया हो। खोया हुआ, लुप्त।

विलेयता *स्त्री.(तत्.)* (रसा.) किसी द्रव, ठोस या गैसीय पदार्थ की किसी द्रव या गैस में घुल जाने की क्षमता या प्रवृत्ति। **टि**. अलग-अलग द्रवों में पदार्थ की विलेयता अलग अलग हो सकती है। solubility

विलोप *पुं.(तत्.)* 1. किसी वस्तु का लोप, गायब या अदृश्य होने का भाव। 2. अभाव, 3. नाश। **जैसे**: आज प्राचीन परंपराओं का धीरे-धीरे विलोप हो रहा है।

विलोम *वि.(तत्.)* 1. विपरीत अर्थ वाला। **जैसे:** सज्जन-दुर्जन, पुण्य-पाप, शीत-उष्ण। 2. क्रम की दृष्टि से ऊपर से नीचे की ओर आने वाला। 3. सामान्यत: परिपाटी के विरूद् ध होने वाला। (कार्य)

विवरण *पुं.(तत्.)* 1. विषय विशेष के बारे में व्यवस्थित व्यापक सूचना। statment 2. समझाने के लिए किसी बात का वर्णनात्मक उल्लेख। discription

विवश *वि.(तत्.)* जिसे अन्य व्यक्ति या परिस्थिति के कारण कोई अनिच्छित कार्य करना पड़े।, लाचार, मज़बूर, बेबस।

विवशता *स्त्री.(तत्.)* विवश होने का भाव या स्थिति। **दे.** विवश।

विवाद *पुं.(तत्.)* 1. झगड़ा, कलह। 2. कहासुनी, वाग्युद्ध। 1. जिसे लेकर परस्पर विरोधी दावे हों। dispute 2. एकमत होने का अभाव, परस्पर मतभेद। *तु.* वाद, प्रतिवाद, प्रवाद।

विवादास्पद [विवाद+आस्पद=आधार] *वि.(तत्.)* शा.अर्थ (वह व्यक्ति या विषय) जो विवाद, मतांतर या झगड़े का आधार या आश्रय बने। **जैसे**: विवादास्पद व्यक्तित्व, विवादास्पद विषय।

विवाह *पुं.(तत्.)* पति-पत्नी के रूप में साथ रहने, संतानोत्पत्ति करने आदि की कालातीत और सार्वत्रिक प्रथा (अथवा सामाजिक संस्था) (हिंदू धर्म के सोलह संस्कारों में से एक)। **पर्या.** शादी।

विवाहित *वि.(तत्.)* (विवाह+इत) जिसका विवाह हो गया हो, ब्याहा हुआ। **जैसे**: वह विवाहित पुरूष है। **विलो.** अविवाहित।

विविध *वि.(तत्.)* अनेक या कई प्रकार का; भांति-भांति का। diversity

विविधता *स्त्री.(तत्.)* 1. कई प्रकार के रूप होने की स्थिति। (वेरिएशन) 2. जीव की प्रकृति जो दो जीवों के बिल्कुल समान नहीं होने देती। diversity, अनेकता, विभिन्नता।

विवेक *पुं.(तत्.)* 1. बुद्धि की वह शक्ति जो दो पदार्थों/वस्तुओं/तथ्यों इत्यादि में अंतर कर सके। **उदा.** नीरक्षीर विवेक। 2. मिली-जुली या मिलती-जुलती वस्तुओं को गुण-दोष के आधार पर श्रेणीबद्ध या क्रमबद्ध कर सकने का गुण। विश्लेषण करने का गुण। 3. विवेचन के आधार पर गहन तत्वों को यथायोग्य रूप में ग्रहण करने का गुण। 4. निर्णय करने का गुण।

विवेकपूर्ण [विवेक+पूर्ण] *वि.(तत्.)* 1. उचित-अनुचित के विचार से युक्त। **जैसे:** वह सदा विवेकपूर्ण व्यवहार करता है। 2. सत-असत् के ज्ञान से युक्त। विवेकपूर्ण कार्य करने वाला कोई विरला ही होता है। 3. जो भले और बुरे के स्पष्ट ज्ञान से युक्त हो।

विवेकाधीन [विवेक+अधीन] *वि.(तत्.)* 1. जो पूर्णत: विवेक पर आधारित हो तथा जिसमें किसी कानून की कोई दृढ़ रेखा न हो। 2. जो अपनी समझ एवं ज्ञान के अनुसार तथा देश, काल तथा पात्र के अनुसार हो। **जैसे**: विद्यालय की किसी कक्षा में विषयानुसार प्रवेश प्रधानाचार्य के विवेकाधीन होता है।

विशद *वि.(तत्.)* शा.अर्थ स्पष्ट, स्वच्छ, चमकीला। सा.अर्थ 1. जिसका स्वरूप बड़ा हो। **पर्या.** विस्तृत, लंबा-चौड़ा। **विलो.** संक्षिप्त, धुँधला, अस्पष्ट। 2. जिसमें छोटी-छोटी और सूक्ष्म बातों का भी वर्णन हो, ऐसा।

विशदीकरण *पुं.(तत्.)* 1. जो चीज स्पष्ट नहीं थी, उसे स्पष्ट करना। 2. किसी तथ्य की विस्तृत स्पष्टीकरण व्याख्या। **जैसे**: आज एक समीक्षक ने निराला की कुछ कविताओं का छायावाद के संदर्भ में विशदीकरण किया।

विशारद *वि.(तत्.)* 1. किसी विषय का विशेषज्ञ, किसी कार्य में दक्ष, 2. चतुर, निपुण। 3. विद्वान। **जैसे**: राजनीति-विशारद, शिल्पकाल विशारद।

विशाल *वि.(तत्.)* जो आकार-प्रकार में बहुत बड़ा, बहुत ऊँचा, विस्तृत हो। (लंबा-चौड़ा) या भव्य (शानदार) हो। **उदा.** विशाल भवन, विशाल हृदय। विशाल वृक्ष।

विशालकाय *वि.(तत्.)* विशाल लंबी-चौड़ी काया या शरीर वाला। 1. विशालकाय हाथी, विशालकाय ग्रंथ। **जैसे:** पृथ्वीराज रासो, वंश भास्कर आदि

विशालता *स्त्री.(तत्.)* (विशाल+ता प्रत्यय) 1. विशाल होने की अवस्था/गुण/भाव। 2. आकार में किसी क्षेत्र की अधिक लंबा-चौड़ा होने की स्थिति। **जैसे**: नैमिषारण्य की विशालता अद् भुत है। ला.अर्थ उदारता। तुम्हारे हृदय की विशालता है कि आप सभी के साथ एक जैसा व्यवहार करते हो।

विशिष्ट *वि.(तत्.)* जिसमें अन्य की तुलना में उल्लेखनीय विशेषता हो। 1. विशेषतायुक्त, विशेष; अद्भुत, प्रसद्धि, असाधारण, प्रमुख।

विशिष्टता *(स्त्री.)* **दे.** विशिष्ट। विशिष्ट होने की स्थिति।

विशेष *वि.(तत्.)* सामान्य की तुलना में अधिक अच्छा, बढ़ा-चढ़ा, अधिक जानकारी वाला, अतिरिक्त आदि। **जैसे**: विशेष व्याख्यान, आज कुछ विशेष ठंड/गरमी है; स्पेशल। विशेषज्ञ expert, विशेष कक्षा extra class

विशेषकर *क्रि.वि. (तत्+तद्)* (विशेष+कर (के) दे. विशेषत:

विशेषज्ञ (विशेष+ज्ञ) *वि./पुं. (तत्.)* शा.अर्थ विशेष जानकार। किसी विषय का विशेष ज्ञान रखने वाला। (विद्वान पुरूष) expert, specialist **जैसे**: विशेषज्ञ समिति; हृदय विशेषज्ञ।

विशेषज्ञता [विशेषज्ञ+ता] *(स्त्री.)* किसी व्यक्ति द्वारा परिश्रमपूर्वक अर्जित विषय-विशेष का ऐसा अनुभवजन्य ज्ञान जो उसकी निजी पहचान बन जाए और अन्य लोग उससे लाभान्वित हों। **जैसे:** मस्तिष्क की शल्यचिकित्सा संबंधी विशेषज्ञता; प्रवचन की विशेषज्ञता आदि। expertizod specialization

विशेषण *वि.(तत्.)* गुण रूप आदि की दृष्टि से विशेष्य की विशेषता बताने वाला। **जैसे:** रक्तपुष्प, महाभुज, सुखदजीवन। *पुं.(व्या.)* वह विकारी शब्द जो संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताता हो, **जैसे:** गुणवाचक विशेषण=विशाल तरु। संख्यावाचक विशेषण=पंच पांडव। परिमाणबोधक

विशेषण=पाँच किलो चीनी। सार्वनामिक विशेषण=इतना धन, वह व्यक्ति।

विशेषत: *क्रि.वि./अव्यय (तत्.)* विशेष रूप से, खासतौर पर। **जैसे**: विशेषत: उन्हें धन्यवाद जिन्होंने विपत्ति में हमें अपने यहाँ शरण दी। वे ज्योतिष के विद् वान हैं विशेषत: कुंडली विज्ञान के।

विशेषता *स्त्री.(तत्.)* शा.अर्थ विशेष होने का भाव; 1. अन्य की अपेक्षा विशेष या विशिष्ट होने की अवस्था या भाव, खूबी, विशिष्टता। 2. खसूसियत; विशेषज्ञता। **विलो.** सामान्य।

विशेष्य *पुं.(तत्.)* जिसकी विशेषता बताई जाए। विशेषण द्वारा सूचित संज्ञा। **जैसे:** मर्यादा पुरुषोत्तम राम में 'राम' विशेष्य हैं ओर मर्यादा उनकी विशेषता है। *वि.(तत्.)* विशेषता दिखलाने के योग्य।

विश्राम *पुं.(तत्.)* 1. थकावट दूर करने या आराम करने की क्रिया। 2. आरात, मन की शांति, सुख। 3. आराम करने का स्थान। 4. कार्य के मध्य विराम; समाप्ति।

विश्लेषण [वि+श्लेष+न] *पुं.(तत्.)* 1. मिले हुए तत्वों, इकाईयों की (अध्ययन के लिए) अलग-अलग पहचान करना। 2. किसी समस्या के समाधान के लिए उसके सभी अंगों-उपांगों को भौतिक या विचार के स्तर पर अलग-अलग कर परीक्षण करने की क्रिया। **उदा:** व्याकरणिक विश्लेषण; रासायनिक विश्लेषण आदि। analysis

विश्व ऊष्णन *पुं. (तत्.)* वातावरण में कार्बन-डाइ-ऑक्साइड की मात्रा बढ़ जाने के कारण पृथ्वी की सतह के औसत तापमान में क्रमश: वृद्धि होना। global warunaing

विश्वकोष *पुं.(तत्.)* 1. वह विशाल ग्रंथ जिसमें ज्ञान विज्ञान की प्राय: सभी शाखाओं और महत्वपूर्ण विषयों से संबंधित जानकारी विस्तारपूर्वक मिल सके। 2. ज्ञान की किसी विशेष शाखा से संबंधित संपूर्ण जानकारी देने वाला ग्रंथ। **जैसे**: गणित का विश्वकोष। encyclopaedia

विश्वजनीन *वि.(तत्.)* विश्व/संसार के समस्त लोगों से संबंध रखने वाला तथसा उनके लिए हितकर।

विश्वभर *पुं.(तत्.)* 1. पृथ्वी, उस पर रहने वाले समस्त जीव-जंतु, प्राणी, वनस्पति तथा पृथ्वी से बाहर का संपूर्ण वायुमंडल, सौरमंडल तथा संपूर्ण तारामंडल इन सबका संपूर्णस्वरूप। संपूर्ण सृष्टि। **पर्या.** ब्रह्मांड। cosmos universe 2. किसी भी विषय से संबंधित सभी वस्तुओं का समूह जैसे पुस्तकों का विश्व, संगीत का विश्व आदि। **पर्या.** संसार, दुनिया। 3. समस्त, सारा, सार्वलौकिक।

विश्वयुद् ध *पुं.(तत्.)* ऐसा बड़ा युद्ध जिसमें विश्व के कई देश सम्मिलित हों। अभी तक दो विश्वयुद् ध प्रथम (1914-1918) द्वितीय (1939-1945ई.) हो चुके हैं।

विश्वविख्यात *वि.(तत्.)* ऐसा कोई महापुरुष विद्वान, कार्य, स्थान जो श्रेष्ठता का रूप समस्त संसार में प्रसिद्ध हो। विश्वप्रसिद्ध **जैसे**: महात्मा गांधी का व्यक्तित्व विश्वविख्यात है।

विश्वविद्यालय *पुं.(तत्.)* शिक्षा प्रदान करने की वह विशाल संस्था जिसमें विविध विषयों की उच्चतम शिक्षा दी जाती हो, प्रत्येक विषय पर अनुसंधान कराने की व्यवस्था हो तथा अपने छात्रों को शिक्षा-संबंधी उपाधियाँ देने का अधिकार हो। university **जैसे**: काशी हिंदू विश्वविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय आदि। विशेष विश्वविद्यालयों के नियमन के लिए सरकार ने विश्वविद् यालय अनुदान आयोग की स्थापना की है।

विश्वव्यापी *वि.(तत्.)* जो सारे संसार में व्याप्त हो। **पर्या.** विश्वव्यापक। *पुं.* ईश्वर, परमात्मा।

विश्वसनीय *वि.(तत्.)* 1. विश्वास किए जाने के योग्य। 2. जिस पर यकीन, भरोसा या विश्वास किया जा सके। frustworthy **दे.** विश्वास।

विश्वसनीयता *स्त्री.(तत्.)* विश्वसनीय होने की स्थिति। trustworthyness

विश्वस्त *वि.(तत्.)* जिस पर विश्वास किया गया है; विश्वास के योग्य। **उदा.** विश्वस्त सूत्रों से पता चला है कि......। **विलो.** अविश्वस्त

विश्वस्तरीय *वि.(तत्.)* (विश्व+स्तर+ईय प्रत्यय) 1. विश्व के स्तर वाला। **जैसे:** संयुक्त राष्ट्र संघ

विश्वस्तरीय संस्था है। 2. विश्व में विद्‌यमान किसी विस्तृत देश, स्थान, वस्तु आदि के श्रेष्ठ स्तर के समान। **जैसे**: ताजमहल विश्वस्तरीय स्मारक है।

विश्वास *पुं.(तत्.)* किसी व्यक्ति या वस्तु के सकारात्मक पक्ष के बारे में बनी धारणा पर दृढ़ता से टिका रहना; भरोसा, यकीन। **उदा.** मुझे पूरा विश्वास है कि आप हर संकट की स्थिति में मेरी सहायता करेंगे। trust, confidence, faith

विश्वासघात *पुं.(तत्.)* 1. अपने ऊपर विश्वास करने वाले के प्रति विपरीत आचरण। 2. अपने ऊपर किए गए विश्वास को तोड़ना या उसका घात करना। **पर्या.** नमकहरामी, धोखा, विश्वासभंग। **विलो.** विश्वासपात्र, नमकहलाली।

विश्वासघात *पुं.(तत्.)* विश्वास को नष्ट कर देने या तोड़ देने का भाव। धोकादेही।

विश्वासपात्र *वि.(तत्.)* 1. वह जिस पर विश्वास किया जा सके। **पर्या.** विश्वस्त, विश्वसनीय, विश्वासभाजन। **विलो.** विश्वासघाती, दगाबाज़। 2. वह जिसकी योग्यता पर विश्वास किया जा सके। **पर्या.** भरोसेमंद। **विलो.** अविश्वस्त।

विष *पुं.(तत्.)* 1. ऐसी कोई वस्तु या पदार्थ जो थोड़ी मात्रा में भी शरीर में पहुँचने पर भयंकर कष्टप्रद हो या जिससे व्यक्ति की मृत्यु हो जाए। **पर्या.** ज़हर, गरल। 2. (ला.) कटु बात, विष जैसा प्रभावी। **जैसे**: क्यों विष उगलते जा रहे हो? चुप भी रहो।

विषधर *वि.(तत्)* विष से युक्त, विषैला, ज़हरीला। *पुं.* सांप, नाग।

विषम *वि.(तत्.)* 1. जो समान या समतल न हो। **पर्या.** ऊँचा-नीचा, ऊबड़खाबड़। 2. बहुत कठिन। उदाहरण-विषम परिस्थिति। 3. भयंकर **उदा.** विषम युद्‌ध। 4. **गणि.** वह (संख्या) जो दो से विभाज्य न हो। **यथा-**1, 3, 5। विलो. सम।

विषमता *स्त्री.(तत्)* समता न होने का भाव। 1. असमता, असमानता, अंतर। 2. जटिलता, भीषणता। 3. प्रतिकूलता। **उदा.** चित्र में रंगों की विषमता सौंदर्य बढ़ाती भी है। **विलो.** समता।

विषयवस्तु *स्त्री.(तत्.)* 1. किसी रचना से पूर्व उसके सभी अंगों-पक्षों को ध्यान में रखते हुए बनाई गई रूपरेखा के रूप में आधारभूत तत्व। 2. किसी कृति और वर्णित विषय का संक्षिप्त रूप। theme

विषाक्त *वि.(तत्.)* सा.अर्थ विष से युक्त (ज़हरीला) ला.अर्थ दूषित। **जैसे:** वातावरण विषाक्त हो चला था। **पर्या.** विषैला, जहरीला।

विषाक्तन *पुं.(तत्.)* किसी पदार्थ या जल इत्यादि में महर मिलान/फैलाना। शा.अर्थ विष या जहर फैलाने की क्रिया। सा.अर्थ पदार्थ को जहरीला बनाना या होना। ला.अर्थ विषभरी बातों से विषैला या दूषित करना।

विषाणु *पुं.(तत्.)* 1. विषयुक्त अणु। (सूक्ष्मजीव) अति सूक्ष्म संक्रामक रोगाणु जो सजीव और निर्जीव के बीच की कड़ी होते है। ये कोशिकाविहीन होते हुए प्रोटीन के आवरण में न्यूकलीक अम्ल स्वरूप होते हैं। किसी अन्य सजीव कोशिका में रहकर ही कार्यक्षम और जननक्षम होते हैं। **उदा.** मानव में पीलिया, चेचक, एड्स आदि रोगों के विषाणु का होना। **दे.** वायरस।

विषाणुज यकृतशोध *पुं.(तत्.)* विषाणु हिपैटाइटिस ए वाइरस एवं हिपैटाइटिस बी वाइरस सहित बहुत से विषाणुओं में से एक के द्‌वारा उत्पन्न सामान्य यकृतशोध नामक रोग। Viral

विषुव *वि/पुं.(तत्.)* सूर्य के विषुवत् रेखा पर पहुँचने का काल। इस समय दिन और रात बराबर होते हैं। ऐसा समय सामान्यत: वर्ष में दो बार-21 मार्च और 22 सितंबर को होता है। 1. सूर्य की परिक्रमा करते समय पृथ्वी के पहुँचने का वह काल या बिंदु जब दिन और रात बराबर हो जाते हैं। ऐसा वर्ष में दो बार होता है-21 मार्च और 22 सितंबर को। **टि.** भारतीय ज्योतिष के अनुसार वह बिंदु जहाँ से नक्षत्रों की गणना प्रारंभ होती है। (अश्वीनी नक्षत्र का पहला बिंदु), इसी प्रकार इसके ठीक सामने का दूसरा बिंदु। न बिंदुओं पर सूर्य के दिखने पर दिन रात बराबर होते हैं। उस बिंदु या काल को विषुव कहते है। equinox

विषुवत् रेखा *स्त्री.(तत्.)* वह काल्पित रेखा जो धरती तल के पूरे मानचित्र पर पूर्व से पश्चिम की ओर ठीक बीचों-बीच गणना के लिए मानी गई है तथा जिसकी माप अक्षांश मानी जाती है। equator

विषुवत् *वि.(तत्.)* मध्य में स्थित, बीच का। *पुं.विषुव।* (विषुव रेखा) विषुवत्।

विषुवत् वृत्त दे. विषुवत् रेखा।

विषैला *वि.(देश.)* [विष+एला] विष से युक्त, विष से भरा हुआ। **पर्या.** जहरीला। **जैसे:** विषैला साँप।

विष्ठा *स्त्री.(तत्.)* सा.अर्थ मल**,** मैला। 1. शरीर में भोजन के पच जाने के उपरांत वह अनुपयोगी पदार्थ जो शरीर के निचले भाग (मल द्वार) से बाहर निकाल दिया जाता है। **पर्या.** मल। ला.अर्थ 2. निकृष्ट या त्याज्य वस्तु।

विसंगति [वि+संगति] *स्त्री.(तत्.)* 1. किसी वस्तु, प्रसंग, तथ्य, स्वभाव आदि का किसी अन्य संदर्भ में संगत न होने का भाव। **जैसे**: वैचारिक विसंगति=विचारों का न मिलना। 2. असम्बद्धता, निरंतरता का अभाव। 3. किसी कथन में तारतम्य का न होना। 4. दृष्टिकोण की भिन्नता। **जैसे:** उन दोनों मूल्यांकन पत्रों में विसंगति पाई गई।

विसंगतिमुक्त *वि.(तत्.)* संगत, तालमेल युक्त, समंजस, अनुरूप। **विलो.** विसंगतियुक्त**,** असंगत।

विसरित परावर्तन *पुं.(तत्.)* ऐसा परावर्तन या वह अवस्था जब प्रकाश या ध्वनि की तरंगें किसी वस्तु से बाधित हो जाने के कारण फैल जाती है।, परावर्तित होने के बाद। diffused, reflection

विसर्ग *पुं.(तत्.)* 1. त्याग, छोड़ना। 2. व्याकरण में एक ध्वनि चिह्न (:) जो किसी वर्ण के आगे लगाया जाता है और इसका उच्चारण प्राय: 'अघोष' 'ह' वर्ण की तरह होता है। **जैसे**: दु:ख, प्राय:, प्रात: आदि।

विसर्ग संधि *स्त्री.(तत्.)* (व्याकरण) दो शब्दों की वह संधि जिनमें प्रथम शब्द का अंतिम वर्ण विसर्गयुक्त हो तथा विसर्ग के स्थान पर संधि के बाद कोई परिवर्तन हो जाए। **जैसे**: मन:+तोष=मनस्तोष,पय:+द=पयोद, बहि:+गमन=बहिर्गमन।

विसर्जन *पुं.(तत्.)* 1. परित्याग, छोड़ना। **जैसे:** देशभक्तों ने देश की आज़ादी के लिए अपने प्राणों का विसर्जन किया। 2. विदाई। आज दुर्गापूजा के बाद मूर्ति का नदी में विसर्जन किया गया। 3. सभा की या परेड की समाप्ति।

विसर्जित *वि.(तत्.)* जल विसर्जन/गणपति/मूर्ति विसर्जन। 1. छोड़ी हुई या त्यागी हुई (वस्तु) **जैसे**: मलमूत्र विसर्जित होना/करना। 2. बिखेरा हुआ, समाप्त। **उदा.** सभा विसर्जित हो गई। 3. जिसमें विद्युत आवेश आदि का कम करना/होना या हट जाना आदि हो गया हो। dissolved 4. जल में प्रवेश कराई हुई (देव प्रतिमा आदि)

विसर्प *पुं.(तत्.)* भू.-नदियों के मंदगति से सर्पाकृति में टेढ़े-मेढ़े या घूमकर बहने का घुमावदार मार्ग।

विसूचिका *स्त्री.(तत्.)* रोग जिसमें कै (उलटी) और दस्त हो जाता है और पेशाब नहीं उतरता। हैज़ा। (कॉलरा) छोटी आंत से संबंधित एक संक्रामक और कभी-कभी घातक रोग जो जलवाहित जीवाणु से फैलता है और जिसके सामान्य लक्षण बार-बार उल्टी (कै) और दस्त के रूप में प्रकट होते हैं। **पर्या.** हैज़ा।

विस्तरण *पुं.(तत्.)* 1. फैलना, इधर-उधर विस्तार करना। **जैसे:** भाषा में आता है, क्रिया का विस्तरण 'आ रहा है', 'आ चुका है', 'आ गया है' इत्यादि हो सकता है। extension 2. अनावश्यक रूप से किसी बात को बढ़ाना। expanding

विस्तार *पुं.(तत्)* 1. लंबाई, चौड़ाई, ऊँचाई का फैलाव। 2. किसी भी बात जैसे व्यापार, क्रियाकलाप, समय-सीमा, कार्यकाल आदि का बढ़ना। 3. सीमा। **दे.** विस्तरण।

विस्तारण *पुं.(तत्.)* (विस्तरण का प्रेरणार्थक रूप) शा.अर्थ फैलाने की क्रिया या अवस्था। सा.अर्थ **1.** विस्तार करना, फैलाना। 2. कार्यक्षेत्र या काम-काज बढ़ाना। 3. पैर आदि फैलाना। *दे.* विस्तरण।

विस्तृत *वि.(तत्.)* शा.अर्थ बृहत् आकार में अधिक दूरी तक फैला हुआ, बहुत लंबा चौड़ा। सा.अर्थ **1.** विस्तार वाला, 2. खुला हुआ, 3. बड़ा, विशाल। 4. प्रचुर, 4. व्याप्त। **उदा.** मेरे घर के सामने एक विस्तृत मैदान है।

विस्थापन *पुं.(तत्.)* शा.अर्थ किसी स्थापित या स्थित वस्तु व्यक्ति आदि को उसके स्थान से हटाना। सा.अर्थ 1. बलपूर्वक उखाड़ना। 2. बलपूर्वक खाली करना। displacement, dislocation

विस्थापित *वि.(तत्.)* 1. अपने स्थान से हटाया हुआ। 2. जो अपने मूल स्थान से बाहर होकर हटाए/निकाले जाकर बसने को विवश हो गए हों। अन्यत्र। *तु.* शरणार्थी। discolated, displaced

विस्फोट *पुं.(तत्.)* वह रासायनिक तत्व में विखंडन के परिणामस्वरूप परिवर्तन जिसमें गर्जन के साथ अत्यंत तीव्रता से विपुल ऊर्जा का मोचन होता है अथवा/तथा आयतन में अपार वृद्धि होती है अर्थात् वह फैल एवं फूट पड़ती है। **पर्या.** फूटना, फटना। explosion 2. फोड़ा, रसोली।

विस्फोटक *पुं.(तत्.)* अचानक ऊर्जा को मुक्त करने में समर्थ कोई तत्व या पदार्थ जिससे विपुल आयतन में गैस तथा ऊर्जा प्राप्त हो। इसे संपीड़ित करने पर उच्च दाब तरंग विकसित होती है जो 'स्फोट' कहलाती है। जैसे-बारूद, नाइट्रोग्लिसरीन, डायनेमाइट, आर.डी. एक्स आदि विस्फोटक पदार्थ। explosive

विस्मय *पुं.(तत्.)* किसी के विषय में देखने-सुनने, पढ़ने इत्यादि से होने वाला आश्चर्य। **पर्या.** आश्चर्य, अचंभा, अचरज।

विस्मयाभिभूत *वि.(तत्.)* (विस्मय+अभिभूत) आश्चर्य से अत्यंत प्रभावित तथा वशीभूत।, विशेष रूप से आश्चर्यचकित, अत्यंत विस्मित।

विस्मरण [वि+स्मरण] *पुं.(तत्.)* स्मरण न होने की अवस्था या भाव। भूल जाना, बिसरना, विस्मृति। **विलो.** स्मरण।

विस्मित *वि.(तत्.)* आश्चर्य से भरा हुआ। **पर्या.**चकित, भौचक्का, हक्का-बक्का।

विस्मृत *वि.(तत्.)* 1. जिसका स्मरण न रहा हो, भूला हुआ। **जैसे**: आपका संदेश मुझे विस्मृत हो गया। 2. भुलाया हुआ।

विस्मृति [वि+स्मृति] *स्त्री.(तत्.)* जो बात पहले जानकारी में रही हो उसे भूल जाना। विस्मरण। **दे.** स्मृति। **जैसे**: आप विस्मृति की नींद से कब जागेंगे।

विहंग *पुं.(तत्.)* विह (आकाश)+ग (जाने वाला) 1. आकाश में उड़ने वाला। **पर्या.** चिड़िया, पक्षी। **जैसे**: वृक्ष पर विहग कलरव कर रहे हैं। 2. मेघ, 3. बाण।

विहार *पुं.(तत्.)* 1. मनोविनोद और सुख प्राप्ति के लिए की जाने वाली क्रिया। **जैसे**: नौकाविहार। **जैसे:** श्रीकृष्ण वृंदावन में अपने सखा-गोपालों के साथ विहार करते थे। 2. घूमना, टहलना, भ्रमण। 3. बौद्ध भिक्षुओं का मठ, संघाराम। *वि.* विहारों की अधिकता के कारण ही पाटलिपुत्र के आसपास का क्षेत्र विहार (वर्तमान बिहार) कहलाया।

विहीन *वि.(तत्)* [वि+हीन] किसी गुण, वस्तु आदि से रहित, हीन। विशेष-सामान्यत: शब्द किसी अन्य शब्द के साथ समास के रूप में प्रयुक्त होता है। **जैसे**: विद्याविहीन, धनविहीन।

विह्वल *वि.(तत्)* 1. शोक, भय आदि के कारण व्याकुल, घबड़ाया हुआ, अशांत; हताश। 2. स्नेह, प्रेम की भावना से पिघला हुआ या भावुक। 3. स्नेह, अनुराग के कारण द्रवित।

विद्‌वेषपूर्ण *वि.(तत्.)* दुर्भावनापूर्ण, शत्रुतापूर्ण। **दे.** विद्वेष।

वीणा *स्त्री.(तत्.)* तारों के कंपन से बजने वाला एक बाजा जिसके दोनों ओर तुंबे होते हैं। यह सितार का मूल रूप माना जाता है। *वि.* सरस्वती देवी (विद्या की देवी) का वाद्य-यंत्र।

वीणावादक *वि.(तत्.)* (वीणा+वादक) 1. वीणा को बजाने वाला। 3. वीणा बजाने में कुशल। **उदा.** प्रात:कालीन सभा में सरस्वती वंदना वीणावादक के सहयोग से ही होती है।

वीणावादिनी *स्त्री.(तत्.)* वीणा बजाने वाली, सरस्वती। **दे.** वीणा। **जैसे:** वीणावादिनी वरदे।

वीथि/वीधी *स्त्री.(तत्)* 1. कतार, पंक्ति। 2. दोनों ओर वृक्षों से सुसज्जित मार्ग। 3. बाजार-हाट, 4. आकाश में सूर्य-भ्रमण का मार्ग। 5. खेल-एथलेटिक्स, तैराकी, टेनिस, कबड्डी आदि खेलों या क्रियाकलापों में चिह्‌नित समांतर गलियारा lane

वीथिका *स्त्री.(तत्.)* 1. सडक़, गली। *दे.* वीथी। 2. चित्रों की पंक्ति या कतार। 3. चित्रावली सजाने की दीर्घा, दीवार का कम चौड़ी पट्‌ट। कलावीथिका/वीथी।

वीर *वि.(तत्)* उत्साह या साहस का काम करने वाला। **पर्या.** बलवान, बहादुर। **विलो.** कायर। *पुं.* 1. सैनिक, योद्धा। 2. कुछ स्थानीय भाषाओं/

बोलियों मुख्यत: पंजाबी में भाई, पुत्र आदि के लिए संबोधन। 3. साहित्य के नौ रसों में से एक, जिसका स्थायीभाव उत्साह है। 4. 'आल्हा' छंद का दूसरा नाम।

वीरगति *स्त्री.(तत्.)* [वीर+गति] शा.अर्थ **1.** युद्‌ध क्षेत्र में वीरतापूर्वक लडक़र मरने पर वीरों को प्राप्त होने वाली श्रेष्ठ गति अर्थात स्वर्ग की प्राप्ति। सा.अर्थ **2.** युद्‌ध करते हुए मृत्यु। जैसे- उनका बहादुर बेटा कारगिल की लड़ाई में वीरगति को प्राप्त हुआ।

वीरता *स्त्री.(तत्.)* वीर होने का भाव।

वीरांगना [वीर+अंगना=नारी] *वि./स्त्री.(तत्.)* वीर महिला। **उदा.** वीरांगना लक्ष्मीबाई का नाम कौन नहीं जानता।

वीरान *वि.(फा.)* 1. जहाँ बस्ती या आबादी न हो, उजाड़। 2. निर्जन (स्थान) 3. शोभारहित (स्थान)। **जैसे**: सुनामी आने के बाद यह स्थान वीरान हो गया है।

वीरान/वीराना *पुं.(फा. वीरान:)* उजाड़ जगह जो बसने लायक न हो या जहाँ किसी प्रकार की कोई आबादी न हो। निर्जन प्रदेश, वन, जंगल, खंडहर। **जैसे**: तुम तो इस पन के वीराने में ही भटकते रहे।

वीरानी *स्त्री.(फा.)* 1. वीरान होने की अवस्था या भाव।, विनाश की स्थिति। **दे.** वीरान। सूनापन, विनाश की सी स्थिति। **जैसे**: भूकंप आने के बाद उस महानगर में वीरानी छाई हुई थी।

वीरोचित्त [वीर+उचित] *वि.(तत्)* 1. वीरों के लिए शोभा देने योग्य। **उदा.** युद्‌ध से भागना वीरोचित कार्य नहीं है। 2. वीरों जैसा। **उदा.** मेरे साथ वीरोचित व्यवहार हो।

वीर्य *पुं.(तत्)* 1. *(आयु.)* शरीर के अंदर बनने वाली सातधातुओं में से वह धातु जिससे शरीर में शक्ति, तेज और कांति बढ़ती है तथा संतान उत्पन्न करने में सहायक होती है। शुक्र, रेत। 2. पराक्रम, पुरूषत्व, पुंस्त्व, पौरूष। 3. बल, ताकत।

वुट्ज स्टील *पुं. (अं.)* दक्षिण भारत में ढालकर बनाया जाने वाला स्टील जो कार्बन की अधिकता के कारण तलवारें आदि बनाने के लिए अधिक उपयोगी माना जाता है। **टि.** कन्नड़ भाषा के शब्द उक्कु (वुक्कु) तेलुगु शब्द हुक्कु और मलयालम उरुक्कु का अंग्रेजी रूपांतरण-'वुट्ज़'।

वृक्क *पुं. (तत्.)* मानव, पशु-पक्षियों आदि जीवों के पेट के निचले भाग में स्थित वह महत्त्वपूर्ण अंग जो रक्त को शुद्‌ध करके या छानकर अपशिष्ठ द्रव को मूत्र के रूप में अलग कर देता है। **पर्या.** गुरदा/गुर्दा। kidney

वृक्ष *पुं. (तत्.)* 1. मोटे और कठोर तने से युक्त और सामान्यत: 30 फीट से ऊँचा (वनस्पति) पादप पेड़, दरख्त, तरु। 2. मूल वस्तु और शाखाओं को प्रदर्शित करने वाली शाखा-प्रशाखाओं या वृक्ष की आकृति से साम्य रखने वाली आकृति या आरेख। **जैसे:** वंश वृक्ष। tree

वृक्षारोपण *पुं. (तत्.)* (वृक्ष+आरोपण) शा.अर्थ वृक्ष रोपना। 1. प्रदूषण रोकने आदि के उद्‌देश्य से सामूहिक रूप से वृक्षों को लगाने का समारोहपूर्वक कार्यक्रम। 2. पर्याप्त संख्या में पेड़-पौधे लगाया जाना। **जैसे:** आज हमारे क्षेत्र में समाज के सहयोग से वृक्षारोपण कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

वृत्त *वि. (तत्.)* शा.अर्थ 1. गोलाकार जो घटित हो चुका हो। रेखा से घिरा हुआ (क्षेत्र) जिसका प्रत्येक बिंदु उस क्षेत्र के मध्य बिंदु से समान अंतर पर हो। **पर्या.** गोल, मंडल, सर्किल। 2. शास्त्र सम्मत आचरण या व्यवहार। 3. वृत्तांत, कथा 4. चरित्र, आचरण, स्वभाव। 4. छंद।

वृत्तचित्र *पुं. (तत्.)* विशिष्ट कार्य अथवा प्रमुख घटना की विस्तृत जानकारी से युक्त लघु फिल्म। newreal documentary यथा-महामहिम राष्ट्रपति महोदया की रूप यात्रा का वृत्त चित्र।

वृत्तांत *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ किसी घटना, वस्तु या स्थिति से संबंधित जानकारी का विस्तृत वर्णन। सा.अर्थ 1. समाचार, हाल, 2. विवरण, 3. कथा।

वृत्ति *स्त्री. (तत्.)* 1. वह कार्य जिससे व्यक्ति अपना जीवन निर्वाह करता हो। **पर्या.** जीविका, पेशा। 2. जीविका निर्वाह या अध्ययन आदि के

सहायतार्थ नियमित रूप से मिलने वाला धन। **जैसे:** छात्रवृत्ति, शोधवृत्ति आदि। 3. (चित्त की) दशा या प्रवृत्ति।

वृथा *वि. (तत्.)* व्यर्थ, निरर्थक, बेकार, निष्फल **जैसे:** जो धन काम न आये, वह वृथा है। *क्रि.वि.* बिना मतलब के, यूँ ही, तुम यहाँ वृथा घूम रहे हो, घर चलो।

वृद् ध *वि./पुं. (तत्.)* 1. साठ/पैंसठ वर्ष की आयु पार कर गया पुरुष; वरिष्ठ (पुरुष) नागरिक; बूढ़ा या बुजुर्ग व्यक्ति। 2. (तुलना दृष्टि से) अधिक योग्यता वाला। **जैसे**: ज्ञानवृद् ध। *वि/स्त्री. (तत्.)* नागरिक; साठ वर्ष की आयु पार कर गई महिला; वरिष्ठ (महिला), बुढ़िया, बुज़ुर्ग महिला। वयोवृद्धा, महिला।

वृद्धावस्था *स्त्री. (तत्.)* साठ पैंसठ वर्ष और उससे अधिक का/की हो जाने की उम्र। **पर्या.** बुढ़ापा, ज़रा।

वृद्धाश्रम [वृद्ध+आश्रम] *पुं. (तत्.)* 1. वृद् ध अर्थात् प्रौढावस्था पार कर चुके बड़ी आयु वाले लोगों की समुचित देखभाल या उनकी समुचित सुरक्षा या व्यवस्था के लिए बनाए गए सुविधापूर्ण निवास स्थान। 2. पारिवारिक सुरक्षा से रहित वृद्ध लोगों के रहने के लिए बनाये गए आश्रम, आश्रय स्थान। **जैसे:** आजकल कई सामाजिक संगठनों ने भी **'वद्धाश्रम'** बनवाये हुए हैं।

वृद्धि *स्त्री. (तत्.)* 1. गुण, संख्या आदि में बढ़ने या उन्नति का भाव। **जैसे**: वेतन-वृद् धि) increment आयु में वृद् धि। **पर्या.** बढ़ना, वर्धन, बढ़ोत्तरी। 2. (व्या) संधि करते समय अ, आ का ऐ, औ रूप हो जाना।

वृद्धि हार्मोन *पुं. [तत्.+अं.]* पीयूष ग्रंथि के अग्र भाग द्वारा उत्पन्न एक प्रोटीनी हार्मोन। **टि.** यह हार्मोन वयस्क अवस्था से पूर्व लंबी अस्थियों की लंबाई को बढ़ाता है। इस हार्मोन की कमी से नाटापन (वामनता) होती है और अत्यधिक स्राव से अतिकायता यानी कदे काफी लंबा हो जाता हैं

वृद्धिकारक *वि./पुं. (तत्.)* वृद् धि को प्रभावित करने वाला (कोई भी आनुवंशिक या बाह्य कारक) growth factor

वृषण *पुं. (तत्.)* शुक्राणुओं को पैदा करने वाली वृषण कोश में स्थित अंडे जैसी संरचना। अंड, फोता testicle

वृषभ *पुं. (तत्.)* 1. बैल या साँड़। 2. शिव का वाहन नंदी। 3. (जो) आकाश में स्थित बारह राशियों में से दूसरी राशि, वृष taurs 4. श्रेष्ठ (समास में प्रयुक्त होने पर)

वृष्टि *स्त्री. (तत्.)* 1. बादलों से पानी की बूँदों के रूप में होने वाली वर्षा या बरसात। **जैसे:** आज की दृष्टि से फसलें लहरानें लगीं। 2. वर्षा का पानी। 3. **(ला.)** वर्षा के समान किसी वस्तु का बड़ी संख्या में ऊपर से गिरना, बौछार। **जैसे:** पुष्पवृष्टि, ओलावृष्टि आदि। 4. **(ला.)** किसी क्रिया का लगातार कुछ समय तक होना। **जैसे:** आशीर्वाद-वृष्टि, बधाई-वृष्टि। **विलो.** अनावृष्टि।

वृहद/वृहत् दे. बृहत्।

वेग *पुं. (तत्.)* 1. (भौ.) धारा, प्रवाह, शीघ्रता, तेजी, तीव्रता, प्रबल प्रवृत्ति, उत्तेजना। 2. (विज्ञान) निश्चित दिशा में किसी वस्तु (कण या पिंड) की स्थिति में परिवर्तन की समय-सापेक्ष दर। 'वेलीसिटी'। **तुल.** गति (मोशन) और चाल speed 3. **आयु.** मल-मूत्रादि के शरीर से बाहर निकालने की प्रवृत्ति (प्रेशर) 4. (दर्शन) न्याय दर्शन के अनुसार चौबीस गुणों में से एक।

वेणी *स्त्री. (तत्.)* 1. स्त्रियों के सिर के बालों की गूँथी हुई चोटी। **जैसे:** लंबे काले बालों की बनी वेणी नागिन जैसे लहरा उठी। 2. बालों के साथ बाँधने के लिए फूलों की माला। **टि.** दक्षिण भारत में इस प्रकार की वेणियों का अधिक प्रचलन है।

वेणु *पुं. (तत्.)* 1. बाँस का वृक्ष, बाँस। 2. बाँसुरी, बंशी, मुरली।

वेतन *पुं. (तत्.)* 1. वह निश्चित धन जो अनुबंध के अनुसार किसी को निरंतर काम करते रहने पर मासिक या किसी अन्य नियत अवधि के अनुसार मिलता रहता है। तनख़्वाह, पगार (पे,

सैलरी।) 2. पारिश्रमिक **जैसे:** सरकार ने दैनिक मजदूरों का भी वेतन बढ़ा दिया है।

वेतनभोगी *वि. (तत्.)* निश्चित वेतन लेकर काम करने वाला व्यक्ति (कर्मचारी)। वैतनिक कर्मचारी। salarid emplayed

वेत्ता *वि. (तत्.)* अच्छा ज्ञाता, भली प्रकार/अच्छे प्रकार से जानने वाला, ज्ञाता, अच्छा जानकर; ज्ञानी; **जैसे:** तत्ववेत्ता, शास्त्र-वेत्ती। **टि.** सामान्यत: पद के अंत में प्रयुक्त सामासिक शब्द।

वेद *पुं. (तत्.)* व्यु.अर्थ ज्ञान सच्चा आध्यात्मिक ज्ञान। सा.अर्थ वे आदिम ग्रंथ जिसमें धर्म, संस्कृति एवं मानव व्यवहार से संबंधित संपूर्ण ज्ञान-विज्ञान वर्णित है। वेद चार हैं-ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद। **पर्या.** श्रुति, आगम। **टि.** विश्व के सर्वप्रथम ग्रंथ के रूप में वेदों की प्रसिद्धि है। ऐसी मान्यता है कि वेद लिखे नहीं गए अपितु वेदमंत्रों का ज्ञान कुछ ऋषियों को हुआ जो उन मंत्रों के द्रष्टा कहे जाते हैं।

वेदना *स्त्री. (तत्.)* 1. शरीर को बहुत ही कष्ट पहुँचाने वाली पीड़ा, व्यथा। **जैसे:** शिरो वेदना। 2. किसी अन्य के कष्टों को देखकर सहानुभूतिजन्य पीड़ा का भाव। 3. किसी अपने व्यक्ति की अमानवीय भाषा, व्यवहार या कार्य को देखकर अपने मन में होने वाला कष्ट।

वेदवाक्य *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ वेदों से उद् भुत वाक्य। सा.अ. ऐसी प्रामाणिक बात जिसके लिए तर्क की आवश्यकता न हो। आस्था का विषय। **जैसे:** आपका कथन तो हमारे लिए वेदवाक्य है।

वेदांग (वेद + अंग) *(तत्.)* 1. वेद के छ अंग-1. शिक्षा 2. कल्प 3. व्याकरण 4. निरुक्त 5. छंद 6. ज्योतिष। 2. अथवा उक्त में से प्रत्येक। जैसे- 'शिक्षा' वेदांग है। **वि.** वेदों के व्यावहारिक उपयोग के लिए वेदांगों की रचना हुई। उच्चारण-शुद्धता के लिए-शिक्षा और छंद, अर्थों के ज्ञान के लिए व्याकरण और निरुक्त तथा मंत्रों के प्रयोग के लिए कल्प और ज्योतिष की रचना हुई।

वेदांती *पुं. (तत्.)* 1. वेदांत दर्शन का ज्ञाता। 2. वेदांत दर्शन या अनुयायी या समर्थक। **दे.** वेदांत।

वेदिका *स्त्री. (तत्.)* 1. वह चबूतरा, जिस पर किसी भवन का निर्माण होता है। **पर्या.** कुरसी। 2. इंटों से घेरकर विभिन्न आकृतियों में बनाया हुआ यज्ञकुंड। **पर्या.** वेदी। 3. यज्ञ, विवाह आदि धार्मिक कृत्यों के लिए बनाया हुआ छायादार मंडप। **पर्या.** वेदी

वेदी *स्त्री. (तत्.)* 1. किसी शुभ या धार्मिक कार्य के लिए बनाया गया ऊँचा छायादार मंडप से युक्त चौकोर स्थान। **जैसे:** विवाह वेदी, यज्ञ वेदी। 2. यज्ञ भूमि में ऊँचे चौकोर चबूतरे पर नवग्रह आदि भिन्न-भिन्न देवताओं के लिए बनाई गई वेदियाँ। **जैसे:** नवग्रहवेदी, वास्तुदेववेदी, प्रधानवेदी। **टि.** जानने वाला (प्राय: समासयुक्त रूपमें प्रयुक्त) **जैसे:** ब्रह्मवेदी, तत्ववेदी।

वेधक *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ **1.** वेध करने या वेधने वाला वयक्ति। 2. जो मणियों आदि को बेचकर अपनी जीविका चलाता हो। 3. एक उपकरण जो छिद्र करने के काम आता है। **जैसे:** 1. कर्ण वेधक (कान छेदने वाला) 2. लक्ष्यवेधक (लक्ष्य बेधने वाला)।

वेधन *पुं. (तत्.)* 1. छेद करना **जैसे:** कर्णवेधन। 2. निशाना लगाना **जैसे:** लक्ष्यवेधन। 3. जमीन में गड्ढा करना या खोदना **जैसे:** पेट्रोलियम पदार्थ प्राप्त करने के लिए भूमि का वेधन होता है। 4. ग्रह-नक्षत्रों की गतियों का निरीक्षण करना।

वेधशाला [वेध+शाला] *स्त्री. (तत्.)* ग्रह-नक्षत्रों की स्थिति और गति का निरीक्षण अथवा आकाशीय घटनाओं का अध्ययन करने के लिए चुना गया एवं यंत्रों से युक्त स्थान या प्रयोगशाला।

वेबसाइट *स्त्री. (अं.)* किसी व्यक्ति, संस्था, कंपनी आदि के अधिकार-क्षेत्र में आने वाले विषय। विषयों से संबंधित नामों/पतों एवं कार्यकलापों से युक्त आँकड़ों, सूचनाओं आदि का

समुच्चय जो कंप्यूटर के विश्वव्यापी जालक्रम network पर उपलब्ध हो। webside

वेल्लला *पुं.* *(देश.)* तमिलनाडु और आसपास के क्षेत्रों में स्थित बड़े जमींदार या भूस्वामी।

वेश *पुं.* *(तत्.)* 1. वस्त्र आदि पहनने का ढंग। 2. पहनने के वस्त्र, पोशाक। 3. रूप बदलने के लिए पहने हुए विशेष वस्त्र। **जैसे:** रावण साधुवश में भिक्षार्थ सीता के पास गया।

वेशभूषा *स्त्री.* (वेश+भूषा (सजावट) *(तत्.)* 1. किसी देश या भूभाग के लोगों के अथवा जाति विशेष के पहनने के वस्त्र, गहने, सज्जा आदि तथा उन्हें पहनने का ढंग। **जैसे:** भारतीय वेशभूषा, तिब्बती वेशभूषा, यूरोपीय वेशभूषा, सैनिक वेशभूषा आदि।

वैकल्पिक [विकल्प+इक] *वि.* *(तत्.)* 1. इच्छानुसार चुनने योग्य (ऑप्शनल)। 2. एक या अनेक के स्थान पर उन्हीं में से या बाहर से भी चुनने योग्य। **जैसे:** यहाँ रहने की व्यवस्था है, पर वैकल्पिक (अन्य/दूसरी) व्यवस्था भी हो सकती है। alternative

वैज्ञानिक *पुं.* *(तत्.)* 1. विज्ञान संबंधी तत्त्वों का ज्ञाता। विज्ञान का ज्ञाता। 2. विज्ञान के क्षेत्र में काम करने वाला/शोध करने वाला। **जैसे:** भूतपूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम प्रसिद्ध वैज्ञानिक हैं। **वि.** 1. विज्ञान से संबंधित। 2. विज्ञान के अनुसार; क्रमबद्ध; नियमानुसार। **विलो.** अवैज्ञानिक।

वैदिक *वि.* *(तत्.)* 1. वेदों के अनुसार या वेद संबंधी। 2. वेदों के वाक्यों के अनुकूल। 3. वेदों का अनुयायी या वेद विदित कर्म करने वाला। **जैसे:** आर्य समाज केवल वैदिक पद्धति को मान्यता देता है। **पुं.** 1. वेदों का विद्वान व्यक्ति। 2. वेदोक्त कर्मकांड का ज्ञाता एवं पालनकर्ता व्यक्ति।

वैदूर्य *पुं.* *(तत्.)* एक अति कठोर रत्न, जो हरे, नीले, पीले, गुलाबी अथवा श्वेत रंग में मिलता है। लहसुनिया नामक रत्न। **टि.** विदूर पर्वत से प्राप्त होने के कारण यह **'वैदूर्य'** कहलाता है।

वैदेही *स्त्री.* *(तत्.)* 1. विदेह देश की राजकुमारी। 2. विदेहराज जनक की पुत्री सीता। **उदा.** विधिन लिखा वैदेहि विवाह। (तुलसी-रामचरित मानस बालकाण्ड)

वैद्धक *पुं.* *(तत्.)* वह चिकित्साशास्त्र या चिकित्सा पद्धति जिसमें रोगों की पहचान तथा उनकी चिकित्सा आदि का विवेचन होता है, आयुर्वेद। **वि.** चरक संहिता, सुश्रुत संहिता आदि प्रसिद्ध वैद्यक ग्रंथ हैं।

वैद्य *पुं.* *(तत्.)* वह चिकित्सक जो भारतीय आयुर्वेद की पद्धति के अनुसार रोगियों की चिकित्सा/इलाज करता है। **जैसे:** भारतीय वैद्य नाड़ी देखकर रोगी की चिकित्सा करते हैं।

वैध *वि.* *(तत्.)* 1. जो विधि के अनुसार हो। 2. जो कायदे कानून से स्वीकृत हो। **पर्या.** विधिसम्मत, विधिमान्य। **जैसे:** 1. केन्द्रीय मा. शि. बोर्ड द्वारा जारी यह प्रमाणपत्र वैध है। (लीगल) **विलो.** अवैध।

वैधता *स्त्री.* *(तत्.)* 1. वैध होने की अवस्था सीमा या भाव। 2. विधिपरकता। **जैसे:** इस लाइसेंस की वैधता मार्च 2012 तक है। validity

वैधव्य *पुं.* *(तत्.)* विधवा होने की स्थिति या भाव, विधवापन, रँड़ापा। **दे.** विधवा।

वैभव *पुं.* *(तत्.)* 1. ऐश्वर्य; धनसंपत्ति। **जैसे:** उनका वैभव देखकर हम चकित थे। 2. गौरवशाली पद; महत्ता। 3. शान-शौकत।

वैभवपूर्ण *वि.* *(तत्.)* वैभव से युक्त। **दे.** वैभव।

वैभवशाली *वि.* *(तत्.)* सा.अर्थ जिसके पास बहुत अधिक धन-दौलत हो। 1. विभव युक्त 2. वैभव-संपन्न। ला.अ. अधिक समर्थ। **दे.** वैभव।

वैमानिक *पुं.* *(तत्.)* 1. विमान चलाने वाला व्यक्ति विमानचालक। 2. विमान पर सवार होकर अंतरिक्ष में उड़ने वाला यात्री। **वि.** विमान से संबंधित।

वैयक्तिक [व्यक्ति+इक] *वि.* *(तत्.)* एक ही व्यक्ति से संबंधित। व्यक्तिगत, (पर्सनल), इंडिविजूअल, प्राइवेट। **जैसे:** वैयक्तिक संबंध, **विलो.** **'**सामूहिक**'**।

वैयाकरण *पुं.* *(तत्.)* 1. व्याकरण शास्त्र का ज्ञाता/विद्वान। 2. व्याकरण ग्रन्थ का रचयिता। **वि.** व्याकरण संबंधी। **उदा.** नागेश महान वैयाकरण हुए।

वैर *पुं.* *(तत्.)* 1. किसी के साथ होने वाली शत्रुता, दुश्मनी। 2. व्यक्तिगत विरोध। 3. प्रतिहिंसा, बदला। **मुहा.** (i) वैर चुकाना या वैर निकालना-शत्रु से बदला लेना। शत्रु को हानि पहुँचाना। (ii) वैर साधना-वैर चुकाना। **विलो.** प्रीति/प्रेम।

वैरभाव [वैर+भाव] *पुं.* *(तत्.)* शत्रुता की भावना, बदले की भावना, वैमनस्य।

वैराग्य *पुं.* *(तत्.)* 1. सांसारिक विषयभोगों, क्रियाकलापों, पारिवारिक मोह आदि से होने वाली विरक्ति। उदासीनता, अनासक्ति। 2. राग द्वेष से रहित मन की अवस्था जिसमें व्यक्ति का मन अध्यात्म या ईश्वर की ओर केंद्रीकृत या प्रवृत्त हो जाता है। **उदा.** आदि शंकराचार्य को जल्दी ही संसार से वैराग्य हो गया था।

वैवाहिक [विवाह+इक] *वि.* *(तत्.)* विवाह संबंधी, विवाह का। **जैसे:** वैवाहिक कृत्य, वैवाहिक रस्मो रिवाज। *(पुं.)* विवाह के कारण होने वाला संबंध या कृत्य।

वैश्य *पुं.* *(तत्.)* 1. भारतीय शास्त्रों के अनुसार ब्राह्मणादि चार वर्णों में से तीसरा वर्ण जिसके मुख्य कर्म कृषि, गोरक्षा और वाणिज्य थे। 2. मुख्यत: व्यापार करने वाली जाति।

वैश्विक स्वीकार्यता *स्त्री.* *(तत्.)* 1. संपूर्ण विश्व में स्वीकार्य होने की अवस्था या भाव। 2. वह विचार या कोई बात जिसे समस्त विश्व में स्वीकार किया गया हो या स्वीकार करने योग्य पाया गया हो। **जैसे:** नारी स्वतंत्रता, मानवाधिकार को वैश्विक स्वीकार्यता प्राप्त है।

वैषभ्य *पुं.* *(तत्.)* विषमता, असमानता। **जैसे:** हमारा उनके साथ वैचारिक वैषम्य है। **विलो.** साम्य।

वैष्णव *वि.* *(तत्.)* सा.अर्थ 1. विष्णु संबंधी, 2. विष्णु का उपासक। *पुं.* विष्णु के उपासकों का संप्रदाय विशेष। ला.अ. सात्विक आचार-विचार अथवा आहार आदि से युक्त **जैसे:** वैष्णव ढाबा।

व्यंग्य[1] *पुं.* *(तत्.)* 1. किसी के अवगुणों को प्रकट करने अथवा उसकी आलोचना करने के निमित्त गूढ़ अथवा विपरीत गुणों के वाचक शब्दों में प्रकट किया गया ऐसा चुटीला कथन जो श्रोतावर्ग पर वक्ता के निहितार्थ को स्पष्ट रूप से प्रकट करने में समर्थ हो। 2. इस भाव से युक्त एक प्रकार की साहित्यिक कृति। satire

व्यंग्य[2] *पुं.* *(तत्.)* शा.अ. व्यंजना शक्ति के माध्यम से व्यक्त किया गया वह अर्थ जो प्रस्तुत की जा रही शब्दावली में सीधे-सीधे न निकलता हो। **जैसे:** घंटी बजना का व्यंग्य अर्थ छुट्टी होना है। सा.अ. चिढ़ाने या नीचा दिखाने के उद्देश्य से कहे गये गूढ़ अर्थ वाले शब्द। **पर्या.** ताना। बोली।

व्यंग्यकार *पुं.* *(तत्.)* 1. चुटीली बात कहने वाला व्यक्ति। 2. व्यंग्य साहित्य की रचना करने वाला लेखक। **दे.** व्यंग्य

व्यंजन *पुं.* *(तत्.)* शा.अ. 'व्यक्त करने अथवा प्रकट करने की क्रिया या भाव'। सा.अर्थ 1. स्वर की सहायता से उच्चरित वर्ण 2. ऐसे उच्चरित वर्ण जिनके उच्चारण के समय वायु के बाहर आने में स्पर्श या संघर्ष जैसी बाधाएँ होती ही हैं। हिंदी में 'क्' स्पर्श व्यंजन और 'श्' संघर्षी (ऊष्म) व्यंजन के **उदा.** हैं। 3. प्रकट करने का भाव, प्रकाशन। 4. चिह्न, निशान 5. तरह-तरह के पके हुए भोजन।

व्यंजना *स्त्री.* *(तत्.)* 1. व्यक्त या प्रकट करने अथवा होने की क्रिया या भाव अभिव्यक्ति। 2. शब्द शक्ति का वह रूप जो अभिधा लक्षणों से भिन्न विशेष अर्थ अर्थात् व्यंग्यार्थ को प्रकट करता है। 3. व्यंग्यार्थ **जैसे:** मेरा घर गंगातट पर है। (इस वाक्य में शीतलता, पावनता आदि अर्थ भी अभिव्यक्त है। अत: यहाँ व्यंजना का प्रयोग है।)

व्यक्त *वि.* *(तत्.)* कोई भाव/पदार्थ इत्यादि जो 'प्रगट किया गया' अथवा 'सामने लाया गया'। 1. प्रगट 2. स्पष्ट, साफ। 3. निर्दिष्ट। प्रकटीकृत/प्रदर्शित।

व्यक्त करना *एक.* *(तत्.+हिं.)* मुख्यत: शब्दों द्वारा या अन्य प्रकार से भी अपने भावों और विचारों को प्रकट करना। (एक्सप्रेस करना)

व्यक्ति *पुं.* *(तत्.)* 1. हाड-मांस का बना कोई भी आदमी, मनुष्य (स्त्री या पुरुष) person 2. जाति या समूह का कोई एक प्रतिनिधित्व।

व्यक्तिगत *वि.* *(तत्.)* व्यक्ति विशेष से संबंधित। **पर्या.** वैयक्तिक, निजी। **विलो.** सामूहिक।

व्यक्तित्व *[व्यक्ति+त्व]* *पुं.* *(तत्.)* 1. व्यक्ति के गुणों या विशेषताओं का भाव। 2. किसी व्यक्ति के निजी गुणों या विशेषताओं का वह समूह जिनके आधार पर उसका मूल्यांकन होता है या उसका आचरण व्यवहार निर्धारित एवं नियंत्रित होता है। **पर्या.** वैयक्तिकता personality individuality

व्यग्र *वि..(तत्.)* 1. घबराया हुआ, दुखी, परेशान। **जैसे:** बच्चों की चोट देखकर मां व्यग्र हो गयी। 2. काम में लगा हुआ, व्यस्त। **जैसे:** हम काम में इतने व्यग्र थे कि खाने की भी सुध नहीं रही।

व्यग्रता *स्त्री.* *(तत्.)* व्यग्र होने का भाव, दु:ख, कष्ट, परेशानी, व्यस्तता। **दे.** व्यग्र।

व्यतीत *वि.* *(तत्.)* बीता हुआ (समय), बिताया हुआ (समय) **जैसे:** आपकी प्रतीक्षा में हमारा समय सार्थक व्यतीत हुआ।

व्यथा *स्त्री.* *(तत्.)* 1. घोर मानसिक कष्ट। 2. बहुत दु:ख देने वाली बात।

व्यथित *वि.* *(तत्.)* व्यथा (घोर मानसिक कष्ट) से ग्रस्त; बहुत दुखी।

व्यय *पुं.* *(तत्.)* 1. कोई वस्तु खरीदने या कोई काम करवाने इत्यादि में लगने वाली धनराशि। **पर्या.** खर्च **विलो.** आय। 2. किसी कारण परिमाण में कमी आना, **जैसे:** शक्ति, समय आदि में होने वाला व्यय।

व्यर्थ [वि+अर्थ]*वि.* *(तत्.)* 1. जो अर्थ रहित हो, अर्थात् बिना मतलब वाला। 2. बिना लाभ का 3. निरर्थक। 4. बेकार 5. विफल 6. निष्फल।

व्यवधान *पुं.* *(तत्.)* 1. दृष्टि पथ के बीच में आड़ करने वाली कोई वस्तु। पर्दा। 2. बाधा, रुकावट जो प्रगति के बीच आ जाए। **जैसे:** पदोन्नति में कुछ नियम व्यवधान बन जाए।

व्यवसाय *पुं.* *(तत्.)* 1. आजीविका हेतु किया गया पेशा या काम। occupation-projection 2. व्यापार, धंधा, उद्योग, रोजगार, कारोबार, प्रयास, business प्रयत्न।

व्यवसायी [व्यवसाय+ई] *पुं.* *(तत्.)* 1. व्यवसाय करने वाला व्यक्ति या संस्था 2. व्यापारी **दे.** व्यवसाय।

व्यवस्था *स्त्री.* *(तत्.)* 1. वस्तुओं को यथास्थान ठीक ढंग से रखना। 2. किसी काम को ठीक ढंग से करना। arrangement। 3. किसी संस्था का उचित ढंग से प्रबंध करना। management। 4. शास्त्रों या न्यायालय द्वारा निर्धारित नियमों के अनुसार कोई बात बतलाई जाना। ruling

व्यवस्थापक *पुं.* *(तत्.)* शा.अर्थ व्यवस्था करने वाला व्यक्ति। 1. किसी संस्था, कारखाने या न्यास की प्रशासनिक व्यवस्था देखने वाला अधिकारी। **पर्या.** प्रबंधक, संचालक।

व्यवस्था-प्रश्न *पुं.* (व्यव्सथा-प्रश्न) *(तत्.)* लोकसभा, विधानसभा आदि की बैठक में किसी सदस्य द्वारा उठाई गई नियम से संबंधी कोई आपत्ति। औचित्य-प्रश्न। point of order

व्यवस्थित *वि.* *(तत्.)* 1. जिसे ठीक तरह से उचित या निर्धारित स्थान और क्रम से रखा या लगाया गया हो। **जैसे:** यहाँ चित्रों को व्यवस्थित ढंग से लगाया गया है। 2. जो नियमों के अनुसार तथा व्यवस्था से युक्त हो। **जैसे:** यहाँ छात्रों की पढ़ाई व्यवस्थित ढंग से होती है। **विलो.** अव्यवस्थित।

व्यवहार *पुं.* *(तत्.)* सामाजिक संबंधों के निर्वाह में दो या दो से अधिक व्यक्तियों का आपसी बर्ताव behaviour, आचरण conduct 2. बहुत दिनों से चली आ रही प्रथा। practice 3. रुपए-पैसे आदि

का लेनदेन। **पर्या.** सहकारी, महाजनी banking business 4. प्रयोग, उपयोग use।

व्यसन *पुं.* *(तत्.)* सा.अर्थ बुरी लत, आदत या शौक **जैसे:** शराब पीना उसका व्यसन बन गया है। 2. अच्छे अर्थ में **पर्या.** दुर्व्यसन। बहुत अधिक आदी हो जाना। **जैसे:** कविता, कहानी पढ़ते रहना मेरा व्यसन बन चुका है।

व्यस्त *वि.* *(तत्.)* 1. किसी कार्य में तल्लीन या रत रहना।

व्यस्तता *स्त्री.* *(तत्.)* किसी कार्य में तल्लीन या रत रहने की स्थिति, व्यक्ति जिस काम में लगा हो उसे छोड़कर अन्य काम के लिए समय न निकाल पाने की स्थिति।

व्याकरण *पुं.* *(तत्.)* वह शास्त्र जिसमें किसी भाषा के शब्दों के प्रकारों और प्रयोग के नियमों का वैज्ञानिक विवेचन होता है। **जैसे:** पाणिनि की 'अष्टाध्यायी'।

व्याकुल (वि+आकुल) *वि.* *(तत्.)* किसी अप्रिय घटना के घटित हो जाने और उससे उबर न पाने की अवस्था में घबराया हुआ (व्यक्ति) **जैसे:** स्टेशन पहुँचने पर जेब में टिकट नहीं मिला तो वह व्याकुल हो गया।

व्याकुलता *स्त्री.* *(तत्.)* व्याकुल हो जाने की स्थिति।

व्याख्यान *पुं.* *(तत्.)* 1. किसी विषय की व्याख्या करने की क्रिया या भाव। 2. विवेचन, व्याख्या 3. भाषण। **जैसे:** आज एक अमेरिकी विद्वान ने 'वदों' पर अपना व्याख्यान दिया।

व्याधि *स्त्री.* *(तत्.)* शरीर का रोग, बीमारी। **जैसे:** बुखार, खाँसी आदि।

व्यापक *वि.* *(तत्.)* 1. विस्तृत क्षेत्र में फैला हुआ तथा प्रभाव-सम्पन्न। **उदा.** ईश्वर सर्वव्यापक है। 2. कुछ एक तक सीमित न होकर सभी से संबंध रखने वाला। **जैसे:** व्यापक दृष्टिकोण।

व्यापार *पुं.* *(तत्.)* 1. एक या एकाधिक वस्तुओं (उत्पादों) की खरीद और बिक्री की व्यवस्था। **पर्या.** **जैसे:** खाद्य तेलों का व्यापार। trade 2. आर्थिक लाभ से जुड़ा हुआ काम। **जैसे**: आजकल शिक्षा भी व्यापार बन गई है।

व्यापारिक *वि.* *(तत्.)* व्यापार-विषयक, व्यापार से संबंधित, **जैसे:** व्यापारिक वार्ता, व्यापारिक संबंध।

व्यापारी *पुं.* *(तत्.)* जीविकोपार्जन के लिए रोजगार या व्यापार के कार्य में लगा व्यक्ति। **पर्या.** व्यवसायी।

व्याप्त *वि.* *(तत्.)* 1. महँगाई बढ़ने से जनता में असंतोष व्याप्त है। 2. ईश्वर घट-घट में व्याप्त है।

व्याप्ति *स्त्री.* *(तत्.)* व्याप्त होने का भाव। **दे.** व्याप्त।

व्यायाम *पुं.* *(तत्.)* 1. शरीर के अंगों को स्वस्थ एवं पुष्ट करने के लिए नियमित रूप से किया जाने वाला शारीरिक अभ्यास। 2. शारीरिक कसरत, परिश्रम। exercise **जैसे:** हमें पूर्ण स्वस्थ रहने के लिए प्रात:काल नियमित रूप से व्यायाम करना चाहिए।

व्यावहारिक (व्यवहार + इक) *वि.* *(तत्.)* 1. व्यवहार से संबंधित। **विलो.** सैद् धांतिक। 2. जो व्यवहार में लाया जा सके। 3. क्रियात्मक, रीतिरिवाज़ या परंपरा के अनुसार practical 4. व्यवहार कुशल। **विलो.** अव्यावहारिक।

व्यूह *पुं.* *(तत्.)* 1. युद्ध के लिए सैनिकों की एक विशेष रचना जो शत्रु सेना को आगे बढ़ने से रोकने के लिए बनाई गई हो। 2. वायु सेना की स्थापना का विशेष प्रकार। 3. सेना। **जैसे:** महाभारत में आचार्य द्रोण द्वारा की गई व्यूह रचना अद्भुत थी।

व्योम *पुं.* *(तत्.)* 1. पृथ्वी के चारों ओर व्याप्त वह पारदर्शी शून्य तत्व जिसमें से होकर तारों (सूर्य भी एक तारा है।) की किरणें पृथ्वी तक पहुँचती है। 2. आकाश, अंतरिक्ष। **पर्या.** नभ, गगन, आसमान।

व्रण *पुं.* *(तत्.)* 1. आयु. शरीर में। त्वचा में प्राकृतिक कारणों से उत्पन्न होने वाला घाव। soure, ulcer 2. घाव, फोड़ा।

व्रती [व्रत+ई] *वि.* *(तत्.)* 1. जिसने कोई व्रत धारण किया हो। 2. दृढ़ निश्चय करने वाला। 3. उपवास करने वाला; उपवास से संबंधित। *पुं.* संयासी, ब्रह्मचारी, तपस्वी आदि।

श

शंका *वि. (तत्.)* इसका प्रवर्तन ईसवी सन से 77/78 वर्ष पहले और विक्रम संवत् से 135 वर्ष बाद हुआ था।

शंका *स्त्री. (तत्.)* निश्चय तक न पहुँचने देने वाला तत्व। **पर्या.** संशय, संदेह doubt

शंकालु [शंका+आलु] *वि. (तत्.)* 1. जिसका मन किसी व्यक्ति, वस्तु, गुण, व्यवस्था आदि के प्रति संदेह/शंका करने के स्वभाव वाला हो, संशयी **जैसे:** शंकालु व्यक्ति कभी शांति को प्राप्त नहीं करता। 2. संदेह करने वाला। शक्की।

शंकु *पुं. (तत्.)* 1. वृत्ताकार आधार और निरंतर घटती चौड़ाई वाली भुजाओं से निर्मित आकृति या ठोस पिंड जिसकी भुजाओं के अंतिम सिरे के बिंदु पर जाकर मिल जाते हैं। cone

शंकुधारी वृक्ष *पुं.(तत्.)* ऐसे वृक्ष जो ऊपर से नुकीले होते हैं और उनकी चौड़ाई नीचे की ओर क्रमश: बढ़ती जाती है। ऊँचे पर्वतों पर ऐसे वृक्ष पाए जाते हैं जहाँ हिमपात अधिक होता है। शंकु-आकार के कारण बर्फ नीचे फिसल जाती है और वृक्ष सुरक्षित रहते हैं।

शंक्वाकार *(शंकु+आकार) वि. (तत्.)* शंकु के आकार का। **दे.** शंकु।

शंख *पुं. (तत्.)* समुद्र में घोंघे की प्रजाति का बड़ा कीड़ा होता है। उसके शरीर पर एक कठोर कवच होता है। इस कवच को शंख कहते हैं। इसकी आकृति अंदर से घुमावदार होने के कारण एक ओर छिद्र होता है, फूँकने पर ध्वनि होती है। पूजन में इसका प्रयोग होता है।

शंखध्वनि *स्त्री. (तत्.)* शंख बजाने से होने वाली आवाज। **दे.** शंख।

शंखनाद *पुं. (तत्.)* **दे.** शंखध्वनि।

शऊर *पुं. (अर. शुऊर)* 1. काम करने की योग्यता, ढंग। **जैसे:** उसे तो अपनों से बात करने का भी शऊर नहीं है। सलीका। 2. समझ, बुद्धि। **जैसे:** शऊर से काम लो।

शक *पुं. (तत्.)* 1. *नृ.वि./अति* प्राचीन काल में भारत पर आक्रमण करने वाली मध्य एशिया की एक घुमक्कड़ जाति। 2. शक संवत् एक संवत् का नाम जिसे आज भारत में राष्ट्रीय संवत् की मान्यता दी गई है। **तु.** विक्रम संवत्

शकरकंद *[शकर+कंद] पुं. (तत्.)* जमीन के अंदर होने वाला, मूली के आकार का मटमैला या लाल/गुलाबी रंग का मीठे स्वाद वाला एक प्रसिद्ध कंद जिसे भूनकर या उबालकर खाया जाता है।

शकरपारा/शक्करपारा *पुं. (फ़ा. (शकरपार:)* वह गोल या चौकोर खाद्य पदार्थ जो मैदे और गुड़/शक्कर से बनता है।

शकुन *पुं. (तत्.)* 1. किसी व्यक्ति, वस्तु, पशु-पक्षी, क्रिया, घटना आदि के देखने-सुनने या होने आदि से मिलने वाला लोकमत पर आधारित शुभ-अशुभ का पूर्वानुमान। सगुन। 2. किसी विशेष कार्य के आरंभ में या किसी विशेष यात्रा के प्रारम्भ में दिखाई देने वाले शुभ लक्षण। 3. शुभ मुहूर्त। सगुन। **जैसे:** प्राय: लोग उत्तम शकुन देखकर कार्य प्रारम्भ करते हैं। **विलो.** अपशकुन।

शक्कर *स्त्री. (तद्.शर्करा)* 1. कच्ची चीनी, खांड जो गन्ने के रस से बनाई जाती है। 2. चीनी, शक्कर (मिल में बनी)। **जैसे:** सभी प्रकार की मिठाइयाँ शक्कर डालकर बनती हैं।

शक्की *वि. (अर.)* शक करने वाला।

शक्ति *स्त्री. (तत्.)* सा.अर्थ कार्य करने की क्षमता, ताकत या बल। **भौ.** ऊर्जा का उपयोग कर कार्य करने की समय-सापेक्ष दर। इसका मात्रक 'वाट' है। power

शक्तिपीठ *पुं. (तत्.)* वे उपासना स्थल जहाँ विशेष रूप से शक्ति पूजा का प्राधान्य होता है। **जैसे:** विंध्याचल, कामारव्या आदि। (विंध्येश्वरी)। **टि.** भारतीय पौराणिक मान्यता के अनुसार भारत में इक्यावन शक्तिपीठ हैं।

शक्तिपूजा *स्त्री.(तत्.)* 1. शक्ति अर्थात् देवी, दुर्गा, महाकाली, पार्वती आदि की पूजा/आराधना। **जैसे:** हम नवरात्रों में शक्ति पूजा करते हैं। 2. विजयादशमी के दिन की जाने वाली शस्त्रपूजा।

शक्तिवर्धक *[शक्ति+वर्धक] वि. (तत्.)* शा.अर्थ जो शारीरिक शक्ति को बढ़ाता हो, शक्ति बढ़ाने वाला। सा.अर्थ जो शारीरिक मानसिक श्रम करने,

रोगों से बचने तथा कामेच्छा को बढ़ाने का कार्य करे। **उदा.** कुछ औषधियाँ शक्तिवर्धक होती हैं।

शक्तिशाली *वि.(तत्.)* जिसमें शक्ति हो; शक्ति से युक्त, शक्तिसंपन्न। **विलो.** निर्बल/शक्तिहीन।

शक्तिसंपन्न *वि.(तत्.)* 1. जो शक्ति से युक्त हो, बलवान्, शक्तिशाली ताकतवर। 2. ला.अर्थ जो धन-बल, सत्ता आदि के सामर्थ्य से युक्त हो।

शक्तिहीन *वि.(तत्.)* जिसमें शक्ति न हो; शक्ति रहित।

शक्तिहीनता *स्त्री. (तत्.)* शक्तिहीन होने का भाव।

शक्ल *स्त्री. (अर.)* 1. (मुख्य रूप से) चेहरे की बनावट। face, looks 2. किसी भी वस्तु का आकार-प्रकार। **पर्या.** आकृति।

शक्लसूरत *[शकल+सूरत] स्त्री.(अर.)* 1. चेहरे की आकृति/बनावट, रूपाकृति। 2. रंग-रूप, आकार-प्रकार चेहरा-मोहरा, डील-डौल। 3. बाहरी स्वरूप; भाव दिखलाई पड़ने वाले।

शख्स *पुं. (अर.)* आदमी, व्यक्ति, जन। person individual

शख्सियत *स्त्री.(अर.) (शख्स=व्यक्ति+इयत)* शख्स होने का गुण या भाव। **पर्या.** व्यक्तित्व। personality

शगल *पुं. (अर. शूगल)* 1. खाली समय में किया जाने वाला कोई रुचिकर कार्य। 2. मन-बहलाने के लिए किया जाने वाला कोई कार्य, मनोविनोद। **जैसे:** मैं तो यह काम धनार्जन के लिए न करके शगल के लिए करता हूँ। 3. काम-धंधा, व्यापार।

शगुन *पुं. (तद्.>शकुन)* 1. किसी शुभ अवसर पर धन, वस्त्र, वस्तु अलंकार आदि के रूप दिए जाने की रीति या प्रथा। **जैसे:** नववधू को हमने पाँच सौ एक रुपए शगुन दिया। 2. वर-कन्या का विवाह निश्चित होने के बाद कन्या पक्ष की ओर से वर-पक्ष को दिया जाने वाला धन वस्त्र आदि। तिलक, लगन, टीका। 3. शुभ मुहूर्त। 4. **दे.** शकुन।

शज़रा/शजर *पुं. (अर.शज़्र:)* 1. वृक्ष 2. वंशावली (विशेषकर धर्मगुरुओं का), वंशवृक्ष। 3. पटवारी द्वारा बनाया हुआ खेत का नक्शा। **जैसे:** तुम्हें अपने खेत की स्थिति का पता 'शजरा' देखकर चलेगा।

शत *वि.(तत्.)* सौ। **पु.** सौ की संख्या।

शतक *पुं. (तत्.)* 1. एक ही तरह की सौ वस्तुओं का समूह या संग्रह, सैकड़ा **जैसे:** नीतिशतक, श्रृंगार शतक। 2. क्रिकेट के खेल में सौ रन पूरे करना। **जैसे:** तेंदुलकर शतकों का शतक लगा चुका है। 3. सौ वर्षों का काल शताब्दी। **जैसे:** इक्कीसवाँ शतक प्रारंभ हो चुका है। century

शतक *पुं. (तत्.)* सौ का समूह। **जैसे:** नीतिशतक। (खेल>क्रिकेट) बल्लेबाज द्वारा एक ही पारी में 100 या इससे अधिक रन बनाने की संख्या जो उल्लेखनीय मानी जाती है। century

शतदल *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ सौ दलों (पंखुडियों से युक्त) वाला (कमल पुष्प)। सा.अ. बड़े आकार का कमल। **पर्या.** पद्म, नीरज, सरोज अम्भोज।

शतपद *पुं. (तत्.)* शा.अ. सौ पैरों वाला (कीट)। सा.अर्थ वे कीड़े जिनके बहुत से पैर होते हैं। **जैसे:** कनखजूरा आदि।

शत-प्रतिशत *[शत+प्रति+शत] क्रि.वि. (तत्.)* व्यु.अर्थ सौ में से सौ। सा.अर्थ पूरी तरह से, पूर्णत:, संपूर्ण रूप से।

शतरंज *पुं. (फा.)* दो व्यक्तियों के बीच हार-जीत का खेल जो सफेद-काले के क्रम से चौंसठ खाने वाले पटल पर सोलह-सोलह (कुल बत्तीस) मोहरों से खेला जाता है।

शताब्द *पुं. (तत्.)* **दे.** शताब्दी।

शताब्दी *स्त्री. (तत्.) [शत+अब्द+ई]* शा.अर्थ सौ वर्णों की इकाई; सौ वर्षों की अवधि। 1. किसी सन्, संवत् की एक से लेकर सौ तक की अवधि, शती, शतक। century **जैसे:** 1901 से 2000 तक की बीसवीं शताब्दी। **पर्या.** सदी। 2 किसी व्यक्ति के जन्म या संस्था की स्थापना से शुरू कर सौ वर्ष की अवधि पूरी हो जाने पर मनाया जाने वाला समारोह। **पर्या.** शतवार्षिकी। century

शत्रु *पुं. (तत्.)* व्यक्ति/समूह या देश जो अन्य व्यक्ति, समूह या देश के प्रति अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए वैरभाव रखता हो। **पर्या.** दुश्मन, वैरी। **विलो.** मित्र।

शत्रुता *स्त्री. (तत्.)* शत्रु होने का भाव, शत्रुभाव। **पर्या.** दुश्मनी, वैर। **दे.** शत्रु।

शत्रुघ्न *वि. (तत्.)* 1. शत्रुओं का नाश करने वाला, शत्रुहंता। 2. लक्ष्मण के छोटे भाई का नाम।

शनैः-शनैः *क्रि.वि.(तत्.)* धीरे-धीरे।

शपथ *स्त्री. (तत्.)* किसी कार्य को करने की मौखिक या लिखित रूप में दृढ़ स्वीकारोक्ति। **पर्या.** कसम, सौगंध।

शपथ ग्रहण *पुं. (तत्.)* शपथ लेना।

शपथ ग्रहण समारोह *पुं. (तत्.)* किसी अति महत्त्वपूर्ण व्यक्ति (जैसे-मंत्री/प्रधानमंत्री न्यायाधीश आदि) द्वारा पद-ग्रहण से पहले सर्वोच्य पदाधिकारी (क्रमश: राष्ट्रपति, प्रधान न्यायाधीश आदि) के सम्मुख अपने कार्यकाल के दौरान पद की गरिमा और गोपनीयता बनाए रखने हेतु ईश्वर के नाम पर अथवा सत्यनिष्ठा से ली गई शपथ से संबंधित औपचारिक समारोह/उत्सव।

शपथ-पत्र *पुं. (तत्.)* शपथकर्त्ता द्वारा हस्ताक्षरित वह (लिखित) पत्र जिसमें वह यह बताता है कि उल्लिखित सारी बातें उसकी जानकारी के अनुसार पूरी तरह से सही हैं। **पर्या.** हलफनामा। affidavit

शपथ-भंग *पुं. (तत्.)* मौखिक रूप से खाई गई या लिखी गई शपथ का पालन न किया जाना।

शबद *पुं. (तद्.>शब्द)* महात्मा कबीर, गुरुनानक आदि संतों की वाणी।

शबनम *स्त्री. [शब+नम] (फा.)* 1. वह नमी जो रात में फूल-पत्तों पर बूँद की तरह इकट्ठी हो जाती है। ओस। 2. एक प्रकार का बहुत पतला कपड़ा।

शबनमी *(फ़ा.) स्त्री* . 1. ओस से बचने के लिए ताना गया कपड़ा। 2. आँसुओं से भरा **जैसे:** शबनमी आँखें।

शब्द *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ ध्वनि, आवाज। वाक्-स्वनों/वर्णों के योग से निर्मित और मुख से उच्चरित या लिखित स्वतंत्र और सार्थक इकाई। **जैसे**: मैं, हम, तुम, बालक, पुस्तक आदि।

शब्दकोश/शब्दकोष *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ शब्दों का संग्रह। **भाषा.** वह संदर्भ ग्रंथ जिसमें भाषा-विशेष (स्त्रोत भाषा) के सभी शब्दों का उसी भाषा में या किसी अन्य भाषा (लक्ष्य भाषा) में अर्थ, व्याख्या, परिभाषा के साथ-साथ उच्चारण, व्याकरणिक कोटि, पर्याय, स्त्रोत (व्युत्पति), प्रयोग (उदाहरण) मुहावरे आदि की सूची संग्रहीत हो। dictionary

शब्द-परिवार शब्दों का परिवार। **दे.** शब्द।

शब्दभंडार *[शब्द+भंडार] पुं. (तत्.)* किसी भाषा के सभी शब्दों का समूह, शब्दकोश। **जैसे:** हिंदी भाषा का शब्द भंडार बहुत बड़ा है।

शब्द-भेद *पुं. (तत्.)* **व्या.** किसी भी भाषा के शब्दों का प्रकार्य की दृष्टि से संज्ञा, विशेषण, क्रिया, क्रियाविशेषण आदि में किया गया मोटा वर्गीकरण। parts of speech

शब्द-युग्म *पुं. (तत्.)* सुनने में लगभग मिलता-जुलता पर अर्थ में भिन्न दो शब्दों का जोड़ा। **जैसे:** कर्म-क्रम; राज़-राज; चिता-चिंता; डेढ़-ढेर, बार-वार; बूड़ा-बूढ़ा।

शब्द-शक्ति *स्त्री. (तत्.)* शा.अर्थ शब्द की शक्ति। काव्यशास्त्र-शब्दों के अर्थ की प्रतीति कराने वाली शक्ति। शब्द-शक्ति के तीन भेद प्रचलित हैं- अभिधा, लक्षणा, व्यंजना।

शब्द-साधन *पुं.(तत्.)* **व्या.** शब्द-निर्माण की प्रक्रिया जिसके अनुसार संज्ञा, क्रिया आदि शब्दों से अन्य शब्द बनाए जाते हैं। **जैसे:** लडक़ा-लडक़पन, परिवार-पारिवारिक, मीठा-मिठाई, बात-बतियाना आदि-आदि।

शब्दांश *[शब्द+अंश] पुं. (तत्.)* शब्द का एक भाग, **जैसे:** उपसर्ग, प्रत्यय या समासयुक्त पद में एक शब्द।

शब्दाडंबर *[शब्द+आडंबर=दिखावा] पुं. (तत्.)* शा.अर्थ शब्दों का दिखावा। सा.अर्थ पांडित्य प्रदर्शन के लिए सरल शब्दों के स्थान पर जटिल शब्दावली का प्रयोग। **पर्या.** शब्दजाल।

शब्दातीत *[शब्द+अतीत] वि. (तत्.)* 1. जो शब्दों से परे हो अर्थात् शब्दों द्वारा जिसे व्यक्त करने में शब्द समर्थ न हों। **जैसे:** प्रभुकृपा शब्दातीत है। 2. जिसका शब्दों में वर्णन न हो सके। **जैसे:** उस आतिथ्य का वर्णन शब्दातीत है।

शब्दार्थ *[शब्द+अर्थ] पुं. (तत्.)* शब्द का उसी भाषा में या अन्य भाषा/भाषाओं में बताया गया अर्थ। word meanining

शब्दालंकार *[शब्द+अलंकार] पुं. (तत्.)* वाक्य में प्रयुक्त शब्दों का ध्वनि, रूप रचना, प्रयोग आदि की दृष्टि से चामत्कारिक प्रयोग। **जैसे:** 'कंकन

किंकिनि नूपुर धुनि सुनि'...(में अनुप्रास) कनक कनक ते सौ गुनि मादकता अधिकाय....' 'में यमक) तथा बेकार-1. बिना काम-धंधे वाला, 2. बिना कार वाला (श्लेष) **तुं.** अर्थालंकार।

शब्दावली *[शब्द+अवली] स्त्री. (तत्.)* शब्दों का भंडार या शब्दों की सूची। **जैसे:** वैज्ञानिक शब्दावली आयोग। 2. शब्दों का व्यवस्थित क्रम। **जैसे:** पूर्व प्रधानमंत्री वाजपेयी के भाषण में शब्दावली का सौंदर्य अद्‌भुत होता था।

शमा *(अर. शमअ) स्त्री. (तत्.)* 1. बत्ती, दिया, 2. मोमबत्ती। **जैसे:** जीवन में ज्ञान की शमा जलानी चाहिए।

शयन *पुं. (तत्.)* (लेटकर) सोना, नींद लेना।

शयनकक्ष *पुं.(तत्.)* निवास-गृह में परिवार के सदस्यों के सोने के लिए उपयोग में आने वाला कमरा। **पर्या.** शयनागार। bed room

शयनयान *पुं. (तत्.)* रेलगाड़ी आदि का वह आरक्षित डिब्बा जिसमें लोग सोते हुए सफर कर सकते हैं। sleeper

शर *पुं. (तत्.)* बाण, तीर।

शरण *स्त्री. (तत्.)* 1. रक्षा, आश्रय, घर, मकान। shelter 2. बचाव का साधन, बचाव का स्थान। refugee

शरणस्थल/स्थली *पुं./स्त्री. (तत्.)* वह स्थान जहाँ विपत्ति में किसी को शरण या आश्रय मिले।

शरणागत *[शरण+आगत] वि.(तत्.)* 1. शरण में आया हुआ। 2. शरण माँगने वाला।

शरणागति *स्त्री. (तत्.)* शरणागत होने की स्थिति। **दे.** शरणागत, शरण।

शरणार्थी *[शरण+अर्थी] वि.(तत्.)* शा.अर्थ 1. शरण चाहने वाला। 2. एक स्थान से निष्कासित होने पर दूसरे स्थान पर, आकर बसने वाला या नया बसा हुआ। refjugee

शरत्/शरद् *स्त्री. (तत्.)* 1. वर्षा ऋतु के बाद की वह ऋतु जो आश्विन और कार्तिक (सितम्बर-अक्टूबर, नवंबर) महीनों में रहती है। इसमें मौसम सम रहता है। **जैसे:** शरत् पूर्णिमा 2. वर्ष।

शरद पूर्णिमा *[शरद्+पूर्णिमा] स्त्री. (तत्.)* 1. शरद् ऋतु में आश्विन मास की पूर्णिमा तिथि। 2. शरद पूर्णिमा की रात जब चंद्र स्वच्छ, नीले आकाश में अपनी पूरी प्रभा के साथ प्रकाशित होता है। **जैसे:** शरदपूर्णिमा को ही महर्षि वाल्मीकि का जन्मोत्सव मनाया जाता है।

शरदाकाश *पुं. (तत्.)* (शरद् ऋतु का) आकाश जो बादलों से रहित होने के कारण अत्यंत स्वच्छ एवं नीला होता है। **जैसे:** तारों की छटा तथा चंद्रमा की चाँदनी तो शरदाकाश में ही दर्शनीय हीती है।

शरपत *स्त्री. (तद्. (शरपन)* एक प्रकार की लंबी घास जो पानी में होती है तथा जिस पर आगे की ओर झुके हुए बारीक काँटे होते हैं।

शरबती/शर्बती *वि.(अर.>तत्.)* 1. शर्बत के रंग का पीलापन और हरापन लिए हुए कुछ लाल या गुलाबी (रंग)। 2. शर्बत जैसा मीठा और रसभरा। 3. मादक। **जैसे:** शर्बती आँखें।

शरमाना/शर्माना *(शरम/शर्म =ना.धा.) अं. क्रि. (फ़ा.)* 1. प्राचीन सामाजिक परंपरा के अनुसार बड़े-बूढ़ों के सामने बहू का खुले मुँह सामने आने से हिचकना। 2. किसी अशोभनीय कार्य के हो जाने पर दूसरों को उसकी जानकारी मिल जाने की स्थिति में कर्ता का लज्जित होना। 3. लज्जित होना, लजाना। संकोच करना।

शरमिंदगी/शर्मिंदगी *स्त्री. (फा.)* लज्जित होने का भाव। **पर्या.** लज्जा। **दें** शरमाना।

शरमिंदा/शर्मिंदा *वि.(फा.)* लज्जित। **दे.** शरमाना।

शरमीला/शर्मीला *वि. (अर.)* (वह व्यक्ति) जो शरम/शर्म करे। **पर्या.** लज्जाशील, संकोची, शर्मानेवाला।

शरशैया *स्त्री. (तत्.)* शा.अर्थ तीरों का बिछौना। **टि.** 1. महाभारत में वर्णित भीष्मपितामह के लिए अर्जुन के तीरों से बना बिछौना जिस पर वे कुरुक्षेत्र के मैदान में घायलावस्था में तब तक लेटे रहे जब तक उन्होंने सूर्य के उत्तरायाण होने तक इच्छामृत्यु का वरण नहीं कर लिया। 2. अति कष्टकर जीवन।

शराफ़त *स्त्री. (अर.)* शा.अर्थ शरीफ़ होने का भाव/गुण। सा.अ. 1. दूसरों के साथ सज्जनता व शिष्टता का व्यवहार। **जैसे:** जब हम उस अधिकारी से मिले, वे बड़ी शराफत से पेश आए। 2. नेकी, भलमनसाहत, सज्जनता। 2. शराफत दिखाकर ही तुम सम्मान पा सकते हो। 3. कुलीनता। 4. सभ्यता, शिष्टता।

शराब *स्त्री.(अर.)* पीने पर नशा लाने वाला आसव भभके से वाष्पित होकर ठंडा हुआ द्रव पदार्थ, मद्‌ध; मदिरा।

शराबखाना *पुं. (अर.+फा.)* स्थान जहाँ शराब बिकती हो और बैठकर पी जा सकती हो। **पर्या.** मदिरालय, मधुशाला।

शराबखोर *वि./पुं. (अर.+फा.)* शराब पीने वाला (व्यक्ति)। **पर्या.** शराबी, मद्‌धय।

शराबखोरी *स्त्री. (अर.+फा.)* शराब पीने की आदत; शराब पीने की क्रिया। **पर्या.** मद्‌यपान।

शरारत *स्त्री. (अर.)* किसी को तंग या परेशान करने के लिए की गई हरकत। **पर्या.** शैतानी, नटखटपना, दुष्टता।

शरारती *वि.(अर.)* शरारत से संबंधित। **पुं.** शरारत करने वाला व्यक्ति।

शरीक *वि. (अर.)* किसी कार्य में सम्मिलित (होने वाला)। **पर्या.** शामिल, सम्मिलित।

शरीफा *पुं. (तद्.श्रीफल)* 1. उभरे हुए छिलके वाला, मीठे गूदे से युक्त एक गोलाकार मीठा फल जिसमें काले बीज होते हैं। 2. उक्त फल वाला वृक्ष जो सामान्य आकार का (न बहुत छोटा न अधिक बड़ा) और पहाड़ों पर होता है।

शरीर *पुं. (तत्.)* जीवधारियों के सभी अंगों का समूह। 2. सभी अंगों/अवयवों समेत प्राणी का दृश्यमान रूप। **पर्या.** 1. काया, तन, देह, (बॉडी)। **वि.** (अर.) 1. शैतान। 2. नटखट, पाजी, दुष्ट।

शरीर विज्ञान *पुं. (तत्.)* प्राणियों की शरीर रचना और शरीर के अंगों के कार्यों से संबंधित अध्ययन की जीवविज्ञान की एक शाखा। **जैसे:** 'शरीर विज्ञान' physiology का अध्ययन एक चिकित्सक के लिए अत्यंत आवश्यक है।

शर्करा *स्त्री. (तत्.)* रसा. मीठा, विलेय, दानेदार कार्बोहाइड्रेट का संग्रह जो गन्ने के रस, चुकंदर के गूदे आदि से प्राप्त होता है। **पर्या.** शक्कर, चीनी। sugar

शर्तिया *वि. (अर. शर्तिय:)* 1. अनिवार्य, निश्चित, लाजिमी। 2. अचूक, पक्का। **जैसे:** यहाँ दमा का शर्तिया इलाज होता है। 3. शर्तों के अनुसार। **जैसे:** शर्तिया कुश्ती। *क्रि.वि.* निश्चयपूर्वक। **जैसे:** शर्तिया अब वह घर पर ही होगा।

शर्बत/शरबत *पुं. (अर.)* 1. शकर घोल कर मीठा किया ठंडा जल जो विशेष रूप से गर्मी के मौसम में पिया जाता है। 2. स्वास्थ्य की दृष्टि से बना वह मीठा औषधीय पेय जो फलों , ओषधियों के रस या बादाम-किसमिस आदि घोटकर बनाया जाता है। **जैसे:** अनार का शर्बत, अनानास का शर्बत।

शर्बती *वि.* 1. शर्बत की तरह मधुर। 2. शर्बत के रंग का-कुछ पीला, कुछ लाल या कुछ गुलाबी। 3. ला.अर्थ सरस, मधुर, प्रिय। **जैसे:** शर्बती आँखें।

शर्बा *(जाति नाम)* शा.अर्थ पूर्व वाला (तिब्बती भाषा में) तिब्बती भोटियों की एक जाति का नाम।

शर्मनाक *वि. (फा.)* (ऐसा कार्य) जिसे करने में या बताने में शर्म हो। **पर्या.** लज्जाजनक, लज्जास्पद।

शर्मिंदा/शरमिंदा *वि. (फ़ा.शर्मिन्द:)* अनुचित आचरण से लज्जा अनुभव करने वाला। **पर्या.** लज्जित।

शलजम *स्त्री.(फा.)* 1. एक गोलाकार कंद जिसे सब्जी, आचार आदि के रूप में खाया जाता है। **पर्या.** शलगम।

शलभ *पुं. (तत्.)* पतंग, पतिंगा, टिड्डी।

शलाका पुरुष *पुं. (तत्.)* किसी कालखंड, देश, स्थान, क्षेत्र आदि का सर्वोच्य स्थिति प्राप्त अत्यंत आदरणीय और महत्वपूर्ण व्यक्ति। **जैसे:** स्वतंत्रता के शलाका पुरूष महात्मा गाँधी; संस्कृत साहित्य के शलाका पुरूष महाकवि कालिदास।

शलाका *स्त्री. (तत्.)* सा.अर्थ सलाई, सींक। **इंजी-** लकड़ी या धातु का लंबा टुकड़ा जिसका उपयोग रोधक के रूप में किया जाए। **जैसे:** अर्गला बार, rod

शल्क *पुं. (तत्.)* 1. मछली के शरीर पर बने छिलके। (स्केल) 2. प्याज की परत; प्याज का छिलका। 3. वृक्ष की छाल। 4. पपड़ी।

शल्य चिकित्सा *स्त्री. (तत्.)* शरीर के अंगों की चीर-फाड़ कर रोगों का इलाज करने की विधि। **पर्या.** शल्यकार्य। surgery **तु.** कायचिकित्सा।

शल्यचिकित्सक *पुं. (तत्.)* चिकित्सक जो शरीर के अंगों की चीरफाड कर रोग का उपचार करता है। (सर्जन)। **तु.** कायचिकित्सक।

शल्योपचार [शल्य+उपचार] *पुं. (तत्.)* किसी शारीरिक रोग या विकार को शल्य क्रिया द्वारा पूर्णतया ठीक करने की प्रक्रिया। चीरफाड़। operation

शव *पुं. (तत्.)* जीवित प्राणी की मृत्यु हो जाने के बाद दाहकर्म करने/दफनाने तक दिखाई पड़ने वाला निष्प्राण शरीर; मृत शरीर। dead body, corprse

शवदाह *पुं. (तत्.)* शव (मृत शरीर) को चिता पर जलाने की क्रिया।

शवदाहशाला *स्त्री. (तत्.)* बिजली की ज्वाला से (न कि लकड़ी से बनी चिता पर रखकर) मृत शरीर का दाहकर्म करने का स्थल। electric crematorium

शव परिक्षा *स्त्री. (तत्.)* किसी मृत व्यक्ति के शरीर की चिकित्सक द्वारा इस दृष्टि से जाँच कि उसकी मृत्यु का वास्तविक कारण क्या था। postmortem, autopsy

शवयात्रा *स्त्री. (तत्.)* शव को अर्थी पर लिटाकर अथवा ताबूत में रखकर श्मशान या कब्रगाह तक ले जाने की धर्मानुसार क्रिया।

शशिकांत *पुं. (तत्.)* 1. कुमुद का फूल, कुई। 2. चंद्रकांत मणि।

शशिधर [शशि=चंद्रमा+धर=धारण करने वाला] *वि. (तत्.)* **पुं.** शिव, महादेव। **जैसे:** शशिधर को सभी नमन करते । धन्य सभी जीवन को करते।

शस्त्र *पुं. (तत्.)* हाथ में रखकर (न कि फेंककर) लडाई (युद्ध) के समय प्रयोग में लाया जाने वाला हथियार। **जैसे:** तलवार, बरछी, फरसा आदि। **तु.** अस्त्र।

शस्त्र विद्या *स्त्री.* शस्त्र चलाना सीखने अथवा सिखाने की कला का ज्ञान।

शस्त्र-समर्पण *पुं. (तत्.)* 1. हार जाने वाली सेना द्वारा हथियारों का उपयोग रोक देना। 2. हार जाने वाली सेना के नायक द्वारा सेना नायक के समक्ष प्रतीक रूप से शस्त्र रख देने और समर्पण पत्र पर हस्ताक्षर करने की औपचारिक क्रिया।

शस्त्रागार [शस्त्र+आगार=स्थान] *पुं.* (तत्.) शस्त्रास्त्र रखने का स्थान, युद्ध सामग्री का भंडारगृह। **पर्या.** शस्त्रशाला।

शहंशाह/शाहंशाह *पुं. (फ़ा.)* 1. शाहों का शाह, बहुत बड़ा बादशाह। 2. राजाधिराज, सम्राट। **उदा.** अकबर को शहंशाह कहा जाता था।

शह *स्त्री. (तत्.)* 1. अप्रत्यक्ष रूप से किसी को भड़काने का कार्य; बढ़ावा। **जैसे:** कुछ बालक माँ-बाप की शह पाकर बिगड़ जाते हैं। 2. किश्त (शतरंज के खेल में)। 3. गलत काम के लिए प्रोत्साहन। **जैसे:** तुम्हारी शह मिलने से वह उससे विवाद कर बैठा।

शहजादा *[शाह+जादा=पुत्र] पुं. (फा. (शाहजाद:)* राजा का पुत्र। **पर्या.** राजपुत्र, युवराज।

शहतीर *पुं. (फा.)* 1. लकड़ी का सीधा, लंबा-घनाकार लट्ठा। 2. छत की कड़ी, बीम, धरन।

शहरी *पुं. (फा.)* 1. शहर का रहने वाला, जो एक नगर में रहता हो। नागरिक, नगरवासी। नगरीय। 2. शहर या नगर से संबंधित। नागर। **जैसे:** शहरी तहजीब, शहरी, शिक्षा, शहरी आदतें आदि।

शहरीकरण *पुं. (फा.)* 1. शहर के पास के किसी स्थान पर शहर के समान सुविधाओं एवं व्यवस्था का उपलब्ध कराया जाना। 2. शहरनुमा बसावट एवं बिजली, पानी जैसी अन्य व्यवस्थाएँ होना।

शहादत *स्त्री. (अर.)* शा.अ. शहीद होने का भाव। सा.अ. 1. जनहित, राष्ट्र-हित, धर्मरक्षार्थ आदि के लिए सर्वस्व न्यौछावर कर देना। 2. बलिदान, कुर्बानी, हुतात्मता। **जैसे:** भारत की स्वतंत्रता के लिए अनेक राष्ट्रभक्तों ने अपनी शहदत दी।

शहीद *पुं. (अर.)* देश, धर्म या समाजहित में अपने पवित्र कर्तव्य का पालन करते हुए बलिदान होने वाला व्यक्ति। **जैसे:** देश की रक्षा के लिए शहीद होने वालों को हम सादर नमन करते हैं। शहीदी-शहीद से संबंधित। **जैसे:** शहीदी दिवस।

शांति *स्त्री. (तत्.)* 1. मन की वह स्थिति जिसमें व्याकुलता नहीं होती। 2. शोरगुल, मार-पीट, उछल-कूद आदि का अभाव। **पर्या.** नीरवता, सन्नाटा। 3. युद्ध एवं मार-काट आदि का अभाव। 4. देश या समाज में आंदोलन, उपद्रव, लूटमार, चोरी, झगड़ा इत्यादि न होने की स्थिति। piece 5. ग्रह बाधा/भूतबाधा आदि का अमंगल दूर करने का विधान।

शांतिप्रिय *वि. (तत्.)* 1. जिसे शांतिप्रिय हो। 2. जो किसी प्रकार के लड़ाई-झगड़े से दूर रहकर/बचकर अपना जीवन शांतिपूर्वक बिताना चाहता हो। **जैसे:** हमारा देश शांतिप्रिय है।

शाक *पुं. (तत्.)* 1. हरी पत्तियों वाली वनस्पति, साग। 2. तरकारी, माजी-पत्ती, फल, फूल आदि पकाकर खाने योग्य सब्जी। **जैसे:** पालक**,** बथुआ, सरसों आदि की पत्तियों से निर्मित साग।

शाकाहार *[शाक+आहार] पुं. (तत्.)* 1. वनस्पति जन्य पदार्थों (पत्ती, फल, फूल, जड़ आदि से निर्मित) दूध ये बने पदार्थों एवं अन्न से निर्मित भोजन। 2. माँस, मछली, अंडा आदि छोड़कर अन्य प्राकृतिक। निरामिष भोजन। vegetarian food **विलो.** मांसाहार।

शाकाहारी-नैतिक धार्मिक या स्वास्थ्य संबंधी कारणों से अनाज, फल, साग, दूध आदि से बना भोजन खाने वाला **जैसे:** उत्सव में आये सभी लोग शाकाहारी हैं। vegetarian

शाक्त *वि. (तत्.)* 1. शक्ति संबंधी। 2. वह जो शक्ति (दुर्गा, पार्वती आदि महाशक्ति) की उपासना करता हो। **पुं.** शाक्त संप्रदाय का साधक।

शागिर्द *पुं. (फ़ा.)* 1. शिष्य, चेला। 2. (किसी गुरु का) विद्यार्थी, 3. सेवक,

शागिर्दी *स्त्री. (फा.)* शिष्यत्व। **जैसे:** मैंने गुरु महापात्र की शागिर्दी में शास्त्रीय नृत्य सीखा है।

शातिर *वि. (अर.)* 1. (शतरंज आदि का) चालाक खिलाड़ी, जिसकी चालें चालाकी से युक्त होती हैं। **जैसे:** 1. वह शातिर बदमाश है। 2. वह शातिर राजनीतिज्ञ है।

शादी [शाद-खुश+ई=भावतत्मक-प्रत्यय] *स्त्री. (फा.)* **व्यु.** 1. खुशी, आनंद, 2. विवाह।

शान *स्त्री. (अ.)* तड़क-भड़क, ठाठ-बाट, भव्यता, प्रतिष्ठा।

शानदार *वि. (अ.)* शान से युक्त। **दे.** शान।

शानदार *वि. (फा.)* शानवाला; ठाठ-बाट से युक्त, भड़कीला; भव्य; आकर्षक।

शाप *पुं. (तत्.)* 1. किसी ऋषि, मुनि, योगी, गुरु या सिद्ध पुरुष अथवा सती स्त्री के द्वारा किसी अपराधी या दुराचारी के आचरण से खिन्न होकर उसके प्रति सहसा मुख से निकाले गए अनिष्टकर वचन। किसी अनिष्ट की कामना से कहा हुआ शब्द या वाक्य। बद्दुआ, अभिशाप। **जैसे:** दुर्वासा का शकुंतला को शाप। **विलो.** आशीर्वाद, वरदान।

शापभ्रष्ट *वि. (तत्.)* 1. शाप के कारण भटका हुआ या अधोगति को प्राप्त। 2. पीड़ित, व्यथित। **जैसे:** गंगा स्वर्ग से शापभ्रष्ट होकर पृथ्वी पर आई।

शापमुक्त *[शाप+मुक्त] वि. (तत्.)* 1. जो समय आने पर या किसी के द्वारा या किसी उपाय से दिये हुए शाप से मुक्त हो गया हो। 2. अभिशाप से मुक्त। **जैसे:** शिला रूपा अहल्या श्रीराम जी के चरण स्पर्श मात्र से शापमुक्त होकर नारी रूप हो गई। **विलो.** शापग्रस्त। **दे.** शाप।

शाबाश *[शाद=प्रसन्न+बाश=रहने वाला-फा. प्रत्यय]* **अव्य** (शाद-अर.+बाश-फा.) सराहनात्मक एवं आशीर्वादात्मक शब्द। **पर्या.** साधु-साधु, धन्य-धन्य।

शाबाशी *[शाद=प्रसन्न+बाश=रहने वाला-फा. प्रत्यय +ई हिंदी प्रत्यय] स्त्री. (अर.+फा.)* शा.अर्थ 'प्रसन्न रहा' का भाव। सा.अर्थ 1. कोई अच्छा कार्य करने पर प्रोत्साहन हेतु आशीर्वाद का भाव। 2. प्रोत्साहन, साधुवाद।

शाब्दिक *[शब्द+इक] वि. (तत्.)* 1. शब्दों से संबंधित; ध्वनि से संबंधित। सपजमतंस 2. शब्दों में कहा जाने वाला। 3. (व्या.) शब्दशास्त्र या व्याकरण के नियमों से संबंधित। 4. (अनुवाद) मूल पाठ के एक-एक शब्द को लेकर किया हुआ (अनुवाद, अर्थ आदि)। **जैसे:** इस लेख का हिंदी में शाब्दिक अनुवाद कर दिया गया है।

शाम *स्त्री. (फा.)* 1. सूरज डूबने का समय। **पर्या.** संध्या, साँझ। ला.अर्थ अंतिम अवस्था, बुढापा। **जैसे:** जिंदगी की शाम=जीवन संध्या।

शामत *स्त्री. (अर.)* 1. किसी विषम परिस्थिति, किसी भूल या अन्य दोष के कारण आने वाली कोई मुसीबत, दुर्दशा। 2. दुर्भाग्य, विपत्ति; फजीहत। **जैसे:** यदि उसका ऋण नहीं चुकाया तो शामत आ जाएगी।

शामियाना *पुं. (फ़ा.शामियान:)* कपड़े से बना, चँदोवा से युक्त, चारों ओर खुला हुआ तम्बू जो किसी भी उत्सव, जनसभा आदि के अवसर पर

खुले मैदान में लगाया जाता है। **जैसे:** विवाहोत्सव के लिए यहाँ एक बड़ा शामियाना लगाया गया है।

शामिल *वि. (अर.)* 1. जिसे मिला लिया गया हो। सम्मिलित, शरीफ। **जैसे:** आज प्रीतिभोज में सभी प्रमुख नेता शामिल थे। 2. संयुक्त, जुड़ा हुआ। **जैसे:** भोजन में मक्खन शामिल नहीं है। 3. इक्ट्ठा। **जैसे:** महँगाई के खिलाफ इस आंदोलन में सभी निवासी शामिल होकर अपना विरोध व्यक्त करें।

शायद *क्रि. वि. (फ़ा.)* 1. संभवतः, कदाचित्, हो सकता है। 2. जिस कार्य में निश्चितता न हो, संदेह की संभावना हो। **टि. 'ही'** लगा देने पर नकारात्मकता बढ़ जाती है। **जैसे:** शायद ही वह परीक्षा दे पाए। (न देने की संभाव्यता अधिक है।)

शायर *पुं. (अर. (शाइर)* शा.अर्थ शेर (कविता) लिखने वाला। सा.अर्थ अरबी, फारसी, उर्दू आदि भाषाओं में कविता लिखने वाला। **पर्या.** कवि। स्त्री. शाइरा (शायरा)।

शायिका *स्त्री. (तत्.)* रेलगाड़ी में रात्रि में सोकर यात्रा करने वाले डिब्बे sleeping coach में यात्री के लिए आरक्षित एक पूरी सुविधापूर्ण, पटरी। sleeper berth

शारदा *स्त्री. (तत्.)* 1. ज्ञान और विद्या की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती। 2. प्राचीन काल में काश्मीर में प्रचलित एक लिपि का नाम। **उदा.** वीणापाणि शारदे ज्ञान का भंडार भर दे। **टि.** पौराणिक मान्यता के अनुसार शरद् ऋतु में जन्म होने के कारण सरस्वती को 'शारदा' कहा जाता है।

शारीरिक *[शरीर+इक] वि. (तत्.)* 1. शरीर से संबंधित। **जैसे:** स्वास्थ्य के लिए शारीरिक श्रम आवश्यक है। 2. शरीर में होने वाला **जैसे:** बालकों के शारीरिक परिवर्तनों को हमें समझना चाहिए।

शाल *पुं. (तत्.)* 'साखू' नाम का प्रसिद्ध एक लंबा वृक्ष जो प्राय: पर्वतीय क्षेत्रों या वनों में पाया जाता है तथा जिसके सफेद रंग के फूल बसंत ऋतु में खिलते हैं। **उदा.** पीले शाल की लकड़ी के दरवाजे एवं चौखट आदि मकानों में लगाए जाते हैं।

शाल *स्त्री. (फ़ा.)* ऊन के धागों से बनी ओढ़ने की गर्म चादर जिसे ठंड के मौसम में लोग ओढ़ते हैं। दुशाला।

शाला *स्त्री. (तत्.)* 1. किसी अच्छे कार्य के लिए बना हुआ स्थान विशेष। **जैसे:** पाठशाला, कार्यशाला, गोशाला, धर्मशाला आदि। 2. गृह, घर, जगह।

शालीन *[शाला+ईन] वि. (तत्.)* व्यु.अर्थ शाला (पाठशाला) से संबंधित अर्थात सुसंस्कृत। सा.अर्थ 1. विनीत, विनम्र। 2. लज्जालु, शर्मीला, संकोची। 3. सुसंस्कृत, आचारवान। 4. धनी, प्रतिष्ठित white collared

शालीनता *स्त्री. (तत्.)* शालीन होने का भाव। **दे.** शालीन।

शावक *पुं. (तत्.)* किसी पशु या पक्षी का छोटा बच्चा। **जैसे:** मृगशावक, सिंहशावक, शुकशावक।

शाश्वत *वि. (तत्.)* सदा बना रहने वाला, **पर्या.** नित्य। **जैसे:** मृत्यु एक शाश्वत सत्य है। eternal

शासक *पुं. (तत्.)* शासन करने वाला, राजा; अधिकारी, हाकिम, दंड देने वाला।

शासनकाल *पुं. (तत्.)* किसी सरकार या राजा द्वारा देश/प्रांत आदि के शासन संचालन की कार्यविधि, हुकूमत की समय-अवधि।

शास्त्र-सम्मत *वि. (तत्.)* शास्त्रीय वचनों से जिसका समर्थन किया गया हो। जो शास्त्रों में भी कहा गया हो। **पर्या.** शास्त्रविहित, शास्त्रोक्त।

शास्त्रार्थ *(शास्त्र+अर्थ) पुं. (तत्.)* शा.अ. किसी शास्त्र या उसके किसी अंश या विषय के अर्थ या तत्त्व से संबंधित परिज्ञान के लिए विद्वानों के मध्य किया जाने वाला तर्कसंगत ऊहापोह वाद-विवाद। **जैसे:** आदि शंकराचार्य ने बौद्धों के साथ शास्त्रार्थ कर बौद्ध मत का खंडन किया। 2. स्वामी दयानंद ने विद्वानों के साथ शास्त्रार्थ करके पौराणिक मत का खंडन किया।

शास्त्रीय संगीत *पुं. (तत्.)* 1. प्राचीन भारतीय संगीतशास्त्र के सिद्धांतों के अनुरूप गायन-वादन की विशिष्ट शैली। 2. संगीत की भातखण्डे या पलुस्कर द्वारा प्रचारित विशिष्ट शैली।

classical music 3. प्रचलित भाषा में हिंदुस्तानी संगीत। **तुल.** कर्नाटक संगीत-दक्षिण भारत में प्रचलित संत त्यागराज प्रणीत संगीत की विशिष्ट शैली।

शाही *[शाह+ई] वि. (फा.)* 1. बादशाहों या राज्य से संबंधित। **पर्या.** राजकीय, सरकारी। 2. कुंभ पर्व के अवसर पर विशिष्ट साधु-महात्माओं से संबंधित। **जैसे:** शाही स्नान, शाही यात्रा।

शुक्र *पुं. (अर.)* किसी उपकार या सहयोग एवं लाभ के लिए ईश्वर या दूसरे के प्रति कृतज्ञता की अभिव्यक्ति। धन्यवाद, शुक्रिया। **जैसे:** शुक्र है खुदा का कि दुर्घना होते-होते बची।

शुक्र *पुं. (तत्.)* हमारे सौरमंडल का एक ग्रह जो पृथ्वी से सूर्य और चन्द्र के बाद सबसे चमकीला है। (वीनस) 2. सप्ताह के दिनों में विद्‌यमान बृहस्पतिवार और शनिवार के बीच का वार। 3. राक्षसों के गुरु शुक्राचार्य, 4. पुरुषों का वीर्य।

शुक्रवाहक *वि./पुं. (तत्.)* नर जनन तंत्र के आस-पास स्थित वाहिनियों में एक वाहिनी जो शुक्राणुओं को वृषण से बाहर ले जाती है। **पर्या.** शुक्रवाहिनी (स्त्री), शुक्रवाहिका (स्त्री)

शुक्रवाहिका *स्त्री. (तत्.)* वे अनेक छोटी-छोटी नलिकाएँ जिनके द्‌वारा शुक्राणु वृषण से शुक्रवाहक में पहुँचते हैं। vas efferens

शुक्राणु *पुं. (तत्.)* उच्चतर जंतुओं के नर युग्मक जो बहुत सूक्ष्म होते हैं तथा गर्भाशय में जाकर संतानोत्पत्ति का कारण बनते हैं। इन युग्मकों का एक सिर, मध्य भाग और पूँछ होती है।

शुक्रिया *पुं. (अर. (शुक्रीय:)* किसी उपकार के बदले में व्यक्त की जाने वाली कृतज्ञता। **पर्या** धन्यवाद, आभार, कृतज्ञता। thanks

शुक्ल पक्ष *पुं. (तत्.)* भारतीय चांद्रमास की अमावस्या के बाद के पंद्रह (कभी-कभी चौदह या सोलह) दिन जिनमें रात्रि के प्रारंभ से ही चंद्रदर्शन होते है। पूर्णिमा शुक्ल पक्ष का अंतिम दिन होता है। **तु.** कृष्ण पक्ष।

शुटिंग *स्त्री.(अं.)* 1. निशानेबाजी, गोलीबारी। 2. सिनेमा, दूरदर्शन आदि के लिए चित्रीकरण।

शुतुद्री/शतद्रु *स्त्री. (तत्.)* एक नदी का प्रसिद्‌ध प्राचीन नाम वर्तमान सतलज या सतलुज।

शुतुरमुर्ग *[शुतुर (ऊँटों) +मुर्ग (पक्षी)] पुं. (फा.)* 1. मजबूत टाँगों वाला, पतली एवं लंबी गर्दन वाला, न उड़ सकने वाला और तेज भागने वाला एक बड़े आकार का पक्षी जो अफ्रीका में पाया जाता है। **टि.** इसके प्रत्येक पैर में दो-दो अंगुलियाँ होती हैं। 2. ला.अर्थ वास्तविकता को नजर-अंदाज करने वाला। **टि.** ऐसी अनुश्रुति है कि विपत्ति आने पर शुतुरमुर्ग अपनी गर्दन रेत में छिपा लेता है जिससे उसे कोई देख न ले।

शुद्‌ध *[शुध्+त] वि. (तत्.)* 1. जो पवित्र एवं स्वच्छ हो। **जैसे:** शुद्‌ध जल, शुद्‌ध वस्त्र। (क्लीन) 2. छल-कपट रहित। **जैसे:** शुद्ध विचार। (फेयर) 3. जिसमें किसी प्रकार की मिलावट या दोष न हो, खालिस। **जैसे:** शुद्ध दूध, शुद्‌ध शहद। pure 4. जिसमें किसी प्रकार की त्रुटि या गलती न हो, सही। correct 5. **वाणि.** जिसमें से व्यय आदि निकाल दिया गया हो। net

शुद्‌धि *स्त्री. (तत्.)* 1. शुद्‌ध होने का कार्य या भाव, पवित्रता। 2. सफाई, स्वच्छता। 3. अशुद्‌ध व्यक्ति या वस्तु को शुद्‌ध करने का संस्कार। **जैसे:** घर में किसी की मृत्यु होने के बाद पूरे घर की शुद्‌धि की जाती है। 4. सुधार -कार्य। purification correction

शुदधिपत्र *पुं.(तत्.)* 1. पुस्तक के अंत में लगाया जाने वाला वह पृष्ठ जिसमें पुस्तक में छपी अशुद्‌धियों को पृष्ठ क्रम से उल्लेख करते हुए उनके समक्ष शुद्‌ध रूप लिखे जाते हैं। 2. समाचारपत्र-पत्रिका आदि में पूर्व प्रकाशित गलत समाचार, तथ्य आदि को ठीक करने वाली प्रकाशित सूचना।**शुद्धीकरण** *पुं. (तत्.)* 1. शुद्ध करने की क्रिया, निर्मल करना। 2. पवित्र करना। 3. गलतियाँ दूर करना, दोष सुधारना।

शुद्र *पुं. (तत्.)* 1. आर्यों की वर्णव्यवस्था के अनुसार चार वर्णों में से अंतिम चौथा वर्ण। 2. प्राचीन भारतीय समाज व्यवस्था में वह वर्ग जो बुद्‌धि, शक्ति या धन के स्थान पर केवल शारीरिक श्रम से ही समाज सेवा कर सकता हो। 3. इस वर्ण या वर्ग का व्यक्ति।

शुबहा *पुं. (तत्.) (अर.शुबह:)* 1. संदेह, शक, 2. धोखा, भ्रम। **जैसे:** किसी विषय में शुबहा होने पर तत्काल उसका निवारण करना चाहिए।

शुभकामना *[शुभ+कामना] (=इच्छा] स्त्री. (तत्.)* किसी विशेष दिन, घटना, कार्य इत्यादि के अवसर पर कार्य निर्विध्न पूरा हो जाए इस आशय से व्यक्त की जाने वाली सदिच्छा। **पर्या.** शुभेच्छा, मंगल कामना। greeting

शुभचिंतक *पुं. (तत्.)* 1. भलाई चाहने वाला, शुभाकांक्षी। 2. हितैषी, हितेच्छु। 3. मंगल कामना करने वाला।

शुभाकांक्षी *वि.(तत्.)* किसी का शुभ चाहने वाला। जिसे प्राय: माता-पिता, गुरुजनों द्वारा बच्चों या शिष्यों की शुभ चाहते हुए पत्र के अन्त में लिखा जाता है। **पर्या.** शुभेच्छु, शुभचिंतक। **जैसे:** तुम्हारा शुभाकांक्षी। 'क', 'ख', 'ग'। wellwisher

शुभेक्षण *[शुभ+ईक्षणा] वि.,स्त्री. (तत्.)* 1. सुंदर आँखों वाली, 2. शुभ दृष्टि वाली या जिसकी दृष्टि का प्रभाव मंगल कारक या शुभ हो। **जैसे:** वह शुभेक्षणा ही नहीं, नासिका सहित उसकी देह यष्टि भी सुंदर एवं आकर्षक थी।

शुभ्र *वि. (तत्.)* शा.आ. सफेद रंग से युक्त चमकीला। सा.आ. 1. श्वेत, सफेद, 2. उज्ज्वल, चमकीला। **जैसे:** शुभ्र हिमालय। शुभ्र वस्त्र।

शुरू *वि.(अर.शुरू)* 1. आरंभ, प्रारंभ, इब्तिदा। 2. आदि। **विलो.** खत्म।

शुरूआत *स्त्री. (अर.)* 1. प्रारंभ, आगाज। 2. प्रारंभिक स्थान या समय। **जैसे:** गणित के अध्ययन की शुरुआत शताब्दियों पूर्व हो चुकी थी। वस्तुत: इसकी शुरुआत भारत से ही हुई है। **विलो.** समाप्ति, अंत।

शुल्क *पुं. (तत्.)* 1. किसी शिक्षा संस्थान द्वारा छात्रों से नियमानुसार लिया जाने वाला धन। **जैसे:** मासिक शुल्क। 2. किसी वस्तु के उत्पादन/आयात/निर्यात पर सरकार द्वारा लिया जाने वाला कर/टैक्स। duty 3. किसी काम के बदले दी जाने वाली धनराशि। किराया/भाड़ा आदि। rent

शुष्क *वि. (तत्.)* 1. सूखा, नीरस। **जैसे:** रेगिस्तान एक शुष्क प्रदेश है। 2. ला.अर्थ रूखा जो सरस या आनंददायक न हो, आत्मीयता से रहित। **जैसे:** उसके शुष्क व्यवहार से मुझे आश्चर्य हुआ।

शून्यता *स्त्री. (तत्.)* 1. शून्य होने का भाव, खालीपन, रिक्तता (जो पहले था, अब नहीं है) 2. अभाव। **जैसे:** अनुभवशून्यता। 3. निर्जनता, नीरवता। **जैसे:** चारों ओर शून्यता पसरी थी।

शूम *वि.(फ़ा.)* 1. जो अशुभ एवं अनिष्टकर हो, 2. जिसका दर्शन अशुभ हो, मनहूस। 3. कृपण, कंजूस, मक्खीचूस। **जैसे:** शूम का धन शौतन खाए। **विलो.** उदार, शुभ दर्शन।

शूरता *स्त्री. (तत्.)* 1. शूर होने की स्थिति/भाव या क्रिया। 2. बहादुरी, शौर्य। **जैसे:** युद्ध में शूरों की शूरता ही विजय दिलाती है।

शूरवीर *[शूर+वीर] वि. (तत्.)* 1. अत्यंत वीर, बहादुर, 2. वीरों में सर्वोत्तम।

शेख *पुं. (अर.)* 1. पैगंबर मोहम्मद के वंशज। 2. मुसलमानों के चार वर्गों में से पहला और श्रेष्ठ वर्ग। 3. प्रतिष्ठित, श्रेष्ठ, बुजुर्ग। 4. एक कुलसूचक नाम। **जैसे:** शेख मुजीबुर्रहमान।

शेखचिल्ली *[अर.शेख+देश+चिल्ली]पुं.* 1. लोकप्रचलित मूर्खतापूर्ण कहानियों का एक कल्पित महामूर्ख पात्र। 2. ला.अर्थ व्यर्थ बड़े बड़े अव्यावहारिक और असंभव मन्सूबे बाँधने वाला। **जैसे:** वह शेखचिल्ली की तरह योजनाएँ तो बड़ी से बड़ी बनाता है किंतु करता कुछ नहीं।

शेखर *पुं. (तत्.)* 1. पर्वत का शिखर, ऊपरी भाग। 2. मस्तक, माथा। 3. मुकुट, सिर का आभूषण। **जैसे:** भागवान शिव ऊपर सिर के ऊपर चंद्र धारण किये हुए हैं अत: इनका नाम चंद्रशेखर है। 4. ला.अर्थ प्रमुख, श्रेष्ठ (प्राय: समासांत में प्रयुक्त)। **जैसे:** कुलशेखर।

शेखीबाज *[शेखी-तु.+बाज-फा.प्रत्यय] वि.* 1. बहुत डींग मारने वाला। 2. बहुत हेकड़ी या शान दिखाने वाला।

शेर *पुं. (अर.)* 1. उर्दू-फारसी की कविता में दो चरणों का एक पद्य। 2. गज़ल के दो चरण।

शेर *पुं. (फा.)* बिल्ली जाति का एक बड़ा और भयंकर हिंसक पशु जो जंगल में रहता है। **मुहा.** शेर और बकरी का एक घाट पर पानी पीना=भेदभाव न होना, बलवान से भय न होना, न्यायपूर्ण राज्य होना।

शेरवानी *स्त्री. (फ़ा.)* एक प्रकार का 'अंगरखा' नुमा वस्त्र जो सिला हुआ लम्बे कोट की तरह बंद गले का होता है तथा जो पाजामा के ऊपर पहना जाता है। यह मुसलमानी पोशाक मानी जाती है।

शेष *वि. (तत्.)* 1. अवशिष्ट, बचा हुआ। **जैसे:** कहानी का शेष भाग कल सुनाउँगा। rest 2. उच्छिष्ट जूठा, छोड़ा हुआ। left 3. **गणि.** घटाने की या भाग की क्रिया के बाद बची हुई (संख्या)। remainder 4. **वाणि.** बैंक के खाते में बची हुई (राशि) ballance

शेषराशि *स्त्री. (तत्.)* [शेष+राशि] 1. **वाणि.** किसी लेखा account में नाम खाते में खाते से अधिक राशि/पैसा balance 2. अंतिम (तिथि तक) जमा राशि credit/debit balance 3. (गणि.) किसी राशि में व्यकलन या घटाने की क्रिया से प्राप्त फल, बाकी।

शैक्षिक *वि. (तत्.)* 1. शिक्षा से संबंधित, अध्ययन संबंधी। **जैसे:** यहाँ की शैक्षिक व्यवस्था उत्तम है। 2. शिक्षा के गुणों से युक्त, विद्वान्। **जैसे:** शैक्षिक लोग विनम्र होते हैं।

शैतान *पुं. (अर.)* 1. ईसाई, इस्लाम आदि धर्मों की मान्यता के अनुसार ईश्वराज्ञा का उल्लंघन करने से बहिष्कृत हुआ। एक फरिशता जो मनुष्यों को पाप कर्मों की ओर प्रवृत्त करता रहता है। 2. दूसरों को सदा कष्ट देने वाला बहुत बड़ा दुष्ट व्यक्ति। ला.अर्थ उपद्रवी, शरारती। **उदा.** यह बालक बहुत शैतान है।

शैतानी *स्त्री. (अर.)* 1. शैतान के कार्य। **दे.-** शैतान। 2. दुष्टता, शरारत, उपद्रव।

शैल *पुं. (तत्.)* व्यु.अर्थ शिलाओं से बना हुआ। शा.अर्थ 1. पर्वत या पहाड़। 2. (भू.) पृथ्वी की पर्पटी (पपड़ी या ऊपरी सतह) बनाने वाला किसी खनिज पदार्थ से बना प्राकृतिक ठोस पिंड। इसके मुख्य तीन प्रकार हैं आग्नेय शैल, अवसादी शैल और कायांतरित शैल।

शैल चक्र *पुं. (तत्.)* शैलों के बनने की चक्रीय विधि। आग्नेय शैलों से अवसादी शैल तथा उनसे कायांतरित शैल तथा पुन: मैग्मा के माध्यम से आग्नेय शैलों में परिवर्तन शैल चक्र का **उदा.** हैं। इस प्रक्रिया में लाखों या कभी-कभी करोड़ो-वर्ष लग जाते हैं।

शैली *स्त्री. (तत्.)* 1. कार्य करने की पद्धति, प्रणाली, रीति आदि। manner 2 वाक्य रचना का विशिष्ट प्रकार, रीति। style 3. कला के क्षेत्र में क्षेत्र, परंपरा आदि के अनुसार प्रस्तुति के विशिष्ट प्रकार। **जैसे:** मुगल शैली की चित्रकला, कर्नाटक शैली का संगीत आदि। style

श्र

श्रद्धांजलि [श्रद्धा+अंजलि] स्त्री. *(तत्.)* शा.अर्थ श्रद्धा की अंजलि। अंजलि में फूल लेकर श्रद्धापूर्वक किसी आदरणीय व्यक्ति या देवता पर चढ़ाना। आ.अर्थ. 1. किसी मृत व्यक्ति के शव, चित्र या समाधि पर श्रद्धापूर्वक पुष्प चढ़ाना। 2. किसी मृत व्यक्ति को सादर स्मरण करते हुए शब्दों द्वारा गुणगान करना।

श्रद्धा *स्त्री. (तत्.)* (स्वानुभूत न होने पर भी) संस्कारवश या शास्त्रों में पढ़कर अथवा संत-महात्माओं से सुनकर किसी के प्रति पूज्य भाव रखने की भावना।

श्रद्धालु [श्रद्धा+आलु] वि. *(तत्.)* श्रद्धा रखने वाला, श्रद्धावान्, श्रद्धायुक।

श्रद्धास्पद *वि. (तत्.)* [श्रद्धा+आस्पद] जिसके प्रति श्रद्धा करना उचित हो या जो पूरी तरह श्रद्धा के योग्य हो। श्रद्धेय। **जैसे:** परम श्रद् धा स्पद अपने गुरूवर को प्रणाम करता हूँ।

श्रम *पुं. (तत्.)* 1. शरीर को थकाने वाला काम। labour 2. थकावट, दौड़धूप, पसीना बहाने वाला काम। 3. (अर्थ.) सभी श्रमिकों एवं श्रम के कार्यों का सामूहिक नाम।

श्रमजीवी *वि. (तत्.)* अपने परिश्रम के बल पर ही जीवन यापन करने वाला। labour

श्रमण *पुं. (तत्.)* 1. बौद्ध संन्यासी। 2. संन्यासी, भक्त, यति, मुनि।

श्रमदान *पुं. (तत्.)* जनहित के लिए स्वेच्छा से बिना कोई शुल्क लिए मिलजुल कर कार्य करने का कार्यक्रम। **जैसे:** गाँव के युवकों ने तालाब की मिट्टी को श्रमदान के द्वारा बाहर निकाला।

श्रमिक *पुं. (तत्.)* 1. वह व्यक्ति जो शारीरिक परिश्रम करके अपना पेट पालता हो। 2. वह व्यक्ति जो किसी उद्योग कारखाने या मिल में मजदूरी करता है। मजदूर, मेहनतकश।

श्रवण अस्थिकाएँ *स्त्री. बहु (तत्.)* शा.अर्थ सुनने की छोटी-छोटी हड्डियाँ। **जीव.** कशोरुकियों में कर्ण-पटह झिल्ली का अंडाकार गवाक्ष (खिडकी) अथवा आंतरिक कर्णपटह से जोड़ने वाली छोटी-छोटी अस्थियाँ (हड्डियाँ)। auditory ossicles

श्रवण तंत्रिका *स्त्री. (तत्.)* **जीव.** कशेरुकियों की आठवीं कपाल तंत्रिका cronial nerve जो आंतरिक कर्ण से निकले आवेग impulse को मस्तिष्क तक ले जाती हैं और जिससे हमें सुनाई पड़ती है। auditory nerve

श्रव्य *वि. (तत्.)* 1. जो सुना जा सके; कर्णगोचर। 2. सुनने योग्य, श्रेष्ठ, उत्तम, प्रशंसा के योग्य।

श्रांत *वि. (तत्.)* श्रम के कारण या मार्ग में अधिक दूर तक चलने के कारण थका हुआ। **जैसे:** वटछाया में विश्राम कर रहा श्रांत पथिक।

श्रांति *स्त्री.* 1. थकान, थकावट। 2. थकावट दूर करने हेतु विश्राम। विश्रांति।

श्रावण *पुं. (तत्.)* आषाढ़ के बाद और भादों के पहले का महीना, सावन। वह चाँद्रमास जो आषाढ़मास के बाद तथा भाद्रपद (भादो) मास के पूर्व आता है। श्रावणमास की पूर्णिमा के दिन 'श्रवण' नक्षत्र में चंद्रमा होता है इसीलिए इसे श्रावण मास कहा जाता है। **जैसे:** रक्षाबंधन का पर्व श्रावण पूर्णिमा को होता है।

श्री *स्त्री. (तत्.)* 1. विष्णुपत्नी लक्ष्मी, कमला। 2. चल और अचल संपत्ति, धन-दौलत। 3. व्यक्ति के नाम के आरंभ में जोड़ा गया आदरसूचक शब्द। श्री जवाहर लाल नेहरू। Mr.

श्रुत *वि. (तत्.)* 1. कानों से सुना हुआ। जाना हुआ, ज्ञात। 2. जो परंपरा से सुनते आए हों, प्रसिद्ध विख्यात।

श्रुतलेख *पुं. (तत्.)* 1. किसी के द्वारा बोले गए शब्दों/वाक्यों/पद्यांशों आदि को सुनकर लिखने का कार्य। इमला। 2. सुनकर लिखा हुआ लेख। dictation **जैसे:** आज मेरे हिंदी के श्रुतलेख में कोई अशुद्धि नहीं थी।

शृंखला *स्त्री. (तत्.)* 1. एक दूसरे से जुड़ी हुई कड़ियों की लंबी जंजीर। 2. साँकल, (दरवाजा बंद करने हेतु)। 3. परंपरा, क्रम, श्रेणी, कतार। 4. कमरबंद, मेखला।

शृंगार *पुं. (तत्.)* 1. सजने या सजाने की क्रिया, सजावट। 2. शोभा बढाने की वस्तुएँ प्रसाधन सामग्री। 3. ला.अर्थ आकर्षण गुण। **जैसे:** लज्जा स्त्री का श्रृंगार होता है। 4. (साहि.) काव्य के नौ रसों में से एक।

शृंगी *पुं. (तत्.)* 1. सींग वाला पशु। 2. सींग का बना हुआ एक प्रकार का बाजा।

श्रेणी *स्त्री. (तत्.)* 1. योग्यता, काम आदि के विचार से किया गया विभाग, दरजा। class 2. पंक्ति, कतार। 3. प्राचीन काल में विशिष्ट समुदाय के लिए प्रयुक्त शब्द। **जैसे:** व्यापारी श्रेणी, शिल्पकार श्रेणी।

श्रेय *वि. (तत्.)* 1. अधिक अच्छा, उत्तम, बेहतर। 2. कल्याणकर, मंगलमय। *पुं. (तत्)* किसी काम के लिए मिलने वाला यश।

श्रेयस्कर *वि. (तत्.)* 1. श्रेय (कल्याण) करने वाला। **पर्या.** लाभप्रद, लाभकारी, कल्याणकारी। 2. श्रेष्ठ बनाने वाला, उन्नत करने वाला।

श्रेष्ठ *वि. (तत्.)* सबसे अच्छा, सर्वोत्कृष्ट।

श्रेष्ठता *[श्रेष्ठ+तात्यय] स्त्री. (तत्.)* 1. श्रेष्ठ होने का गुण; अवस्था या भाव; श्रेष्ठत्व। 2. उत्तम। **जैसे:** क्रिकेट प्रतियोगिता में उसे श्रेष्ठता पुरस्कार मिला है।

श्रोता *वि. (तत्.)* 1. सुनने वाला। 2. प्रवचन, भाषण आदि को सुनने वाला वर्ग।

श्लेष *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ संयोग होना, जुड़ना, सटाव, चिपकना/ चिपकाना। ला.अर्थ एक शब्द या वाक्य के दो या दो से अधिक अर्थों के होने की अवस्था या भाव। 2. शब्दालंकार का एक भेद जिसमें एक शब्द में दो या दो से अधिक अर्थ चिपके रहते हैं। **उदा.** बहुरि शक्र सम विनबौं

तेही। संतत सुरानीक हित जेही। सुर+अनीक - देवसेना। सुरा+नीक-जिसे मदिरा प्रिय है।

श्लोक *पुं. (तत्.)* 1. संस्कृत का पद्य। 2. स्तुति, प्रशंसा। **टि.** संस्कृत में एक विशेष छंद (अनुष्टुभ) का नाम श्लोक है, परंतु आज संस्कृत के सभी पद्यों को श्लोक कहा जाता है, चाहे वह किसी भी छंद में क्यों न हो।

श्वसन *अ.क्रि. (तत्.)* सांस लेना। जीव द्वारा ऑक्सीजन युक्त वायु को शरीर के अंदर लेने तथा कार्बन डाइऑक्साइड युक्त वायु को बाहर निकालने की क्रिया। इस क्रिया के दो प्रकार हैं- अंत: श्वसन और बहि: श्वसन या नि:श्वसन। (योग में इसे पूरक और रेचक कहते हैं)

श्वान *पुं. (तत्.)* कुत्ता।

श्वाननिद्रा *स्त्री. (तत्.)* शा.अर्थ कुत्ते की नींद। ला.अर्थ ऐसी नींद जो जरा सी आहट/खटका/आवाज होते ही खुल जाए। **जैसे:** विद्यार्थी की निद्रा श्वाननिद्रा होनी चाहिए।

श्वास *पुं. (तत्.)* एक बार ऑक्सीजन युक्त वायु का अंदर ले जाना तथा कार्बन डाइ ऑक्साइड युक्त वायु का बाहर निकालना। (साँस)

श्वासनली *स्त्री. (तत्.+तद्(नलिका)* 1. हवा में साँस लेने वाले कशेरूकी प्राणियों में श्वास द्वारा (ग्लॉटिस) से फेफड़ों में खुलने वाली नली, जिससे होकर, वायु आती जाती है। trachea 2. संधियाद प्राणियों में छोटी विशाखित नलिकाएँ जो स्वास रंध्र से वायु को ऊतकों तक ले जाती है। **पर्या.** वातक। trachea

श्वासरोधी [श्वास+रोधी] वि. *(तत्.)* श्वास लेने में अवरोध उत्पन्न करने वाला।

श्वेत वि. *(तत्.)* 1. जो सफेद रंग का हो, सफेद, उजला, उज्ज्वल। 2. बिना धब्बे वाला, कलंकरहित। 3. गोरा, गौर। **विलो.** श्याम। **पुं.** सफेद रंग या शुक्ल वर्ण। **पर्या.** गोरा रंग।

श्वेत रक्तता *स्त्री. (तत्.)* **दे.**ल्यूकीमिया।

श्वेत रूधिर कोशिका *स्त्री.* शा.अर्थ सफेद रंग की खून की कोशिकाएँ। रुधिर-कोशिका जिसमें श्वसन वर्णक नहीं होता। मानव रूधिर में इनके कई प्रकार पाए जाते हैं। **जैसे:** मोनोसाइट, लिंफोसाइट, पॉलीमार्फ आदि। white blood cells

श्वेतांबर [श्वेत+अंबर] *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ श्वेत वस्त्र, सफेद कपड़ा। वि.अ. जैन धर्म का एक संप्रदाय जिसके अनुयायी सफेद वस्त्र धारण करते हैं।

ष

षट्कोण *वि. (तत्.)* वह ज्यामितीय आकृति जिसमें छह कोण और छह भुजाएँ हो। षड्भुज आकृति।

षष्ठ *वि. (तत्.)* छठा।

षष्ठी *वि. स्त्री. (तत्.)* छठी। आज **षष्ठी** तिथि है।

षड्यंत्र *पुं. (तत्.)* अपने से बलवान् शत्रु के विरुद्ध की जाने योग्य गुप्त एवं कपटपूर्ण कारवाई या उसकी योजना। **पर्या.** साजिश (कॉन्स्पिरेसी) **टि.** संभवत: ज्योतिषशास्त्र के अनुसार कुंडली के छठे घर (शत्रु स्थान) के आधार पर षड्यंत्र (शत्रु के क्रियाकलाप) शब्द बना होगा।

षोडशी *[षोडश सोलह+ई] स्त्री. (तत्.)* 1. वह युवती जो अभी सोलह वर्ष की हुई है। 2. नवयौवना। **जैसे:** उस षोडशी ने संगीत में भी उच्च स्थान प्राप्त किया है।

स

संकट *पुं. (तत्)* 1. ऐसा समय या स्थिति जब मनुष्य अत्यंत कष्ट अनुभव करता है। **पर्या.** आफत, विपत्ति। 2. अचानक आई हुई विपत्ति या उत्तेजनापूर्ण स्थिति crisis उदा **मुहा.** संकट के समय मंडराना = विपत्तियों से घिर जाने की स्थिति।

संकटकाल *[संकट+काल] पुं. (तत्.)* वह समय जिसमें संकट बना रहे। **दे.** संकट।

संकटापन्न *[संकट-आपन्न] वि. (तत्.)* 1. संकट या कष्ट में पड़ा हुआ (व्यक्ति)। 2. संकटपूर्ण (परिस्थिति या कार्य) **जैसे:** संकटापन्न स्थिति में धैर्य रखना चाहिए। 3. संकटग्रस्त (व्यक्ति) **जैसे:** संकटापन्न व्यक्ति की सहायता धर्म ही है।

संकर *वि. (तत्.)* दो अलग-अलग जातियों या नस्लों आदि के मिश्रण से उत्पन्न। **जैसे:** संकर गाय-भिन्न नस्ल की गाय और बैल से उत्पन्न गाय। *संकर* शब्द-भिन्न भाषाओं के शब्दों से बना शब्द। संकर गेहूँ-भिन्न प्रजातियों के कृत्रिम मिश्रण से उत्पन्न गेहूँ। *संकर राग-दो* रागों को मिलाकर बनाया राग। वर्णसंकर। **दे.** साँकल। *पुं. (देश.)* प्रांतीय बोलियों में शंकर या साँकल (जंजीर) का तद्भव रूप।

संकलन *पुं. (तत्.)* 1. संग्रह, एकत्रीकरण। 2. अच्छी-अच्छी बातों या विचारों का विभिन्न ग्रंथों से चयन। 3. चुनी हुए सूक्तियों या अच्छी बातों को इकट्ठा करके बनाया हुआ ग्रंथ या पुस्तक। compilation 4. (गणि.) जोड़ने की क्रिया। addition

संकलित *वि. (तत्.)* 1. विशेष दृष्टिकोण से चुना हुआ, जिसका संकलन किया गया हो। **उदा.** हमारी पाठ्य-पुस्तक में एक पाठ रामायण से संकलित है। 2. लिया हुआ, संगृहीत, एकत्रित। **उदा.** इस पत्रिका में विविध स्त्रोतों से संकलित कहानियाँ हैं। compiled

संकल्प 1. कोई कार्य करने का दृढ़ विचार। 2. कोई धार्मिक कार्य करते समय प्रारंभ में पढ़े जाने वाले मंत्र जिनका अर्थ 'कार्य पूर्ण करने की दृढ़ता' होता है। 3. मन में आते-जाते रहने वाले कई प्रकार के विचारों में से वह विचार जिसे मन पकड़ लेता है।

संकल्पना *[सं+कल्पना] स्त्री. (तत्.)* व्य.अर्थ सम्यक्=अच्छी तरह या पूरी तरह+कल्पना। सा.अ. 1. किसी बात की समग्र रूप से कल्पना या उसके कारणों और परिणामों की समझ, अवधारणा। 2. किसी बात को नए ढंग से करने या प्रस्तुत करने का विचार या रूपरेखा। 3. किसी कार्य का स्थूल विवरण। 4. किसी विषय में वह मूलभूत धारणा जिसके आधार पर व्यक्ति कार्य की योजना बनाता है। concept

संकल्पबद्ध *[संकल्प+बद्ध] वि. (तत्.)* 1. वह, जिसने अपनी दृढ़ इच्छा शक्ति से कोई संकल्प कर रखा हो और जिसके कारण वह कुछ सीमाओं या नियमों में बँध गया हो। 2. दृढ़ निश्चयी।

संकीर्ण *वि. (तत्.)* 1. कम चौड़ा, सँकरा। 2. छोटा, 3. तुच्छ सोच वाला, 4. अनुदार। **विलो.** विशाल (1,2) उदार (3,4)

संकीर्णता *[संकीर्ण+ता] स्त्री. (तत्.)* संकीर्ण होने का भाव, सँकरापन। **दे.** संकीर्ण। **विलो.** विशालता, उदारता। narrowness narrowmindedness

संकुचित *वि. (तत्.)* 1. सिकुड़ा, सिमटा, **विलो.** प्रसृत। 2. जन-लज्जा से युक्त, हिचक से युक्त, संकोच युक्त, शर्माया हुआ। **विलो.** विस्तृत। 4. दूसरों के विचारों को स्वीकार न करने वाला, अनुदार। **विलो.** उदार।

संकुल *पुं. (तत्.)* अनेक व्यक्तियों या वस्तुओं का एकत्रित स्वरूप। **पर्या.** भीड़, झुंड, मजमा; समूह। cluster **वि.** घना, भरा हुआ, सँकरा; जटिल।

संकेंद्रित *[सं+केंद्र+इत] वि. (तत्.)* व्यु.अर्थ एक केंद्र विशेष पर एकत्र किया गया, संचित। 1. किसी विशेष स्थान, विषय या विचार इत्यादि को केंद्र मानकर उसी के चारों ओर किया गया (कार्य, चिंतन इत्यादि) centralized 2. घनीभूत; केंद्रित; घनीकृत, केंद्रीकृत। concentrated

संकेत *पुं. (तत्.)* 1. मन की भावनाओं को या इच्छा को प्रकट करने के लिए आँख, हाथ आदि से प्रकट की गई चेष्टा, इशारा। 2. कोई ऐसी बात या क्रिया जो किसी कार्य या घटना की सूचक मानी जाए। **जैसे:** 1. ठंडी हवा का अचानक चलना वर्षा होने का संकेत है। 2. इस पर्वतीय मार्ग पर मुड़ने व पुल के संकेत पहले से ही दे दिए गए हैं। 3. चिह्न, निशान, पहचान।

संकेतक *वि./पुं. (तत्.)* 1. संकेत करने वाला, संकेत-बिंदु, संकेत-स्थल। 2. मार्ग बतलाने वाला। indicator *पुं. (तत्.)* संकेत। indication

संकोच *पुं. (तत्.)* 1. सिकुड़ने की क्रिया या भाव। 2. नम्रता या हीनभावना के कारण होने वाला झिझक, हिचक। **उदा.** उसे बड़ों के समक्ष कुछ बोलने में संकोच होता है। 3. न कहने या न करने योग्य काम होने वाली स्थिति के कारण लज्जा।

संकोची *वि. (तत्.)* संकोच करने वाला, शरमाने वाला। **जैसे:** वह बहुत ही संकोची स्वभाव का लडक़ा है।

संक्रमण *पुं. (तत्.)* 1. किसी निश्चित दिशा में चलना या बढ़ना। 2. एक अवस्था से दूसरी अवस्था में पहुँचने। transition 3. (आयु.) रोगकारी जीवों का एक स्थान या शरीर से दूसरे स्थान या शरीर में स्थापित होना और रोग के लक्षण उत्पन्न करना। infection 4. (समान.) विचारों, गुणों इत्यादि का सामाजिक क्रांति के माध्यम से एक व्यक्ति या क्षेत्र से अन्य व्यक्तियों, क्षेत्रों आदि में फैलना। 5. (खगोल) संक्रांति। **दे.** संक्रांति।

संक्रांति *स्त्री. (तत्.)* 1. पृथ्वी की परिक्रमण-गति के परिणामस्वरूप सूर्य का अगली राशि में जाता हुआ दिखलाई देना। प्रचलित भाषा में सूर्य का अगली राशि में प्रवेश। 2. वह काल जब सूर्य की संक्रांति होती है। 3. परिवर्तन (परिस्थितियों में) transit। 4. (ज्योतिष) किसी ग्रह का एक राशि से दूसरी राशि में जाना।

संक्रामक रोग *पुं. (तद्.)* 1. वातावरण से आने वाले रोगकारी जीवों के संक्रमण के फलस्वरूप प्राणियों में उत्पन्न होने वाली बीमारी। **जैसे:** जुकाम। desease 2. एक रोगी प्राणी के स्पर्श इत्यादि के माध्यम से दूसरे प्राणी को होने वाली बीमारी, छूत की बीमारी। **जैसे:** चेचक आदि। infections

संक्रामक *वि. (तत्.)* संक्रमण से फैलने वाला। infections **दे.** संक्रमण।

संक्रिया *स्त्री. (तत्.)* 1. किसी विशेष कार्य को करते समय कार्य के छोटे-छोटे भाग (क्रियाएँ), कार्यविधि, पद् धति या स्थिति। **जैसे:** कृषि में भूमि जोतना, बोना, सींचना, काटना आदि। (ऐक्शन) 2. (गणित) प्रश्न का हल निकालते समय जोड़ना, घटाना आदि क्रियाएँ। operation

संक्षारण *पुं. (तत्.)* किसी ठोस पदार्थ या धातु का क्षारीय प्रभाव से धीरे-धीरे नष्ट होते जाना। **जैसे:** नमी के कारण लोहे में जंग लगना। **टि.** पेंट, वार्निश आदि के लेपन से इसे रोका जा सकता है।

संक्षिप्त *वि. (तत्.)* 1. संक्षेप में कहा गया या लिखा गया। **विलो.** विस्तृत। **दे.** संक्षेप। 2. कम, थोड़ा, छोटी अवधि का या छोटे आकार **जैसे:** संक्षिप्त रामायण/महाभारत।

संक्षेप *पुं. (तत्.)* 1. थोड़े में कोई बात कहना, 2. कम करना, नाम इत्यादि का छोटा रूप। **जैसे:** ज. ला. नेहरू। 3. लेख आदि को काट-छाँट कर छोटा किया हुआ रूप, सार। **विलो.** विस्तार।

संक्षेपण *पुं. (तत्.)* 1. किसी भी विषय, वस्तु, घटना आदि को लघु आकार में प्रस्तुत करना। **जैसे:** इस समय हिंदी पाठों का संक्षेपण कार्य चल रहा है। 2. किसी ग्रंथ निबंध, अनुच्छेद आदि का सभी मुख्य बिंदुओं को सुरक्षित रखते हुए छोटा करना।

संख्या *स्त्री. (तत्.)* 1. गिनती, एक, दो, तीन आदि अंक, तादाद, गणना। 2. गिनती के विचार से किसी वस्तु का परिमाण गणना का लिखित रूप। 3. अंकों में लिखी गई कोई परिमेय या अपरिमेय राशि। 4. पूर्णांक, भिन्न या करणी के रूप में अभिव्यक्त राशि या बीजगणितीय व्यंजक।

संख्यावाचक *वि. (तत्.)* संख्या का बोध कराने वाला (शब्द), वस्तुओं की गिनती सूचित करने वाला।

संग *पुं. (तत्.)* 1. साथ, संगति। **उदा.** 'ता ते नाथ **संग** नहि लीन्हा' तुलसी रा.च.मा.। 2. मिलन संयोग **उदा.** केर बेर कौ संग। 3. संसर्ग; मित्रता; संपर्क, संबंध। **जैसे:** दुष्टों का संग ठीक नहीं। 4. सांसारिक विषयों में असक्ति, अनुराग। *पुं. (फा.)* पत्थर। **जैसे:** संगमर्मर, संग-ए-अस्वद।

संगठन *पुं. (त द्.) (संघटन)* अलग-अलग भागों को मिलाकर पूर्ण वस्तु तैयार करना। 1. मेल, संयोग। 2. रचना, निर्माण, बनावट। composition 3. सामान्य सामाजिक हित को ध्यान में रखकर कुछ उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु काम करने वाला मनुष्यों का समूह। organization **दे.** संघटन।

संगत[1] *स्त्री. (तद्. (संगति)* 1. संगति, साथ, संबंध। **जैसे:** अच्छे लोगों की संगत से अच्छी बातें सीखने को मिलती हैं। 2. किसी सत्संग या कीर्तन में सम्मिलित होने वाले लोग। **उदा.** कबिरा संगत साध की कटै कोटि अपराध।

संगत[2] *वि. (तत्.)* 1. प्रासंगिक, 2. उपयुक्त, उचित, **जैसे:** भ्रष्टाचार पर आपके विचार पूर्णतया **संगत** थे।

संग-तराश *[संग+तराश]वि. (फ़ा.)* व्यु.अर्थ संग = पत्थर, तराश (तराशने वाला) स.अर्थ. 1. पत्थर को काटकर या छीलकर या खुरचकर उस पर फूल, बेल, पशु-पक्षी, प्राकृतिक दृश्य आदि उकेरने वाला। 2. पत्थरों को काटने, छीलने वाला उपकरण।

संगम *पुं. (तत्.)* 1. किसी विशेष उद्देश्य से व्यक्तियों का एकत्र होना। **पर्या.** मिलन, मिलाप, मेल। 2. विचारों या विचारधाराओं में परस्पर मेल-जोल के माध्यम से सहमति बनाना या एकमत होना। **टि.** दक्षिण-भारत में इसी प्रकार संगम-साहित्य का निर्माण हुआ। 3. (भू) दो या दो से अधिक नदियों या समुद्रों का एक स्थान पर मिलना; **जैसे:** इलाहाबाद (प्रयाग) में गंगा-यमुना और अदृश्य सरस्वती का संगम (त्रिवेणी संगम); कन्याकुमारी में हिंद महासागर, अरब सागर और बंगाल की खाड़ी का संगम। conference

संगमरमर *[संग-फा.+मरमर-लै.] पुं. (संग=पत्थर +मरमर=चमकदार)* एक प्रकार का बहुत चिकना, चमकदार, छूने में सुखद परंतु कठोर जो भवन की भव्यता का प्रतीक माना जाता है। प्रसिद् ध इमारत ताजमहल इसी पत्थर से बनी है। (मार्बल)

संगम साहित्य *पुं. (तत्.)* तमिल भाषा की प्राचीनतम रचनाओं का संग्रह, जिन्हें तमिलनाडु के मदुरै में तीसरी चौथी शताब्दी में हुए कवियों के संगमों (सम्मेलनों) में संकलित किया गया था। इन रचनाओं का काल आज से लगभग 2300 वर्ष पूर्व का है।

संगिनी *स्त्री. (तत्.)* (सामान्यत: पत्नी के लिए प्रयुक्त) संग या साथ निभाने वाली, सहधर्मिणी।

संगी *पुं. (तत्.)* 1. वह जो साथ रहे, **पर्या.** साथी, हमराही। 2. मित्र, बंधु, सखा, दोस्त। 3. पति।

संगीत *पुं. (तत्.)* 1. लय, ताल आदि के द्वारा किसी पद्य को सुमधुर रूप में सुनने योग्य करने की कला। 2. नृत्य, संवाद या वातावरण इत्यादि को अधिक प्रभावी बनाने के लिए विभिन्न वाद्ययंत्रों द्वारा उत्पन्न ध्वनियों का समायोजन। music

संगीतकार *वि./पुं. (तत्.)* संगीत की स्वर-लिपि तैयार करने वाला। **दे.** संगीत। musician

संगृहीत *वि. (तत्.)* शा.आ. 1. संग्रह या एकत्र किया हुआ, संकलित, जमा किया हुआ। **सा.अ.** 2. पकड़ा हुआ।

संगोष्ठी *[सम्+गोष्ठी] स्त्री.(तत्.)* 1. वह लघु सत्र जिसमें किसी विषय के विशेषज्ञों की उपस्थिति में उससे संबंधित विचार-विमर्श होता है। 2. किसी विषय के विशेषज्ञों की सभा। **उदा.** आज साहित्यशास्त्र के विद्वानों की संगोष्ठी आयोजित की गई। 3. विश्वविद्यालयों या महाविद्यालय आदि में आयोजित विशेष कक्षा जिसमें किसी विशेष विषय-संबंधी व्याख्यान दिए जाते हैं। सेमिनार, कार्यशाला।

संग्रह *पुं. (तत्.)* 1. इकट्ठा या एकत्र करना। 2. संचित वस्तुओं का ढेर संचय। **जैसे:** डाक टिकट या सिक्कों का संग्रह। 3. किसी कवि की या अनेक कवियों, लेखकों आदि की रचनाओं को एक पुस्तक में संगृहीत करके प्रस्तुत करना। collection

संग्रहणी *स्त्री. (तत्.)* अतिसार का एक प्रकार जिसमें पतले दस्त आते हैं। अर्थात् खाई हुई वस्तुएँ बिना पचे दस्त के रूप में बाहर निकल जाती हैं।

संग्रहागार *[संग्रह+आगार] पुं. (तत्.)* वह स्थान जहाँ अनेक वस्तुओं का संग्रह किया गया हो। **पर्या.** भंडार।

संग्रहालय *[संग्रह+आलय] पुं. (तत्.)* वह स्थान जहाँ पर ऐतिहासिक, वैज्ञानिक, सांस्कृतिक, धार्मिक इत्यादि महत्व की दुर्लभ वस्तुओं, ग्रंथों, कलाकृतियों, उपकरणों आदि का संग्रह परिरक्षण और प्रदर्शन किया जाता है। (म्यूजियम)। **पर्या.** अजायबघर।

संग्राम *पुं. (तत्.)* दो सेनाओं के बीच होने वाला युद्ध। **पर्या.** रण-समर।

संग्राहक *वि. (तत्.)* शा.अ. एकत्र या जमा करने वाला, संग्रहकारी, संग्रह। सा.अ. 1. जो कलाकृतियों, सिक्कों, डाकटिकटों आदि का शौकिया तौर पर संग्रह करता हो। 2. प्रशा. कर, लगान, शुल्क आदि वसूल करने के लिए नियुक्त अधिकारी। cellector

संघ *पुं. (तत्.)* सा.अ. समूह, समुदाय, संगठन, झुंड। 1. समान उद्‌देश्य के लिए गठित व्यक्तियों, दलों, सभाओं अथवा राज्यों आदि का संगठन, **जैसे:** मजदूर**,** संघ, राज्यों का संघ। 2. (धर्म) प्राचीन बौद्‌ध भिक्षुओं का संगठन या आवास-स्थल, संघाराम। **उदा.** संघ शरणं गच्छामि। 3. (समाज) किसी जाति, पेशा, व्यवसाय आदि का एकत्रित समाज। association 4. (विधि) राज्यों का समूह जो मिलकर 'भारत' कहलाता है। union

संघटक *पुं. (तत्.)* 1. किसी वस्तु मिश्रण या संरचना के अंगभूत तत्व। ingredient

संघटन *पुं. (तत्.)* 1. दो या अधिक तत्वों, अवयवों या संघटकों को मिलाकर नया पदार्थ बनाने की प्रक्रिया। composition 2. एक ही उद्‌देश्य से अनेक व्यक्तियों द्‌वारा बनाई गई संस्था या संगठन organization

संघनन *पुं. (तत्.)* किसी भी पदार्थ के अणुओं का घना हो जाना या किया जाना। **जैसे:** वाष्पकणों का द्रव के रूप में और द्रव का ठोस के रूप में बदलना। **विलो.** वाष्पन।

संघनित *वि. (तत्.)* जिसका संघनन हुआ है या किया गया है। जमा हुआ। **उदा.** बर्फ जलवाष्प का संघनित रूप है। condensed

संघर्ष *पुं. (तत्.)* 1. दो पदार्थों या वस्तुओं में परस्पर घर्षण या रगड़े जाने की क्रिया। 2. अपनी श्रेष्ठता सिद्‌ध करने के लिए की गई प्रतिस्पर्धा या होड़, प्रतिद्‌वंद्‌विता। 3. दो दलों या पक्षों के बीच होने वाला टकराव, मुठभेड़। (स्ट्रगल) 4. विपत्ति या विषम परिस्थितियों से बाहर निकलने के लिए प्रयास effort for existance

संघवाद *पुं. (तत्.)* 1. संघ बनाकर रहने की विचारधारा या समूह में रहने की भावना। **दे.** संघीय शासन। 2. (राज.) ऐसी शासनव्यवस्था जिसमें केंद्रीय सरकार के साथ-साथ विभिन्न राज्यों की अपनी स्वतंत्र, स्वायत्त सरकारें भी होती हैं। **जैसे:** भारतीय संघवाद। federalism

संचरण *पुं. (तत्.)* संचार करने का कार्य या भाव; निश्चित दिशा में चलना, फैलना, transmission

संचरणीय रोग दे. संचारी रोग।

संचरित *वि. (तत्.)* गुण, दोष, रोग, भाव, विचारधारा इत्यादि के संचार से युक्त (व्यक्ति) **जैसे:** उसके अंदर ईश्वरभक्ति की भावना संचरित हो गई है।

संचार *पुं. (तत्.)* 1. चलना, गमन, आगमन **जैसे:** प्राणों का संचार, बल का संचार, किसी भावना (वीर भावना) का संचार। 2. चलाना। 3. अंदर प्रवेश कर फैलना। **जैसे:** रगरग में उत्साह का संचार। 4. विभिन्न साधनों, **जैसे:** टेलीफोन**,** तार, रेडियो, उपग्रह आदि के माध्यम से समाचार, संदेश, सूचना आदि का प्रसारण या प्रेषण। communication

संचार माध्यम *पुं. (तत्.)* सूचना, समाचार, संदेश इत्यादि को एक व्यक्ति द्‌वारा अन्य व्यक्ति/व्यक्तियों तक पहुँचाने या प्रसारित करने के आधुनिक साधन। **जैसे:** डाक**,** तार, टेलीफोन, मोबाइल, कंप्यूटर इत्यादि। media

संचारणीय बीमारी दे. रोग।

संचालन *पुं. (तत्.)* 1. चलाने की क्रिया, परिचालन। 2. कोई काम चलते या होते रहने के लिए किया जाने वाला उद्‌यम, प्रबंधन या प्रशासन conduct 3. नियंत्रण; निर्देशन। direction

संचित *वि. (तत्.)* 1. संचय किया हुआ, इकट्ठा किया हुआ। **पर्या.** एकत्रित, संगृहीत। 2. कार्यालय, फाइल इत्यादि में नत्थी किया हुआ। filed 3. दर्शन. मनुष्य द्‌वारा पूर्ण में किए गए अच्छे या बुरे कर्म। **पर्या.** भाग्य (फल-प्राप्ति से पूर्व)

संजीदगी *स्त्री. (फ़ा.)* 1. शांत स्वभाव, गंभीर। 2. समझदारी। 3. शिष्टता, शालीनता। **उदा.** उसने सभी प्रश्नों के उत्तर बड़ी संजीदगी से दिए।

संजीदा *वि. (फा.संजीदः)* 1. गंभीर और शांत स्वभाव वाला। 2. शिष्ट आचरण वाला। 3. किसी की बात ध्यानपूर्वक सुनने और उस पर विचार करने वाला। (समझदार) **उदा.** संजीदा व्यक्ति ही इस बात को समझ सकता है।

संजीवनी *स्त्री. (तत्.)* सा.अर्थ जीवन देने वाली। **पर्या.** जीवनदायिनी। (पुं. जीवनदायी) *वि.अर्थ* मृत या मृत प्राय व्यक्ति में जीवन का संचार करने वाली ओषधि या विद्‌या।

संज्ञा *स्त्री. (तत्.)* 1. वह शक्ति जिससे प्राणियों के शारीरिक अंगों में या मन में भावों की अनुभूति लक्षित होती है। 2. चेतना, होश। **जैसे:** वह व्यक्ति चोट लगने से संज्ञा खोकर गिर पड़ा। 3. (व्याक.) किसी व्यक्ति, वस्तु, भाव आदि का बोधक शब्द। **जैसे:** श्याम, पर्वत, घोड़ा, दया आदि शब्द संज्ञा है।

संज्ञेय *वि. (तत्.)* शा.अ. संज्ञान के योग्य, ध्यान देने योग्य। सा.अ. 1. (वे अपराध अथवा मामले) जिन पर न्यायालय, प्रशासन इत्यादि द्वारा विचार किया जा सके। 2. (वे अपराध) जिन पर पुलिस कार्रवाई कर सके। cognizable

संडास *पुं. (फा.<संदास)* मलत्याग या शौच करने का बंद स्थान, **पर्या.** शौचालय, शौचकूप।

संत *पुं. (तत्.)* साधु, संन्यासी, त्यागी पुरुष, विरक्त, शांत चित्त वाला; सज्जन, महात्मा, सात्विक; भक्त, धर्मात्मा व्यक्ति।

संतति *स्त्री. (तत्.)* जीव या जीवांग के विभाजन से प्रत्युत्पन्न नवजीव या जीवांग। issue 1. किसी माता-पिता युगल से उत्पन्न नर या मादा बच्चा/बच्चे। **पर्या.** संतान, औलाद, बाल-बच्चे।

संतप्त *वि. (तत्.)* 1. खूब गरम किया हुआ। 2. अत्यंत क्रुद्ध। अत्यधिक आँच पर तपाया हुआ **जैसे:** लाल हुआ लोहा। 3. अत्यंत दु:खी।

संतरी *पुं. (देश.)* रखवाली करने वाला (मुख्य रूप से दरवाजे पर) **पर्या.** पहरेदार, द्वारपाल, दरबान, प्रहरी।

संतान *स्त्री. (तत्.)* सा.अ. पुत्र-पुत्रियाँ, मनुष्य या पशु-पक्षियों के बाल-बच्चे, संतति, औलाद। 2. बाद की पीढ़ी के लोग। 3. प्रजा।

संतुलन *[सम्+तुलन] पुं. (तत्.)* शा.अर्थ अच्छी तरह से तौलने की क्रिया या भाव। 1. तुला के दोनों पलड़ों का समान भार वाला हो जाना। 2. दो या दो से अधिक वस्तुओं के आपेक्षिक भार में समानता या बराबरी।

संतुलित *वि. (तत्.)* 1. जिसका संतुलन हुआ हो या किया गया हो। 2. उचित, नपा-तुला। **जैसे:** 1. हमें संतुलित आहार लेना चाहिए। 2. संतुलित वाणी। **विलो.** असंतुलित।

संतुलित आहार *पुं. (तत्.)* प्राणियों, मनुष्यों और पशुओं के लिए ऐसा भोजन या आहार जिसमें कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, वसा, विटामिन और खनिज लवणों की उचित मात्रा में उपलब्धता हो। **पर्या.** संतुलित भोजन। balanced diet

संतुष्ट *वि. (तत्.)* 1. जिसे संतोष हो गया हो, तृप्त। 2. अपेक्षा और चिंता से मुक्त। 3. प्रसन्न, खुश। 4. अनुकूल अथवा प्रतिकूल अर्थात् हर तरह की परिस्थिति में मन में संतोष का अनुभव करने वाला।

संतुष्टि *स्त्री. (तत्.)* 1. संतोष, 2. तृप्ति, प्रसन्नता। **जैसे:** आज कई दिनों बाद हमें स्वादिष्ट भोजन से पूर्ण संतुष्टि मिली।

संतूर *पुं. (अर.)* एक विशेष प्रकार का तंतु वाद्य जिसमें तारों को लकड़ी की छोटी छड़ी से बजाकर स्वर निकाले जाते हैं। Santoor

संतोष *पुं. (तत्.)* 1. अच्छा-बुरा जो भी प्राप्त हो जाए उसी में सुख का अनुभव करने की भावना। 2. जी भर जाने का भाव। **पर्या.** तृप्ति। 3. कोई कामना, अपेक्षा, शिकवा, शिकायत न रह जाना। satisfaction

संत्रास *पुं. (तत्.)* भावी अहित या अशुभ की आशंका से मन में व्याप्त बेचैनी, चिंता या पीड़ा। **पर्या.** डर, भय, पीड़ा, दु:ख, क्लेश।

संदर्भ *[सम्+दर्भ] पुं. (तत्.)* 1. पूर्वापर संबंध। 2. किसी घटना के घटित होने से संबंधित बुनियादी जानकारी। 3. किसी वाक्य में आए हुए किसी शब्द का अर्थ निर्धारित करने वाले अन्य शब्द। 4. पुस्तक, लेख आदि में वर्णित प्रसंग, विषय आदि जिसका उल्लेख हो।

संदिग्ध *वि. (तत्.)* 1. जिसकी उपयुक्तता, प्रामाणिकता आदि के विषय में पूरा विश्वास न हो। 2. अस्पष्ट। **जैसे:** वह संदिग्ध अवस्था में देखा गया। **पर्या.** संदेहास्पद। **विलो.** असंदिग्ध।

संदूक *पुं. (अर.)* कपड़े या अन्य सामान रखने के लिए लकड़ी, लोहा आदि की बनी बड़ी पेटी। बक्सा।

संदूकची *स्त्री. (अर.)* बहुत छोटा संदूक।

संदूषण *(सम्+दूषण) पुं. (तत्.)* दो वस्तुओं (जिनमें से एक खराब हो और दूसरी अच्छी) के परस्पर मिल जाने या मिला दिए जाने के फलस्वरूप अच्छी वस्तु में आ गया दोष। **जैसे:**

नदी के स्वच्छ जल में गंदे नालों का पानी मिल जाने पर स्वच्छ जल दूषित हो जाता है। **तु.** अपमिश्रण। संसर्गजन्य दोष, संपर्कगत दोष, संपर्कगत दोष। contamination

संदेश *पुं. (तत्.)* 1. कूट संकेतों के माध्यम से प्रेषित कोई भी प्राप्त समाचार या जानकारी। 2. जानकारी जिसे प्राप्तकर्ता कूट खोलकर सही अर्थ में समझ लेता है। message 3. किसी कथा या कहानी के माध्यम से श्रोता को दी जाने वाली सीख या शिक्षा moral 4. एक प्रकार की बंगला मिठाई।

संदेशवाहक *[संदेश+वाहक] पुं. (तत्.)* सूचना, संदेश या समाचार लाने-ले जाने वाला। **दे.** संदेश।

संदेह *पुं. (तत्.)* 1. किसी बात या घटना के होने या न होने के बारे में दुविधापूर्ण स्थिति, अनिश्चय की स्थिति, संशय, शंका, शक। 2. एक सादृश्यमूलक अलंकार जिसमें किसी उपमेय के अनेक उपमान दिखाई देने पर भी यह निश्चय नहीं किया जा सकता कि वास्तविक उपमान कौन-सा है। **जैसे:** यह मुख है या चंद्रमा?

संधि *स्त्री. (तत्.)* 1. शरीर में दो हड्डियों के मिलने का स्थान या जोड़। 2. **व्या.** दो शब्दों या वर्णों का मेल (कुछ निश्चित नियमों के अनुसार)। 3. दो राज्यों, देशों के बीच होने वाली सुलह या समझौता। 4. एक विशेष काल या युग की समाप्ति और नए काल का प्रारंभ। **पर्या.** संधिकाल, परिवर्तन काल। 5. आयु का वह पड़ाव जब शरीर, मन, भावना आदि में परिवर्तन होने लगता है। **जैसे** वय:संधि।

संधिवार्ता *स्त्री. (तत्.)* किसी विवाद के संदर्भ में निबटारा या सुलह करने के लिए दो या अधिक व्यक्तियों, समूहों, राज्यों, देशों इत्यादि के मध्य होने वाली बातचीत। **जैसे:** इस समय भारत और पाकिस्तान के मध्य व्यापारिक संधिवार्ता होने जा रही है।

संन्यास [सम्+न्यास] *पुं. (तत्.)* 1. पूरी तरह से छोड़ देना, परित्याग करना। **जैसे:** टैस्ट क्रिकेट से संन्यास ले लेना; सांसारिक विषयों (जैसे ममता-मोह आदि) से पूर्ण वैराग्य। 2. हिंदुओं के चार आश्रमों में से अंतिम, जिसमें विरक्त होकर सब कार्य निष्काम भाव से किए जाते हैं।

संन्यासी *पुं.* ऐसा व्यक्ति जो घरबार, माया-मोह आदि का स्वेच्छा से त्याग कर चुका हो। हिन्दु मान्यता के अनुसार चौथे आश्रम में प्रविष्ट व्यक्ति। **पर्या.** साधु, संत। **वि.** त्याग करने वाला (परित्यागी)

संपत्ति *स्त्री. (तत्.)* धन-दौलत और जायदाद आदि जो किसी के अधिकार में हो और जिसे खरीदा-बेचा अथवा हस्तांतरित किया जा सके।

संपदा *स्त्री. (तत्.)* 1. धन दौलत, अचल संपत्ति (मकान, ज़मीन, जायदाद) 2. ऐश्वर्य, वैभव, संपन्नता, भंडार। **जैसे:** देश को प्राकृतिक संपदा का अनुपम वरदान प्राप्त है। **विलो.** विपदा।

संपन्न *वि. (तत्.)* 1. धनवान, दौलतमंद। 2. से युक्त। **जैसे:** विद्या संपन्न। 3. पूरा किया हुआ, पूर्ण, मुकम्मल। **उदा.** कार्यक्रम संपन्न होने की घोषणा की गई।

संपन्नता *स्त्री. (तत्.)* 1. पूर्ण होने की स्थिति। 2. अमीरी, ऐश्वर्य। **दे.** संपन्न।

संपरीक्षित [सम्+परीक्षा+इत्] *वि. (तत्.)* जिसकी सम्यक्/पूर्ण रूप से परीक्षा हो चुकी हो।

संपर्क *पुं. (तत्.)* 1. स्पर्श। **उदा.** पारस के संपर्क से लोहा सोना बन जाता है। 2. लगाव, संबंध; परस्पर जोड़ना, एक करना link। **उदा.** भारत की संपर्क भाषा हिंदी है।

संपादक *पुं. (तत्.)* 1. किसी कार्य को संपन्न या पूरा करने वाला। 2. किसी समाचार पत्र, पत्रिका या पुस्तक को सभी प्रकार से सुव्यवस्थित कर अर्थात् आवश्यक संशोधन तथा काटछाँट करके प्रकाशित करवाने वाला। aditor **जैसे**: किसी कहानी संग्रह का संपादक

संपादक *वि./पुं.* 1. किसी कार्य को संपन्न करने वाला (व्यक्ति)। 2. किसी पत्र-पत्रिका या प्रसारण केंद्र में दूसरे की रचना को आवश्यकता पड़ने पर सुधारकर प्रकाशन योग्य बनाने वाला व्यक्ति/अधिकारी। 3. किसी साहित्यिक संग्रह विशेष की योजना को कार्य-रूप में परिणत कर प्रकाशन योग्य बनाने वाला जिम्मेदार व्यक्ति।

संपादकीय *वि. (तत्.)* संपादक का। 1. पत्र-पत्रिकाओं में वह स्तंभ जिसे संपादक स्वयं लिखता हो। 2. संग्रहों में वे पृष्ठ जिसमें संपादक

की ओर से योजना तथा लेखकों के योगदान की चर्चा की जाती है। editorial

संपादन *पुं. (तत्.)* 1. किसी प्रकाशन विशेष से संबंधित संपादक का समस्त कार्य। 2. किसी सामयिक पत्र-पत्रिका अथवा संग्रह आदि की रचनाओं को संकलन कर क्रम, पाठ आदि ठीक करके उसे प्रकाशित करवाना। 3. काम को ठीक तरह से पूरा करना। editing

संपूर्ण [सम्+पूर्ण] वि. *(तत्.)* 1. ठीक तरह से भरा हुआ। 2. आदि से अंत तक, पूरा का पूरा। 3. पूर्णता को प्राप्त, समाप्त, खत्म।

संपूर्णत: *क्रि.वि. (तत्.)* पूर्ण रूप से, पूरी तरह से; कुल मिलाकर।

संप्रदाय *पुं. (तत्.)* 1. किसी धर्म को मानने वाले लोगों में विशिष्ट मत के अनुयायियों का समूह। **जैसे:** मुस्लिम धर्म में शिया या सुन्नी संप्रदाय। 2. किसी विशिष्ट दार्शनिक विचारधारा के मानने वाले लोगों का वर्ग, शाखा। (स्कूल)। **जैसे:** अद्वैत, विशिष्टाद्वैत, शुद्धाद्वैत आदि। 3. विचारधाराओं में मतभिन्नता रखने वाले लोगों का वर्ग। **जैसे:** साहित्य में ध्वनि संप्रदाय, रस संप्रदाय आदि।

संप्रभु [सम्+प्रभु] वि. *(तत्.)* वह व्यक्ति या व्यक्तियों का समूह जिसमें राज्य की सर्वोच्य शक्ति निहित हो। **पर्या.** सर्वसत्ताधारी। sovereign

संप्रभुता [सम्+प्रभुता] स्त्री. *(तत्.)* संप्रभु होने की स्थिति। sovereignth **दे. संप्रभु।**

संप्रेषण [सम्+प्रेषण]*पुं. (तत्.)* 1. एक स्थान से दूसरे स्थान पर ठीक तरह से भेजा जाना। 2. बोलकर, लिखकर या संकेतों के जरिए विचारों का आदान-प्रदान। 3. वक्ता/लेखक और श्रोता/पाठक के बीच भाषा के माध्यम से विचारों का आदान-प्रदान।

संप्रेषित *वि. (तत्.)* 1. जो भेजा गया हो। 2. दूसरे तक पहुँचाए गए (विचार)। **जैसे:** आप अपने विचारों को संप्रेषित करने में पूरी तरह सक्षम हैं।

संबंध *पुं. (तत्.)* 1. किसी के साथ जुड़ाव, योग, बँधना। 2. रिश्ता, नाता। 3. आपसी मेल जोल, घनिष्ठता। **जैसे:** सभी देशों के साथ हमारे संबंध अच्छे हैं। 4. (व्या.) दो शब्दों के बीच जुड़ाव को सूचित करने वाला तत्व, संबंध कारक। genetic case

संबद्ध *वि. (तत्.)* 1. किसी के साथ जुड़ा, मिला या लगा हुआ। 2. किसी प्रकार का संबंध रखने वाला। **पर्या.** संबंधित

संबल *पुं. (तत्.)* 1. वह साधन जिसके भरोसे कोई कार्य किया जाए। 2. सहारा। **जैसे:** हमें तो इस विषम परिस्थिति में आपके संबल की आवश्यकता है।

संबोधन *पुं. (तत्.)* 1. पुकारना, आह्वान करना। 2. वक्ता द्वारा उच्चरित वे शब्द जिन्हें सुनकर श्रोता का ध्यान वक्ता की ओर आकृष्ट होता है। 3. व्याकरण में वह शब्द जिससे किसी को पुकारा जाता है। **जैसे:** हे राम!

संबोधित *वि. (तत्.)* 1. जिसके प्रति संबोधन के शब्द वक्ता द्वारा उच्चरित किए गए हों। 2. जिसका ध्यान आकृष्ट किया गया हो।

संभलना *अ.क्रि. (तद्.]* संभरण) 1. अपने आपको गिरने या फँसने से बचाना। **जैसे:** मैं उसके षड़यंत्र रचने से पहले ही सँभल गया। 2. सावधान या होशियार होना। 3. रोग मुक्त होकर स्वस्थ्य प्राप्त करना। **जैसे:** वह इस बीमारी से संभल गया।

संभव *वि. (तत्.)* जो घटित हो सके; जो घट सकता हो। **पर्या.** मुमकिन। possible

संभवत: *अव्य. (तत्.)* संभव है कि, शायद, हो सकता है कि, कदाचित्।

संभावना *स्त्री. (तत्.)* 1. किसी कार्य, घटना आदि के हो सकने की स्थिति। **उदा.** आज वर्षा की संभावना है। मुमकिन होना 2. एक अलंकार जिसमें किसी एक बात के होने पर दूसरी बात के आश्रित होने का वर्णन हो। **जैसे:** यदि आप आ सके तो हमें बड़ी प्रसन्नता होगी।

संभावित *वि. (तत्.)* हो सकने की संभावना को प्रकट करने वाला। **पर्या.**संभाव्य

संभाव्य *वि.(तत्.)* 1. जिसकी संभावना हो, जो आने वाले समय में हो सकता है। **जैसे:** रोबोट के द्वारा खेती करना एक संभाव्य प्रक्रिया है। 2. जो हो सकता हो। **जैसे:** इस प्रश्न का एक संभाव्य उत्तर है... probable **पर्या.** संभावित।

संभाषण *पुं. (तत्.)* 1. आपस में एक दूसरे से की जाने वाली बातचीत। 2. वार्तालाप। **जैसे:** किसी भी भाषा को संभाषण के माध्यम से सरलता से सीखा जा सकता है।

संभ्रम *पुं. (तत्.)* बेचैनी, घबराहट, उतावली, जल्दबाजी आदि की स्थिति। **उदा.** संभ्रम के कारण मैं कुछ कर नहीं पाया। confusion

संभ्रांत *वि. (तत्.)* सम्मानित, प्रतिष्ठित, लब्धप्रतिष्ठ, विख्यात। **जैसे:** संभ्रांत परिवार। eleet, distinguish

संयत *वि. (तत्.)* 1. संयम से युक्त, जिसने मन और इंद्रियों को वश में कर रखा है। 2. नियंत्रित। **जैसे:** घोड़ों को लगाम से संयत किया जाता है। 3. क्रमबद्ध, व्यवस्थित। 4. बद्ध, अनुशासित, सधा हुआ

संयत्र *पुं. (तत्.)* किसी वस्तु के उत्पादन में प्रयुक्त होने वाली विविध स्थायी संरचनाओं, उपकरणों तथा यंत्रों का समूह। plant

संयम *[सम्+यम] पुं. (तत्.)* 1. मन और इंद्रियों को वश/नियंत्रण में रखने का भाव। 2. बुरी बातों या कार्यों से दूर रहना या बचना, परहेज।

संयमित *वि. (तत्.)* 1. जिसका संयम किया गया हो। 2. वश में किया हुआ; नियंत्रित। **जैसे:** वह संयमित वाणी बोलता है। 3. जिसने मन, इंद्रियों पर नियंत्रण किया हुआ है, संयमी।

संयुक्त *वि. (तत्.)* 1. मिला हुआ या जुड़ा हुआ। **पर्या.** संलग्न, संबद्ध (एनेक्स्ड) 2. एकत्र मिला हुआ (मिश्रण) **पर्या.** मिश्रित compound 3. साझा, एकत्र। **जैसे:** संयुक्त खाता (ज्वॉयन्ट) 4. (व्या.) ऐसा (वाक्य) जिसमें एक से अधिक (वाक्य) मिले हुए हैं। **टि.** व्याकरण में संयुक्त वाक्य और मिश्रित वाक्यों की स्वतंत्र परिभाषा है।

संयुक्त परिवार *पुं. (तत्.)* ऐसा परिवार जिसमें मुखिया पिता के सभी वयस्क पुत्र और उनके परिवार एक साथ रहते हों तथा उनकी रसोई भी एक साथ बनती हो। joint family **विलो.** एकल परिवार

संयुक्त प्रांत *पुं. (तत्.)* वर्तमान उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड राज्य को मिलाकर बने क्षेत्र का पुराना नाम। **टि.** आज का 'यू.पी.' शब्द मूलतः यूनाइटेड प्रॉविन्स (संयुक्त प्रांत) के आद्याक्षरों द्वारा बना है। संयोग से उत्तर प्रदेश के आद्याक्षर भी ये ही हैं।

संयुक्त राष्ट्र *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ कई राष्ट्रों के समूह की इकाई। **अं.** विधि विश्व के प्रभत्व संपन्न देशों (राष्ट्रों) की सबसे बड़ी संस्था जो अंतरराष्ट्रीय शांति, सुरक्षा और परस्पर सहयोग के लिए द्वितीय विश्वयुद्ध के बार एक घोषणा पत्र charter पर 50 देशों के प्रतिनिधियों द्वारा हस्ताक्षर करने के फलस्वरूप अस्तित्व में आई। इस समय इसकी सदस्य संख्या 190 से ऊपर पहुँच गई है। इस संस्था का मुख्यालय न्यूयॉर्क में है। united nations **तु.** राष्ट्रमंडल, राष्ट्रकुल।

संयोग *पुं. (तत्.)* 1. किसी घटना, बात या प्रसंग का अचानक घटित होना। **उदा.** आज आपसे भेंट हो गई-इसे मैं मात्र संयोग मानता हूँ। 2. मिलाप, मेल। **विलो.** वियोग

संयोगवश *क्रि.वि. (तत्.)* शा.अर्थ संयोग के कारण, इत्तफ़ाकन। **सा.अर्थ** अचानक किसी ऐसी क्रिया, मिलन, घटना आदि का होना जिसकी पहले से कोई योजना न हो परंतु जिसका परिणाम अच्छा ही हो। **जैसे:** संयोगवश ही आज उनसे मुलाकात हुई।

संयोजक *पुं. (तत्.)* 1. जोड़ने या मिलाने वाला। 2. (व्या.) दो शब्दों या वाक्यों को जोड़ने वाला शब्द। जैसे और एवं, तथा conjunctive 3. सभा या संस्था का वह सदस्य जो बैठक आदि बुलाने, व्यवस्था करने या कार्यक्रम संचालित करने का कार्य करता है। convenor

संयोजन *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ जोड़ने, मिला देने या इकट्ठा करने का भाव। **पर्या.** किसी बैठक या सभा का आयोजन और संचालन करने का कार्य।

संरक्षक *पुं. (तत्.)* (स्त्री. संरक्षिका) सा.अर्थ देख-भाल या रक्षा करने वाला। 2. अपने आश्रय में लेने या रखने वाला। **विधि.** 1. किसी अवयस्क अथवा अविकसित बुद्धि वाले व्यक्ति के सभी प्रकार के हितों को देखने वाला व्यक्ति। guardian 2. **वन.** वन संपदा का अनधिकृत दोहन रोकने के लिए नियुक्त अधिकारी। conservator of forest

संरक्षण *पुं. (तत्.)* 1. देखरेख/आश्रय में रखते हुए पालन पोषण, शिक्षा दीक्षा आदि। 2. सरकार द्वारा किसी संस्था, उद्योग, व्यवसाय आदि की हिफ़ाजत। 3. रक्षा, हिफाजत, देख-रेख निगरानी। 4. अधिकार, कब्जा। **जैसे:** यह विवादित क्षेत्र आजकल सरकार के संरक्षण में है।

संरक्षित *वि. (तत्.)* 1. सरकार या राज्य द्वारा अथवा किसी अन्य संस्था द्वारा जिसकी देखभाल और सुरक्षा की जिम्मेदारी ली गई हो। 2. जो सँभालकर सुरक्षित और व्यवस्थित तरीके से रखा गया हो।

संरचना *स्त्री. (तत्.)* शा.अर्थ सुव्यवस्थित रचना। 1. कई हिस्सों को जोडक़र बनाई गई कोई चीज़। **जैसे:** कोई मकान, पुल, बाँध आदि। 2. भाषिक इकाइयों (शब्द, पद, पदबंध, उपवाक्य, वाक्य) से निर्मित रचना जिसके सभी अवयवों को किसी सुनिश्चित क्रम में व्यवस्थित किया गया हो। **जैसे:** हिंदी की वाक्य-संरचना structure।

संलग्न *वि. (तत्.)* 1. किसी के साथ लगा हुआ, चिपका हुआ, संबंधित। 2. नत्थी किया हुआ। **जैसे:** इस आवेदन पत्र के साथ मेरे सभी प्रमाणपत्र संलग्न हैं।

संलयन [सम्+लयन] पुं. *(तत्.)* 1. आपस में अच्छी तरह मिल जाना, एक दूसरे में लीन हो जाना। fusion

संवर्ध *पुं. (तत्.)* कृत्रिम माध्यमों में उगते-बढ़ते अणु (सूक्ष्म) जीव, ऊतक अथवा कोशिकाओं का समूह। culture

संवर्धन *पुं. (तत्.)* जीवों, ऊतकों या कोशिकाओं का कृत्रिम माध्यमों में पोषण करके उनकी वृद्धि अथवा प्रगुणन करने की प्रक्रिया। culture

संवहन [सम्+वहन] *पुं. (तत्.)* 1. एक स्थान से दूसरे स्थान पर समुचित रूप से ले जाना। conduction

संवहनी वर्षा *स्त्री. (तत्.)* विषुवतीय प्रदेशों में प्राय: प्रतिदिन होने वाली वर्षा **टि.** सूर्य की सीधी किरणें वातावरण की नमी को सोख लेती हैं और संवहन के माध्यम से उसे ऊँचाई तक पहुँचा देती हैं। यही नमी ठंडी होकर वर्षा का रूप ले लेती है। माध्यम संवहन होने के कारण इसे 'संवहनी वर्षा' कहते हैं। अनुकूल परिस्थिति होने पर पृथ्वी के अन्य भागों में भी यह वर्षा हो सकती है। convectional rain

संवाद [सम्+वाद] *पुं.(तत्.)* 1. दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच की बातचीत, वार्तालाप या कथोपकथन। 2. किसी के पास भेजा हुआ अथवा आया हुआ वृत्तांत। 3. समाचार, खबर 4. समाचार पत्रों के लिए भेजे गए समाचार और सूचनाएँ।

संवाद लेखक *वि./पुं. (तत्.)* नाटक और सिनेमा इत्यादि के लिए वार्तालाप के वाक्यों की रचना करने वाला।

संवाददाता *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ संवाद देने वाला, समाचार या संदेश भेजने वाला। वि.अर्थ समाचार पत्र, दूरदर्शन, रेडियो आदि के लिए क्षेत्र विशेष के समाचारों का संग्रह करके उन्हें प्रकाशन/प्रसारण हेतु प्रेषित करने वाला व्यक्ति। correspondent

संवादवाहक *पुं. (तत्.)* जिसके माध्यम से संवाद या समाचार या सूचनाएँ एक स्थान से अन्यत्र भेजी जाती हैं। 1. समाचारों को पहुँचाने वाला। 2. समाचारों या सूचनाओं को प्रसारित करने वाले यंत्र।

संविधान [सम्+विधान] पुं. *(तत्.)* वह विधान या कानूनों का विधिवत् संग्रह जिसके अनुसार किसी देश, राज्य अथवा संस्थान के कार्य का संचालन होता है। **जैसे:** भारत का संविधान constitution

संवेदन *पुं. (तत्.)* इंद्रियजन्य वह अनुभव जिसका अंतर्निरीक्षण द्वारा अधिक विश्लेषण संभव न हो, ज्ञानेंद्रियों से होने वाला अनुभूति। sensation

संवेदनशील *वि. (तत्.)* (व्यक्ति) जिसके मन में संवेदना शीध्र उपजती हो; अनुभूति से शीध्र प्रभावित होने वाला। **उदा.** मनुष्य संवेदनशील प्राणी है। sensative

संवेदना *स्त्री. (तत्.)* 1. इंद्रियों से होने वाली अनुभूति। 2. मन में होने वाली अनुभूति या बोध। 3. किसी दु:खी व्यक्ति के प्रति सहानुभूति का भाव। **जैसे:** मैं तुम्हारे पिताजी के निधन पर संवेदना व्यक्त करता हूँ।

संवेदनात्मक [संवेदन+आत्मक] वि. *(तत्.)* संवेदन से संबंधित, संवेदन परक। **दे.** संवेदन।

संशय *पुं. (तत्.)* अपूर्ण ज्ञान के कारण यह तय नहीं कर पाना कि 'क्या ठीक है और क्या नहीं'। suspicion, dout **तु.** संदेह, शंका।

संशयग्रस्त [संशय-ग्रस्त] *वि. (तत्.)* जो किसी संशय से ग्रस्त हो; संशय में पड़ा हुआ।

संशोधन [सम्+शोधन] पुं. *(तत्.)* 1. ठीक करना, शुद्ध करना, सुधार करना, परिवर्तन करना। 2. कमी या त्रुटि देखकर किया गया छोटा-मोटा सुधार या परिवर्तन।

संश्लेषण *पुं. (तत्.)* सा.अर्थ अलग-अलग तत्वों, इकाइयों को मिलाकर, सटाकर या जोड़कर एक करना। **रसा.** 1. सरलतर पदार्थ से जटिलतर यौगिक पदार्थों का बनना। **उदा.** हाइड्रोजन और ऑक्सीजन के मेल से पानी का बनना। 2. कृत्रिम रूप से उत्पादन। **जैसे:** नकली रबड़, पॉलिएस्टर, नॉयलन वस्त्र आदि का निर्माण

संश्लेषित रेश *पुं. (तत्.)* पेट्रो. रसायनों के रासायनिक प्रक्रमण से तैयार किए गए कृत्रिम धागे (रेशे) synthic fibres

संसद (संसद्) *स्त्री. (तत्.)* 1. प्राचीन अर्थ- 1. सभा 2. न्यायालय (मनु. 8/52) 2. वर्तमान अर्थ- (भारत के संदर्भ में) देश की व्यवस्था को चलाने के लिए विधि (कानून) बनाने वाली/उनमें संशोधन करने वाली सभा विधि निर्मात्री सभा। parliamnet

संसर्ग *पुं. (तत्.)* 1. साथ-साथ या बहुत नजदीक। 2. संगति से उत्पन्न लगाव। 3. स्पर्श (शरीर या श्वासवायु इत्यादि का) **जैसे:** हैजा**,** चेचक, यक्ष्मा आदि रोग संसर्ग से फैलते हैं।

संसाधन [सम्+साधन] *पुं. (तत्.)* 1. किसी उद्देश्य, कार्य या विकास की प्राप्ति का साधन। **जैसे:** प्राकृतिक संसाधन, मानव संसाधन resourte 2. साधने अर्थात् लंबे समय तक परिरक्षित करने की वैज्ञानिक विधि। processing

संसाधित *वि. (तत्.)* लंबे समय तक परिरक्षित रखने के प्रक्रमण से गुजरा हुआ। **उदा.** संसाधित खाद्य पदार्थ।

संस्करण *पुं. (तत्.)* 1. संस्कार, कमी दूर करके सुधारना। 2. किसी पुस्तक या समाचार पत्र, पत्रिका आदि का एक बार में छपने वाला अंक **जैसे:** सांध्य संस्करण। 3. किसी पुस्तक के अनेक बार छपने वाले सुधरे हुए समूहों का क्रमश: नाम। **जैसे:** प्रथम/द्वितीय संस्करण, छात्र संस्करण, पुस्तकालय संस्करण आदि edition

संस्कार *पुं. (तत्.)* 1. दोष आदि दूर करने का कर्म। 2. हिंदुओं में जन्म से मरण तक मनाए जाने वाले कुछ धार्मिक कृत्य। **उदा.** षोड़श संस्कार (मुंडन, यज्ञोपवीत, विवाह आदि) 3. पूर्व जन्म के कर्मों के आधार पर मान्य मनुष्यों का जन्मना स्वभाव या कुछ गुण विशेष।

संस्कृत *वि. (तत्.)* शा.अर्थ जिसका संस्कार हुआ हो, शुद्ध किया गया। **स्त्री.** प्राचीन भारत की भारोपीय भाषा परिवार की एक प्रमुख भाषा जिसके दो भेद (वैदिक संस्कृत और लौकिक संस्कृत) हैं तथा जिसका उल्लेख भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में भी है।

संस्कृति *स्त्री. (तत्.)* व्यवहारगत विधि-निषेधों की एक ऐसी अमूर्त संहिता जिससे मनुष्य की जीवन-पद्धति का निर्धारण होता है। culture

संस्था *स्त्री. (तत्.)* शा.अर्थ. जहाँ ठहरा जा सके (वह स्थान या जगह)। विस्तृत अर्थ में 1. कोई भी संघटित समाज, समूह या वर्ग। **जैसे:** सामाजिक व्यवस्था, विधि। 2. व्यवस्था विधि **जैसे:** विवाह एक संस्था है। **तु.** संस्थान

संस्थापक [संस्थापन+क] *वि. (तत्.)* शा.अर्थ संस्थापन करने वाला व्यक्ति। वह प्रथम व्यक्ति जिसने सबसे पहले किसी संस्था, सभा या समाज की स्थापना की हो।

संस्मरण [सम्+स्मरण] पुं. *(तत्.)* शा.अर्थ ठीक तरह से याद करना, मन में लाना। अपने बारे में या किसी अन्य व्यक्ति से संबंधित स्मरणीय घटनाओं का कथन या लेखन।

संहार *पुं. (तत्.)* 1. नाश, ध्वंस। 2. मार डालना (युद्ध आदि में)

संहिता *स्त्री. (तत्.)* सा.अर्थ व्यवस्थित संकलन या संग्रह। 1. विधियों अर्थात् नियमों /कानूनों का संकलन-संग्रह। **जैसे:** भारतीय दंड संहिता, धर्म संहिता।

सँकरा *वि. (तद्.)* जिसकी चौड़ाई कम हो।

सँजोना *स.क्रि. (तद्. संग्रह/सज्जा)* 1. (1) इकट्ठा करना, सँभालना या व्यवस्थित करना। 2. सजाना, अलंकृत करना।

सँडसी *स्त्री. (तद्.<संदंश)* एक तरह का आगे गोलाई लिए हुए कैंची-नुमा उपकरण जिससे पकडक़र गरम बटलोई, तसला आदि चूल्हे पर से उठा कर आवश्यकतानुसार अन्यत्र रखे जा सकते हैं।

सँपेरा *पुं. (देश.)* 1. साँप पकड़ने वाला। 2. साँप पालने वाला। 3. जीविका के लिए स्थान-स्थान में बीन बजाकर साँपों का प्रदर्शन करने वाला व्यक्ति, मदारी।

सँवरना *अ.क्रि. (देश.)* 1. अपनी सज्जा करना, सजना। **जैसे:** तुम कहाँ जाने के लिए सँवर रहे हो? 2. स्वयं को सँभालना, सुधारना। **जैसे:** सँवर जाओ, अभी समय है।

सँवारना *अ.क्रि. (प्रेर.) (देश.)* 1. सजाना, अलंकृत करना। 2. किसी प्रकार की कमी, दोष आदि दूर करके ठीक या अच्छी अवस्था में लाना। **जैसे:** बालिकाएँ उत्सव में शामिल होने के लिए अपने बालों को सँवार रही हैं।

सकारना *स.क्रि.* 1. हाँ करना। 2. **अर्थ.** विनिमय पत्र अथवा हुंडी को निर्धारित शर्तों के अनुसार भुगतान के लिए स्वीकार करना। **विलो.** नकारना।

सकारात्मक *[सकार+आत्मक] वि. (संकर)* जो सहमति या स्वीकृति का सूचक हो। **जैसे:** सकारात्मक सोच। **विलो.** नकारात्मक।

सकारे *क्रि.वि .(देश.)* सवेरे, तडक़े (सूर्योदय से पूर्व) **उदा.** अवधेस के दुआरे सकारे गई.......।

सकुचना *स.क्रि. (तद्.<संकुचन)* खिले फूल का सिकुड़ना या मुरझा जाना।

सकुचाना *अ.क्रि. (तद्.(संकोचन)* 1. किसी बात को स्वीकार करने में हिचकिचाना या आगा-पीछा करना।

सकेलना *स.क्रि.(तद्.) (सं)* संकेलयति-संकेल्लइ-सकेलइ-सकेलना) किसी वस्तु, अन्न आदि को इकट्ठा करके रखना, इकट्ठा करना; झाड़-बुहार कर इकट्ठा करना, जमा करना।

सक्रिय *वि. (तत्.)* जो काम में लीन या लगा हो, सतत् काम में लगा हुआ। **पर्या.** कर्मरत, क्रियाशील। **जैसे:** सक्रिय पूँजी, सक्रिय कार्यकर्त्ता। **विलो.** निष्क्रिय।

सक्षम *वि. (तत्.)* 1. जो क्षमता से युक्त हो, समर्थ। 2. किसी काम के लिए पूर्ण रूप से उपयुक्त एवं सुयोग्य। competent **जैसे:** आप इस कार्यालय के सक्षम अधिकारी हैं।

सखा *पुं. (तत्.)* साथ में रहने वाला, संगी, साथी। **पर्या.** सहचर, मित्र। *स्त्री.* सखी, सहेली

सख्त *वि. (फा.)* 1. जो नर मन हो, कड़ा/कड़ी कठोर। **जैसे:** सख्त बिस्तर, सख्त जमीन। hard 2. कठिन, कड़ा/कड़ी **जैसे:** सख्त कैद strict 3. दया, करुणा आदि से रहित **जैसे:** सख्त व्यक्ति strict 4. जिसे टाला न जा सके। **जैसे:** सख्त जरूरत (डायर) 5. गंभीर। **जैसे:** सख्त बीमारी serious 6. खुरदरा/री **जैसे:** सख्त आवाज hard

सख्ती *स्त्री. (फा.)* कठोर व्यवहार, कठोरता, कड़ापन। **विलो.** नरमी।

सगा *वि. (तद्.>स्वक)* 1. एक ही माता से उत्पन्न भाई या बहन, सहोदर। **जैसे:** सगा भाई, सगी भाभी। 2. पिताजी या माताजी के सगे। **जैसे:** सगे चाचा, सगे मामा इत्यादि। 3. अत्यंत निकट **जैसे:** आप तो हमारे सगे से भी सगे हैं। **तुल.** चचेरा, ममेरा, फुफेरा इत्यादि।

सगाई *[सगा+ई] स्त्री. (तद्.)* 1. सगे होने का भाव, सगापन। 2. किसी से आत्मीयतापूर्ण नाता या रिश्ता। 3. विवाह का निश्चय, मँगनी की रस्म।

सघन *वि. (तत्.)* 1. बहुत घना, अविरल। **जैसे:** सघन वन dense, thick **विलो.** विरल। 2. गहरा/री। **जैसे:** सघन खेती intensive **विलो.** विस्तृत।

सच *वि./पुं.* **दे.** सत्य।

सचमुच *क्रि.वि. (तत्.+देश.)* 1. सच में, वास्तव में, यथार्थ में। 2. अवश्य, निश्चय (भविष्यत् काल के संदर्भ में) मैं सचमुच जाऊँगा ।

सचाई *स्त्री. (तद्)* **दे.** सत्य (पुं.)

सचिव *पुं.. (तत्.)* 1. (प्रशा) किसी मंत्रालय, विभाग इत्यादि का प्रधान प्रशासनिक अधिकारी। 2. किसी संस्था का वह अधिकारी जो आय-व्यय, पत्राचार आदि की देख-रेख करता हो। 3. राजा

का मंत्री (प्राचीन काल में) **तुल.** निजी सचिव, प्रेस सचिव इत्यादि।

सचेत *वि. (तत्.)* 1. सावधान, सतर्क, सजग। **उदा.** मैंने पहले ही उसे सचेत कर दिया था। alert 2. चेतना से युक्त conscious **विलो.** अचेत।

सच्चरित्र *[सत्+चरित्र] वि.(तत्.)* अच्छे चरित्र या अच्छे चाल-चलन वाला (व्यक्ति) सदाचारी। **जैसे:** डॉ. कर्ण सिंह सच्चरित्र इंसान हैं। *पुं.* अच्छा चरित्र। **उदा.** सच्चरित्र ही मानव को यशस्वी बनाता है।

सच्चा/सच्ची *वि. (तत्.)* 1. सच बोलने वाला; जो झूठा न हो। **उदा.** सच्ची बात। **विलो.** झूठा/ठी। 2. आत्मीय भाव रखने वाला; कपट न करने वाला। **उदा.** सच्चा मित्र। 3. असली, जो कृत्रिम न हो। **उदा.** सच्चा मोती। **विलो.** नकली।

सच्चाई/सचाई *स्त्री. (तद्.)* सच होने का गुण, सच्चापन। **उदा.** उसकी बात में सचाई है। **विलो.** झूठ।

सजग *वि. (तत्.)* शा.अर्थ जगा हुआ जागरुक। विक. **अर्थ.** सावधान, सतर्क।

सजना *अ.क्रि. (तद्. (सज्जा)* 1. आकर्षक दिखने के लिए सुंदर वस्त्र एवं आभूषण धारण करना। **पर्या.** फबना, भला जान पड़ना, उत्तम लगना। 2. युद्ध आदि के लिए तैयार होना। पुं. प्रियतम, पति।

सजल *[स+जल] वि. (तत्.) (स्त्री.सजला)* 1. जल से भरा हुआ, जल से युक्त, जिसमें पानी हो। 2. आँसुओं से युक्त, **जैसे:** सजल नेत्र/नयन।

सजा *स्त्री. (फा.)* की गई किसी बुराई या अपराध के बदले दिया जाने वाला दंड। 2. न्यायालय द्वारा सुनाया गया दंड।

सजात *वि. (तत्.)* एक ही मूल से जन्मा; समान स्त्रोतवाला। **उदा.** सजात भाषाएँ (हिंदी, पंजाबी, गुजराती, बंगला आदि जो आर्य परिवार की भाषाएँ है।

सजातीय *[स+जातीय] वि. (तत्.)* 1. अपनी ही जाति में एक ही जाति में उत्पन्न। **उदा.** सजातीय विवाह endogamg

सजाना *(प्रेर.>सजना) (तत्)* 1. वस्तुओं को स्थानोचित इस प्रकार क्रम से रखना जिससे वे देखने में अधिक सुंदर लगें। **जैसे:** कलाकक्ष में कलाकृतियों को सजाना। 2. सुसज्जित या अलंकृत करना। **जैसे:** घर को सजाना।

सजावट *[सज+आवट] स्त्री. (तत्.+देश.)* 1. सजे हुए होने की अवस्था या भाव। सज्जा, शोभा। **जैसे:** नाट्यशाला की सजावट देखने योग्य थी। 2. किसी स्थान को अलंकृत करने का कार्य। **जैसे:** वार्षिकोत्सव के अवसर पर सभा भवन की सुंदर सजावट की गई है।

सजावटी *वि. (तद्.)* सजावट के काम आने वाला (सामान)। **जैसे:** सजावटी पौधे।

सजीला *[साज+ईला] वि. (देश)* 1. सजधज कर या बनठन कर घूमने फिरने वाला, छैला। 2. सुंदर, आकर्षक दिखने वाला। **जैसे:** सजीला युवक।

सजीव *वि. (तत्.)* 1. जिसमें जीवन या प्राण हो। **पर्या.** जीवंत, प्राणयुक्त, जानदार। 2. जो दर्शक की आँखों के सामने प्रत्यक्ष रूप से न होकर भी किसी माध्यम से दर्शक के सामने प्रत्यक्ष घटित होता दिखाई दे। **जैसे:** टीवी के माध्यम से क्रिकेट का प्रसारण। live 3. प्रभावशाली, ओजस्वी जैसे प्रकृति का सजीव वर्णन। **विलो.** निर्जीव।

सटना *अ.क्रि. (देश.)* 1. आपस में दो वस्तुओं या व्यक्तियों का इस प्रकार मिलना कि दोनों एक साथ एक दूसरे से लगे हुए प्रतीत हों। (चिपकना) 2. पास-पास होना। साथ होना।

सटीक *वि. (तत्.)* जिसमें मूल पाठ के साथ-साथ उसकी व्याख्या या टीका भी हो, टीका सहित। 2. बिलकुल ठीक, उपयुक्त। **उदा.** उसका कथन (पूरी तरह से) सटीक था। apt

सड़सठ *वि. (तद्.>सप्तषष्टि)* जो गिनती में साठ से सात अधिक हो। **जैसे:** हमारे विद्यालय में सड़सठ कक्ष हैं। *पुं.* साठ और सात की संख्या (67) **जैसे:** पचास और सत्रह का योग सड़सठ होगा।

सड़ाँध *स्त्री. (देश.<सड़न+गंध)* 1. ऐसी दुर्गंध जो किसी सड़ी हुई या सड़ती हुई चीज से निकलती है। 2. घावों, फोड़ों आदि के जहरीले होकर सड़ने पर निकलने वाली दुर्गंध।

सड़ाना *(प्रेर.सड़ना) (तद्>सरण)* सा.अ. किसी वस्तु को सड़ने या विकृत होने की स्थिति में पहुँचा

देना। **जैसे:** उसने आम, जामुन आदि फलों को पैकेट बंद रखकर सड़ा दिया। ला.अ. 2. बहुत बुरी हालत करना। **जैसे:** तुमने उसके अपराध की सजा दिलवाकर उसे सात वर्ष तक जेल में सड़ाया।

सतत *वि. (तत्.)* बिना बीच में रुके लगातार किसी क्रिया का होने या रहने वाला। **पर्या.** अविच्छिन्न। **अव्य.** 1. निरंतर, लगातार। **उदा.** वह प्रात: से सतत अध्ययनरत है। 2. सदा, हमेशा। **जैसे:** सतत क्रियाशील

सतत पोषणीय विकास *पुं. (तत्.)* 1. संसाधनों का उपयोग करना और भविष्य के लिए उनके संरक्षण में संतुलन बनाए रखना। 2. ऐसे संसाधनों का विकास जो भावी पीढ़ी के लिए भी निरंतर उपादेय बने रहें। 3. निरंतर उपादेय तत्वों/संसाधनों का विकास।

सतरंगा/रंगी *वि. (तद्.<सात+रंगी)* 1. सात रंगों वाला/ली। **जैसे:** सतरंगी इंद्रधनुष। 2. कई प्रकार के रंगों वाला, रंगारंग। **उदा.** सतरंगा (रंगारंग) कार्यक्रम।

सतर्क *[स+तर्क] वि. (तत्.)* 1. शा.अर्थ तर्क या युक्ति के साथ, तर्कपूर्ण rational, logical **विक. अर्थ-** सावधान, सजग, होशियार। alert

सतर्कता *स्त्री. (तत्.)* 1. सावधान रहने का भाव; बरती गई सावधानी। alertness 2. **प्रशा.** कर्मचारियों के व्यवहार और उनकी ईमानदारी पर नज़र रखना और शिकायतें आने पर उनकी छान-बीन करना। vigilance

सतह *स्त्री. (अर.)* 1. किसी वस्तु का ऊपरी हिस्सा या तल। **उदा.** मेज की सतह। 2. वह विस्तार या ऊपर का फैलाव, जिसकी केवल लंबाई-चौड़ाई बताई जाए, गहराई नहीं। **जैसे:** पानी या जमीन की सतह। **पर्या.** तल, पृष्ठ (सरफेस; लैबल)

सतही *वि.* 1. जिसका संबंध सतह से हो। **जैसे:** सतही नापजोख। 2. ला.अर्थ हलके स्तर का यानि जिसमें गंभीरता का अभाव हो। **जैसे:** सतही कार्य, सतही दृष्टिकोण।

सताना *स.क्रि. (तत्. (संतापन)* 1. परेशान करना, पीड़ित करना। 2. दु:ख देना/मानसिक कष्ट पहुँचाना।

सती *वि. (तत्.)* पति के अतिरिक्त कभी भी किसी अन्य पुरुष के विषय में विचार न करने वाली (स्त्री) साध्वी, पतिव्रता। **जैसे:** सती सीता, सती अनसूया आदि। 2. वह (स्त्री) जो पति की मृत्यु के बाद अपने प्राण दे दे। *स्त्री.* पुराणों के अनुसार दक्ष प्रजापति की पुत्री तथा शिव की पहली पत्नी।

सती प्रथा *स्त्री. (तत्.)* प्राचीनकाल में, भारत में प्रचलित ऐसी प्रथा (रीति/नियम) जिसके अनुसार पतिव्रता स्त्री अपने पति की मृत्यु के पश्चात् अपने जीवन को निरर्थक मानते हुए पति के शव के साथ चिता में जलकर अपने प्राण दे देती थी। **उदा.** उत्तम पतिव्रता-उत्तम के अस बस मन माँहीं। सपनेहुँ आना पुरुष जा नाहीं।। (रा.च.मा.)

सत्/सत *पुं. (तत्.)* व्यु.अर्थ ऐसा सत्य या सत्ता जो सार्वकालिक हो। शा.अर्थ 1. सत्य, यथार्थ; श्रेष्ठ, पवित्र। सा.अर्थ 2. सत्यपूर्ण धर्म। 3. मूल तत्त्व। 4. सत्ययुग। 5. किसी चीज में से निकाला हुआ सार, सत्व। **विलो.** असत्।

सत्कर्म *(सत् (अच्छा)+कर्म) पुं. (तत्.)* 1. अच्छा काम या शुभ कर्म। 2. दूसरों की सहायता, अतिथि सत्कार आदि कर्म।

सत्कार *पुं. (तत्.)* (घर) आने वाले मेहमान/अतिथि का समुचित आदर, सम्मान या सेवा। **पर्या.** खातिरदारी।

सत्कार्य *वि. (तत्.)* सत्कार के योग्य, सम्मान योग्य। **जैसे:** अतिथि-सत्कार सत्कार्य ही होता है। *पुं.* अच्छा काम, सत्कर्म। **जैसे:** हम सत्कार्य ही करते रहें, यही उचित है।

सत्ता *स्त्री. (तत्.)* 1. मूर्त रूप से वर्तमान होने की अवस्था। अस्तित्व, विद्यमानता। 2. सामर्थ्य, शक्ति। **विलो.** अभाव, अनस्तित्व। **उदा.** निरीश्वरवादी ईश्वर की सत्ता में विश्वास नहीं करते। 3. वह शक्ति जो किसी पद पर रहने पर प्राप्त होती है, **जैसे:** सत्ता में आना, राज सत्ता। power *पुं.* (सात) ताश के किसी भी रंग काक वह पत्ता जिस पर सात बूटियाँ बनी हो।

सत्ताधारी *वि./पुं. (तत्.)* (वह व्यक्ति या दल) जिसे किसी प्रकार की सत्ता प्राप्त हो। सत्तावान। **दे.** सत्ता

सत्तारुढ़ *[सत्ता+आरुढ़] वि. (तत्.)* जिसके हाथ में शासन की बागडोर हो या जिसके हाथ में सत्ता हो। शासक। **पर्या.** सत्तासीन, सत्तावान। **विलो.** सत्ताच्युत।

सत्य *वि./पुं.* जैसा देखा, समझा, सुना वैसा का वैसा कह देना। वि. आपकी बात सत्य है। पुं. सत्य की सदा जीत होती है।

सत्याग्रह *[सत्य+आग्रह] पुं. (तत्.)* 1. सत्य की रक्षा एवं पालन करने के लिए किया गया विनम्र अनुरोध या हठ। 2. (राज) किसी सत्ता या शासक की अन्यायपूर्ण नीतियों के विरुद्‌ध किया जाने वाला वह आंदोलन जो अहिंसात्मक तथा असहयोग या आज्ञाभंग के रूप में होता है। **जैसे:** महात्मा गाँधी ने नमक सत्याग्रह किया था।

सत्यानाश *पुं. (तद्.>सत्तानाश)* किसी वस्तु की सत्ता पूरी तरह नष्ट हो जाना। नामोनिशान न रह जाना। **पर्या.** सर्वनाश, बरबादी, ध्वंस।

सत्यानाशी *वि. (तद्.)* धन-सम्पत्ति या किसी अच्छे काम को नष्ट-भ्रष्ट कर देने वाला।

सत्र *पुं. (तत्.)* मूल अर्थ यज्ञ आदि का काल जिसमें यज्ञ का अनुष्ठान शुरू होकर समाप्ति तक चलता रहता है। **सा.अ.** 1. साधुओं या निर्धनों को मुफ्त भोजन की व्यवस्था, अन्नसत्र। **पर्या.** लंगर, भंडारा, सदावर्त। 2. **विधि**. संसद अथवा किसी अन्य विधायिका के लगातार कार्यरत रहने की एक अवधि। अधिवेशन। session 3. **शिक्षा.** किसी पाठ्यचर्या को पूरा करने के लिए निश्चित अवधि। term

सत्व (सत्व) *[सत्+त्व] पुं. (तत्.)* 1. होने का भाव सत्ता, अस्तित्व। 2. प्रकृति, मूलतत्व। 3. जीवनी शक्ति, चेतना, प्राण तत्त्व। 5. प्राणधारी जीव।

सदका *पुं. (अर.)* 1. व्यक्ति के भावी जीवन की शुभकामना हेतु उसके सिर पर चारों ओर घुमाकर कोई चीज दान करने के लिए उतारना, निछावर। 2. शाब्दिक स्तर पर भी 'सदके जावाँ' कहकर उपर्युक्त भावना की आंगिक अभिव्यक्ति।

सदन *पुं. (तत्.)* 1. घर, 2. भवन। 2. वह निर्धारित स्थान जिसमें किसी विषय पर विचार करने या नियम, विधान आदि बनाने वाली सभा का अधिवेशन होता है। 3. इस प्रकार का स्थान तथा उसके सदस्य। **जैसे:** 'संसद' में दो सदन होते हैं लोकसभा और राज्यसभा।

सदर *वि. (अर.>सद्र)* 1. किसी संस्था का प्रमुख, अध्यक्ष। 2. किसी राज्य का प्रधान शासक। **जैसे:** सदर ए-रियासत। 3. पद के आधार पर बड़ा। 4. मुख्य या प्रधान। **जैसे:** सदर बाजार। (मुख्य बाजार)

सदरी *स्त्री. (अर.>सद्री)* शरीर के अन्य कपड़ों के ऊपर पहनने का सिला हुआ बिना बाहों वाला वस्त्र। waist coat

सदस्य *पुं. (तत्.)* किसी सभा, समाज, संगठन, विधायिका आदि का अंगभूत में सम्मिलित प्रत्येक व्यक्ति। member

सदाचरण *[सत्+आचरण] पुं. (तत्.)* 1. व्यक्ति द्‌वारा किया जाने वाला उत्तम आचरण (व्यवहार)। 2. अच्छा चाल-चलन, उत्तम चरित्र। **जैसे:** सदाचरण से व्यक्ति महान् बनता है। **पर्या.** सदाचार। **विलो.** कदाचरण।

सदाचार *(सत्+आचार) पुं. (तत्.)* वह व्यवहार या आचरण जो धार्मिक, नैतिक या सामाजिक दृष्टि से उत्तम तथा अनुकरणीय हो। अच्छा चरित्र। अच्छा चाल चलन। **जैसे:** सदाचार से ही जीवन को गति मिलती है। **विलो.** कदाचार।

सदाबहार *वि. (तत्.>सदा+फा.बहार)* सा.अ. सदा हरा-भरा रहने वाला (वृक्ष)। ला.अ. हर समय प्रसन्न रहने या दिखने वाला (कोई व्यक्ति)। *पुं.* एक प्रसिद् ध फूल का पौधा जो हर ऋतु में फूलता है।

सदिच्छा *[सत्+इच्छा] स्त्री. (तत्.)* ऐसी इच्छा जो दूसरों की भलाई करने की भावना से मन में उत्पन्न हुई हो या अभिव्यक्त हुई हो। **पर्या.** शुभकामना।

सदी *स्त्री. (तत्.)* किसी विशेष पंचांग (कैलेंडर) के अनुसार सौ वर्ष, शताब्दी, शती, ग्रेगोरियन कैलेंडर के अनुसार। **जैसे:** बीसवीं सदी (1901 से 2000 ई. तक) पाँचवी सदी ई. पू. (500-401 ई.पू.)।

सदुपदेश *[सत्+उपदेश] पुं. (तत्.)* 1. किसी श्रेष्ठजन द्‌वारा दिया जाने वाला सुमार्ग पर चलने का उपदेश, उत्तम शिक्षा। 2. अच्छी

सलाह। **जैसे:** गुरुजनों के सदुपदेश से हमारा जीवन सुंदर बन गया।

सद् भाव *[सत्+भाव] पुं. (तत्.)* 1. अच्छा भाव, अच्छा आशय, अच्छी नीयत। 2. छल-कपट, द्वेष आदि से रहित विचार/भावना। **विलो:** दुर्भाव।

सद्भावना *स्त्री. (तत्.)* किसी व्यक्ति या समूह के प्रति दूसरे व्यक्ति या समूह द्वारा मनसा, वाचा, कर्मणा व्यक्त या प्रकट की गई अच्छी या शुभ भावना। **विलो.** सद्भावना।

सद्य: *क्रि.वि. (तत्.)* हाल ही में, अभी-अभी, थोड़े समय पहले ही। **उदा.** सद् य: प्रकाशित पुस्तक, सद्य स्नात महिला।

सधाना *स.क्रि (सधना+प्रेरणा, सं.-साधयति)* सा.अर्थ **1.** किसी कार्य के साधने में दूसरे को प्रवृत्त करना। 2. अपना कार्य दूसरे के सक्रिय सहयोग से पूरा कराना। 3. पशु-पक्षी अथवा किसी व्यक्ति को अपने अनुसार कार्य करने के लिए प्रवृत्त, नियंत्रित एवं प्रशिक्षित करना।

सनक *स्त्री. (देश.)* 1. असामान्य धुन, प्रवृत्ति या आचरण। 2. किसी बात की अत्यधिक लगन। 3. पागलों जैसी धुन, खब्त। **मुहा.** सनक आना= पागलों जैसे काम में जुट जाना।

सनकी *वि. (देश.)* वह जिसमें सनक हो। **दें-** सनक

सनद *स्त्री. (अर्.)* 1. प्रमाण, सबूत; प्राथमिक कथन certificate 2. प्रमाणपत्र 3. उपाधि का प्रमाणपत्र degree **जैसे-** बोर्ड छात्र को लब्धांकपत्र देने के बाद ही सनद (परीक्षा का प्रमाणपत्र) देता है।

सनना *अक. (तद्.)* 1. किसी गाढे द्रव पदार्थ या बारीक कणों से सराबोर हो जाना, ऐसा लगे कि वह पदार्थ शरीर में सर्वत्र चिपक गया है। **जैसे:** रक्त से सनना, धूल से सनना आदि। 2. लिप्त होना, सम्मिलित होना। **जैसे:** इस कृत्य में कई बड़े अधिकारी सने हैं।

सनम *पुं. (अर.)* 1. प्रियतम, प्रिय, पति 2. परमात्मा की कल्पित प्रतिमा।

सनसनाना अनु *अ.क्रि.* 1. सन सन जैसी ध्वनि करते हुए हवा का बहना। 2. 'सन सन' जैसा शब्द करते हुए बहुत तेजी से दौड़ना, भागना।

सनसनी *स्त्री. (फा.)* 1. झुन झुनी, भय हर्षातिरेक आदि के कारण शरीर के संवेदन-सूत्रों का ऐसा स्पदन जिसमें कोई अंग जड़ जैसा होकर सनसन करता-सा जान पड़ता है। 2. किसी आश्चर्यजनक घटना की सूचना मिलने पर समाज में फैलने वाली स्तब्धता, घबराहट, खलबली।

सना *वि. (देश.)* 1. सनना क्रिया का भूतकालिक रूप। 2. एक या एक से अधिक पदार्थों से सराबोर। **जैसे:** धूल से सना 3. गीला किया हुआ। **जैसे:** 1. दूध-पानी से सना आटा। 2. खून से सने वस्त्र।

सनातन *वि. (तत्.)* 1. सदा बना रहने वाला, नित्य, शाश्वत। 2. अनादिकाल से चला आया हुआ। 3. परंपरागत। **जैसे:** सनातन मान्यता, सनातन धर्म। *(पुं.)* परमात्मा।

सन्न *वि. (तत्.)* शा.अर्थ बैठा हुआ, गतिहीन। *सा.अ.-* 1. किसी अवांछित परिणाम या भय से स्तब्ध। 2. आश्चर्यचकित। **मुहा.** सन्न रह जाना=अवाक् हो जाना।

सन्नाटा *अनु. पुं.* 1. ऐसी स्थिति जिसमें किसी प्रकार का शब्द न सुनाई पड़े, पूर्णत: नि:शब्द या शांत वातावरण, नीरवता, घोर चुप्पी। **उदा.** चारों ओर घोर सन्नाटा पसरा हुआ था। 2. निर्जनता, चहल-पहल का अभाव।

सन्मार्ग [सत्+मार्ग] पुं. *(तत्.)* 1. सज्जनों के द्वारा बताया गया अनुकरणीय मार्ग। **उदा.** हमें सन्मार्ग पर चलना चाहिए। **विलो.** कुमार्ग

सपत्नीक *वि. (तत्.)* जो पत्नी के साथ हो। **जैसे:** उसका मित्र उत्सव में सपत्नीक आया था।

सपना *पुं. (तद्.]स्वप्न)* 1. सोते समय मन की अवचेतन स्थिति में देखे जाने वाले दृश्य। **पर्या.** स्वप्न। 2. मन की वे कल्पनाएँ जिनके सच होने की संभावना होती है। **जैसे-** मेरा सपना है कि मैं शिक्षक बनूँ। 3. झूठी आशा। **जैसे-** कई लोग सपने दिखाकर लूट लेते हैं। **मुहा.** सपना हो जाना=दुर्लभ हो जाना। सपन देखना/दिखाना=सुखद भविष्य की कल्पना करना।

सपाट *वि. (तद्.)* जिसकी सतह लगभग समतल हो; जिसमें ऊँचाई-निचाई न हो। **जैसे:** सपाट मैदान। *ला.अर्थ-* जिसमें स्वर के आरोह-अवरोह, भावनाओं के उतार-चढाव, घटनाओं की

विलक्षणता अथवा कीमतों की घट-बढ़ का अभाव हो। **जैसे:** सपाट तान, सपाट कथानक, सपाट विवरण, सपाट दर आदि।

सपूत *पुं. (तद्.<सुपुत्र)* 1. वंश की कीर्ति बढाने वाला पुत्र। 2. उत्तम पुत्र, सुपुत्र, योग्य पुत्र। **जैसे:** सपूत से ही कुल धन्य होता है।

सप्तपदी *स्त्री. (तत्.)* विवाह की एक रीति जिसमें वर-वधू द्वारा अग्नि की परिक्रमा करने बे बाद वर इष्ट वचनों की पूर्ति के लिए वधू को पुन: सात पग चलाता है। जिसके बाद वे दोनों पति-पत्नी हो जाते हैं। भाँवर।

सप्तर्षि *पुं. (तत्.)* 1. भारतीय मान्यतानुसार सात ऋषियों का समूह (गौतम, भरद्वाज, विश्वामित्र, जमदग्नि, वसिष्ठ, कश्यप और अत्रि) 2. उत्तरी आकाश में स्पष्ट दिखाई पड़ने वाला सात तारों का समूह (तारामंडल) जो रात में ध्रुव तारे को केंद्र बनाकर परिक्रमा करता दिखाई देता है। **पर्या.** सप्तर्षिमंडल ursa-major

सफ़रनामा [सफ़र+नामा] *पु. (अ. फा.)* देश-विदेश में पर्यटन करने का विस्तारपूर्वक वर्णन। भ्रमण-कथा, यात्रावृत्तान्त **दे.** सफ़र

सफल वि. *(तत्.)* शा.अर्थ फल (परिणाम) सहित। 1. जिसने कार्य पूर्ण कर लिया हो, कामयाब। 2. जिसके प्रयत्न स्वरूप उद्देश्य की पूर्ति हो गई हो। 3. जिसने परीक्षा उत्तीर्ण कर ली हो। **विलो.** असफल।

सफलता *स्त्री. (तत्.)* सफल होने का भाव, कामयाबी, सिद्धि। **दे.** सफल **विलो.** असफलता।

सफा *पुं. (अर्.सफ़आ)* पुस्तक या किताब का पृष्ठ। **जैसे:** इस शब्द को पाठ्यपुस्तक 'ज्ञान राशि' के **सफा** 22 में देखें। *(वि.)* 1. साफ, स्वच्छ। **जैसे:** सफा कक्ष, सफा चबूतरा। 2. साफ करने वाला। **जैसे:** बालसफा पाउडर। 3. खाली जेबकतरे ने उसकी जेब सफा कर दी। *क्रि.वि.* पूरी तरह से; स्पष्टता से । **जैसे:** रूपए माँगने पर वह सफा मुकर गया।

सफाचट *वि. (अर.<सफा+चट (हि.)* 1. जिसे पूरी तरह साफ कर दिया गया हो। अर्थात् जिस पर लगी हुई या जमी हुई सभी मैल आदि हटा दी गई हों। 2. बिल्कुल साफ/स्वच्छ। **जैसे:** सफाचट कमरा, सफाचट शिर।

सफेदपोश *वि. (फा.)* 1. सफेद वस्त्र पहनने वाला। 2. सभ्य, सज्जन, शिक्षित, कुलीन। **जैसे:** आजकल बहुत से सफेदपोश अपराधी दिखने लग गए हैं।

सबक *पुं. (अर.)* 1. किसी व्यवहार या घटना के अनुभव से मिली सीख या शिक्षा, नसीहत। 2. पाठ, जितना एक दिन में गुरु से पढ़ा जाए।

सबब *पुं. (अर.)* कारण, वजह, हेतु। **विलो.** बेसबब=बिना कारण के, अकारण।

सब्ज *वि. (फा.)* 1. हरा (रंग) 2. कच्चा और ताजा (फल, फूल आदि) 3. सुंदर और लहराता हुआ। **मुहा.** सब्जबाग दिखलाना=अपना काम निकालने के लिए या किसी जाल में फँसाने के लिए झूठी उम्मीद जगाना।

सब्जी *स्त्री. (फा.)* सब्ज़=हरा+ई 1. *मूल अर्थ-धरती* पर या मृदा में पैदा होने वाला कोई भी पादप। **जैसे-** (हरी) घास, हरियाली, वनस्पति आदि 2. वह (हरा) पौधा या उस पर लगा फल जो पका कर भोजन का एक अंग बनता है। vegetable

सब्बल *पुं. (फा.)* लोहे का एक उपकरण जो पथरीली जमीन को खोदने या भारी चीजों को उठाने /हटाने में काम आता है।

सब्र *पुं. (अर.)* 1. धैर्य **जैसे:** सब्र करो तुम्हें भी प्रसाद मिलेगा। 2. संतोष **जैसे:** मुझे तो सूखी रोटी से ही सब्र करना पड़ा।

सब्सिडी *स्त्री. (अं.)* 1. एक आर्थिक सहायता जो किसी उत्पादन को बढावा देने के लिए या किसी अन्य सामाजिक हित की दृष्टि से सरकार द्वारा दी जाती हैं। सरकारी आर्थिक मदद, इमदाद।

सभा *स्त्री. (तत्.)* किसी प्रयोजन विशेष के लिए खुले मैदान में अथवा बंद भवन में नियत समय पर जमा लोगों का समूह। assembly meeting

सभागार [सभा+आगार] *पुं. (तत्.)* वह स्थान या भवन जहाँ पर सभा का कार्यालय हो तथा सभा की बैठकों और सार्वजनिक या रंगमचीय कार्यक्रमों आदि का आयोजन किया जाता है। **पर्या.** सभागृह।

सभागृह *पुं. (तत्.)* वह कमरा जहाँ सभा होनी हो अथवा हुई हो। **दे.** सभा।

सभापति *पुं. (तत्.)* सभा, सम्मेलन, संस्था आदि की अध्यक्षता करके कार्य का नियमन करने वाला प्रमुख व्यक्ति विशेष। **दे.** सभा।

सभाभवन *पुं. (तत्.)* सभा आयोजित करने के लिए निर्मित भवन।

सभामंडप *पुं. (तत्.)* 1. वह स्थान जहाँ किसी प्रयोजन से लोग या समाज एकत्रित होते हैं। 2. देवालयों में वह स्थान जहाँ लोग बैठकर भजन या कथाश्रवण या सांस्कृतिक कार्यक्रम देखते एवं सुनते हैं। 3. जनसभा के लिए बनाया गया मंडप।

सभासद *पुं. (तत्.)* किसी सभा, संस्था आदि का निर्वाचित या नामित सदस्य जो उसकी कार्यवाही में भाग लेने का अधिकारी हो। **पर्या.** सदस्य member

सभी (सब+ही) *वि.* सब के सब, बिना किसी को छोड़े, प्रत्येक।

सभ्य *वि. (तत्.)* शा.अ. सभा के योग्य। *सा.अ.* शिष्टाचारपूर्ण व्यवहार करने वाला, शिष्ट, विनीत। civilized **जैसे:** यह सभ्य लोगों का कार्यक्रम है। **विलो.** असभ्य।

सभ्यता [सभ्य+ता] स्त्री. *(तत्.)* 1. मानव जाति के विकास की वह उन्नत अवस्था जिसमें सामाजिक तौर पर सभी लोगों का परस्पर व्यवहार सद्भावनापूर्ण है और जिनका एक मिली-जुली संस्कृति के निर्माण में पूरा योगदान रहता है। 2. किसी भौगोलिक क्षेत्र विशेष के अथवा ऐतिहासिक कालखंड के लोगों के सामाजिक, सांस्कृतिक जीवन और रहन-सहन के तौर तरीके। (सिविलिजेशन)

सम *वि. (तत्.)* शा.अ. समान, तुल्य, बराबर। **जैसे:** समभाग सा.अ. 1. जो उम्र, रूप, गुण, आकार आदि की दृष्टि से बराबर हो। बराबरी वाला। 2. जिसका तल बराबर एक जैसा हो। **जैसे:** समभूमि 3. (गणित) वह संख्या जो दो से विभाज्य हो। **विलो.** विषम।

समकक्ष *वि. (तत्.)* 1. तुल्य, समान, बराबर 2. बराबरी वाला, जोड़ीदार, स्पर्धा रख सकने वाला। **जैसे:** तुम्हारे समकक्ष वीणावादक कोई नहीं है। **पर्या.** समतुल्य।

समकालीन *वि. (तत्.)* (भाव. समकालीनता) एक समय में रहने वाला या होने वाला। **जैसे:** कवि तुलसीदास और रहीम समकालीन माने जाते हैं। **पर्या.** समकालिक, समसामयिक। समकालीन उत्सव।

समक्ष *अव्य. (तत्.)* आँखों के सामने, सम्मुख; प्रत्यक्ष। **प्रर्या.** आपके समक्ष= के सामने, के सम्मुख

समग्र *वि. (तत्.)* (भाव.संज्ञा समग्रतस) सारा, समस्त, आदि से अंत तक जितना हो, वह सब, कुल मिलाकर। **प्रर्या.** समग्र दृष्टि से विचार करें तो.....।

समग्रता *स्त्री. (तत्.)* संपूर्णता का भाव। **पर्या.** सकलता। **दे.** समग्र।

समझ *स्त्री. (तद्.<संबुद्ध)* 1. अपने ज्ञान और कौशल के अनुप्रयोग की योग्यता। **जैसे:** आपकी बात मेरी समझ से बाहर है। 2. सूरदार के पद का अर्थ मेरी समझ में पूरी तरह से आ गया। 3. बुद्धि, खयाल, जानकारी, बोध।

समझदार [समझ+दार] *वि. (समझ-तद् +दार फा. प्रत्यय)* समझ रखने वाला। **पर्या.** बुद्धिमान, अकलमंद **दे.** समझ।

समझदारी [समझदार+ई] *स्त्री.* समझदार होने की भावना या स्थिति **दे.** समझदार<समझ

समझना *स.क्रि. (तत्.>संबुद् धिशा.अ.)* विचारपूर्वक जानकारी प्राप्त करना। *अन्य अ.* 1. किसी बात को अच्छी तरह विचार करके ध्यान में लाना या किसी बात का मनन करना। **जैसे:** उसने तुम्हारे कथन को ठीक समझा। Understand) 2. किसी समस्या आदि की स्थिति को देखकर उसके संबंध में संपूर्णता से अनुमान या कल्पना करना। **जैसे:** हम तुम्हारी विकट समस्या को सुनकर समझ गए कि इसके कारक कौन थे। deem

समझाना *प्रेर.>समझना (तद्.)* 1. किसी बात को पूरी तरह इस प्रकार स्पष्ट करना जिससे दूसरा व्यक्ति सही ढंग से समझ जाए। 2. किसी को विशेष कार्य करने के लिए या किसी कार्य से रोकने के लिए प्रेरित करना। **दे.** समझना।

समझौता *पुं. (देश.)* लड़ाई, झगड़ा, व्यवहार, लेन-देन आदि के संबंध में विवाद होने पर दो या

अधिक व्यक्तियों/पक्षों/दलों द्वारा मिल बैठकर किया जाने वाला निश्चय/निर्णय/निपटारा, करार। **जैसे:** ज़मीन के विवाद को उन्होनें आपसी समझौते से सुलझा दिया।

समतल [सम+तल] वि. *(तत्.)* शा.अ. तल की समता या समानता। जिसकी सतह या तल सपाट हो/ बराबर हों, अर्थात् ऊबड़-खाबड़ न हों। **पर्या.-** हमवार **उदा.** समतल मैदान।

समतलक *पुं. (तत्.)* कृषि संबंधी एक उपकरण जो खेत या ऊबड़-खाबड़ तथा ऊँची-नीची जमीन को समतल करने के काम आता है। पाटा या पहटा। Leveler **दे.** समतल।

समता [सम+ता] स्त्री. *(तत्.)* सा.अर्थ समान या बराबर होने का भाव। धर्म, मूल वंश, जाति, लिंग, जन्म स्थान आदि के आधार पर नागरिकों के बीच किसी प्रकार का भेदभाव न किए जाने की स्थिति। eqnality

समतापमंडल *पुं. (तत्.)* पृथ्वी के वायुमंडल को उसके घटकों, तापमान इत्यादि के आधार पर पाँच परतों में बाँटा गया है। पृथ्वी की सतह से ऊपर की ओर प्रथम परत क्षोभमंडल तथा दूसरी परत 'समतापमंडल' कहलाती है जो भूमितल से 11 से 24 किमी ऊँचाई तक मापी जाती है। समतापमंडल में तापमान सम रहता है। Stratosphere

समतापरक [समता+परक] *वि. (तत्.)* समभाव, निष्पक्षता, उदारता आदि भावों से युक्त। **जैसे:** समतापरक समाज। **दे.** समता

समतुल्य [सम+तुल्य] पुं. *(तत्.)* (वे दो या एकाधिक वस्तुएँ) जिनमें तुलना करने पर समता/समानता (या विषमता) दृष्टिगोचर हो।

समतुल्यता *स्त्री. (तत्.)* दो वस्तुओं, परिस्थितियों आदि के गुणदोषों की तुलना करने पर उनमें दिखाई पड़ने वाली समानताओं (या विषमताओं) की स्थिति। **जैसे:** समतुल्यता का सिद्धांत।

समन *पुं. (अं.सम्मन)* न्यायालय का वह आदेशपत्र जिसमें किसी को न्यायालय में उपस्थित होने की आज्ञा दी जाती है। **जैसे:** दहेज मांगने के संबंध में उसे समन मिला है।

समन्वय [सम+अन्वय] *पुं. (तत्.)* 1. दो या दो से अधिक वस्तुओं, व्यक्तियों आदि में दिखाई पड़ने वाला या अपेक्षित परस्पर मेल का भाव अर्थात् विरोध या असहमति का अभाव। विभिन्न परिस्थितियों, कार्यों या व्यक्तियों के बीच सामरस्य की स्थापना और ताल-मेल बिठाने की क्रिया। co-ordination

समन्वयक [सम्+अन्वय+क] पुं. *(तत्.)* ताल-मेल बिठाने वाला, एकता या एक रूपता लाने वाला, समन्वय स्थापित करने वाला (व्यक्ति) co-ordinator **दे.** समन्वय।

समन्वयन [सम्+अन्वयन] *पुं. (तत्.)* अर्थ. किन्हीं वस्तुओं या व्यक्तियों में परस्पर इस प्रकार तालमेल बनाना कि वे अधिक अच्छी तरह काम कर सकें। शा.अ. तालमेल होने का भाव या क्रिया। सा.अ. 1. नियमित क्रम। 2. तालमेल adjustmnet 3. एक दूसरे के साथ मिलकर परस्पर पूरक होने का भाव। **उदा.** समुचित शैक्षिक विकास के लिए शिक्षकों एवं छात्रों में समन्वयन होना जरूरी है। co-ordination

समन्वयात्मक [समन्वय+आत्मक] वि. *(तत्.)* समन्वय से युक्त, समन्वय की प्रकृति से संबंधित **दे.** समन्वय।

समन्वित *वि. (तत्.)* शा.अर्थ जिसका समन्वय (तालमेल) किया गया हो। सा.अर्थ. 1. स्वाभाविक रूप में क्रमबद्ध। 2. तालमेल या सामंजस्य से युक्त। 3. संयुक्त/किसी के साथ मिला या लगा हुआ। co-ordinate **दे.** समन्वयन।

समय *पुं. (तत्.)* 1. किसी अस्तित्ववान प्राणी, पदार्थ, सत्व आदि की भूत से वर्तमान में, वर्तमान से भविष्य में चल रही अनंत यात्रा का समग्र रूप। **पर्या.** काल 2. अनंत काल का कोई क्षण या नियत खंड विशेष । **जैसे:** इसी समय, आधुनिक समय में आदि। 3. घंटों, मिनटों आदि में व्यस्त दिन-रात सूचक आल का कोई क्षण विशेष। **जैसे:** 1. क्या समय हुआ है? उत्तर- सात बजकर बीस मिनट। 2. तारे कब दिखाई पड़ते हैं/दिखाई नहीं पड़ते हैं? उत्तर- रात के समय (रात में)/ दिन के समय (दिन में) 4. निश्चित कालावधि। **उदा.** मुझे दो दिन का समय दीजिए। **प्रयो.** 1. उसका समय आ गया है।

(मृत्यु का समय) 2. समय का फेर=अच्छे समय का बुरे में बदलना और बुरे समय का अच्छे में बदलना (निरंतर परिवर्तनशील समय) 3. समय काटना=किसी तरह बिना कुछ सार्थक किए समय बिताना। 4. समय का पक्का= वक्त का पाबंद, नियत समय पर काम करने वाला। 5. (उचित) समय पर। 6. समय से पहले। 7. समय के बाद 8. समय-कुसमय=अच्छा समय और बुरा समय।

समय आना *अ.क्रि. (तत्.+तद्.)* 1. मौत आना। **जैसे:** जब किसी का समय आ जाता है तब उसे कोई दवा, वैद्य आदि कोई नहीं मौत से बचा सकते। 2. उचित अवसर मिलना। **उदा.** समय आने पर हम बता देंगे कि हम क्या हैं।

समय पालन *पुं. (तत्.)* समय का पालन। नियत समय पर आना-जाना और काम करना। panctuality

समयबद्ध [समय+बद्ध] *वि. (तत्.)* नियत समय में पूरा किया जाने वाला, निश्चित काल में पूरा होने वाला।

समयसाध्य *वि.* (समय साध्य)(तत्.) जिस समस्या को सुलझाने में या जिस कार्य को पूरा करने में अधिक समय लगने वाला हो। **जैसे:** यह कार्य समयसाध्य है, एक दो दिन में पूरा नहीं हो पाएगा।

समय-सारणी [समय+सारणी] स्त्री. *(तत्.)* रेलों, बसों आदि के आने-जाने का समय बताने वाली तथा कुछ अन्य सूचनाएँ (**जैसे:** किराया, दूरी आदि) भी देने वाली पुस्तिका। time-table

समयानुकूल [समय+अनुकूल] *वि. (तत्.)* उचित समय पर।

समयाभाव [समय+अभाव] *पुं. (तत्.)* नित्य के कार्यों या आवश्यक कार्यों की व्यस्तता की वजह से अन्य कार्यों के करने का समय न होना या न बचना।

समयोचित [समय+उचित] *वि.* (तत्.) 1. जो परिस्थिति के अनुसार लाभप्रद या उचित हो। 2. वर्तमान परिस्थिति में उपयोगी। **जैसे:** समयोचित निर्णय। **पर्या.** समयानुकूल।

समर *पुं. (तत्.)* 1. संग्राम, लड़ाई। **जैसे:** समर तो वीरों का ही काम है। 2. किसी प्रकार का युद्ध। 2. शास्त्र-समर में पराजित विद्वान ने विजेता का शिष्यत्व स्वीकार कर लिया।

समरसता [सम+रसता] *स्त्री. (तत्.)* 1. सदा एक-सा रहना। 2. एकाधिक व्यक्तियों में विचारों की समानता का होना।

समरूप *वि. (तत्.)* जो रूप की दृष्टि से एक दूसरे के समान हो। एकरूप, एक सदृश। **जैसे:** जुड़वाँ बच्चे प्राय: समरूप होते हैं।

समरूपता *स्त्री.* [समरूप+ता] *(तत्.)* समरूप होने का भाव। **दे.** समरूप।

समर्थ *वि. (तत्.)* 1. शक्ति या सामर्थ्य रखने वाला। समरथ (समर्थ) को नहिं दोस गुसाँई 2. किसी कार्य को पूरा कर सकने की पर्याप्त योग्यता रखने वाला। **पर्या.** योग्य, लायक, काबिल able 3. कानूनी अधिकार प्राप्त संगठन। **जैसे:** समर्थ न्यायालय।

समर्थक *वि. (तत्.)* 1. समर्थन करने वाला **जैसे:** इस चुनाव में तुम्हारे समर्थकों ने बहुत परिश्रम किया। 2. किसी प्रत्याशी के नाम का अनुमोदन करने वाला, अनुमोदक।

समर्थन *पुं. (तत्.)* अनुमोदन, किसी के प्रस्तुत प्रस्ताव, विचार आदि पर अन्य व्यक्ति द्वारा प्रकट की गई अपनी भी सहमति।

समर्थन-मूल्य *पुं.* किसानों के हितों की रक्षा के लिए महत्वपूर्ण फसल (**जैसे:** गेहूँ, मक्का, गन्ना आदि) के अवसर पर सरकार द्वारा घोषित न्यूनतम भाव। **टि.** यदि मंडी में उसका भाव नीचे चला जाए तो सरकार घोषित मूल्य पर उस फसल को खरीद लेती है। support price

समर्पण *पुं. (तत्.)* 1. किसी को आदर के साथ कुछ देना, भेंट करना, अर्पित करना। dedication 2. युद्ध हार जाने पर विजेता पक्ष के सामने हथियार डाल देना। surrender **तु.** आत्म समर्पण

समर्पित *वि. (तत्.)* जिसका समर्पण हुआ या किया गया हो। **दे.** समर्पण।

समवयस्क *वि. (तत्.)* समान आयुवाला, जो आपस में बराबर की उम्र के हों। हम उम्र। **जैसे:** तुम मेरे समवयस्क हो, पर दिखने में कितने बड़े लगते हो!

समवितरित *वि. (तत्.)* शा.अर्थ जो समान रूप से वितरित (बाँटी) की गई हो। (भू.) पारि.अर्थ वर्ष भर समान रूप से होने वाली ऊँची वर्षा। **उदा.** चाय की पत्तियों की वृद्धि के लिए वर्षभर समवितरित उच्च वर्षा की आवश्यकता होती है।

समष्टि *स्त्री. (तत्.)* जितनी इकाइयाँ हों, उन सबका सामूहिक नाम; एक जैसों का समूह या समुच्चय। **विलो.** व्यष्टि।

समसामयिक *वि. (तत्.)* समकालीन।

समस्त *वि. (तत्.)* 1. संपूर्ण, सब। **जैसे:** इस विद्यालय के समस्त छात्र उत्तीर्ण हो गए। 2. जुड़ा हुआ। 3. *(व्या.)* समासयुक्त (शब्द)। **जैसे:** हिमालय।

समस्या *स्त्री. (तत्.)* कठिनाई पैदा करने वाली बात जो आसानी से समझ में आए; जो आसानी से न सुलझे। **पर्या.** उलझन। problem

समाकलित [सम्+आकलित] *वि.(तत्.)* सा.अर्थ (जैसे ज़मीन खोदना, सफाई करना, बीज के लिए छिद्र करना, उस में बीज डालना आदि) वह (यंत्र इत्यादि) जो विभिन्न अंग-उपांगों के प्रकार्यों को समेकित रूप में करे। multi functional machine समा.अर्थ 1. एकीकृत 2. एकीभूत 3. अंगांगी के रूप में समन्वित। **टि.** गणित में समाकलन की विधि भिन्न है।

समाकलित करना *स.क्रि. (तद्.)* एक ही प्रकार के उत्पादन या निर्माण से संबंधित कई प्रकार के कार्यों को एक साथ एक ही स्थान पर निष्पादित करना।

समाचार *पुं. (तत्.)* 1. वर्तमान में हुई किसी घटना की खबर, सूचना। तत्काल प्राप्त कोई नया या ताजा वृत्त या हाल। 2. वृत्तान्त, हालचाल। **जैसे:** तुम्हारी पदोन्नति का समाचार सुनकर मन प्रसन्न हो गया।

समाचार चैनल *पुं. (समाचार-सं+चैनेल-अं.)* वह टी.वी. चैनल जो केवल समाचारों का ही प्रसारण करे। news channel

समाचार-पत्र *पुं. (तत्.)* विविध प्रकार के समाचारों से युक्त नियमित रूप से प्रकाशित होने वाला वृत्त-पत्र; 'अखबार' **जैसे:** 'हिंदुस्तान' (दैनिक), 'हिंदुस्तान टाइम्स', 'जनसत्ता' आदि।

समाज *पुं. (तत्.)* 1. किसी क्षेत्र या भूखंड में मिलजुल कर रहने वाले मनुष्यों का समुदाय जिनकी समान संस्कृति होने से वे अपनी विशिष्ट पहचान रखते हैं। **जैसे:** अग्रवाल समाज 2. धर्म के आधार पर बने समुदाय; **जैसे:** मुस्लिम समाज 3. एक ही प्रकार का काम करने वाले लोगों का वर्ग, समूह। **जैसे:** कृषक समाज, माली समाज, वाल्मीकि समाज 4. किसी विशिष्ट उद्देश्य से स्थापित की हुई सभा/समिति। **जैसे:** संतसमाज, स्त्री समाज

समाज विज्ञान (समाज+विज्ञान) *पुं. (तत्.)* ज्ञान की वह शाखा जिसमें समाज का व्यस्थित और वैज्ञानिक रीति से अध्ययन किया जाता है। **तु.** सामाजिक विज्ञान

समाजवाद *पुं. (तत्.)* राजनीति का वह सिद्धांत जो भूमि और उत्पादन के संसाधनों पर सामाजिक अधिकार पर बल देता है तथा आर्थिक समानता का पोषक है। socialism

समाजवादी *वि.* 1. समाजवाद से संबंधित। 2. समाजवाद के सिद्धांतो को मानने वाला। socialist

समाज विरोधी (समाज-विरोधी) *वि. (तत्.)* 1. समाज में परस्पर समुदायों के मध्य झगड़ा कराने वाले सामाजिक संपत्ति को तहस-नहस करने वाले तथा समाज में कटुता एवं घृणा फैलाने वाले (लोग)। **जैसे:** हमें समाजविरोधी तत्वों से हमेशा सावधान रहना चाहिए। 2. सामाजिक मान्यताओं के प्रतिकूल (बातें)।

समाज शास्त्र *पुं. (तत्.)* वह शास्त्र जो मनुष्यों के समाज और संस्कृति की उत्पत्ति, विकास, उनके परस्पर संबंधों तथा सामाजिक संस्थाओं आदि का विवेचन करता है। sociology

समाजशास्त्री *वि.* समाजशास्त्र का विद्वान।

समाजसेवा [समाज+सेवा] *स्त्री. (तत्.)* 1. समाज के सहृदय एवं उदार लोगों के द्वारा समाज के अन्य अपेक्षित व्यक्तियों को अपेक्षित सहायता पहुँचाने की दृष्टि से की जाने वाली सेवा, मदद। 2. समाज के लोगों की सेवा। **जैसे:** समाजसेवा से कोई व्यक्ति या समुदाय समाज का कृतज्ञ होता है।

समाजीकरण *पुं. (तत्.)* 1. समाज के सभी वर्गों के लोगों को सामाजिक दृष्टि से उपयुक्त बनाना 2. सभी को समाज में मिल-जुल कर रहने के उपयुक्त बनाना।

समाज्ञी *स्त्री. (तत्.)* 1. सर्वोपरि शासिका, साम्राज्य की रानी। 2. सम्राट की पत्नी। empress

समाधान [सम्+आधान] पुं. *(तत्.)* प्राचीन अर्थ- साथ-साथ रखना, मिलाना। आधुनिक अर्थ 1. किसी समस्या के प्रसंग में उठे प्रश्नों का समुचित हल निकालने की प्रक्रिया और तत्संबंधी बताया गया तरीका और सुझाए गए उपाय। solution 2. किसी शंका या संदेह और उठाई गई आपत्ति के निवारण अथवा निराकरण के लिए प्रस्तुत स्पष्टीकरण और आपत्तिकर्ता को उससे मिलने वाली संतुष्टि। removal of a daubty objection

समाधि *स्त्री. (तत्.)* 1. ध्यान की वह अंतिम अवस्था जब व्यक्ति संसार के प्रपंचों से दूर आत्मतत्त्व में लीन हो जाता है। 2. योग के आठ अंगों में अंतिम। (यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान, धारणा और समाधि) 3. किसी विषय पर विचार करते हुए चित्त की पूर्ण एकाग्रता की स्थिति। 4. वह स्थान जहाँ किसी संन्यासी या महापुरूष आदि के शव को ज़मीन में गड्ढा खोदकर आसनबद्ध स्थिति में मिट्टी में दबा कर रखा जाता है अथवा उनकी अस्थियों को मिट्टी में दबाया जाता है तथा उनके ऊपर स्मारक बना होता है। **जैसे:** गाँधी जी की समाधि राजघाट में है।

समाधिस्थ *वि. (तत्.)* जो समाधि के स्थित है या जो समाधि लगाए हुए हो। **जैसे:** यह संत अभी समाधिस्थ हैं, अभी दर्शन नहीं होंगे। **दे.** समाधि

समान *वि. (तत्.)* 1. जो आकार, गुण, मूल्य, शक्ति आदि में बराबर हो। **पर्या.** सम, बराबर। **जैसे:** ये दोनों गेंदें समान आकार की हैं। 2. किसी की तुलना रखने वाला। **पर्या.** तुल्य, सदृश **जैसे:** गंगाजी अमृत के समान है। 3. पंच प्राणों में एक वायु। इसका कार्य भोजन पचाना है। (अन्य हैं-प्राण, अपान, व्यान, उदान)

समानता [समान+ता] *स्त्री. (तत्.)* शा.अर्थ समान होने का भाव, बराबरी। विशेष अर्थ- 1. वह सामाजिक आदर्श जिसके अनुसार बिना किसी भेदभाव के सभी नागरिकों के विकास के समान अवसर और सुविधाएँ उपलब्ध कराने की व्यवस्था हो। equality 2. आकार, गुण, मूल्य, महत्व आदि के विचार से दिखाई पड़ने वाली एक रूपता। similarity

समानांतर [समान+अंतर] *वि. (तत्.)* 1. जो समान अंतर पर हो। 2. समान अंतर पर होने वाली कोई क्रिया या कार्य या स्थिति। 3. (गणि.) जो (रेखाएँ) सदा परस्पर समान दूरी पर रहें और बढ़ाए जाने पर भी कभी न मिलें। **जैसे:** वर्ग या आयत में समाने की भुजाएँ समानांतर होती हैं। **पुं** समान अंतर। यहाँ से दोनों ग्राम समानांतर पर स्थित हैं।

समाना *अ.क्रि. (तद्.)* रिक्त स्थान में भरना; किसी के अंदर समाविष्ट हो जाना, लीन हो जाना। **मुहा.** आँखों में/दिल में समाना=अच्छा लगने लगना; प्यार करने लगना।

समानार्थी [समान+अर्थ+ई] *वि. (तत्.)* **दे.** पर्यायवाची।

समापन *पुं. (तत्.)* 1. समाप्त करने की क्रिया या भाव। 2. पूरा होने का भाव। **जैसे:** आज नाट्य प्रतियोगिता का समापन समारोह है। **विलो.** उद्घाटन, प्रारंभ।

समाप्त *वि. (तत्.)* 1. जिसे पूरा कर दिया गया हो, जो पूरा हो चुका हो। मैंने खाना समाप्त कर दिया; **जैसे:** कार्य समाप्त हो गया। **पर्या.** खतम। 2. मृत्यु को प्राप्त। **उदा.** 30 जनवरी 1948 को गाँधी जी की जीवन लीला समाप्त हो गई।

समाप्ति *स्त्री. (तत्.)* 1. किसी चल रहे कार्य का पूरा होना। **जैसे:** खेल/बैठक की समाप्ति। 2. कार्य पूरा होने के लिए बताई गई अवधि की समाप्ति। expiry 3. किसी प्रजाति की समाप्ति। extinction

समायोजन [सम्+आयोजन] *पुं. (तत्.)* 1. ठीक ढंग से मिलाते हुए किसी वस्तु को कहीं रखना। समन्वय co-ordination 2. सामंजस्य, ताल-मेल adjustment **जैसे:** हमने इस धनराशि का 'वनोत्सव' कार्यक्रम में समायोजन कर लिया है।

समारोह *पुं. (तत्.)* व्यु.अ. घोड़े इत्यादि पर शान से चढ़ना। *सा.अ.* 1. बहुत धूमधाम से होने वाला उत्सव या कोई बड़ा कार्यक्रम। 2. वह भारी शुभ आयोजन, जिसमें धूमधाम हो। **जैसे:** आज विद्यालय में 'गणतंत्र दिवस समारोह' देखने योग्य था।

समावर्तन *पुं. (तत्.)* शा.अ. वापस लौटना, प्रत्यावर्तन *सा.अ.* 1. अपना विद्याध्ययन/शिक्षा पूर्ण कर लेने के बाद ब्रह्मचारी का गुरूकुल से गृहस्थाश्रम में प्रवेश हेतु घर लौटने के समय किया जाने वाला एक संस्कार। **टि.** हिंदू संस्कृति के अनुसार सोलह संस्कारों में से एक 2. आजकल विश्वविद्यालयों में स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण करने पर होने वाला दीक्षांत भाषण।

समावेश [सम्+आवेश] पुं. *(तत्.)* एक वस्तु का दूसरी वस्तु में इस तरह घुल मिल जाना कि उनमें भेद न दिखाई पडे। incorporation

समावेशित [समावेश+इत] *वि. (तत्.)* 1. जिस पदार्थ या तत्व का दूसरे पदार्थ या तत्व में समावेश या अन्तर्भाव हुआ हो। 'समाविष्ट' सम्मिलित, अंतर्निहित **जैसे:** उपहार की राशि को स्वागत/आतिथ्य की राशि में समावेशित किया गया है।

समास *पुं. (तत्.)* शा.अ. एकत्रीकरण, योग, संक्षेप। *सा.अ. (व्या.)* दो या अधिक शब्दों को, जो परस्पर संबंधित हों, मिलाकर एक शब्द बनाने की प्रक्रिया। इसके छह भेद होते हैं- अव्यभीभाव, तत्पुरूष, कर्मधारय, द्विगु, द्वंद्व और बहुव्रीहि। **विलो.** विग्रह।

समिति *स्त्री. (तत्.)* 1. किसी विशेष कार्य के लिए नियुक्त, नामित व्यक्तियों का समूह जिसका कार्यकाल प्राय: सीमित होता है। **जैसे:** जाँच समिति। कमिटि। 2. सहकार के आधार पर मिलकर काम करने वाले लोगों का समूह। **जैसे:** सहकारी समिति। society

समीक्षक *वि. (तत्.)* किसी कृति की समीक्षा करने वाला (विद् वान) reviewer **दे.** समीक्षा। critic

समीक्षा *स्त्री. (तत्.)* किसी कृति के गुण-दोषों का विद्वान व्यक्ति द्वारा किया गया (संक्षिप्त) विवेचन और उस पर दी गई अपनी। **टि.** review

समीप *क्रिया. वि. (तत्.)* निकट, पास, नजदीक **विलो.** दूर।

समीपवर्ती *वि. (तत्.)* 1. समीप रहने वाला, समीप का, पास वाला, निकटस्थ, नज़दीकी **जैसे:** यह गाँव के समीपवर्ती विद्यालय में पढ़ता है।

समुदाय *पुं. (तत्.)* सा.अर्थ बहुत से लोगों का समूह। **जैसे:** जनसमुदाय, झुंड, दल; ऐसे लोगों का समूह जो किसी प्रकार्यात्मक संबंध से परस्पर जुडे हों और इस तरह अपने को एक इकाई मानते हों। community

समुद्र *पुं. (तत्.)* खारे पानी की वह विशाल राशि जो पृथ्वी के स्थल भाग के चारों ओर फैली हुई है। **पर्या.** सागर, उदधि इत्यादि। ला.अर्थ किसी विषय, ज्ञान, गुण आदि का भंडार जिसके पास हो, वह **जैसे:** वे तो विद्या के सागर हैं।

समुद्र पोत *पुं. (तत्.)* माल ढोने एवं यात्रियों को लाने-ले जाने के काम आने वाला जलयान। **पर्या.** जहाज़।

समुद्रभृगु *पुं. (तत्.)* (पारि.श.भू.) शा.अ. समुद्री जल के ऊपर लगभग उर्ध्वाधर उठे हुए ऊँचे शैलीय तटों को समुद्रभृगु कहते हैं। सा.अर्थ समुद्र के किनारे पर ऊपर उठे ऊँचे शैलीय भाग। cliff

समुन्नत *वि. (तत्.)* 1. विशेष रूप से उन्नत। बहुत उन्नति प्राप्त। **जैसे:** अमेरिका समुन्नत देश है। 2. बहुत ऊँचा **जैसे:** हिमालय समुन्नत पर्वत है। 3. श्रेष्ठ

समुन्नति *स्त्री.(तत्.)* 1. विशेष उन्नति 2. बहुत ऊँचाई 3. श्रेष्ठता

समूचा *वि. (तद्.समुच्चय)* 1. जिसके खंड या टुकड़े न किए गए हों। 2. संपूर्ण, पूरा **जैसे:** देश के समूचे विकास के लिए हम प्रयत्न करें।

समूह *पुं. (तत्.)* अनेक वस्तुओं या व्यक्तियों की एकत्रित राशि या व्यवस्थित समुदाय। **तु.** झुंड।

समूहगान [समूह+गान] *पुं. (तत्.)* समूह के रूप में अर्थात् सब लोगों के द्वारा मिलकर गाया जाने वाला गान। **जैसे:** सभी छात्रों या जनों द्वारा गाई गई सरस्वती वंदना आदि।

समृद्ध *वि. (तत्.)* (जिस वस्तु का उल्लेख किया जाए उसकी) मात्रा के अधिक्य से युक्त। **जैसे:** समृद् साहित्य, समृद्ध परंपरा आदि। **पर्या.** धनवान, मालदार, भरापूरा, संपन्न।

समृद्धि *स्त्री. (तत्.)* जिस वस्तु का उल्लेख किया जाए उसकी मात्रा की आवश्यकता से अधिकता की स्थिति। **पर्या.** भरापूरा। **जैसे:** धन-दौलत संबंधी समृद्धि

समृद्धिशाली *वि. (तत्.)* **दे.** समृद्ध 1 और 2

समेकित [सम+एकत्रित] वि. *(तत्.)* इकट्ठा करके एक में ही मिलाया हुआ। संयुक्त, संहत

समेटना *स.क्रि. (तद्.)* 1. फैली हुई वस्तु को तह लगाकर उसका दिखाई पड़ने वाला आकार कम करना। **जैसे:** साड़ी या धोती को समेटना। 2. बिखरी हुई इकाइयों को इकट्ठा कर एक साथ करना। **जैसे:** कपड़े, कागज-पत्र या पुस्तकें समेटना; पंख समेटना।

समेत *क्रि.वि. (तद्.)* के साथ, सहित **उदा.** वे बाल-बच्चों समेत यात्रा पर निकले।

सम्मत [सम+मत] *वि. (तत्.)* कोई काम जो आदर्श व्यवस्था के अनुसार हो या उससे मेल खाता हो। **टि.** यह विशेषण समस्त पदों में उत्तर पद बनकर जुड़ता है। **उदा.** धर्मसम्मत, शास्त्र सम्मत, तर्क सम्मत (विचार)।

सम्मति [सम्+मति] स्त्री. *(तत्.)* किसी विषय के बारे में अन्य व्यक्ति से माँगे गए विचार। **पर्या.** सलाह, राय। **तु.** सहमति।

सम्मान *[सम्+मान] पुं. (तत्.)* उम्र, गुण, उपलब्धि आदि के प्रति आदर प्रदर्शित करने के लिए व्यक्ति को दिया जाने वाला मौखिक या लिखित में मान। पद्म श्री, पद्मभूषण, पद्‌म विभूषण और भारतरत्न सम्मान; सैनिक सम्मान।

सम्मानकर्ता *[सम्मान+कर्ता] पुं. (तत्.)* सम्मान करने वाला।

सम्माननीय *वि. (तत्.)* सम्मान के योग्य, आदरणीय। **दे.** सम्मान।

सम्मानित *[सम्मान+इत] वि. (तत्.)* 1. जिसका सम्मान किया गया हो। **उदा.** लतामंगेशकर को 'भारत-रत्न' से सम्मानित किया गया। 2. जिसका सभी सम्मान करते हों। **उदा.** सदन के सम्मानित सदस्य। **दे.** सम्मान।

सम्मिलन *पुं. (तत्.)* 1. दो या अनेक वस्तुओं, व्यक्तियों आदि का मिलना। 2. बहुत अच्छी तरह मेल, मिलाप। 3. एकत्रीकरण सम्मेलन। **जैसे:** चित्रकूट में राम-भरत का सम्मिलन अद्‌भुत था।

सम्मिलित *वि. (तत्.)* 1. मिला हुआ या मिलाया हुआ, समाविष्ट, मिश्रित। **जैसे:** आर्थिक सहायता राशि के लिए सामान्य श्रेणी के गरीब बच्चों को भी सम्मिलित किया गया है। 2. एक साथ मिलकर किया हुआ। सामूहिक। **जैसे:** यह उद्यानों छात्रों के सम्मिलित प्रयास का ही परिणाम है।

सम्मिश्रण *[सम्+मिश्रण] पुं. (तत्.)* व्यु.अ कई द्रव्यों को घोंटकर एक साथ इस प्रकार मिलाने की प्रक्रिया या भाव जिन्हें बाद में अलग न किया जा सकें। सा.अर्थ **1.** मिलावट/मेल। 2. औषधियों या अन्य को एक में मिला कर अंतिम उत्पाद तैयार करना। **जैसे:** रोगन बनाने के लिए वार्निश और रंग का सम्मिश्रण composition 3. एक विशिष्ट स्तर प्रदान करने के लिए कई चीजों का मिलाया जाना। चाय की पत्ती इसी प्रकार बनती है।

सम्मुख *क्रि.वि. (तत्.)* सामने, समक्ष। **जैसे:** प्राचार्य के सम्मुख आकर वह विनम्रता से बोला। **विलो.** विमुख।

सम्मेलन *पुं. (तत्.) [सम्+मेलन]* 1. किसी विशेष उद्‌देश्य से मनुष्यों का एकत्र होना या किया जाना। 2. जमावड़ा, मिलाप, संगम। **जैसे:** आज विज्ञान भवन में वैज्ञानिकों का एक सम्मेलन हुआ। confrence

सम्मोहन *पुं. (तत्.)* शा.आ. मोहित करने की क्रिया का भाव। सा.आ. **1.** सम्मोहन वह प्रयोग है जिससे सम्मोहित व्यक्ति, सम्मोहन करने वाले के अनुसार ही होती है। 2. वशीकरण। 3. प्राचीन काल का एक अस्त्र जिसके प्रयोग से शत्रु सेना सम्मोहित हो जाती थी। (हिप्नोटिज्म)

सम्मोहित *[सम्+मोहित] वि. (तत्.)* व्यु.अर्थ किसी विशेष आकर्षण के कारण जिसका मन मोह लिया गया हो। सा.अर्थ 1. मुग्ध, वश में किया हुआ। 2. 'सम्मोहन विधि से वश में किया हुआ। 3. बेहोश किया हुआ। **उदा.** समुद्री तट पर ठंडी पवन, समुद्री पक्षी एवं लहरों का संगीत, सब कुछ सम्मोहित करने वाला प्रतीत होता है।

सम्यक् *वि. (तत्.)* संपूर्ण, विस्तृत। **जैसे: 1.** सम्यक् ज्ञान theory-comprehensive, all-round 2. उचित, उपयुक्त। सम्यक् दृष्टिकोण (proper) *क्रि. वि.* (सम्यक् रूपेण) पूर्णतया अच्छी तरह से, ठीक प्रकार से; यथोचित्त ढंग से। properly

सम्राट/सम्राट् *पुं. (तत्.)* 1. सर्वोपरि प्रभु, सर्वोच्च शासक। बहुत बड़ा राजा जिसके अधीन अनेक राजा हों या जिसके राज्य का क्षेत्र-विस्तार दूर-दूर तक फैला है। **पर्या.** महाराजाधिराज, शहंशाह। emperor

सम्हलना/सँभलना *अक्रि. (तद्.<संभरण)* 1. किसी भी कठिन स्थिति, रोग, चोट या व्यवस्था की कमी से बचकर निकलना। 2. किसी सहारे से स्वयं को बचाए रखना। 3. सावधान होना या रहना। **जैसे:** पुत्र यदि तुम अब भी नहीं सम्हले तो तुम बर्बाद हो जाओगे।

सम्हालना/संभालना *प्रेर.<सम्हलना/सँभलना (तद्.)* किसी को सम्हलने के लिए प्रेरणा देना। **दे.** सम्हलना।

सयाना *वि. (तद्.<सज्ञान)* 1. जो अब बालक न होकर आयु से बड़ा हो गया हो अर्थात् समझदार। 2. व्यस्क। 3. बुद्धिमान, चतुर। 4. चालाक धूर्त। **जैसे:** वह बहुत सयाना है, उसे तुम मूर्ख नहीं बना सकते।

सयानापन *[सयाना+पन] पुं. (तद्.)* 'सयाना' होने का भाव। **दे.** सयाना।

सर *पुं. (तत्.)* 1. जल 2. तालाब **जैसे:** पम्पासर। **पर्या.** तडाग, सरोवर। 3. शिर।

सरकंडा *पुं. (तद्.)* सरपत-जाति का एक पौधा जिसमें थोड़ी-थोड़ी दूरी पर गाँठें होती हैं। **टि.** सरपत एक विशेष प्रकार की घास होती हैं। पहले सरकंडे की कलम बनाकर लकड़ी की पट्टी-तख्ती पर लिखते थे।

सरकना *अ.क्रि. (तद्.<सृ-सर)* जमीन से चिपकते हुए धीरे-धीरे आगे-पीछे या दाहिने-बाएँ बढ़ना। **पर्या.** रेंगना, खिसकना।

सरकस *पुं. (अं.)* कलाबाजों और पशु-पक्षियों आदि का अचरज भरा मनोरंजक कौशल या प्रदर्शन। **टि.** सरकस शब्द सर्कल से सम्बन्धित है। ऐसा खेल जो कलाकारों द्वारा एक सर्कल (गोलाई) के अंदर खेला जाता था।

सरकाना *स.क्रि. (तद्.)* 1. अपनी जगह पर बैठे हुए को थोड़ा आगे बढ़ाना, जिससे दूसरे को बैठाने का स्थान मिल सके। 2. किसी वस्तु को मूल स्थान से थोड़ा-थोड़ा और धीरे-धीरे हटाना। **पर्या.** खिसकाना। **उदा.** पहले मेज को सरकाओ फिर वहाँ कुर्सी रखो। 3. (समय) बिताना। **जैसे:** जैसे-तैसे समय को सरका रहा हूँ।

सरकार *स्त्री. (फा.)* सा.अर्थ **1.** शासक, हुकूमत, शासन government 2. शासन-प्रबंध; रियासत; राजसभा। 3. बड़े व्यक्तियों के लिए छोटों द्वारा संबोधन का शब्द।

सरगना *पुं. (फा. सर्गन:)* बुरे कर्म करने वालों का प्रमुख, सरदार, मुखिया। **जैसे:** डाकुओं का **सरगना** माघो सिंह पकड़ा गया।

सरगम *पुं. (देश.)* 1. संगीत में सातों स्वरों का समूह या उनके उतार-चढ़ाव का क्रम। 2. किसी गीत में लगने वाले स्वरों का उच्चारण। 3. स्वरों का लिपिबद्ध रूप। **टि.** भारतीय शास्त्रीय संगीत के सात स्वरों षड़ज, ऋषभ, गांधार, मध्यम, पंचम, धैवत, निषाद इनके संक्षिप्त नामों स, रे, ग, म, प, ध, नि के प्रथम चार वर्णों से यह शब्द बना है।

सरगर्मी *स्त्री. (फा.)* 1. उत्साह 2. आवेश, जोश 3. तत्परता, लगन। **जैसे:** पुलिस सरगर्मी से आतंकवादी की तलाश कर रही है।

सरताज *पुं. (फ़ा.+अर.)* 1. मुकुट 2. शिरोमणि 3. श्रेष्ठ (व्यक्ति), प्रमुख, मुख्य **जैसे:** आप तो गज़ल गायकों के सरताज हैं।

सरदार *पुं. (फ़ा.)* 1. नायक, स्वामी, अगुआ, नेता। chief, leader 2. सिक्खों के नाम के पहले लगने वाली एक आदर-सूचक उपाधि। स्त्री. सरदारनी

सरपंच *[सर+पंच.] पुं.* (फ़ा.+तत्.) पंचों का अध्यक्ष, प्रमुख पंच, पंचायत का मुखिया। **जैसे:** ग्रामसभा का मुखिया सरपंच होता है।

सरपट *वि. (तद्.<सर्पण)* घोड़े की तेज (चाल) जिसमें घोड़ा अगले पैरों को एक साथ फेंकता हुआ दौड़ता है। *क्रि.वि.* घोड़े की उक्त चाल की तरह तेज या दौड़ते हुए। **उदा.** वह प्रतियोगिता में **सरपट** दौड़ा।

सरफ़रोश *वि. (फ़ा.)* शा.अर्थ सर/सिर बेचने वाला प्रचलित ला.अर्थ जान की बाज़ी लगा देने वाला, आत्मबलिदान के लिए तैयार।

सरफ़रोशी *स्त्री. (फ़ा.)* शा.अर्थ सर/सिर की बिक्री **प्रच.** ला.अर्थ जान की बाज़ी लगाना, जान देने को तैयार होना, आत्मबलिदान।

सरल *वि. (तत्.)* 1. आकार में जो टेढ़ा न हो। सीधा। **जैसे:** सरल रेखा। **विलो.** वक्र। 2. जो सीधे स्वभाव का हो, भोला-भाला, निष्कपट। **जैसे:**वह बहुत सरल व्यक्ति है। 3. ईमानदार, सच्चा, नेक। 4. जिसे करना कठिन न हो। **जैसे:** यह प्रश्न सरल है। **विलो.** कठिन। 5. जिसमें जटिलता न हो, सुबोधगम्य। **जैसे:** सरल कविता।

सरलता *स्त्री.* निष्कपटता, निश्छलता, सीधापन। **दे.** सरल।

सरवर *पुं. (तद्.<सरोवर)* तालाब, बड़ा, ताल, झील **दे.** सरोवर।

सरस *[स+रस] वि. (तत्.)* 1. रस से भरा हुआ, रसीला। **जैसे:** सरस आम 2. मधुर भावनाओं से युक्त। **जैसे:** सरस कविता

सरसर *स्त्री. (अनु.)* 1. हवा के चलने से उत्पन्न होने वाला शब्द या साँप आदि के रेंगने का शब्द 2. तेज हवा या आँधी। *क्रि.वि.* 'सरसर' की विशेष ध्वनि के साथ।

सरसराहट [सरसर+आहट] *स्त्री. (अनु.)* 1. हवा या साँप आदि के चलने का शब्द। 2. 'सरसर' की आवाज।

सरसरी *वि. (फ़ा.)* 1. बिना अच्छी तरह विचारा हुआ, लापरवाह, चलताउ 2. मोटे तौर पर होने वाला, जल्दीबाजी में किया हुआ। **जैसे:** यह समाचार सरसरी निगाह से पढ़ा है।

सरसिज *पुं. (तत्.) व्यु.अ.* तालाब में उत्पन्न *सा.अ.* कमल, पद्‌म **पर्या.** नीरज, अम्बुज, सरोरुह।

सरसों *स्त्री. [तत्.>सर्षप]* एक तिलहन जिसके बीज पीले या गहरे कत्थई रंग के होते हैं तथा फूल पीले रंग के होते हैं। इनका तेल पीले रंग का तथा तीखी गंध वाला होता है।

सरस्वती *स्त्री. (तत्.)* 1. विद्या या वाणी की देवी (जो ब्रह्मा की पत्नी मानी जाती हैं और जिनका वाहन हंस है), भारती, वाग्देवी, शारदा। 2. एक पुराकालीन बड़ी नदी।

सरहद *स्त्री. (फ़ा.)* 1. एक ही देश में दो राज्यों की विभाजक रेखा। boundary 2. दो देशों के बीच की विभाजक अंतरराष्ट्रीय सीमा रेखा। frontier

सरहदबंदी *स्त्री. (फ़ा.)* सीमांकन।

सरापा *पुं. (फ़ा.) व्यु.* सिर से पाँव तक, आपादमस्तक, नखशिख। सा.अर्थ पहनने का वह वस्त्र जो पूरे शरीर को ढँक ले।

सराफ़/सर्राफ़ *पुं. (अर.)* सोने, चाँदी, रत्नों आदि का व्यापारी।

सराफ़ा/सर्राफ़ा *पुं. (अर. सर्राफ़)* 1. सोना-चाँदी रत्न, आभूषणों का व्यापार 2. सर्राफ़ों का बाजार **जैसे:** मेरे पिता की दूकान सर्राफ़े में है।

सराबोर *वि. (फा.>शराबोर)* पूरी तरह भीगा हुआ, गीला, तरबतर **जैसे:** 1. अचानक आई तेज बारिश में हम सराबोर हो गए। 2. लथपथ **जैसे:** कीचड़ से सराबोर।

सरासर *वि. (फ़ा.)* 1. पूरी तरह से, बिल्कुल (नकारात्मक अर्थ में) **जैसे:** यह सरासर झूठ है। 2. साक्षात्, प्रत्यक्ष।

सराहना *स.क्रि. (तद्.>श्लाघन)* प्रोत्साहन या सम्मान व्यक्त करने के लिए मौखिक या लिखित रूप से प्रशंसा करना। *स्त्री.* सा.अर्थ किसी के अच्छे कार्यों की या गुणों की प्रशंसा/स्तुति। **पर्या.** बड़ाई, तारीफ।

सरिता *स्त्री. (तत्.)* व्यु.अर्थ बहने वाली। *भू.* वह प्राकृतिक लंबी जलधारा जो अपने स्रोत से प्राय: सुनिश्चित प्रणाल-पथ में बहती हुई किसी अन्य नदी या समुद्र में जा मिलती है। **जैसे:** यमुना, गंगा।

सरिया *स्त्री. (देश.)* लोहे की पतली लंबी छड़ जिसका भवन निर्माण आदि में प्रयोग होता है। **पुं.** सरकंडा नामक घास की छड़ी।

सरीसृप *पुं. (तत्.)* पृथ्वी पर स्थित वह जन्तुवर्ग जो ठंडे रक्तवाला और अंडे देने वाला होता है। इनकी त्वचा कशेरुओं से युक्त होती है। साँप, छिपकली, मगरमच्छ आदि इस श्रेणी में आते हैं। ये सरककर चलने वाले जीव होते हैं। reptiles

सरूर/सुरूर *पुं. [फ़ा.]* 1. हर्ष, खुशी; स्वाद, लज्ज़त 2. किसी नशीली वस्तु के सेवन से आया नशा, खुमारी। **जैसे**: उस पर भांग का सरूर दिख रहा है।

सरे आम *क्रि.वि. (फ़ा.+अर.)* 1. सार्वजनिक रूप से 2. सबके सामने **जैसे:** वह अपने पूर्व मित्र को सरे आम गोली मार कर भाग गया।

सरेबाजार *क्रि.वि. (फ़ा.)* 1. बीच बाजार में। 2. सबके सामने, खुले रूप में। सरे आम। **जैसे:** उसे तो बदमाशों ने सरेबाजार लूट लिया।

सरोकार *पुं. (फ़ा.)* 1. लगाव, वास्ता। **उदा.** मेरा इस मामले से कभी किसी तरह का सरोकार नहीं रहा। conearn 2. परस्पर व्यवहार, प्रयोजन, संबंध। **जैसे:** साहित्यिक सरोकार

सरोवर *पुं. (तत्.)* पानी का विशाल निकाय। तालाब, झील, बड़ा ताल।

सर्जन *पुं. (तत्.)* पैदा करने, सृष्टि करने, रचने (रचना करने) का भाव या प्रक्रिया। **जैसे:** साहित्य सर्जन। *पुं (अं.)* चीर-फाड़ में निपुण चिकित्सक/डॉक्टर surgeon

सर्जना *पुं./स्त्री. (तत्.)* **साहि.** रचना, काव्यसृष्टि। काल्पनिक कृति।

सर्द *वि. (फ़ा.)* 1. ठंडा, शीतल। **जैसे:** सर्द मौसम 2. धीमा, सुस्त, शिथिल। **जैसे:** सर्द मिजाज का इनसान।

सर्पी घर्षण *पुं. (तत्.)* गतिमान वस्तु का किसी तल पर रगड़ खाना। **टि.** ऐसी वस्तु पर बल लगाने में ऊर्जा कम लगती है। **उदा.** गाड़ी को पहले-दूसरे गीयर से अगले गीयरों में चलाने में अपेक्षाकृत कम ऊर्जा की आवश्यकता होती है, क्योंकि तब सर्पी घर्षण का सिद्धांत काम करता है।

सर्वक्षेत्रीय *वि. (तत्.)* संपूर्ण क्षेत्र से संबंधित।

सर्वथा *अव्य. (तत्.)* 1. सब प्रकार से, हर तरह से । 2. पूर्णतः बिलकुल (प्रायः नकारात्मक प्रयोग)। **उदा.** यह बात सर्वथा अशुद्ध है। **पर्या.** कदापि 3. पूरा, सरासर। **जैसे.** वह सर्वथा झूठ बोल रहा है।

सर्वदा *क्रि.वि. (तत्.)* हमेशा, हरसमय, निरंतर। **पर्या.** सदा।

सर्वप्रिय *वि. (तत्.)* 1. जो सबको प्रिय हो, जो सबको अच्छा लगे। **पर्या.** लोकप्रिय **जैसे:** अटलबिहारी सर्वप्रिय राजनेता हैं। 2. जिसे सब प्रिय हों। **जैसे:** सर्वप्रिय सम्राट् अशोक ने प्रजा के हित के लिए अनेक कार्य किए।

सर्वव्यापक [सर्व+व्यापक] *वि. (तत्.)* सभी जगह तथा सभी पदार्थों में हर समय व्याप्त रहने वाला। विश्वव्यापी। **उदा.** ईश्वर सर्वव्यापक है।

सर्वहारा *वि. (तद्.<सर्वहरण)* शा.अ. जिसका सबकुछ हर लिया गया हो। रूढ़ अर्थ 1. समाज का वह निम्नतम आय वर्ग जो सब प्रकार से उपेक्षित एवं शोषित है। 2. श्रमिक वर्ग जो श्रम करने पर भी भूखा-प्यासा है। **पर्या.** अकिंचन, धनहीन **टि.** शोषित वर्ग के लिए साम्यवादी विचारधारा द्वारा दिया गया एक विशेष पारिभाषिक शब्द।

सर्वाधिक वि. *(तत्.)* सब से अधिक **उदा.** हमारे देश में सर्वाधिक लोग हिंदी बोलते और समझते हैं।

सर्वाधिकार *पुं. (तत्.)* 1. किसी वस्तु के उत्पादन, वितरण, विक्रय आदि के संबंध में सारे अधिकार, पूर्णाधिकार। 2. पूर्ण स्वामित्व 3. अंतिम निर्णय का अधिकार। **जैसे:** घर के मामलों में दादाजी को सभी प्रकार के निर्णय लेने का सर्वाधिकार प्राप्त है।

सर्विस *स्त्री. (अं.)* 1. **प्रशा.** किसी संस्था या कंपनी आदि द्वारा योग्य लोगों को दी जाने वाली नौकरी। 2. जरूरतमंद लोगों के लिए की जाने वाली आर्थिक या शारीरिक सेवा। 3. भोजन परोसने का कार्य। 4. कार, फ्रिज, टी.वी. आदि यांत्रिक उपकरणों की देखभाल, सफाई एवं मरम्मत करने की क्रिया। 5. सुविधापूर्ण सेवा। **जैसे:** दिल्ली में बस सर्विस अच्छी है।

सर्वे *पुं. (अं.)* 1. किसी बात या तथ्य की पूरी तरह से जाँच-पड़ताल, निरीक्षण, पर्यवलोकन। 2. सर्वांगीण और क्रमानुसार विवेचन, सर्वेक्षण। **जैसे:** इस उपनगर में मेट्रो लाइन बनाने के लिए सर्वे किया गया।

सर्वेक्षण *पुं. (तत्.)* किसी सौंपे गए कार्य विशेष की बारीकी से जाँच-पड़ताल करना और उस पर अपना लिखित अभिमत प्रस्तुत करना। survey

सर्वोच्च [सर्व+उच्च] वि. *(तत्.)* शा.अर्थ सबसे ऊँचा। ऊँचाई, प्राधिकार, पद आदि की दृष्टि से सबसे ऊपर का। **जैसे:** सर्वोच्च शिखर, सर्वोच्च सत्ता, सर्वोच्च न्यायालय। **पर्या.** उच्चतम।

सर्वोच्च न्यायालय *पुं. (तत्.)* प्राधिकार की दृष्टि से ऊपरवाला न्यायालय। मान्य तकनीकी शब्द उच्चतम न्यायालय। supreme court

सर्वोच्चता *स्त्री. (तत्.)* सबसे ऊँचा होने का भाव/क्रिया **दे.** सर्वोच्च।

सर्वोत्तम [सर्व+उत्तम] वि. *(तत्.)* सबसे अच्छा, सबसे बढ़िया।

सर्वोपरि [सर्व+उपरि] *वि. (तत्.)* 1. (ऐसा कोई गुण या विशेषता) जो सबसे ऊपर या सबसे बढ़कर हो। **उदा.** तुम्हारा गणित ज्ञान सर्वोपरि है। 2. जो सबमें प्रमुख हो, प्रधान **उदा.** हमारा सर्वोपरि कर्तव्य देश सेवा है। 3. सर्वप्रथम। **जैसे:** कक्षा में सर्वोपरि प्रमुखता अध्यापक की बात सुनने को देनी चाहिए।

सलवार/शलवार *स्त्री. (फ़ा.शलवार)* एक प्रकार की ढीला पायजामा जो विशेषत: उत्तर-पश्चिम भारत में पहना जाता है। **टि.** मूल रूप में यह अरब देशों का पहनावा है।

सलहज *स्त्री. (देश.)* पत्नी के भाई की पत्नी, साले की पत्नी।

सलाख *स्त्री.(तुर्की.) (तद्.<शलाक)* लोहे की छड़, सलाई, शलाका।

सलाद *पुं. (अं.सैलेड)* 1. भोजन के साथ खाया जाने वाला सरस खाद्य, जो कच्चे मूल (मूली, गाजर, चुकंदर आदि), सब्जी के विशेष हरे पत्तों (पत्तागोभी आदि) गाजर, टमाटर, नींबू आदि के योग से बना होता है। 2. एक पौधा जिसके पत्ते उक्त रूप में खाए जाते हैं।

सलाम *पुं. (अर.)* (दाएं हाथ की हथेली को अंजुली- सी बनाकर हलके-से झुके सर की ओर ले जाकर किया गया) नमस्ते नमस्कार, प्रणाम । **मुहा.** दूर से सलाम (दूर से तो नमस्कार) =मिलने से बचना

सलामत *वि. (अर.)* 1. जीवित 2. स्वरूप, सकुशल 3. नुकसान या मुसीबत से बचा हुआ, सुरक्षित। 4. सुरक्षित स्थिति वाला। **जैसे:** हम आपको सलामत देखना चाहते हैं।

सलामी *स्त्री. (अर.)* 1. सलाम करने की क्रिया या भाव। 2. उच्च पदस्थ व्यक्ति को सैनिकों, सिपाहियों आदि की ओर से सलाम किए जाने का तरीका विशेष। 3. उच्च पदस्थ व्यक्ति के समारोह में उपस्थिति पर बंदूकें, तोपें आदि दाग कर सलामी दिए जाने का तरीका। **वि.**खेल. पहला खिलाड़ी या पहली जोड़ी जो खेल की शुरूआत करे। **जैसे:** क्रिकेट में सलामी बल्लेबाज़, सलामी जोड़ी आदि। **सै.वि.** सलामी देने वाली (टुकड़ी) **जैसे:** सलामी गारद का निरीक्षण।

सलाह *स्त्री. (अर.)* किसी महत्वपूर्ण विषय पर संबंधित व्यक्ति या पक्ष को दूसरे व्यक्ति या पक्ष की ओर से दिया गया परामर्श। **पर्या.** मशविरा, तजवीज़, राय।

सलाहकार [सलाह+कार] *पुं. (अर.+फ़ा.)* सलाह या राय देने वाला, परामर्शदाता। **दे.** सलाह।

सलोना *वि. (तद्.<सलवण)* शा.अ. ऐसा पदार्थ जो नमकयुक्त हो, नमकीन; सा.अ. कोमल सौंदर्ययुक्त, **पर्या.** सुंदर, लावण्यमय। **उदा.** यह सलोना बालक है। **स्त्री.** सलोनी=सुंदर स्त्री।

सल्तनत *स्त्री. (अर.)* मुस्लिम तौर-तरीके का/की, राज्य, बादशाहत, हुकूमत, अमलदारी आदि। **उदा.** मध्यकाल की दिल्ली सल्तनत।

सवर्ण *वि. (तत्.)* शा.अ. 1. एक ही वर्ण या जाति में उत्पन्न लोग जैसे ब्राह्मण के लिए ब्राह्मण, क्षत्रिय के लिए क्षत्रिय सवर्ण होते हैं। इसी प्रकार अन्य वर्ग भी। 2. प्राचीन मान्यता के अनुसार ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य ये तीन वर्ण। सा.अर्थ. समान रंग, समान जाति, समान रूप, समान वर्ग का।

सवाँ/साँवा *पुं. (तद्.)* एक मोटा और छोटे आकार का अनाज जो खरीफ की फसल में पैदा होता है। 'कोदों-साँवा'।

सवाक् वि.*(तत्.)* शा.अर्थ वाणी के साथ। सा.अर्थ विशेष रूप से जब बोलने वाली फिल्में शुरू हुईं तो उन्हें सवाक् फिल्में कहा गया। **तु.** टॉकीज=ऐसा स्थान जहाँ बोलने वाली फिल्में दिखाई जाती हों।

सवार *पुं. (तद्.<अश्ववार।फ़ा.)* किसी वाहन (पशु, रथ, साइकिल मोटर आदि) पर आरूढ़ (चढ़ा

हुआ)। **जैसे**: घुड़सवार, साइकिल सवार आदि। **पर्या.** आरोही।

सवारी *स्त्री. (तद्./फ़ा)* 1. सवार होने की क्रिया; सवारी करना। **जैसे:** साइकिल की सवारी। 2. व्यक्ति जो वाहन पर सवार हो **जैसे:** इस बस में कितनी सवारियाँ हैं? **दे.** सवार

सवाल *पुं. (अर.)* 1. किसी विषय के बारे में पूछी गई बात। **पर्या.** प्रश्न। 2. माँग।

सवालिया *[अर.<सवालिय:] वि.* 1. जो सवाल के रूप में हो/प्रश्नात्मक 2. जिसमें कोई बात पूछी गई हो और जिसका उत्तर अपेक्षित हो। 3. माँग भरा, प्रार्थनायुक्त। **जैसे:** उसने मुझे सवालिया नजरों से देखा।

सविनय [स+विनय] *वि. (तत्.)* विनयपूर्वक, विनम्र, शिष्टतापूर्वक **उदा.**सविनय अवज्ञा आंदोलन जिसका सूत्रपात भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान महात्मा गाँधी के नेतृत्व में 6 अप्रैल 1930 को हुआ।

सशंकित *वि. (तत्.)* जो किसी प्रकार की अनिष्ट की आशंका से ग्रस्त हो अथवा जिसे कोई शंका हुई हो। **पर्या.** भयभीत, भीरु, डरपोक **उदा.** वहाँ निशाचर रहहिं सशंका। जब ते जारि गयउ कपि लंका।।

सशक्त *वि. (तत्.)* 1. जो सभी प्रकार से समर्थ हो। 2. शारीरिक क्षमता, कठिन कार्य करने के लिए अपेक्षित। 3. धनादि के सामर्थ्य से युक्त। **पर्या.** समर्थ, शक्ति-सम्पन्न, बलवान। **उदा.** सशक्त व्यक्ति ही निर्बल की सहायता कर सकता है।

सशस्त्र *वि. (तत्.)* शस्त्र के साथ, शस्त्र सहित, जिसके पास शस्त्र हो, शस्त्र से सज्जित। **जैसे:** सशस्त्र बल, सशस्त्र पुलिस।

सशस्त्र बल *वि. (तत्.)* देश की जल, स्थल और वायु-तीनों सेनाओं के लिए प्रयुक्त सामूहिक अभिव्यक्ति।

ससुर *पुं.* (*तद्.*>*श्वसुर*) पत्नी के लिए पति का पिता और पति के लिए पत्नी का पिता। father-in-law

सस्ता *वि. (तद्.)* 1. जिसकी कीमत अपेक्षाकृत कम हो, कम मूल्य का। **जैसे.** पटरी बाजार में माल सस्ता मिलता है। 2. जिसकी गुणवत्ता घटिया हो। घटिया माल। **विलो.** महँगा।

सस्य कर्तन *पुं. (तत्.)* 1. खेतों में बोए गए गेहूँ, धान, ज्वर आदि अन्न को (पक जाने पर) काटना। 2. फसल की कटाई।

सस्वर *वि. (तत्.)* स्वर सहित। **उदा.** कविता का सस्वर पाठ करें।

सस्वर पाठ *पुं. (तत्.)* 1. किसी पद्‌य या काव्य को उतार, चढ़ाव, स्वर, लय, भाव, यति पूर्वक पढ़ना जिससे श्रोता को उसकी पूर्ण रसानुभूति या आनंदानुभूति हो सके। 2. वैदिक मंत्रों का उदात्त-अनुदात्त-स्वरित स्वरों का प्रयोग करते हुए स्पष्ट तथा माधुर्ययुक्त उच्चरण करना।

सह-अस्तित्व *पुं. (तत्.)* साथ-साथ होना, साथ-साथ विद्‌यमान रहना; साथ-साथ जीव जीना।

सहचर *पुं. (तत्.)* जो साथ में रहता है या साथ में चलता है। 1. मित्र, संगी, साथी 2. अनुचर, सेवक, पति।

सहचारिणी *स्त्री. (तत्.)* साथ में रहने वाली, साथ-साथ जीवनयापन करने वाली, पत्नी, भार्या।

सहचारी *वि./पुं. (तत्.)* शा.अर्थ. साथ चलने वाला (व्यक्ति) संगी, साथी, सहचर।

सहज *वि. (तत्.)* 1. जो स्वाभाविक हो, प्राकृतिक। **जैसे**: सहज सौंदर्य। 2. जन्मजात गुण-दोष। **जैसे**: उस आश्रम में मृग और सिंह सहज वैर भूलकर रहते थे। 3. सरल, आसान। **जैसे**: परीक्षा के प्रश्न सहज थे। विलो. कठिन, असहज।

सहजता *स्त्री. (तत्.)* 1. सहज होने का भाव 2. स्वाभाविकता 3. सरलता। **दे.** सहज।

सहजधारी *पुं. (तत्.)* सिक्ख धर्म को मानने वालों का एक पंथ जो सामान्य सिक्ख की भाँति केश धारण नहीं करते।

सहजवृत्ति *स्त्री. (तत्.)* किसी संवेग-जन्य उद्‌दीपन के प्रति एक खास ढंग से प्रतिक्रिया करने का जन्मजात तरीका। **पर्या.** मूल प्रवृत्ति। instinet

सहजीविता *स्त्री.(तत्.)* शा.अर्थ साथ-साथ बिताने का भाव। जीव. वह अवस्था जब दो जीव साथ-साथ रहकर एक-दूसरे से लाभ उठाते हैं। **जैसे**: कवक और शैवाल मिलकर शैक (शैवाल+कवक) नामक जीव बना देते हैं। symbiosis

सहदायाद विधि. एक ही संपत्ति पर एक साथ कई व्यक्तियों का स्वामित्व।

सहन *पुं. (तत्.)* सहने की क्रिया या भाव। (अर.) निवास-स्थान में बने कमरों के सामने, आजू-बाजू, पिछवाड़े या बीच में खुला छोड़ा हुआ स्थान जिसका उपयोग कई तरह से किया जा सकता है। **पर्या.** आँगन, चौक। court yard

सहन शक्ति *स्त्री. (तत्.)* सहन कर सकने का सामर्थ्य, बरदाश्त करने की ताकत। दे. सहिष्णुता, सहनशीलता। tolerance

सहनशील *वि. (तत्.)* 1. जो किसी प्रकार कष्ट, दुर्वचन आदि के सहन कर सकता हो। 2. जिसका स्वभाव बरदाश्त करने का हो। पर्या. सहिष्णु, क्षमाशील।

सहनशीलता *स्त्री. (तत्.)* व्यक्ति का वह गुण जो प्रतिकूल परिस्थितयों में भी दूसरे के विचारों, भावनाओं, विश्वासों आदि को सहने, मानने या आदर देने के रूप में प्रकट होता है। **दे.** सहन शक्ति, सहिष्णुता। tolerance

सहना *अ.क्रि.*[*तत्.<सहन*] किसी कष्ट, अनावश्यक भार या किसी के प्रतिकूल स्वभाव का लंबे समय तक अनुभव करने के साथ-साथ न चाहते हुए भी उससे मेल बिठाना, बरदाश्त करना, झेलना। to tolerate

सहपाठी *पुं.(तत्.)* कक्षा विशेष में साथ-साथ पढ़ने वाले विद्यार्थी। class-fellow

सहभागी *वि. (तत्.)* 1. समान भाव से किसी कार्य में किसी के साथ सम्मिलित होने वाला अथवा किसी कार्य में बराबरी का योगदान करने वाला। 2. वह जो किसी उद्योग/व्यापार में किसी के साथ लगा हुआ हो और उसके हानि-लाभ आदि में समान रूप से भागीदार हो। 3. पैतृक संपत्ति का बराबर का हिस्सेदार।

सहमत *वि. (तत्.)* (वह व्यक्ति) जिसका मत दूसरे व्यक्ति के अनुसार हो। एकमत। सम्मत। **विलो.** असहमत।

सहमति *स्त्री (तत्.)* दो या अधिक व्यक्तियों के विचारों में परस्पर समानता की स्थिति, एक व्यक्ति की राय से दूसे व्यक्ति की राय मिलना। **पर्या.** मतैक्य। **विलो.** असहमति।

सहमना *अ.क्रि. (फ़ा.)* (किसी भयानक रूप को देखकर या कठोर वचन सुनकर) अचानक डर जाना या भयभीत हो जाना।

सहयोग *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ साथ जुड़ना। 1. किसी के काम में मदद करना, सहायता करना। 2. बहुत से लोगों का एक साथ मिलकर कोई काम करने का भाव। पर्या. सहकार। co-operation, coloboration 2. सहायता। aid, help

सहयोगी *वि.* सहयोग देने वाला। पुं. साथी कार्यकर्ता।

सहयोजन *पुं. (तत्.)* साथ में जोड़े जाने या सम्मिलित करने की स्थिति। co-option

सहयोजित *वि. (तत्.)* (बाद में) साथ में जोड़ा गया। **जैसे:** सहयोजित सदस्य।

सहर्ष *क्रि.वि. (तत्.)* 1. हर्षसहित 2. प्रसन्नतापूर्वक, हँसी-खुशी।

सहलाना *स.क्रि. (देश.)* 1. मन की कोमल भावना के साथ किसी वस्तु या किसी के अंग पर धीरे-धीरे हाथ या उँगलियाँ फेरना। 2. किसी अंग को हाथ से धीरे-धीरे सहने योग्य स्पर्श करना। 3. हलका-हलका मलना।

सहसा *अव्य. (तत्.)* एकदम जल्दी से, अकस्मात्, अचानक, यकायक।

सहस्रों *वि. (तत्.)* हजारों, कई हजार।

सहानुभूति *स्त्री. (तत्.)* शा.अर्थ साथ-साथ/एक समान होने वाली अनुभूति। **जैसे:** किसी दुखी व्यक्ति को देखकर उसी के समान खुद भी दुखी होना। **पर्या.** हमदर्दी।

सहिष्णु *वि. (तत्.)* किसी प्रकार के कष्ट, पीड़ा, हानि, आघात आदि भावों को शांतिपूर्वक सहन करने के स्वभाव वाला, बरदाश्त करने वाला । पर्या. सहनशील, क्षमताशील। उदा. वह इतना सहिष्णु है कि अपशब्द सुनकर भी उत्तेजित नहीं होता। tolerant

सहिष्णुता *स्त्री. (तत्.)* कष्ट-पीड़ा आदि को सहन कर सकने का गुण, शक्ति। पर्या. सहनशीलता, सहिष्णुत्व। tolerance

सहेजना *स.क्रि.* ऐसी व्यवस्था करना कि सब चीजे संख्या, मात्रा, सुरक्षा आदि की दृष्टि से ठीक-ठाक है, सँभाल कर रखना।

सहेली *स्त्री. (तद्.)* एक स्त्री के साथ मित्र-भाव से रहने वाली दूसरी स्त्री, सखी।

सांकेतिक *वि. (तत्.)* 1. जो धमकी, खतरा, विचारधारा, कार्य इत्यादि के संकेत के रूप में हो। **जैसे:** सांकेतिक हड़ताल जो कर्मचारियों द्वारा अपनी माँगों के समर्थन में की गई हो। 2. संकेतों से संबंधित। **जैसे:** सांकेतिक भाषा।

सांख्यिकी स्त्री. *(तत्.)* गणि. 1. गणित शास्त्र की वह शाखा जिसमें किसी भी विषय विशेष के संख्यात्मक आँकड़ों का एकत्रण, गणन, विश्लेषण और निर्वचन आदि का अध्ययन करना बताया जाता है। 2. उपर्युक्त प्रकार से एकत्र किए गए आँकड़े। गदूगमे

सांख्यिकीय *वि. (तत्.)* गणि. 1. सांख्यिकी विषयक। 2. एकत्रित आँकड़ों से संबंधित। statistic

सांगोपांग *[स+अंग+उपांग] वि. (तत्.)* शा.अर्थ सभी अंगों और उपांगों से युक्त, सभी तरह से पूर्ण, संपूर्ण। **जैसे:** वक्ता ने विषय का सांगोपांग विवेचन प्रस्तुत किया।

सांतराल [स+अंतराल] *वि. (तत्.)* 1. अंतराल सहित, कुछ फासले के साथ। 2. पर्याप्त अंतर रखते हुए अक्षर, शब्द, वाक्य आदि लिखना। खुला-खुला लिखना। **जैसे:** वाक्य रचना में सांतराल शब्दों का प्रयोग भाषा को सहज बनाता है।

सांत्वना पुरस्कार *पुं. (तत्.)* प्रथम, द्वितीय या तृतीय कोई स्थान न मिलने के बाद भी योग्य प्रतियोगी को हतोत्साहित न होने देने के लिए दिया जाने वाला विशेष पुरस्कार।

सांत्वना *स्त्री. (तत्.)* 1. दुखी व्यक्ति को ढाढ़स बँधाने की क्रिया, धीरज बँधाने का कार्य, तसल्ली। 2. आश्वासन। **उदा.** परेशान कर्मचारी को सांत्वना देते हुए अधिकारी ने कहा- तुम्हारा काम दो दिनों में हो जाएगा।

सांद्र/सांद्रित *वि. (तत्.) भौ.* 1. सटा हुआ, घना, गाढ़ा। concentrate 2. चिकना, चिपचिपा, स्निग्ध।

सांद्रण *पुं. (तत्.) भौ.* घना या गाढ़ा होने की क्रिया। concentration

सांद्रता *स्त्री. (तत्.)* घना, गाढ़ा या ठोस होने का भाव। concentration

सांद्रित्र *पुं. (तत्.)* गाढ़ापन लाने वाला यंत्र concentration

सांप्रदायिक [संप्रदाय+इक] *वि. (तत्.)* 1. किसी दार्शनिक मत, संप्रदाय विशेष से संबंध रखने वाला। 2. अपने ही मत, संप्रदाय अथवा धर्म की मान्यताओं को श्रेष्ठ बतलाकर दूसरे मत, संप्रदाय अथवा धर्म में आस्था रखने वालों के बारे में विद्वेष फैलाने और उनसे लड़ाई-झगड़ा करने वाला (व्यक्ति या समुदाय)। **जैसे:** सांप्रदायिक दंगा। communal

सांप्रदायिकता *स्त्री. (तत्.)* (आधुनिक संदर्भ में) अपने ही मत, संप्रदाय अथवा धर्म की मान्यताओं को श्रेष्ठ बतलाकर दूसरे मत, संप्रदाय अथवा धर्म में आस्था रखने वालों के बारे में विद्वेषपूर्ण भावना रखने और उसे फैलाने की प्रवृत्ति। communatiosm

सांभर *पुं. (देश.)* 1. भारत का एक बडे आकार वाला हिरण जो भूरे रंग का होता है। साँबर। 2. राजस्थान की एक झील जिसके खारे पानी से नमक बनाया जाता है। 3. उक्त नमक। 4. दक्षिण भारत में पकाया जाने वाला सब्जी मिश्रित दाल जैसा व्यंजन। साधारणत: डोसा, इडली एवं वड़ा इसी के साथ खाया जाता है।

सांसद *पुं. (तत्.)* संसद के दोनों सदनों में से किसी एक का सदस्य। **पर्या.** संसद सदस्य।

सांसर्गिक [संसर्ग+इक] *वि.* शा.अर्थ संसर्ग के फल स्वरूप (संचरित) होने वाला। **आयु.** एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से संचारित होने की क्षमता रखने वाला (रोग)। contagious disease

सांसारिक *वि. (तत्.)* संसार संबधी, लौकिक, ऐहिक; शारीरिक आवश्यकताओं या विषय भोग से संबंधित। **जैसे:** उन्हें सांसारिक भोगों से विरक्ति हो गई है।

सांस्कृतिक [संस्कृति+ इक] *वि. (तत्.)* संस्कृति से संबंध रखने वाला; संस्कृति संबंधी।

साँईं/साँई *[तद्.<स्वामी] पुं.* 1. स्वामी, मालिक पति। 2. परमात्मा। 3. आदरणीय मुसलमान फकीर। 4. 'साँईं बाबा' नामक प्रसिद्ध संत।

साँच *वि. (तद्.)* सच्चा। **पुं.** सच, सत्य। **उदा.** साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।

साँचा *(तद्.<संचक) पुं.* 1. वह ढाँचा या उपकरण जिसमें कोई गीली चीज़ डाल कर कोई आकृति दी जाती है। **जैसे:** मूर्ति का साँचा। 2. कपड़ा, कागज आदि पर फूल आदि बनाने का लकड़ी आदि का ठप्पा। *वि.* सच्चा, सच बोलने वाला।

साँझ-सकारे *क्रि.वि. (तद्.<संध्या+सुकाल)* सुबह-शाम, शाम-सुबह, साँझ-सवेरे।

साँझा *पुं. (तद्.)* 1. हिस्सेदारी, भागीदारी। 2. किसी व्यापार, कार्य आदि में एकाधिक लोगों का आपस में मिलकर व्यवस्था करने का समझौता जिसमें लागत और लाभ-हानि आदि का अनुपात पहले से निश्चित कर लिया जाता है। **वि.** मिला-जुला। **जैसे:** साँझा-चूल्हा।

साँठ-गाँठ *स्त्री. (देश.)* किसी गलत कार्य के लिए लोगों का मेल-मिलाप। **पर्या.** षड्यंत्र, मिली-भगत। **जैसे:** कुछ विपक्षी दल आपस में साँठ-गाँठ करके सरकार को अस्थिर करना चाहते हैं।

साँड/साँड़ *[तद्.<षण्ड] पुं.* गाय का वह वत्स जो बैल की तरह बधिया नहीं किया जाता अपितु गाय से अच्छी संतति उत्पन्न करने के लिए ही उसे स्वच्छंद छोड़ दिया जाता है।

साँय-साँय *स्त्री. (अनुर.)* किसी एकांत शांत स्थान में तेज हवा चलने की लगातार होने वाली 'एक प्रकार की ध्वनि' या किसी कीड़े आदि की 'सन-सन' की आवाज। **जैसे:** यहाँ काफी देर से साँय-साँय सुनाई पड़ रही है।

साँवला *वि. (तद्.>श्यामल)* जिसमें थोड़ा थोड़ा कालापन हो, श्यामलता हो श्यामल। श्याम रंग का। **जैसे:** साँवला रंग, साँवला बालक। **पुं.** 1. श्रीकृष्ण, श्याम। 2. पति/प्रेमी।

साँवलापन *पुं.* साँवला होने की स्थिति या भाव। **दे.-साँवला।**

साँस *(तद्.<श्वास) पुं. जीव। आयु.* जीवित रहने के लिए मुख्यत: नाक और गौणत: मुँह से हवा फेफड़ों तक पहुँचाने और उसे बाहर निकालने की क्रिया-विधि। श्वास, दम। **मुहा. साँस उखड़ना=** (i) साँस का कुछ समय के लिए रुकना। (ii) मृत्यु से पूर्व श्वास-क्रिया के सहज संचालन में बाधा उपस्थित होना। **साँस चढ़ना=बहुत** श्रम करने के कारण जोर-जोर से साँस लेना और छोड़ना। **साँस छूटना=साँस** लेने की क्रिया का समाप्त होना, मृत्यु प्राप्त होना। **साँस फूलना=**शारीरिक परिश्रम के फलस्वरूप श्वास-प्रक्रिया का सामान्य से अधिक तेज़ हो जाना।

साँसत *स्त्री. [देश.>साँस]* 1. बहुत अधिक शारीरिक कष्ट, जिसमें साँस लेना कठिन जैसा हो। 2. ऐसी स्थिति जिससे तुरंत बाहर निकलने की इच्छा (शांति से साँस लेने की इच्छा) हो। 3. झंझट, परेशानी; सजा, दंड। **मुहा. जान साँसत में होना**=कठिन परिस्थिति में फँस जाना। **दे.** साँस।

सा *वि. (तद्.>सदृश)* 1. समान, तुल्य, जैसा। **जैसे:** कमल से नेत्र, हिम सा श्वेत, मैंने तुझ सा इंसान नहीं देखा। 2. एक परिमाणसूचक शब्द, **जैसे:** थोड़ा सा नमक, इतनी सी चीनी, बहुत सा अन्न। 3. प्रश्नवाचक शब्द के साथ निश्चयात्मकता दिखलाने वाला शब्द। कौन **सी** लडकी? पुं. (तद्> षड्ज) संगी षड्ज स्वर का चिहन (सरगम में)।

साइत *(अरबी<साअत) स्त्री.* 1. शुभ समय, **जैसे:** तुम अच्छी साइत में आए हो। 2. **ज्यों** शुभ मुहूर्त। **जैसे:** आज की साइत में गृह प्रवेश उचित है।

साइलो *पुं. (अं.)* बड़े पैमाने पर बीजों के भंडारण हेतु प्रयुक्त आधुनिक साधन। खत्ती, कुठिला। **टि.** मिट्टी या धातु का बना बडा ढोलनुमापात्र इसके लिए प्रयुक्त किया जाता है। silo

साकार *वि.(तत्.)* शा.अर्थ आकार सहित, आकार वाला। 1. जिसका कोई रूप या आकार हो। 2. ईश्वर का अवतार वाला रूप; प्रतिमा के रूप में पूजित ईश्वर। **विलो.** निराकर।

साक्षर *वि. (तत्.)* शा.अ. अक्षर सहित, अक्षर युक्त। सा.अ. जिसने पढ़ना-लिखना सीख लिया है। (अक्षर-ज्ञानवाला) **पर्या.** पढ़ा-लिखा, शिक्षित।

साक्षात् *क्रि. वि. (तत्.)* आँखों के सामने, सम्मुख; प्रत्यक्ष। *वि.* मूर्तिमान, साकार।

साक्षात्कार *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ 1. प्रत्यक्ष रूप से यानी आमने-सामने होना; 2. प्रत्यक्ष रूप से भेंट या मुलाकात करना। सा.अ. 1. किसी पद पर चयन के लिए प्रत्याशी से विशेषज्ञों का आमने-सामने बैठकर प्रश्नोत्तर या संवाद स्थापित करना। 2. किसी साहित्यकार की रचना-प्रक्रिया

जानने हेतु भेंटकर्ता और लेखक के बीच अथवा विचारक, नेता आदि के बीच प्रश्नावली अथवा साक्षात्कार के माध्यम से चलने वाला गहन संवाद। interview

साक्षी *पुं. (तत्.)* व्यक्ति जिसकी उपस्थिति में कोई घटना घटी हो और उसने अपनी आँखों से उसे देखा हो। **पर्या.** गवाह witness

साक्ष्य *पुं. (तत्.)* किसी कथन, आक्षेप आदि को पुष्ट करने वाले तत्व। 2. गवाही यानी आँखों देखी घटना का कथन।

साख *स्त्री. (तद्.)* 1. व्यक्ति की प्रतिष्ठा और मान-मर्यादा। 2. लेन-देन के मामले में किसी प्रतिष्ठान की देयताओं को चुका सकने की सामर्थ्य। credit 3. शाखा, डाल/डाली।

साखी *(तद्.<साक्षी) पुं.* गवाह जिसने घटना को देखा हो। *स्त्री. [तद् >माक्षी]* 1. गवाही। **मुहा.** साखी पुकारना = गवाही देना। 2. संतों के नीतिपरक दोहे। **जैसे:** कबीर की साखी।

सागौन/सागवान *पुं. (देश.)* हिमालय की तराई में होने वाला एक प्रकार का बड़ा लंबा वृक्ष जिसके पत्ते बड़े और खुरदरे होते हैं। इसकी लकड़ी सुंदर चिकनी व मजबूत होती है तथा भवन निर्माण के लिए उपयोगी होती है।

साजन *पुं. (तद्.>सज्जन/स्वजन)* 1. पति, स्वामी 2. प्रेमी, बालम 3. भला आदमी।

साजना *स.क्रि. (तद्.<सज्ज्)* सजाना, अलंकृत करना, विभूषित करना। *पुं.* **दे.** साजन।

साज-सज्जा *स्त्री. (फ़ा.सं.)* 1. शोभा, 2. सजाने का सामान। **जैसे:** आज तो विद्यालय की साज-सज्जा देखते ही बनती थी। **टि.** इस शब्द में पुनरुक्ति है। साज और सज्जा यहाँ समानार्थी हैं।

साज सिंगार *पुं.(फा.+तद्.)* अधिक सुंदर लगने के लिए विविध श्रृंगारिक सामग्री का किया गया उपयोग या सजा संवरा स्वरूप। **जैसे:** किसी भी उत्सव में महिलाओं का साज-सिंगार देखते ही बनता है।

साज़िश *स्त्री. (फा.)* षड्यंत्र, कुचक्र, दुरभिसंधि। किसी को हानि पहुँचाने के लिए की जाने वाली कपटपूर्ण अभिसंधि।

साज़ो-सामान *[साज+ओ+सामान] पुं. (फा.)* किसी काम को अंजाम देने के लिए जरूरी सामग्री। equipment

साझा *पुं. (तद्.>सहार्ध)* 1. किसी भी व्यवसाय या उद्योग आदि में साझेदारी, हिस्सेदारी, भागीदारी। 2. भाग, हिस्सा। **जैसे:** उनका मित्र के साथ वस्त्र व्यवसाय में साझा है। दे. साँझा।

साझेदार *[साझा+दार] पुं. (तद्.+फ़ा)* किसी काम को पूरा करने में लगे दो या दो से अधिक व्यक्तियों में से कोई भी। **पर्या.** हिस्सेदार, भागीदार co-partner, partner

साझेदारी *स्त्री. (तद्.+या)* 1. किसी कार्य में (जैसे खेती, व्यापार आदि में) हिस्सेदार होने की स्थिति। 2. **खेल** (क्रिकेट) बल्लेबाजी कर रहे दोनों बल्लेबाजों में से किसी के आउट होने से पहले दोनों द्वारा मिलकर बनाए गए रनों का योग। **पर्या.** भागीदारी, हिस्सेदारी co-partnership **दे.** साझेदार।

साड़ी *[तद्.>शाटी]* स्त्रियों के पहनने की प्राय: चौड़ी किनारे वाली रेशमी या सूती धोती। **उदा.** जैसे बनारसी साड़ियाँ बहुत प्रसिद्ध हैं। **टि.** आजकल नायलोन आदि कृत्रिम धागों की साड़ियाँ भी प्रचलित हैं।

साढ़ी *स्त्री. (देश.)* उबाले हुए गर्म दूध के ऊपर जमने वाली चिकनी परत, मलाई। **जैसे:** उसे बिना साढ़ी का दूध पसंद नहीं है।

साढ़ू *(तद्.>श्यालिवोढ) पुं.* साली (अर्थात् पत्नी की बहन) का पति। **टि.** सभी विवाहिता बहनों के पति आपस में एक-दूसरे के लिए 'साढ़ू' कहे जाते हैं।

सातत्य *पुं. (तत्.)* 1. किसी वस्तु या बात के होने या प्रयोग की दृष्टि से निरंतरता 2. शाश्वतता, नित्यता। 3. सदा बना रहने का भाव। **उदा.** अध्ययन में सातत्य आवश्यक होता है।

सात-पाँच *पुं. (तद्.)* 1. कुछ, थोड़ा सा। 2. अल्प भेद/अंतर। **लोको.** सात पाँच की लाकड़ी, एक जाने का बोझ, अर्थात् कुछ लोगों के थोड़ा-थोड़ा सहयोग करने पर एक व्यक्ति की बड़ी मदद हो जाती है। **मुहा.** सात-पाँच करना=धोखेबाजी करना, धूर्तता की बातें करना।

सात्विक *वि. (तत्.)* सत्त्व गुण से युक्त। **पर्या.** सतोगुणी, (सत्वगुणी शुद्ध है), सत्वगुण प्रधान। **जैसे:** सात्विक व्यक्ति शांत तथा दयालु होता है। **टि.** प्रकृति के तीन गुण कहे गए हैं-सत्व, रजस्, तमस्।

साथरा/साथर *[तद्.<स्तरण] पुं.* 1. जमीन पर बिछाई जाने वाली कुश की बनी चटाई। 2. बिछौना, बिस्तर।

साथरी *स्त्री.* पयार (धान के सूखे पौधे का वह भाग जो बालियों से रहित होता है) या तृण/घास आदि के समूह से बनाया गया बिछौना। **उदा.** वनवासकाल में राम साथरी पर सोते थे।

साथी *(तद्.<सार्थ) पुं.* 1. जो साथ में रहे, संगी, सहचर। 2. मित्र, सहपाठी। 3. लोगों का समूह जो साथ-साथ रहता है। इस समूह में प्रत्येक व्यक्ति एक-दूसरे के साथी कहलाता है।

सादगी *स्त्री. (फा.<सादः)* 1. रहन-सहन, वेशभूषा आदि में दिखावा या कृत्रिम साधनों का अभाव। सरलता, भोलापन 2. सादापन, निश्छलता, निष्कपटता। 3. अहंकार का अभाव। **जैसे:** महात्मा गांधी जी का जीवन अत्यंत सादगीपूर्ण था।

सादा *वि. (फा. सादः)* 1. जिसमें किसी प्रकार की मिलावट, कृत्रिमता या आडंबर न हो। **जैसे:** सादा जीवन उच्च विचार। 2. सीधा, उलझन से रहित, सामान्य, निष्कपट, साफ-साफ। **जैसे:** सादा सवाल। 3. कोरा। **जैसे:** सादा कागज।

सादापन *पुं.* निश्छलता, आडंबरहीनता।

साध *स्त्री. (तद्.<श्रद्धा)* अभीष्ट की प्राप्ति के लिए मन की इच्छा/अभिलाषा उत्कंठा। **जैसे:** पुत्र के डॉक्टर बन जाने से आज हमारे मन की साध पूरी हुई।

साधक *वि. (तत्.)* 1. साधना करने वाला। 2. जो किसी कार्य की सिद्धि में अनुकूल और सहायक हो। 3. योगी, तपस्वी। **जैसे:** साधक का जीवन तपोमय होता है।

साधन *पुं. (तत्.)* 1. किसी कार्य को सिद् ध करने या पूरा करने की क्रिया या भाव। 2. किसी कार्य या बात के बनने या होने का जरिया। 3. कष्ट दूर करने का उपाय। 4. कुछ बनाने का सामान, सामग्री। 5. औजार, उपकरण।

साधन-संपन्न *वि. (तत्.)* सभी प्रकार के साधनों से युक्त। *पुं.* धनवान व्यक्ति।

साधना *स.क्रि. (तद्.<साधन)* 1. सिद् ध करना। पूर्ण करना। **जैसे:** आपने तो अपना स्वार्थ **साध** लिया। 2. निश्चित करना। **जैसे:** सुदिन साधि नृप चलेउ बजाई। 3. नियंत्रण में रखना। **जैसे:** मन को साधना सहज नहीं है। 4. अभ्यास करना।

साधारण *वि. (तत्.)* 1. जिसमें अन्यों की तुलना में कोई विशेषता या अधिकता न हो। 2. जो सामान्य रूप से सब जगह होता या पाया जाता हो। normal 3. मामूली, सर्वसामान्य, महत्त्वहीन । **जैसे:** वह तो एक साधारण सी घटना थी। usual 4. सरल। **जैसे:** साधारण प्रश्न ही पूछे गए थे। simple विलो. असाधारण=विशेष।

साधारणत: *क्रि.वि. (तत्.)* सामान्य तौर पर, मामूली तौर पर; प्रायः, अक्सर। **पर्या.** सामान्यत:। **जैसे:** वह साधरणत: श्वेत परिधान में ही रहते हैं।

साधु *वि. (तत्.)* 1. उत्तम, अच्छा; उचित; प्रशंसनीय। **जैसे:** वह साधु स्वभाव इंसान है। 2. व्याकरण की दृष्टि से शुद्ध। 1. सांसारिक मोह त्याग कर विरक्त जीवन व्यतीत करने वाला व्यक्ति, संत। **जैसे:** हिमालय में अनेक साधु तपस्या में रत हैं। 2. सज्जन, सदाचारी, उत्तम प्रकृति का मनुष्य। **जैसे:** साधु जनों की कृपा से ही दीनहीनों का भला होता है। **क्रि.वि.** शाबाश, बहुत अच्छा, वाह-वाह। **जैसे:**साधु**!** साधु क्या स्वर लहरी थी।

साधुवाद *पुं. (तत्.)* 1. किसी के को अच्छा काम करने पर खुश होकर उसे 'साधु-साधु' अर्थात 'शाबाश' या 'वाह-वाह' आदि कहना। शाबाशी 2. किसी के अच्छे कार्य को प्रोत्साहन देने हेतु प्रशंसात्मक ध्वनि।

साध्य *वि. (तत्.)* 1. जिसका साधन किया जाना हो। सिद्ध करने योग्य। 2. होने योग्य, संभव। **जैसे:** यह कार्य सहज रूप से साध्य है। 3. जिसे (रोग को) चिकित्सा द्वारा दूर किया जा सकता हो। **जैसे:** यह साध्य रोग है। विलो.असाध्य पुं. 1. रेखाग. गणित की वह समस्या जिसे प्रमाणपूर्वक सिद्ध किया जाए। प्रमेय

proposition 2. व्या.द. वह पदार्थ जिसका अनुमान किया जाता है।

सान *[तद्.>शाण] स्त्री.* 1. एक प्रकार का कठोर पत्थर जिस पर चाकू, कैंची, अस्त्रों आदि की धार तेज की जाती है। 2. एक पत्थर जिस पर घिसकर सोने की परीक्षा की जाती है।

सानना *स.क्रि. (तद्.<संधान)* शा.अ. गूँथना। **सा.अ.** 1. आटा, चूर्ण आदि को पानी या तरल पदार्थ में मिलाकर गीला करना। 2. मिलाना, सम्मिलित करना। 3. किसी को अच्छे काम या बुरे काम में सम्मिलित करना।

सानी *स्त्री. (देश.)* गाय, भैंस और बैलों आदि का वह आहार जो खली, बिनौला, चारा आदि को पानी में सानकर खिलाया जाता है। *वि. (अर.)* 1. बराबरी का, जोड़ का, तुल्य। 2. दूसरा। **जैसे:** कार्टून बनाने में तुम्हारा कोई **सानी** नहीं।

सान्निध्य *पुं. (तत्.)* निकट या पास-पास होने का भाव। निकटता, समीपता, साथ-साथ होने की स्थिति। proxinity

सापेक्ष *वि. (तत्.)* 1. जिसमें किसी अन्य बात की अपेक्षा हो, आपेक्षिक। 2. किसी की अपेक्षा करने वाला, किसी दूसरे पर आधारित। relative **भाव** सापेक्षता।

सापेक्षत: *अव्य. (तत्.)* सापेक्षता के साथ। **दे.** सापेक्ष।

साप्ताहिक [सप्ताह+इक] *वि. (तत्.)* शा.अर्थ सप्ताह से संबंधित। सा.अर्थ. 1. जो सप्ताह में एक बार हो। **जैसे:** साप्ताहिक पत्रिका। 2. प्रति सप्ताह होने वाला। **जैसे:** हमारे यहाँ बैंकों में साप्ताहिक अवकाश सोमवार को होता है। 3. सात दिनों तक चलने वाला। **जैसे:** साप्ताहिक यज्ञ।

साप्ताहिक बाजार *पुं. (तत्.+फ़ा.)* प्रत्येक सप्ताह में किसी एक निश्चित दिन लगने वाला बाजार, दिन विशेष पर लगने वाला बाजार।

साफ़ *वि. (अर.)* 1. बिना मिलावट का, शुद्ध, स्वच्छ। 2. जिसमें किसी प्रकार का मैलापन (अँधेरा) न हो। **जैसे:** साफ़ आसमान। **विलो.** गंदा या मैला।

साफ़ सुथरा *वि. (देश.)* स्वच्छ और सुंदर, पूर्णत: स्वच्छ। **जैसे:** विद्यालय साफ सुथरा था। *(लाक्ष.)* **निर्दोष** उसका जीवन तो साफ सुथरा है।

साफा *पुं. (अर.)* 1. पुरुषों के सिर पर बाँधने की चौडे पन्ने वाली पगड़ी। turban

साबिका *पुं. (अर.)* 1. मुलाकात, भेंट। 2. सामना, मुकाबला, वास्ता। 3. संपर्क, व्यावहारिक संबंध, सरोकार। **जैसे:** उस विद्वान से तुम्हारा कभी साबिका नहीं पड़ा।

साबित *वि. (फ़ा.)* 1. प्रमाणित, सिद्ध। **जैसे:** आपका अपराध तो साबित हो गया। 2. जो टूटा-फूटा न हो, सारा, समूचा, साबुत। **जैसे:** उड़द की साबित दाल, साबित चने।

साबुत/साबूत *वि. (अर.)* **दे.** साबित।

साबूदाना/सागूदाना *(आं.>सैगो+फा) पुं. (अं+फ़ा.)* सागूवृक्ष के तने के गूदे से तैयार किये हुए दाने, जो सुपाच्य होते हैं तथा पानी या दूध में उबाल कर या अन्य विधियों से खाये जाते हैं।

साभार *(तत्.) क्रि.वि.* आभार मानते हुए, कृतज्ञतापूर्वक एहसान मानते हुए, विनम्रतापूर्वक। **जैसे:** मैं साभार आपका उपहार ग्रहण करता हूँ।

सामंजस्य *पु. (तत्.)* 1. वह स्थिति या भावना जिसमें दो पक्षों के बीच परस्पर अनुकूलता की भावना हो। **पर्या.** मेल, अनुकूलता।

सामंत *पुं. (तत्.)* 1. (मध्ययुग में) राजा के अधीनस्थ वह सरदार जिसे स्वयं या उसके पूर्वजों को किसी उल्लेखनीय राजकीय सेवा के बदले कुछ गाँव और उसके राजस्व संबंधी अधिकार प्राप्त हुए हों/थे। feudal, lord

सामंतवाद *पुं. (तत्.)* (मध्यकाल में) वह व्यवस्था जिसमें सामंतों को राजा द्वारा प्रदत्त आर्थिक, राजनीतिक और प्रशासनिक अधिकार प्राप्त थे। **पर्या.** सामंतशाही, सामंती व्यवस्था। feudalism सामंत।

सामतशाही *स्त्री. (तत्.+फ़ा.)* प्राचीनकाल में यूरोपीय देशों में प्रचलित वह राजनैतिक व्यवस्था जिसमें राज्य की समस्त शक्तियाँ राजा या राजा द्वारा नियुक्त प्रतिनिधि के अधीन होती थीं और 'राजा' का पद उत्तराधिकार के रूप में उसके पुत्र को मिलता था। **दे.** सामंतवाद feudalism

सामग्री *स्त्री. (तत्.)* व्यु.अर्थ समग्र होने का भाव। सा.अ. 1. वे सारी वस्तुएँ जिनका किसी कार्य के संपादन में उपयोग होता हो। 2. घर-गृहस्थी**,** संबंधी सारी वस्तुएँ।

सामयिक [समय+इक] *वि. (तत्.)* 1. (उल्लिखित) समय विषयक। 2. वर्तमान समय का। **जैसे:** सामयिक साहित्य, सामयिक विषय current सामयिक चर्चा topical 2. समयानुसार उचित, उपयुक्त या ठीक।

सामर्थ्य *पुं. (तत्.)* शा.अ. समर्थ होने का भाव, योग्यता। *सा.अ.* शक्ति, ताकत, क्षमता। **जैसे:** आज आपके सामर्थ्य की परीक्षा होगी।

सामवेद *पुं. (तत्.)* चार वेदों में से तीसरा वेद। **टि.** अन्य तीन वेद हैं-ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद।

सामवेदी *पुं.* सामवेद का अनुयायी विद्वान, सामवेद का ज्ञाता।

सामाजिक *[समाज+इक] वि. (तत्.)* 1. समाज से संबंध रखने वाला। **जैसे:** सामाजिक विषय। समाज का। **जैसे:** सामाजिक संगठन। 2. ला.अर्थ सभ्य। 3. *पुं.* प्राचीन अर्थ काव्य का पाठक या श्रोता, नाटक (रूपक) का दर्शक। **पर्या.** सहृदय।

सामाजिकता *स्त्री. (तत्.)* समाज के सर्वमान्य सिद्धांतों अथवा नियमों के अनुसार आचरण करने की भावना।

सामान्य *वि. (तत्.)* 1. किसी विशेषता या खासियत से रहित, सामान्य, साधारण, मामूली, औसत दर्जे का। **उदा.** मेरा मित्र रमेश एक सामान्य व्यक्ति है। 2. जो हर स्थिति, अवस्था तथा समुदाय में समान रूप से दिखाई दे। सार्वजनिक, आम। 3. तुच्छ। **जैसे:** यह एक **सामान्य** अपराध है। 4. (दर्शन) वैशेषिक दर्शन के अनुसार छह मूलभूत पदार्थों में से एक।

सामान्यत: *अव्य. (तत्.)* 1. सामान्य रूप से, आमतौर पर। 2. जैसा प्राय: होता है।

सामिष *वि. (तत्.)* वह (भोजन) जो आमिष (मांस, मछली आदि) से युक्त हो। **जैसे:** सामिष भोजन हमारे यहाँ नहीं खाया जाता है।

सामुदायिक *[समुदाय+इक] वि. (तत्.)* 1. समुदाय से संबंधित 2. समुदाय के सभी लोगों का। 3. समुदाय में होने वाला।

सामुदायिक केंद्र *पुं. (तत्.)* 1. वह स्थान/भवन जहाँ समुदाय के सभी लोग किसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए एकत्र होते हैं। 2. वह स्थान जहाँ समाज के लोग किसी समस्या के समाधान मनोरंजन, आपसी संपर्क बनाने या उत्सव आदि मनाने के लिए एकत्र होते हैं। **पर्या.** समाज-सदन, समाज-भवन, समाज-केन्द्र।

सामूहिक [समूह+इक] *वि. (तत्.)* 1. बहुत से लोगों से संबंध रखने वाला। **जैसे:** सामूहिक जीवन। 2. समूह में (अकेले नहीं) किया गया (कार्य)। **जैसे:** सामूहिक खेती, सामूहिक योगदान। **विलो.** वैयक्तिक, एकल।

साम्य *पुं. (तत्.)* **दे.** समता।

साम्राज्य *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ सम्राट के अधीनस्थ सार्वभौम राज्य। सा.अर्थ वह विस्तृत भू-क्षेत्र अथवा देशों का समूह जिन पर एक ही प्रभुत्वसंपन्न शासक का राज हो। **जैसे:** गुप्त साम्राज्य, मुगल साम्राज्य, ब्रिटिश (बर्तानवी) साम्राज्य। empire ला.अर्थ किसी क्षेत्र या कार्य विशेष में एक ही व्यक्ति अथवा समूह का विस्तृत अधिकार। **जैसे:** टाटा/बिरला साम्राज्य (व्यापार क्षेत्र में)

सायबान *पुं. (फ़ा.)* मकान या कमरे के आगे छाया के लिए बनाई गई टीन आदि की छत। (शेड)

साया *पुं. (फा.)* 1. छाया। **जैसे:** पेड़ का साया शीतल होता है। 2. परछाईं। **जैसे:** बालक पानी में अपना साया देखकर प्रसन्न हो गया। 3. संगति का प्रभाव। **जैसे:** जब से तुम पर उनका साया पड़ा है बहुत बदल गए हो। 4. भूत-प्रेत की बाधा। **जैसे:** उसके व्यवहार में प्रेत का साया नज़र आता है। 5. महिलाओं का साड़ी के नीचे पहनने का वस्त्र, पेटीकोट। 6. आश्रय। **मुहा.** साया हट जाना-आश्रयहीन हो जाना।

सारंगी *(तद्.<सारंग) स्त्री.* (संगी) एक प्रसिद्ध तंतु वाद्य जिसमें कसे हुए संलग्न तारों को गज से रेतकर बजाया जाता है।

सार *पुं. (तत्.)* 1. किसी वस्तु का मूल तत्व, सत्व, अर्क, स्वरस। 2. लिखी या कही हुई बात का अति संक्षिप्त रूप या विवरण। 3. तथ्य या गुण। **जैसे:** उस बात में कोई सार नहीं है। 4. निष्कर्ष, तात्पर्य।

सारणी स्त्री. *(तत्.)* 1. सुनिश्चित क्रम में स्तंभवार प्रस्तुत विन्यास (जिनका उपयोग कर संबंधित तथ्यों या आँकडों की जानकारी प्राप्त की जा सकती है।) **जैसे:** रेलवे की समय-सारणी। table

सारथी *पुं. (तत्.)* रथ हाँकने वाला, सूत।

सारस *पुं. (तत्.)* हंस की जाति का एक सफेद रंग का सुंदर पक्षी जिसकी टाँगें लम्बी होती हैं तथा वह विशेषत: नदी या तालाब आदि के पास पाया जाता है।

सारहीन *वि. (तत्.)* 1. जिसमें कोई उत्तम तत्त्व न हो। नि:सार। **पर्या.** सारशून्य। **जैसे:** यह कथा सारहीन है। 2. जिसमें से सार निकाल लिया गया हो। **जैसे:** सारहीन दूध सपरेटा। toned 3. शुष्क, सूखा। 4. बलहीन, कमज़ोर।

सारांश *पुं. (तत्.)* 1. किसी लेख, अनुच्छेद, कथन, भाषण, विषयवस्तु आदि का मुख्य आशय। 2. तात्पर्य, निष्कर्ष, आशय; संक्षेप। abstract **जैसे:** 'पर्यावरण' लेख का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

सारा *वि. (देश.)* 1. जितना हो सकता हो, वह सब, समस्त, सकल, अखिल, सम्पूर्ण। **जैसे:** सारा अन्न, सारे जीव, सारी जनता। 2. प्रारंभ से अंत तक, समग्र, समस्त।

सार्थक *वि. (तत्.)* शा.अर्थ अर्थ सहित; जिसका कोई अर्थ हो, अर्थपूर्ण, अर्थयुक्त, उपयोगी, लाभदायक, सफल। **जैसे:** सार्थक जीवन। significant, fruit ful **विलो.** निरर्थक।

सार्थकता *स्त्री. (तत्.)* सार्थक यानी उपयोगी अथवा लाभदायक होने का भाव। उपयोगिता।

सार्थवाह *पुं. (तत्.)* व्यापारियों/सौदागरों की टोली/काफिले का मुखिया; व्यापारी, सौदागर। वह व्यापारी जो काफिला बनाकर अपना माल बेचने के लिए दूर-दूर तक जाता हो। प्राचीन प्रयोग।

सार्वकालिक [सर्वकाल+इक] *वि. (तत्.)* 1. जिसका संबंध सभी कालों से हो। 2. हर समय रहने वाला। **जैसे:** ईश्वर एक सार्वकालिक सत्ता है।

सार्वजनिक [सर्वजन+इक] *वि. (तत्.)* शा.अर्थ सर्वजन संबंधी। सा;अ. 1. सब लोगों से संबंध रखने वाला। **जैसे:** सार्वजनिक समारोह, सार्वजनिक घोषणा। 2. समान रूप से सभी लोगों के उपयोग का। **जैसे:** सार्वजनिक शौचालय। **पर्या.** सार्वजनीन।

सार्वजनिक स्थल *पुं. (तत्.)* सर्वसाधारण के उपयोग के लिए स्थान; सब लोगों के लिए समान रूप से काम आने वाला मैदान या भवन। **उदा.** सार्वजनिक स्थल पर शराब पीना अथवा धूमपान करना अपराध है। public place

सार्वदेशिक [सर्वदेश+इक] *वि. (तत्.)* सारे देश से संबंध रखने या सारे देश में होने वाला। **जैसे:** आज पर्यावरण के संबंध में सार्वदेशिक सभा होगी। univercal

सार्वभौम *वि. (तत्.)* **दे.** सार्वभौमिक।

सार्वभौमिक *वि. (तत्.)* शा.अर्थ संपूर्ण भूमि से संबंध रखने वाला। **जैसे:** सार्वभौमिक सत्य। सा.अ. 1. जाति, धर्म, वर्ग, लिंग या शिक्षा के आधार पर भेदभाव के बिना सभी देशों पर लागू होने वाला। **जैसे:** सार्वभौमिक/सार्वभौम वयस्क मताधिकार। universal 2. स्थानीय, राष्ट्रीय अथवा किसी भी प्रकार के संकुचित विचारों से रहित। comopolition

साल[1] *पुं. (तत्.)* वनों में होने वाला लंबे और पतले पत्तों वाला एक बड़ा पेड़ तथा जिसके फूलों की सुगंध बहुत मादक होती है। शाल या साखू नामक वृक्ष।

साल[2] *पुं. (तद्.>शल्य)* 1. सालने का भाव, मानसिक कष्ट या पीड़ा, चुभन। 2. काँटा, नुकीली वस्तु।

साल[3] *पुं. (फ़ा.)* वर्ष। **जैसे:** बालक की उम्र पाँच **साल** है।

सालगिरह *स्त्री. (फ़ा.)* वर्षगाँठ, बरस-गाँठ; जन्म-दिन। **टि.** इस शब्द का प्रचलन तब हुआ माना जाता है जब बरस बीत जाने पर रस्सी में गाँठ लगाकर उम्र सूचक वर्षों की संख्या गिनी जाती थी। birth day

सालन *पुं. (तद्. स-लवण/फ़ा)* 1. पकी हुई मसालेदार और रसेदार तरकारी। 2. मसाला डालकर पकाया गया कोई रसेदार नमकीन व्यंजन।

सालना *स.क्रि. (तद्. शल्य)* 1. कष्ट देना, दुख पहुँचाना। 2. एक लकड़ी में छेद करके उसमें

दूसरी लकड़ी घुसाना। *अ.क्रि.* मानसिक कष्ट होना, खटकना, मन में कोई बात चुभना।

साला *पुं. (तद्.>श्लायक)* 1. पत्नी का भाई। **जैसे:** शकुनि धृतराष्ट्र का साला था। 2. इस संबंध की सूचक एक प्रकार की गाली। एक अपमानसूचक शब्द। 3. **दे.** शाला।

सालिसिटर *पुं.(अं.)* वह वकील जो प्राय: न्यायालय में उपस्थित न होकर भी मुकदमों की तैयारी करता है। 'न्यायाभिकर्ता'

सावधान *वि. (तत्.)* 1. ध्यानपूर्वक; ध्यान देने वाला, चौकस, सचेत। 2. **अव्य.** कवायद करते समय तनकर खड़े रहने की स्थिति में आने के लिए अनुदेशक द्वारा दिया गया समादेश।

सावधानी *स्त्री. (तत्.)* खतरे या गलती से बचने के लिए सजग/सचेत रहने का भाव। **दे.** सावधान।

सावन *पुं. (तद्.>श्रावण)* 1. भारतीय महीनों में आषाढ़ और भादों के बीच का महीना 'सावन'। जो बरसात और हरियाली के लिए प्रसिद्ध होता है। श्रावण 2. अंग्रेजी महीनों में प्राय: जुलाई, अगस्त का महीने का काल। **टि.** सूर्य की परिक्रमा करते समय इन दिनों में पृथ्वी 'श्रवण' नामक नक्षत्र की दिशा में होती है। अत: इस मास का नाम 'श्रावण' है।

सास *स्त्री. (तद्.>श्वश्रू)* पत्नी के लिए पति की माता और पति के लिए पत्नी की माता। **टि.** स्त्रीलिंग 'सास' का पुंल्लिंग ससुर। mother-in-low

साहचर्य *पुं. (तत्.)* 1. 'सहचर' होने का भाव, सहचरता। 2. किसी के साथ रहने या होने का भाव। संग, साथ। मित्रता **जैसे:** आपका साहचर्य पाकर हम धन्य हो गए।

साहब *पुं. (अर.)* 1. स्वामी, प्रभु, मालिक। 2. एक सम्मानसूचक शब्द। **जैसे:** गुरु ग्रन्थ साहब। लाट साहब इत्यादि।

साहबजादा *पुं. (अर.)* किसी अधिकारी या बड़े आदमी का पुत्र।

साहस *पुं. (तत्.)* 1. मन की वह दृढ़ता जो किसी कठिन कार्य को करने में या आत्मरक्षण में प्रवृत्त करती है। **पर्या.** हिम्मत, दिलेरी courage 2. बलपूर्वक किसी का धन लूटना या युद्ध में प्रवृत्त होना।

साहसिक *वि. (तत्.)* **दे.** साहसी। **भाव.** साहसिकता।

साहसी *वि. (तत्.)* जिसके पास साहस हो। **पर्या.** हिम्मती, दिलेर। courageous

साहित्य *पुं. (तत्.)* व्यु.अर्थ 'सहित' होने का भाव। 1. (सीमित अर्थ में) किसी भी भाषा में प्राप्त गद्य अथवा पद्ध संबंधी समस्त रचनात्मक ग्रंथों, लेखों आदि का समूह। **उदा.** हिंदी साहित्य, तुलसी साहित्य, प्रसाद साहित्य आदि। 2. (विस्तृत अर्थ में) (i). किसी भी उत्पाद से संबंधित वह विस्तृत विवरण जो उसके विज्ञापन के लिए वितरित किया जाता है; (ii) रचनात्मक या सर्जनात्मक साहित्य से इतर किसी भी विषय पर प्रकाशित वह सामग्री जो उससे संबंधित ज्ञानार्जन के लिए प्रस्तुत की जाए। **उदा.** विज्ञान साहित्य, बौद्ध साहित्य, ज्योतिष साहित्य आदि।

साहित्यकार *पुं. (तत्.)* साहित्य की रचना करने वाला। **दे.** साहित्य।

साही *स्त्री.* जंगल में बिल बनाकर रहने वाला एक जंतु जिसके शरीर पर लम्बे काँटे होते हैं। सेई। **विशेष**-आक्रमण होने पर यह अपने काँटों को खड़ा कर लेता है जिससे शरीर सुरक्षित रह सके। शत्रु काँटे चुभने से भाग जाता है।

साहूकार *पुं. (देश.)* 1. ब्याज पर रुपयों के लेने-देने से आजीविका चलाने वाला व्यक्ति, महाजन। 2. धनी व्यक्ति, सेठ। 3. व्यापारी।

सिंकाई *स्त्री. (देश.)* 1. सेंकने की क्रिया या भाव। सेंकाई। 1. आग में या आँच पर रखकर किसी वस्तु को गर्म करने का भाव। **जैसे:** सुबह की बनी पूड़ी, सब्जी आदि को आग में सिंकाई करके खाते हैं। 3. शरीर के सूजे हुए किसी अंग, पैर आदि को गर्म पानी या गर्म कपड़े आदि से गर्म करने का भाव। **दे.** सेंकना।

सिंघाड़ा *पुं.* प्राय: तालाब में पानी के तल पर फैली हुई जालनुमा बेल जिस पर लगने वाले फूल एवं फल। इसके फल तिकोनाकार हरे छिलके से युक्त होते हैं तथा छिलका उतारने पर उनमें से श्वेत रंग की गिरी निकलती है। सिंघाड़े उबालकर भी खाए जाते हैं। इन्हें सुखाकर उनका आटा बनता है जो व्रत इत्यादि में खाया जाता है।

सिंचाई *स्त्री. (तद्.सिंचन)* खेतों में खड़ी फसल और पेड़-पौधों को यथासमय निश्चित अंतराल में पानी देने की पद्धति। irrigation

सिंचित *वि. (तत्.)* जिसकी सिंचाई हो चुकी हो, सींचा हुआ। **दे.** सिंचाई।

सिंदूर *पुं. (तत्.)* 1. रासायनिक प्रक्रिया द्वारा पारे से तैयार केसरिया रंग का चूर्ण। 2. उपर्युक्त केसरिया रंग का चूर्ण जिससे विवाहिता हिंदू महिलाएँ अपनी माँग भरती हैं। 3. तेल में सना, केसरिया रंग जिसका हनुमान, भैरव आदि की मूर्तियों पर लेपन किया जाता है। vermillion **मुहा.** सिंदूर उजड़ना-विवाहिता हिंदू स्त्री के पति की मृत्यु हो जाना (जिसके बाद वह अपनी माँग में सिंदूर नहीं भरती)। सिंदूर चढ़ना-कुमारी हिंदू बाला का विवाह होना।

सिंदूरदानी *स्त्री. (तत्.)* सिंदूर रखने की डिबिया।

सिंदूरी *वि. (तत्.)* सिंदूर के रंग का, पीला मिला लाल।

सिंधु *पुं. (तत्.)* तिब्बत से निकलकर आधुनिक भारत के लद्दाख प्रदेश में होती हुई पाकिस्तान के कराची के पास अरब सागर में मिलने वाला नद (बड़ी नदी)। **टि.** भाषाविद् इसी 'सिंधु' से 'हिन्द' या 'इंडस' India का विकास मानते हैं।

सिंह *पुं. (तत्.)* 1. वन में रहने वाला बिल्ली की प्रजाति का अत्यंत बलवान हिंसक जन्तु जिसके नर की गर्दन में बड़े-बड़े घने बाल होते हैं। बबर, केशरी, मृगराज Lion 2. समास युक्त पद के अंत में प्रयुक्त होने से उस वर्ग का सर्वश्रेष्ठ। **जैसे:** पुरुष सिंह (जो पुरुषों में श्रेष्ठ हो)। 3. (ज्यो.) आकाश में स्थित बारह राशियों में से एक। leo

सिंहनाद *पुं. (तत्.)* सा.अर्थ सिंह का गर्जन, शेर की दहाड़। ला.अर्थ युद्ध के अवसर पर सैनिकों की हुंकार। 2. ललकार के स्वर में कही हुई बात।

सिंहावलोकन *पुं. (तत्.)* 1. सिंह की तरह पीछे देखते हुए आगे बढ़ना। 2. संक्षेप में पिछली बातों का या बीती घटनाओं का सरसरी दृष्टि से चिंतन करना।

सिंहासन *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ वह आसन (राजगद्दी) जिसके हत्थों पर सिंह की मुखाकृति बनी होती है। राजाओं के बैठने की गद्दी।

सिकड़ी *स्त्री. (तद्.>श्रृंखला)* 1. दरवाज़ा बंद करने के लिए लगाई जाने वाली साँकल। 2. गले में पहनने का एक गहना।

सिकुड़न *स्त्री. (तद्.>संकोचन)* 1. ठंड आदि के प्रकोप से या अन्य किसी कारण से किसी पदार्थ या शरीर के अंगों का आयत कुछ कम होना, संकुचन होना। 2. सिमटना। **जैसे:** अधिक ठंड पड़ने से हाथ-पैर की अंगुलियों में सिकुड़न पड़ जाती है। 2. सिकुड़ने के कारण वस्त्र आदि में पड़ी शिकन या सिलवट। **जैसे:** इस्तरी करने से कपड़े की सिकुड़न दूर हो जाती है। **विलो.** फैलना।

सिकुड़ना *अ.क्रि. (तद्.)* धोने पर नए कपड़े की लंबाई चौड़ाई कुछ कम हो जाना; संकुचित होना। **विलोम-**फैलना।

सिक्का *पुं. (अर.)* 1. टकसाल में ढली धात्विक मुद्रा जो क्रय-विक्रय, लेन-देन के काम आती है; रुपया-पैसा। 2. छाप, मुहर। 3. धाक, रोब। 4. पद्धति, तर्ज **मुहा.** सिक्का जमना या बैठना-किसी व्यक्ति का विशेष प्रभावशाली हो जाना, रोब जमना, आतंक छाना।

सिजदा *पुं. (फ़ा. सज्दः)* शा.अर्थ ईश्वर के लिए सिर झुकाना, खुदा के आगे सिर झुकाना। वि.अ. मुसलमानों की उपासना का एक अंग जिसमें माथा, घुटने और पैरों की उँगलियाँ ज़मीन पर लगती हैं। **तुल.** रुकूअ-इसमें घुटने ज़मीन पर नहीं लगाए जाते। मुस्लिम मत में उपासना (नमाज) के ये दो अंग (सिजदा और रुकूअ) अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

सिटपिटाना *अ.क्रि. (देश.-अनु.)* 1. भयभीत होकर या पोल खुलने से संकोचवश चुप होना। 2. दब जाना, घबरा जाना। 3. असमंजस या दुविधा में पड़ जाना। सकपकाना। **मुहा.** सिट्टी - पिट्टी गुम हो जाना-सारी हेकड़ी भूल जाना।

सितम *पुं. (फ़ा.)* अत्याचार, जुल्म।

सितमगर *वि. (फ़ा.)* अत्याचार करने वाला, अत्याचारी। जुल्मी।

सितार *पुं. (फ़ा.)* (संगी.) वीणा की तरह का एक वाद्य यंत्र, जिसमें सात तार प्रधान होते हैं तथा सहायता (तड़प) के लिए ग्यारह से तेरह तार होते हैं। वीणा की तुलना में इसमें एक ही तुंबा होता

है जिसे नीचे रखकर उसके सहारे वाद्ययंत्र को ऊर्ध्वाधर खड़ाकर बजाया जाता है। **तुल.** वीणा।

सितारा *पुं. (फ़ा. सितार:) सा.अ.* 1. तारा, नक्षत्र। 2. कपड़ों आदि पर टाँकने में प्रयुक्त चमकीली गोल बिंदी। **जैसे:** सलमा-सितारा। *ला.अर्थ*-भाग्य, ग्रहस्थिति। **तुल.** सलमा = बेलबूटों की कढ़ाई के लिए प्रयुक्त चमकीले (सोने-चांदी के) तार या धागे। **मु.** सितारा चमकना-भाग्य का उदय होना।

सिद्ध *वि. (तत्.)* 1. जिसकी आध्यात्मिक अथवा अन्य कोई योग साधना पूरी हो गई हो। 2. प्रमाणों आदि से पुष्ट। proved *पुं.* संत, ज्ञानी, योगी, महात्मा saint

सिद्‌ध करना *स.क्रि. (तद्.)* प्रमाणित करना, किसी कथन को प्रमाण, युक्ति आदि से पुष्ट करना।

सिद्धि *स्त्री. (तत्.)* 1. किसी काम के पूर्ण होने की अवस्था/भाव। 2. कार्य में सफलता की प्राप्ति। सफलता। **जैसे:** वह अपनी कार्य सिद्‌धि से बहुत ही खुश है। 3. प्रमाणित होने का भाव। 4. हिंदू शास्त्रों में वर्णित आठ सिद्‌धियाँ-अणिमा (बहुत छोटा हो जाना), महिमा (बहुत बड़ा हो जाना), लघिमा (बहुत हल्का हो जाना), गरिमा (बहुत भारी हो जाना), प्राप्ति (कुछ भी प्राप्त होना), प्राकाम्य (इच्छा पूरी होना), ईशित्व (स्वामी होना), वशित्व (सब कुछ वश में होना)।

सिद्धांत *पुं. (तत्.)* 1. धर्म, दर्शन, राजनीति आदि क्षेत्रों के विभिन्न संप्रदायों द्वारा विवेचन के पश्चात् स्वीकृत निष्कर्ष। 2. किसी कर्म को करने अथवा किसी ज्ञान की दिशा में आगे बढ़ने के लिए मार्गदर्शक के रूप में अपनाया गया विचार-बिंदु। principle 3. सा.अर्थ नियम। **तु.** वाद।

सिद्धांततः *अव्य. (तत्.)* 1. सिद्‌धांत के अनुसार 2. नियमानुसार।

सिद्धांतवादी *पुं. (तत्.)* अपने सिद्‌धांतों पर अटल रहते हुए आचरण करने वाला व्यक्ति।

सिधारना *अ.क्रि. (देश.)* 1. प्रस्थान करना, जाना (सम्मानपूर्ण भाषा में) **जैसे:** आप यहाँ से कब सिधारेंगे। 2. मरना (सम्मानजनक भाषा में) **जैसे:** आज प्रातः दादा जी स्वर्ग सिधार गए। **तु.** पधारना।

सिनेमा *पुं. (अं.)* 1. वह स्थान या भवन जहाँ लोग मनोरंजन के लिए चलचित्र या फिल्म देखने के लिए जाते हैं। 2. कलात्मक फिल्म बनाने का व्यापारिक क्षेत्र। 3. चलचित्र, फिल्म। **जैसे:** भारतीय सिनेमा एक अति लाभकारी उद्‌योग है। **वि.** यह 'cinema' cinematography का संक्षिप्त रूप है। अब इसे और छोटा किया जा रहा है। **जैसे:** सिनेतारिका, सिनेजगत इत्यादि।

सिफ़ारशी *वि. (फ़ा.)* 1. सिफारिश से जिसे लाभ हुआ हो। 2. जिसके लिए सिफ़ारिश करने वाले लोग हों। 3. सिफ़ारिश संबंधी।

सिफ़ारिश *स्त्री. (फ़ा. सुफ़ारिश)* 1. किसी बात को मनवाने के लिए किसी योग्य या सक्षम अधिकारी के माध्यम से प्रभावपूर्ण अनुरोध। पैरवी, अनुशंसा। **उदा.** योग्यता होने पर भी आजकल सिफारिश होना जरूरी है। reommendation 2. किसी अधिकारी से किसी के विषय में कुछ प्रशंसात्मक बातें कहना जिससे उसका हित हो। **जैसे:** उसने एक ईमानदार, योग्य व कार्यकुशल व्यक्ति की नौकरी के लिए उनसे सिफारिश की है।

सिमटना *अ.क्रि. (देश.)* 1. संकुचित होना, सिकुड़ना, आकार छोटा होना। 2. (आँखों का) मुँदना। 3. शरमाना, लज्जा के कारण सिकुड़ना। 4. विनय अथवा ग्लानि के कारण संकोच करना। 5. भय के कारण अंगों को समेट लेना।

सियार *पुं. (तद्.<श्रृगाल)* एक जंगली जानवर जो लगभग कुत्ते के आकार का होता है तथा जिसकी पूँछ बालदार एवं चौड़ी होती है। **पर्या.** गीदड़।

सियासत *स्त्री. (फ़ा.)* शा.अर्थ व्यवस्था। सा.अर्थ **1.** राजनीति, 2. शासन। **जैसे:** सियासत का काम बहुत पेचीदा होता है।

सिर *पुं. (तद्.<शिरस्)* 1. शरीर का सबसे ऊपर का भाग, गर्दन के ऊपर का भाग जिसमें कान, आँख, नाक और खोपड़ी होती है। शिर, मस्तक। 2. मस्तिष्क। 3. **(ला.)** किसी वस्तु का ऊपरी भाग; चोटी। **मुहा.** सिर आँखों पर होना- किसी बात को शिरोधार्य करना, माननीय होना। सिर आँखों पर बैठाना- बहुत सम्मान से स्वागत करना। सिर उठाना- किसी के विरोध में खड़े होना। सिर ऊँचा होना- प्रतिष्ठा या सम्मान

मिलना। सिर खपाना/मारना- बहुत सोच-विचार करना। सिर चढ़ा- धृष्टतापूर्वक बात करने वाला। सिर नीचा होना- अपमानित होना, लज्जित होना। सिर पर पाँव रखकर भागना- तेजी से भागना।

सिरका *पुं. (फ़ा.)* अंगूर, गन्ना, जामुन आदि के रस का वह रूप जिसमें कई दिनों तक धूप में रखने पर किण्वन द्वारा अम्लीय गुण पैदा हो जाता है और जो अचार आदि खाद्य पदार्थों के लिए परिरक्षक preservative का काम करता है।

सिरजनहार *पुं. (तद्.)* सृष्टि रचने वाला, परमात्मा संसार का रचयिता।

सिरफिरा *वि. (देश.)* जिसका सिर फिर गया हो अर्थात् विकृत मस्तिष्क वाला। 2. पागलों जैसा: असामान्य व्यवहार करने वाला।

सिरहाना *पुं. (देश.)* शा.अ. सिर वाला (भाग) **सा.अ.** 1. पलंग, चारपाई आदि का उस दिशा वाला भाग जिधर लेटते या सोते समय सिर रखा जाता है। **जैसे:** अपने से बड़ों या पूज्यजनों को चारपाई या पलंग में सिरहाने की तरफ ही बैठाना चाहिए। 2. तकिया। **विलो.** पैंताना (पाँवों की तरफ)

सिरा *पुं. (तद्.)* 1. लंबाई वाली किसी चीज का किसी भी ओर का शुरुआती या अंतिम हिस्सा, छोर। 2. शुरू का भाग। 3. अंत का भाग। **मुहा.** सिरे का सबसे अच्छा, उच्चकोटि का।

सिरिंज *स्त्री. (अं.)* **दे.** पिचकारी।

सिर्फ़ *क्रि.वि. (अर.)* 1. कोई अन्य नहीं, केवल। **जैसे:** सिर्फ़ मैं ही जाऊँगा। 2. बस इतना ही, और कुछ नहीं, **जैसे:** मैं सिर्फ चुप रहूँगा, बोलूँगा कुछ नहीं।

सिल *पुं. (तद्.>शिल)* गेहूँ, धान आदि की कटाई के बाद खेत में टूटकर गिरी हुई अन्न या धान्य की बालियाँ या दाने। **उदा.** खेत में अन्न कटने के बाद कुछ लोग सिल बीनने जाते हैं। *स्त्री. (तद्.>शिला)* 1. पत्थर का एक बड़ा लंबा टुकड़ा, शिला, चट्टान। 2. पत्थर की समतल आयताकार पटिया जिस पर बट्टे से मसाले, दाल, चटनी आदि बाँटे या पीसे जाते हैं।

सिलवट *स्त्री. (देश.)* 1. किसी समतल के मुड़ने, दबने आदि के कारण उभरने वाला रेखाकार अंश, सिकुड़न, बल। **जैसे:** कपड़े पर सिलवटें पड़ी हैं। 2. झुर्रियाँ, **जैसे:** उसके चेहरे पर सिलवटें पड़ गई हैं।

सिलसिला *पुं. (अर.)* क्रम से एक के बाद एक होने वाली एक ही तरह की घटनाओं, क्रियाओं आदि की श्रृंखला। 2. श्रेणी, पंक्ति। 3. व्यवस्था के अनुसार क्रम। **जैसे:** कुर्सियों को **सिलसिले** से बिछाना। *वि.* नम, आर्द्र, सीला-सीला।

सिलसिलेवार *क्रि.वि. (अर.+फा.)* क्रमश:, तरतीब या सिलसिले से होने वाला। तरतीबवार, क्रमबद्ध।

सिलिंडर *पुं. (अं.)* तरल गैस रखने का गोल, लंबा पात्र। cylinder

सिल्ट *स्त्री. (अं.)* नदियों द्वारा पहाड़ों से बहाकर लाई गई मिट्टी। **पर्या.** गाद।

सिवा(य) *अव्य. (फा.)* सामान्यत: 'के' के साथ प्रयोग होता है। इसके सिवा, सिवा इसके। *सा.अर्थ-* 1. अतिरिक्त, अलावा। 2. बिना, बगैर।

सिवान *पुं. (तद्.>सीमांत)* गांव, राज्य, देश आदि की सीमा; छोर।

सिसकारी *स्त्री. (तद्.>सीत्कार)* 1. जीभ दबाते हुए मुँह से निकाली जाने वाली मध्यम स्वर में सी सी की आवाज या सीटी जैसी ध्वनि। **पर्या.** सीत्कार। **जैसे:** बच्चे ठंड लगने पर सिसकारी मारते हैं। 2. हल्के रोने की ध्वनि। सिसकी।

सिसकी *स्त्री. (अनु.)* सिसकने का स्वर, दुखभरी कराह से मिश्रित रोने का स्वर या भाव। सुबक-सुबक कर देर तक रोने का भाव।

सिहरना *अ.क्रि. (तद्.>शिशिरण)* 1. ठंड से काँपना। 2. भय से रोमांचित होना या हिचकना, ठिठकना। **जैसे:** तुम्हारी कठोर वाणी सुनकर वह सिहर गई।

सींक *स्त्री. (तद्.>इषीका)* 1. सरकंडा नामक घास की डंडी। 2. घास आदि का पतला डंठल। 3. लंबा पतला तिनका। 4. नाक में पहनने का एक आभूषण जो पतली डंडी जैसा होता है तथा जिसके ऊपरी छोर पर घुंडी बनी होती है।

सींका/छींका/छीका *पुं. (देश.)* खाने-पीने की चीजें रखने के लिए तार या रस्सी से बनाया हुआ झोलीनुमा जाल जिसे छत या अन्य ऊँची जगह से लटकाते हैं। सींका, छींका, सिकहर। **मुहा.- छींका** टूटना-बिना प्रयास के या संयोग से किसी वस्तु का मिल जाना।

सींचना *स.क्रि. (तद्.>सेचन)* पौधों, बगीचों, खेतों आदि में पानी देना। **दे.** सिंचाई।

सी *वि. (तद्.<सम)* समान, सदृश। *स्त्री.* वह शब्द अत्यंत हर्ष, पीड़ा या रसास्वादन के समय मुख से निकलता है। सीत्कार।

सीकर *पुं. (तत्.)* 1. जल-कण, पानी की बूँद। 2. वर्षा की फ़ुहार। **जैसे:** वर्षा की सीकरों से नव पल्लव नहा से रहे हैं। 3. ओस की बूँदें। *स्त्री. (देश.)* जंजीर, सीकड़।

सीख *स्त्री. (तद्.<शिक्षा)* 1. किसी घटना, उदाहरण आदि के माध्यम से सिखाई जाने वाली कोई हितप्रद बात। शिक्षा, उपदेश। **जैसे:** हमें महापुरूषों के जीवन से सीख लेनी चाहिए। 2. सलाह, मंत्रणा, परामर्श। 3. शिष्य।

सीख़चा *पुं. (फ़ा.)* लोहे की लंबी पतली छड़ जो खिडकियों, लोहे के दरवाजों में लगाई जाती हैं, छोटी सलाख।

सीट *(अं.)* 1. बस, रेलगाड़ी, सिनेमाघर आदि में व्यक्ति के बैठने के लिए बना स्थान। **पर्या.** आसन। 2. निर्वाचित पद। **उदा.** प्रति दो वर्ष में राज्यसभा की 1/3 सीटें खाली हो जाती हैं। 3. पैंट, पाजामें का वह स्थान जो कूल्हों को ढकता है। **पर्या.** आसन, पिछवाड़ा। 4. साइकिल की गद्दी। seat

सीड-ड्रिल *पुं. (अं.)* बीजों को उचित गहराई तथा उचित दूरी पर बोने के लिए ट्रैक्टर द्वारा संचालित एक आधुनिक उपकरण। seed drill

सीढ़ी *स्त्री. (तद्.>श्रेढी)* 1. किसी ऊँचे स्थान पर चढ़ने के लिए वह साधन जिसमें सीमित अंतराल में एक के बाद एक पैर रखने के स्थान बने हों। नसेनी, जीना, पैड़ी। 2. बाँस या लोहे की बनी सीढ़ी में पैर रखने के लिए बने डंडे।

सीताफल *पुं. (तत्.)* 1. सब्जी के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला, ऊपर से चितकबरा धारीदार बड़े आकार का एक फल विशेष जो ज़मीन पर फैली हुई लताओं पर लगता है। कद्दू, रामकरेला, कुम्हड़ा, काशीफल। 2. शरीफा नामक फल। **वि.** एक अनुश्रुति के अनुसार शरीफा को बंदर नहीं खाते क्योंकि यह सीताफल होता है।

सीत्कार *पुं. (तत्.)* 'सी सी' की वह ध्वनि जो अधिक ठंड या आनंद की अनुभूति के कारण सहसा मुँह से निकलती है। **जैसे:** वह ठंड से काँपता हुआ सीत्कार कर रहा था।

सीध *स्त्री. (तद्.)* 1. सीधा होने की दशा/गुण/भाव। सीधापन, सरलता, सिधाई। **जैसे:** तुम्हारी सीध का लोग अनुचित फायदा उठाते हैं। 2. (किसी के) ठीक सामने की दिशा या स्थिति। **जैसे:** इसी सीध में आगे चलकर पत्रालय है। **मुहा.** नाक की सीध में=ठीक सामने की ओर।

सीधा[1] *वि. (तद्.)* 1. जिसमें टेढ़ापन न हो। अवक्रता, सरल। **जैसे:** यह बिल्कुल सीधा मार्ग है। 2. जो ठीक अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर हो। **जैसे:** वह आते ही सीधा काम में जुट जाता है। 3. जिसमें कपट न हो, निश्छल। **जैसे:** वह अत्यंत सीधा व्यक्ति है। 4. प्रत्यक्ष। **जैसे:** तुम्हारा उनके परिवार से सीधा संबंध है। 5. दाहिना। **जैसे:** तुम सीधे हाथ से भोजन करो। **मुहा.** सीधा करना=किसी को दंड आदि उपायों से अनुकूल बनाना या सही रास्ते में लाना।

सीधा[2] पुं. *(तद्.> शुद्ध /असिद्ध)* बिना पका भोजन-चावल, आटा, दाल, तेल, घी आदि। **जैसे:** ब्राह्मण के लिए सीधा निकाल दो।

सीना *स.क्रि. (तद्.>सीवन)* 1. कपड़े, चमड़े, टाट के टुकड़ों या किताब के पन्नों आदि को सूई-धागे या सूजे-डोरी की सहायता से जोड़ना। **जैसे:** फटी कमीज़ को सीना। 2. पुं. (फा.) छाती, वक्षःस्थल।

सीप/सीपी *स्त्री. (तद्.)* मोती का किश्तीनुमा दो पाटों वाला घर। **तु.** शंख।

सीमांत प्रदेश *पुं. (तत्.)* देश की अंतिम सीमा का हिस्सा या प्रांत, सरहद के प्रांत।

सीमा *स्त्री. (तत्.)* 1. किसी गाँव, प्रदेश, देश के चारों ओर के विस्तार की अंतिम रेखा। **पर्या.** सरहद (बाउंड्री, बार्डर) **जैसे:** देश की सीमाओं की सुरक्षा अनिवार्य है। 2. नियम या मर्यादा की हद। **जैसे:** हर बात की एक सीमा होती है। **मुहा.** 1. सीमा से बाहर होना या जाना, मर्यादा का उल्लंघन करना। सीमा बंद करना-किसी चीज़ या मनुष्यों का आना-जाना बंद कर देना।

सीमाहीन *वि. (तत्.)* 1. अनंत दूरी तक फैला हुआ। जिसका अंत न हो, असीम, अनंत। **जैसे:** आकाश सीमाहीन है। 2. एक के बाद दूसरा, इस प्रकार घटनाओं के निरंतर बढ़ते जाने का गुण।

सीमित *वि. (तत्.)* सीमा में बँधा हुआ। 2. जिसका प्रभाव निश्चित सीमा के बाहर न हो। 3. सीमाबद्ध।

सीरम *पुं. (अं.)* 1. खून का थक्का बन जाने के बाद शेष द्रव भाग जिसमें प्रतिपिंड तथा कुछ वसाएँ और प्रोटीन बची रह जाती हैं। 2. साँप इत्यादि के जहर को दूर करने के लिए बनाई हुई दवा, जो इंजेक्शन के माध्यम से रोगी को दी जाती है। **पर्या.** रक्तोद Serum

सीलन *स्त्री. (तद्.* शीतलन) छत, दीवार के अंदर पानी घुसने की स्थिति दीवारों आदि में घुसने वाली नमी।

सीलना *अ.क्रि. (देश.<शीतलन)* नमी सोखने की क्रिया। छत, दीवार आदि में नमी आ जाना। सील से प्रभावित होना।

सीलबंद पुं. *(अं+फा.)* 1. (गोपनीय पत्र दस्तावेज आदि का वह लिफाफा) जिसे सरकारी या विभागीय मुहर लगाकर अच्छी तरह बंद कर दिया गया हो। 2. (कमरा, दूकान या वस्तुएँ आदि) जिन पर ताला लगाकर इस प्रकार बंद किया गया हो कि सील तोडे बिना उसे खोला न जा सके।

सीवर *पुं. (अं.)* (**जी.**) मकानों, सड़कों आदि से वर्ज्य तरल पदार्थ (पानी, मलमूत्र आदि) को ले जाने वाली नाली। **तु.** गटर Sewer

सीसा *पुं. (तद्.<सीसक)* 1. मटमैले रंग की एक भारी पर दुर्बलतम धातु जो अयस्क रूप में मिलती है तथा विद्युत की कुचालक और घर्षण-सह होती है। lead **टि.** इसे 'शीशा' से भिन्न समझें।

सु-अपवाहित *वि. (तत्.)* व्यवस्थित प्रणाली के माध्यम से पूरी तरह बहाए गए तरल वर्ज्य पदार्थ जैसे: मलमूत्र आदि)

सुअवसर *पुं. (तत्.)* 1. उत्तम अवसर, 2. अनुकूल समय, अच्छा मौका। **जैसे:** सुअवसर देख विश्वामित्र राम से बोले।

सुआ *पुं. (तद्.<सुग्गा<शुक)* 1. लाल रंग की मुड़ी हुई नुकीली चोंच वाला हरे रंग का एक पक्षी। तोता, शुक। 2. (पुं.<तद्<सुई<सूची) बोरा आदि सीने की बड़ी सुई। सूजा।

सुकर *वि. (तत्.)* 1. जो सरलता या आसानी से किया जा सके। 2. सुगम, सहज, आसान। **विलो.** दुष्कर।

सुकुमार *वि. (तत्.)* कोमल अंगों वाला। *पुं.* कोमल अंगों वाला बालक।

सुकुमारता *स्त्री. (तत्.)* कोमलता का गुण या भाव।

सुकून *पुं. (अर.)* 1. शांति, अमन; मन की शांति **जैसे:** अब दिल को सुकून मिला। 2. आराम-जैसे बीमारी में सुकून होना। 3. संतोष, इत्मीनान, धैर्य, सब्र! **उदा.** सुकून रखो, सब ठीक हो जाएगा।

सुक्ख *पुं. (तद्.)* **दे.** सुख।

सुख *पुं. (तत्.)* व्य.अर्थ **मनो.** भौतिक और/या मानसिक-दोनों स्तरों पर अनुकूल और प्रिय लगने वाली शरीर और/या मन की स्थिति जिसे हर व्यक्ति भोगने/पाने की इच्छा रखता है। **विलो.** दु:ख।

सुखद *वि. (तत्.)* सुख और आनंद देने वाला; आरामदेह। सुखदायी।

सुख-शांति *स्त्री. (तत्.)* 1. सुख और शांति। 2. आत्मिक आनंद की अनुभूति और चैन। सुकून। **जैसे:** वह सुख-शांति से यहाँ रहते हैं।

सुखाना *स.क्रि. (हिं. सूखना का प्रेरणा.)* 1. गीली चीज़ का गीलापन धूप, आग की सहायता से दूर करना। 2. गीलापन समाप्त करना, शुष्क करना; पोंछना। ला.अ. क्षीण करना; दु:खी करना।

सुगंध [सु+गंध] *स्त्री. (तत्.)* शा.अर्थ अच्छी बू (=खुशबू) 1. ऐसी गंध जो अच्छी लगती हो; खुशबू, महक।

सुगंधित *वि. (तत्.)* खुशबूदार। **दे.** सुगंध।

सुगठित *वि. (तत्.)* 1. अच्छी तरह गठा हुआ। **जैसे:** तुम्हारा सुगठित शरीर देखकर हम प्रसन्न हुए। 2. गठे हुए शरीर वाला। 3. सुडौल, सुगढ़। 4. सुसंगठित। **जैसे**: सुगठित कार्य योजना ही संस्था को लोकप्रिय बना सकती है।

सुगम *वि. (तत्.)* 1. जहाँ जाना या पहुँचना हो। 2. सरल, आसान।

सुग्राहिता *स्त्री. (तत्.)* आसानी या सुगमता से ग्रहण किए जा सकने का भाव या गुण। **पर्या.** सुग्राह्यता, सूक्ष्मग्राहिता।

सुग्राही *वि. (तत्.)* 1. जिसे आसानी या सुगमता से ग्रहण किया जा सके। **पर्या.** सूक्ष्मग्राही। 2. तुला की इतनी अधिक संवेदनशील होने की विशेषता कि सूक्ष्म से सूक्ष्म भार के अंतर को भी दर्शा सके।

सुघड़ *वि. (तद्.<सुघट)* 1. सुंदर डील-डौल वाला। **पर्या.** सुडौल। 2. सुंदर, मनोहर। 3. कुशल (कारीगर), दस्तकारी में निपुण। 4. सरलता से बनाया जा सकने वाला।

सुचारु *वि. (तत्.)* बहुत सुंदर, अति चारु, मनोहर, अत्यंत खूबसूरत। **भाव-** सुचारुता।

सुचालक *[सु+चालक] वि. (तत्.)* ऊष्मा, विद्युत आदि के संचलन में अच्छी क्षमता रखने वाला (पदार्थ) **जैसे:** ताँबा (ताम्र) *तु.* कुचालक।

सुचालक *वि. (तत्.)* ऊष्मा, विद्युत आदि के संचालन की क्षमता वाला। **जैसे:** ताँबा, एलुमिनियम आदि। **विलो.** कुचालक।

सुजान *वि. (तद्.<सुज्ञान)* शा.अर्थ अच्छा ज्ञान/अच्छी जानकारी रखने वाला। 1. बुद्धिमान, चतुर, होशियार। 2. कुशल, निपुण।

सुझाना *स.क्रि. (तद्.)* सूझना का प्रेर. रूप किसी को नई बात/विचार बताना, जिसके ध्यान में कोई बात न आई हो उसे उस बात की जानकारी देना।

सुझाव *पुं. (देश.)* 1. सुझाने की क्रिया या भाव। 2. कार्य सिद्धि के लिए जो उपाय व्यक्ति को न सूझा हो उसके विषय में दूसरे व्यक्ति द्वारा बताना। **पर्या.** परामर्श। suggesation

सुड़कना *स.क्रि. (देश.)* किसी द्रव (औषधि आदि) को नाक के छिद्रों से सुड़-सुड़ ध्वनि के साथ अंदर खींचना।

सुडौल *वि. (तत्.+पश्तो)* 1. अच्छे डील-डौल वाला, हृष्ट-पुष्ट। हट्टा-कट्टा। 2. शारीरिक दृष्टि से सुगठित अंग वाला। आनुपातिक आकार के अंगों वाला। विलो. बेडौल।

सुत *पुं. (तत्.)* पुत्र, बेटा, तनय। *स्त्री.* सुता।

सुतली *स्त्री. (देश.<सूत <सूत्र)* सा.अ. रुई, पटसन, रेशम आदि की बनी डोरी, जिसका उपयोग किसी चीज़ को बाँधने, चारपाई बुनने आदि में होता है।

सुदर्शन *वि. (तत्.)* जो देखने में अच्छा हो। **पर्या.** प्रियदर्शन। *स्त्री.* सुदर्शना। *पुं.* 1. विष्णु का चक्र, शिव। 2. एक ओषधीय पौधा जिसका फूल बड़ा और सफेद रंग का होता है।

सुदूर *वि. (तत्.)* किसी उल्लिखित स्थान से अपेक्षाकृत बहुत अधिक दूर। **उदा.** सुदूर पूर्व।

सुध *स्त्री. (तद्.)* दे. सुधि।

सुधरना *अ.क्रि (तद्.)* 1. खराब या बिगड़ी हुई चीज़ का ठीक होना, त्रुटि/दोष-मुक्त होना। 2. बुरे आचरण को छोड़कर अच्छे आचरण/व्यवहार की ओर बढ़ना। **जैसे:** बच्चों को सुधरना।

सुधा *स्त्री. (तत्.)* 1. वह कल्पित पेय जिसे पीकर प्राणी के अमर हो जाने की बात कही जाती है। अमृत, पीयूष। 2. चूना। 3. रस/ 4. जल।

सुधार *पुं. (तत्.)* 1. कमी या दोष के दूर करने या होने का भाव। **पर्या.** दोषमार्जन। 2. कुरीतियों को हटाकर उनके स्थान पर उचित रीतियों की स्थापना। **पर्या.** संस्कार। 3. संशोधन, परिवर्तन आदि जो उन्नति के लिए हों।

सुधारक *पुं. (तत्.)* 1. सुधार करने वाला, दोषों को दूर करने वाला। 2. धार्मिक, सामाजिक आदि क्षेत्रों में सुधार करने वाला। **दे.** सुधार।

सुधि *स्त्री. (तद्.)* 1. स्मृति, याद। 2. होश, चेतना। **उदा.** सुध-बुध खो देना। 3. खबर या हाल। **मुहा.** सुधि खोना= भूल जाना। सुधि लेना= याद करना, स्मृति में लाना, हालचाल पूछना। सुधि दिलाना**=** याद दिलाना। **सुधि-भूलना, सुधि- बिसारना**= याद न रखना, विस्मृत करना।

सुधी *स्त्री. (तत्.)* 1. अच्छी या तीक्ष्ण बुद्धि, सुबुद्धि। *पुं.* बुद् धिमान्, विद्वान, समझदार। **जैसे:** इस सभा को सुधीजन सुशोभित कर रहे हैं।

सुनसान *वि. (तद्.<शून्य स्थान)* जहाँ कोई व्यक्ति न हो। **पर्या.** निर्जन, वीरान, एकांत। *पुं.* सन्नाटा।

सुनहरा/सुनहला *वि. (देश.)* 1. सोने के रंग का; सोने की तरह चमकीला। 2. कीमती, बहुमूल्य, लाभप्रद। **जैसे:** सुनहरा अवसर। (*स्त्री.)* सुनहरी।

सुनामी (त्सुनामी) *स्त्री. (जापानी)* शा.अर्थ बंदरगाह लहर या पोताश्रय तरंग। विशाल, विस्तृत एवं

अतिविनाशकारी महासागरीय तरंग जो समुद्र की तलहटी में तीव्र भूकंप आने ज्वालामुखी फटने अथवा भू-स्खलन के कारण लगातार उठती जाती है। **जैसे:** 26 दिसंबर 2004 को हिंद महासागर में उठी सुनामी ने दक्षिण और दक्षिण-पूर्व एशिया में भारी तबाही मचा दी थी। Tsunami

सुनार *पुं. (तद्.<स्वर्णकार)* 1. सोने-चाँदी के आभूषण आदि बनाने वाला कारीगर। 2. स्वर्णकार जाति या उसका सदस्य।

सुनारी *स्त्री. (तद्.)* सुनारिन। 1. स्वर्णकार की जीविका 2. उसकी कला। **जैसे:** हमारे पड़ोस में एक सुनार रहता है जो सुनारी का काम करता है।

सुनिश्चित *(तत्.)* भली-भाँति/दृढ़ता के साथ निश्चय किया हुआ, पक्का। **विलो.** अनिश्चित।

सुन्न *वि. (तद्.<शून्य)* ठंड, किसी रासायनिक क्रिया या रोग आदि के कारण संवेदनहीन (शरीर का कोई अंग)। **पर्या.** चेतना शून्य। **जैसे:** ठंड से उसके हाथ-पैर सुन्न हो गए।

सुपच *वि. (तत्.)* 1. शीघ्र पचने वाला (कोई खाद्य पदार्थ) सुपाच्य। **जैसे:** **'खिचड़ी'** एक सुपच आहार है। *पुं. (तद्. > श्वपच)* चांडाल।

सुपात्र *पुं. (तत्.)* 1. विद्या-दान, अन्नदान, धनदान देने हेतु या कोई महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपने के लिए योग्य या उपयुक्त व्यक्ति। अच्छा पात्र। **जैसे:** हमें सुपात्र को ही दान देना चाहिए। 2. अधिकारी व्यक्ति 3. अच्छा पात्र या बरतन।

सुपारी *स्त्री. (तद्.सुप्रिय)* नारियल की जाति का एक ऊँचा वृक्ष जिसके फल छोटे गोलाकार तथा कठोर होते हैं और जिन्हें छोटे टुकड़े करके पान के साथ या स्वतंत्र रूप से भी खाया जाता है। **पर्या.** पूगीफल। *पुं. (फ़ा<सुपार)* अपराध की दुनिया में किसी की हत्या का ठेका। **जैसे:** उसने नेताजी को मारने की सुपारी ली थी।

सुपुत्र *पुं. (तत्.)* अच्छे संस्कार व सत्कर्म वाला पुत्र, योग्य पुत्र। **पर्या.** सपूत। **विलो.** कुपुत्र।

सुपुर्द *वि. (फ़ा.)* विश्वास के साथ सौंपा हुआ, हवाले। **जैसे:** यह धनराशि आपके सुपुर्द है।

सुपुर्दगी *स्त्री. (फ़ा.)* सौंपने की क्रिया या भाव।

सुप्त ज्वालामुखी *पुं. (तत्.)* **भूवि.** ज्वालामुखी जिससे पहले कभी लावा निकला था, किंतु अब नहीं निकल रहा है परंतु कभी भी पुन: जाग्रत हो सकता है। **दे.** ज्वालामुखी। **तु.** जाग्रत ज्वालामुखी।

सुप्रतिष्ठित *वि. (तत्.)* 1. जिसकी बहुत प्रतिष्ठा या सम्मान हो। इज्जतदार। 2. जो बहुत अच्छी तरह स्थापित हो। 3. प्रसिद्ध। **जैसे:** आप इस क्षेत्र के सुप्रतिष्ठित विधायक है।

सुप्रसिद्ध *वि.(तत्.)* जो किसी विशेष गुण या कर्म के कारण बहुत अधिक प्रसिद्ध हो। बहुत मशहूर। **जैसे:** जयशंकर प्रसाद की 'कामायनी' सुप्रसिद्ध रचना है।

सुफल *पुं.(तत्.)* 1. किसी अच्छे उद्देश्य से किये गए कार्य का उत्तम फल। अच्छा परिणाम, उपलब्धि। **जैसे:** तुम्हारी प्रतिष्ठा तुम्हारे द्वारा किए गए उपकारों का **सुफल** है। 2. साधना का परिणाम, सिद्धि। *वि.* सुंदर फल वाला, फलदार। **जैसे:** यह सुफल आम्रवृक्ष है। *स्त्री.* सुफला।

सुबकना *अ.क्रि. (देश.)* सुनाई पड़ने वाली आवाज़ में बार-बार साँस खींचते-छोड़ते रोना। sohbing

सुबह *स्त्री. (अर.)* सूर्योदय का समय। **पर्या.** सवेरा, प्रात:काल। *क्रि.वि.* सवेरे, प्रात:, सवेरे के समय।

सुबह-सुबह *क्रि.वि. (अर.)* 1. प्रात: काल के समय, तडके। 2. बहुत सवेरे।

सुबहान अल्ला *(पद) (अर.)* अरबी भाषा की एक उक्ति जिसका अर्थ है- 'ईश्वर धन्य हैं।' प्रचलित **पद-**'सुभान अल्ला'। **जैसे:** आपकी सूरत सुबहान अल्ला।

सुबोध *वि. (तत्.)* 1. जो आसानी से सबकी समझ में आ जाए। 2. बोधगम्य, सरल। **जैसे:** सूरदास के पद अत्यंत **सुबोध** हैं। **विलो.** दुर्बोध।

सुभाषी *वि. (तत्.)* 1. अच्छा और मीठा बोलने वाला। 2. अवसर के अनुकूल सुंदर ढंग से बोलने वाला। **पर्या.** मृदुभाषी। ***स्त्री.*** सुभाषिणी।

सुमति *स्त्री. (तत्.)* 1. अच्छी बुद्धि, सदबुद्धि। 2. परस्पर सहयोग एवं सद्भावपूर्ण बुद्धि, वैचारिक एकता। **उदा.** जहाँ सुमति तहँ संपति नाना। *वि.* 1. सुंदर बुद् धिवाला, सुंदर विचारों वाला; बुद्धिमान्। 2. शीलवान्।

सुमिरन *पुं. (तद्.)* **दे.** स्मरण

सुमिरना/सुमरना *स.क्रि. (तद्.)* 1. स्मरण करना। 2. अपने आराध्य देव आदि का बार-बार नाम जपना।

सुमुखी *वि./स्त्री. (तत्.)* सुंदर मुख वाली (स्त्री)।

सुयश *पुं. (तत्.)* बहुत यश, अच्छा यश। **पर्या.** सुकीर्ति, ख्याति, प्रसिद्धि। **वि.** जिसे बहुत अधिक यश मिला हो। प्रसिद्ध, विख्यात।

सुयोग *पुं. (तत्.)* 1. सुंदर/अच्छा योग या काल। 2. सुअवसर। 3. किसी व्यक्ति या वस्तु आदि के साथ योग मिलना। **उदा.** 1. **सुयोग** होने पर ही किसी का कार्य सिद् ध होता है। 2. ग्रह भेषज जल पवन पट पाइ कुयोग सुयोग। होहिं कुवस्तु सुवस्तु जग, लखहिं सुलक्ष न लोग।। (तुलसी-रामचरितमानस) ***वि.*** कुयोग।

सुयोग्य *वि.(तत्.)* 1. बहुत अच्छी योग्यता वाला। **जैसे:** आपका सुयोग्य पुत्र धन्य है। 2. अपेक्षित गुणों वाला। **जैसे:** ईश्वर की कृपा से आपकी कन्या के लिए सुयोग्य वर मिल गया। 3. सर्वथा उचित। **जैसे:** आज का यज्ञ सुयोग्य विद्वानों के द्वारा संपन्न हुआ।

सुरंग *स्त्री. (तद्.)* 1. जमीन के नीचे खुदाई करके बनाया गया मार्ग। ternal 2. सैनिक उद्देश्यों से ज़मीन के नीचे विस्फोटक छिपाने के लिए बनाया गया गड्ढा 3. धातु, कोयला आदि प्राप्त करने के लिए खोदी गई ज़मीन, खान, खदान। mine *वि.* सुंदर रंग वाला, सुंदर।

सुर *पुं. (तत्.)* 1. देवता। 2. संगीतोपयोगी मधुर ध्वनि, स्वर; ध्वनि। **मु.** सुर में सुर मिलाना किसी की हाँ में हाँ मिलाना। नया सुर अलापना-दूसरों से बिल्कुल अलग बात करना।

सुरक्षा *स्त्री. (तत्.)* 1. अच्छी तरह से की जाने वाली रक्षा, हिफ़ाजत। 2. पूरी सतर्कता बरतते हुए हानि, क्षति या आपदा से बचे रहने की स्थिति।

सुरक्षात्मक *[सुरक्षा+आत्मक] वि. (तत्.)* 1. सुरक्षा संबंधी। 2. सुरक्षा के उद् देश्य से किया जाने वाला (प्रबंध या कार्य)।

सुरक्षित *वि. (तत्.)* 1. जिसकी रक्षा के लिए उत्तम प्रबंध किया गया हो। या जिस पर आक्रमण का कोई भय न हो। **जैसे:** भारत की उत्तरी सीमा पूरी तरह सुरक्षित है। 2. जिसकी सभी तरह से रक्षा की गई हो या की जा रही हो। **जैसे:** हमारे पास रखे आपके स्वर्णाभूषण पूर्णतया सुरक्षित हैं। 3. जो अच्छी देख रेख में रखा गया हो। **जैसे-**वह अज्ञात नवजात शिशु उनकी देखरेख वहाँ पूर्ण सुरक्षित है। 4. किसी भय, संकट आदि से रहित। **जैसे:** उनके यहाँ यह परिवार पूरी तरह सुरक्षित है।

सुरख़ाब *पुं. (फ़ा.<सुर्ख़ाब)* चकवा (जलाशय के आस-पास रहने वाला पक्षी विशेष)। **मुहा.** सुरखाब के पर लगना-श्रेष्ठ समझना (व्यंग्य में) **उदा.** क्या तुम्हारे सुरखाब के पर लगे हैं?

सुरखी/सुर्खी *(स्त्री.) (फ़ा.)* 1. किसी वस्तु आदि में दिखने वाली लाली, अरुणिमा। **उदा.** उसके कपोलों में सुरखी प्रकृतिदत्त्त है? 2. किसी लेख या समाचार पत्र में दिये प्रमुख समाचारों के शीर्षक। **जैसे:** आज के समाचार पत्र की सुर्खियाँ क्या हैं?

सुरबाला *स्त्री. (तत्.)* 1. देवकन्या या देवांगना; देवी। 2. अप्सरा। **उदा.** चाह नहीं मैं सुरबाला के गहनों में गूँथा जाऊँ। (पुष्प की अभिलाषा कविता)

सुरभि *स्त्री. (तत्.)* 1. सुगंध, खुशबू, सुवास। 2. गाय/गौ; कामधेनु।

सुरभित *वि.* सुगंधित, सुवासित, खुशबूदार। **जैसे:** सुरभित वातावरण।

सुरमा/सुर्मा *पुं.* (फ़ा.) 1. आँखों को स्वस्थ बनाये रखने के लिए उनमें लगाया जाने वाला एक बारीक पिसा हुआ कुछ सफेदी लिए हल्का नीले या काले रंग का विशेष चूर्ण जो एक प्रकार के खनिज पदार्थ को घिसने से प्राप्त होता है। 2. सौंदर्यवृद्धि के लिए आँखों में लगाया जाने वाला उक्त प्रकार का चूर्ण या व्यंजन।

सुरम्य *वि. (तत्.)* अति रमणीय, रमणीक, मनोहर, बहुत सुन्दर, दर्शनीय।

सुरसुरी *स्त्री. (अनु.)* 1. शरीर के किसी अंग में किसी छोटे कीड़े आदि के रेंगने जैसा अनुभव। 2. हल्की खुजली।

सुरा *स्त्री. (तत्.)* मद्य, मदिरा, शराब। **जैसे:** सुरा स्वास्थ्य और बुद्धि को नष्ट करती है।

सुराख़ *पुं. (फ़ा. सूराख)* किसी वस्तु, भित्ति आदि पर यांत्रिक प्रक्रिया से किया गया छिद्र या छेद।

जैसे: कील के सहारे चित्र टाँगने के लिए भित्ति में एक सुराख़ किया गया है।

सुराग *पुं. (तु.)* 1. अपराध संबंधी खोज के सूत्र। 2. चिह्न, निशान; पता-ठिकाना। *पुं. (तत्.) (संगी.)* मधुर राग, कर्णप्रिय राग।

सुराही *स्त्री. (अर.)* लंबी गरदन और तंग मुख वाला पीने का पानी रखने के लिए मिट्टी का बना बरतन/पात्र (जिसमें पानी ठंडा रहता है)।

सुरीला मधुर/मीठे-स्वर वाला।

सुरीलापन *[सुरीला+पन] पुं. (देश.)* सुरीला होने का भाव। **दे.** सुरीला।

सुरूर *पुं. (फ़ा.)* 1. हर्ष, खुशी, स्वाद, लज्ज़त 2. किसी नशीली वस्तु के सेवन से आया नशा, खुमारी। **जैसे:** उस पर भांग का सरूर दिख रहा है।

सुर्ख *(फ़ा.)* रक्त वर्ण का, लाल। **जैसे:** सुर्ख पुष्प, सुर्ख गाल।

सुर्खिया *स्त्री.(फार.)* शा.अर्थ लाल रंग (की विविधता)। ला.अर्थ 1. समाचार लेख आदि के प्रमुख शीर्षक headings 2. प्रमुख पंक्तियाँ। headlines

सुर्ख़ी *(स्त्री.)* 1. लाली। **जैसे:** उसके शरमाये चेहरे पर सुर्खी छा जाती है। 2. लाल स्याही। सुर्खी महत्त्वपूर्ण समाचार **जैसे:** आजकल उनका नाम समाचार पत्र की सुर्खियों में है। **टि.** पहले मुख्य समाचार मोटे अक्षरों में और लाल स्याही से छापने की प्रथा थी। इसीलिए उन्हें सुर्खी कहा जाने लगा।

सुलगना *अ.क्रि. (देश.)* 1. (लकड़ी आदि का) जलना आग पकड़ना। 2. ला.अर्थ अधिक दुःखी होकर मन-ही-मन कुढ़ना। 2. ईर्ष्या से जलना।

सुलतान *पुं. (अर.)* बादशाह, राजा, शासक, नरेश।

सुलूक *पुं. (अर.)* किसी के साथ किया जाने वाला व्यवहार/बरताव।

सुलोचना *वि. (तत्.)* 1. सुंदर नेत्रों वाली (स्त्री) 2. सुंदर रूप वाली (स्त्री), सुंदरी। *स्त्री.* मेघनाद की पत्नी जो पतिव्रता तथा अति सुंदरी थी।

सुवासित *वि. (तत्.)* 1. सुवास युक्त सुगंधित, खुशबूदार। 2. अच्छे वस्त्रों से युक्त।

सुविचार *पुं. (तत्.)* 1. अच्छी तरह बारीकी से किया गया विचार। 2. अच्छा विचार। 3. सोच समझकर किया गया निर्णय। **जैसे**: आपका तीर्थाटन का सुविचार स्वागत योग्य है।

सुविधा *स्त्री. (तत्.)* 1. ऐसी स्थिति जिसके कारण कोई कार्य सरलता से हो सके। **पर्या.** आसानी, सुभीता, सहूलियत। 2. सुख-संपन्नता; आराम, चैन। 3. ऐसे साधन या उपकरण जो सुविधा प्रदान करें। **जैसे:** हमारे घर सभी सुविधाएँ उपलब्ध है।

सुव्यवस्थित *वि. (तत्.)* बहुत अच्छी तरह से यानी योजनापूर्ण तरीके से अथवा सजाकर रखा हुआ।

सुशिक्षित *वि. (तत्.)* अच्छी तरह शिक्षित अथवा (भली-भाँति) शिक्षा प्राप्त किया हुआ। सुशिक्षा प्राप्त, पढ़ा लिखा।

सुशील *वि. (तत्.)* 1. उत्तम शील या स्वभाव वाला; अच्छे आचरण या व्यवहार वाला।

सुशोभित *वि. (तत्.)* 1. अत्यंत शोभा से युक्त। अतिशोभित, बहुत सुंदर। **जैसे:** पुष्पों से सुशोभित वाटिका। 2. शोभायमान, विद्यमान। **जैसे:** कृष्ण के साथ राधा सुशोभित हैं।

सुश्री *वि. (तत्.)* 1. अत्यंत शोभायुक्त 2. श्री से युक्त, अति सुन्दर 3. किसी अविवाहिता वयस्क स्त्री के नाम के पहले आदरार्थ प्रयुक्त किया जाने वाला शब्द। **जैसे:** सुश्री ममता।

सुषमा *स्त्री. (तत्.)* बहुत अधिक सुंदरता। नैसर्गिक शोभा। प्राकृतिक सौंदर्य।

सुसंगत *वि. (तत्.)* जिसका प्रसंग के साथ स्पष्ट संबंध हो। relevant

सुसंस्कृत *वि. (तत्.)* 1. अच्छी तरह शुद्ध किया हुआ। परिमार्जित। 2. अच्छी तरह संस्कार किया हुआ। परिष्कृत। 3. सामाजिक दृष्टि से शिष्ट, सभ्य। **जैसे:** आप एक सुसंस्कृत व्यक्ति प्रतीत होते हैं।

सुसज्जित *वि. (तत्.)* 1. अच्छी तरह सजा हुआ या सजाया हुआ। 2. समस्त आवश्यक उपकरणों से लैस, पूरी तरह तैयार। **जैसे:** सुसज्जित सेना। 3. सुंदर श्रृंगार किया हुआ। **जैसे:** सुसज्जित नववधू का चेहरा आभा से चमक रहा था।

सुस्वादु *वि. (तत्.)* उत्तम स्वाद वाला (कोई पदार्थ) स्वादिष्ठ, स्वाद युक्त। **जैसे:** हम सुस्वादु भोजन खाकर तृप्त हो गए।

सुहाग *पुं. (तद्.<सौभाग्य)* 1. स्त्री की वह स्थिति जिसमें उसका पति जीवित हो; सधवा रहने की स्थिति। 2. कन्या के विवाह के समय गाए जाने वाले मांगलिक गीत जिनमें उसके दीर्घकाल तक सौभाग्यशालिनी बने रहने की कामना की जाती है।

सुहाना *(तद्.<शोभन्) स.क्रि.* 1. आँखों (और मन को भी) अच्छा या सुंदर लगना, पसंद आना। **वि. दे.** सुहावना। सुहावना *वि.* 1. देखने में सुंदर, भला, अच्छा, मनपसंद। **जैसे:** सुहावना मौसम।

सुहृद/सुहृत् *वि. (तत्.)* 1. अच्छे हृदय वाला। 2. प्रिय, 3. मित्र, सखा, बंधु।

सूँघना *स.क्रि (तद्.<शिङ्घन)* 1. नाक से किसी वस्तु, द्रव आदि की गंध को ग्रहण करना या अनुभव करना। **जैसे:** वह गुलाब के फूलों को सूँघता है। 2. लाक्ष. नाम मात्र भोजन करना। **जैसे:** तुमने तो भोजन केवल सूँघ लिया**,** खाया तो है नहीं। **मुहा.** साँप सूँघ जाना = किसी सत्य या रहस्य को जानने के बाद आवाज़ तक न निकलना।

सूआ *पुं. (तद्.>सूची)* 1. लंबी और मोटी सुई जिससे टाट, बोरे आदि सिले जाते हैं। 2. लंबी और बारीक सुई जिससे फूलमालाएँ बनाई जाती है। *पुं.* (तद्.>शुक) सूआ तोता, शुक।

सूक्त [सु+उक्त] *वि.* शा.अर्थ अच्छे ढंग से कहा गया। *पुं. (तत्.)* स्तुतिपरक वैदिक पद्यात्मक कथन। **जैसे:** पुरुषसूक्त।

सूक्ति (सु + उक्ति) *स्त्री (तत्.)* शा.अर्थ सुंदर उक्ति। अच्छा या चातुर्यपूर्ण कथन। सुभाषित maxim

सूक्ष्मजीव *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ छोटा जीव। **जीव.** बहुत ही छोटे आकार वाले जीव जो नंगी आँखों से नहीं देखे जा सकते(केवल सूक्ष्मदर्शी से ही देखे जा सकते हैं, **जैसे:** विषाणु**,** जीवाणु, अमीबा आदि microbe, micro-organism

सूक्ष्मदर्शित्र *पुं. (तत्.)* यंत्र विशेष जो अत्यंत लघु पदार्थों को आकार में बड़ा करके दिखाता है। **पर्या.** अणुवीक्षक, सूक्ष्मदर्शक यंत्र, सूक्ष्मदर्शी, खुर्दबीन।

सूक्ष्मदर्शी *वि. (तत्.)* **दे**. सूक्ष्मदर्शित्र।

सूखना *अ.कि. (तद्.)* 1. किसी नम वस्तु की आर्द्रता या नमी नष्ट हो जाना। **जैसे:** तेज धूप के कारण सभी वस्त्र जल्दी सूख जाएँ। 2. तेज गर्मी के कारण किसी जलाशय के पानी का कम हो जाना। 3. वर्षा के अभाव में फसल का नष्ट हो जाना। 4. ला. रोग, दु:ख या चिन्ता के कारण मनुष्य का कमजोर हो जाना।

सूखा *वि. (तद्.<शुष्क)* (स्त्री. सूखी, भा.सं. सूखापन) 1. जिसमें पहले गीलापन था, पर अब गीलापन शेष न रह गया हो। **जैसे:** सूखा कपड़ा, सूखे हाथ। 2. जिसमें पहले जल प्रवाहित था, किंतु अब जल शेष न रहा हो। **जैसे:** सूखी नदी। 3. जिसमें अब नमी शेष न रही हो। **जैसे:** सूखा मौसम (खुश्क मौसम)। 4. जो रसदार न हो। **जैसे:** सूखी सब्ज़ी। 5. जिसमें हरापन यानी प्राणतत्व शेष न रहा हो। **जैसे:** सूखा पेड़। 6. जिसका व्यवहार प्राय: कोमल और मधुरता से रहित हो गया हो। **जैसे:** सूखा आदमी। *पुं..* वर्षा के अभाव में कुछ भी पैदावार न होने की स्थिति। **पर्या.** अनावृष्टि, अकाल draught

सूचक *वि. (तत्.)* 1. सूचना देने वाला, संदेशी। 2. समाचार बताने वाला। 3. भेद बताने वाला informer 4. चुगलखोर। 5. शिक्षा शोधार्थी को उपयुक्त सूचना-सामग्री उपलब्ध कराने वाला।

सूचक पत्रक *पुं.* शा.अर्थ सूचना देने वाला कार्ड। **पुस्त.** लगभग 5”×3” के आकार का सादा या लाइनदार कार्ड जिस पर सूची प्रविष्टि अर्थात् पुस्तक की जानकारी अंकित हो। catalogve-card

सूचना प्रौद्योगिकी *स्त्री. (तत्.)* कंप्यू. सूचना के संसाधन और संचारण में प्रयुक्त विधियों और युक्तियों का सामूहिक नाम। इसमें कंप्यूटर तंत्र, दूर संचार आदि सम्मिलित हैं। informamative technolog

सूचना *स्त्री. (तत्.)* 1. वह तथ्य या जानकारी जो किसी को अवगत कराने के लिए कही जाए या लिखित रूप में पहुँचायी जाए। समाचार, ख़बर, इत्तिला। informative, news 2. किसी अधिकारी को किसी घटना या कार्य की दी गई जानकारी। report 3. किसी संस्था या विभाग की ओर से दी गई लिखित रूप में अपेक्षित जानकारी जो सूचना पट्ट में लगाई जाती है। **जैसे:** प्रवेश सूचना,

परीक्षा सूचना, सांस्कृतिक कार्यक्रम की सूचना। नोटिस।

सूचना-सामग्री *स्त्री. (तत्.)* सूचनाओं (जानकारियों) से संबंधित सामग्री सूचना (दूरदर्शन, रेडियो, कंप्यूटर तंत्र आदि) से संबंधित सामग्री।

सूची *स्त्री. (तत्.)* 1. क्रमबद्ध रूप में दी गई नामावली (भले ही वह पुस्तक के अध्यायों की हो, चाहे कई वस्तुओं की)। **पर्या.** अनुक्रमणिका, फेहरिस्त index list 2. कपड़ा सीने की सूई।

सूची पत्र *पुं. (तत्.)* पुस्तकालयों की ओर से जानकारी हेतु अथवा पुस्तक विक्रेताओं द्वारा बिक्री के लिए उपलब्ध पुस्तकों की तालिका संबंधी प्रकाशित पुस्तिका जिसमें लेखक, विषय, प्रकाशन वर्ष, मूल्य आदि से संबंधित विवरण दिया होता है। catalogue

सूचीबद्ध *वि. उल्लेख* योग्य सभी प्रमुख बातों को क्रमिक रूप से एकत्रित किया हुआ। **दे.** सूची।

सूजन *स्त्री. (देश.)* शरीर में रोग, विकार, लगी चोट आदि किसी भी कारण से अंग का फूल जाना। **पर्या.** शोभ।

सूज़ाक *पुं. (फार. सोज़ाक)* एक यौन रोग जिसमें जननेंद्रियों में सूजन, जलन, घाव आदि लक्षण होते हैं। **पर्या.** उपदंश Gonorrhea

सूजी *स्त्री. (देश.)* 1. गेहूँ का रवेदार आटा जो हलवा आदि बनाने के काम आता है। 2. सुई।

सूझना *अ.क्रि. (देश.)* 1. दिखाई देना। **उदा.** घने कोहरे में रास्ता न सूझने के कारण गाड़ी की बत्तियाँ जलानी पड़ती है। 2. ध्यान में आना। **उदा.** मुझे इसका एक उपाय सूझा है।

सूझबूझ *स्त्री. (देश.<सूझना + बूझना (समझना))* 1. सोचने-समझने की असाधारण शक्ति 2. बुद्धिमत्ता, दूरदर्शिता। 3. कल्पना-शक्ति।

सूत *पुं. (तत्.सूत्र)* 1. रुई, ऊन, रेशम आदि का बटा हुआ महीन धागा (जिससे वस्त्र बनता है)। **पर्या.** धागा, डोरा, सूत्र थ्रेड। 2. प्राचीनकाल की जाति विशेष। **जैसे:** सूतपुत्र कर्ण।

सूती *वि. (देश.)* सूत का (विशेष रूप से कपास की रुई से) बना हुआ, जैसे-सूती वस्त्र। *तु.* रेशमी।

सूत्र *पुं. (तत्.)* 1. कपास, रेशम आदि का तागा। **पर्या.** डोरा, सूत, तंतु। 2. अति संक्षिप्त रूप में कहा गया वचन या वाक्य 3. बिंदुओं में प्रस्तुत विचार 4. शास्त्रों के सिद्धांतों या नियमों का थोड़े शब्दों में वर्णन **जैसे:** धर्मसूत्र, व्याकरण-सूत्र आदि। 5. संकेत; गणित का फार्मूला; विधि (कार्यप्रणाली) का संकेत। 6. माध्यम **जैसे:** विश्वसनीय सूत्रों से पता चला है कि......। 7. जनेऊ; करधनी। 8. व्याख्या अथवा भाष्यापेक्षी संक्षिप्त कथन। **जैसे:** पाणिनि की अष्टाध्यायी के सूत्र।

सूत्रबद्ध *वि. (तत्.)* 1. धागे में पिरोया हुआ। 2. एक क्रम में लगाया हुआ। **दे.**। व्याख्या रूप में न होकर संक्षिप्त रूप में कथित।

सूदखोर *पुं. (फ़ार.)* ऋण देकर ऊँची दर पर ब्याज वसूलने का धंधा करने वाला व्यक्ति, महाजन। usurer

सूदखोरी *स्त्री.* अधिक ब्याज वसूलने के लिए ऋण देने की लालसा या प्रवृत्ति। usery

सूना *वि. (तद्.<शून्य)* 1. वह स्थान जहाँ पर लोगों का आवागमन या किसी प्रकार की गतिविधि न होती हो। निर्जन, सुनसान। **जैसे:** सूना महल। 2. प्रिय व्यक्ति या किसी सुंदर वस्तु के अभाव से अप्रिय रिक्तता। **जैसे:** संतान के बिना आंगन सूना है।

सूप *पुं. (तद्.<शूर्प)* अनाज फटकने का एक उपकरण। *पुं. (सं.)* 1. पकाई हुई दाल का तरल भाग। **पर्या.** झोल, रसा। 2. तरकारी, फल आदि को पकाकर रसेदार भाग जो प्राय: फैंटा हुआ अर्धतरल उसका पेय।

सूबा *पुं. (अर.)* किसी देश का निर्धारित सीमाओं वाला भूक्षेत्र जिसकी अपनी सरकार और अलग से शासनाध्यक्ष होता है। **पर्या.** प्रांत, प्रदेश।

सूबेदार *पुं. (अर., फ़ार.)* 1. **राज.** किसी सूबे अथवा प्रांत का सर्वोच्च शासक, (भारत के संदर्भ में) राज्यपाल। **सैन्य.** ओहदे के क्रम में स्थल सेना में मेजर से कनिष्ठ अफ़सर।

सूम *पुं. (अर.)* औषधि मसाले के रूप में प्रयुक्त किया जाने वाला एक सफेद कंद। **पर्या.** लहसुन, लसुन। **वि. (देश)** कृपण, कंजूस। **जैसे:** सूम व्यक्ति किसी की मदद नहीं कर सकता।

सूरत *स्त्री. (अर.)* 1. शक्ल, रूप, आकृति; चेहरा, मुखाकृति। **जैसे:** तुम्हारी सूरत को क्या हो गया है। 2. हालत, दशा; परिस्थिति **जैसे:** मैं हर सूरत

में अपना लक्ष्य प्राप्त करूँगा। 3. उपाय, युक्ति- **जैसे**: अब बचने की क्या सूरत हो सकती है?

सूरमा *पुं. (तद्.शौर्यवान्)* युद् ध में बहादुरी से लड़ने वाला योद्धा, वीर बहादुर। **जैसे:** युद्ध में तो सूरमाओं की ही विजय होती है।

सूर्य *पुं. (तत्.)* **खगो.** वह स्वयं प्रकाशित तारा जो सौर परिवार का केंद्रीय पिंड है और सभी ग्रह जिसकी परिक्रमा करते रहते हैं और उसी से प्रकाश और ऊष्मा ग्रहण करते हैं। **टि.** हीलियम तथा हाइड्रोजन से बना लगभग पाँच बिलियन वर्ष पुराना यह तारा पृथ्वी से 9 करोड़ 30 लाख मील की माध्य दूरी पर अंतरिक्ष में स्थित है। इसका व्यास 8 लाख 64 हजार मील तथा इसका भार पृथ्वी से 3,32,000 गुणा ज्यादा है और इसका तापमान 5,500 डिग्री से. है।

सूर्यमंडल *पुं. (तत्.)* 1. सूर्य और उसकी परिक्रमा करने वाले ग्रहों-उपग्रहों का संपूर्ण समूह। **पर्या.** सौर परिवार, सौर-जगत। 2. सूर्य का आभा मंडल।

सूली *स्त्री. (तद्. < सं.शूल)* 1. प्राणदंड देने की एक बहुत पुरानी परंपरा, जिसमें अपराधी को लोहे के नुकीले खंभे पर बिठा दिया जाता था, जिससे वह खंभा शरीर में घुस जाए। 2. प्राणदंड। 3. ला. बहुत अधिक कष्ट/पीड़ा की स्थिति। **मुहा.** सूली चढ़ाना = प्राणदंड देना।

सृजन *पुं. (तत्.)* **दे.** सृष्टि। वि. संस्कृत में शुद् ध शब्द 'सर्जन' है।

सृजनशील *वि. (तत्.)* **दे.** सर्जनशील, सर्जनात्मक। **वि.** सर्जनात्मक रचनात्मक साहित्य कर्म के लगा हुआ; रचनात्मक साहित्य से संबंधित। creative

सृजनात्मक *वि. (तत्.)* 1. सृजन से युक्त; नई रचना से युक्त। 2. जो विद्यमान न हो उसे अस्तित्व में लाने वाला।

सृष्टि *स्त्री. (तत्.)* 1. संसार, जगत, विश्व जिसमें चर-अचर प्राणी रहते हैं। 2. निर्माण, रचना, नई चीज़ या वस्तु जो तैयार की गई हो। creation

सृष्टि-विज्ञान *पुं. (तत्.)* जगत् की रचना के विषय में वैज्ञानिकों का शास्त्र द् वारा किया जाने वाला विश्लेषण व विवेचन।

सेंकना *स.क्रि. तद्.(सं. श्रेषण)* 1. आग पर रखकर थोड़ा गरम करना। **जैसे**: रोटी सेंकना। 2. धूप में बैठकर शरीर गरम करना, तापना। 3. रूई, कपड़ा, पानी आदि गरम करके शरीर के किसी भाग को गरमी पहुँचाना। **मुहा.** आँख सेकना-सुंदर चीज़ देखकर प्रसन्न होना।

सेंटीग्रेड *वि.(अंग्रे.)* शा.अर्थ सौ को आधार बनाकर बनाया गया पैमाना। सा.अर्थ सेंटीग्रेड तापमान जिसमें पानी के उबलने का तापमान 100 डिग्री माना जाता है। **टि.** डॉ. सेल्सियस द्वारा यह क्रम निर्धारित करने के कारण इस तापक्रम को सेल्सियस भी कहते हैं।

सेंटीमीटर *पुं.(अं.)* मीटर का सौवाँ भाग। *वि.* एक सेंटीमीटर हमारी छोटी उँगली की चौड़ाई के लगभग बराबर होता है। centimetre

सेंत-मेंत *अव्यय (देश.अनुर.)* व्यर्थ का, मुफ़्त का, बिना पैसे खर्च किए। सामान्यत: इसका संज्ञा के रूप में प्रयोग होता है। **जैसे**: सेंत-मेंत में काम कौन करेगा?

सेंध *स्त्री.(तद्.<संधि)* घर की दीवार पर बाहर की ओर से चोरों के द्वारा किया गया वह छेद जिसमें से घुसकर वह घर में चोरी करता है। **पर्या.** सुरंग, नकाब। जैसे-चोर कल पड़ोसी के घर सेंध लगाकर सारा कीमती सामान ले गए।

सेंधा *पुं.(तद्.<सैंधव)* एक प्रकार का खनिज नमक, जो चट्टानों से पत्थर के रूप में मिलता है। यह सिंध और पश्चिमी पंजाब (पाकिस्तान) की खानों से निकलता है। **पर्या.** सैंधव नमक, लाहौरी नमक।

सेंसर *पुं.(अं.)* किसी समाचार (या पुस्तक, नाटक, फिल्म, पत्र आदि) के प्रकाशन पर सरकार द्वारा पूर्णत: या अंशत: प्रतिबंध लगाने की प्रक्रिया। censor

सेंसरशिप *स्त्री.(अं.)* सेंसर-व्यवस्था, किसी के भाषण वक्तव्य, लेख आदि पर सेंसर लगाने की व्यवस्था। **दे.** सेंसर।

सेंहुड़/सेहुँड़ *पुं.(तद्.<सेहुण्ड)* 1. एक ओषधीय पौधा जिसकी डंडी मोटी तथा कांटों से भरी होती है और पत्ते हरे, कोमल व मोटे होते हैं। पत्ती या तने को तोड़ने से दूध जैसा सफेद, गाढ़ा और लसदार द्रव पदार्थ निकलता है। 2. कैक्टस परिवार का एक कांटेदार पौधा। विशेष-इसके

थूहर, नागफनी इत्यादि कई प्रकार हैं तथा इसकी डंडी, पत्ती, दूध आदि भी दवा के काम आते हैं।

सेज *स्त्री.(तद्<*शय्या) (सजा हुआ) पलंग, बिछौना, बिस्तर। **पर्या.** शय्या।

सेटेलाइट *पुं.(अं.)* 1. वह छोटा ग्रह जो अपने से बड़े ग्रह की परिक्रमा करता है, उपग्रह। 2. अंतरिक्ष में स्थापित प्रयोगशाला या अन्य व्यवस्था जिसके माध्यम से सूचनाओं का आदान-प्रदान किया जाता है। टेलिविज़न, कंप्यूटर आदि के संचालन में इनकी प्रमुख भूमिका है। कृत्रिम उपग्रह। setellite

सेठ *पुं.(तद्.>*श्रेष्ठी) 1. धनी, महाजन। 2. बड़ा व्यापारी या साहूकार। **जैसे**: नगरों में बड़े-बडे सेठ रहते हैं। स्त्री. सेठानी।

सेतु *पुं.(तत्.)* 1. नदी आदि पर बनाया गया पुल। 2. पानी के बहाव को रोकने के लिए बुलाया गया बाँध। 3. खेती की मेंड़। 4. दो व्यवस्थाओं में सामंजस्य स्थापित करने वाली तीसरी व्यवस्था, बीच की कड़ी। **जैसे**: सेतु-पाठ्यक्रम।

सेतुबंध *पुं.(तत्.)* 1. पुल, बाँध आदि का निर्माण। 2. दक्षिण भारत में रामेश्वरम् के पास लंका जाने के लिए नल-नील द्वारा बनाया गया पुल।

सेना *स्त्री.(तत्.)* शत्रु से अपने देश की रक्षा करने के लिए नियुक्त सिपाहियों/सैनिकों का दल या समूह। **पर्या.** फौज Army। 2. *(स.क्रि.) (तद्.<सेवन)* मादा पक्षी द्वारा गरमी पहुँचाने के लिए अपने अंडों पर बैठना ताकि परिपक्व होने पर उनसे बच्चे निकल सकें।

सेनानायक *पुं.(तत्.)* सशस्त्र सेना की कमान जिसके हाथ में हो, वह सेना का नायक, सेनापति, सेना का मुखिया। commander

सेनापति *पुं.(तत्.)* सेना का प्रमुख अधिकारी; सेना का प्रधान अधिकारी; सेनाध्यक्ष।

सेलुलोज़ *पुं.(अं.)* **जै.रसा**. एक संकर पॉलिसैकेराइड जो वनस्पति तंतुओं का मुख्य घटक है। **उदा.** कपास। cellulose **दे.** सेलुलोज।

सेवईं *स्त्री.(तद्.<*सेविका) मैदे के पतले सूत के समान एक दूसरे से लिपटे लच्छे (जिसे दूध में पका कर मीठे पकवान की तरह खाया जाता है।)

सेवन *पुं.(तत्.)* 1. नियमित रूप से किया जाने वाला कोई प्रयोग, व्यवहार, इस्तेमाल। **जैसे**: त्रिफला सेवन, औषध सेवन। 2. नियमित रूप से कोई वस्तु खाना या पीना। **जैसे**: मदिरा सेवन स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। 3. उपभोग। जैसे-विलासितापूर्ण वस्तुओं के सेवन से मानव को कमी तृप्ति नहीं मिलती।

सेवा *स्त्री.(तत्.)* शा.अर्थ पूजनीय एवं बड़ों को सुख एवं आनंद देने वाला किया गया कार्य। सा.अर्थ परिचर्या**,** शुश्रूषा, टहल, खिदमत। 2. जनसेवा का कोई कार्य। **जैसे**: साहित्य सेवा। 3. वेतन के लिए की गई कृत्ति service। 4. सरकार के विभागीय कार्य-डाकसेवा, बैंकिंग सेवा। 5. शरण, सहारा, आश्रय। **जैसे**: इसे अपनी सेवा में ले लीजिए।

सेवारत *वि.(तत्.)* 1. सेवा कार्य में लगा हुआ; 2. नौकरी में लगा हुआ।

सेवा शुश्रूषा *स्त्री.(तत्.)* किसी की सेवा, परिचर्या। **टि.** शुश्रूषा का शाब्दिक अर्थ है किसी की बात आदरपूर्वक एवं ध्यानपूर्वक सुनने की इच्छा करना एवं तद्नुसार कार्य करना।

सेविका *स्त्री.(तत्.)* 1. सेवा करने वाली स्त्री, दासी, नौकरानी। 2. **दे.** सेवई

सेहत *स्त्री.(अर.)* स्वास्थ्य, रोग रहित होने का भाव; तंदुरूस्ती; शरीर की स्वास्थ्य संबंधी दशा।

सेहतमंद *वि.[अर.+फा.] (सेहत+मंद)]* 1. जिसका स्वास्थ्य अच्छा हो, 2. स्वस्थ, तंदुरूस्त, हृष्ट-पुष्ट। **जैसे**: हम नियमित व्यायाम से सेहतमंद बने रह सकते हैं।

सेहरा *पुं.(देश.)* 1. विवाह के अवसर पर वर को पहनाने के लिए निर्मित सुंदर फूलों या सुनहले-रूपहले तारों आदि की लड़ियाँ। 2. मुकुट, मौर। **मुहा.** सेहरा बँधना=1. शादी होना, 2. विजयी होना, बड़ी उपलब्धि होना।

सैद्धांतिक *वि.(तत्)* सिद्धांत संबंधी।

सैनिक *पुं.(तत्.)* सेवा का योद्धी कार्मिक, सिपाही, फौजी। (वि.) सेना संबंधी, सेना का। **जैसे:** सैनिक न्यायालय। **पर्या.** सैन्य।

सैन्य *वि.(तत्.)* सेना का, सेना संबंधी।

सैयाँ *पुं.(तद्.<*स्वामी) किसी नारी का पति/स्वामी या प्रियतम। **लोको.** सैयाँ भये कोतवाल अब डर काहे का। पति के उच्च पद प्राप्त करने पर डरने की आवश्यकता नहीं।

सैयाद *पुं.(अर.)* पशु-पक्षियों का शिकार करने वाला, शिकारी, बहेलिया, चिड़िया पकड़ने वाला, चिड़ीमार।

सैर *स्त्री.(अर.)* घूमना-फिरना, मन बहलाने के उद्देश्य से भ्रमण; बाग-बगीचों में घूमना, प्रात:भ्रमण या भोजनोपरांत भ्रमण।

सैर-सपाटा *पुं. (फा.)* मनोरंजन की दृष्टि से इधर-उधर घूमना। सुंदर दृश्य देखने के लिए घूमना-फिरना।

सैलानी *वि.(फ़ार.)* जो बहुत अधिक घूमता हो, पर्यटक। सैर-सपाटा करने वाला (व्यक्ति), घूमने-फिरने वाला व्यक्ति, यात्री, घुमक्कड़।

स्मरण *पुं. (तत्.)* 1. किसी अनुभव जन्य या सुनी-सुनाई बात को बार-बार ध्यान में लाना या अकस्मात् ऐसी बात का चित्र मन में अंकित हो जाना। 2. किसी बात को देख-सुन कर या पढ़कर किसी पूर्वज्ञात बात की ओर ध्यान चला जाना। recalling 3. किसी बात को बार-बार दुहराकर याद करना। **पर्या.** रटना। **विलो.** विस्मरण।

स्थल *पुं. (तत्.)* स्थान, स्थल। **जैसे:** दर्शनीय स्थान/स्थल, ऐतिहासिक/पुरातात्विक स्थल, स्थल नक्शा। sight

ह

हंगामा *पुं.* (फ़ा.) 1. ऐसा उपद्रव या उत्पात जब किसी व्यक्ति द्वारा या कुछ लोगों के द्वारा अपने साथ हुए अन्याय या अपमान, पक्षपात आदि का विरोध पूरे शोर-शराबे के साथ आक्रोश व्यक्त करते हुए किया जाता है। 2. शोरगुल 3. मारपीट, दंगा। **मुहा.** हंगामा खड़ा करना, हंगामा मचाना = लड़ाई-झगड़ा करना, हल्ला या शोरगुल मचाना। **जैसे:** एक महिला यात्री ने अपने साथ हुए दुर्व्यवहार से खिन्न होकर बस में ऐसा हंगामा मचाया कि अधिकारियों को क्षमा माँगनी पड़ी।

हंस *पुं. (तत्.)* 1. लंबी और लचकदार गर्दन और जालीदार पंजे से युक्त छोटे पैरों वाला शुभ्र वर्ण का एक जलपक्षी जिसकी आवाज सुरीली होती है। इसकी चलने की पद्धति अत्यंत आकर्षक होती है। 2. ला. शुद्ध आत्मा, जीवात्मा 3. दशनामी संन्यासियों का एक भेद। **जैसे:** सरस्वती देवी का वाहन **'हंस'** है। **वि.** कवि मान्यता के अनुसार हंस मानसरोवर (तिब्बत) में निवास करता है तथा इसके पास दूध और पानी को अलग करने की प्रकृति प्रदत्त शक्ति है। इसीलिए इसे 'नीर क्षीर विवेकी' कहा जाता है। **मुहा.** हंस उड़ जाना = मृत्यु हो जाना।

हंसगति *स्त्री* [हंस + गति] *(तत्.)* 1. 'हंस' पक्षी की तरह सुंदर व धीमी चाल। 2. दर्श. जीवात्मा का ब्रह्म में मिल जाना, ब्रह्मप्राप्ति। **उदा.** जा छन **हंस** तजी यह काया। सूरसागर

हँकाना *स.क्रि. (देश.)* 1. आवाज़ लगाना। ज़ोर से पुकारना। 2. हाँक (पुकार) लगवाना। **उदा.** ज़मींदार ने ट्रैक्टर से अपना खेत हँकाया।

हँसना *अ.क्रि (तद्.)* 1. प्रसन्नता प्रकट होने या करने की वह क्रिया जिसमें नेत्र, होंठ, मुँह तथा दंतपंक्ति भी प्रसन्नता को अभिव्यक्त करते हैं। हर्षध्वनि निकलती है। 2. मुस्कराना, मंद हास्य। 3. ठहाका लगाना, अट्टहास। 4. उपहास करना, मज़ाक उड़ाना।

हँसमुख *वि. (तद्.+तत्.)* 1. वह व्यक्ति जो हमेशा खुश दिखता हो। 2. विनोदी स्वभाव का। **जैसे:** तुम जैसा हँसमुख व्यक्ति वातावरण को प्रसन्न बना देता है।

हँसली *स्त्री. (तद्. < अंसली)* 1. गले के नीचे और छाती के ऊपर की गोलाकार दो हड्डियाँ। 2. स्त्रियों का गले में पहनने का एक विशेष आभूषण। **जैसे**: पहले स्त्रियाँ गले में चाँदी या सोने की बनी **'हँसली'** धारण करती थीं।

हँसिया *पुं. (देश.)* 1. लोहे से बना एक अर्ध चंद्राकार औजार जिससे खेत की फसल घास, पौधे, सब्जी आदि काटे जाते हैं। 2. दराँती।

हँसी *स्त्री. (दे.)* 1. हँसने की क्रिया या भाव। 2. मज़ाक, विनोद, परिहास। **जैसे:** हँसी उड़ाना = मज़ाक करना। हँसी-खेल होना = किसी कार्य को अत्यंत साधारण, सहज या तुच्छ समझना। हँसी-खेल न होना = अत्यंत कठिन कार्य। **उदा.** इस नदी को पार करना हँसी खेल नहीं है।

हँसोड़ *वि. (देश.)* 1. वह व्यक्ति जो सदा हँसी की बातें करके दूसरों को हँसायें। **पर्या.** दिल्लगीबाज, मसखरा, ठठोल। 2. बहुत हँसने वाला।

हक *पुं. (अर.)* 1. अधिकार, अख्तियार। 2. कर्तव्य, फर्ज़। 3. पक्ष-जैसे हक में = पक्ष में (मुकदमें का फैसला मेरे हक में हुआ।) **मुहा.** हक अदा करना = कर्तव्य पूरा करना।

हकदार *वि./पुं.* (अर. हक + फा. दार) 1. किसी वस्तु, जायदाद, लाभ आदि में हक या अधिकार रखने वाला; अधिकारी। **जैसे:** अठारह वर्ष से कम उम्र का व्यक्ति चुनाव में मतदान का हकदार (अधिकारी) नहीं होता।

हकलाना *अक.क्रि. (देश.)* एक वाक्दोष जिसमें व्यक्ति शब्दों का ठीक तरह से उच्चारण करने में कठिनाई अनुभव करता है तथा बीच-बीच में कोई शब्द अटक-अटक कर बोलता है।

हकीकत *स्त्री. (अर.)* 1. असल या वास्तविक तत्व या असली बात। 2. सच्चाई, सत्यता, वास्तविकता, यथार्थता, असलियत, तथ्य।

हकीम *पुं. (अ.)* यूनानी चिकित्सा पद्धति से चिकित्सा करने वाला वैद्य/चिकित्सक। **जैसे:** **हकीम** सभी प्रकार की बीमारियों का इलाज करते हैं।

हक्का-बक्का *वि. [अनु. <हक-बक]* 1. बहुत घबराया हुआ। 2. आश्चर्यचकित। **उदा.** जादूगर के हाथ की सफ़ाई देखकर दर्शक हक्के-बक्के (हक्का-बक्का) रह गए।

हचकोला *पुं. (देश.)* 1. ऊबड़-खाबड़ रास्ते या किसी अन्य कारण से किसी भी वाहन पर बैठे हुए व्यक्ति को लगाने वाले हल्के-हल्के धक्के, जिससे व्यक्ति कभी-कभी कुछ उछलने जैसा भी अनुभव करता है। **पर्या.** धक्का, धचका, झटका। **जैसे:** ऊँट पर बैठा हुआ आदमी ऊँट की चाल के कारण हचकोला खाता हुआ-सा प्रतीत होता है।

हज *पुं. (अर.)* इस्लाम धर्म के अनुयायियों में प्रचलित वह तीर्थयात्रा जो अरब देश में स्थित 'मक्का' में काबे के दर्शन या परिक्रमा के लिए की जाती है। **जैसे:** भारत से प्रतिवर्ष हजारों मुसलमान हज करने 'मक्का' जाते हैं।

हज़म *वि. (अर.<हज़्म)* 1. जिस (खाई हुई वस्तु) का पाचन हुआ हो, पचा हुआ। **जैसे:** सुबह जो खाया वह सब हज़म हो गया। 2. दूसरों से लिया गया परंतु बेईमानी के कारण वापस न किया गया। **जैसे:** खेल ख़तम पैसा हज़म।

हजरत *पुं. (अर.)* 1. एक आदरसूचक संबोधन। महोदय! महानुभाव! श्रीमान। **जैसे:** हजरत! यहाँ पधारिये। 2. महात्मा, महापुरुष। **जैसे:** हजरत मुहम्मद साहब।

हजामत *स्त्री. (अ.)* शा.अ. हज्जाम (नाई) का काम। सा.अ. 1. सिर और दाढ़ी के बालों को काटने या कटवाने या बनवाने का काम। क्षौर **जैसे:** मैं नाई की दुकान में हजामत करवा रहा हूँ। 2. किसी को धोखे से या जबरदस्ती लूटा या ठगा जाना। **जैसे:** दुकानदार ने उस बेचारे की ऐसी हजामत कर डाली कि उसके पास घर जाने तक को पैसे नहीं बचे।

हज्जाम *पुं. (अ.)* हजामत बनाने (का व्यवसाय करने) वाला; नाई।

हटना *अ.क्रि. (देश.)* 1. किसी का एक स्थान से दूसरे स्थान को जाना खिसकना, दूर होना, सरकना, स्थान छोड़ना। **जैसे:** वह इस सीट से हटता ही नहीं। 2. किसी स्वीकृत काम या बात से मुकरना, विमुख होना। **जैसे:** वह रुपये देने की बात से आज हट गया। 3. दूर होना; खत्म होना। **जैसे:** एक मुसीबत हटी नहीं कि दूसरी आ गई।

हटाना *क्रिया. (देश.)* किसी स्थान विशेष से वस्तु, व्यक्ति आदि को खिसकाना या दूर करना; किसी व्यक्ति को उसे सौंपे गए काम से अलग करना अथवा पद से उतारना।

हट्टा-कट्टा *वि. (तद्. <हृष्ट-काष्ठ)* 1. जो शरीर से पूरी तरह हृष्ट-पुष्ट और काठ की तरह मजबूत भी हो। 2. शक्तिशाली, मोटा-ताजा। **जैसे:** उसका बेटा तो बहुत ही हट्टा-कट्टा है।

हट्रजन (कुछ विद्वानों द्वारा प्रयुक्त 'हाइड्रोजन') का नवनिर्मित अनुकरणवाची पर्याय। **दे.** हाइड्रोजन।

हठ *पुं. (तत्.)* 1. इंसान की वह प्रवृत्ति जिसमें किसी वस्तु को पाने या काम करने या करवाने के लिए अडिग दुराग्रह हो। **पर्या.** जिद, अड़, दृढ़ निश्चय, टेक। **जैसे:** बच्चे किसी वस्तु को पाने के लिए हठ करते हैं। 2 योग की एक विधा, हठयोग।

हठी *वि. (तद्.)* हठ करने वाला, दुराग्रही।

हठीला *वि. (तद्.)* हठी, जिद्दी, दृढ़ निश्चयी। **दे.** हठ।

हड़काना *सक.क्रि (देश.)* 1. किसी को अनुचित कार्य के कारण या मनपसंद कार्य न होने से डाँटना। 2. हड़ हड़ की विशेष आगाज के साथ भगाना। 3. धमकाना। **जैसे:** अपने शरारती बच्चों को हडक़ा कर अच्छा किया।

हड़ताल *स्त्री. (देश.)* असंतोष को व्यक्त करने वाला कारखानों या कार्यालयों में कर्मचारियों द्वारा काम बंद कर देने की स्थिति; किसी प्रकार का विरोध प्रकट करने के लिए नियमित कार्य न करना। **जैसे:** भूख हड़ताल strike

हड़पना *स.क्रि. (देश.)* 1. किसी वस्तु को अनुचित तरीके अपनाकर इस भावना से अधिकार में कर लेना कि उसे उसके मालिक को न लौटाया जाए। 2. मुँह में रखकर जल्दी निगल जाना।

हड़प्पा *पुं. (देश.)* सिंध का, वह स्थान जहाँ सिंधु संस्कृति के प्राचीन पुरातात्विक अवशेष प्राप्त हुए थे।

हड़बड़ाना *अ.क्रि. (देश.)* 1. जल्दबाजी करना। 2. घबराना। 3. उतावली के कारण लड़खड़ाना। **जैसे:** मालिक को अचानक आया देख चोर घर से हड़बड़ाकर भागा।

हड़बड़ाहट *स्त्री. (देश.)* हड़बड़ाने की क्रिया या भाव। हड़बड़ी।

हड़बड़ी *स्त्री. (देश.)* किसी वस्तु को प्राप्त करने की घबराहट पूर्ण जल्दबाज़ी या उतावलापन। **जैसे:** काम की हड़बड़ी में उसने दूध में चीनी की जगह नमक डाल दिया।

हड्डी *स्त्री. (तद्.>अट्हठि-प्राकृ.>अस्थि-सं.)* कशेरुकीय जीवों में कंकाल निर्मित करने के लिए चूना (कैल्शियम) के लवणों से युक्त सफेद ऊतकों के जमने से बने वे कठोर टुकड़े जो शरीर के अंगों को निश्चित आकृति प्रदान करते हैं। bone **मुहा.** हड्डी-पसली एक करना=खूब पिटाई करना। हड्डियाँ निकल आना=कमज़ोर हो जाना।

हत *वि. (तत्.)* **सा.अ.** 1. जो मार डाला गया हो। 2. जिसका अस्तित्व मिट गया हो, नष्ट। **जैसे:** हताश। 2. रहित या हीन। **जैसे:** हतबुद् धि। 3. जिसे आघात लगा हो।

हतप्रभ *वि. (तत्.)* शा.अर्थ (व्यक्ति) जिसके चेहरे की कांति विलुप्त या समाप्तप्राय हो गई हो। **उदा.** अपने मित्र की अकस्मात् मृत्यु का समाचार पाकर वह हतप्रभ हो गया।

हताश [हत+आशा] *वि. (तत्.)* शा.अर्थ जिसकी आशा नष्ट हो गई हो। **पर्या.** निराश, नाउम्मीद।

हताशा *स्त्री. (तत्.)* निराशा, नाउम्मीदी। **दे.** हताश।

हताहत [हत+आहत] *वि. (तत्.)* मारे गए/मरे हुए और घायल। **जैसे:** कुंभ मेले में अचानक मची भगदड़ में हताहतों की संख्या हजारों में थी।)

हत्था *पुं. (तद्.)* किसी भी औज़ार या मशीन का वह हिस्सा जो हाथ (हथेली) में थामा जाता है। handle

हत्या *स्त्री. (तत्.)* 1. किसी को मार डालने की क्रिया। 2. वध, कत्ल, ख़ून। चोरों ने घर में घुसकर लूटपाट के साथ बुजुर्गों की हत्या भी कर दी।

हत्याकांड *पुं. (तत्.)* 1. एक या अधिक लोगों को मार डालने का कृत्य। 2. हत्या की कोई प्रसिद्ध घटना। जलिया वाला हत्याकांड।

हथकंडा *पुं. [तद्.]* 1. चालाकी व छलकपट युक्त हाथ की सफ़ाई। 2. छिपी हुई धूर्ततापूर्ण युक्ति, षड़यंत्र। **जैसे:** उसने यह जमीन पाने के लिए कई हथकंडे अपनाए।

हथकड़ी *स्त्री. [तद्.<हस्त+कटक]* लोहे का विशेष ढंग से बना जंजीर से युक्त वह कड़ा जो पुलिस द्वारा किसी अपराधी के हाथों में पहनाया जाता है ताकि व्यक्ति भाग न सके। **मुहा.** हथकड़ी डालना = बंदी बनाना।

हथगोला *पुं. (तद्.)* एक प्रकार का बारूदी गोला जो शत्रुओं पर हाथ से फेंका जाता है। hand grande **जैसे:** आजकल तो आतंकवादियों के पास भी हथगोले होते हैं।

हथियाना *स.क्रि. (नामधातु) (देश.)* 1. किसी वस्तु या अधिकार आदि को अपने कब्जे में ले लेना। 2. हाथ से पकड़ना। 3. दूसरे की वस्तु, जमीन, जायदाद आदि पर कुशलता, वाक्यपटुता से या बलपूर्वक कब्ज़ा कर लेना। **जैसे:** उसने छल से गाँव का हमारा घर भी हथिया लिया।

हथियार *पुं. (देश.)* 1. हाथ से पकडक़र चलाये जाने वाले शस्त्र। **जैसे:** तलवार**,** गदा, बंदूक, भाला, तीर आदि। 2. औजार, उपकरण instrument 3. अस्त्र-शस्त्र arms **जैसे:** आजकल युद्‌ध में एटमी हथियारों का भी प्रयोग होता है। **मुहा.** 1. हथियार उठाना = युद्‌ध के लिए तैयार होना। 2. हथियार डालना = शत्रु के सामने समर्पण कर देना।

हथेली *स्त्री. (तद्.)* हाथ का कलाई और उँगलियों के बीच वाला लगभग समतल रोम रहित भाग, जो अपनी प्राकृतिक स्थिति में शरीर की ओर रहता है। **पर्या.** करतल। **मुहा.** हथेली फैलाना = भिक्षा माँगना। प्राण हथेली पर रखकर = मृत्यु से न डरते हुए; जान जोखिम में डाल कर।

हथौड़ा *पुं. (देश.)* धातु, पत्थर, ईंट आदि को तोड़ने वाला लोहे का उपकरण (औज़ार)।

हथौड़ी *स्त्री. (तद्.)* बहुत छोटे आकार वाला हथौड़ा बहुमूल्य धातु को पीटकर फैलाने या कील आदि ठोकने का काम आती है। **दे.** हथौड़ा।

हद *स्त्री. (अर.)* सीमा। **जैसे:** हद हो गई। आपने तो हद कर दी।

हनन *पुं. (तत्.)* जान से मारना, वध करना, कत्ल करना।

हफ्ता *पुं. (फा.)* 1. सात दिन की अवधि। **पर्या.** सप्ताह। 2. (अनुचित कार्य के लिए) हर हफ्ते या सप्ताह में अदा किया जाने वाला धन 3. बैंक आदि का हफ्तेवार ब्याज।

हमउम्र *वि. (फा.)* एक ही आयु वर्ग के (लोग) समवयस्क। समान उम्र वाले।

हमदर्द *वि. (फा.)* 1. किसी के दु:ख में सहानुभूति रखने वाला। 2. दु:ख में सहायक। **जैसे:** आप ही हमारे सच्चे हमदर्द हैं जो सदा हमारे दु:ख में खड़े रहते हैं। sympathiser

हमदर्दी *स्त्री. (फा.)* सहानुभूति जो किसी की विपन्नता में प्रकट की जाती है। **जैसे:** जो दु:ख में हमारे साथ हमदर्दी दिखाता है, वही हमारा सच्चा मित्र। sympathy

हमराह *वि. (फ़ा.)* 1. यात्रा में साथ चलने वाला। हमसफर। 2. जीवन की यात्रा में एक ही उद्‌देश्य से आगे बढ़ने वाले। **उदा.** 1. आपके जैसा हमराह होने से मुझे कोई चिंता नहीं।

हमला *पुं. (अर.)* आक्रमण, धावा, चढ़ाई, चोट।

हमलावर *पुं. (अर.)* हमला करने वाला आक्रमणकारी, चढ़ाई करने वाला।

हमवतन *वि. (फा.)* 1. जिनका देश समान हो अर्थात् एक ही देश के रहने वाले हों। 2. जो एक ही नगर/ग्राम के रहने वाले हों। **जैसे:** हिंदी हैं **हमवतन** हैं हिंदोस्तां हमारा।

हमशक्ल *वि.(फार.)* 1. (वह व्यक्ति) जिसकी सूरत किसी दूसरे से बहुत-कुछ मिलती-जुलती हो; एक जैसी शक्ल वाला।

हमाम/हम्माम *पुं. (अर.)* 1. भवन के अंदर चारों ओर से बंद वह कक्ष/कमरा जिसमें नहाते हैं। **पर्या.** स्नानागार। **मुहा.** हमाम में सब नंगे = बुनियादी तौर पर सबकी बुरी आदतें समान होना।

हमेशा *क्रि.वि. (फार.)* काल की सीमा निर्धारित न करने का भाव। **पर्या.** सदा, सदैव।

हया *स्त्री. (अर.)* अनैतिक व अमर्यादित आचरण को रोकने वाली मानसिक प्रवृत्ति लज्जा/शर्म। **उदा.** नारी की हया तो उत्तम आभूषण है।

हर बार *क्रि.वि. (फार.)* प्रत्येक क्रम में; सभी क्रमों में, प्रत्येक बार, हरदफ़ा, हरमर्तबा। **जैसे:** वह हरबार कक्षा में प्रथम आता है।

हर *वि. (फार.)* प्रति, प्रत्येक हरएक=प्रत्येक, हर जगह = प्रत्येक स्थान पर। **जैसे:** हर दिन = प्रत्येक दिन, हर जगह। 2. *पुं. (तत्.)* 1. शिवजी, महादेव। 2. **गणि.** किसी भिन्न में भाग रेखा के नीचे की राशि या संख्या। **जैसे:** 7/8 में 8 हर है। denominator

हरकत *स्त्री. (अर.)* 1. शरीर का हिलना-डुलना; शरीर के किसी भी अंग में दिखाई पड़ने वाली गति या चेष्टा जिससे उसके जीवित होने का प्रभाव मिले। 2. बुरा या अशोभनीय कार्य। **जैसे:** उसकी हरकतों से मैं परेशान हो गया।

हरकारा *पुं. (फा.)* एक जगह से दूसरी जगह संदेश, पत्र (डाक) आदि पहुँचाने वाला। **पर्या.** संदेशवाहक, पत्रवाहक।

हरगिज़ *क्रि.वि. (फा.)* कदापि, कभी, बिलकुल, हर हालत में। **टि.** सामान्यत: नकारात्मक प्रयोग होता है-हरगिज़ नहीं। **उदा.** मैं तुम्हारी बात हरगिज़ नहीं मानूँगा।

हरजाना/हर्जाना *पुं. (फा.)* किसी का हर्ज या हानि होने पर उसके बदले में दिया जाने वाला धन आदि। **पर्या.** क्षतिपूर्ति। **जैसे:** मेरे हुए नुकसान के हरजाने के रूप में पाँच हजार रुपए आपको देने ही होंगे।

हरण *पुं. (तत्.)* 1. अनुचित रूप से किसी को अथवा किसी वस्तु को बलपूर्वक छीनकर ले लेना; भगा ले जाना। (गणित) **जैसे:** सीता हरण, द्रौपदी चीर हरण आदि। 2. **गणि.** भाग देना

हरना *स.क्रि. (तद्.<हरण)* 1. किसी की वस्तु को बलपूर्वक ले जाना। छीनना, लूटना। **जैसे:** कुछ लोग उसकी दुकान से सोने के आभूषण बलपूर्वक हर ले गए। 2. अपहरण करना, उठा ले जाना। 3. दूर करना। **जैसे:** मेरी भवबाधा हरौ राधानागरि सोय। (बिहारी)। 4. आकर्षित करना, लुभाना। **जैसे:** सूर्योदय का दृश्य मन को हर लेता है।

हरा-भरा *वि. (देश.)* 1. (ऐसा स्थान या वृक्ष) जो हरियाली से भरा हुआ हो। यानी, जहाँ बहुत अधिक हरियाली हो। 2. जो सूखा या मुरझाया न हो। greenary

हराम *वि. (अर.)* खाने पीने आदि का जो व्यवहार इस्लाम धर्मशास्त्र के अनुसार निषिद्ध हो या त्याज्य हो। **पर्या.** नाजायाज, वर्जित। **जैसे:** मुसलमानों के लिए सुअर का मांस हराम है। *पुं.* 1. पाप कर्म, व्यभिचार। **उदा.** राम को न जानै ताहि जानिये हराम को। (भारतेन्दु. दोहा 15) **मुहा.** 1. हराम होना = त्याज्य होना। अन्याय से कमाया धन मेरे लिए हराम है। 2. हराम का माल = बेईमानी से कमाया धन। 3. हराम की खाना = बिना मेहनत किये खाना।

हरामख़ोर *वि. (अर.+फार.)* बिना किसी प्रकार का श्रम किये मुफ़्त का खाने वाला। **पर्या.** मुफ्तखोर, कामचोर।

हरामखोरी *स्त्री.* मुफ़्तखोरी, कामचोरी। **जैसे:** जीवन में हरामखोरी की आदत अच्छी नहीं होती।

हरामी *वि. (अर.)* 1. हराम संबंधी, हराम का। **दे.** हराम। 2. व्यभिचार से उत्पन्न, हरामज़ादा, दोगला, वर्णसंकर। 3. बहुत दुष्ट, अत्यंत नीच, पापी। **जैसे:** उस हरामी का साथ मत करना।

हरारत *स्त्री. (अर.)* 1. ताप, गर्मी। 2. हल्का ज्वर/बुखार। **जैसे:** अचानक जुकाम होने से शरीर में हरारत हो गई है।

हरि *पुं. (तत्.)* 1. सामान्यत: विष्णु का और विशेषत: तीनों देवताओं (विष्णु, शिव, ब्रह्मा) का एक नाम। 2. बंदर।

हरित *वि. (तत्.)* 1. हरे रंग वाला, हरा 2. ताजा। **जैसे:** हरित वस्त्र, हरित शाक। *(पुं.)* 1. हरा रंग **जैसे:** हरित और पीत रंग का मिश्रण है नीला रंग। 2. हरी सब्जी। 3. हरियाली।

हरितलवक *पुं. (तत्.)* **वन.** क्लोरोफि धारी लवक जो प्रकाश संश्लेषण का केंद्र होता है। chloroplast

हरियाली *स्त्री. (तद्.)* हरी वनस्पति का विस्तृत समूह।

हरीरा *पुं. (अर.)* उबले हुए दूध में सोंठ, गुड़, मेवा आदि मिलाकर बनाया गया स्वादिष्ट ओषधीय पेय।

हरेक *वि. (फार.)* प्रत्येक

हर्ज *पुं. (अर.)* 1. किसी प्रकार की हानि या नुकसान। **जैसे:** तुम अपने काम का **हर्ज** किये बिना वहाँ जाना। 2. काम में पड़ने वाली बाधा या रूकावट।

हर्जाना *पुं. (फा.)* वह धन जो किसी हानि की भरपाई के लिए दिया जाए।

हर्ट्ज़ *पुं. (अं.)* आविष्कारक के नाम पर रखा गया आवृत्ति का एस आई मात्रक। प्रतीक Hz यह एक सेकंड में नियमित घटना की पुनरावृत्तियों की संख्या है।

हर्बेरियम *पुं. (अंग्रे.)* उपचारित जड़ी बूटियों व पौधों का वह व्यवस्थित संग्रह जो उनकी जानकारी देने में सहायक हो। **पर्या.** वनस्पति संग्रहालय। herbarium

हर्ष *पुं. (तत्.)* मनोनुकूल घटना के घटित होने पर मन में प्रकट होने वाला सुखप्रद भाव। **पर्या.** प्रसन्नता, खुशी, आनंद।

हर्षोन्मत्त *वि. (तत्.)* जो हर्ष से पागल हो गया हो। **दे.** हर्षोन्माद।

हर्षोन्माद [हर्ष+उन्माद] *पुं. (तत्.)* खुशी की वह उत्कट स्थिति जिसमें मन और बुद्धि का तालमेल नहीं रह पाता। ecstacy शा.अर्थ हर्ष में सुध-बुध खो देना, खुशी का पागलपन।

हलंत *वि. (तत्.)* 1. वह शब्द जिसके अंत में स्वर रहित व्यंजन वर्ण हो। 2. हल (\) इस चिह्न से युक्त व्यंजनवर्ण। **जैसे:** विद्युत्, जगत्, महान्।

हल *पुं. (तत्.)* 1. **कृषि-**खेल जोतने का उपकरण। plough 2. पुं. (अर.) (i) **गणि.** ज्ञात आँकड़ों, तथ्यों अथवा विधियों की सहायता से अपेक्षित परिणाम प्राप्त करने का प्रक्रम। (ii) किसी समस्या के समाधान के लिए अपनाया गया उपाय। solution

हलका *वि.* वि. 1. कम वज़न वाला। **विलो.** भारी 2. जिसका रंग फीका पड़ गया हो। **विलो.** गहरा। 3. जिसकी गुणवत्ता मानक की तुलना में कम हो। **जैसे:** हलका कपड़ा। **पर्या.** घटिया।

हलकापन/हल्कापन *पुं. (देश.)* 1. 'हलका' होने का गुण/भाव/अवस्था। **जैसे:** दवा लेने से सिर का भारीपन गया, हलकापन आ गया। 2. **ला.अर्थ** ओछापन, तुच्छता। गंभीरता का अभाव। **उदा.** तुम इस शुभ अवसर पर व्यवहार में क्यों हलकापन। हल्कापन दिखा रहे हो।

हलचल *स्त्री. (देश.)* 1. मन की शांत स्थिति में पैदा हुई भावना की लहरें। 2. जनसमूह के बीच उठी अशांति और अव्यवस्था की हलकी स्थिति।

हलधर *पुं.* शा.अर्थ जो हल धारण करता हो यानी जिनका आयुध हल हो। **जैसे**: बलराम (श्रीकृष्ण के बड़े भाई) 2. बैल (जिसके कंधे पर हल रखकर खेत जोता जाता है।) 3. हल चला कर खेत जोतने वाला; किसान।

हलफ़ *पुं. (अर.)* ईश्वर, सत्य, सद्ग्रंथ आदि को साक्षी करके ली जाने वाली शपथ। **पर्या.** सौगंध, कसम। **जैसे:** मैं सत्य का हलफ़ उठाकर कहता हूँ कि यह कार्य मैंने नहीं किया।

हलफ़नामा *पुं.(अर.)* लिखित शपथपत्र। affidavit

हलवाई *पुं. (अर.)* शा.अ. हलवा बनाने वाला और उसे बेचने वाला व्यक्ति। सा.अर्थ. विविध प्रकार की मिठाइयाँ, पकवान आदि बनाने व बेचने का व्यवसाय करने वाला व्यक्ति। **जैसे-** बरातों में विविध मिष्ठान व पकवान हलवाई ही बनाते हैं।

हलवाहा *पुं. (तद्.)* 1. दूसरों के खेत जोतने वाला व्यक्ति। 2. हल से जोतने वाला, हल चलाने वाला, किसान।

हलाल करना *स.क्रि. (अर.)* 1. धर्मानुसार विधिपूर्वक जायज़ (पवित्र) बनाना। 2. उचित, धन, श्रम आदि देकर जायज़ बनाना। 3. विधिपूर्वक पशु को मारकर खाने योग्य बनाना।

हलाल *वि. (अर.)* 1. जो शरीयत या इस्लामी धर्मशास्त्र के अनुसार उचित हो। धर्मानुकूल, जायज। 2. इस्लामी शास्त्रोक्त विधि से पवित्र किया हुआ खाने योग्य पशु। **मुहा.** हलाल की कमाई = ईमानदारी की कमाई। नमक हलाल = नमक के प्रति ईमानदार।

हलाहल *पुं. (तत्.)* 1. वह तीव्र विष जो समुद्र मंथन के समय सर्वप्रथम निकला था। 2. उग्र विष, जहर। **उदा.** शिव ने संसार को बचाने के लिए हलाहल का पान किया था।

हल्ला *पुं. (देश.)* 1. बहुत से लोगों की जोर-जोर से बातचीत तथा लड़ाई-झगड़े के दौरान शोर भरी आवाजें। **पर्या.** शोरगुल। 2. युद्ध में आक्रमण करते समय 'हर हर महादेव' या 'अल्ला हो अकबर' की तुमुल ध्वनि। 3. धावा, 4. हमला।

हवस *स्त्री. (अर.)* विविध प्रकार के भोगों को पाने या भोगने की न बुझने वाली तीव्र लालसा। **पर्या.** तृष्णा, कामवासना, इच्छा। **जैसे:** अमीर लोगों की धन-दौलत पाने की हवस बढ़ती ही रहती है। **मुहा.** हवस निकालना = अपनी इच्छाएँ तात्कालिक रूप से पूरी करना।

हवा *स्त्री. (अर.)* 1. (दर्श.) सृष्टिरचना के पाँच प्रमुख तत्वों में से एक जो समस्त प्राणियों के जीवन के लिए अत्यावश्यक है। **उदा.** क्षिति जल पावक गगन समीरा। पंच रचित यह अधम शरीरा। (तुलसीदास) **पर्या.** पवन, समीर, अनिल, वायु। 2. रसा. ऑक्सीजन, नाइट्रोजन आदि गैसों का वह मिश्रण। जो पृथ्वी मंडल को घेरे हुए है और जिसमें प्राणी साँस लेते हैं। **ला.अ.** 1. संगति या वातावरण का प्रभाव **जैसे:** इस मुहल्ले की तो हवा ही खराब है। 2. लोक-प्रवाह या फैशन **जैसे:** पाश्चात्य हवा से युवा वर्ग बिगड़ता जा रहा है। 3. अफवाह **जैसे:** बम विस्फोट की हवा मिनटों में शहर भर में फैल गई। 4. मौसम **जैसे:** पहाड़ी क्षेत्रों में हवा बहुत स्वास्थ्यवर्धक होती है। 5. अदृश्य **जैसे:** देखते देखते वह हवा हो गया। **मुहा.** 1. हवा का रुख देखना = समय के अनुसार

चलना। 2. हवा खाना = सैर करना, घूमना फिरना।

हवाई किला *पुं. (अर.)* **लाक्ष.अर्थ.** कोरी ऊँची काल्पनिक योजना, कल्पनामात्र। **जैसे.** शेख चिल्ली हवाई किले बनाता था।

हवाई *वि. (अर.)* 1. हवा से संबंधित। 2. हवा में चलने (उड़ने) वाला, **जैसे:** हवाई जहाज़। 3. झूठ या कल्पित, **जैसे:** हवाई खबर। **मुहा.** हवाइयाँ उड़ना = चेहरे का रंग उड़ जाना (लज्जा का भाव)।

हवाल *(पुं.) (अर.)* ('हाल' का बहुवचन)। 1. हाल; स्थिति, अवस्था, हालत। 2. वृत्तांत, समाचार, खबर, परिस्थिति। **जैसे:** उनके क्या हाल-हवाल हैं।

हवाला *पुं. (अर.)* 1. प्रमाण का उल्लेख। **जैसे:** इस घटना का हवाला फलाँ पुस्तक में मिलता है। 2. सुपुर्दगी। **उदा.** मैंने यह काम आपके हवाले कर दिया है। 3. एक पक्ष से पैसे लेकर अनुचित कार्य के लिए दूसरे पक्ष को भुगतान करने का अवैध धंधा।

हवालात *स्त्री. (अर. हवाल: का बहुवचन)* वह स्थान जहाँ अभियुक्त को हिरासत में (सीखंचों वाले कमरे में) बंद रखा जाता है। lock up

हवाले *क्रि.वि. (अर.)* किसी के संरक्षण अधिकार या अधीनता में। **जैसे:** 1. अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो। 2. यह सब घर-बार पुत्र के हवाले कर देशाटन के लिए चलो।

हवास *पुं. (अर.)* 1. आँख, नाक, कान, जीभ, त्वचा ये। पाँच ज्ञानेद्रियाँ। 2. स्मृति, संवेदना आदि मन की शक्तियाँ। **जैसे:** तुम होश-हवास में रहो। 3. चेतना, ज्ञान, होश, सुध। **मुहा.** हवास गुम हो जाना, समझदारी या बुद्धि से काम न कर पाना। होश न रहना। हवास ठिकाने होना। बदहवास = जिसकी बुद्धि काम न कर पा रही हो।

हवेली *स्त्री. (अर.)* एक बड़ा और पक्का महलनुमा मकान जिसकी चहार-दीवारी हुई हो। mansion

हशीश *(स्त्री.) (अर.)* भाँग की सूखी पत्तियाँ और डंठल का कोमल भाग जिन्हें नशे के रूप में प्रयोग किया जाता है।

हसरत *(स्त्री.) (अर.<हस्रत)* मन की लालसा, प्रबल इच्छा, साध, सपना। **उदा.** तुम्हारी हसरतें यहाँ कभी पूरी नहीं होगी। काफी दिनों से आपके दर्शन की हसरत थी जो आज पूरी हो गई। हसरतमंद-लालसावाला, अभिलाषी।

हसीन *वि. (अर.)* जो अत्यंत सुंदर हो। रूपवान, खूबसूरत। **जैसे:** हसीन लडके, हसीन प्राकृतिक दृश्य।

हसीन *वि. (अर.)* हुस्न (सौंदर्य/सुंदरता) से युक्त (कोई भी व्यक्ति या दृश्य) **पर्या.** सुंदर। **जैसे** कश्मीर की हसीन वादियाँ।

हसीना *स्त्री. (अर.)* सुंदर स्त्री/महिला।

हस्त *पुं. (तत्.)* हाथ, कर, शरीर का एक अवयव, हाथी की सूँड।

हस्तकला *स्त्री. (तत्.)* शा.अर्थ हाथ की कला। 1. हाथ से (न कि मशीन से) सुंदर कृतियों की रचनात्मक अभिव्यक्ति। 2. इस तरह से बनाई गई कलापूर्ण वस्तु। handicraft

हस्तक्षेप *पुं. (तत्.)* शा.अ. हाथ फेंकना सा.अर्थ 1. किसी काम में अनधिकार चेष्टा करते हुए बाधा डालना या अनावश्यक रूप से टोकना। 2. किसी काम में दखल देना। दखलंदाजी। **उदा.** कृपया हमारे कार्य में हस्तक्षेप करना बंद करें।

हस्तलिपि *स्त्री. (तत्.)* हाथ की लिखावट (यानी जो न तो टंकित हो और न ही मुद्रित), हस्तलेख। hand writing

हस्तलेख *पुं. (तत्.)* **दे.** हस्तलिपि।

हस्तशिल्प *पुं. (तत्.)* हाथ की कारीगरी का वह नमूना जिसमें कलात्मक अभिव्यक्ति हुई हो। **पर्या.** हस्तशिल्प, हस्तकला, दस्तकारी। handicraft

हस्ताक्षर-अभियान *पुं. (तत्.)* लक्ष्य प्राप्ति के लिए किसी माँग-पत्र पर असंख्य जनसमुदाय के हस्ताक्षर करवाकर उसे सरकार को प्रस्तुत किए जाने की कार्रवाई।

हस्तामलक [हस्त+आमलक] *(पुं.) (तत्.)* 1. हाथ में या हथेली पर रखा हुआ आँवला। 2. (लाक्ष.) वह बात या कोई वस्तु जो पूर्णतया स्पष्ट या प्रत्यक्ष हो। 3. सहज रूप से लभ्य। **उदा.** उन्हें व्याकरण का ज्ञान हस्तामलकवत् है।

हस्तिनापुर *पुं. (तत्.)* चंद्रवंशी नरेश हस्ती द्वारा निर्मित एक प्राचीन नगर जो महाभारत के

अनुसार कौरवों की राजधानी था और वर्तमान दिल्ली से लगभग 56 मील पूर्वोत्तर था।

हस्ती *पुं. (तत्.)* हाथी *(स्त्री. हस्तिनी, हथिनी।) 2. स्त्री. (फा.)* **उदा.** तुम्हारी क्या हस्ती है जो मुझसे टकराने का साहस किया।

हाँकना *सक्रि. (तद्.<हुंकरण)* 1. खेत में हल चलाना। 2. इकट्ठा हुए पशुओं को डंडे के ज़ोर पर आगे बढ़ने को प्रेरित करना। पशुचालित वाहन को आगे बढ़ाना।

हाँडी *स्त्री. (तद्.)* देगची के आकार का मिट्टी का छोटा बरतन, हँडिया। **मुहा.** काठ की हाँडी = छल, कपट का रूप; चाल। **जैसे:** काठ की हाँडी बार-बार नहीं चढ़ती। (कोई भी गलत चाल बार-बार नहीं चली जा सकती)।

हाँफना *अ.क्रि. (देश.)* पारि.अर्थ शारीरिक श्रम दौड़ने-चढ़ने आदि के कारण या किसी आकस्मिक भय या रोग के कारण साँस की गति का तेज़ होना।

हाइड्रा *पुं. (अं.)* सीलेन्टेरेटा संघ (फाइलम) और हाइड्रोज़ोआ वर्ग (क्लास) का अलवण जल में रहने वाला प्राणी। यह लकड़ियों, पत्थर, पत्तियों आदि पर चिपका रहता है। इसके शरीर में एक गुहा होती है जो मुँह द्वारा ऊपर की ओर खुलती है। इसके मुँह के चारों ओर स्पर्शिकाएँ होती हैं। Hydra

हाइड्रोजन *पुं. (अं.)* (रसा.) सबसे हल्का तत्व जो पृथ्वी पर ऑक्सीजन के उचित संयोग से पानी के रूप में प्राप्त होता है। सामान्य अवस्था में यह एक रंगहीन व गंधहीन गैस है।

हाइड्रोजन बम *पुं. (तत्.)* हाइड्रोजन के नाभिकों (न कि नाभिकीय विखंडन) के फलस्वरूप निर्मित हल्के हीलियम नाभिकों द्वारा उत्सर्जित ऊर्जा से संहारक शक्ति प्राप्त करने वाला बम। **तु.** परमाणु बम।

हाउसफुल *वि. (अं.)* सिनेमागृह या किसी भी प्रदर्शन कक्ष की स्थिति जब वह कार्यक्रम शुरू होने से पहले ही दर्शकों से पूरी तरह भर जाए और बाद में आने वाले व्यक्तियों के लिए प्रवेश बंद हो जाए।

हाउसबोट *पुं. (अं.)* हाउसबोट- **दे.** शिकारा। शिकारा वह नौका जिसमें पर्यटकों के लिए आवासीय व्यवस्था की सुविधा उपलब्ध होती है। शिकारे श्रीनगर (कश्मीर) की डल झील में उपलब्ध हैं।

हाकिम *पुं. (अर.)* **पारि.अर्थ** शासक या बड़ा अधिकारी जिसकी हुकूमत चलती हो।

हाज़मा *पुं. (अरबी>हाज़िम:)* 1. पेट की भोजन पचाने की क्रियात्मक शक्ति। **जैसे:** 1. उसका हाज़मा बहुत अच्छा है, उसे कोई उदर विकार नहीं है। 2. ला. किसी विजातीय पदार्थों, तत्वों, जनसमुदाय आदि को आत्मसात् करने की शक्ति/क्षमता। **जैसे:** भारत देश के सभी धर्ममतानुयायियों, जातियों, भाषाभाषियों को आत्मसात् कर रखा है, अत: निश्चित ही हमारे देश का **'हाज़मा'** सर्वप्रसिद्ध है।

हाज़िर जवाब *वि. (अर्.)* हाजिर है जवाब जिसका यानी किसी भी बात का फौरन (माकूल और मसखरी भरा) जवाब देने वाला (व्यक्ति)। **पर्या.** प्रत्युत्पन्नमति।

हाज़िर जवाबी *स्त्री. (अर.)* किसी भी बात को सुनते ही उस पर माकूल और मसखरी भरी टिप्पणी देने की योग्यता। **दे.** हाज़िर जवाब।

हाज़िरी *स्त्री. (अर.)* शा.अ. हाजिर (उपस्थित) होने का भाव। सा.अ. 1. किसी की शारीरिक रूप से उपस्थिति, मौजूदगी। 2. विद्यालयों आदि में कक्षाध्यापक द्वारा कक्षा में छात्रों की तथा कारखानों व कार्यालयों आदि में श्रमिकों/कर्मचारियों आदि की उपस्थिति की उपस्थिति पंजिका में प्रविष्टि। 3. न्यायालय में आदेशानुसार अभियुक्त, गवाह आदि की उपस्थिति। **मुहा.** हाजिरी बजाना = किसी बड़े आदमी के सम्मुख नियमित रूप से जाते रहना।

हाजी *पुं. (अर.)* जो हज़ की यात्रा कर आया हो, वह मुसलमान। **वि.** अरबी साहित्य में 'हाजी' शब्द इस अर्थ में प्राप्त नहीं होता पर फ़ारसी, तुर्की आदि में इसका प्रयोग मिलता है।

हाट *स्त्री. (तद्.>हट्ट)* 1. वह बाजार जो नियमित रूप से सप्ताह में एक दिन निश्चित स्थान जैसे पटरियों पर या खुले मैदान में लगता है। **जैसे:** हमारे यहाँ शुक्रवार के हाट में सभी प्रकार की वस्तुएँ बिकती हैं। 2. बाजार, दुकान।

हाथ *पुं. (तद्.>हस्त)* 1. शरीर का वह अंग जो कंधे से सीधे जुड़ा हुआ अंगुलियों तक होता है।

मानव के दो हाथ होते हैं जिनसे किसी वस्तु को पकड़ने, छूने, देने या संकेत आदि कार्य होते हैं। 2. **ला.अर्थ** किसी घटना, षड़यंत्र, कार्य में किसी की भागीदारी या संबंध। **जैसे:** कल हुए बाल हत्याकांड में पड़ोसी का हाथ है। द्वारा। **जैसे:** उसके हाथ मेरी पुस्तक मेज दो। **मुहा.** हाथ उठाना या चलाना = किसी को मारना। हाथ खाली होना = पास में धन न होना। हाथ पर हाथ धरे बैठे रहना = खाली बैठे रहना। हाथ चढ़ना = वश में आना। हाथ पीले करना = लड़की की शादी करना।

हाथापाई *स्त्री. (देश.)* 1. हाथों और पैरों से अर्थात् लातें, घूँसे, मुक्के, धक्के मारकर की जाने वाली लड़ाई। 2. मारपीट। **जैसे:** आज दो वाहनचालकों में हाथापाई होते होते बची।

हाथी *पुं. (तद्.)* 1. एक विशालकाय शक्तिशाली मोटा स्तनपायी चौपाया जिसके मुख से निकले हुए दो बड़े दाँत तथा नासिका के रूप में एक लंबी सूँड़ होती है। गज। **पर्या.** करि, हस्ति, कुंजर। 2. शतरंज का एक मोहरा - रूक rook **मुहा.** हाथी बाँधना = बहुत खर्च वाला काम करना। हाथी-सा होना = बहुत मोटा होना। सफेद हाथी = ऐसा कोई कार्य जो आकार में इतना बड़ा हो कि उसका संभालना मुश्किल हो और जिससे कुछ प्राप्त भी न हो।

हानि *स्त्री. (तत्.)* 1. टूटने-फूटने या अन्य किसी भी कारण से होने वाली क्षति। 2. व्यापार में व्यय की तुलना में आय का कम रह जाना। 3. कोई ऐसी बात जिससे पद-प्रतिष्ठा, सम्मान आदि में कमी आती हो। **पर्या.** नुकसान, घाटा, क्षति। **विलो.** लाभ।

हानिकारक *वि. (तत्.)* 1. जिसके कारण नुकसान, हानि, घाटा आदि हो। 2. जिसके कारण स्वास्थ्य बिगड़ने की संभावना हो। **पर्या.** नुकसानदेहक।

हामी *स्त्री. (देश.)* 'हाँ' करने की क्रिया या भाव; **मुहा.** हामी भरना-सौंपे गए काम को पूरा करने की तुरंत 'हाँ' भर लेना।

हाय *अव्य. (तद्.>हा)* अधिक शारीरिक या मानसिक कष्ट होने पर अर्थात् दर्द, शोक, दु:ख की अभिव्यक्ति के लिए सहसा मुख से निकलने वाला शब्द। **जैसे: 1.** हाय! दर्द से मेरा सिर घूम रहा है। **2.** हाय! तुमने यह क्या अनर्थ कर डाला। **स्त्री.** शाप, दुर्भावना। **उदा.** दुर्बल को न सताइए, जाकी मोटी हाय। (अव्य.) *(अंग्रे.<हाइ)* आजकल प्राय: शिक्षार्थियों में अपने मित्र या सहेली का ध्यान आकर्षित करने के लिए प्रयुक्त किया जाने वाल प्यार भरा शब्द। **जैसे:** (सुधा अपनी सखी के प्रति) हाय! प्रिया! तुम कैसी हो।

हाय-तौबा *[हाय+तौबा] स्त्री. (अ.)* अनिष्ट कार्य होने की पीड़ा और उसका पछतावा। **मुहा.** हाय-तौबा करना, मचाना-किसी अवांछित घटना या कार्य से अत्यंत दु:खी होकर शोर करना।

हाय-हाय *अव्यय (देश.)* लोगों के द्वारा किसी भ्रष्ट नेता, मंत्री, अधिकारी के खिलाफ प्रयुक्त किया जाने वाला निषेधात्मक नारा। **जैसे:** सी.एम**?** हाय हाय!, विधायक हाय हाय! आदि।

हार *पुं. (तत्.)* गले में पहनने या पहनाने की फूलों, सोने, चाँदी, मोतियों आदि की सुंदर व आकर्षक माला। **जैसे:** आज हमारे विद्यालय में शिक्षा मंत्री को पुष्पहार पहनाकर सम्मानित किया गया। *स्त्री. (तद्.)* युद्ध, खेल, किसी प्रतियोगिता में प्रतिद्वंद्वी से न जीत सकने की स्थिति या भाव। पराजय। **जैसे:** क्रिकेट प्रतियोगिता में आस्ट्रेलिया की भारत से **हार** चकित कर देने वाली थी। **विलो.** जीत।

हार जीत *स्त्री. (तद्.)* 1. जीवन में कभी सफल और कभी असफल होने की स्थिति। 2. किसी प्रतियोगिता में जीत या हार होना। **जैसे-** हार-जीत तो जीवन में चलती रहती है। **मुहा.** हार जीत करना = जुआ खेलना।

हारना *अ. क. (तद्.)* 1. युद् ध, खेल, प्रतियोगिता आदि में प्रतिपक्षी से पराजित होना। **जैसे: 1.** 1971 के भारत-पाकिस्तान युद्ध में पाकिस्तान हार गया था। 2. प्रयत्न करने पर भी लक्ष्यसिद् धि में असफल रहना। 3. विवश होना/लाचार होना। स.क्रि. गँवाना। **जैसे:** जुएं में हारना।

हारमोनियम *पुं. (अं.)* एक संदूकनुमा बाजा जिसमें धौंकनी खींचकर कुंजी पटल की सहायता से तीनों प्रकार के (मंद्र, मध्य, तार सप्तक वाले) स्वर निकाले जाते हैं।

हार्दिक *वि. (तत्.)* हृदय संबंधी, दिल से। **उदा.** पधारिए, आपका हार्दिक स्वागत है।

हार्मोन *पुं. (अं.)* अंत:स्रावी ग्रंथियों द्वारा स्रावित ऐसा रासायनिक पदार्थ जो मुख्यत: प्रोटीन अथवा स्टीरॉयड होता है। यह सीधे रुधिर प्रवाह में मिलकर शरीर के विशिष्ट भाग पर विशिष्ट प्रभाव डालता है। Hormone

हार्वेस्टर *पुं. (अं.)* पक जाने पर फसल काटने की मशीन।

हाल *पुं. (अर.)* 1. दया, अवस्था, परिस्थिति। **जैसे:** तुम्हें हर हाल में घर जाना है। 2. समाचार **जैसे:** आपके हाल कैसे हैं? 3. विवरण/ब्यौरा **जैसे:** आप अपने जीवन का सारा हाल लिखिए। 4. वर्तमान, मौजूद। अभी हाल में तो ठीक-ठाक हैं।

हालचाल *पुं. (अर.+तद्.)* 1. जीवन की वह परिस्थिति जिसका वर्णन या विवरण किसी के पूछने पर बताया जा सके। 2. अवस्था, दशा, स्थिति। 3. वृत्तांत, समाचार। **जैसे:** मित्र! अपने हालचाल सुनाओ।

हालाँकि *क्रि.वि. (फार.)* यद्यपि, अगरचे।

हालात *पुं. (अर.)* (हालत का बहुव. रूप) 1. परिस्थितियाँ, दशा। **जैसे:** अब युद्ध के पश्चात् देश के हालात सुधरने लगे हैं।

हाव-भाव *पुं. (तत्.)* आंगिक और मानसिक चेष्टाएँ। **उदा.** उसके हाव-भाव से पता चल गया कि वह हमसे खुश नहीं है।

हावी *वि. (अर.)* 1. जिसने किसी चीज को नीचा दिखा दिया हो। **उदा.** इस मैच में बल्ला गेंद पर हावी रहा। 2. जिसने अपनी चतुराई या अन्य गुणों के कारण किसी पर काबू पा रखा हो। **मुहा. हावी होना =** छा जाना।

हाशिया *पुं. (अर. हाशिय:)* 1. साड़ी या चादर का किनारा। 2. (i) पड़ी रेखाओं वाले कागज का छोड़ा गया खाली हिस्सा (जिस पर इबारत लिखी नहीं जाती)।; (ii) छोड़े गए खाली हिस्सों में से खासकर बाँयी ओर का हिस्सा जो खड़ी रेखा से विभाजित दिखाया जाता है। ला.अर्थ समाज का उपेक्षित या मुख्य धारा से कटा वर्ग। margin

हास *पुं. (तत्.)* 1. हँसने की क्रिया या भाव, हँसी। 2. विनोद, दिल्लगी, ठठोली। **जैसे:** जीवन में हास-परिहास तो बहुत जरूरी हैं।

हासिल *वि. (अर.)* 1. किसी प्रयत्न से पाया या मिला हुआ। लब्ध, प्राप्त। **जैसे:** अच्छे बच्चे परिश्रम करके ही अपने लक्ष्य को हासिल करते हैं। 2. लाभ, नफ़; उपज, पैदावार। **3. गणि.** जोड़ या गुणा की क्रिया में दहाई का वह अंक जिसे आगे की संख्या में जोड़ा जाना है।

हास्य *पुं. (तत्.)* 1. हँसने की क्रिया या भाव। हास। **जैसे:** उनका हास्य मधुर है। 2. परिहास, मज़ाक। 3. साहि. काव्य के नौ रसों में से एक जिसका स्थायीभाव 'हास' है। **जैसे:** आपकी हास्य रस की कविता सुनकर सभी आनंदित हुए।

हास्यास्पद *[हास्य+आस्पद] वि. (तत्.)* 1. जिसे देखकर या सुनकर हँसी आए। हँसी का कारण बनने वाला। 2. बेतुका, बेढंगा, उपहास का पात्र या विषय। **जैसे:** उनके सभी तर्क प्राय: हास्यास्पद होते हैं।

हाहा *अव्य. (तत्.)* 1. पीड़ा या दु:ख व्यक्त करने का शब्द, **जैसे:** हा हा! मेरा सब कुछ लुट गया। 2. रोने चिल्लाने की आवाज, **उदा.** हा हा करि सब रोवन लागे। 3. गिड़गिड़ाकर विनती करने का शब्द। **उदा.** हा हा कंत मानि बिनती यह। (सूरसागर) 4. हँसी की आवाज़।

हाहाकार *पुं. (तत्.)* 1. किसी भय, विपत्ति या घोर कष्ट से पीड़ित होने पर जोर-जोर से रोने-चिल्लाने की करुणजनक आवाज। 2. युद्ध में मार-काट से होने वाला कोलाहल। 3. रोना-पीटना। 4. बाज़ार में किसी वस्तु का अभाव होने पर उसे उपलब्ध कराने के लिए चारों ओर से होने वाली जनता की माँग। **प्रयो.** हाहाकार मचना।

हिंडोला *पुं. (तद्.<हिंदोल)* 1. आगे-पीछे, चक्करदार या ऊपर-नीचे आने-जाने वाला वह झूला जिसमें मनोरंजनार्थ लोगों के बैठने के लिए छोटे-छोटे चौखटे बने होते हैं। **पर्या.** झूला **तु.** पालना।

हिंद *पुं. (फा.)* हिंदुस्तान (हिंदुस्तान), भारत देश।

हिंद महासागर *पुं. (फ़ा.+तत्.)* इंडियन ओशन के लिए प्रयुक्त हिंदी पर्याय जो एशिया के दक्षिणी छोर भारत के दक्षिण में अफ्रीका के पूर्वी तट से लेकर आस्ट्रेलिया के पश्चिमी तट तक फैला है। Indian Ocean

हिंदी *स्त्री (फ़ा.)* 1. हिंदुस्तान के निवासी। **उदा.** हिंदी है हमवतन हैं हिंदोस्तान हमारा। 2. 'हिंदी' भाषा।

हिंदुस्तानी *वि. (फ़ार.<हिंदोस्तानी)* हिंदुस्तान का, हिंदुस्तान संबंधी, भारतीय। *पुं.* (फार.) हिंदुस्तान का निवासी, भारतीय *स्त्री. (फार.)* हिंदुस्तान की भाषा, हिंदी-उर्दू का मिश्रित रूप।

हिंसक *वि. (तत्.)* हिंसा करने वाला; हिंसा की मूल प्रवृत्ति रखने वाला (हिंसक पशु)।

हिंसा-मुक्त *(तत्.)* हिंसा कर्म से रहित (क्षेत्र)।

हिंस्र *वि. (तत्.)* 1. हिंसा करने वाला, हिंसक। 2. खूँखार, भयानक। **जैसे:** बाघ, चीता, तेंदुआ आदि **हिंस्र** पशु हैं जो मनुष्य पर भी आक्रमण कर सकते हैं।

हिचक *स्त्री. (तद्.)* किसी काम को करने से पूर्व मन में उत्पन्न होने वाला संकोच। झिझक, आगा-पीछा हिचकिचाहट।

हिचकना *अ.क्रि. (तद्.)* 1. किसी काम को करने में अनिच्छा, असमर्थता, भय, संकोच आदि के कारण तुरंत प्रवृत्त न होना। 2. संकोच करना, झिझकना, हिचकिचाना। **जैसे:** कुछ भय के कारण वह आपका काम करने में हिचक रहा है। 3. हिचकियाँ लेना।

हिचकिचाहट *[हिचकिच+आहट] स्त्री. (तद्.)* 1. किसी काम करने से पहले औचित्य, अनौचित्य, सामर्थ्य, विघ्न आदि की आशंका होने के कारण कुछ रुकने की स्थिति या भाव। 2. भय, अनिच्छा; हिचक; संकोच; असमंजस की स्थिति। **जैसे:** उसे दूसरे से सहायता माँगने में सदा हिचकिचाहट महसूस होती है।

हिचकी *स्त्री. (तद्.)* 1. वह शारीरिक व्यापार जिसमें पेट की वायु किसी बाधा के कारण कुछ रुक-रुककर पर झटके के साथ गले से निकलती है। 2. बहुत अधिक रो लेने के बाद एक साथ तीन चार बार जोर-जोर से साँस लेने की क्रिया।

हिचकोला *पुं. (देश.)* रह-रह कर लगने वाला हलका झटका या धक्का। वह धक्का जो गाड़ी चारपाई आदि के हिलाए-डुलाए जाने पर लगे।

हिजड़ा *[हीज़+ड़ा प्रत्यय) पुं. (फ़ा.>हीज़)* 1. वह व्यक्ति जो शारीरिक लक्षणों से न पूर्ण रूप से पुरुष हो और न ही स्त्री किंतु स्त्रीवेश में रहता हो। 2. नपुंसक। **ला.अर्थ** कायर, अक्षम, साहसहीन।

हिजरी *स्त्री. (अर.)* अरब देश द्वारा स्वीकृत वह सन्/संवत् जो मुहम्मद साहब के मक्के से मदीना भागने या हिज़रत करने की तिथि 15 जुलाई 622 ई. से प्रारंभ हुआ है और चान्द्र कालगणना पर आधारित है।

हिज्जे *पुं. (अर.<हिज्जः)* 1. किसी शब्द में आये हुए वर्णों (स्वरों और व्यंजनों) की क्रम से अलग-अलग कहना। 2. अक्षरी, वर्तनी। spelling

हित *पुं. (तत्.)* 1. कल्याण, मंगल, भलाई, उपकार। 2. लाभ, फायदा। *क्रि.वि.* के लिए, वास्ते (सामान्यत: कविता में प्रयुक्त)

हितकार/हितकारी *वि. (तत्.)* 1. हित या भलाई करने वाला, हितकारक। 2. लाभदायक, फायदेमंद। 3. स्वास्थ्य के लिए अनुकूल। 4. उपकार करने वाला। **विलो.** अहितकर।

हितैषी *[हित+एषी इच्छुक] वि. (तत्.)* (किसी का) हित या भला चाहने वाला। हितचिंतक। **पर्या.** शुभेच्छु, हितेच्छु।

हिदायत *(अर.) स्त्री.* किसी कार्य को सही ढंग से करने के लिए बड़े का छोटे को ब्यौरेवार मार्गदर्शन। **पर्या.** अनुदेश।

हिनहिनाहट [हिनहिन+आहट] *स्त्री.(अनु.)* घोड़े की हिन-हिन जैसी आवाज़।

हिना *स्त्री. (अर.)* वह झाड़ीदार पौधा जिसकी पत्तियाँ हरी होती है तथा पीसकर शरीर पर लेप करने से सुंदर लाल रंग पैदा करती है। मेहंदी का पौधा। 2. मेहंदी की पत्तियाँ; मेहंदी की सूखी पत्तियों का चूर्ण।

हिफाज़त *स्त्री. (अर.)* (किसी वस्तु को) सम्हाल कर रखना, सुरक्षा, देखरेख। **जैसे:** कृपया आप अपने सामान की हिफ़ाजत स्वयं करें।

हिमनद *पुं. (तत्.)* बहुत धीमी गति से (अदृष्ट जैसी) बहने वाली हिम या बर्फ़ की नदी। **पर्या.** हिमानी। glacier

हिमनद हिमोढ़ *पुं. (तत्.)* हिमनद के प्रवाह से निक्षेपित अवसादों का संचय। **पर्या.** हिमोढ मोरेन

हिमाचल *[हिम+अचल] (तत्.)* 1. हिम (बर्फ) से आच्छादित ऊँचे शिखरों वाला पर्वत। हिमालय

पर्वत। 2. वर्तमान भारत का एक राज्य जिसकी राजधानी 'शिमला' है।

हिमानी *स्त्री. (तत्.)* **दे.** हिमनद।

हिमायत *स्त्री. (अर.)* किसी का (शब्दों या कार्यों से) पक्ष लेने या तरफ़दारी करने का भाव।

हिमालय *[हिम + आलय] पुं. (तत्.)* शा.अर्थ बर्फ का घर। भारत के उत्तर में स्थित पर्वत शृंखला।

हिम्मत *स्त्री. (अर.)* **पारि.अर्थ** किसी कठिन परिस्थिति में भी साहस न छोडक़र कार्य करते रहने का उत्साह। **पर्या.** 1. साहस, 2. हौसला, 3. जुर्अत। ला.अर्थ धृष्टता, ढीठपन। **उदा.** तुम्हारी यह हिम्मत जो मेरा मुकाबला करते हो। **मुहा.** हिम्मत हारना = निराश होकर सौंपे गए कार्य को अधबीच छोड़ देना।

हिय *पुं. (तद्.>हृदय)* 1. शरीर का वह मार्मिक अंग जो धडक़न के साथ रक्त का शोधन करके उसे पुन: सारे शरीर में पहुँचाता है। हृदय। 2. भावनात्मक उद्वेग का मुख्य अंग, दिल, मन। **उदा.** पिय हिय की सिय जाननहारी (तुलसीदास मानस. 2/102)

हिरण्यगर्भ *वि./पुं. (तत्.)* शा.अर्थ सोने का गर्भ; सा.अ. सोने **जैसे:** गर्भ वाला, ब्रह्मा। प्राचीन काल में संपन्न किया जाने वाला एक अनुष्ठान जिसके सफलतापूर्वक संपन्न हो जाने के परिणामस्वरूप जन्मना क्षत्रिय न होते हुए भी याजक को क्षत्रियत्व प्राप्त हो जाना मान लिया जाता था।

हिरासत *स्त्री. (अर.)* किसी अभियोग में पुलिस या न्यायालय की निगरानी में रखना; पुलिस/न्यायालय की अभिरक्षा। **उदा.** अभियुक्त को सात दिन की पुलिस/न्यायालय की हिरासत (=अभिरक्षा) मे भेज दिया गया। custody

हिलाना *स.क्रि (तद्.)* किसी स्थिर हुई वस्तु को अस्थिर करना।

हिलोर *स्त्री. (तद्.<हिल्लोल)* पानी की लहर/तरंग। **मुहा.** हिलोरें लेना=मन में खुशी की तरंगें उठना।

हिसाब *पुं. (अर.)* 1. किसी आर्थिक व्यवहार का मौखिक अथवा लिखित विवरण; खरीद-फरोख़्त आदि का ब्यौरा। 2. 'गणित' का पर्याय।

हिसाब-किताब *पुं. (अर.)* 1. आय-व्यय आदि का लिखित ब्यौरा या लेखा। 2. व्यापारिक लेन-देन या व्यवहार। 3. पद्धति, ढंग, तरीका।

हिस्सा *पुं. (अर. < हिस्स:)* 1. संपूर्ण का एक भाग, अंश, अवयव। **पर्या.** खंड, टुकड़ा, भाग, अंश। 2. उत्तराधिकार के रूप में प्राप्त संपत्ति में व्यक्ति विशेष को मिलने वाला या मिला अंश। **अर्थ.** किसी कंपनी की पूँजी का वह निर्धारित छोटा भाग जिसे कोई भी व्यक्ति खरीद सकता है और बदले में कंपनी से आनुपातिक लाभ प्राप्त करता है। **पर्या.** अंश। share

हिस्सेदार *[हिस्सा+दार] पुं. (अर.+फार.)* 1. वह जिसका किसी प्रकार संपत्ति ज़मीन आदि में हिस्सा या भाग हो। सहभागी। 2. कोई भाग/अंश या हिस्सा पाने का अधिकारी व्यक्ति। **जैसे:** वह घर की संपत्ति आधे का हिस्सेदार है। 3. व्यवसाय आदि में साझेदारी। **जैसे:** हीरा आदि नगों के व्यवसाय में वह एक तिहाई का हिस्सेदार है।

हिस्सेदार *स्त्री.* 1. भागीदारी 2. साझेदारी। share

हींग *स्त्री. (तद्.<हिंगु)* विशेष प्रकार के वृक्षों से प्राप्त गोंद जैसा पदार्थ जिसमें बहुत तीव्र गंध होती है और जो दवा तथा भोजनोपयोगी मसाले के काम आता है। **जैसे:** उड़द की दाल में हींग की छौंक उसे स्वादिष्ट बना देती है।

हीनचालक *वि.(तत्.)* **दे.** कुचालक।

हीनता *(भाव.) स्त्री. (तत्.)* 1. किसी गुण, वस्तु, बल आदि से रहित होने का भाव। 2. दूसरों से अपने को कमतर यानी हीन समझने की भावना। **जैसे:** हीनता की ग्रंथि।

हीमोग्लोबिन *पुं. (अं.) पुं. (जंतु वि.)* कशेरुकियों की लाल रुधिर कणिकाओं में वर्तमान लौह युक्त वर्णक जो ऑक्सीजन की उपस्थिति में लाल (धमनियों में) तथा उसकी अनुपस्थिति में बैंगनी (शिराओं में) होता है।

हीरक जयंती *स्त्री. (तत्.)* किसी व्यक्ति; संस्था या महत्त्वपूर्ण कार्य आदि के जन्म। आरंभ होने के 60वें वर्ष में मनाई जाने वाली वर्षगाँठ जिसे बड़ी धूम-धाम से मनाया जाता है। diamond jubilee

हीरा *पुं. (तद्. हीरक)* 1. एक प्रकार का बहुमूल्य प्रसिद्ध रत्न जो बहुत चमकदार तथा अत्यंत कठोर होता है। यह प्राय: सफेद रंग का होता है। **जैसे:** हीरा जड़ित अंगूठी बहुमूल्य है। 2. (ला.) श्रेष्ठ या गुणी व्यक्ति। **जैसे:** आपका पुत्र तो **'हीरा'** है। diamond

हील-हुज्जत *[हीला+हुज्जत] स्त्री. (अर.)* शा.अ. हील = बहाना, हुज्जत = विवाद। सा.अ. 1. व्यर्थ की तकरार/विवाद। 2. किसी प्रकार का बहाना बना कर उत्पन्न किया गया विवाद। **जैसे:** हील-हुज्जत किये बिना उसने हमारी बात मान ली।

हीलियम *पुं. (अं.)* एक रंगहीन, गंधहीन अक्रिय गैस का नाम जो वायुमंडल की ऊपरी परत में अर्थात् अंतरिक्ष में तैरती रहती है। द्रव रूप में प्राप्त कर निम्न ताप वाले प्रयोगों में काम में लाया जाता है।

हुंडी *स्त्री. (देश.)* 1. स्वतंत्रता से पूर्व प्रचलित महाजनी पद्धति के अनुसार किसी महाजन के द्वारा लिखा हुआ वह प्रमाण-पत्र जिसमें यह लिखा होता था कि अमुक धन की ब्याज समेत वापसी इस तिथि तक कर दी जाएगी। (पुराने ढंग का हैंड नोट)। 2. महाजन द्वारा किसी को कोई धनराशि दिलाने के लिए किसी व्यक्ति/महाजन/बैंक के नाम लिखा गया आदेश पत्र। (चेक/ड्राफ्ट/बिल का पुराना रूप)। 3. दक्षिण भारत में मंदिरों में रखा गया विशेष दान पात्र। **जैसे:** तिरुपति देव स्थानम् में रखी 'हुंडी'।

हुक *पुं. (अंग्रे.)* 1. एक सिरे पर मुड़ी कील। 2. कँटिया जिसमें कोई चीज फँसाई जाती है। hook

हुकुम/हुक्म *पुं. (अर.)* आज्ञा; आदेश; इजाज़त।

हुकूमत *स्त्री. (अर.)* 1. किसी देश, प्रांत आदि की जनता पर विधिक नियंत्रण या प्राधिकार। **पर्या.** शासन। **उदा.** स्वतंत्रता से पूर्व भारत पर अंग्रेज़ों की हुकूमत थी। 2. आदेश पालन करवाने का अधिकार। **पर्या.** प्रभुत्व। **उदा.** बस करो। मुझ पर तुम्हारी हुकूमत नहीं चलेगी।

हुक्का *पुं. (अर.)* तम्बाकू का धुआँ पीने का वह विशेष उपकरण जिसके ऊपर चिलम तम्बाकू व आग रखी जाती है तथा उसके नीचे पानी भरा पेंदा तथा पास ही एक नली होती है, जिसमें मुँह लगाकर धुआँ पीने का शौक पूरा किया जाता है। पीने के समय पानी के साथ धुएँ का स्पर्श होने के कारण गड़ गड़ की आवाज होती है। **जैसे:** हुक्का गुड़गुड़ाना। **टि**. हरियाणा-राजस्थान में आज भी 'हुक्का' पीने का रिवाज है। **मुहा.** हुक्का-पानी छुड़ा देना = सामाजिक रूप से बहिष्कार कर देना।

हुजूर *पुं. (अर.)* 1. सम्मान के लिए एक आदरसूचक शब्द। **जैसे:** हुज़ूर! क्या सेवा करूँ? 2. किसी बड़े के सामने उपस्थिति। आमना-सामना। 3. राजसभा, न्यायालय, दरबार।

हुजूरी *स्त्री. (अर.)* 1. उपस्थिति 2. मौजूदगी 3. सम्मुखता। **मुहा.** जी हज़ूरी करना = अफ़सरों का चमचा बनना।

हुडक़ना *अ.क्रि. (देश.)* 1. वियोग के कारण विशेष रूप से शिशु का अपने प्रिय व्यक्ति के न मिलने पर दु:खी और मानसिक बेचैनी के कारण रोना, खाना-पीना तक छोड़ देना। 2. भयभीत और चिंतित होना। **जैसे:** यह शिशु अपनी दादी के लिए कई दिनों से हुडक़ रहा है।

हुड़दंग *पुं. (देश.)* 1. शोर करते हुए मौजमस्ती, ऊधम या उछल-कूद। **जैसे:** होली के दिन लडक़े हुड़दंग मचाते हैं। 2. असभ्यता या अशिष्टता युक्त शोर। **जैसे:** बच्चे गली में हुड़दंग क्यों मचा रहे हैं? **जैसे:** हुल्लड़, उपद्रव, उत्पात।

हुनर *पुं. (फ़ार.)* 1. किसी कार्य को करने की कला या कौशल विशेष। 2. कारीगरी।

हुनरमंद *वि./पुं. (फ़ा.)* शा.अर्थ हुनर जानने वाला। सा.अर्थ 1. निपुण, कुशल, प्रवीण। 2. कलाकार, कलाविद्। **दे.** हुनर।

हुबहू *वि. (अर.)* 1. बिल्कुल वैसा ही, पूर्णत: एक जैसा। 2. किसी वस्तु, व्यक्ति आदि के जैसा। **जैसे:** वह हुबहू तुम्हारी शक्ल का है।

हुलस/हुलास *स्त्री. (तद्. < हर्षोल्लास)* 1. मनोनुकूल स्थिति में उत्पन्न विशेष आनंद। 2. उत्साह।

हुलिया *पुं. (अर.<हुल्य:)* 1. किसी मनुष्य, वस्तु, प्राणी आदि के रूप-रंग वेभाभूषा कद आदि का ऐसा विवरण जिससे उसकी पहचान हो सके। 2. रूप, शक्ल, आकृति, वेशभूषा। **जैसे:** इंस्पेक्टर ने

चोर का हुलिया पूछा। **मुहा.** हुलिया बिगाड़ना = दुर्दशा करना, रूप बिगड़ना, बहुत मारना।

हुस्न *पुं. (अर.)* जिसमें सुंदरता व शोभा की परिपूर्णता हो। **पर्या.** सौंदर्य, लावण्य।

हूक *स्त्री. (तद्.>हिक्का)* 1. किसी पीड़ा, दु:ख आदि की स्थिति में मन में उठने वाली वेदना/कसक का भाव। 2. पेट में अचानक होने वाली पीड़ा/शूल।

हूर *स्त्री. (अर.)* 1. मुस्लिम मतानुसार स्वर्ग की अप्सरा या परी। 2. **ला.अर्थ** बहुत सुंदर लडक़ी या स्त्री।

हृदय *पुं. (तत्.)* 1. **आयु.** छाती के अंदर बाई ओर स्थित एक अवयव जो धौंकनी जैसी क्रिया से रक्त शरीर के सभी अंगों में रक्त को संचरित करता है। **पर्या.** दिल। 2. विकसित लाक्ष. अर्थ छाती के मध्य भाग में मानी जाने वाली अंतरिंद्रिय जिसमें प्रेम, करुणा, क्रोध, भय आदि भाव उत्पन्न होते हैं। **पर्या.** अंत:करण, दिल, मन। **मुहा.** 1. हृदय को चोट पहुँचना; हृदय विदीर्ण होना, हृदय छलनी होना-किसी शोकप्रद घटना को सुन, देखकर मन को इतना आघात लगना कि उत्साह समाप्त हो जाए। 2. हृदय विशाल होना = उदार होना।

हृदय-विदारक *वि. (तत्.)* शा.अर्थ हृदय को फाड़ देने वाला; (ऐसा कोई दु:खद समाचार, दुर्घटना आदि जो) हृदय को अत्यधिक कष्ट पहुँचाने वाला (हो)।

हृष्ट-पुष्ट *वि. (तत्.)* 1. मोटा ताजा स्वस्थ शरीर वाला, तंदुरुस्त। 2. बलवान, हट्टा-कट्टा, तगड़ा।

ह्रास *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ कमी, उतार, घटाव। किसी वस्तु के अपेक्षित गुणों, तत्वों आदि में कमी होना। 2. घिसने, छीजने, नष्ट होने या व्यर्थ जाने की क्रिया या भाव। waist

हेकड़बाज़ *वि. (देश.)* हेकड़ी दिखाने वाला (व्यक्ति) **दे.** हेकड़ी।

हेकड़ी *स्त्री. (देश.)* शारीरिक बल अथवा पद-प्रतिष्ठा को प्रदर्शित करने का अशोभनीय व्यवहार, उजड्डपन। **उदा.** ज्यादा हेकड़ी मत दिखाओ।

हेक्टेयर *पुं. (अं.)* भूमि के क्षेत्रफल को मापने की एक इकाई जो लगभग ढाई एकड़ या दस हजार वर्ग मीटर के बराबर होती है।

हेठी *स्त्री. (देश.)* अप्रतिष्ठा। (प्रतिष्ठा, मान या इज्जत में, कमी का भाव।

हेतु *पुं. (तत्.)* जिस कारण से कोई कार्य किया गया हो। **पर्या.** कारण, वजह, सबब, उद्देश्य, प्रयोजन।

हेमंत *पुं. (तत्.)* 1. भारत में होने वाली छह ऋतुओं में से एक जो शरद् के बाद और शिशिर से पहले अर्थात् मार्गशीर्ष-पौष (अगहन-पूस) महीनों में होती है। अंग्रेजी महीनों में लगभग नवंबर-दिसंबर माह। 2. जाड़े का मौसम। **जैसे:** हेमंत ऋतु में ही खरीफ़ की फसल तैयार होती है।

हेम *पुं. (तत्.)* 1. स्वर्ण, सोना 2. जल, 3. हिम, बर्फ, पाला, 4. ओला।

हेय *वि. (तत्.)* 1. जो छोड़ने योग्य हो, त्याज्य हो। 2. तुच्छ, बुरा, खराब।

हेर-फेर *पुं. (देश.)* 1. वस्तुओं में या शब्दों आदि में या अन्यत्र किसी प्रकार का आपस में किया गया परिवर्तन, अदल-बदल, उलट-पलट; खरीद-बेच। **जैसे:** मंत्रिमंडल में आज कुछ हेर-फेर किया गया। 2. घुमाव-फिराव, चक्कर। **जैसे:** यह सब समय का हेर फेर है। 3. दाँव पेंच, चालबाजी। **जैसे:** वह हमेशा हेर-फेर ही करता रहता है।

हेरा-फेरी *स्त्री.* 1. हेर फेर करने का भाव। **दे.** हेर फेर। 2. चालाकी से हेरफेर करना।

हैंडल *पुं. (अं.)* वह हिस्सा जिसे हाथ में थामा जाए यानी जिसे हाथ से नियंत्रित किया जाए। **पर्या.** मुठिया, दस्ता। **जैसे:** साइकिल का हैंडल।

हैजा *पुं. (अर.<हैज़:)* एक घातक और संक्रामक रोग जिसमें उल्टी (कै) होती है और दस्त आते हैं। विशूचिका। **जैसे:** हैजा से ग्रस्त व्यक्ति को तुरंत चिकित्सक के पास ले जाना चाहिए। cholera

हैपेटाइटिस ए *पुं. (अं.)* खाद्य पदार्थ द्वारा संचारित एक प्रकार का विषाणुज यकृत शोथ। ज्वर का आना तथा पीलिया रोग हो जाना इसका लक्षण है। hepatitis A **दे.** यकृतशोथ।

हैरत *स्त्री. (अर.)* अचंभा, आश्चर्य, विस्मय।

हैरतअंगेज़ *वि. (अर.+फ़ार.)* आश्चर्यचकित कर देने वाला। (हैरत=आश्चर्य+अंगेज़ = उत्तेजित करने वाला) सरकस (सर्कस) में हमने कई हैरतअंगेज़ कारनामे देखे।

हैरान *वि. (अर.)* 1. जो किसी अनपेक्षित घटना को देख-सुन कर हक्का-बक्का रह जाए। **पर्या.** आश्चर्यचकित, भौंचक्का, स्तब्ध। 2. परेशान, तंग 3. थका हुआ।

हैरानी *स्त्री. (अर.)* हैरान होने की बात। **दे.** हैरान।

हैरो *पुं. (अं.)* **कृषि.** एक दाँतेदार भारी यंत्र जो ट्रैक्टर के पीछे जोडक़र हल चले खेत में ढेलों को तोडक़र मिट्टी के फैलाने के काम आता है।

हैवान *पुं. (अर.)* 1. पशु, जानवर। **जैसे:** बच्चों के साथ ऐसा कठोर व्यवहार करते हैं। तुम इंसान हो या हैवान? 2. **ला.अर्थ** बुद्धिहीन या असभ्य व्यक्ति।

हैवानियत *स्त्री. (अर.)* 1. पशुता, 2. क्रूरता, विवेकहीनता।

हैसियत *स्त्री. (अर.)* 1. सामर्थ्य, शक्ति संबंधी अधिकार। **जैसे:** आपने किस हैसियत से यह काम अपने हाथ में लिया है? capacity। 2. आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक आदि स्तर। **उदा.** उस व्यक्ति ने अपनी हैसियत दिखाने के लिए बेटी के विवाह में अनाप-शनाप खर्च किया।

हॉकी *पुं. (अं.)* 1. दो दलों के बीच बाहर मैदान में खेला जाने वाला वह खेल जिसमें प्रत्येक दल में 11 ग्यारह खिलाड़ी होते हैं तथा आगे से मुड़ी हुई लम्बी स्टिक से एक छोटी गेंद को ढकेलते हुए गोल करने का प्रयत्न करते हैं। अधिक गोल करने वाला दल विजयी घोषित होता है। 2. फील्ड हॉकी एक खेल जो बर्फ में छः सदस्यों वाले दो दलों में मुड़ी हुई स्टिक और रबड़ की छोटी डिस्क (चकिता/चकती) के साथ खेला जाता है। (बर्फ हॉकी-आइस हॉकी)। hockey

होटल *पुं. (अं.)* 1. एक बड़ा भवन जहाँ दूर से आने वाले यात्री या विशेष प्रयोजनवश स्थानीय संभ्रांत लोग अस्थायी तौर पर किराया देकर रहते हैं। यहाँ निश्चित शुल्क देकर भोजन, जलपान आदि की भी सुविधा होती है। 2. यात्री निवास। **जैसे:** दिल्ली का 'अशोक होटल' सुख-सुविधाओं की दृष्टि से विशेष प्रसिद्ध है। Hotel

होड़ *स्त्री. (तद्.)* एक-दूसरे से आगे निकल जाने का प्रयत्न। **पर्या.** प्रतिस्पर्धा या प्रतियोगिता। 2. शर्त।

होड़ा-होड़ी *स्त्री. (तद्.)* एक-दूसरे से आगे निकल जाने की प्रतियोगिता की सूचक द्विरुक्ति मूलक शब्द। **दे.** होड़।

होते-होते *क्रि.वि./अव्य. (तद्.)* किसी क्रिया या घटना के होते हुए। **जैसे:** उसका विवाह संस्कार होते-होते सुबह हो गई। **टि.** एक ही समय में दो क्रियाओं के होने की स्थिति में गौण क्रिया का यह रूप बनता है। **जैसे:** 'जाते-जाते', 'करते-करते' आदि। शब्द अव्यय बन जाता है।

होनहार *वि. (देश.)* 1. जो भविष्य में अवश्य होने वाला हो, जो होकर ही रहे, अवश्यंभावी, भिवतव्य। **जैसे:** होनहार घटना के बारे में कोई नहीं जानता। 2. अच्छे लक्षणों वाला/जिसमें आगे श्रेष्ठ बनने के लक्षण हों। **जैसे:** 1. होनहार बिरबान के होत चिकने पात। *स्त्री.* वह बात या घटना जो भविष्य में अवश्य होनी हो। भवितव्यता, होनी।

होना *अक्रि. (तद्. > भवन)* 1. किसी वस्तु की सत्ता, उपस्थिति आदि को सूचित करने वाली मुख्य क्रिया। **जैसे:** यहाँ गन्ने की खेती होती है। 2. उत्पन्न होना या जन्म होना। **जैसे:** गाय के बछड़ा हुआ है। पहला रूप छोडक़र दूसरे या नये रूप में आना। **जैसे:** पतझड़ में वृक्षों के हरे पत्ते पीले हो जाते हैं। किसी कार्य या घटना का प्रत्यक्ष रूप से सामने आना आज उनका आपस में टकराव हो गया।

होनी *स्त्री. (देश.)* 1. होने की क्रिया या भाव। 2. अवश्य होने वाली बात या घटना, भावी, भवितव्यता। **जैसे:** जीवन में होनी तो होकर रहेगी। **विलो.** अनहोनी 3. उत्पत्ति, जन्म। **उदा.** वाल्मीकि नारद घटयोनी। निज निज मुखनि कही निज होनी।

होली 1. फाल्गुन पूर्णिमा को होलिका-दहन वाला त्योहार। 2. होलिका-दहन से अगले दिन (चैत्र कृष्णा प्रतिपदा को) मनाया जाने वाला रंगों का त्योहार।

होश *पुं. (फ़ार.)* इंद्रियजन्य संवेदनशीलता का वह गुण जिसमें बुद्धि और शरीर सहज रूप में कार्य करते रहते हैं। **पर्या.** चेतना। **मुहा.** होश उड़ना = कष्ट, भय आदि में काफी घबराहट बढ़ जाने के कारण सुध-बुध भूल जाना। होश में आना = पुन: चेतना प्राप्त कर लेना। होश ठिकाने होना = भ्रम दूर हो जाना; दंड या भय से पछतावा करना।

होशियार *वि. (फ़ार.)* जो अपनी आयु के हिसाब से समझने-बूझने लायक हो गया हो।

होशो-हवास (होश और हवास) *पुं. (फा. + अर.)* होश= 1. ज्ञान कराने वाली मानसिक वृत्ति। 2. जीवित रहने का बोध। हवास=देखने, सुनने, चखने आदि की शक्तियाँ, पंचज्ञानेंद्रियों, मन की शक्तियाँ (कल्पना, विचार, स्मृति) संवेदन की शक्ति, सुध। होश-हवास = संज्ञा (चेतना) और बुद्धि, अक्ल और तमीज।

हो-हल्ला *पुं. (अनु.)* हो, हो-हो की आवाज। हल्ला = 1. शोर, 2. कोलाहल। हो-हल्ला (द्विरुक्ति सूचक शब्द) शोरगुल, हुल्लड़।

हौआ *पुं. (देश.)* एक कल्पित प्राणी जिसका नाम लेकर बच्चों को डराया जाता है। **जैसे:** माँ बच्चे से कहती है-घर के बाहर मत जाओ, नहीं तो वहाँ हौवा आ जायेगा।

हौज़ *पुं. (अर.)* मुख्यत: नहाने और गौणत: जलक्रीड़ा के लिए बना और चारों ओर से पक्का बँधा पानी का कुंड जैसा जलाशय। 2. मवेशियों के लिए पानी पीने का कुंड, नाँद।

हौदा *पुं. (अर. हौद्अ)* पहले राजा-महाराजाओं के परंतु अब सैलानियों के बैठने के लिए हाथी की पीठ पर कसा जाने वाला सजा-सजाया चौखटा।

हौले-हौले *क्रि.वि. (अर.)* 1. धीरे-धीरे, आहिस्ता आहिस्ता। 2. चुपचाप, बिना शब्द किए।

हौसला *पुं. (अर.)* किसी काम को करने का मन में उत्साहपूर्ण साहस। **उदा.** हौसला बनाए रखोगे तो तुम्हें सफलता अवश्य मिलेगी। **मुहा.** हौसला पस्त हो जाना= उत्साह और साहस खो देना।

हौसलामंद *वि. (अर.)* हौसले वाला। **दे.** हौसला।

ह्यूमस *पुं. (अं.)* मृदा (मिट्टी) में प्राप्त होने वाला जैव पदार्थों का अपघटित अंश (जो उसे उपजाऊ बनाता है)।

ह्यूमस *पुं. (अं.)* कृषि मृदा में जैव पदार्थ के अपघटन की प्रक्रिया जिससे ह्यूमस बनता है। humusiow

ह्रस्व *पुं. (तत्.)* शा.अर्थ छोटा, हलका। **व्या.** स्वरों के उच्चारण के संदर्भ में क्षण भर में उच्चरित ह्रस्व स्वर। **जैसे:** (अ, इ, उ, ऋ) short

ह्रस्व स्वर *पुं. (तद्.)* भाषा. वह स्वर जिसके उच्चारण में अपेक्षाकृत कम समय लगता है। हिंदी में- अ, इ, उ, ऋ, ह्रस्व स्वर हैं; जबकि- आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ दीर्घ स्वर हैं। short vowel **विलो.** दीर्घ स्वर।

परिशिष्ट 1

हिंदी वर्णमाला एवं मानक वर्तनी

इस शब्दकोश में केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा स्वीकृत देवनागरी लिपि तथा मानक हिंदी वर्णमाला एवं वर्तनी का प्रयोग किया गया है, जो स्वर, मात्राएँ, व्यंजन वर्ण आदि के रूप में इस प्रकार है :–

मानक हिंदी वर्णमाला

स्वर वर्ण–ग्यारह हैं–

	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ए	ऐ	ओ	औ
स्वरों की मात्रा	–	ा	ि	ी	ु	ू	ृ	े	ै	ो	ौ
मात्रायुक्त वर्ण	क	का	कि	की	कु	कू	कृ	के	कै	को	कौ

विशेष रूप र्+उ = रु, र्+ऊ=रू होगा।

विशेष: हिंदी में व्यवहृत न होने के कारण संस्कृत के ॠ, लृ और ॡ को छोड़ दिया गया है।

मूल व्यंजवर्ण

क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म
य	र	ल	व	
श	ष	स	ह	
ड़	ढ़			

विशेष: इन सभी व्यंजनवर्णों के साथ हल् चिह्न (्) लगाना अपेक्षित है, परंतु वर्णमाला में 'अ' स्वर अंतर्निहित मानकर उसी रूप में प्रस्तुत है।

संयुक्त व्यंजन

क्ष (क्+ष), त्र (त्+र)

ज्ञ (ज्+ञ) श्र (श्+र)

ध्यातव्य

'आजकल आधुनिक हिंदी में 'ज्ञ' का उच्चारण 'ग्यँ' या ज्यँ होता है। जो पूर्णतया शुद्ध नहीं है।

वस्तुत: 'ञ' का उच्चारण सावधानी से सिखाया जाना चाहिए।

हिंदी वर्णमाला में परंपरा प्रयुक्त से आगत विशेष चिह्न

अनुस्वारः- (जैसे कंस/हंस आदि)

अनुनासिक चिह्न/चंद्रबिंदु = ँ (जैसे माँग, बाँध)

विसर्ग : (जैसे अतः, प्रातः)

हल् चिह्न (जैसे सत्, चित्)

आगत ध्वनियों के वर्ण

स्वर ॉ (जैसे डॉक्टर, कॉलेज आदि)

नुक्तायुक्त व्यंजनः ख़ (जैसे- ख़ातिर)

ज़ (जैसे- सेज़, दहेज़)

फ़ (जैसे- फ़तह, फ़ैज)

संयुक्त व्यंजन

हिंदी में संयुक्त व्यंजनों को वर्णानुसार चार प्रकार से लिखा जाता है।

i खड़ी पाई वाले वर्ण – जो पाई हटा कर बनते हैं।

ख्+त	=	सख़्त	ग्+न	=	मग्न	घ्+न	=	विघ्न
च्+च	=	उच्च	ज्+व	=	ज्वर	ण्+य	=	पुण्य
त्+त	=	उत्तीर्ण	थ्+य	=	तथ्य	ध्+व	=	ध्वनि
न्+य	=	धन्य	प्+य	=	प्यास	ब्+ज	=	सब्जी
भ्+य	=	सभ्य	म्+य	=	नम्य	य्+य	=	भैय्या
ल्+क	=	मुल्क	व्+य	=	व्यर्थ	श्+व	=	श्वेत
ष्+ट	=	रुष्ट	स्+म	=	भस्म	क्ष्+य	=	साक्ष्य

ii मध्य में स्थित पाई वाले वर्णः

'क' और 'फ्' के 'हुक्' को हटाकर

क्+त = क्त (शक्त/शक्+ति = शक्ति)

फ्+त = फ्त (गुफ़्तगू, मुफ़्त)

iii बिना खड़ी पाई वाले वर्णः जिनके ऊपर की ओर खड़ी पाई का छोटा रूप दिखलाई पड़ता है। (छ के ऊपर की पाई मानक लिपि में हटा दी गई है) जैसेः

ङ्+म = वाङ्मय

छ्+व = उच्छ्वास

ट्+ट	=	निखट्टू, खट्टा
ठ्+य	=	शाठ्य, पाठ्य
ड्+ग	=	खड्ग
ढ्+य	=	आढ्य
द्+य	=	विद्यमान
ह्+म	=	परब्रह्म
ह्+न	=	चिह्न
ह्+व	=	जिह्वा

विशेष: 'इ' की मात्रा वर्ण की बाईं तरफ लगती है। अत: हलंत वर्णों के प्रयोग के समय मानक वर्तनी में यह मात्र संबंधित वर्ण से पूर्व ही लगाई जाए। जैसे- बुद्धि ('बुद्धि' नही)

वर्तनी का मानकीकरण

1. **परसर्ग**

i ने, को, से, का, में आदि परसर्ग को संज्ञा, विशेषण शब्द से मिलाकर न लिखा जाना अपेक्षित हैं

जैसे- बालक **ने**, घर **को**, बालकों **का** वृक्ष **में** घर पर

ii किन्तु सर्वनाम शब्दों के साथ परसर्ग मिलाकर लिखे जाएं।

जैसे अपने, मैंने, हमने, तुमने, उसको, मुझमें।

iii सर्वनाम के साथ दो पर सर्ग आने पर प्रथम को मिलाकर तथा दूसरे को अलग लिखना उचित होगा।

जैसे- **उसके लिए**, **आपमें से** आदि।

2. **क्रियापद**

क्रिया पद के अन्तर्गत आने वाले प्रत्येक शब्द को अलग लिखना अपेक्षित है।

जैसे: **पढ़ रहा था**, **जा चुका हो**, **आने वाला होगा**।

3. **योजक चिह्न**

सुगम बोध की दृष्टि से कठिन संधियुक्त पदों से बचने के लिए योजक चिह्न का प्रयोग किया जा सकता है। जैसे द्वि-अर्थक (द्व्यर्थक) त्रि-अक्षर (त्र्यक्षर)

4. **श्रुतिमूलक** 'य' और 'व' के क्रिया रूप।

i श्रुतिमूलक 'य' और 'व' का प्रयोग क्रिया रूपों में होता है, निम्नानुसार लिप्यंकित करना समुचित होगा-

जैसे: आया, आए, आई, आईं

(हुवा) हुआ, हुए, हुई, हुईं

ii जहाँ 'य' 'व' मूलरूप से किसी शब्द के अंग होंगे वहाँ उनका त्याग संभव नहीं हो सकेगा।

जैसेः पराया	=	पराये
पहिया	=	पहिये
रुपया	=	रुपये
बायाँ	=	बायें
दयामय	=	दयामयी

(पराए, पहिए, रुपए, बाएँ, दयामई, इत्यादि नहीं)

5. **अनुस्वार** (बिंदी या शिरोविंदु)

i 'य' से 'ह' तक के वर्णों के पूर्व अनुस्वार के स्थान पर व्यंजन वर्ण का प्रयोग अपेक्षित नहीं है।

जैसेः संवाद, संयोग, संरचित, संशय, संरक्षित, संसार, दंष्ट्रा, सिंह आदि। (सम्वाद, सम्योग, सन्शय आदि नहीं)।

ii अन्य नासिक्य व्यंजनों के साथ संयुक्त व्यंजन के रूप इस प्रकार बनेंगे-

जैसेः वाङ्मय, अन्य, अन्वय, सम्हालना, ताम्र, अम्ल

iii अंग्रेजी और उर्दू शब्दों में स, श, ज़ से पहले 'न' के उच्चारण के लिए अनुस्वार लिखना चाहिए।

जैसेः पेंशन, सस्पेंशन, मुंसिफ, मंजूरी, मंथली स्टूडेंट आदि।

iv तत्सम शब्दों के अंत में अनुस्वार का प्रयोग 'म्' का सूचक है।

जैसेः सत्यं (सत्यम्), शिवं (शिवम्) एवं (एवम्), अहं (अहम्) आदि।

v प्रत्येक वर्ग का पञ्चमाक्षर संयुक्त व्यंजन के रूप में अपने वर्ग के अक्षरों के साथ नासिक्य ध्वनि का ही उच्चारण योग बनाता है।

जैसेः 'क' वर्ग	= 'अंक, पंख, गंगा, संघ आदि।
'च' वर्ग	= चंचल, पंछी, गंज, झंझट
'ट' वर्ग	= घंटा, कंठ, दंड, षंढ
'त' वर्ग	= महंत, पंथ, वृंद, धंधा
'प' वर्ग	= लंपट, गुंफन, कंबल, रंभा

vi पंचम वर्णों का द्वित्व तत्समान अर्थ अक्षर से लिखा जाना ही अपेक्षित है।

जैसेः अन्न, निषण्ण, विषण्ण, सम्मेलन, सम्मान। (अंन, निषंण, संमेलन आदि नहीं।)

6. **अनुनासिक चिह्न** (चंद्रबिंदु ँ)

(i) अनुनासिक चिह्न व्यंजन न होकर स्वरों का ध्वनिगुण है। इसमें स्वर के उच्चारण में मुख के साथ-साथ नाक से भी हवा निकलती है- अँ, आँ, उँ, ऊँ, एँ।

जैसेः हँसना, आँख, उँगली, ऊँट, आऊँ, खाएँ।

(ii) वर्ण की शिरो रेखा के ऊपर मात्रा हो तो मुद्रण सुविधा की दृष्टि से अनुनासिकता को (बिंदी (ं) के रूप में दिखाया जाता है। जैसेः सिंचाई, तैंतीस, गेंदा, औंधा आदि।

7. हल् चिह्न

i स्वर रहित व्यंजन वर्ण में हल् चिह्न (्) लगता है। ऐसे वर्ण को हलन्त वर्ण कहते हैं। संस्कृत में 'हल्' इस शब्द से व्यंजन वर्णों का ही बोध होता है।

जैसेः विद्या, वाक्+ईशः, प्रसिद्ध, तत्, सत् आदि।

ii शिक्षण प्रक्रिया में सही प्रकार से समझाने के लिए हल चिह्न अवश्य दिखाएँ।

जैसेः जगत्+ईश (जगदीश), जगत्+नाथ (जगन्नाथ), तत्+मय (तन्मय) निर्+रोग (निरोग)।

iii जिन शब्दों में हल् चिह्न लुप्त हो चुका है उन्हें वैसे ही लिखा जाए।

जैसेः वह व्यक्ति महान (महान्) है जो दूसरों का उपकार करता है। महानता एक गुण है। विद्वान (विद्वान्) सभी जगह सम्मान पाते हैं। विद्वानों का आदर करना चाहिए। (संस्कृत की दृष्टि से 'महानता' और 'विद्वानों' का प्रयोग अशुद्ध हैं)।

8. ऐ/औ के शब्द

(i) उच्चारण को ध्यान में रखते हुए शब्दों की वर्तनी देखिए–

जैसेः 'कव्वा' की जगह कौवा, भय्या की जगह भैया ही ठीक है। इसी प्रकार हौवा, पौवा, सवैया, गैया, गवैया, खेवैया, तैयार, रवैया आदि।

(ii) परंतु संस्कृत शब्द 'शय्या' 'शयन' शब्द से बना है अतः इसे 'शैया' लिखना उचित नहीं है। 'शय्या' ही लिखना चाहिए।

9. विदेशी-ध्वनियाँ

(i) अरबी, फारसी के वे शब्द जो हिंदी भाषा में समाहित हो गए हैं तथा जिनकी विदेशी ध्वनियों का हिंदी ध्वनियों में रूपांतरण हो चुका है, उनके हिंदी रूप को ही स्वीकार करते हुए प्रयोग अपेक्षित है।

जैसेः	क़लम	=	कलम
	क़िला	=	किला
	फ़कीर	=	फकीर
	शौक़	=	शौक
	बग़ैर	=	बगैर
	बाग़	=	बाग

ii 'ऑ' ध्वनि अँग्रेजी से आई है। हिन्दी में प्रयोग अभीष्ट होने पर 'आ' की मात्रा (ा) के ऊपर अर्धचंद्र का (ऑ, ॉ) प्रयोग अपेक्षित है। जैसेः डॉक्टर, कॉलेज, कॉफी, नॉलेज आदि।

परिशिष्ट 2

अव्यय एवं निपात

वे शब्द जिनके रूप में लिंग, वचन, कारक इत्यादि के कारण कभी परिवर्तन नहीं होता। हिंदी व्याकरण में क्रिया विशेषण, समुच्चय बोधक, विस्मयादि बोधक, उपसर्ग, प्रत्यय और निपात, ये सभी अव्यय के अन्तर्गत माने जाते हैं। इसके अतिरिक्त सकारात्मक शब्द (हाँ, जी) और नकारात्मक शब्द (न, नहीं, मत) भी अव्यय कहे जाते हैं।

अव्यय शब्दों को किसी भी दशा में सदा एक रूप में ही रहने के कारण 'अविकारी' भी कहा जाता है। यहाँ पर 'अव्यय' के विभिन्न रूपों का संक्षेप में परिचय दिया जा रहा है।

2.1 क्रियाविशेषण

क्रिया की विशेषता को विविध रूपों में बताने वाले शब्द इस प्रकार है।

(i) स्थान वाचक- यहाँ, वहाँ, जहाँ, कहाँ, दूर, पास, बाहर, भीतर ऊपर, सम्मुख, नीचे, आगे, पीछे आदि।

जैसेः वह **यहाँ** पढ़ता है।

तुम **कहाँ** जा रहे हो?

वह तुम्हारे **पास** बैठा है।

वे दोनों घर से **बाहर** निकले।

(ii) दिशा सूचक- आगे, पीछे, सामने, इधर, उधर, कहाँ से, जहाँ से, दाहिने, बाएँ आदि।

जैसेः i इस पुस्तक को पीछे रख दो।

ii आप यहाँ से दाहिने जाएँ।

(iii) समय सूचक- अब, जब, कब, तब, अभी, तब से, कब से, आज, कल, परसों, आजकल, सुबह, दिन में, रात में, सदा, सर्वदा, नित्य, बहुधा अक्सर, तुरंत, बार-बार, निरंतर, पुनः, फिर आदि।

जैसेः i **अब** आप लोग घर जाएँ।

ii तुम यह काम **कब** करोगे?

iii वह **नित्य** प्रातः पढ़ने आता है।

iv तुम इसे **तुरंत** अस्पताल ले जाओ।

(iv) रीति/ढंग सूचक - कैसे, वैसे, यों, ज्यों, त्यों, कृपा पूर्वक, कृपया, पूर्णतया, साधारणतया, संभवतः दिल से, चुस्ती से, निस्संदेह आदि।

जैसेः i **जैसेः** यह गाता है वैसे ही वह भी गाता है।

ii **ज्यों ज्यों** बूड़ै श्याम रंग **त्यों त्यों** उज्जलु होय।

iii **कृपया** यहाँ बैठिए।

iv उसने बड़ी चुस्ती से यह काम किया।

(v) मात्रा सूचक– बहुत, थोड़ा, अत्यंत, कुछ, इतना, उतना, जितना, कितना

जैसेः i कहते है, मिर्जा गालिब **बहुत** पीते थे।

ii **थोड़ा** बोला करो।

iii तुम **उतना** दौड़ो **जितना** हो सके।

iv **कुछ** लिखना-पढ़ना चलता रहता है।

2.2 समुच्चय बोधक (Conjunctions)

वह अव्यय जो दो शब्दों, पदों, उपवाक्यों आदि को आपस में जोड़ता या मिलाता हो। इसे योजक भी कहते हैं।

जैसेः और, व, तथा, अथवा, या, कि, एवं, न-न क्योंकि, इसलिए, अतः, अत एव, ताकि, जिससे, परंतु, किंतु, लेकिन, अपितु, बल्कि, तो, यद्यपि, तथापि, अर्थात्, मानो, जैसे आदि।

उदा. i वह घर गया और मां से मिलकर आ गया।

ii तुम अब नवमी कक्षा में संस्कृत अथवा फ्रेंच पढ़ सकते हो।

iii वह मित्र है तथापि विश्सनीय नहीं है।

iv वह स्कूल नहीं बल्कि उद्यान गया था।

v मैं वहाँ नहीं था, वरना उसकी इतनी हिम्मत नहीं होती।

2.3 सम्बन्ध बोधक (Post-positions)

वे पद जो किसी शब्द के साथ परसर्ग के रूप में जुड़कर वाक्य में प्रयुक्त होते हैं।

(i) स्थान सूचक- में, के आगे, के पीछे, के पहले, के पास, के ऊपर, के नीचे, के बाहर, के भीतर, के बीच, से दूर, से आगे, के यहाँ आदि।

जैसेः i वृक्ष पर पक्षी बैठे हैं।

ii सबसे आगे रवि चल रहा है।

iii गाँव के बाहर विद्यालय है।

iv इस नगर से दूर गंगा नदी है।

(ii) दिशा सूचक- को, की ओर/तरफ, के प्रति।

जैसेः i वह बाग की ओर जा रहा था।

ii उसके घर के लिए पूरब को जाना पड़ेगा।

(iii) समय सूचक- से पूर्व, के पूर्व, से पहले, के पीछे, के बाद, के पश्चात्

जैसेः i तुम कल सूर्योदय से पूर्व जाग जाना।

ii पिता जी के जाने से पहले तुम आ जाओ।

iii सूर्योदय के बाद सोना अच्छा नहीं है।

iv तुम्हारे जाने के पीछे वह आया था।

(iv) उद्देश्य सूचक – के निमित्त, के हेतु, की खातिर।

जैसेः i घर के निमित्त कुछ सामान आया है।

ii मित्र की खातिर उसने अपना सर्वस्व त्याग दिया।

iii बच्चों के हेतु ये खिलौने आए हैं।

2.4 विस्मयादि बोधक Interjection

वे शब्द जो आश्चर्य, प्रसन्नता, घृणा, खेद, शोक, भय, क्रोध इत्यादि भावों को प्रकट करते हैं। इनका चिह्न (!) यह है।

आश्चर्य – अरे! वाह!

प्रसन्नता – हा हा, ही ही

घृणा – छि! थू!, छि छि!, थू थू!, धिक्, हट!

दुःख – हाय! हाय रे!

लाचारी – काश!

तारीफ – वाह! अरे वाह! शाबाश! वाह! वाह रे वाह! बहुत अच्छा!

दर्द – हुँ! उहुँ! उफ़, ओफ़, उइ माँ!

अभिमुख करना– ए! ओ! अरी, रे, अजी!

जैसेः i अरे! तुम उत्तीर्ण हो गए।

ii छि! तुमने यह क्या किया।

iii हाय! तुम्हारी यह हालत किसने की।

iv काश! आप पहले आ गए होते।

v उफ! बहुत पीड़ा है।

vi अरी! सुनो तो। अजी! लो अपनी पुस्तक।

2.5 निपात

'निपात' वे शब्द हैं जिनके प्रयोग से वाक्य या वाक्यांश में विशिष्टता आ जाती है। भाषा में प्रयोग की दृष्टि से इनका विशेष महत्व है। लिंग, वचन आदि के कारण इनमें किसी प्रकार का कभी परिवर्तन नहीं होता, इसलिए इन्हें अव्यय का ही एक भेद माना जाता है। हिंदी भाषा में निपात के रूप में प्रयुक्त किये जाने वाले मुख्य रूप से सात शब्द हैं– तो, ही, भी, तक, भला, न, भर।

वाक्य में प्रयुक्त होने पर इनकी विशेषताएँ इस प्रकार है।

I किसी शब्द विशेष पर बल देने के लिए भी इनका प्रयोग होता है। जैसे- 'मैं आपको लड्डू खिलाऊँगा। यहाँ कथ्य की दृष्टि से वाक्य रचना के प्रकार बदल सकते हैं।

i मैं **भी** आपको लड्डू खिलाऊँगा।

ii मैं आपको **भी** लड्डू खिलाऊँगा।

iii मैं आपको लड्डू **भी** खिलाऊँगा।

इन वाक्यों में 'भी' के स्थान पर अन्य निपातों का भी प्रयोग हो सकता है।

II प्रत्येक निपात के प्रयोगगत अर्थ इस प्रकार हैं–

तो i इसका मतलब है कि।

जैसे– तो आप जा रहे हैं।

ii ज़रा, क्षण भर के लिए।

जैसे– सुनो तो सही।

iii निश्चित रूप से,

जैसे- वह तो मानेगा नहीं।

'ही' मात्र, केवल

जैसे- इस काम को तुम ही करोगे।

भी i अन्यों के अतिरिक्त।

जैसे- मैने राष्ट्रपति-भवन भी देखा।

ii यहाँ तक कि।

जैसे- यह वाक्य तो अनपढ़ भी बोलता है।

iii उसी प्रकार

जैसे- गुरुजी ने श्लोक बोला और मैंने भी बोल दिया।

तक भी; यहाँ तक कि

जैसे- वह चल तक नहीं सकता।

भला प्रश्नात्मक और निषेधात्मक अभिव्यक्ति।

जैसे- तुम भला कैसे जाओगे?

न प्रश्नात्मक और स्वीकारात्मक अभिव्यक्ति।

जैसे- जाओगे न?

भर मात्र, केवल।

जैसे- तुम देख भर लो।

विशेष- किसी वाक्यांश या वाक्य में दो या अधिक निपात भी प्रयुक्त हो सकते हैं। जैसे- आप तो भला कब तक काम करेंगे!

परिशिष्ट 3

लोकोक्ति और मुहावरे

लोकोक्तियाँ और मुहावरे साहित्य व समाज दोनों का ही महत्वपूर्ण अंग हैं। समाज में अनुभवजन्य ज्ञान के आधार पर इनका जनभाषा के रूप में प्रसंगानुसार प्रयोग होता है।

लोकोक्ति को 'कहावत' भी कहते हैं। लोकोक्ति और मुहावरे में विशिष्ट अंतर यह है कि 'लोकोक्ति' अपने आप में एक पूर्णवाक्य होता है जिसका प्रायः तात्पयार्थ/लक्ष्यार्थ ही ग्राह्य होता है। मुहावरा (वाग्बन्ध) वाक्यांश होता है तथा उसका वाक्य में पदबंध के रूप में प्रयोग होता है तथा लोकोक्ति की तरह इस पद-समूह का भी अभिधेयार्थ से भिन्न कोई विशिष्ट लक्ष्यार्थ होता है। लोकोक्ति व मुहावरों के उचित प्रयोग से भाषा अधिक प्रभावी, सरस तथा मनोरंजक बन जाती हैं।

यहाँ कुछ प्रमुख तथा उपयोगी लोकोक्तियाँ व मुहावरे संकलित रूप में दिये जा रहे हैं।

3.1 लोकोक्तियाँ

अंगूर खटटे हैं	=	किसी महत्वपूर्ण वस्तु को प्राप्त न कर पाने पर उसी की निंदा करना।
अंधा बाँटे रेवड़ी फिर फिर अपनेन्हि देय	=	संकुचित या स्वार्थी लोगों की प्रवृत्ति अपनों को ही लाभ पहुँचाने की होती है।
अंधे के आगे रोए, अपने दीदा (नैना) खोए।	=	किसी मूर्ख या नासमझ व्यक्ति के सामने अपनी व्यथा सुनाना व्यर्थ है।
अंधे के हाथ बटेर	=	बिना किसी परिश्रम के किसी व्यक्ति को संयोगवश कोई अच्छी वस्तु मिल जाना।
अंधेर नगरी चौपट राजा, टका सेर भाजी टका सेर खाजा	=	मूर्ख शासक के राज्य में सर्वत्र कुव्यव्यस्था व अन्याय दिखाई देता है।
अंधों में काना राजा (सर ताज)	=	अयोग्य व्यक्तियों के बीच कम योग्य व्यक्ति ही श्रेष्ठ मान लिया जाता है।
अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता	=	अकेला आदमी कोई बड़ा काम अर्थात् अनेक व्यक्तियों के द्‌वारा करने योग्य काम, नहीं कर सकता।
अक्ल बड़ी कि भैंस अथवा अक्ला बड़ी या बहस	=	शारीरिक बल से बुद्‌धि बल बड़ा होता है, बुद्‌धिमान व्यक्ति वयोवृद्‌ध व्यक्ति से अधिक महान होता है। बहस की अपेक्षा बुद्‌धि से काम लेना अच्छा है।
अधजल गगरी छलकत जाय	=	थोडी उपलब्धि से अपनी शेखी बघारना या बहुत इतराना।
अपना हाथ जगन्नाथ	=	1. अपना काम स्वयं कर लेना ही सबसे अच्छा होता है। 2. जहाँ अपना अधिकार है, वहीं सब ठीक है।

अपनी-अपनी डफली, अपना-अपना राग	=	अलग-अलग विचार होने पर मिलकर कोई काम करना संभव नहीं है।
अपने मरे बग़ैर स्वर्ग नहीं मिलता	=	व्यक्ति स्वयं के प्रयत्न से ही अपना कार्य सिद्ध कर सकता है दूसरों के भरोसे से नहीं।
अब पछताए होत क्या, जब चिड़ियाँ चुग गई खेत	=	अवसर निकल जाने पर पश्चात्ताप करना व्यर्थ है।
अशर्फियाँ लुटें, कोयलों पर मुहर	=	कम मूल्यवान या कम उपयोगी वस्तुओं, बातों पर ध्यान देना तथा अधिक मूल्यवान या उपयोगी वस्तु या बात की उपेक्षा करना।
आँख का अंधा गाँठ का पूरा	=	धनी पर मूर्ख अथवा किसी वस्तु का दोष न देखकर लोगों के कहने पर अधिकमूल्य देने वाला (ग्राहक)।
आए थे हरिभजन को, ओटन लगे कपास	=	वास्तविक उद्देश्य को छोड़कर उससे भिन्न कम महत्वपूर्ण कार्य में लग जाना।
आगे कुआँ पीछे खाइ	=	दोनों ओर से विपत्ति होना, असमंजस की स्थिति।
आगे नाथ न पीछे पगहा	=	हर तरह के नियंत्रण से रहित होना, स्वच्छंद जीवन बिताना।
आदमी जानिए बसे, सोना जानिए कसे	=	आदमी का गुण-दोष साथ में रहने से तथा सोने का पता कसौटी पर कसने से चलता है।
आम के आम गुठलियों के दाम	=	वह कार्य जिसमें दुगना लाभ प्राप्त करने की स्थिति हो।
आम खाने से काम है या पेड़ गिनने से	=	अपने प्रयोजन से संबंधित कार्य करना चाहिए, व्यर्थ या फालतू की बातों में पड़कर समय नष्ट नहीं करना चाहिए।
आसमान से गिरा खजूर में अटका	=	किसी कार्य में सफलता के नजदीक पहुँचने पर भी कोई छोटी सी बाधा या विघ्न आने पर कार्य का रुक जाना।
ईंट की लेनी, पत्थर की देनी	=	शठ के साथ शठता का व्यवहार करना उचित है। बदला चुकाना।
उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे	=	अपनी गलती न मानकर गलती रोकने वाले पर क्रोध करना (धृष्टता करना)।
ऊँची दूकान फीका पकवान	=	किसी व्यक्ति, वस्तु आदि का बाहरी दिखावा, अकर्षण आदि तो बहुत अच्छा पर व्यवहार या गुण घटिया।
ऊँट के मुँह में जीरा	=	किसी वस्तु का आवश्यकता से बहुत कम होना।
एक अनार सौ बीमार	=	वस्तु अल्प पर उसे पाने की इच्छा वाले बहुत अधिक अर्थात् किसे किसे दी जाए।
एक तो करेला दूसरे नीम चढ़ा	=	स्वाभाविक दोष का खराब संगति से और अधिक बढ़ जाना।
एक तो चोरी ऊपर से सीनाजोरी	=	अपराधी का स्वयं लज्जा महसूस न कर दूसरे पर उल्टा रोब दिखाने की धृष्टता करना।

एक ही थैली के चट्टे बट्टे	=	एक ही प्रकार के लोग या समानरूप से दोषी लोग।
एक म्यान में दो तलवारें नहीं रह सकतीं	=	एक ही स्थान पर दो प्रतिद्वंद्वी व्यक्ति नहीं रह सकते।
एक पंथ दो काज	=	एक उपाय से दो कार्यों की सिद्धि।
एक तंदुरुस्ती हज़ार नियामत	=	स्वास्थ्य है तो हजारों सुख अर्थात् स्वास्थ्य सबसे बढ़कर है।
एकै साधै सब सधै, सब साधे सब जाय	=	एक समय में एक ही कार्य करने से, वह पूर्ण हो जाता है अनेक कार्य प्रारंभ करने पर वे सभी काम बिगड़ जाते है।
ओखली में सिर दिया तो मूसलों का क्या डर	=	जब किसी काम को हाथ में ले लिया तो आने वाली कठिनाईयों की क्या चिंता।
कभी नाव गाड़ी पर और कभी गाड़ी नाव पर	=	एक न एक दिन सबका समय आता है। अथवा परिस्थितियाँ बदलती रहती है।
कहाँ राजा भोज, कहां गंगुआ तेली	=	एक ओर अत्यंत गुणी व संपन्न व्यक्ति दूसरी ओर सामान्य एवं निर्धन व्यक्ति, दोनों में बहुत अंतर होता है।
कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा, भानुमती ने कुनबा जोड़ा	=	अनमेल एवं विविधतापूर्ण विचारों, वस्तुओं, व्यक्तियों व भावों का एकत्रीकरण
काठ की हाँडी बार बार नहीं चढ़ती	=	किसी व्यक्ति को एक बार ही धोखा दिया जा सकता है, बार-बार नहीं।
काला अक्षर भैंस बराबर	=	पूर्णतया अशिक्षित व्यक्ति।
का वर्षा जब कृषी सुखाने (तुल. अब पछताए.....)	=	उचित अवसर निकल जाने पर प्रयत्न करना बेकार है।
कोयले की दलाली में हाथ काले	=	बुरे कार्य में लगने से अपयश ही मिलता है।
खग जाने खग ही की भाषा	=	जिस प्रकार का व्यक्ति हो उसकी बात या तात्पर्य को उसी प्रकार का व्यक्ति समझ सकता है।
ख़रबूजे को देखकर ख़रबूजा रंग बदलता है	=	एक दूसरे को देखकर अच्छा या बुरा शौक लगता है।
खरी मजूरी चोखा काम	=	ईमानदारी से अच्छा काम करने से पारिश्रमिक भी अच्छा मिलता है।
खिसियानी बिल्ली खंभा नोचे	=	अपमानित व्यक्ति दूसरों को दोष देता है।
खोदा पहाड़ निकली चुहिया	=	बहुत अधिक परिश्रम करने पर भी अल्प लाभ की स्थिति।
गरीब की जोरू, सबकी भाभी	=	गरीब या कमजोर व्यक्ति से सब लोग अनुचित लाभ उठाते हैं।

गुरु से कपट, मित्र से चोरी, या हो अंधा या हो कोढ़ी	= गुरु से कपट और मित्र से चोरी करने का बुरा फल मिलता ही है। अत, ये दोष सर्वथा त्याज्य है।
गेहूँ के साथ घुन भी पिस जाता है	= दोषी व्यक्ति की संगति में निर्दोष भी कष्ट पाता ही है।
घर का जोगी जोगड़ा, आन गाँव का सिद्ध	= बहुत योग्य व्यक्ति को भी परिचितों के बीच उतना सम्मान नहीं मिलता जितना अपरिचित अयोग्य को मिलेगा।
घर का भेदी लंका ढाए	= आपसी फूट से घर, परिवार समाज या राष्ट्र का विनाश हो जाता है।
घर की मुर्गी दाल बराबर	= सुगमता से प्राप्त वस्तु को उतना महत्व नहीं मिलता।
घर में नहीं दाने, अम्मा चली भुनाने	= घर में अभाव होने पर भी संपन्नता का झूठा दिखावा करना।
घोड़ा घास से यारी करेगा, तो खायेगा क्या?	= यदि कोई अपने कामधंधे में लाभ नहीं कमायेगा तो कामधंधा नहीं चल सकता। अथवा मजदूरी प्राप्त किये बिना जीवन निर्वाह नहीं हो सकता।
चमड़ी जाए पर दमड़ी न जाए	= कंजूस व्यक्ति शारीरिक कष्ट स्वीकार करता है पर खर्च नहीं करना चाहता।
चार दिन की चाँदनी फिर अँधेरी रात	= यौवन, सौंदर्य, सत्ता, वैभव, धन आदि कभी स्थायी नहीं होते।
चिकने घड़े पर पानी नहीं ठहरता	= निर्लज्ज या बेशर्म व्यक्ति पर समझाने, डाँटने, मारने-पीटने इत्यादि का भी कोई असर नहीं पड़ता।
चिराग तले अँधेरा	= न्यायप्रिय, धार्मिक, विचारवान, व्यक्ति के आसपास या परिवार में अनुचित व अमर्यादित घटनाओं का होना।
चोर की दाढ़ी में तिनका	= दोषी व्यक्ति सदा सशंकित रहता है, किसी के सामान्य कथन को भी अपने ऊपर कहा गया मानकर उत्तेजित हो उठता है।
चोर-चोर मौसेरे भाई	= एक समान प्रवृत्ति वाले लोगों में घनिष्ठता बहुत जल्दी ही हो जाती है।
छछूँदर के सिर में चमेली का तेल	= 1. क्षुद्र व्यक्ति बढ़चढ़कर बातें करता है।
	2. किसी को ऐसी चीज की प्राप्ति जिसके वह योग्य न हो।
छोटे मुँह बड़ी बात	= मर्यादा का ध्यान न रखते हुए बढ़चढ़कर बातें करना।
जंगल में मोर नाचा, किसने देखा	= अपने, गुण, योग्यता, वैभव आदि का ऐसे स्थान पर प्रदर्शन करना जहाँ उसका महत्व समझने वाला कोई न हो।
जहाँ चाह, वहाँ राह	= मन में तीव्र इच्छा हो तो लक्ष्य प्राप्ति का मार्ग सुलभ हो जाता है।
जाको रखे साइयाँ मार सके न कोय	= जिसका ईश्वर रक्षक है, उसे कोई नहीं मार सकता।

जाके पाँव न फटी बिवाई, सो का जाने पीर पराई	=	जिसने जीवन में कभी कष्ट, मुसीबत न झेली हो, वह दूसरे के कष्ट का अनुभव नहीं कर सकता।
जिसका काम उसी को साजै। जिसकी बँदरी वही नचावै	=	जिसका जो काम हो यदि वही उसे करे तो अच्छा प्रतीत होता है अर्थात् इससे काम बिगड़ता नहीं।
जिसकी लाठी उसी की भैंस	=	जिसके पास शक्तिबल है, वह दूसरे की वस्तुओं पर अन्याय पूर्वक अधिकार जमा लेता है।
जिस पत्तल में खाए उसी में छेद करे	=	अपने आश्रयदाता या उपकारक के प्रति अपकार करने वाला व्यक्ति, कृतघ्न।
जैसा देश वैसा भेष	=	व्यक्ति जहाँ रहे वहाँ के अनुसार रीति-रिवाज आदि नियमों का पालन करना ही सर्वथा उचित है।
जैसा राजा वैसी प्रजा	=	किसी देश का शासक (गुण आदि की दृष्टि से) जिस प्रकार का होगा, उस देश की प्रजा भी वैसी ही होगी।
जैसी करनी, वैसी भरनी	=	कर्म के अनुसार फल भोगना, अथवा जैसे कर्म होंगे वैसा ही फल भोगना पड़ेगा।
डूबते को तिनके का सहारा	=	विपत्ति में पड़े व्यक्ति के लिए तो थोड़ा सहारा भी बहुत होता है।
ढाक के तीन पात	=	1. हमेशा एक ही दशा में रहना। 2. समझाने पर भी कोई असर न पड़ना।
ढोल के भीतर पोल	=	किसी व्यक्ति या वस्तु का बाहरी दिखावा अधिक किंतु वास्तविक गुणों का अभाव।
तू डाल-डाल मैं पात-पात	=	एक दूसरे से बढ़कर धूर्त या चालाक।
तेते पाँव पसारिये जेती लांबी सौर	=	अपने सामर्थ्य के अनुसार ही कार्य करना चाहिए, अधिक नहीं।
थोथा चना बाजे घना	=	निकम्मा आदमी अधिक बोलता है।
दीवार के भी कान होते हैं	=	किसी गुप्त बात को बहुत सावधानी के साथ ही दूसरे से कहना चाहिए ताकि कोई तीसरा व्यक्ति कहीं सुन न लें।
दुधारू गाय की लात भी अच्छी लगती है या सहनी पड़ती है	=	अपना हित करने वाले की डॉट-फटकार भी अच्छी लगती है।
दुविधा में दोनों गए माया मिली न राम	=	किसी प्रकार की दुविधा में रहने वाला व्यक्ति दोनों कामों में से किसी को भी नहीं कर पाता।
दूध का जला छाछ भी फूँक-फूँक कर पीता है	=	किसी काम में एक बार हानि हो जाने पर व्यक्ति सामान्य काम में भी आवश्यकता से अधिक सावधानी दिखाता है।
दूध का दूध, पानी का पानी	=	सच और झूठ को अलग-अलग सिद्ध करना ही सही न्याय है।

दूर के ढोल सुहावने	=	दूर से देखने या सुनने पर जो स्थान, गीत, संगीत आदि सुंदर प्रतीत होते हैं, वे पास से वैसे नहीं प्रतीत होते।
धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का	=	जिसका कोई निश्चित ठिकाना न हो, परेशान ही रहता है।
नदी में रहकर मगर से बैर	=	शक्तिशाली व्यक्ति के साथ रहना हो तो उससे शत्रुता करना अच्छी बात नहीं।
न नौ मन तेल होगा, न राधा नाचेगी	=	किसी कठिन काम को करने के लिए किसी धूर्त आदमी के द्वारा ऐसी शर्तें रख देना कि वह काम पूरा न हो सके या कठिन शर्तों को पूरा करना असम्भव हो।
न रहेगा बाँस, न बजेगी बाँसुरी	=	1. किसी प्रकार की अशांति, कलह आदि को समाप्त करने के लिए उसके मूल कारण को नष्ट करना आवश्यक है। 2. झगड़े के मूल कारण को नष्ट करना।
नाच न आवे आंगन टेढ़ा	=	मूर्ख व्यक्ति अपनी क्षमता या गुणों को दरकिनार कर साधनों को दोष देता है।
नादान दोस्त से अक्लमंद दुश्मन भला	=	अज्ञानी दोस्त अच्छा नहीं।
नाम बड़े और दर्शन छोटे	=	प्रसिद्ध व्यक्ति होने पर भी उसका आचरण ओछा है।
नेकी कर दरिया में डाल	=	किसी पर उपकार कर उपकार को भूल जाना चाहिए।
नौ दिन चले अढ़ाई कोस	=	बहुत सुस्ती से कार्य का किया जाना।
नौ नकद न तेरह उधार	=	अधिक मूल्य पर उधार बेचने की अपेक्षा उचित कम मूल्य पर नकद बेचना अच्छा है।
नौ सौ चूहे खाकर बिल्ली चली हज को	=	जीवन भर बहुत से पाप करने वाला व्यक्ति वृद्धावस्था में या बाद में संत बनने का ढोंग या दिखावा करता है।
पर उपदेश कुशल बहुतेरे	=	दूसरों को उपदेश देने वाले बड़ी सरलता से मिल जाते हैं किंतु स्वयं सदाचरण करने वाले लोग बहुत कम होते हैं।
पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं	=	पराधीनता में कभी सुख नहीं मिलता। पराधीनता अभिशाप है।
पाँचों उँगलियाँ बराबर नहीं होती	=	सब मनुष्य आकृति रूप, गुण आदि की दृष्टि से समान नही होते।
पूत के पाँव पालने में ही पहचाने जाते हैं	=	होनहार बालक के लक्षण प्रारंभ से ही पहचान में आ जाते हैं।
प्यादा से फ़रजी भयो, टेढो-टेढो जाय	=	साधारण स्थिति से समृद्ध होने पर या छोटे पद से उच्चपद पर पहुँचने पर व्यक्ति का घमंडी होना।
बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद	=	कोई वस्तु उस व्यक्ति को मिलना जो उसके महत्व को ठीक से जानता ही न हो।

बाप भला न भैया, सबसे बड़ा रुपैया	=	संसार में सामान्य जन माँ–बाप बंधु की अपेक्षा धन को ही महत्व देते हैं। अर्थात् उनकी दृष्टि में जीवन में सब कुछ रुपया ही है
बिन माँगे मोती मिले, मांगे मिले न भीख	=	किसी के आगे गिड़गिडाना उचित नहीं, मेहनत से काम करने पर यदि भाग्य अनुकूल हो तो बिना मांगे ही मोती मिल जाता है।
बीती ताहि बिसारि दे, आगे की सुधि ले	=	विगत में हुई असफलताओं को भूलकर भविष्य की योजनाओं के प्रति जागरूक या सचेष्ट रहना ही बुद्धिमानी है।
बूँद–बूँद करके तालाब भरता है	=	थोड़ा–थोड़ा किसी वस्तु को जोड़ने से बहुत बड़ा संचय हो जाता है।
बैठे से बेगार भली	=	बेकार बैठे रहने की अपेक्षा लोगों के लिए मुफ्त काम करना अधिक अच्छा होता है।
बोया पेड़ बबूल का, आम कहाँ से खाय	=	जैसा कर्म वैसा फल। अर्थात् बुरे कर्मों का अच्छा फल नहीं मिल सकता।
भय बिनु होय न प्रीति	=	शक्ति आदि के प्रभाव या भय के बिना दूसरे की अनुकूलता या प्रसन्नता नहीं होती।
भई गति साँप छछूँदर केरी	=	1. ऐसी दुविधा जिस में किसी बात को लेना और छोड़ना दोनों कठिन हो। 2. असमंजस की स्थिति।
भगवान देता है तो छप्पर फाड़ कर देता है	=	भगवान की जब कृपा होती है, तब वह बिना प्रयत्न किए भी बहुत अधिक देता है।
भागते भूत की लंगोटी भली	=	जहाँ कुछ मिलने की संभावना न हो और वहाँ जो थोड़ा सा भी प्राप्त हो जाए, उसे ही बहुत समझना चाहिए।
भूखे भजन न होइ गोपाला	=	भगवान का भजन भी भूखे रहकर नहीं हो सकता। अर्थात् पहले पेट पूजा पश्चात् काम।
भैंस के आगे बीन बजाए, भैंस खड़ी पगुराय	=	मूर्ख व्यक्ति गुणी व्यक्ति के महत्व को नहीं समझ सकता।
मनचंगा तो कठौती में गंगा	=	मन पवित्र हो तो आश्चर्यजनक बातें भी हो सकती है।
मरता क्या न करता	=	विवशता में मनुष्य को अच्छा–बुरा सब कुछ करना पडता है।
मान न मान, मैं तेरा मेहमान	=	1. यह बात तो जबरदस्ती नाता जोड़ने वाली है। 2. जबर्दस्ती किसी के गले पड़ना।
मियाँ की जूती, मिया का का सिर	=	1. किसी का आतिथ्य उसी के धन से करना। 2. किसी के तर्क का जवाब उसी के तर्क से देना।

मियाँ बीबी राज़ी, तो क्या करेगा काजी	=	यदि दो लोग आपस में एकमत हों तो बाहर के लोग कोई हानि नहीं पहुंचा सकते।
मुद्दई-सुस्त, गवाह चुस्त	=	जिसका काम है, वह व्यक्ति तो सुस्त है किंतु उसके समर्थक सजग हैं।
मुल्ला की दौड़ मस्जिद तक	=	कोई व्यक्ति वहीं तक प्रयत्न कर सकता है जहाँ तक उसकी क्षमता होगी।
मुँह में राम, बगल में छूरी	=	धूर्त व्यक्ति ऊपर से बोलचाल में तो अच्छा लगता है किंतु वह कपटी व दुर्भावना वाला होता है।
रस्सी जल गई पर ऐंठ नहीं गई	=	ऐश्वर्य या सत्ता समाप्त हो जाने पर भी व्यक्ति की अकड़ नहीं जाती।
राम मिलाई जोड़ी, एक अंधा एक कोढ़ी	=	वह अज्ञानी व्यक्ति जो पुरानी रूढ़ियों व रीतियों का आँख बंद करके पालन करता है।
लातों के भूत बातों से नहीं मानते	=	1. दुष्ट व्यक्ति विनम्र व्यवहार या प्रार्थना करने पर भी अनुकूल नहीं होते, कठोर व्यवहार से ही नियंत्रित होते हैं। 2. दुष्ट लोग बिना दंड पाये उचित व्यवहार नहीं करते।
समरथ को नहिं दोष गुसाईं	=	संसार में समर्थ व्यक्ति को कोई दोष नहीं देता, केवल निर्बल व्यक्ति को ही दोष दिया जाता है।
सावन के अंधे को हरा ही हरा सूझता है	=	प्रत्येक व्यक्ति अपनी स्थिति के अनुसार दूसरे को भी वैसा ही समझता है।
सांप मरे, न लाठी टूटे	=	इस प्रकार काम हो जाए कि नुकसान न हो।
सिर मुँड़ाते ही ओले पड़े	=	किसी कार्य के शुरू करते ही मुसीबतें आनी शुरू हो गई।
सीधी उँगलियों से घी नहीं निकलता	=	1. सीधेपन से कोई कार्य नहीं होता। 2. बिना कठोरता दिखाये कोई काम नहीं होता।
सीधे का मुँह कुत्ता चाटे	=	सरल व्यक्ति को सभी ठग लेते हैं।
सूप बोले तो बोले, चलनी भी बोले जिसमें बहत्तर छेद	=	बहुत दुर्गुणों वाला व्यक्ति भी दूसरों के सामान्य दोष निकाले यह तो आश्चर्य की बात है।
सौ सुनार की, एक लुहार की	=	हल्के हल्के सौ आघातों के प्रत्युत्तर में शक्तिशाली व्यक्ति का एक ही आघात भारी पड़ता है।
हमाम में सब नंगें	=	प्रत्येक व्यक्ति दोषों से भरा है।
हल्दी लगे न फिटकरी, रंग चोखा आये	=	विशेष प्रयत्न किए बिना उत्तम परिणाम मिल जाना।

हवन करते हाथ जले	=	दूसरे की भलाई या कोई अच्छा काम करने वाले व्यक्ति पर भी लोग आक्षेप लगाकर पीड़ित करते हैं।
हाथ कंगन को अरसी क्या	=	प्रत्यक्ष के लिए किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती।
हाथी के दाँत खाने के और दिखाने के और	=	1. कथनी और करनी में बहुत अंतर होता है। 2. कहना कुछ और करना कुछ।
होनहार बिरवान के होत चीकने पात (तुल. पूत के पाँव.....।)	=	होनहार बच्चे के अच्छे लक्षण शुरू में ही दिखाई देने लगते हैं।

3.2 मुहावरे

वे वाक्य या वाक्यांश जिनके शाब्दिक अर्थ भिन्न और विलक्षण होते हैं। अर्थात् जिनके अर्थ लक्षणा या व्यञ्जना से व्यक्त होते हैं। सामाजिक, व्यावहारिक, वैचारिक आदि सभी दृष्टि से ये प्रसिद्ध मुहावरे भाषा में प्रयुक्त होकर नई अभिव्यंजना देते हैं।

अंगारे उगलना	=	जली कटी सुनाना, क्रोधित होना।
अक्ल का दुश्मन	=	मूर्ख।
अपना उल्लू सीधा करना	=	स्वार्थ सिद्ध करना।
अपना-सा मुँह लेकर रह जाना	=	लज्जित होना।
अपनी डफली अपना राग	=	एकमत होना।
अपने पाँव पर कुल्हाड़ी मारना	=	स्वयं का अहित कर लेना।
आँखें खुलना	=	सच्चाई का पता लगना, भ्रम दूर होना।
आँखे चुराना	=	(किसी अपराधिक बोध के कारण) आँखे न मिला पाना।
आँखें नीची करना	=	लज्जित होना।
आँखें लाल पीली करना	=	गुस्सा दिखाना।
आकाश-पाताल एक करना	=	अधिकतम प्रयास करना।
आग बबूला होना	=	अत्यधिक गुस्सा करना।
आग में घी डालना।	=	गुस्सा बढ़ाना।
आजकल करना	=	टालमटोल करना
आपे से बाहर होना	=	क्रोध आदि के कारण नियंत्रण खो देना।
आफत मोल लेना	=	जान बूझकर झंझट अपने ऊपर लेना।
आसमान टूट पड़ना	=	बड़ी विपत्ति आ पड़ना।

आस्तीन का साँप	= दोस्त के रूप में दुश्मन।
इधर-उधर की हाँकना	= निरर्थक बातें करना।
ईंट से ईंट बजाना	= अत्यधिक हानि पहुँचाना।
ईद का चाँद	= कभी कभी दर्शन देने वाला।
उँगली पर नचाना	= अपनी इच्छानुसार कार्य कराते रहना।
उखड़ा-उखड़ा सा रहना	= बहुत उदास या अनमना रहना।
उलटी गंगा बहाना	= उल्टी रीति का पालन करना या करवाना।
उलटे पाँव लौटना	= तुरंत लौटना।
उल्लू बनाना	= मूर्ख बनाना।
ऐरा गैरा नत्थू खैरा	= अत्यंत साधारण लोग, सामान्यजन।
ओखली में सिर देना	= कष्ट सहने के लिए तैयार रहना।
कड़वा घूँट पीना	= अप्रिय बात को सहन कर लेना।
कन्नी काटना	= किसी कार्य से बचने का प्रयास करना।
कफ़न सिर पर बाँधना	= निर्भय होकर मरने को तैयार रहना।
कमर सीधी करना	= थकावट दूर करना, सुस्ताना।
कलई खुलना	= पोल/रहस्य खुलना।
काटने दौड़ना	= आक्रामक तेवर दिखाना।
कान खड़े होना	= चौकन्ना होना, सावधान हो जाना।
कान में तेल डालना	= कान बहरे की तरह कर लेना।
काफूर होना	= गायब हो जाना।
कुत्ते की मौत मरना	= दर्दनाक मृत्यु होना।
ख़याली पुलाव पकाना	= कल्पना में उन्नति की बातें सोचना या असंभव स्वप्न देखना।
खाक में मिलना	= पूरी तरह बरबाद हो जाना।
खाली हाथ लौटना	= असफल होकर लौटना।
खिचड़ी पकना	= कोई गुप्त योजना बनाना।
खेत की मूली समझना	= किसी को अत्यंत तुच्छ समझना।
गंगा नहाना	= किसी कठिन कार्य को पूरा कर लेना।
गड़े मुरदे उखाड़ना	= आवश्यक पुरानी बातों को याद करना।

गले लगाना	= अपनाना, मित्र बना लेना।
गाल फुलाना	= रूठ जाना।
गिद्ध दृष्टि	= लालच।
गिरगिट की तरह रंग बदलना	= थोड़ी ही देर में कभी मित्र कभी शत्रु की-सी बातें करना।
घुटने टेकना	= हार मान लेना।
गुड़-गोबर होना	= किसी अच्छी वस्तु/बात का नष्टप्राय हो जाना।
चुल्लूभर पानी में डूब मरना	= मुँह दिखाने लायक न रहना।
चैन की वंशी बजाना	= खूब आनन्द से रहना।
छक्के छुड़ाना	= पराजित कर देना, परेशान कर देना।
छाती पर मूँग दलना	= साथ में रहते हुए भी किसी को कष्ट देते रहना या बदला लेना।
जख्म पर नमक छिड़कना	= दु:खी को और दुखी करना।
जान पर खेलना	= ऐसा खतरनाक कार्य करना जिसमे जान जाने का डर हो। दु:साहस करना।
टका सा जवाब देना	= साफ मना कर देना।
टॉय-टॉय फिस होना	= धूमधाम से शुरू किये काम का प्रभावहीन हो जाना।
डंके की चोट पर कहना	= किसी बात को आत्म विश्वास और निडरता के साथ कहना।
डींग हाँकना	= बहुत लंबी चौड़ी बातें करना।
तिल का ताड़ बनाना	= छोटी बात को बहुत बढ़ा चढ़ा कर बताना।
थाली का बैंगन	= अस्थिर विचारों वाला व्यक्ति
दाँत खट्टे करना	= हरा देना।
दाँतो तले उँगली दबाना	= आश्चर्य में पड़ना।
दाल न गलना	= प्रयत्न करने पर भी सफल न हो पाना।
धज्जियाँ उड़ाना	= किसी के विचारों का पूरी तरह से खंडन करना।
नाक कटना	= बेइज्जती होना।
न तीन में न तेरह में	= 1. लाभ-हानि से परे रहना।
	2. कहीं का न रह पाना।
निन्यानबे का चक्कर	= किसी तरह धन बढ़ाने का प्रयत्न।
नौ दो ग्यारह होना	= गायब हो जाना।

पट्टी पढ़ाना	= किसी को बहकाना या फुसलाना।
परदाफ़ाश करना	= भेद खोलना।
नाको चने चबाना	= बहुत परेशान करना।
पेट में चूहे कूदना	= तेज़ भूख लगना।
पौ फटना	= सुबह होना।
फूटी आँखों न भाना	= बहुत अप्रिय होना।
फूले न समाना	= अत्यधिक खुश होना।
बखिया उघेड़ना	= 1. भंडाफोड़ करना।
	2. एक-एक कर दोष गिनाना।
बगले झाँकना	= निरुत्तर होना।
बाग-बाग हो जाना	= बहुत खुश होना।
बायें हाथ का खेल	= बहुत आसान काम।
भाड़ झोंकना	= निरर्थक काम करना।
भीगी बिल्ली बनना	= भय के कारण अति नम्र हो जाना।
मांग उजड़ना	= वैधव्य होना।
मुँह की खाना	= बुरी तरह हार जाना।
रग पहचानना	= किसी की असलियत/स्वभाव जान लेना।
रफू चक्कर होना	= किसी स्थान से गायब हो जाना।
लकीर का फकीर	= पुरानी रीतियों को मानने वाला।
लोहे के चने चबाना	= बहुत अधिक कठिन कार्य करना।
सब्जबाग दिखाना	= अच्छे अच्छे सपने दिखाकर झूठी दिलासा देना।
सिर-खपाना	= बहुत अधिक सोचविचार करना।
हवा में उड़ना	= 1. गप्पे हाँकना
	2. अत्यधिक खुशी मनाना/होना।
सीने पर साँप लेटना	= किसी के प्रति ईर्ष्या होना।
पेट पालना	= किसी तरह गुजारा करना।
हाथ पीले करना	= विवाह करना।
अक्ल ठिकाने आना	= गलती का एहसास होना।

परिशिष्ट-4

संख्यावाचक शब्द

देवनागरी अंक	रोमन अंक	संख्यासूचक शब्द
1	1	एक
2	2	दो
3	3	तीन

क्रमसूचक शब्द-

पहला, दूसरा, तीसरा, चौथा, पाँचवा, छठा......

(इसके आगे संख्या में 'वाँ' जोड़कर जैसे-सातवाँ, आठवाँ आदि, स्त्रीलिंग में पहली, दूसरी आदि।)

गुणन सूचक शब्द-

दुगुना, तिगुना, चौगुना.......

(इसके आगे 'गुना' जोड़कर जैसे- पाँच गुना, छह गुना आदि, स्त्रीलिंग में दुगुनी, तिगुनी आदि।)

संपूर्णतासूचक शब्द-

अकेला, दोनो, तीनो, चारो......

(इसके आगे 'ओ' जोड़कर जैसे- पाँचों, छहों आदि)

भिन्नात्मक संख्या शब्द

1/4= चौथाई, 1/2= आधा, 3/4= पौन, $1\frac{1}{4}$ =सवा, = $1\frac{1}{2}$ डेढ़, $2\frac{1}{2}$ ढाई

शेष संख्याओं के लिए सवा, साढ़े, पौने या बटा का प्रयोग करके। जैसे-सवा तीन, साढे चार, पौने सात, तीन बटा पाँच, एक सही दो बटा तीन अंक

दिशासूचक शब्द-

एकतरफा, दुतरफा, तीनतरफा, चौतरफा......

(आगे 'तरफा' जोड़कर जैसे- दसतरफा, सौतरफा आदि)।

संख्यावाचक शब्द

रोमन	देवनागरी	हिंदी	हिंदी क्रम सूचक शब्द
1	1	एक	पहला
2	2	दो	दूसरा
3	3	तीन	तीसरा

4	4	चार	चौथा
5	5	पाँच	पॉचवाँ
6	6	छह	छठा
7	7	सात	सातवाँ
8	8	आठ	आठवाँ
9	3	नौ	नौवाँ
10	1 0	दस	दसवाँ
11	1 1	ग्यारह	ग्यारहवाँ
12	1 2	बारह	बारहवाँ
13	1 3	तेरह	तेरहवाँ
14	1 4	चौदह	चौदहवाँ
15	1 5	पंद्रह	पंद्रहवाँ
16	1 6	सोलह	सोलहवाँ
17	1 7	सत्रह	सत्रहवाँ
18	1 8	अठारह	अट्ठारहवाँ
19	1 9	उन्नीस	उन्नीसवाँ
20	2 0	बीस	बीसवाँ
21	2 1	इक्कीस	इक्कीसवाँ
22	2 2	बाईस	बाईसवाँ
23	2 3	तेईस	तेईसवाँ
24	2 4	चौबीस	चौबीसवाँ
25	2 5	पच्चीस	पच्चीसवाँ
26	2 6	छब्बीस	छब्बीसवाँ
27	2 7	सत्ताईस	सत्ताईसवाँ
28	2 8	अट्ठाईस	अट्ठाईसवाँ
29	2 9	उनतीस	उनतीसवाँ
30	3 0	तीस	तीसवाँ

31	3 1	इकतीस	इकतीसवाँ
32	3 2	बत्तीस	बत्तीसवाँ
33	3 3	तैंतीस	तैंतीसवाँ
34	3 4	चौंतीस	चौंतीसवाँ
35	3 5	पैंतीस	पैंतीसवाँ
36	3 6	छत्तीस	छत्तीसवाँ
37	3 7	सैंतीस	सैंतीसवाँ
38	3 8	अड़तीस	अड़तीसवाँ
39	3 9	उनतालीस	उनतालीसवाँ
40	4 0	चालीस	चालीसवाँ
41	4 1	इकतालीस	इकतालीसवाँ
42	4 2	बयालीस	बयालीसवाँ
43	4 3	तैंतालीस	तैंतालीसवाँ
44	4 4	चवालीस	चवालीसवाँ
45	4 5	पैंतालीस	पैतालीसवाँ
46	4 6	छियालीस	छियालीसवाँ
47	4 7	सैंतालीस	सैंतालीसवाँ
48	4 8	अड़तालीस	अड़तालीसवाँ
49	4 9	उनचास	उनचासवाँ
50	5 0	पचास	पचासवाँ
51	5 1	इक्यावन	इक्यावनवाँ
52	5 2	बावन	बावनवाँ
53	5 3	तिरपन	तिरपनवाँ
54	5 4	चौवन	चौवनवाँ
55	5 5	पचपन	पचपनवाँ
56	5 6	छप्पन	छप्पनवाँ
57	5 7	सत्तावन	सत्तावनवाँ

58	5 8	अट्ठावन	अट्ठावनवाँ
59	5 9	उनसठ	उनसठवाँ
60	6 0	साठ	साठवाँ
61	6 2	इकसठ	इकसठवाँ
62	6 2	बासठ	बासठवाँ
63	6 3	तिरसठ	तिरसठवाँ
64	6 4	चौंसठ	चौंसठवाँ
65	6 5	पैंसठ	पैंसठवाँ
66	6 6	छियासठ	छियासठवां
67	6 7	सड़सठ	सड़सठवाँ
68	6 8	अड़सठ	अड़सठवाँ
69	6 9	उनहत्तर	उनहत्तरवाँ
70	7 0	सत्तर	सत्तरवाँ
71	7 1	इकहत्तर	इकहत्तरवाँ
72	7 2	बहत्तर	बहत्तरवाँ
73	7 3	तिहत्तर	तिहत्तरवाँ
74	7 4	चौहत्तर	चौहत्तरवाँ
75	7 5	पचहत्तर	पचहत्तरवाँ
76	7 6	छिहत्तर	छिहत्तरवाँ
77	7 7	सतहत्तर	सतहत्तरवाँ
78	7 8	अठहत्तर	अठहत्तरवाँ
79	7 9	उनासी	उनासीवाँ
80	8 0	अस्सी	अस्सीवाँ
81	8 1	इक्यासी	इक्यासीवाँ
82	8 2	बयासी	बयासीवाँ
83	8 3	तिरासी	तिरासीवाँ
84	8 4	चौरासी	चौरासीवाँ

85	8 5	पचासी	पचासीवाँ
86	8 6	छियासी	छियासीवाँ
87	8 7	सतासी	सतासीवाँ
88	8 8	अठासी	अठासीवाँ
89	8 9	नवासी	नवासीवाँ
90	9 0	नब्बे	नब्बेवाँ
91	9 1	इक्यानवे	इक्यानवेवाँ
92	9 2	बानवे	बानवेवाँ
93	9 3	तिरानवे	तिरानवेवाँ
94	9 4	चौरानवे	चौरानवेवाँ
95	9 5	पंचानवे	पंचानवेवाँ
96	9 6	छियानवे	छियानवेवाँ
97	9 7	सतानवे	सत्तानवेवाँ
98	9 8	अठानवे	अट्ठानवेवाँ
99	9 9	निन्यानवे	निन्यानवेवाँ
100	1 0 0	सौ	सौवाँ

विशेष: 1. संख्या सूचक शब्द प्राय: विशेषण के रूप में ही प्रयुक्त होते हैं। जैसे- पाँच फल, पचासों छात्र आदि।

2. कभी कभी विशेष प्रसंग में संज्ञा के रूप में भी प्रयुक्त होते हैं।

जैसे- i तीनों के हाथ में पुष्प हैं।

ii वह अकेला दस के बराबर है।

परिशिष्ट 5

अनेकार्थक शब्द

वे शब्द जिनका एक से अधिक अर्थों में प्रयोग होता है।

शब्द	अर्थ	
अंक	1, 2, 3 आदि संख्या सूचक-चिह्न	गोद, नाटक के भाग
अंबर	आकाश	वस्त्र (पीतांबर)
अर्क	सूर्य	मंदारवृक्ष
अर्थ	शब्द का अर्थ	धन
आम	एक विशेष फल	सामान्य
कर	आय पर कर (टैक्स)	हाथ
कल	आनेवाला या, बीता हुआ दिन	चैन, आराम
काम	कार्य	यौन-इच्छा
कुल	वंश	समस्त, जोड़ा गया
ग्राम	गाँव	तोल का मान
घंटा	ध्वनि करने वाला, मंदिर में लगा एक उपकरण, समय का मान	
घन	बादल	एक ज्यामितीय आकृति
ढाल	युद्ध में वार रोकने का उपकरण	मार्ग का नीचे की ओर झुकाव
ताना	व्यंग्य-कथन	बुनाई में सीधे धागे
तार	लोहे की तार	टेलीग्राम
ताल	संगीत की ताल	तालाब
तीर	नदी का तट	बाण (अस्त्र)
दौरा	कार्य हेतु यात्रा	दिल का कष्ट (हार्ट-अटैक)
धूप	सूर्य का तेज प्रकाश	सुगांधित द्रव्य
पर	पंख	लेकिन
पाक	भोजन पकाने की क्रिया	पवित्र
पालना	पालन पोषण करना	छोटे बच्चे को झुलाकर सुलाने का साधन

पास	नजदीक	उत्तीर्ण
बिल	चूहे आदि का बिल	बिजली पानी आदि का बिल
भाव	दाम	हाव भाव
मगर	लेकिन	मगरमच्छ
माँग	स्त्रियाँ की मांग	जरूरत (डिमांड)
	(जो सिर के बीचों बीच कंधी से रेखा जैसी बनायी जाती है)	
मान	इज्जत	तोलने की स्तरीय माप
मुद्रा	उँगलियों से बनाई जाने वाली एक यौगिक क्रिया	चेहरे का भाव, मुहर
योग	एक जीवन दर्शन	जोड़
राग	संगीत का राग	मोह, प्रेम
राशि	ढेर, समूह	ज्योतिष की दृष्टि से मेषादि, बारह राशियां
लाल	एक कीमती पत्थर	(लाल) रंग, प्यारा छोटा बालक
वर्ग	समूह	एक ज्यामितीय आकार
सर	सिर	तालाब
सीना	छाती	कपड़े सिलने की क्रिया
सूत्र	डोरी	गणित का सूत्र (फार्मूला)
हल	खेत जोतने का उपकरण	समाधान

परिशिष्ट 6

विपरीतार्थक शब्द

यह आवश्यक नहीं कि प्रत्येक सार्थक शब्द का कोई न कोई विपरीतार्थक शब्द हो परंतु विपरीतार्थक शब्दों का ज्ञान भाषा-प्रयोग की दृष्टि से अधिक महत्वपूर्ण होता है

शब्द	विपरीतार्थक		शब्द	विपरीतार्थक	
अंतिम	प्रथम	(वि.)	अनाथ	सनाथ	(वि.)
अंदर	बाहर	(क्रि.वि.)	अनाहूत	आहूत	(वि.)
अंधकार	प्रकाश	(पुं.)	अनुकूल	प्रतिकूल	(वि.)
अंधेरा	उजाला	(पुं.)	अनुयायी	विरोधी	(पुं.)
अक्षत	विक्षत	(वि.)	अनुरक्त	विरक्त	(वि.)
अक्षम	सक्षम	(वि.)	अनुलोम	प्रतिलोम	(वि.)
अखंडनीय	खंडनीय	(वि.)	अनुशासनबद्ध	अनुशासनहीन	(वि.)
अगम	सुगम	(वि.)	अन्वित	अनन्वित	(वि.)
अगला	पिछला	(वि.)	अपकर्ष	उत्कर्ष	
अगवाड़ा	पिछवाड़ा	(वि.)	अपेक्षित	अनपेक्षित	(वि.)
अग्रगामी	पश्चगामी	(वि.)	अभिज्ञ	अनभिज्ञ	(वि.)
अचल	चल	(वि.)	अभिशाप	वरदान	(पुं.)
अच्युत	च्युत	(वि.)	अभ्यास	अनभ्यास	(वि.)
अज्ञ	विज्ञ	(वि.)	अमीर	गरीब	(वि.)
अत्यधिक	अत्यल्प	(पुं.)	अमृत	विष	(पुं.)
अथ	इति		अर्पण	ग्रहण	(पुं.)
अद्यतन	पुरातन	(वि.)	अर्वाचीन	प्राचीन	(वि.)
अधिक	न्यून, अल्प	(वि.)	अल्पज्ञ	सर्वज्ञ	(वि.)
अधिकृत	अनधिकृत	(वि.)	अल्पमत	बहुमत	(पुं.)
अधिमूल्यन	अवमूल्यन	(पुं.)	अल्पसंख्यक	बहुसंख्यक	(वि.)
अधीन	स्वतंत्र	(वि.)	अल्पकालीन	दीर्घकालीन	(वि.)
अध्यात्मवादी	जड़तावादी	(पुं.)	अशक्त	सशक्त	(वि.)

शब्द	विपरीतार्थक		शब्द	विपरीतार्थक	
अशन	अनशन	(पुं.)	कीर्ति	अपकीर्ति	(स्त्री)
अश्लील	श्लील	(वि.)	कृतज्ञ	कृतघ्न	(वि.)
असूया	अनसूया	(स्त्री)	कृपण	उदार	(वि.)
आंतर	बाह्य	(वि.)	कृश	स्थूल	(वि.)
आगामी	विगत	(वि.)	क्रय	विक्रय	(पुं.)
आज्ञापालन	अवज्ञा	(पुं./स्त्री.)	क्षुद्र	विशाल	(वि.)
आदान	प्रदान	(पुं.)	क्षुब्ध	शांत	(वि.)
आमिष	निरामिष	(वि.)	खंडन	मंडन	(पुं.)
आयात	निर्यात	(पुं.)	खुशकिस्मत	बदकिस्मत	(वि.)
आरोह	अवरोह	(पुं.)	खरा	खोटा	(वि.)
आर्द्र	शुष्क	(वि.)	खाली	भरा	(वि.)
आर्य	अनार्य	(पुं.)	खुदरा	थोक	(वि.)
आविर्भाव	तिरोभाव	(पुं.)	गहरा	छिछला	(वि.)
आशा	निराशा	(स्त्री.)	गुनहगार	बेगुनाह	(वि.)
आशीर्वाद	अभिशाप	(पुं.)	गुप्त	प्रकट	(वि.)
आस्तिक	नास्तिक	(पुं.)	ग्रस्त	मुक्त	(वि.)
इकरार	इन्कार	(पुं.)	घृणा	प्रेम	(स्त्री. पुं.)
ईमानदार	बेईमान	(वि.)	चित्त	पट	(वि.)
उग्र	सौम्य	(वि.)	चुस्त	सुस्त	(वि.)
उज्ज्वल	धूमिल	(वि.)	जंगम	स्थावर	(वि.)
उत्कृष्ट	निकृष्ट	(वि.)	जड़	चेतन	(वि.)
उत्थान	पतन	(पुं.)	जय	पराजय	(स्त्री.)
उद्यम	आलस्य	(पुं.)	जाग्रत	सुप्त	(वि.)
उदय	अस्त	(वि.)	जारज	औरस	(वि.)
उन्नति	अवनति	(स्त्री.)	ज्येष्ठ	कनिष्ठ	(वि.)
उन्मुख	विमुख	(वि.)	डरपोक	निडर	(वि.)
उपकार	अपकार	(पुं.)	तकलीफ	आराम	(स्त्री.पुं.)

शब्द	**विपरीतार्थक**		**शब्द**	**विपरीतार्थक**	
तम	ज्योति/प्रकाश	(पुं.)	प्रेम	घृणा	(पुं.+स्त्री.)
दंड	पुरस्कार	(पुं.)	बद्ध	मुक्त	(वि.)
दिलेर	कायर	(वि.)	बृहत्	लघु	(वि.)
दीर्घायु	अल्पायु	(वि.)	मितव्ययी	अपव्ययी	(वि.)
दोष	गुण	(पुं.)	यश	अपयश	(पुं.)
द्वैत	अद्वैत	(वि.)	यौवन	वार्धक्य	(पुं.)
धृष्ट	विनम्र	(वि.)	विधि	निषेध	(स्त्री.पुं.)
ध्वंस	सृजन	(पुं.)	शालीन	धृष्ट	(वि.)
निकृष्ट	श्रेष्ठ	(वि.)	संघटन	विघटन	(पुं.)
निरक्षर	साक्षर	(वि.)	सम्पन्न	दरिद्र	(वि.)
निषिद्ध	विहित	(वि.)	सख्त	नरम	(वि.)
नीरस	सरस	(वि.)	सधवा	विधवा	(स्त्री.)
नूतन	पुरातन	(वि.)	सघड़	फूहड़	(वि.)
नेकनामी	बदनामी	(स्त्री.)	सपूत	कपूत	(पुं.)
परार्थ	स्वार्थ	(पुं.)	सौभाग्य	दुर्भाग्य	(पुं.)
परोक्ष	प्रत्यक्ष	(वि.)	स्वामी	सेवक	(पुं.)
प्रगति	अवनति	(स्त्री.)	हर्ष	विषाद, शोक	(पुं.)
प्रवृत्त	निवृत्त	(वि.)	ह्रस्व	दीर्घ	(वि.)

परिशिष्ट 7

शब्द-युग्म
(मिलते जुलते शब्द)

अंचल	प्रदेश, स्थान
आँचल	साड़ी का दामन
अन्न	खाद्य पदार्थ (गेहूँ, चना, चावल आदि)
अन्य	दूसरा, भिन्न
अरबी	एक भाषा
अरबी	एक सब्जी
आदि	प्रारंभ, वगैरह
आदी	जिसे आदत पड़ गई हो, वह, आदत वाला
उपयुक्त	उचित, ठीक
उपर्युक्त	ऊपर कहा गया
कर्ता	करने वाला
कुरता	पहनने का एक वस्त्र
कुल	वंश, समस्त, सब
कूल	किनारा
कोश	शब्द कोश
कोष	खजाना, धन
गंद	गंदगी, गंदी चीजें
गंध	फूलों आदि की सुगंध
गिरि	पहाड़
गिरी	नारियल के अंदर का मीठा ठोस पदार्थ, 'गिरना' क्रिया का भूतकाल का स्त्रीलिग एकवचन का रूप
गृह	घर
ग्रह	मंगल, बुध आदि ग्रह, आकाशीय पिंड
जंग	लड़ाई, युद्ध
ज़ंग	लोहे में लगा जंग
जगत्	संसार
जगत	कुएँ का चबूतरा
जरा	बुढापा
ज़रा	थोड़ा
जाली	जाल युक्त कोई वस्तु या उपकरण
ज़ाली	नकली
जूठा	मुँह से निकाला हुआ
झूठा	जो सत्य न हो, सत्य न बोलने वाला
डीठ	दृष्टि, नजर
ढीठ	धृष्ट, धूर्त
दवात	स्याही का पात्र
दावत	प्रीतिभोज
दारू	शराब
दारु	लकड़ी
नियत	निश्चित, तय
नीयत	इरादा
निश्चल	स्थिर
निश्छल	छल कपट रहित
पास	नजदीक

पाश	बंधन	राज	रहस्य
प्रणय	प्यार	सामान	वस्तु, सामग्री
परिणय	विवाह	समान	बराबर
बलि	किसी की भेंट, कुरबानी	सुत	पुत्र
बली	बलवान	सूत	धागा
मूल	मुख्य, आधार	स्त्री	नारी, औरत
मूल्य	कीमत, दाम	इस्त्री	कपड़ों में लोहा करने का एक उपकरण
राज	मिस्त्री (मकान वनाने वाला)		

परिशिष्ट 8

संकेत चिह्न

8.1 विराम चिह्न

हिंदी भाषा को लिखने में शिरोरेखा का प्रयोग आवश्यक है। पूर्णविराम को छोड़कर शेष विरामादि चिह्न अंग्रेजी भाषा की तरह हिंदी में भी स्वीकार्य होते हैं।

चिह्नाम	चिह्न
पूर्ण विराम	(।) खड़ी पाई
अल्प विराम	(,)
अर्ध विराम, सेमीकोलन	(;)
उपविराम/कोलन	(:)
प्रश्न चिह्न	(?)
संयोजक (हाइफन)	(-)
निर्देशक चिह्न	(–)
विस्मयसूचक चिह्न व संबोधन सूचक चिह्न	(!)
उद्धरण चिह्न	(“–”)
शब्द या अवतरण चिह्न	(‘–’)
विवरण या आदेश चिह्न	(:–)
कोष्ठक	( )
वर्ग कोष्ठक	[ ]
तीर कोष्ठक	< >
लोप चिह्न	(..........)
संक्षेप सूचक चिह्न	(0)
तुल्यता सूचक चिह्न	(=)
अर्ध अल्प विराम	(;)
हंसपद	(λ)

8. 2 गणितीय चिह्न Mathematical symbals

गणित में प्रयोग किये जाने वाले चिह्न इस प्रकार हैं।

धन/जमा चिह्न	+

ऋण/घटा चिह्न	$-$	
जोड़ या घटा	$\pm$, $\mp$	
गुणा चिह्न	$\times$	
भाग चिह्न	$\div$	
बराबर चिह्न	$=$	
बराबर नहीं का चिह्न	$\neq$	
दशमलव चिह्न	(जैसे 12.5)	
प्रतिशत चिह्न	%	
वर्ग मूल	($\sqrt{8}$ आठ का वर्गमूल)	
		$<$ छोटा चिह्न
		$>$ बड़ा चिह्न
बराबर या छोटा	$\leqslant$	5 पाँच के बराबर या उससे छोटा
बराबर या बड़ा	$\geqslant$	
बटे	$\frac{4}{3}$	
	वर्ग	3^2 (तीन का वर्ग दो)
	घन	3^3 (तीन का घन तीन)
	घात	3^2, 3^3, 3^4
		(तीन की घात दो) तीन की घात तीन तीन की घात चार)

परिशिष्ट 9

नाप, माप और तौल की सारणियाँ

लम्बाई और दूरी की नाप (1 अप्रैल 1957 तक प्रभावी)

12 इंच	1 फुट
3 फुट	1 गज
$5\frac{1}{2}$ गज	1 पोल (डाँड़)
220 गज या 40 पोल	1 फर्लांग
8 फर्लांग	1 मील
1760 गज	1 मील

भूमि या वर्ग नाप

114 वर्ग इंच	1 वर्ग फुट
9 वर्ग फुट	1 वर्ग गज़
4840 वर्ग गज	1 एकड़
640 एकड़	1 वर्ग मील

लम्बाई (दूरी) भारतीय नाप

72 बिन्दु	1 इंच
9 इंच	1 बित्ता
2 बित्ता	1 हाथ
2 हाथ	1 गज़
4 अंगुल	1 गिरह
$2\frac{1}{4}$ इंच	1 गिरह
16 गिरह	1 गज
3 गज	1 गठा
10 गठा	1 जरीब

परंपरागत भारतीय भूमि नाप (उत्तर प्रदेश)

99 इंच	1 लाठा

5 लाठा × 4 लाठा	1 बिस्वा
1361 वर्गफुट	1 बिस्वा
20 बिस्वा	1 बीघा
3025 वर्ग गज	1 बीघा
8 बीघा	5 एकड़

पंजाब

3 हाथ	1 करम
9 वर्ग करम	1 मरला
20 मरला	1 बीघा
1620 वर्ग गज	1 बीघा

महाराष्ट्र

20 काठी	1 पाण्ड
20 पाण्ड	1 बीघा
3925 वर्ग गज	1 बीघा

बंगाल

10 × 8 गज	1 काठा
20 काठा	1 बीघा
1600 वर्गगज	2 बीघा
121 बीघा	40 एकड़

दक्षिण भारत

2400 वर्ग फुट	1 ग्राउन्ड (मनाई)
24 ग्राउन्ड	1 काणी
6400 वर्गगज	1 काणी
484 काणी	1 वर्ग मील

घन या ठोस की माप

1728 घन इंच	=	1 घन फुट
27 घन फुट	=	1 घन गज

समय-परिमाण (प्राचीन भारतीय)

60 विपल	=	1 पल
60 पल	=	1 दंड/घटी
मुहूर्त	=	लगभग 48 मिनट
पहर	=	3 घंटे
$2\frac{1}{2}$ दंड	=	1 घंटा
60 दंड	=	1 दिन–रात
8 पहर	=	1 दिन–रात
7 दिन	=	1 सप्ताह
30 दिन	=	1 माह
12 माह	=	1 वर्ष

अन्तर्राष्ट्रीय

60 सेकण्ड	=	1 मिनट
60 मिनट	=	1 घंटा
24 घंटे	=	1 दिन
4 सप्ताह	=	1 माह
365 दिन	=	1 वर्ष
366 दिन	=	1 लौंध वर्ष
365 दिन 5 घंटे 48 मिनट	=	1 सौर वर्ष
100 वर्ष	=	1 शताब्दी

विद्युत् मापन

वोल्ट	विद्युत वाहक बल (e.m.f) की इकाई जो एक बैटरी सेल के लगभग 92.6 प्रतिशत के बराबर होती है।
वाट	विद्युत शक्ति की इकाई जो परिपथ में प्राप्त शक्ति के बराबर होती है जिसमें एक वोल्ट के विभवान्तर वाली एक एंपियर की धारा प्रवाहित हो। 746 वाट = अश्वशक्ति।
किलोवाट	1000 वाट ।

लम्बाई की माप

10 मिलीमीटर	=	1 सेंटीमीटर
10 सेंटीमीटर	=	1 डेसीमीटर
100 डेसीमीटर	=	1 मीटर
10 मीटर	=	1 डेकामीटर
10 डेकामीटर	=	1 हेक्टोमीटर
10 हेक्टोमीटर	=	1 किलोमीटर
10 किलोमीटर	=	1 मिरियामीटर
10 मिरियामीटर	=	1 मेगामीटर
100 सेंटीमीटर	=	1 मीटर
1000 मीटर	=	1 किलो मीटर

तौल की माप

10 मिलीग्राम	=	1 सेंटीग्राम
10 सेंटीग्राम	=	1 डेसीग्राम
1000 मिग्रा/10 डेसीग्राम	=	1 ग्राम
10 ग्राम	=	1 डेकाग्राम
10 डेकाग्राम	=	1 हेक्टोग्राम
1000 ग्राम/10 हेक्टोग्राम	=	1 किलोग्राम
10 किलोग्राम	=	1 मिरियाग्राम
100 किग्रा/10 मिरियाग्राम	=	1 क्विंटल
10 क्विंटल	=	1 मीट्रिक टन या मिलियन
1000 किलो.ग्राम	=	1 मीट्रिक टन

धारिता की माप

10 मिलीलीटर	=	1 सेंटीलीटर
10 सेंटीलीटर	=	1 डेसीलीटर
10 डेसीलीटर	=	1 लीटर
10 लीटर	=	1 डेकामीटर

10 डेकालीटर	=	1 हेक्टोलीटर
100 लीटर	=	1 हेक्टो लीटर

परंपरागत (1.4.1957 तक)

8 रत्ती	=	1 माशा
12 माशा	=	1 तोला
5 तोला	=	1 छटांक
16 छटांक	=	1 सेर = लगभग 933 ग्राम
5 सेर	=	1 पंसेरी
40 सेर	=	1 मन

A

नाप-तोल परिवर्तन सारिणी

1. मिलीमीटर	=	0.0394 इंच
1 सेंटीमीटर	=	0.3937 इंच
1 मीटर	=	39.3708 इंच
1 किलोमीटर	=	1063.36 गज
1 इंच	=	25.4 मिली मीटर
1 फुट	=	0.3048 मीटर
1 गज	=	0.9144 मीटर
1 मीटर	=	0.001 किलो मीटर
1 वर्ग इंच	=	6.45 वर्ग सेंटीमीटर
1 वर्ग फुट	=	9.29 वर्ग डेसीमीटर
1 वर्ग गज	=	0.84 वर्गमीटर
1 एकड़	=	0.40 हेक्टेयर
1 वर्ग मील	=	259 हेक्टेयर

संख्या गणना की प्रणाली

12 इकाई	=	1 दर्जन
12 दर्जन	=	1 ग्रुस

20 इकाई	=	1 कोड़ी
24 ताव कागज	=	1 जिस्ता या दस्ता
20 दस्ता	=	1 रीम
10 रीम	=	1 गट्ठा

समय परंपरागत

मुहूर्त	=	लगभग 48 मिनट
पहर	=	3 घंटे
क्षण	=	4/5 सेकंड
30 क्षण	=	1 पल = 24 सेंकड
10 पल	=	4 मिनट
60 पल	=	24 मिनट
60 घड़ी	=	24 घंटे = 1 दिन-रात

परिशिष्ट 10

पशुपक्षियों की बोलियाँ

ऊँट	=	बलबलाता है।
कुत्ता	=	भौंकता है, गुर्राता है।
कबूतर	=	गुटरगूँ करता है।
कोयल	=	कूकती है।
कौआ	=	काँव-काँव करता है।
गधा	=	रेंकता है।
गाय	=	रँभाती है। हूँकती है (दर्द से)
गीदड़	=	हुँआता है।
घोड़ा	=	हिनहिनाता है।
चिड़िया	=	चहकती/चहचहाती है।
छछूँदर	=	छुछुआता है।
झींगुर	=	झनकारता है।
तोता	=	टें टें करता है।
बंदर	=	किलकारता या किलकारी मारता है।
बकरी	=	मिमियाती या में में करती है।
बाघ	=	गरजता है।
बैल	=	डकराता है
बिल्ली	=	म्याऊॅ-म्याऊॅ करती है।
भेंड़	=	मिमियाती है।
भैंसा	=	रेंकता है।
भौंरा	=	भनभनाता है, गुंजारता है।
मक्खी	=	भिनभिनाती है।
मच्छर	=	भुनभुनाता है।
मुर्गा	=	कुकड़ूँ कूँ करता है, बांग देता है।
मेढ़क	=	टर्राता है, टरटराता है।
मोर	=	केका बोलता है।
साँड़	=	डकराता है।
साँप	=	फुफकारता है।
सिंह	=	दहाड़ता है।
हाथी	=	चिंघाड़ता है।

परिशिष्ट 11

पेशे और व्यवसाय

A		
कसाई	Butcher बूचड़	अनुपयोगी पशुओं को काटने वाला (जिनकी खाल, मांस, हड्डी आदि का व्यापारिक दृष्टि से उपयोग हो सके)।
B		
किसान	फार्मर Farmer	खेती का काम करने वाला।
C	कुली Cooli	रेलवे स्टेशन, हवाई अड्डे बस आदि में यात्रियों का सामान ढोकर पहुँचाने वाले।
D		
गड़रिया	शेफर्ड Shepherd	भेड़ों को पालने वाला।
E		
ग्वाला	Cowherd कावहर्ड	गाय-बैलों को चराने या पालने वाला।
घड़ी साज	watch Repairer	घड़ी ठीक करने वाला।
चरवाहा	Herdsman (हर्ड्समैन)	पशुओं को चराने वाला।
जल्लाद	हैंग मैन	फांसी पर लटकाने वाला।
ठठेरा	ब्रास स्मिथ Brass Smith	बर्तन बचेने वाला
दर्जी	Tailor टेलर	कपड़ा सिलने वाला।
दुकानदार	Shopowner शाप-ओनर	परचून आदि का सामान बेचने वाला।
धोबी/धोबिन	Washer man/Woman वाशरमैन/वूमैन	कपड़े धोने वाला या कपड़ों पर प्रेस करने वाला।
नाई	Barber बारबर	लोगों के बाल काटने वाला या हजामत करने वाला।
नौकर/पुं नौकरानी स्त्री.	Servant/Maid सर्वेन्ट/मैड	घरों में प्राइवेट दफ्तरों में सेवा करने वाला या वाली।
सब्जीवाला	Vegetable vender वेजिटेबल वेंडर	सब्जी बेचने वाला या ठेले आदि पर सब्जी बेंचना।

ठेलेवाला	हैंड कार्ट पुलर	किराया लेकर हाथ के ठेले में माल ढोने वाला।
फराश	Sweeper स्वीपर	सफाई करने वाला
बढ़ई	Carpenter कारपेंटर	लकड़ी का काम करने वाला।
भड़भूँजा	Parcher पार्चर	भाड़ में चना, चावल आदि अन्न भूँजने वाला।
मछुआरा	Fisher man फिशर मैन	नदी, समुद्र आदि में नौका में बैठकर मछली पकड़ने वाला।
माली	Gardner गार्डनर	बाग या बाटिका में पेड़-पौधों व फूल वाले वृक्षों की देखभाल करने वाला तथा फूल तोड़कर बेचने वाला।
मिस्त्री पुं.	Machanic मेकेनिक	किसी भी तरह की यांत्रिक प्रणाली को ठीक करने वाला।
मल्लाह/मांझी/केवट	Oars man	नदी, सागर आदि में नाव में लोगों को बैठाकर पार कराने वाला
मोची पुं.	Cobbler	लोगों के जूते-चप्पल ठीक करने वाला।
रंगरेज	Dyer	कपड़े रंगने वाला
राज मिस्त्री	Mason	मकान बनाने वाला।
लिपिक	Clerk	कार्यालय का कर्मचारी
लुहार	Ironsmith	लोहे के औजार या उपकरण बनाने वाला।
सुनार	Gold smilth	सोने चांदी के आभूषण बनाने वाला या बेचने वाला।
रिक्शे वाला	Rickshaw puller	रिक्शा चलाने वाला
चाय वाला	Tea vendor	चाय बनाकर बेचने वाला।
अखबार वाला	Newspaper agent	अखबार बेचने वाला
अध्यापक	Teacher	शिक्षा देने वाला
अभिकर्ता	Agent	प्रतिनिधित्व करने वाला
अभियंता	Engineer	निर्माण कार्य संबंधी विशेषज्ञ, यंत्र विशेषज्ञ
अभिनेता	Actor	अभिनय करने वाला
आढ़तिया	Commission Agent	बड़ा थोक व्यापारी
एडवोकेट	Advocate	वकालत करने वाला

कलाकार	Artist	कला का विशेषज्ञ
कवि	Poet	कविता करने वाला
कास्टेंबल	Constable	पुलिस का सिपाही
कुँजड़ा	Green grocer	फल सब्जी उगाने वाला या बेचने वाला
कुम्हार	Polter	मिट्टी के बर्तन बनाने वाला
केवट	Boat man	नाव चलाने वाला
खजांची	Treasurer	कोष का अधिकारी
खोमचे वाला	Hawker	गालियों में घूम घूम कर सामान बेचने वाला
गवैया	Singer	गाने वाला, संगीतज्ञ
घसियारा	Grass-cutter	घास काटने वाला
चपरासी	Peon	अवर श्रेणी कर्मचारी
चौकीदार	Watch man	चौकीदारी करने वाला
जासूस	Detective, spy	जासूसी करने वाला
जिल्दसाज़	Binder	किताबों आदि पर जिल्द चढ़ाने वाला।
जुलाहा	Weaver	कपड़ा बुनने वाला
टाइपिस्ट	Typist	टाइप करने वाला
ठेकेदार	Contractor	ठेके पर काम करने वाला
डाकिया	Post man	डाक पहुंचाने वाला
डाक्टर	Doctor	चिकित्सा करने वाला
ड्राइवर	Driver	गाड़ी चलाने वाला
तमोली	Betel vendor	पान बेचने वाला
तेली	Oil man	तेल बेचने वाला
दलाल	Broker	कमीशन लेकर जमीन जायदाद का कारोबार करने वाला।
नर्स	Nurse	चिकित्सा-सहायक
नल साज	Plumber	पानी के नल ठीक करने वाला
पत्रकार	Journalist	अखबार टी.वी आदि में काम करने वाला।
पनवाड़ी		पान बेचने वाला, पान का उत्पादक

पंसारी	Grocer	किराये की दुकान पर चावल-दाल-मेवे आदि तथा देशी दवाएँ बेचने वाला
पहरेदार	Watch man	दे. चौकीदार
पुरोहित	Priest	पूजा-पाठ करने वाला
पेंटर	Painter	चित्र या साइन बोर्ड बनाने वाला
प्रकाशक	Publicher	पुस्तकें या समाचारपत्र-पत्रिका प्रकाशित करने वाला
प्रोफेसर	Profeser	विश्वविद्यालय का आचार्य
फेरीवाला	Pedlar	घूमघूम कर सामान बेचने वाला
फोटोग्राफर	Photographer	चित्र खींचने वाला
बजाज	Draper	कपड़ा बेचने वाला
बिसाती	General Merchant	साबुन, बटन आदि फुटकर सामान बेचने वाला
बुनकर	Weaver	कपड़ा बुनने वाला
मुद्रक	Printer	छपाई का काम करने वाला
मुनीम	Accountant	हिसाब किताब रखने वाला
मूर्तिकार	Sculptor	मूर्ति बनाने वाला
रसोइया	Cook	भोजन पकाने वाला
लेखपाल	Village accountant	ग्रामीण भूमि का लेखा जोखा रखने वाला
वकील	Lowyer	वकालत करने वाला
वैद्य	Physician	देशी (आयु.) चिकित्सक
शिक्षक	Teacher	अध्यापक
संवाददाता	Reporter	अखबार, टी.वी आदि में समाचार भेजने वाला
सिपाही	Soldier	सैनिक
हकीम	Physician	यूनानी चिकित्सक
हज्जाम		दे. नाई
हलवाई	Confectioner	मिठाई बनाने वाला।

परिशिष्ट 12

भारतसंघ के राज्य और केंद्र शासित प्रदेश

राज्य	राजधानी	शासकीय/सरकारी कामकाज की भाषा	अन्य प्रमुख भाषाएं/बोलियां
अरुणाचल	ईटानगर	अंग्रेजी	हिंदी, मानपा, निस्सी, अपाटनी
असम	दिसपुर	असमिया	बांगला
आंध्र प्रदेश	हैदराबाद	तेलुगु	हिंदी, कन्नड, उड़िया, मराठी
ओडीसा	भुवनेश्वर	ओडिआ	हिंदी, तेलुगु
उत्तर प्रदेश	लखनऊ	हिंदी	उर्दू
उत्तराखंड	देहरादून	हिंदी	गढ़वाली
कर्नाटक	बेंगलूरु	कन्नड़	तेलुगु
केरल	तिरुअनन्तपुरम्	मलयालम, अंग्रेजी	तमिल
गुजरात	गांधीनगर	गुजराती, हिंदी	सिंधी
गोवा	पणजी	कोंकणी	मराठी, हिंदी, कन्नड़, गुजराती
छत्तीसगढ़	रायपुर	हिंदी	छत्तीसगढी, हलबी, गोंडी, मतरी
जम्मू-कश्मीर	श्रीनगर	उर्दू	कश्मीरी, डोगरी, हिंदी
झारखंड	राँची	हिन्दी	उर्दू, उड़िया, मुन्दारी, मुन्दी
तमिलनाडु	चेन्नई	तमिल	तेलुगु
त्रिपुरा	अगरतला	बांग्ला	त्रिपुरी, मैथिली, ओड़िया
नागालैंड	कोहिमा	अंग्रेजी	असमी
पंजाब	चंडीगढ़	पंजाबी	हिंदी
पश्चिम बंगाल	कोलकाता	बंगला	हिंदी
बिहार	पटना	हिंदी	उर्दू बंगली, भोजपुरी
मणिपुर	इम्फाल	मणिपुरी	माओ, नेपाली
मध्य प्रदेश	भोपाल	हिंदी	मराठी
महाराष्ट्र	मुंबई	मराठी	हिंदी, उर्दू
मिजोरम	आइजोल	मिजो	अंग्रेजी

मेघालय	शिलांग	अंग्रेजी	गारो
राजस्थान	जयपुर	हिंदी	पंजाबी, राजस्थानी
सिक्किम	गंगटोक	नेपाली	हिंदी, शेरपा
हरियाणा	चंडीगढ़	हिंदी	पंजाबी, हरियाणवी
हिमाचल प्रदेश	शिमला	हिंदी	पंजाबी, पहाड़ी।

केंद्र प्रशासित प्रदेश

अंडमान और निकोबार द्वीप समूह	पोर्ट ब्लेअर	हिंदी, अंग्रेजी	बंगला, तमिल, मलयालम, तेलुगु
चंडीगढ़	चंडीगढ़	हिंदी, अंग्रेजी	पंजाबी
दमन एवं दीव	दमन	गुजराती	सिंधी, हिंदी
दादर और नगर हवेली	सिलवासा	हिंदी-अंग्रेजी	गुजराती मराठी
दिल्ली	दिल्ली	हिंदी	पंजाबी, उर्दू
पांडिचेरी	पांडिचेरी	तमिल	अंग्रेजी, फ्रांसीसी
लक्षद्वीप	कवरत्ती	हिंदी, अंग्रेजी	मलयालम

परिशिष्ट-13

संविधान की आठवीं अनुसची में उल्लिखित क्षेत्रीय भाषाएँ

देश के विभिन्न राज्यों में अध्ययन-अध्यापन, साहित्य लेखन तथा प्रशासनिक कार्यों में सुप्रयोग की दृष्टि से निम्नलिखित भाषाओं को संविधान की आठवीं सूची में स्थान मिला है।

(i) असमिया

(ii) ओड़िआ

(iii) उर्दू

(iv) कन्नड

(v) कश्मीरी

(vi) कोंकणी

(vii) गुजराती

(viii) डोगरी

(ix) तमिल

(x) तेलुगु

(xi) नेपाली

(xii) पंजाबी

(xii) बांगला

(vix) बोड़ो

(vx) मणिपुरी

(xvi) मराठी

(xvii) मलयालम

(xviii) मैथिली

(xix) संथाली/संताली

(xx) संस्कृत

(xxi) सिंधी

(xxii) हिंदी